

القرآن الكريم

कुरआन मजीद

(तर्जमा व अरबी मत्न के साथ)

तर्जमा

मौलाना फ़तेह मुहम्मद ख़ाँ
साहिब जालंनदधरी



فرید بکریو (پرائیویٹ) لمیٹڈ

FARID BOOK DEPOT (Pvt.) Ltd.

Corp. Off.: 2158, M.P. Street, Palaudi House, Darya Ganj, N. Delhi-2

Phones: 011-23289786, 011-23289159 Fax: 011-23279998

E-mail: faridexport@gmail.com Website: faridexports.com

क़ुरआन मजीद

हिन्दी मुतर्जम
मआ अरबी मतन

तर्जुमा:
मौलाना फ़तेह मुहम्मद ख़ाँ साहिब
जालंधरी

तस्ही:
मौलाना अब्दुल मजीद सरवर साहिब

प्रकाशक:
फ़रीद बुक डिपो (प्र.) लिमिटेड
नई दिल्ली-110002

कुरआन मजीद

हिन्दी मुतर्जम मआ अरबी मतन

तर्जुमा: मौलाना फतेह मुहम्मद खाँ साहिब जालंधरी

तस्ही: मौलाना अब्दुल मजीद सरवर साहिब

संस्करण: 2006

पृष्ठ: 982

प्रस्तुत-कर्ता:

मुहम्मद नासिर खान

प्रकाशक:

फरीद बुक डिपो (प्र.) लिमिटेड

2158-59, एम० पी० स्ट्रीट, पटौदी हाउस,

दरिया गंज, नई दिल्ली-110002

फोन: 23289786, 23247075,

फैक्स: 23279998

कुछ इस कुरआन मजीद के बारे में

एक सम्बन्ध अरबों से खास कभी महसूस की जा रही थी कि सरल और आसान हिंदी भाषा में कुरआन मजीद का एक आम-फ़हम तर्जुमा हो जिसे हर खास व आम (तालीमयाफ़ता और कम पढ़े लिखे लोग) आसानी से पढ़ कर समझ सकें, साथ ही अरबी मतन (अरबी अक्षरों में लिखा हुआ कुरआन) भी हिंदी रस्मुल्खत (देवनागरी) में हो और जिस को बिल्कुल सही और शुद्ध उच्चारण (तलफ़ूज) से पढ़ा जा सके।

कुरआन मजीद के तर्जुमे को हिंदी रूप देना तो फिर भी इतना मुश्किल न था लेकिन अरबी मतन को हिंदी देवनागरी में रूपान्तर करना बहुत कठिन और मुश्किल था, चूंकि अरबी में कुछ खास हर्फ़ (अक्षर) ऐसे होते हैं जो हिंदी में नहीं होते जैसे (ث) से, (ح) बड़ी है, (ز) जे, (ذ) जाल, (ص) साद, (ض) जाद, (ط) तो, (ظ) जो, (ع) अंन, (غ) गंन, (ف) फे, (ق) काफ़, (ك) गोल ते, (م) छोटी मद और (ن) बड़ी मद बग़ैर। हमने कुछ अलामतें (निशानियाँ) देकर उन हर्फ़ों (अक्षरों) को बनाया है जो अरबी हर्फ़ों की सही आवाज़ को जाहिर करते हैं। हर हर्फ़ की आवाज़ के लिए अलाहिदः अलाहिदः हर्फ़ मुक़रर किये हैं। हिंदी के सतन में लफ़्ज़ों के वस्ल व फसल (सन्धि-विग्रह), साकिन व मुतहरिक, (हलन्त और सस्वर), क़त्व व इदगाम बग़ैरह में कुरआन मजीद के मामूर व मंकूल रस्मुल्खत के तरीक़-ए-तहरीर व तिलावत की पाबन्दी की है और रमूजे औकाफ़ (विरमाविरम चिह्न) की रायज अलामतें भी अरबी में कितावत (लिखाई) की गई है ताकि उस को कोई कुरआन का हिस्सा समझ कर न पढ़ने लगे अलावा इसके ख़बअ, निस्फ़, सुल्स, रुकूअ और सज्दः बग़ैरः के लिए भी अलामते दी गई हैं। हिंदी में अरबी के मुताबिक़ तिलावत (पाठ) करने के लिए कायदे बयान किये गये हैं। हर्फ़ के सही मख़ारिज (शब्द की सही आवाज़ निकालने) का तरीक़ा भी तफ़सील (detail) से दिया गया है ताकि हिंदी मतन भी अरबी के सही तलफ़ूज के साथ पढ़ा जा सके और उसके पढ़ने का अंदाज़ अरबी के तर्जुमा अदा (तरीक़े) के मुताबिक़ हो। मतन वाले प्रेज पर हिंदी के मतन के साथ अरबी मतन का सफ़ा (पन्ना) भी छोटा (Reduce) करके रखा गया है ताकि कभी कोई हिंदी देवनागरी मतन को अरबी से मिलाना चाहे तो मिला भी सके। बेहतर होगा कि पाठक (कारी "पढ़ने वाला") किसी अरबीदां (अरबी जानने वाले) के सामने दो चार बार पढ़ कर अपना उच्चारण दुस्त कर लें ताकि पढ़ने में कोई ग़लती न रह जाये।

इसमें कोई शक़ नहीं कि यह काम बड़ा दुश्वार (कठिन) था ज़िमके लिए हमने मुख्तलिफ़ उलमा-ए-किराम की ख़िदमात हासिल की शुरू में मोलाना कौमर यज़दानी साहिब से रब्त रहा लेकिन किसी वज़ह से वह वक़्त न दे सके। इस कुरआन मजीद का टाइटल पेज कुरआन छपने से पहले छप चुका था इसलिए टाइटल पेज पर मोलाना कौमर माहज़ब का नाम भी है अलावा इसके इस की तस्वीह की तरफ़ खास तवज़ज़ह (ध्यान) दिया गया है और कई हाफ़िज़े कुरआन और उलमा-ए-किराम ने इसकी तस्वीह (Proof Reading) की है। साथ ही शुरू में ३५ पन्नों पर कुरआन मजीद से मुजाल्लक़ (संबंधित) ज़रूरी मानूमात (जानकारी) का एक जामेअ (बड़ा) मुकद्दमा है जिसमें कुरआन की

सही उच्चारण से पढ़ने का तरीका और दीगर जरूरी मालूमात दर्ज हैं कि कुरआन मजीद किस तरह उतरा, कितने दिनों में उतरा और उस की हिफाजत (सुरक्षा) का अल्लाह तआला ने क्या इन्तजाम (बंदोबस्त) किया है अलावा इसके पैगम्बर इस्लाम हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़िंदगी के मुकम्मल हालात भी दे दिए गये हैं ताकि इस मुबारक किताब को पढ़ने से पहले यह समझा जा सके कि जिस पैगम्बर पर यह किताब उतरी है उसकी ज़िंदगी कैसी थी। हमें उम्मीद है कि हिंदी पढ़ने वाले इस से फ़ायदा हासिल करेंगे और उलेमा से गुज़ारिश है कि वह अपने मशिवरों से नवाज़, साथ में पाठकों (पढ़ने वालों) से भी निवेदन है कि तिलावत (पाठ) के वक़्त कोई ग़लती या कमी देखें, तो मेहरबानी करके हमें लिखें ताकि उसे सही किया जा सके।

इस हिंदी कुरआन मजीद की तरतीब, तस्हीह वगैरह में जिन हज़रात ने हमारी मदद की उन के नाम यह हैं—

१. मौलाना अब्दुल मजीद सब्बर साहिब (मालेगांव)
२. मौलाना खालिद हुसैन सिद्दीकी साहिब (ज़िला बस्ती)
३. मौलाना इमरान क़ासमी साहिब (दिल्ली)
४. मौलाना शुऐब इदरीस साहिब (बम्बई)
५. हाफ़िज़ हुसैन साहिब (दरभंगा)
६. हाफ़िज़ बारीस साहिब (दिल्ली)
७. नासिर खां (दिल्ली)

उम्मीद है कि हिंदी में हमारी यह कोशिश अल्लाह तआला क़ुबूल फरमाएगा और उन तमाम लोगों को इस का अज्र देगा जिन्होंने इस काम में हमारी मदद की है या मशिवरा दिया है।

—प्रकाशक

सैयद महमूद क़ादरी

नोट : अनुवाद में जो शब्द ब्रैकेट () में हैं वह अरबी उर्दू के शब्दों के हिंदी अनुवाद के मतलब को ख़ुलासा करने के लिए दिया गया है।

कुरआन मजीद के फ़ज़ाइल (लाभ)

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इशार्द है, मेरी उम्मत की सबसे अपज़ल (श्रेष्ठ) इबादत कुरआन मजीद की तिलावत है। अहले कुरआन (कुरआन पढ़ने वाले) खास अल्लाह वाले होते हैं। तुम में से बेहतर वह है जो कुरआन सीखे और सिखाये।

तिर्मिज़ी शरीफ़ में इन्हें मसूऊद रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जिसने कुरआन मजीद का एक हर्फ़ (अक्षर) पढ़ा, तो उसको एक नेकी मिलेगी, जो दूसरे कामों की दस नेकियों के बराबर होगी। अल्लाह तआला कुरआन मजीद पढ़ने वाले की ओर सबसे पहले मुतवज्जह होता (यानी ध्यान देता) है। तुम कुरआन मजीद पढ़ा करो क्योंकि कुरआन मजीद ज़ियामत के दिव अपने पढ़ने वालों की शफ़ाअत (सिफ़ारिश) करेगा।

तिर्मिज़ी शरीफ़, सुनने दारमी और बहकी में अबू सईद रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, खुदा फ़रमाता है कि जिस को कुरआन की तिलावत ने मेरी याद से और मुझ से अपनी हाज़तों के मांगने से रोका, तो मैं तमाम मांगने वालों से ज्यादा उस की हाज़तों और दिल की मुरादों को खुद ही पूरा करूंगा (यानी बे-मांगे), क्योंकि अल्लाह के कलाम की फ़ज़ीलत (बड़ाई) दूसरे कज़ामों पर ऐसी है, जैसे खुदा की फ़ज़ीलत मरूलूक पर।

सुनने दारमी शरीफ़ में नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इशार्द है कि अगर कुरआन मजीद किसी खाल में हो, तो वह खाल आग में नहीं जल सकती। खाल से मुराद मोमिन का दिल है। अगर इस में कुरआन मजीद हो, दोज़ख़ के अज़ाब से बचा रहेगा। हदीसों में कुरआन मजीद के अनगिनत फ़ज़ाइल (लाभ) हैं, जो यहां बयान से बाहर है।

कुरआन मजीद की अइमत (बड़ाई), बुजुर्गों और उसकी फ़ज़ीलत के लिए इतना काफ़ी है कि यह दुनिया के पैदा करने वाले खुदा का कलाम है तमाम ऐबों और कमज़ोरियों से पाक और साफ़ है। इसकी फ़साहत और बलागत तमाम दुनिया ने मान ली है। बड़े-बड़े फ़साहत और बलागत के दावेदार इस जैसे दो-तीन जुमले (वाक्य) भी सदियों (सैकड़ों साल) की कोशिशों के बावजूद न बना सके। खुले आम एलान भी किया गया, जोश दिलाने वाले खिताब से कहा गया कि, 'अगर तुम इसके खुदाई कलाम (ईश्वरीय वाणी) होने में शक करते हो और इसको इंसानी कलाम समझते हो, तो तुम इस जैसी छोटी से छोटी सूर: बना लाओ और तमाम खास व आम (ज्ञानी व अज्ञानी) को जमा करो, हरगिज़ न बना सकोगे हरगिज़ न बना सकोगे। कुरआन मजीद में सूर: बनी इस्त्राइल में, पारा १५, रकूअ १०, आयत न० ८८-८९ में अल्लाह तआला फ़रमाता है—

अनुवाद—'कह दो कि अगर इंसान और जिन्न इस बात पर जमा हों कि इस कुरआन जैसा बना लाएं, तो इस जैसा न ला सकेंगे, अगरचे वे एक दूसरे के मददगार हों और हमने इस कुरआन में हर तरह की मिसालें (उदाहरण), बयान करके बात ठीक तरीक़े से बता दी। मगर ज्यादा लोगों का यह हाल है कि बिना इन्कार किए उनसे रहा न गया। जिन्नों की क्रौम ने जब इस चमत्कारी कलाम को सुना तो बे-झिझक कह उठे कि—'इन्ना समिअना कुरआनन् अजबय् यहदी इलहश्दि फ-आ मन्ना बिही व लन्नुशिर-क विरब्बना अहदा० अर्थात्-बेशक हमने एक अजीब कुरआन सुना जो नेकी की तरफ़

हिदायत करता है हम इस पर ईमान लाए और अपने पालनहार का किसी को साक्षीदार हगिज न समझेंगे।'

स्वयं अल्लाह तआला इस पवित्र कुरआन की तारीफ़ (प्रशंसा) करता है फिर हम लोगों की जुबान व कलम में क्या ताक़त है कि इसकी खूबियों और बरकतों का एक अंश भी बयान कर सकें।

कुरआन मजीद के उतरने और संग्रह व संकलन के हालात

कुरआन मजीद एक पवित्र किताब है जो अन्तिम नबी हज़रत मुहम्मद सल्ल० पर उतारी गयी। यह अर्श कुर्सी के मालिक का कलाम है जो उसने स्वयं एक बरगुज़ीदा पेंगम्बर और मुक़र्रब (सबसे ज्यादा लोकप्रिय) बन्दे पर नाज़िल किया। इस्लाम का आधार इसी आसमानो फ़रमान (आदेश) पर है जिसने अनुपालन किया वह इस्लाम के दायरे में दाख़िल हुआ और जिसने ज़रा भी अवज्ञा की वह इस पाकीज़ा जमाअत (इस्लाम) से अलग हो गया और अल्लाह के बाग़ियों में शामिल हुआ। जब नबी-ए-करीम सल्ल० की उम्र शरीफ़ ४० साल की हुई उस समय आप को नबूवत प्रदान की गयी और रिसालत का ताज आप के सर पर रखा गया। इसी ज़माने से कुरआन के उतरने की शुरुआत हुई। यदा कदा यथा ज़रूरत के अवसर पर थोड़ा-थोड़ा २३ साल तक नाज़िल होता रहा है। अगली किताबों की तरह पूरा एक ही बार में नहीं उतरा (हज़रत मूसा अलैहि० पर तोरात हज़रत ईसा अलैहि० पर इंज़ील और हज़रत दाऊद अलैहि० पर जुबूर ये सब किताबें तो एक ही बार में उतारी गयीं और सौभाग्य से ये सब किताबें रमज़ान ही के महीने में उतरीं)

सही यह है कि आप (सल्ल०) की नबूवत के बाद रमज़ान की शबे-क़दर में पूरा कुरआन मजीद लोहे महफूज़ (अल्लाह के पास से) से उस आसमान पर जिसे हम देख रहे हैं अल्लाह के हुक्म से उतारा गया और इसके बाद हज़रत जिब्रील अलैहि० को जिस समय जिस क़दर हुक्म हुआ उन्होंने पवित्र कलाम को बिल्कुल वैसा ही बिना किसी परिवर्तन या कमी-बेशी के नबी सल्ल० तक पहुंचाया। कभी दो आयतें, कभी तीन आयतें और कभी एक आयत से भी कम, कभी दस-दस आयतें और कभी पूरी-पूरी सूरतें। इसी को शरीअत में वह्य कहते हैं। उलमा (विद्वानों) ने वह्य के विभिन्न तरीक़े हदीसों से पेश किए हैं।

१—फ़रिश्ता वह्य लेकर आए और एक आवाज़ घंटी जैसी मालूम हो। यह स्थिति अनेक हदीसों से साबित है और यह किस्म वह्य की सभी किस्मों में सख़्त थी। बहुत कष्ट नबी सल्ल० को होता था यहां तक कि आपने फ़रमाया कि जब कभी ऐसी वह्य आती है तो मैं समझता हूँ कि अब जान निकल जाएगी।

२—फ़रिश्ता दिल में कोई बात डाल दे।

३—फ़रिश्ता आदमी के रूप में आकर बात करे। यह किस्म बहुत आसान थी इसमें कष्ट न होता था।

४—अल्लाह तआला जागते में नबी सल्ल० से कलाम फ़रमाए जैसा कि शबे मेअराज (मेअराज की रात) में।

५—अल्लाह तआला सपने की हालत में कलाम फ़रमाए। यह किस्म भी सही हदीसों से साबित है।

६—फ़रिश्ता सपने की हालत में आकर कलाम करे। मगर अन्तिम दो किस्मों से कुरआन मजीद खामी है। पूरा कुरआन जागने की स्थिति में नाज़िल हुआ। अगरचे कुछ उलमा ने सूर: कौसर को आखिरी किस्म से माना है लेकिन तहक़ीक़ करने वालों ने इसको रद्द कर दिया है और उन के (शक) संदेह का उचित जवाब दे दिया है। (इतक़ान)

कुरआन मजीद के बदफ़ात (कई बार) नाज़िल होने में यह भी हिकमत थी कि इस में कुछ आयतें वे थीं जिन का किसी समय रद्द कर देना अल्लाह को मंज़ूर था। कुरआन मजीद में तीन प्रकार के मंसूख़ात हुए हैं। कुछ वे जिनका हुक्म भी मंसूख़ (रद्द) और तिलावत भी मंसूख़।

पहली मिसाल

لَوْ كَانَ لِابْنِ آدَمَ وَإِذَا مِنْ مَّالٍ أَحَبَّ أَنْ يَكُونَ إِلَيْهِ الثَّانِي وَلَوْ كَانَ لَهُ الثَّانِي لَأَحَبَّ
 أَنْ يَكُونَ إِلَيْهِمَا الثَّالِثُ وَلَا يَمْلَأُ جَوْفَ ابْنِ آدَمَ إِلَّا السَّرَّابُ وَيَتَوَبُّ اللَّهُ عَلَى مَن تَابَ

सूर: लम यक़ुन में—'लव का-न लि इन्ने आ-द-म व दिह्यम मिम्मालिन् ल-अहब्-व अय्यकू-न इलय्हिस्सानी व लव का-न लहुस्सानी ल-अहब्-व अय्यकू-न इलय्हिम्सालिसु व ला यमं लऊ जवफ़न्नि आ-द-मा इल्लत्ताराबु व यतूबुल्लाहु अला मन ता-ब' भी था।

दूसरी मिसाल

दुआ-ए-कुनूत भी कुरआन की दो सूर: थी। कुछ वे हैं जिन की तिलावत मंसूख़ हो गयी मगर हुक्म बाकी है जैसे कि आयते रजम, कि हुक्म इस का वाक़ी है मगर तिलावत इस की नहीं होती। ये दोनों किस्में कुरआन से निकाल दी गयी हैं और इनका लिखना भी कुरआन मजीद में जायज़ नहीं है। कुछ वे हैं जिन की तिलावत बाकी है मगर हुक्म मंसूख़ हो गया है। यह किस्म कुरआन मजीद में दाख़िल है और इस की बहुत-सी मिसालें हैं। कुछ लोगों ने मुस्तक़िल किताबों में इन को जमा किया है। तफ़सीर (टीका) के फ़न (कला) में उन से बहुत बहस होती है मगर यहां उन की तफ़सील (विवरण) का अवसर नहीं। (तफ़सीर इतक़ान)

जब शाफ़अे क़यामत (क़यामत के दिन सिफ़ारिश करने वाले) और उम्मत को पनाह देने वाले हुज़ूर सल्ल० ने रफ़ीक़े आला जल्ल मुजद्दह की रहमत में सकूनत अख़्तियार फ़रमाई और वह्य का उतरना बंद हो गया। कुरआन मजीद किसी किताब में, जैसा कि आजकल है जमा नहीं था अलग-अलग चीज़ों पर सूरतें और आयतें लिखी हुई थीं और वे अलग-अलग लोगों के पास थीं। अधिकांश सहाबा को कुरआन मजीद पूरा ज़वानी याद था। सब से पहले कुरआन मजीद को एक जगह जमा करने का ख़्याल हज़रत अमीरुल मोमिनीन फ़ारूक़ आज़म रज़ि० के दिल में पैदा हुआ और अल्लाह ने उन के ज़रिए से अपने इस सच्चे वायदे को पूरा किया जो अपने पैग़म्बर से किया था अर्थात् कुरआन मजीद के हम हाफ़िज़ हैं इस का जमा करना और हिफ़ाज़त करना हमारे जिम्मे है। यह ज़माना हज़रत अमीरुल मोमिनीन सिद्दीक़ अक़बर रज़ि० की ख़िलाफ़ते राशिदा का था। हज़रत फ़ारूक़ रज़ि० ने उन की सेवा में अर्ज किया कि कुरआन के हाफ़िज़ शहीद होते जा रहे हैं और बहुत से यमामा की जंग में शहीद हो गए। मुझे डर है कि यदि यही हाल रहेगा तो बहुत बड़ा हिस्सा कुरआन मजीद का हाथ से जाता रहेगा।

अतः मैं उचित समझता हूँ कि आप इस तरफ तबज्जोह दें और कुरआन मजीद के जमा करने का प्रबन्ध करें। हज़रत सिद्दीक़ ने फ़रमाया कि जो काम नबी सल्ल० ने नहीं किया उस को हम कैसे कर सकते हैं? हज़रत उमर फ़ारूक़ ने अर्ज किया कि खुदा की क़सम यह बहुत अच्छा काम है। फिर कभी-कभी हज़रत फ़ारूक़ रज़ि० इस की याद दिलाते रहे यहाँ तक कि हज़रत सिद्दीक़ रज़ि० के दिले मुबारक में भी यह बात जम गयी। उन्होंने ज़ैद बिन साबित रज़ि० को तलब किया और यह सब क्रिस्ता बयान करके फ़रमाया कि कुरआन मजीद को जमा करने के लिए मैंने आप को चुना है, आप कातिबे बह्य (बह्य को लिखने वाले) थे और जवान बनेक हैं। उन्होंने भी वही बात कही कि जो काम नबी सल्ल० ने नहीं किया, उस को हम लोग कैसे कर सकते हैं? अन्त में वह भी राजी हो गए और उन्होंने बड़े अह्ममाम (बहुत प्रबन्धित ज़िम्मेदारी) से कुरआन मजीद को जमा करना शुरू किया।

ज़ैद बिन साबित रज़ि० को चुने जाने की वजह उलमा ने यह लिखी है कि हर साल रमज़ान में हज़रत ज़िन्नल अलैहिस्सलाम से नबी सल्ल० कुरआन मजीद का दौर (पढ़ कर सुनना) किया करते थे और इंतक़ाल के साल में दो बार कुरआन मजीद का दौर हुआ और ज़ैद बिन साबित रज़ि० इस अन्तिम दोरे में शरीक थे और इस अन्तिम दोरे के बाद फिर कोई आयत मंसूख (रद्द) नहीं हुई। जितना कुरआन इस दोरे में पढ़ा गया, वह सब बाक़ी रहा अतः उनकोउन आयतों का ज्ञान था जिनकी तिलावत मंसूख हुई थी। (शरह सन्न.)

जब कुरआन मजीद सहाबा रज़ि० के प्रबन्ध से जमा हो चुका, हज़रत फ़ारूक़ रज़ि० ने अपनी खिलाफ़त के ज़माने में उस की नज़र सानी (दोबारा देखना) की और जहाँ कहीं किताबत (लिखने में) ग़लती हो गयी थी उस को ठीक किया। सालों इस चिन्ता में रहे और कभी-कभी सहाबा रज़ि० से मुनाज़िरा भी किया। कभी सेहत इसी मक्तूब (लिखा हुआ) की जाहिर होती थी, कभी इस के खिलाफ़, तो फ़ौरन उस को सही कर देते थे फिर जब ये सब दर्जे तें हो चुके तो हज़रत फ़ारूक़ रज़ि० ने इस के पढ़ने-पढ़ाने की सस्त व्यवस्था की और हाफ़िज़ सहाबा रज़ि० को दूर के देशों में कुरआन व फ़िज़ह की शिक्षा के लिए भेजा, जिस का सिलसिला हम तक पहुँचा।

सच यह है कि हज़रत फ़ारूक़ रज़ि० का एहसान इस बारे में पूरी उम्मेते मुहम्मदिया (मुसलमानों) पर है। उन्हीं की बदौलत आज हमारे पास कुरआन मौजूद है और हम उसकी तिलावत से लाभ उठाते हैं। इस एहसान की मक़ाफ़ात (बदला) किस से हो सकती है। ऐ अल्लाह ! अपने रिज़वान (ज्ञान) की ख़लअतें (इनाम) उन को प्रदान कर और ख़लअत व करामात का ताज उन के मुक़द्दस सर पर रख। आमीन।

फिर हज़रत उस्मान रज़ि० ने इस एहसान को और भी कामिल (पूरा) कर दिया। अपनी खिलाफ़त के ज़माने में उन्होंने इस महक़फ़ शरीफ़ (कुरआन) की सात नक़लें (प्रतियाँ) करा कर दूर-दूर के देशों में भेज दीं। और तिलावत क़िरआत (कुरआन पाठ करने के तरीक़ों) की वजह से जो मतभेद और झगड़े हो रहे थे और एक दूसरे की क़िरआत को हक़ के खिलाफ़ और ग़लत समझा जाता था, इन सब झगड़ों से इस्लाम को पाक कर दिया। केवल एक क़िरआत पर सब को सहमत कर दिया। अब अल्लाह के शुक्र से एक मजबूत किताब मुसलमानों के पास है। कोई मजहब दुनिया में इसकी मिसाल नहीं ला सकता। इन्जील व तौरात की हालत नाज़ुक है उनमें वह कमी-बेशी हुई कि खुदा की पनाह। कुरआन की निस्बत (बारे में) विरोधियों को भी इक्क़रार है कि यह वही किताब है जिसकी निस्बत मुहम्मद सल्ल० ने खुदा का कलाम होने का दावा किया था इस में किसी क्रिस्म की कमी ज़्यादती उनके बाद नहीं हुई। बल्हम्दु लिल्लाह अल। जालिक

कुरआन मजीद में आयतों व सूरतों की तरतीब जो इस ज़माने में है यह भी सहाबा रज़ि० ने दिया है मगर न अपनी राय व अनुमान में से, बल्कि नबी सल्ल० जिस तरतीब (ढंग) से पढ़ते थे और जो तरतीब उस सुबारक दौर में थी उसके थोड़ा भी खिलाफ़ नहीं किया, केवल दो सूरतों की तरतीब अलबत्ता सहाबा रज़ि० अपने क़यास (अनुमान) से दी है। सूर: बराअत और अन्फाल, तो यह भी निश्चय थी तोहे महफूज़ के खिलाफ़ न होगी। जिसका मुहाफ़िज़ इस क़दर कादिर व कबी (शक्तिशाली) हो उस में उसकी तरतीब भी इच्छा के खिलाफ़ नहीं हो सकती।

कुछ और सहाबा जैसे इब्ने मसऊद रज़ि० और अबी बिन कअब रज़ि० ने भी कुरआन मजीद को जमा किया था। किसी की तरतीब उतरने के मुताबिक़ थी किसी की ओर किसी तरह। जगह-जगह वे आयतें जिनकी तिलावत मन्सूख़ थी भी इनमें किसी उद्देश्य से शामिल थी। कहीं-कहीं तपसीरी शब्द उनमें लिखे हुए थे। इन सब मुसहफ़ों (नुस्खों) को हज़रत उस्मान रज़ि० ने ले लिया वना आने चल कर इनकी वजह से सख़्त मतभेद पैदा होता। इसके अलावा यह सहमत शक्ति जो इस मसहफ़ के जमा करने में थी इन मुसहफ़ों में कहां। वह केवल एक ही व्यक्ति की मेहनत का नतीजा थे इस वजह से और भी ख़राबियां उनमें होंगी।

सहाबा रज़ि० के ज़माने में कुरआन मजीद में सूरतों के नाम, पारों के निशान आदि कुछ न थे, बल्कि अक्षरों पर बिन्दु (नुक्ते) भी न दिए गए थे बल्कि कुछ सहाबा इसको बुरा समझते थे। वे चाहते थे कि मुसहफ़ में सिवाए कुरआन के और कोई चीज़ न लिखी जाए। अब्दुल मलिक के ज़माने में अबुल असवद या हज़रत हसन बसरी रह० ने उस में नुक्ते बनाये और सूर: और पारों के नाम भी लिख दिए गये। उलमा इन सब चीज़ों के कारणों (जवाब) पर सहमत हैं इस लिए कि ये ऐसी कोई चीज़ नहीं है, जिनके कुरआन होने का संदेह हो और मना उन चीज़ों का लिखना है जिनका कुरआन होने का शक़ (संदेह) पड़े।

ख़लूसेनीयत (सही नीयत) व कुरआन की तिलावत के आदाब

बुख़ारी व मुस्लिम में हज़रत उमर बिन ख़ताब रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया, हर अमल का आधार नीयत पर है और हर व्यक्ति को वही मिलेगा जिसकी उसने नीयत की है। तिलावत के समय वुजू के बाद पाक जगह में किस्ले की ओर हो कर यह ख़याल करता हुआ तिलावत करे कि मैं तमाम मलूक (जीव) के पैदा करने वाले का कलाम पढ़ रहा हूँ जिसके अधिकार में मेरी जान है और रिज़क के अस्बाब हैं। तिलावत को बिस्मिल्लाह से शुरू करे। बशारत (ख़ुशख़बरी) वाली आयतों पर ख़ुश हो और अज़ाब वाली आयतों पर रोए, या कम से कम रोना न आए तो रोने की सूरत बनाए। अगर वे वुजू हो तो ग़िलाफ़ (कुरआन जिस कपड़े में लिपटा होता है) या किसी और कपड़े से कुरआन को हाथ लगाए कि ऐसी सूरत में बिना इसके कुरआन को हाथ लगाना जाइज़ नहीं है। मगर बिना वुजू कुरआन का पढ़ना जायज़ है। तमाम उलमा की सहमति है कि बिना गुस्ले किए अर्थात् जनाबत की हालत वाले मर्द या हैज़ व निकास वाली औरत को कुरआन का पढ़ना हराम है।

हज़रत आइशा रज़ि० नबी सल्ल० की कैफ़ियत बयान फ़रमाती हैं कि आप हर हाल में तिलावत फ़रमाया करते थे, वुजू की हालत में भी, बिना वुजू की हालत में भी, हां अलबत्ता जनाबत की हालत में न करते थे।

कुरआन मजीद की तिलावत में एक खास समय तै कर लेना भी सही है। अधिकांश सहाबा फ़ज्र की नमाज़ के बाद कुरआन मजीद पढ़ा करते थे। समय तै कर लेने में नाशा (वक़फ़ा) भी नहीं होता।

सही यह है कि कुरआन मजीद की तिलावत और पढ़ने के लिए किसी उस्ताद से इजाज़त लेना या उसको सुनाना शर्त नहीं है, हां इतना ज़रूरी है कि कुरआन मजीद सही पढ़ता हो। यदि इतनी योग्यता अपने में न देखे तो उसको ज़रूरी है कि किसी उस्ताद को सुना दे, या उस से पढ़ ले।

(इतक़ान)

यह भी शर्त नहीं है कि कुरआन मजीद के मायने (अर्थ) समझ लेता हो। और यदि कुरआन मजीद में एराब (मात्राएं) न हों तब भी उसके सही एराब पढ़ लेने पर कादिर (सामर्थ) हो।

सही यह है कि कुरआन मजीद की तिलावत की नेमत केवल इन्सान को दी गयी है, शैतान आदि इसकी तिलावत पर कादिर नहीं है, बल्कि फ़रिश्तों को भी यह नेमत नसीब नहीं हुई। वे भी इस आशा में रहते हैं कि कोई इन्सान तिलावत करे और वे सुनें। हां मोमिन जिनको अलवत्ता यह नेमत मिली है और वे तिलावत पर कादिर (सामर्थ) हैं

(नफ़तुल मरज़ान-इतक़ान)

शायद इससे हज़रत जिब्रील अलैहि० अलग हों, इस लिए कि उनकी निस्वत (वारे में) हदीसों में आया है कि हर रमज़ान में नबी सल्ल० से कुरआन मजीद का दौर किया करते थे और हाफ़िज़ इब्ने हज़र अस्कलानी रह० ने फ़तहूल बारी में व्याख्या कर दी है कि कभी वे पढ़ते थे और हज़रत (सल्ल०) सुनते थे और कभी आप (सल्ल०) पढ़ते थे और वे (जिब्रील अलैहि०) सुनते थे।

मस्तून है कि पढ़ने वाला शुरू करने से पहले,

(क़लाहु आलम)

‘अबूजुबिल्लाहि मिनशैतानिर्रजोम-

-बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहोम’ ०

أَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पढ़ ले और यदि पढ़ने के दौरान कोई दुनिया की बात करे तो उसके बाद फिर इसको पढ़ ले।

कुरआन मजीद की तिलावत मुसहफ़ (कुरआन) में देखकर ज़्यादा सबाब रखती है बजाए ज़वानी पढ़ने के। इस लिए कि वहां दो इबादतें होती हैं एक तिलावत, दूसरे कुरआन मजीद का दोवार (दर्शन)।

कुरआन मजीद पढ़ने की हालत में कोई बात करना या और किसी ऐसे काम में लगना जो दिल को दूसरी तरफ़ फेरे मक़रूह है। कुरआन मजीद पढ़ते समय अपने को पूरी तरह उसी की तरफ़ लगा दे, न यह कि ज़बान से शब्द जारी हों और दिल में इधर-उधर के ख़याल।

कुरआन मजीद की हर सूरः के शुरू में बिस्मिल्लाह कह लेना मुस्तहब (बेहतर) है। मगर सूरः बराअत के शुरू में बिस्मिल्लाह न पढ़ना चाहिए। पारा व अलम् में जो सूरः तीबा ‘बरा अन्मुमिन-ल्लाहि’ से शुरू है इस पर बिस्मिल्लाह नहीं लिखी है इस का हुक्म यह है कि यदि कोई ऊपर से पढ़ता चला आता है तो इस पर पढ़ूँच कर बिस्मिल्लाह न पड़े, वैसे ही शुरू कर दे और यदि किसी ने इसी जगह से शुरू किया है या कुछ सूरः पढ़ कर पढ़ना बन्द कर दिया था फिर बीच में से पढ़ना शुरू किया तो इन दोनों हालतों में बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहोम पढ़ना चाहिए।

बेहतर यह है कि कुरआन मजीद की सूरतों को उसी तरतीब से पढ़ें जिस तरतीब से कुरआन मजीद में लिखी हैं, हां बच्चों के लिए आसानी के उद्देश्य से सूरतों का बिना तरतीब पढ़ाना, जैसा कि आजकल पारा अम्-म य-त-सा अयून में क़ायदा है बिना कराहत जायज़ है।

(रददुल मुहतार)

और आयतों का बिना तरतीब पढ़ना आम सहमति से मना है।

(इतक़ान)

कुरआन मजीद की विभिन्न सूरतों की आयतों को एक साथ मिला कर पढ़ने को उलैमा ने मकरूह लिखा है इस वजह से कि हजरत बिलाल रजि० को आप (सल्ल०) ने इस से मना करमाया था। (इतक़ान आदि)

मगर मेरे ख्याल में यह कराहते (मनाही) उस समय होगी जब इन आयतों की तिलावत सबाब की वजह से हो। इस लिए कि झाड़ू-कूँक के बास्ते विभिन्न आयतों का एक साथ पढ़ना नबी सल्ल० और उन के सहाबा से सही तरह से साबित है और हर एक आयत के गुण अलग-अलग हैं अतः जो खास असर हमें दरकार है वह जिन-जिन आयतों में होगा हम को उन का पढ़ना जरूरी है।

कुरआन मजीद अत्यन्त मधुर आवाज़ से पढ़ना चाहिए जिस से जितना हो सके। सही हद्दीसों में आया है कि नबी सल्ल० ने फ़रमाया कि जो व्यक्ति कुरआन मजीद मधुर आवाज़ से न पढ़े, वह हम में से नहीं है। (दारमी) मगर जिस की आवाज़ ही अच्छी न हो वह मजबूर है। और कुरआन क़िरअत के कायदों से पढ़ना चाहिए। राग से पढ़ना और गाना कुरआन मजीद का सहमत रूप से मकरूह तहरीमी है। कुरआन मजीद ठहर-ठहर कर पढ़े। जल्दी-जल्दी पढ़ना भी मकरूह है।

जो व्यक्ति कुरआन मजीद के मायने समझ सकता हो उस को कुरआन मजीद पढ़ते समय उस के मायनों पर गौर करना और हर मज़मून (विषय) के मुताबिक अपने में उस का असर पैदा करना सुन्नत है। जैसे, जब कोई व्यक्ति ऐसी आयत पढ़े जिसमें अल्लाह पक् की रहमत का जिक्र हो तो रहमत मांगे और अज़ाब का जिक्र हो तो पनाह मांगे। कोई जवाब मांगने वाला मज़मून हो तो उसका जवाब दे। जैसे हजरत नबी सल्ल० सूरः वत्तीन के अन्त में जब पहुंचते तो 'बला व अना अला जालि-क मिन शशाहिदीन' पढ़ लेते (तिमिज़ी) या सूरः क्रियामत के अन्त में जब पहुंचते तो फ़रमाते कि—'बला' (तिमिज़ी) सूरः फ़ातिहा को जब ख़त्म करते तो आमीन कहते। लेकिन यह जवाब देना या दुआ मांगना उस समय मसनून है कि कुरआन मजीद फ़र्ज़ नमाज़ में या तरावीह में न पढ़ा जाता हो। यदि फ़र्ज़ या तरावीह में पढ़ा जाता हो तो फिर जवाब न देना चाहिए। (रददुल मुल्लार)

कुरआन मजीद पढ़ने की हालत में रोना मुस्तहब है। यदि रोना न आए तो अपनी संगदिली (पत्थरदिली) पर अफ़सोस करे।

सूरः बज़्रज़हा के बाद से अन्त तक हर सूरः के ख़त्म होने के बाद अल्लाहु अक़बर कहना मुस्तहब है। कुरआन मजीद ख़त्म होने के बाद दुआ मांगना मुस्तहब है। इस लिए कि नबी सल्ल० से रिवायत है कि हर ख़त्म के बाद दुआ कुबूल होती है। (इतक़ान)

शबे क़द्र का बयान

हदीस से मालूम होता है कि शबे क़द्र रमज़ान शरीफ़ की अन्तिम ताक़ (दो से न कटने वाले हिन्द से) रातों, इक्कीसवीं से सत्ताइसवीं तक है (अल-ग़ैबु अिन्दल्लाह) लेकिन हम २७ रमज़ान की रात शबे क़द्र मानते हैं। यह बहुत बरकत वाली रात है। हमें चाहिए कि इस मुबारक और बरकत वाली रात में दिल की गहराई व नेकनीयत के साथ कुरआन की तिलावत करें और अल्लाह से दुआ मांगें क्योंकि इस रात को हर बात का फ़ैसला होता है हर एक जानदार की जान व मौत, रिश्क का अंदाज़ा होता है कि इतना शेष और इतना ख़त्म हो चुका है। बुल्लारी व मुस्लिम शरीफ़ में इन्ने उमर रजि० से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फ़रमाया कि क़ाबिले रश्क वह आदमी है कि जो रात और दिन के समय में कुरआन की तिलावत करता है। शबे मेअराज और शबे बराअत में भी कुरआन मजीद की तिलावत और इबादत करना अफ़ज़ल (अच्छा) है इससे दिल की मुरादें (इच्छाएं) पूरी होती हैं और दुआएं कुबूल होती हैं।

मनाज़िले कुरआन शरीफ़

क्रम सं०	सूरः	सूरः सं०	पृष्ठ सं०	पारः सं०	नाम पारः
१	अल-फ़ातिहः	१	१-१६२		
२	अल-माइदः	५	१६४-३२४	६	ला युहिबुल्लाह
३	यूनुस	१०	३२६-४४४	११	याअ तजिऊना
४	बनी इस्राइल	१७	४४६-५७८	१५	सुब्हानल्लजी
५	अश शोअरा	२६	५८०-७०६	१६	वक़ालल्लजी-न
६	वस्साफ़ात	३७	७०८-८२०	२३	वमालि-य
७	क्राफ़	५०	८२२-९७३	२६	हामीम

सजदाते तिलावत

क्रम सं०	पारा	सूरः	सजदे वाले शब्द	सजदे का स्थान	पृष्ठ सं०	आयत
१	६	अल आराफ़	यसजुदून	यसजुदून	२७६	२०६
२	१३	अर-रअद	वलिल्लाहि यस्जुदू	वल आसाल	३६६	१५
३	१४	अन-नहल	"	मा युअ् मरून	४३०	४६-५०
४	१५	बनी इस्राइल	यखिररून लिलअ-लकान	खुशूआ	४६४	१०७-१०९
५	१६	मरयम	खर्ह सुजदा	व नुकया	४८८	५८
६	१७	अल हज	यसजुद लहु	मा-यशा-अ	५२८	१८
७	१७	अल हज	वसजुदू	तुफ़लिहून	५४०	७७
८	१६	शाफ़यीयों में	असजुद	नुफ़रा	५७८	६०
९	१६	अल फ़ुक्कान	अल्लाय सजुदू	रब्बिल अरशिल अज़ीम	६००	२५-२६
१०	२१	अस-सजदा	खर्ह असजुद	ला यस्तकविरून	६६०	१५
११	२३	साद	व खर्ह राकिआ	व अना-व	७२२	२४
१२	२४	हामीम सजदा	वसजुदू लिल्लाहि	ला यसमऊना	७६४	३७-३८
१३	२७	अन-नज्म	फस जुद	वाअ बुद	८४०	६२
१४	३०	अज-इन्शिकाक़ा	ला यहजुदून	ला यस जुदना	८४६	२१
१५	३०	अल अलक़	वसजुद	वक़तरिब	८६२	१६

१. इन दो सज्दों में मतभेद है। सूर: २२ आयत ७७ पर इमाम शाफ़्फी रह० के नज़दीक सज्दा है लेकिन इमाम अबू हनीफ़ा रह० के नज़दीक नहीं है और सूर: ३८ आयत २४ पर इमाम अबू हनीफ़ा के नज़दीक सज्दा है लेकिन इमाम शाफ़्फी के नज़दीक नहीं है। बहरहाल दोनों आलिमों के नज़दीक सज्दों की कुल तादाद १४ ही है।

कुरआन मजीद को कितने समय में खत्म किया जाए

अल्लाह के रसूल नबी सल्ल० ने फ़रमाया जिसने तीन दिन से कम में कुरआन मजीद खत्म किया वह कुछ न समझ सका। इमाम अबू हनीफ़ा से नक़ल है कि जिसने हर साल में दो बार कुरआन मजीद खत्म किया उसने हज़्र अदा किया। इस लिए हज़रत (सल्ल०) ने बक्रात (इन्तक़ाल) के साल में दो ही बार खत्म किया था। हज़रत अली रज़ि० फ़रमाते हैं कि उस इबादत (उपासना) में कुछ बेह तरी नहीं है जिसमें समझ नहीं और न उस क़िराअत (पढ़ने में) में जिसमें फ़िक्र (सोच) न हो। इमाम ग़ज़ाली रह० फ़रमाते हैं, अपने आप को कुरआन मजीद के खत्म करने की गिनती पर हावी न करो। बल्कि एक आयत का सोच कर पढ़ना सारी रात में दो कुरआन खत्म करने से बेहतर है।

हज़रत अबूज्जर गिफ़ारी रज़ि० कहते हैं कि एक बार नबी सल्ल० हमारे साम्ने खड़े हुए तो आप (सल्ल०) यह आयत बड़ी देर तक पढ़ते रहे—

(इन तुअज़िज़बहुम फ़ इन्नुहुम श्रिबादुक)

हज़रत इब्ने उमर रज़ि० से रिवायत है कि नबी सल्ल० ने मुझे पांच दिन से कम समय में पूरा कुरआन मजीद खत्म करने की इजाज़त नहीं दी। (हदीस सही बुख़ारी)

तिलावत के सज्दों का बयान

सज्दए तिलावत उन्हीं लोगों पर अनिवार्य है जिन पर नमाज़ अनिवार्य है। क़ज़ा (छूट हुई) नमाज़ें, हैज़ (मासिक धर्म) वाली औरत पर वाजिब नहीं। अवैध (नाबालिग) और ऐसे मजन्, दीवाने) पर वाजिब नहीं जिसका जुनून (दीवानापन) एक दिन रात से ज्यादा हो गया, चाहे उसके बाद खत्म हो या नहीं। जिस मजन् का जुनून (दीवानापन) एक दिन रात से कम रहे, उस पर वाजिब है। इसी तरह मस्त और जुनबी (वह व्यक्ति जिस पर मुस्ल वाजिब हो) पर भी।

तिलावत के सज्दे के सही होने की वही सब शर्तें हैं जो नमाज़ के सही होने की हैं अर्थात् तहारात (पाकी) और सतर (अर्थात् आवश्यक अंगों को ढाकना) और नीयत व क़िल्ले का सही होना। तहरीमा (तक्बोर) इसमें शर्त नहीं है। इसकी नीयत में आयत का सअयान (निर्धारण) शर्त नहीं कि यह सज्दा क़लां आयत के कारण से है और यदि नमाज़ में सज्दे की आयत पढ़ी जाए और तत्काल सज्दा किया जाए तो नीयत भी शर्त नहीं। (रद्दुल मुहत्तार)

जिन चीज़ों से नमाज़ फ़ासिद (ख़राब) हो जाती है उन चीज़ों से सज्दए सहव (भूल का सज्दा) में भी ख़राबी आ जाता है और फिर इसका इबादा (दोबारा करना) वाजिब (अनिवार्य) हो जाता है हां इस क़दर अम़्तर है कि नमाज़ में क़हक़हा से बुज़ू टूट जाता है और इसमें क़हक़हे से बुज़ू नहीं टूटता और औरत की महाज़ात भी यहां मुफ़सिद (ख़राब) नहीं।

तिलावत का सज्दा यदि खारिज नमाज (नमाज से बाहर) में बाजिब हुआ हो तो बेहतर है कि तुरन्त अदा कर ले और यदि उस समय अदा न करे तब भी जायज है मगर मकरूह है और यदि नमाज में बाजिब हुआ तो उसका अदा करना तुरन्त बाजिब (अनिवार्य) है, देरी की इजाजत नहीं है।
(रददुल मुहत्तार)

खारिजे नमाज (नमाज से बाहर) का सज्दा नमाज में और नमाज का खारिज (बाहर) में, बल्कि दूसरी नमाज में भी अदा नहीं किया जा सकता। अतः कोई आदमी नमाज में सज्दे की आयत पढ़े और सज्दा करना भूल जाए तो इसका गुनाह उस के जिम्मे (सर) होगा जिस की तदबीर (इलाज) इसके सिवा कोई नहीं कि तौबा करे, या अरहमुराहिमीन (रहम करने वाला) अपने फ़जल व करम (दया दृष्टि) से माफ़ फ़रमा देगा।
(बहुर्राईक)

यदि कोई आदमी नमाज की हालत में किसी दूसरे से सज्दे की आयत सुने, चाहे वह दूसरा भी नमाज में हो या न हो यह सज्दा खारिजे नमाज (नमाज से बाहर) का समझा जाएगा और नमाज के अन्दर वह अदा नहीं किया जाएगा, बल्कि खारिजे नमाज में।

यदि सज्दे की आयत तिलावत एक ही मज्लिस (सभा) में कई बार की जाए तो एक ही सज्दा बाजिब (अनिवार्य) होगा और यदि एक सज्दे की आयत की तिलावत की जाए, फिर वही आयत अलग-अलग लोगों से सुनी जाए, तब भी एक ही सज्दा बाजिब (अनिवार्य) होगा। यदि सुनने वालों की मज्लिस न बदले तो एक ही सज्दा बाजिब (अनिवार्य) होगा, चाहे पढ़ने वालों की मज्लिस बदल जाए या न बदले और यदि सुनने वालों की मज्लिस बदल जाए तो इस पर कई सज्दे बाजिब होंगे, चाहे पढ़ने वालों की बदले या न बदले। यदि पढ़ने की बदल जाएगी तो उस पर भी कई सज्दे बाजिब होंगे।
(बहुर्राईक)

यदि एक सज्दे की आयत कई बार एक ही मज्लिस में पढ़ी जाए तो अस्तियार (इच्छा) है कि सब के बाद सज्दा किया जाए या पहली ही तिलावत के बाद, क्योंकि एक ही सज्दा अपने पहले और बाद की तिलावत के लिए काफी होता है मगर एहतियात (सावधानी) इसमें है कि सबके बाद किया जाए।
(बहुर्राईक)

यदि सज्दे की आयत नमाज में पढ़ी जाए और तुरन्त रुकूअ किया जाए या दो तीन आयतों के बाद और इस रुकूअ में झुकते समय सज्दे की नीयत भी कर ली जाए तो सज्दा अदा हो जाएगा और इसी तरह यदि सज्दे की आयत की तिलावत के बाद नमाज का सज्दा किया जाए, तब भी यह सज्दा अदा हो जाएगा और इसमें नीयत की भी जरूरत न होगी। (दुर्र मुहत्तार, रददुल मुहत्तार आदि)

जुमा और ईदैन (दोनों ईदें) और धोमी आवाज वाली नमाजों में सज्दे की आयत नहीं पढ़ना चाहिए, इसलिए कि सज्दा करने में मुक्तदियों (नमाज पढ़ने वालों) के इश्तिवाह (संदेह) का डर है।
(बहुरल राइक)

किसी सूरः का पढ़ना और ख़ास कर (मुख्य रूप से) सज्दे की आयत को छोड़ देना मकरूह है।
(बहुरल राइक आदि)

यदि हाजिरीत (उपस्थित जन) बुजू सहित सज्दे के लिए मुस्तअिद (तैयार) न बैठे हों तो सज्दे की आयत का धोमी आवाज से तिलावत करना बेहतर है इसलिए कि वे लोग इस समय सज्दा न करेंगे और दूसरे समय शायद भूल जाएं तो गुनहगार होंगे।
(दुर्र मुहत्तार आदि)

तिलावत के सज्दे का तरीका यह है कि क़िबला रु (क़िबले की ओर होकर) नीयत करके अल्लाहु अकबर कहे और सज्दा करे। फिर उठते समय अल्लाहु अकबर कह कर उठे। और खड़े होकर

सज्दा करना मुस्तहब है। तिलावत का सज्दा कई लोग मिल कर भी कर सकते हैं इस तरह कि एक आदमी को इमाम की तरह आगे खड़ा करे और स्वयं मुक्तदियों (नमाज अदा करने वाले) की तरह ताइन बना कर पीछे खड़े हों और उसकी पैरवी (अनुसरण) करें। यह सूरत असल में जमाअत की नहीं है। इसीलिए यदि इमाम का सज्दा किसी वजह से फ़ासिद (खराब) हो जाए तो मुक्तदियों (पीछे वालों) का फ़ासिद (खराब) न होगा और इसी कारण से औरत का आगे खड़ा कर देना भी जायज है।

सज्दे की आयत यदि फ़र्ज नमाजों में पढ़ी जाए तो उसके सज्दे में नमाज वाले सज्दे में नमाज वाले सज्दे की तरह 'सुव्हान रब्बियल आला' कहना बेहतर है और नफ़ल नमाजों में ख़ारिजे नमाज (नमाज से बाहर) में यदि पढ़ी जाए तो उसके सज्दे में अख़्तियार (इच्छा) है कि 'सुव्हाना रब्बियल आला' कहे और तस्बीहें जो हदीसों में आयी हैं, वे पढ़ें। इस तस्बीह की तरह—

'सज्दा वजही-य लिल्लजी ख-ल-कहू व सव्वरहू व वसवक समअहू व बसरहू बिहोनिही व कुव्वतिहि फ़तवारकल्लाहु अहसनुल खालिक्कीन०'

और दोनों को जमा कर ले तो और भी बेहतर है।

देवनागरी (हिंदी) में कुरआन मजीद को सही पढ़ने का तरीका

अरबी अक्षरों की आवाज का देवनागरी वर्णमाला

ث सा स	ت ता त	ب बा ब	ا अलिफ अ
د दाल द	خ खा ख	ح हा ह	ج जीम ज
س सीन स	ز जा ज़	ر रा र	ذ ज़ाल ज
ط तो त	ض जाद ज़	ص साद स	ش शीन श
ف फ़ा फ़	ع ग़ेन ग़	ع अंन अ	ظ जो ज़
م मीम म	ل लाम ल	ك काफ क	ق क़ाफ क़
ه हम्ज़ा अ	ह हा ह	و वाव व	ن नून न
	ة गोल ते त	ي या य	

अरबी रस्मुल्खत (लिपि) में तलफ़ूज (उच्चारण) के मुकत-ए-नजर (दृष्टि) से जो अक्षर होते हैं उन का चार्ट दिया गया है और ब्रैकेट () में उन को पढ़ने की आवाज (तलफ़ूज) भी दिया गया है।

चार्ट में आखिर के अक्षर (8) गोल "ते" का प्रयोग शब्द में आखिर में होता है इस शब्द पर बक्रफा (विराम) करने पर त को हू या विसर्ग (:) पढ़ा जाता है और विराम न लेने व पढ़ते चले जाने पर (ط) त (ت 'ते') के समान पढ़ा जाता है जैसे शफ़ाअत पर बक्रफा करने पर शफ़ाअ: पढ़ा जायेगा। अगर किसी शब्द में गोल ता यानी त हो और उसके बाद का अक्षर किसी नियम के आधीन खामोश (मौन) हो जाये तो फिर त अन्तिम अक्षर रह जाने के फलस्वरूप ठहराव लेते समय " : " में बदल जाएगा। जैसे गिशावतुन् में न् गायब हो जाएगा और तब आखिरी बचे अक्षर त का विराम लेते समय : में बदल कर गिशाव: पढ़ा जाएगा।

नोट : पाठकों की सुविधा के लिए जरूरी कायदे (ग्रामर) मुकतसर कर के बयान किये जा रहे हैं कुरआन मजीद को अरबी के अलावा किसी दूसरी भाषा के रस्मुल्खत में लिखना या पढ़ना बहुत मुश्किल है। क्योंकि अरबी में लिखा कुछ होता है और पढ़ा कुछ जाता है। आयत पर बक्रफा किया जाता है इसलिए हम ने आयत पर हरफ़ को बक्रफा किया है और इबारत के अंदर बिल्कुल अरबी तरह अदा के मुताबिक़ देवनागरी में रूपांतर किया है और उसमें ठहरने और न ठहरने के रूमुजेंओकाफ की निशानियां भी दर्ज (अंकित) हैं और उन से मुतालिक़ (संबंधित) मालूमात अगले पन्नों पर दर्ज हैं। अलबत्ता जब तक खास अक्षरों के उच्चारण का सही ज्ञान न हो, तब तक लाअिल्म (न जानने वाला) के लिए यह ध्यान रखना जरूरी है कि वह ज (जाल), ज़ (जाद) ज (जो) और ज (जा) को ज (जीम) की तरह हरगिज न पढ़ें। बजाए ज (जीम) के ये अक्षर ज़ (ज़ा) के ज्यादा नज़दीक हैं। खास कर हिंदी जानने वालों को इन अक्षरों को समझ कर उनका सही उच्चारण सीखना चाहिए जैसे ث (सा), ح (बढ़ी हा), خ (खा), ذ (जाल), ز (जा), ص (साद), ض (जाद), ط (तो), ظ (जो), ع (ऐन), غ (गैन), ف (फ़ा) और ق (क्राफ़)। कुरआन मजीद को सही मखरज (उच्चारण) से क़िरअत (पाठ) करने के लिए कारीयों (कुरआन पाठ के विद्वानों) से सहायता लेनी चाहिए।

कुरआन मजीद के मत्न को अरबी के अलावा हिंदी या किसी दूसरी भाषा के रस्मुल्खत में रूपांतर करने पर उलमा की रायों में मतभेद है। कुछ उलमा का ख्याल है कि इस तरह करने से कुरआन मजीद के हरफ़ों की तहरीक़ (कटौती) होती है और उनको भय (डर) है कि ज़िम तरह इज़ील और तीरात तहरीक़ हो गयी वैसे ही खुदा न करे इस का भी वही हाल हो जबकि यह नामुम्किन है कढ़ीरों हाफ़िज़ों को कुरआन मजीद मुह जबानी याद है और इस (हिंदी) कुरआन में भी असल अरबी मत्न की किताबत का सफ़ा बराबर में है। हम ने अशाअते इस्लाम और तवलीग़ की नीयत से यह काम हिंदी में किया है कि जो हज़रात (लांग) किसी वजह से अरबी उर्दू की तालीम (शिक्षा) न हासिल (प्राप्त) कर सकें और वह कुरआन मजीद को पढ़ने के स्वाहिशमंद हैं वह फ़ायदा उठा सकें। मुसलमानों से गुज़ारिश है कि वह खुद भी अरबी उर्दू सीखें और अपनी आने वाली नसल को खास कर अरबी उर्दू की तालीम दें।



अन्तिमे क़िरअत यानी मखारिजे हुक्क का बयान (कुरआन के अक्षरों का उच्चारण संस्थान)

ا, ه	अ, ह	हलक़ (कण्ठ) के अगले हिस्से से ।
ع, ح	अ, ह	बीच (मध्य) हलक़ से ।
خ, غ	ख, ग	इतेहा-ए-हलक़ (हलक़ के अन्तिम भाग से)
ق	क़	जबान की जड़ और ऊपर के तालू की मदद से ।
ك	क	जबान के बीच और ऊपर के तालू से थोड़ा सा 'क़' (काफ़) के मखरज (उच्चारण) से हट कर ।
ج, ش, س	ज, श, य	जबान के बीच के हिस्से और तालू के बीच हिस्से के संयोग से ।
ز	ज	जबान के किनारे और दांतों की गिर: के पास से यानी सारे किनारे जबान के लगाने से बाईं ओर के ऊपर दाढ़ों की जड़ से या दाहनी तरफ़ से, मगर बाईं तरफ़ से आसान है ।
ل	ल	जबान की नोक और तालू के संयोग से ।
ن	न	जबान के सिरे और ऊपर के दांतों के नीचे से ।
ر	र	जबान के सिरे और ऊपर वाले सामने के दांतों के नीचे से 'न' के स्थान से कुछ आगे ।
ط, د, ت	त, द, त	जबान की नोक और ऊपर के दांतों की जड़ से मिला कर ।
س, ذ, ح	ज, ज़, स	जबान की नोक और अगले दांतों के किनारे से ।
ف	फ़	नीचे के होंठ के अन्दर ऊपर के दांतों के सिरे जब छूते हैं ।
ب	ब, म	दोनों होंठों के बीच में से ।
الف	अलिफ़	'अ' सिर्फ़ एक हवा है कि अन्दर से निकलती है ।
ج, ص, س	स, स, ज	जबान की नोक और अगले दांतों के बीच में ।
و	व	दोनों होंठों को करीब लाकर भी 'फ़' की तरह छूना नहीं चाहिए ।

कुरआन मजीद के रमूजे ओक्राफ़

हर एक भाषा के लोग जब बात-चीत करते हैं तो कहीं ठहर जाते हैं और कहीं नहीं ठहरते, कहीं कम ठहरते हैं कहीं ज़ियादा और इस ठहरने और न ठहरने को बात के सही बयान करने और सही मतलब समझने-समझाने में बहुत दखल है । कुरआन मजीद की इबारत (अरबी-लेख) भी बोल-चाल के बन्दाब में है इस लिये अहले इल्म (जानियों) ने इसके ठहरने, न ठहरने की अलामतें (चिह्न) मुकर्रर किए हैं । जिन्हें 'रमूजे ओक्राफ़' कहते हैं । खास ध्यान रखने की बात यह है कि आम तौर पर सभी जबानों (भाषाओं) में ठहरने के निशान होते हैं, लेकिन कुरआन में ठहरने और न ठहरने दोनों तरह के निशान होते हैं । जैसा कि हम बोलते हैं 'उठो मत, बैठो' इस जुमले (वाक्य) में अगर कोमा लगा कर लिखें जैसे 'उठो, मत बैठो' इस तरह लिखने और बोलने में उठने का हुक्म है और अगर इस जुमले को इस तरह लिखें जैसे 'उठो मत, बैठो' इस तरह लिखने और पढ़ने में बैठने का हुक्म है, इस मिसाल से हमका खुद अंदाज़ा करना चाहिये कि अरबी जो कुरआन की भाषा है जिसके पढ़ने में किस क़दर एह्तियात (सावधानी) की ज़रूरत है और तिलावते कुरआन (कुरआन पाठ) में

रुमूजे आक्राफ़ का लिहाज़ रखना किस कदर ज़रूरी है ताकि किताब की मंशा में फ़र्क न आने पाये। कुरआन मजीद के रुमूजे ओक्राफ़ यह हैं (○) आयत, (م) मीम, (ط) तो, (ج) जीम, (ز) जा, (ص) साद, (س) सले, (ق) काफ़, (ل) लाल, (ك) काफ़, (ف) फ़ाफ़, (سكته) सक्तः, (وقفه) वक़फ़ः (ن) ला, (ق) काफ़, (ه) कूफ़ी आयत का निशान, (.) मुआनिका का निशान, (—) मद, और (—) बड़ी मद। इनको सिर्फ़ निशानियां समझना चाहिये। यह कुरआन के मत्न का हिस्सा नहीं है अगर हम इसको हिन्दी में लिखते तो ना इल्मी में या रवानी (तेजी) में कोई आयतों में शामिल पढ़ लेता इस भूल से सावधान रहने के लिये हम ने इन को अरबी रस्मुलखत में किताबत (लिखाई) किया है।

रुमूज ओक्राफ़ से मुताल्लिक ज़रूरी मालूमात यह हैं—

○ ()	जहां बात पूरी होती है वहां (अरबी मत्न में) छोटा गोल दायरा बनाया जाता है यह हक़ीक़त में गोल ते (○) है। यह वक़फ़े-ताम की अलामत है यानी इस पर ठहरना चाहिये इस निशानी को आयत कहते हैं। पाठकों की सुविधा के लिये इस निशान के बीच आयत का नंबर (संख्या) भी दिया गया है जैसे आयत (२०)।
मीम	यह वक़फ़ लाज़िम का निशान है। इस पर ज़रूर ठहरना चाहिये अगर न ठहरा जाये तो अहतमाल (भय) है कि मतलब उलट हो जाये। मिसाल उदाहरण के तौर पर कोई कहे—आओ, मत जाओ। इस तरह कहने में आने का हुक्म है और जाने की मनाई। लेकिन अगर कोई कहे—आओ मत, जाओ। तो मतलब पहले के बिल्कुल उलट हो जाता है इस आखिरी जुमले में जाने का हुक्म है।
तो	यह वक़फ़े मुतलक़ का निशान है इस पर ठहरना चाहिये। फिर भी यह ठहराव वहां होता है जहां ठहरने के बावजूद अभी कहने वाला कुछ और बात कहना चाहता है। यह वक़फ़े जायज़ का निशान है। यहां ठहरना ज़्यादा बेहतर है, लेकिन न ठहरने को भी जायज़ (अनुमत) माना गया है।
जीम	यह वक़फ़ मुजबबज़ का निशान है। यहां न ठहरना ज़्यादा अच्छा है।
जे	यह निशान वक़फ़ मरहूस का है। यहां न ठहरना यानी मिला कर पढ़ना चाहिये, लेकिन अगर कोई थककर रुक जाये तो उसकी छूट है। ध्यान रहे कि, (जा) की निस्बत (अपेक्षा) (साद) पर मिला कर पढ़ना ज़्यादा पसन्द किया गया है।
साद	यहां मिला कर पढ़ना बेहतर है।
सले	यह कील-अलैहिल-वक़फ़ का खुलासा है। यहां नहीं ठहरना चाहिये।
काफ़	यह क्रद-यूसल का निशान है यहां कभी ठहरा भी जाता है, और कभी नहीं। लेकिन ठहरना बेहतर है।
सल्	यह लफ़्ज़ (शब्द) किफ़ है यानी ठहर जाओ। यह निशान वहां इस्तेमाल किया जाता है जहां पढ़ने वाले को मिला कर पढ़ते चले जाने का अंदेशा हो।
क़िफ़	यह सक्तः का निशान है यहां मामूली (साधारण) सा ठहरना चाहिये, लेकिन सांस न टूटने पाए।
मीन या	यह लम्बे सक्तः का निशान है। यहां सक्तः के मुकाबले ज़्यादा ठहरना चाहिये, लेकिन सांस न टूटने पाए सक्तः और वक़फ़ में सिर्फ़ यह फ़र्क है कि सक्तः में कम
सक्तः	
वक़फ़ः	

N

ला

ठहरना होता है, वक्रफः में ज्यादा ।

ला के मानी 'नहीं' के हैं । यह निशान कहीं आयत पर होता है और कहीं इबारत के अंदर । यह जब किन्हीं दो शब्दों के बीच में हो तो वहां हरगिज़ नहीं ठहरना चाहिये । आयत के ऊपर हो तो इस में इस्तिलाफ़ (मतभेद) है, (हमने हिन्दी कम्पोज़ में आयत के निशान से पहले दिया है) एक राय है कि 'ठहर जाये,' दूसरी 'न ठहर जाये' लेकिन ठहरा जाये या न ठहरा जाये इस से मतलब में फ़र्क़ नहीं आता । ठहरना उसी जगह नहीं चाहिये जहां इबारत के अंदर लिखा हो ।

قف

काफ़

यह कज़ालिक का निशान है यानी यहां यह समझना चाहिए कि इस से पहले जो निशान आ चुका है उसी के मुताबिक़ (अनुसार) यहां भी रुकना या न रुकना मुनासिब है ।

Δ

निशान

यह कूफी आयत का निशान है और मतलब वही है जो () आयत का है ।

नोट—ध्यान रखना चाहिए कि जहां कई निशान एक साथ हों वहां उनमें से किसी भी निशान पर अमल किया जा सकता है लेकिन बाद वाले निशान का हुक्म मानना ज्यादा उचित है

..

निशान

यह मुआनिकः की अलामत है हमेशा यह दोहरा यानी दो जगह नज़र आयेगा । इसका मतलब यह है कि इनके बीच में लिखे शब्दों को चाहे इनसे पहले ही इबारत के साथ जोड़ कर पढ़ें और चाहे इनसे बाद वाली इबारत के साथ । दोनों मतलब जायज़ (मान्य) है । हासिल यह हुआ कि दोनों निशानों में से एक जगह ठहरे तो दूसरी जगह मिला कर पढ़े । न दोनों जगह ठहरा जा सकता है और न दोनों जगह मिलाया जा सकता है । यह मुआनिकः दो तरह का होता है (१) अिन्दल् मुतअस्लिखीन (२) अिन्दल् मुतक़द्मीन ।

I

मद

(छोटी)

यह छोटी मद का निशान है । मद को संस्कृत में 'प्लुत' कहते हैं जिस अक्षर पर यह निशान होगा उसको इतना खींच कर पढ़ना चाहिए कि तीन अलिफ़ के बराबर हो ।

T

मद

(बड़ी)

यह बड़ी मद का निशान है । जिस अक्षर पर यह निशान होगा उस को इतना खींच कर पढ़ना चाहिए कि चार बार के बराबर हो । जैसे लिखा हो **وَجَا** (व-जा-अ) तो 'जा' जो कि ज+अ से बना है, के अ को ४ अ के बराबर खींचकर पढ़ना चाहिए । इसी तरह छोटी मद को भी ऊपर लिखे क़ायदे (नियम) के अनुसार पढ़ना चाहिए ।

बड़ी मद को पढ़ने का एक तरीका और भी है । जैसे किसी शब्द के अक्षर पर बड़ी मद हो और उस के आगे (अलिफ़) हो और अलिफ़ के आगे 'س' (तसिदद) हो तो इस को सात अलिफ़ के बराबर पढ़ना होगा जैसे **وَالصّٰلٰتِیْنَ** (वलज़्-ज़ाल्लीन), सही मख़रज (शुद्ध पाठ) के लिए क़ारी (कुरआन पाठ के विद्वानों) से सहायता लेना चाहिए ।

*

रकूअ

यह रकूअ (विराम) का निशान है । अगर हाशिये पर ऐसा निशान * र १/७/आ ६' लगा हो तो इसका मतलब है कि यह सूरः तीबा का पहला रकूअ है, पारः १० का सातवां रकूअ है और इस रकूअ में ६ आयतें हैं ।

●	पार: १, १, १	हर पार: को पढ़ने की आसानी के लिए चार बराबर हिस्सों में बांट दिया गया है। सब्भ (चोथाई), निस्फ (आधा) और सुल्स (तीन चौथाई) पर यह निशान दिया गया है। इसी तरह पूरे कुरआन को सात मंजिलों में बांटा गया है जो हर सफ़ह: (पृष्ठ) पर दर्ज (अंकित) हैं।
■	आधा कुरआन	यह निस्फ़ल कुरआन (आधा कुरआन) का निशान है। देखिये पृष्ठ ४६८, सूर: क़ह्फ़ आयत १६।
□	सज्द:	यह सज्द: का निशान है। कुरआन मजीद में चौदह मुक़ाम ऐसे हैं जहाँ सज्द: करने की हिदायत है। पढ़ने और सुनने वाले दोनों पर सज्द: करना लाज़िम है। घुटने टेककर हाथों की हथेलियाँ और दोनों हाथ की पाँचों उंगलियाँ ज़मीन पर रख कर और हाथों के बीच में माथा और नाक ज़मीन पर टेककर ज़बान से खुदा की पाकीज़गी (पवित्रता) बयान करने को सज्द: कहते हैं। सज्द: की तस्बीह (सज्द: में पढ़ने वाले शब्द) हमने सज्द: तिलावत के बयान में दी है। (मुकद्दमा कुरआन मजीद पृष्ठ नं० १५)

कुरआन मजीद के रस्मुल्खत से सम्बन्धित ज़रूरी याद दहानी

(१) कुरआन मजीद की तहरीर (लिखाई) से बेखबरी की वजह से अक्सर लोग कुरआन मजीद ग़लत पढ़ते हैं। चंद (कुछ) ज़रूरी मिसालें लिखी जा रही हैं। कुरआन मजीद के चंद अल्फ़ाज़ (शब्द) में (و) वाव लिखा जाता है लेकिन पढ़ा नहीं जाता जैसे (زَكَاةً) ज़क़ात, (صِوَاةً) हैवात को ज़कात या ह्यात पढ़ा जाता है यानी (و) वाव को न पढ़ना चाहिए और कुछ जगह (ي) य लिखी जाती है लेकिन पढ़ी नहीं जाती बल्कि उस के बदले में अलिफ़ पढ़ा जाता है जैसे (عِيسَىٰ مَوْسَىٰ) मुसाय ईसाय वगैर: को (عِيسَىٰ مَوْسَىٰ) मूसा, ईसा पढ़ना चाहिए इस को अलिफ़ मकसूरा कहते हैं और बाज़ जगह अलिफ़ मकसूरा की अलामत खड़े ज़बर () के अलावा कुछ नहीं होती तो इस खड़े ज़बर को भी एक अलिफ़ के बराबर पढ़ना चाहिए जैसे (سُحُورٍ رَحْمٰنٍ) को (سُحُورٍ رَحْمٰنٍ) रहमान, इस्हाक़ पढ़ना ज़रूरी है।

(२) यह बात याद रहे कि अरबी जुबान में 'याये मजहूल नहीं होती। मगर कुरआन मजीद में सिर्फ़ एक जगह पार: १२ सूर: हूद रुकूअ ४, आयत ४१ में एक लपज़ मज़रीहा लिखा है उस का उच्चारण (तलफ़ूज़) मज़रीहा नहीं है "मज़रेहा" है।

(३) नीचे लिखे दोनों लपज़ों में जो 'स' है इसमें (हफ़्) साद (س) के नजदीक सीन (س) पढ़ना चाहिये:— युसुफ़—पार: २ सूर: बक़र: आयत २४५ में। बसूततन्—पार: ८ सूर: अज़्राफ़ि आयत ६६ में।

(४) नीचे लिखे दोनों लपज़ों में जो (ص) साद ('स' है इनमें (س) सीन) 'स' और (ص) साद (س) दोनों पढ़ने का इस्तियार है:—हुमुल् मुसैतिरून्—पार: २७ सूर: तूरि आयत ३७ में। बिमुसैतिरिन्—पार: ३० सूर: शाशिय: आयत २२ में।

(५) कुल्बुजद्—क, त, ब, ज और द के मुतहरिक (हलन्त) अक्षर आने पर भी इनमें मामूली सा सस्वर जैसी हरकत पढ़ना चाहिए। जैसे 'अब्राहीम'। इसमें ब् को थोड़ा सा हिला कर उच्चारण करना चाहिए।

(६) यह भी याद रहे कि कुरआने करीम में अक्सर जगह (|) अलिफ लिखा जाता है मगर पढ़ा नहीं जाता जैसे कि (|) अलिफ जो अलामत जमा के लिए हो जैसे **قَالَ** (कालू'अ) में आखरी अलिफ पढ़ा नहीं जाता और **أَنَا** (अना) को **أَنْ** (अ-न) पढ़ा जाएगा मगर जब कहीं कुरआन मजीद में (عَنَا) अना (हम्जा, नून, अलिफ से) लिखा हो वहां आखरी अलिफ जरूर पढ़ा जाएगा जैसे **جَاءَنَا** जाअनान-जीरून

'अना' - कुरआन मजीद मूल (मतन) में जहां पर अलिफ सहित 'अना' लिखा हुआ है, जो जमीर (सबंनाम) है, वहां नून (न) के साथ का आखरी अलिफ (र) छोड़ कर 'अ-न' पढ़ना चाहिए। हिन्दी कुरआन मजीद के सफा ४६४ लाईन २३, सफा ५१२ लाईन २१, सफा ५१८ लाईन १ सफा ५२२ लाईन १६, सफा ५३४ लाईन २४, सफा ५४६ लाईन २७, सफा ५०२ लाईन १६, सफा ५६० लाईन २१, सफा ५६० लाईन २, सफा ६०२ लाईन १७, सफा ६०२ लाईन २०, सफा ६१० लाईन १५, सफा ६३८ लाईन २१, सफा ७२६ लाईन १४, सफा ७२६ लाईन १६, सफा ७२६ लाईन २४, सफा ७२८ लाईन ४, सफा ७४८ लाईन २१, सफा ७५६ लाईन २२, सफा ७८४ लाईन २, सफा ७६८ लाईन २३, सफा ८२६ लाईन ५, सफा ८६६ लाईन २१, सफा ८७४ लाईन १७, सफा ९०० लाईन २२, सफा ९३६ लाईन २५, सफा ९७० लाईन ६, में 'अना' जमीर (सबंनाम) है। पाठक वहां कोई निशान लगा ले ताकि उसे 'अ-न' पढ़े न कि 'अना'। फिर ध्यान दिलाना जरूरी है कि 'अन' को हिन्दी-उर्दू के तबज पर 'अन्' न पढ़ें बल्कि अरबी-संस्कृत के तबज पर 'अ-न' सस्वर ही पढ़ें। लेकिन सूरत २५ 'अल्फुक्कान' पार: १६ आयत ४६ पृष्ठ ५७६ पर 'अनासीय' में जो 'अना' है उसको 'अना' यानी अलिफ के साथ पढ़ना चाहिये, क्योंकि यह 'अना' जमीर (सबंनाम) नहीं है।

कुरआन मजीद के वह मुकामात जिनमें (|) अलिफ जायद होने पर भी जामोश (मोन) है जिनमें अलिफ का न पढ़ना जरूरी है।

सं०	नाम पारः	पारः	सूरः	रकूअ आयत पृष्ठ	अरबी लिपि में	अरबी ओर नागरी में पढ़िए
१	तिल्कुरुमुनु	(३)	(शुरू) आलि अमरान	१ १ ७४	अलिफ लाम् मीम् (१) अल्लाहु	अलिफ लाम् मीम् (१) अल्लाहु
२	लन्तनालू	(४)	आलि अम्रान	१५ १४४ १०४	अफा अम्रामात	अफा अम्रामात
३	"	"	"	१७ १५८ १०८	ला अिलत्साहि	स अिलत्साहि
४	लायुहिब्बुल्लाहु	(६)	मा'अिदः	५ २६ १७४	अन् तबू'आ	अन् तबू'आ
५	अिना समिअ	(७)	अन्आमि	४ ३४ २०४	मिन् नबाअिल्मुसलीन	मिन्नुनबाअिल्मुसलीन
६	कालत्मलअ	(८)	अजराफि	१३ १०३ २५६	मलाअिही	मलअिही
७	बजलम्	(१०)	सूरतुलौबः	७ ४७ ३०६	ला औजअ	स औजअ
८	यअतअिफून	(११)	यूनूस	८ ७५ ३४२	मलाअिही	मलअिही
९	"	"	"	९ ८३ ३४२	मलाअिहिम्	मलअिहिम्
१०	वमा' मिन्दाब्बतिन्	(१२)	हूद	६ ६८ ३६२	अिन्न समूदा	अिन्न समूद
११	"	"	"	६ ६७ ३६६	मलाअिही	मलअिही
१२	वमाअुबरिअ	(१३)	रअदि	४ ३० ३६८	अममुल्-लिततलुवा	अममुल्-लिततलुव
१३	मुबहानत्लअ	(१४)	कहफि	२ १४ ४६६	लन्नुद् अवा	लन्नुद् अव
१४	"	(१५)	"	४ २३ ४६८	लिशाअिन्	लिशाअिन्
१५	"	(१५)	"	५ ३८ ४७२	लाकिन्ना हुबल्लाहु	लाकिन्नु हुबल्लाहु

सं०	नाम बार:	वार:	सूर:	रकूअ आयत पृष्ठ	अरबी लिपि में	अरबी और नागरी में पढ़िए
१६	अक़्तरबलिल्लासि	(१७)	अबिवा'अि मुअमिनून	३ ३४ ५१४	अक़्तरबलिल्लासि	अक़्तरबलिल्लासि
१७	क़द् अक़्तरबलिल्लासि	(१८)	अबिवा'अि मुअमिनून	३ ४६ ५४६	अक़्तरबलिल्लासि	अक़्तरबलिल्लासि
१८	ब क़ालिल्लासि	(१९)	अल क़ुक्रानि	४ ३८ ५७६	समूदा व असूदाबरिस	समूदा व असूदाबरिस
१९	" "	(२०)	नमूलि	७ २१ ६००	ला अज्जहन्नहू	ला अज्जहन्नहू
२०	अमूमन ख़लकस्-समावाति	(२०)	क़ससि	४ ३२ ६१८	मलाअिही	मलाअिही
२१	" "	"	अन्कबूति	४ ३८ ६३६	आदंअ समूदा	आदंअ समूदा
२२	अल्लुमा अहिय	(२१)	क़मि	४ ३९ ६४८	लियबूवा	लियबूवा
२३	ब मालिय	(२२)	साफ़फ़ाति	२ ६९ ७१२	ला अलिल ज़हीमि	ला अलिल ज़हीमि
२४	अलिलहि युरदु	(२३)	सुलुअि	४ ४६ ७८२	मलाअिही	मलाअिही
२५	हामीम्	(२४)	मुहम्मबिन्	४ ४ ८०६	व ला किल्लियबू लुवा	व ला किल्लियबू लुवा
२६	" "	(२५)	"	४ ३१ ८१०	व नबूलुवा अस्वारकुम्	व नबूलुवा अस्वारकुम्
२७	" "	(२६)	हुजराति	२ ११ ८२०	बिअसलि-अस्मूल्-कुसूकु	बिअसलि-अस्मूल्-कुसूकु
२८	क़ालफ़मा बल्लुकुम्	(२७)	नज्मि	३ ५१ ८३८	व समूदा फ़मा	व समूदा फ़मा
२९	क़द् समिअल्लाहु	(२८)	हमरि	२ १३ ८७२	ला अन्तुम् सग़दु	ला अन्तुम् सग़दु
३०	तबारकल्लजी	(२९)	इहरि	१ ४ ८८८	सलासिला	सलासिला
३१	" "	(२९)	"	१ १५ ८९८	कानत क़वारीरा	कानत क़वारीरा
३२	" "	(२९)	"	१ १६ ९०८	क़वारीरामिन्	क़वारीरामिन्

तिलावत कुरआन मजीद के वक्त रूज (विरमाविराम), अलामत (चिह्न) और हरकात सकनात (गीत स्थिरता) पर पूर्ण सावधानी से अमल करना चाहिए। कुरआन मजीद में बीस मुकामात ऐसे हैं कि सही लिखा होने पर भी पढ़ने की ज़रा सी असावधानी से बिना जाने-समझे आज्ञाओं के विरुद्ध आचरण ग्रहण हो जाता है, और जान बूझकर पढ़ने से बड़ा अज्ञान (महान दोष) बल्कि कुफ़ तक नोबत पहुँच जाती है। मगर लाअिलमी (अनभिज्ञता) में माफ़ है, क्योंकि लाअिलमी में और तालीम की अवस्था में अल्लाह की तरफ़ से माफ़ी है। नीचे वह तमाम मुकाम दर्ज किये जाते हैं, पाठक ध्यान रखें :—

सं०	सूर:	आयत पृष्ठ	सही	ग़लत
१	सूर: अफ़ातिह: (१) ...	४ १	अय्याक नज़बुद्	अय्या नज़बुद् (बिलातशदीद)
२	" " (१) ...	६ १	अन् अम्त अलैहिम्	अन् अम्तु अलैहिम्
३	सूर: बकर: (२) रकूअ १५	१२४ २६	अबूराहोम रब्बुह	अबूराहोम रब्बह
४	" " " ३३	२५१ ६०	कतल दावूद ज़ालूत	कतल दावूद ज़ालुत
५	" " आयतलकुर्सी " ३४	२५५ ६२	अल्लाहु ला अल्लाह	अल्लाहु लाअिल्लाह (बिलातमद)
६	" " " ३६	२६१ ६०	बल्लाहु युजाअिफ़ु	बल्लाहु युजाअिफ़ु
७	" निसा'अि (४) " २३	१६५ १६०	मुबशिशरीन व मुन्जिरीन	मुबशशीरीन व मुन्जरीन

सं०	सूरः	आवत पृष्ठ	सही	गलत
८	सूरः तोबः (६) " १	३	२६४	मिनल्-मुशरिकीन व रसूलुह
९	" बनोअिल्राओल (१७) " २	१५	४४८	व मा कुन्ना मुअज्जबोन
१०	" ताहा (२०) " ७	१२१	५०८	व असा आदम रब्बुह
११	" अम्बियाअि (२१) " ६	८७	५२४	अम्नी कुन्तु मिनज्जालिमीन
१२	" शुअराअि (२६) " ११	१६५	५६६	तिलकून मिनल् मुन्जरीन
१३	" फातिरिल् (३५) " ४	२८	६६६	यक्काल्लाहु मिन अिवादि
१४	" साफफाति (३७) " २	७२	७१४	फ्रीहिम मुन्जरीन
१५	" फत्हि (४८) " ४	२७	८२२	लकद् सदकल्लाहु
१६	" हूशरि (५६) " ३	२४	८८०	मुसब्बह
१७	" हाक्कति (६६) " १	३७	९१६	अिल्लल् खातिअून
१८	" मुज्जम्मिलि (७३) " १	१६	९२८	फ़असा क्रिरओनुरसूल
१९	" मुसलाति (७७) " २	४१	९४०	फ़ी शिलालिव
२०	" नाजिआति (७९) " २	४५	९४६	अिन्नमा अन्त मुन्जिह

कुरआन मजीद की सूरतों के स्वास (लाभ)

अगर कोई यह अक़ीदा रखे कि कुरआन मजीद अमलियात और तावीजात (तावीज गंडे) के लिए नाजिल (उतरा) हुआ है तो यह जिहालत है और बड़ा गुनाह है क्योंकि कुरआन मजीद हकीकत में खुदा के हुक्म जो लोगों पर हैं और लोगों के हुक्म भी जो आपस में एक दूसरे पर हैं और उनके अदा करने या न करने के सबब जो नतीजे दुनिया में और मरने के बाद होने वाले हैं उन सब के बयान (गोष्ठ) के लिए खुदा की तरफ से नाजिल हुआ है। मगर इस के साथ ही बहुत सी आयतों और सूरतों को रसूले करीम (सल्ल०) सहाबा किराम और बुजुरगाने दीन अमलीयात के तौर पर मुसीबतों और बलाओं के दूर करने के लिए पढ़ते थे जिनकी बरकत से वह मुसीबत दूर हो जाती थी। जो आदमी किसी मतलब के लिए अमल पढ़ता हो और जाहिरी कोशिश तकाज़ा-ए-आलमे अस्बाब (खुदा के हुक्मों) के मुताबिक न करता हो तो वह यकीनन नाकाम होगा कि उस की मिसाल एक ऐसे मरीज (रोगी) की सी होगी जो दवा खाता हो मगर परहेज न करता हो बल्कि अमल पढ़ने का यह मतलब होता है कि अमल की वजह से जाहिरी कोशिश नाकाम न रहे। सब बुजुरगाने दीन का तजुर्बा है कि जिस आयत के मज्मून (विषय) को जिस काम से मुनासिबत (उचित) पाई जाए तो वह आयत उस काम के लिए अमल के तौर पर पढ़ी जा सकती है जैसे कुरआन मजीद में हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के बारे में जिक्र है कि उन्होंने दुआ की (अनुवाद) 'मूसा अ०' ने (फ़र्शन की हिदायत की तरफ जाने वक़्त) कहा ऐ खुदा मेरे सीने को खोल दे और मेरे काम को मेरे लिए आसान फ़रमा और मेरी जुबान की गिरह खोल दे (नाकि बयान में सफ़ाई हो) और वह लोग मेरी बात को समझे इस आयत की हर शब्द मुश्किल कामों की आसानी के लिए पढ़ सकता है और अपने ज़ेहन और अकल (बुद्धि) के बढ़ने के लिए पढ़ सकता है। कुरआन का अमल करने में तलसीसे-वक़्त और पढ़ने की तादाद की क़ैद नहीं है बल्कि हर शब्द को चाहिए कि वह खुद ईशा या सुबह की नमाज़ के बाद या कोई और वक़्त मुकरर (निर्धारित) करके और पढ़ने की तादाद भी अपनी तरफ से कायम करके पढ़ करे। अब्बल और आखिर में दुरुद हो और चीज़ को पाक रखे लेकिन यह बात तजुर्बों से साबित हुई है कि अगर कोई शब्द कुरआन की आयत किसी नाजायज़ काम के लिए अमल के तौर पर इस्तेमाल में लावे तो वह कामयाब नहीं होगा और पागल हो जाता है।

सूरतों की तर्तीब

पारों के नाम	सूरतों के नाम	कहाँ ?	पारों के नाम	सूरतों के नाम	कहाँ ?
	१. अल-फातिहा	१	१७. इक़त-र-ब लिन्नामि	२२. अल-हूज्ज	५२४
१. अल-फ-लाम-मीम	२. अल-बकरः	२	१८. क़द अफ-ल-ह	२३. अल्-मुअमिनून	५४२
२. स-यकूल	"	३०	"	२४. अन-नूर	५५६
३. तिलक़रु सुल	"	६२	"	२५. अल-फुर्कान	५७०
"	३. आले इम्रान	७४	१९. व क़ाललज़ी-न	"	५७४
४. लन तनालू	"	९४	"	२६. अश-शु-अ-रा	५८०
"	४. अन-निसा	११८	"	२७. अन-नम्म	५९६
५. वल् मुहम्मनात	"	१२६	२०. अम्मन-ख-ल-क़	"	६०६
६. ला युहियुल्लाह	"	१५८	"	२८. अल-क़-सस	६१०
"	५. अल-माइदः	१६४	"	२९. अल-अंकबूत	६२८
७. व इज़ा समिअ	"	१९०	२१. उल्लु मा ऊहि-य	"	६३८
"	६. अल-अन्आम	१९८	"	३०. अर-रूम	६४२
८. व ली अन्नना	"	२२२	"	३१. लुक़मान	६४२
"	७. अल-आराफ़	२३६	"	३२. अस-सज्दा	६५८
९. क़ालल म-ल-उ	"	२५४	"	३३. अल-अहज़ाब	६६२
"	८. अल-अन्फ़ाल	२७८	२२. व मय्यक्नुत	"	६७०
१०. वअलमू	"	२८६	"	३४. सबा	६७८
"	९. अल-तौबा	२९४	"	३५. फ़ातिर	६९०
११. यअ तजिलून	"	३१८	"	३६. यासीन	६९८
"	१०. यूनुस	३२६	२३. व मा लि-य	"	७०२
"	११. हूद	३४८	"	३७. अस-साफ़ात	७०८
१२. वमा मिन दान्बतित्	"	३५०	"	३८. साद	७२०
"	१२. यूसुफ़	३७०	"	३९. अज़-ज़ुमर	७२८
१३. व मा उव्ररित	"	३८२	२४. क़ म न अल्लमू	"	७३४
"	१३. अर-राद	३९२	"	४०. अल्-मुअमिन	७४२
"	१४. इब्राहीम	४०२	"	४१. हामीम-अस-सज्द	७५६
१४. क़-ब-मा	१५. अल-हिफ़	४१४	२५. इलैहि युरदु	"	७६६
"	१६. अन-नहल	४२२	"	४२. अल-शूरा	७६६
१५. मुहानल्लजी	१७. बनी इस्राईल	४४६	"	४३. अज़ज़ुल्लफ़	७७८
"	१८. अल-कहफ़	४६४	"	४४. अद-दुख़ान	७८८
१६. क़ाल अलम	"	४७८	"	४५. अल-जामिया	७९२
"	१९. मरयम	४८२	२६. हामीम	४६. अल-अहज़ाफ़	७९८
"	२०. ताहा	४९४	"	४७. मुहम्मद	८०४
१७. इक़त-र-ब लिन्नामि	२१. अल-अंबिया	५१०	"	४८. अल-फ़ल्ह	८१२
			"	४९. अल-हूजुरात	८१८

पारों के नाम	सूरतों के नाम	कहाँ ?	पारों के नाम	सूरतों के नाम	कहाँ ?
२६. "	५०. काफ़	८०७	अम-म	८४. अल-इन्शिकाक	६४६
"	५१. अज्जआरियात	८०८	"	८५. अल-बुरुज	६४८
२७. काल क़मा ख़तबुकुम	अज्जआरियात	८३०	"	८६. अत-तारिक	६४८
"	५२. अत-नूर	८३२	"	८७. अल-अज़ला	६५०
"	५३. अन-नज़म	८३६	"	८८. अल-शामिय	६५२
"	५४. अल-क़मर	८४०	"	८९. अल-क़य्य	६५२
"	५५. अर-रह्मान	८४४	"	९०. अल-ब-लद	६५४
"	५६. अल-बाकिअ	८४८	"	९१. अश-शाम्स	६५६
"	५७. अल-हदीद	८५४	"	९२. अल-लैल	६५६
२८. कद समिअल्लाहु	५८. अल-मुजादला	८६२	"	९३. अज़-ज़ुहा	६५८
"	५९. अल हूशर	८६८	"	९४. अल-इन्शिराह	६५८
"	६०. अल-मुत्तहिना	८७४	"	९५. अत-तीन	६६०
"	६१. अल-साफ़	८७८	"	९६. अल-अलक	६६०
"	६२. अल-जुमूअ	८८२	"	९७. अल-क़द	६६२
"	६३. मुनाफ़िकून	८८४	"	९८. अल-बय्यिन	६६२
"	६४. अत-तशाबुन	८८६	"	९९. अज-ज़िलज़ान	६६४
"	६५. अत-तलाक	८९०	"	१००. अल-आदियात	६६४
"	६६. अत-तहरीम	८९४	"	१०१. अल-कारिज़	६६४
२९. तबारकल्लजी	६७. अल-मुत्क	८९८	"	१०२. अत-तकामुर	६६६
"	६८. अल-क़लम	९०२	"	१०३. अल-अल	६६६
"	६९. अल-हाक्क	९०६	"	१०४. अल-हु-मज़	६६६
"	७०. अल-मआरिज	९१०	"	१०५. अल-फ़ील	६६८
"	७१. नूह	९१२	"	१०६. कुरैश	६६८
"	७२. अल-जिन्न	९१६	"	१०७. अल-माअून	६६८
"	७३. अल-मुवज्जिमल	९२०	"	१०८. अल-कौसर	६६८
"	७४. अल-मुद्सिर	९२२	"	१०९. अल-काफ़िरून	६७०
"	७५. अल-क्रियाम	९२६	"	११०. अन-नस	६७०
"	७६. अद-दह	९२८	"	१११. अल-त-ह्व	६७०
"	७७. अल-मुसलात	९३०	"	११२. अल-इक्लाम	६७०
३०. अम-म	७८. अन-नबा	९३४	"	११३. अल-फलक	६७२
"	७९. अन-नाज़िआत	९३६	"	११४. अन-नाम	६७२
"	८०. अ-ब-स	९३८	दुआए मायूरा		६७४
"	८१. अत-तक्वीर	९४०	कुरआन मजीद के ख़तम होने की दुआ		६८१
"	८२. अल-इन्क़िलार	९४२			
"	८३. अत-तक्वीक	९४४			

रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पवित्र जीवनी

इस्लाम से पहले अरबों के विभिन्न मजाहिब (धर्म) और एतकाद (विश्वासों) थे। कुछ उनमें से बुत परस्त, कुछ खुदा परस्त, कुछ ला मजहब (अधर्मी) और ला साइबी, कुछ यहूदी और ईसाई थे। बुत परस्ती (मूर्ति पूजा) अरब के कदीम (प्राचीन) बाशिन्दों (निवासियों) में भी पायी जाती थी। आद, समूद, जदीस, जरहम ओला, अमलीक अव्वल आदि बुतों की परिसतिश (पूजा) करते थे लेकिन उनके तफसीली हालात (पूरे हालात) जमाने के कारण हम को मिल नहीं सके। बाक़ी रहे अरब आरिबह और अरब मुस्तआरिबह, उनके बुत दो प्रकार के थे। एक मलाइक और अरवाह जो ग़ैर महसूस (अस्पर्श) ताक़तों से ताल्लुक रखते थे और दूसरी किस्म उन बुजुर्गों (पूर्वजों) की शक्ल के बुत तैयार किए गए थे जिन्होंने अपनी हयात (जीवन) के जमानों में नेक कामों से शोहरत (ख्याति) हासिल कर ली थी। यह ग़िरोह बुत परस्ती (मूर्ति पूजा) के बावजूद उनको माअबूदे मतलक (अस्तविक उपास्य) न मानता था, बल्कि उनका एतकाद (विश्वास) यह था कि सांसारिक अधिकार उन बुजुर्गों (पूर्वजों) की रूहानी (आध्यात्मिक) ताक़तों को, जिनके ये बुत यादगार के तौर पर हमारे आगे मौजूद हैं, इस तरह से हासिल हैं कि वे हमारी हर हाज़त (मुराद) व दरखास्त की खुदा के यहाँ सिफ़ारिश कर सकते हैं और आख़िरत की निस्वत (बारे में) उनका यह ख़्याल (विचार) था कि उनकी रूहानी ताक़तें (आध्यात्मिक शक्ति) खुदा से उनके गुनाहों की माफ़ी कराएंगी। वे बुत जिनकी तमाम अरब परिसतिश (पूजा) कर रहा था उनकी तफ़सील (विवरण) यह है।

१—हुबुल, २—वद, ३—सुबाअ, ४—यगूस, ५—यऊक़, ६—नसर, ७—उज्जा, ८—लात, ९—मनात।

ये खास (मुख्य) क़बीलों के बुत थे। इन ९ बुतों की परिसतिश (पूजा) तमाम अरब करता था। १०—दवार, ११—असाफ़, यह कोहे सफ़ा (सफ़ा नामक पहाड़) पर था। १२—नाइला, कोहे मरवह (मरवह पहाड़) पर था इन दो बुतों पर कुर्बानियां (बलि) की जाती थीं। १३—अवाअव, इस पर ऊंटों की कुर्बानी (बलि) की जाती थी। १४—काबे के अन्दर हज़रत इब्राहीम की तस्वीर थी और उनके हाथ में इस्तख़ारह (एक प्रकार का अमल) के तीर थे जो इज़लाम कहलाते थे और एक भेड़ का बच्चा उनके करीब (निकट) खड़ा था। हज़रत इस्माईल की मूरत (मूर्ति) खाना काबा में रखी हुई थी।

१५—हज़रत मरयम और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की भी तस्वीरें और मूरतें (मूर्तियां) खाना काबा में मौजूद थीं। वद, यगूस, यऊक़ और नसर अय्यामे जाहिलियत (अज्ञानता का दौर) अरब से बहुत पहले, बल्कि हज़रत नूह अलैहि० के पैदा होने से भी पूर्व उन बुजुर्गों (पूर्वजों) में से थे जो तेक़ कामों और खुदा परस्ती (ईश्वर वादिता) में कामिल (पूर्ण) थे और जिनकी तस्वीरें पत्थरों पर मुनक्क़श (अंकित) करके यादगार के लिए काबे के अन्दर रख दी थीं और इनको रुतवए माअबूदियत (पूज्य होने का दर्जा) देकर उनकी पूजा करने लगे। खुदा परस्ती (ईश्वर भक्ति) भी किसी क़दर अरब जाहिलियत (अज्ञानता) में थी और यह दो तरह की थी। एक ग़ैर मालूम (अज्ञान) और पोशीदा (छिपी) क़ुदरत (ताक़त) को, जिसको वे अपने बजूद का ख़ालिक (रचियता) क़रार देते और मानते थे लेकिन शेष विचार उनके ला मजहूबी (अधर्मी) की ओर अधिक आकृष्ट थे। दूसरा ग़िरोह खुदा को बरहक़ (सत्य) जानता था। क्रियामत, नजात, हथ

(हिस्साब किताब का मैदान) बकाए रूह (रूह का जीवन) और उसके जजा व सजा (इनाम व अजाब) का कायल था। ला मजहबी (अधर्मियों) का भी एक तरह का शोर व चर्चा अरब में पाया जाता था जो न बुतों को पूजते थे और न किसी किताब और इलहामी (आसमानी) मजहब (धर्म) के मानने वाले थे। वे खुदा और प्रलय के इन्कारी थे इसी वजह से इनाम व अजाब को भी न मानते थे। वे दुनिया को सदैव रहने वाली मानते थे। साईबी धर्म वाले यह अक्कीदा (विश्वास) रखते थे कि हमारा धर्म इलहामी (आसमानी) है और हम हजरत शीश अलैहि० और इदरीस अलैहि० के पैरो (अनुयायी) हैं उन के यहां सात समय की नमाज और एक क्रमरी (बांद) महीने का रोजा था ये जनाजों की नमाज पढ़ते थे। इन हालात से पता चलता है कि शायद उनका दावा सही हो। लेकिन यह ऐब (खराबी) उनमें आ गया था कि सबअ सय्यारे (तारे) की पूजा करते थे इसी के साथ खाना काबा की बड़ी इज्जत (आदर, सम्मान) करते थे। यहूदी धर्म अरब में ३५वीं शताब्दी हबूते आदम अलैहि० (पांचवीं शतब्दी पूर्व मसीह के अनुसार) बस्त नसर का हंगामा (जंग) हुआ। इसके कुछ दिनों बाद यहूदियों को इस्तीनान (सन्तोष) प्राप्त हुआ तो उन्होंने अपने धर्म को फैलाना शुरू कर दिया यहां तक कि धीरे धीरे ४०२६ हबूते आदम अलैहि० ३५४ पूर्व मसीह के अनुसार में जूनिवास हमीरी बादशाह यमन यहूदी हो गया और इससे यहूदियत को अरब में बड़ी तरक्की मिली। हबूते आदम अ० की तारीख न तो किसी पैगम्बर ने बताई है और न ही खुदा ने, अलबत्ता तौरात के आलिमों (विद्वानों) ने अपने अन्दाजे से तौरात की जमीमों (परिशिष्टों) और तफ्सीरों (टीकाओं) में इस को लिखा है। तीसरी सदी ईसवी में ईसाई धर्म अरब में दाखिल हुआ। जबकि पूर्वी कलीसा में खराबियां और बिदअतें (नई बातें) धीरे-धीरे रिवाज पा गयी थीं। आम मुअरिखीन (इतिहासकार) कहते हैं कि यह जमाना जूनिवास का था : इस धर्म का शेवा अधिक नजरान में हुआ और अरब में उस ने कुछ ख्यादा रिवाज नहीं पाया। इनके अलावा बन् तमीम मजूसी और अधिकांश कुरैश जिन्दका (गुमराह, भटके हुए) थे। हजरत मुहम्मद सल्ल० की पैदाइश से पहले अरब में अधिकता से काहिन और नजुमी (ज्योतिषि) लोग थे और उन्होंने यह मशहूर (प्रसिद्ध) कर दिया था कि अनकरीब (निकट ही) अरब में एक पैगम्बर पैदा होने वाले हैं जिनके दीन का गलवा (प्रभाव) तमाम धर्मों पर होगा।

विलादत (पैदाइश)

आप (सल्ल०) के वालिद का नाम अब्दुल्लाह था। अब्दुल्लाह बिन अब्दुल मुत्तलिब के इन्तकाल (मृत्यु) के बाद बारहवीं रबीउल अब्वल को आमुल फ़ील (उस समय का सन) के पहले साल (बर्षात अबरह की चढ़ाई के ५५ दिन बाद) ४० जुलूसे किसराए नोशीरवां और ५७० ईसवी में नबी सल्ल० पैदा हुए। अब्दुल मुत्तलिब ने आप की परवरिश (लालन पालन) की। कबीला साअद में आपका जमानए रजाअत (दूध पीने का जमाना) पूरा हुआ। हजरत हलीमा रजि० ने दूध पिलाया और जब नबी सल्ल० चार साल के हुए और अपने रजाई भाइयों (दूध शरीक भाइयों) के साथ बकरियां चराने को गए थे तो फ़रिश्तों ने आकर आपका शिकम (सोना-ए-मुबारक) चाक करके क़ल्ब (दिल) को निकाला और उस से एक सियाह नुक्ता (काला बिन्दु) अलग करके दिल को और आन्तों को धोया। जिस समय इस वाकिए (घटना) की सूचना हलीमा को हुई तो वे इस डर से कि खुदा जाने कोई और घटना पेश न आ जाए, आप को आप की वालिदा (मां) बीबी आमना के पास लायीं और इस घटना से आपको सूचित किया। बीबी आमना ने कहा कि तुम इन को ले जाओ।

यहां की आब व हवा (जलवायु) स्वभाव के अनुसार न होगी। मैं इस घटना से हरासां (आतंकित) नहीं हुई। अल्लाह ने उनको बहुत सी करामतें प्रदान फ़रमायी हैं। जब आपकी उम्र ६ साल की हुई तो बीबी आमना आपको मदीना अपने संबंधियों से मिलाने ले गयीं। वहां अब्बा के स्थान पर बीबी आमना का इत्काल हो गया। इस तरह आप वालिद वालिदा दोनों की ओर से छोटी उम्र ही में यतीम हो गए और जब आठ साल के हुए तो आपके दादा अब्दुल मुत्तलिब ने वफ़ात पायी। उस समय आपके दादा ने आपको परवरिश (पालने) के उद्देश्य से अपने लड़के अबू तालिब के सुपुर्द किया। अबू तालिब मुहब्बत पिदरी (पिता की मुहब्बत) से आपके साथ पेश आए। दूध पीने के दौर में और बचपन के दौर में आपकी अजीब हालत थी। अज्ञानत के तौर तरीकों से आप बिल्कुल बेज़ार (निराश) थे। लड़कों में नहीं खेलते थे। अल्लाह ने आपको तमाम आदातें खबीसा (बुरी आदतों) से अपनी पनाह में रखा। जब आपने तेरहवीं साल में क्रदम रखा तो अबू तालिब के साथ शाम (सीरिया) की ओर सफ़र किया। बुसरा के स्थान पर बुहीरा राहिब के झोंपड़े के पास होकर गुज़रे बुहीरा राहिब ने आपके अन्दर आसारे नुबूत (नुबूत की निशानियां) को देख कर अपनी कौम को बुलाया और आपकी नुबूत से उनको सूचित किया। फिर दोबारा आप (सल्ल०) उम्मुल मोमिनीन हज़रत खदीजतुल कुबरा (रज़ि०) की तिज़ारत का सामान लेकर उनके गुलाम मैसरह के साथ शाम (सीरिया) गए। नसतुरा राहिब के पास से जिस समय आपका गुज़र हुआ, उसने आप सल्ल० में शाने नुबूत (नुबूत की शान) देखकर मैसरह को आपके हालात से सूचित किया। उसने वापसी के बाद हज़रत खदीजा को पूरे हालात से आगाह किया। हज़रत खदीजा ने आपसे विवाह करने का इरादा किया और अबू तालिब ने आपका निकाह खदीजा से कर दिया। नबी सल्ल० की उम्र शरीफ़ इस समय २५ साल थी। जब आप ३५ वर्ष के हुए तो क़ुरैश ने काबे को गिराकर दोबारा बनाना शुरू किया। जिस समय हज़रे असवद (वह काला पत्थर जो काबे में लगा है) के रखने का अवसर आया तो आपस में सब लड़ने लगे। हर आदमी यह चाहता था कि हज़रे असवद (काले पत्थर) को मैं अपने हाथ से रखूँ। फिर कुछ सोच कर क़ुरैश एक होकर मश्विरा करने लगे। अबू उमय्या ने कहा कि बेहतर होगा कि पहले जो आदमी मस्जिद (काबे) में दाख़िल होगा उसे तुम लोग अपना हाकिम (जज) बनाओ। क़ुरैश इस बात पर राज़ी हो गए। इसी बीच नबी सल्ल० वहां आ गए। लोगों ने कहा कि यह अमीन (ईमानदार) है यह फ़ैसला करेंगे। आपने एक कपड़े में हज़रे असवद (काले पत्थर) को रख कर क़ुरैश से कहा, कि इस कपड़े के किनारों को पकड़ लो। किसी को किसी पर कोई फ़ज़ीलत (श्रेष्ठता) न होगी और न कोई झगड़ा वाकी रह जाएगा। अतएव क़ुरैश ने आपके कहने से कपड़े के किनारे पकड़ लिए। जिस समय हज़रे असवद अपने मक़ाम (स्थान) के निकट पहुंचा, आपने अपने हाथ से लेकर उसको उसकी जगह पर रख दिया। इसके बाद नबी सल्ल० तहारत (पाकी) और इबादत अत्यन्त दृढ़ता से कोशिश फ़रमाने लगे। आपकी ज़ात पाक में एक आला दर्जे (उच्च दर्जे) का अद्वलाक़ (आचरण) और सन्न व फ़साहत (धैर्य व शालीनता) थी। जवानी में ही आपको इबादत का शौक था। हज़रत खदीजा रज़ि० से कई कई दिन का खाना तैयार कराके अपने साथ ले जाया करते थे। पहाड़ों में ग़ारे हिरा (एक खोह का नाम) आदि में आप रात दिन कई कई दिनों तक मसरूफ़े इबादत (इबादत में लीन) रहते थे और आपको लोग अमीन (अमानतदार) कहा करते थे।

नुबूवत

वह्य के उतरने से पूर्व नबी सल्ल० ने रोया-ए-सालिहात (सच्चे सपने) देखना शुरू किए। काहिनी (नज़्मियों) और आसमानी किताबों के विद्वानों ने आपकी शान व नुबूवत के चर्चे व जिक्र करना शुरू कर दिए और नबी सल्ल० इबादत के ख्याल से तन्हाई व खिलवत (अकेले) में ज्यादा से ज्यादा रहना पसन्द करमाने लगे। अक्सर गारे हिरा में तशरीफ़ ले जाते और वहीं दो-दो चार-चार रातें लगातार इबादतें इलाही (अल्लाह की इबादत) में लगे रहते यहां तक कि आपकी पैदाइश के चालीसवें साल आप पर वह्य नाज़िल हुई। पहले फ़रिश्ता आदमी के रूप में आता था और आपसे बातें करता था और कभी आप पर इल्का (आप से आप वह्य का आना) हुआ करता था और किसी समय चादर या कोई और चीज़ लपेट कर लेट जाते थे और वह्य घंटी की आवाज़ की तरह नाज़िल होती थी। इस पिछली सूरत में आपको बहुत तकलीफ़ होती थी जैसा कि हदीस शरीफ़ में आया है 'बहु-अ-अ-शदु अला' (और वह मुझ पर अधिक सहत है) सहत जाड़े में आप पसीने पसीने हो जाते, मतलब यह कि जो वह्य आरम्भ में आप पर गारे हिरा में नाज़िल हुई वह यह थी—'इकरा बिस्म-रब्बिकल लजी खलक० खलकल इन्सान मिन अलक० इकरा व रब्बिकल अवरमुल्लजी अल्ल-म बिल क़लम, अल्लमल इन्साना मानम याअलम०'

बीबी खदीजा रज़ि० ने आप की बातों की तस्दीक (मान लेना) की और आप पर ईमान लायीं। इसके बाद नबी सल्ल० पर नमाज़ फ़र्ज़ (अनिवार्य) की गयी। हज़रत जिब्रील अलैहि० आए और वुजू करके पूरे अरकाने नमाज़ व तरकीब आपको नमाज़ पढ़ कर दिखायी। उसके बाद मेअराज की रात में आप मक्का से बैतुल मक्दिस और फिर वहां से सातों आसमान और सदख़्तुल मुनतहा पर तशरीफ़ ले गए—'फ़ अवहा इला अवदहू मा अवहा'।

अर्थात्—अल्लाह ने अपने बन्दे पर वह्य भेजी। जो वह्य भेजी उसका जिक्र (मेअराज का) पन्द्रहवें पारे के शुरू में है।

कुरैश में इस्लाम की दावत

नबी सल्ल० ने अबू तालिब को इस्लाम की दावत दी। अबू तालिब ने कहा, मैं अपना और अपने बाप-दादा का दीन (धर्म) नहीं छोड़ सकता, अलबत्ता तुम्हारी वजह से यह होगा कि मैं तुम्हारा विरोध न करूंगा, उलमा-ए-सीर (पवित्र जीवनी लिखने वाले विद्वान) लिखते हैं कि सबसे पहले खदीजा रज़ि० ईमान लायीं। इसके बाद अबू बक़ व अली (रज़ि०) और ज़ैद बिन हारसा व बिलाल रज़ि०, फिर उमर बिन अम्बसा सलमा रज़ि० व ख़ालिद बिन सईद रज़ि० मुसलमान हुए। इन बुजुर्गों के बाद कुरैश के एक गिरोह ने इस्लाम को स्वीकार किया जिन को अल्लाह ने नबी सल्ल० की मुसाह-बत (निकटता) के लिये पूरी क़ौम में से बरगुज़ादा (अहम माना) किया और इनमें से अधिकांश प्रसिद्ध व ज़न्नती हुए। हज़रत अबू बक़ सिद्दीक रज़ि० चूंकि रक्तीक़ुल कल्ब (नर्म दिल) महबूबे ख़लाइक़ (लोगों के प्रिय) नर्म स्वभाव और तिजारत करने वाले थे। लोगों की मदद करने का मादा (भावना) उनमें अधिक था। कुरैश आपसे ज्यादा मानूस (मिले जुले) थे इस वजह से आपके हाथ पर नू उमय्या में ही उस्मान बिन अफ़्फ़ाक़, तलहा, साअद बिन अबी व क़ास और अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि० ईमान लाए। इसके बाद अबू उबैदह रज़ि०, आमिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि०, अबू सलमा अब्दुल-असद रज़ि०, सईद बिन ज़ैद रज़ि०, सईद की बीबी फ़ातिमा रज़ि०, (हज़रत उमर रज़ि० की बहन) सईद रज़ि० के बाप ज़ैद बिन अमरू रज़ि० इस्लाम में दाख़िल हुए। यह ज़ैद बिन अमरू वही हैं जिन्होंने

ने अज्ञानता में बुतपरस्ती छोड़ दी थी। फिर उमैर रज़ि० और अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० मुसलमान हुए। अब्दुल्लाह बिन मसऊद उक़्बा बिन मुअीत की बकरियाँ चराते थे। एक दिन नबी सल्ल० उनकी बकरियों के गल्ले की ओर से होकर गुज़रे और उन की इजाजत से बकरी का दूध आपने दोहा जिसका दूध बन्द हो गया था। अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० यह मुअज़्जिज़ह् (चमत्कार) देख कर हैरान हो गए और उसी समय ईमान ले आए। इन के बाद जाफ़र बिन अबी तालिब और उन की बीबी और सादब बिन उस्मान रज़ि० और आमिर बिन क़हीरह रज़ि०, उम्मार बिन यासिर और सुहैब (रज़ि०) इस्लाम आए।

इस्लाम की दावत

इन बुजुर्गों के इस्लाम लाने से मुसलमानों की एक छोटी सी जमाअत हो गई जिसमें जवान लड़के, बूढ़े, औरतें सभी शामिल थे। लेकिन मुश्रिकों (अधर्मियों) के भय से जंगलों और पहाड़ों में चले जाते थे और वहीं नमाज़ें पढ़ते थे। क़ुरैश का कोई ऐसा जलसा न होता था जिसमें इस्लाम का और उनके इस्लाम लाने का उल्लेख न होता। वहू के आने के तीसरे साल नबी सल्ल० को दावत देने का हुक्म हुआ। चुनांचे आप सक़ा पहाड़ पर चढ़ गए और क़ुरैश को बुला कर उनसे मुखातिब (सम्बोधित) हो कर फ़रमाया—

“यदि मैं तुमको ख़बर दूँ कि दुश्मन तुम पर सुबह को आया या शाम को, तो क्या तुम लोग मुझे सच्चा मानोगे? क़ुरैश ने कहा, हाँ। तब नबी सल्ल० ने फ़रमाया, मैं तुम को डराता हूँ आगे के सख़्त अज़ाब से। खुदा के इन हुक्मों पर ईमान लाओ जो मेरे पास आए हैं। क़ुरैश इस कलाम को सुन कर अलग हो गए।”

फिर आपने आम हिदायत शुरू की। जब क़ुरैश ने देखा कि उनके बुतों की बुराइयाँ की जाती हैं और उनके पूजने पर रोक टोक की जाती है तो उनको बुरा लगा, वे सब के सब एक मकान में जमा हो कर नबी सल्ल० की दुश्मनी पर तैयार हो गए। अबू तालिब ने उनकी इस राए का विरोध किया और उनको इस काम से रोकने लगे, वे नबी सल्ल० की हिमायत पर तैयार हो गए। क़ुरैश अबू तालिब के विरोध से मजबूर हो कर न्याय कराने के लिए अबू तालिब के पास आए और अबू तालिब से नबी सल्ल० की ओर से तकलीफ़ पहुंचाने के बारे में बहस की और इस बात की इच्छा प्रकट की कि नबी सल्ल० को उनके यहां बुला कर इस नए काम से रोकें। चुनांचे नबी सल्ल० उनके बुलाने पर इस सभा में तशरीफ़ लाए। क़ुरैश ने अपने तर्क पेश किए। और यह कहा कि यदि आपको दौलत की जरूरत हो तो आप की इच्छा से ज्यादा चन्दा जमा करके दें और यदि जवान सुन्दर औरत की जरूरत हो तो वह भी इसके साथ, और यदि इसके बावजूद फिर भी आप न मानें तो मुमकिन (सम्भव) है कि खून-रेज़ी (रक्तपात) होगी और आपकी जान जाती रहेगी क्योंकि यह सारी कौम और मजहब (धर्म) का मामला है।

तब जवाब में नबी सल्ल० ने कुरआन मजीद की कुछ आयत पढ़ कर इशारा फ़रमाया—

“ऐ चचा! मैं अपने इस काम को न छोड़ूँगा यहाँ तक कि अल्लाह उसको ज़ाहिर (स्पष्ट) करे या कि मैं स्वयं इसमें हलाक (ख़त्म) हो जाऊँ।”

अबू तालिब यह सुन कर शान्त रहे, क़ुरैश की सभा ख़त्म हो गई। उस समय फिर आपने अबू तालिब से मुखातिब (सम्बोधित) होकर इस्लाम की दावत दी। अबू तालिब ने कहा, जो तुम्हारे दिल में है करो, लेकिन खुदा की क़सम मैं कभी ईमान न लाऊँगा और न अपने बाप दादा के दीन को छोड़ूँगा। यह बात मुझ से न होगी कि नमाज़ के समय मेरे चूतड़ मेरे सर से ऊँचा हो जाएं (अर्थात् सज्दे में)।

हब्शा की ओर हिजरत

जब कुरैश ने देखा कि नबी सल्ल० इस्लाम की दावत से बाज नहीं आते और मुसलमानों की जमाअत बढ़ती जाती है तो बनी हाशिम और बन् मुतलिब और कुल कुरैश ने जमा होकर नबी सल्ल० और सब मुसलमानों को तकलीफ पहुंचाने का अरब (वचन) किया। प्रत्यक्ष में इस वचन में बन् हाशिम और बन् मुतलिब पेशवा (अगुवा) थे। लेकिन असल में अरब का हर कबीला जो उस समय मक्का और उसके निकट में था इस अहद व इकरार में शामिल था। जहां ये लोग गरीब मुसलमानों को पाते, पत्थरों से मारते, तरह-तरह की तकलीफें देते थे, नमाज की हालत में ऊंटों, बकरियों की आंतें, गन्दगी ला-लाकर नमाजियों पर डालते थे। जब यह तकलीफों का सिलसिला सीमा पार कर गया तो आपने मुसलमानों को हब्शा की ओर हिजरत का हुक्म दिया। हब्शा के बादशाह और कुरैश के बीच तिजारत का सन्धिनामा था। वे प्रायः हब्शा के बादशाह की प्रशंसा किया करते थे। बहरहाल सबसे पहले हजरत उस्मान बिन अफ्फान रज़ि० और उनकी पत्नी रुकैया बिनत नबी सल्ल०, अबू हुजैफा और उनकी पत्नी, जुबैर बिन अवाम, मुसअब बिन उमैर, अबू सव्दह अब्दुल्लाह बिन मसऊद आमिर और उनकी पत्नी लैला और सुहैल रज़ि० इन बुजुर्गों ने हब्शा की ओर हिजरत फरमायी। इनके बाद फिर यके बाद दीगरे (एक के बाद एक) मुसलमानों ने हब्शा की ओर हिजरत करना शुरू कर दिया। इन्हीं लोगों के साथ जाफर बिन अबी तालिब रज़ि० भी हिजरत कर गए, यहां तक कि हब्शा में मुहाजिरीन (हिजरत करने वालों) की तायदाद (संख्या) तीन सौ तक पहुंच गयी मुहाजिरीने अब्बल (प्रथम हिजरत करने वाले) का मुशिरकीने मक्का (मक्का वालों) ने दूर तक पीछा किया, लेकिन नाकाम वापस आए। कुरैश ने जब यह देखा कि नबी सल्ल० की तकलीफ व परेशानी में आपके कुछ रिश्तेदार रुकावट बनते हैं और विरोध करते हैं तो उन्होंने यह शेवा (रास्ता) अस्तिफार (अपनाया) किया कि जो मक्का में आता था उससे नबी सल्ल० की साहिरी, (जादूगरी) मजनूनियत (पागलपन) और कहावत (ज्योतिष) का जिक्र करते थे और आपके पास उसको आने से रोकते थे। इन लोगों का यह काम था कि ये लोग नबी सल्ल० और उन लोगों से जो ईमान ला चुके थे मसखरा पन (मजाक उड़ाते) करते और तकलीफ देते थे।

तायफ़ में इस्लाम की दावत

अल गरज (फल स्वरूप) हजरत खदीजा रज़ि० के इन्तकाल (देहान्त) और अबू तालिब के इन्तकाल के बाद मुशिरकीने मक्का नबी सल्ल० के साथ हर समय इस्तहज़ा (मसखरा) और तकलीफ देने पर तैयार रहते। एक दिन आप इस्लाम की दावत देने के उद्देश्य से तायफ़ की ओर तशरीफ़ ले गए और वहां के सरदारों अब्द या लैल बिन उमर और मसऊद व हबीब के पास बैठकर उनको इस्लाम लाने और इस्लाम की मदद करने की इस्तदा (प्रार्थना) की। इन तीव्रों ने अत्यन्त सस्ती से आपकी जवाब दिया। तो जब नबी सल्ल० इनके इस्लाम लाने से ना-उम्मीद (निराश) हो गए तो उनको इस हाल के छुपाने के लिए इशारा फरमाया। लेकिन उन लोगों ने आपका कहा न माना। अराजल (क्रूर और बुरे) और छोटे-छोटे लड़कों को आपके पीछे लगा दिए।

उन लड़कों ने आपके पीछे तालियां बजानी शुरू कीं और डेले मारने लगे, यहां तक कि आप एक बाग की दीवार की छाया में बैठ गए, और लड़के लोग लौट गए। जब आप को उन के शोर व गूल से सुकून हासिल हो गया तो रात को खजूर के एक बाग में ठहर गए। आधी रात को जब आप (सल्ल०)

नमाज़ पढ़ने के लिए खड़े हुए तो कुछ जिन इस तरफ़ से होकर गुज़रे और उन्होंने इस मक़ाम (स्थान) पर ठहर कर कुरआन को सुना। इसके बाद नबी सल्ल० मक्का में दाखिल हुए।

मक्का वाले बदस्तूर (उसी तरह) आपकी अदावत (दुश्मनी) पर तुले हुए थे। कुरैश के रईसों में से किसी ने आपको अपनी हमसायगी (शरण) में न लिया। आखिरकार मुतअिम बिन अदी के जुवार (मकान) में आप ठहरे। तुफ़ैल बिन अमरू आपकी सेवा में हाज़िर हुए और ईमान लाए। अपनी क़ौम को इस्लाम की तरफ़ बुलाया, कुछ उनमें से ईमान लाए। नबी सल्ल० ने उनके लिए दुआ फ़रमायी। इब्ने हज़म का बयान है कि इसके बाद मेअराज की घटना पेश आयी। पहले आप मक्का से बेतुलमुकद्दस तशरीफ़ ले गए, फिर वहाँ से आसमानों पर गए और अम्बियाए किराम (नबीयों) से मुलाक़ात की। जन्नत और सदरतुल मुन्तहा को सातवें आसमान पर देखा।

हज के मौसम में इस्लाम की दावत

जब नबी सल्ल० मुशिरकीने मक्का के ईमान लाने से ना-उम्मीद (निराश) हो गए और हज के मौसम में जो लोग इतराफ़ (इधर-उधर) से आते थे उनके फ़स्द गाह (ठिकानों) पर तशरीफ़ ले जाते थे और उनकी इस्लाम की दावत देते थे, कुरआन पढ़कर उनको सुनाते। इस्लाम की नुसरत (मदद) के लिए उनसे कहते, तो कुरैश इन मामलों में भी मुज़ाहमत (हस्तक्षेप व हकावट) करते और आपकी मुज़म्मत (निंदा) करते फिरते थे। अबू सहब को इस काम में एक खास दिलचस्पी थी। वह अपने सारे कामों को छोड़ कर आपके पीछे पड़ गया था। जिन लोगों को आप हज के मौसम में इस्लाम की दावत देते थे, कुछ उनमें से सुन कर सहूलियत (आसानी) से जवाब देते थे और कुछ एतराज (विरोध) करते और कुछ बतरीक़ तमुस्सुूर (मज़ाक़ उड़ाते हुए) यह कहते थे कि “हम इस शर्त पर ईमान लाएंगे कि तुम हमको मुल्क व हुकूमत दिलाओ।”

नबी सल्ल० यह सुन कर इर्शाद फ़रमाते थे कि यह काम अल्लाह का है, मैं इस का वायदा नहीं कर सकता। इसके बाद नबी सल्ल० सुवेद बिन अस्सामत के पास तशरीफ़ ले गए और उसको इस्लाम की दावत दी। सुवेद बिन सामत ने न तो इस्लाम स्वीकार किया और न सहती से जवाब दिया। जब यह मदीना से वापस आया तो किसी लड़ाई में मारा गया। यह वाकिआ (घटना) योमे बआस (एक इतिहासिक घटना) के पहले का है। इसके बाद मक्का में अबुल हैसर अनस अपनी क़ौम वनू अब्दुल अशहल के एक गिरोह को लिए हुए कुरैश से खज़रज वालों से मुक़ाबले के लिए हलफ़ (शपथ) लेने आया। नबी सल्ल० इस गिरोह के पास भी इस्लाम की दावत को तशरीफ़ लाए। इस गिरोह में से एक नवजवान ने जिसका नाम अयास बिन मआज़ था अपनी क़ौम से मुखातिब (संबोधित) होकर कहा, ‘वल्लाह (क़सम खुदा की) हम जिस काम के लिए आए हैं उससे यह अच्छा है।’ अबुल हैसर ने यह सुन कर अयास को एक डांट दिलायी। अयास खामोश हो गया और ये सब बे नील व मराम (बिना सफल हुए) मदीना को वापस आए। थोड़े दिनों बाद अयास का इन्तक़ाल हो गया। उलेमा-ए-मैर (सीरत लिखने वाले विद्वान) कहते हैं कि अयास बिन मआज़ ने इस्लाम पर इन्तक़ाल किया।

मदीना को हजरत

जब मदीने में इस्लाम का ज्यादा जोर हो गया और मदीने वालों के मुसलमान हो जाने से मुसलमानों को एक शक्ति मिल गयी तो मक्का के मुशिरक इस घटना से बहुत बरहम (क्रोधित) हुए और

उन्होंने मुसलमानों के सताने का अहव (प्रतिज्ञा) कर लिया। इससे मुसलमानों की तबलीफ बढ़ गयी। उस समय जो सबसे पहले जिहाद (अल्लाह के दीन के लिए जड़ना) की आयत अल्लाह ने नाखिल फरमायी, उसका अनुवाद यह है—

“और लड़ाई करो तुम उनसे ताकि न रहे शिकं और हो कुल दीन अल्लाह का।”

इसके बाद नबी सल्ल० ने अल्लाह के हुक्म से अपने असहाब (साथियों) को मक्का से मदीना हिजरत कर जाने का इर्शाद फरमाया। सबसे पहले अबू सलमा रजि० मक्का से हिजरत कर गए। इनके बाद आमिर रजि० फिर कुल बनू जहश, उनके बाद अकसह बिन मुहसिन रजि० और एक गिरोह बनू असब्द, जिनमें जैनब बिनत जहश रजि० उम्मुल मोमिनीन भी थीं और उनकी दोनों बहनें, हमनह और उम्मे हबीबा रजि० ने हिजरत की, इसके बाद उमर बिन खत्ताब व अय्याश बिन अबी रबीनियह रजि० बीस सवारों के साथ मदीना को हिजरत कर गए। उमर बिन खत्ताब रोजे रोशन (दिन दहाड़े) तमाम कुरैश के सामने मक्का से निकले और पुकार के कहा कि 'जिस किसी को अपनी पत्नी रांड (विधवा) करानी और अपने वच्चे यतीम कराने मंजूर हों तो वह उस पहाड़ के पीछे मुझसे मिले। मगर किसी को हिम्मत न हुई। फिर जैद, सईद खनीस (रजि०) और एक गिरोह बनू अदी हिजरत कर गए।

ये सब क़बा में रफ़ाअह बिन अब्दुल मुन्ज़र रजि० के मकान पर ठहरे। इनके बाद तलहा रजि०, सुहेब रजि०, हमजा बिन अब्दुल मुत्तलिब रजि०, जैद बिन हारसह रजि० सहित और अबू मुरसिद ने हिजरत की और क़बा में ठहरे। फिर उस्मान एक जमाअत सहित हिजरत कर गए। हजरत अबू बक्र रजि० ने हिजरत की तैयारी की तो नबी सल्ल० ने रोका कि तुम्हारे हिजरत करने का हुक्म मेरे साथ हो गया है, इस लिए मेरा इन्तज़ार (प्रतिक्षा) करो।

धीरे-धीरे मक्का से सभी सहाबा मदीना में चले आए थे। नबी सल्ल० के पास मक्का में सिवाए अबूबक्र सिदीक रजि०, हजरत अली रजि० के और कोई बाकी न रहा था। नबी सल्ल० खुदा के हुक्म का इन्तज़ार (प्रतिक्षा) कर रहे थे।

कुरैश का मश्वरा (परामर्श)

जब कुरैश ने इन बुजुर्गों के हिजरत कर जाने और मदीना वालों के इस्लाम लाने से यह समझ लिया कि ये लोग धीरे-धीरे सभी मदीना में चले गये और हस्बे स्वाहिम (इच्छानुसार) इनके पैगम्बर मुहम्मद सल्ल० भी चले जाएंगे। तब कुरैश आपके वारे में मश्वरा करने के उद्देश्य से दासल न दवा में जमा हुआ। कुरैश के सब बड़े-बड़े आदमी भी मश्वरे में शरीक थे और इनके सिवा दूसरे कबीलों के आदमी भी शरीक थे। इस जत्तसे (सभा) में बहुत कुछ बातें पेश हुईं। कुछ कहते थे कि मुहम्मद (सल्ल०) को क्रंद कर दो, कुछ कहते थे जला वतन (देश निकाला) कर दो। अबू जहल ने कहा कि कबीलों से एक-एक आदमी इन्तखाब (चुनकर) करके क़त्ल कर दो। इस सूरत में। किसी खास कबीले पर क़त्ल का जुमन न आएगा और न बनू अब्दे मनाफ़ इन सभी से लड़ सकेंगे, केवल खून बहा (खून का बदला अदा कर) दिया जाएगा। सभा में शरीक सभी लोगों ने इस राय को पसन्द किया और रात ही से इस पर अमल करने को तैयार हो गए।

नबी सल्ल० का मकान धेर लिया। अल्लाह ने वट्थ्य द्वारा नबी सल्ल० को सूचित कर दिया। चुनचि (अतएव) हजरत अली रजि० को अपनी स्वाबगाह (सोने के कमरे) में सुला कर मकान के बाहर आए। अल्लाह ने उनकी आँखों पर उस समय पर्दे डाल दिए। नबी सल्ल० ने एक मुस्त (मुट्ठी

भर) खाक (मिट्टी) पर सूर: यासीन पहली आयतें 'फ़हुम ला युबसिल्लन' तक पढ़ कर उनकी तरफ़ फेंक दिया और आप अबू बक्र सिद्दीक रज़ि० सहित मकान से बाहर तथरीफ़ लाए। अब्दुल्लाह बिन अरीक़त को उज्रलत (मजहूरी) देकर रहबर (गाइड) मुक़र्रर (नियुक्त) किया। उसने यह कह दिया कि आम रास्ते को छोड़ कर ग़ैर माअरुफ़ (जो प्रसिद्ध न हो) रास्ते से मदीना ले जाए। अगरचे (यद्यपि) अब्दुल्लाह बिन अरीक़त काफ़िर था लेकिन इन दोनों बुजुर्गों ने उस पर एतमाद (भरोसा) कर लिया था।

ग़ारे सूर

नबी करीम सल्ल० और हज़रत अबू बक्र रज़ि० मकान से निकल कर रात ही को एक ग़ार (खोह) में जो जब्ले सूर (सूर नामक पहाड़) में था छिप गए। अब्दुल्लाह बिन अबी बक्र प्रतिदिन ग़ार पर आते और मक्का वालों की बातों से सूचित कर जाते थे और आमिर बिन फ़हीरह रज़ि० (अबू बक्र का सेवक) उन बकरियों को अब्दुल्लाह बिन अबी बक्र के पीछे-पीछे पांव के निशान मिटाने के लिए चराते हुए लाते और रात को वहीं रह जाते थे इस वजह से कि ज़रूरत भर दूध आदि आपको दे दिया जाए और असमा बिनत अबू बक्र रोज़ाना मक्का से खाना लाकर खिला जाती थीं।

तमाम सावधानियों को पकड़े रहने के बावजूद कुरैश भी ढूंढ़ते हुए ग़ार तक पहुंच गए। चूंकि घने ग़ार (ग़ार के मुंह) पर मकड़ियों ने रात को जाला लगा रखा था। कुरैश ने यह सोचा कि यदि कोई अन्दर जाता तो जाला टूट जाता। इस वजह से मुतमईन (सन्तुष्ट) होकर वापस आए और सौ ऊंटों के इनाम का नबी सल्ल० और अबू बक्र रज़ि० की गिरफ़्तारी पर एलान (घोषणा) कर दिया।

जब ग़ार में तीन दिन नबी सल्ल० व अबू बक्र रज़ि० को गुज़र गए और कुरैश का तलाश का अभियान कम हो गया तब अब्दुल्लाह बिन अरीक़त इन दोनों बुजुर्गों के लिए सवारों लेकर आया और एक ऊंटनी अपने लिए भी लाया और असमा बिनत अबी बक्र रास्ते के लिए खाना पका कर लायीं, लेकिन उज्रलत (जल्दी) में रस्सी लाना भूल गयी। जिससे बांधकर खाना लटका दिया जाता। असमा बिनत अबी बक्र ने अपना नितान (कमरबन्द) फाड़ कर खाना लटकाया। इसी दिन से असमा बिनत अबी बक्र जानुन्न ताकीन की उपाधि से मशहूर हो गयीं।

मदीने का सफ़र

नबी सल्ल० एक नाक़ा (ऊंटनी) पर सवार हुए और दूसरी पर अबू बक्र सिद्दीक और उनके पीछे आमिर बिन फ़हीरह रज़ि० सवार हुए और अब्दुल्लाह बिन अरीक़त एक तीसरे ऊंट पर सवार हुआ। आम रास्ता छोड़कर एक ग़ैर मशहूर रास्ते को अपनाया। अबू बक्र सिद्दीक ने रवाना होते समय अपना कुल माल (जो लगभग छः हज़ार दिरहम था) अपने साथ ले लिया। पहले दिन से दूसरे दिन की ज़ुह्र तक बराबर सफ़र करते रहे। ज़ुह्र के समय एक मैदान में थोड़ी देर के लिए ठहर गए। इस बीच में मुराक़ा बिन मालिक (जो आप (सल्ल०) के गिरफ़्तार करने का वायदा कर चुका था) आ पहुंचा। नबी सल्ल० ने उसके हक़ में बददुआ की। उसी समय उसके घोड़े के चारों पांव ज़मीन में धंस गए। मुराक़ा मजबूर होकर नबी सल्ल० से अमान (माफ़ी) का स्वास्तगार (इच्छुक) हुआ। नबी सल्ल० ने उसको अमान दे दी और मुराक़ा ने वायदा किया कि मुझे अब जो भी आदमी मिलेगा

उसको वापस करता आऊंगा। अब मुराक्का तो उस जगह से वापस हुआ। फिर जो नबी सल्ल० का पीछा करते हुए उसको मिलते जाते थे उनको वह वापस करता जाता था।

अब्दुल्लाह बिन अरीकत नबी सल्ल० व अबू बक्र रजि० को लेकर साथ लिए हुए असफले मक्का से निकल कर समुद्र के किनारे की ओर चला और असफले असफान से गुजरता हुआ मज में पहुंचा। फिर वहां से उसके असफल को तै करता हुआ कदीर में आया। कबीर से निकल कर उरुज होता हुआ अवाली मदीने से कुबा में रसूलुल्लाह (सल्ल०) और अबू बक्र (रजि०) के साथ दाखिल हुआ। यह रास्ते का बड़ा जानने वाला था।

जकात व अज़ान

जिस समय नबी सल्ल० को मदीने में जमाव व इत्मीनान हासिल हो गया और आपके पास मुहाजिर व अन्सार जम हो गए, उस वक्त जकात फ़र्ज की गयी और मुक्कीम की नमाज़ में दो रकअतें और बढ़ायी गयीं जिससे चार रकअतें पूरी हुईं। इससे पहले मक्का में दो ही रकअतें नमाज़ मुसाफ़िर व मुक्कीम के लिए थीं। फिर अब्दुल्लाह बिन सलाम जो यहूद के बहुत बड़े आलिम (विद्वान) थे, इस्लाम लाए। वजह यह हुई कि पहले-पहले जब उन्होंने नबी सल्ल० को देखा तो कसम खाई कि इस व्यक्ति का चेहरा झूठे आदमी का चेहरा नहीं हो सकता। यहूदियों ने उसका साथ छोड़ दिया और ओस व खज़रज के कुछ लोगों को वहका कर मुनाफ़िक (कपटाचारी) बना लिया जिनका काम यह था कि वे मुसलमानों से लड़ते थे और कुफ़ की बातों पर इसरार (जिद) करते थे। इन मुनाफ़िकों (कपटाचारियों) के सरदार अब्दुल्लाह बिन उबई, वजद बिन कैस, हरस बिन सुहेल, अज़ाद बिन हनीफ़ थे और यहूदियों में से जो बज़ाहिर (प्रायश्च में) इस्लाम के हमदर्द और छिपे तौर पर कुफ़ में डूबे हुए थे वे थे ये—साअद बिन खनीस, ज़ैद, राफ़ेअ, रिफ़ाअह इब्ने ज़ैद, कनायह आदि मुसलमानों के दुश्मन थे।

मक्का की फ़तह

१० वीं रमजान = हिजरी को दस हजार सेना के साथ नबी सल्ल० मदीना से मक्का को फ़तह करने के उद्देश्य से रवाना हुए। इस सेना में एक हजार मर्द बनू सलीम के और एक हजार मुजीना के, चार सौ ग़फ़ार के, ४ सौ अस्लम के और बाकी कुरैश व असद व तंतीम और मुहाजिर व अन्सार के मधालीन व कताइब थे। मदीना में कलसूम बिन हसीन बिन उतबा ग़फ़ारी ही आपके कायम मुक़ाम (कार्यवाहक) हुए।

जिस समय आप जुल हलीफ़ा और कुछ कहते हैं कि हजफ़ह में पहुंचे अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब रजि० मक्का से हिजरत करके मदीने को आते हुए मिले। नबी सल्ल० के फ़रमाने से अब्बास रजि० आप के साथ जिहाद के उद्देश्य से इस्लामी लश्कर के साथ मक्का को वापस हुए। आखिरकार मक्का बिना जंग के फ़तह हो गया और पूरे अरब की क़ौमों इस्लाम में दाखिल होना शुरू हुई।

हज्जतुल विदाअ (अन्तिम हज)

इन बाकिआत (घटनाओं) के बाद ज़िल-क-अद का महीना आ गया। जब उसकी पांच रातें रह गयीं तो हज के इरादे से मदीना से रवाना हुए। आपके साथ मुहाजिरों, अन्सार और अरब के

रईसों का एक गिरोह था और सौ ऊंट थे। मक्का में एक शम्बा (इतवार) के दिन जबकि चार दिन ज़िल हज के गुजर चुके थे दाखिल हुए। अली बिन अबी तालिब रज़ि० भी जो नजरान में सदका जमा करने को गए हुए थे, मक्का में आप से आ मिले और आपके साथ हज किया। आपने इस बार लोगों को मनासिके हज (हज के कायदे) की तालीम दी, उसके सुनन (तरीकें) बतलाए, उनके लिए रहमत की दुआ की और अरफात में एक लम्बा खुरबा दिया जिसमें बहुत सी हिदायतों के बाद ये अलफ़ाज़ (शब्द) भी थे—‘मेरे बाद तुम काफ़िर न बनो कि एक दूसरे की गर्दन मारते फ़िरो।’

नबी सल्ल० की अलालत (बीमारी)

सबसे पहले जिससे नबी सल्ल० पर अपने इन्तक़ाल (देहान्त) का हाल मुन्क़शफ़ (स्पष्ट) हुआ वह अल्लाह का यह क़ौल (कथन) था—

‘इज़्ना ज़ा-अ-नसल्लाहि वल फ़तहु’ ता आख़िर सूरः

इसके बाद सफ़र अरबी महीने ११ हिज़री सन ६४५ ईसवी के अनुसार दो रातों बाक़ी थीं कि आपके दर्द पैदा हुआ। आपने इस दर्द की हालत में यह इशारा किया कि बेशक (निस्संदेह) एक बंदे को अल्लाह ने अपने बन्दों में से दुनिया और उस चीज़ का जो उसके पास है (अर्थात् आख़िरत) का इस्तियार (स्वतंत्रता) दिया है। तो बन्दे ने उसको चुना जो उसके पास है।

हज़रत अबू बक्र रज़ि० इस फ़िक़रे (वाक्य) को सुन कर रो पड़े और यह कहा—‘ऐ नबी सल्ल० ! हम आपका अपनी जानों और बच्चों से फ़िदया (सदका) देते हैं।’ इसके बाद आपने अपने सहाबा को जमा दिया और उनके हक़ में भलाई की दुआ की और आंखों से आंसू जारी होते रहे। इसी दौरान आपने फ़रमाया—

“मैं तुमको डरने की नसीहत करता हूँ और खुदा से, तुम्हारे लिए रहम (दया) की दरखास्त (प्रार्थना) करता हूँ और उस की निगहबानी (देख-रेख) में तुम को छोड़ता हूँ और तुम को उस के सुपुर्दे (हवाले) करता हूँ। (ऐ लोगो) मैं तुमकी ख़ोफ़ (डर) और खुशख़बरी (शुभ सूचना) दोनों सुनाता हूँ कि तुम खुदा के आदेशों में ज़्यादती न करो और उसके शहरों में ज़्यादती न करो और उस की मख़लूक़ (लोगों) पर ज़्यादती (जुल्म) न करो। क्योंकि खुदा ने मुझ से भी और तुम से भी यह कहा है कि आख़िरत (परलोक) का घर (जन्नत) एक ऐसा मक़ाम (जगह) है कि जिसका मालिक केवल उन लोगों को बनाऊंगा जो ज़मीन में सरकशी (विद्रोह) के मुरतक़िब (अपराधी) न हों और न ज़मीन में वे किसी क्रिश्म (प्रकार) का फ़साद (दंगा) करते हों क्योंकि जन्नत पाक लोगों के लिए (उनके कर्मों का नतीजा) है और उसने कहा है कि क्या जहन्नम में मुत्क़ब्बिर (घमंडी) लोगों के सिवा और भी होगा ? अर्थात् न होगा) फिर आपने मस्जिद की तरफ़ के जितने दरवाज़े थे सभी को बन्द करने का हुक्म दे दिया केवल अबू बक्र के दरवाज़े को छोड़ कर। फिर यह कहा कि मैं किसी को अबू बक्र से ज़्यादा अपनी सोहबत (महफ़िल) में अपज़ल (अच्छ) नहीं जानता हूँ और यदि मैं किसी को अपना ख़लील (दोस्त) बनाता तो अबू बक्र को अपना ख़लील (दोस्त) बनाता।”

वफ़ात (देहान्त)

इसके बाद फिर दर्द का इतना जोर हुआ कि आप बेहोश हो गए। उम्मुहातुल मोमिनीन (आप

की पत्नियाँ) और फ़ातिमा (रज़ि०) व अब्बास, अली रज़ि० सबके सब आपके गिर्द (पास) आकर जमा हो गए। इसी अर्से (बीच में) मैं नमाज़ का वक़्त आ गया। दर्द में कुछ कमी मालूम हुई बेहोशी जाती रही, लेकिन जोअफ़ (कमज़ोरी), से उठ न सकते थे। आपने हाज़िरिन (पास वालों) से मुखातिब (सम्बोधित) होकर फ़रमाया कि अबू बक्र रज़ि० को नमाज़ पढ़ाने के लिए कहो। उम्मुल-मोमिनीन हज़रत आयशा रज़ि० ने अज़्र किया कि वे एक ज़ईफ़ व रक़ीक़ुल क़ल्ब (कमज़ोर व थोड़े दिल वाले) आदमी हैं आपकी जगह पर खड़े होकर नमाज़ न पढ़ा सकेंगे, उमर रज़ि० को इस काम पर मामूर (लगा) फ़रमा दें आपने इससे इन्कार करके अबू बक्र रज़ि० को इमामत पर मामूर (खड़ा किया) किया और फ़रमाया कि खुदा और मुसलमान अबू बक्र रज़ि० के सिवा और किसी पर राज़ी नहीं हैं।

फिर अबू बक्र रज़ि० ने आपकी अलालत (बीमारी) की हालत में तेरह नमाज़ें पढ़ायीं। फिर जबकि दोशम्बे (पीर) का दिन आया और यही दिन आपकी वफ़ात (देहान्त) का है सुबह की नमाज़ के समय आप सर मुबारक पर पट्टी बांधे हुए बाहर तशरीफ़ लाए। उस वक़्त अबू बक्र लोगों को नमाज़ पढ़ा रहे थे। अबू बक्र ने पीछे हटने का क़स्द (इरादा) किया, आपने उनको अपने हाथ से दायीं तरफ़ बैठकर नमाज़ पढ़ाने का इशारा किया और खुद (स्वयं) अबू बक्र के पीछे नमाज़ अदा की। इसके बाद लोगों की तरफ़ मुखातिब (सम्बोधित) होकर फ़रमाया—ऐ लोगो! आग भड़की, फ़ित्ने आ गए तुमको मालूम रहे कि जिस चीज़ को कुरआन ने हलाल या हराम करार (ठहराया) दिया है उसके सिवा मैंने किसी चीज़ को हराम या हलाल करार नहीं दिया। फिर हज़रत आयशा रज़ि० के घर में आए और वहीं आप (सल्ल०) आप का इन्तिक़ाल (देहान्त) हो गया।

नबी सल्ल० का इन्तिक़ाल होस़े ही सहाबा में एक अजीम (बड़ी) परेशानी फैल गयी। उमर बिन ख़ताब रज़ि० इस हादसे नागहानी (अचानक टूट पड़ने वाली घटना) से मुतहय्यर (हैरत) से हो गए। कुछ होश न रहा। तलवार खींच कर खड़े हो गए और बुलंद (ऊंची) आवाज़ से कहने लगे—'मुनाफ़िक़ (कपटाचारी) कहते हैं कि हुज़ूर का इन्तिक़ाल हो गया मगर वे झूठे हैं, बल्कि वे तो मूसा अलैहि० की तरह खुदा से मिलने गए हैं थोड़ी देर में आ जाएंगे और जो कोई यह कहे कि नबी सल्ल० मर गए हैं मैं उस की गर्दन इस तलवार से उड़ा दूंगा।' उमर रज़ि० जोश में यह कहते जाते थे। किसी की मज़ाल (हिम्मत) न थी कि कोई आदमी उनसे यह कहता कि तुम तलवार भ्यान में कर लो नबी सल्ल० का इन्तिक़ाल हो गया है।

इसी दौरान यह दिल तोड़ने वाली घटना सुनकर अबू बक्र रज़ि० आ गए और सीधे हुज़रए मुबारक में जाकर हज़रत आयशा रज़ि० की गोद से सर मुबारक लेकर गौर से देखकर कहा, 'मेरे माँ बाप आप (सल्ल०) पर कुर्बान, बेशक (निस्संदेह) आप (सल्ल०) ने मौत का जायका (स्वाद) चखा जिस को अल्लाह ने आप के लिए लिखा था और अब हरगिज़ (कदापि) आप को मौत न आएगी—'इन्ना लि़ल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिज़ुन' कहते हुए बाहर आए।

उमर रज़ि० लोगों से वही बातें कह रहे थे कि अबू बक्र रज़ि० ने उमर से कहा—चुप रहो, उमर (रज़ि०) ने कुछ भी ख़याल न किया। अबू बक्र दोबारा कहना मुनासिब (उचित) न समझ कर अलहदा (अलग) खड़े हो कर लोगों से मुखातिब (सम्बोधित) हुए। जितने आदमी उमर रज़ि० के पास जमा थे वे सब उन्हें अकेला छोड़ कर अबू बक्र रज़ि० के पास चले आए। उस समय उन्होंने ने अल्लाह की प्रशंसा के बाद यह ख़ुत्बा पढ़ा जिस का अनुवाद यह है—

“ऐ लोगो! जो आदमी मुहम्मद (सल्ल०) की इबादत करता हो तो वे इन्तिक़ाल कर गए और

जो खुदा की इबादत करता हो तो वह जिंदा है।" फिर कुरआन की ये आयतें पढ़ीं जिस का अनुवाद यह है—

"मुहम्मद (सल्ल०) इसके सिवा कुछ नहीं कि बस एक रसूल है उनसे पहले और रसूल भी गुजर चुके हैं, फिर क्या यदि वह मर जाएं या कत्ल कर दिए जाएं तो तुम लोग उल्टे पांव फिर जाओगे ? याद रखो ! जो उल्टा फिरेगा वह अल्लाह का कुछ नुकसान न करेगा। अलबत्ता जो अल्लाह का शुक अदा करने वाले हैं उन्हें वह उसका इनाम देगा।"

अबू बक्र रजि० की ज़बान से इन आयतों का निकलना था कि लोगों के ख्यालात (विचार और सोच) बदल गए और दफ़अतेन (अचानक) हैरत का आलम (बातावरण) ऐसे दूर हो गया कि गोया (जैसे) इससे पहले वह नहीं था। इस परिवर्तन से यह मालूम होता था कि सहाबा इस आयत के उतरने का हाल ही न जानते थे। उमर रजि० कहते हैं कि पहले मैंने अबू बक्र रजि० के कहने पर मुतलक (बिल्कुल) ख्याल नहीं किया था लेकिन जिस वक्त उन्होंने ये आयतें पढ़ीं तो मुझे मालूम हुआ कि ये आयतें भी नाज़िल हुई हैं। मारे डर के मेरे पांव चर्रा गए और ज़मीन पर गिर पड़ा और मैंने यह समझ लिया कि आपका इन्तक़ाल हो गया। और आप हज़रत आयशा रजि० के मकान में उसी जगह पर जहाँ इन्तक़ाल फ़रमाया था क़ब्र शरीफ़ बनाकर रखे गए और आपके बाद तमाम मुसलमानों के इतिफ़ाक़ (राय) से हज़रत अबू बक्र रजि० खलीफ़ा मुकर्रर (नियुक्त) हुए जिनमें मुहाजिर व अंसार सब शामिल थे।

दिन व तारीख़ व सन वफ़ात (इन्तक़ाल)

आपने ६३ साल की उम्र में १२ रबीउल अव्वल ११ हिजरी दोशम्बा (पीर) के दिन इन्तक़ाल फ़रमाया।

इस्लामी मज़हबी किताबें और हर किसम के कुरआन
मजीद तथा छपाई के हर काम के लिए
हमारी खिदमात हासिल करें।

१ सूरतुल-फ़ातिहति ५

(मक्की) इस सूरः में अरबी के १२३ अक्षर, २५ शब्द

७ आयतें और १ रकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल-आलमीन ५(१)

अर्रह्मानिर्रहीम ५(२) मालिकि योमिद्दीन ५

(३) इय्या-क नअबुदु व इय्या-क नस्तअीन ५(४)

इहिदिनस्-सिरातल्मुस्तक़ीम ५(५) सिरातल्ख़ी-न

अनअम-त अलैहिम् ५(६) गैरिल्-मग़ज़ूबि

अलैहिम् बल्जज़ालीन ५(७)



१ सूरः फ़ातिहः ५

सूरः फ़ातिहा मक्की है और इस में सात आयतें हैं।

शुरू खुदा का नाम लेकर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

सब तरह की तारीफ़ खुदा ही के लिए है जो तमाम मल्लूकात का परवरदिगार है।^१ (१) बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला, (२) इन्साफ़ के दिन का हाकिम,^२ (३) (ऐ परवरदिगार!) हम तेरी ही इबादत करते हैं, और तुझी से मदद मांगते हैं, (४) हम को सीधे रास्ते पर चला, (५) उन लोगों का रास्ता जिन पर तू अपना फ़ज़ल व करम करता रहा, (६) न उनका जिन पर गुस्सा होता रहा और न गुमराहों का। ५(७)

तर्जुमा

१. चूँकि हुक्म है कि क़ुरआन मजीद खुदा का नाम लेकर शुरू किया जाए, इस लिए हमें 'बिस्मिल्लाह' के तर्जुमे के शुरू में 'कहो' का लफ़्ज़ जो छिपा हुआ है, लिख देना चाहिए था, मगर फिर सब जगह तर्जुमे में यह लफ़्ज़ लिखना पड़ता और इस में वह मज़ा न आता जो 'बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम' में है, इस लिए यह लफ़्ज़ छिपा ही रहने दिया।

२. इस सूरः को खुदा ने बंदों की जुबान में नाज़िल फ़रमायी है। मक़सूद यह बात का सिखाना है कि वे इस तरह खुदा से दुआ किया करें। हदीस शरीफ़ में आया है कि सब से अपज़ल ज़िक्र 'ला इला-ह इल्लल्लाह' है और सब से अपज़ल दुआ 'अल-हम्दु लिल्लाह'।

३. इन्साफ़ के दिन से मुराद क्रियामत का दिन है, क्योंकि दूसरी जगह इशाद हुआ है, 'तुम को क्या मालूम है कि इन्साफ़ का दिन कौन-सा है, जिस दिन कोई किसी के कुछ काम न आएगा और उस दिन खुदा का ही हुक्म होगा'—अगरचे और दिनों का मालिक भी खुदा ही है, मगर उस दिन को खास इस लिए किया कि उस दिन खुदा के सिवा किसी का हुक्म न चलेगा।

पहला पारः

अलिफ्-लाम्-मीम्

२ सूरतुल-ब-क-रति ८७

(मदनी) इस सूरः में अरबी के २०००० अक्षर, ६०२१ शब्द,
२८६ आयतें और ४० रुकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

अलिफ् - लाम् - मीम् ८ (१)

जालिकल्किताबु ला रे - ब ६ फ्रीहि ६

हुदल्लिल्मुत्तकीन ५ (२) बल्लजी-न युअ्मिनू-न

बिल्सबि व युकीमूनस्सला-तु व मिम्मा र-जकना-

हुम् यून्फिकून ५ (३) बल्लजी-न युअ्मिनू-न

बिमा उन्जि-ल इलै-क व मा उन्जि-ल मिन्

कब्लिक ६ व बिल-आखिरति हुम् यूक्निनू ५ (४)



पहला पार:

अलिफ-लाम-मीम

२ सूर: बक्रर: ८७

सूर: बक्रर: मदनी है और इसमें दो सौ छियासी आयतें और चालीस हकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

शुरू खुदा का नाम लेकर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

अलिफ-लाम-मीम०' (१) यह किताब (कुरआन मजीद): इसमें कुछ शक नहीं: (कि खुदा का कलाम है, खुदा से) डरने वालों की रहनुमा है, (२) जो ग़ैब पर ईमान लाते और आदाब के साथ नमाज़ पढ़ते और जो कुछ हमने उन को दे रखा है, उसमें से खर्च करते हैं। (३) और जो किताब (ऐ मुहम्मद !) तुम पर नाज़िल हुई और जो किताबें तुम से पहले (पंगम्बरों पर) नाज़िल हुयीं, सब पर ईमान लाते और आखिरत का यकीन रखते हैं।' (४)

१. और इसी तरह के और हर्फ, जो कुरआन मजीद की बहुत-सी सूरतों के शुरू में आये और जिन को 'हर्फे मुक़तआत' कहते हैं, अस्-सारे इलाही (अल्लाह के रहस्यों) में से हैं, उन पर बिना कुछ कहे-सुने ईमान लाना चाहिए। प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन के कुछ मानी नहीं बयान फ़रमाये, सिर्फ़ यह फ़रमाया है कि 'अलिफ़' एक हर्फ़ है और 'लाम' एक हर्फ़ है और 'मीम' एक हर्फ़ है।

२. 'डरने वालों' का लफ़्ज़ इस बात की दलील लाता है कि जिन के दिलों में खुदा का डर है, वही उस की हिदायत को मानते और वही इस किताब से फ़ायदा हासिल करते हैं और जो डर नहीं रखते, वे हिदायत की बातों की तरफ़ तबज़ोह ही नहीं देते और इसी लिए यह किताब उन के लिए रहनुमा नहीं हो सकती।

३. 'ग़ैब' उस चीज़ को कहते हैं, जो आंख से छिपी हुई हो और इस जगह वे चीज़ें मुराद हैं, जिन की ख़बर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दी है और जो नज़र से ओझल हैं—जैसे पुले सिरात, तराजू-ए-आमाल, बहिस्त और दोज़ख़ वगैरह।

४. आख़िरत से मुराद क्रियामत का दिन है, चूँकि वह दिन दुनिया के बाद आयेगा, इस लिए उस को आख़िरत कहते हैं और 'योमुल आख़र' भी।

उलाह-क अला ह्रदम्-मिरिंदिबहिम् ॐ व उलाह-क हुमुल्-मुफ्लिहून (५)

इन्तल्लजी-न क-फ-रु सवाजित अलैहिम् अ अन्जर-तहुम् अम् लम् तुन्जिहुम् ला

युञ्मिनून (६) ख-त-मत्लाहु अला कुलूबिहिम् व अला समुअिहिम्^७ व अला

अन्सारिहिम् गिशावतुं व लहुम् अजाबुन् अजीम * (७) व मिनन्नासि

मंयकूलु आमन्ना बिल्लाहि व बिल्यौमिल्-आखिरि

व मा हुम् बि मुअ्मिनीन ॥ (८)

यही लोग अपने परवरदिगार (की तरफ) से हिदायत पर हैं और यही निजात पाने वाले हैं। (५) जो लोग काफिर हैं उन्हें तुम नसीहत करो या न करो, उन के लिए बराबर है, वे ईमान नहीं लाते हैं। (६) खुदा ने उन के दिलों और कानों पर मुहर लगा रखी है और उन की आंखों पर परदा (पड़ा हुआ) है। और उन के लिए बड़ा अज्ञाब तैयार है। (७) ★

और कुछ लोग ऐसे हैं जो कहते हैं कि हम खुदा पर और अखिरत के दिन पर ईमान रखते हैं, हासर्गिक बे ईमान नहीं रखते (८) ये (अपने घमंड में) खुदा को और मोमिन को चकमा देते हैं, मगर (हकीकत में) अपने सिवा किसी को चकमा नहीं देते और इस से बे-खबर हैं। (९) इन के दिलों में (कुफ्र का) रोग था। खुदा ने उन का रोग और ज्यादा कर दिया और उन के झूठ बोलने की बजह से उन को दुख देने वाला अज्ञाब होगा। (१०) और जब उन से कहा जाता है कि जमीन में फसाद न डालो, तो कहते हैं कि हम तो इस्लाह (सुधार) करने वाले हैं। (११) देखो, ये बिला शुब्हा फसाद पैदा करने वाले हैं, लेकिन खबर नहीं रखते। (१२) और जब उन से कहा जाता है कि जिस तरह और लोग ईमान ले आए, तुम भी ईमान ले आओ, तो कहते हैं, भला, जिस तरह मूर्ख ईमान ले आए हैं, उसी तरह हम भी ईमान ले आए? सुन लो कि यही मूर्ख हैं, लेकिन नहीं जानते। (१३) और ये लोग जब मोमिनों से मिलते हैं तो कहते हैं कि हम ईमान ले आए हैं और जब अपने झूठानों में जाते हैं तो (उन से) कहते हैं कि हम तुम्हारे साथ हैं और (मुहम्मद सल्ल० के मानने वालों से) तो हम हंसी किया करते हैं। (१४) इन (मुनाफ़िकों) से खुदा हंसी करता है और उन्हें मोहलत दिए जाता है कि शरारत व सरकशी में पड़े बहक रहे हैं। (१५) ये वह लोग हैं जिन्होंने हिदायत छोड़ कर गुमराही खरीदी, तो न तो उन की तिजारत ही ने कुछ नफ़ा दिया और न वे हिदायतयाब (हिदायत पाए हुए) ही हुए। (१६) उन की मिसाल उस शरूस की-सी है, जिस ने (अंधेरी रात में) आग जलायी। जब आग ने उसके चारों तरफ की चीजें रोशन की, तो खुदा ने उन लोगों की रोशनी खत्म कर दी और उन को अंधेरों में छोड़ दिया कि कुछ नहीं देखते। (१७) (ये) बहरे हैं, गूँगे हैं, अंधे हैं कि (किसी तरह सीधे रास्ते की तरफ) लौट ही नहीं सकते। (१८) या उन की मिसाल मेंह (वर्षा) की-सी है कि आसमान से (बरस रहा हो और) उस में अंधेरे पर अंधेरा (छा रहा) हो और (बादल) गरज (रहा) हो और बिजली (कड़क रही) हो तो ये कड़क से (डर कर) मीत के डर से कानों में उंगलियां दे लें और खुदा काफ़िरों को

१. इन्कार के मानी डर की खबर सुनाने, खोफ़ दिलाने, बाज व नसीहत और हिदायत करने, राह बताने और मुतन्बह व आगाह करने के हैं। पहले मानी तो मशहूर हैं, बाज व नसीहत और हिदायत के मानी इस आयत से बाहिर हैं। 'इन्मा अन-न मजिह-व-व लि कुल्लि कौमिन हाव०' यानी ऐ पैगम्बर! तुम तो सिर्फ़ हिदायत करने वाले हो और हर क्रौम में हिदायत करने वाले हो गुजरे हैं।' इस का साफ़ मतलब यह है कि जिस तरह पहले हादी व रहनुमा बाते रहे हैं और वे हर क्रौम में आते रहे हैं, इसी तरह तुम भी हिदायत करने वाले और रास्ता दिखाने वाले हो। इस जगह 'इन्कार' से बाज व नसीहत के मानी ही मुनासिब हैं और वही तजुमा में अख्तियार किया गया है।

२. दुनिया में इस क्रिस्म के लोग भी मौजूद हैं जिन के दिल नसीहत का असर नहीं लेते और ईमानी नूर से रोशन नहीं होते, ऐसे लोग शक्की-ए-अजली (हमेशा के बद-बख्त) कहलाते हैं। ऐसी ही के हक़ में यह इशारा हुआ है कि उन को नसीहत करना या न करना बराबर है। दिलों और कानों पर मुहर लगने और आंखों पर परदा पड़ने से (शेष पृष्ठ २७५ पर)

(हर तरफ से) घेरे हुए है।' (१६) करीब है कि बिजली (की चमक) उन की आंखों (की रोशनी) को उचक ले जाए। जब बिजली (चमकती और) उन पर रोशनी डालती है तो उस में चल पड़ते हैं और जब अंधेरा हो जाता है तो खड़े के खड़े रह जाते हैं और अगर खुदा चाहता तो उनके कानों (के सुनने की ताकत) और आंखों (के देखने की ताकत, दोनों) को बर्बाद कर देता। बिला शुबहा खुदा हर चीज पर क़ुदरत रखता है। (२०) *

लोगो ! अपने परवरदिगार की इबादत करो, जिस ने तुमको और तुमसे पहले लोगों को पैदा किया, ताकि तुम (उस के अज्ञाब से) बचो। (२१) जिस ने तुम्हारे लिए ज़मीन को बिछोना और आसमान को छत बनाया और आसमान से मेह बरसा कर तुम्हारे खाने के लिए क्रिस्म-क्रिस्म के मेवे-पैदा किए। पस किसी को खुदा का हमसर (बराबर का) न बनाओ और तुम जानते तो हो। (२२) और अगर तुमको इस (किताब) में, जो उस ने अपने बंदे (मुहम्मद अरबी सल्ल०) पर नाज़िल फ़रमायी है, कुछ शक हो तो इसी तरह की एक सूर: तुम भी बना लाओ और खुदा के सिवा जो तुम्हारे मददगार हों, उन को भी बुला लो अगर तुम सच्चे हो।' (२३) लेकिन अगर (ऐसा) न कर सको और हरगिज़ नहीं कर सकोगे तो उस आग से डरो, जिस का ईंधन आदमी और पत्थर होंगे (और जो) काफ़िरो के लिए तैयार की गयी है। (२४) और जो लोग ईमान ले आए और नेक अमल करते रहे, उन को खुशख़बरी सुना दो कि उन के लिए (नेमत के) बाग हैं, जिन के नीचे नहरें बह रही हैं, जब उन्हें उन में से किसी क्रिस्म का मेवा खाने को दिया जाएगा तो कहेंगे यह तो वही है जो हम को पहले दिया गया था और उन को एक दूसरे से शकल में मिलते-जुलते मेवे दिए जाएंगे और वहां उन के लिए पाक बीवियां होंगी और वे बहिश्तों में हमेशा रहेंगे। (२५) खुदा इस बात से नहीं शर्माता कि मच्छर या उस से बड़ कर किसी चीज़ (जैसे मक्खी-मकड़ी वगैरह) की मिसाल बयान फ़रमाए। जो मोमिन हैं, वे यक़ीन करते हैं कि वह उन के परवरदिगार की तरफ़ से सच है और जो काफ़िर हैं, वे कहते हैं कि इस मिसाल से खुदा चाहता क्या है इस से (खुदा) बहुतों को गुमराह करता है और बहुतों को हिदायत बख़्शता है और गुमराह भी करता है तो नाफ़रमानों ही को।' (२६) जो खुदा के इक़्रार को मज़बूत करने के बाद तोड़ देते हैं और जिस चीज़ (यानी रिश्तेदारी) के जोड़े रखने का खुदा ने हुक्म दिया है, उसको तोड़े डालते हैं और ज़मीन में खराबी

१. यह मुनाफ़िकों के हाल की दूसरी मिसाल है। इस में दोने इस्लाम को मेंह (वर्षा) से तश्बीह (उपमा) दी गयी है। जिस तरह मेंह में अंधेरा और बिजली और गरज होती है, इसी तरह इस्लाम के शुरू में, भले ही कुछ परेशानियां और कठिनाइयां भी हों, लेकिन बाद में वह सरासर रहमत होता है। मुनाफ़िकों को इस्लाम से फ़ायदे पहुंचते तो उस के क़ायल हो जाते और जब कोई ऐसा हुक्म नाज़िल होता, जिसे वे सख़्त समझते तो सोचते कि बला नाज़िल हुई और यों डर जाते जैसे बिजली से डरा करते हैं। कड़क से डर कर कानों में उंगलियां दे लेने का मतलब यह है कि हुक्म की सख़्ती से घबरा कर उस पर अमल करने से हिचकिचाते और ऐसी तद्बीर करने लगते कि मुश्किल में न फंस जाएं और उस से बच जाएं। कुछ लोगों ने कहा है कि क़ुरआन मजिद में जो कुफ़ व शिर्क और उस पर ठरावे और सज़ा का बयान और खुदा के एक होने की रोशन दलीलें हैं, जिन की मिसाल अंधेरो और गरज और बिजली की है तो मुनाफ़िकों को डर पैदा होता है कि उन को सुन कर लोग कहीं ईमान लाने पर तैयार न हो जाएं और अपना मज़हब न छोड़ दें जो उनके नज़दीक मौत जैसा था और इसी वजह से वे अपने कानों में उंगलियां दे लेते कि क़ुरआन को सुन ही न सकें।

(शेष पृष्ठ ६७५ पर)

कै-फ़ तवफ़ूरुन बिल्लाहि व कुन्तुम् अम्वातत् फ़ अह्याकुम् सुम्-मद्युमीतुकुम्
 सुम्-मद्युमीकुम् सुम्-म इलैहि तुर्जअन् (२८) हुवल्लजी ख-ल-क़ लकुम् मा
 फ़िल्अज़ि जमीअन् सुम्मस्तवा इलस्समा-इ फ़-सव्वाहुन-न सब्-अ समावातिन्
 व हु-व बि कुल्लि शै-इन् अलीम ★ (२९) व इज का-ल रब्बु-क लित्मलाइकति
 इन्नी जाअिलुन् फ़िल्अज़ि खली-फ़-तन् कालू
 अ तज्अलु फ़ीहा मय्युपिसदु फ़ीहा व
 यस्फ़िकुद्दिमा-अहव नहन् नुसब्बिहु बि हम्दि-क
 व नुकदिस्सु ल-क़ का-ल इन्नी अज़-लमु मा
 ला तज्-लमून (३०) व अल-ल-म आदमलअस्मा-
 अ कुल्लहा सुम्-म अ-र-ज़हुम् अलत्मला-इकति
 फ़-का-ल अम्बिऊनी बि अस्मा-इ हा-उला-इ
 इन कुन्तुम् सादिकीन (३१) कालू सुब्हान-क
 ला इल-म लना इल्ला मा अल्लम्तना
 इन्न-क अन्तल्-अलीमुल्-हकीम (३२) का-ल
 या आदमु अम्बिअहुम् बिअस्मा-इहिम्
 फ़ लम्मा अम्ब-अहुम् बिअस्मा-इहिम् का-ल
 अ-लम् अकुल्लकुम् इन्नी अज़-लमु ग़ैबस्समावाति
 वल्अज़ि व अज़-लमु मा तुब्द-न व मा कुन्तुम्
 तक्तुमून (३३) व इज कुल्ला लिल्-मला-इकतिस्जुद् लि आद-म फ़-स-ज-ह
 इल्ला इब्लीस अब्बा वस्तक्-ब-र व का-न मिनल्काफ़िरीन (३४) व कुल्ला या
 आदमुस्कुन् अन-त व ज़ौजुकलजन्न-त् व कुला मिन्हा र-ग-दन् हैसु शिअ्तुमा व ला
 तक्वरबा हाज़िहिश्श-ज-र-त् फ़ तक्ना मिनज़ालिमीन (३५) फ़ अजल्लहुमश्-शैतानु अन्हा
 फ़-अस्-र-ज-हुमा मिम्मा काना फ़ीहि व कुल्लहिबू बअ-ज़ुकुम् लि बअज़िन् अदुवुन्
 व लकुम् फ़िल्अज़ि मुस्तक़र्रह-व-व मता-उन् इला हीन (३६) फ़-त-लक्का
 आदमु मिर्रिबिही कलिमातिन् फ़ ता-ब अलैहि इन्नहू हुवत्तव्वाबुर्रहीम् (३७)
 कुल्लहिबू मिन्हा जमीअन् इ फ़इम्मा यअतियन्नकुम् मिन्नी हुदन् फ़-मन् तबि-अ
 हुदा-य फ़ ला खौफ़ुन् अलैहिम् व ला हुम् यद्जन्नून (३८) वल्लजी-न क-फ़रू व
 कज्जबू बि आयातिना उला-इक अस्हाबुन्नारि इ हुम् फ़ीहा खालिदून ★ (३९)



करते हैं, यही लोग नुक्सान उठाने वाले हैं। (२७) (काफ़िरो!) तुम खुदा के कैसे इन्कारी हो सकते हो, जिस हाल में कि तुम बे-जान थे, तो तुमको जान बख़शी, फिर वही तुमको मारता है, फिर वही तुमको ज़िदा करेगा, फिर उसी की तरफ़ लौट कर जाओगे। (२८) वही तो है, जिसने सब चीज़ें, जो ज़मीन में हैं, तुम्हारे लिए पैदा कीं, फिर आसमानों की तरफ़ मुतवज्जह हुआ, तो उनको ठीक सात आसमान बना दिया और वह हर चीज़ से ख़बरदार है। (२९) ★

और (वह वक़्त याद करने के क़ाबिल है) जब तुम्हारे परवरदिगार ने फ़रिश्तों से फ़रमाया कि मैं ज़मीन में (अपना) नायब बनाने वाला हूँ। उन्होंने कहा, क्या तू उसमें ऐसे शल्स को नायब बनाना चाहता है, जो ख़राबियां करे और कुशत व खून करता फ़िरे और हम तेरी तारीफ़ के साथ तस्बीह व तक्दीस करते रहते हैं। (खुदा ने) फ़रमाया, मैं वह बातें जानता हूँ जो तुम नहीं जानते। (३०) और उसने आदम को सब (चीज़ों के) नाम सिखाये, फिर उनको फ़रिश्तों के सामने किया और फ़रमाया कि अगर तुम सच्चे हो तो मुझे इनके नाम बताओ। (३१) उन्होंने कहा, तू पाक है, जितना इल्म तूने हमें बख़शा है, उसके सिवा हमें कुछ मालूम नहीं। बेशक तू दाना (सब ज़ाता) (और) हिक्मत वाला है। (३२) (तब) खुदा ने (आदम को) हुक्म दिया कि आदम! तुम इन को उन (चीज़ों) के नाम बताओ। जब उन्होंने उनको उनके नाम बताये तो (फ़रिश्तों से) फ़रमाया, क्यों, मैंने तुमसे नहीं कहा था कि मैं आसमानों और ज़मीन की (सब) पोशीदा बातें जानता हूँ और जो तुम जाहिर करते हो और जो पोशीदा करते हो (सब) मुझको मालूम है। (३३) और जब हमने फ़रिश्तों को हुक्म दिया कि आदम के आगे सज्दा करो, तो वे सब सज्दे में गिर पड़े, मगर शैतान ने इंकार किया और गुरूर (घमण्ड) में आकर काफ़िर बन गया। (३४) और हमने कहा कि ऐ आदम! तुम और तुम्हारी बीबी जन्नत में रहो और जहां से चाहो, बे-रोक-टोक खाओ (पियो), लेकिन उस पेड़ के पास न जाना, नहीं तो ज़ालिमों में (दाख़िल) हो जाओगे। (३५) फिर शैतान ने दोनों को वहां से फिसला दिया और जिस (ऐश व निशात) में थे, उससे उनको निकलवा दिया। तब हमने हुक्म दिया कि (जन्नत से) चले जाओ, तुम एक-दूसरे के दुश्मन हो और तुम्हारे लिए ज़मीन में एक वक़्त तक ठिकाना और मआश (रोजी) मुक़र्रर कर दिया गया है। (३६) फिर आदम ने अपने परवरदिगार से कुछ कलिमात (बोल) सीखे (और माफ़ी मांगी) तो उसने उनका कुसूर माफ़ कर दिया। बेशक वह माफ़ करने वाला (और) रहम वाला है। (३७) हमने फ़रमाया कि तुम सब यहां से उतर जाओ। जब तुम्हारे पास मेरी तरफ़ से हिदायत पहुंचे तो (उसकी पैरवी करना कि) जिन्होंने मेरी हिदायत की पैरवी की, उनको न कुछ ख़ोफ़ होगा और न वे गमनाक होंगे। (३८) और जिन्होंने (उसको) कुबूल न किया और हमारी आयतों को झुठलाया, वे दोख़ब में जाने वाले हैं (और) वे हमेशा उसमें रहेंगे। (३९) ★

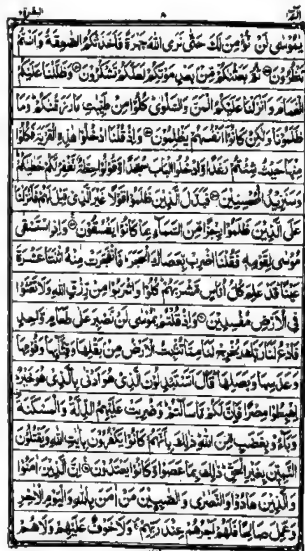
१. सज्दा दो तरह का होता है, एक इबादत का, एक ताज़ीम (आदर) का, इबादत निहायत ज़िल्लत को कहते हैं और अल्लाह तआला नहीं चाहता कि इन्सान उस के सिवा किसी और के आगे ज़िल्लत अस्तियार करे, इस से इन्सान के ज्ञान की बुलंदी जाहिर होती है कि खुदा ने उस का अपने सिवा किसी और की इबादत करना जायज़ नहीं रखा। जो सज्दा खुदा ने फ़रिश्तों से आदम को कराना चाहा था, वह ताज़ीम और इक़्राम और एहतिराम का सज्दा था, जैसा यूयुफ़ के भाइयों ने यूयुफ़ को किया था। ऐसा सज्दा पहले मजहबों में जायज़ था। दीने इस्लाम में गैर-मशरूअ करार दिया गया यानी शरीअत ने नाजायज़ करार दिया। अब ऐसा सज्दा जायज़ नहीं।

(शेष पृष्ठ ६७६ पर)

ऐ आले याकूब (बनी इस्राईल !) मेरे वे एहसान याद करो, जो मैंने तुम पर किये थे और उस इकरार को पूरा करो जो तुम ने मुझ से किया था । मैं उस इकरार को पूरा करूंगा, जो मैंने तुमसे किया था और मुझी से डरते रहो । (४०) और जो किताब मैंने (अपने रसूल मुहम्मद सल्ल० पर) नाज़िल की है, जो तुम्हारी किताब (तौरात) को सच्चा कहती है, उस पर ईमान लाओ और उसके पहले-पहले इन्कारी न बनो और मेरी आयतों में (घटम्वड़ा कर के) उन के बदले थोड़ी-सी कीमत (यानी दुनिया का फ़ायदा) न हासिल करो और मुझी से खौफ़ रखो । (४१) और हक़ की बातिल के साथ न मिलाओ और सच्ची बात को जान-बूझ कर न छिपाओ । (४२) और नमाज़ पढ़ा करो और ज़कात दिया करो और (खुदा के आगे) शुकने वालों के साथ शुका करो । (४३) (यह) क्या (अक़ल की बात है कि) तुम लोगों को नेकी करने को कहते हो और अपने आपको भुलाये देते हो, हालांकि तुम (खुदा की) किताब भी पढ़ते हो, क्या तुम समझते नहीं ? (४४) और (रंज व तक्लीफ़ में) सन्न और नमाज़ से मदद लिया करो और बेशक नमाज़ ग़रा (बोझ) है, मगर उन लोगों पर (ग़रा नहीं), जो इज्ज करने वाले (यानी अल्लाह का डर रखने वाले) हैं । (४५) जो यक्कीन किये हुए हैं कि वे अपने परवरदिगार से मिलने वाले हैं और उसकी तरफ़ लौट कर जाने वाले हैं । ★ ● (४६) ऐ याकूब की औलाद ! मेरे वे एहसान याद करो, जो मैंने तुम पर किये थे और यह कि मैंने तुमको ज़हान (दुनिया) के लोगों पर फ़ज़ीलत दी थी । (४७) और उस दिन से डरो, जब कोई किसी के कुछ भी काम न आये और न किसी की सिफ़ारिश मंज़ूर की जाए और न किसी से किसी तरह का बदला क़बूल किया जाए और न लोग (किसी और तरह) मदद हासिल कर सकें । (४८) और (हमारे उन एहसानात को याद करो,) जब हमने तुम को फ़िअौन की क़ौम से मुख़्लिसी बरक़शी । वे (लोग) तुमको बड़ा दुख देते थे । तुम्हारे बेटों को तो क़त्ल कर डालते थे और बेटियों को ज़िदा रहने देते थे, और इसमें तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से बड़ी (सल्लत) आज़माइश थी । (४९) और जब हमने तुम्हारे लिए दरिया को फाड़ दिया, तो तुमको निज़ात दी और फ़िअौन की क़ौम को डुबा दिया और तुम देख ही तो रहे थे । (५०) और जब हमने मूसा से चालीस रात का वायदा किया, तो तुमने उनके पीछे बछड़े को (माबूद) मुकर्रर कर लिया और तुम ज़ुल्म कर रहे थे । (५१) फिर उसके बाद हमने तुमको माफ़ कर दिया, ताकि तुम शुक़ करो । (५२) और जब हमने मूसा को किताब और मोज़ज़े इनायत किये, ताकि तुम हिदायत हासिल करो । (५३) और जब मूसा ने अपनी क़ौम के लोगों से कहा कि भाइयो, तुमने बछड़े को (माबूद) ठहराने में (बड़ा) ज़ुल्म किया है, तो अपने पैदा करने वाले के आगे तौबा करो और अपने आपको हिलाक कर डालो । तुम्हारे पैदा करने वाले के नज़दीक तुम्हारे हक़ में यही बेहतर है । फिर उसने तुम्हारा कुसूर माफ़ कर दिया । वह बेशक माफ़ करने वाला (और) रहम वाला है । (५४) और जब तुमने

१. फ़िअौन किसी खास शब्द का नाम न था, बल्कि उन वक्ती में मिस्र के हर बादशाह को फ़िअौन कहते थे । जो फ़िअौन हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के वक्ती में था, उस का नाम वलीद बिन मुसअब बिन रय्यान था । कुछ ने मुसअब बिन रय्यान कहा है । कहते हैं कि लोगों ने फ़िअौन से यह बात कही थी कि बनी इस्राईल एक ऐसे शब्द के पैदा होने के इन्तिज़ार में हैं, जिस की वजह से वे फ़िअौन के पंजे से रिहाई पाएंगे और उन को बहुत तरक्की हासिल होगी । यह सुन कर फ़िअौन ने हुक्म दिया कि बनी इस्राईल में जो लड़का पैदा हो, वह क़त्ल कर दिया जाए । कुछ कहते हैं कि फ़िअौन ने एक सपना देखा था कि एक आग बैतुलमक्दिस से निकल कर मिस्र (शेष पृष्ठ १३ पर)

व इज कुलुम् या मूसा लन् नुअमि-न ल-क हत्ता न-रल्ला-ह जहरतुन्
 फ- अ-स-ज-ज-कुमुस्साअिकतु व अन्तुम् तज्जुरून (५५) सुम्-म ब-अस्नाकुम् मिम्बअदि
 मोतिकुम् ल-अल्लकुम् तश्कुरून (५६) व अल्लल्ला अलैकुमुल्-गामा-म व
 अन्जल्ला अलैकुमुल्मन्-न वस्सल्वा ॥ कुलू मिन् तय्यिबाति मा र-जकनाकुम्
 व मा अ-ल-मूना व लाकिन् कानू अन्फुसहुम्
 यज्जलिमून (५७) व इज् कुलन्दखुलू
 हाजिहिल्-कय-न्-त फ कुलू मिन्हा हैसु शिअतुम्
 रगादव्वदखुलुल्बा-ब सुज्जदव-व कूलू हित्ततुन्
 नगफिर् लकुम् खतायाकुम् ॥ व
 स-नजीदुल्-मुहिसिनीन (५८) फ बद्द-लल्लजी-न
 अ-ल-मू क्रोलन् गैरल्लजी क्री-ल लहुम् फ अन्जल्-ना
 अलल्लजी-न अ-ल-मू रिज्जम्-मिनस्समा-इ बिमा
 कानू यफसुकून * (५९) व इजिस्तस्का
 मूसा लि कौमिही फ कुलन्जूरिब बि असाकल्-
 ह-ज-र फन्फ-ज-रत् मिन् हुस्-नता अ-श-र-त् अ-न-न्
 कद् अलि-म कुल्लु उनासिम्-मशरबहुम्
 कुलू वशरबू मिर्जक्लिहाहि व ला तज्-सौ
 फिल्अजि मुफसिदीन (६०) व इज कुलुम्
 या मूसा लन् नसबि-र अला तआमिब्वाहिदिन्
 फदज्जु लना रब्ब-क युख्रिज् लना मिम्मा तुम्बितुल्-अ-र-जु मिम्बक्लिहा व किस्सा-इहा
 व फूमिहा व अ-दसिहा व ब-सलिहा ॥ का-ल अ तस्तब्दिलूनल्लजी हु-व अदना बिल्लजी
 हु-व खैरुन् ॥ इहबितू मिस्रन् फ इन-न लकुम् मा स-अलुम् ॥ व जूरिबत्
 अलैहिमुज्जिल्लतु वल्मस्कनतु ॥ व बा-ऊ बि गज्जबिम्-मिनल्लाहि ॥ जालि-क
 बिअन्नहुम् कानू यफकुरू-न बि आयातिल्लाहि व यकतुलूनन्नबियी-न बिगैरिल्-
 हकिक् ॥ जालि-क बिमा असव्-व कानू यअ-तदून * (६१) इन्नल्लजी-न
 आमनू वल्लजी-न हादू वन्नसारा वस्साबिईन मन् आम-न बिल्लाहि
 वल्-योमिल्-आखिरि व अमि-ल सालिहन् फ लहुम् अजरहुम् अिन्-द
 रब्बिहिम् ॥ व ला खौफुन् अलैहिम् व ला हुम् यहजून (६२)



مَنْ

(मूसा से) कहा कि मूसा जब तक हम खुदा को सामने न देख लेंगे, तुम पर ईमान नहीं लायेंगे, तो तुमको बिजली ने आ बेरा और तुम देख रहे थे। (५५) फिर मौत आ जाने के बाद हमने तुमको फिर से जिंदा कर दिया, ताकि एहसान मानो। (५६) और बादल का तुम पर साया किये रखा और (तुम्हारे लिए) मन्न व सलवा उतारते रहे कि जो पाकीजा चीजें हमने तुमको अता फरमायी हैं, उनको खाओ (पियो), मगर तुम्हारे बुजुर्गों ने इन नेमतों की कुछ कद्र न जानी (और) वे हमारा कुछ नहीं बिगाड़ते थे, बल्कि अपना ही नुकसान करते थे। (५७) और जब हमने (उन से) कहा कि इस गांव में दाखिल हो जाओ और इसमें जहां से चाहो, खूब खाओ (पियो) और (देखना) दरवाजे में दाखिल होना तो सज्दा करना और 'हित्तुनु' कहना, हम तुम्हारे गुनाह माफ़ कर देंगे और नेकी करने वालों को और ज्यादा देंगे। (५८) तो जो ज़ालिम थे, उन्होंने ने इस लफ़्ज़ को, जिसका उनको हुक्म दिया था, बदल कर उसकी जगह और लफ़्ज़ कहना शुरू किया, पस हमने (उन) ज़ालिमों पर आसमान से अज़ाब नाज़िल किया, क्योंकि ना-फ़रमानियां किए जाते थे। ★ (५९)

और जब मूसा ने अपनी क्रौम के लिए (खुदा से) पानी मांगा तो हमने कहा कि अपनी लाठी पत्थर पर मारो। (उन्होंने लाठी मारी) तो फिर उसमें से बारह चश्मे फूट निकले और तमाम लोगों ने अपना-अपना घाट मालूम (करके पानी पी) लिया। (हमने हुक्म दिया कि) खुदा की (अता फरमायी हुई) रोजी खाओ और पियो, मगर ज़मीन में फ़साद न करते फिरना। (६०) और जब तुमने कहा कि मूसा ! हम से एक (ही) खाने पर सब्र नहीं हो सकता, तो अपने परवरदिगार से दुआ कीजिए कि तरकारी और ककड़ी और गेहूं और मसूर और प्याज (वगैरह) जो नबातात ज़मीन से उगती हैं, हमारे लिए पैदा कर दे। उन्होंने कहा कि भला उम्दा चीजें छोड़कर उनके बदले नाक्रिस (खराब) चीजें क्यों चाहते हो ? (अगर यही चीजें चाहिएं) तो किसी शहर में जा उतरो, वहां जो मांगते हो, मिल जाएगा और (आखिरकार) ज़िल्लत (व रसवाई) और मुहताजी (व बे-नवाई) उनसे चिमटा दी गयी और वे खुदा के ग़ज़ब में गिरफ़्तार हो गये। यह इस लिए कि वे खुदा की आयतों से इंकार करते थे और (उसके) नबियों को ना-हक़ क़त्ल कर देते थे। (यानी) यह इस लिए कि ना-फ़रमानी किये जाते और हद से बढ़े जाते थे। ★ (६१)

जो लोग मुसलमान हैं या यहूदी या ईसाई या सितारापरस्त (यानी कोई शख्स, किसी क्रौम व मज़हब का हो) जो खुदा और क्रियामत के दिन पर ईमान लाएगा और नेक अमल करेगा, तो ऐसे लोगों को उन के (आमाल) का बदला खुदा के यहां मिलेगा और (क्रियामत के दिन) उन को न किसी तरह का ख़ौफ़ होगा और न वे गमनाक होंगे। (६२) और जब हमने तुम से अहद (कर)

(पृष्ठ ११ का शेष)

के घटों को आ लगी है, लेकिन बनी इस्राईल के घर उस से बच गये हैं। इसे सुन कर ताबीर (स्वप्न फल) बताने वालों ने यह बताया कि बनी इस्राईल में एक लड़का पैदा होगा, जो मिस्री हुकूमत ख़त्म करने की वजह बनेगा। इस घर से फ़िर्औन ने वह हुक्म दिया था। इसी बीच मूसा अलैहिस्सलाम पैदा हुए और जिस अजीब तरीक़े से खुदा ने उन को फ़िर्औनियों के हाथ से बचाया, इस की तफ़सील और जगहों पर है। आखिर मूसा अलैहिस्सलाम फ़िर्औनियों की तबाही और इस्राईलियों की मुख़िलसी की वजह बने।

१. बनी इस्राईल जब मूसा अलैहिस्सलाम के साथ मिस्र से निकले थे, तो उन को हुक्म हुआ था कि अर्ध मुक़द्स (पाक घरेली) में जाओ। वह तुम्हारे बाप इस्राईल की मीरास है। वहां जो काफ़िर अमातीक़ रहते हैं, उन से (शेष पृष्ठ १५ पर)

व इज् अ-खज्ना मीसाक-कुम् व रफज्-ना फौक-कुमुत्तूर-७ खज् मा
आतनाकुम् बिकुव्वतिव्वज्जुरू मा फ्रीहि लअल्लकुम् तत्तकून (६३) सुम्-म
तवल्लेतुम् मिम्बअदि जालि-क ७ फ लौला फज्जुल्लाहि अलेकुम् व रहमतुह
सकुन्तुम् मिनल् खासिरीन (६४) व ल-कद् अलिम्तुमुल्लजीनअ-तदो

मिन्कुम् फिस्सबति फ-कुल्ना लहुम् कून
कि-र-द-तन् खासि-ईन ७ (६५) फ-ज-अल्नाहा
नकाललिमा बैन यदेहा व मा खल्फहा
व मौअ-ज-तल्-लिल्-मुत्तकीन (६६) व
इज् काल-मूसा लि कौमिही इन्नल्ला-ह
यअमुरुकुम् अन् तजबहू ब-क-र-तन् ७ कालू
अ तत्तखिज्ना हुजुवन् ७ काल-अज्जु
बिल्लाहि अन् अकू-न मिनल्जाहिलीन (६७)
कालुदशु लना रब्ब-क युबय्यिल्लना
मा हि-य ७ काल-इन्नहू यकूलु इन्नहा
ब-क-र-तुल्ला - फारिज्जुव - व ला-बिक्रन्
अवानुम्बे-न जालि-क ७ फफअलू मा तुअमरून
(६८) कालुदशु लना रब्ब-क युबय्यिल्लना
मालीनुहा ७ काल-इन्नहू यकूलु इन्नहा

مِنْهُمْ وَرَبُّهُمْ لَئِنْ لَمْ يَنْتَهِ عَنِ الْفَحْشَاءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْعِيسْيَانِ لَأَكْثُرُنَّ أَهْلًا لِلْجَذَامِ وَالْحَبْلُ أَدْنَىٰ لِمَا يَصْنَعُونَ ۚ فَلَوْلَا
قَوْلُ اللَّهِ تَعَالَىٰ لَئِنْ لَمْ يَنْتَهِ عَنِ الْفَحْشَاءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْعِيسْيَانِ لَأَكْثُرُنَّ أَهْلًا لِلْجَذَامِ وَالْحَبْلُ أَدْنَىٰ لِمَا يَصْنَعُونَ ۚ فَلَوْلَا
قَوْلُ اللَّهِ تَعَالَىٰ لَئِنْ لَمْ يَنْتَهِ عَنِ الْفَحْشَاءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْعِيسْيَانِ لَأَكْثُرُنَّ أَهْلًا لِلْجَذَامِ وَالْحَبْلُ أَدْنَىٰ لِمَا يَصْنَعُونَ ۚ فَلَوْلَا
قَوْلُ اللَّهِ تَعَالَىٰ لَئِنْ لَمْ يَنْتَهِ عَنِ الْفَحْشَاءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْعِيسْيَانِ لَأَكْثُرُنَّ أَهْلًا لِلْجَذَامِ وَالْحَبْلُ أَدْنَىٰ لِمَا يَصْنَعُونَ ۚ فَلَوْلَا
قَوْلُ اللَّهِ تَعَالَىٰ لَئِنْ لَمْ يَنْتَهِ عَنِ الْفَحْشَاءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْعِيسْيَانِ لَأَكْثُرُنَّ أَهْلًا لِلْجَذَامِ وَالْحَبْلُ أَدْنَىٰ لِمَا يَصْنَعُونَ ۚ فَلَوْلَا
قَوْلُ اللَّهِ تَعَالَىٰ لَئِنْ لَمْ يَنْتَهِ عَنِ الْفَحْشَاءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْعِيسْيَانِ لَأَكْثُرُنَّ أَهْلًا لِلْجَذَامِ وَالْحَبْلُ أَدْنَىٰ لِمَا يَصْنَعُونَ ۚ فَلَوْلَا
قَوْلُ اللَّهِ تَعَالَىٰ لَئِنْ لَمْ يَنْتَهِ عَنِ الْفَحْشَاءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْعِيسْيَانِ لَأَكْثُرُنَّ أَهْلًا لِلْجَذَامِ وَالْحَبْلُ أَدْنَىٰ لِمَا يَصْنَعُونَ ۚ فَلَوْلَا
قَوْلُ اللَّهِ تَعَالَىٰ لَئِنْ لَمْ يَنْتَهِ عَنِ الْفَحْشَاءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْعِيسْيَانِ لَأَكْثُرُنَّ أَهْلًا لِلْجَذَامِ وَالْحَبْلُ أَدْنَىٰ لِمَا يَصْنَعُونَ ۚ فَلَوْلَا
قَوْلُ اللَّهِ تَعَالَىٰ لَئِنْ لَمْ يَنْتَهِ عَنِ الْفَحْشَاءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْعِيسْيَانِ لَأَكْثُرُنَّ أَهْلًا لِلْجَذَامِ وَالْحَبْلُ أَدْنَىٰ لِمَا يَصْنَعُونَ ۚ فَلَوْلَا
قَوْلُ اللَّهِ تَعَالَىٰ لَئِنْ لَمْ يَنْتَهِ عَنِ الْفَحْشَاءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْعِيسْيَانِ لَأَكْثُرُنَّ أَهْلًا لِلْجَذَامِ وَالْحَبْلُ أَدْنَىٰ لِمَا يَصْنَعُونَ ۚ فَلَوْلَا

ब-क-र-तुन् सफ्रा-उ ७ फाकिउल्लौनुहा तसुर्हन्नाजिरीन (६९) कालुदशु
लना रब्ब-क युबय्यिल्लना मा हि-य ७ इन्नल्-ब-क-र तशाब-ह अलेना
व इन्ना इन्शा-अल्लाहु ल-मुह्तदून (७०) काल-इन्नहू यकूलु इन्नहा
ब-क-र-तुल्ला - जलूलुन् तुसीरल्अर-ज्ज व ला तसक्लिहर्-स ७ मुसल्लमतुल्ला-शि-य-त्त
फ्रीहा ७ कालुल्आ-न जिअ-त बिल्हक्कि ७ फ-ज-बहूहा व मा कादू
यफअलून * (७१) व इज् क-तल्लुम् नफसन् फददारअतुम् फ्रीह ७
वत्ताहु मुख्रिज्जुमा कुन्तुम् तक्तुमून ७ (७२) फ कुलनज्जिरबूह बि बअज्जिहा
कजालि-क युह्यिल्लाहुल्मोता ७ व युरीकुम् आयातिही ल-अल्लकुम् तअ-क्लिन्न (७३)

लिया और तुर पहाड़ को तुम पर उठा खड़ा किया (और हुक्म दिया) कि जो किताब हमने तुम को दी है, उसको जोर से पकड़े रहो और जो उसमें (लिखा) है, उसे याद रखो, ताकि (अज्ञाब से) महफूज रहो। (६३) तो तुम इसके बाद (अहद से) फिर गये और अगर तुम पर खुदा का फ़ज़ल और उसकी मेहरबानी न होती, तो तुम घाटे में पड़ गये होते। (६४) और तुम उन लोगों को खूब जानते हो, जो तुम में से हफ़्ते के दिन (मछली का शिकार करने) में हद से आगे बढ़ गये थे, तो हमने उनसे कहा कि जलील व ह्वार बन्दर हो जाओ। (६५) और इस किस्से को उस वक़्त के लोगों के लिए और जो उनके बाद आने वाले थे इब्रत (सबक) और परहेज़गारों के लिए नसीहत बना दिया। (६६) और जब मूसा ने अपनी क्रौम के लोगों से कहा कि खुदा तुमको हुक्म देता है कि एक बैल जिन्हें करो। वे बोले, क्या तुम हमसे हंसी करते हो? (मूसा ने) कहा कि मैं खुदा की पनाह मांगता हूँ कि नादान बनों। (६७) उन्होंने कहा, अपने परवरदिगार से इल्तिजा (निवेदन) कीजिए कि वह हमें बताये कि वह बैल किस तरह का हो? (मूसा ने) कहा, परवरदिगार फ़रमाता है कि वह बैल न तो बूढ़ा हो और न बछड़ा, बल्कि उन के दमियान (यानी जवान) हो, सो जैसा तुम को हुक्म दिया गया है, वैसा करो। (६८) उन्होंने कहा, अपने परवरदिगार से दर्खास्त कीजिए कि हमको यह भी बता दे कि उसका रंग कैसा हो? मूसा ने कहा, परवरदिगार फ़रमाता है कि उसका रंग गहरा जर्द (पीला) हो कि देखने वालों (के दिल) को खुश कर देता हो। (६९) उन्होंने कहा (इस बार) परवरदिगार से फिर दर्खास्त कीजिए कि हम को बता दे कि वह और किस-किस तरह का हो, क्योंकि बहुत से बैल हमें एक दूसरे से मिलते मालूम होते हैं। (फिर) खुदा ने चाहा तो हमें ठीक बात मालूम हो जाएगी। (७०) मूसा ने कहा कि खुदा फ़रमाता है कि वह बैल काम में लगा हुआ न हो, न तो ज़मीन जोतता हो और न तो खेती को पानी देता हो, उसमें किसी तरह का दाग न हो। कहने लगे, अब तुमने सब बातें ठीक-ठीक बता दीं। गरज़ (बड़ी मुश्किल से) उन्होंने उस बैल को जिन्हें किया और वे ऐसा करने वाले थे नहीं। (७१) ★

और जब तुमने एक शरस को क़त्ल किया, तो उस (के बारे) में आपस में झगड़ने लगे, लेकिन जो बात तुम छिपा रहे थे, खुदा उसको जाहिर करने वाला था। (७२) तो हमने कहा कि इस बैल का कोई सा टुकड़ा मक्तूल (जिसे क़त्ल किया गया) को मारो। इस तरह खुदा मुर्दों को ज़िंदा करता है और तुम को अपनी (क्रुदरत की) निशानियाँ दिखाता है, ताकि तुम समझो। (७३)

(पृष्ठ १३ का शेष)

जंग कर के उन को निकाल दो। खुदा ने यह भी वायदा फ़रमाया था कि जंग में उन को फ़तह हासिल होगी, मगर उन्होंने जंग करने से हिम्मत हार दी, तो खुदा ने उन को इस अज्ञाब में मुत्तला किया कि चालीस वर्ष जंगल में परेशान घूमते रहे। चालीस वर्ष के बाद वे उस जंगल से निकले। उस वक़्त मूसा अलैहिस्सलाम फ़ीत (इतिफ़ाल) हो चुके थे। यूशेज बिन नून अलैहिस्सलाम साथ थे। अब उन्होंने अमालका से जंग की तो खुदा ने फ़तह दी और हुक्म हुआ कि शहर के दरवाज़े में सज्दा कर के और 'हित्तुन' कह कर दाख़िल हो। हित्तुन के यानी मतिक़रत व इस्ताफ़ार के हैं यानी हमारे गुनाह माफ़ कर। मगर उन्होंने हित्तुन की जगह 'हित्त' यानी गेहूँ कहा और बनाए सज्दे के सुरीन के बल दाख़िल हुए। इस ना-फ़रमानी और बे-अदबी की वजह से खुदा ने फिर उन को अज्ञाब में मुत्तला कर दिया।

१. यहूद को हुक्म था कि हफ़्ते के दिन की ताज़ीम (आदर) करें और उस में मछली का शिकार न करें, तो वे (शेष पृष्ठ १७६ पर)

फिर इसके बाद तुम्हारे दिल सलत हो गये, गोया वे पत्थर हैं, या उनसे भी ज्यादा सलत और पत्थर तो कुछ ऐसे होते हैं कि उनमें से बरमे फूट निकलते हैं और कुछ ऐसे होते हैं कि फट जाते हैं और उनमें से पानी निकलने लगता है और कुछ ऐसे होते हैं कि खुदा के खौफ से गिर पड़ते हैं और खुदा तुम्हारे अमलों से बे-खबर नहीं। (७४) (मोमिनो !) क्या तुम उम्मीद रखते हो कि ये लोग तुम्हारे (दीन के) कायल हो जाएंगे, (हालांकि) उनमें से कुछ लोग कलामे खुदा (यानी तौरात) को सुनते फिर उसके सुन लेने के बाद उसको जान-बूझ कर बदल देते रहे हैं।' (७५) और ये लोग जब मोमिनों से मिलते हैं, तो कहते हैं, हम ईमान ले आये हैं और जिस वक्त आपस में एक दूसरे से मिलते हैं, तो कहते हैं, जो बात खुदा ने तुम पर जाहिर फरमायी है, वह तुम उनको इस लिए बता देते हो कि (क्रियामत के दिन) उसी के हवाले से तुम्हारे परवरदिगार के सामने तुमको इल्जाम दें। क्या तुम समझते नहीं ? (७६) क्या ये लोग यह नहीं जानते कि जो कुछ वे छिपाते और जो कुछ जाहिर करते हैं, खुदा को (सब) मालूम है।' (७७) और कुछ उन में अनपढ़ हैं कि अपने बातिल ब्यालों के सिवा (खुदा की) किताब को जानते ही नहीं और वे सिर्फ गुमान से काम लेते हैं (७८) तो उन लोगों पर अफसोस है जो अपने हाथ से तो किताब लिखते हैं और कहते यह हैं कि यह खुदा के पास से (आयी) है, ताकि उसके बदले थोड़ी-सी क्रीमत (यानी दुनिया का फायदा) हासिल कर लें। उन पर अफसोस है, इस लिए कि (बे-असल बातें) अपने हाथ से लिखते हैं और (फिर) उन पर अफसोस है, इसलिए कि ऐसे काम करते हैं। (७९) और कहते हैं कि (दोज़ख की आग) हमें कुछ दिनों के सिवा छू ही नहीं सकेगी। उनसे पूछो, क्या तुमने खुदा से इकरार ले रखा है कि खुदा अपने इकरार के खिलाफ नहीं करेगा। (नहीं) बल्कि तुम खुदा के बारे में ऐसी बातें कहते हो, जिन्हें तुम बिल्कुल नहीं जानते।' (८०) हां, जो बुरे काम करे और उसके गुनाह (हर तरफ से) उसको घेर लें तो ऐसे लोग दोज़ख (में जाने) वाले हैं (और) वे हमेशा उसमें (जलते) रहेंगे। (८१) और जो ईमान लाएं और नेक काम करें वे जन्नत के मालिक होंगे और हमेशा उसमें (ऐश करते) रहेंगे। (८२) ★

और जब हमने बनी इस्राईल से अहद लिया कि खुदा के सिवा किसी की इबादत न करना और मां-बाप और रिश्तेदारों और यतीमों और मुहताजों के साथ भलाई करते रहना और लोगों से अच्छी बातें कहना और नमाज़ पढ़ते और जकात देते रहना तो कुछ लोगों के अलावा तुम सब (इस

१. ये लोग कुछ बहुत ही निडर थे। खुदा के कलाम के बदल देने में भी कोई शर्म नहीं करते थे। तहरीफ में इस्तिफाफ है कि किस किस की थी। बाज़ कहते हैं कि लफ़्जी थी, यानी लफ़्ज़ बदल देते थे। कुछ लोग कहते हैं कि तहरीफ मानी में थी यानी मानी बिनाड़ देते थे। इमाम फरूकदीन राजी इसी के कायल हैं। कुछ कहते हैं लफ़्ज़ और मानी दोनों में थी, बहरहाल तमाम मुसलमान यहूदियों और ईसाइयों की किताबों को तहरीफ की हुई और तब्दील की हुई मानते हैं और उन पर एतबार नहीं करते। मुसलमानों को इस बात पर फ़खू है कि उन की आसमानी किताब में तहरीफ नहीं हुई और हो सकती भी नहीं, क्योंकि खुदा ने उस की हिफ़ाज़त अपने ज़िम्मे ले ली है।

२. इन आयतों में मुनाफ़िकों का हाल बयान फ़रमाया गया है। कुछ मुनाफ़िक ऐसे भी थे कि हज़रत पैग़म्बर सल्ल० के जाने की पेमीनगोई, जो उन की किताबों में लिखी हुई थी, और जो उन पर उन के गुनाहों की वजह से पहले अज़ाब नाज़िल होते रहे थे, वह मुसलमानों से बयान कर देते थे। तो और मुनाफ़िक उन से कहते कि तुम (शेष पृष्ठ ६७७ पर)

अहद से) मुंह फेर कर बैठ गए। (८३) और जब हमने तुमसे अहद लिया कि आपस में कुत्त व खून न करना और अपने को उनके वतन से न निकालना, तो तुमने इकरार कर लिया और तुम (इस बात के) गवाह हो। (८४) फिर तुम वहीं हो कि अपनों को क़त्ल भी कर देते हो और अपने में से कुछ लोगों पर गुनाह और जुल्म से चढ़ाई करके उन्हें वतन से निकाल भी देते हो और अगर वे तुम्हारे पास क़ैद होकर आएँ तो बदला देकर उनको छोड़ा भी लेते हो, हालांकि उन का निकाल देना ही तुमको हaram था। (यह) क्या (बात है कि) तुम (खुदा की) किताब के कुछ हुक्मों को तो मानते हो और कुछ में इन्कार किये देते हो, तो जो तुममें से ऐसी हरकत करें, उनकी सज़ा इसके सिवा और क्या हो सकती है कि दुनिया की ज़िंदगी में तो खुशवादी हो और क्रियामत के दिन सख्त से सख्त अज़ाब में डाल दिए जाएँ। और जो काम तुम करते हो, खुदा उनसे ग़ाफ़िल नहीं। (८५) वे वह लोग हैं, जिन्होंने आखिरत के बदले दुनिया की ज़िंदगी खरीदी, सो न तो उनसे अज़ाब ही हल्का किया जाएगा और न उनको (और तरह की) मदद मिलेगी। (८६) ★

और हमने मूसा को किताब इनायत की और उन के पीछे एक के बाद दूसरा पैगम्बर भेजते रहे और ईसा बिन मरयम को खुली निशानियाँ बरूहीं और रूहुल कुद्स (यानी ज़िब्रील) से उनको मदद दी, तो जब कोई पैगम्बर तुम्हारे पास ऐसी बातें लेकर आये जिनको तुम्हारा जी नहीं चाहता था, तो तुम सरकश हो जाते रहे और (नबियों के) एक गिरोह को तो झुठलाते रहे और एक गिरोह को क़त्ल करते रहे। (८७) और कहते हैं, हमारे दिल पर्व में हैं। (नहीं) बल्कि खुदा ने उनके कुफ़ की वजह से उन पर लानत कर रखी है, पस ये थोड़े ही पर ईमान लाते हैं। (८८) और जब खुदा के यहां से उनके पास किताब आयी, जो उनकी (आसमानी) किताब की भी तस्दीक करती है और वे पहले (हमेशा) काफ़िरों पर फ़ल्ह मांगा करते थे, तो जिस चीज़ को वे ख़ूब पहचानते थे, जब उनके पास आ पहुँची, तो उससे काफ़िर हो गये, पस काफ़िरों पर खुदा की लानत। (८९) जिस चीज़ के बदले उन्होंने अपने को बेच डाला, वह बहुत बुरी है यानी इस ज़लन से कि खुदा अपने बन्दों में से, जिस पर चाहता है, अपनी मेहरबानी में से नाज़िल फ़रमाता है, खुदा की नाज़िल की हुई किताब से कुफ़ करने लगे, तो वे (उसके) ग़ाज़ब पर ग़ाज़ब में मुस्तला हो गये और काफ़िरों के लिए ज़लील करने वाला अज़ाब है। (९०) और जब उन से कहा जाता है कि जो (किताब) खुदा ने (अब) नाज़िल फ़रमायी है, उसको मानो तो कहते हैं कि जो किताब हम पर (पहले) नाज़िल हो चुकी है, हम तो उसी को मानते हैं (यानी) ये उस के सिवा और (किताब) को नहीं मानते, हालांकि वह (सरासर) सच्ची है और जो उन की (आसमानी) किताब है, उसकी भी तस्दीक करती है। (उन से) कह दो कि अगर तुम ईमान वाले होते तो खुदा के पैगम्बरों को पहले

१. यहूदी कहते थे कि हमारे दिल पर्व में हैं यानी हम अपने दीन के सिवा किसी की बात समझ ही नहीं सकते। खुदा ने फ़रमाया कि दिल पर्व में नहीं हैं, बल्कि खुदा ने कुफ़ की वजह से उन पर लानत कर रखी है। दूसरी जगह फ़रमाया है कि 'बल तब-अल्लाहु अलैहा बिकुफ़्रिय' या उन के दिलों पर नुहुर लगा दी है, कुछ भी हो, बात ऐसी थी कि ईमान उन के दिलों में नाज़िल ही नहीं होता था और यह खुदा के ग़ाज़ब की निशानी है।

ही क्यों क़त्ल किया करते ? (६१) और भूसा तुम्हारे पास खुले हुए मोज़े लेकर आये, तो तुम उनके (तुर पहाड़ पर जाने के) बाद बछड़े को माबूद बना बैठे और तुम (अपने ही हक़ में) जुल्म करते थे । (६२) और जब हमने तुम (लोगों) से पक्का अहद लिया और तुर पहाड़ को तुम पर उठा खड़ा किया (और हुक्म दिया कि) जो किताब हमने तुमको दी है, उसको जोर से पकड़ो और (जो तुम्हें हुक्म होता है, उसको) सुनो, तो वे (जो तुम्हारे बड़े थे) कहने लगे कि हमने सुन तो लिया, लेकिन मानते नहीं और उनके कुफ़्र की वजह से बछड़ा (गोया) उनके दिलों में रच गया था । (ऐ पैग़म्बर ! उन से) कह दो कि अगर तुम मोमिन हो तो तुम्हारा ईमान तुम को बुरी बात बताता है ।' (६३) कह दो कि अगर आखिरत का घर और लोगों (यानी मुसलमानों) के लिए नहीं और खुदा के नज़दीक तुम्हारे ही लिए मल्सूस है, तो अगर सच्चे हो तो मौत की आरजू तो करो ।' (६४) लेकिन इन आमाँल की वजह से, जो उनके हाथ आगे भेज चुके हैं, ये कभी इसकी आरजू नहीं करेंगे और खुदा ज़ालिमों को (ख़ूब) जानता है । (६५) बल्कि उनको तुम और लोगों से ज़िदगी के कहीं-लोभी देखोगे: यहाँ तक कि मुशिरकों से भी । उनमें से हर एक यही स्वाहिश करता है कि काश ! बह्र हजार वर्ष जीता रहे, मगर इतनी लंबी उम्र उसको मिल भी जाए तो उसे अज़ाब से तो नहीं छुड़ा सकती और जो काम ये करते हैं, खुदा उनको देख रहा है । (६६) ★

कह दो कि जो शल्स जिब्रील का दुश्मन हो, (उसको गुस्से में मर जाना चाहिए,) उसने तो (यह किताब) खुदा के हुक्म से तुम्हारे दिल पर नाज़िल की है, जो पहली किताबों की तस्दीक़ करती है और ईमान वालों के लिए ह़िदायत और खुशख़बरी है । (६७) जो शल्स खुदा का और उसके पैग़म्बरों का और जिब्रील और मीकाईल का दुश्मन हो, तो ऐसे काफ़िरों का खुदा दुश्मन है । (६८) और हमने तुम्हारे पास मुलसी हुई आयतें भेजी हैं और उनसे इन्कार वही करते हैं जो बद-किरदार हैं । (६९) उन लोगों ने (जब-जब) खुदा से पक्का अहद किया तो उनमें से एक फ़रीक़ ने उसको (किसी चीज़ की तरह) फेंक दिया ।) हकीक़त यह है कि उनमें अक्सर बे-ईमान हैं । (१००) और जब उन के पास खुदा की तरफ़ से पैग़म्बर (आखिरी) आये और वह उनकी (आसमानी) किताब की भी तस्दीक़ करते हैं, तो जिन लोगों को किताब दी गयी थी, उनमें से एक ज़माअत ने खुदा की किताब को पीठ पीछे फेंक दिया, गोया वे जानते ही नहीं । (१०१) और उन

१. यानी ज़ाहिर में कहा कि हमने माना और चुपके से कहा कि न माना ।

२. कहते थे कि जन्नत में हमारे सिवा कोई न जाएगा और हम को अज़ाब न होगा । और अल्लाह तआला ने क़रपाया कि अगर तुम यक़ीनन बहिश्ती हो तो फिर मरने से क्यों डरते हो ?

वत्तबअ मा तल्लुशशयातीनु अला मुल्कि सुलैमान-न व मा क-फ-र सुलैमानु व
लाकिन्निशशयाती-न क-फरु युअल्लिमूनन्नासस्-सिहर व मा उन्जि-ल अल्लमलकैनि
बिबाबि-ल हारु-त व मारुत व मा युअल्लिमानि मिन् अ-हदिन् हत्ता यकूला इन्नामा
नहनु फिल्लतुन् फ ला तक्फुर फ य-त-अल्लमून मिन्हुमा मा युफरिक्कू-न बिही बैनल्-
मर-इ व जौजिही व मा हुम् बिजारी-न

बिही मिन् अ-हदिन् इल्ला बिइजितल्लाहि
व य-त-अल्लमून-न मा यज्जुह्हुम् व ला यन्फअ-
हुम् व ल-कद् अलिम् ल-मनिशतराहु मा लहु
फिल्लाखिरति मिन् खलाकिन् व

ल-बिअ-स मा शरौ बिही अन्फुसहुम् लौ कानू
यज्-लमून (१०२) व लौ अन्नहुम् आमनू
वत्तकौ लमसूबतुम्मिन् अिन्दिल्लाहि खैरत्
लौ कानू यज्-लमून (१०३) या

अय्युहल्लजी-न आमनू ला तकूलू राअिना व
कूलुन्नुर्ना वस्मअ व लिल्काफिरी-न अजाबुन्
अलीम (१०४) मा यवद्दुल्लजी-न क-फरु
मिन् अहिल्ल - किताबि व लल्मुशिरकी-न

अय्युनज्ज-ल अलैकुम् मिन् खैरिम्-मिरिबिबिकुम्
वल्लाहु यस्तस्सु बिरह्मतिही मय्यशाउ वल्लाहु जुल्फजिल्ल-अजीम (१०५)

मा नन्सख मिन् आयतिन् औ नुन्सिहा नअति बिखैरिम्मिन्हा औ मिस्लिहा
अ-लम् तज्-लम् अन्नल्ला-ह अला कुल्लि शै-इन् कदीर (१०६) अ-लम् तज्-लम्
अन्नल्ला-ह. लहु मुल्कुस्समावाति वल्अज्जि व मा लकुम् मिन् दूनिल्लाहि मिब्बलिथियव-व
ला नसीर (१०७) अम् तुरीदू-न अन् तस्अलू रसूलकुम् कमा सुइ-ल मूसा मिन्

कब्लु व मय्य-त-बद्दलिल्-कुफ-र बिल्ईमानि फ-कद् ज़ल्ल-ल सवा-अस्सबील (१०८)
वद्-द कसीरुम्मिन् अहिल्ल किताबि लौ यरुद्दून्कुम् मिम्बअदि ईमानिकुम् कुफ़ारन्
ह-स-दम्मिन् अिन्दि अन्फुसिहिम् मिम्बअदि मा त-बय्य-न लहुमुल्हक्कु फअ-फू वस्फू
हत्ता यज्तिथल्लाहु बिअम्रिही इन्नल्ला-ह अला कुल्लि शै-इन् कदीर

(१०९) व अक्रीमुस्सला-त व आतुज्जका-त व मा तुक्दिदू लिअन्फुसिकुम्
मिन् खैरिन् तजिदूहु अिन्दिल्लाहि इन्नल्ला-ह बिमा तज्-मलून बसीर (११०)

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنَ لَا تَتَّبِعُوا اٰمَارَاتِ الشَّيْطٰنِ ۚ اِنَّهٗ يَافْكُرُ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَ اٰيٰتِ اللّٰهِ ۚ لَئِنْ لَّمْ يَنْفَعِكُمْ اَمْرٌ مِّنَ اللّٰهِ ۙ وَهُوَ اَعْلَمُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ۝۱۰۲
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنَ لَا تَتَّبِعُوا اٰمَارَاتِ الشَّيْطٰنِ ۚ اِنَّهٗ يَافْكُرُ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَ اٰيٰتِ اللّٰهِ ۚ لَئِنْ لَّمْ يَنْفَعِكُمْ اَمْرٌ مِّنَ اللّٰهِ ۙ وَهُوَ اَعْلَمُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ۝۱۰۳
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنَ لَا تَتَّبِعُوا اٰمَارَاتِ الشَّيْطٰنِ ۚ اِنَّهٗ يَافْكُرُ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَ اٰيٰتِ اللّٰهِ ۚ لَئِنْ لَّمْ يَنْفَعِكُمْ اَمْرٌ مِّنَ اللّٰهِ ۙ وَهُوَ اَعْلَمُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ۝۱۰۴
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنَ لَا تَتَّبِعُوا اٰمَارَاتِ الشَّيْطٰنِ ۚ اِنَّهٗ يَافْكُرُ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَ اٰيٰتِ اللّٰهِ ۚ لَئِنْ لَّمْ يَنْفَعِكُمْ اَمْرٌ مِّنَ اللّٰهِ ۙ وَهُوَ اَعْلَمُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ۝۱۰۵
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنَ لَا تَتَّبِعُوا اٰمَارَاتِ الشَّيْطٰنِ ۚ اِنَّهٗ يَافْكُرُ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَ اٰيٰتِ اللّٰهِ ۚ لَئِنْ لَّمْ يَنْفَعِكُمْ اَمْرٌ مِّنَ اللّٰهِ ۙ وَهُوَ اَعْلَمُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ۝۱۰۶
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنَ لَا تَتَّبِعُوا اٰمَارَاتِ الشَّيْطٰنِ ۚ اِنَّهٗ يَافْكُرُ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَ اٰيٰتِ اللّٰهِ ۚ لَئِنْ لَّمْ يَنْفَعِكُمْ اَمْرٌ مِّنَ اللّٰهِ ۙ وَهُوَ اَعْلَمُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ۝۱۰۷
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنَ لَا تَتَّبِعُوا اٰمَارَاتِ الشَّيْطٰنِ ۚ اِنَّهٗ يَافْكُرُ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَ اٰيٰتِ اللّٰهِ ۚ لَئِنْ لَّمْ يَنْفَعِكُمْ اَمْرٌ مِّنَ اللّٰهِ ۙ وَهُوَ اَعْلَمُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ۝۱۰۸
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنَ لَا تَتَّبِعُوا اٰمَارَاتِ الشَّيْطٰنِ ۚ اِنَّهٗ يَافْكُرُ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَ اٰيٰتِ اللّٰهِ ۚ لَئِنْ لَّمْ يَنْفَعِكُمْ اَمْرٌ مِّنَ اللّٰهِ ۙ وَهُوَ اَعْلَمُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ۝۱۰۹
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنَ لَا تَتَّبِعُوا اٰمَارَاتِ الشَّيْطٰنِ ۚ اِنَّهٗ يَافْكُرُ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَ اٰيٰتِ اللّٰهِ ۚ لَئِنْ لَّمْ يَنْفَعِكُمْ اَمْرٌ مِّنَ اللّٰهِ ۙ وَهُوَ اَعْلَمُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ۝۱۱۰

(गंदी बातों) के पीछे लग गये जो सुलेमान की सल्तनत के जमाने में शैतान पड़ा करते थे और सुलेमान ने बिल्कुल कुफ़ की बात नहीं की, बल्कि शैतान ही कुफ़ करते थे कि लोगों को जादू सिखाते थे और उन बातों के भी (पीछे लग गये) जो बाबिल शहर में दो फ़रिश्तों (यानी) हारूत और मारूत पर उतरी थीं और वे दोनों किसी को कुछ नहीं सिखाते थे, जब तक यह न कह देते कि हम तो आजमाइश (का जरिया) हैं, तुम कुफ़ में न पड़ो। गरज लोग उनसे ऐसा (जादू) सीखते, जिससे मियां-बीबी में जुदाई डाल दें और खुदा के हुक्म के सिवा वे इस (जादू) से किसी का कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते थे। और कुछ ऐसे (मंत्र) सीखते जो उन को नुकसान ही पहुंचाते और फ़ायदा कुछ न देते। और वह जानते थे कि जो शस्स ऐसी चीज़ों (यानी जादू और मंत्र वगैरह) का खरीदार होगा, उस का आखिरत में कुछ हिस्सा नहीं और जिस चीज़ के बदले में उन्होंने अपनी जानों को बेच डाला, वह बुरी थी, काश ! वे (इस बात को) जानते। (१०२) और अगर वे ईमान लाते और परहेज़गारी करते तो खुदा के यहां से बहुत अच्छा बदला मिलता। ऐ काश ! वे इसे जानते होते। (१०३)★

ऐ ईमान वालो ! (बात करते बक्त खुदा के पैगम्बर से) 'राअिना' न कहा करो, 'उन्नुना' कहा करो और खूब सुन रखो, और काफ़िरों के लिए दुख देने वाला अज़ाब है। (१०४) जो लोग काफ़िर हैं, अह्ले किताब या मुश्रिक, वे इस बात को पसन्द नहीं करते कि तुम पर तुम्हारे परवर-दिगार की तरफ़ से ख़ैर (व बरकत) नाज़िल हो और खुदा तो जिसको चाहता है, अपनी रहमत के साथ ख़ास कर लेता है और खुदा बड़े फ़ज़ल का मालिक है। (१०५) हम जिस आयत को मंसूख़ कर देते या उसे भुला देते हैं, तो उससे बेहतर या वैसी ही और आयत भेज देते हैं। क्या तुम नहीं जानते कि खुदा हर बात पर कादिर है। (१०६) तुम्हें मालूम नहीं कि आसमानों और ज़मीन की बादशाहत खुदा ही की है और खुदा के सिवा तुम्हारा कोई दोस्त और मददगार नहीं। (१०७) क्या तुम यह चाहते हो कि अपने पैगम्बर से उसी तरह के सवाल करो, जिस तरह के सवाल पहले मूसा से किये गये थे और जिस शस्स ने ईमान (छोड़ कर उस) के बदले कुपूर लिया, वह सीधे रास्ते से भटक गया। (१०८) बहुत से अह्ले किताब अपने दिल की जलन से यह चाहते हैं कि ईमान ला चुकने के बाद तुम को फिर काफ़िर बना दें, हालांकि उन पर हक़ ज़ाहिर हो चुका है, तो तुम माफ़ कर दो और दर गुज़र करो, यहां तक़ कि खुदा अपना (दूसरा) हुक्म भेजें, बेशक़ खुदा हर बात पर कादिर है। (१०९)● और नमाज़ अदा करते रहो और ज़कात देते रहो और जो भलाई अपने लिए आगे भेज रखोगे, उस को खुदा के यहां पा लोगे। कुछ शक़ नहीं कि खुदा तुम्हारे सब कामों को देख

१. प्यारे नबी सल्ल० की मजलिस में यहूदी बैठते तो नबी सल्ल० के इशार्दों में से जो बात अच्छी तरह न समझ सकते और चाहते कि फिर सुनें तो 'राअिना' कहते, यानी ह्मबारी तरफ़ तबज्जोह़ फ़रमाइए और फिर इशार्द क़ीजिए, मगर एक तो उनकी जुबान में उस के मानी होते 'मूख़ और घमंडी', दूसरे ज़रा जुबान दबा कर कहते तो 'राअीना' हो जाता यानी हमारा चरबाहा। मुसलमानों को इन शरीयों की बदनीयती का हाल मालूम न था। वे भी उनसे सीखकर किसी बक्त यह लफ़्ज़ कह देते। खुदा ने फ़रमाया कि 'राअिना' का लफ़्ज़ जिसके हई यानी हो सकते हैं और कुछ मानी बुरे हैं, उसे मत इस्तेमाल किया करो। इस जगह 'उन्नुना' कहा करो। 'उन्नुना' के मानी भी यही हैं कि हमारी तरफ़ मुतबज्जोह़ होजिए और फिर फ़रमाइये, मगर इस में दूसरे मानों का एहि्तमाल नहीं हो सकता।

२. आब़िर हुक्म पहुंचा कि यहूदियों को मदीने के नज़दीक से निकाल दो।

सुर. बकर: २

रहा है। (११०) और (यहूदी और ईसाई) कहते हैं कि यहूदियों और ईसाइयों के सिवा कोई बहिष्ठ में नहीं जाने का। ये उन लोगों के बातिल ख्यालात हैं। (ऐ पैगम्बर ! इन से) कह दो कि अगर सच्चे हो तो दलील पेश करो। (१११) हाँ, जो खुदा के आगे गरदन झुका दे (यानी ईमान से आए) और वह भले काम करने वाला हो, तो उसका बदला उस के परवरदिगार के पास है और ऐसे लोगों को (क्रियामत के दिन) न किसी तरह का खौफ होगा और न वे गमनाक होंगे। (११२) ★

और यहूदी कहते हैं कि ईसाई रास्ते पर नहीं और ईसाई कहते हैं कि यहूदी रास्ते पर नहीं, हालाँकि वे किताबे (इलाही) पढ़ते हैं। इसी तरह बिल्कुल उन्हीं की-सी बात वे लोग कहते हैं जो (कुछ) नहीं जानते (यानी मुशिरक), तो जिस बात में ये लोग इस्तिलाफ़ कर रहे हैं, खुदा क्रियामत के दिन इसका उन में फ़ैसला कर देगा। (११३) और उससे बढ़कर जालिम कौन है जो खुदा की मस्जिदों में खुदा के नाम का जिक्र किये जाने को मना करे और उनकी वीरानी में कोशिश करे। उन लोगों को कुछ हक़ नहीं कि उनमें दाखिल हों, मगर डरते हुए। उन के लिए दुनिया में रूसवाई है और आखिरत में बड़ा अज़ाब। (११४) और पूरब और पच्छिम सब खुदा ही का है, तो जिधर तुम रुख करो, उधर खुदा की जात है। बेशक खुदा वुस्अत वाला और बा-खबर है। (११५) और ये लोग इस बात के कायल हैं कि खुदा औलाद रखता है। (नहीं,) वह पाक है, बल्कि जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है, सब उसी का है और सब उसके फ़रमांबरदार है। (११६) (वही) आसमानों और ज़मीन का पैदा करने वाला है। जब कोई काम करना चाहता है, तो उस को इशाद फ़रमा देता है कि होजा, तो वह हो जाता है। (११७) और जो लोग (कुछ) नहीं जानते (यानी मुशिरक), वे कहते हैं कि खुदा हमसे कलाम क्यों नहीं करता या हमारे पास कोई निशानी क्यों नहीं आती। इसी तरह जो लोग उन से पहले थे, वे भी इन्हीं की-सी बातें किया करते थे। इन लोगों के दिल आपस में मिलते-जुलते हैं। जो लोग यकीन वाले हैं, उनके (समझाने के) लिए हमने निशानियाँ बयान कर दी हैं। (११८) (ऐ मुहम्मद !) हमने तुमको सच्चाई के साथ खुशखबरी सुनाने वाला और डराने वाला बना क भेजा है और दोख़्तियों के बारे में तुमसे कुछ पूछताछ न होगी। (११९) और तुमसे न तो यहूदी कभी खुश होंगे और न ईसाई, यहां तक कि उनके मज़हब की पैरवी अस्तियार कर लो। (उनसे) कह दो कि खुदा की हिदायत (यानी दीने इस्लाम) ही हिदायत है और (ऐ पैगम्बर !) अगर तुम अपने पास इल्म (यानी खुदा की वदूह) के आ जाने पर भी उनकी स्वाहिशों पर चलोगे, तो तुम को (खुदा के अज़ाब से बचाने वाला) न कोई दोस्त

१. इस आयत के शाने नुज़ूल में मुस्तलिफ़ क़ौल हैं। किसी ने कहा, यह आयत उस आयत से पहले नाज़िल हुई थी, जिस में काबे की तरफ़ मुंह कर के नमाज़ पढ़ने का हुक्म है यानी पूरब और पच्छिम सब खुदा ही का है। जिस तरफ़ तुम मुंह करोगे, खुदा ही की तरफ़ होगा। कुछ ने कहा कि उन लोगों के हक़ में उतरी थी, जिन को काबे की दिशा मालूम न हुई और उन्होंने और तरफ़ नमाज़ पढ़ ली थी। खुदा ने उन को बताया था कि खुदा किसी तरफ़ मस्तुत नहीं, इस लिए उन की नमाज़ हो गयी। मुजाहिद रह० कहते हैं कि जब आयत 'उद्अन्नी अस्तजिब लकुम नाज़िल हुई, तो लोगों ने पूछा कि हम किधर मुंह कर के दुआ मांगा करें। खुदा ने फ़रमाया कि खुदा हर तरफ़ मौजूद है, जिस तरफ़ चाहो, मुंह कर के दुआ मांगा करो।

व वस्सा बिहा इब्राहीमु बनीहि व यअकूबु या बनि-य्य इन्नल्लाहस्तफा
लकुमुददीन फ-ला तभूतुन-न इल्ला व अन्तुम् मुस्लिमून (१३२) अम् कुन्तुम्
शु-हदा-अ इज् ह-ज्ज-र यअकूबल्मोतुं॥इज् काल लिबनीहि मा तअबुदु-न मिम्बअदी
क्राल नअबुदु इला-ह-क व इला-ह आबा-इ-क इब्राही-म व इस्माजी-ल

व इस्हा-क इलाहं-वाहिद-व नहनु लह
 मुस्लिमून (१३३) तिल्-क उम्मतुन् कद ख-लत
 लहा मा क-स-बत् व लकुम् मा क-स-बत्तुम् व
 ला तुस्अलून अम्मा कानू यअ-मलून (१३४) व
 कालू कूनू हूदन् औ नसारा तहतह कुल्
 बल् मिल्ल-त इब्राही-म हनीफन् व मा कान
 मिनल्-मुशिरकीन् (१३५) कूलू आमन्ना
 बिल्लाहि व मा उन्जिल-इलैना व मा
 उन्जिल-इला इब्राही-म व इस्मायी-ल व
 इस्हा-क व यअकू-ब वल् अस्बाति व मा ऊति-य
 मूसा व औसा व मा ऊति-यन्नबिय्यू-न
 मिरंब्बिहिम् व ला नुफरिक्कु बं-न अ-हदिम्
 मिनहुम् व नहनु लह मुस्लिमून
 (१३६) फ इन् आमनू बिमिसलि मा
 आमन्तुम् बिही फ-कदिहतदौ व इन्

इताअत के लिए सर मुकाता हूं। (१३१) और इब्राहीम ने अपने बेटों को इसी बात की बसीयत की और याकूब ने भी (अपने बेटों से यही कहा) कि बेटा! खुदा ने तुम्हारे लिए यही दीन पसन्द फरमाया है, तो मरना तो मुसलमान ही मरना। (१३२) भला जिस वक्त याकूब बफ़ात पाने लगे, तो तुम उस वक्त मौजूद थे, जब उन्होंने अपने बेटों से पूछा कि मेरे बाद तुम किसकी इबादत करोगे? तो उन्होंने कहा कि आपके माबूद और आपके बाप-दादा इब्राहीम और इस्माईल और इस्हाक के माबूद की इबादत करेंगे, जो अकेला माबूद है। और हम उसी के हुक्मबरदार हैं। (१३३) यह जमाअत गुजर चुकी, उन को उनके आमाल (का बदला मिलेगा) और तुमको तुम्हारे आमाल (का) और जो अमल वे करते थे, उनकी पूछ-गछ तुमसे नहीं होगी। (१३४) और (यहूदी और ईसाई) कहते हैं कि यहूदी या ईसाई हो जाओ तो सीधे रास्ते पर लग जाओ। (ऐ पैगम्बर! उनसे) कह दो, (नहीं), बल्कि (हम) दीने इब्राहीम (अस्तियार किये हुए हैं), जो एक खुदा के हो रहे थे और मुशिरकों में से न थे। (१३५) (मुसलमानों!) कहो कि हम खुदा पर ईमान लाए और जो (किताब) हम पर उतरी, उस पर और जो (सहीफे) इब्राहीम और इस्माईल और इस्हाक और याकूब और उनकी औलाद पर नाज़िल हुए, उन पर और जो (किताबें) मूसा और ईसा को अता हुई उन पर और जो और पैगम्बरों को उनके परवरदिगार की तरफ से मिलीं, उन पर (सब पर ईमान लाये)। हम उन पैगम्बरों में से किसी में कुछ फ़र्क नहीं करते और हम उसी (खुदा-ए-वाहिद) के फ़रमांवरदार हैं। (१३६) तो अगर ये लोग भी उसी तरह ईमान लायें, जिस तरह तुम ईमान ले आये हो, तो वे हिदायत पा जाएं और अगर मुंह फेर लें (और न मानें) तो वे (तुम्हारे) मुखालिफ हैं और उनके मुकाबले में तुम्हें खुदा काफ़ी है और वह सुनने वाला (और) जानने वाला है। (१३७) (कह दो कि हमने) खुदा का रंग (अस्तियार कर लिया है) और खुदा से बेहतर रंग किसका हो सकता है और हम उसी की इबादत करने वाले हैं। (१३८) (उन से कहो, क्या तुम खुदा के बारे में हमसे झगड़ते हो, हालांकि वही हमारा और तुम्हारा परवरदिगार है और हमको हमारे आमाल (का बदला मिलेगा) और तुम को तुम्हारे आमाल (का) और हम खास उसी की इबादत करने वाले हैं। (१३९) (ऐ यहूद व नसारा!) क्या तुम इस बात के कायल हो कि इब्राहीम और इस्माईल और इस्हाक और याकूब और उनकी औलाद यहूदी और ईसाई थे। (ऐ मुहम्मद! उनसे) कहो कि भला तुम क्यादा जानते हो या खुदा? और उससे बढ़ कर जालिम कौन, जो खुदा की गवाही को जो उस के पास (किताब में मौजूद) है, छिपाये और जो कुछ तुम लोग कर रहे हो, खुदा उससे शाफ़िल नहीं। (१४०) यह जमाअत गुजर चुकी। उन को (वह) मिलेगा, जो उन्होंने किया और तुमको वह जो तुमने किया और जो अमल वे करते थे, उन की पूछ तुम से नहीं

१. खुदा के रंग से मुराद उस का दीन इस्लाम है जो खुदा की तौहीदे ख़ालिस सिखाता है और उसी को इबादत का मुस्तहिक बनाता है।

२. यहूद व नसारा हज़रत इब्राहीम और पैगम्बरों को अपने मजहब की तरफ़ मंसूब करते थे यानी उन्हें यहूदी या ईसाई कहते थे। खुदा ने उन के इस क़ौल को रद्द कर दिया और फ़रमाया कि उन के हाल को तुम क्यादा जानते हो या खुदा। खुदा के इल्म में तो न वे यहूदी थे, न ईसाई, बल्कि अकेले खुदा के फ़रमांवरदार और उन का मजहब इस्लाम (यानी खुदा की हुक्मबरदारी) था।

३. गवाही से मुराद इस बात की जानकारी है कि मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं, जिन का हाल उन की किताबों में लिखा हुआ था, लेकिन वे जान-बूझ कर उस को छिपाते थे और अल्लाह ने गवाही छिपाने वाले को निहायत जालिम करार दिया।

होगी (१४१) * मूल लोग कहेंगे कि मुसलमान जिस क़िस्ले पर (पहले से चले आते) थे (अब) उससे क्यों मुंह फेर बैठे? तुम कह दो कि पूरब और पच्छिम सब खुदा ही का है। वह जिसको चाहता है, सीधे रास्ते पर चलाता है। (१४२) और इसी तरह हमने तुम को उम्मत मोतदिल बनाया है, ताकि तुम लोगों पर गवाह बनो और (आखिरी) पैगम्बर तुम पर गवाह बनें और जिस क़िस्ले पर तुम (पहले) थे, उसको हमने इसलिए मुकर्रर किया था कि मालूम करें कि कौन (हमारे) पैगम्बर का ताबेअ रहता है और कौन उल्टे पांव फिर जाता है और यह बात (यानी क़िस्ले की तब्दीली, लोगों को) बोझ मालूम हुई, मगर जिन को खुदा ने हिदायत बरूशी है, (वे इसे बोझ नहीं समझते) और खुदा ऐसा नहीं कि तुम्हारे ईमान को यों ही खो दे। खुदा तो लोगों पर बड़ा मेहर-बान (और) रहमत वाला है। (१४३) (ऐ मुहम्मद!) हम तुम्हारा आसमान की तरफ मुंह फेर-फेर कर देखना देख रहे हैं।^१ सो हम तुमको उसी क़िस्ले की तरफ, जिसको तुम पसन्द करते हो, मुंह करने का हुक्म देंगे। तो अपना मुंह मस्जिदे हराम (यानी खाना-ए-काबा) की तरफ फेर लो। और तुम लोग जहाँ हुआ करो (नमाज पढ़ने के वक्त) उसी मस्जिद की तरफ मुंह कर लिया करो। और जिन लोगों को किताब दी गयी है वे खूब जानते हैं कि (नया क़िस्ला) उनके परवरदिगार की तरफ से हक़ है और जो काम ये लोग करते हैं, खुदा उन से बे-खबर नहीं।^२ (१४४) और अगर तुम इन अट्टले किताब के पास तमाम निशानियां भी लेकर आओ तो भी ये तुम्हारे क़िस्ले की पैरवी न करें और तुम भी उनके क़िस्ले की पैरवी करने वाले नहीं और उनमें से भी कुछ-कुछ के क़िस्ले के पैरो नहीं और अगर तुम बावजूद इसके कि तुम्हारे पास दानिश (यानी वृत्ते खुदा) आ चुकी है, उनकी स्वाहिशों के पीछे चलोगे तो जालिमों में (दाखिल) हो जाओगे (१४५) जिन लोगों को हमने किताब दी है, वे इन (आखिरी पैगम्बर) को इस तरह पहचानते हैं, जिस तरह अपने बेटों को पहचाना करते हैं, मगर एक फ़रीक़ इन में से सच्ची बात को जान-बूझ कर छिपा रहा है (१४६) (ऐ पैगम्बर! यह नया क़िस्ला) तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से हक़ है तुम हरगिज शक करने

१. उम्मत मोतदिल, जिस में न इफ़रात है, न तफ़रीत। ईसाइयों ने इफ़रात अपनाया कि हज़रत ईसा को खुदा का बेटा बना दिया और यहूदियों ने तफ़रीत किया किया कि उन की पैगम्बरी को भी न माना। उम्मत मोतदिल (दमियानी राह वाले) ने न उन को हद से ख़यादा बढ़ाया, न घटाया बल्कि उन के दर्जे पर रखा।

२. यानी इस गरज़ से मुंह फेर-फेर देखना कि कब काबे की तरफ मुंह कर के नमाज पढ़ने का हुक्म होता है, क्योंकि आप दिल से चाहते थे कि अपने दादा इब्राहीम अलैहिस्सलाम के क़िस्ले की तरफ मुंह कर के नमाज पढ़ा करें।

३. हज़रत पैगम्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ज़ुहर की नमाज की दो रक़अतें पढ़ी थीं कि यह आयत उतरी और हुक्म हुआ कि काबे की तरफ मुंह कर के नमाज पढ़ो। हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उसी वक्त नमाज के अन्दर काबे की तरफ फिर गये और दो रक़अतें बाक़ी काबे की तरफ पढ़ीं। इस मस्जिद को बू क़िस्लतन कहते हैं यानी दो क़िस्ले वाली।

वालों में न होना (१४७) ★ और हर एक (क्रिस्ती) के लिए एक दिशा (मुकरर) है, जिधर वह (इबादत के वक़्त) मुंह किया करते हैं, तो तुम नैकियों में बाजी ले जाओ तुम जहाँ होगे, खुदा तुम सब को जमा कर लेगा। बेशक खुदा हर चीज़ पर कादिर है। (१४८) और तुम जहाँ से निकलो (नमाज़ में) अपना मुंह मस्जिदे मोहतरम की तरफ़ कर लिया करो। बे-शुब्हा वह तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से हज़ है। और तुम लोग जो कुछ करते हो, खुदा उससे बे-खबर नहीं। (१४९) और तुम जहाँ से निकलो मस्जिदे मोहतरम की तरफ़ मुंह (कर के नमाज़ पढ़ा) करो और मुसलमानो! तुम जहाँ हुआ करो उसी (मस्जिद की तरफ़ रुख किया करो (यह ताकीद) इस लिए (की गयी है) कि लोग तुमको किसी तरह का इल्ज़ाम न दे सकें, मगर इनमें से जो जालिम हैं (वे इल्ज़ाम दें तो दें) सो उनसे मत डरना और मुझी से डरते रहना और यह भी मकसूद है कि मैं तुमको अपनी तमाम नेमतें बरूँ और यह भी कि तुम सीधे रास्ते पर चलो। (१५०) जिस तरह (और नेमतों के साथ) हमने तुम में तुम्हीं में से एक रसूल भेजे हैं जो तुमको हमारी आयतें पढ़-पढ़ कर सुनाते और तुम्हें पाक बनाते और किताब (यानी कुरआन) और दानाई सिखाते हैं और ऐसी बातें बताते हैं जो तुम पहले नहीं जानते थे। (१५१) सो तुम मुझे याद किया करो, मैं तुम्हें याद किया करूँगा और मेरा एहसान मानते रहना और ना-शुक्री न करना। (१५२) ★

ऐ ईमान वाले! सब और नमाज़ से मदद लिया करो। बेशक खुदा सब करने वालों के साथ है। (१५३) और जो लोग खुदा की राह में मारे जाएँ, उनके बारे में यह न कहना कि वे मरे हुए हैं (वे मुर्दा नहीं) बल्कि जिंदा हैं, लेकिन तुम नहीं जानते। (१५४) और हम किसी कदर लोफ़ और भूख और माल और जानों और मेवों के नुक़सान से तुम्हारी आजमाइश करेंगे, तो सब करने वालों को (खुदा की खुशनूदी की) खुशख़बरी सुना दो। (१५५) इन लोगों पर जब कोई मुसीबत आती है, तो कहते हैं कि हम खुदा ही का माल हैं और उसी की तरफ़ लौट कर जाने वाले हैं। (१५६) यही लोग हैं जिन पर उनके परवरदिगार की मेहरबानी और रहमत है और यही सीधे रास्ते पर हैं। (१५७) बेशक सफ़ा और मर्व: (पहाड़) (खुदा की) निशानियों में से हैं, तो जो शरूस खाना-काबा का हज़ या उमर: करे उस पर कुछ गुनाह नहीं कि दोनों का तवाफ़ करे। (बल्कि तवाफ़ एक क्रिस्म का नेक काम है) और जो कोई नेक काम करे तो खुदा कद्र जनास (कद्र समझने

१. मुसाफ़िरों के वास्ते।

२. यानी काबे की तरफ़ नमाज़ पढ़ना सही है।

३. यहूद तो मुसलमानों को यह इल्ज़ाम देते थे कि हमारे दीन को तो नहीं मानते, मगर नमाज़ हमारे क्रिस्ते की तरफ़ पढ़ते हैं और मुश्रिक यह इल्ज़ाम देते थे कि दावा तो इब्नाहीम के दीन पर चलने का है, लेकिन उन के क्रिस्ते की तरफ़ नमाज़ नहीं पढ़ते, ख़ाना-ए-काबा के क्रिस्ते मुकरर कर देने से ये एतराज़ दूर हो गये।

४. यहाँ से इशारा इस तरफ़ है कि जिहाद में मेहनत उठाओ और मजबूती अस्तिधार करो।

५. उमर: भी एक क्रिस्म का हज़ है और इस में और हज़ में यह फ़र्क़ है कि हज़ खास ज़िलहिज्जा के महीने में होता है और उमर: और महीनों में भी हो सकता है। दूसरे हज़ में एहराम बांधना, फिर अफ़्र के दिन अरफ़ात में हज़िर होना, फिर वहाँ से चल कर मशरूफ़ हारम में रात रहना, फिर सुबह ईद को मिना में पहुंच कर कंकर फेंकना और हज़ामत बनवा कर एहराम उतारना और मक्के में जा कर काबे का तवाफ़ करना, फिर सफ़ा व मर्व: के दमियान (जो मक्के में दो पहाड़ियाँ हैं) दोड़ना वगैरह होता है और उमर: में सिर्फ़ एहराम बांधना, ख़ाना-काबा का तवाफ़ करना, सफ़ा और मर्व: के दमियान दोड़ना होता है।

इन्ललजी-न यक्तुमू-न मा अन्जल्ला मिनलब्धियनाति बल्हुदा मिम्बअदि मा बय्यन्नाहु
लिन्नासि फिल्लिकताबि ॥ उला-इ-क यलअनुहुमुल्लाहु व यलअनुहुमुल्लाअिनून
(१५६) इल्ललजी-न ताबू व अस्लहू व बय्यनू फ उला-इ-क अतुबु अलैहिम् व
अनत्तव्वाबुरहीम (१६०) इन्ललजी-न क-फरू व मातू व हुम् कुफारुन् उला-इ-क

अलैहिम् लअनतुल्लाहि वल्मलाइकति वन्नासि
अज्मअीन ॥ (१६१) खालिदी-न फ्रीहा

ला युखफफु अन्हुमुल्-अजाबु व ला
हुम् युन्जलून (१६२) व इलाहुकुम्

इलाहु व्वाहिदुन् ७ ला इला - ह इल्ला
हुवरह्मानुरहीम * (१६३) इन - न फ्री

खल्किस्समावाति वल्अज्जि वख्तिलाफिल्लैलि
वल्नहारि वल्फुल्किल्लती तजरी फिल्लबहिर

बिमा यन्फज्जुन्ना-स व मा अन्जल्लल्लाहु
मिनस्समा-इ मिम्मा-इन् फ-अह्या बिहिलअर-ज्ज

बअ-द मोतिहा व बसू-स फ्रीहा मिन् कुल्लि
दाब्बितिव ७ - व तसरीफिरियाहि

वस्सहाबिल्-मुसल्लखिर बेनस्समा-इ वल्अज्जि
ल-आयातिल्-लिकौमिय्यअकिलून (१६४) व

मिनन्नासि मय्यत्तखिज्जु मिन् दूनिल्लाहि अन्दादय्युहिब्बूनहुम् क-हुब्बिल्लाहि
वल्लजी-न आमनू अशददु हुब्बलिल्लाहि व लौ य-रल्लजी-न अ-ल-मू-इज

यरोनल्-अजा-ब ॥ अन्लकुदू-व-त लिल्लाहि जमीअ-व-व अन्लल्ला-ह शदीदुल्-अजाब
(१६५) इब् तबर-अल्लजीनत्तुबिअू मिनल्लजीनत्त-बअू व र-अवुल्-अजा-ब व

तकत्तअत् बिहिमुल्अस्बाब (१६६) व कालल्लजीनत्तबअू लौ अन्-न लना करतन्
फ न-त-बर-अ मिन्हुम् कमा तबरअू मिन्ना ७ कजालि-क युरीहिमुल्लाहु अज्-मालहुम्

ह-सरतिन् अलैहिम् ७ मा हुम् बिखारिजी-न मिनन्नार * (१६७)

وَالَّذِينَ مِنْ بَيْنِ يَدَيْهِ سَائِلُونَ ۚ فِي الْكِتَابِ آيَاتٌ لِّمَنْ يَعْقِلُ ۚ
وَلَا يَخْفَىٰ عَلَى اللَّهِ شَيْءٌ وَهُوَ غَافِلٌ عَمَّا يَتَّبِعُونَ ۚ
أُولَئِكَ عَلَيْهِمْ وَأَنَّا الْكُتُبُ الْبُحْرَةُ ۚ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَأَمَّا
وَمَنْ كَفَرَ اللَّهُ عَلَيْهِ لَمَّةٌ لِّلْهُ وَالْمُكْرَبَةُ وَالْمُكْرَبَةُ
أَعْيُنُهُمْ ۚ عَلَيْهِمْ لَمَّةٌ لِّلْهُ وَالْمُكْرَبَةُ وَالْمُكْرَبَةُ
يَنْظُرُونَ ۚ وَلَا يَكْفُرُونَ إِلَّا لِمَا كَانُوا يَكْفُرُونَ ۚ
إِنَّ فِي خَلْقِ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَالْجِبَالِ وَالنَّجْمِ
الْقَائِلِ الْبَرِّ الْبَرِّ فِي الصُّبْحِ وَالْعَصْرِ ۚ وَمَا أَكْزَلَ اللَّهُ
السَّمْعُونَ كَمَا فِي الْأَرْضِ بَعْدَ مَوْتِهَا ۚ وَكَانَ مِنْ قَبْلِ
دَابَّةٍ وَكَانَ مِنْ قَبْلِهَا ۚ وَالْمُكْرَبَةُ وَالْمُكْرَبَةُ
لَا يَنْفَعُونَ قَوْمًا يَفْقَهُونَ ۚ وَمِنْ قَبْلِهَا ۚ وَمِنْ قَبْلِهَا ۚ
أَنَّهُمْ يَجْعَلُونَ قَوْمًا يَفْقَهُونَ ۚ وَمِنْ قَبْلِهَا ۚ وَمِنْ قَبْلِهَا ۚ
يَسْأَلُونَ قَوْمًا يَفْقَهُونَ ۚ وَمِنْ قَبْلِهَا ۚ وَمِنْ قَبْلِهَا ۚ
أَنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعَذَابِ ۚ وَإِذْ تَبَرَّأَ الَّذِينَ أُشْرِكُوا مِنْ الَّذِينَ
أُشْرِكُوا وَكَانُوا الْعَذَابِ ۚ وَكَانَ الْقَوْمُ الْأَنْبِيَاءُ ۚ
أَبْنَاءُ اللَّهِ ۚ لَأَنَّا كُنَّا قَوْمًا يَفْقَهُونَ ۚ وَمَا كُنَّا قَوْمًا يَفْقَهُونَ ۚ

۞

बाला) और जानने वाला है। (१५८) जो लोग हमारे हुक्मों और हिदायतों को, जो हमने नाज़िल की हैं, (किसी फ़सादी शरज से) छिपाते हैं, बावजूद कि हमने उनको लोगों के (समझाने के लिए) अपनी किताब में खोल-खोल कर बयान कर दिया है। ऐसों पर खुदा और तमाम लानत करने वाले लानत करते हैं। (१५९) हां, जो तौबा करते हैं और अपनी हालत दुस्त कर लेते और (इलाही हुक्मों को) साफ़-साफ़ बयान कर देते हैं, तो मैं उनके कुसूर माफ़ कर देता हूँ और मैं बड़ा माफ़ करने वाला (और) रहम वाला हूँ। (१६०) जो लोग काफ़िर हुए और काफ़िर ही मरे, ऐसों पर खुदा की और फ़रिश्तों की और लोगों की, सब की लानत। (१६१) वे हमेशा इसी (लानत) में (गिरफ़्तार) रहेंगे। उन से न तो अज़ाब ही हल्का किया जाएगा और न उन्हें कुछ मोहलत मिलेगी। (१६२) और (लोगों) ! तुम्हारा माबूद खुदा-ए-वाहिद है। उस बड़े मेहरबान (और) रहम वाले के सिवा कोई इबादत के लायक नहीं। (१६३) ★

बेशक आसमानों और ज़मीन के पैदा करने में और रात और दिन के एक दूसरे के पीछे आने-जाने में और कश्तियों (और जहाज़ों) में, जो दरिया में, लोगों के फ़ायदे की चीज़ें लेकर रवा हैं और मेह में जिसको खुदा आसमान से बरसाता और उससे ज़मीन को मरने के बाद जिंदा (यानी ख़ुशक हुए पीछे सर-सब्ज़) कर देता है और ज़मीन पर हर किस्म के जानवर फैलाने में और हवाओं के चलाने में और बादलों में जो आसमान और ज़मीन के दमियान फिरे रहते हैं अन्तर्मदों के लिए (खुदा की क़ुदरत की) निशानियां हैं। (१६४) और कुछ लोग ऐसे हैं जो ग़ैर खुदा को (खुदा का) शरीक बनाते और उनसे खुदा की-सी मुहब्बत करते हैं, लेकिन जो ईमान वाले हैं, वे तो खुदा ही के सबसे ज़्यादा दोस्तदार हैं। और ऐ काश ! ज़ालिम लोग जो बात अज़ाब के वक़्त देखेंगे, जब देख लेते कि सब तरह की ताकत खुदा ही को है और यह कि खुदा सलूत अज़ाब करने वाला है। (१६५) उस दिन (कुफ़ के) पेशवा अपने पैरुवों से बे-ज़ारी ज़ाहिर करेंगे और (दोनों) अज़ाबे (इलाही) देख लेंगे और उनके आपस के ताल्लुकात ख़त्म हो जाएंगे। (१६६) (यह हाल देख कर) पैरवी करने वाले (हसरत से) कहेंगे कि ऐ काश ! हमें दुनिया में जाना नसीब होता कि जिस तरह ये तुमसे बेज़ार हो रहे हैं, इसी तरह हम भी इनसे बेज़ार हों। इस तरह खुदा उनके अमल उन्हें हसरत बना कर दिखायेगा और वे दोज़ख़ से नहीं निकल सकेंगे। (१६७) ★

१. यह उन के हक़ में है जिन को इल्म खुदा का पहुंचा और दुनिया की शरज के वास्ते छिपा रखा।

२. मक्के के काफ़िर कहते थे कि हम तीन सौ साठ खुदा रखते हैं, उन से एक शहर का बन्दोबस्त खूब नहीं हो सकता और मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) कहते हैं कि मेरा एक खुदा है, जो सारी दुनिया का काम बजाता है, मो कोई दबील साए अपनी बात पर, तब हम सक जानें, सो अल्लाह तआला ने इस आयत में अपनी क़ुदरत की निशानियां बयान कीं।

३. यानी वे कहते हैं कि खुदा-ए-तआला के बराबर ये भी हैं।

लोगो ! जो चीजें जमीन में हलाल-तैयब हैं, वे खाओ और शैतान के क़दमों पर न चलो । वह तुम्हारा खुला दुश्मन है । (१६८) वह तो तुमको बुराई और बेहयाई ही के काम करने को कहता है और यह भी कि खुदा के बारे में ऐसी बातें कहो, जिनका तुम्हें (कुछ भी) इल्म नहीं । (१६९) और जब उन लोगों से कहा जाता है कि जो (किताब) खुदा ने नाज़िल फ़रमायी है, उसकी पैरवी करो, तो कहते हैं (नहीं), बल्कि हम तो उसी चीज़ की पैरवी करेंगे, जिस पर हमने अपने बाप-दादा को पाया । भला अगरचे उनके बाप-दादा न कुछ समझते हों और न सीधे रास्ते पर हों (तब भी वे उन्हीं की पैरवी किए जाएंगे) । (१७०) जो लोग काफ़िर हैं, उनकी मिसाल उस शख्स की-सी है जो किसी ऐसी चीज़ को आवाज़ दे जो पुकार और आवाज़ के सिवा कुछ सुन न सके । (ये) बहरे हैं, गूंगे हैं, अंधे हैं, कि (कुछ) समझ ही नहीं सकते । (१७१) ऐ ईमान वाले ! जो पाकीज़ा चीज़ें हमने तुमको अता फ़रमायी हैं, उनको खाओ और अगर खुदा ही के बन्दे हो, तो (उस की नेमतों) का शुक्र भी अदा करो । (१७२) उसने तुम पर मरा हुआ जानवर और लहू' और सुअर का गोश्त और जिस चीज़ पर खुदा के सिवा किसी और का नाम पुकारा जाए, हराम कर दिया है । हां, जो ना-चार हो जाए (बशर्ते कि) खुदा की नाफ़रमानी न करे और (ज़रूरत की) हद से बाहर न निकल जाए, उस पर कुछ गुनाह नहीं । बेशक खुदा बरूशने वाला (और) रहम करने वाला है । (१७३) जो लोग (खुदा की) किताब से उन (आयतों और हिदायतों) को जो उसने नाज़िल फ़रमायी हैं, छिपाते और उनके बदले थोड़ी-सी क़ीमत (यानी दुनिया का फ़ायदा) हासिल करते हैं, वे अपने पेटों में सिर्फ़ आग भरते हैं । ऐसे लोगों से खुदा क्रियामत के दिन न कलाम करेगा और न उन को (गुनाहों से) पाक करेगा । और उन के लिए दुख देने वाला अज़ाब है । (१७४) ये वह लोग हैं, जिन्होंने ने हिदायत छोड़कर गुमराही और बख़्शिश छोड़कर अज़ाब खरीदा । यह जहन्नम (की आग) को कैसा बर्दाश्त करने वाले हैं । (१७५) यह इसलिए कि खुदा ने किताब सच्चाई के साथ नाज़िल फ़रमायी और जिन लोगों ने इस किताब में इस्तिलाफ़ किया, वे ज़िद में

१. मरे हुए जानवरों में से मछली और टिड्डी नबी सल्ल० की हदीस के मुताबिक़ हलाल और लहू में से ज़िगर और तिल्ली हलाल हैं ।

२. यह तर्जुमा डिक्शनरी के मानी के लिहाज़ से किया गया है । डिक्शनरी में 'इहलाल' (उहल-ल) के मानी आवाज़ बुलंद करने के हैं । तफ़्सीर लिखने वाले, जो इस लफ़्ज़ के मानी में जिन्हें का लफ़्ज़ शामिल करते हैं, वे माने-नज़ूल के लिहाज़ से करते हैं, क्योंकि जाहिलियत में जो जानवर ग़ैर-ख़ुदा के लिए मुकर्रर किया जाता था जिन्हें करने के वक़्त भी उस पर उसी ग़ैर का नाम लिया जाता था, वरना हकीक़त में जो चीज़ ग़ैर-ख़ुदा के लिए मुकर्रर की जाए, चाहे वह जानवर हो या और कुछ, हराम है, इस लिए कि आयत में हर्फ़ 'मा', इस्तेमाल फ़रमाया गया है, जिस के मानी हैं 'जो चीज़' और वह आम है । जिन्हें, हैवान और चीज़ों को, चाहे वे खाने की हों या पहनने की, या और हर तरह इस्तेमाल करने की, सब को शामिल है । चूँकि लुगत मुक़द्दम है इस लिए हम ने उसी मानी को लिया है । हराम व हलाल चीज़ों में नीयत की बड़ा दख़ल है, मसलन जो जानवर ग़ैर-ख़ुदा के लिए मुकर्रर किया गया हो, उस पर जिन्हें के वक़्त खुदा का नाम लिया जाए या ग़ैर-ख़ुदा का, हराम होने के लिहाज़ से बराबर है । खुदा का नाम लेने से वह हलाल न होगा । उलमा ने लिखा है कि अगर किसी मुसलमान ने कोई जानवर ग़ैर-ख़ुदा का क़रीबी बनने के लिए जिन्हें किया, तो वह इस्लाम से ख़ारिज हो गया और वह जानवर ऐसा होगा जैसे मुर्तद (इस्लाम से विमुख) का जिन्हें किया हुआ । बहरहाल नज़ की नीयत खुदा ही के लिए करनी चाहिए और जिन्हें करने के वक़्त उस पर 'बहद्दू ला मारी-क लहू' का नाम लेना चाहिए क्योंकि वह अपने साथ किसी को शरीक नहीं करना चाहता ।

(आकर नेकी से) दूर (हो गए) हैं (१७६) ★ ● नेकी यही नहीं कि तुम पूरब या पच्छिम (को क़िला समझकर उन) की तरफ़ मुंह कर लो, बल्कि नेकी यह है कि लोग खुदा पर और फ़रिश्तों पर और खुदा की किताब पर और पैगम्बरों पर ईमान लायें और माल बाबजूद अजीज रखने के रिश्तेदारों और यतीमों और मुहताजों और मुसाफ़िरों और मांगने वालों को दें और गरदनों (को छुड़ाने) में सच करें और नमाज़ पढ़ें और ज़कात दें और जब अहद कर लें तो उसको पूरा करें और सस्ती और तक्लीफ़ में और (लड़ाई के) मैदान में साबित क़दम रहें। यही जोग हैं जो (ईमान में) सच्चे हैं और यही हैं जो (खुदा से) डरने वाले हैं। (१७७) मोमिनो! तुम को मक्तूलों के बारे में क़िसास (यानी खून के बदले खून) का हुक्म दिया जाता है (इस तरह पर कि) आज़ाद के बदले आज़ाद (मारा जाए) और गुलाम के बदले गुलाम और औरत के बदले औरत और अगर क़ातिल को उसके (मक्तूल) भाई (के क़िसास में) से कुछ माफ़ कर दिया जाए, तो (वारिस मक्तूल को) पसंदीदा तरीक़े से (क्रारदाद की) पैरवी (यानी खून बहा का मुतालबा) करना और (क़ातिल को) भले तरीक़े से अदा करना चाहिए। यह परवरदिगार की तरफ़ से तुम्हारे लिए आसानी और मेहरबानी है, जो इसके बाद ज़्यादती करे, उसके लिए दुख का अज़ाब है। (१७८) और ऐ अक़ल वाले! क़िसास (के हुक्म) में (तुम्हारी) ज़िदगानी है कि तुम (क़त्ल व खूँरेज़ी से) बचो। (१७९) तुम पर फ़र्ज़ किया जाता है कि जब तुम में से किसी को मौत का वक़्त आ जाए तो अगर वह कुछ माल छोड़ जाने वाला हो तो मां-बाप और रिश्तेदारों के लिए दस्तूर के मुवाफ़िक़ वसीयत कर जाए, (खुदा से) डरने वालों पर यह एक हक़ है। (१८०) जो शस्स वसीयत को सुनने के बाद बदल डाले, तो उस (के बदलने) का गुनाह उन्हीं लोगों पर है, जो उस को बदलें और बेशक़ खुदा सुनता जानता है। (१८१) अगर किसी को वसीयत करने वाले की तरफ़ से (किसी वारिस की) तरफ़दारी या हक़तलफ़ी का डर हो तो अगर वह (वसीयत को बदलकर) वारिसों में गुलह करा दे, तो उस पर कुछ गुनाह नहीं। बेशक़ खुदा बरूशने वाला (और) रहम वाला है। (१८२) ★

मोमिनो! तुम पर रोज़े फ़र्ज़ किए गए हैं, जिस तरह तुमसे पहले लोगों पर फ़र्ज़ किए गये थे,

१. गरदनों के छुड़ाने से मुराद गुलामी बतौरह की क़ैद से आज़ाद कराना है।
२. यानी मक्तूल के बदले क़ातिल ही क़त्ल किया जाए।
३. यानी खून से दरगुज़र किया जाए और खून के बदले खून बहा क्रार पाए।
४. यानी अगर मुर्दा कह मरा था, पर देने वालों ने न दिया, तो मुर्दे पर गुनाह नहीं, वही गुनाहगार है।

ताकि तुम परहेजगार बनो।' (१८३) (रोजों के दिन) गिनती के कुछ दिन हैं, तो जो आदमी तुम में से बीमार हो, या सफ़र में हो, तो दूसरे दिनों में रोज़ों की गिनती पूरी कर ले।' और जो लोग रोज़ा रखने की ताकत रखें (लेकिन रखें नहीं), वे रोज़े के बदले मुहताज को खाना खिला दें।' और जो कोई शौक से नेकी करे तो उसके हक में ज्यादा अच्छा है और अगर समझो तो रोज़ा रखना ही तुम्हारे हक में बेहतर है। (१८४) (रोजों का महीना) रमजान का महीना (है) जिसमें कुरआन (अव्वल-अव्वल) नाज़िल हुआ, जो लोगों का रहनुमा है और जिस में हिदायत की खुली निशानियाँ हैं और (जो हक व बातिल को) अलग-अलग करने वाला है। तो जो कोई तुममें से इस महीने में मौजूद हो, चाहिए कि पूरे महीने के रोज़े रखे और जो बीमार हो या सफ़र में हो तो दूसरे दिनों में (रखकर) उनकी गिनती पूरी कर ले, खुदा तुम्हारे हक में आसानी चाहता है और सख्ती नहीं चाहता और (यह आसानी का हुक्म) इसलिए (दिया गया है) कि तुम रोज़ों का शुमार पूरा कर लो और इस एहसान के बदले कि खुदा ने तुमको हिदायत बख़शी है, तुम उसको बुजुर्गों से याद करो और उसका शुक्र करो। (१८५) और (ऐ पैग़म्बर!) जब तुम से मेरे बन्दे मेरे बारे में मालूम करें, तो (कह दो कि) मैं तो (तुम्हारे) पास हूँ। जब कोई पुकारने वाला मुझे पुकारता है, तो मैं उसकी दुआ क़बूल करता हूँ, तो उनको चाहिए कि मेरे हुक्मों को मानें और मुझ पर ईमान लाएं, ताकि नेक रास्ता पाएं। (१८६) रोज़ों की रातों में तुम्हारे लिए अपनी औरतों के पास जाना जायज़ कर दिया गया है, वह तुम्हारी पोशाक हैं और तुम उनकी पोशाक हो।' खुदा को मालूम है कि तुम (उनके पास जाने से) अपने हक में ख़ियानत करते थे; सो उसने तुम पर मेहरबानी की और तुम्हारी हरकतों से दरगुज़र फ़रमाया। अब (तुमको अस्तियार है कि) उनसे मुबाशरत करो और खुदा ने जो चीज़ तुम्हारे लिए लिख रखी है (यानी औलाद) उसको (खुदा से) तलब करो और खाओ और पियो, यहां तक कि मुबह की सफ़ेद धारी (रात की) स्याह धारी से अलग नज़र आने लगे। फिर रोज़ा (रखकर) रात तक पूरा करो और जब तुम मस्जिदों में एतिकाफ़ बैठे हो, तो उनसे मुबाशरत न करो। ये खुदा की हदें हैं। उनके पास न जाना। इसी तरह खुदा अपनी आयतें लोगों के (समझाने के लिए) खोल-खोलकर के बयान फ़रमाता है, ताकि वह परहेजगार

१. यानी रोज़े से सलीक़ा आ जाए जो रोकने का, तो हर जगह रोक सको।

२. यानी जितने रोज़े न रखें हों, बीमारी और सफ़र के बाद उतने क़ज़ा रख ले।

३. इस आयत में तंदुरुस्त और ताक़तवर शख्स पर रोज़ा रखना ज़रूरी नहीं किया गया था, बल्कि रखने न रखने का अस्तियार दिया गया, मगर इस के बाद की आयत से यह अस्तियार ख़त्म कर दिया और रोज़ा ज़रूरी करार दे दिया गया।

४. यानी जिस तरह पोशाक का ताल्लुक ज़िस्म से होता है, उसी तरह मंद का ताल्लुक औरत से और औरत का मंद से होता है।

व ला तअकुल अमवालकुम् बंनकुम् बिल्बातिलि व तुदलू बिहा
इललह्वकामि लि तअकुल फरीक्रमिन् अमवालिननासि बिल्-इस्मि व अन्तुम्
तअ-लमून ★ (१८८) यस्अलून-क अनिल्-अहिल्लति १ कुल् हि - य मवाक्रीतु
लिन्नासि वल्हज्जि १ व लैसल्बिर्ह बि अन्तअतुल्-बुयू-त मिन् जुहूरिहा

व ला किन्नल्बिर्-र मनित्का ७ वक्तुल्-
 बुय्त मिन् अब्वाबिहा ७ वत्तकुल्ला-ह
 ल-अल्लकुम् तुफिलहून (१८६) व क्रातिलू
 फी सबीलिल्लाहिल्लजी - न युकातिलूनकुम्
 व ला तअ-तद् इन्नल्ला-ह ला युहिब्वुल्-
 मुअ-तदीन (१६०) वक्तुलू - हुम् हैसु
 सक्रिफ्तुम् हुम् व अख्रिजू हुम् मिन् हैसु
 अख्रिजूकुम् वल्फित्तु अशददु मिनत्कात्लि ७

व ला तुकातिलू हुम् अिन्दल्-मस्जिदिल्-
हरामि हत्ता युकातिलूकुम् फ्रीहिङ्क इन्
क्रातलूकुम् फक्तुलू - हुम् कजालि - क
जज्रा - उल् - काफिरीन् (१६१) फइनिन्तहौ

फ्र इन्नल्ला - ह गफूररहीम (१६२) व क्रातिलू - हुम् हत्ता ला तकू - न
फ्रिन्तु व - व यकूनद्दीनु लिल्लाहि फ्र इनिन्तहौ फ्र - ला अद्वा-न इल्ला
अलज्जालिमीन (१६३) अश्शहल् - ह्रामु बिश्शहिरल् - ह्रामि वल्हूरमातु
क्रिसासुद् फ्र-मनिअ - तदा अलैकुम् फ्रअ - तद् अलैहि बिमिस्लि मअ - तदा
अलैकुम् वत्तकुल्ला - ह वअ - लमू अन्नल्ला - ह म-अल्मुत्तक्रीन (१६४) व
अन्निफ्रू फ्री सबीलिल्लाहि व ला तुल्कू बि अंदीकुम् इलत्तह्लुकत्ति
व अह्सिन् ह इन्नल्ला-ह युहिब्बुल् - मुह्सिनीन (१६५)

वनें । (१८७) और एक दूसरे का माल ना-हक़ न खाओ और न उसको (रिश्वत के तौर पर) हाकिमों के पास पहुँचाओ ताकि लोगों के माल का कुछ हिस्सा नाजायज़ तौर पर न खा जाओ और (इसे) तुम जानते भी हो । (१८८) ★

(ऐ मुहम्मद !) लोग तुमसे त्रये चांद के बारे में पूछते हैं (कि घटता-बढ़ता क्यों है) ? कह दो कि वह लोगों के (कामों की मीयादें) और हज़ के वक़्त मालूम होने का ज़रिया हैं ।' और नेकी इस बात में नहीं कि (एहराम की हालत में) घरों में उनके पिछवाड़े की तरफ़ से आओ, बल्कि नेक वह है जो परहेज़गार हो और घरों में उनके दरवाज़ों से आया करो' और खुदा से डरते रहो ताकि निजात पाओ । (१८९) और जो लोग तुमसे लड़ते हैं, तुम भी खुदा की राह में उनसे लड़ो, मगर ज्यादाती न करना कि खुदा ज्यादाती करने वालों को दोस्त नहीं रखता । (१९०) और उनको जहां पाओ, क़त्ल कर दो और जहां से उन्होंने तुमको निकाला है (यानी मक्के से) वहां से तुम भी उनको निकाल दो और (दीन से गुमराह करने का) फ़साद-क़त्ल व ख़ुरेजी से कहीं बढ़कर है और जब तक वे तुम से मस्जिदे मोहतरम (यानी ख़ाना काबा) के पास न लड़ें, तुम भी वहां उनसे न लड़ना । हां, अगर वे तुम से लड़ें, तो तुम उनको क़त्ल कर डालो । क़ाफ़िरों की यही सज़ा है । (१९१) और अगर वे रुक जायें तो खुदा बरूशने वाला (और) रहम करने वाला है । (१९२) और उनसे उस वक़्त तक लड़ते रहना कि फ़साद ख़त्म हो जाए और (मुल्क में) खुदा ही का दीन हो जाए और अगर वे (फ़साद से) बाज़ आ जायें, तो ज़ालिमों के सिवा किसी पर ज्यादाती नहीं (करनी चाहिए) । (१९३) अदब का महीना अदब के महीने के मुकाबले का है और अदब की चीज़ें एक दूसरे का बदला हैं । पस अगर कोई तुम पर ज्यादाती करे, तो जैसी ज्यादाती वह तुम पर करे, वैसी ही तुम उस पर करो । और खुदा से डरते रहो और जान रखो कि खुदा डरने वालों के साथ है ।' (१९४) और खुदा की राह में (माल) खर्च करो और अपने आप को हलाकत में न डालो और नेकी करो ।' बेशक़ खुदा नेकी करने वालों को दोस्त रखता है ।' (१९५) और खुदा (की खुशनूदी)

१. 'अहिल्ला' 'हिलाल' की जमा है और हिलाल पहली तीन रातों के चांद को कहते हैं । चांद हकीकत में एक है, मगर चूंकि वह घटता-बढ़ता रहता है, इस लिए गोया कई चांद हुए । इसी लिए उन को 'अहिल्ला' कहा गया है । इस के घटने-बढ़ने का फ़ायदा यह है कि जो लोग अन-यद हैं उन को इस से महीना और तारीख़ और हज़ के वक़्त मालूम होते हैं । अगर एक हालत पर रहता तो इन लोगों को बड़ी मुश्किल पेश आती कि न महीना मालूम होगा, न तारीख़ । हिलाल को देख कर हर शख्स महीना और तारीख़ और हज़ के वक़्त और कामों की मीयादें आसानी से मालूम कर सकता है ।

२. अब मैं दस्तूर या कि जब घर से निकल कर एहराम बांध लेते, और घर में आने की ज़रूरत वाक़े होती तो घर में दरवाज़े से न दाख़िल होते, बल्कि पिछवाड़े से कूद कर आते । खुदा ने इस फ़ैल को दाख़िले नेकी न करार दिया और घर में दरवाज़े से आने का हुक्म फ़रमाया ।

३. इयज़त के महीने चार थे —ज़ीकादा, ज़िलहिज्जा, मुहर्रम, रजब । और उन में लड़ाई नहीं की जाती थी । काफ़िर इन महीनों में लड़ाई करने लगते तो मुसलमान इन महीनों के अदब की वजह से लड़ाई से रुकते और तैरान होते कि क्या करें । खुदा ने फ़रमाया कि अगर काफ़िर इन महीनों के अदब का स्थान रखें, तो तुम भी रखो और वे अदब को छोड़ दें और तुम पर ज़ुलम करने लगें तो तुम भी उन से लड़ो और बदला लेने में कोताही न करो ।

४. यानी जिहाद छोड़ कर न बैठो, इस में तुम्हारी हलाकत है ।

मंजिल १

के लिए हज और उमरे को पूरा करो और अगर (रास्ते में) रोक लिए जाओ तो जैसी कुर्बानी मयस्सर हो (कर दो) और जब तक कुर्बानी अपनी जगह पर न पहुंच जाए, सर न मुंडाओ और अगर कोई तुम में बीमार हो या उसके सर में किसी तरह की तकलीफ हो तो (अगर वह सर मुंडा ले तो) उसके बदले रोज़े रखे या सदाका दे या कुर्बानी करे। फिर जब (तकलीफ दूर होकर) तुम मुतमइन हो जाओ तो जो (तुममें) हज के वक्त तक उमरे में फ़ायदा उठाना चाहे, वह जैसी कुर्बानी मयस्सर हो करे और जिसको (कुर्बानी) न मिले, वह तीन रोज़े हज के दिनों में रखे और सात जब वापस हो। ये पूरे दस दिन हुए। यह हुक्म उस शस्स के लिए है, जिसके बाल-बच्चे मक्के में न रहते हों और खुदा से डरते रहें और जान रखें कि खुदा सस्त अज़ाब देने वाला है। (१६६) ★

हज के महीने (तै है जो) मालूम हैं।^१ तो जो शस्स इन महीनों में हज की नीयत कर ले तो हज (के दिनों) में न औरतों से मिले, न कोई बुरा काम करे, न किसी से झगड़े और जो नेक काम तुम करोगे, वह खुदा को मालूम हो जाएगा और जादेराह (यानी रास्ते का खर्च) साथ ले जाओ क्योंकि बेहतर (फ़ायदा) जादेराह (का) परहेज़गारी है और ऐ अक़ल वालो! मुझसे डरते रहो। (१६७) इसका तुम्हें कुछ गुताह नहीं कि (हज के दिनों में तिजारत के जरिए से) अपने परवरदिगार से रोज़ी तलब करो। और जब अरफ़ात से वापस होने लगे तो मशअरे हराम (यानी मुबदलफ़े) में खुदा का जिक्र करो। और इस तरह जिक्र करो जिस तरह उसने तुमको सिखाया और इससे पहले तुम लोग (इन तरीकों को) बिल्कुल नहीं जानते थे। (१६८) फिर जहां से और लोग वापस हों, वहीं से तुम भी वापस हो और खुदा से बलिशश मांगो। बेशक खुदा बलशने वाला और रहमत करने वाला है। (१६९) फिर जब हज के तमाम अर्कान पूरे कर चुको तो (मिना में) खुदा को याद करो, जिस तरह अपने बाप-दादा को याद किया करते थे, बल्कि उससे भी ज्यादा। और कुछ लोग ऐसे हैं जो (खुदा से) इल्तिआ करते हैं कि ऐ परवरदिगार! हम को (जो देता है) दुनिया ही में इनायत कर। ऐसे लोगों का आखिरत में कुछ हिस्सा नहीं। (२००) और कुछ ऐसे हैं कि दुआ करते हैं कि परवरदिगार! हम को दुनिया में भी नेमत अता फ़रमा और आखिरत में भी नेमत बलशना और दोज़ख के अज़ाब से बचाए रखना। (२०१) ● मही लोग हैं जिनके लिए उन के कामों का

१. यानी शव्वाल, बीक्रादा और ज़िलहिज्जा के दस दिन।

हिस्सा (यानी नेक बदला तैयार) है और खुदा जल्द हिसाब लेने वाला (और जल्द बदला देने वाला) है। (२०२) और (मिना के ठहरने के) दिनों में (जो) गिनती के (दिन) हैं, खुदा को याद करो। अगर कोई जल्दी करे (और) दो ही दिन में (चल दे) तो उस पर भी कुछ गुनाह नहीं और जो बाद तक ठहरा रहे, उस पर भी कुछ गुनाह नहीं।^१ ये बातें उस शस्स के लिए हैं जो (खुदा से) डरे और तुम लोग खुदा से डरते रहो और जान रखो कि तुम सब उस के पास जमा किये जाओगे। (२०३) और कोई शस्स तो ऐसा है जिसकी बातचीत दुनिया की जिन्दगी में तुमको भली मालूम होती है और वह अपने माफ़िज़मीर (जो कुछ जमीर यानी अन्तरात्मा में है) पर खुदा को गवाह बनाता है, हालांकि वह सख्त सगड़ालू है। (२०४) और जब पीठ फेरकर चला जाता है तो जमीन में दौड़ता फिरता है, ताकि उसमें फ़साद फैलाए और खेती को (बर्बाद) और (इन्सानों और हैवानों की) नस्ल को हल्का करे और खुदा फ़साद को पसन्द नहीं करता। (२०५) और जब उससे कहा जाता है कि खुदा से खौफ़ करो तो घमण्ड उस को गुनाह में फंसा देता है, तो ऐसे को जहन्नम सजावार है और वह बहुत बुरा ठिकाना है।^२ (२०६) और कोई शस्स ऐसा है कि खुदा की खुशी हासिल करने के लिए अपनी जान बेच डालता है और खुदा बन्दों पर बहुत मेहरबान है।^३ (२०७) मोमिनो ! इस्लाम में पूरे-पूरे दाखिल हो जाओ और शैतान के पीछे न चलो।^४ वह तो तुम्हारा खुला दुश्मन है। (२०८) फिर अगर तुम रोशन हुक्मों के पहुँच जाने के बाद लड़खड़ा जाओ तो जान रखो कि खुदा ग़ालिब और हिकमत वाला है। (२०९) क्या ये लोग इसी बात के इतिज़ार में हैं कि उन पर खुदा (का अज़ाब) बादल के सायेबानों में आ नाज़िल हो और फ़रिश्ते भी (उतर आयें) और काम तमाम कर दिया जाए।^५ और सब कामों का रज़ूअ खुदा ही की तरफ़ है। (२१०) *

(ऐ मुहम्मद !) बनी इस्राईल से पूछो कि हमने उनको कितनी खुली निशानियाँ दीं और जो शस्स खुदा की नेमत को अपने पास आने के बाद बदल दे तो खुदा सख्त अज़ाब करने वाला है। (२११) और जो काफ़िर हैं, उनके लिए दुनिया की जिंदगी खुशनुमा कर दी गयी है और वे मोमिनो से मज़ाक़ करते हैं^६ लेकिन जो परहेज़गार हैं, वे क्रियामत के दिन उन पर ग़ालिब होंगे और खुदा जिस को चाहता है, अनगिनत रोज़ी देता है। (२१२) (पहले तो सब) लोगों का एक ही

१. गिनती के दिनों से ईद के बाद के तीन दिन मुराद हैं, जिन को अय्यामे तशरीक़ कहते हैं। इन तीन दिनों यानी ११-१२ और १३ तारीख़ में खुदा को याद करना चाहिए और अगर कोई सिर्फ़ दो दिन रह कर चला जाए, तो उसे अस्तिवार है।

२. यह हाल है मुनाफ़िक़ का कि जाहिर में खुशामद करे और अल्लाह को गवाह करे कि मेरे दिल में तुम्हारी मुहब्बत है और सग़रे के वक्त कुछ कमी न करे और क़ाबू पाए तो लूट-मार मचा दे और मना करने से और ख़िद चढ़े और ज्यादा गुनाह करे।

३. यह हाल है ईमान वाले का कि अल्लाह की खुशी पर अपनी जान दे।

४. यानी बहकाने पर न चलो।

५. यानी हर एक को सज़ा मिले, उस के कामों के मुताबिक़।

कानन्नासु उम्मतुंवाहिद-तुत् फ ब-अ-सल्लाहुन्नबियी-न मुबशिशरी-न व

मुज्जिरी-न व अन्ज-ल म-अहुमुल्-किता-ब बिल्हविक लियहकु-म बैनन्नासि फी मस्त-लफू फ्रीहि व मस्त-ल-फ फ्रीहि इल्लल्लजी-न ऊतूहु मिम्बअदि

मा जा^Iअहुमुल्-बय्यिनातु बग्यम्-बैनुहुम्, ६ फ ह-दल्लाहुल्लजी-न आमनू लिमस्त-लफू फ्रीहि मिनल्हविक बि इजिनीही

बल्लाहु यहदी मंय्यशा^I-उ इला

सिरातिम्-मुस्तक्रीम (२१३) अम् हसिबुम्

अन् तदखुलुल्-जन्न-त व लम्मा यअतिकुम् म-सलुल्लजी-न खली मिन कन्निकुम्

मस्तत्-हुमुल्बअसा^I-उ वज्जरा^I-उ व जुल्लिलू

हत्ता यकूलर्-रसुलु वल्लजी-न आमनू म-अह मता

नस्रल्लाहि अला^I इन् - न नस्रल्लाहि

करीब (२१४) यस्अलून-क मावा

युन्फिकून ६ कुल् मा^I अन्फक्तुम् मिन् खैरिन् फ लिल्-वालिदनि वल्-अकरबी-न वल्-यतामा वल्मसाकीनि

वन्निस्सबीलि ६ व मा तफअलू मिन् खैरिन् फ इन्नल्ला - ह बिही

अलीम (२१५) कुति - ब अलैकुमुल्-कितालु व हु-व कुरहुल्लकुम् ६ व असा^I अन् तक्रहू शैअंव-व हु-व खैरल्लकुम् ६ व असा^I अन् तुहिबू शैअंव-व हु-व शरल्लकुम् वल्लाहु यअ-लमु व अन्तुम् ला तअ-लमून (२१६)

وَاللّٰهُ يَرْزُقُ مَنْ يَّشَاءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝ كَانَ النَّاسُ اُمَّةً
وَاحِدَةً ۝ رَّبَّعَ اللّٰهُ الْيَقِيْنَ مُبْتَلِيْنَ وَمُسْتَبْدِيْنَ ۝ وَاتَّخَذَ
مَعَهُ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ لِيَشَاقِقَ بَيْنَ الْاَنَاسِ فَمَا اَعْتَمَلُوا اِلَّا
وَمَا اَخْتَلَفَ فِيْهِ اِلَّا الَّذِيْنَ اُوْتُوْهُ مِنْ بَعْنِ مَا عَدَا لَهُمْ لِيُبَيِّنَ
لِيْكَ اَيُّكُمْ ۝ فَهَٰذَا لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا اَلْاَسْوَالُ اَلْاَعْتَمَلُوا اِيْضًا مِنْ
الْحَقِّ ۝ اِذْ ذٰلِكَ ۝ وَاللّٰهُ يَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ اِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيْمٍ ۝
اَمْ حَسِبْتُمْ اَنْ تُدْعٰوُا اِلَى الْاِيْمٰنِ وَلَٰكِنَّا لَا نَدْعٰوُا الَّذِيْنَ عَلٰوْا
مِنْ قَبْلِكُمْ مُسْتَعْمِلِيْنَ اِلَٰهًا وَّالْعَزَآءَ وَذُرِّيَّاتِهِمْ اَنْ يَقُوْلَ
الْمُؤْمِنُ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهُ مَعِيَ قُضِيَ اَلَا اِنَّ نَصْرَ اللّٰهِ اِنَّ نَصْرَ اللّٰهِ
قَوِيْمٌ ۝ يَنْتَقِلُوْا فَاِذَا اِيْتُوْا فَاِنْ مَا اَنْتُمْ مِنْ غَيْرِ
فَالِىَ الْاِيْمٰنِ وَالْاَقْرَبِيْنَ وَلِىَ الْاَكْفٰكِيْنَ وَالْمُنٰفِقِيْنَ ۝ اِنَّ الْيَسِيْلَ ۝
مَا اَعْتَمَلُوا مِنْ غَيْرِ ۝ اِنَّ اللّٰهَ بِهِ عَلِيْمٌ ۝ كُتِبَ عَلٰى الْفَآلِ
وَمَوْكِرًا لِّكُفْرٍ وَعَسٰى اَنْ يَّكُوْنُوْا اَشْيَآءًا ۝ وَهُوَ خَيْرُ لِّكُفْرٍ
عَسٰى اَنْ يَّجِيْزَ اَشْيَآءًا ۝ وَهُوَ خَيْرُ لِّكُفْرٍ ۝ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ ۝ اَنْتُمْ لَا
تَعْلَمُوْنَ ۝ يَسْأَلُوْنَكَ عَنِ الْيَهُودِ الْاَسْرَآءِ وَقَالَ فَاِنْ قُلْتَ
فَاِنْ يَكُوْنُ وَصْدًا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَكَفَّ رُءُوسَهُ وَالْمَسِيْحَ الْاَرَامِ
وَالْمَغْرَابَ اٰهْلُهُ وَنَحْنُ اَكْبَرُ عِنْدَ اللّٰهِ وَالْفِتْنَةُ اَكْبَرُ مِنَ الْقَتْلِ

मजहब था । (लेकिन वे आपस में इस्तिलाफ करने लगे) तो खुदा ने (उनकी तरफ) बशारत देने वाले और डर सुनाने वाले पैगम्बर भेजे और उन पर सच्चाई के साथ किताबें नाज़िल कीं, ताकि जिन मामलों में लोभ इस्तिलाफ करते थे, उनका उनमें फ़ैसला कर दे । और इसमें इस्तिलाफ भी उन्हीं लोगों ने किया जिनको किताब दी गयी थी, बावजूदे कि उन के पास खुले हुए हुक्म आ चुके थे । (और यह इस्तिलाफ उन्हींमें सिर्फ) आपस की ज़िद से (किया) तो जिस हक़ बात में इस्तिलाफ करते थे, खुदा ने अपनी मेहरबानी से मोमिनों को उस की राह दिखा दी और खुदा जिसको चाहता है, सीधा रास्ता दिखा देता है । (२१३) क्या तुम यह ख्याल करते हो कि (यों ही) बहिश्त में दाखिल हो जाओगे और अभी तुमको पहले लोगों की-सी (मुश्किलें) तो पेश आयी ही नहीं । उनको (बड़ी-बड़ी) सस्तियां और तकलीफ़ें पहुंचीं और वे (परेशानियों में) हिला-हिला दिये गये, यहां तक कि पैगम्बर और मोमिन लोग, जो उनके साथ थे, सब पुकार उठे कि कब खुदा की मदद आएगी । देखो, खुदा की मदद (बहुत) जल्द (आया चाहती) है । (२१४) (ऐ मुहम्मद !) लोग तुमसे पूछते हैं कि (खुदा की राह में) किस तरह का माल खर्च करें । कह दो कि (जो चाहो खर्च करो, लेकिन) जो माल खर्च करना चाहो, वह (दर्जा-ब-दर्जा हक़ वालों, यानी) मां-बाप को और करीब के रिश्तेदारों को और यतीमों को और मुहताजों को और मुसाफ़िरों को (सबको दो) और जो भलाई तुम करोगे, खुदा उसको जानता है । (२१५) (मुसलमानो !) तुम पर (खुदा के रास्ते में) नज़ना फ़र्ज कर दिया गया है, वह तुम्हें ना-गवार तो होगा । मगर अजब नहीं कि एक चीज़ तुमको बुरी लगे और वह तुम्हारे हक़ में भली हो और अजब नहीं कि एक चीज़ तुमको भली लगे और वह तुम्हारे लिए नुक़सानदेह हो । और (इन बातों को) खुदा ही बेहतर जानता है और तुम नहीं जानते । (२१६) ✽

(ऐ मुहम्मद !) लोग तुम से इस्लाम वाले महीनों में लड़ाई करने के बारे में पूछते हैं । कह दो कि इनमें लड़ना बड़ा (गुनाह) है और खुदा की राह से रोकना और उस से कुफ़ करना और मस्जिदें हराम (यानी खाना-ए-काबा) में जाने से (बन्द करना) और मस्जिद वालों को उसमें से निकाल देना (जो ये काफ़िर करते हैं) खुदा के नज़दीक उस से भी ज्यादा (गुनाह) है और फ़िला फ़ैलाना खून बहाने से भी बड़कर है और ये लोग हमेशा तुम से लड़ते रहेंगे, यहां तक कि अगर ताक़त रखें तो तुमको तुम्हारे दीन से फेर दें और जो कोई तुम में से अपने दीन से फिर (कर काफ़िर हो) जाएगा और काफ़िर ही मरेगा, तो ऐसे लोगों के आमांल दुनिया और आखिरत, दोनों में बर्बाद हो जायेंगे और यही लोग दोख़ल (में जाने) वाले हैं, जिस में हमेशा रहेंगे । (२१७) जो लोग ईमान लाए और खुदा के लिए वतन छोड़ गये और (काफ़िरों से) जंग करते रहे, वही खुदा की रहमत के उम्मीदवार हैं और खुदा बरूशने वाला (और) रहमत करने वाला है । (२१८) (ऐ पंगम्बर !) लोग तुम से शराब और जुए का हुक्म मालूम करते हैं । कह दो कि इन में नुक़सान बड़े हैं और लोगों के लिए कुछ फ़ायदे भी हैं, मगर उनके नुक़सान फ़ायदों से कहीं ज्यादा हैं । और यह भी तुम से पूछते हैं कि (खुदा की राह में) कौन सा माल खर्च करें ? कह दो कि जो ज़रूरत से ज्यादा हो । इस तरह खुदा तुम्हारे लिए अपने हुक्मों को खोल-खोलकर बयान फ़रमाता है, ताकि तुम सोचो । (२१९) (यानी) दुनिया और आखिरत (की बातों) में (ग़ौर करो) और तुम से यतीमों के बारे में पूछते हैं, कह दो कि उन के (हालात का) सुधार बहुत अच्छा काम है और अगर तुम उनसे मिल-जुल कर रहना (यानी खर्च इकट्ठा रखना) चाहो तो वे तुम्हारे भाई हैं और खुदा खूब जानता है कि ख़राबी करने वाला कौन है और सुधार करने वाला कौन और अगर खुदा चाहता तो तुमको तकलीफ़ में डाल देता । बेशक़ खुदा ग़ालिब और हिक़मत वाला है । (२२०) और (मोमिनो !) मुश्रिक औरतों से जब तक कि ईमान न लाएं निकाह न करना, क्योंकि मुश्रिक औरत, चाहे तुमको कैसी ही भली लगे उससे मोमिन लौंडी बेहतर है और (इसी तरह) मुश्रिक मर्द, जब तक ईमान न लाएं, मोमिन औरतों को उनकी बीवी न बनाना, क्योंकि मुश्रिक (मर्द) से, चाहे वह तुमको कैसा ही भला लगे, मोमिन गुलाम बेहतर है । ये (मुश्रिक, लोगों को) दोख़ल की तरफ़ बुलाते हैं और खुदा अपनी मेहरबानी से बहिश्त और बलिश्श की तरफ़ बुलाता है और अपने हुक्म लोगों से खोल-खोलकर बयान करता है, ताकि नसीहत हासिल करें (२२१) *

१. शुक इस्लाम में शराब हराम न थी । मुसलमान उसे बिला किशक पीते थे । जब यह आयत नाज़िल हुई तो जिन लोगों ने ल्याल किया कि इस में नुक़सान है, उन्होंने इस को छोड़ दिया और जिन लोगों ने समझा कि इस में फ़ायदे हैं, वे पीते रहे, फिर यह आयत उतरी कि, 'जब तुम मतवाले हुआ करो तो नमाज़ न पढ़ा करो ।' तो जो शराब पीया करते थे, उन्होंने नमाज़ के वक़्त उस का पीना छोड़ दिया । इन आयतों से शराब की बुराई तो बाहिर थी, लेकिन बुलें तीर पर हराम न थी, फिर यह आयत उतरी कि ऐ ईमान वाले ! शराब और जुआ और बुतों के धान और पैसे, ये सब नापाक काम, शैतानों के कामों में से हैं, सो इन से बचो ताकि निजात पाओ । इस से शराब साफ़ तीर पर हराम हो गयी । हज़रत उमर रज़ि० जो शराब के बारे में साफ़-साफ़ हुक्म के जा जाने की स्वाहिश रखते थे, जब उन्होंने यह आयत सुनी कि 'शैतान तो यह चाहता है कि शराब और जुए की वजह से तुम्हारे आपस में दुश्मनी और रंजिश डलवा दे और तुम्हें खुदा की याद और नमाज़ से-रोक दे, सो तुम को (उन से) बाज़ रहना चाहिए', तो फ़ौरन बोल उठे कि हम बाज़ रहे, हम बाज़ रहे ।

व यस्अलून - क अनिल्महीज़ि ॥ कुल् हु - व अ - जन् ॥ फअ-तज़िलुन्निसा - अ
फिल्महीज़ि ॥ व ला तक्वबू-हुन्-न हत्ता यत-हुर-न ॥ फ इजा त-तह-हर-न

फअतू - हुन - न मिन् हैसु अ - म - रकुमुल्लाहु ॥ इन्नल्ला - ह युहिबुततव्वाबी-न
व युहिबुल् - मु - त - तहिहरीन (२२२) निसा - उकुम् हूरसुल्लकुम् ॥ फअतू
हरसकुम् अन्ना शिअतुम् ॥ व कदिदम्

लि अन्फुसिकुम् ॥ वततकुल्ला-ह वअ-लम्

अन्नकुम्मुलाकूहु ॥ व वशिश्तिरिल्-मुअमिनीन
(२२३) व ला तज्अलुल्ला-ह अुज्रतल्लि-

ऐमानिकुम् अन् तबर् ॥ व तततकू व तुस्लिह

बैनन्नासि ॥ वल्लाहु समीअुन् अलीम (२२४)

ला युआखिलुकुमुल्लाहु बिल्लग्वि फी

ऐमानिकुम् व लाकिययुआखिलुकुम् बिमा

क - स - बत् कुलूबुकुम् ॥ वल्लाहु गफूरुन्

हलीम (२२५) लिल्लजी - न युअलू - न

मिन्निसा-इ-हिम् तरब्बुसु अब-अत्ति अशहुरित्

फ इन् फा-ऊ फ इन्नल्ला-ह गफूररहीम

(२२६) व इन् अ-ज-मुत्तला-क फ-इन्नल्ला-ह समीअुन् अलीम (२२७)

वल्मुत्तल्लकातु य-त-रब्बस-न बि अन्फुसिहिन्-न सला-स-त्त कुरू-इत् ॥ व ला

यहिल्लु लहुन्-न अय्यक्तुम-न मा ख-ल-कल्लाहु फी अरहामिहिन-न इन् कुन्-न युअमिन्-न

विल्लाहि वल्योमिल् - आखिरि ॥ व बुअलतुहुन् - न अहक्कु बिरदिहिन-न फी

जालि-क इन् अराद् इस्लाहन् ॥ व लहुन्-न मिस्लुल्लजी अलैहिन-न बिल्मअ-रुफि

व लिर्जालि अलैहिन्-न द-र-जतुन् ॥ वल्लाहु अजीजुन् हकीम ★ (२२८)

وَلَا تَقْرَبُوهُمْ حَتَّىٰ يَطْهَرُوا فَإِذَا أَطْهَرُوا فَأَتَوْهُمْ مِنْ
حَيْثُ أَمَرَهُ اللَّهُ إِنَّ اللَّهَ يَجِبُ الْوُثْقَيْنِ وَيَجِبُ الْوُثْقَيْنِ
بِأَلَاكُمْ حَرْفٌ لَّكُمْ وَأَنْتُمْ أَحْزَنُ أَنْ يَشْفُوَ وَكَذَلِكَ
لَا تَقْبَلُوا وَأَقْبَلُوا اللَّهُ وَأَقْبَلُوا الْكَلِمَةَ وَالْوَثْقَيْنِ
وَلَا تَجْعَلُوا اللَّهَ عُرْضَةً لِأَيْمَانِكُمْ أَنْ تَبَرُّوا وَتَتَّقُوا وَتُخْلُوا
بَيْنَ النَّاسِ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ۝ لَا يُؤْمِنُ كَلِمَةَ اللَّهِ بِالْقَوْلِ
فِي أَيْمَانِهِ وَلَكِنْ يُؤْمِنُ كَلِمَةً كَمَا كُتِبَ لَهُمْ وَاللَّهُ غَفُورٌ
حَلِيمٌ ۝ الَّذِينَ يُولُونِ مِنْ بَنَاتِهِمْ تُرْجَسُ أَرْجَسُ
فَإِنْ قَادَ فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝ وَإِنْ عَزَمُوا الطَّلَاقَ فَإِنَّ
اللَّهَ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ۝ وَالْمُطَلَّاتُ بِرُءُوسٍ يَأْتِيَنَّ اللَّهُ فَرْدَهُ
وَلَا يَحِلُّ لهنَّ أَنْ يَكُنَّ مِمَّا خَلَقَ اللَّهُ فِي الْأَحْشَاءِ إِنْ
كُنَّ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَهُوَ ظَنُّنَّ أَنْ يَرْجِعْنَ فِي
ذَلِكَ إِنْ أَرَادُوا إِصْلَاحًا وَلَهُنَّ مِنْ أَوْلِيَّائٍ يَتَوَقَّوْنَ
وَالْوَلِيُّ عَلَى نَفْسِهِ دَرَجَةٌ ۝ وَاللَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ۝ الطَّلَاقُ ثَلَاثٌ
فَإِمَّا لَا يَتَذَكَّرُونَ أَوْ تَرَدُّنَّ أَوْ يَتَصَدَّقْنَ بِالْحَسَنِ وَلَا يَحِلُّ لَكُمُ أَنْ
تَتَّخِذُوا مِنْهُنَّ شَيْئًا إِلَّا أَنْ يَتَّخِذَ الْأَبْعَامُ حُدُودَ
لَهُنَّ فَإِنْ خِفْتُمْ أَلَّا يَفْعِلَا فَعَلُوا لَكُمْ جُنَاحٌ عَلَيْهِمَا فَعِلَا

और तुमसे हैज के बारे में पूछते हैं। कह दो कि वह तो नजासत है, सो हैज के दिनों में औरतों से असंग रहो और जब तक पाक न हो जायें, उनसे क़रीब न होओ। हां, जब पाक हो जाएं तो जिस तरीके से खुदा ने तुम्हें इशार्द फ़रमाया है, उनके पास जाओ। कोई शक नहीं कि खुदा तौबा करने वालों और पाक-साफ़ रहने वालों को दोस्त रखता है। (२२२) तुम्हारी औरतें तुम्हारी सेती हैं, तो अपनी सेती में जिस तरह चाहो जाओ और अपने लिए (नेक अमल) आगे भेजो और खुदा से डरते रहो और जान रखो कि (एक दिन) तुम्हें उसके सामने हाज़िर होना है।' और (ऐ पंगम्बर!) ईमान वालों को खुशख़बरी सुना दो। (२२३) और खुदा (के नाम) को इस बात का हीला न बनाना कि (उसकी) क़समें खा-खाकर मुलूक करने और परहेज़गारी करने और लोगों में सुलह-सफ़ाई कराने से रुक जाओ और खुदा सब कुछ सुनता और जानता है।' (२२४) खुदा तुम्हारी बेकार क़स्मों पर तुम्हारी पकड़ नहीं करेगा, लेकिन जो क़स्में तुम दिल के इरादे से खाओगे, उन पर पकड़ करेगा और खुदा बख़्शने वाला, बुर्दबार है।' (२२५) जो लोग अपनी औरतों के पास जाने से क़सम खा लें, उनको चार महीने तक इन्तिज़ार करना चाहिए। अगर (इस अर्से में क़सम से) रुजूअ कर लें, तो खुदा बख़्शने वाला मेहरबान है। (२२६) और अगर तलाक़ का इरादा कर लें, तो भी खुदा सुनता और जानता है। (२२७) और तलाक़ वाली औरतें तीन हैज तक अपने आपको रोके रहें। और अगर वे खुदा और क़ियामत के दिन पर ईमान रखती हैं तो उन को जायज़ नहीं कि खुदा ने जो कुछ उन के पेट में पैदा किया है, उसको छिपायें और उन के खाविद अगर फिर मुवाफ़क़त चाहें तो इस (मुद्दत) में वे उन को अपनी ज़ौजियत (बीबी बनाने) में ले लेने के ज़्यादा हक़दार हैं। और औरतों का हक़ (मर्दों पर) वैसा ही है जैसे दस्तूर के मुताबिक़ (मर्दों का) हक़ औरतों पर है। हां, मर्दों को औरतों पर फ़ज़ीलत है और खुदा मालिक (और) हिक़मत वाला है। (२२८) *

१. लफ़्ज़ों का लिहाज़ किया जाता तो तर्जुमा यों होना चाहिए था कि 'तुम्हें खुदा से मिलना है, मगर जो तर्जुमा यहां किया गया है, वह मुहावरे के लिहाज़ से बहुत लतीफ़ है।

२. यानी इस बात की क़सम न खाओ कि मैं पलां शक्स से मुलूक नहीं करूंगा या पलां नेक काम नहीं करूंगा। अगर ऐसी क़सम खा ली हो तो उस को तोड़ देना चाहिए और उस का कफ़ारा दे देना चाहिए।

३. 'बेकार क़सम' वह है जिस की नीयत न हो और बे-क़स्द व इरादा खायी जाए, जैसे कुछ लोग तकिया-ए-क़नाम के तौर पर बात-बात में 'बल्लाह' 'बिल्लाह' कहा करते हैं। कुछ ने कहा, बेकार क़सम वह है जो गुस्ते की हालत में खायी जाए, या हलाल को हराम कर लिया जाए। ऐसी क़सम में कफ़ारा नहीं है। कुछ ने कहा, जो गुनाह की बात पर खायी जाए। कुछ ने कहा, जो मामले के वक़्त खायी जाए। बेचने वाला कहे, बल्लाह! यह चीज़ मैं इतने को नहीं बेचूंगा, ख़रीदने वाला कहे, बल्लाह! मैं इतने को नहीं ख़रीदूंगा। बहरहाल बेकार क़स्मों पर पकड़ नहीं है।

४. ज़िम लफ़्ज़ का तर्जुमा हम ने हैज़ा किया है, वह 'क़ुरू' है, जिस के मानी हैज़ और तुहर (पाकी) दोनों हैं। इस बाग़ में इस्तिलाफ़ रहा है कि यहां हैज़ मुराद है या तुहर। सहाबा राशि० की एक जमाअत इस बात की क़ायस है कि क़ुरू के मानी तुहर है। इमाम मालिक रह० और शाफ़ई का भी मशहब यही है, मगर चारों ख़लीफ़ा और ताबईन का यह क़ौल है कि 'क़ुरू' से मुराद हैज़ है। इनाम अबू हनीफ़ा रह० का भी यही मशहब है। इमाम

(सोध ५५ पर)

अत्ताकु मरंतानि ५ फ इम्साकुम्-बिमअ-रुफिन् ओ तस्रीहुम्-बि इहसानिन्
व ला यहिल्लु लकुम् अन् तअखुन् मिम्मा आतैतुमहुन-न शैअत् इल्ला
अय्यत्ताफा अल्ला युक्कीमा हुदुदल्लाहि ५ फ इन् खिफ्तुम् अल्ला युक्कीया
हुदुदल्लाहि ५ फ ला जुना-ह अलैहिमा फ्रीमफतदत् बिही ५ तिल्-क हुदुदल्लाहि

फल्ला तअ-तद्दहा व मय्य-त-अद्-द हुद्दल्लाहि

क्र उला-इ-क हुमुज्जालिमून (२२६) क्र इन्

तल्ल-कहा फ ला तहिल्लु लह मिम्बअ-दु हत्ता

तन्कि-ह जोजत् गैरह ७ फ इन् तल्ल-कहा

फ़-ला जुना-ह अलैहिमा अय्य-त-राजआ इन्

जन्ता अय्युक्तीमा हृददल्लाहि व तिल-क

हृददल्लाहि यबय्यिनहा लि कौमियअ-लमन

(२३०) व इजा तल्लक्तमल्लिसा[†]-अ फ-ब-लग-न

अ-ज-सहन-न फ अमिसकहन-न बिमअ-रुफित औ

सरिहहन-न बिमअ-रुफिबं व ला तमिक् हन-न

जिरारल्लितअ - तद १. व मंथयफअल लालि-क

फ्रे-कद् अ-ल-म नपसहू ७ व ला तत्तखिजू आयातिल्लाहि हजुववं-वज्जुरु

निअ-म-तल्लाहि अलैकुम् व मा^१ अन्-ज़-ल अलैकुम् मिनल्-किताबि बलिह्वमति

यात्रिकुम् बिहा वक्तकुल्ला-ह वअल्लमू अन्नल्ला-ह बि कुल्लि शै-इन् अलीम

हन्-न अंयसकिड-न अय्यायन-न क्र-ब-ल-न अ-ज-लहुन-न क्र ला तअजुलू

बिंदी मय नमः विष्णवे । त्रिशूलं धारयन् शिवाय नमः ।

अज्जा वक्का उ अज्जा ।

लघुम् व अह्रस् वल्लाङ् यञ्-लम् व अन्तुम् ला तञ्-लम् (२३२)

[illegible]

तलाक़ (सिर्फ) दो बार है। (यानी जब दो बार तलाक़ दे दी जाए तो) फिर (औरतों को) या तो शाइस्ता तरीक़े से (निकाह में) रहने देना है या भलाई के साथ छोड़ देना और यह जायज़ नहीं कि जो मह तुम उन को दे चुके हो, उस में से कुछ वापस ले लो। हां, अगर बीवी व शौहर को ख़ौफ़ हो कि वे खुदा की हदों को कायम नहीं रख सकेंगे, तो अगर औरत (खाविद के हाथ से) रिहाई पाने के बदले में कुछ दे डाले तो दोनों पर कुछ गुनाह नहीं। ये खुदा की (मुकरर की हुई) हदें हैं, उन से बाहर न निकलना और जो लोग खुदा की हदों से बाहर निकल जायेंगे, वे गुनाहगार होंगे। (२२९) फिर अगर शौहर (दो तलाकों के बाद तीसरी) तलाक़ औरत को दे दे तो उस के बाद जब तक औरत किसी दूसरे शख्स से निकाह न कर ले, (पहले शौहर) पर हलाल न होगी। हां, अगर दूसरा खाविद भी तलाक़ दे दे और औरत और पहला खाविद फिर एक दूसरे की तरफ़ रुजू कर लें तो उन पर कुछ गुनाह नहीं, बशर्तकि दोनों यकीन करें कि खुदा की हदों को कायम रख सकेंगे और ये खुदा की हदें हैं, इन को वह उन लोगों के लिए बयान फ़रमाता है, जो दानिश (सूझ-बूझ) रखते हैं। (२३०) और जब तुम औरतों को (दो बार) तलाक़ दे चुको और उन की इद्त पूरी हो जाए तो उन्हें या तो अच्छे सुलूक से निकाह में रहने दो या शाइस्ता तरीक़े से रुस्त कर दो और इस नीयत से उन को निकाह में न रहने देना चाहिए कि उन्हें तकलीफ़ दो और उन पर ज़्यादती करो। और जो ऐसा करेगा वह अपना ही नुक़सान करेगा। और खुदा के हुक्मों को हंसी (और खेल) न बनाओ। और खुदा ने तुमको जो नेमतें बख़शी हैं और तुम पर जो किताब और दानाई की बातें नाज़िल की हैं, जिन से वह तुम्हें नसीहत फ़रमाता है, उन को याद करो और खुदा से डरते रहो और जान रखो कि खुदा हर चीज़ जानता है। (२३१) ★●

और जब तुम औरतों को तलाक़ दे चुको और उन की इद्त पूरी हो जाए तो उन को दूसरे शौहरों के साथ, जब वे आपस में जायज़ तौर पर राज़ी हो जायें, निकाह करने से मत रोको। इस (हुक्म) से उस शख्स को नसीहत की जाती है जो तुम में खुदा और आखिरत के दिन पर यकीन रखता है, यह तुम्हारे लिए निहायत ख़ूब और बहुत पाकीज़गी की बात है और खुदा जानता है और

(५३ का शेव)

अहमद रह० कहते हैं कि बड़े सहाबा इस के कायल हैं कि क़ुर्र के मानी हैज़ हैं। जो लोग इस के कायल हैं कि क़ुर्रान की आयत में क़ुर्र से मुराद हैज़ है, उन की एक दलील यह भी है कि प्यारे नबी सल्ल० ने फ़ातिमा बिनत ज़ैब से फ़रमाया था कि 'दअिस्सला-त अय्या-म अक़राइकि' यानी हैज़ के दिनों में नमाज़ छोड़ दिया करो। हम ने इसी रिवायत की बुनियाद पर क़ुर्र का तर्जुमा हैज़ किया है।

वल्वालिदात् युजिअन् ओलादद्वन्-न हौलेनि कामिलेनि लि मन् अरा-द अय्युतिम्-
मरञ्जाअ-त् ॥ व अ-लल्-मोलूदि लह् रिस्कुहुन्-न व किस्वतुहुन्-न बिस्मअ-रूफि ॥ ला
तुकल्लफु नपमुत् इत्ता वुस्अहा ॥ ला तुज्जि-र-वालिदत्तुम्-बि व-लदिहा व ला
मोलइल्लह बि व-लदिही ॥ व अ-लल्-वारिसि मिस्सु ज्जालि-क ॥ फ इन् अरादा

फि सलान् अन्तराज्जिम्निन्हुमा व तशावुरिन्
फ ला जुना-ह अलैहिमा ॥ व इन् अरत्तुम्
अन् तस्तज्जिअ औलादकुम् फ ला जुना-ह
अलैकुम् इजा सल्लम्तुम् मा आतंतुम्
बिल्मअरूफि ॥ वत्तकुल्ला-ह वअल्लम् अल्लल्ला-ह
बिमा तअ-मलू-न बसीर (२३३) वल्लजी-न
यु-त-वपफो-न मिन्कुम् व य-अरू-न अज्वाज्य-त-
रब्बस्-न बिअन्फुसिहिन्-न अबं-अ-त्त अशहूरिव-व
अशरत् ॥ फ इजा ब-लग-न अ-ज-लहुन्-न फ-ला
जुना-ह अलैकुम् फीमा फ-अल-न फी अन्फुसिहिन्-न
बिल्मअरूफि ॥ वल्लाहु बिमा तअ-मलू-न
खबीर (२३४) वला जुना-ह अलैकुम्
फीमा अरज्जुम् बिही मिन् खिल्लतिन्निसा-इ
औ अक्नन्तुम् फी अन्फुसिकुम् ॥ अलि-मल्लाहु
तुवाअिदुहुन-न सिरिन् इल्ला अन् तकूलू
अक्कदत्तुनिकाहि हत्ता यब्बुगल-किताबु
यअ-लमु मा फी अन्फुसिकुम् फहज
हलीम ६ ★ (२३५) ला जुना-ह अलैकु
तमस्सूहुन् - न औ तफ्रिज्ज लहुन् -
अ-लल्लमुसिअि क-द-रूह व अलल्लमुक्तिरि व
अलल्ल-मुहिसिनीन (२३६) व इन् तल्लक्तु
व कद् फ-रज्जुम् लहुन्-न फरीज्ज-तन् फ निस्फु
यअ-कुवल्लजी बियदिही अक्कदत्तुनिकाहि ॥ व
व ला तन्सवुल्फज्ज-ल बन्कुम् ॥ इन्नल्ला-ह

तुम नहीं जानते । (२३२) और माएं अपने बच्चों को पूरे दो साल दूध पिलाएं, यह (हुक्म) उस बालक के लिए है जो पूरी मुदत तक दूध पिलवाना चाहे और दूध पिलाने वाली माओं का खाना और कपड़ा दस्तूर के मुताबिक बाप के जिम्मे होगा । किसी बालक को उस की ताकत से ज्यादा तबलीफ नहीं दी जाती, (तो याद रखो कि) न तो मां को उस के बच्चे की वजह से नुकसान पहुंचाया जाए और न बाप को उस की औलाद की वजह से नुकसान पहुंचाया जाए और इसी तरह (नान-नफ़ा) बच्चे के बारिस के जिम्मे है और अगर दोनों (यानी मां-बाप) आपस की रजामंदी और सलाह से बच्चों का दूध छुड़ाना चाहें, तो उनपर कुछ गुनाह नहीं और अगर तुम अपनी औलाद को दूध पिलवाना चाहो, तो तुम पर कुछ गुनाह नहीं, बशर्ते कि तुम दूध पिलाने वालियों को दस्तूर के मुताबिक उन का हक जो तुम ने देना तै किया था, दे दो और खुदा से डरते रहो और जान रखो कि जो कुछ तुम करते हो, खुदा उस को देख रहा है । (२३३) और जो लोग तुम में से मर जायें और औरतें छोड़ जायें तो औरतें चार महीने दस दिन अपने आप को रोके रहें और जब (ये) इहत पूरी कर चुकें और अपने हक में पसंदीदा काम (यानी निकाह) कर लें तो तुम पर कुछ गुनाह नहीं और खुदा तुम्हारे सब कामों की खबर रखता है ।^१ (२३४) अगर तुम इशारे की बातों में औरतों को निकाह का पैगाम भेजो या (निकाह की स्वाहिश को) अपने दिलों में छिपाए रखो तो तुम पर कुछ गुनाह नहीं । खुदा को मालूम है कि तुम उन से (निकाह का) जिक्र करोगे, मगर (इहत के दिनों में) इस के सिवा कि दस्तूर के मुताबिक कोई बात कह दो छिपे तौर पर, उन से कौल व करार न करना । और जब तक इहत पूरी न हो ले, निकाह का पक्का इरादा न करना और जान रखो कि जो कुछ तुम्हारे दिलों में है, खुदा को सब मालूम है, तो उस से डरते रहो और जान रखो कि खुदा बरूशने वाला और इल्म वाला है । (२३५) ★

और अगर तुम औरतों को उन के पास जाने या उन का मह मुकर्रर करने से पहले तलाक दे दो, तो तुम पर कुछ गुनाह नहीं, हां, उनको दस्तूर के मुताबिक कुछ खर्च जरूर दो (यानी) भवदूर वाला अपनी ताकत के मुताबिक दे और तंगदस्त अपनी हैसियत के मुताबिक । नेक लोगों पर यह एक तरह का हक है । (२३६) और अगर तुम औरतों को उन के पास जाने से पहले तलाक दे दो, लेकिन मह मुकर्रर कर चुके हो, तो आधा मह देना होगा । हां, अगर औरतें मह बरूश दें या मर्द, जिन के हाथ में निकाह का अक्द है (अपना हक) छोड़ दें (और पूरा मह दे दें तो उनको अस्तियार है) और अगर तुम मर्द लोग ही अपना हक छोड़ दो तो यह परहेजगारी की बात है और आपस में भलाई करने को भूलना नहीं, कुछ शक नहीं कि खुदा तुम्हारे सब कामों को देख रहा है । (२३७)

१. यानी मां अगर दूध पिलाने पर राजी न हो, तो उस से जबरदस्ती न की जाए और बाप से उस की ताकत से ज्यादा नफ़ा (खर्चा) न मांगा जाए ।

२. तलाक की इहत तीन है और लोग की इहत चार महीने दस दिन इस सूत्र में है, जब हमल मालूम न हो और अगर हमल मालूम हो तो बच्चा होने के वक्त तक है ।

(मुसलमानों!) सब नमाजों खास तौर से बीच की नमाज (यानी अश की नमाज) पूरे एहतियाम के साथ अदा करते रहो। और खुदा के आगे अवब से खड़े रहा करो। (२३८) अगर तुम खौफ की हालत में हो तो प्यादे या सवार (जिस हाल में हो, नमाज पढ़ लो) फिर जब अमन (व इत्मीनान) हो जाए तो जिस तरीके से खुदा ने तुम को सिखाया है, जो तुम पहले नहीं जानते थे, खुदा को याद करो। (२३९) और जो लोग तुम में से मर जायें, और औरतें छोड़ जायें, वे अपनी औरतों के हक में वसीयत कर जायें कि उन को एक साल तक खर्च दिया जाए और घर से न निकाली जाएं। हां, अगर वे खुद घर से निकल जाएं और अपने हक में पसन्दीदा काम (यानी निकाह) कर लें तो तुम पर कुछ गुनाह नहीं और खुदा ज़बरदस्त हिकमत वाला है। (२४०) और तलाक़ वाली औरतों को भी दस्तूर के मुताबिक़ नान व नफ़्का देना चाहिए। परहेजगारों पर (यह भी) हक़ है। (२४१) इसी तरह खुदा अपने हुक्मों को तुम्हारे लिए बयान फ़रमाता है ताकि तुम समझो। (२४२)★

भला तुम ने उन लोगों को नहीं देखा जो (गिनती में) हजारों ही थे और मौत के डर से अपने घरों से निकल भागे थे, तो खुदा ने उन को हुक्म दिया कि मर जाओ, फिर उन को ज़िन्दा भी कर दिया। कुछ शक नहीं कि खुदा लोगों पर मेहरबानी रखता है, लेकिन ज्यादा लोग शुक्र नहीं करते। (२४३) और (मुसलमानों!) खुदा की राह में जिहाद करो और जान रखो कि खुदा (सब कुछ) सुनता (और सब कुछ) जानता है। (२४४) कोई है कि खुदा को कर्ज़ हस्ना (भला कर्ज़) दे कि वह उस के बदले उस को कई हिस्से ज्यादा देगा और खुदा ही रोज़ी को तंग करता और (वही उसे) फँलाता है और तुम उसी की तरफ़ लौट कर जाओगे। (२४५) भला तुम ने बनी इस्राईल की एक जमाअत को नहीं देखा, जिस ने मूसा के बाद अपने पैगम्बर से कहा कि आप हमारे लिए एक बादशाह मुकर्रर कर दें ताकि हम खुदा की राह में जिहाद करें। पैगम्बर ने कहा कि अगर तुम को जिहाद का हुक्म दिया जाए तो अजब नहीं कि लड़ने से पहलू बचाओ। वे कहने लगे कि हम खुदा की राह में क्यों न लड़ेंगे जब कि हम वतन से (निकाले) और बाल-बच्चों से जुदा कर दिए गए, लेकिन जब उनको जिहाद का हुक्म दिया गया तो कुछ लोगों के अलावा सब फिर गये और खुदा ज़ालिमों को ख़ूब जानता है। (२४६) और पैगम्बर ने उन से (यह भी) कहा कि खुदा ने तुम पर तालूत को बादशाह मुकर्रर फ़रमाया है। वे बोले कि उसे हम पर बादशाही का हक़ कैसे हो सकता है, बादशाही के हक़दार तो हम हैं और उस के पास तो बहुत सी दीलत भी नहीं। पैगम्बर ने कहा कि खुदा ने उस को तुम पर (फ़ज़ीलत दी है और बादशाही के लिए) चुन रखा है। उसने उसे इल्म भी बहुत सा बख़्शा है और जिस्म भी (बड़ा अता किया है) और खुदा (को अस्तियार है), जिसे चाहे बादशाही बख़्शे। वह बड़ी वुस्अत वाला और जानने वाला है। (२४७) और पैगम्बर ने उन

१. पूरे एहतियाम के साथ अदा करने से मुराद यह है कि नमाज को उस के बक्तों में पढ़ते रहो। बीच की नमाज के बारे में मुल्कालिफ़ क़ौल है। किसी ने कहा, जुहर की नमाज मुराद है। किसी ने कहा इशा की, किसी ने कहा अश की, किसी ने कहा फ़ज्र की, मगर ज्यादा सही यह है कि इस से अल की नमाज मुराद है, जैसा कि सही हदीसों में आया है।

व काल लहुम् नबियुहुम् इन्नल्ला-ह कद् ब-अ-स लकुम् तालू-त मलिकत्
कालू अन्ना यकूनु लहुलमुल्कु अलैना व नहनु अहक्कु बिल्मुल्कि मिन्ह व
लम् युअ-त स-अ-तुम्-मिनल्मालि ॥ काल इन्नल्लाहस्तफाहु अलैकुम् व जादह
बस्त-तुत् फिल्इल्मि वल्जिस्मि ॥ वल्लाहु युअती मुल्कह मय्यशा - उ

वल्लाहु वासिअुत् अलीम (२४७) व काल
लहुम् नबियुहुम् इन-न आय-त मुल्किही
अय्यअतिकुमुत्ताबूतु फीहि सकीनतुम् -
मिरब्बिकुम् व बकिय्यतुम्-मिम्मा त-र-क आलु
मूसा व आलु हारून तहिलुहुल्-मला-इकतु ॥

इन्-न फी जालि-क ल-आयतुल्लकुम् इन्
कुन्तुम् मुअ्मिनीन ★ (२४८) फ लम्मा
फ-स-ल तालूतु बिल्जुनूदि ॥ काल इन्नल्ला-ह
मुब्तलीकुम् बि-न-हरित् ॥ फ मन् शरि-ब
मिन्ह फ लै-स मिन्नी ॥ व मल्लम् यत-अम्हु
फ इन्नहू मिन्नी इल्ला मनिस्त-र-फ
शुफ्तम्-बि यदिही ॥ फ शरिबू मिन्ह इल्ला

कलीलम्-मिन्हुम् ॥ फ लम्मा जा-व-जहू हु-व वल्लजी-न आमनू म-अहु ॥ काल
ला ताक-तु लनल्यी-म बिजालू-त व जुनूदिही ॥ कालल्लजी-न यजुन्नू-न अन्नहुम्
मुलाकुल्लाहि ॥ कम्मिन् फिअतिन् कलीलतिन् ग-ल-बत् फि-अतुत् कसीरतुम्
बि इज्जिल्लाहि ॥ वल्लाहु म-अ-स्साबिरीन (२४९) व लम्मा ब-र-जू लि जालू-त
व जुनूदिही कालू रब्बना अफ्रिग् अलैना सगरव-व सन्बित् अक्दामना वन्सुर्ना
अ-लल्-क्रौमिल्-काफिरीन ॥ (२५०) फ-ह-जमूहुम् बि इज्जिल्लाहि ॥ व क-त-ल
दाबूदु जालू-त व आताहुल्लाहुल्मुल-क वल्हिकम-तु व अल्लमहू मिम्मा
यशाउ ॥ व लौ ला दफ्अल्लाहिन्ना-स बअ-जहूम् बिबअ-जिल्ल-ल-फ-स-दतिल
अजु व लाकिन्नल्ला-ह जू फजिलत् अलल्-आलमीन (२५१) तिल-क
आयातुल्लाहि नल्लू हा अलै-क बिल्हकिक् ॥ व इन्न-क लमिनल्-मुसलीन (२५२)

لَا تَكْفُرُوا بِاللَّهِ أَن يَكُونَ لَهُ الْمَلِكُ عَلِيمًا وَمَنْ أَسْفَى بِالْمَالِ مِنْهُ وَلَوْ
يَأْتِ سَعَةً مِنْ لَدُنِّهِ قَالَ إِنَّ اللَّهَ أَصْلَفُكُمْ عَلِيمًا وَكَذَلِكَ بَيَّنَّ
فِي الْحَقِّ وَالْحَقِّ وَاللَّهُ يَدْرِي نَفْسًا وَنَفْسًا وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا
وَقَالَ لَمْ يَجْعَلْهُ إِنْ أَيْةٌ لَكُمْ أَنْ يَكُونَ اللَّهُ يَدْرِي سَكِينَةً
مِنْ دِينِكُمْ وَبَعَثَ إِلَيْكُمْ إِبْرَاهِيمَ وَإِسْمَاعِيلَ وَإِسْحَاقَ وَإِسْحَاقَ
إِنَّ ذِي الْإِلَاحَةِ لَكُنْ لَكُمْ مُؤْمِنِينَ ۖ فَلَمَّا فَصَلَ طَالُوتُ
بِالْجُنُودِ قَالَ إِنَّ اللَّهَ مُبْتَلِيكُمْ بِنَهَرٍ فَمَنْ شَرِبَ مِنْهُ فَلَيْسَ مِنِّي
وَمَنْ لَمْ يَمَسَّهُ مِنْهُ فَإِنَّهُ مِنِّي إِلَّا مَنِ اغْتَرَفَ غُرْفَةً بِيَدِهِ فَفَرَّجَ
وَنَهَ الْأَكْثَرُ عَنْهُمْ فَلَمَّا جَاوَزَهُ هُوَ وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ قَالُوا
لَا طَاقَةَ لَنَا الْيَوْمَ بِطَالُوتَ وَجَوَّزَهُ قَالَ الْكَافِرِينَ طَالُوتُ أَنَّهُمْ قَالُوا
اللَّهُ كَذُوبٌ فَهُوَ قَالُوا عَلَيْهِ سَلَامٌ فَجَعَلَ يَدَا بَنِي إِسْرَءِيلَ وَهُوَ
الْحَصِيرُ ۖ وَكَانَ بَرُّهُ وَالْجَبَالُوتُ وَجَوَّزَهُ قَالُوا إِنَّ الْيَوْمَ لَكُنَّا
صَبْرًا وَنَجْتًا أَفْئَامًا وَنَصْرًا عَنِ الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ ۖ فَفَرَّجَ لَهُمْ
بِأَدْنِ اللَّهِ وَقَالَ جَاوِزُوا وَلَهُ الْمَلِكُ وَالْحَكْمَةُ وَ
عَلَيْهِ مَقَاتِلُهُمْ ۖ وَلَوْلَا دَعَا اللَّهُ النَّاسَ بَعْضُهُمْ بِبَعْضٍ
لَفَسَدَتِ الْأَرْضُ وَلَكِنْ اللَّهُ ذُو فَضْلٍ عَلَى الْعَالَمِينَ ۖ
إِنَّ اللَّهَ يُتْلَى اللَّهُ تِلْكَ الْيَوْمَ بِالْحَقِّ ۖ وَاللَّهُ لَمِنَ السَّمِيعِينَ ۖ

से कहा कि उनकी बादशाही की निशानी यह है कि तुम्हारे पास एक सम्पूक आएगा जिस को फरिश्ते उठाए हुए होंगे। उस में तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से तसल्ली (बरूशने वाली चीज) होगी और कुछ और चीजें भी होंगी जो मूसा और हारून छोड़ गये थे। अगर तुम ईमान रखते हो तो यह तुम्हारे लिए एक बड़ी निशानी है। (२४८) ★

गरज जब तालूत फ़ौज ले कर रवाना हुआ तो उस ने (उन से) कहा कि खुदा एक नहर से तुम्हारी आजमाइश करने वाला है। जो शरूस उस में से पानी पी लेगा (उस के बारे में समझा जाएगा कि) वह मेरा नहीं और जो न पीएगा, वह (समझा जाएगा कि) मेरा है। हां, अगर कोई हाथ से चुल्लू भर पानी ले ले (तो खैर, जब वे लोग नहर पर पहुंचे) तो कुछ लोगों के सिवा सब ने पानी पी लिया। फिर जब तालूत और मोमिन लोग, जो उस के साथ, नहर के पार हो गये, तो कहने लगे कि आज हम में जालूत और उस के लश्कर से मुकाबला करने की ताकत नहीं। जो लोग यकीन रखते थे कि उन को खुदा के सामने हाज़िर होना है, वे कहने लगे कि कभी-कभी थोड़ी-सी जमाअत ने खुदा के हुक्म से बड़ी जमाअत पर फ़तह हासिल की है और खुदा सब करने वालों (जमाव वालों) के साथ है। (२४९) और जब वे लोग जालूत और उस की फ़ौज के मुकाबले में आए तो (खुदा से) हुआ की, ऐ परवरदिवार! हम पर सब के दहाने खोल दे और हमें (लड़ाई में) कदमों से जमाये रख, और काफ़िरों की (फ़ौज) पर जीत दे। (२५०) तो तालूत की फ़ौज ने खुदा के हुक्म से उन को हरा दिया और दाऊद ने जालूत को क़त्ल कर डाला। और खुदा ने उस को बादशाही और दानाई बरूशी और जो कुछ चाहा, सिखाया और खुदा लोगों को एक दूसरे (पर चढ़ाई और हमला करने) से हटाता न रहता, तो मुल्क तबाह हो जाता, लेकिन खुदा दुनिया वालों पर बड़ा मेहरबान है। (२५१) ये खुदा की आयतें हैं जो हम तुम को सच्चाई के साथ पढ़ कर सुनाते हैं। (और ऐ मुहम्मद!) तुम बिला शुबहा पैगम्बरों में से हो। (२५२) ये पैगम्बर (जो

तीसरा पारः तिल-करुसुलु

सूरतुल-ब-क्र-रति आयात २५३ से २८६

तिलकरुसुलु फ़ज़ल्ला बअ-ज़हुम् अला बअज़िन् मिन्हुम् मन् कल्लमल्लाहु
 व र-फ-अ बअ-ज़हुम् द-रजातिन् व आतेना ओसब-न मर्यमल्-बय्यिनाति
 व अय्यदनाहु बि रुहिल्कुदुसि व लो शा-अल्लाहु मक्त-त-लल्लजी-न मिम्बअ-दि-
 हिम् मिम्बअदि मा जा-अत्-हुमुल्बय्यिनातु व लाकिनिस्तलफू फ़ मिन्हुम् मन्
 आम-न व मिन्हुम् मन् क-फ़र व लो
 शा-अल्लाहु मक्-त-तल्ल व लाकिन्नल्ला-ह
 यफ़अलु मा युरीद * (२५३) या
 अय्युहल्लजी-न आमन् अन्फिकू मिम्मा
 र-अक़नाकुम् मिन् क़बिल अय्यअति-य योमुल्ला
 बैअन् फ़ीहि व ला सुल्लतु व-व ला
 शफ़ाअतुन् वल्काफ़िरू - न हुमुअलिमून
 (२५४) अल्लाहु ला इला-ह इल्ला
 हु-व & अल्हय्युल्कय्युम् & ला तअसुजुहु
 सि-नतु व-व ला नोमुत् लह मा फ़िस्समावाति
 व मा फ़िल्अज़ि मन् अल्लजी यश्फ़अ
 जिन्दह इल्ला बि-इज्जिनी & यअ-लमु
 मा बै-न ऐदीहिम् व मा ख़ल्फ़हुम् &
 व ला युहीतू-न बिशैइमिन् अलिमही इल्ला बिमा शा-अ & वसि-अ
 कुसिय्युहुस्समावाति वल्अज़्ज & व ला यऊदुह हिफ़अहुमा & व हुवल्
 अलिय्युल्-अजीम (२५५) ला इकरा - ह फ़िद्दीन क़त्तबय्यनरुहदु
 मिनलाय्यि & फ़ मय्यक्फ़ुर् बितागूति व युअमिम्-बिल्लाहि फ़-क़दिस्तम्-स-क बिल्-
 अुर्वतिल्-कुस्का & लन्फ़िसा-म लहा & वल्लाहु समीअन् अलीम (२५६)

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
 ذَلِكَ النُّسْخُ الَّذِي نَسَخْنَا بِسَمْعِهِ عَلَى بَعْضِ وَهْمِهِ مِنْ كَلَمِ
 اللَّهِ وَنَدَّمَ بَعْضَهُمْ فَجَعِلَهُمُ الْوَيْلُ وَالْآثِمُ عَنِ الْبَيْنِ مِنْ
 الْبَيْنِ وَالْإِذْنُ بِرَحْمَةِ الْغَدِيرِ وَلَوْ كُنَّا اللَّهُ مَا فَتَحْنَا
 الْإِذْنَ مِنْ بَعْدِهِمْ مِنْ بَعْدِ سَاعَةِ نَعْمِ الْبَيْنِ وَكُنْ
 لِنَسْخَرُوا مِنْهُمْ كُنْ آمِنٌ وَمِنْهُمْ مَنْ كَفَرُوا وَلَوْ كُنَّا اللَّهُ
 مَا فَتَحْنَا الْإِذْنَ وَكُنْ اللَّهُ يَفْعَلُ مَا يُرِيدُ أَلَيْسَ الْإِذْنُ
 أَمْرًا أَتَوْا وَمِنَّا مَنْ فَتَحْنَا مِنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَ نُسْخُ
 بَيْنِهِمْ وَلَا خَلْفَ وَلَا قُدَامَ وَلَا كَفَرُوا وَلَا كَفَرُوا مِنْ الْمَلَكِ
 اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّومُ لَا تَأْخُذُهُ سِنَةٌ وَلَا
 نَوْمٌ لَهُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ مَنْ ذَا الَّذِي
 يَفْعَلُ عِنْدَهُ إِلَّا بِالْإِذْنِ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ
 وَلَا يُحِيطُونَ بِشَيْءٍ مِنْ عِلْمِهِ إِلَّا بِمَا شَاءَ وَسِعَ كُرْسِيُّهُ
 السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَلَا يَئُودُهُ حِفْظُهُمَا وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيمُ
 لَا إِلَهَ إِلَّا فِي الدِّينِ قَدْ يَكُنِ الْإِذْنُ مِنَ الْعَمَلِ لَكِنْ يَكُنْ
 بِالْعَاقِبَةِ وَيُؤْمِنُ بِاللَّهِ فَقَدْ اسْتَمْتَلَتْ بِالْعَمَلِ وَالْإِذْنِ
 لَا الْفَصْلَ بَيْنَ اللَّهِ وَنَبِيِّهِ عَلَيْهِ السَّلَامُ وَفِي الدِّينِ أَمْرًا
 يُجْعَلُ مِنَ الْعَمَلِ إِلَى الْفِتْنَةِ وَالْإِذْنِ كَيْفَ نَأْتِيَهُمْ

हम वक्त-वक्त पर भेजते रहे) हैं, इन में से हम ने कुछ को कुछ पर क़बूलत दी है कुछ ऐसे हैं, जिन से खुदा ने बातें कीं और कुछ के (दूसरे मामलों में) मर्तेबे बुलंद किए और ईसा बिन मर्यम को हम ने खुली हुई निशानियां अता कीं और रुहुल क़ुदस ने उन को मदद दी और अगर खुदा चाहता तो उन से पिछले लोग अपने पास निशानियां आने के बाद आपस में न लड़ते, लेकिन उन्होंने इस्तिलाफ़ किया, तो उन में से कुछ तो ईमान ले आए और कुछ काफ़िर ही रहे। और अगर खुदा चाहता तो ये लोग आपस में लड़ते-झगड़ते नहीं, लेकिन खुदा जो चाहता है, करता है।^१ (२५३) *

ऐ ईमान वाले ! जो (माल) हम ने तुम को दिया है, उस में से उस दिन के आने से पहले-पहले खर्च कर लो जिस में न (आमाल का) सौदा हो, न दोस्ती और सिफ़ारिश हो सके और कुफ़्र करने वाले लोग ज़ालिम हैं। (२५४) खुदा, (वह सच्चा माबूद है कि) उस के सिवा कोई इबादत के लायक नहीं। ज़िन्दा हमेशा रहने वाला, उसे न ऊंघ आती है और न नींद, जो कुछ आसमानों में और जो कुछ ज़मीन में है, सब उसी का है। कौन है कि उस की इजाज़त के बग़ैर उस से (किसी की) सिफ़ारिश कर सके। जो कुछ लोगों के सामने हो रहा है और जो कुछ उन के पीछे हो चुका है, उसे सब मालूम है और वे उस की मालूमात में से किसी चीज़ पर दस्तरस (काबू पाना) हासिल नहीं कर सकते, हां, जिस क़दर वह चाहता है (उसी क़दर मालूम करा देता है) उस की वादशाही (और इल्म) आसमान और ज़मीन सब पर हावी है और उसे उन की हिफ़ाज़त कुछ भी मुश्किल नहीं। वह बड़ा आली रुत्बा और जलीलुल क़दर है। (२५५) दीने इस्लाम में ज़बरदस्ती नहीं है। हिदायत (साफ़ तौर पर ज़ाहिर और) गुमराही से अलग हो चुकी है, तो जो शरस बुतों से एतकाद न रखे और खुदा पर ईमान लाये, उस ने ऐसी मज़बूत रस्सी हाथ में पकड़ ली है जो कभी टूटने वाली नहीं और खुदा (सब कुछ) सुनता और (सब कुछ) जानता है। (२५६) जो लोग

१. खुली हुई निशानियों से मुराद मुदों का ज़िन्दा करना, बीमारों का अच्छा करना और पैदाइशी अंधों की आंखें रोशन करना है। रुहुल क़ुदस से मुराद ज़िन्नल हैं जो हर जगह ईसा अलैहिस्सलाम के साथ रहा करते थे।

२. लड़ने और जंग-लड़ाई करने से मुराद इस्तिलाफ़ है यानी अगर खुदा चाहता तो उन में इस्तिलाफ़ न होता, अगर उस ने उन का मुस्लिफ़ रहना ठीक समझा, इस लिए वे उन से मुत्तफ़िक़ न हुए।

ईमान लाये हैं, उन का दोस्त खुदा है कि उन को अंधेरे से निकाल कर रोशनी में ले जाता है और जो काफिर हैं उन के दोस्त शैतान हैं कि उन को रोशनी से निकाल कर अंधेरे में ले जाते हैं। यही लोग दोषही हैं कि उस में हमेशा रहेंगे। (२५७)★

भला तुम ने उस शस्त्र को नहीं देखा, जो इस (घमंड की) वजह से कि खुदा ने उस को सल्तनत (राज्य) बल्शी यी, इब्राहीम से परवरदिगार के बारे में झगड़ने लगा जब इब्राहीम ने ने कहा, मेरा परवरदिगार तो वह है, जो जिलाता और मारता है, वह बोला कि जिला और मार तो मैं भी सकता हूं। इब्राहीम ने कहा कि खुदा तो सूरज को पूरब से निकालता है, आप उसे पच्छिम से निकाल दीजिए। (यह सुन कर) काफिर हैरान रह गया और खुदा बे-इन्साफों को हिदायत नहीं दिया करता। (२५८) या इसी तरह उस शस्त्र को (नहीं देखा) जिस का एक गांव में, जो अपनी छतों पर गिरा पड़ा था, इत्तिफाकी गुजर हुआ, तो उस ने कहा कि खुदा इस (के बाशिंदों) को मरने के बाद किस तरह जिंदा करेगा, तो खुदा ने उस की रूह कब्ज कर ली (और) सौ बरस तक (उस को मुर्दा रखा), फिर उस को जिला उठाया और पूछा तुम कितनी मुद्दत तक (मरे) रहे हो? उसने जवाब दिया कि एक दिन या इस से भी कम। खुदा ने फरमाया, (नहीं), बल्कि सौ बरस (मरे) रहे हो और अपने खाने-पीने की चीजों को देखो कि (इतनी मुद्दत में बिल्कुल ही) सड़ी-गली नहीं और अपने गधे को भी देखो, (जो मरा पड़ा है), गरज (इन बातों से) यह है कि हम तुम को लोगों के लिए (अपनी क्रुदरत की) निशानी बनाएं और (गधे की) हड्डियों को देखो कि हम उन को कैसे जोड़ देते और उन पर (किस तरह) गोशत-पोस्त चढ़ा देते हैं। जब ये बाकिए उस ने देखे तो बोस उठा कि मैं यकीन करता हूं कि खुदा हर चीज पर कादिर है। (२५९) और जब इब्राहीम ने खुदा से कहा कि ऐ परवरदिगार! मुझे दिखा कि तू मुर्दों को किस तरह जिंदा करेगा? खुदा ने फरमाया कि क्या तुम ने (इस बात को) बावर नहीं किया (यानी माना नहीं)? उन्होंने कहा, क्यों नहीं, लेकिन (मैं) देखना इस लिए (चाहता हूं) कि मेरा दिल कामिल इल्मीनान हासिल कर ले। खुदा ने फरमाया कि चार जानवर पकड़ कर अपने पास मंगा लो (और टुकड़े-टुकड़े करा दो) फिर उन का एक-एक टुकड़ा हर एक पहाड़ पर रखवा दो। फिर उन को बुलाओ तो वे तुम्हारे पास दौड़ते चले आएंगे और जान रखो कि खुदा गालिब और हिकमत वाला है। (२६०)★

१. जिस शस्त्र ने हजरत इब्राहीम से झगड़ा किया वह बाबुल का बादशाह नमरुद था, जो लोगों से अपने आप को सच्चा करता था। हजरत इब्राहीम अलै० ने सच्चा करने से इन्कार किया तो उस ने वजह पूछी। उन्होंने कहा, मैं तो अपने खुदा को सच्चा करता हूं। उस ने कहा, खुदा कौन है? उन्होंने कहा, खुदा वह है, जिस के हाथ में जिवंदगी और मौत है, यानी जो जिवंदगी-मौत का पैदा करने वाला है। काफिर इस बात को तो समझा नहीं, बोला कि मैं भी जिंदा कर सकता और मार सकता हूं। बुनावे उस ने दो कैदियों को बुलवाया। एक, जिस का कत्ल किया जाना जरूरी था, उस को माफ कर दिया यानी जान बल्शी कर दी। दूसरा, जो क्रांतिल न था, उस को मरवा डाला। तब हजरत इब्राहीम ने यह देख कर कि यह बुरी समझ का है, उस से कहा कि अगर आप खुदा हैं तो सूरज को, जो पूरब से निकला करता है, हुक्म दीजिए कि पच्छिम से निकले। इस का जवाब काफिर से कुछ न बन पड़ा और ला-जबाब हो कर रह गया।

२. हजरत अली मुर्तजा रजि० ने फरमाया कि यह क्रिस्ता हजरत उजीर पैगम्बर का है और मशहूर भी यही है।

म-सलुल्लजी-न युन्फिकू-न अम्वालहुम् फ्री सबीलिल्लाहि क-म-सलि हब्बतिन्
अम्ब-तत् सब - अ सनाबि - ल फ्री कुलिल मुम्बुलतिम्मि - अतु हब्बतिन्
बल्लाहु युज़्जाअिफु लिमय्यशा - उ ७ बल्लाहु वासिअुन् अलीम (२६१)
अल्लजी-न युन्फिकू-न अम्वालहुम् फ्री सबीलिल्लाहि मुम्-म ला युत्बिअुन्

मा अन्फक् मन्नव्वला अ - जल् - लहुम्
अज्जहुम् अिन्-द रब्बिहिम् ६ व ला
खोफुन् अलैहिम् व ला हुम् यह्जन्न
(२६२) कौलुम्मअरुफुव् - व मग्गि-रत्तुन्
खैरुम्मिन् स - द - क्कत्तिय्यत्त्वअुहा अज्ज
वल्लाहु गनिय्युन् हलीम (२६३) या
अय्युहल्लजी - न आमन् ला तुब्तिल्
स-द-कातिकुम् बिल्मन्नि वल्अजा ५ कल्लजी
युन्फिक्कु मालहू रिआ - अन्नासि व ला
युअ्मिनु बिल्लाहि वल्योमिल्आखिरि
फ म-सलुह क-मसलि सप्पवानिन् अलैहि
तुराबुन् फ असाबहू वाबिलुन् फ-त-र-कहू सल्लदन्

ला यद्विदरुन् अला शैदम्मिम्मा क-सबू वल्लाहु ला यहिदल्-कौमल्-काफ्रीन
(२६४) व म-सलुल्लजी-न युन्फिकू-न अम्वालहुमुब्तिया-अ मज्जातिल्लाहि
व तस्वीतम्मिन् अन्फुसिहिम् क-म-सलि जन्तित्तिम् - बिरब्वत्तिन् असाबहा
वाबिलुन् फ-आतत् उकुलहा जिअफ्फेन ८ फ इल्लम् युसिबहा वाबिलुन्
फ-तल्लुन् वल्लाहु बिमा तअ-मलू-न बसीर (२६५) अ-य-वद्दु अ-हुदुकुम् अन्
तकू-न लहू जन्तुम्-मिन्नखीलिव्-व अअ-नाबिन् तजरी मिन् तह्तिहल्-अन्हार
लहू फीहा मिन् कुल्लिस्समराति ॥ व असाबहुल्कि-ब-र व लहू जुरिय्यतुन्
जुअफ्फा उअफ्फ असाबहा इअ-सारुन् फ्रीहि नारुन् फहत् - र - क्त
कजालि-क युबय्यिनुल्लाहु लकुमुल्आयाति ल-अल्लकुम् त-त-फक्करुन् * (२६६)

जो लोग अपना माल खुदा की राह में खर्च करते हैं, उन (के माल) की मिसाल उस दाने की-सी है, जिस से सात बालें उगें और हर एक बाल में सौ-सौ दाने हों और खुदा जिस (के माल) को चाहता है, ज्यादा करता है, वह बड़ी वसुअत वाला और सब कुछ जानने वाला है। (२६१) जो लोग अपना माल खुदा के रास्ते में खर्च करते हैं, फिर इस के बाद न इस खर्च का (किसी पर) एहसान रखते हैं और न (किसी को) तकलीफ देते हैं, उन का बदला उन के परवरदिगार के पास (तैयार) है और (क्रियामत के दिन) न उन को कुछ डर होगा और न वे शर्मिन् होंगे। (२६२) जिस खैरात देने के बाद (लेने वाले को) तकलीफ दी जाए, उस से तो नर्म बात कह देनी और (उस की बे-अदबी से) दरगुजर करना बेहतर है और खुदा बे-परवा और बुदबहार है। (२६३) मोमिनो! अपने सद्कात (व खैरात) एहसान रखने और तकलीफ देने से उस शहस की तरह बर्बाद न कर देना, जो लोगों को दिखाने के लिए माल खर्च करता है और खुदा और आखिरत के दिन पर ईमान नहीं रखता, तो उस (के माल) की मिसाल उस चट्टान की-सी है, जिस पर थोड़ी सी मिट्टी पड़ी हो और उस पर जोर का मेंह^१ बरस कर उसे साफ कर डाले (इसी तरह) ये (दिखावा करने वाले) लोग अपने आमाल का कुछ भी बदला हासिल नहीं कर सकेंगे। और खुदा ऐसे ना-शुकों को हिदायत नहीं दिया करता। (२६४) और जो लोग खुदा की खुशनुदी हासिल करने के लिए खुलूसे नीयत से अपना माल खर्च करते हैं, उन की मिसाल एक बाग की-सी है, जो ऊंची जगह पर वाक़े हो, (जब) उस पर मेंह पड़े तो सौगुना फल लाये और मेंह न भी पड़े, तो खैर फुवार ही सही और खुदा तुम्हारे कामों को देख रहा है। (२६५) भला तुम में कोई यह चाहता है कि खजूरों और अंगूरों का बाग हो, जिस में नहरें बह रही हों और उस के लिए हर क्रिस्म के मेवे मौजूद हों और उसे बुढ़ापा आ पकड़े और उस के नन्हे-नन्हे बच्चे भी हों तो (यकायक) उस बाग पर आग का भरा हुआ बगोला (बवंडर) चले और वह जल (कर राख का ढेर हो) जाए। इस तरह खुदा तुम से अपनी आयतें खोल-खोल कर बयान फ़रमाता है, ताकि तुम सोचो और समझो। (२६६) ✽

१. अरबी लफ्ज 'वाबिल' है जो बड़ी-बड़ी बूंदों की बारिश (मेंह) को कहते हैं।

'तल्ल' भीम को भी कहते हैं और छोटी-छोटी और हल्की-हल्की बूंदों के मेंह यानी फुवार को भी कहते हैं और वह भी पैदों को भी हुरा-भरा रखने के लिए काफ़ी होती है। हम ने तजुमे में फुवार अस्तियार किया है।

मोमिनो ! जो पाकीजा और उम्दा माल तुम कमाते हो, और जो चीजें हम तुम्हारे लिए जमीन से निकालते हैं, उन में से (खुदा की राह में) खर्च करो और बुरी और ना-पाक चीजें देने का इरादा न करना कि (अगर वे तुम्हें दी जाएं तो) इस के अलावा कि (लेते वक्त) आंखें बन्द कर लो, उन को कभी न लो और जान रखो कि खुदा बे-परवा (और) तारीफ़ के काबिल है। (२६७) (और देखना) शैतान (का कहा न मानना, वह) तुम्हें तंगदस्ती का खौफ़ दिलाता और बे-हयाई के काम करने को कहता है और खुदा तुम से अपनी बख्शिश और रहमत का वायदा करता है और खुदा बड़ी वसूहत वाला (और) सब कुछ जानने वाला है। (२६८) वह जिस को चाहता है दानाई बख्शता है और जिस को दानाई मिली, बेशक उस को बड़ी नेमत मिली और नसीहत तो वही लोग कुबूल करते हैं, जो अक्लमंद हैं। (२६९) और तुम (खुदा की राह में) जिस तरह का खर्च करो, या कोई नजर मानो 'खुदा उस को जानता है और जालिमों का कोई मददगार नहीं।' (२७०) अगर तुम खैरात जाहिर में दो तो वह भी खूब है, और अगर छिपे दो और दो भी जरूरतमंद को, तो वह खूबतर है और (इस तरह का देना) तुम्हारे गुनाहों को भी दूर कर देगा और खुदा को तुम्हारे कामों की खबर है। (२७१) (ऐ मुहम्मद !) तुम उन लोगों की हिदायत के जिम्मेदार नहीं हो, बल्कि खुदा ही जिस को चाहता है, हिदायत बख्शता है और (मोमिनो !) तुम जो माल खर्च करोगे तो उस का फ़ायदा तुम्हीं को है और तुम जो खर्च करोगे, वह तुम्हें पूरा-पूरा दे दिया जाएगा और तुम्हारा कुछ नुक़सान नहीं किया जाएगा। (२७२) (और हां, तुम जो खर्च करोगे तो) उन जरूरतमंदों के लिए जो खुदा की राह में रुके बैठे हैं और मुल्क में किसी तरह जाने की ताक़त नहीं रखते और मांगने में शर्म खाते हैं, यहां तक कि न मांगने की वजह से अनजान आदमी उन को मालदार ख्याल करता है और तुम क्रियाफ़े (अनुमान) से उन को साफ़ पहचान लो (कि हाजतमंद हैं और शर्म की वजह से) लोगों से (मुंह फोड़ कर और) लिपट कर नहीं मांग सकते और तुम जो माल खर्च करोगे, कुछ शक नहीं कि खुदा उस को जानता है। (२७३) ★ ●

जो लोग अपना माल रात और दिन और छिपे और जाहिर (खुदा की राह में) खर्च करते रहते हैं, उन का बदला परवरदिगार के पास है और उन को (क्रियामत के दिन) न किसी तरह का

१. नज़ के लिए यह शर्त है कि ऐसे काम की नज़ मानी जाए, जो कुछ शक्लों में फ़र्श भी हो, जैसे नमाज़ और रोज़ा और सद्का देने की नज़। नमाज़ तो हर दिन पांचों वक़्त की फ़र्श है और रमज़ान के रोज़े भी फ़र्श हैं और सद्के की शक्ल में से ज़कात फ़र्श है। ऐसी चीज़ों की नज़र सही है और अगर किसी ऐसी चीज़ की नज़र मानी जाए, जो किसी शक्ल में फ़र्श नहीं है, वह बातिल (गलत) है।

२. जालिमों से वे लोग मुशад हैं, जो खुदा की राह में माल नहीं खर्च करते या नज़र को पूरा नहीं करते और अगर खर्च करते हैं तो दिखावे के लिए या बुरे कामों में खर्च करते हैं।

अल्लजी-न यकुलूनरिबा ला यकूम-न इला कमा यकूमलेजी य-त-खबतुहुश
 शेतानु मिनल्मस्सि ७ जालि - क बि अन्नहुम् कलि इन्नमल्बअ
 मिस्लुरिबा ७ व अहल्लल्लाहुल्बे - अ व हरंमरिबा ७ फ सन् जा - अह
 मोअिअतुम्-मिरन्बिही फन्तहा फ लहु मा स-लफ ७ व अमरुह इलल्लाहि
 व-मन् आ-द फ उला-इ-क अस्हाबुन्नारिहुम्

फ्रीहा खालिदून (२७५) यम्हकुल्लाहुरिबा

व युबिस्स-द-काति ७ वल्लाहु ला युहिबु

कुल-ल कफफारिन् असीम (२७६)

इन्नल्लजी-न आमनू व अमिलुस्सालिहाति व

अक्रामुस्सला-त व आतवुज्जका-त लहुम्

अजरुहुम् अिन - द रब्बिहिम् ८ व ला

खौफुन् अलैहिम् व ला हुम् यहजून

(२७७) या अय्युहल्लजी-न आमनुत्कुल्ला-ह

व - जरु मा बकि - य मिनरिबा इन्

कुन्तुम् मुअ्मिनीन (२७८) फ इल्लम्

तफ्बलू फअजून बि हबिम् - मिनल्लाहि व रसूलिही ८ व इन् तुब्तुम् फ लकुम्

रऊसु अम्वालिकुम् ८ ला तज्लिमून व ला तुज्लमून (२७९) व इन्

कान जू अस्रतिन् फ नजिरतुन् इला मेस-रतिन् ७ व अन् तसद्दक् खैरल्लकुम्

इन् कुन्तुम् तअ-लमून (२८०) वस्तक् योमन् तुर्जअ-न फ्रीहि इलल्लाहि

सुम - म तुवफ्फा कुल्लु नफ्सिम् - मा क-स-बत् व हुम् ला युज्लमून ★ (२८१)

الَّذِينَ مِنَ النَّاسِ ذَلَّلُوا بِأَكْثَرِ الْآيَاتِ وَاللَّيْمَةِ وَمِنَ الْبَرِيَّةِ
 وَأَكْبَرُ اللَّهُ الْبَرِيَّةَ وَحَرَّمَ الْبَرِيَّةَ مَنَ جَاءَهُ مَوْعِدَةٌ مِّنَ
 رَبِّهِ وَأَتَمَّتْ فَلَهُ مَا سَلَفَ وَأَمَرَ إِلَى اللَّهِ وَمَنْ عَادَ وَأُولَئِكَ
 أَصْحَابُ النَّارِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ۝ يَسْمَعُ اللَّهُ الْغَوَا وَيُرِي
 الْقُصُوفَ وَاللَّهُ لَا يَجِبُ عَلَى كَلِّ شَيْءٍ ۝ إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا
 وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ وَآتَوُا الزَّكَاةَ لَهُمْ أَجْرُهُمْ
 عِنْدَ رَبِّهِمْ وَلَا يَخَافُ عَلَيْهِمْ وَلَا يُخْزَوْنَ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ
 آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَذَرُوا مَا بَقِيَ مِنَ الْبَرِّ إِنَّ كَثِيرًا مِّنَ الْبَرِّ
 وَلَمْ تَعْلَمُوا فَأَذَانًا مِّنَ اللَّهِ وَرَسُولِهِ وَإِن تُبْشَرُوا
 فَتَكْفُرُوا فَسُوءَ سَمْعِكُمْ لَا تَحْطُونَ وَلَا تَعْلَمُونَ ۝ هَؤُلَاءِ
 دُونَكُمْ قَدْ خَلَوْا إِلَىٰ مَنَ رَبِّهِمْ وَأَن تَصَدَّقُوا خَيْرٌ لَّكُمْ إِن كُنتُمْ
 تَعْلَمُونَ ۝ وَالْقَوَا يُدَمُّونَ يُجْعَلُونَ فِيهِ إِلَى اللَّهِ يُشْرَفُونَ عَلَىٰ
 نَفْسٍ عَالِيَةٍ وَمَنْ لَا يَحْكُمُونَ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا
 ذُكِّرْتُمْ بَدِئًا إِلَىٰ أَحْسَنِ مَقَامٍ وَأَكْثَرِهِمْ يَكْفُرُونَ
 كَاتِبٌ بِالْعَذْلِ وَلَا يَأْبَ كَاتِبٌ أَن يَكْتُبَ كَمَا عَلَّمَهُ اللَّهُ
 كُلُّكْتُبٍ وَإِلَيْهِ الَّذِينَ عَلَيْهِ السَّلْ وَاللَّهُ رَكُوكٌ وَلَا
 يَنْفُسُ مِنْهُ شَيْءٌ ۝ فَإِن كَانَ الَّذِي عَلَيْهِ السَّلْ مَتَّعْنَاهُ أَوْ

مَنْ

खोफ होगा और न गम। (२७४) जो लोग सूद खाते हैं, वे (क़र्ज़ों से) इस तरह (हवास खोये हुए) उठेंगे, जैसे किसी को ज़िन्न ने लिपट कर दीवाना बना दिया हो, यह इस लिए कि वे कहते हैं कि सोदा बेचना भी तो (नफ़ा के लिहाज़ से) वैसा ही है जैसे सूद (लेना) हालाँकि सोदे को खुदा ने हलाल किया है और सूद को हराम, तो जिस शरूम के पास खुदा की नसीहत पहुँची और वह (सूद लेने से) बाज़ आ गया, तो जो पहले हो चुका, वह उस का, और (क्रियामत में) उस का मामला खुदा के सुपुर्द और जो फिर लेने लगा, तो ऐसे लोग दोज़खी हैं कि हमेशा दोज़ख में (जलते) रहेंगे। (२७५) खुदा सूद को ना-बूद (यानी बे-बरकत) करता और ख़रात (की बरकत) को बढ़ाता है और खुदा किसी ना-शुके गुनाहगार को दाम्त नहीं रखता। (२७६) जो लोग ईमान लाये और नेक अमल करते और नमाज़ पढ़ते और ज़कात देते रहे, उन को उन के कामों का बदला खुदा के यहां मिलेगा और (क्रियामत के दिन) उन को न कुछ खोफ होगा और न वे ग़मनाक होंगे। (२७७) मोमिनो! खुदा से डरो और अगर ईमान रखते हो तो जितना सूद बाकी रह गया है, उस को छोड़ दो। (२७८) अगर ऐसा न करो, तो खबरदार हो जाओ (कि तुम) खुदा और रसूल से जंग करने के लिए (तैयार होते हो) और अगर तौबा कर लोगे (और सूद छोड़ दोगे) तो तुम को अपनी असल रक़म लेने का हक़ है, जिस में न औरों का नुक़सान, और न तुम्हारा नुक़सान। (२७९) और अगर क़र्ज़ लेने वाला तंगदस्त हो तो (उसे) फ़रासी (के हासिल होने) तक मोहलत (दो) और अगर (क़र्ज़ रक़म) बरूश ही दो, तो तुम्हारे लिए ज़्यादा अच्छा है, बशर्ते कि समझो। (२८०) और उस दिन से डरो, जबकि तुम खुदा के हुज़ूर में लौट कर जाओगे और हर शरूम अपने आभाल का पूरा-पूरा बदला पायेगा और किसी का कुछ नुक़सान न होगा। (२८१) ★

१. ख़रात का बयान ख़त्म हुआ, अब आगे सूद को हराम फ़रमाया, जब ख़रात की ताकीद है, तो क़र्ज़ देना तो उस से ताकीदी है, फिर सूद क्यों लीजिए।

२. बरब में सूद दो तरह से चलता था। एक क़र्ज़ पर, दूसरे बैज पर। क़र्ज़ पर इस तरह कि रफ़्या देने वाला किसी को एक मुद्दत के लिए रुपए देता। जब वह मुद्दत ख़त्म हो जाती, तो क़र्ज़दार से रुपए तलब करता। उस के ग़म रफ़्या न होता और वह मोहलत मांगता तो क़र्ज़ पर सूद बढ़ा दिया जाता और उस को असल रक़म में शामिल कर के ज़्यादा मोहलत दी जाती। इसी तरह सूद पर सूद भी हो जाता और ज़्यादा मशहूर यही सूद था। बैज पर इस तरह कि कोई शरूम किसी के पास कोई चीज़ बेचता और उसी क्रिस्म की चीज़ ख़रीदने वाले से बदले में लेता। हुज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि गेहूँ को गेहूँ के बदले और नमक को नमक के बदले और जौ को जौ के बदले और ख़जूर को ख़जूर के बदले और चांदी को चांदी के बदले और सोने को सोने के बदले वगैरे तो बराबर-बराबर बेचो यानी ज़्यादा लेना-देना सूद में दाख़िल है और ये दोनों क्रिस्म के सूद हराम हैं। सूद खाने वाले कहते हैं कि क़र्ज़ पर सूद लेना और सोदागरी करना एक-सी चीज़ें हैं। सोदागरी से भी नफ़े का मक़सद होता है और सूद ने भी नफ़े का मक़सद होता है, ग़म नफ़ा के लिहाज़ से दोनों में कुछ फ़र्क़ नहीं, मगर अल्लाह तआला ने सूद को हराम किया है, क्योंकि यह मुरब्बत, एहसान और मुलूक के ख़िलाफ़ है। उस में एहसान, हमदर्दी और मदद करने की बहुत ताकीद फ़रमायी है और क़र्ज़ विला सूद, जिस को क़र्ज़ें हसना कहते हैं, एहसान में दाख़िल है। सोदागरी में जितना नफ़ा भी हासिल किया जाए, वह हलाल है, मगर सूद का एक पैसा भी हराम है क्योंकि तंगदस्त मुयलमान एहमान और मुलूक के हक़दार और इस काबिल होते हैं कि उन को क़र्ज़ दे कर उन की मदद की जाए, न यह कि उन से सूद लेकर उन का खून पिया जाए।

मोमिनो ! जब तुम आपस में किसी तै मुद्दत के लिए कर्ज का मामला करने लगो, तो उस को लिख लिया करो और लिखने वाला तुम में (किसी का नुकसान न करे, बल्कि) इंसफ़ से लिखे, साथ ही लिखने वाला जैसा उसे खुदा ने सिखाया है, लिखने से इन्कार भी न करे और दस्तावेज लिख दे । और जो शरूस् कर्ज ले, वही (दस्तावेज का) मरमून बोल कर लिखवाए और खुदा से, कि उस का मालिक है, खोफ़ करे और कर्ज रकम में से कुछ कम न लिखवाए और, अगर कर्ज लेने वाला बे-अक्ल या जईफ़ (कमजोर, बूढ़ा) हो या मरमून लिखवाने की काबिलियत न रखता हो, तो जो उस का वली हो, वह इंसफ़ के साथ मरमून लिखवाए और अपने में से दो मर्दों को (ऐसे मामले के) गवाह कर लिया करो और अगर दो मर्द न हों, तो एक मर्द और दो औरतें, जिन को तुम गवाह पसन्द करो, (काफ़ी) हैं कि अगर उन में से एक भूल जाएगी, तो दूसरी उसे याद दिलाएंगी और जब गवाह (गवाही के लिए) तलब किए जाएं तो इन्कार न करें और कर्ज थोड़ा हो या बहुत उस (की दस्तावेज) के लिखने-लिखाने में काहिली न करना । यह बात खुदा के नज़दीक इंसफ़ के करीब है और गवाही के लिए भी यह बहुत सही तरीका है । इस से तुम्हें किसी तरह का शक व शुब्हा न पड़ेगा । हां, अगर सौदा हाथ के हाथ हो, जो तुम आपस में लेते-देते हो, तो अगर (ऐसे मामले की) दस्तावेज न लिखो तो तुम पर कुछ गुनाह नहीं और जब खरीद व फ़रोस्त किया करो तो भी गवाह कर लिया करो और दस्तावेज के लिखने वाले और गवाह (मामला करने वालों का) किसी तरह का नुकसान न करें । अगर तुम (लोग) ऐसा करो तो यह तुम्हारे लिए गुनाह की बात है और खुदा से डरो और (देखो कि) वह तुम को (कैसी मुफीद बातें) सिखाता है और खुदा हर चीज़ को जानता है । (२८२) और अगर तुम सफ़र पर हो और (दस्तावेज) लिखने वाला मिल न सके तो (कोई चीज़) रेहन बा-क़ब्ज़ा रख कर (कर्ज ले लो) और अगर कोई किसी को अमीन समझे (यानी रेहन के बग़ैर कर्ज दे दे) तो अमानतदार को चाहिए कि अमानत वाले की अमानत अदा कर दे और खुदा से जो उस का परवरदिगार है, डरे और (देखना,) गवाही को मत छिपाना, जो उस को छिपाएगा, वह दिल का गुनाहगार होगा और खुदा तुम्हारे सब कामों को जानता है । (२८३)★

जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है, सब खुदा ही का है । तुम अपने दिलों की बात को ज़ाहिर करोगे तो, या छिपाओगे तो, खुदा तुम से उस का हिसाब लेगा, फिर वह जिसे चाहे, मसफ़रत करे और जिसे चाहे अज़ाब दे और खुदा हर चीज़ पर कुब्रत रखता है । (२८४) (खुदा

के) रसूल उस किताब पर जो उन के परवरदिगार की तरफ से उन पर नाज़िल हुई, ईमान रखते हैं और मोमिन भी सब खुदा पर और उस के फ़रिषतों पर और उस की किताबों पर और उस के पैगम्बरों पर ईमान रखते हैं (और कहते हैं कि) हम उस के पैगम्बरों से किसी में कुछ फ़र्क नहीं करते। और वे (खुदा से) अज़ा करते हैं कि हम ने (तेरा हुक्म) सुना और कुबूल किया। ऐ परवर-दिगार ! हम तेरी बलिषा मांगते हैं और तेरी ही तरफ़ लौट कर जाना है। (२८५) खुदा किसी शख्स को उस की ताक़त से ज्यादा तकलीफ़ नहीं देता। अच्छे काम करेगा तो उस को उन का फ़ायदा मिलेगा, बुरे करेगा तो उसे उन का नुक़सान पहुंचेगा। ऐ परवरदिगार ! अगर हम से भूल या चूक हो गयी हो तो हमारी पकड़ न कीजियो, ऐ परवरदिगार ! हम पर ऐसा बोझ न डालियो, जैसा तूने हम से पहले लोगों पर डाला था। ऐ परवरदिगार ! जितना बोझ उठाने की हम में ताक़त नहीं, उतना हमारे सर पर न रखियो और (ऐ परवरदिगार !) हमारे गुनाहों से दरगुज़र कर और हमें बरूश दे और हम पर रहम फ़रमा, तू ही हमारा मालिक है और हम को काफ़िरों पर ग़ालिब फ़रमा। (२८६)★

३ सूर: आले इम्रान ८६

सूर: आले इम्रान मदनी १ और इस में दो सौ आयतें और बीस रकूअ हैं।

शुरू खुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

अलिफ़-लाम्-मीम् (१) खुदा, (जो माबूदे बरहक है) उस के सिवा कोई इबादत के लायक नहीं, जिन्दा, हमेशा रहने वाला (२) उसने (ऐ मुहम्मद सल्ल०!) तुम पर सच्ची किताब नाज़िल की, जो पहली (आसमानी) किताबों की तस्दीक़ करती है और उसी ने तौरात और इन्ज़ील नाज़िल की। (३) (यानी) लोगों की हिदायत के लिए पहले (तौरात और इन्ज़ील उतारी) और (फिर क़ुरआन, जो हक़ और बातिल को) अलग-अलग कर देने वाला (है), नाज़िल किया। जो लोग खुदा की आयतों से इन्कार करते हैं, उन को सज़ा अज़ाब होगा। और खुदा ज़बरदस्त (और) बदला लेने वाला है। (४) खुदा (ऐसा ख़बर रखने वाला और देखने वाला है कि) कोई चीज़ उस से छिपी नहीं, न ज़मीन में, न आसमान में। (५) वही तो है जो (मां के पेट में) जैसी चाहता है, तुम्हारी शक्लें बनाता है। उस ग़ालिब हिक़मत वाले के सिवा कोई इबादत के लायक नहीं। (६) वही तो

है, जिस ने तुम पर किताब उतारी, जिस की कुछ आयतें मुस्कम हैं (और) वही असल किताब है और कुछ मुतशाबेह हैं, तो जिन लोगों के दिल में टेढ़ है, वे मुतशाबेह की पंखी करते हैं, ताकि किले के लिए और असली मुराद खुदा के सिवा कोई नहीं जानता और जो लोग इल्म में कामिल होते हैं, वे यह कहते हैं कि हम उन पर ईमान लाये, ये सब हमारे परवरदिगार की तरफ से हैं और नसीहत तो अकलमंद ही कुबूल करते हैं। (७) ऐ परवरदिगार ! जब तूने हमें हिदायत बखशी है तो इस के बाद हमारे दिलों में टेढ़ न पैदा कर दीजियो और हमें अपने यहां से नेमत अता फरमा, तू तो बड़ा अता फरमाने वाला है। (८) ऐ परवरदिगार ! तू उस दिन, जिस (के आने) में कुछ भी शक नहीं, सब लोगों को (अपने हुजूर में) जमा कर लेगा। बेशक खुदा वायदे के खिलाफ नहीं करता। (९)★

जो लोग काफिर हुए (उस दिन) न तो उन का माल ही खुदा (के अजाब) से उन को बचा सकेगा और न उन की औलाद ही (कुछ काम आयेगी) और ये लोग जहन्नम की आग का ईंधन होंगे। (१०) इन का हाल भी फ़िर्आनियों और उन से पहले के लोगों का-सा होगा, जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया था, तो खुदा ने उन को उन के गुनाहों की वजह से (अजाब में) पकड़ लिया था और खुदा सलत अजाब करने वाला है। (११) (ऐ पैगम्बर !) काफिरों से कह दो कि तुम (दुनिया में भी) बहुत जल्द मरलूब हो जाओगे और (आखिरत में) जहन्नम की तरफ हांके जाओगे और वह बुरी जगह है। (१२) तुम्हारे लिए दो गिरोहों में, जो (बद्र की लड़ाई के दिन) आपस में भिड़ गये (खुदा की कुदरत की शानदार) निशानी थी। एक गिरोह (मुसलमानों का था, वह) खुदा की राह में लड़ रहा था और दूसरा गिरोह (काफिरों का था, वह) उन को अपनी आंखों से अपने-से दो गुना देख रहा था और खुदा अपनी मदद से जिस को चाहता है, मदद देता है, जो बसारत वाले (खुली आंख वाले) हैं उन के लिए इस (वाकिए) में बड़ा सबक है। (१३) लोगों को उन की स्वाहिशों की चीजें यानी औरतें और बेटे और सोने और चांदी के बड़े-बड़े ढेर और निशान लगे हुए घोड़े और मवेशी और खेती-बाड़ी जीनतदार मालूम होती हैं, (मगर) ये सब दुनिया ही की ज़िन्दगी के सामान हैं और खुदा के पास बहुत अच्छा ठिकाना है। (१४) (ऐ पैगम्बर ! उन से) कहो कि भला मैं तुम को ऐसी चीज बताऊं, जो इन चीजों से कहीं अच्छी हो, (सुनो), जो लोग परहेजगार हैं, उन के लिए खुदा के यहां (बहिश्त के) बाग हैं, जिन के नीचे नहरें बह रही हैं, उन में वे हमेशा रहेंगे और पाकीजा औरतें हैं और (सब से बढ़ कर) खुदा की खुशनूदी और खुदा (अपने नेक) बन्दों को देख रहा है। (१५) जो खुदा से इल्तिजा करते हैं कि ऐ परवरदिगार ! हम ईमान से आए, सो हम को हमारे गुनाहों को माफ़ फरमा और दोखल के अजाब से बचा। (१६) ये वह

१. मुस्कम वे आयतें हैं, जिन के एक माने हैं और साफ़ और खुले हुए हैं और मुतशाबेह वे आयतें हैं जिन में कई माने हो सकते हों और मतलब के कई पहलू हों। हकीकत में मुराद तो एक ही माने होते हैं, मगर लफ्ज़ और उन की तर्कबद्ध कुछ ऐसी होती है कि दूसरे मानों की तरफ़ धोहन जाने लगता है। ऐसी आयतों के माने अपनी राय से नहीं करने चाहिए, क्योंकि आयतों के माने अपनी राय से करने पर कड़ा डरावा आया है और लोग इस से गुमराह होते हैं। कुछ लोगों ने कहा, मुतशाबेह वे आयतें हैं, जिन के माने मालूम नहीं हो सकते, जैसे हुक्के मुक्तआत, जो घुस्सों के बुर्र में आते हैं जैसे अलिफ़-लाम्-मीम् और हा-मीम् बक़रह। एक हदीस में आया है कि मुस्कमात पर अमल करो मुतशाबेह पर ईमान रखो।

• (शेष ७६ पर)

लोग हैं जो (कठिनाइयों में) सन्न करते और सच बोलते और इबादत में लगे रहते और (खुदा की) राह में खर्च करते और सेहर के वस्तुओं में गुनाहों की माफ़ी मांगा करते हैं। (१७) खुदा तो इस बात की गवाही देता है कि उस के सिवा कोई माबूद नहीं और फ़रिश्ते और इल्म वाले लोग, जो इसाफ़ पर कायम हैं, ये भी (गवाही देते हैं कि) उस ग़ालिब हिकमत वाले के सिवा कोई इबादत के लायक नहीं। (१८) ● दीन तो खुदा के नज़दीक इस्लाम है और अहले किताब ने जो (इस दीन से) इस्तिस्नाफ़ किया, तो इल्म हासिल होने के बाद आपस की ज़िद से किया और जो शरूस खुदा की आयतों को न माने, तो खुदा जल्द हिसाब लेने वाला और सज़ा देने वाला है। (१९) ऐ पंगम्बर ! अगर ये लोग तुम से झगड़ने लगे, तो कहना कि मैं और मेरी पैरवी करने वाले तो खुदा के फ़रमां-बरदार हो चुके और अहले किताब और अन-पढ़ लोगों से कहो कि क्या तुम भी (खुदा के फ़रमांवरदार बनते और) इस्लाम लाते हो ? अगर ये लोग इस्लाम ले आएँ तो बेशक हिदायत पा लें और अगर (तुम्हारा कहा) न मानें, तो तुम्हारा काम सिर्फ़ खुदा का पंगाम पहुँचा देना है। और खुदा (अपने) बन्दों को देख रहा है। (२०) ★

जो लोग खुदा की आयतों को नहीं मानते और नबियों को ना-हक़ क़त्ल करते रहे हैं और जो इसाफ़ करने का हुक्म देते हैं, उन्हें भी मार डालते हैं उन को दुख देने वाले अज़ाब की खुशख़बरी सुना दो। (२१) ये ऐसे लोग हैं जिन के आमाल दुनिया और आखिरत दोनों में बर्बाद हैं और उन का कोई मददगार नहीं (होगा)। (२२) भला तुम ने उन लोगों को नहीं देखा जिन को (खुदा की) किताब (यानी तौरात) दी गई और वे (उस) अल्लाह की किताब की तरफ़ बुलाये जाते हैं, ताकि वह (उन के झगड़ों का) उन में फ़सला कर दे तो एक फ़रीक़ उन में से मुंह बना कर फेर लेता है। (२३) यह इस लिए कि ये इस बात के कायल हैं कि (दोख़ की) आग हमें कुछ दिन के सिवा छू ही न सकेगी और जो कुछ ये दीन के बारे में बुहतान बांधते रहे हैं, उस ने उन को धोखे में डाल रखा है। (२४) तो उस वक़्त क्या हाल होगा, जब हम उन को जमा करेंगे, (यानी) उस दिन, जिस (के आने) में कुछ भी शक़ नहीं और हर नपस अपने आमाल का पूरा-पूरा बदला पाएगा और उन पर ज़ुल्म नहीं किया जाएगा। (२५) कहो कि ऐ खुदा ! (ऐ) बादशाही के मालिक ! तू जिस को चाहे बादशाही बरूँसे और जिससे चाहे, बादशाही छीन ले और जिस को चाहे इस्लाम दे और जिसे चाहे ज़लील करे। हर तरह की भलाई तेरे ही हाथ है। और बेशक तू हर चीज़

(७७ का शेष)

२- इस आयत में बद्र की लड़ाई की शक़ल बयान फ़रमायी है। बद्र एक जगह का नाम है, जो मक्के और मदीने के दमियान है। इस लड़ाई में मुसलमानों की तायदाद तीन सौ तेरह थी और काफ़िर उन से तिगुने यानी एक हज़ार के करीब थे। अल्लाह तआला ने काफ़िरों के दिल में दहशत डालने के लिए उन की आँखों में यह दिखाया कि मुसलमान उन से दोगुने यानी दो हज़ार के करीब हैं या यह कि काफ़िरों की तायदाद मुसलमानों की नज़रों में मुसलमानों से दोगुनी दिखायी दी यानी एक हज़ार के छः सौ छब्बीस ताकि मुसलमान काफ़िरों को अपनी दोगुनी तायदाद से ज़्यादा देख कर डर न जाएँ और भाग न खड़े हों और दोगुनी तायदाद की शक़ल में भायना जायज़ नहीं। चुनांचे फ़रमाया है कि एक सौ क़दमों के मज़बूत मुसलमान दो सौ काफ़िरों पर ग़ालिब होंगे। मगर सही यही है कि काफ़िरों ने मुसलमानों को अपने से दोगुना देखा, न यह कि मुसलमानों ने काफ़िरों को अपने से दोगुना देखा। बहरहाल इस वाक़िफ़ में खुदा की क़ुदरत की निशानी है कि मुसलमान जो तीन सौ तेरह थे, वह ग़ालिब रहे और काफ़िर जो हज़ार के करीब थे, वे हार गये।

कुलिल्लाहुम-म मालिकल्मुल्क तुअतिल्मुल्क मन् तशा-उ व तन्जिअल्मुल्क
मिम्मन् तशा-उ व तुजिज्जु मन् तशा-उ व तुजिल्लु मन् तशा-उ
बि यदिकल्खैर इन्-क अला कुल्लि शैइन् कदोर (२६) तूलिजुल्लै-ल
फिन्नहारि व तूलिजुन्नहा-र फिल्लैलि व तुखिरजुल्-हय-य मिनल्मय्यिति

व तुखिरजुल्-मय्यि - त मिनल्हय्यि व
तरजुकु मन् तशा-उ बिगोर हिसाब (२७)

ला यत्तखिजिल्-मुअमिनूनल्-काफिरी-न
ओलिया-अ मिन्दूनिल्-मुअमिनीन ८ व

मय्यफ्अल् जालि-क फलै-स मिनल्लाहि फी
शैइन् इल्ला अन् तत्तकू मिन्दुम्

तुकातुन् व युहज्जिज्जुकुमुल्लाहु नफसह व
इलल्लाहिल्मसीर (२८) कुल् इन् तुखफू

मा फी सुदूरिकुम् ओ तुवूहु यअ-लमहुल्लाहु
व यअ-लमु मा फिस्समावाति व मा

फिल्अज्जि वल्लाहु अला कुल्लि शैइन्
कदोर (२६) यौ-म तजिदु कुल्लु नफिसमा

अमिलत् मिन् खैरिम् - मुहज्जर्व व
मा अमिलत् मिन् - इन् ८ त - वदुदुलो अन् - न बैनहा व बैनह

अ-म - दम् - बजौदत् व युहज्जिज्जुकुमुल्लाहु नफसह वल्लाहु रऊफुम् -
बिल्अबाद (३०) कुल् इन् कुन्तुम् तुहिब्बूनल्ला - ह फत्तबिअनी

युहिब्बुकुमुल्लाहु व यग्फिल्कुम् जुनूबकुम् वल्लाहु गफूहरहीम (३१) कुल्
अतीशुल्लाह वरसूलफ इन् तवल्लौ फ इन्नल्लाह ला युहिब्बुल्काफिरीन (३२)

इन्नल्लाहस्तफा आद-म व नूह्व-व आ-ल इब्राही-म व आ-ल अिम्रान
अल्ल-आलमीन (३३) जुरिय्यतम्बअ-जुहा मिम्बअ-ज्जित् वल्लाहु समीअुन्

अलीम ८ (३४) इज्ज कालतिम-र-अतु अिम्रान रब्बि इन्नी नजर्तु ल-क
मा फी बली मुहूरन् फ-त-कब्बल् मिन्नीइन्-क अन्तस्-समीअुल्-अलीम (३५)

مَنْ تَشَاءُ وَتَدُلُّ مَنْ تَشَاءُ يَبْذُرُ النَّبَاتَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ
فَقَدِيرٌ ۖ تُولِيهِمُ الْإِلَهَ فِي السَّمَاءِ وَتُولِيهِمُ الْإِلَهَ فِي الْأَرْضِ
وَالْأَنْفِ مِنَ الْبَيْتِ وَتُولِيهِمُ الْبَيْتَ مِنَ الْبَيْتِ وَتُولِيهِمُ
يَعْنِيهِمْ ۖ لَا يَخْفَىٰ عَلَىٰ الْمُؤْمِنِينَ الْكَافِرِينَ ۖ أَلَيْسَ
ذُوْنُ الْمُؤْمِنِينَ ۖ وَمَنْ يَفْعَلْ ذَلِكَ فَلَيْسَ مِنَ اللَّهِ فِي
شَيْءٍ ۖ وَلَا أَنْ تَقُولُوا مِنْهُمْ نَفْسٌ ۖ وَيَحْلِلُ اللَّهُ لَهُ نَفْسٌ
وَأَلَى اللَّهِ الْحُكْمُ ۖ قُلْ إِنْ تَحْكُمُوا مَا فِي صُدُورِكُمْ وَتَوَلَّوْا
بِعَظْمِ اللَّهِ وَيَعْلَمُ مَا فِي الصُّدُورِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَاللَّهُ عَلَىٰ
كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۖ يَوْمَ تَحْدُكُنْ لِقَاسٍ مِمَّا عَمِلْتُمْ مِنْ خَيْرٍ
مَحْضُورًا وَمَا عَمِلْتُمْ مِنْ سُوءٍ تَوَدُّ أَنْ يَنْبَغِيهَا وَتَنْبَغِيهَا
أَمَدًا بَعِيدًا ۖ وَيَحْلِلُ اللَّهُ لَهُ نَفْسٌ ۖ وَاللَّهُ ذُوْنُ الْبَيْتِ ۖ قُلْ
إِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّونَ اللَّهَ فَاتَّبِعُوا يُحِبُّكُمْ اللَّهُ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ
وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۖ قُلْ أَطِيعُوا اللَّهَ وَالْوَاسِلَ ۖ إِنْ تَوَلَّوْا فَإِنِ
اللَّهُ لَا يَجِبُ الْإِكْرَامَ ۖ إِنْ كَانَ اللَّهُ اصْطَفَىٰ آدَمَ وَنُوحًا وَآلَ
إِبْرَاهِيمَ وَآلَ عِمْرَانَ عَلَى الْعَالَمِينَ ۖ ذَرِيَّةَ بَعْضِهِمْ بَعْضٌ
وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ۖ إِذْ قَالَ إِبْرَاهِيمُ رَبِّ انِّي نَذَرْتُ
لَكَ مَا فِي بَطْنِي مُحَرَّرًا فَتَقَبَّلْ مِنِّي ۖ إِنَّكَ أَنْتَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ

पर कादिर है। (२६) तू ही रात को दिन में दाखिल करता और तू ही दिन को रात में दाखिल करता है। तू ही बे-जान से जानदार पैदा करता और तू ही जानदार से बे-जान पैदा करता है। और तू ही जिस को चाहता है, बे-हिसाब रोजी देता है। (२७) मोमिनों को चाहिए कि मोमिनों के सिवा काफ़िरों को दोस्त न बनाएं और जो ऐसा करेगा, उस से खुदा का कुछ (अहद) नहीं। हां, अगर इस तरीके से तुम उन (की बुराई) से बचाव की शकल निकालो (तो हरज नहीं) और खुदा तुम को अपने (ग़ज़ब) से डराता है और खुदा ही की तरफ़ (तुम को) लौट कर जाना है। (२८) (ऐ पैग़म्बर ! लोगों से) कह दो कि कोई बात तुम अपने दिलों में छिपाओ या उसे जाहिर करो, खुदा उस को जानता है और जो कुछ आसमानों में और जो कुछ ज़मीन में है, उस को सब की खबर है और वह हर चीज़ पर कादिर है। (२९) जिस दिन हर शख्स अपने आमाल की नेकी को मौजूद पा लेगा और उन की बुराई को भी (देख लेगा), तो आरजू करेगा कि ऐ काश ! उस में और इस बुराई में दूर का फ़ासला हो जाता और खुदा तुम को अपने (ग़ज़ब) से डराता है और खुदा अपने बन्दों पर निहायत मेहरबान है। (३०) ★

(ऐ पैग़म्बर ! लोगों से) कह दो कि अगर तुम खुदा को दोस्त रखते हो, तो मेरी पेंबी करो, खुदा भी तुम्हें दोस्त रखेगा और तुम्हारे गुनाह माफ़ कर देगा और खुदा बरक़्शने वाला मेहरबान है। (३१) कह दो कि खुदा और उसके रसूल का हुक्म मानो। अगर न मानें तो खुदा भी काफ़िरों को दोस्त नहीं रखता। (३२) खुदा ने आदम और नूह और इब्राहीम के ख़ानदान और इम्रान के ख़ानदान को तमाम दुनिया के लोगों में चुन लिया था। (३३) इनमें कुछ-कुछ की ओलाद थे। और खुदा सुनने वाला और जानने वाला है। (३४) (वह वक़््त याद करने के लायक़ है) जब इम्रान की बीवी ने कहा कि ऐ परवरदिगार ! जो (बच्चा) मेरे पेट में है, मैं उस को तेरी नज़्म करती हूँ। उसे दुनिया के कामों से आज़ाद रखूंगी। तू उसे मेरी तरफ़ से कुबूल फ़रमा। तू तो सुनने वाला (और) जानने वाला है। (३५) जब उनके यहां बच्चा पैदा हुआ, और जो कुछ

१. इम्रान से मुराद मरयम अलैहिस्सलाम के वालिद हैं, क्योंकि इस के बाद उन्हीं के क्रिस्ते का ख़िक़ किया गया है। कुछ कहते हैं कि हज़रत भूसा अलैहिस्सलाम के वालिद मुराद हैं कि उन का नाम भी इम्रान था, मगर पहला क़ौल तर्ज़ीह के काबिल है इस लिए कि इस के लिए क़रीना भी है।

२. जैसे इम्रान का ख़ानदान इब्राहीम अलै० की ओलाद था और इब्राहीम का ख़ानदान नूह की ओलाद था और नूह अलै० हज़रत आदम अलै० की ओलाद थे।

फ्र-लम्मा व - ज्ञ - अत्हा कालत् रब्बि इन्नी वज्रञ्ज-तुहा उम्सा ॥ वल्लाहु
 अञ्ज-लमु बिमा व-ज्ञ-अत् ॥ व लंसज्ज-कह कलउम्सा ॥ व इन्नी सम्मैतुहा
 मर्य - म व इन्नी उञ्जीतुहा बि-क व जुरिय्यतहा मिनश्शेतानिरञ्जीम
 (३६) फ्र त-कब्ब-ल लहा रब्बुहा वि कबूलिन् ह-सनिव-व अम्ब-तहा नबातन्

ह - स - नं व ५ व कपफलहा जकरियाह

कुल्लमा द-ख-ल अलैहा ज-करिय्यल्-मिह्रा-ब॥

व-ज-द अिन्दहा रिज्कन्त् का-ल या मरू-यमु अन्ना

लकि हाजा कालत् हु-व मित् अिन्दल्लाहि

इन्नल्ला-ह यरजुकु मय्यशा - उ बिगैरि

हिसाब (३७) हुनालि-क दआ ज़-करिय्या

रब्बह ६ का-ल रब्बि हल्ली मिललदुन-क

रुपिण्डव रुपिण्डव नूनं दानक समीपदत्तया-इ

आरुध्यतुन् ताव्य-ब-तुन् उश्मि-न सनाशुद्भुजा-इ

(३८) फ-नादत्हुल्-मला-इकत्तु व हु-व

क्रा - इमुं व्युसल्ली फ़िल् - महाराब

अन्नल्ला-ह युबशिशर-क बियह्या मुसदिदकम्-

बिकलिमतिम् - मिनल्लाहि व सय्यदंव-व

द्वयसंख्य-तुल्यतुल्य-तुल्यतुल्य-तुल्यतुल्य (३६)

गलाम व-व कद ब-ल-गनियल्कि-बह वमर-अत

यफ़जलु मा यशा-उ (४०) काल रब्बिज

अल्ला तुकल्लिमन्ना-स सला-स-त अय्यामिन्

सन्निह बिल्अशिष्टिय वल्इक्कार ★ (४१)

या मरु-यमु इन्नल्लाहस्तफ़ाकि व तहह-रकि

(४२) या मयमुक्नुती लि रब्बिकि वस्जदी व

मिन् अम्बा - इल्गैबि नूहीहि इलंक७ व मा

فَلَمَّا وَضَعَتْهَا قَالَتْ رَبِّ انِّي وَضَعْتُهَا أُنْثَىٰ ۖ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا وَضَعْتَ وَلَئِنْ كُنْتُ إِلَّا نَفْسًا فَاعْلَمْ أَنِّي لَا كِبَىٰ فِي سَعْدِهَا ۖ وَنَحْنُ عَنْهَا مَرِيضُونَ ۖ وَإِنِّي أَخَافُ عَلَيْهَا مَخَضَوَاتِنَا إِذَا دَخَلَتْ فِي السَّجَةِ ۖ فَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ ۚ إِنَّكَ أَنْتَ الْغَافِلُونَ ۚ فَتَوَلَّىٰ عَنْهَا وَقَامَ فِي أَهْلِ بَيْتِهِ وَنُصِيَ ابْنَهُ الْفَارُوقَ ۖ وَكَانَ أَبُوهُمَا صَالِحًا فَأَرَادَ اللَّهُ لَهُمُ الثَّنَاءَ ۚ وَلَئِنْ كُنْتُمْ إِلَّا نَفْسًا فَاعْلَمْ أَنِّي لَا كِبَىٰ فِي سَعْدِهَا ۖ وَنَحْنُ عَنْهَا مَرِيضُونَ ۖ وَإِنِّي أَخَافُ عَلَيْهَا مَخَضَوَاتِنَا إِذَا دَخَلَتْ فِي السَّجَةِ ۖ فَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ ۚ إِنَّكَ أَنْتَ الْغَافِلُونَ ۚ فَتَوَلَّىٰ عَنْهَا وَقَامَ فِي أَهْلِ بَيْتِهِ وَنُصِيَ ابْنَهُ الْفَارُوقَ ۖ وَكَانَ أَبُوهُمَا صَالِحًا فَأَرَادَ اللَّهُ لَهُمُ الثَّنَاءَ ۚ

उनके यहाँ पैदा हुआ था, खुदा को खूब मालूम था, तो वह कहने लगीं कि परवरदिगार ! मेरे तो लड़की हुई है और (नज़र के लिए) लड़का (मुनासिब था कि वह) लड़की की तरह (ना-तवां) नहीं होता ।^१ और मैंने उसका नाम मरयम रखा है और मैं उसको और उसकी औलाद को मद्द सतान से तेरी पनाह में देती हूँ । (३६) तो परवरदिगार ने उसको पसंदीदगी के साथ कुबूल फ़रमाया और उसे अच्छी तरह परवरिश किया और ज़करीया को उसका मुतकफ़िल (देख-भाल करने वाला) बनाया । ज़करीया जब कभी इबादतगाह में उसके पास जाते, तो उसके पास खाना पाते । (यह सूरत देख कर एक दिन मरयम से) पूछने लगे कि मरयम ! यह खाना तुम्हारे पास कहाँ से आता है ? वह बोलीं कि खुदा के यहाँ से (आता है) । बेशक खुदा जिसको चाहता है, बे-शुमार रोज़ी देता है । (३७) उस वक़्त ज़करीया ने अपने परवरदिगार से दुआ की (और) कहा कि परवरदिगार ! मुझे अपनी जनाब से नेक औलाद अता फ़रमा । तू बेशक दुआ सुनने (और कुबूल करने) वाला है । (३८) वह अभी इबादतगाह में खड़े नमाज़ ही पढ़ रहे थे कि फ़रिश्तों ने आवाज़ दी कि (ज़करीया !) खुदा तुम्हें यहूया की खुशख़बरी देता है, जो खुदा के फ़ज़ (यानी ईसा) की तस्दीक करेंगे, और सरदार होंगे और औरतों से चाव न रखने वाले और (खुदा के) पैग़म्बर (यानी) नेक लोगों में होंगे । (३९) ज़करीया ने कहा, ऐ परवरदिगार ! मेरे यहाँ लड़का कैसे पैदा होगा कि मैं तो बूढ़ा हो चुका हूँ और मेरी बीवी बांश है । खुदा ने फ़रमाया, इसी तरह, खुदा जो चाहता है करता है । (४०) ज़करीया ने कहा कि परवरदिगार ! (मेरे लिए) कोई निशानी मुक़रर फ़रमा । खुदा ने फ़रमाया निशानी यह है कि तुम लोगों से तीन दिन इशारे के सिवा बात न कर सकोगे । तो (उन दिनों में) अपने परवरदिगार की ज़्यादा से ज़्यादा याद और सुबह व शाम उसकी तस्बीह करना । (४१)★

और जब फ़रिश्तों ने (मरयम से) कहा कि मरयम ! खुदा ने तुमको चुना है और पाक बनाया है और दुनिया की औरतों में चुन लिया है । (४२) मरयम ! अपने परवरदिगार की फ़रमांवरदारी करना और सज़्दा करना और रकूअ करने वालों के साथ रकूअ करना । (४३) (ऐ मुहम्मद !) ये बातें ग़ैब की ख़बरों में से हैं, जो हम तुम्हारे पास भेजते हैं और जब वे लोग अपने कलम (क़ुरआ के तौर पर) डाल रहे थे कि मरयम का मुतकफ़िल कौन बने, तो तुम उनके पास नहीं थे और न उस वक़्त ही उनके पास थे, जब वे आपस में भगड़ रहे थे । (४४) (वह वक़्त

१. हज़रत मरयम अलै० की वालिदा ने यह समझा था कि लड़का पैदा होगा और इसी लिए नज़् मानो थी कि मैं उस को दुनिया के कामों से आज़ाद कर के खुदा की इबादत और बैतुलमविदस की ख़िदमत के लिए फ़ारिग़ रखूंगी, मगर उन को क्या मालूम था कि लड़का होगा या लड़की । जब लड़की हुई तो ल्पल किया कि नज़् तो पूरी न हुई, क्योंकि दस्तूर था कि लड़का नज़् किया जाए, तो कहने लगीं कि परवरदिगार ! मेरे तो लड़की हुई है और इबादत की ताक़त और मस्जिद की ख़िदमत के लिहाज़ से लड़की लड़के जैसी नहीं होती है । मगर खुदा ने उस लड़की ही को कुबूल फ़रमाया । वह निहायत मुस्वैदी से खुदा की इबादत किया करती और दीन की बातें सीखती । खुदा ने उन को दुनिया की औरतों में चुन लिया और उन के पेट से एक अंचे क्रिस्म के पैग़म्बर यानी ईसा अलैहिस्सलाम भी पैदा किए ।

इज् कालतिल्-मला - इकतु या मर-यमु इन्नल्ला - ह युबशिशरुकि बिकलिमतिम्-
मिन्दु- ३ - स्मुहल्मसीहु औसब्नु मर्य - म . वजीहन् फिददुन्या वल्आखिरति
व मिनलमुकरबीन (४५) व युकल्लिमुन्ना-स फिलमहिदि व कहलंव-व
मिनस्सालिहीन (४६) कालत् रबिब अन्ना यकूनु ली व-लदुव-व लम्

यम्सस्नी ब-शरत् ७ का-ल . कजालिकिल्लाहु
यखलुकु मा यशा - उ ७ इजा कजा अमरन्
फ इन्मा यकूल लहू कुन् फ यकून (४७) व
युअल्लिमुहल्-किता-ब वल्हिकम-तु वसोरा-त्
वल्इन्जी-ल ८ (४८) व रसूलन् इला
बनी इस्राई-ल ९ अन्नी कद् जिअतुकुम्
बि आयतिम्-मिरंबिकुम् १० अन्नी अखलुकु
लकुम् मिनत्तीनि कहअतित्तेरि फ अन्फुख
फ्रीहि फ यकूनु तैरम्-बिइजिल्लाहि ८ व
उब्रिउल्-अकम-ह वल्अब-र-स व उह्यित्मोता
बि इज्जिल्लाहि ८ व उनबिउकुम्
बिमा तज्कुलू-न व मा तद्दखिरू-न ११ फ्री

سُورَةُ الْأَنْعَامِ
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
الْأَنْعَامِ ۝ مَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ إِذْ يَخْتَوُونَ ۝ لَوْ كُنْتَ تَدْرِي ۝ لَعَلَّكَ الْبَاقِ
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝ إِنَّ اللَّهَ يُخَوِّلُ الْخَيْرَ لِمَن يَشَاءُ ۝ إِنَّ اللَّهَ وَاسِعٌ عَالِمٌ
الْأَنْعَامِ ۝ وَجِئْنَا فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ ۝ وَمِنَ الْمُقَرَّبِينَ ۝ وَبِكَلِمَةٍ
الْأَنْعَامِ ۝ فِي السَّحَابِ وَكَلَّمَ مِنَ الْجِبَالِ ۝ فَجَاءَتْ بِهَا قَوْلًا ۝ قَالَتْ رَبِّ أَتَى
يَكُونُ لِي وَلَدٌ وَلَمْ يَنْسِفْنِي فَرَجًا ۝ قَالَ كَذَلِكَ اللَّهُ يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ
يَخْلُقُ ۝ إِذَا شَاءَ أَمَرْنَا الْمَلَأُ ۝ لَهُ مَا كُنْ تَكُونُ ۝ وَبِكَلِمَةٍ
لَّكُمُ ۝ وَالْحِكْمَةِ ۝ وَالْقُوَّةِ ۝ وَالْإِنجِيلَ ۝ وَرَسُولًا إِلَى بَنِي
إِسْرَءِيلَ ۝ أَنِ قَدْ جَعَلْنَاكَ يَا مَرْيَمُ قُرْآنًا ۝ وَتَكُونُ لَكَ
فِي الْغَيْبِ ۝ لَكِنَّهُ الطَّيِّبُ ۝ فَانْقَضَتْ ۝ فَجَاءَتْ بِهَا قَوْلًا ۝ قَالَتْ رَبِّ
وَأَتَى الْأَكْمَامَ ۝ وَالْأَبْرَصَ ۝ وَأَمَى الْمُؤْمِنِينَ ۝ بِالْبَيْتِ ۝ وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَالِمٌ
بِمَا تَأْمُرُونَ ۝ وَمَا تَنْهَوْنَ ۝ فِي يَوْمِكُمْ ۝ ذَلِكَ الْكِتَابُ
لَكُمْ ۝ إِنَّكُمْ تَكُونُونَ ۝ وَمُصَلِّينَ ۝ قَالُوا يَا بَنِي إِسْرَءِيلَ ۝
وَالْإِسْرَءِيلَ ۝ لَكُمْ ۝ بَعْضُ الْكُوفِيِّ ۝ فَجَاءَتْ بِهَا قَوْلًا ۝ قَالَتْ رَبِّ
لَكُمْ ۝ فَانْقَضَتْ ۝ وَالْحِكْمَةِ ۝ وَالْقُوَّةِ ۝ وَالْإِنجِيلَ ۝ وَرَسُولًا إِلَى بَنِي
إِسْرَءِيلَ ۝ أَنِ قَدْ جَعَلْنَاكَ يَا مَرْيَمُ قُرْآنًا ۝ وَتَكُونُ لَكَ
فِي الْغَيْبِ ۝ لَكِنَّهُ الطَّيِّبُ ۝ فَانْقَضَتْ ۝ فَجَاءَتْ بِهَا قَوْلًا ۝ قَالَتْ رَبِّ
وَأَتَى الْأَكْمَامَ ۝ وَالْأَبْرَصَ ۝ وَأَمَى الْمُؤْمِنِينَ ۝ بِالْبَيْتِ ۝ وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَالِمٌ
بِمَا تَأْمُرُونَ ۝ وَمَا تَنْهَوْنَ ۝ فِي يَوْمِكُمْ ۝ ذَلِكَ الْكِتَابُ
لَكُمْ ۝ إِنَّكُمْ تَكُونُونَ ۝ وَمُصَلِّينَ ۝ قَالُوا يَا بَنِي إِسْرَءِيلَ ۝

बुयतिकुम् १२ इन्-न फ्री जालि-क ल - आयतल्लकुम् इन् कुन्तुम् मुअमिनीन
(४९) व मुसदिक्कल्लिमा बै-न य-दय-य मिनत्तोराति व लि उहिल्-ल लकुम्
बज् - जल्लजी हरि - म अलैकुम् व जिअतुकुम् बि आयतिम् - मिरंबिकुम्
फ-त्तकुल्ला-ह व अतीअून (५०) इन्नल्ला-ह रब्बी व रब्बुकुम् फअ-बुदह
हाजा सिरातुम् - मुस्तक्रीम (५१) फ लम्मा अ-हस-स औसा मिन्दुमुल्कुफ-र
का - ल मन् अन्सारी इल्लल्लाहि १३ कालल्हवारिख्यू - न नहनु अन्सारल्लाहि
आमन्ना बिल्लाहि ८ वशहद् बि अन्ना मुस्लिमून (५२) रब्बना
आमन्ना बिमा अन्जल्-त वत्तबअ-नरसूल फक्तुब्ना म-अशशाहिदीन (५३)

भी याद करने के लायक है) जब फ़रिश्तों ने (मरयम से कहा) कि मरयम ! खुदा तुमको अपनी तरफ़ से एक फ़ैज की सुशखबरी देता है, जिस का नाम मसीह (और मशहूर) ईसा बिन मरयम होगा (और जो) दुनिया और आखिरत में बा-आबू और (खुदा के) खासों में से होगा । (४५) और मां की गोद में और बड़ी उम्र का होकर (दोनों) हालतों में लोगों से (एक ही तरह) बातें करेगा और नेकों में होगा । (४६) मरयम ने कहा, परवरदिगार ! मेरे यहां बच्चा कैसे होगा कि किसी इंसान ने मुझे हाथ तक तो लगाया नहीं । फ़रमाया कि खुदा इसी तरह जो चाहता है, पैदा करता है । जब वह कोई काम करना चाहता है, तो इर्शाद फ़रमा देता है कि हो जा, तो वह हो जाता है । (४७) और वह उन्हें लिखना (-पढ़ना) और दानाई और तोरात और इंजील-सिखाएगा । (४८) और (ईसा) बनी इस्राईल की तरफ़ पैग़म्बर (हो कर जाएंगे और कहेंगे) कि मैं तुम्हारे पास तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से निशानी लेकर आया हूं, वह यह कि तुम्हारे सामने मिट्टी की मूर्ति, परिंदे की शकल की बनाता हूं, फिर उसमें फूँक मारता हूं तो वह खुदा के हुक्म से (सच मुच) जानवर हो जाता है । और अब्रस (सफ़ेद दागी) को तंदुरुस्त कर देता हूं और खुदा के हुक्म से मुर्दे में जान डाल देता हूं । और जो कुछ तुम खा कर आते हो और जो कुछ अपने घरों में जमा कर रखते हो, सब तुम को बता देता हूं । अगर तुम ईमान वाले हो, तो इन बातों में तुम्हारे लिए (खुदा की क़ुदरत की) निशानी है । (४९) और मुझ से पहले जो तोरात (नाज़िल हुई) थी, उसकी तस्दीक़ भी करता हूं और (मैं) इसलिए भी (आया हूं) कि कुछ चीज़ें जो तुम पर हाराम थीं, उनको तुम्हारे लिए हलाल कर दूं और मैं तो तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से निशानी लेकर आया हूं, तो खुदा से डरो और मेरा कहा मानो । (५०) कुछ शक़ नहीं कि खुदा ही मेरा और तुम्हारा परवरदिगार है तो उसी की इबादत करो । यही सीधा रास्ता है । (५१) जब ईसा (अलैहिस्सलाम) ने उनकी तरफ़ से ना-फ़रमानी (और क़त्ल की नीयत) देखी, तो कहने लगे कि कोई है जो खुदा का तरफ़दार और मेरा मददगार हो । हवारी बोले कि हम खुदा के (तरफ़दार और आपके) मददगार हैं । हम खुदा पर ईमान लाये और आप गवाह रहें कि हम फ़रमांबरदार हैं । (५२) ऐ परवरदिगार ! जो (किताब) तूने नाज़िल फ़रमायी है, हम उस पर ईमान ले आये और (तेरे) पैग़म्बर के ताबेदार हो चुके, तो हमको मानने वालों में लिख रख । (५३) और वे

व म-कह व म-क-रत्लाहु वल्लाहु खंरुमाकिरीन ★ (५४) इज्
कालत्लाहु या भीसा इन्नी मु-त-वफ्फ्री-क व राफिअ-क इलय-य व
मुतहिह-क मिनल्लजी-न क-फरु व जाअिलुल्लजी-नत्तबअ-क फ़ोक्ललजी-न क-फरु
इला योमिल्क्रियामति ६ सुम्-म इलय-य मजिअुकुम् फ़ अह्कुमु बंनकुम्
फ़ी मा कुनुम् फ़ीहि तख्तलिफून (५५)

फ़ अम्मल्लजी-न क-फरु फ़ उअज्जिबुहुम्
अजाबन् शदीदन् फ़िद्दुन्या वल्आखिरति
व मा लहुम् मिन्नासिरीन (५६) व
अम्मल्लजी-न आमनू व अमिलुस्सालिहाति
फ़ युवफ्फ़ीहिम् उजूरहुम् वल्लाहु ला
युहिबुज्जालिमीन (५७) जालि-क नत्लूहु
अलै-क मिनल्-आयाति वज्जिक्र्ल्-हकीम
(५८) इन्-न म-स-ल भीसा अिन्दल्लाहि

وَقَسَمًا مِّنَ الْمَوْءِدِ ۖ فَالَّذِينَ لَا يُؤْتُونَ مَالَ اللَّهِ سِرًّا وَلَا يُؤْتُونَهُ بَشْرًا حَتَّىٰ يَبْلُغَ الْوَعْدَ الْمَعْلُومَ ۚ وَقَالَ اللَّهُ لَنَلْبَسَنَّهُمْ جُذُوعَ النَّخْلِ ۖ وَلَا تَلْبَسُهُمْ جُذُوعَ النَّخْلِ ۚ وَلَنَنصُبَنَّ السَّيْلَ ۖ وَلَا يَأْتِيَنَّكَ السَّيْلُ ۚ وَلَنَجْعَلَ لِكُلِّ فِرْقَةٍ غَايَةً ۚ فَالَّذِينَ كَفَرُوا ۖ سَاءَ مَا يَحْكُمُونَ ۚ وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ أَجْرَهُم بِأَفْضَلِ الَّذِي كَانُوا يَعْمَلُونَ ۚ وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ أَجْرَهُم بِأَفْضَلِ الَّذِي كَانُوا يَعْمَلُونَ ۚ وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ أَجْرَهُم بِأَفْضَلِ الَّذِي كَانُوا يَعْمَلُونَ ۚ وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ أَجْرَهُم بِأَفْضَلِ الَّذِي كَانُوا يَعْمَلُونَ ۚ وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ أَجْرَهُم بِأَفْضَلِ الَّذِي كَانُوا يَعْمَلُونَ ۚ

क म-स-ल आद-म ख-ल-कहू मिन् तुराबिन्
सुम्-म का-ल लहू कुन् फ़-यकून (५९)
अल्हक्कु मिरंब्बि-क फ़ ला तकुम्मिनल्-

मुत्तरीन (६०) फ़ मन् हा-ज्ज-क फ़ीहि मिम्बअ-दि मा जा-अ-क मिनल्अलिम
फ़ कुल् तआली नदअु अब्ना-अना व अब्ना-अकुम् व निसा- अना व
निसा-अकुम् व अन्फु-सना व अन्फु-सकुम् सुम्- म नब्तहिल् फ़ नज्अल्
लअ-न-तल्लाहि अ-लल्काजिबीन (६१) इन्-न हाजा ल हुवल् - क-ससुल् - हक्कु
व मा मिन् इलाहिन् इल्लल्लाहु व इन्नल्ला-ह ल-हुवल् - अजीजुल् -
हकीम (६२) फ़ इन् तवल्लौ फ़ इन्नल्ला-ह अलीमुम्-बिल्मुफ़सिदीन
★ (६३) कुल् या अहलल्किताबि तआली इला कलिमतिन्
सवा-इम् - बंनना व बंनकुम् अल्ला नअ- बु-द इल्लल्ला - ह व ला
नुशरि - क बिही शैअव् - व ला यत्तखि-ज बअ- जुना बअ-अन् अर्बाबम्मिन्
इनिल्लाहि फ़ इन् तवल्लौ फ़ कूलुशहद् बिअन्ना मुस्लिमून (६४)

(गानी यहूदी, ईसा के क़त्ल के बारे में एक) चाल चले, और खुदा भी (ईसा को बचाने के लिए) चाल चला और खुदा ख़ूब चाल चलने वाला है। (५४) ★

उस वक़्त खुदा ने फ़रमाया कि ईसा ! मैं तुम्हारी दुनिया में रहने की मुद्दत पूरी करके तुम को अपनी तरफ़ उठा लूंगा और तुम्हें काफ़िरों (की सोहबत) से पाक कर दूंगा और जो लोग तुम्हारी पंरबी करेंगे, उनको काफ़िरों पर क्रियामत तक फ़ाइक़ (यानी बढ़ कर और ग़ालिब) रखूंगा, फिर तुम सब मेरे पास लौट कर आओगे, तो जिन बातों में तुम इस्तिलाफ़ करते थे, उस दिन तुम में उनका फ़ैसला कर दूंगा। (५५) यानी जो काफ़िर हुए, उनको दुनिया और आख़िरत (दोनों में) सल्ल अज़ाब दूंगा और उनका कोई मददगार न होगा। (५६) और जो ईमान लाये और नेक अमल करते रहे, उन को खुदा पूरा-पूरा बदला देगा और खुदा ज़ालिमों को दोस्त नहीं रखता। (५७) (ऐ मुहम्मद !) यह हम तुमको (खुदा की) आयतें और हिक़मत भरी नसीहतें पढ़-पढ़ कर सुनाते हैं। (५८) ईसा का हाल खुदा के नज़दीक़ आदम का-सा है कि उसने (पहले) मिट्टी से उनका क़ालिब बनाया, फिर फ़रमाया कि (इंसान) हो जा, तो वह (इंसान) हो गये। (५९) (यह बात) तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से हक़ है, सो तुम हरगिज़ शक़ करने वालों में न होना। (६०) फिर अगर ये लोग ईसा के बारे में तुम से झगड़ा करें और तुमको हक़ीक़त तो मालूम ही हो चली है, तो उनसे कहना कि आओ, हम अपने बेटों और औरतों को बुलाएं, तुम अपने बेटों और औरतों को बुलाओ और हम खुद भी आएँ और तुम खुद भी आओ फिर दोनों फ़रीक़ (खुदा से) दुआ व इस्तिजा करें और झूठों, पर खुदा की लानत भेजें। (६१) ये तमाम बयानात सही हैं और अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और बेशक़ खुदा ग़ालिब (और) हिक़मत वाला है। (६२) तो अगर ये लोग फिर जाएँ तो ख़दा मुफ़्सिदों (फ़साद फैलाने वालों) को ख़ूब जानता है। (६३) ★

कह दो कि ऐ अहले किताब ! जो बात हमारे और तुम्हारे दमियान एक ही (मान ली गयी) है, उसकी तरफ़ आओ, वह यह कि खुदा के सिवा हम किसी की इबादत न करें और उसके साथ किसी चीज़ को शरीक़ न बनाएं और हममें से कोई किसी को खुदा के सिवा अपना कारसाज़ न समझे। अगर ये लोग (इस बात को) न मानें तो (उनसे) कह दो कि तुम गवाह रहो कि हम

(खुदा के) फरमांबरदार हैं। (६४) ऐ अहले किताब ! तुम इब्राहीम के बारे में क्यों झगड़ते हो, हालांकि तोरात और इंजील उनके बाद उतरी हैं (और वह पहले हो चुके हैं), तो क्या तुम अकल नहीं रखते ? (६५) देखो, ऐसी बात में तो तुमने झगड़ा किया ही था, जिसका तुम्हें कुछ इल्म था भी, मगर ऐसी बात में क्यों झगड़ते हो, जिसका तुम को कुछ भी इल्म नहीं और खुदा जानता है और तुम नहीं जानते। (६६) इब्राहीम न तो यहूदी थे और न ईसाई, बल्कि सबसे बे-ताल्लुक होकर एक (खुदा) के हो रहे थे और उसी के फरमांबरदार थे और मुश्रिकों में न थे। (६७) इब्राहीम से कुबं (करीबी ताल्लुक) रखने वाले तो वे लोग हैं, जो उन की पैरवी करते हैं और यह पैगाबर (आखिरी) और वे लोग जो ईमान लाये हैं, और खुदा मोमिनों का कारसाज है। (६८) (ऐ इस्लाम मानने वालो !) कुछ अहले किताब इस बात की स्वाहिश रखते हैं कि तुमको गुमराह कर दें, मगर ये (तुमको क्या गुमराह करेंगे) अपने आप को ही गुमराह कर रहे हैं और नहीं जानते। (६९) ऐ अहले किताब ! तुम खुदा की आयतों से क्यों इंकार करते हो और तुम (तोरात को) मानते तो हो।' (७०) ऐ अहले किताब ! तुम सच को झूठ के साथ गठ-मड क्यों करते हो ? और हक को क्यों छिपाते हो ? और तुम जानते भी हो। (७१) ★

और अहले किताब एक दूसरे से कहते हैं कि जो (किताब) मोमिनों पर नाज़िल हुई है, उस पर दिन के शुरू में तो ईमान ले आया करो और उसके आखिर में इंकार कर दिया करो, ताकि वे (इस्लाम से) हट जाएं। (७२) और अपने दीन की पैरवी करने वालों के सिवा किसी और के क़ायल न होना (ऐ पैगांबर !) कह दो कि हिदायत तो खुदा ही की हिदायत है। (वे यह भी कहते हैं), यह भी (न मानना) कि जो चीज तुम को मिली है, वैसी किसी और को मिलेगी या वे उन्हें खुदा के सामने क़ायल-माकूल कर सकेंगे। यह भी कह दो कि बुजुर्गों खुदा ही के हाथ में है। वह जिसे चाहता है, देता है और खुदा वुस्तत वाला (और) इल्म वाला है। (७३) वह अपनी रहमत से जिस को चाहता है, खास कर लेता है और खुदा बड़े क़ज़ल का मालिक है। (७४) और

१. यानी तुम इकरार करते हो कि तोरात और इंजील क़लाम खुदा के हैं, फिर इस में जो आयतें तारीफ में मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हैं, उन के क्यों इन्कारी होते हो ?

व मिन् अहिल्लकिताबि मन् इन् तअमन्हु बि किन्तारिथ्युअदिद्ही
इलै-क ८ व मिन्हुम् मन् इन् तअमन्हु बि दीनारिल्ला युअदिद्ही
इलै-क इल्ला मा हुम्-त अलैहि का-इमन् ७ जालि - क बि अन्नहुम् कालू
लै-स अलैना फिल्लिउमियी-न सबीलुन् ८ व यकूल-न अ-लल्लाहिल्-कजि-व व
हुम् यअ-लमून (७५) बला मन् औफा

बि अहिद्दीही वत्तका फ-इन्नल्ला-ह युहिब्बुल-
मुत्तकीन (७६) इन्नल्लजी-न यशतरून-
बि अहिदल्लाहि व ऐमानिहिम् स-म-नन्
कलीलन् उला-इ-क ला खला - क लहुम्
फिल्आखिरति व ला युक्लिमुहुमुल्लाहु व
ला यन्जुरु इलैहिम् यौमल्क्रियामति व
ला युजक्कीहिम् ७ व लहुम् अजाबुन्
अलीम (७७) व इन् - न मिन्हुम्
ल फरीकय्यल्वू-न अल्सि-न-तहुम् बिल्किताबि
लि तह्सबूहु मिनल्किताबि ८ व मा हु - व
मिनल्किताबि व यकूल - न हु - व मिन्
अन्दिल्लाहि व मा हु - व मिन् अन्दिल्लाहि

أَهْلِ الْكِتَابِ مَنْ إِنْ تَأْمَنُوا بِغُلَامَيْهِ وَفِي الْيَدِ إِلَهُهُ وَهُنَالِكَ
إِنْ تَأْمَنُوا بَبَنِيهِمْ لَا يُؤْذَوْنَ إِلَهُهُ إِلَّا مَا دُمَّتْ عَلَيْهِمْ فَاِذَا ذَكَرَ
الْكَتُوبَ وَأُصْحَابُهُمْ يَقُولُونَ وَيَقُولُونَ عَلَى اللَّهِ
اللَّهُ حُجُبُ الْمُتَّقِينَ ۖ إِنْ الْكَافِرِينَ فَتَقُولُونَ بِهِمْ اللَّهُ وَإِنَّا
نُفْسًا لَّيْلًا أُولَئِكَ لَا خَلَاقَ لَهُمْ فِي الْآخِرَةِ وَلَا يُكَلِّمُهُمُ اللَّهُ
وَلَا يَنْظُرُ إِلَيْهِمْ يَوْمَ الْوَعْدِ وَلَا يَذْكُرُهُمْ وَأُولَئِكَ هِيَ
وَأَنَّ مِنْهُمْ لَفِرَاقًا لَّيْلًا لَّيْلًا لَّيْلًا ۖ وَالْكَافِرِينَ يَخُصُّهُمْ مِنْ
الْكَافِرِينَ وَمَا هُوَ مِنَ الْكَافِرِينَ وَيَقُولُونَ هَؤُلَاءِ هُمُ الَّذِينَ
هَؤُلَاءِ هُمُ الَّذِينَ هَؤُلَاءِ هُمُ الَّذِينَ هَؤُلَاءِ هُمُ الَّذِينَ هَؤُلَاءِ
مَا كَانَ لَيْسَ أَنْ يُذَكِّرَهُ اللَّهُ الْكَافِرِينَ وَالْمُتَّقِينَ لَوْ يَعْلَمُ
لَقَالُوا كَذِبًا عِزًّا ۖ وَإِنْ مِنْ دُونِ اللَّهِ إِلَهٌ لَكُنَّا رَاشِدِينَ بِمَا
كَفَرُوا يَعْلَمُونَ الْكَافِرِينَ وَمَا أَتَيْنَاهُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ وَلَا يَأْمُرُ
أَنْ تَعْبُدَ الْمَلَائِكَةَ وَالنَّبِيِّينَ أُولَئِكَ هُمُ الَّذِينَ هَؤُلَاءِ هُمُ
إِذَا أَتَوْهُ مُضْجُونَ ۖ وَإِذْ أَخَذَ اللَّهُ مِيثَاقَ الْبَنِي إِسْرَءِيلَ
مِنْ كِتَابٍ وَكَتَبُوا فَوْقَهُمْ كِتَابَهُمْ فَصَدَّقُوا بِمَا عَصَوْا
لَهُمْ مِنْهُمْ وَكَتَبُوا فَوْقَهُمْ كِتَابَهُمْ فَصَدَّقُوا بِمَا عَصَوْا

व यकूल-न अलल्लाहिल्कजि-व व हुम् यअ-लमून (७८) मा का - न लि ब-शरिन्
अय्युअतियहुल्लाहुल् - किता-ब वल्हुक्-म वन्नुबुव्व-त सुम्-म यकूल-लिन्नासि कून
अिबादल्ली मिन् दूनिल्लाहि व लाकिन् कून रब्बानियी - न बिमा कुन्तुम्
तुअल्लिमूनल् - किता - ब व बिमा कुन्तुम् तदरसून् ॥ (७९) व ला यअमुरकुम्
अन् तत्तखिजुल् - मला - इ-क-त वन्नबियी - न अर्बावन् ७ अ यअमुरकुम् बिल्कुफ्रि
बअ - द इज् अन्तुम् मुस्लिमून ★ (८०) व इज् अ - ख - जल्लाहु
मीसाकन्नबियी - न लमा आततुकुम् मिन् किताबिव - व हिवमतिन् सुम् - म
जा - अकुम् रसूलुम्-मुसदिदकुलिमा म-अकुम् ल-तुअमिनुन्-न बिही व ल तन्सरुन्नहु
का - ल अ अक़रुत् ७ व अ-खजतुम् अला जालिकुम् इसरी
कालू अक़रुत् ७ का - ल फ़शहू व अन म - अकुम् मिनशशाहिदीन (८१)

अहले किताब में से कोई तो ऐसा है कि अगर तुम उसके पास (रुपयों का) ढेर अमानत रख दो तो तुम को (फौरन) वापस दे दे और कोई इस तरह का है कि अगर उसके पास एक दीनार भी अमानत रखो, तो जब तक उसके सर पर हर वस्तु खड़े न रहो, तुम्हें दे ही नहीं। यह इस लिए कि वे कहते हैं कि उम्मीयों के बारे में हमारी पकड़ न होगी। ये खुदा पर सिर्फ झूठ बोलते हैं और (इस बात को) जानते भी नहीं। (७५) हां, जो शरूस् अपने इकरार को पूरा करे और खुदा से डरे, तो खुदा डरने वालों को दोस्त रखता है। (७६) जो लोग खुदा के इकरारों और अपनी कसमों (को बेच डालते हैं और उन) के बदले थोड़ी सी कीमत हासिल करते हैं, उनका आखिरत में कुछ हिस्सा नहीं, उनसे खुदा न तो कलाम करेगा और न कियामत के दिन उनकी तरफ देखेगा और न उनको पाक करेगा और उनको दुख देने वाला आजाब होगा। (७७) और इन (अहले किताब) में कुछ ऐसे हैं कि किताब (तौरात) को जुबान मरोड़-मरोड़ कर पढ़ते हैं, ताकि तुम समझो कि जो कुछ वे पढ़ते हैं, किताब में से है, हालांकि वह किताब में से नहीं होता और कहते हैं कि वह खुदा की तरफ से (नाज़िल हुआ) है, हालांकि वह खुदा की तरफ से नहीं होता और खुदा पर झूठ बोलते हैं और (यह बात) जानते भी हैं। (७८) किसी आदमी को मुनासिब नहीं कि खुदा तो उसे किताब और हुकूमत और नुबूत अता करमाए और वह लोगों से कहे कि खुदा को छोड़ कर मेरे बन्दे हो जाओ, बल्कि (उस के लिए यह कहना मुनासिब है कि ऐ अहले किताब !) तुम (उलेमा-ए-) रब्बानी हो जाओ, क्योंकि तुम (खुदा की) किताब पढ़ते रहते हो। (७९) और उसको यह भी नहीं कहना चाहिए कि तुम फ़रिश्तों और पैगम्बरों को खुदा बना लो। भला जब तुम मुसलमान हो चुके तो क्या उसे मुनासिब है कि तुम्हें काफ़िर होने को कहे। (८०) ★

और जब खुदा ने पैगम्बरों से अहद लिया कि जब मैं तुमको किताब और दानाई अता करूँ, फिर तुम्हारे पास कोई पैगम्बर आये, जो तुम्हारी किताब की तस्दीक करे तो तुम्हें जरूर उस पर ईमान लाना होगा और जरूर उस की मदद करनी होगी। और (अहद लेने के बाद) पूछा कि भला तुम ने इकरार किया और इस इकरार पर मेरा ज़िम्मा लिया (या मुझे ज़ामिन ठहराया) उन्होंने, कहा (हां), हमने इकरार किया। (खुदा ने) फ़रमाया कि तुम (इस अहद व पैमान के) गवाह रहो

फ्र मन् तबल्ला बअद् जालि-क फ्र उला-इ-क हुमुल्-फासिकून (८२) अ-फ-गै-र
दीनिल्लाहि यब्बू-न व लहू असल-म मन् फ़िस्समावाति वल्अजि तोअ व-व
करह्व-व इलैहि युर्जअून (८३) कुल् आमन्ना बिल्लाहि व मा उन्जि-ल
अलैना व मा उन्जि-ल अला इब्राही-म व इस्माओ-ल व इस्हा-क व
यअ-कूब वल्अस्बाति व मा उति-य मूसा व
ओसा वन्नबियू-न मिरंन्बिहिम् ला नुफ़रिक्
बै-न अ-हदिम्मिन्हुम् व नह्नु लहू मुस्लिमून
(८४) व मय्यब्तगि गैरल्-इस्लामि दीनन्

फ्र लंय्युक्व-ल मिन्हु ६ व हु-व फ्रिल्आखिरति
मिनल्खासिरीन (८५) कै - फ्र यहिदल्लाहु
कौमन् क-फ्रू बअ-द ईमानिहिम् व शहिद्
अन्नरसू-ल हक्कु-व-व जाअ हुमुल्बय्यिनातु
वल्लाहु ला यहिदल्-कौमज्जालिमीन (८६)
उला-इ-क जजा-उहुम् अन्-न अलंहिम्
लअन्-न - तुल्लाहि वल्मला-इकति वन्नासि
अज्मअीन ५ (८७) खालिदी-न फ्रीहा
ला यख्पफ्र अन्हमूल-अजाब व ला हम

मुञ्जसूत ॥ (८८) इल्लल्लजी-न ताबू मिम्बअदि जालि-क व अस्लह
फ इल्लला-ह गफूहरहीम (८९) इल्लल्लजी-न क-फरू बअ-द ईमानिहिम्
मुम्मज्जाद् कुपरल्लन् तुक्ब-ल तोबतुहुम् ७ व उला-इ-क हुमुज्जाल्लून
(९०) इल्लल्लजी-न क-फरू व मातू व हुम् कुपफारुन् फ-लंयुक्ब-ल मिन्
अ-ह्दिहिम् - मिल् - उल्अज्जि ज-ह-बंव-व लविप्तदा बिही ८ उला-इ - क
लहुम् अजाबुन् अलीमुंव-व मा लहुम् मिन्नासिरीन ★ (९१)

और मैं भी तुम्हारे साथ गवाह हूँ। (८१) तो जो इसके बाद फिर जाएं, वे बद-किरदार हैं। (८२) क्या ये (काफिर) खुदा के दीन के सिवा किसी और दीन के तालिब हैं, हालांकि सब आसमानों और ज़मीन वाले, खुशी या ज़बरदस्ती से खुदा के फ़रमांबरदार हैं और उसी की तरफ़ लौट कर जाने वाले हैं। (८३) कहो कि हम खुदा पर ईमान लाये और जो किताब हम पर नाज़िल हुई और जो सहीफ़े (ग्रन्थ) इब्राहीम और इस्माईल और इस्हाक़ और याकूब और उनकी औलाद पर उतरे और जो किताबें मूसा और ईसा और दूसरे नबियों को परवरगिदार की तरफ़ से मिलीं, सब पर ईमान लाये। हम इन पैगम्बरों में से किसी में कुछ फ़र्क़ नहीं करते और हम उसी (एक खुदा) के फ़रमांबरदार हैं। (८४) और जो शरूस इस्लाम के सिवा किसी और दीन का तालिब होगा, वह उससे हरगिज़ नहीं कुबूल किया जाएगा और ऐसा शरूस आख़िरत में नुक़सान उठाने वालों में होगा। (८५) खुदा ऐसे लोगों को कैसे हिदायत दे जो ईमान लाने के बाद काफ़िर हो गये और (पहले) इस बात की गवाही दे चुके कि पैगम्बर हक़ पर हैं और उनके पास दलीलें भी आ गयीं। और खुदा बे-इंसाफ़ों को हिदायत नहीं देता। (८६) उन लोगों की सज़ा यह है कि उन पर खुदा की और फ़रिश्तों की और इंसानों की सब की लानत हो। (८७) हमेशा इस लानत में (गिरफ़्तार) रहेंगे, उन से न तो अज़ाब हल्का किया जाएगा और न उन्हें मुहलत दी जाएगी। (८८) हां, जिन्होंने उसके बाद तौबा की और अपनी हालत दुरुस्त कर ली, तो खुदा बहश्ने वाला, मेहरबान है। (८९) जो लोग ईमान लाने के बाद काफ़िर हो गये, फिर कुफ़र में बढ़ते गये, ऐसों की तौबा हरगिज़ कुबूल नहीं होगी और ये लोग गुमराह हैं। (९०) जो लोग काफ़िर हुए और कुफ़र ही की हालत में मर गये, वे अगर (निजात हासिल करना चाहें और) बदले में ज़मीन भर कर सोना दें तो हरगिज़ कुबूल नहीं किया जाएगा। इन लोगों को दुख़ देने वाला अज़ाब होगा और उन की कोई मदद नहीं

चौथा पारः लन्तनालू

सूरतु आलि इम्रान आयत ६२ से २००

लन्तनालुबिरं-र हत्ता तुन्फिकू मिम्मा तुहिबून व मा तुन्फिकू मिन्
 शैन् फ इन्नल्लाह बिही अलीम (६२) कुल्लुत्तामि का-न हिल्लल्लिबनी
 इस्रा-ई-ल इल्ला मा हर-र-म इस्रा-ई-लु अला नफिस्तीही मिन् कबिल
 अन्ननज़्जलत्तोरातु कुल् फ़अत्तूबित्तोराति फ़ल्लूहा इन् कुन्तुम् सादिकीन (६३)

٤٩

لَقَدْ نَادَى الْوَحْيُ إِلَى اللَّهِ حَتَّى تَبْعُوهُمَا وَمَا تَبْعُوهُمَا مِنْ
شَيْءٍ عِندَ اللَّهِ بِهِ عَلَيْهِ ۝ كُلُّ الظَّالِمِ كَانَ جَلًّا لِيَسْمَى
إِسْرَائِيلَ إِلَّا مَا حَمَلَهُمْ إِسْرَائِيلُ عَلَى نَفْسِهِ مِنْ قَبْلِي أَنْ
تُكَلِّمَ الْفُورَةَ ۝ قُلْ فَأَيُّ الْفُورَةِ قَالْتُمَا إِن كُنْتُمْ
صَادِقِينَ ۝ قُلْ أَتَقْرَأُونَ عَلَى اللَّهِ الْكِتَابَ مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ
فَأُولَئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ ۝ قُلْ صَدَقَ اللَّهُ ۝ قَالَتُمَا يَا إِلَهَ الْوَحْيِ
جَنِينًا ۝ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُسْتَكِينِ ۝ إِنْ أَوَّلَ بَيْنِي وَبَيْنَهُ
بَلَاءٌ لَأَنِّي بَهْلَةٌ مُبْرَكًا وَهَدًى لِلْعَالَمِينَ ۝ فَبِهِ أَيْتُ
بَيْنَهُمَا الْوَحْيُ بِهِ ۝ وَمَنْ خَدَعَهُ كَانَ أَوْسًا ۝ وَلَهُ عَلَى
الْعَالَمِينَ حَقُّ الْيَوْمِ ۝ مَنِ اسْتَعَاذَ بِالْوَحْيِ سَلَامًا ۝ وَمَنْ كَفَرَ
فَأَنَّ اللَّهَ عَنِّي عِى الْعَالَمِينَ ۝ قُلْ يَأْمُرُ الْكِتَابُ بِمَا تَعْمَلُونَ
يَأْمُرُ اللَّهُ وَاللَّهُ شَهِيدٌ عَلَى مَا تَعْمَلُونَ ۝ قُلْ يَأْمُرُ الْكِتَابُ
بِمُحْصَنِينَ عَنْ مَسِيلِ اللَّهِ ۝ مَنْ أَمَرَ بِغَيْرِهَا فَوَجْهُ ۝ أَنْتُمْ
شُهَدَاءُ ۝ وَمَا اللَّهُ بِغَافِلٍ عَنِ مَا تَعْمَلُونَ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا
إِنْ ظَلِمْتُمْ أَوْ رُفِقُوا مِنَ الَّذِينَ لَكُمْ الْكِتَابُ بِرُءُوسِهِمْ بِمَا لَكُمْ
وَفِيكُمْ ۝ وَكَذَلِكَ تَعْمَلُونَ ۝ أَنْتُمْ تَقُولُونَ عَلَى اللَّهِ الْوَحْيُ
رَسُولُهُ ۝ وَمَنْ يَتَعَصَمَ بِمِلْفِهِ فَقَدْ هَدَى إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ۝

कुल स-द-कल्लाहु फत्ताबिअ मिल्ल-त
इब्राही-म हनीफ् व मा कान
मिनल्मुशरिकीन (६५) इन्-न अव्व-ल

बैतिव्वुज्जि-अ लिन्नासि लल्लजी बि बक्क-त्तु
मुबार-कं-व हदल्-लिल्-आलमीन ८ (६६) फ्रीहि

आयातुम्-बय्यिनातुम् - मक्कामु इबराही - म०
व मन् द-ख-लहू का-न आमिनत् व०

लिल्लाहि अलन्नासि हिज्जुल्वैति मनिस्तता-अ
इलैहि सबीलन् ७ व मन् क-फ-र

फ इन्नल्ला-ह गनिथ्युत् अनिल्आलमीन (६७)
कुल् या अहलल्किताबि लि-म तक्फुरून

बि आयातिल्लाहि ॐ वल्लाहु शहीदुन्
अला मा तअ-मलून (६८) कुल् या

अहल-किताबि लि - म तसुद्दुन अन्
सबीलिल्लाहि मन् आमन तब्बानहा अि-व-

बि ग्राफिलिन् अम्मा तअ-मलून (६६) य
फरीकम्-मिनल्लजी-न उत्तुल्किता-व यरुदूकुम् व

व कं-फ्र तक्फुरु-न व अन्तुम् तुत्ला अलंकुम्
व मय्यअ-तसिम् बिल्लाहि फ्र-कद् हुदि-य

करेगा (६१) * (मोमिनो !) जब तक तुम उन चीजों में से, जो तुम्हें प्यारी हैं, (खुदा की राह में) खर्च न करोगे, कभी नेकी न हासिल कर सकोगे और जो चीज तुम खर्च करोगे, खुदा उसको जानता है। (६२) बनी इस्राईल के लिए (तौरात के नाज़िल होने से) पहले खाने की सब चीजें हलाल थीं, उनके अलावा, जो याकूब ने खुद अपने ऊपर हराम कर ली थीं। कह दो कि अगर सच्चे हो तो तौरात लाओ और उसे पढ़ो (यानी दलील पेश करो)। (६३) जो इसके बाद भी खुदा पर झूठी बात गढ़े, तो ऐसे लोग ही बे-इंसाफ हैं (६४) कह दो कि खुदा ने सब फ़रमा दिया, पस इब्राहीमी शीन की पैरवी करो, जो सब से बे-ताल्लुक होकर एक (खुदा) के हो रहे थे। और मुश्रिकों में से न बे। (६५) पहला घर जो लोगों (के इबादत करने) के लिए मुकर्रर किया गया था, वही है जो मक्के में है, बरकत वाला और दुनिया के लिए हिदायत। (६६) इसमें खुली हुई निशानियां हैं, जिनमें से एक इब्राहीम के खड़े होने की जगह है। जो शल्लस इस (मुबारक) घर में दाखिल हुआ, उसने अमन पा लिया। और लोगों पर खुदा का हक (यानी फ़र्ज़) है कि जो इस घर तक जाने की कुदरत रखे, वह इसका हज करे, और जो इस हुक्म की तामील न करेगा, तो खुदा भी दुनिया वालों से बे-नियाज़ है। (६७) कहो कि ऐ अहले किताब ! तुम खुदा की आयतों से क्यों कुफ़्र करते हो और खुदा तुम्हारे सब आमाल से बा-ख़बर है। (६८) कहो कि ऐ अहले किताब ! तुम मोमिनों को खुदा के रास्ते से क्यों रोकते हो और बावजूद इसके कि तुम इसे जानते हो, इसमें टेढ़ निकासते हो और खुदा तुम्हारे कामों से बे-ख़बर नहीं। (६९) मोमिनो ! अगर तुम अहले किताब के किसी फ़रीक़ का कहा मान लोगे, तो वे तुम्हें ईमान लाने के बाद काफ़िर बना देंगे। (१००) और तुम किस तरह कुफ़्र करोगे, जबकि तुम को खुदा की आयतें पढ़-पढ़ कर सुनायी जाती हैं और तुम में उसके पैग़म्बर मौजूद हैं। और जिसने खुदा (की हिदायत की रस्सी) को मज़बूत पकड़ लिया, वह सीधे रास्ते लग गया। (१०१) *

१. यहूदी प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कहते थे कि आप को दावा तो हज़रत इब्राहीम अलै० के तरीक़े पर चलने का है, लेकिन जो चीज़ें हज़रत याकूब अलैहिस्सलाम के खानदान में, जो हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के पोते थे, हराम थीं, उन को आप खाते हैं। खुदा ने इसे रद्द किया और फ़रमाया कि तौरात नाज़िल होने से पहले खाने की सब चीज़ें याकूब अलैहिस्सलाम को हलाल थीं, मगर वह जो उन्होंने खुद अपने ऊपर हराम कर ली थीं, उस को सूरत यह है कि हज़रत याकूब एक गांव में रहते थे, वहां उन को अर्कुन्निमा का मर्ज़ हो गया, जिस की वजह से उन को बहुत तकलीफ़ थी, तो उन्होंने नज़्र मानी कि जो चीज़ मुझ को बहुत पसन्द है, वह छोड़ दूंगा, चुनांचे ऊंट का गोश्त खाना छोड़ दिया। याकूब अलैहिस्सलाम के बेटों ने भी उन की पैरवी में ऊंट का गोश्त छोड़ दिया था। मरख़ तौरात के नाज़िल होने से पहले खाने की तमाम चीज़ें हज़रत याकूब पर हलाल थीं और खुदा ने उन को उन पर हराम नहीं किया था। इस वजह से खुदा ने फ़रमाया कि ऐ पैग़म्बर ! यहूद से कह दो कि अगर सच्चे हो तो तौरात लाओ और दिखाओ कि इस में कहां लिखा है कि इब्राहीम अलैहिस्सलाम के वक़्त में ऊंट हराम था। हां, यहूदियों की नाफ़रमानियों और गुनाहों की वजह से कुछ चीज़ें उन पर हराम कर दी गयी थीं, और इस से उन को उन की शरारतों की सज़ा देनी थी।

२. 'यकामे इब्राहीम', जिस का तर्जुमा 'इब्राहीम के खड़े होने की जगह' किया गया है, एक पत्थर है, जिस पर खड़े हो कर काबे की दीवारें चुनते थे। कहते हैं कि इस पत्थर पर हज़रत इब्राहीम के क्रदमों के निशान थे, मगर अब मिट गये हैं।

मोमिनो ! खुदा से डरो, जैसा कि उस से डरने का हक है और मरना तो मुसलमान ही मरना । (१०२) और सब मिल कर खुदा की (हिदायत की) रस्सी को मजबूत पकड़े रहना और अलग-अलग न होना और खुदा की उस मेहरबानी की याद करो, जब तुम एक दूसरे के दुश्मन थे, तो उसने तुम्हारे दिलों में उत्पन्न डाल दी और तुम उसकी मेहरबानी से भाई-भाई हो गये और तुम आग के गढ़ के किनारे तक पहुंच चुके थे, तो खुदा ने तुम को इससे बचा लिया । इस तरह खुदा तुम को अपनी आयतें खोल-खोल कर सुनाता है ताकि तुम हिदायत पाओ । (१०३) और तुम में एक जमाअत ऐसी होनी चाहिए, जो लोगों को नेकी की तरफ बुलाए और अच्छे काम करने का हुक्म दे और बुरे कामों से मना करे, यही लोग हैं जो निजात पाने वाले हैं ।' (१०४) और उन लोगों की तरह न होना जो अलग-अलग हो गये और खुले हुक्मों के आने के बाद एक दूसरे से (खिलाफ व) इस्तिलाफ करने लगे । ये वह लोग हैं, जिनको (क्रियामत के दिन) बड़ा अज्ञाब होगा (१०५) जिस दिन बहुत से मुंह सफ़ेद होंगे और बहुत से मुंह स्याह, तो जिन लोगों के मुंह स्याह होंगे, (उनसे खुदा फ़रमायेगा), क्या तुम ईमान ला कर काफ़िर हो गये थे ? सो (अब) इस कुफ़्र के बदले अज्ञाब (के मजे) चखो । (१०६) और जिन लोगों के मुंह सफ़ेद होंगे, वे खुदा की रहमत (के बागों) में होंगे और उनमें हमेशा रहेंगे । (१०७) ये खुदा की आयतें हैं, जो हम तुम को सेहत के साथ पढ़ कर सुनाते हैं और अल्लाह अहले आलम पर जुल्म नहीं करना चाहता । (१०८) और जो कुछ आसमानों में और जो कुछ ज़मीन में है, सब खुदा ही का है और सब कामों का हज़ूब और अंजाम खुदा ही की तरफ़ है । (१०९) ★

(मोमिनो !) जितनी उम्मतें (यानी क़ौमों) लोगों में पैदा हुई, तुम उन सब से बेहतर हो कि नेक काम करने को कहते हो और बुरे कामों से मना करते हो और खुदा पर ईमान रखते हो और अगर अहले किताब भी ईमान ले आते, तो उन के लिए बहुत अच्छा होता । इन में ईमान लाने वाले भी हैं (लेकिन थोड़े) और अक्सर ना-फ़रमान हैं । (११०) और ये

१. 'नेकी', जो लफ़्ज़ 'ख़ैर' का तर्जुमा किया गया है, उस से मुराद क़ुरआन मजीद की पैरवी है, खुदा ने इसे आसने को फ़र्ज़ करार दिया है कि मुसलमानों में हर ज़नाने में ऐसी जमाअत होनी चाहिए जो भलाई की तरफ़ बुलाये, नेकियों का हुक्म दे और बुराइयों से रोके, ताकि लोग क़ुरआन पर चलें, अच्छे काम करें और बुराइयों से बचते रहें । यह हुक्म ऐसा है कि जिस पर बहुत तवज़ोह और कोशिश से अमल होना चाहिए ताकि लोग कामियाब बनने के हक़दार हो सकें । पर बड़े अफ़सोस की जगह है कि इस ज़माने में इस हुक्म पर अमल नहीं होता, इसी वजह से मुसलमानों की दीनी व दुनियावी हालत अच्छी नहीं रही । उन के हालात देख कर डर होता है कि कहीं ऐसा वक़्त न आ जाए कि ये दुआ करें और वह खुदा के यहां से रद्द कर दी जाए, जैसा कि एक हदीस में आया है कि 'तुम लोगों को चाहिए कि नेक काम करने का हुक्म करो और बुरे कामों से मना करते रहो, नहीं तो उस ज़ात की क़सम ! जिस के हाथ में मेरी जान है कि अल्लाह तआला तुम पर अज्ञाब भेजेगा, फिर तुम खुदा से दुआ मांगोगे और वह उसे कुबूल न करेगा । खुदा मुसलमानों को तीफ़ोक बल्कि कि उस के हुक्मों पर अमल करें ताकि उस की रहमत के हक़दार हों और उस के अज्ञाब से बचे रहें ।

लंय्यजुलूकुम् इल्ला अ-जत् ७ व इय्युकातिलूकुम् युवल्लू - कुमुलअद्वारं
सुम्-म ला युत्सरून (१११) जुरिबत् अलैहिमुज्जिल्लत् ऐनमा सुक्किफू
इल्ला बि हब्लिम्-मिनल्लाहि व हब्लिम्-मिनन्नासि व बा-ऊ बि ग-ज्जबिम्-मिनल्लाहि
व जुरिबत् अलैहिमुल्-मस्कनत् ७ जालि-क बि अन्नहुम् कानू यक्फुरू - न

बि आयातिल्लाहि व यक्तुलूनल्-अम्बियाँ-अ
बिगैरि हक्किक्त् जालि - क बिमा
अ-सक्-व कानू यअ - तदून (११२) लैसू
सबा-अन् भ मिन् अहिलल् - किताबि
उम्मतुन् क्रा-इमतुं य्यत्लू-न आयातिल्लाहि
आना-अल्लैलि व हुम् यस्जुदून (११३)
युअ्मिन्-न बिल्लाहि वल्-योमिल्-आखिरि
व यअ्मुरू-न बिल्मअ-रूफि व यन्हौ-न
अनिल्मुन्करि व युसारिअ - न फ़िल्खैराति
व उला-इ-क मिनस्सालिहीन (११४) व
मा यफ़अल् मिन् खैरिन् फ़ लंयुक्फ़रूहु
वल्लाह अलीमुम् - बिल्मुत्तकीन (११५)

तुम्हें हल्की-सी तक्लीफ़ के अलावा कुछ नुक्सान नहीं पहुंचा सकेंगे और अगर तुमसे लड़ेंगे, तो पीठ फेर कर भाग जाएंगे, फिर उनको मदद भी (कहीं से) नहीं मिलेगी। (१११) ये जहां नज़र आएंगे, ज़िल्लत (को देखोगे कि) उनसे चिमट रही है, अलावा इसके कि ये खुदा और (मुसलमान) लोगों की पनाह में आ जाएं। और ये लोग खुदा के ग़ज़ब में गिरफ़्तार हैं और नादारी उनसे लिपट रही है, यह इस लिए कि खुदा की आयतों से इंकार करते थे और (उस के) पैग़म्बरों को ना-हक़ क़त्ल कर देते थे। यह इस लिए कि ये नाफ़रमानी किए जाते और हृद से बढ़े जाते थे। (११२) ये भी सब एक जैसे नहीं हैं। इन अहले किताब में कुछ लोग (खुदा के हुक्म पर) क़ायम भी हैं, जो रात के वक़्त खुदा की आयतें पढ़ते और (उसके आगे) सज़दे करते हैं। (११३) (और) खुदा पर और आखिरत के दिन पर ईमान रखते और अच्छे काम करने को कहते और बुरी बातों से मना करते और नेकियों पर लपकते हैं और यही लोग नेक लोग हैं। (११४) और ये जिस तरह की नेकी करेंगे, उसकी ना-क़द्री नहीं की जाएगी और खुदा परहेज़गारों को ख़ूब जानता है। (११५) जो लोग काफ़िर हैं, उनके माल और औलाद खुदा के अज़ाब को हरगिज़ नहीं टाल सकेंगे और ये लोग दोख़खी हैं कि हमेशा उसी में रहेंगे। (११६) ये जो माल दुनिया की ज़िगदी में खर्च करते हैं, उसकी मिसाल हवा की-सी है, जिस में सख़्त सर्दों हो और वह ऐसे लोगों की खेती पर जो अपने आप पर जुल्म करते थे, पहले और उसे तबाह कर दे और खुदा ने उन पर कुछ जुल्म नहीं किया, बल्कि ये खुद अपने ऊपर जुल्म कर रहे हैं। (११७) मोमिनो ! किसी ग़ैर (मज़हब के आदमी) को अपना राज़दार न बनाना। ये लोग तुम्हारी ख़राबी (और फ़िला फ़लाने) में किसी तरह की कोताही नहीं नहीं करते और चाहते हैं कि (जिस तरह हो,) तुम्हें तक्लीफ़ पहुंचे। उन की जुबानों से तो दुश्मनी जाहिर हो ही चुकी है और जो (कपट) उनके सीनों में छिपे हैं, वे कहीं ज़्यादा हैं। अगर तुम अक़ल रखते हो तो हमने तुमको अपनी आयतें खोल-खोल कर सुना दी हैं। (११८) देखो, तुम ऐसे (साफ़

हा-अन्तुम् उला-इ तुहिबूनहुम् व ला युहिबूनकुम् व तुअमिन्-न बिल्किताबि
 कुलिहो ६ व इजा लकूकुम् कालू आमन्ता ६ व इजा खलो
 अज्जू अलकुमुल्-अनामि-ल मिनलगाजि ७ कुल् मूतू बि गंजिकुम् ७ इन्नल्ला-ह
 अलीमुम्-बि जातिस्सुद्दूर (११६) इन् तम्सस्कुम् ह-स-नतुन् तमुअहुम् ७ व इन्
 तुसिबुकुम् सय्यिअतुय्यफ्रह् बिहा ७ व इन्
 तस्बिरू व तत्तकू ला यज्जुरकुम् कौदुहुम्
 शैअत् ७ इन्नल्ला - ह बिमा यअ-मलू-न
 मुहीत * (१२०) व इज् गदौ - त
 मिन् अहिल - क तुबव्वि-उल्-मुअमिनी-न
 मकाजि-द लिल्कितालि ७ वल्लाहु समीअुन्
 अलीम् ॥ (१२१) इज् हम्मत्ता-इ-फतानि
 मिन्कुम् अन् तफशला ॥ वल्लाहु
 वलिय्युहुमा ७ व अलल्लाहि फल्य-त-वकलिल्
 मुअमिनून (१२२) व ल-कद् न-स-रकुमुल्लाहु
 बि बद्रिव-व अन्तुम् अजिल्लतुन् ६ फत्तकुल्ला-ह
 ल-अल्लकुम् तश्कुरून (१२३) इज् तकूलु
 लिल्-मुअमिनी-न अलंय्यकिफ-यकुम् अंय्युमिददकुम्
 रब्बुकुम् बिसलासति आलाफिम् - मिनल्
 मला - इकति मुज्जलीन ७ (१२४) बला ॥ इन् तस्बिरू व तत्तकू व
 यअतूकुम् मिन् फोरिहिम् हाजा युमदिद-कुम् रब्बुकुम् बि खम्सति आलाफिम्-
 मिनल्-मला-इकति मुसव्विमीन (१२५) व मा ज-अ-लहुल्लाहु इल्ला बुशरा
 कुम् व लि तत्तमइन-न कुलूबुकुम् बिही ७ व मन्नस्ह इल्ला मिन् अिन्-
 दिल्लाहिल्-अजीजिल्-हकीम ॥ (१२६) लि य-क्-त-अ-त-र-फम्-मिनल्लजी-न
 क-फरू औ यकिबतहुम् फ यन्कलिबू खा-इबीन (१२७) लै-स ल-क मिनल्अमिर
 शैउन् औ यतू-ब अलैहिम् औ युअज्जिबहुम् फ इन्नहुम् जालिमून (१२८)
 व लिल्लाहि मा फिस्समावाति व मा फिल्अज्जि ७ यगफिर
 लि मय्यशा-उ व युअज्जिबु मय्यशा-उ ७ वल्लाहु गफूररहीम * (१२९)

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
 قُلْ وَإِذَا نَادَاؤُا نَادَاؤُا أَسْمَاءُ وَإِذَا نَادَاؤُا نَادَاؤُا أَسْمَاءُ
 مِنَ الْغَيْظِ قُلْ مُؤْتُوا بِغَيْظِكُمْ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِذَاتِ
 الصُّدُورِ ۝ إِنْ تَسْتَكْبِرُوا تَسْخَرُوا وَإِنْ تُقَاتِلُوا يُقَاتِلْكُمْ
 وَيَفْرَحُوا بِمَا وَإِنْ تَصِيرُوا تَصِيرُوا وَتَقُولُوا لَا يَنْصُرُنَا اللَّهُ سَبِيحَ
 إِنَّ اللَّهَ يَسْأَلُونَ مُجِيبًا ۝ وَإِذْ عَدُوَّتْ مِنْ أَيْدِي تَوَيْ
 الْمُؤْمِنِينَ مَقَابِلَ الْفِتَالِ وَاللَّهُ سَابِقُ الْعِلْمِ ۝ إِذْ هَمَّتْ
 قُلُوبُهُمْ وَمَنْ لَكُمْ أَنْ تَشْكُرُوا لِلَّهِ وَلِلْهِمَا وَعَلَى اللَّهِ يَتَوَكَّلُ
 الْمُؤْمِنُونَ ۝ وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللَّهُ بِبَدْرٍ وَأَنْتُمْ أَذِلَّةٌ وَالْقَوْمُ
 لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ۝ إِذْ يَقُولُ لِلسُّوءِينَ أَلَنْ يَكْفِيَكُمْ أَنْ
 تُبَدِّلُوا دِينَكُمْ بِدِينِ اللَّهِ فَتَقُولُونَ لَا تَنْصُرُنَا اللَّهُ سَبِيحَ
 تَصِيرُوا وَتَقُولُوا وَإِنْ يَنْصُرُنَا اللَّهُ سَبِيحَ دِينَكُمْ
 بِمَنْصُورٍ أَلَيْسَ لِلَّهِ الْفَتْكَةُ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ۝ وَاجْعَلْهُ اللَّهُ
 يُدْرِي لَكُمْ وَتَلْبَسُونَ فَلَوْ كُنْتُمْ بِهِ وَمَا تَنْصُرُونَ إِلَّا مِنْ عِنْدِ
 اللَّهِ الْعَزِيزِ الرَّحِيمِ ۝ يَنْصُرُهُمُ اللَّهُ بِبَدْرٍ قُلْ إِنَّ اللَّهَ
 يَكْفِيكُمْ فَيَنْصُرُوا عِبَادَهُ ۝ لَيْسَ ذَلِكَ مِنَ الْأَشْيَاءِ الْوَارِثَةِ
 عَلَيْهِمْ لَا يُعَذِّبُهُمْ وَأَلَهُمْ ظِلْمُونَ ۝ وَلِلَّهِ مَا فِي السَّمَاوَاتِ
 وَمَا فِي الْأَرْضِ يَغْفِرُ لِمَنْ يَشَاءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَشَاءُ وَاللَّهُ

दिल) लोग हो कि उन लोगों से दोस्ती रखते हो, हालांकि वे तुमसे दोस्ती नहीं रखते और तुम सब किताबों पर ईमान रखते हो (और वे तुम्हारी किताब को नहीं मानते) और जब तुमसे मिलते हैं, तो कहते हैं, हम ईमान ले आए और जब अलग होते हैं, तो तुम पर गुस्से की वजह से उंगलियां काट-काट खाते हैं। (उनसे) कह दो कि (बद-बस्तो!) गुस्से में मर जाओ। ख़ुदा तुम्हारे दिलों की बातों को ख़ूब जानता है। (११६) अगर तुम्हें आसूदगी हासिल हो, तो उनको बुरी लगती है और अगर रंज पहुंचे तो खुश होते हैं और अगर तुम तबलीफ़ों की बर्दाश्त और (उन से) किनाराकशी करते रहोगे तो उनका फ़रेब तुम्हें कुछ भी नुकसान न पहुंचा सकेगा। ये जो कुछ करते हैं, ख़ुदा उस पर एहासा किए हुए है। (१२०) *

और (उस वक़्त को याद करो) जब तुम सुबह को अपने घर से रवाना हो कर ईमान वालों को लड़ाई के लिए मोर्चों पर (मौक़ा-बे-मौक़ा) तैनात करने लगे और ख़ुदा सब कुछ सुनता और जानता है। (१२१) उस वक़्त तुम में से दो जमाअतों ने जो छोड़ देना चाहा, मगर ख़ुदा उन का मददगार था और मोमिनों को ख़ुदा ही पर भरोसा रखना चाहिए। (१२२) और ख़ुदा ने बद्र की लड़ाई में भी तुम्हारी मदद की थी और उस वक़्त भी तुम बे-सर व सामान थे, पस ख़ुदा से डरो (और उन एहसानों को याद करो) ताकि शुक्र करो। (१२३) जब तुम मोमिनों से यह कह (कर उनके दिल बढ़ा) रहे थे कि क्या यह काफ़ी नहीं कि परवरदिगार तीन हज़ार फ़रिश्ते नाज़िल कर के तुम्हें मदद दे। (१२४) हां, अगर दिल को मज़बूत रखो और (ख़ुदा से) डरते रहो और काफ़िर तुम पर जोश के साथ यकायकी हमला कर दें तो परवरदिगार पांच हज़ार फ़रिश्ते, जिन पर निशान होंगे, तुम्हारी मदद को भेजेगा (१२५) ● और उस मदद को तो ख़ुदा ने तुम्हारे लिए बशारत (ख़ुश-ख़बरी) का (ज़रिया) बनाया, यानी इस लिए कि तुम्हारे दिलों को उस से तसल्ली हासिल हो, वरना मदद तो ख़ुदा ही की है, जो ग़ालिब (और) हिकमत वाला है। (१२६) (यह ख़ुदा ने) इस लिए (किया) कि काफ़िरों की एक जमाअत को हलाक या उन्हें जलील व मज़्लूम कर दे कि (जैसे आए थे, वैसे ही) नाकाम वापस जाएं। (१२७) (ऐ पैग़म्बर!) इस काम में तुम्हारा कुछ अस्तिथार नहीं। (अब दो शक़लें हैं) या ख़ुदा उनके हाल पर मेहरबानी करे या उन्हें अज़ाब दे कि ये ज़ालिम लोग हैं। (१२८) और जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है, सब ख़ुदा ही का है। वह जिसे चाहे बरूश दे, और जिसे चाहे अज़ाब करे और ख़ुदा बरूशने वाला मेहरबान है (१२९) *

१. बद्र की लड़ाई में जब काफ़िरों को हार और मोमिनों की जीत हुई, तो काफ़िरों ने अगले साल फ़ौज जमा कर के मदीने पर चढ़ाई की और उहद के करीब, जो मदीने के पास एक पहाड़ है, आ उतरे। हज़रत सल्ल० ने महाबा रज़ि० से मशिवरा लिया कि शहर से बाहर निकल कर लड़ना चाहिए या शहर के अन्दर रह कर? उन्होंने सलाह दी कि बाहर निकल कर लड़ना चाहिए, मगर अब्दुल्लाह बिन उबई ने, जो मुनाफ़िकों का सरदार था, मशिवरा दिया कि शहर में रहना चाहिए। हज़रत ने बाहर निकल कर लड़ना मुनासिब समझा, चुनाव आप ने खुद ख़िरह पहन ली और एक हज़ार सहाबा को साथ ले कर मदीना से बाहर निकले। अब्दुल्लाह भी लड़ाई में ग़रीक़ हुआ, मगर ना-ख़ुशी से, क्योंकि उस को सलाह नहीं मानी गयी थी। जब सौत नामी जगह पर (संश्लेष पृष्ठ १०३ पर)

ऐ ईमान वालो ! दोगुना-चौगुना सूद न खाओ और खुदा से डरो, ताकि निजात हासिल करो । (१३०) और (दोजख की) आग से बचो, जो काफ़िरो के लिए तैयार की गयी है । (१३१) और खुदा और उस के रसूल की इताअत करो, ताकि तुम पर रहमत की जाए । (१३२) और अपने परवरदिगार की बख्शिश और बहिश्त की तरफ़ लपको, जिस की चौड़ाई आसमान और ज़मीन के बराबर है और जो (खुदा से) डरने वालों के लिए तैयार की गयी है । (१३३) जो आसूदगी और तगी में (अपना माल खुदा की राह में) खर्च करते हैं और गुस्से को रोकते और लोगों के कुसूर माफ़ करते हैं और खुदा नेक लोगों को दोस्त रखता है । (१३४) और वह कि जब कोई खुला गुनाह या अपने हक़ में कोई और बुराई कर बैठते हैं तो खुदा को याद करते और अपने गुनाहों की बख्शिश मांगते हैं और खुदा के सिवा गुनाह बख़्श भी कौन सकता है ! और जान-बूझ कर अपने कामों पर अड़े नहीं रहते । (१३५) ऐसे ही लोगों का बदला परवरदिगार की तरफ़ से बख्शिश और बाग़ है, जिन के नीचे नहरें बह रही हैं (और) वे उस में हमेशा बसते रहेंगे और (अच्छे) काम करने वालों का बदला बहुत अच्छा है । (१३६) तुम लोगों से पहले भी बहुत से काफ़िआत गुज़र चुके हैं, तो तुम ज़मीन में सँर कर के देख लो कि झुठलाने वालों का कैसा अंजाम हुआ । (१३७) यह (कुरआन) लोगों के लिए खुला बयान और तक्वा वालों के लिए हिदायत और नसीहत है । (१३८) और देखो बे-दिल न होना और न किसी तरह का ग्रम करना, अगर तुम (सच्चे) मोमिन हो, तो तुम ही ग़ालिब रहोगे । (१३९) अगर तुम्हें (हार खाने का) धाव लगा है, तो उन लोगों को भी ऐसा धाव लग चुका है और ये दिन हैं कि हम इन लोगों में बदलते रहते हैं, और इस से यह भी मक्सूद था कि खुदा ईमान वालों को अलग कर दे और तुम में से ग़वाह बनाए और खुदा बे-इन्साफ़ों को पसन्द नहीं करता । (१४०) और यह भी मक्सूद था कि खुदा ईमान वालों को ख़ालिस (मोमिन) बना दे और काफ़िरो को नाबूद (ख़त्म) कर दे । (१४१) क्या तुम यह समझते हो कि (बे-आज़माइश) बहिश्त

(पृष्ठ १०१ का शेष)

पहुँचे तो अब्दुल्लाह लश्कर के एक हिस्से को ले कर लौट चला और उस के बहकाने से क़बीला ख़ज़रज में से बन्नु सलमा ने और क़बीला औस में से बन्नु हारिसा ने, जो फ़ौज के दाहिने-बाएँ मोर्चे पर मुक़र्रर थे, हिम्मत हार बेनी चाही, लेकिन खुदा ने उन के दिलों को मजबूत किया और वे मैदान में जमे रहे । इस आयत में इन्हीं दो जमाअतों, यानी बन्नु सलमा और बन्नु हारिसा का जिक्र है और उन्हीं के बारे में खुदा ने फ़रमाया कि खुदा उन का मददगार था ।

अम् हसिबुम् अन् तदखुलुल्-जन्न-त व लम्मा यअ-लमिल्लाहुल्लजी-न जाहद
मिन्कुम् व यअ-ल-मस्साबिरीन (१४२) व ल-कद् कुन्तुम् तमन्नोनल्मो-त मिन्
कब्लि अन् तल्कोहु फ-कद् रअंतुमूहु व अन्तुम् तन्जुहून ★ (१४३)
व मा मुहम्मदुन् इल्ला रसूलुन् ८ कद् ख - लत् मिन् कब्लिहिस्सुलु

يَعْلَمُ اللَّهُ الَّذِينَ جَاهَدُوا مِنْكُمْ وَالَّذِينَ ظَلَمُوا ۖ وَقَدْ كَانَ
مَنْكُورُ الْمَوْتِ مِنْ قَبْلِ أَنْ تَلْقَوْهُ فَقَدْ رَاسِمًا ۚ وَ أَنْتُمْ
تَنْظُرُونَ ۖ وَمَا أَخَذَ إِلَّا رَسُولٌ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ
أَلَمْ يَأْتِ أَهْلَ الْغَيْبِ عَلَىٰ أَهْلِكَ ۖ وَمَنْ يُظْلَمْ عَلَىٰ
عَظِيمٍ ۖ فَلَنْ يَضُرَّ اللَّهَ شَيْئًا وَسَيَجْزِي اللَّهُ الشَّاكِرِينَ ۖ وَمَا
كَانَ لَطِيفٌ أَنْ يَكُونَ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ فَجَاءَ قَوْمًا ۖ وَمَنْ يُؤْذِ
تُوبَ الْغَيْبِ نَزِيهَةً وَمَنْ يُؤْذِ تُوبَ الْآخِرَةِ نَزِيهَةً وَمَنْ
سَجَّزِي الشَّاكِرِينَ ۖ وَكَانَ مِنْ قَبْلِ قَتْلِ مَعْدِيئِينَ كَيْفَ
قَامَ وَهَؤُلَاءِ أَصَابَهُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَمَا ضَعُفُوا وَمَا
اسْتَكَانُوا ۖ وَاللَّهُ يُحِبُّ الشَّاكِرِينَ ۖ وَمَا كَانَ قَوْلُهُمْ إِلَّا
أَنْ قَالُوا رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا ذُنُوبَنَا وَإِسْرَافَنَا فِي أَمْرِنَا وَثَبِّتْ
أَقْدَامَنَا وَانصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ ۖ فَآتَاهُمُ اللَّهُ تُوبَ
الْغَيْبِ وَحَسَنَ تُوبَ الْآخِرَةِ ۖ وَاللَّهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِينَ ۖ فَأَمَّا
الَّذِينَ آمَنُوا مِنْ أَطِيفَةِ الَّذِينَ كَفَرُوا فَإِنَّهُمْ عَلَّافُ الْعَافِينَ ۖ
فَتَقَبَّلَوا خَيْرِينَ ۖ بَلَىٰ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا ۖ وَهُوَ خَيْرُ الْعَافِينَ ۖ
سَلَفُوا فِي قُلُوبِ الَّذِينَ كَفَرُوا وَالْعُظْمَاءُ ۖ أَمْ لَمْ يَأْتِ
لَهُمْ نَزِيلٌ مِنْ رَبِّهِمْ فَهُمْ كَذَّابُونَ وَمَنْ مَتَى الظَّالِمِينَ ۖ

अ-फ-इम्मा-त ओ कुतिलन्-कलन्तुम् अला
अअ-काबिकुम् ७ व मंयन्कलिब् अला अकिबेहि
फ लंयज्जुरल्ला-ह शैअन् ७ व स-यज्जिल्लाहुश-
शाकिरीन (१४४) व मा कान-लि नफ्सिन्
अन् तमू - त इल्ला बि इजिल्लाहि
किताबम् - मुअज्जलन् ७ व मंयुरिद्
स - वाबदुन्या नुअतिही मिन्हा ८ व
मंयुरिद् स - वाबल् - आखिरति नुअतिही
मिन्हा ७ व स-नज्जिश्-शाकिरीन (१४५)
व क-अय्यिम्-मिन् नबियिन् कात-ल॥म-अह
रिब्बियू-न कसीरुन् ८ फ मा व-हनू लिमा
असाबहुम् फी सबीलिल्लाहि व मा ज़अफू व
मस्तकानू ७ वल्लाहु युहिब्बुस्साबिरीन (१४६)

व मा कान-कौलहुम् इल्ला अन् कालू रब्बनगफिर् लना जुनूबना व
इस्राफना फी अमिरना व सबिबत् अकदामना वन्सुरना अलल्कोमिल् -
काफिरीन (१४७) फ-आताहुमुल्लाहु सवाबदुन्या व हुस्-न सवाबिल्-आखिरति ७
वल्लाहु युहिब्बुल् - मुहिसनीन ★ (१४८) या अय्युहल्लजा - न आमनू
इन् तुतीझुल्लजी-न क-फरू यरुद्दकुम् अला अअ-काबिकुम् फ तन्कलिब् खासिरीन
(१४९) बलिल्लाहु मौलाकुम् ८ व हु-व खैरुनासिरीन (१५०) सनुल्की फी
कुलूबिल्लजी-न क-फरहब्-ब बिमा अशरकू बिल्लाहि मा लम् युनज्जिल
बिही सुल्तानन् ८ व मअ्वाहुमुन्नाह ७ व बिअ-स मस्वज्जालिमीन (१५१)

में जा दाखिल होंगे, हालांकि अभी खुदा ने तुम में से जिहाद करने वालों को तो अच्छी तरह मालूम किया ही नहीं और (यह भी मकसूद है) कि वह साबित-कदम रहने वालों को मालूम करे। (१४२) और तुम मौत (शहादत) के आने से पहले उस की तमन्ना किया करते थे, सो तुम ने उस को आंखों से देख लिया। (१४३) ★

और मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) तो सिर्फ (खुदा के) पैगम्बर हैं। इन से पहले भी बहुत से पैगम्बर हो गुजरे हैं। भला अगर यह मर जाएं या मारे जाएं, तो तुम उल्टे पांव फिर जाओ? (यानी दीन से फिर जाओ?) और जो उल्टे पांव फिर जाएगा, तो खुदा का कुछ नुकसान नहीं कर सकेगा और खुदा शुक्रगुजारों को (बड़ा) सवाब देगा। (१४४) और किसी शस्स में ताकत नहीं कि खुदा के हुक्म के बगैर मर जाए। (उस ने मौत का) वक्त मुकर्रर कर के लिख रखा है और जो शस्स दुनिया में (अपने आमाल का) बदला चाहे, उस को हम यहीं बदला दे देंगे। और जो आखिरत में सवाब का तालिब हो, उस को वहां अज्र अता करेंगे। और हम शुक्रगुजारों को बहुत जल्द (बहुत अच्छा) बदला देंगे। (१४५) और बहुत से नबी हुए हैं जिन के साथ हो कर अक्सर अल्लाह वाले (खुदा के दुश्मनों से) लड़े हैं, तो जो मुसीबतें उन पर खुदा की राह में बांके हुईं, उनकी वजह से उन्होंने ने न तो हिम्मत हारी और न बुझदिली की, न (काफ़िरो से) दबे और खुदा जमाव रखने वालों को दोस्त रखता है। (१४६) और (इस हालत में) उन के मुंह से कोई बात निकलती तो यही कि, ऐ परवरदिगार! हमारे गुनाह और ज्यादतियां जो हम अपने कामों में करते रहे हैं, माफ़ फ़रमा और हम को साबित-कदम रख और काफ़िरो पर फ़तह इनायत फ़रमा। (१४७) तो खुदा ने उन को दुनिया में भी बदला दिया और आखिरत में भी बहुत अच्छा बदला (देगा) और खुदा नेक लोगों को दोस्त रखता है। (१४८) ★

मोमिनो! अगर तुम काफ़िरो का कहा मान लोगे, तो वे तुम को उल्टे पांव फेर (कर मुनंद कर) देंगे, फिर तुम बड़े घाटे में पड़ जाओगे। (१४९) (ये तुम्हारे मददगार नहीं हैं,) बल्कि खुदा तुम्हारा मददगार है और वह सब से बेहतर मददगार है। (१५०) हम बहुत जल्द काफ़िरो के दिलों में तुम्हारा रोब बिठा देंगे, क्योंकि ये खुदा के साथ शिकं करते हैं, जिस की उस ने कोई भी दलील नहीं उतारी और उन का ठिकाना दोखल है, वह ज़ालिमों का बहुत बुरा ठिकाना है। (१५१) और

وَقَدْ صَدَّقَ اللَّهُ وَعْدَهُ إِذْ أَخَذْتُمُ بِرِزْقِهِ حَتَّى إِذَا
فَتَحْتُمُوهُمُ وَمَا عَوَّدُوا فِي الْأَمْرِ وَعَصَيْتُمْ مِنْ بَعْدِ مَا أَرْسَلْنَا
بِجُوعٍ يَمُوتُ مَنْ يُرِيدُ الْفِتْنَةَ وَمِنْكُمْ مَنْ يُرِيدُ الْآخِرَةَ ثُمَّ
صَلَّوْا عَلَى نَبِيِّكُمْ وَقَدْ عَلَّمَاكُمْ وَاللَّهُ ذُو فَضْلٍ عَلَى
الْمُؤْمِنِينَ إِذْ تَضَعُونَ عَلَى الْأَعْقَابِ عَلَى الرُّسُلِ يَذُمُّوهُمْ
فِي الْأَمْرِ مَا كَانُوا عَمَّا بَيْنَكُمْ بَيْنَهُمْ عَزَّابًا مَا كَانُوا وَلَا
مَا أَصَابَكُمْ وَاللَّهُ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ثُمَّ أُنْزِلَ عَلَيْكُمْ مِنْ
بَعْدِ الْفِتْنَةِ أَمْرٌ نَاسًا لِقَضَى طَائِفَةٍ مِنْكُمْ وَطَائِفَةٌ قَدْ
أُفْتِنَتْهُمْ أَنْفُسُهُمْ يَكْفُرُونَ بِاللَّهِ عَزَّ وَجَلَّ عَنِ الْبَيِّنَاتِ يَكْفُرُونَ
هَلْ لَكُمْ مِنَ الْأَمْرِ مِنْ شَيْءٍ قُلْ إِنْ الْأَمْرُ كَانَ بِكُمْ
فِي أَنْفُسِهِمْ مَا كَانَتْ مِنَ اللَّهِ يُكْفُرُونَ لَوْ كَانَ لَكُمْ مِنَ الْأَمْرِ
شَيْءٌ مَا حَاقَلْنَا مُهَنَّا قُلْ لَوْ كُنْتُمْ فِي بُيُوتِكُمْ لَبَدَّدْنَا الَّذِينَ
كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقَتْلُ إِلَى مَضَاجِعِهِمْ وَلِيَبْتَلِيَ اللَّهُ مَا فِي
صُدُورِكُمْ وَلِيَخْفِصَ مَا فِي قُلُوبِكُمْ وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ
الصُّدُورِ إِنَّ الَّذِينَ تَوَلَّوْا أَيْمَانَكُمْ يَوْمَ الشَّعْبِ الْجَنَّةِ كَانُوا
لِنَفْسِهِمُ الشَّيْطَانِ بَعْضُ مَا كَذَّبُوا وَقَدْ عَلَّمَ اللَّهُ عَنْهُمْ
إِنَّ اللَّهَ عَزَّ وَجَلَّ خَبِيرٌ بِأَلْسِنَةِ الَّذِينَ آمَنُوا أَتَاكُونُ كَالَّذِينَ

मंजिल :

खुदा ने अपना वायदा सच्चा कर दिया (यानी) उस वक़्त जबकि तुम काफ़िरों को उस के हुक्म से क़त्ल कर रहे थे, यहां तक कि जो तुम चाहते थे, खुदा ने तुम को दिखा दिया, इस के बाद तुम ने हिम्मत हार दी और (पेशम्बर के) हुक्म में झगड़ा करने लगे और उस की ना-फ़रमानी की, कुछ तो तुम में से दुनिया की स्वाहिश कर रहे थे और कुछ आख़िरत के तालिब। उस वक़्त खुदा ने तुम को उन (के मुकाबले) से फेर (कर भगा) दिया, ताकि तुम्हारी आजमाइश करे और उस ने तुम्हारा कुसूर माफ़ कर दिया और खुदा मोमिन पर फ़ज़ल करने वाला है। (१५२) (वह वक़्त भी याद करने के लायक है,) जब तुम लोग दूर भागे जाते थे और किसी को पीछे फिर कर नहीं देखते थे और अल्लाह के रसूल तुम को तुम्हारे पीछे खड़े बुला रहे थे तो खुदा ने तुम को ग़म पर ग़म पहुंचाया ताकि जो चीज़ तुम्हारे हाथ से जाती रही, या जो मुसीबत तुम पर बाक़ेअ हुई है, इस से तुम ग़मगीन न हो और खुदा सब आमाल से ख़बरदार है। (१५३) फिर खुदा ने ग़म व रंज के बाद तुम पर तसल्ली नाज़िल फ़रमायी (यानी) नींद, कि तुम में से एक जमाअत पर छा गयी और कुछ लोग जिन के जान के लाले पड़ रहे थे, खुदा के बारे में ना-हक़ कुफ़ (के दिनों) जैसे गुमान करते थे और कहते थे कि भला हमारे अस्तियार की कुछ बात है? तुम कह दो कि बेशक सब बातें अल्लाह ही के अस्तियार में हैं, ये लोग (बहुत-सी बातें) दिलों में छिपा रखते थे, जो तुम पर जाहिर नहीं करते थे। कहते थे कि हमारे बस की बात होती तो हम यहां क़त्ल ही न किये जाते। कह दो कि अगर तुम अपने घरों में भी होते तो जिनकी तक्दीर में मारा जाना लिखा था, वे अपनी-अपनी क़त्ल गाहों की तरफ़ ज़रूर निकल आते। इस से गरज यह थी कि खुदा तुम्हारे सीनों की बातों को आजमाए और जो कुछ तुम्हारे दिलों में है, उन को ख़ालिस और साफ़ कर दे और खुदा दिलों की बातों को ख़ूब जानता है। (१५४)

जो लोग तुम में से (उहद के दिन) जबकि (मोमिनों और काफ़िरों की) दो जमाअतें एक दूसरे से गुथ गयीं, (लड़ाई से) भाग गये तो उन के कुछ कामों की वजह से शैतान ने उन को फिसला दिया, मगर खुदा ने उनका कुसूर माफ़ कर दिया। बेशक खुदा बरक़ाने वाला (और) बुर्दबार है।

१. यह उहद की लड़ाई का क्रिस्ता है। इस लड़ाई में, शुरू-शुरू में तो मुसलमान ग़ालिब रहे, मगर बाद में हज़रत सल्ल० की ना-फ़रमानी की वजह से हार हो गयी। ना-फ़रमानी यह हुई थी कि हज़रत ने तीरन्दाजों की एक जमाअत को एक मोर्चे पर लगा कर हुक्म दिया कि तुम यहां खड़े रहना और हरगिज़ न लड़ना। वे लोग तो वहां खड़े हुए और बाक़ी फ़ौज़ लड़ाई में लग गयी। लड़ाई में अल्लाह तआला ने मुसलमानों की मदद की और उन को ग़लूबा दिया। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० कहते हैं कि हज़रत सल्ल० की जैसी मदद अल्लाह तआला ने उहद के दिन की, ऐसी किसी मोर्चे पर नहीं की। जब मुसलमान जीते और काफ़िर हार कर भागने लगे तो, तीरन्दाजों ने बाहा कि मोर्चा छोड़ कर जीत में शामिल हो जाएं और ग़नीमत का माल लें, तो वे मोर्चा छोड़ कर चल दिए। (जोष पृष्ठ १०६ पर)

या अय्युहल्लजी-न आमन् ला तकून् कल्लजी-न क-फरू व कालू लि इख्वानिहम्
इजा ज-रबू फिल्अज्जि ओ कानू गुज्जल्लौ कानू अिन्दना मा मातू व मा
कुतिलू ८ लि यज्अ-लत्लाहु जालि-क हस्-र-तन् फी कुलूबिहम् ७ वल्लाहु
युह्यी व युमीतु ७ वल्लाहु बिमा तअ-मलून बसीर (१५६) व लइन्
कुतिल्लुम् फी सबीलिल्लाहि ओ मुत्तुम्

ल मरिफ-रतुम्-मिनल्लाहि व रहमतुन्
खैरम्मिम्मा यज्मअून (१५७) व लइम्
मुत्तुम् ओ कुतिल्लुम् ल - इलल्लाहि
नुह्शरून (१५८) फ बिमा रहमतुम्-
मिनल्लाहि लिन्-त लहुम् ८ व लौ कुन-त
फज्जन् गलीजल्कलिब लन्फज्जू मिन्
हौलिक ७ फज्ज-फु अन्हुम् वस्तफिफ-लहुम्
व शाविरहुम् फिल्अमिर ८ फ इजा अ-जम-त
फ-त-वक्कल् अ-लत्लाहि ८ इन्नल्ला-ह युहिबुल्-
मु-त-वविकलीन (१५९) इय्यन्सुर-कुमुल्लाहु
फ ला गालि-ब लकुम् ८ व इय्यल्लुलकुम्
फ-मन् जल्लजी यन्सुरुकुम् मिम्बअ-दिही ८ व
अ-लत्लाहि फल्य-त-वक्कलिल् - मुअ्मिन्

(१६०) व मा कान-लि नबिद्यित् अय्यगुल्-ल् ७ व मय्यगुल् यअति बिमा
गल्-न यौमल्क्रियामति ८ सुम-म तुवफ्फा कुल्लु नफिसम्मा-क-स-बत् व हुम्
ला युजलमून (१६१) अफ मनिन्त-ब-अ रिज्जवानल्लाहि क-मम्बा-अ बि स-खतिम्-
मिनल्लाहि व मअ्वाहु जहन्नमु ७ व बिअसल्मसीर (१६२) हुम् द-र-जातुन्
अिन्दल्लाहि ७ वल्लाहु बसीरुम्-बिमा यज्अ-मलून (१६३) ल-कद् मन्नल्लाहु
अ-लल्-मुअ्मिनी-न इज् ब-अ-स फीहिम् रसूलम्मिन् अन्फुसिहिम् यत्लू अलैहिम्
आयातिही व युजक्कीहिम् व युअल्लिमुहुमुल्-किता-ब वल्हिकम-त
व इन् कानू मिन् कब्लु ल - फी ज्जालिम् - मुबीन (१६४)

لَمْ يَكُنْ لَكُمْ دِينٌ قَبْلَ الْإِسْلَامِ ۚ وَالْأَرْضُ أَكْثَرُ عَشْرِينَ
كَانُوا يُعْبُدُونَ مَا مَا كَانُوا وَمَا كَانُوا يُعْبُدُونَ إِلَّا لِلَّهِ ۚ ذَٰلِكَ حَسْرَةٌ فِي
قُلُوبِهِمْ ۚ وَاللَّهُ يَسْمَعُ وَيُبَيِّنُ ۚ وَاللَّهُ يَهْدِي مَن يَشَاءُ ۚ وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ
فَيَقُولُ فِي سُبْحَانَ اللَّهِ أَوْ مَعَهُ لَعْنَةُ اللَّهِ عَلَى الْفَاسِقِينَ ۚ قُلْ لِلَّهِ وَرَحْمَةُ خَيْرٌ
مِّمَّا يَكْتُمُونَ ۚ وَلَٰكِنْ فَتْنَةٌ أَوْ فِتْنَةٌ أَلَّا لِلَّهِ عَشْرُونَ ۚ
فَمَا أَصْحَابُ اللَّهِ إِنَّهُمْ لَكَذِبُونَ ۚ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ
لَا تَقْصُوا مِنْ حَوْلِكَ فَاعْبُدْهُمْ وَاسْتَغْفِرْ لَهُمْ وَكَلِمَاتُهُمْ
فِي الْأَمْرِ ۚ فَإِذَا عَزَمْتَ فَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُتَوَكِّلِينَ ۚ
إِنَّ يَتَصَدَّقُوا اللَّهَ فَلَا غَافِلَ لَكَ ۚ وَإِنْ تَحَذَّرْهُمْ فَسَدَ الْإِدْيَ
يَتَصَدَّقُوا مِنْ بَعْدِي ۚ وَعَلَى اللَّهِ قَلْبُكَ ۚ وَالْمُؤْمِنُونَ ۚ وَمَا
كَانَ لِيَبَيِّنَنَّ أَنْ يَقُولَ ۚ وَمَنْ يَقُولْ يَأْتِ بِسَاعِلٍ يَوْمَ الْقِيَمَةِ
تَعْرِفُوهُ ۚ كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ۚ أَفَمَنْ
أَتَمَّ رِضْوَانُ اللَّهِ لَكُمْ ۚ بَلَّاءُ ۚ وَسُخْطَ مِنَ اللَّهِ وَمَا وَدَّ أَنْ يُجَاهِدَكُمْ
وَيُهَيِّئَ لَكُمُ الْوَيْلَ ۚ وَاللَّهُ يَهْدِي مَن يَشَاءُ ۚ وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ
يَسْتَلُونَ ۚ لَقَدْ مَنَّ اللَّهُ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ إِذْ بَعَثَ فِيهِمْ رَسُولًا
مِّنْ أَنفُسِهِمْ يَتْلُوا عَلَيْهِمْ آيَاتِهِ وَيُزَكِّيهِمْ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتَابَ
وَالْحِكْمَةَ ۚ وَلَنْ تَكُونُوا مِنْ قَبْلِ لَوْ أَنَّ صَلَاتُ الْمُؤْمِنِينَ ۚ أَوْ لَوْ أَنَّ

من

(१५५) मोमिनो ! उन लोगों जैसे ने होना, जो कुफ़ करते हैं और उन के (मुसलमान) भाई जब (खुदा की राह में) सफ़र करें (और मर जाएं) या जिहाद को निकलें (और मारे जाएं) तो उन के बारे में कहते हैं कि अगर वे हमारे पास रहते तो न मरते और न मारे जाते। इन बातों से मसूम यह है कि खुदा इन लोगों के दिलों में अफ़सोस पैदा कर दे और ज़िदगी और मौत तो खुदा ही देता है और खुदा तुम्हारे सब कामों को देख रहा है। (१५६) और अगर तुम खुदा के रास्ते में मारे जाओ या मर जाओ, तो जो (माल व मताअ) लोग जमा करते हैं, उस से खुदा की बख़्शिश और रहमत कहीं बेहतर है। (१५७) और अगर तुम मर जाओ, या मारे जाओ, खुदा के हुज़ूर में ख़रूर इकट्ठे किये जाओगे। (१५८) (ऐ मुहम्मद !) खुदा की मेहरबानी से, तुम्हारी तबियत इन लोगों के लिए नर्म वाक़े हुई है और अगर तुम बुरी तबियत के और सलत-दिल होते, तो ये तुम्हारे पास से भाग खड़े होते, तो उन को माफ़ कर दो और उन के लिए (खुदा से) मफ़िरत मांगो और अपने कामों में उन से मशिवरा लिया करो और जब (किसी काम का) पक्का इरादा कर लो तो खुदा पर भरोसा रखो। बेशक खुदा भरोसा रखने वालों को दोस्त रखता है। (१५९) अगर खुदा तुम्हारा मददगार है, तो तुम पर कोई शालिब नहीं आ सकता और अगर वह तुम्हें छोड़ दे, तो फिर कौन है कि तुम्हारी मदद करे और मोमिनों को चाहिए कि खुदा ही पर भरोसा रखें। (१६०) और कभी नहीं हो सकता कि (खुदा के) पैग़म्बर ख़ियानत करें और ख़ियानत करने वालों को क्रियामत के दिन ख़ियानत की हुई चीज़ (खुदा के सामने) ला हाज़िर करनी होगी। फिर हर शख्स को उसके आमाल का पूरा-पूरा बदला दिया जाएगा और बे-इन्साफ़ी नहीं की जाएगी। (१६१) भला जो शख्स खुदा की खुशनूदी का ताबेअ हो, वह उस शख्स की तरह ख़ियानत कर सकता है, जो खुदा की ना-खुशी में गिरफ़्तार हो और जिस का ठिकाना दोज़ख़ है और वह बुरा ठिकाना है। (१६२) उन लोगों के खुदा के यहां (अलग-अलग और मुस्तलिफ़) दर्जे हैं और खुदा उन के सब आमाल को देख रहा है। (१६३) खुदा ने मोमिनों पर बड़ा एहसान किया है कि उन में उन्हीं में से एक पैग़म्बर भेजे, जो उन को खुदा की आयतें पढ़-पढ़ कर सुनाते और उन को पाक करते और (खुदा की) किताब और दानाई सिखाते हैं और पहले तो ये लोग खुली गुमराही में थे। (१६४) ● (भला यह)

(पृष्ठ १०७ का शेष)

अब्दुल्लाह बिन जुबैर ने जो उन के अफ़सर थे, उन को हर तरह मना किया, मगर उन्होंने ने उन के कहने पर अमल न किया। इधर तो यह सूरत हुई, उधर ख़ालिद बिन वलीद ने, जो उस वक़्त काफ़िरों के साथ थे, पीछे से हमला कर दिया और इस से लड़ाई की शकल बदल गयी यानी जीतने वालों को हार और हार खाने वालों को जीत हुई। खुद हज़रत सल० का चेहरा-ए-मुबारक ज़रूमी हुआ, सामने के चार दांत टूट गये, ख़ूद सर में घुस गया और यह मशहूर हो गया कि आप शहीद हो गये, गरब मुसलमान भ्राम खड़े हुए। उस वक़्त आप फ़रमाते थे कि ऐ खुदा के बन्दो ! मेरे पास आओ, मैं खुदा का पैग़म्बर हूं। जो कोई फिर काफ़िरों पर हमला करेगा, उस को जन्नत मिलेगी।

यम पर यम पहुंचाने से यह मुराद है कि एक तो शहीमत के माल से महलूम हुए, क़त्ल और ज़ख़्मों किये गये, दूसरे हज़रत सल० का शहीद होना सुना और काफ़िरों का ग़ल्बा देखा।

अ-व लम्मा^१ असाबकुम् मुसीबतुन् कद् असन्तुम् मिसलैहा ॥ कुलतुम् अन्ना
हाजा ॥ कुल् हु-व मिन् अन्दि अन्फुसिकुम् ॥ इन्नल्ला - ह अला कुल्लि
शोइन् कदीर (१६५) व मा^१ असाबकुम् योमल्-त-कल् - जम्आनि फबि-इज्-
निल्लाहि व लि-यअ-ल-मल्-मुअ्मिनीन ॥ (१६६) व लि-यअ-ल-मल्लजी-न

नाफकू ६ व की - ल लहुम् तआली
कातिलू फी सबीलिल्लाहि अविदफअ
कालू लो नअ-लमु क़ितालल् - लतबअ-नाकुम्
हुम् लिलकुफिर योमइजित् अवरबु मिन्हुम्
लिल् - ईमानि ६ यकूलू - न बिअफवाहिहिम्
मा लै-स फी कुलूबिहिम् ॥ वल्लाहु अअ-लमु
बिमा यक्तुमून (१६७) अल्लजी-न कालू
लि-इक्वानिहिम् व क-अद् लो अताअना मा
कुतिलू ॥ कुल् फदरऊ अन् अन्फुसिकुमुल्मौ-त
इन् कुन्तुम् सादिकीन (१६८) व ला
तहस-बन्नल्लजी-न कुतिलू फी सबीलिल्लाहि
अम्वातत् ॥ बल् अह्या^१ - उन् अिन् - द
रब्बिहिम् युञ्जकून ॥ (१६९) फरिही - न

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
مِنْ جُنْدِ الْأَنْفِ كُفِّرَ اللَّهُ عَنْ كُلِّ شَيْءٍ وَقَدْ رَزَقَ مَا أَمَّاكُمْ
يَوْمَ الْفَتْحِ الْجَنَّةَ فَمَنْ لَمْ يَلْقَ اللَّهَ وَلَيْسَ اللَّهُ بِغَافِلٍ
الَّذِينَ تَأْتُوا وَقِيلَ لَهُمْ تَقَالُوا قَالُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَلَوْ أَنَّا
قَالُوا لَوْ نَعْلَمُ قَالُوا لَا نَعْلَمُ قَالُوا لَوْ نَعْلَمُ يَوْمَ الْقِيَامِ
الَّذِينَ يَتُوبُونَ إِلَى اللَّهِ وَيَصْلِحُونَ قَالُوا لَوْ نَعْلَمُ قَالُوا
مَا كُنَّا نَعْلَمُ قَالُوا لَوْ نَعْلَمُ قَالُوا لَوْ نَعْلَمُ قَالُوا لَوْ نَعْلَمُ
مَا كُنَّا نَعْلَمُ قَالُوا لَوْ نَعْلَمُ قَالُوا لَوْ نَعْلَمُ قَالُوا لَوْ نَعْلَمُ
وَلَا تَحْزَنْ الَّذِينَ يَنْفَعُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَمْ لَا يَعْلَمُ الْبِلْ أَحْمَدُ
عِنْدَ رَبِّهِمْ يُرْزَقُونَ ۖ فَمَنْ أَمَّاكُمْ اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ
وَيَسْتَشِيرُونَ ۖ وَالَّذِينَ تَأْتُوا يَوْمَ الْقِيَامِ مِنْ خَلْقٍ
عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يُنْزَلُونَ ۖ يَسْتَشِيرُونَ بِرَبِّهِمْ ۖ مِنَ اللَّهِ
فَضْلٌ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يُغَيِّرُ أَمْرَ الْمُؤْمِنِينَ ۚ وَالَّذِينَ آمَنُوا
بِأَوَّلِ الرِّسَالَةِ مِنْ بَعْدِ مَا أَمَّاكُمْ الْقَوْمَ الَّذِينَ آمَنُوا
وَنُفِّرُوا وَتَغْفِرُوا ۚ وَالَّذِينَ قَالُوا لَمْ يَأْتِ الْفِتْنَةَ إِلَّا الْفِتْنَةُ
قَدْ جُمِعُوا لَكُمْ كَافَّةً ۖ فَمَنْ دَعَاهُمْ إِلَى الْإِيمَانِ قَالُوا خُذُوا
وَنُفِّرُوا الْوَيْلَ ۖ قَالُوا لَوْ نَعْلَمُ قَالُوا لَوْ نَعْلَمُ قَالُوا لَوْ نَعْلَمُ

बिमा^१ आताहुमुल्लाहु मिन् फज़िलही ॥ व यस्तविशरू - न बिल्लजी - न
लम् यल्हकू बिहिम् मिन् खल्फिहिम् ॥ अल्ला खौफुन् अलैहिम्
व ला हुम् यहज़नून (१७०) यस्तविशरू-न बिनिअ-मतिम्-मिनल्लाहि व
फज़िलिव ॥ - व अन्नल्ला - ह ला युज़ीअु अजरल् - मुअ्मिनीन ★ (१७१)
अल्लजीनस्तजाबू लिल्लाहि वरसूलि मिम्बअ - दि मा^१ असाबहुमुल्करहु
लिल्लजी - न अहसन् मिन्हुम् वत्तकौ अजरत् अजीम ६ (१७२)
अल्लजी-न काल लहुमुन्नासु इन्नन्ना-स कद् ज-मअ लकुम् फरुशौ हुम्
फज़ादहुम् ईमानव-व कालू हस्बुनल्लाहु व निअ-मल् - वकील (१७३)

क्या (बात है कि) जब (उहुद के दिन काफ़िरों के हाथ से) तुम पर मुसीबत वाक़ेअ हुई, हालांकि (बद की लड़ाई में) इस से दोगुनी मुसीबत तुम्हारे हाथ से उन पर पड़ चुकी है, तो तुम चिल्ला उठे कि (हाय) आफ़त (हम पर) कहां से आ पड़ी। कह दो कि यह तुम्हारी ही शामते-आमाल है, (तुम ने पंगम्बर के हुक्म के खिलाफ़ किया) बेशक़ खुदा हर चीज़ पर कुदरत रखता है। (१६५) और जो मुसीबत तुम पर दोनों जमाअतों के मुकाबले के दिन वाक़ेअ हुई, सो खुदा के हुक्म से (वाक़ेअ हुई) और इस से यह मसूद था कि खुदा मोमिनों को अच्छी तरह मालूम कर ले और मुनाफ़िक़ों को भी मालूम कर ले। (१६६) और (जब) उन से कहा गया कि आओ खुदा के रास्ते में लड़ो या (काफ़िरों के) हमलों को रोको, तो कहने लगे कि अगर हम को इस की ख़बर होती तो हम ज़रूर तुम्हारे साथ रहते। ये उस दिन ईमान के मुकाबले में कुफ़ से ज़्यादा करीब थे। मुंह से वे बातें कहते हैं जो उन के दिल में नहीं हैं और जो कुछ ये छिपाते हैं, खुदा उसे ख़ूब जानता है। (१६७) ये खुद तो (लड़ाई से बच कर) बैठ ही रहे थे, मगर (जिन्होंने खुदा की राह में जानें कुर्बान कर दीं) अपने (उन) भाइयों के बारे में भी कहते हैं कि अगर हमारा कहा मानते तो क़त्ल न होते। कह दो कि अगर सच्चे हो तो अपने ऊपर से मौत को टाल देना। (१६८) जो लोग खुदा की राह में मारे गये, उन को मरे हुए न समझना, (वे मरे हुए नहीं हैं), बल्कि खुदा के नज़दीक़ जिन्दा हैं और उनको रोज़ी मिल रही है। (१६९) जो कुछ खुदा ने उन को अपने फ़ज़ल से बरक़श रखा है, उस में ख़ुश हैं, और जो लोग उन के पीछे रह गये और (शहीद हो कर) उन में शामिल नहीं हो सके, उन के बारे में ख़ुशियां मना रहे हैं कि (क़ियामत के दिन) उन को भी न कुछ ख़ौफ़ होगा और न वे शर्मनाक होंगे। (१७०) और खुदा के इनामों और फ़ज़ल से ख़ुश हो रहे हैं और इस से कि खुदा मोमिनों का बदला बर्बाद नहीं करता। (१७१) ☆ जिन्होंने ज़रूम खाने के बावजूद खुदा और रसूल (के हुक्म) को कुबूल किया, जो लोग इन में नेक और परहेज़गार हैं, उन के लिए बड़ा सवाब है। (१७२) (जब) उनसे लोगों ने आ कर बयान किया कि काफ़िरों ने तुम्हारे (मुकाबले के) लिए (बड़ी फ़ौज) जमा की है, तो उन से डरो, तो उन का ईमान और ज़्यादा हो गया और कहने लगे हम को खुदा काफ़ी है

१. यानी जो शहीद नहीं हुए और लड़ाई में लगे हुए हैं।

फक्कलबू बि निअ - मतिम् - मिनल्लाहि व फज्जिलिलम् यम्सहम् सूउव ॥ व
- तबअ रिज्जवानल्लाहि ॥ वल्लाहु जू फज्जिलन् अजीम (१७४) इन्नमा
जालिकुमुशशेतानु युखव्विफु ओलिया - अह ॥ फ ला तखाफू - हुम् व खाफूनि
इन् कुन्तुम् मुअमिनीन (१७५) व ला यहजुन्कल्लजी - न युसारिअ - न
फिल्कुफिर ८ इन्नहुम् लय्यजुर्लला - ह शैअन् ७

युरीदुल्लाहु अल्ला यज्-अ-ल लहुम् हज्जअन्
फिल्आखिरति ८ व लहुम् अजाबुन् अजीम
(१७६) इन्नल्लजीनशत-र-वुल् - कुफ - र
बिल्ईमानि लय्यजुर्लला-ह शैअन् ८ व
लहुम् अजाबुन् अलीम (१७७) व ला
यह्स-बन्नल्लजी-न क-फरु अन्नमा नुम्ली लहुम्
खैरल्ल-अन्कुसिहिम् ७ इन्नमा नुम्ली लहुम्
लि यज्दादू इस्मन् ८ व लहुम् अजाबुम् -
मुहीन (१७८) मा कानल्लाहु लि य-ज-रल्-
मुअमिनी-न अला मा अन्तुम् अलेहि
हत्ता यमीजल्-खबी - स मिनत्तय्यबि ७ व
मा कानल्लाहु लि युत्लि-अकुम् अल्लौबि
व लाकिन्नल्ला - ह यज्तबी मिरंसुलिही

سُورَةُ آلِ إِيمْرَانَ ٧٨
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
ذِكْرُ الشَّيْطَانِ يُخَوِّفُ أَوْلِيَاءَهُ ۖ فَلَا تَخَافُوهُمْ وَخَافُوا إِنَّا
إِنَّمَا عُزْمُومِينَ ۖ وَلَا يَحْزُنُكَ الَّذِينَ يَسَاءُرُونَ فِي الْكُفْرِ
إِنَّمَا لَكُمْ عَذَابُ اللَّهِ شَيْئًا يُرِيدُ اللَّهُ الْأَلْحِقَ لَكُمْ حَقًّا فِي الْخَيْرِ
وَلَكُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ۚ إِنَّ الَّذِينَ أَشْرَكُوا الْكُفْرَ بِالْإِيمَانِ لَنْ
يَعْمُرُوا اللَّهُ شَيْئًا وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۚ وَلَا يَحْزِنُ الَّذِينَ قَرَأُوا
الْكِتَابَ لَكُمْ خَيْرٌ لَا تَغْصِبُهُمْ إِيْمَانُكُمْ لَهُمْ لِيَزِدَّادَ الْإِيمَانِ
وَلَهُمْ عَذَابٌ مُهِينٌ ۚ مَا كَانَ اللَّهُ لِيَذَرَ الْمُؤْمِنِينَ عَلَى
مَا أَنْتُمْ عَلَيْهِ حَتَّى يَمِيزَ الْخَبِيثَ مِنَ الطَّيِّبِ ۚ وَمَا كَانَ اللَّهُ
لِيُطْلِعَكُمْ عَلَى الْغَيْبِ وَلَكِنَّ اللَّهَ يَجْزِي مَنْ رَسَلَهُ مِنْ خَيْرٍ
فَإِصْبِرُوا لِلَّهِ وَمِلَّةِ رَسُولِهِ ۚ وَإِنْ تُؤْمِنُوا وَتَتَّقُوا فَلَكُمْ أَجْرٌ عَظِيمٌ
وَلَا يَحْزِنُ الَّذِينَ يَبْكُلُونَ مِمَّا آتَاهُمُ اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ هُوَ
خَيْرٌ لَكُمْ مِنْ هُوَرٍ ۚ لَهُمْ سَيِّطُونَ مِمَّا بَدَّلُوا بِهِ يَوْمَ
الْقِيَامَةِ ۚ وَلَهُمْ مِزَانُ الْوِزْنِ ۚ وَالَّذِينَ قَالُوا إِنَّ اللَّهَ قَدِيرٌ
وَلَقَدْ سَمِعَ اللَّهُ قَوْلَ الَّذِينَ قَالُوا إِنَّ اللَّهَ قَدِيرٌ ۚ
عَنِ الْغَيْبَةِ سَكْنَبَ مَا قَالُوا وَقَالَهُمُ الْأَنْبِيَاءُ بِغَيْرِ حَقٍّ
وَقَوْلُوهَا عَذَابُ الْبَرِيَّةِ ۚ ذَلِكَ بِمَا قَدَّمْتُمْ إِلَهِكُمْ

मय्यशा-उ ॥ फ आमिन् बिल्लाहि व रुसुलिही ८ व इन् तुअमिन् व तत्तकू
फ-लकुम् अज्जुन् अजीम (१७९) व ला यह्सबन्नल्लजी-न यव्वलू-न बिमा आता-
हुमुल्लाहु मिन् फज्जिलही हु-व खैरल्लहुम् ७ बल् हु-व शरल्लहुम् ७ सयुतव्वकू-न
मा बखिलू बिही योमल्क्रियामति ७ व लिल्लाहि मीरासुसमावाति वल्अजि
वल्लाहु बिमा तअ-मलू-न खबीर * (१८०) ल-कद् समिल्लाहु कौलल्लजी-न
कालू इन्नल्ला-ह फकीरव - व नहनु अग्नियाउ सनक्तुबु मा कालू व
कल्लहुमुल्-अम्बिया-अ बिगैरि हक्कव ७ व नकलू जूकू अजाबल्-हरीक (१८१)

और वह बहुत अच्छा कारसाज है। (१७३) फिर वे खुदा की नेमतों और उस की मेहरबानी के साथ (खुशी-खुशी) वापस आए, उन को किसी तरह का नुकसान न पहुंचा और वे खुदा की खुशनुदी के ताबेअ रहे और खुदा बड़े फ़रल का मालिक है। (१७४) यह (खौफ़ दिलाने वाला) तो मीतान है, जो अपने दोस्तों से डराता है, तो अगर तुम मोमिन हो, तो उन से मत डरना और मुझी से डरते रहना। (१७५) और जो लोग कुफ़ में जल्दी करते हैं, उन (की वजह) से शर्मगीन न होना, यह खुदा का कुछ नुकसान नहीं कर सकते, खुदा चाहता है कि आखिरत में उन को हिस्सा न दे और उन के लिए बड़ा अज़ाब (तैयार) है। (१७६) जिन लोगों ने ईमान के बदले कुफ़ खरीदा, वे खुदा का कुछ नहीं बिगाड़ सकते और उन को दुख देने वाला अज़ाब होगा। (१७७) और काफ़िर लोग यह न ख्याल करें कि हम जो उन को मुहलत दिए जाते हैं, तो यह उन के हक़ में अच्छा है। (नहीं, बल्कि) हम उन को इस लिए मुहलत देते हैं कि और गुनाह कर लें। आखिरकार उन को ज़लील करने वाला अज़ाब होगा। (१७८) (लोगो!) जब तक खुदा नापाक को पाक से अलग न कर देगा, मोमिनों को इस हाल में, जिस में तुम हो, हरगिज़ नहीं रहने देगा और अल्लाह तुम को ग़ैब की बातों से भी मुत्तला नहीं करेगा, हां, खुद अपने पैग़म्बरों में से जिसे चाहता है, चुन लेता है, तो तुम खुदा पर और उस के रसूलों पर ईमान लाओ और अगर ईमान लाओगे और परहेज़गारी करोगे तो तुम को बड़ा बदला मिलेगा। (१७९) जो लोग माल में जो खुदा ने अपने फ़रल से उन को अता फ़रमाया है, बुल्ल (कंजूसी) करते हैं, वे इस बुल्ल को अपने हक़ में अच्छा न समझें (वह अच्छा नहीं,) बल्कि उन के लिए बुरा है। वे जिस माल में बुल्ल करते हैं, क्रियामत के दिन उस का तौक़ (हार) बना कर उन की गरदनों में डाला जाएगा और आसमानों और ज़मीन का वारिस खुदा ही है और जो अमल तुम करते हो, खुदा को मालूम है। (१८०) ★

अल्लाह ने उन लोगों का क़ौल सुन लिया है, जो कहते हैं कि खुदा फ़कीर है और हम अमीर हैं, ज़िये जो कहते हैं, हम इसको लिख लेंगे और पैग़म्बरों को जो ये ना-हक़ क़त्ल करते रहे हैं, उसको भी (लिख लेंगे) और (क्रियामत के दिन) कहेंगे कि जलती (आग के) अज़ाब के मजे चखते रहो। (१८१)

यह उन कामों की सजा है जो तुम्हारे हाथ आगे भेजते रहे हैं और खुदा तो बन्दों पर बिल्कुल जुल्म नहीं करता। (१८२) जो लोग कहते हैं कि खुदा ने हमें हुक्म भेजा है कि जब तक कोई पैगम्बर हमारे पास ऐसी नियाज ले कर न आए, जिस को आग आ कर खा जाए, तब तक हम उस पर ईमान न लाएंगे। (ऐ पैगम्बर ! इन से) कह दो कि मुझ से पहले कई पैगम्बर तुम्हारे पास खुली हुई निशानियां ले कर आए और वह (मोजजा) भी लाये, जो तुम कहते हो, तो अगर सच्चे हो तो तुम ने उन को कत्ल क्यों किया ?' (१८३) फिर अगर ये लोग तुम को सच्चा न समझें, तो तुम से पहले बहुत-से पैगम्बर खुली हुई निशानियां और सहीफे (ग्रंथ) और रोशन किताबें ले कर आ चुके हैं और लोगों ने उन को भी सच्चा नहीं समझा। (१८४) हर जान को मौत का मज्जा चखना है और तुम को क्रियामत के दिन तुम्हारे आमाल का पूरा-पूरा बदला दिया जाएगा, तो जो शरूस जहन्नम की आग से दूर रखा गया और बहिश्त में दाखिल किया गया, वह मुराद को पहुंच गया। और दुनिया की जिन्दगी तो धोखे का सामान है। (१८५) (ऐ ईमान वालो !) तुम्हारे माल व जान में तुम्हारी आजमाइश की जाएगी और तुम अहले किताब से और उन लोगों से, जो मुशिरक हैं, बहुत-सी तकलीफ की बातें सुनोगे तो अगर सन्न और परहेजगारी करते रहोगे तो ये बड़ी हिम्मत के काम हैं। (१८६) और जब खुदा ने उन लोगों से, जिन को किताब इनायत की गयी थी, इकरार लिया कि (जो कुछ इस में लिखा है) उस में साफ-साफ बयान करते रहना और (उस की किसी बात) को न छिपाना, तो उन्होंने ने उस को पीठ पीछे डाल दिया और उस के बदले थोड़ी-सी कीमत हासिल की। ये जो कुछ हासिल करते हैं, बुरा है। (१८७) जो लोग अपने (ना-पसन्द) कामों से स्रुष्ट होते हैं और (पसन्दीदा काम) जो करते नहीं, उन के लिए चाहते हैं कि उन की तारीफ की जाए, उन के बारे में ख्याल न करना कि वह अज्ञाब से रस्तगार हो जाएंगे (और उन्हें दर्द देने वाला अज्ञाब होगा)। (१८८) और आसमानों और जमीन की बादशाही खुदा ही की है और खुदा हर चीज पर कादिर है। (१८९) *

वेशक आसमानों और जमीन की पैदाइश और रात और दिन के बदल-बदल कर आने-जाने में

१. अल्लाह तबाला ने कुछ पैगम्बरों को यह मोजजा बख्शा था कि उन की उम्मत के लोग जो कुर्बानी और नज़्र व नियाज खुदा के लिए करते, तो उस को मैदान में रख देते। आसमान से आग आती और उस को जला देती, तो यह समझा जाता कि कुर्बानी खुदा की जनाब में कुबूल हुई। यहूदी आखिरी पैगम्बर हजरत मुहम्मद सल्ल० से कहने लगे कि खुदा ने हम को यह हुक्म दे रखा है कि हम किसी पैगम्बर पर ईमान न लाएं, जब तक यह मोजजा न देख लें, तो आप भी यह मोजजा दिखाएं। खुदा ने फरमाया, तुम उन के जवाब में कह दो कि कई पैगम्बर मुझ से पहले कई तरह के मोजजे ले कर आए और यह मोजजा भी, जो तुम कहते हो, लेकिन अगर तुम सच्चे हो, तो इन पैगम्बरों को कत्ल क्यों करते रहे ? मतलब यह कि पैगम्बरों को मुठलाना और ना-फरमानी करना तुम्हारी आवत में दाखिल है।

अल्लजी-न यज्कुरुनल्ला-ह क्रियामंव-व कुअदव्-व अला जुनुबिहिम् व् य-त-फवकरु-न फ्री
खल्किस्समावाति बल्अज्जि ८ रब्बना मा ख-लक-त हाजा बातिलन् ८ सुब्हान - क

फ क्रिना अजाबन्नार (१६१) रब्बना इन्न-क मन् तुदखिलिन्ना-र फ-कद्
अरुबैतहू, व मा लिज्जालिमी - न मिन् अन्सार (१६२) रब्बना इन्नना

समिअ-ना मुनादिय्युनादी लिर्इमानि अन्
आमिन् बि रब्बिकुम् फ आमिन्ना

रब्बना फग्फिलेना जुनुबना व कफ्फिर् अन्ना
सय्यिआतिना व तवफफना म-अल् - अवरार

(१६३) रब्बना व आतिना मा वअत्तना
अला रुसुलि-क व ला तुखिज्जना योमल्-

क्रियामति ८ इन्न-क ला तुखलिफुल्-मीआद
(१६४) फस्तजा-ब लहुम् रब्बुहुम् अन्नी

ला उज्जीअ अ-म-ल आमिलिम्-मिन्कुम् मिन्
ज-करिन् औ उन्सा ८ बअ-जुकुम् मिम्बअ-जिन् ८

फल्लजी-न हाजरू व उ-खरिजू मिन्
दियारिहिम् व ऊजू फ्री सबीली व कातलू

व कुतिल् लउकफिफरन-न अन्हम्
सय्यिआतिहिम् व ल उदखिलन्न-हुम् जन्नातिन्

तजरी मिन् तह्तिहल्-अन्हार ८ सवाबम्-मिन्
हस्तुस्सवाब (१६५) ला यगुरन्न-क तक्रल्लुबुल्लजी-न क-फरू फिल बिलाद

(१६६) मताअुन् कलीलुन् सुम् - म मअ्वाहुम् जहन्न-मु ८ व बिअ्सल्मिहाद
(१६७) लाकिनिल्-लजीनत्तक्री रब्बहुम् लहुम् जन्नातुन् तजरी मिन् तह्तिहल्-

अन्हार खालिदी-न फ्रीहा नुजुल्मिन् अन्दिल्लाहि ८ व मा अन्दल्लाहि
खंरल्लिल्-अवरार (१६८) व इन्-न मिन् अह्लिल्किताबि लमय्युअ्मिनु

बिल्लाहि व मा उन्जि-ल इलैकुम् व मा उन्जि - ल इलैहिम् खाशिअी - न

الَّذِينَ يَكْفُرُونَ بِاللَّهِ قِيَمًا وَفَعُولًا وَعَلَىٰ عُنُقِهِمُ الْوَيْلُ مِنَ اللَّهِ
فِي عَذَابِ النَّارِ وَالْأَرْضُ رَبًّا مَا عُلِّقَتْ هَذِهِ الْأَشْيَاءُ
فِيهَا عَذَابُ الْكَافِرِ رَبَّنَا إِنَّكَ مَنْ تُذِلُّ الْكَلْبَ فَقَدْ خَضَعْتَ
وَمَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ أَنْصَابٍ رَبَّنَا إِنَّكَ سَمِيعٌ خَبِيرٌ
لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ أَصْلَحْ لَنَا دِينَنَا رَبَّنَا فَاعْفُوْا عَنْهُمَا
وَكُفِّرْ عَنْ سَائِرِنَا وَتَوَكَّلْنَا إِنَّكَ عَلِيمٌ خَبِيرٌ
عَلَىٰ رُءُوسِهِمْ أَتَيْنَا وَتَوَكَّلْنَا إِنَّكَ عَلِيمٌ خَبِيرٌ
فَأَسْمَعْ لَهُمْ نَجْمًا أَنْ لَا أَصْبَحَ عَلَىٰ عَمَلٍ يَكْفُرُونَ
ذِكْرُ الْأَنْفَىٰ بِمَعْنَىٰ مَنْ بَعْضُ الْقَائِلِينَ هَامِلُونَ وَالْمَجْرُومُونَ
مِنْ دِيَارِهِمْ وَأَوْفَىٰ سَبِيلِي وَتَوَكَّلْنَا عَلَىٰ الْآخِرِينَ عَلَيْهِمْ
سَاءَ بَعْضُهُمْ وَأَلَدُ جَهَنَّمَ خَالِدٌ فِيهَا مِنْ عَذَابِ الْأُولَىٰ ذُرِّيَّةً
مِنْ عَنِ النَّارِ وَاللَّهُ عِنْدَ حُكْمِ الْكَافِرِ لَا يَكْفُرُونَ
الَّذِينَ كَفَرُوا فِي الْبِلَادِ سَاءَ أَجَلٌ لَّهُمْ وَأَوْفَىٰ سَبِيلِي
وَلَيْسَ الْبِرَّاءُ كَإِثْمِ الَّذِينَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ لَهُمْ جَزَاءٌ تَجَرُّونَ
مِنْ عَذَابِ الْآخِرِينَ خَالِدِينَ فِيهَا مِنْ عَنِ النَّارِ وَمَا جَعَلَ
اللَّهُ عَذَابَ الْآخِرَةِ إِلَّا أَشَدَّ وَأَنَّ مِنَ الْفِتَنِ أَكْثَرُ لَكُمْ مِنَ اللَّهِ
مَا أَنْزَلَ الْبُكْرَةَ وَمَا أَنْزَلَ الْبُكْرَةَ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكَافِرِينَ

अकल वालों के लिए निशानियां हैं। (१६०) जो खड़े और बैठे और लेटे (हर हाल में) खुदा को याद करते और आसमान और जमीन की पैदाइश में गौर करते (और कहते) हैं कि ऐ परवरदिगार! तू ने इस (मस्लूक) को बे-फायदा नहीं पैदा किया। तू पाक है, तो (क्रियामत के दिन) हमें दोखल के अजाब से बचाइयो। (१६१) ऐ परवरदिगार! जिस को तूने दोखल में डाला, उसे रसवा किया और जालिमों का कोई मददगार नहीं। (१६२) ऐ परवरदिगार! हम ने एक पुकारने वाले को सुना कि ईमान के लिए पुकार रहा था, (यानी) अपने परवरदिगार पर ईमान लाओ, तो हम ईमान ले आये। ऐ परवरदिगार! हमारे गुनाह माफ़ फ़रमा और हमारी बुराइयों को हम से दूर कर और हम को दुनिया से नेक बन्दों के साथ उठा। (१६३) ऐ परवरदिगार! तू ने जिन-जिन चीजों के हम से अपने पैगम्बरों के जरिए से वायदे किये हैं, वह हमें अदा फ़रमा और क्रियामत के दिन हमें रसवा न कीजियो। कुछ शक नहीं कि तू वायदा के खिलाफ़ नहीं क़रता। (१६४) तो उन के परवरदिगार ने उन की दुआ कुबूल कर ली। (और फ़रमाया) कि मैं किसी अमल करने वाले के अमल को, मर्द हो या औरत ज़ाया नहीं करता। तुम एक दूसरे की जिम्स हो, तो जो लोग मेरे लिए वतन छोड़ गये और अपने घरों से निकाले गये और सताये गये और लड़े और क़त्ल किये गये, मैं उन के गुनाह दूर कर दूंगा और उन को बहिश्तों में दाखिल करूंगा, जिन के नीचे नहरें बह रही हैं। (यह) खुदा के यहां से बदला है और खुदा के यहां अच्छा बदला है। (१६५) (ऐ पैगम्बर!) काफ़िरों का शहरों में चलना-फिरना तुम्हें धोखा न दे। (१६६) (यह दुनिया का) थोड़ा-सा फ़ायदा है, फिर (आखिरत में) तो उन का ठिकाना दोखल है और वह बुरी जगह है। (१६७) लेकिन जो लोग अपने परवरदिगार से डरते रहे, उन के लिए बाग़ हैं, जिन के नीचे नहरें बह रही हैं (और) उन में हमेशा रहेंगे। (यह) खुदा के यहां से (उन की)

१. यानी काफ़िर जो शहरों में तिजारत के लिए चलते-फिरते और बहुत-सा माल पैदा करते हैं, तुम इस का ख्याल न करना और यह न समझना कि यह भारी फ़ायदा है, क्योंकि फ़ना होने वाला है और दुनिया के तमाम फ़ायदे, आखिरत के सवाब के मुकाबले में बहुत कम हैं। उन काफ़िर ताजिरो और मालदारों का आखिरत का ठिकाना दोखल है और खुदा ने जो मुसलमानों के लिए तैयार कर रखा है, वे बहिश्त के बाग़ हैं, जिन के आराम बाकी हैं और हमेशा रहेंगे।

मेहमानी है और जो कुछ खुदा के यहां है, वह, नेकों के लिए बहुत अच्छा है। (१६८) ● और कुछ अहले किताब ऐसे भी हैं, जो खुदा पर और उस (किताब) पर, जो तुम पर नाज़िल हुई, और उस पर जो उन पर नाज़िल हुई, ईमान रखते हैं और खुदा के आगे आजिजी करते हैं और खुदा की आयतों के बदले थोड़ी-सी कीमत नहीं लेते। यही लोग हैं, जिन का बदला उस के परवरदिगार के यहां तैयार है। और खुदा जल्द हिसाब लेने वाला है। (१६९) ऐ अहले ईमान ! (काफ़िरो के मुकाबले में) साबित-क़दम रहो। और इस्तिक़्ामत (जमाव) रखो और (मोचों पर) जमे रहो और खुदा से डरो, ताकि मुराद हासिल करो। (२००) ★



४ सूर: निसा ६२

सूर: निसा मदनी है और इसमें एक सौ सतहत्तर आयतें और चौबीस रुकूअ हैं
शुरू खुदा का नाम लेकर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

लोगो ! अपने परवरदिगार से डरो, जिसने तुमको एक शरूस से पैदा किया * (यानी पहले) उस से उसका जोड़ा बनाया, फिर उन दोनों से कसरत से मर्द व औरत (पैदा करके धरती पर) फैला दिए और खुदा से जिस के नाम को तुम ज़रूरत पूरी करने का ज़रिया बनाते हो, डरो, रिश्तेदारी (काट देने) से (बचो)। कुछ शक नहीं कि खुदा तुम को देख रहा है। (१) और यतीमों का माल (जो तुम्हारे क़ब्ज़े में हो) इनके हवाले कर दो और उनके पाकीजा (और उम्दा) माल को (अपने ख़राब और) बुरे माल से न बदलो और न उनका माल अपने माल में -मिला कर खाओ कि यह बड़ा सख्त गुनाह है। (२) और अगर तुमको इस बात का डर हो कि यतीम लड़कियों के बारे में ईसाफ़ न कर सकोगे, तो उन के सिवा जो औरतें तुम को पसन्द हों, दो-दो या तीन-तीन या चार-चार, उनसे निकाह कर लो और अगर इस बात का डर हो कि सब औरतों से बराबर का ब्यवहार न कर सकोगे, तो एक औरत (काफ़ी है) या लौंडी, जिस के तुम मालिक हो, इस से तुम बे-इन्साफी से बच जाओगे। (३) और औरतों को उन के महल खुशी से दे दिया करो, हां, अगर वे अपनी खुशी से उसमें से कुछ तुम को छोड़ दें तो उसे खुशी-खुशी खा लो। (४) और बे-अक्लों को उन का माल जिसे खुदा ने तुम लोगों के लिए रोज़ी का ज़रिया बनाया है मत दो, (हां,) उसमें से उनको खिलाते

वन्तलुल् - यतामा हत्ता इजा ब-लगुनिका-ह ८ फ इन् आनस्तुम् मिन्हम्
 वशदन् फदफअ इलैहिम् अम्वालहुम् ८ व ला तअकुलूहा इस्राफव - व
 बिदारत् अय्यवबलू व मन् कान गनिय्यत् फल्यस्तअ-फिफ ८ व मन् कान
 फकीरत् फल्यअकुल् बिल्मअ - रुफि ८ फ इजा द-फअ - तुम् इलैहिम्
 अम्वालहुम् फ अरिहद् अलैहिम् ८ व कफा

बिल्लाहि हसीबा (६) लिर्रिजालि नसीबुम्-
 मिम्मा त-र-कल्-वालिदानि वल्अवरबू-न ८ व
 लिन्निसा-इ नसीबुम्मिम्मा त-र-कल्-वालिदानि
 वल्अवरबू-न ८ मिम्मा कल्-ल मिन्ह् ओ कसु-र
 नसीबुम्-मफरूजा (७) व इजा ह-ज-रल्
 किस्म-त उलुक्कुर्दा वल्यतामा वल्मसाकीनु
 फरबुकूहुम् मिन्ह् व कूलू लहुम् कौलम्
 मअ-रुफा (८) वल्यरुशालजी-न लौ त-र-कू
 मिन् खलिफहिम् जुरिय्य-तन् ज़िआफन् खाफू
 अलैहिम् ८ फल्यत्तकुल्ला - ह वल्यकूलू
 कौलन् सदीदा (९) इन्नल्लजी-न यअकुलू-न
 अम्वालल्-यतामा जुल्मन् इन्नमा यअकुलू-न
 फी बुतूनिहिम् नारत् ८ व स-यस्लौ - न

सजीरा ★ (१०) यूसी - कुमुल्लाहु फी औलादिकुम् ८ लिज्ज - करि मिस्लु
 हज़्ज़िल्-उन्सयैनि ८ फ इन् कुन्-न निसा-अन् फौकस्-नतेनि फ लहुन्-न सुलुसा मा
 त-र-क ८ व इन् कानत् वाहि-द-तन् फ लहन्निस्फु ८ व लि अ-ब-वैहि लि कुल्लि
 वाहिदिम्मिन्-हुमस्सुदुसु मिम्मा त-र-क इन् कान लह व-लदुत् ८ फ इल्सम्
 यकुल्लह व-लदु-व-न वरिसहू अ-बवाहु फ लि-उम्-मिहिस्सुलुसु ८ फ इन् कान लह
 इल्वतुन् फ लि उम्-मिहिस्सुदुसु मिम्बअ-दि वसिय्यातियूसी बिहा ओदेन
 आबा-उकुम् व अन्ना-उकुम् ला तदरू-न अय्यहुम् अकरबु लकुम् नफअन्
 फरीज - तम् - मिनल्लाहि ८ इन्नल्ला - ह का - न अलीमन् हकीमा (११)

النَّاسِ ۝ اِنَّا نَسْخَرُهُمْ وَيُسْخَرُونَ ۝ اِذَا دَعَا الْيَهُودَ اَسْمَا لَهُمْ
 وَلَا يَخْلَعُهَا اَسْمَا لَهَا اِنْ يَكْبُرُوا ۝ وَمَنْ كَانَ غِيْبًا
 فَلَيْسَ فَيَضْرِبُ ۝ وَمَنْ كَانَ قَوِيًّا فَلْيَسْلُخْ بِالْمَرْبُورِ ۝ اِذَا
 دَعَا الْيَهُودَ اَسْمَا لَهُمْ فَاَسْمَدُوا عَلَيْهِمْ ۝ وَلَقَدْ اَلَيْسَ حَسْبًا
 الْيَهُودَ ۝ وَمَنْ يَتَذَكَّرْ اَلْوَالِدَيْنِ وَالْاَقْرَبِيْنَ وَلَيْسَ غِيْبًا
 وَمَنْ يَتَذَكَّرْ اَلْوَالِدَيْنِ وَالْاَقْرَبِيْنَ وَمَنْ كَانَ مِنْهُمْ غِيْبًا
 فَغِيْبًا ۝ اِذَا حَضَرَ الْقِيَمَةَ اُولُو الْقُرْبَىٰ وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسْكِيْنَ
 فَارْزُقُوهُمْ مِنْهُ ۝ وَقُولُوا لَهُمْ قَوْلًا مَعْرُوفًا ۝ وَلْيَسْخَرِ الْيَهُودَ
 لَوَلِيًّا مِنْهُمْ ۝ وَلْيَكُنْ لَهُمْ اُولُو الْقُرْبَىٰ وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسْكِيْنَ
 وَلْيَكُنْ لَهُمْ اُولُو الْقُرْبَىٰ ۝ اِنْ الْيَهُودَ يَخْلَعُ اَسْمَا لَهَا
 فَلْيَسْلُخْ اِلَيْهَا يَخْلَعُ ۝ اِنْ يَكْبُرُوا ۝ وَلَقَدْ اَلَيْسَ حَسْبًا
 الْيَهُودَ ۝ اِذَا حَضَرَ الْقِيَمَةَ اُولُو الْقُرْبَىٰ وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسْكِيْنَ
 فَارْزُقُوهُمْ مِنْهُ ۝ وَقُولُوا لَهُمْ قَوْلًا مَعْرُوفًا ۝ وَلْيَسْخَرِ
 الْيَهُودَ لَوَلِيًّا مِنْهُمْ ۝ وَلْيَكُنْ لَهُمْ اُولُو الْقُرْبَىٰ وَالْيَتَامَىٰ
 وَالْمَسْكِيْنَ وَلْيَكُنْ لَهُمْ اُولُو الْقُرْبَىٰ ۝ اِنْ يَكْبُرُوا ۝ وَلَقَدْ
 اَلَيْسَ حَسْبًا الْيَهُودَ ۝ اِذَا حَضَرَ الْقِيَمَةَ اُولُو الْقُرْبَىٰ
 وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسْكِيْنَ فَارْزُقُوهُمْ مِنْهُ ۝ وَقُولُوا لَهُمْ
 قَوْلًا مَعْرُوفًا ۝ وَلْيَسْخَرِ الْيَهُودَ لَوَلِيًّا مِنْهُمْ ۝ وَلْيَكُنْ
 لَهُمْ اُولُو الْقُرْبَىٰ وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسْكِيْنَ وَلْيَكُنْ لَهُمْ
 اُولُو الْقُرْبَىٰ ۝ اِنْ يَكْبُرُوا ۝ وَلَقَدْ اَلَيْسَ حَسْبًا الْيَهُودَ ۝

और पहनाते रहो और उनसे मुनासिब बातें कहते रहो। (५) और यतीमों को बालिग होने तक काम-काज में लगाये रखो, फिर (बालिग होने पर) अगर उनमें अकल की पुस्तगी देखो, तो उनका माल उनके हवाले कर दो और इस डर से कि वे बड़े हो जाएंगे (यानी बड़े होकर तुम से अपना माल वापस ले लेंगे) उसको फ़िज़ूलखर्ची और ज़ल्दी में न उड़ा देना। जो शरूस खुशहाल हो उसको (ऐसे माल से क़तई तौर पर) परहेज़ रखना चाहिए और जो बद-हाल हो, वह मुनासिब तौर पर (यानी ख़िदमत के बराबर) कुछ ले ले और जब उन का माल उनके मुपुर्द करने लगे तो गवाह कर लिया करो और हक़ीक़त में तो खुदा ही गवाह (और) हिसाब लेने वाला काफ़ी है। (६) जो माल मां-बाप और रिश्तेदार छोड़ मरें, थोड़ा हो या बहुत, उसमें मदों का भी हिस्सा है और औरतों का भी। ये हिस्से (खुदा के) मुक़रर किये हुए हैं। (७) और जब मीरास की तक्सीम के वक़्त (ग़ैर वारिस) रिश्तेदार और यतीम और मुहताज़ आ जाएं, तो उन को भी उस में से कुछ दे दिया करो और मीठी बातों से पेश आया करो। (८) और ऐसे लोगों को डरना चाहिए जो (ऐसी हालत में हों कि) अपने बाद नन्हें-नन्हें बच्चे छोड़ जाएं और उन को उन के बारे में डर हो (कि उनके मरने के बाद इन बेचारों का क्या हाल होगा) पस चाहिए कि ये लोग खुदा से डरें और माकूल बात कहें। (९) जो लोग यतीमों का माल नाजायज़ तौर पर खाते हैं, वे अपने पेट में आग भरते हैं और दोज़ख़ में डाले जाएंगे। (१०) ✱

खुदा तुम्हारी औलाद के बारे में तुम को इशार्द फ़रमाता है कि एक लड़के का हिस्सा दो लड़कियों के हिस्से के बराबर है और अगर मरने वाले की औलाद सिर्फ़ लड़कियां ही हों (यानी दो या दो से ज्यादा, तो कुल तर्कों में उन का दो तिहाई और अगर सिर्फ़ एक लड़की हो तो उस का हिस्सा आधा और मय्यत के मां-बाप का यानी दोनों में हर एक का तर्क में छठा हिस्सा, बशर्त कि मय्यत के औलाद हो, और अगर औलाद न हो और सिर्फ़ मां-बाप ही उस के वारिस हों तो एक तिहाई मां का हिस्सा। और अगर मय्यत के भाई भी हों तो मां का छठा हिस्सा (और मय्यत के तर्क की यह तक्सीम) दसीयत (के पूरा करने) के बाद, जो उसने की हो या क़र्ज़ के (अदा होने के बाद जो उसके ज़िम्मे हो, अमल में आएगी) तुम को मालूम नहीं कि तुम्हारे बाप-दादों, बेटों-पोतों में से फ़ायदे के लिहाज़ से कौन तुम से ज्यादा करीब है। ये हिस्से खुदा के मुक़रर किये हुए हैं और खुदा सब कुछ जानने वाला और हक़मत वाला है। (११) और जो माल तुम्हारी औरतें छोड़ मरें, अगर

व लकुम् निस्फु मा त-र-क अज्वाजुकुम् इल्लम् यकुल्लहुन्-न व-लदुन्
फ इन् कान-न लहुन्-न व-लदुन् फ लकुमुर्बुअ मिम्मा त-र-क-न मिम्बअ-दि
वसिय्यातिथ्यूसी-न बिहा ओदेनिन् ॥ व लहुन्नर्बुअ मिम्मा त-र-कतुम् इल्लम्
यकुल्लकुम् व-लदुन् फ इन् का-न लकुम् व-लदुन् फ लहुन्नस्सुमुनु मिम्मा

तरक्तुम् मिम्बअ-दि वसिय्यातिन् तूस-न बिहा
ओदेनिन् ॥ व इन्का-न रजुलुय-यूसु कलाल-तन्
अविमर-अतुव्- व लह् अखुन् ओ उखतुन्
फ लि कुल्लि वाहिदिम् - मिन्हुमस्सुदुसु

फ इन् कानू अक्स-र मिन् जालि-क फहुम्
शुरका-उ फिस्सुलुसि मिम्बअ-दि वसिय्यातिथ्यूसी
बिहा ओदेनिन् ॥ सै - र मुजार्रिन्
वसिय्यातम् - मिनल्लाहि ॥ वल्लाहु अलीमुन्
हलीम ॥ (१२) तिल्-क हुदुदुल्लाहि

व मय्युतिअल्ला-ह व रसूलह् युदखिल्हु
जन्नातिन् तजरी मिन् तह्तिहल् - अन्हार
खालिदी-न फ्रीहा ॥ व जालिकल्-फोजुल् -
अजीम (१३) व मय्यअ-सिल्ला-ह व रसूलह्

व य-त-अ-द-द हुदुदुहु युदखिल्हु नारन् खालिदन् फ्रीहा ॥ व लह् अज्वाबुम्-
मुहीन (१४) वल्लाती यअतीनल्-फाहि-श-त मिन् निसा-इकुम् फस्तशिहद्
अलैहिन्-न अब-अ-तुम्-मिन्कुम् फ इन् शहिद् फ अम्सिकू-हुन-न फिल्लुयुति हत्ता
य-त-वफा-हुन्नलौतु ओ यज-अ-लल्लाहु लहुन्-न सबीला (१५) वल्लज्जानि
यअ्तियानिहा मिन्कुम् फ आजूहुमा फ इन् ताबा व अस्लहा फ अज-रिज्ज
अन्हुमा ॥ इन्ल्ला-ह कान-न तव्वाबरहीमा (१६) इन्नमसौबतु अ - लल्लाहि
लिल्लजी-न यअ-मलूनस्सू-अ बि जहालतिन् सुम् - म यतूब-न मिन् करीबिन्
फ उला-इ-क यतुबुल्लाहु अलैहिम् ॥ व कानल्लाहु अलीमत् हकीमा (१७)

فَوَيْضَةٌ مِنَ اللَّهِ لَكَ اللَّهُ كَانَ عَلِيمًا ۝ وَلَكِنْ يَضَعُ مَا كَانَ
أَوَّلَهُمْ لَكَ لَكَ لَكَ لَكَ لَكَ لَكَ لَكَ لَكَ لَكَ لَكَ لَكَ لَكَ لَكَ
وَمَا تَرَكُوا مِنْ بَعْدِ وَصِيَّتِهِمْ يَوْمَئِذٍ بِهَا أَوْفَى وَلَهُنَّ الْوَرِثَةُ
وَمَا تَرَكُوا مِنْ بَعْدِ وَصِيَّتِهِمْ لَكَ لَكَ لَكَ لَكَ لَكَ لَكَ لَكَ
الَّذِينَ وَمَا تَرَكُوا مِنْ بَعْدِ وَصِيَّتِهِمْ لَكَ لَكَ لَكَ لَكَ لَكَ
كَانَ رَجُلٌ يَوْمَئِذٍ كَلَامًا أَوْ أَمْرًا أَوْ لَمْ يَكُنْ فَيَكُنْ وَأَمْرًا
وَمِنْهُمَا الشُّدُوسُ وَلَهُنَّ كَلَامًا أَكْثَرُ مِنَ اللَّهِ لَهُمْ فَكَرًا فِي الشُّدُوسِ
وَمِنْ بَعْدِ وَصِيَّتِهِمْ يَوْمَئِذٍ بِهَا أَوْفَى وَلَهُنَّ الْوَرِثَةُ مِنَ اللَّهِ
وَاللَّهُ عَلِيمٌ خَلِيدٌ ۝ بَلَاكَ حُدُودُ اللَّهِ وَمَنْ يُطِيعِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ
يُدْخِلْهُ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا وَلَئِكَ
الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۝ وَمَنْ يَعْصِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَيَتَّقِ حُدُودَ
يُدْخِلْهُ نَارًا خَالِدًا فِيهَا وَلَهُ عَذَابٌ عَظِيمٌ ۝ وَالَّذِينَ يَأْتِينَ
الْفَاحِشَةَ مِنْ بَعْدِ مَا نُهُوا عَنْهَا يُنْفَخُ عَنْهُمْ أَوَّاهًا وَهُمْ
يُسْمَعُونَ ۝ وَالَّذِينَ يَأْتُونَ فِي الْبُيُوتِ حَتَّى يَخْرُجُوا مِنْهَا
لَهُنَّ سَبْعَةٌ ۝ وَالَّذِينَ يَأْتُونَ فِي الْبُيُوتِ حَتَّى يَخْرُجُوا مِنْهَا
أَسْلَمًا فَأَعْرِضُوا عَنْهُمْ إِنَّ اللَّهَ كَانَ تَوَّابًا رَحِيمًا ۝ وَإِذَا التَّوْبَةُ
عَلَى اللَّهِ وَالْيَوْمِئِذِينَ يَسْمَعُونَ الصَّوْتِ يَسْمَعُونَ بَيْنَهُمْ مَنْ قَرَّبُوا

उन के औलाद न हो, तो उस में आधा हिस्सा तुम्हारा और अगर औलाद हो तो तर्क में तुम्हारा हिस्सा चौथाई। (लेकिन यह बांट वसीयत (के पूरा करने) के बाद, जो उन्होंने की हो या कर्ज के (अदा होने के बाद, जो उन के ज़िम्मे हो) की जाएगी और जो माल तुम (मर्द) छोड़ मरो, अगर तुम्हारे औलाद न हो तो तुम्हारी औरतों का उसमें चौथा हिस्सा। और अगर औलाद हो तो उन का आठवां हिस्सा। (ये हिस्से) तुम्हारी वसीयत (के पूरा करने के) बाद जो तुम ने की हो और कर्ज के (अदा होने के बाद) बांटे जाएंगे। और अगर ऐसे मर्द या औरत की मीरास हो, जिसके न बाप हो, न बेटा, मगर उसके भाई या बहन हो तो उनमें से हर एक का छठा हिस्सा और अगर एक से ज्यादा हों तो सब एक तिहाई में शरीक होंगे। (ये हिस्से भी) वसीयत व कर्ज के अदा होने के बाद, बशर्तकि उनसे मय्यत ने किसी का नुकसान न किया हो (तकसीम किये जाएंगे।) यह खुदा का फ़रमान है और खुदा निहायत इल्म वाला (और) निहायत हिल्म वाला है। (१२) ये (तमाम हुक्म) खुदा की हदें हैं और जो आदमी खुदा और उसके पैग़म्बर की फ़रमांवरदारी करेगा, खुदा उसको जन्नतों में दाख़िल करेगा, जिन में नहरें बह रही हैं, वे उनमें हमेशा रहेंगे और यह बड़ी कामियाबी है। (१३) और जो खुदा और उसके रसूल की ना-फ़रमानी करेगा, और उस की हदों से निकल जाएगा, उस को खुदा दोज़ख़ में डालेगा, जहां वह हमेशा रहेगा और उस को ज़िल्लत का अज़ाब होगा। (१४) ★

मुसलमानो! तुम्हारी औरतों में जो बद-कारी कर बैठें, उन पर अपने लोगों में चार आदमियों की गवाही लो। अगर वे (उन की बद-कारी की) गवाही दें, तो इन औरतों को घरों में बंद रखो, यहां तक कि मीत उन का काम तमाम कर देया खुदा उन के लिए कोई और रास्ता (पैदा) करे। (१५) और जो मर्द तुम में से बदकारी करें, तो उनको ईज़ा (तक्लीफ़) दो, फिर अगर वे तौबा कर लें और भले बन जाएं तो उनका पीछा छोड़ दो। बेशक खुदा तौबा कुबूल करने वाला (और) मेहरबान है। (१६) खुदा उन्हीं लोगों की तौबा कुबूल करता है, जो नादानी से बुरी हरकत कर बैठते हैं, फिर ज़ल्द तौबा कर लेते हैं, पस ऐसे लोगों पर खुदा मेहरबानी करता है और वह सब कुछ जानता (और) हिकमत वाला है। (१७) और ऐसे लोगों की तौबा कुबूल नहीं होती

व लेसतित्तीबतु लिल्लजी-न यअ - मलूनस् - सथियआति ८ हत्ता इजा ह-अ-र
अ-ह-द-हुमुल्मोतु का-ल इन्नी तुब्तुल्आ-न व लल्लजी-न यमूतू-न व हुम्
कुपफारुन् ७ उला - इ - क अअ - तद्ना लहुम् अजाबन् अलीमा (१८) या
अय्युहल्लजी - न आमन् ला पहिल्लु लकुम् अन् तरिसुन्निसा - अ करहन्

व ला तअञ्जुलूहुन्-न लि तज्हबू बि बअञ्जि
मा आतंतुमूहुन्-न इल्ला अय्यअती-न
बि फाहिशतिम्-मुबय्यिनतिन् ६ व आशिरू
हुन्-न बिल्मअ-रुफि६फ इन् करिस्तुमूहुन्-न
फ असा अन् तकरहू शैअव्-व यज्-अ-लल्लाहु
फ्रीहि खैरन् कसीरा (१६) व इन्

अरत्तुमुस्तिब्दा-ल जौजिम्मका - न जौजिव् - व
 आतेतुम् इह्दा - हुन् - न क्रिन्तारन् फ ला
 तअख्जु मिन्हु शैअन् ५ अ - तअख्जूनह
 बुहतानव-व इस्मम्-मुबीना (२०) व
 कै-फ तअख्जूनह व कद् अफ्ज़ा बअ-जुकुम्
 इला बअ-ज़िव्-व अ-खज्-न मिन्कुम् मीसाकन्
 गलीजा (२१) व ला तन्किह मा

न-क-ह आर्वा-उकुम् मिनन्सि-इ इल्ला मा क्रद् स-लफ् इन्नहू का - न
फाहिशतुव - व मवतन् व सा - अ सबीला (२२) हरिमत् अलैकुम्
उम्महातुकुम् व बनातुकुम् व अ-ख-वातुकुम् व अम्मातुकुम् व खालातुकुम् व
बनातुलअखि व बनातुल - उस्ति व उम्महातु - कुमुल्लाती अज्रअ - नकुम् व
अ-ख-वातुकुम् मिनर्जाअति व उम्महातु निसा-इकुम् व रबा-इबु - कुमुल्लाती
फ्री हूजरिकुम् मिन्-निसा-इकुमुल्लाती द-खलुम् बिहिन्-न फ इल्लम् तकून
दखलुम् बिहिन्-न फ ला जुना-ह अलैकुम् व हला-इलु अर्ना-इ-
कुमुल्लाजी - न मिन् अस्लाबिकुम् ॥ व अन् तज्मअू बैनल् - उस्तैनि
इल्ला मा क्रद् स-लफ् इन्नल्ला-ह का-न राफरर्हीमा ॥ (२३)

जो (सारी उम्र) बुरे काम करते रहे, यहाँ तक कि जब उन में से किसी की मौत आ मौजूद हो, तो उस वक्त कहने लगे कि अब मैं तौबा करता हूँ और न उनकी (तौबा कुबूल होती है) जो कुफ़ की हालत में मरें। ऐसे लोगों के लिए हमने दर्दनाक अज़ाब तैयार कर रखा है। (१८) मोमिनो! तुमको जायज़ नहीं कि जबरदस्ती औरतों के वारिस बन जाओ और (देखना) इस नीयत से कि जो कुछ तुमने उन को दिया है उसमें से कुछ ले लो, उन्हें (घरों में) मत रोक रखना। हाँ अगर वे खुले तौर पर बद-कारी करें, (तो रोकना मुनासिब नहीं) और उनके साथ अच्छी तरह से रहो-सहो। अगर वह तुम को ना-पसन्द हों तो अजब नहीं कि तुम किसी चीज़ को ना-पसन्द करो और खुदा उसमें बहुत-सी भलाई पैदा कर दे। (१९) और अगर तुम एक औरत को छोड़ कर दूसरी औरत करनी चाहो और पहली औरत को बहुत-सा माल दे चुके हो, तो उसमें से कुछ मत लेना। भला तुम ना-जायज़ तौर पर और खुले जुल्म से अपना माल उससे वापस लोगे? (२०) और तुम दिया हुआ माल किस तरह वापस ले सकते हो, जबकि तुम एक दूसरे के साथ सोहबत कर चुके हो और ने तुम से पक्का अहद भी ले चुकी हैं। (२१) और जिन औरतों से तुम्हारे बाप ने निकाह किया हो, उन से निकाह मत करना, मगर (जाहिलियत में) जो हो चुका, (सो हो चुका), यह निहायत बे-हयाई और (खुदा की) ना-खुशी की बात थी और बहुत बुरा दस्तूर था। (२२) ★

तुम पर तुम्हारी माएं और बेटियाँ, बहनें और फूफियाँ और खालाएं और भतीजियाँ और भांजियाँ और वे माएं, जिन्होंने तुम को दूध पिलाया हो,^१ और रज़ाअी बहनें और सासें हुराम कर दी गयी हैं और जिन औरतों से तुम सोहबत कर चुके हो, उन की लड़कियाँ, जिन्हें तुम पाला करते हो, (वे भी तुम पर हुराम हैं), हाँ अगर उनके साथ तुम ने सोहबत न की हो, तो (उनकी लड़कियों के साथ निकाह कर लेने में) तुम पर कुछ गुनाह नहीं और तुम्हारे सगे बेटों की औरतें भी और दो बहनों का इकट्ठा करना भी (हुराम है), मगर जो हो चुका, (सो हो चुका)^२ बेशक खुदा बलशने

१. यानी दाइयाँ कि दूध पिलाने के एतबार से वे भी तुम्हारी माएं हैं।

२. हदीस मरीफ में कुफी और भतीजी और खाला और भांजी का जमा करना भी हुराम है।

वाला (और) रहम वाला है। (२३) और शौहर वाली औरतें भी (तुम पर हराम हैं), मगर वे जो (क्रोध होकर लौडियों की शक्ल में) तुम्हारे कब्जे में आ जाएं। यह हुक्म खुदा ने तुमको लिख दिया है और इन महरमात (यानी जो हराम कर दी गयीं) के अलावा और औरतें तुम को हलाल हैं, इस तरह से कि माल खर्च करके उनसे निकाह कर लो, बशर्ते कि (निकाह से) भकसूद पाक-दामनी कायम रखनी हो, न कि शहूवत पूरी करनी हो। तो जिन औरतों से तुम फ़ायदा हासिल करो, उनका मद्द जो मुकर्रर किया हो, अदा कर दो और अगर मुकर्रर करने के बाद आपस की रज़ामंदी से मद्द में कमी-बेशी कर लो, तो तुम पर कुछ गुनाह नहीं। बेशक खुदा सब कुछ जानने वाला (और) हिक्मत वाला है। (२४) और जो शस्स तुम में से मोमिन आज़ाद औरतों (यानी बीवियों) से निकाह करने की कुदरत न रखे, तो मोमिन लौडियों में ही, जो तुम्हारे कब्जे में आ गयी हों (निकाह कर ले) और खुदा तुम्हारे ईमान को अच्छी तरह जानता है। तुम आपस में एक दूसरे के हम-जिस हो, तो उन लौडियों के साथ उनके मालिकों से इज़ाज़त हासिल करके निकाह कर लो और दस्तूर के मुताबिक उन का मद्द भी अदा कर दो, बशर्ते कि पाकदामन हों, न ऐसी कि खुल्लम-खुल्ला बद-कारी करें और न पदों की आड़ में दोस्ती करना चाहें। फिर अगर निकाह में आकर बद-कारी कर बैठें, तो जो सज़ा आज़ाद औरतों (यानी बीवियों) के लिए है, उनकी आधी उस को (दी जाए), यह (लौंडी के साथ निकाह करने की) इज़ाज़त उस शस्स को है जिसे गुनाह कर बैठने का डर हो और अगर सब करो तो यह तुम्हारे लिए बहुत अच्छा है और खुदा बख़्शने वाला मेहरबान है। (२५) ★

खुदा चाहता है कि (अपनी आयतें) तुम से खोल-खोल कर बयान फ़रमाए और तुम को अगले लोगों के तरीक़े बताए और तुम पर मेहरबानी करें और खुदा जानने वाला (और) हिक्मत वाला है। (२६) और खुदा तो चाहता है कि तुम पर मेहरबानी करे और जो लोग अपनी स्वाहिशों के पीछे चलते हैं, वे चाहते हैं कि तुम सीधे रास्ते से भटक कर दूर जा पड़ो। (२७) खुदा चाहता है कि तुम पर से बोझ हल्का करे और इंसान (कुदरती तौर पर) कमज़ोर पैदा हुआ है। (२८)

१. यानी 'शस्स हब' की औरतें अगर ख़ाविद वाली हों, तो भी हराम नहीं, जबकि दाख़ल हब से निकलें और उन के साथ ख़ाविद न आएँ, तब मुबाह (जायज़) हैं, अगर उन के ख़ाविद भी मुसलमान हो जाएँ, तो अपनी जोर से लें।

या अय्युहल्लजी-न आमनू ला तअकुलू अम्बालकुम् बेनकुम् बिल्बातिलि इल्ला
अन् तकून तिजा-र-तन् अन् तराजिम्-मिन्कुम् व ला तक्तुलू अन्फुसकुम्
इन्नल्ला-ह का-न बिकुम् रहीमा (२६) व मय्यफअल् जालि-क अद्वानव्-व अल्मन्
फ सो-फ नुस्वीहि नारत् व का-न जालि-क अ-लल्लाहि यसीरा (३०) इन् तजतनिव्

कबा-इ-र मा तुन्ही-न अन्हु नुकफफिर् अन्कुम्
सय्यिआतिकुम् व नुदखिल्कुम् मुद-ख-लन् करीमा
(३१) व ला त-तमन्नौ मा फज्जलल्लाहु
बिही बअ-ज्जकुम् अला बअ-ज्जिन् लिर्रिजालि
नसीबुम् - मिम्मक्तसबू व लिन्निसा - इ
नसीबुम्-मिम्मक्तसब-न वस्अलुल्ला - ह मिन्
फज्जिलही इन्नल्ला-ह का-न बि कुल्लि शैइत्
अलीमा (३२) व लि कुल्लिन् ज-अल्ना
मवालि-य मिम्मा त-र-कल्-वालिदानि वल्-
अवरबू-न वल्लजी-न अ-क-दत् ऐमानुकुम् फ आतू-
हुम् नसीबहुम् इन्नल्ला-ह का-न अला कुल्लि
शैइत् शहीदा (३३) अरिजालु कव्वामू-न
अलन्निसा-इ बिमा फज्जलल्लाहु बअ-ज्जहुम् अला
बअ-ज्जिद्व-बिमा अन्फकू मिन् अम्बालिहिम्

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
أَلَمْ نَقُضْ لَكَ الْإِسْلَامَ إِذْ كَانَ بِكَ بِكَرْهًا ۖ وَمَنْ يَفْعَلْ ذَلِكَ
عَدُوًّا وَأَعْدَاؤُكُمْ ضُحُوفٌ عَلَيْهِمْ زُلُفًا ۚ وَكَانَ ذَلِكَ عَلَى اللَّهِ
يَسِيرًا ۚ إِنَّ نَجْدَيْنا الْكَافِرَ مَا يَنْفَعُهُ عَنْكَ مُرُّكُ عَذَابِنا إِنَّهُ
وَلَدٌ جُلِدَ فَغُلِبَ كَرِيمًا ۚ وَلَا تَتْلُوا مَائِدَتِ اللَّهِ الَّتِي
بِهِمُ مِيثَاقُهُمْ عَلَى بَعْضِ الْبَيْمَاتِ الَّتِي بَيْنَنا وَبَيْنَ الْكَافِرِينَ ۚ وَلِلَّهِ
نُصُوبٌ وَمِنَ الْكَافِرِينَ ۚ وَتِلْكَ آيَاتُ اللَّهِ الَّتِي تَنْزِلُ ۚ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلِيمًا
نَجِيمًا ۚ وَلَقَدْ جَعَلْنَا مَوَالِيَّنا نَزْلًا لِلْمُؤْمِنِينَ ۚ
أَلَا يُرَوْنَ وَالَّذِينَ عَقَدَتْ أَيْمَانُنا أَنْ لَا نُفَرِّقَ بَيْنَهُمْ ۚ إِنَّ
اللَّهَ كَانَ عَلَ كُلِّ شَيْءٍ مُنِيبًا ۚ إِنَّ آيَةَ الْبَيْمَاتِ قَوْمُونَ عَلَى أَيْمَانِهِ
بِمَا أَفْعَلُ اللَّهُ بِهِمُ بَعْضُهُمْ عَلَى بَعْضٍ ۚ وَمِنَ الْآفَاقِ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ
فَالْمُطَهَّرَاتُ فَرَسَتْ حُفُوفَ الْقَيْبِ بِمَا حَفِظَ اللَّهُ وَالَّذِينَ
تَحْتَوْنَ شُرُوفَهُنَّ قَوْمُهُنَّ وَالْمُحَرَّرُونَ فِي الْحَضَائِمِ
وَالْمُزَيَّنُّونَ ۚ إِنَّ لَكُمْ لَعَذَابًا فَكَّرْتُمْ عَنْهُمْ سَبِيلًا ۚ إِنَّ اللَّهَ
كَانَ عَلِيمًا كَرِيمًا ۚ وَإِنْ عَجَّلْتُمْ شِقَاقَ بَيْنِهِمَا لَا يَكْفُلُ عَنْكُمْ
فِي أَيْمَانِهِمْ وَحُكْمًا مِنْ أَهْلِنا ۚ إِنَّ بَيْنَهُنا إِصْرًا كَثِيرًا ۚ إِنَّ اللَّهَ
يَسْمَعُ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلِيمًا خَبِيرًا ۚ وَأَعِدُّوا لِلَّهِ الْأَنْفُسَ الَّتِي
بِهِمُ مِيثَاقُهُمْ ۚ إِنَّكُمْ لِعِندَ اللَّهِ قَوْمُونَ ۚ

फस्सालिहातु कानितातुन् हाफिज्जातुल् - लिलौबि बिमा हफिजल्लाहु वल्लाती
तखाफू-न नुशूजहुन-न फ अज्जहुन-न वहजुरुहुन-न फिलमज्जाजिअ वजिरबूहुन-न फ इन्
अ-तअ-नकुम् फला तब्गू अलैहिन्-न सबीला इन्नल्ला-ह का-न अलिय्यन् कबीरा (३४)
व इन् खिफ्तुम् शिक्रा-क बैनिहिमा फअसू ह-क-मम्-मिन् अह्लिही व ह-क-मम्-
मिन् अह्लिहा इय्युरीदा इस्लाहय्युवफ्फिकिल्लाहु बैनहुमा इन्नल्ला - ह
का-न अलीमन् खबीरा (३५) वअ-बुदुल्ला-ह व ला तुशिरकू बिही शैअव्-व बिल्-
वालिदैनि इहसानव्-व बि जिल्कुर्बा वल्यतामा वल्मसाकीनि वल्जारि जिल्कुर्बा

मोमिनो ! एक दूसरे का माल नाहक न खाओ। हाँ, अगर आपस की रजामंदी से त्तिजारत का लेन-देन हो (और उनसे माली फायदा हासिल हो जाए, तो वह जायज है) और अपने आप को हलाक न करो। कुछ शक नहीं कि खुदा तुम पर मेहरबान है। (२६) और जो सरकशी और जुल्म से ऐसा करेगा, हम उस को बहुत जल्द जहन्नम में दाखिल करेंगे और यह खुदा को आसान है। (३०) अगर तुम बड़े-बड़े गुनाहों से, जिनसे तुम को मना किया जाता है, बचोगे, तो हम तुम्हारे (छोटे-छोटे) गुनाह माफ़ कर देंगे और तुम्हें इज्जत के मकानों में दाखिल करेंगे। (३१) और जिस चीज़ में खुदा ने तुम में से कुछ को कुछ पर फ़ज़ीलत दी है, उसका लालच मत करो। मर्दों को उन कामों का सवाब है, जो उन्होंने किये, औरतों को उन कामों का सवाब है जो उन्होंने किये और खुदा से उस का फ़ज़ल (व करम) मांगते रहो। कुछ शक नहीं कि अल्लाह हर चीज़ को जानता है। (३२) और जो माल मां-बाप और रिश्तेदार छोड़ मरें, तो (हक़दारों में बांट दो कि) हम ने हर एक के हक़दार मुक़र्रर कर दिए हैं और जिन लोगों से तुम अह्द कर चुके हो, उन को भी उनका हिस्सा दो।^१ बेशक खुदा हर चीज़ के सामने है। (३३)★

मर्द औरतों पर हाकिम व मुसल्लत हैं, इसलिए कि खुदा ने कुछ को कुछ से अफ़ज़ल बनाया है। और इसलिए भी कि मर्द अपना माल खर्च करते हैं, तो जो नेक बीवियाँ हैं, वे मर्दों के हुक्म पर चलती हैं और उन के पीठ पीछे खुदा की हिफ़ाज़त में (माल व आबरू की) ख़बरदारी करती हैं और जिन औरतों के बारे में तुम्हें मालूम हो कि सरकशी (और बद चलनी) करने लगी हैं, तो (पहले) उनको (जुबानी) समझाओ, (अगर न समझें, तो) फिर उनके साथ सोना छोड़ दो। अगर इस पर भी न मानें तो मारो-पीटो और अगर फ़रमांबरदार हो जाएं तो फिर उनको तकलीफ़ देने का कोई बहाना मत ढूँढो। बेशक़ खुदा सबसे ऊँचा और जलीलुल क़द्र (ऊँची इज्जत वाला) है। (३४) और अगर तुम को मालूम हो की मियाँ-बीवी में अन-बन है, तो एक मुसिफ़, मर्द के खानदान में से और एक मुसिफ़ औरत के खानदान में से मुक़र्रर करो। वे अगर सुलह करा देनी चाहेंगे, तो खुदा उनमें मुवाफ़क़त पैदा कर देगा। कुछ शक नहीं कि खुदा सब कुछ जानता और सब बातों से ख़बरदार है। (३५) और खुदा ही की इबादत करो और उसके साथ किसी चीज़ को शरीक न बनाओ और मां-बाप क़राबत वालों और यतीमों और मुहताजों और रिश्तेदार पड़ोसियों और अज़नबी पड़ोसियों और पहलू के साथियों (यानी पास बैठने वालों) और मुसाफ़िरों और जो लोग तुम्हारे कब्ज़े में हों, सब के साथ एहसान करो कि खुदा (एहसान, करने वालों को दोस्त रखता है और) घमंड करने वाले, बड़ाई मारने वाले को दोस्त नहीं रखता। (३६) जो खुद भी बुरूल

१. अह्द करने से भुराद है दीनी भाई बनाना, ऐसे लोगों के लिए तर्का नहीं है। तर्का सिर्फ़ क़राबतदारों का हक़ है। दीनी भाइयों का हिस्सा यह है कि उन से मुहब्बत और दोस्ती रखी जाए और ज़रूरत के वक़्त उन की मदद की जाए। कुछ लोगों ने आयत का मतलब यह लिखा है कि अगर दीनी भाइयों को कुछ दिलाना मंज़ूर हो, तो उन के लिए वसीयत कर जाओ। पहले जो लोग गोद लिए जाते थे, वे वारिस ठहराये जाते थे, मगर अल्लाह तयाला ने मीरास में उन का हिस्सा मुक़र्रर फ़रमाया, बल्कि उन का हिस्सा वसीयत में ठहराया है।

वल्जारिल्-जुनुबि वस्साहिबि बिल् जम्बि वन्निस्सबीलि ॥ व मा म-ल-कत्
 ऐमानुकुम् ॥ इन्लला-ह ला युहिब्बु मन् का-न मुख्तालन् फखूरा ॥ (३६)
 अल्लजी-न यब्बलू-न व यअ्मुहन्नाना-स बिल्बुख्लि व यक्तुमू-न मा
 आताहुमुल्लाहु मिन् फज़िलही ॥ व अअ-तदना लिल्काफ़िरी-न अज़ाबम्मूहीना
 (३७) बल्लजी-न युम्फिकू-न अम्वालहुम् रिअ-अन्नासि व ला युअ्मिन्नू-न
 बिल्लाहि व ला बिल्-योमिल् - आखिरि ॥ व मय्यकुनिश् - शैतानु लहू
 करीनन् फ सा-अ करीना (३८) व
 माज़ा अलैहिम् लौ भामनू बिल्लाहि वल्-
 योमिल् - आखिरि व अन्फकू मिम्मा
 र - ज-कहुमुल्लाहु ॥ व कानल्लाहु बिहिम्
 अलीमा (३९) इन्लला-ह ला यज़िल्मु
 मिस्का-ल जर्तित्नु ॥ व इन्तकु ह-स-नतय्युज़ा-
 अफ़हा व युअ्ति मिल्लदुन्ह अजरन्
 अज़ीमा (४०) फ कै-फ़ इज़ा जिअना
 मिन् कुल्लि उम्मतिम्-बि शहीदिव-व जिअना
 बि-क अला हा-उला-इ शहीदा ॥ (४१)
 योमइजिय्यवददुल्-लजी-न क-फ़रु व अ-स-वुरसू-ल
 लौ तुसव्वा बिहिमुल्अज़्ज ॥ व ला
 यक्तुमूनल्ला-ह हदीसा * (४२) या अय्युहल्लजी-न आमनू ला तक्रबु-स-
 सला-तु व अन्तुम् सुकारा हत्ता तअ-लमू मा तफ़ूलू-न व ला जुनुबन्
 इल्ला आबिरी सबीलिन् हत्ता तग़तसिलू ॥ व इन् कुन्तुम् मअ्रा
 औ अला स-फ़रिन् औ जा-अ अ-हदुम्-मिन्कुम् मिनल्गा-इति औ
 लामस्तुमुन्निहा-अ फ लम् तजिदू मा-अन् फ-त-यम्ममू सअीदन् तय्यिबन् फम्सह
 बि वुज़हिकुम् व ऐदीकुम् ॥ इन्लला-ह का-न अफ़व्वन् शफ़ूरा (४३)

وَالْجَزَى الْقَرْيَ وَالْجَزَى الْجَبِّ وَالْحَاجِبِ بِالْمَحَبِّ وَالْجَبِّ
 لَسْتُمْ وَمَا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ مَنْ كَانَ مُخَلَّاتًا
 تَعُورًا ۝ الَّذِينَ يَخْلُقُونَ وَيَأْمُرُونَ النَّاسَ بِالْعَمَلِ وَيَخْلُقُونَ
 مَا أَرَادَ اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ ۝ أَعْتَدْنَا لِلْكَافِرِينَ عَذَابًا مُّهِينًا ۝
 وَالَّذِينَ يُتِفِقُونَ آمُوا بِالْعَمَلِ رِئَاسَةً وَلَا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ
 وَلَا بِالْيَوْمِ الْآخِرِ ۝ وَمَنْ يَكُنِ الشَّيْطَانُ لَهُ قَرِينًا فَاتَّبِعْهُ
 وَمَا أَكْثَرُ عَذَابِهِمْ ۝ أَمَّا بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ ۝ أَلَمْ نَقُلْ لَهُمْ
 اللَّهُ ۝ وَكَانَ اللَّهُ بِعَمَلِهِمْ عَلِيمًا ۝ إِنَّ اللَّهَ لَا يُغْنِي عَنْهُمْ
 وَلَنْ تَكُنْ حَسَنَةً مُّضْعِفًا وَيُؤْتِي مَنْ لَدُنْهُ أَجْرًا عَظِيمًا ۝
 لَكُنْتُمْ إِذْ جَعَلْنَا مِنْ كُلِّ قَوْمٍ بِشِيرَةً ۝ وَجَعَلْنَاكَ عَلَىٰ مَوْجٍ
 شَيْطَانٍ ۝ يَوْمَ يَكْفُرُ كُلُّ الَّذِينَ كَفَرُوا ۝ وَعَصَا الرَّسُولَ لَا تُؤْتَى
 بِعَمَلِهِمْ ۝ وَلَا يَكْتُمُونَ لِلَّهِ حَقًّا ۝ أَلَيْسَ الَّذِينَ آمَنُوا
 لَا تَقْبَلُوا الْعَمَلَةَ ۝ وَأَنْتُمْ سَكَتُ عَلَىٰ عَمَلِهِمْ مَا تَكُونُونَ ۝
 لَا جَبَّ إِلَّا عَابَرِي سَجَلٍ حَتَّىٰ تَقْتُلُوا ۝ وَلَنْ تَكُنْ قَرْضٍ
 أَوْ عَلَ سَمْعٍ أَوْ جَاءَ أَسَدٌ ۝ وَتَكُونُ مِنَ الْعَابِدِينَ ۝ أَلَمْ نَسْأَلْهُمْ
 فَلَمْ يَكُنْ لَهُمْ مَاءٌ فَتَشْتَبَهُوا صَيْدًا غَابِيًا فَاسْتَوْجِبُوا لِيَوْمِهِمْ
 لِيَكُونَ مِنَ الَّذِينَ أُكْفِرُوا ۝ أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ أُكْفِرُوا

(कंजूसी) करें और लोगों को भी बुरा सिखाएं और जो (माल) खुदा ने उन को अपने क़रल से अता फ़रमाया है, उसे छिपा-छिपा के रखें और हमने ना-शुकों के लिए ज़िल्लत का अज़ाब तैयार कर रखा है। (३७) और खर्च भी करें तो (खुदा के लिए नहीं, बल्कि) लोगों के दिखाने को और ईमान न खुदा पर लाएं, न आखिरत के दिन पर, (ऐसे लोगों का साथी शैतान है) और जिस का साथी शैतान हो, तो (कुछ शक नहीं कि) वह बुरा साथी है। (३८) और अगर ये लोग खुदा पर और क़ियामत के दिन पर ईमान लाते और जो कुछ खुदा ने उनको दिया था, उसमें से खर्च करते तो उनका क्या नुक़सान होता और खुदा उन को ख़ूब जानता है। (३९) खुदा किसी की ज़रा भी हक़तल-फी नहीं करता और अगर नेकी (की) होगी तो उसको दो गुना कर देगा और अपने यहां में बढ़ा बदला बरूशेगा। (४०) भला उस दिन क्या हाल होगा, जब हम हर उम्मत में से अहवाल बताने वाले को बुलाएंगे और तुमको उन लोगों का (हाल बताने को) गवाह तलब करेंगे (४१) उस दिन काफ़िर और पैग़म्बर के ना-फ़रमान आरज़ू करेंगे कि काश उन को ज़मीन में दफ़न करके मिट्टी बराबर कर दी जाती और खुदा से कोई बात छिपा नहीं सकेंगे। (४२) ★

ओमिनो ! जब तुम नशे की हालत में हो तो जब तक (उन लफ़्ज़ों को) जो मुंह से कहो, समझने (न) लगे, नमाज़ के पास न जाओ।' और जनाबत (ना-पाकी) की हालत में भी (नमाज़ के पास न जाओ), जब तक कि गुस्ल (न) कर लो। हां, अगर सफ़र की हालत में रास्ता चले जा रहे हो (और पानी न मिलने की वजह से गुस्ल न कर सको, तो तयम्मुम कर के नमाज़ पढ़ लो) और अगर तुम बीमार हो या सफ़र में हो या कोई तुम में से बैतुल ख़ला (टट्टी) से होकर आया हो, या तुम औरतों से हम-बिस्तर हुए हो और तुम्हें पानी न मिले, तो पाक मिट्टी लो और मुंह और हाथों का मसह (कर के तयम्मुम) कर लो। बेशक खुदा माफ़ करने वाला और बलशने वाला है। (४३)

१. यह उस वक़्त का हुक्म है कि शराब के बारे में इस के ह़राम होने का हुक्म नाज़िल हुआ था।

भला तुमने उन लोगों को नहीं देखा, जिन को किताब से हिस्सा दिया गया था कि वे गुमराही को खरीदते हैं और चाहते हैं कि तुम भी रास्ते से भटक जाओ। (४४) और खुदा तुम्हारे दुश्मनों को खूब जानता है और खुदा ही काफ़ी कारसाज और काफ़ी मददगार है। (४५) और ये जो यहूदी हैं, उनमें कुछ लोग ऐसे भी हैं कि कलिमात (बातों) को उनकी जगहों से बदल देते हैं और कहते हैं कि हमने सुन लिया और नहीं माना और सुनिए, न सुनवाए जाओ और जुबान को मरोड़ कर और दीन में तान की राह से (तुम से बात-चीत करते वक़्त) राबिना कहते हैं और अगर (यों) कहते कि हमने सुन लिया और मान लिया और (सिर्फ़) इस्मअ, और (राबिना की जगह) 'उन्ज़रनी' (कहते) तो उन के हक़ में बेहतर होता और बात भी बहुत दुरुस्त होती। लेकिन खुदा ने उनके कुपूर की बजह से उन पर लानत कर रखी है, तो ये कुछ थोड़े ही ईमान लाते हैं। (४६) ऐ किताब वालो ! इसके पहले कि हम लोगों के मुंहों को बिगाड़ कर उन की पीठ की तरफ़ फेर दें या उन पर इस तरह लानत न करें, जिस तरह हफ़ते वालों पर की थी। हमारी नाज़िल की हुई किताब पर, जो तुम्हारी किताब की भी तस्दीक़ करती है, ईमान ले आओ और खुदा ने जो हुक्म फ़रमाया, सो (समझ लो कि) हो चुका। (४७) खुदा उस गुनाह को नहीं बढ़ेगा कि किसी को उस का शरीक बनाया जाए और उसके सिवा और गुनाह जिसको चाहे माफ़ कर दे और जिसने खुदा का शरीक मुकर्रर किया, उसने बड़ा बुहतान बांधा। (४८) क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जो अपने को पाकीजा कहते हैं। (नहीं,) बल्कि खुदा ही जिस को चाहता है, पाकीजा करता है और उन पर घागे बराबर भी जुल्म नहीं होगा। (४९) देखो, ये खुदा पर कंसा झूठ (तूफ़ान) बांधते हैं और यही खुला गुनाह काफ़ी है। (५०) *

भला तुम ने उन लोगों को नहीं देखा, जिन को किताब से हिस्सा दिया गया है कि बुर्तों और शैतान को मानते हैं और काफ़िरों के बारे में कहते हैं कि ये लोग मोमिनों के मुकाबले में सीधे रास्ते पर हैं। (५१) यही लोग हैं, जिन पर खुदा ने ज्ञानत की है और जिस पर खुदा लानत करे, तो तुम

१. यहूदी जनाब रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से जब कोई ऐसी बात पूछनी चाहते जो सुन न सके हों, तो 'राबिना' कहते। इस का तपसीली बयान सूर: बकर: में हुआ है और जब आप (सल्ल०) बात फ़रमाते तो वे लोग जवाब में कहते, हम ने सुन लिया यानी हम ने कुबूल किया, लेकिन धीरे से कहते कि नहीं माना और हज़रत से ख़िताब के वक़्त यह भी कहते कि सुनिए, न सुनवाए जाओ। त्वाहिर में यह दुआ नेक है कि तुम ऐसे शालिब रहो कि कोई तुम को बुरी बात न सुना सके, मगर दिल में यह मुराद रखते कि खुदा करे तुम बहरे हो जाओ और कुछ न सुन सको। खुदा ने फ़रमाया कि अगर ये लोग बजाए समिअना व असेना के समिअना व अतअना और इस्मअ और मुस्मअिन की जगह सिर्फ़ 'इस्मअ' और 'राबिना' की जगह 'उन्ज़रनी' कहते तो उन के हक़ में बेहतर होता।

२. यानी ईमान लाओ पहले अज़ाब के आने से, जो शकल इन्सान की बदल कर हैवान की शकल हो जाए, जैसे यहूदियों में 'सनीचर वालों' की शकलें बन्दर और सुअर की बन गयी थीं। 'सनीचर वालों' का क्रिस्ता सूर: आराफ़ में आया।

अम् लहुम् नसीबुम्-मिनल्मुल्कि फ इजल्ला युअतूनन्ना-स नकीरा ॥ (५३)

अम् यहसुदूनन्ना-स अला मा आताहुमुल्लाहु मिन् फजिलही ८ फ-कद् आतेना

आ-ल इब्राहीमल्-क्रिता-ब वल्-हिकम - त व आतेनाहुम् मुल्कन् अजीमा

(५४) फ मिन्हुम् मन् आम-न बिही व मिन्हुम् मन् सद्-द अन्हु ७ व

कफा बि जहन्न-म सजीरा (५५) इन्नल्लजी-न

क-फरू बि आयातिना सौ-फ नुस्लीहिम्

नारन् ७ कुल्लमा नज्जिजत् जुलूदुहुम् बद्दल्ला

हुम् जुलूदन् गैरहा लि यज्जुकुल्-अजा-ब ७

इन्नल्ला-ह का-न अजीजन् हकीमा (५६) ह

वल्लजी-न आमनू व अमिलुस्-सालिहाति सनुद्-

खिलुहुम् जन्नातिन् तजरी मिन् तह्तिहल्-

अन्हार खालिदी - न फ्रीहा अ-ब-दन् ७

लहुम् फ्रीहा अज्वाजुम्-मुतहह-रतुं ७ व

नुदखिलुहुम् जिल्लन् जलीला (५७)

इन्नल्ला - ह यअमुरुकुम् अन् तुअददुल् -

अमानाति इला अहिलहा ७ व इजा

ह-कम्तुम् बैनन्नासि अन् तह्कुम् बिल्-

अदलि ७ इन्नल्ला - ह निअम्मा यअज्जुकुम् बिही ७ इन्नल्ला - ह का - न

समीअम् - बसीरा (५८) या अय्युहल्लजी-न आमनू अतीअल्ला-ह व

अतीअरूसू-ल व उलिल्-अमिर मिन्कुम् ८ फ इन् तनाजअ-तुम् फ्री शेइन्

फ रुद्दुह इलल्लाहि वरंसूलि इन् कुन्तुम् तुअमिनू-न बिल्लाहि वल्-योमिल्-

आखिरि ७ जालि-क खैरुव-व अह्सनु तअवीला (५९) अ-लम् त - र

इलल्लजी-न यअज्जुम्-न अन्नहुम् आमनू बिमा उन्जि-ल इलै-क व मा

उन्जि-ल मिन् कब्लि-क युरीदू-न अय्यतहाकम् इलत्तागूति व कद् उमिल्

अय्यक्फुल् बिही ७ व युरीदुश्वीतानु अय्युजिल्लहुम् जलालम्-बअीदा (६०)

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝ أَمْ يَحْسُدُونَ النَّاسَ
عَلَىٰ مَا آتَاهُمُ اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ ۚ قَدْ اتَّخَذَ اللَّهُ لِرِيعِهِمُ الْكِتَابَ
وَالْحِسَّةَ ۚ وَاتَّخَذَ اللَّهُ عَذَابًا ۖ فَبِمَا كَفَرُوا ۖ إِنَّا كَاتِبُونَ
كُفْرَهُمْ ۖ وَإِنَّا لَنُصَلِّهِمْ تَارَةً ۖ كَمَا كَانَتْ لَبِئْسَ جُلُودُهُمْ بِذُنُوبِهِمْ
يُلُودًا ۖ أَعْيَاهَا لَيْدٌ ۖ وَقَدْ عَذَابَ ۚ إِنَّا اللَّهُ ۖ كَانَ عَذَابُهُمْ أَهْلًا
وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ سَنُدْخِلُهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ
تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ۖ خَالِدِينَ فِيهَا ۖ لَا يَمُوتُونَ فِيهَا ۖ وَلَا يُظْهِرُ اللَّهُ
وَدُنْجَهُمْ ۖ وَلَا ظُلُمٌ لَهُمْ ۖ إِنَّا اللَّهُ ۖ يَمْوَدُّ أُنْزُورُ الْأَعْمَى
إِلَىٰ أَعْيُنِهَا ۖ وَإِذَا عَمَلْتُمْ رَبِّينَ الْكَاسِ ۖ أَنْ تَعْمَلُوا بِالْعَدْلِ ۖ إِنَّا
لَنُؤْتِيَنَّكُمْ رِيحًا ۖ وَإِنَّا لَنُؤْتِيَنَّكُمْ رِيحًا ۖ وَإِنَّا لَنُؤْتِيَنَّكُمْ رِيحًا ۖ
أَمْوَاكُمُ اللَّهُ ۖ وَأَصْحَابُ الرَّسُولِ ۖ وَأُولَى الْأَنْزِلِ ۖ وَكُفْرُهُمْ ۖ
تَنَازَعْتُمْ فِي شَيْءٍ ۖ فَرُدُّوهُ إِلَى اللَّهِ وَالرَّسُولِ ۖ إِن كُنتُمْ تُحِبُّونَ
بِالْوَحْيِ وَالْخَيْرِ ۖ فَالْحَقُّ ۖ وَحَسَنٌ ۖ وَأَمَّا الْكُفْرُ ۖ فَالْكَفْرُ ۖ
الَّذِينَ يَزْعُمُونَ أَنَّهُمْ آمَنُوا بِمَا أُنْزِلَ إِلَيْكَ وَمَا أُنْزِلَ مِنْ
قَبْلِكَ يُرِيدُونَ أَنْ يَتَّخِذُوا الْفَاسِقِينَ أَهْلًا ۖ وَقَدْ أُمِرُوا أَنْ
يَكْفُرُوا بِهِ ۖ وَيُرِيدُ الشَّيْطَانُ أَنْ يُضِلَّهُمْ صُلًّا ۖ وَبَعِيدًا ۖ وَ

उम का किसी को मददगार न पाओगे। (५२) क्या उनके पास बादशाही का कुछ हिस्सा है कि तो लोगों को तिल बराबर भी न देंगे। (५३) या जो खुदा ने लोगों को अपने फ़ज़ल से दे रखा है, उस पर जलते हैं, तो हमने इब्राहीम के खानदान को किताब और दानाई अता फ़रमायी थी और बड़ी सल्तनत (हुकूमत) भी ब्रूशी थी। (५४) फिर लोगों में से किसी ने तो उस किताब को माना और कोई उससे रुका (और हटा) रहा, तो उन न मानने वालों (के जलाने) को दोज़ख़ की जलती हुई आग काफ़ी है। (५५) जिन लोगों ने हमारी आयतों से कुफ़र किया, उनको हम जल्द आग में दाख़िल करेंगे, जब उनकी खालें गल (और जल) जाएंगी, तो हम और खालें बदल देंगे, ताकि (हमेशा) अज़ाब का (मज़ा) चखते रहें। बेशक़ खुदा ग़ालिब हिक़मत वाला है ● (५६) और जो लोग ईमान लाये और नेक अमल करते रहे, उन को हम बहिश्तों में दाख़िल करेंगे, जिन के नीचे नहरें बह रही हैं, वे उन में हमेशा-हमेशा रहेंगे। वहां उन के लिए पाक बीवियां हैं और उन को हम घने साए में दाख़िल करेंगे। (५७) खुदा तुम को हुक्म देता है कि अमानत वालों की अमानतें उन के हवाले कर दिया करो और जब लोगों में फ़ैसला करने लगे, तो इंसफ़ से फ़ैसला किया करो। खुदा तुम्हें बहुत ख़ूब नसीहत करता है। बेशक़ खुदा मुनता और देखता है। (५८) मोमिनो ! खुदा और उसके रसूल की फ़रमांबरदारी करो और जो तुम में से हुकूमत वाले हैं, उनकी भी और किसी बात में तुम में इस्तिलाफ़ पैदा हो तो अगर खुदा और आख़िरत के दिन पर ईमान रखते हो, तो उसमें खुदा और उसके रसूल (के हुक्म) की तरफ़ रुजूअ करो। यह बहुत अच्छी बात है और इस का अंजाम भी अच्छा है। (५९) ★

क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जो दावा तो यह करते हैं कि जो (किताब) तुम पर नाज़िल हुई और जो (किताबें) तुम से पहले नाज़िल हुईं, उन सब पर ईमान रखते हैं और चाहते यह है कि अपना मुक़दमा एक सरकार के पास ले जा कर फ़ैसला कराएं, हालांकि उन को हुक्म दिया गया था कि उस से एतकाद न रख और शैतान (तो यह) चाहता है कि उन को बहका कर रास्ते से

व इजा की-ल लहुम् तआलो इला मा अन्जलल्लाहु व इलरसूलि
 रअ-तल्-मुनाफिकी-न यसुदहून अन्-क सुददा ८ (६१) फ क-क इजा असाबलहुम्
 मुसीबतुम्-बिमा कद्द-मत् ऐदीहिम् सुम्-म जा-ऊ-क यह्लिफून ८ बिल्लाहि
 इन् अ-रदन् इल्ला इहसानव-व तोफ्रीका (६२) उला-इ-कल्लजी-न

यअ-तमुल्लाहु मा फी कुलूबिहिम् ८ अ-रिज्
 अन्हुम् व अिजहुम् व कुल्लहुम् फी
 अन्फुसिहिम् कौलम्-बलीगा (६३) व मा
 अर्सल्ला मिरंसूलिन् इल्ला लि युता - अ
 बि इज्जिल्लाहि ८ व लौ अन्नहुम् इज्ज-लम्
 अन्फुसहुम् जा-ऊ-क फस्तरफल्ला-ह वस्तरफ-र
 लहुमुरंसूलु ल-व-जदुल्ला-ह तक्वाबरहीमा (६४)
 फ ला व रब्बि-क ला युअमिनून हत्ता
 युहक्किमू-क फीमा श-ज-र बेनहुम् सुम्-म ला
 यजिदू फी अन्फुसिहिम् ह-र-जम्मिम्मा कज्जे-त
 व युसल्लिम् तस्लीमा (६५) व लौ अन्ना
 क-तन्ना अलैहिम् अनिकतुलू अन्फुसकुम्
 अविह्लजू मिन् दियारिकुम् मा फ - अलूहु इल्ला कलीलुम् - मिन्हुम् ८ व लौ
 अन्नहुम् फ-अलू मा यूअज़ून बिही लकान खैरल्लहुम् व अशद-द तस्बीतव-
 (६६) व इजल-ल-आतैनाहुम् मिल्लदुन्ना अजरन् अजीमा ८ (६७)
 व ल-हदेनाहुम् सिरातम्-मुस्तक्रीमा (६८) व मय्युतिअल्ला-ह वरंसू-ल
 फ उला-इ-क म-अल्लजी-न अन्-अ-मल्लाहु अलैहिम् मिनन्नबिय्यीन वस्सिददीकी-न
 वशहदा-इ वस्सालिही-न ८ व हसु - न उला-इ-क रफीका ८ (६९)
 जालिकल्-फल्लु मिनल्लाहि ८ व कफा बिल्लाहि अलीमा * (७०) या
 अय्युहल्लजी-न आमनू खुजू हिररकुम् फन्फिरु सुबातिन् अविन्फिरु जमीआ (७१)

الْقِيلَ لَهُمْ تَالْوَالِي مَا أَتَوَى اللَّهُ وَالَى رَسُولٌ رَأَيْتَ النَّفِثِينَ
 يَصُدُّونَ عَنْكَ صُدُودًا ۖ كَذِبٌ إِذَا صَامُوا فَهُمْ مِنْهُ يَنْفِثُونَ ۖ وَيَصِيخِرُ
 قُلُوبُهُمْ لِشَرِّ مَا وَلَدَ يُحِيلُونَ ۚ يَالْقَوْمِ الْإِذَا اسْتَأْذَنُوا
 وَتَقَرَّبُوا إِلَيْكَ الْيَوْمِينَ يُعَلِّمُ اللَّهُ مَا فِي قُلُوبِهِمْ ۚ فَاعْرِضْ
 عَنْهُمْ وَاصْفَعْ ۚ وَلِلَّهِ الْغَيْبُ قَوْلًا يَكُنْ ۖ وَمَا
 أَرْسَلْنَا مِنْ رَسُولٍ إِلَّا لِيُطَاعَ ۖ وَإِذَا لِلَّذِينَ ظَلَمُوا
 أَنْفُسُهُمْ أَجَاءَ اللَّهُ فَاسْتَفْعَلُوا ۚ وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ۚ
 اللَّهُ تَوَّابٌ أَلْجِئًا ۚ فَلَا دِينَكَ إِلَّا يَوْمُونَ ۚ حَتَّى يَحْكُمَ لَكُمْ
 فِيمَا شِئْتُمْ ۚ ثُمَّ لَا يَجِدُوا فِي أَنْفُسِهِمْ حَرَجًا مِمَّا قَضَيْتُمْ وَيَرْجَوْنَ
 تَسْلِيمًا ۚ وَلَوْ أَنَّا كُنَّا عَلَيْهِمْ لَبِئْسَ مَا كُنَّا لَآئِلِينَ ۚ وَلَوْ أَنَّمَا
 مِنْ دُونِ اللَّهِ مَا صَلَّوْهُ إِلَّا قَلِيلٌ مِنْهُمْ وَلَوْ أَنَّهُمْ فَعَلُوا مَا
 يُوعَظُونَ بِهِ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ وَأَشَدَّ تَطِيئًا ۚ وَإِذَا لَأَيْنَهُمْ
 قِيلَ إِنَّكُمْ أَجْرًا عَظِيمًا ۚ وَلَئِنْ نَبِّهْتُمْ لَأُفَاتِكُمْ قِسْمًا ۚ وَمَنْ
 يُطِيعِ اللَّهَ وَالرَّسُولَ فَأُولَٰئِكَ مَعَ الَّذِينَ أَنْعَمَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ مِنَ
 الْكَاثِبِينَ ۚ وَالْمُتَّقِينَ وَالْمُؤْمِنِينَ وَالصَّالِحِينَ وَرَضُوا ۚ وَاللَّهُ
 رَءِيفٌ ۚ ذَٰلِكَ الْفَضْلُ مِنَ اللَّهِ وَكَفَى بِالْمُؤْمِنِينَ ۖ يَوْمَئِذٍ
 أَسْوَاحِدُوا وَجَدْنَاهُمْ مُنَافِقِينَ ۚ قَاتِلُوا أَتَابِكُمْ ۚ قَاتِلُوا أَجْمَعِينَ ۖ وَإِنْ

दूर डाल दे। (६०) और जब उन से कहा जाता है कि जो हुक्म खुदा ने नाज़िल करमाया है, उसी की तरफ़ (रुजूअ) करो और पैगम्बर की तरफ़ आओ, तो तुम मुनाफ़िकों को देखते हो कि तुम से एराज़ करते और रुके जाते हैं। (६१) तो कौसी (शर्म की) बात है कि जब उनके आमाल (की ज़ामत) से उन पर कोई मुसीबत वाक़अ होती है, तो तुम्हारे पास भागे आते हैं और क़स्में खाते हैं कि बल्वाह! हमारा मक़सूद तो भलाई और मुवाफ़क़त था।' (६२) उन लोगों के दिलों में जो-जो कुछ है, खुदा उसको खूब जानता है। तुम उन (की बातों) का कुछ ख़याल न करो और उन्हें नसीहत करो और उनसे ऐसी बातें कहो, जो उन के दिलों पर असर कर जाएं। (६३) और हमने जो पैगम्बर भेजा है, इसलिए भेजा है कि खुदा के फ़रमान के मुताबिक़ उस का हुक्म माना जाए और ये लोग जब अपने हक़ में ज़ुल्म कर बैठे थे, अगर तुम्हारे पास आते और खुदा से बख़्शिश मांगते और (खुदा के) रसूल भी उन के लिए बख़्शिश तलब करते तो खुदा को माफ़ करने वाला (और) मेहरबान पाते। (६४) तुम्हारे परवरदिगार की क़सम! ये लोग जब तक अपने झगड़ों में तुम्हें मुनसिफ़ न बनायें और जो फ़ैसला तुम कर दो उस से अपने दिल में तंग न हों, वल्कि उस को खुशी से मान लें, तब तक मोमिन नहीं होंगे। (६५) और अगर हम उन्हें हुक्म देते कि अपने आप को क़त्ल कर डालो या अपने घर छोड़ कर निकल जाओ, तो उनमें से थोड़े ही ऐसा करते और अगर ये इस नसीहत पर कारबंद होते जो उनको की जाती है, तो उनके हक़ में बेहतर और (दीन) में ज़्यादा साबित क़दमी की वजह बनता। (६६) और हम उनको अपने यहां से बड़ा बदला भी देते। (६७) और सीधा रास्ता भी दिखाते। (६८) और जो लोग खुदा और उस के रसूल की इताअत करते हैं, वे (क्रियामत के दिन) उन लोगों के साथ होंगे, जिन पर खुदा ने बड़ा फ़ज़ल किया यानी नबी और सिद्दीक़ और शहीद और नेक लोग।' और इन लोगों का साथ बहुत ही खूब है। (६९) यह खुदा का फ़ज़ल है और खुदा जानने वाला काफ़ी है। (७०) *

मोमिनो! (जिहाद के लिए) हथियार ले लिया करो, फिर या तो जमाअत-जमाअत हो कर

१. मदीने में एक यहूदी और एक मुनाफ़िक़ में झगड़ा हुआ। यहूदी ने कहा कि चलो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से फ़ैसला कराएं। मुनाफ़िक़ ने कहा कि काब बिन अशरक़ के पास चलो। यह शख्स यहूद का सरदार था। इस इस्तिलाफ़ की वजह यह थी कि यहूदी हक़ पर था और जानता था कि हज़रत इस मुक़दमे का फ़ैसला उस के हक़ में करेंगे, तो वह हज़रत ही के पास जाने पर जोर देता था। मुनाफ़िक़ों में जो जाहिरी में मुसलमान और बातिन में काफ़िर था, आप के पास जाना नहीं चाहता था। आखिर दोनों हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आए और हज़रत ने मुक़दमा यहूदी के हक़ में फ़ैसला किया। जब बाहर निकले तो मुनाफ़िक़ ने कहा कि हज़रत उमर के पास चलो जो वह फ़ैसला कर दें वह मुझे मंज़ूर हो। हज़रत उमर रज़ि० उन दिनों जनाब सरवरे कायनात के हुक्म से मदीने में क़ब्ज़ा (जजी) करते थे। मुनाफ़िक़ ने ख़याल किया कि हज़रत उमर रज़ि० जाहिरी इस्लाम के धोखे में आ कर मेरा ख़याल करेंगे। जब वहां गये तो यहूदी ने पहले माज़रा बयान कर दिया और कह दिया कि हम हज़रत सल्ल० की ख़िदमत में हो आए हैं और उन्हीं ने मेरा हक़ साबित कर दिया है। यह सुन कर हज़रत उमर रज़ि० ने मुनाफ़िक़ को क़त्ल कर दिया। उस के वारिस हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास गये और खून का दावा किया और क़स्में खाने लगे कि हम हज़रत उमर रज़ि० के पास सिर्फ़ इस लिए गये थे कि शायद वह सुलह करा दें, तब ये आयतें नाज़िल हुयीं।

(मेष पृष्ठ १३६ पर)

व इन्-न मिन्कुम् ल-मल्-लयुबत्तिअन्-न ८ फ इन् असाबत्कुम् मुसिबत्तुन् का-ल
कद् अन्-अ-मत्लाह् अलय्-य इज् लम् अकुम्-म-अहुम् शहीदा (७२). व लइन्
असाबकुम् फज्जलुम्-मिनत्लाहि ल-यकूलन्-न क-अल्लम् तकुम्बैनकुम्, व बेनह
मवद्दतुम् ग्यालैतनी कुन्तु म-अहुम् फ अफू-ज् फौजन् अजीमा (७३) फल्युकाति

फ्री सबीलिल्लाहिल्लजी-न यश्रूनल्-ह्यातद्दुन्या
 बिल्आखिरति ७ व मय्युकातिल् फ्री
 सबीलिल्लाहि फ्र युक्तल् ओ यग्लिल् फ्र सौ-फ्र
 नुअतीहि अजरन् अजीमा (७४) व मा
 लकुम् ला तुकातिलू-न फ्री सबीलिल्लाहि वल्-
 मुस्तज्जअफी-न मिनरिजालि वन्निसा-इ वल्-
 विल्दानिल्लजी-न यकूलू-न रूबना अख्रिज्जा
 मिन् हाजिहिल् - कर्यतिज्जालिमि अह्लुहा

वज्रअस्लना मिल्लदुन - क वलियंन्-५

वज्रअल्लना मिल्लदुन्-क नसीरा ६ (७५)

निकला करो या इकट्ठे कूब किया करो । (७१) और तुम में कोई ऐसा भी है कि (जान-बूझ कर) देर लगाता है, फिर अगर तुम पर कोई मुसीबत पड़ जाए, तो कहता है कि खुदा ने मुझ पर बड़ी मेहरबानी की कि मैं उन में मौजूद न था । (७२) और अगर खुदा तुम पर फ़ज़ल करे तो इस तरह से कि गोया तुम में उस में दोस्ती थी ही नहीं, (अफ़सोस करता और) कहता है कि काश ! मैं भी उनके साथ होता तो बड़ा मज़सूद हासिल करता । (७३) तो जो लोग आख़िरत (को ख़रीदते और उस) के बदले दुनिया की ज़िंदगी को बेचना चाहते हैं, उन को चाहिए कि खुदा की राह में जंग करें और जो शरूस खुदा की राह में जंग करे, फिर शहीद हो जाए या ग़लबा पाए, हम बहुत जल्द उसको बड़ा सवाब देंगे ।' (७४) और तुम को क्या हुआ है कि खुदा की राह में और उन बे-बस मर्दों और औरतों और बच्चों के लिए नहीं लड़ते, जो दुआएं किया करते हैं कि ऐ परवरदिगार ! हम को इस शहर से, जिस के रहने वाले ज़ालिम हैं, निकाल कर कहीं और ले जा और अपनी तरफ़ से किसी को हमारा हामी बना और अपनी ही तरफ़ से किसी को हमारा मददगार मुक़र्रर फ़रमा । (७५) जो मोमिन हैं, वे तो खुदा के लिए लड़ते हैं और जो काफ़िर हैं, वे बुतों के लिए लड़ते हैं, सो तुम ज़ैतान के मददगारों से लड़ो (और डरो मत) क्योंकि ज़ैतान का दांव बोदा होता है । (७६)★

भला तुम ने उन लोगों को नहीं देखा, जिनको (पहले यह) हुक्म दिया गया था कि अपने हाथों को (लड़ाई से) रोके रहो और नमाज़ पढ़ते और ज़कात देते रहो । फिर जब उन पर जिहाद फ़ज़्र कर दिया गया, तो कुछ लोग उन में से लोगो से यों डरने लगे जैसे खुदा से डरा करते हैं, बल्कि उस से भी ज़्यादा और बड़-बड़ाने लगे कि ऐ खुदा ! तू ने हम पर जिहाद (जल्द) क्यों फ़ज़्र कर दिया । थोड़ी मुद्दत और हमें क्यों मुहलत न दी ? (ऐ पैग़म्बर ! उनसे) कह दो, दुनिया का फ़ायदा बहुत थोड़ा है और बहुत अच्छी चीज़ तो परहेज़गार के लिए आख़िरत (की निज़ात) है और तुम पर धागे बराबर भी जुल्म नहीं किया जाएगा । (७७) (ऐ जिहाद से डरने वालो !) तुम कहीं

(पृष्ठ १३७ का शेष)

२. सिद्दीक़ मुबालिगे का लफ़्ज़ है यानी बड़ा सच्चा, तो सिद्दीक़ बड़े सच्चे हुए । या सिद्दीक़ से वे लोग मुराद हैं जो नबियों की पैरवी में सब से बड़ा रुत्बा रखते हैं । हज़रत अबूबक़ रज़ि० को जो सिद्दीक़ कहते हैं, तो उन पर ये दोनों यानी सही उतरते हैं । शहीद वे जो खुदा की राह में मारे जाएं । हज़रत उमर रज़ि० और उस्मान रज़ि० और अली रज़ि० सब शहीद हैं । नेक लोग यानी आम नेकी वाले भले लोग । सब से ऊंचा दर्जा नबियों का है, फिर सिद्दीकों का, फिर शहीदों का, फिर नेक और भले लोगों का ।

१. ज़मी मुसलमानों को चाहिए कि दुनिया की ज़िंदगी पर नज़र न रखें, आख़िरत चाहें और समझें कि अल्लाह के हुक्म में हर तरह नफ़ा है ।

ऐ-न मा तकून् युदरिक्कुमुल्-मोतु व लौ कुन्तुम् फ्री बुरुजिम्-मुशाय्यदतिन् ७ व
इन् तुसिन्हुम् ह - स - नतुग्यकूल हाजिही मिन् अन्दि-क ७ कुल् कुल्लुम् - मिन्
तुसिन्हुम् सय्यिअतुग्यकूल हाजिही मिन् अन्दि - क ७ कुल् कुल्लुम् - मिन्
अन्दि-क ७ मा लि हा-उला-इल्-कौमि ला यकाद-न यफकह-न हदीसा

(७८) मा असा-ब-क मिन् ह-स-नतिन्
फ मिन्तलाहि ७ व मा असा-ब-क मिन्
सय्यिअतिन् फ मिन्फसि-क ७ व असल्ला-क
लिन्नासि रसूलन् ७ व कफा बिल्लाहि
शहीदा (७९) मय्युतिअिरसूल-फ-कद्
अताअल्ला-ह ७ व मन् तवल्ला फ मा असल्ला-क
अलैहिम् हफीजा ७ (८०) व यकूल-न
ताअतुन् ७ फ इजा ब-रजू मिन् अन्दि-क
बय्य-त ता-इफतुम्-मिन्हुम् गैरलजी तकूल ७
वल्लाहु यक्तुबु मा युबय्यितू-न ७ फ अज-रिज्
अन्हुम् व त-वक्कल् अ-लल्लाहि ७ व कफा
बिल्लाहि वकीला (८१) अ-फला य-त-दब्बरुनल्-
कुरआन ७ व लौ का - न मिन् अन्दि

فِي بُرُوجٍ مُّشَيَّدَةٍ وَإِنْ تُوبْتُمْ حَسْبُهُ فَيُتَوَلَّىٰ هُوَ ۖ مِنْ
عِنْدِ اللَّهِ وَإِنْ تَبُوءُوا سِیمَةً يَتُولا هُوَ ۖ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ ۚ
كُلٌّ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ ۚ قَالَ هَؤُلَاءِ الْقَوْمُ لَا يَكُونُونَ لِقَاءَهُمْ
حَدِيثًا ۚ مَا أَصَابَكُمْ مِنْ حَسَنَةٍ فَمِنَ اللَّهِ ۚ وَمَا أَصَابَكُمْ مِنْ
أَسَیَةٍ فَمِنْ تَقْصِيرِكُمْ ۚ وَأَرْسَلْنَاكَ الْبَاسَ رَسُولًا ۚ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ
شَیْمًا ۚ مَنْ يُطِيعِ الرَّسُولَ فَقَدْ أَطَاعَ اللَّهَ ۚ وَمَنْ تَوَلَّىٰ فَمَا أَرْسَلْنَا
عَلَيْهِمْ جُوفًا ۚ وَهُمْ يُطِيعُونَ طَاعَةً ۚ فَإِذَا بَرَأُوا مِنَ اللَّهِ عَيْدًا
يَبِیْنَهُمْ ۚ وَهُمْ غَيْرُ الَّذِي تَقُولُ ۚ وَاللَّهُ يَكْتُبُ مَا يُشِیْئُونَ ۚ فَأَعْرِضْ
عَنْهُمْ وَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ ۚ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ وَكِيلًا ۚ أَلَمْ يَجْعَلِ الْهَرُونَ الْقُرْآنَ
وَلَوْ كَانَ مِنْ عِنْدِ غَيْرِ اللَّهِ لَوَجَدُوا فِيهِ غَيْرَ لُكُونٍ ۚ وَأَذًا
جَاسِمًا ۚ أَمْ وَجَدَ الَّذِينَ آمَنُوا مِنْ آيَاتِهِ ۚ وَلَوْ رَدُّوا عَلَى الرَّسُولِ
وَأَلَىٰ أُولَى الْأُمُورِ ۚ وَهُمْ لَعَلِمَهُ الَّذِينَ يَسْتَكْبِرُونَ ۚ وَهُمْ
لَا يَفْقَهُونَ ۚ وَاللَّهُ عَلِيمٌ ۚ وَرَحْمَتُهُ لَاجِبٌ لِلْعَالَمِينَ ۚ
فَقَاتِلْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ لَا تُكَلَّفُ إِلَّا نَفْسُكَ ۚ وَخَرِصَ الْمُؤْمِنِينَ
عَنِ اللَّهِ أَنْ يَكُنَّ بَاسَ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ وَاللَّهُ أَشَدُّ بَاسًا وَأَكْثَرُ
تُكْلِيلًا ۚ مَنْ يَفْعَلْ شِقَاقَ سِیمَةٍ يَكُنْ لَهُ عِيبٌ ۚ وَمَنْ يَفْعَلْ
مَنْ يَفْعَلْ شِقَاقَ سِیمَةٍ يَكُنْ لَهُ عِيبٌ ۚ وَمَنْ يَفْعَلْ شِقَاقَ سِیمَةٍ يَكُنْ لَهُ عِيبٌ ۚ

गैरिल्लाहि ल-व-जद् फ्रीहिख्तिलाफत् कसीरा (८२) व इजा जा-अहुम्
अम्हम्मिनल्-अम्नि अविल्लौफि अजाअू बिही ७ व लौ रद्दुह इलरसूलि व
इला उलि-अम्नि मिन्हुम् ल अलिमहुल्लजी-न यस्तम्बितूनह मिन्हुम्
व लौ ला फज्जुल्लाहि अलैकुम् व रहमतुह लतबअ-तुमुशैता-न इल्ला
कलीला (८३) फ क्रातिल् फ्री सबीलिल्लाहि ७ ला तुकल्लफु इल्ला
नफस-क व हरिजिल्-मुअमिनीन ७ अ-सल्लाहु अय्यकुफ-फ बअसल्लजी-न क-फर
वल्लाहु अशदु बअसव-व अशदु तन्कीला (८४) मय्यशफअ-शफाअ-तुन्
ह-स-न-तय्यकुल्लह नसीबुम्मिन्हा ७ व मय्यशफअ-शफाअ-तुन् सय्यिअतय्यकुल्लह
किफ्लुम्मिन्हा ७ व कानल्लाहु अला कुल्लि शैम्मुकीता (८५)

रहो, भीत तो तुम्हें आकर रहेगी, चाहे बड़े-बड़े महलों में रहो और उन लोगों को अगर कोई फायदा पहुंचता है, तो कहते हैं कि यह खुदा की तरफ से है और कोई तकलीफ पहुंचती है तो (ऐ मुहम्मद ! तुम से) कहते हैं कि यह (तकलीफ) आप की वजह से (हमें पहुंची) है। कह दो कि (रंज ब राहत) सब अल्लाह ही की तरफ से है। इन लोगों को क्या हो गया है कि बात भी नहीं समझ सकते। (७८) (ऐ आदम की औलाद !) तुझ को जो फायदा पहुंचे, वह खुदा की तरफ से है और जो नुकसान पहुंचे, वह तेरे ही (आमाल की शमत् की) वजह से है और (ऐ मुहम्मद !) हम ने तुमको लोगों (की हिदायत) के लिए पैगम्बर बना कर भेजा है और (इस बात का) खुदा ही गवाह काफ़ी है। (७९) जो शरूस रसूल की फ़रमांवरदारी करेगा, तो बेशक उसने खुदा की फ़रमांवरदारी की और जो ना-फ़रमांवरदारी करे तो ऐ पैगम्बर ! तुम्हें हमने उनका निगहबान बना कर नहीं भेजा। (८०) और ये लोग मुंह से तो कहते हैं कि (आप की) फ़रमांवरदारी (दिल से मंजूर) है, लेकिन जब तुम्हारे पास से चले जाते हैं, तो उनमें से कुछ लोग रात को तुम्हारी बातों के खिलाफ़ मश्वरे करते हैं और जो मश्वरे ये करते हैं खुदा उन को लिख लेता है, तो उनका कुछ ख्याल न करो और खुदा पर भरोसा रखो और खुदा ही काफ़ी कारसाज है। (८१) भला ये कुरआन में ग़ौर क्यों नहीं करते ? अगर यह खुदा के सिवा किसी और का (कलाम) होता, तो उसमें (बहुत-सा) इस्तिलाफ़ पाते। (८२) और जब उन के पास अमल या खौफ़ की कोई खबर पहुंचती है, तो उसे मशहूर कर देते हैं और अगर उसको पैगम्बर और अपने सरदारों के पास पहुंचाते, तो खोज लगाने वाले उसकी खोज लगा लेते। और अगर तुम पर खुदा का फ़यल और उस की मेहरबानी न होती, तो कुछ लोगों के अलावा सब शैतान की पैरवी करने वाले होते। (८३) तो (ऐ मुहम्मद !) तुम खुदा की राह में लड़ो, तुम अपने सिवा किसी के ज़िम्मेदार नहीं हो।' और मोमिनों को भी उभारो। क़रीब है कि खुदा काफ़िरों की लड़ाई को बन्द कर दे और खुदा लड़ाई के एतबार से बहुत सख्त है और सज़ा के लिहाज़ से भी बहुत सख्त है। (८४) जो शरूस नेक बात की सिफ़ारिश करे, तो उस (के सवाब) में से हिस्सा मिलेगा और जो बुरी बात की सिफ़ारिश करे, उसको उस (के अज़ाब) में से हिस्सा मिलेगा और खुदा हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है। (८५)

१. यानी तुम से औरों के बारे में नहीं पूछा जाएगा, क्योंकि हर आदमी अपने काम का ज़िम्मेदार है।

और जब तुम को कोई दुआ दे तो (जवाब में) तुम उस से बेहतर (कलमे) से (उसे) दुआ दो या उन्हीं लफ्जों से दुआ दो। बेशक खुदा हर चीज का हिसाब लेने वाला है (८६) खुदा वह सच्चा माबूद है कि उस के सिवा कोई इबादत के लायक नहीं। वह क्रियामत के दिन तुम सब को जरूर जमा करेगा और खुदा से बढ़ कर बात का सच्चा कौन है? (८७) *

तो क्या वजह है कि तुम मुनाफ़िकों के बारे में दो गिरोह हो रहे हो, हाल यह है कि खुदा ने उनके करतूतों की वजह से अंधा कर दिया है। क्या तुम चाहते हो कि जिस शरूस को खुदा ने गुमराह कर दिया है, उस को रास्ते पर ले आओ? और जिस शरूस को खुदा गुमराह कर दे, तुम उसके लिए कभी भी रास्ता नहीं पाओगे। (८८) वे तो यही चाहते हैं कि जिस तरह वे खुद काफ़िर हैं, (उसी तरह) तुम भी काफ़िर हो कर (सब) बराबर हो जाओ, तो जब तक वे खुदा की राह में वतन न छोड़ जाएं, उनमें से किसी को दोस्त न बनाना। अगर (वतन छोड़ने को) कुबूल न करे तो उन को पकड़ लो और जहां पाओ, क़त्ल कर दो और उन में से किसी को अपना साथी और मददगार न बनाओ। (८९) मगर जो लोग ऐसे लोगों से जा मिले हों, जिन में और तुम में (सुलह का) अह्द हो या इस हाल में कि उन के दिल तुम्हारे साथ या अपनी क़ौम के साथ लड़ने से रुक गये हों, तुम्हारे पास आ जाएं (तो एहतराज जरूरी नहीं) और अगर खुदा चाहता तो उन को तुम पर ग़ालिब कर देता, तो वे तुम से जरूर लड़ते। फिर अगर वे तुम से (लड़ने से) हट जाएं और लड़ें नहीं और तुम्हारी तरफ़ (सुलह का पैग़ाम) भेजें तो खुदा ने तुम्हारे लिए उन पर (ज़बरदस्ती करने की) कोई सबील मुकर्रर नहीं की। (९०) तुम कुछ और लोग ऐसे भी पाओगे, जो यह चाहते हैं कि तुम से भी अमन में रहें और अपनी क़ौम से भी अमन में रहें, लेकिन जब, फ़िलता पैदा करने को बुलाये जाएं तो उसमें अंधे मुंह गिर पड़ें तो ऐसे लोग अगर तुम से (लड़ने से) न किनारा पकड़ें और न तुम्हारी तरफ़ सुलह (का पैग़ाम) भेजें और न अपने हाथों को रोकें तो उन को पकड़ लो और जहां पाओ, क़त्ल कर दो। उन लोगों के मुकाबले में हमने तुम्हारे लिए ख़ुली सनद मुकर्रर कर

व मा का-न लि मुअ्मिनित् अय्यक्तु-ल मुअ्मिनत् इल्ला ख-त्-अन् व मन् क-त-ल
मुअ्मिनत् ख-त्-अन् फ तहरीर र-क-बतिम्-मुअ्मिनतिव-व दियतुम्-मुसल्लमतुन्
इला अहिलही इल्ला अय्यस्सदक ॥ इन् का-न मिन् क्रोमिन् अदुविल्लकुम्
व हु-व मुअ्मिनत् फ तहरीर र-क-बतिम्-मुअ्मिनतिन् ॥ व इन् का-न मिन्

क्रोमिम्-बैनकुम् व बैनहुम् मीसाकुन् फ दि-यतुम्-
मुसल्लमतुन् इला अहिलही व तहरीर
र-क-बतिम्-मुअ्मिनतिन् ८ फ मल्लम् यजिद्
फ सियामु शहरैनि मुत - ताबिअनि
तोबतुम्मिनल्लाहि ॥ व कानल्लाहु अलीमत्
हकीमा (६२) व मय्यक्तुल् मुअ्मिनम्-
मु-त-अम्मिदन् फ जजा-उह जहन्नमु खालिदन्
फीहायज्जिबल्लाहु अलैहि व ल-अ-नहूवअ-द-द-लह
अजाबन् अजीमा (६३) या अय्युहल्लजी-न
आमन् इजा ज़रबुम् फी सबीलिल्लाहि
फ त-बय्यन् व ला तकूलू लि मन् अल्का
इलैकुमुस्सला-म लस्-त मुअ्मिनत् ८ वतगू-न
अ-र-ज़ल्-ह्यातिद्दुन्या ॥ फ अन्दिल्लाहि मगानिमु

إِلَى أَهْلِهِ إِلَّا أَنْ يَخْتَفُوا أَفْوَاحًا وَإِنْ كَانَ مِنَ طَوْفٍ عَلَيْهِ لَوْ كُنْهُمْ
مُؤْمِنِينَ فَتَقَبَّلَ مِنْهُمْ إِنَّهُمْ إِذْ لَكَانُوا مِنْ قَوْمٍ مُّؤْمِنِينَ وَبَيْنَهُمْ
بَيْنَئِذَا قَدِيسٌ قَسَمَ إِلَى أَهْلِهِ وَتَعْرِيفٌ رَقِيعَةٌ مُّؤْمِنَةٌ قَسَمَ
بِحَدِّهِمْ أَنَّ هَؤُلَاءِ هُمُ الْمُؤْمِنُونَ تَوْبَةً مِنْ اللَّهِ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا
مُكْرِمًا وَمَنْ يَفْعَلْ مِثْلَ ذَلِكَ فَأُفْضِلْنَا لَهُ عَذَابًا عَظِيمًا
وَعُذِبَ اللَّهُ عَلَيْهِ وَلَعَنَهُ وَأَعَدَّ لَهُ عَذَابًا عَظِيمًا يَا أَيُّهَا الَّذِينَ
آمَنُوا إِذَا ضَرَبْتُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَتَبَيَّنُوا وَلَا تَقُولُوا إِنَّمَا أَلْفَى
إِلَيْنَا النُّجُومُ لَسْتَ مُؤْمِنًا تَتَّبِعُونَ عَرَصَ الضُّلُومِ الَّذِينَ يَبْغُونَ
مَقَاتِلَ كُوفَةٍ كَذَلِكَ كُنْتُمْ مِنْ قَبْلُ مِنَ اللَّهِ عَلَيْهِمْ نَجِيسٌ
إِنْ اللَّهُ كَانَ بِمَا تَصْنَعُونَ خَبِيرًا وَلَا تَتَّبِعُوا الْقَوْمَ الَّذِينَ يَقُولُونَ
مَعَكُمْ أُولَى الْقُرْبَى وَالْيَتَامَى فِي سَبِيلِ اللَّهِ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْأَقْرَبِ
فَضَّلَ اللَّهُ السَّاجِدِينَ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْأَقْرَبِ عَلَى الْقَوْمِ دِينُهُ
وَقَدْ أَعَدَّ اللَّهُ عَذَابًا يُعَذِّبُ بِهِ السَّاجِدِينَ عَلَى الْقَوْمِ
أَجْرًا عَظِيمًا وَدَجَّيْنَاهُ مِنْهُ مَغْفِرَةً وَرَحْمَةً وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا
رَحِيمًا إِنَّ الَّذِينَ تَوَفَّيْنَاهُمُ الْكُفْرَ كَانُوا فِي الْأَرْضِ قُلُوبًا
كَاذِبَةً قُلُوبًا كَانُوا كَاذِبِينَ فِي الْأَرْضِ قُلُوبًا كَاذِبِينَ
فَلَا تَتَّبِعُوا الْهَوَى فَيُؤْخِرَ عَنْكُمْ ذِكْرَ اللَّهِ فَأَنْتُمْ قُلُوبًا
كَافِرَةٌ

कसीरतुन् ८ कजालि-क कुन्तुम् मिन् कब्लु फ-मन्नल्लाहु अलैकुम् फ त-बय्यन् ८ इन्नल्ला-ह
का-न बिमा तअ-मलू-न खबीरा (६४) ला यस्तविल्काअिद्-न मिनल्मुअ्मिनी-न गैर
उलिज़्ज़ररि वल्मुजाहिद्-न फी सबीलिल्लाहि बि अम्वालिहिम् व अन्फुसिहिम्
फ़ज़ज़ल्लल्लाहुल्-मुजाहिदी-न बि अम्वालिहिम् व अन्फुसिहिम् अ-लल्काअिदी-न
द-र-ज-तुन् ८ व कुल्लव्व - अ - दल्लाहुल्-हुस्ना ८ व फ़ज़ज़ल्लल्लाहुल्-मुजाहिदीन
अ-लल्-काअिदी-न अजरन् अजीमा ॥ (६५) द-र-जातिम्मिन्हु व मग्फि-र-तुव-व
रह्म-तुन् ८ व कानल्लाहु राफूररहीमा * (६६) इन्नल्लजी-न तवफ्फाहुमुल्-
मला-इकतु जालिमी अन्फुसिहिम् कालू फी-म कुन्तुम् ८ कालू कुन्ना मुस्तज़-
अफी-न फिलअज़ि ८ कालू अ-लम् तकुन् अरज़ुल्लाहि वासि-अ-तुन् फ तुहाजिरु
फीहा ८ फ उला-इ-क मअ्वाहुम् जहन्नमु ८ व सा-अत् मसीरा ॥ (६७)

ही है * (६१) और किसी मोमिन को मुनासिब नहीं कि मोमिन को मार डाले अगर भूल कर, और जो भूल कर भी मोमिन को मार डाले, तो (एक तो) एक मुसलमान गुलाम आजाद कर दे और (दूसरे) मक्तूल के वारिसों को खूबहा दे। हां अगर वे माफ़ कर दें, (तो उन को अस्तिथार है)। अगर मक्तूल तुम्हारे दुश्मनों की जमाअत में से हो और वह खुद मोमिन हो, तो सिर्फ़ एक मुसलमान गुलाम आजाद करना चाहिए और अगर मक्तूल ऐसे लोगों में से हो, जिन में और तुम में सुलह का अहद हो तो मक्तूल के वारिसों को खूबहा देना और एक मुसलमान गुलाम आजाद करना चाहिए और जिस को यह न मिले, वह लगातार दो महीने के रोज़े रखे। यह (कफ़ारा) खुदा की तरफ़ से तीबा (कबूल करने के लिए) है और खुदा (सब कुछ) जानता और बड़ी हक्मत वाला है। (६२) और जो शस्त्र मुसलमान की जान-बूझ कर मार डालेगा, तो उस की सज़ा दोख़ है, जिसमें वह हमेशा (जलता) रहेगा और खुदा उस पर ग़ज़बनाक होगा और उस पर लानत करेगा और ऐसे शस्त्र के लिए उस ने बड़ा (सख़्त) अज़ाब तैयार कर रखा है। (६३) मोमिनो ! जब तुम खुदा की राह में बाहर निकला करो तो छान-बीन से काम लिया करो और जो शस्त्र तुम से 'सलामु अलैक' करे, उससे यह न कहो कि तुम मोमिन नहीं हो। और इससे तुम्हारी गरज़ यह हो कि दुनिया की ज़िदगी का फ़ायदा हासिल करो। सो खुदा के पास बहुत-सी ग़नीमतें हैं तुम भी तो पहले ऐसे ही थे, फिर खुदा ने तुम पर एहसान किया, तो (आगे) छान-बीन कर लिया करो, और जो अमल तुम करते हो, खुदा को सब की ख़बर है। (६४) जो मुसलमान (घरों में) बैठे रहते और लड़ने से जी चुराते हैं और कोई उज्र नहीं रखते, वे और जो खुदा की राह में अपने माल और जान से लड़ते हैं, वे, दोनों बराबर नहीं हो सकते। खुदा ने माल और जान से ज़िहाद करने वालों को, बैठे रहने वालों पर दर्जे में फ़ज़ीलत बख़शी है, और (गो) नेक वायदा सब से है, लेकिन बड़े बदले के लिहाज़ से खुदा ने ज़िहाद करने वालों को बैठे रहने वालों पर कहीं फ़ज़ीलत बख़शी है, (६५) (यानी) खुदा की तरफ़ से, दर्जों में और बख़िश में और रहमत में, और खुदा बड़ा बख़शने वाला (और) मेहरबान है। (६६) *

जो लोग अपनी जानों पर जुल्म करते हैं, जब फ़रिश्ते उन की जान कब्ज़ करने लगते हैं, तो उनसे पूछते हैं कि तुम किस हाल में थे। वे कहते हैं कि हम मुल्क म आज़िज़ व नातवां थे। फ़ारेश्ते कहते हैं, क्या खुदा का मुल्क फ़राख़ नहीं था कि तुम उसमें हिज़रत कर जाते ? ऐसे लोगों का

इल्लल्-मुस्तज़अफी-न मिनरिजालि वनिर्सा-इ बल्विल्दानि ला यस्ततीअ-न
हील-त-व-व ला यहतदू-न सबीला५ (६८) फ उला-इ-क असल्लाहु अय्यअ-फु-व
अन्हुम् ७ व कानल्लाहु अफुव्वन् गफूरा (६९) व मय्युहाजिर फी
सबीलिल्लाहि यजिद् फिल्अज्रि मुरा-ना-मन् कसीर-व-व स-अ-त-त-७ व मय्यरुह्ज

मिम्बंतिही मुहाजिरन् इल्लल्लाहि व
रसूलिही सुम्-म युदरिक्हुल्मोतु फ-क-द-व-क-अ
अज्रुह् अल्लल्लाहि ७ व कानल्लाहु

गफूररहीमा ★ (१००) व इजा

अरबुतुम् फिल्अज्रि फ-लै-स अलैकुम् जुनाहुन्
अन् तक्सुरु मिनस्सलाति ८ इन्

खिफ्तुम् अय्यफति-न - कुमुल्लजी-न क-फरु

इन्नल्काफिरीन कानू लकुम् अदुव्वम्-मुबीना

(१०१) व इजा कुन-त फीहिम्

फ-अ-कम्-त लहुमुस्सला-त फल्लकुम् त-इफ्तुम्

मिन्हुम् म-अ-क वल्यअखुजू अस्लि-ह-तहुम्

फ इजा स-जदू फल्यकून् मिव्वरा-इकुम्

बल्लतअति त-इफ्तुन् उहरा लम् युसल्लू फल्युसल्लू म-अ-क वल-

यअखुजू हिज्रहुम् व अस्लि-ह-तहुम् ९ वदल्लजी-न क-फरु लौ तफल्ल-न

अन् अस्लिहतिकुम् व अम्ति-अतिकुम् फ यमीलू-न अलैकुम् मैलतुव्वाहि-द-त-त-७

व ला जुना-ह अलैकुम् इन् का - न बिकुम् अ-अम्-मिम्-म-त-रिन् ओ

कुन्तुम् मर्रज्ज अन् त-ज-अ अस्लि-ह-तकुम् ८ व खुजू हिज-रकुम्

इन्नल्ला-ह अ-अ-द-द लिक्काफिरीन अजाबम्मुहीना (१०२) फ इजा कज्जैतुमुस्सला-त

फय्कुरल्ला-ह क्रियाम-व-व कुअद-व-व अला जुनबिकुम् ८ फ इज्जतम्अ-नन्तुम्

फ अक्कीमुस्सला-त ८ इन्नस्सला-त कानत् अल्लमुअमिनी-न किताबम्-मोक्ता (१०३)

مُؤْمِرًا إِلَّا السُّعُوفِينَ مِنَ الرِّجَالِ وَالنِّسَاءِ وَالْوِلْدَانِ لَا
يَعْقِلُونَ حَيْثُ وَلَا يَتَذَكَّرُونَ سَيَلًا ۖ وَأُولَٰئِكَ عَلَىٰ
أَنفُسِهِمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۚ وَكَانَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ ۖ وَمَنْ يُهَاجِرْ
فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَيَجِدْ فِي الْأَرْضِ مُرْعًا كَثِيرًا وَسَعَةً ۖ وَمَنْ يَعْمَرْ
مِنْ بَيْتِهِ مُهَاجِرًا إِلَى اللَّهِ وَرَسُولِهِ ۖ ثُمَّ يُدْرِكْهُ الْمَوْتُ فَقَدْ
وَعَدَ اللَّهُ عَلَى اللَّهِ ۖ وَكَانَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ ۖ وَإِذَا ضَرَبْتُمْ
فِي الْأَرْضِ فَلَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَن تَقْصُرُوا مِنَ الصَّلَاةِ ۖ إِنَّ
جَهَنَّمَ أَكْبَرُ ۚ لَئِنْ لَمْ تَكُنُوا مِنَ الْكَاذِبِينَ ۖ كَانُوا لَكُمْ عَدُوًّا
فَهِيمًا ۖ وَإِذَا كُنْتُمْ فِيهِمْ فَأَمَّتْ لَهُمُ الصَّلَاةُ فَلَقَعُوا فِيهَا مِنَّكُمْ
فَعَلُوا ۖ وَلَا تَحْذَرُوا الصَّلَاةَ ۖ وَإِذَا سَجَدُوا فَلْيَسْجُدُوا ۖ وَآيَاتُكُمْ
وَأَنبِيَاؤُكُمْ فَاحْشَرُوا عَلَيْهِمْ قِيلَةً وَآجِدَةً ۖ وَلَا تَجَاءُ عَلَيْهِمْ
إِنَّ كَانَ بَعْضُ أَدَىٰ مِنْ ظُهُورِ أَكْثَرِكُمْ مَرْضًى ۖ أَن تَقْعُرُوا الصَّلَاةَ
وَأَخْذُوا حِذْرًا ۚ إِنَّ اللَّهَ أَعَدَّ لِلْكَافِرِينَ عَذَابًا مُّهِينًا ۖ وَإِذَا
تَقَرَّبْتُمْ إِلَى اللَّهِ فَادْكُرُوا اللَّهَ قِيَمًا وَنُفُورًا ۖ وَعَلَىٰ جُنُوبِكُمْ ۖ وَإِذَا
الْحَاسَنَةُ فَاقْبِسُوا الصَّلَاةَ ۖ إِنَّ الصَّلَاةَ كَانَتْ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ كِتَابًا

ठिकाना दोबल है और वह बुरी जगह है। (६७) हां, जो मर्ब और औरतें और बच्चे बे-बस हैं कि न तो कोई चारा कर सकते हैं और न रास्ता जानते हैं, (६८) करीब है कि खुदा ऐसों को माफ करदे और खुदा माफ करने वाला (और) बरश्शने वाला है। (६९) और जो शस्त्र खुदा की राह में घर-बार छोड़ जाए, वह जमीन में बहुत सी जगह और फ़ैलाव पाएगा और जो शस्त्र खुदा और उसके रसूल की तरफ़ हिजरत कर के घर से निकल जाए, फिर उसको मौत आ पकड़े, तो उसका सवाब खुदा के ज़िम्मे हो चुका और खुदा बरश्शने वाला मेहरबान है। (१००) ★

और जब तुम सफ़र को जाओ, तो तुम पर कुछ गुनाह नहीं कि नमाज़ को कम कर के पढ़ो, बशर्ते कि तुमको डर हो कि काफ़िर लोग तुम को ईज़ा (तक्लीफ़) देंगे। बेशक काफ़िर तुम्हारे खुले दुश्मन हैं। (१०१) और (ऐ पैगम्बर!) जब तुम उन (मुजाहिदों के लश्कर) में हो और उन को नमाज़ पढ़ाने लगे, तो चाहिए कि एक जमाअत तुम्हारे साथ हथियारों से लैस होकर खड़ी रहे, जब वे सज्दा कर चुकें, तो परे हो जाएं, फिर दूसरी जमाअत, जिसने नमाज़ नहीं पढ़ी (उनकी जगह आये और होशियार और हथियारों से लैस होकर) तुम्हारे साथ नमाज़ अदा करे। काफ़िर इस घात में हैं कि तुम ज़रा अपने हथियारों और सामानों से शाफ़िल हो जाओ, तो तुम पर एकबारगी हमला कर दें। अगर तुम बारिश की वजह से तक्लीफ़ में हो या बीमार हो, तो तुम पर कुछ गुनाह नहीं कि हथियार उतार रखो, मगर होशियार ज़रूर रहना। खुदा ने काफ़िरों के लिए ज़िल्लत का अज़ाब तैयार कर रखा है। (१०२) फिर जब तुम नमाज़ पूरी कर चुको, तो खड़े और बैठे और लेटे (हर हालत में) खुदा को याद करो। फिर जब डर जाता रहे, तो (उस तरह से) नमाज़ पढ़ो (जिस तरह अम्न की हालत में पढ़ते हो) बेशक नमाज़ का मोमिनों पर (मुकर्रर) वक्तों में अदा करना

१. मकर, चाहे किसी तरह से हो, उस में नमाज़ की क़स्र करना यानी चार-चार रक्अतों की जगह दो-दो रक्अतें पढ़ना जायज़ है। आयत से तो यह पाया जाता है कि जब कुपकार से तक्लीफ़ पहुंचने का डर हो, तब क़स्र करना चाहिए, लेकिन सही हदीसों से साबित है कि मुसाफ़िर को अम्न की हालत में भी नमाज़ का क़स्र करना दुस्त है। बुख़ारी व मुस्लिम में है कि आप ने जुहर और अस्त्र की नमाज़ मीना में क़स्र कर के पढ़ी और उस वक्त किसी तरह का ख़ौफ़ न था। तिमिज़ी में इब्ने अब्बास से रिवायत है कि हम ने सरबरे कायनात सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ मक्के और मदीने के बीच में अम्न की हालत में दो-दो रक्अत पढ़ी तो मकर में क़स्र को हज़रत की सुन्नत समझना चाहिए।

ब ला तहिन् फिबिगा - इल् - क्रोमि ७ इन् तकून् तअलमू - न
 फ इन्नुहम् यअलमू - न कमा तअलमू - न ८ व तर्जू - न मिनल्लाहि
 मा ला यर्जू-न ७ व कानल्लाहु अलीमन् हकीमा * (१०४) इन्ना
 अन्बल्ला इलैकल्-किता-ब बिल्हक्कि लि - तह्कु-म बैनन्नासि बिमा

अराकल्लाहु ७ व ला तकुल्लिल्ला-इनी-न
 खसीमव्- ७ (१०५) वस्तग्फिरिल्ला-ह ७

इन्ल्ला-ह का-न गफूररहीमा ८ (१०६)

व ला तुजादिल् अनिल्लजी-न यस्तानू-न

अन्फुसहुम् ७ इन्ल्ला - ह ला युहिबु

मन् का - न खव्वानन् असीमय्-६

(१०७) -यस्तर्फू-न मिनन्नासि व ला

यस्तर्फू-न मिनल्लाहि व हु-व म-अहुम् इज्

युबय्यितू-न मा ला यज्जा मिनल्कोलि ७

व कानल्लाहु बिमा यअ-मलू-न मुहीता

(१०८) हा-अन्तुम् हा-उला-इ जादलतुम्

अन्हुम् फिल् - ह्यातिद् - दुन्या

फ मय्युजादिलुल्ला-ह अन्हुम् यौमल् - क्रियामति अम्मय्यकूनु अलैहिम् वकीला

(१०९) व मय्यअ-मल् सू-अन् औ यज्लिम् नफसह सुम्-म यस्तग्फिरिल्ला-ह

यजिदिल्ला-ह गफूररहीमा (११०) व मय्यक्सिब् इस्मन् फ इन्मा

यक्सिबुह अला नफ्सिही ७ व कानल्लाहु अलीमन् हकीमा (१११) व

मय्यक्सिब् खती-अ-तन् औ इस्मन् सुम-म यमि बिही बरी-अन् फ कदिहत-म-ल

बुहानव्-व इस्मन्-मुबीना * (११२) व लौला फजलुल्लाहि अलै-क

व रहमतुह ल - हम्मताइ - फ - तुम् - मिन्हुम् अय्युजिल्लू - क ७ व मा

युजिल्लू - न इल्ला अन्फुसहुम् व मा यज्रुल्लू - क मिन् शैडन् ७ व

अन्ज-लल्लाहु अलैकल् - किता-ब वल्हिकम - त व अल्ल-म-क मा लम्

तकुन् तअ - लमु ७ व का-न फजलुल्लाहि अलै - क अजीमा (११३)

وَلَا تَهْتَفُوا فِي آيَاتِهِ الْعَوْرَ إِنَّ تَكُونُوا تَالُونَ فَالْتَمِ
 يَالُونَ كَمَا تَالُونَ وَتَرْجُونَ مِنَ اللَّهِ مَا لَا يَرْجُونَ وَكَانَ اللَّهُ
 عَزِيزًا حَكِيمًا إِنَّ أَنْزَلَ إِلَيْكَ الْكِتَابَ وَالْحَقُّ بِخَدِّكَ مِنْ أَيْمَانِ
 رَبِّكَ إِنَّكَ أَنْزَلْتَ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ لِنَاسٍ عَدِلِينَ وَاسْتَغْفِرُكَ اللَّهُ
 اللَّهُ كَانَ غَفُورًا رَحِيمًا وَلَا تَحْزَنْ مِنَ الَّذِينَ يَخْتَلُونَ الْقُرْآنَ
 إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ مَنْ كَانَ خَوَالًا أَعْمَى فَاسْتَغْفِرُونَ مِنَ النَّاسِ
 لَا يَسْتَغْفِرُونَ مِنَ اللَّهِ وَهُوَ مَعَهُمْ ذُنُوبُهُمْ مَا لِيَرْضَى مِنْ
 الْقَوْلِ وَكَانَ اللَّهُ بِمَا يَعْمَلُونَ عَظِيمًا وَمَا أَنْتُمْ بِأَعْدَاءَ اللَّهِ
 عَنْهُمْ فِي الصُّورَةِ الَّذِينَ قَسَمُوا بِاللَّهِ عَنْهُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ
 أَوْ مِنْ يَكُونُ عَلَيْهِمْ وَكَذَبُوا وَمَنْ يَعْمَلْ سُوءًا أَوْ يَظْلِمْ نَفْسًا
 ثُمَّ يَسْتَغْفِرِ اللَّهَ يَجِدِ اللَّهَ غَفُورًا رَحِيمًا وَمَنْ يَكُفِرْ إِلَّا كُفْرًا
 يَكْبَهُ عَلَى نَفْسِهِ وَكَانَ اللَّهُ عَلَيْهِ حَكِيمًا وَمَنْ يَكُفِرْ
 عَظِيمًا أَوْ إِذَا تَدِيرُ بِهِ بَرًّا فَقَدْ احْتَسَلَ بَهْتًا أَوْ إِذَا
 تَدِيرُ بِهِ وَتَوَلَّى فَضَّلَ اللَّهُ عَلَيْكَ وَرَحْمَتُهُ لَهَيْتَ طَائِفَةً مِنْهُمْ
 أَنْ يُفْسِدُوا مَا يَصْنَعُونَ إِلَّا أَنْفُسَهُمْ وَمَا يَصْنَعُونَ مِنْ شَيْءٍ
 وَأَنْزَلَ اللَّهُ عَلَيْكَ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَعَلَيْكَ مَا نَزَّلَ كُنْ عَلِيمًا
 وَكَانَ فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكَ عَظِيمًا لَا خَيْرَ فِي كَثِيرٍ مِنْ حَزَلٍ

फ़ज़ है। (१०३) और कुपफ़ार का पीछा करने में मुस्ती न करना। अगर तुम बे-आराम होते हो, तो जिस तरह तुम बे-आराम होते हो, उसी तरह वे भी बे-आराम होते हैं। और तुम खुदा से ऐसी-ऐसी उम्मीदें रखते हो, जो वे नहीं रख सकते और खुदा सब कुछ जानता है (और) बड़ी हिक्मत वाला है। (१०४) *

(ऐ पैग़म्बर!) हम ने तुम पर सच्ची किताब नाज़िल की है ताकि खुदा की हिदायतों के मुताबिक़ लोगों के मुक़दमों का फ़ैसला करो और (देखो) दशाबाज़ी की हिमायत में कभी बहस न करना। (१०५) और खुदा से बख़्शिश मांगना। बेशक़ खुदा बख़्शने वाला मेहरबान है। (१०६) और जो लोग अपने हम-जिसों की ख़ियानत करते हैं उनकी तरफ़ से बहस न करना, क्योंकि खुदा ख़ियानत करने वालों और मुज़रिमों को दोस्त नहीं रखता। (१०७) ये लोगों से तो छिपते हैं और खुदा से नहीं छिपते, हालांकि जब वे रातों को ऐसी बातों के मश्वरे किया करते हैं, जिसको वह पसन्द नहीं करता, तो उनके साथ हुआ करता है। और खुदा उन के तमाम कामों पर एहाता किए हुए है। (१०८) भला तुम लोग दुनिया की ज़िंदगी में तो उनकी तरफ़ से बहस कर लेते हो, क्रियामत को उनकी तरफ़ से खुदा के साथ कौन झगड़ेगा और कौन उनका वकील बनेगा? (१०९) और जो शस्स कोई बुरा काम कर बैठे या अपने हक़ में जुल्म कर ले, फिर खुदा से बख़्शिश मांगे, तो खुदा को बख़्शने वाला मेहरबान पाएगा। (११०) और जो कोई गुनाह करता है, तो उस का ववाल उसी पर है और खुदा जानने वाला (और) हिक्मत वाला है। (१११) और जो शस्स कोई कुसूर या गुनाह तो खुद करे, लेकिन किसी बे-गुनाह पर उसका इत्तिहाम (आरोप) लगाये, तो उसने बुहतान और खुले गुनाह का बोझ अपने सर पर रखा। (११२) *

और अगर तुम पर खुदा का फ़ज़ल और मेहरबानी न होती, तो उन में से एक जमाअत तुमको बहकाने का इरादा कर ही चुकी थी और ये अपने सिवा (किसी को) बहका नहीं सकते और न तुम्हारा कुछ बिगाड़ सकते हैं। और खुदा ने तुम पर किताब और दानाई नाज़िल फ़रमायी है और तुम्हें वे बातें सिखायी हैं, जो तुम जानते नहीं थे और तुम पर खुदा का बड़ा फ़ज़ल है ● (११३)

१. एक अन्सारी थे, उन की एक ज़िरह एक शस्स तअमा बिन अबीरक ने चुरा ली। अन्सारी ने हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आ कर फ़रियाद की। तअमा ने यह चालाकी की ज़िरह किसी और के घर में डलवा दी और यह कैफ़ियत अपने कुबे वालों से बयान कर के कहने लगा कि तुम हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास जाओ और कहो कि तअमा बे-गुनाह है, उस ने ज़िरह नहीं चुराई, बल्कि दूसरे शस्स ने चुराई है। आप तअमा की बे-गुनाही लोगों के सामने बयान फ़रमाएं। हज़रत रैब के जानने वाले तो थे ही नहीं, स्थान फ़रमाया कि ये लोग सच कहते होंगे। आप ने खड़े हो कर उस की बे-गुनाही का एलान कर दिया, तब खुदा ने ये आयतें नाज़िल फ़रमायीं कि तुम दशाबाज़ी और ख़ियानत करने वालों के तरफ़दार न बनो और उन की तरफ़ से बहस न करो, और खुदा से माफ़ी मांगो। मुसलमान वकील जो चोरों, डाकुओं, ख़ियानत करने वालों और हर किसम के मुज़रिमों की तरफ़ से मुक़दमों में वक़ालत करते और झगड़ते हैं और अपनी लच्छेदार तफ़रीरों और बहसों से उन को सज़ा से बचा लेते हैं, उन्हें अल्लाह के इस फ़रमान पर अमल करना चाहिए और जिन लोगों के बारे में मुक़दमे की रिपोर्ट पर नज़र कर के उन का दिल कह दे कि वे हकीक़त में मुज़रिम हैं, उन की तरफ़ से वक़ालत नहीं करनी चाहिए।

ला खं-र फी कसीरिम्-मिन्नज्वाहुम् इल्ला मन् अ-म-र बि स-द-कतिन् ओ
मअ-रुफिन् ओ इस्लाहिम् - बैनन्सासि ७ व मय्यफ् - अल् जालि-कबतिगा-अ
मज्जातिल्लाहि फ सो-फ नुअतीहि अजरन् अजीमा (११४) व मय्युशाकिकिरंसू-ल
मिम्बअ-दि मा तबय्य-न लहुल्हुदा व यत्तबिअ गै-र सबीलिल्-मुअमिनी-न नुवल्लिही
मा तवल्ला व नुस्लिही जहन्न-म ७ व सा-अत्

मसीरा (११५) इन्ल्ला-ह ला
यगिफर अय्युश-र-क बिही व यगिफर मा
दून जालि-क लि मय्यशाउ ७ व मय्युशिरक्
बिल्लाहि फ-कद् जल-ल जलालम् बजीदा (११६)
इय्यद्अ-न मिन्दूनिही इल्ला इनासत्
व इय्यद्अ-न इल्ला शेतानम् -मरीदल्
(११७) -ल-अ-नहुल्लाहु व का-ल

ल-अत्तखिजन्-न मिन् जिबादि-क नसीबम्-
मफरूज्व-ल (११८) -व ल-उजिल्लन्तहुम् व
ल उमानियल्लहुम् व ल आमुरन्तहुम् फ-ल-युबत्ति-
कुन-न आजानल्-अन्आमि व ल-आमुरन्तहुम् फ-
ल-युगय्यिरुन-न खल्कल्लाहि ७ व मय्यत्तखिजिश्-

शैतान वलिय्यम् - मिन् दूनिल्लाहि फ - कद् खसि - र खुरानम्-मुबीना
(११९) यजिदुहुम् व युमन्नीहिम् ७ व मा यजिदुहुमुशैतानु इल्ला गुरूरा
(१२०) उला-इ-क मअ्वाहुम् जहन्नमु ७ व ला- यजिदून अन्हा महीसा
(१२१) वल्कजी-न आमनू व अमिलुस्सालिहाति सनुदखिलुहुम् जन्नातिन्
तजरी मिन् तह्तिहल्-अन्हार खालिदी-न फीहा अ-ब-दन् ७ वअ-दल्लाहि
हक्कन् ७ व मन् अस्दकु मिनल्लाहि कीला (१२२) लै-स बि अमानिय्यिकुम्
व ला अमानिय्यि अहिल्ल-किताबि ७ मय्यअ-मल् सू - अय्युज - ज बिही
व ला यजिद् लहू मिन् दूनिल्लाहि वलिय्यव-व ला नसीरा (१२३)
व मय्यअ-मल् मिनस्सालिहाति मिन् ज-करिन् ओ उक्ता व हु-व मुअमिनुन्
फ उला-इ-क यदखुलूनल् - जन्न-त्त व ला युउलमून नकीरा (१२४)

الْأَمِنْ أَمْرٌ بِصَدَقَةٍ أَوْ مَعْرُوفٍ أَوْ إِصْلَاحٍ بَيْنَ النَّاسِ وَمَنْ
يَقْعَلْ ذَلِكَ ابْتِغَاءَ مَرْضَاتِ اللَّهِ فَسَوْفَ نُؤْتِيهِ أَجْرًا عَظِيمًا
وَمَنْ يَتَّبِعِ الْتَوَلَّى مِنْ بَعْدِ مَا بُنِيتَ لَهُ الْهُدَى وَيَتَّبِعْ غَيْرَ
سَبِيلِ الْمُرْسَلِينَ قَوْلَهُ أَتَقُولُ لَهُمْ وَيُضِلُّهُمْ وَتَأْتِيهِمْ مَكْرَهُهُ
لَهُ اللَّهُ لَا يَغْفِرُ أَنْ يُشْرَكَ بِهِ وَيَغْفِرُ مَا دُونَ ذَلِكَ لِمَنْ يَشَاءُ
وَمَنْ يُشْرِكْ بِاللَّهِ فَقَدْ ضَلَّ ضَلَالًا عَظِيمًا إِنَّ يَدْعُونَ مِنْ
دُونِهِ آلَ إِنْسٍ وَإِنْ يَدْعُونَ إِلَّا شَيْطَانًا مَرِيدًا ۚ لَعَنَهُ اللَّهُ
وَقَالَ لَا تُخَدُّعُنْ مِنْ عِبَادِكُمْ تَصِيًّا أَفَرَأَوْهُ ۚ وَالَّذِينَ كَفَرُوا
لَأُصْلَبُنَّ ۚ وَلَا مَرْفَعَهُمْ فَلْيُسَبِّحُنَّ أَذَانَ الْأَنْعَامِ ۚ وَلَا مَرْفَعَهُمْ
فَلْيُسَبِّحُنَّ خَلْقَ اللَّهِ وَمَنْ يَتَّبِعِ الشَّيْطَانَ وَتِلْكَ دُونِ اللَّهِ
فَقَدْ خَسِرَ خَسِيرًا عَظِيمًا ۚ يَتَّبِعُهُمْ وَيَتَّبِعُهُمْ وَمَا يُعِدُّهُمْ
الشَّيْطَانُ إِلَّا عُقُورًا ۚ أَوَلَيْكَ مَا دُلُّهُمْ جَهَنَّمَ وَلَا يُخَدُّعُونَ عَنْهَا
حَيْضًا ۚ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ سَنُدْخِلُهُمْ جَنَّاتٍ
تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۚ وَعَدَ اللَّهُ حَقًّا
مَنْ أُصْلِحَ مِنَ اللَّهِ فَلَا يَسْأَلُ أَجْرًا وَلَا يَمُنُّ إِلَّا بِالْكَفَى
مَنْ يُعْمَلْ سَوَاءً يَجْزِيهِ ۚ وَلَا يُجِدُ لِمَنْ دُونَ اللَّهِ وَلِيًّا ۚ وَلَا
أَعْمِدًا ۚ وَمَنْ يَقْعَلْ مِنَ الصَّالِحِينَ ذِكْرًا لَأُوْتِيَنَّهُ وَهُوَ فِي

उन लोगों के बहुत से मशिवरे अच्छे नहीं, हां, (उस शरूस का मशिवरा अच्छा हो सकता है) जो खैरात या नेक बात या लोगों में सुलह करने को कहे और जो ऐसे काम खुदा की खुशनूदी हासिल करने के लिए करेगा, तो हम उसको बड़ा सवाब देंगे। (११४) और जो शरूस सीधा रास्ता मालूम होने के बाद पैगम्बर की मुखालफत करे और मोमिनों के रास्ते के सिवा और रास्ते पर चले, तो जिधर वह चलता है, हम उसे उधर ही चलने देंगे। और (क्रियामत के दिन) जहन्नम में दाखिल करेंगे और वह बुरी जगह है। (११५) ★

खुदा उस गुनाह को नहीं बल्लेगा कि किसी को उसका शरीक बनाया जाए और इसके सिवा (और गुनाह) जिसको चाहेगा, बरूश देगा। और जिसने खुदा के साथ शरीक बनाया, वह रास्ते से दूर जा पड़ा। (११६) ये जो खुदा के सिवा पूजा करते हैं तो औरतों ही की, और पुकारते हैं तो शैतान सरकश ही को, (११७) जिस पर खुदा ने लानत की है ~~है~~ (जो खुदा से) कहने लगा, मैं तेरे बन्दों से (गैर खुदा की नज़् दिलवा कर माल का) एक मुकरर हिस्सा ले लिया करूंगा। (११८) और उनको गुमराह करता और उम्मीदें दिलाता रहूंगा और यह सिखाता रहूंगा कि जानवरों के कान चीरते रहें और (यह भी) कहता रहूंगा कि वे खुदा की बनायी हुई सूरतों को बदलते रहें और जिम शरूस ने खुदा को छोड़ कर शैतान को दोस्त बनाया, वह खुले नुक्सान में पड़ गया। (११९) वह उनको वायदे देता है और उम्मीदें दिलाता है और जो कुछ शैतान उन्हें वायदे देता है, वह धोखा ही धोखा है। (१२०) ऐसे लोगों का ठिकाना जहन्नम है और वह वहां से मुस्लसी नहीं पा सकेंगे। (१२१) और जी लोग ईमान लाये और नेक काम करते रहे, उनको हम बहिश्तों में दाखिल करेंगे, जिनके नीचे नहरें जारी हैं। हमेशा-हमेशा उनमें रहेंगे, यह खुदा का सच्चा वायदा है, और खुदा से ज्यादा बात का सच्चा कौन हो सकता है। (१२२) (निजात) न तो तुम्हारी आरजूओं पर है और न अहले किताब की आरजूओं पर। जो शरूस बुरे अमल करेगा, उसे उसी (तरह) का बदला दिया जाएगा और वह खुदा के सिवा न किसी को हिमायती पाएगा और न मददगार। (१२३) और जो नेक काम करेगा, मदद हो या औरत और वह ईमान वाला भी होगा, तो ऐसे लोग जन्नत में दाखिल होंगे और उनका तिल बराबर भी हक न मारा जाएगा। (१२४) और उस शरूस से किसका

दीन अच्छा हो सकता है, जिस ने खुदा के हुक्म को क़बूल किया और वह भले काम करने वाला भी है और इब्राहीम के दीन की पैरवी करने वाला भी है, जो यक़ूम (मुसलमान) थे और खुदा ने इब्राहीम को अपना दोस्त बनाया था। (१२५) और आसमान और ज़मीन में जो कुछ है, सब खुदा ही का है और खुदा हर चीज़ पर एहाता किये हुए है। (१२६) *

(ऐ पैग़म्बर !) लोग तुमसे (यतीम) औरतों के बारे में फ़तवा तलब करते हैं, कह दो कि खुदा तुमको उनके (साथ निकाह करने के) मामले में इजाज़त देता है और जो हुक्म इस किताब में पहले दिया गया है, वह उन यतीम औरतों के बारे में है, जिनको तुम उनका हक़ तो देते नहीं और स्वाहिश रखते हो कि उनके साथ निकाह कर लो और (नीज़) बेचारे बेकस बच्चों के बारे में और यह (भी हुक्म-देता है) कि यतीमों के बारे में इंसफ़ पर क़ायम रहो और जो भलाई तुम करोगे, खुदा उसको जानता है। (१२७) और अगर किसी औरत को अपने ख़ाविद की तरफ़ से ज़्यादती या बे-रख़ती का डर हो, तो मियां-बीवी पर कुछ गुनाह नहीं कि आपस में किसी क़रार-दाद पर सुलह कर लें। और सुलह ख़ूब (चीज़) है और तबीयतें तो बुल्ल की तरफ़ मायल होती हैं।^१ और अगर तुम भले और परहेज़गार बनोगे, तो खुदा तुम्हारे सब कामों को जानता है। (१२८) और तुम चाहे कितना ही चाहो, औरतों में हरगिज़ बराबरी नहीं कर सकोगे, तो ऐसा भी न करना कि एक ही की तरफ़ ढलक जाओ और दूसरी को (ऐसी हालत में) छोड़ दो कि गोया अधर में लटक रही है^२ और अगर आपस में मुवाफ़क़त कर लो और परहेज़गारी करो तो खुदा बरक़शने वाला, मेहरबान है। (१२९) और अगर मियां-बीवी (में मुवाफ़क़त न हो सके और) एक-दूसरे से जुदा हो जाएं तो खुदा हर एक को अपनी दोलत से ग़नी कर देगा और खुदा बड़ी फ़राखी वाला और हिक्मत वाला है। (१३०) और जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है, सब खुदा ही का है और जिन लोगों को तुमसे पहले किताब दी गई थी, उनको भी और (ऐ मुहम्मद !) तुमको भी हमने ताकीदी हुक्म किया है कि खुदा से डरते रहो और अगर कुफ़्र करोगे तो (समझ रखो कि) जो कुछ आसमानों में और जो कुछ ज़मीन में है, सब खुदा ही का है और खुदा बे-परवाह और तारीफ़ के लायक है। (१३१)

१. यानी बुल्ल और लालच इन्सान के मिजाज़ में दाख़िल हैं, वह अपना हक़ तो पूरा लेना चाहता है और दूसरे के हक़ को कुछ परवा नहीं करता। औरत तो चाहती है अपना हक़--खाना, कपड़ा और मकान पूरा ले और मर्द चाहता है कि बिला हक़ दिए अपना काम निकाले, लेकिन अगर औरत मर्द को खुश करने के लिए अपना हक़ छोड़ दे तो मुनासिब है।

२. यानी न आसमान पर है, न ज़मीन पर, मतलब यह कि न शौहर वाली है कि शौहर से एहसान की उम्मीद हो, न आज़ाद है कि और शौहर कर ले।

व बिल्लाहि मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि व कफ़ा बिल्लाहि
वकीला (१३२) इय्यशअ-युजिहकुम् अय्युहल्लासु व यज्ति
बि आख़रीन व कानल्लाहु अला ज़ालि-क कदीरा (१३३) मन् का-न
युरीदु सबाबदुन्या फ़ अिन्दल्लाहि सबाबुदुन्या वल्आख़िरति व
कानल्लाहु समीअम्-बसीरा ★ (१३४)

الْمَسْمُوعَةِ
كَفَرُوا فَإِنَّ يَوْمَ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَكَانَ اللَّهُ
عَزِيزًا حَكِيمًا ۝ وَيَوْمَ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَكَفَى
بِاللَّهِ وَكَفَى ۝ إِنَّ يَسْأَلُ يَدَ يَمِينِهِ إِيَّهَا النَّاسُ وَيَأْتِ بِالْحَقِّ
وَكَانَ اللَّهُ عَلَى ذَلِكَ قَدِيرًا ۝ مَنْ كَانَ يَرْجُوا لِقَاءَ اللَّهِ فَإِذَا
هُوَ فِي لِقَاءِ اللَّهِ نُورًا ۝ وَكَانَ اللَّهُ سَمِيعًا عَلِيمًا ۝
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُونُوا تَوَّابِينَ ۝ يَالِقَا الَّذِينَ آمَنُوا
وَلَوْ عَلَى أَنْفُسِكُمْ أَوَالِدَ الَّذِينَ وَالِدِينَ ۝ وَالْأَقْرَبِينَ ۝ إِنْ يَكُنْ غَنِيًّا
أَوْ فَقِيرًا فَاللَّهُ أَوْلَىٰ بِهِمَا فَلَا تَتَّبِعُوا الْهَوَىٰ أَنْ تَعْدُوا ۝
وَإِنْ تَلَاَوْا أَوْ تَعْرَضُوا فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرًا ۝
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا آمِنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَالْكِتَابِ الَّذِي
نُزِّلَ عَلَىٰ رَسُولِهِ ۝ وَالْكِتَابِ الَّذِي نَزَّلَ مِنْ قَبْلُ ۝ وَمَنْ
يُفْكَرْ بِاللَّهِ وَمَلَائِكَتِهِ وَرُسُلِهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ فَقَدْ
ضَلَّ ضَلَالًا بَعِيدًا ۝ إِنْ الَّذِينَ آمَنُوا ثُمَّ كَفَرُوا ثُمَّ
آمَنُوا ثُمَّ كَفَرُوا ثُمَّ أَدَّوْا أَعْرَابًا لَيَكُنَّ اللَّهُ يُغْفِرُ لَهُمْ
وَلَا يَهْدِي لَهُمْ سَبِيلًا ۝ بَشِيرِ السَّادِقِينَ بِأَنْ لَّهُمْ عَذَابٌ
أَلِيمٌ ۝ الَّذِينَ يَكْفُرُونَ الْكُفْرَانَ وَلِيَأْمُرُوا فِي النَّاسِ
الْمُتَّقِينَ ۝ عَذَابُهُمْ الْعَذَابُ ۝ فَإِنَّ الْعَذَابَ لِلَّهِ يُعَذِّبُهُمْ
وَلَا يَكُنْ

या अय्युहल्लाजी-न आमनू कनू कव्वामी-न
बिल्किस्ति शुहदा-अ बिल्लाहि व लौ अला
अन्कुसिकुम् अबिल्-वालिदैनि वल्अकरबी-न
इय्यकुन् गनियन् औ फ़कीरन् फ़ल्लाहु
ओला बिहिमा फ़ ला तत्तबिअल्-हवा
अन् तज्ज-दिलू व इन् तल्बू औ
तुअ-रिज्जू फ़ इन्नल्ला-ह का-न बिमा तअ-मलू-न
खबीरा (१३५) या अय्युहल्लाजी-न
आमनू आमिन् बिल्लाहि व रसूलिही
वल्-किताबिल्लाजी नज़्ज-ल अला रसूलिही
वल्-किताबिल्लाजी अन्ज़-ल मिन् कबलु

व मय्यक्फ़ुर् बिल्लाहि व मलाइकतिही व कुतुबिही व रुसुलिही
वल्-योमिल्-आख़िरि फ़-क़द् ज़ल-ल ज़लालम्-बअीदा (१३६) इन्नल्लाजी-न
आमनू सुम-म क-फ़रू सुम-म आमनू सुम-म क-फ़रू सुम-मज्दाह कुफ़रल्लम्
यकुनिल्लाहु लि यग़िफ़-र लहुम् व ला लि यह्दियहुम् सबीला (१३७)
बशिरिल्-मुनाफ़िकी-न बि अन-न लहुम् अज़ाबन् अलीमा (१३८) अल्लाजी-न
यत्तख़िज़ूनल् - काफ़िरी - न ओलिया-अ मिन् दूनिल्-मुअ्मिनी-न व अ-यन्तगू-न
अिन्दहुमुल्-अिज़्ज-त फ़-इन्नल्-अिज़्ज-त बिल्लाहि जमीआ (१३९)

और (फिर सुन रखो कि) जो कुछ आसमानों में और जो कुछ ज़मीन में है, सब खुदा ही का है और खुदा ही कारसाज़ काफ़ी है। (१३२) लोगो ! अगर वह चाहे तो तुम को फ़ना कर दे और (तुम्हारी जगह) और लोगों को पैदा कर दे और खुदा इस बात पर कुदरत रखता है। (१३३) जो शरूस् दुनिया (में) अमलों का बदला-चाहता हो, तो खुदा के पास दुनिया और आखिरत (दोनों) के लिए बदला (मौजूद) है और खुदा सुनता-देखता है। (१३४) *

ऐ ईमान बालो ! इन्साफ़ पर कायम रहो और खुदा के लिए सच्ची गवाही दो, चाहे (इस में) तुम्हारा या तुम्हारे मां-बाप और रिश्तेदारों का नुक़सान ही हो। अगर कोई अमीर है या फ़कीर, तो खुदा उनका ख़ैरख़्वाह है। तो तुम नफ़्स की ख़्वाहिश के पीछे चल कर अद्ल (इन्साफ़) को न छोड़ देना। अगर तुम पेचदार शहादत दोगे या (शहादत से) बचना चाहोगे, तो (जान रखो) खुदा तुम्हारे सब कामों को जानता है। (१३५) मोमिनो ! खुदा पर और उस के रसूल पर और जो किताब उस ने अपने (आखिरी) पैग़म्बर पर नाज़िल की है और जो किताबें इस से पहले नाज़िल की थीं, सब पर ईमान लाओ और जो शरूस् खुदा और उस के फ़रिश्तों और उस की किताबों और उसके पैग़म्बरों और क्रियामत के दिन से इन्कार करे, वह रास्ते से भटक कर दूर जा पड़ा। (१३६) जो लोग ईमान लाये, फिर काफ़िर हो गये, फिर ईमान लाये, फिर काफ़िर हो गये, फिर कुफ़्र में बढ़ते गए, उन को खुदा न तो बल्लेगा और न सीधा रास्ता दिखायेगा। (१३७) (ऐ पैग़म्बर !) मुनाफ़िक़ों (यानी दो-रुखे लोगों) को खुशख़बरी सुना दो कि उन के लिए दुख देने वाला अज़ाब (तैयार) है। (१३८) जो मोमिनों को छोड़ कर काफ़िरों को दोस्त बनाते हैं, क्या ये उन के यहां इस्ज़त हासिल करनी चाहते हैं, तो इस्ज़त तो सब खुदा ही की है। (१३९) और खुदा ने तुम

(मोमिनों) पर अपनी किताब में (यह हुक्म) नाज़िल करमाया है कि जब तुम (कहीं) सुनो कि खुदा की आयतों से इन्कार हो रहा है और उन की हंसी उड़ाई जाती है तो जब तक वे लोग और बातें (न) करने लगें, उन के पास मत बैठो, वरना तुम भी उन्हीं जैसे हो जाओगे। कुछ शक नहीं कि खुदा मुनाफ़िकों और काफ़िरों सब को दोज़ख में इकट्ठा करने वाला है। (१४०) जो तुम को देखते रहते हैं, अगर खुदा की तरफ़ से तुम को फ़तह मिले, तो कहते हैं, क्या हम तुम्हारे साथ न थे और अगर काफ़िरों को (फ़तह) नसीब हो, तो (उस से) कहते हैं, क्या हम तुम पर ग़ालिब नहीं थे और तुम को मुसलमानों (के हाथ) से बचाया नहीं, तो खुदा तुम में कियामत के दिन फ़ैसला कर देगा और खुदा काफ़िरों को मोमिनों पर हरगिज़ ग़लबा नहीं देगा। (१४१) ★

मुनाफ़िक (इन चालों से अपने नज़दीक) खुदा को धोखा देते हैं, (ये उस को क्या धोखा देंगे) वह उन्हीं को धोखे में डालने वाला है और जब ये नमाज़ को खड़े होते हैं, तो मुस्त और काहिल होकर (सिर्फ़) लोगों के दिखाने को और खुदा की याद ही नहीं करते, मगर बहुत कम। (१४२) बीच में पड़े लटक रहे हैं, न उनकी तरफ़ (होते हैं), न इन की तरफ़ और जिस को खुदा भटकाए, तो तुम उसके लिए कभी भी रास्ता न पाओगे। (१४३) ऐ अह्ले ईमान! मोमिनों के सिवा काफ़िरों को दोस्त न बनाओ, क्या तुम चाहते हो कि अपने ऊपर खुदा का ख़ुला इल्ज़ाम लो? (१४४) कुछ शक नहीं कि मुनाफ़िक लोग दोज़ख के सब से नीचे के दर्जों में होंगे और तुम उनका किसी को मददगार न पाओगे। (१४५) हां, जिन्होंने तौबा की और अपनी हालत को दुरुस्त किया और खुदा (की रस्सी) को मज़बूत पकड़ा और खास खुदा के फ़रमांबरदार हो गये, तो ऐसे लोग मोमिनों के साथ होंगे और खुदा बहुत जल्द मोमिनों को बड़ा सवाब देगा। (१४६) अगर तुम (खुदा के) शुक्रगुज़ार रहो और (उस पर) ईमान ले आओ तो खुदा तुम को अज़ाब देकर क्या करेगा और खुदा तो क़दशनास और जानता-बूझता है। (१४७) खुदा इस बात को पसंद नहीं करता कि

कोई किसी को एलानिया बुरा कहे, मगर वह जो मज़लूम हो और खुदा (सब कुछ) सुनता (और) जानता है।' (१४८) अगर तुम लोग भलाई खुल्लम खुल्ला करोगे या छिपा कर या बुराई से दूरगुज़र करोगे, तो खुदा भी माफ़ करने वाला (और) क्रुदरत वाला है। (१४९) जो लोग खुदा से और उस के पैगम्बरों से कुफ़ करते हैं और खुदा और उस के पैगम्बरों में फ़र्क़ करना चाहते हैं और कहते हैं कि हम कुछ को मानते हैं और कुछ को नहीं मानते और ईमान और कुफ़ के बीच में एक राह निकालनी चाहते हैं, (१५०) वे बिला किसी शक-शुबहे के काफ़िर हैं और काफ़िरों के लिए हम ने ज़िल्लत का अज़ाब तैयार कर रखा है। (१५१) और जो लोग खुदा और उस के पैगम्बरों पर ईमान लाये और उन में से किसी में फ़र्क़ न किया (यानी सब को माना), ऐसे लोगों को वह बहुत जल्द उन (की नेकियों) का बदला अता फ़रमायेगा और खुदा बरूशने वाला मेहरबान है। (१५२) *

(ऐ मुहम्मद !) अहले किताब तुम से दर्खास्त करते हैं कि तुम उन पर एक (लिखी हुई) किताब आसमान से उतार लाओ, तो ये मूसा से इस से भी बड़ी-बड़ी दर्खास्ते कर चुके हैं। (उन से) कहते थे, हमें खुदा को जाहिर (यानी आंखों से) दिखा दो, सो उन के गुनाह की वजह से, उन को बिजली ने आ पकड़ा। फिर खुली निशानियां आये पीछे, बछड़े को (माबूद) बना बैठे, तो उस से भी हम ने दर-गुज़र की और मूसा को खुला गलबा दिया। (१५३) और उस से अहद लेने को हम ने उस पर तूर पहाड़ उठा खड़ा किया और उन्हें हुक्म दिया कि (शहर के) दरवाज़े में (दाखिल होना, तो) सज़्दा करते हुए दाखिल होना और यह भी हुक्म दिया कि हफ़्ते के दिन (मछलियां पकड़ने) में हृद से आगे (यानी हुक्म के खिलाफ़) न करना। गरज हम ने उन से मज़बूत अहद लिया। (१५४) (लेकिन उन्होंने ने अहद को तोड़ डाला) तो उन के अहद तोड़ देने और खुदा की आयतों से कुफ़ करने और नबियों को ना-हक़ मार डालने और यह कहने की वजह से कि हमारे दिलों पर पर्दे (पड़े हुए) हैं, (खुदा ने उन को मर्दूद कर दिया और उन के दिलों पर पर्दे नहीं हैं), बल्कि उन के कुफ़ की वजह से खुदा ने उन पर मुहर कर दी है, तो ये कम ही ईमान लाते हैं। (१५५) और उन के कुफ़ की वजह से और मरयम पर एक बड़ा बुहतान बांधने की वजह से (१५६) और यह

१. किसी को बुराई बयान करना और उस का ऐब जाहिर करना कि इसी का नाम ग़ीबत है, बहुत बुरा है खुदा को निहायत ना-पसंद है। हां, अगर किसी पर कोई जुल्म है, तो उस का जुल्म बयान करना और मज़लूम का ज़ालिम को बुरा कहना मुनासिब है।

व कोलिहिम् इन्ना क-तल्लल्-मसी-ह् असीब-न मय-म रसूलल्लाहि ८ व मा
क-तल्लहु व मा स-लबूहु व लाकिन् शुब्बि-ह लहुम् ७ व इन्नल्लजीनख्त-लफू फ्रीहि
ल-फ्री शक्किम्मिन्हु ७ मा लहुम् बिही मिन् अल्मिन् इल्लत्तिबाअज्जन्नि ८ व
मा क-तल्लहु यकीना ७ (१५७) बर-फ-अहुल्लाहु इलैहि ७ व कानल्लाहु अजीजन्

हकीमा (१५८) ३० इम्मिन् अहिल्ल-
किताबि इल्ला ल-युअमिनन्-न बिही कब्-ल
मोतिही ८ व योमल् - क्रियामत्ति यकून्
अलैहिम् शहीदा ८ (१५९) फ बिज्जुलिम्-
मिनल्लजीन हादू हरम्ना अलैहिम्
तथ्यिबातिन् उहिल्लत् लहुम् व बि सदिदहिम्
अन् सबीलिल्लाहि कसीरा ७ (१६०)
व अख्जि हिमुरिबा व कद् नुह अन्हु व
अक्लिहिम् अम्बालन्नासि बिल्बातिलि ७
व अअ-तदना लिक्काफिरी-न मिन्हुम्
अजाबन् अलीमा (१६१) लाकिन्-
रासिखू-न फिल्ल-अल्मि मिन्हुम् वल्मुअमिनू-न
युअमिनू-न बिमा उन्जि-ल इलै-क व मा

عَلَيْهِمْ أَقُولُ إِنَّ أَقْلَنَا السَّيِّئَةَ عَيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ رَسُولَ اللَّهِ
وَمَا قَتَلُوهُ وَمَا صَلَبُوهُ وَلَكِنْ شُبِّهَ لَهُمْ وَأَنَّ الْكَافِرِينَ
اِشْتَكَلُوا فِيهِ لَقَدْ شَكَّ مِنْهُ مَالَهُمْ بِهِ مِنْ عِلْمٍ إِلَّا الَّذِينَ
الْطَّقُوا وَمَا قَتَلُوهُ يَقِينًا بَلْ رَفَعَهُ اللَّهُ إِلَيْهِ وَكَانَ اللَّهُ
عَزِيزًا حَكِيمًا وَإِنْ مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ إِلَّا الْيُودُ الَّذِينَ
مَوَدَّةَ وَبِوَارِثَتِهِمْ يَكُونُ عَلَيْهِمْ شُهَدَاءُ إِنَّ كَيْدَ لَهُمْ
الَّذِينَ هَادُوا حَزَمًا عَلَى عَصِيئَةٍ أَجَلَتْ لَهُمْ وَبَصُرَهُمْ
عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ الْكَافِرِينَ الَّذِينَ فِي الْعَالَمِ الْيَوْمِ وَقَدْ تَبَاؤُا عَنْهُ
أَكْثَرُ أَمْوَالِ النَّاسِ بِالْبَاطِلِ وَأَعْتَدْنَا لِلْكَافِرِينَ مِنْهُمْ
عَذَابًا أَلِيمًا لَكِنَّ الَّذِينَ فِي الْعَالَمِ الْيَوْمِ وَالْمُؤْمِنُونَ يَعْلَمُونَ
بِمَا أَنْزَلْنَا إِلَيْكَ وَمَا أَنْزَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ وَالْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ
الْمُؤْتَمِنِينَ الزَّكَاةَ وَالْمُؤْمِنِينَ وَاللَّهُ وَالْيَوْمَ الْآخِرِ أَوْ لَوْ
سَأَلْتَهُمْ لَمَنْ عَزَمَتُمَا وَإِلَّا أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ لَأَقْبِلَ عَلَى اللَّهِ
وَالَّذِينَ مِنْ بَعْدِهِ وَأَوْحَيْنَا إِلَى إِبْرَاهِيمَ وَإِسْمَاعِيلَ وَإِسْحَاقَ
وَيَعْقُوبَ وَالْأَسْبَاطِ وَعَيْسَى وَالْيُوسُفَ وَيُونُسَ وَهَارُونَ وَنُوحًا
وَأَيُّهَا أَوْدُ الْيُودِ وَأَوْحَيْنَا إِلَيْكَ وَرَسُولًا فَصَلِّ عَلَيْهِمْ مِنْ قَبْلُ
وَرَسُولًا فَصَلِّ عَلَيْهِمْ عَلَيْكَ وَكَلامُ اللَّهِ مُؤْتَى عَلَيْهِمْ رُسُلًا

उन्जि-ल मिन् कब्लि-क वल्मुकीमीनस्सला-त्त वल्-मुअत्तूनउज्जका-त्त वल्मुअमिनू-न
बिल्लाहि वल्-योमिल्-आखिरि ७ उला-इ-क सनुअतीहिम् अजर्न् अजीमा
★ (१६२) इन्ना ओहैना इलै-क कमा ओहैना इला नूहिब्वन्नबियी-न
मिम्बअ-दिही ८ व ओहैना इला इवराही-म व इस्माओ-ल व इस्हा-क व
यअकू-ब वल्-अस्बाति व असीसा व अय्यू-ब व यूनु-स व हारू-न व सुलैमा-न ८
व आतैना दवू-द जबूरा ८ (१६३) व रुसुलत् कद् क-सस्नाहुम् अलै-क मिन्
कब्लु व रुसुलल्लम् नक्सुस्हुम् अलै-क ७ व कल्लमल्लाहु मूसा तक्लीमा ८
(१६४) रुसुलुम्-मुबशिशरी-न व मुज्जिरी-न लिअल्ला यकू-न लिन्नासि
अ-लल्लाहि हुज्जतुम्-बअ-इरसुलि ७ व कानल्लाहु अजीजन् हकीमा (१६५)

कहने की वजह से कि हम ने मर्यम के बेटे ईसा मसीह को, जो खुदा के पैगम्बर (कहाते थे,) कत्ल कर दिया है, (खुदा ने उन को मलजून कर दिया) और उन्होंने ईसा को कत्ल नहीं किया और न उन्हें सूली पर चढ़ाया, बल्कि उन को उन की-सी सूरत मालूम हुई और जो लोग उन के बारे में इस्तिफाफ करते हैं, वे उन के हाल से शक में पड़े हुए हैं और बदगुमानी की पंरवी के सिवा उन को इस का कुछ भी इल्म नहीं और उन्होंने ईसा को यकीनन कत्ल नहीं किया, (१५७) बल्कि खुदा ने उन को अपनी तरफ उठा लिया और खुदा गालिब और हिक्मत वाला है। (१५८) और कोई अहले किताब नहीं होगा, मगर उनकी मौत से पहले उनपर ईमान ले आयेगा और वह क्रियामत के दिन उन पर गवाह होंगे। (१५९) तो हम ने यहूदियों के जुल्मों की वजह से (बहुत-सी) पाकीजा चीजें, जो उन को हलाल थीं, उन पर रह्राम कर दीं। और इस वजह से भी कि वे अक्सर खुदा के रास्ते से (लोगों को) रोकते थे। (१६०) और इस वजह से भी कि मना किए जाने के बावजूद सूद लेते थे और इस वजह से भी कि लोगों का माल नाहक खाते थे और उन में से जो काफिर हैं, उन के लिए हम ने दर्द देने वाला अजाब तैयार कर रखा है, (१६१) मगर जो लोग उन में से इल्म में पक्के हैं और जो मोमिन हैं, वे इस (किताब) पर जो तुम पर नाज़िल हुई और जो (किताबें) तुम से पहले नाज़िल हुईं (सब पर) ईमान रखते हैं और नमाज़ पढ़ते हैं और जकात देते हैं और खुदा और आखिरत के दिन को मानते हैं। उनको हम बहुत जल्द बड़ा बदला देंगे (१६२)★

(ऐ मुहम्मद !) हम ने तुम्हारी तरफ उसी तरह वहा भेजी है, जिस तरह नूह और उन से पिछले पैगम्बरों की तरफ भेजी थी और इब्राहीम और इस्माईल और इस्हाक और याकूब और याकूब की औलाद और ईसा और अय्यूब और यूनस और हारून और मुलेमान की तरफ भी हम ने वहा भेजी थी और दाऊद को हम ने जब्बूर भी इनायत की थी। (१६३) और बहुत से पैगम्बर हैं, जिनके हालात हम तुम से पहले बयान कर चुके हैं, और बहुत से पैगम्बर हैं जिनके हालात तुमसे बयान नहीं किये। और मूसा से तो खुदा ने बातें भी कीं। (१६४) (सब पैगम्बरों को) (खुदाने) खुशखबरी सुनाने वाले और डराने वाले (बना कर भेजा था), ताकि पैगम्बरों के आने के बाद लोगों को खुदा पर इल्जाम का मौक़ा न रहे और खुदा गालिब हिक्मत वाला है। (१६५) लेकिन खुदा ने जो (किताब) तुम पर

१. जो चीजें खुदा ने उन लोगों पर इराम कर दी थीं, उन का बयान सूर: अन्आम आयत १४६ में है।

नाज़िल की है, उस की निश्चित खुदा गवाही देता है कि उस ने अपने इल्म से नाज़िल की है और फ़रिश्ते भी गवाही देते हैं और गवाह तो खुदा ही काफ़ी है। (१६६) जिन लोगों ने कुफ़ किया और (लोगों को) खुदा के रास्ते से रोका, वे रास्ते से भटक कर दूर जा पड़े। (१६७) जो लोग काफ़िर हुए और जुल्म करते रहे, खुदा उन को बल्लाने वाला नहीं और न उन्हें रास्ता ही दिखाएगा। (१६८) हाँ, दोख़ का रास्ता, जिसमें वे हमेशा (जलते) रहेंगे और यह (बात) खुदा को आसान है। (१६९) लोगो ! खुदा के पैग़म्बर तुम्हारे पास तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से हक़ बात ले कर आए हैं, तो (उन पर) ईमान लाओ, (यही) तुम्हारे हक़ में बेहतर है और अगर कुफ़ करोगे तो (जान रखो कि) जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है, सब खुदा ही का है और खुदा सब कुछ जानने वाला (और) हिक्मत वाला है। (१७०) ऐ अहले किताब ! अपने दीन (की बात) में हद से न बढ़ो और खुदा के बारे में हक़ के सिवा कुछ न कहो। मसीह (यानी) मरयम के बेटे ईसा (न खुदा थे, न खुदा के बेटे, बल्कि) खुदा के रसूल और उस (की बशारत) का कलिमा थे, जो उस ने मरयम की तरफ़ भेजा था और उस की तरफ़ से एक रूह थे, तो खुदा और उस के रसूलों पर ईमान लाओ और (यह) न कहो (कि खुदा) तीन (हैं, इस एतकाद से) बाज़ आओ कि यह तुम्हारे हक़ में बेहतर है। खुदा ही अकेला माबूद है और इस से पाक है कि इस के औलाद हों। जो कुछ आसमानों में और जो कुछ ज़मीन में है सब उसी का है और खुदा ही कारसाज़ काफ़ी है। (१७१) ✱

मसीह इस बात से आर (लाज़-शर्म) नहीं रखते कि खुदा के बन्दे हों और न मुकर्रब फ़रिश्ते (आर रखते हैं) और जो शरूस खुदा का बन्दा होने को आर की वजह समझे और सरकशी करे तो खुदा सब को अपने पास जमा कर लेगा। (१७२) तो जो लोग ईमान लाये और नेक काम करते रहे, वह उन को उन का पूरा बदला देगा और अपने फ़ज़ल से कुछ ज्यादा भी इनायत करेगा और जिन्होंने (बन्दा होने से) आर व इन्कार और घमंड किया, उन को वह तक्लीफ़ देने वाला अज़ाब

देगा। (१७३) और ये लोग खुदा के सिवा अपना हामी और मददगार न लाएंगे। (१७४) लोगो! तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से तुम्हारे पास (रोशन) दलील आ चुकी है और हम ने (कुफ़ और भटकाव का अंधेरा दूर करने को) तुम्हारी तरफ चमकता हुआ नूर भेज दिया है। पस जो लोग खुदा पर ईमान लाये और उस (के दीन की रस्सी) को मजबूत पकड़े रहे, उन को वह अपनी रहमत और फ़ज़ल (के बहिश्तों) में दाखिल करेगा और अपनी तरफ (पहुंचने का) सीधा रास्ता दिखाएगा। (१७५) (ऐ पैगम्बर!) लोग तुम से (कलाला के बारे में खुदा का) हुक्म मालूम करते हैं।^१ कह दो कि खुदा कलाला के बारे में यह हुक्म देता है कि अगर कोई ऐसा मर्द मर जाए, जिस के औलाद न हो (और न मां-बाप) और उस के बहन हो तो उस को भाई के तर्क में से आधा हिस्सा मिलेगा और अगर बहन मर जाए और उस के औलाद न हो तो उस के तमाम माल का वारिस भाई होगा और अगर (मरने वाले भाई की) दो बहनें हों तो दोनों को भाई के तर्क में से दो तिहाई और अगर भाई और बहन यानी मर्द और औरतें मिले-जुले वारिस हों तो मर्द का हिस्सा दो औरतों के हिस्से के बराबर है, खुदा (ये अह्काम) तुम से इस लिए बयान फ़रमाता है कि भटकते न फिरो और खुदा हर चीज़ जानता है। (१७६) *

५ सूर: माइद: ११२

सूर: माइद: मदनी है और इस में एक सौ बीस आयतें और और सोलह रकूअ हैं।

शुरू खुदा का नाम ले कर जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

ऐ ईमान वालो! अपने इकरारों को पूरा करो। तुम्हारे लिए बार पाए जानवर, (जो चरने वाले हैं), हलाल कर दिए गये हैं, अलावा उन के जो तुम्हें पढ़ कर सुनाये जाते हैं, मगर (हज़ के) एहराम में शिकार को हलाल न जानना। खुदा जैसा चाहता है, हुक्म देता है। (१) मोमिनो! खुदा के नाम की चीज़ों की बे-हुर्मती न करना और न अदब के महीने की और न कुर्बानी के जानवरों की (जो खुदा की नज़र कर दिए गये हों और) जिनके गलों में पट्टे बंधे हों। और न उन लोगों की, जो इरज़त के घर (यानी बेतुल्लाह) को जा रहे हों (और) अपने परवरदिगार के फ़ज़ल और उस की खुश्नूदी की तलब रखते हों और जब एहराम उतार दो, तो (फिर अस्तियार है कि) शिकार करो और लोगों की दुश्मनी इस वजह से कि उन्होंने तुमको इरज़त वाली मस्जिद से रोका था, तुम्हें इस बात पर तैयार न करे कि तुम उन पर ज्यादाती करने लगे और (देखो) नेकी और परहेज़गारी के कामों में एक दूसरे की मदद किया करो और गुनाह और जुल्म की बातों में मदद न किया करो और खुदा से डरते

१. कलाला इसे कहते हैं कि जिस का बेटा और बाप न हो कि असल वारिस यही हैं तो उस वक्त उस के भाई-बहन को बेटा-बेटी का हुक्म है और अगर सगे न हों तो यही हुक्म सौतेले का है। एक बहन तो आधा और दो बहन हों, तो तिहाई उस माल से जो छोड़ मरा और अगर भाई-बहन हों तो मर्द को दोहरा हिस्सा और औरत को इकहरा और जो निरे भाई हों तो उन को फ़रमाया कि वह बहन के माल के वारिस हों यानी हिस्सा तै नहीं वह 'अस्वा' है। अगर बेटी हो और बहन हो तो हिस्सा बेटी को और बहन 'अस्वा' है यानी हिस्सेदारों से बचे तो अस्वा लेवे।

हरिमत अलकुमुल्मेतनु बद्दमु व लहमुल्-खिन्जीरि व मा उहिल्-ल लि गैरिल्लाहि
बिही बल्मुल्नलिकतु बल्मोकूजतु बल्मुतरदिद्यतु वन्नतीहतु व मा अ-क-लस्सबु

इत्ता मा अक्केतुम् व मा जुबि-ह अ-लन्नुमुबि व अन् तस्तक्सिम् बिल्-
अस्लामि ७ जालिकुम् फिस्कुत् ७ अत्यो-म य-इसल्लजी-न क-फरु मिन्

दीनिकुम् फ ला तरहोहुम् वरशोनि ७
अत्यो-म अकमल्लु लकुम् दीनिकुम् व अत्मम्तु

अलकुम् निअ-मती व रज्जीतु लकुमुल्-इस्ला-म

दीनत् ७ फ मनिज्जुर-र फी मख-म-सतिन् गै-र

मु-त-जानिफिल्लि इस्मिन् ७ फ इन्नल्ला-ह

गफरुरहीम (३) यस्अलून-क माजा

उहिल्-ल लहुम् ७ कुल् उहिल्-ल लकुमुत्-

तय्यिबातु ७ व मा अल्लम्तुम् मिनल्-

जवारिहि मुकल्लिबी-न तुअल्लिमूनहुन्-न मिम्मा

अल्-ल-मकुमुल्लाहु ७ फ कुलू मिम्मा

अम्सक-न अलकुम् वज्जुरुस्मल्लाहि अलैहि

वत्तकुल्ला-ह ७ इन्नल्ला-ह सरीअल्हिसाब

(४) अत्यो-म उहिल्-ल लकुमुत्तय्यिबातु ७ व तआमुल्लजी-न अतुल्-

किता - व हिल्लुल्लकुम् ७ व तआमुकुम् हिल्लुल्लहुम् ७ वल्मुहसनातु

मिनल् - मुअमिनाति वल्मुहसनातु मिनल्लजी - न अतुल्-किता-ब मिन्

कब्लिकुम् इजा आतंतुमूहुन्-न उजूरहुन्-न मुहिसिनी-न गै-र मुसाफिही-न

व ला मुत्तखिजी अख्दानिन् ७ व मय्यक्फुर् बिल्ईमानि फ-कद् हबि-त

अ - मलुह ७ व ह - व फिल् - आखिरति मिनल् - खासिरीन (५)

سُبْحَانَكَ يَا مَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ ۚ عَمَّا يُشْرِكُونَ ۚ
عَلَى الْيَوْمِ وَالْآخِرِ ۚ وَلَا تَجْعَلْ لَنَا فِي الْأَرْحَامِ الْغَدْرَ ۚ وَالْغَدْرَ ۚ وَالْغَدْرَ ۚ
إِنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ۚ حُيِّتْ عَلَيْكُمْ السَّيِّئَةُ وَالْقَدِيرَةُ ۚ وَالْقَدِيرَةُ ۚ
الْيَوْمِ ۚ وَمَا أَجَلَ الْيَوْمِ ۚ وَالْمُنْفِقَةُ وَالْمُنْفِقَةُ ۚ وَالْمُنْفِقَةُ ۚ
وَالْقَبِيحَةُ ۚ وَمَا أَكَلَ السَّيِّئَةُ إِلَّا مَا دُكِّنَتْ ۚ وَمَا دُكِّنَتْ إِلَّا عَلَى الصَّبْرِ ۚ
وَأَنْ تَشْفَعُوا بِأَلْوَدَادِ ۚ وَلَكِنْ فَتَحَ الْيَوْمَ يَوْمَ الْيَوْمِ ۚ يَوْمَ الْيَوْمِ ۚ
تَقَرُّوْا مِنْ رَبِّكُمْ ۚ وَلَا تَحْشَوْهُمْ ۚ وَاحْشَوْا الْيَوْمَ ۚ أَكْبَلَتْ لَكُمْ
وَبِكَلَّمَ وَأَمْسَكَ عَلَيْكُمْ نَفْسِي ۚ وَرَضِيَتْ لَكُمْ الْإِسْلَامَ ۚ وَبَيَّنَّ
فَمَنْ اضْطُرَّ فِي عَمَلِهِ غَيْرَ مَخْلُوفٍ إِلَّا بِرَبِّهِ ۚ فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ
رَحِيمٌ ۚ يَسْأَلُونَكَ مَاذَا أُحْضِرَ لَكُمْ قُلْ أُحْضِرْتُ لَكُمْ الْقَبِيحَ ۚ وَ
مَا عَلَّمْتُكُمْ مِنَ الْجَوَارِمِ فَكُلُّهُمْ تَعْلَمُونَ ۚ وَمَا عَلَّمْتُكُمْ اللَّهُ لَكُمْ ۚ
وَمَا أَمْسَكَ عَلَيْكُمْ ۚ وَادْكُرُوا السُّؤَالَ عَلَى اللَّهِ ۚ وَالْقَدْرُ ۚ إِنَّ
اللَّهَ سَرِيعُ الْحِسَابِ ۚ الْيَوْمَ أُحْضِرْتُ لَكُمْ الْقَبِيحَ ۚ وَطَعَامُ الْيَوْمِ ۚ
أَوْثَرُ الْكِتَابِ ۚ لَكُمْ ۚ وَطَعَامُكُمْ ۚ حَلَّ لَكُمْ ۚ وَالْمُعَصَّةُ ۚ مِنْ
السُّؤَالِ ۚ وَالْمُعَصَّةُ ۚ مِنَ الْيَوْمِ ۚ أَوْثَرُ الْكِتَابِ ۚ مِنْ قَبْلِكُمْ ۚ إِذَا
أَتَيْتُمْهُمْ مِنْ أَيْدِيهِمْ ۚ فَصَبِّحُوا ۚ غَيْرَ مُسَبِّحِينَ ۚ وَلَا تَجِدُوا
أَعْدَاءَكُمْ ۚ وَمَنْ يَكْفُرْ بِالْإِيمَانِ فَقَدْ حَبِطَ عَمَلُهُ ۚ وَهُوَ فِي

रहो। कुछ शक नहीं कि खुदा का अज्ञाब सलत है (२) तुम पर मरा हुआ जानवर और (बहता) लहू और सुअर का गोश्त और जिस चीज पर खुदा के सिवा किसी और का नाम पुकारा जाए और जो जानवर गला घोट कर मर जाए और जो चोट लगकर मर जाए और जो गिरकर मर जाए और जो सींग लग कर मर जाए, ये सब हुराम हैं और वे जानवर भी, जिसको दरिंदे फाड़ खाएं, मगर जिसको तुम (मरने से पहले) जिंद्ग कर लो और वे जानवर भी, जो थान पर जिंद्ग किया जाए और यह भी कि पांसें से किस्मत मालूम करो। ये सब गुनाह (के काम) हैं। आज काफ़िर तुम्हारे दीन से ना-उम्मीद हो गये हैं, तो उन से मत डरो और भुझी से डरते रहो (और) आज हम ने तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन काभिल कर दिया और अपनी नेमतें तुम पर पूरी कर दीं और तुम्हारे लिए इस्लाम को दीन पसन्द किया, हां, जो शल्स भूख में ना-चार हो जाए, (बशर्ते कि) गुनाह की तरफ़ मायल (झुकाव) न हो, तो खुदा बरश्शने वाला मेहरबान है। (३) तुम से पूछते हैं कि कौन-कौन-सी चीजें उन के लिए हलाल हैं, (उन से) कह दो कि सब पाकीजा चीजें तुम को हलाल हैं। और वह शिकार भी हलाल है, जो तुम्हारे लिए उन शिकारी जानवरों ने पकड़ा हो, जिन को तुम ने सधा रखा हो और जिस (तरीक़े) से खुदा ने तुम्हें (शिकार करना) सिखाया है (उस तरीक़े से) तुम ने उन को सिखाया हो, तो जो शिकार वे तुम्हारे लिए पकड़ रखें, उस को खा लिया करो और (शिकारी जानवरों के छोड़ते वक्त) खुदा का नाम ले लिया करो। और खुदा से डरते रहो। बेशक खुदा जल्द हिसाब लेने वाला है। (४) आज तुम्हारे लिए सब पाकीजा चीजें हलाल कर दी गयीं और अहले किताब का खाना भी तुम को हलाल है और तुम्हारा खाना उन को हलाल है और पाकदामन मोमिन औरतें और पाकदामन अहले किताब औरतें भी (हलाल हैं), जब कि उन का महू दे दो और उन से अप्रफ़्त (पाकदामनी) रखनी मकसूद हो, न खुली बद-कारी करनी और न छिपी दोस्ती करनी और जो शल्स ईमान का मुन्किर हुआ, उस के अमल जाया हो गये और वह आखिरत में नुक्सान पाने वालों में होगा। (५) ★

१. अरब जाहिलियत में यह काम करते थे कि तीन पांसे होते थे। एक पर लिखा था, यह काम कर, दूसरे पर 'मत कर', तीसरा खाली था, यानी उस पर कुछ नहीं लिखा होता था। जब वे कोई काम करना चाहते तो पांसे डालते। अगर हुकम निकलता, तो इस काम को करते, अगर इन्कार निकलता तो न करते और अगर खाली निकलता, तो फिर डालते। बुझारी, मुस्लिम में आया है कि अनाब रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब काबे में दाखिल हुए तो वहां इब्राहीम और इस्माईल अलै० की तस्वीरें पायीं। उन के हाथों में पांसे थे। आप ने फ़रमाया, खुदा इन लोगों को हलाक करे। ये खूब जानते हैं कि इब्राहीम और इस्माईल ने कभी पांसा नहीं फेंका। मुजाहिद कहते हैं कि वे पांसे जुआ खेलने के थे, मगर इस में कलाम है, क्योंकि खुदा ने पांसें और जुए में फ़र्क़ किया है। पांसें को 'अजलाम' कहा है, जुए को मँसर। हां, यों कहा जा सकता है कि कभी उन को इस्तिख़ारे में और कभी जुए में इस्तेमाल करते थे। खुदा ने इस काम को गुनाह कहा और इस से रोका।

२. रिवायत है कि हातिम का बेटा अबी और ज़ैद बिन ख़ैल आहज़रत सल्ल० के पास आये और कहा, या रसूलल्लाह! हम ऐसे मकान में हैं कि वहां कुत्ते शिकार करते हैं। हम उन में से कुछ को बिन्दह करते हैं और कुछ को पाल लेते हैं और कुछ को कुत्ते बर्बाद कर देते हैं। यह शिकार हलाल है या मुबार। इस पर अगली आयत उतरी।

या अय्युहल्लजी-न आमनू इजा कुन्तुम् इलस्सलाति फरिसलू वुजूहकुम् व
ऐदि-यकुम् इलल्-मराफिकि वम्सह बि हकसिकुम् वअजुलकुम् इलल्कअ-बनि ७ व
इन् कुन्तुम् जुनुबत् फत्ह-हल् ७ व इन् कुन्तुम् मरजा ओ अला स-फरिन् ओ
जा-अ अ-हदुम्-मिन्कुम् मिनल्सा-इति ओ लामस्तुमुनिसा-अ फलम् तजिह
मा-अन् फ-त-यम्मू सजीदन् तय्यिबन् फम्सह

बि वुजूहिकुम् व ऐदीकुम् मिन्हु ७ मा
युरीदुल्लाह लि यज्-अ-ल अलैकुम् मिन् ह-रजिव-व
लाकियुरीदु लि युतहिह-रकुम् व लि युतिम्-म
निअ-म-तह अलैकुम् ल-अलकुम् तश्कुरुन
(६) वज्कुरू निअ-मतल्लाहि अलैकुम् व

मीसाकहुल्लजी वास - ककुम् बिही ७ इज्
कुल्लुम् समिअ-ना व अ-तअ-ना वत्तकुल्ला-ह ७
इन्ल्ला-ह अलीमुम्-बि - जातिस्सुदूर (७)

या अय्युहल्लजी-न आमनू कनू कव्वामी-न
लिल्लाहि शु-हदा-अ बिल्किस्ति ७ व ला
यजिरमन्लकुम् शनआनु कौमिन् अला अल्ला

الْأَخِرَةِ مِنَ الْغُيُوبِ ۝ يٰٓأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا قُمْتُمْ إِلَى الصَّلَاةِ
فَاغْسِلُوا وُجُوهَكُمْ وَأَيْدِيَكُمْ إِلَى الْمَرَافِقِ وَامْسُوا بِرُءُوسِكُمْ
وَأَجْلِسُوا إِلَى الْكُتُبِ ۚ وَإِن كُنْتُمْ جُنَاظًا وَلَا تَدْرُونَ
مَقْرَضًا أَوْ عَلٰى سَعَرٍ أَوْ جَاءَ أَحَدٌ مِنْكُم مِّنَ الْغَائِطِ أَوْ لَسَعَتْ
الْفَرَسَ فَلَمْ يَجِدْ مَاءً فَفَسَّحًا صَبِيحًا فَطَبَّحْ بِمِوَاهِدِهَا
وَأَيْدِيَكُمْ وَمُنَافِقِيكُمْ إِلَهِكُمْ إِلَهُ يَصْبِرُ عَلَيْكُمْ مِنْ حَرٍّ وَكَانَ
يُرِيدُ لِيُطَهِّرَكُمْ وَلِيَذِيبَ رُسْمَكُمْ عَلَيْكُمْ لَمَّا كُنْتُمْ تُكْفِرُونَ ۝
إِذْ كُنَّا رُسْمًا لَّهِ عَلَيْكُمْ وَبَيْنَكُمْ وَبَيْنَ مَا لَدَى اللَّهِ عَذَابٌ
مَّهِينٌ وَأَطِيعُوا أَمْرًا وَالْقَوْلَ اللَّهِ إِنْ أَرَادَ اللَّهُ بِكُمُ الْعَذَابُ
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اصْكُرُوا قَوْمِي الَّذِينَ يَكْفُرُونَ بِمَا هُمْ بِلَهِيهِمْ
يَكْفُرُونَ فَهُمْ لَكَ كُفَرَاءُ لَوْ كُنْتُمْ تُحِبُّونَ اللَّهَ فَاتَّبِعُوا
وَأَقْبِلُوا عَلَى الْقَوْلِ إِنَّ اللَّهَ هُوَ أَرْحَمُ الرَّاحِمِينَ ۝
وَعَسَى أَنْ يَكُونَ لَكُمْ مَخْرُجٌ ۚ وَاللَّهُ عَلِيمٌ ۝ وَالَّذِينَ كَفَرُوا
وَكَذَّبُوا بآيَاتِنَا أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ ۖ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ۝
إِذْ كُنَّا نَبْعَثُ إِلَهُكُمْ عَلَيْهِمْ إِذْ هُمْ قَوْمٌ إِن يَتَسَاءَلُوا إِلَّا
بِأَيِّهِمْ كَذَّبَ بِآيَاتِهِمْ عَنَّا وَالْقَوْلُ اللَّهُ وَعَلَى اللَّهِ تَوَكَّلْ
الْمُؤْمِنُونَ ۚ وَلَقَدْ أَخَذَ اللَّهُ مِيثَاقَ بَنِي إِسْرَءِيلَ وَبَعَثْنَا

तअ - दिलू ७ इअ - दिलू ७ हु - व अवरबु लितक्वा वत्तकुल्ला - ह ७

इन्ल्ला-ह खबीरम्-बिमा तअ-मलून (८) व-अदल्लाहुल्लजी-न आमनू
व अमिलुस्सालिहाति ७ लहुम् मरिफ-र-तुव - व अजरन् अजीम (९)

बल्लजी-न क-फरू व कज्जबू बि आयातिना उला-इ-क अस्ताबुल्-जहीम
(१०) या अय्युहल्लजी-न आमनुज्कुरू निअ-म-तल्लाहि अलैकुम् इज् हम्-म

कौमुन् अय्यन्सुतू इलैकुम् ऐदियहुम् फ-क-फ-फ खेदियहुम् अन्कुम् ७
वत्तकुल्ला-ह ७ व अ-लल्लाहि फल्-य-त-वकलिल् - मुअमिनून * (११)

मोमिनो ! तुम जब नमाज पढ़ने का इरादा किया करो, तो मुंह और कुहनियों तक हाथ धो लिया करो और सर का मसह कर लिया करो और टखनों तक पांव (धो लिया करो) और अगर नहाने की जरूरत हो तो (नहा कर) पाक हो जाया करो और अगर बीमार हो या सफर में हो या कोई तुम में से बैतुल-खला (टट्टी) से हो कर आया हो या तुम औरतों से हम-बिस्तर हुए हो और तुम्हें पानी न मिल सके तो पाक मिट्टी लो और उस से मुंह और हाथों का मसह (यानी तयम्मूम) कर लो। खुदा तुम पर किसी तरह की तंजी नहीं करना चाहता, बल्कि यह चाहता है कि तुम्हें पाक करे और अपनी नेमतें तुम पर पूरी करे, ताकि तुम शुक्र करो। (६) और खुदा ने तुम पर जो एहसान किये हैं, उन को याद करो और उस अहद को भी, जिस का तुम से कौल लिया था, (यानी) जब तुम ने कहा था कि हम ने (खुदा का हुक्म) सुन लिया और कुबूल किया और खुदा से डरो। कुछ शक नहीं कि खुदा दिलों की बातों (तक) को जानता है। (७) ऐ ईमान वालो ! खुदा के लिए इंसाफ की गवाही देने के लिए खड़े हो जाया करो और लोगों की दुश्मनी तुम को इस बात पर तैयार न करे कि इंसाफ छोड़ दो। इंसाफ किया करो कि यही परहेजगारी की बात है और खुदा से डरते रहो। कुछ शक नहीं कि खुदा तुम्हारे तमाम कामों से खबरदार है। (८) जो लोग ईमान लाये और नेक काम करते रहे, उन से खुदा ने वायदा फरमाया है कि उन के लिए बलिश और बड़ा अज्र है। (९) और जिन्होंने ने कुफ्र किया और हमारी आयतों को झुठलाया, वे जहन्नमी हैं। (१०) ऐ ईमान वालो ! खुदा ने जो तुम पर एहसान किया है, उस को याद करो, जब एक जमाअत ने इरादा किया कि तुम पर हाथ उठाएं, तो उस ने उन के हाथ रोक दिए और खुदा से डरते रहो और मोमिनो को खुदा ही पर भरोसा रखना चाहिए। (११) ★

१. कुछ तफसीर लिखने वालों ने लिखा है कि इस्लाम के शुरू में हर नमाज के लिए बुज्र करना वाजिब था, मगर बाद में वह भी वाजिब न रहा। एक हदीस में है कि हजरत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हर नमाज के लिए बुज्र किया करते थे, जब फतहे मक्का का दिन आया तो आप ने बुज्र कर के दोनों भोजों पर मसह किया और एक ही बुज्र से कई नमाजें पढ़ीं। हजरत उमर रजि० ने अर्ज किया, या रसूलुल्लाह ! आप ने वह काम किया है जो पहले कभी नहीं करते थे। आप ने फरमाया, मैं ने यह काम जान-बूझ कर किया है।

व ल-कद् अ-ख-जल्लाहु मीसा-क बनी इस्रा-ई-ल ८ व व-अस्ता मिन्हुमुस्ने-
अ-श-र नकीबत् ७ व कालल्लाहु इन्नी म-अकुम् ७ लइन् अ-कम्तुमुस्सला-त्
व आतंतुमुज्-जका-त् व आमन्तुम् बि हमुली व अक्जरतुमुहुम् व अक्जरतुमुल्ला-ह
कज्जन् ह-स-नल्-ल उकफिरन्-न अन्कुम् सय्यिआतिकुम् व ल-उदखिलन्नकुम्
जन्नातिन् तजरी मिन् तह्तिहल्-अन्हाह ८

फ-मन् क-फ-र बअ-द जालि-क मिन्कुम्
फ-कद् जल्-ल सवा-अस्सबील (१२) फ बिमा
नकिज्जिहम् मीसाकहुम् लअन्नाहुम् व ज-अल्ना
कुलूबहुम् कासिय-तन् ८ युह्रिफूनल्कलि-म
अम्मवाज्जिअिही ॥ व नसू हज्जम्मिम्मा
जुक्किरू बिही ८ व ला तजालु तत्तलिअु अला
खा-इनतिम्-मिन्हुम् इल्ला कलीलम्-मिन्हुम्
फअ-फु अन्हुम् वस्फह ७ इन्ल्ला-ह युहिबुल्-
मुह्सिनीन् (१३) व मिनल्लजी-न कालू इन्ना
नसारा अ-खज्ना मीसाकहुम् फ-नसू हज्जम्मिम्मा
जुक्किरू बिही ८ व अररेना बेनहुमुल्-अदाव-त्
वल्बग्ज्जा-अ इला योमिल् - क्रियामति ७ व

وَيَقُولُ الَّذِينَ كَفَرُوا إِنَّا كُنَّا نَسْمَعُ نَدَاءَ الْفِرْعَوْنِ إِذْ يَدْعُو إِلَى قَوْمِهِ فَلَوْ لَمْ نَرْسُلْ هَارُونَ بِآيَاتِنَا إِلَى فِرْعَوْنَ مَا ظَنَرَ أَنَّهُ رَبَّكُمْ وَلَقَدْ مُسِّدْنَا بِهِ قُلُوبَهُمْ وَلَقَدْ كَذَّبَ الَّذِينَ ظَلَمُوا إِذْ سَأَلُوا عَنْ هَارُونَ وَسَأَلُوا عَنْ آلِهَتِهِمْ أَأَلِهَتُهُمْ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ لَقَدْ أَخَذْنَا مِيثَاقَهُمْ لَعَنَّاهُمْ وَجَعَلْنَا قُلُوبَهُمْ قَاسِيَةً يُحَرِّفُونَ الْكَلِمَ عَنْ مَوَاضِعِهَا وَتَاسُوا حِطًّا وَمَا أَزْكُرُهُمْ وَلَا نِزَالَ عَنْظِهِمْ عَلَى خُلَاقِهِمْ وَلَقَدْ أَخَذْنَا مِنَ النَّبِيِّينَ مِيثَاقَهُمْ وَأَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابَ الدَّاءِئِمَّةِ لَوْلَا رَحْمَتُنَا وَرَحْمَةُ الْوَالِدِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَآيَاتِنَا كُنُوزٌ وَمَا كُنَّا مُنْظَرِينَ وَإِن يَدْعُوا إِلَى فِرْعَوْنَ فَقُلْ عَذَابُ الْمَرْءِ الْمُنِظَرِ لَأَشَدُّ مِنْ عَذَابِ الْكَافِرِينَ وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَآيَاتِنَا كُنُوزٌ وَمَا كُنَّا مُنْظَرِينَ وَإِن يَدْعُوا إِلَى فِرْعَوْنَ فَقُلْ عَذَابُ الْمَرْءِ الْمُنِظَرِ لَأَشَدُّ مِنْ عَذَابِ الْكَافِرِينَ وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَآيَاتِنَا كُنُوزٌ وَمَا كُنَّا مُنْظَرِينَ

सौ-फ युनब्बिउ-हुमुल्लाहु बिमा कानू यस्नअून (१४) या अहलल्-
किताबि कद् जा-अकुम् रसूलुना युबय्यिनु लकुम् कसीरम्मिम्मा कुन्तुम् तुख्फून-
मिनल्किताबि व यअ-फू अन् कसीरिन् ७ कद् जा-अकुम् मिनल्लाहि नूस्व-व
किताबुम्-मुबीन ॥ (१५) यहदी बिहिल्लाहु मनि-त-ब-अ रिज्जवानह
सुबुलस्सलामि व युख्रिजुहुम् मिनज्जुलुमाति इलन्नूर बि इज्जनिही व
यहदीहिम् इला सिरातिम्-मुस्तक्रीम (१६) ल-कद् क-फ-रल्लजी-न कालू
इन्ल्ला-ह हुवल्मसीहब्नु मर्य-म ७ कुल् फ मय्यम्लिकु मिनल्लाहि शैअन्
इन् अरा-द अय्युह्लिकल्-मसीहब्-न मर्य-म उम्मह व मन् फिल्अज्जि
जमोजन् ७ व लिल्लाहि मुल्कुस्समावाति वल्अज्जि व मा बेनहुमा
यख्लुकु मा यशा - उ ७ वल्लाहु अला कुल्लि शैअन् कदीर (१७)

और खुदा ने बनी इस्राईल से इकरार लिया और उन में हम ने बारह सरदार मुकरर किये फिर खुदा ने फरमाया कि मैं तुम्हारे साथ हूँ। अगर तुम नमाज पढ़ते और जकात देते रहोगे और पंगम्बरों पर ईमान लाओगे और उन की मदद करोगे और खुदा को कर्ज हसना दोगे, तो मैं तुम से तुम्हारे गुनाह दूर कर दूंगा और तुम को बहिशतों में दाखिल करूंगा, जिन के नीचे नहरें बह रही हैं, फिर जिस ने इस के बाद तुम में से कुफ़ किया, वह सीधे रास्ते से भटक गया। (१२) तो उन लोगों के अहद तोड़ देने की वजह से हम ने उन पर लानत की, और उन के दिलों को सख्त कर दिया। ये लोग कलिमात (किताब) को अपनी जगहों से बदल देते हैं और जिन बातों की उन को नसीहत की गयी थी, उन का भी एक हिस्सा भुला बैठे और थोड़े आदमियों के सिवा हमेशा उन की (एक न एक) खियानत की खबर पाते रहते हो, तो उन की खताएं माफ़ कर दो और (उन से) दर-गुज़र करो कि खुदा एहसान करने वालों को दोस्त रखता है। (१३) और जो लोग (अपने को) कहते हैं कि हम नसारा हैं, हम ने उन से भी अहद लिया था, मगर उन्होंने ने भी उस नसीहत का, जो उन को की गयी थी, एक हिस्सा भुला दिया, तो हम ने उन के आपस में क्रियामत तक के लिए दुश्मनी और कीना डाल दिया और जो कुछ वे करते रहे, खुदा बहुत जल्द उन को उस से आगाह करेगा। (१४) ऐ अहले किताब ! तुम्हारे पास हमारे (आखिरी) पंगम्बर आ गये हैं कि जो कुछ तुम (खुदा की) किताब में छिपाते थे, वह इस में से बहुत कुछ तुम्हें खोल-खोल कर बता देते हैं और तुम्हारे बहुत-से क़सूर माफ़ कर देते हैं। बेशक तुम्हारे पास खुदा की तरफ़ से नूर और रोशन किताब आ चुकी है, (१५) जिस से खुदा अपनी रिज़ा पर चलने वालों को निजात के रास्ते दिखाता है और अपने हुक्म से अंधेरे में से निकाल कर रोशनी की तरफ़ ले जाता और उनको सीधे रास्ते पर चलाता है। (१६) जो लोग इस बात के क़ायल हैं कि ईसा बिन मरयम खुदा हैं, वे बेशक काफ़िर हैं। (उन से) कह दो कि अगर खुदा ईसा बिन मरयम और उन की वालिदा को और जितने लोग ज़मीन में हैं, सब को हलाक करना चाहे, तो उसके आगे किस की पेश चल सकती है ? और आसमान और ज़मीन और जो कुछ इन दोनों में है, सब पर खुदा ही की बादशाही है। वह जो चाहता है पंदा करता है और खुदा

व कालतिल-यहूदु वन्तसारा नहनु अब्ना-उल्लाहि व अहिम्बा-उहूकुल क-लि-म
युअज्जिबुकुम् बि जुनूबिकुम् ॥ बल् अन्तुम् बशरम्मिमन् ख-ल-क ॥ यगफिर
लि मय्यशा-उ व युअज्जिबु मय्यशा-उ ॥ व लिल्लाहि मुकुस्समावाति वल्अज्जि
व मा बंनहमा ॥ व इलैहिल्-मसीर (१८) या अहलल् - किताबि

क्रद् जा^१अकुम् रसूलुना युबय्यिनु लकुम्
अला फररतिम्-मिनरुमुलि अन् तकूलू मा
जा^१अना मिम्बशीरिव्-व ला नजीरिन्
फ-क्रद् जा^१ - अकुम् वशीरुव्-व नजीरुन्
बल्लाह अला कुलि शैइन् कदीर

★ (१६) व इज् का - ल मूसा
लि क्रोमिही याक्रोमिज्कुरू निअ-म-तुल्लाहि
अलेकुम् इज् ज-अ-ल फोकुम् अम्बिया[†]-अ
व ज - अ - लकुम् मुलूक[‡]व^३-व
आताकुम् मालम् युअति अ-ह-दमिन्नल्-
आलमीन (२०) या क्रोमिदखुलुल्-अज्राल्-
मुकद-द-स-तुल्-लती क-त-बल्लाहु लकुम् व ला
तर्तदद् अला[†] अदवारिकुम् फ-तन्कलिब

खासिरीन (२१) कालू या मूसा इन्-न फीहा कोमन् जब्बारी-न
 व इन्ना लन् नदखुलहा हत्ता यखरूज् मिन्हा ८ फ इय्यखरूज् मिन्हा
 फ इन्ना दाखिलून (२२) काल रजुलानि मिनत्तलजीजे यत्ताफून
 अन-अ-मल्लाहु अलेहिमदखुलू अलेहिमुल्बा-ब ८ फ इजा द-खरूतुमूहु फ-इन्नकुम्
 गालिबू - न ६ व अ - लल्लाहि फ - त-वक्कलू इन् कुन्तुम् - मुब्मिनीन
 (२३) कालू या मूसा इन्ना लन् नदखुलहा अ - ब दम् - मा दामू
 फीहा फज्जहब अन-त व रब्ब-क फ कातिला इन्ना-हाहुना काजिदन (२४)

٥٨
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
مَنْ فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا وَبِهِ مَلِكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا
بَيْنَهُمَا يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ وَاللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ٥٩
قَالَتِ الْيَهُودُ وَالنَّصَارَى نَحْنُ أَبْنَاءُ اللَّهِ وَأَحِبَّاؤُهُ قُلْ فَلِمَ
يُعَذِّبُهُمْ بِذُنُوبِهِمْ إِنِ انْفُذَ بَعْضُنَا عَلَى بَعْضٍ لِّنَقُولَ
وَلِيُعَذِّبَ الْمُنَافِقِينَ وَالْمُنَافِقِينَ يُنَادِيهِمْ الْوَيْلُ لِلَّذِينَ
كَانُوا ٦٠ قُلْ إِنَّمَا يَتَذَكَّرُ أُولُو الْأَلْبَابِ ٦١
وَالَّذِينَ يَتَّبِعُوا تُبُلُوهُمْ سَرًّا أَوْ أَنفُسًا وَيَتَظَاهَرُونَ
بِالْإِثْمِ وَالْإِنْفِرِ ٦٢ لَئِنْ لَمْ يَنْصَرِفُوا فِيهِ سَفَعْنَا
مِنْ يَدِنَا لَنُكَفِّرَنَّ عَنْهُمْ سَوَاءً وَلَئِنْ لَمْ يَنْصَرِفُوا فِيهِ
سَفَعْنَا مِنْ يَدِنَا لَنَعَذِّبَنَّ الَّذِينَ أَتَوْا مُوََظَّفًا
وَالَّذِينَ أَتَوْا مُتَمَرِّغِينَ ٦٣ وَالَّذِينَ أَتَوْا مُتَمَرِّغِينَ
وَالَّذِينَ أَتَوْا مُتَمَرِّغِينَ ٦٤ وَالَّذِينَ أَتَوْا مُتَمَرِّغِينَ
وَالَّذِينَ أَتَوْا مُتَمَرِّغِينَ ٦٥ وَالَّذِينَ أَتَوْا مُتَمَرِّغِينَ
وَالَّذِينَ أَتَوْا مُتَمَرِّغِينَ ٦٦ وَالَّذِينَ أَتَوْا مُتَمَرِّغِينَ
وَالَّذِينَ أَتَوْا مُتَمَرِّغِينَ ٦٧ وَالَّذِينَ أَتَوْا مُتَمَرِّغِينَ
وَالَّذِينَ أَتَوْا مُتَمَرِّغِينَ ٦٨ وَالَّذِينَ أَتَوْا مُتَمَرِّغِينَ
وَالَّذِينَ أَتَوْا مُتَمَرِّغِينَ ٦٩ وَالَّذِينَ أَتَوْا مُتَمَرِّغِينَ
وَالَّذِينَ أَتَوْا مُتَمَرِّغِينَ ٧٠ وَالَّذِينَ أَتَوْا مُتَمَرِّغِينَ
وَالَّذِينَ أَتَوْا مُتَمَرِّغِينَ ٧١ وَالَّذِينَ أَتَوْا مُتَمَرِّغِينَ
وَالَّذِينَ أَتَوْا مُتَمَرِّغِينَ ٧٢ وَالَّذِينَ أَتَوْا مُتَمَرِّغِينَ
وَالَّذِينَ أَتَوْا مُتَمَرِّغِينَ ٧٣ وَالَّذِينَ أَتَوْا مُتَمَرِّغِينَ
وَالَّذِينَ أَتَوْا مُتَمَرِّغِينَ ٧٤ وَالَّذِينَ أَتَوْا مُتَمَرِّغِينَ
وَالَّذِينَ أَتَوْا مُتَمَرِّغِينَ ٧٥ وَالَّذِينَ أَتَوْا مُتَمَرِّغِينَ
وَالَّذِينَ أَتَوْا مُتَمَرِّغِينَ ٧٦ وَالَّذِينَ أَتَوْا مُتَمَرِّغِينَ
وَالَّذِينَ أَتَوْا مُتَمَرِّغِينَ ٧٧ وَالَّذِينَ أَتَوْا مُتَمَرِّغِينَ
وَالَّذِينَ أَتَوْا مُتَمَرِّغِينَ ٧٨ وَالَّذِينَ أَتَوْا مُتَمَرِّغِينَ
وَالَّذِينَ أَتَوْا مُتَمَرِّغِينَ ٧٩ وَالَّذِينَ أَتَوْا مُتَمَرِّغِينَ
وَالَّذِينَ أَتَوْا مُتَمَرِّغِينَ ٨٠ وَالَّذِينَ أَتَوْا مُتَمَرِّغِينَ
وَالَّذِينَ أَتَوْا مُتَمَرِّغِينَ ٨١ وَالَّذِينَ أَتَوْا مُتَمَرِّغِينَ
وَالَّذِينَ أَتَوْا مُتَمَرِّغِينَ ٨٢ وَالَّذِينَ أَتَوْا مُتَمَرِّغِينَ
وَالَّذِينَ أَتَوْا مُتَمَرِّغِينَ ٨٣ وَالَّذِينَ أَتَوْا مُتَمَرِّغِينَ
وَالَّذِينَ أَتَوْا مُتَمَرِّغِينَ ٨٤ وَالَّذِينَ أَتَوْا مُتَمَرِّغِينَ
وَالَّذِينَ أَتَوْا مُتَمَرِّغِينَ ٨٥ وَالَّذِينَ أَتَوْا مُتَمَرِّغِينَ
وَالَّذِينَ أَتَوْا مُتَمَرِّغِينَ ٨٦ وَالَّذِينَ أَتَوْا مُتَمَرِّغِينَ
وَالَّذِينَ أَتَوْا مُتَمَرِّغِينَ ٨٧ وَالَّذِينَ أَتَوْا مُتَمَرِّغِينَ
وَالَّذِينَ أَتَوْا مُتَمَرِّغِينَ ٨٨ وَالَّذِينَ أَتَوْا مُتَمَرِّغِينَ
وَالَّذِينَ أَتَوْا مُتَمَرِّغِينَ ٨٩ وَالَّذِينَ أَتَوْا مُتَمَرِّغِينَ
وَالَّذِينَ أَتَوْا مُتَمَرِّغِينَ ٩٠ وَالَّذِينَ أَتَوْا مُتَمَرِّغِينَ
وَالَّذِينَ أَتَوْا مُتَمَرِّغِينَ ٩١ وَالَّذِينَ أَتَوْا مُتَمَرِّغِينَ
وَالَّذِينَ أَتَوْا مُتَمَرِّغِينَ ٩٢ وَالَّذِينَ أَتَوْا مُتَمَرِّغِينَ
وَالَّذِينَ أَتَوْا مُتَمَرِّغِينَ ٩٣ وَالَّذِينَ أَتَوْا مُتَمَرِّغِينَ
وَالَّذِينَ أَتَوْا مُتَمَرِّغِينَ ٩٤ وَالَّذِينَ أَتَوْا مُتَمَرِّغِينَ
وَالَّذِينَ أَتَوْا مُتَمَرِّغِينَ ٩٥ وَالَّذِينَ أَتَوْا مُتَمَرِّغِينَ
وَالَّذِينَ أَتَوْا مُتَمَرِّغِينَ ٩٦ وَالَّذِينَ أَتَوْا مُتَمَرِّغِينَ
وَالَّذِينَ أَتَوْا مُتَمَرِّغِينَ ٩٧ وَالَّذِينَ أَتَوْا مُتَمَرِّغِينَ
وَالَّذِينَ أَتَوْا مُتَمَرِّغِينَ ٩٨ وَالَّذِينَ أَتَوْا مُتَمَرِّغِينَ
وَالَّذِينَ أَتَوْا مُتَمَرِّغِينَ ٩٩ وَالَّذِينَ أَتَوْا مُتَمَرِّغِينَ
وَالَّذِينَ أَتَوْا مُتَمَرِّغِينَ ١٠٠

हर चीज पर कुदरत रखता है। (१७) और यहूव और नसारा कहते हैं कि हम खुदा के बेटे और उस के प्यारे हैं। कहो कि फिर वह तुम्हारी बद-आमालियों की वजह से तुम्हें अज़ाब क्यों देता है, (नहीं,) बल्कि तुम उस की मल्लूकात में (दूसरों की तरह के) इंसान हो। वह जिसे चाहे बरसे और जिसे चाहे अज़ाब दे और आसमान और जमीन और जो कुछ इन दोनों में है, सब पर खुदा ही की हुकूमत है और (सब को) उसी की तरफ लौट कर जाना है। (१८) ऐ अहले किताब ! (पैगम्बरों के आने का सिलसिला जो एक असें तक कटा-सा रहा, तो) अब तुम्हारे पास हमारे पैगम्बर आ गये हैं, जो तुम से (हमारे हुक्म) बयान करते हैं, ताकि तुम यह न कहो कि हमारे पास कोई खुशखबरी या डर सुनाने वाला नहीं आया, सो (अब) तुम्हारे पास खुशखबरी और डर सुनाने वाले आ गये हैं और खुदा हर चीज पर कुदरत रखता है। (१९) ★

और जब मूसा ने अपनी क्रीम के कहा कि भाइयो ! तुम पर खुदा ने जो एहसान किये हैं, उन को याद करो कि उस ने तुम में पैगम्बर पैदा किये और तुम्हें ब्रादशाह बनाया और तुम को इतना कुछ इनायत किया कि दुनिया वालों में से किसी को नहीं दिया। (२०) तो भाइयो ! तुम अब मुकद्दस (पाक धरती, यानी शाम मुल्क) में, जिसे खुदा ने तुम्हारे लिए लिख रखा है, चल दाखिल हो और (देखना, मुकाबले के वक्त) पीठ न फेर देना, वरना नुक्सान में पड़ जाओगे। (२१) वे कहने लगे कि मूसा ! वहां तो बड़े जबरदस्त लोग (रहते) हैं और जब तक वह इस धरती से निकल न जाएं, हम वहां जा नहीं सकते, हां, अगर वे वहां से निकल जाएं, तो हम जा दाखिल होंगे। (२२) जो लोग (खुदा से) डरते थे, उन में से दो शल्ल, जिन पर खुदा की इनायत थी, कहने लगे कि इन लोगों पर दरवाजे के रास्ते से हमले कर दो। जब तुम दरवाजे में दाखिल हो गये तो क़त्ल तुम्हारी है और खुदा ही पर भरोसा रखो, बशर्ते कि ईमान वाले हो। (२३) वे बोले कि मूसा ! जब तक वे लोग वहां हैं, हम कभी वहां नहीं जा सकते। (अगर लड़ना ही जरूरी है,) तो तुम और तुम्हारा

खुदा जाओ और लड़ो, हम यहां बैठे रहेंगे। (२४) मूसा ने (खुदा से) इतिजा की कि परवर-दिगार ! मैं अपने और अपने भाई के सिवा और किसी पर अस्तियार नहीं रखता, तो हम में और इन ना-फरमान लोगों में जुदाई कर दे। (२५) खुदा ने फरमाया कि वह मुल्क उन पर चालीस बरस तक के लिए हुराम कर दिया गया (कि वहां जाने न पाएंगे और जंगल की) जमीन में परेशान फिरते रहेंगे, तो उन ना-फरमान लोगों के हाल पर अफसोस न करो (२६)★ और (ऐ मुहम्मद) उन को आदम के दो बेटों (हाबील और काबील) के हालात (जो बिल्कुल सचच हैं) पढ़ कर सुना दो कि जब उन दोनों ने (खुदा की जनाब में) कुछ नियाजें चढ़ायीं, तो एक की नियाज तो कुबूल हो गयी और दूसरे की कुबूल न हुई, (तब काबील हाबील से) कहने लगा कि मैं तुझे क़त्ल कर दूंगा। उस ने कहा कि खुदा परहेजगारी ही की (नियाज) कुबूल फरमाया करता है। (२७)●

और अगर तू मुझे क़त्ल करने के लिए मुझ पर हाथ चलाएगा, तो मैं तुझ को क़त्ल करने के लिए तुझ पर हाथ नहीं चलाऊंगा, मुझे तो अल्लाह रखबुल आलमीन से डर लगता है। (२८) मैं चाहता हूं कि तू मेरे गुनाह में भी पकड़ा जाए और अपने गुनाह में भी, फिर दोबारा वालों में से हो। और जालिमों की यही सजा है। (२९) मगर उस के नफ़स ने उस को भाई के क़त्ल ही पर उभारा, तो उस ने उसे क़त्ल कर दिया और घाटा उठाने वालों में हो गया। (३०) अब खुदा ने एक कव्वा भेजा, जो जमीन कुरेदने लगा, ताकि उसे दिखाए कि अपने भाई की लाश को कैसे छिपाये। कहने लगा, ऐ है ! मुझ से इतना भी न हो सका कि इस कव्वे के बराबर होता कि अपने भाई की लाश को छिपा देता। फिर वह शर्मिन्दा हुआ। (३१) इस (क़त्ल) की वजह से हम ने बनी इस्राईल पर यह हुक्म नाज़िल किया कि जो शक्स किसी को (ना-हक़) क़त्ल करेगा (यानी) बग़ैर इस के कि जान का बदला जान लिया जाए या मुल्क में खराबी पैदा करने की सज़ा दी जाए, उसने गोया तमाम लोगों को क़त्ल किया और जो उस की ज़िदगी की वजह बना, तो गोया तमाम लोगों की ज़िदगी की वजह बना और उन लोगों के पास हमारे पैगम्बर रोशन दलीलें ला चुके हैं। फिर इस के बाद भी इन में बहुत-से लोग मुल्क में एतदाल की हद से निकल जाते हैं। (३२) जो लोग खुदा और उस के रसूल से लड़ाई करें और मुल्क में फ़साद करने को दौड़ते फिरें, उन की यह सज़ा है कि क़त्ल कर दिए जाएं या सूली चढ़ा दिये जाएं या उन के एक-एक तरफ़ के हाथ और एक-एक तरफ़ के पांव काट दिए जाएं। यह तो दुनिया में उन की रसवाई है और आखिरत में उन के लिए बड़ा (भारी) अज़ाब

१. हज़रत आदम के जिन दो बेटों का यह क्रिस्ता है, उन का नाम हाबील और काबील था। यह बात मशहूर है कि हज़रत हव्वा के पेट से दो जुड़ावां बच्चे पैदा होते थे, एक लड़का, एक लड़की। चूँकि हज़रत समझी जाती थी, इस लिए एक पेट के लड़के से दूसरे पेट की लड़की को और इस पेट की लड़की को उस पेट के लड़के से व्याह देते थे। इतिफ़ाक़ यह हुआ कि काबील के साथ जो लड़की पैदा हुई, वह बहुत खूबसूरत थी और हाबील के साथ जो पैदा हुई, वह बदसूरत थी। तो काबील ने चाहा कि उस की बहन का निकाह हाबील से न हो, बल्कि खुद उसी से हो। आदम अलैहिस्सलाम ने कहा कि तुम दोनों नियाज करो, जिस की नियाज कुबूल हो, वह उस को मिले। हाबील ने नियाज में मोटी-ताजी बकरी दी और वह कुबूल हुई और काबील ने अनाज की बाल दी, वह भी निकम्मी और खराब, वह कुबूल न हुई। उन दिनों नियाज के कुबूल होने की यह निशानी थी कि जो कुबूल होती उस को आब आसमान से उतर कर जला जाती। हाबील की नियाज को आग जला गयी और काबील की

(गैप पृष्ठ १७७ पर)

(तैयार) है। (३३) हाँ, जिन लोगों ने इस से पहले कि तुम्हारे काबू आ जाएँ, तोबा कर ली, तो जान रको कि खुदा बलवाने वाला, मेहरबान है। (३४) ★

ऐ ईमान वालो ! खुदा से डरते रहो और उसका कुर्ब हासिल करने का जरिया जोजते रहो और उस के रास्ते में अिहास करो ताकि कामियाबी पाओ। (३५) जो लोग काफिर हैं, अगर उन के पास धरती (के तमाम सज्जाने और उस) का सब माल ब मताअ हो, और उस के साथ उतना ही और भी हो, ताकि क्रियामत के दिन अजाब से (छुटकारा पाने का) बचला दें, तो उन से कुबूल नहीं किया जाएगा और उन को बंद देने वाला अजाब होगा। (३६) (पूरी तरह) चाहेंगे कि भाग से निकल जाएँ, अगर उस से नहीं निकल सकेंगे और उन के लिए हमेशा का अजाब है। (३७) और जो चोरी करे, भंद हो या औरत, उन के हाथ काट डालो। यह उन के फेलों की सजा और खुदा की तरफ से सीख है और खुदा जबरवस्त (और) हिकमत वाला है। (३८) और जो शल्स गुनाह के बाद तोबा करे और भला बन जाये तो खुदा उस को माफ़ कर देगा। कुछ शक नहीं कि खुदा बलवाने वाला, मेहरबान है। (३९) क्या तुम को मालूम नहीं कि आसमानों और जमीन में खुदा ही की सल्तनत है ? जिस को चाहे अजाब करे और जिसे चाहे बरहम दे और खुदा हर चीज पर कुदरत रखता है। (४०) ऐ पैगम्बर ! जो लोग कुफ़ में जल्दी करते हैं, (कुछ तो) उन में से (हैं), जो मुंह से कहते हैं कि हम मोमिन हैं और (कुछ) उन में से हैं जो यहूदी हैं, उन की वजह से गमनाक न होना। ये गलत बातें बनाने के लिए जासूसी करते फिरते हैं और ऐसे लोग लोगों (के बहकाने) के लिए जासूस बने हैं, जो अभी तुम्हारे पास नहीं आए। (सही) बातों को उन की जगहों (पर साबित होने) के बाद बदल देते हैं और (लोगों से) कहते हैं कि अगर तुम को यही (हुक्म) मिले तो उसे कुबूल कर लेना और अगर यह न मिले तो उस में एहताराज करना और अगर किसी को खुदा गुमराह करना चाहे तो उस के लिए तुम कुछ भी खुदा से (हिदायत का) अस्तियार नहीं रखते। ये वह लोग हैं, जिन के दिलों को खुदा ने पाक करना नहीं चाहा। उन के लिए दुनिया में भी जिल्लत है और आखिरत में भी बड़ा अजाब है। (४१) (ये) झूठी बातें बनाने के लिए जासूसी करने वाले और

(पृष्ठ १७५ का शेष)

उसी तरह पड़ी रही। तब काबील को भाई से जलन पैदा हो गई और उस से कहने लगा कि मैं तुझ को क़त्ल कर के रटूंगा। चुनांचे उस ने उस को क़त्ल कर ही दिया। एक जमाअत का यह ख्याल है कि नियाज का किया जाना औरत की वजह से न था, क़ुरआन के ज़ाहिर लफ्ज़ों से भी यही पाया जाता है कि नियाज की वजह औरत न थी, बल्कि दोनों भाइयों ने नियाज की थी। एक की कुबूल हुई और दूसरे की नाम-फ़ूल हुई, अल्लाह ही बेहतर जाने।

१. यह आगत यहूदियों के हक में नाज़िल हुई है। तोरात में हुक्म था कि जो बद-कारी करे, उस को संगसार कर दिया जाए, अगर उन्होंने ने इस हुक्म को बदल कर यह अमल जारी किया कि बद-क़ेली करने वाले को कोड़े मारते और गधे पर सवारी करा कर रसबा करते। जनाब सरवर के कायनात सल्ल० के वक़्त में कई वाकिआत हुए कि वे उन को क्रैसले के लिए आप के पास लाए। हिजरत के बाद यह वाकिआ हुआ कि यहूदी ने एक यहूदिन से मुंह काला किया। यहूदियों ने आपस में कहा कि चलो इस का क्रैसला हज़रत सल्ल० से करावें। अगर कोड़े लंगाने और मुंह काला करने का हुक्म दें, तो मान लेना चाहिए, नहीं तो नहीं। इन्ने उमर रजि० से रिवायत है कि

(शेष १७६ पर)

(रिश्बत का) हराम माल खाने वाले हैं। अगर ये तुम्हारे पास (कोई मुकदमा फ़ैसला कराने को) आएँ, तो तुम उन में फ़ैसला कर देना या ऐराज करना और अगर उन से ऐराज करो, तो वे तुम्हारा कुछ भी न बिगाड़ सकेंगे और अगर फ़ैसला करना चाहो तो इसाफ़ का फ़ैसला करना कि खुदा इसाफ़ करने वालों को दोस्त रखता है। (४२) और ये तुम से (अपने मुकदमे) किस तरह फ़ैसला करायेंगे, जब कि खुद उन के पास तौरात (मौजूद) है, जिस में खुदा का हुक्म (लिखा हुआ) है। (ये उसे जानते हैं,) फिर इस के बाद उस से फिर जाते हैं। और ये लोग ईमान ही नहीं रखते। (४३) ★

बेशक हमी ने तौरात नाज़िल फ़रमायी, जिस में हिदायत और रोशनी है। उसी के मुताबिक़ नबी, जो (खुदा के) फ़रमांबरदार थे, यहूदियों को हुक्म देते रहे हैं, और मसाइल और उलेमा भी, क्यों कि वे खुदा की किताब के निगहबान मुकर्रर किये गये थे और इस पर गवाह थे (यानी अल्लाह के हुक्म पर यकीन रखते थे), तो तुम लोगों से मत डरना और मुझी से डरते रहना और मेरी आयतों के बदले थोड़ी-सी क़ीमत न लेना और जो खुदा के नाज़िल फ़रमाए हुए हुक्मों के मुताबिक़ हुक्म न दे, तो ऐसे ही लोग काफ़िर हैं। (४४) और हम ने उन लोगों के लिए तौरात में यह हुक्म लिख दिया था कि जान के बदले जान और आँख के बदले आँख और नाक के बदले नाक और कान के बदले कान और दाँत के बदले दाँत और सब ज़रूमों का इसी तरह बदला है, लेकिन जो शस्स बदला माफ़ कर दे, वह उस के लिए कफ़ारा होगा और जो खुदा के नाज़िल फ़रमाये हुए हुक्मों के मुताबिक़ हुक्म न दे, तो ऐसे ही लोग बे-इसाफ़ हैं। (४५) और इन पैग़म्बरों के बाद उन्हीं के क़दमों पर हम ने ईसा बिन मरयम को भेजा, जो अपने से पहले की किताब तौरात की तस्दीक़ करते थे और उन को इंज़ील इनायत की, जिस में हिदायत और नूर है और तौरात की जो इस से पहली (किताब) है, तस्दीक़ करती है और परहेज़गारों को राह बताती और नसीहत करती है। (४६)

(पृष्ठ १७७ का शेष)

यहूद हज़रत के पास आए और बयान किया कि इन में से एक मर्द ने औरत से बदकारी की है। इस बारे में क्या इशारा है? आप ने फ़रमाया कि तौरात में क्या लिखा है? उन्होंने कहा कि हम तो कोड़े मारते और रसवा करते हैं। आप ने फ़रमाया कि तौरात साओ। तौरात लायी गयी और एक शस्स पढ़ने लगा। जब इस आयत पर गुज़र हुआ, जिस में बदकारी की सज़ा रज्म यानी सग़सार करना लिखा था, तो उस पर हाथ रख दिया और आगे-पीछे की आयतें पढ़ दीं। अब्दुल्लाह बिन सलाम ने, जो तौरात के बड़े माहिर थे, अर्ब किया कि आप हुक्म दें कि यह हाथ उठाए। हाथ उठाया तो उस के नीचे रज्म की आयत थी। हज़रत ने रज्म का हुक्म फ़रमा दिया और दोनों सग़सार कर दिए गये। इब्ने उमर रजि० कहते हैं कि उन के सग़सार के वक़्त मैं भी मौजूद था। मैं ने मर्द को देखा कि औरत पर झुक-झुक जाता था और उस को पत्थर से बचाता था।

बल्-यहकुम् अह्लुल्-इन्जीलि बिमा अन्ज-लल्लाहु फीहि ७ व मल्लम्
यहकुम् बिमा अन्ज-लल्लाहु फ उला-इ-क हुमुल्-फासिकून (४७) व

अन्जल्ना इलैकल्-किता-ब बिल्हकिक् मुसद्दिक्कल्लिमा बैन यदैहि मिनल्-

किताबि व मुहेमिनत् अलैहि फहकुम् बैनहुम् बिमा अन्ज-लल्लाहु व
ला तत्तबिअ अह्वा-अहुम् अम्मा जा-अ-क

मिनल् - हकिक् ७ लि कुल्लिन् ज - अल्ना
मिन्कुम् शिर-अ-त-व-व मिन्हाजन् ७ व लौ

शा-अल्लाहु ल ज-अ-लकुम् उम्मतुब्वाहिदत-व-व
लाकिल्-लि यब्लु-व-कुम् फी मा आताकुम्

फस्तबिकुल्-खैराति ७ इलल्लाहि मजिअकुम्

जमीअन् फ युनब्बि-उकुम् बिमा कुन्तुम्

फीहि तख्तलिफून ७ (४८) व

अनिहकुम् बैनहुम् बिमा अन्ज-लल्लाहु

व ला तत्तबिअ अह्वा-अहुम् वह्जरहुम्

अय्यफ्तिनू-क अम्बअ-ज़ि मा अन्ज-लल्लाहु

इलै-क ७ फ-इन् तवल्लौ फअ-लम् अन्नमा युरिदुल्लाहु अय्युसीबहुम् बि बअ-ज़ि

ज़ुनुबिहिम् ७ व इन्-न कसीरम्-मिनन्नासि ल-फासिकून (४९) अ-फ-ह्वमल-

ज़ाहिलिय्यति यगू-न ७ व मन् अह्सनु मिनल्लाहि ह्वमल्लिकौमियूकिन्न

★ (५०) या अय्युह्लजी-न आमनू ला तत्तखिजुल्-यहू-द वन्नसारा

ओलिया-अ बअ-ज़ुहुम् ओलिया-उ बअ-ज़िन् ७ व मय्य-त-वल्लहुम् मिन्कुम्

फ इन्नह् मिन्हुम् ७ इन्नल्ला-ह ला यहिदल्-कौमज़ालिमीन (५१)

مِنْهُمْ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِمْ مِنَ الْكُتُبِ وَاتَّبَعُوا أُتْرُقًا
وَيُؤْمَدَى وَلَوْ أَنَّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِمْ مِنَ الْكُتُبِ
مَدَى وَمَوْعِدًا لِلْمُؤْمِنِينَ وَأُولَئِكَ أَهْلِ الْإِيمَانِ
إِنَّمَا اللَّهُ فَرَّادٌ وَمَنْ لَمْ يَحْكَمْ بِمَا أَنزَلَ اللَّهُ فَأُولَئِكَ هُمُ
الْفَاسِقُونَ وَأَنزَلَ إِلَيْكَ الْكِتَابَ الْبَيِّنَاتِ مُصَدِّقًا لِّمَا
بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ الْكِتَابِ وَمُهَيِّمًا عَلَيْهِ فَاصْلَحْ مِنْهُم يَا
أَنزَلَ اللَّهُ وَلَا تَتَّبِعْ أَهْوَاءَهُمْ عَنَّا جَاءَكَ مِنَ الْحَقِّ لَوْ كُنَّا
مَعَكُمْ فِرْعَوْنًا وَمِثْلًا لِّمَا نُنَزِّلُ اللَّهُ لِيَجْزِيَ أُولَئِكَ
فَإِذَا لَبِثُوا فِي مَا أَنزَلْنَا فَالْغِيَا الْغَيْرِينَ لَئِنْ لَمْ يَنْجَهِ
مِنْهُمْ لَأَكِيدَنَّ فِيهِمْ فِتْنَتَيْنِ وَأَنَّ لَكُمْ مِنْهُمُ
بِمَا أَنزَلَ اللَّهُ وَلَا تَتَّبِعْ أَهْوَاءَهُمْ وَلَا تَتَّبِعُوا فِتْنَةً عَنْ
بَعْضِ مَا أَنزَلَ اللَّهُ إِلَيْكَ إِنَّكُمْ كُنْتُمْ قَوْمًا فَاعِلِينَ اللَّهُ
يُؤَيِّدُ بَعْضَ دُورِهِمْ وَأَيُّ الْيَوْمِ فَالِقَابِ الْفُتُونِ
أَفَلَمْ يَتَفَكَّرُوا فِي بَعْضِ مَا أَنزَلَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ
يُؤَيِّدُ بَعْضَهُمْ وَأُولَئِكَ يَفْتَنُ اللَّهُ بَعْضَهُمْ
بِبَعْضٍ وَمَنْ يَتَوَلَّهُمْ فَيَتَوَلَّهُمْ فَيَتَوَلَّهُمْ فَيَتَوَلَّهُمْ
لَئِنْ لَمْ يَنْجَهِ الْقَوْمَ الْفَاسِقِينَ فَتَوَى الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ

और जल्द ही ज़मीन को चाहिए कि जो हुक्म खुदा ने उस में नाज़िल फ़रमाये हैं, उस के मुताबिक़ हुक्म दिया करें और जो खुदा के नाज़िल किये हुए हुक्मों के मुताबिक़ हुक्म न देगा, तो ऐसे लोग ना-फ़रमान हैं। (४७) और (ऐ पैग़म्बर !) हम ने तुम पर सच्ची किताब नाज़िल की है, जो अपने से पहली किताबों की तस्दीक़ करती है और उन (सब) पर शामिल है, तो जो हुक्म खुदा ने नाज़िल फ़रमाया है, उस के मुताबिक़ उन का फ़ैसला करना और हक़, जो तुम्हारे पास आ चुका है, उस को छोड़ कर उन की ख्वाहिशों की पैरवी न करना। हम ने तुम में से हर एक (फ़िक़्ह) के लिए एक दस्तूर और एक तरीक़ा मुकर्रर किया है और अगर खुदा चाहता तो तुम सब को एक ही शरीअत पर कर देता, मगर जो हुक्म उस ने तुम को दिए हैं, उन में वह तुम्हारी आजमाइश करनी चाहता है, सो नेक कामों में जल्दी करो। तुम सब को खुदा की तरफ़ लौट कर जाना है, फिर जिन बातों में तुम को इस्तिस्नाफ़ था, वह तुम को बता देगा। (४८) और (हम फिर ताकीद करते हैं कि) जो (हुक्म) खुदा ने नाज़िल फ़रमाया है, उसी के मुताबिक़ उन में फ़ैसला करना और उन की ख्वाहिशों की पैरवी न करना और उन से बचते रहना कि किसी हुक्म से, जो खुदा ने तुम पर नाज़िल फ़रमाया है, ये कहीं तुम को बहका न दें। अगर ये न माने तो जान लो कि खुदा चाहता है कि उन के कुछ गुनाहों की वजह से उन पर मुसीबत नाज़िल करे और अक्सर लोग तो ना-फ़रमान हैं। (४९) क्या ये जाहिलियत के ज़माने के हुक्म के ख्वाहिशमंद हैं ? और जो यकीन रखते हैं, उन के लिए खुदा से अच्छा हुक्म किस का है ? (५०) ★

ऐ ईमान वाले ! यहूद और नसारा को दोस्त न बनाओ ॥ ये एक दूसरे के दोस्त हैं। और जो शक़्स तुम में से उन को दोस्त बनाएगा, वह भी उन्हीं में से होगा। बेशक़ खुदा ज़ालिम लोगों को

फ-त-रल्लजी-न फ्री कुलूबिहिम् मरजुंयुसारिभू-न फ्रीहिम् यकूलू-न नख्शा अन्
 तुसीबना दा-इरतुत् ॥ फ अ-सल्लाहु अय्यअति-य बिल्फतिह् औ अमिरम्-मिन्
 जिन्दिही फयुस्बिह् अला मा असरु फ्री अन्फुसिहिम् नादिमीन ॥ (५२)
 व यकूलुल्लजी-न आमनू अ हा-उल-इल्लजी-न अक्समू बिल्लाहि जह-द

ऐमानिहिम् १ इन्हुम् ल-म-अकुम् २ हबित्
अम्-मालुहुम् फ अस्वह् खासिरीन ● (५३)
या अय्युहलजी-न आमनू मय्यर्तद्-द मिन्कुम्
अन् दीनिही फ - सौ - फ यत्तिल्लाह्
बि कौमिय्युहिब्बुहुम् व युहिब्बूनह्

अजिल्लतिन् अ-लल्-मुअमिनी-न अजिजतिन्
अलल्काफिरी-न युजाहिद्द-न फ्री सबीलिल्लाहि
व ला यखाफू-न लोम-त्त ला-इमिन्
जालि-क फज़लुल्लाहि युअतीहि मय्यशा-उ
वल्लाहु वासिअन् अलीम (५४)

इन्मा वलिय्युकुमुल्ला-ह व रसूलुह वल्लजी-न
आमनुल्लजी-न युकीमूनस्सला-त्त व युअतूनज्जका-त्त
व हुम् राकिअून (५५) व मय्य-त-वल्लला-ह

व रसूलह वल्लजी-न आमनू फ इन्-न हिजबल्लाहि हुमुल्गालिबून (५६)
या अय्युहल्लजी-न आमनू ला तत्तखिजुल्-लजीनत्तखजू दीनकुम् हुजुब-व
लजिबम्-मिनल्लजी-न ऊतुल्-किता-ब मिन् कब्लिकुम् वल्कुफ्फा-र औलिया-अ
वत्तकुल्ला-ह इन् कुन्तुम् मुअ्मिनीन (५७) व इज्जा नादेतुम्
इलस्सलाति-त-ख-जूहा हुजुब-व लजिबत् जालि-क बि अन्नहुम् कौमुल्ला
यअ-किलून (५८) कुल् या अहल्लुकिताबि हल् तन्किमू-न मिन्ना
इल्ला अन् आमन्ना बिल्लाहि व मा उन्जि-ल इलैना
व मा उन्जि-ल मिन् कब्लु व अन-न अक्स-रकुम् फासिकून (५९)

हिदायत नहीं देता। (५१) तो जिन लोगों के दिलों में (निक्राक का) मजं है, तुम उन को देखोगे कि उन में दीड़-बोड़ के मिले जाते हैं। कहते हैं कि हमें डर है कि कहीं हम पर जमाने की गर्दिश न आ जाए। सो करीब है कि खुदा फ़ल्ह भेजे या अपने यहां से कोई अन्न (नाज़िल फ़रमाए), फिर ये अपने दिल की बातों पर, जो छिपाया करते थे, शर्मिन्दा हो कर रह जाएंगे। (५२) (उस वक़्त) मुसलमान (ताज्जुब से) कहेंगे कि क्या ये वही हैं, जो खुदा की सस्त-सस्त क़समें ख़ाया करते थे कि हम तुम्हारे साथ हैं। उन के अमल अकारत गए और वह घाटे में पड़ गए (५३) ऐ ईमान वालो ! अगर तुम में से कोई अपने दीन से फिर जाएगा, तो खुदा ऐसे लोग पंदा कर देगा, जिन को वह दोस्त रखे और जिसे वे दोस्त रखें। और जो मोमिनों के हक़ में नमी करें और काफ़िरों से सस्ती से पेश आएँ, खुदा की राह में जिहाद करें, और किसी मलामत करने वाले की मलामत से न डरें, यह खुदा का फ़ज़ल है, वह जिसे चाहता है, देता है। और खुदा बड़े फैलाव वाला और जानने वाला है। (५४) तुम्हारे दोस्त तो खुदा और उस के पैग़म्बर और मोमिन लोग ही हैं, जो नमाज़ पढ़ते और ज़कात देते और (खुदा के आगे) झुकते हैं। (५५) और जो शल्स खुदा और उस के पैग़म्बर और मोमिनों से दोस्ती करेगा तो (वह खुदा की जमाअत में दाख़िल होगा और) खुदा की जमाअत ही ग़लबा पाने वाली है। (५६) ✱

ऐ ईमान वालो ! जिन लोगों को तुम से पहले किताबें दी गयी थीं, उन को और काफ़िरों को जिन्होंने तुम्हारे दीन को हंसी और खेल बना रखा है, दोस्त न बनाओ और मोमिन हो तो खुदा से डरते रहो। (५७) और जब तुम लोग नमाज़ के लिए अज़ान देते हो, तो ये उसे भी हंसी और खेल बनाते हैं। यह इस लिए कि समझ नहीं रखते। (५८) कहो कि अह्ले किताब ! तुम हम में बुराई ही क्या देखते हो, इस के सिवा कि हम खुदा पर और जो (किताब) हम पर नाज़िल हुई, उस पर और जो (किताबें) पहले नाज़िल हुई, उन पर ईमान लाए हैं और तुम में अक्सर बद-किरदार हैं। (५९)

कहो कि मैं तुम्हें बताऊँ कि खुदा के यहाँ इस से भी बुरा बदला (सजा) पाने वाले कौन हैं, वे लोग हैं, जिन पर खुदा ने लानत की और जिन पर वह ग़सबनाक हुआ और (जिन को) उन में से बन्दर और सुअर बना दिया और जिन्होंने ने शैतान की पूजा की। ऐसे लोगों का बुरा ठिकाना है और वे सीधे रास्ते से बहुत दूर हैं। (६०) और जब ये लोग तुम्हारे पास आते हैं, तो कहते हैं कि हम ईमान ले आए, हालाँकि कुफ़ ले कर आते हैं और उसी को ले कर जाते हैं। और जिन बातों को ये छिपाए रखते हैं, खुदा उन को खूब जानता है। (६१) और तुम देखोगे कि उन में अक्सर गुनाह और स्यादती और हराम खाने में जल्दी कर रहे हैं। बेशक ये जो कुछ करते हैं बुरा करते हैं। (६२) भला उन के मशाइख और उलेमा उन्हें गुनाह की बातों और हराम खाने से मना क्यों नहीं करते हैं। (६३) और यहूद कहते हैं कि खुदा का हाथ (गरदन से) बंधा हुआ है (यानी अल्लाह बखील है), उन्हीं के हाथ बांधे जाएँ और ऐसा कहने की वजह से उन पर लानत हो (उस का हाथ बंधा हुआ नहीं), बल्कि उस के दोनों हाथ खुले हैं। वह जिस तरह (और जितना) चाहता है, खर्च करता है।^१ और (ऐ मुहम्मद !) यह (किताब) जो तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से तुम पर नाज़िल हुई, इस से उन में से अक्सर की शरारत और इन्कार बढ़ेगा और हम ने उन की आपसी दुश्मनी और कपट को क्रियामत तक के लिए डाल दिया है। ये जब लड़ाई के लिए आग जलाते हैं, खुदा उस को बुझा देता है और यह मुल्क में फ़साद के लिए दौड़े फिरते हैं और खुदा फ़साद करने वालों को दोस्त नहीं रखता। (६४) और अगर अहले किताब ईमान लाते और परहेजगारी करते, तो हम उनसे उनके गुनाह मिटा देते और उनको नेमत के बाग़ों में दाखिल करते। (६५) और अगर वे तीरात और इंजील को और जो (और किताबें) उन के परवरदिगार की तरफ़ से उन पर नाज़िल हुई, उन को कायम रखते, तो (उन पर रोज़ी वर्षा की तरह बरसती कि) अपने ऊपर से और पांवों के नीचे से खाते। इन में कुछ लोग दर्मियानी रास्ता अपनाने वाले हैं और बहुत से ऐसे हैं जिन के अमल बुरे हैं। (६६) ★

१. उन लोगों का अजब हाल था, कभी अल्लाह तआला को फ़कीर कहते और अपने आप को ग़नी। यानी जब भालदार थे, तो अपने आप को ग़नी कहते थे और खुदा को फ़कीर। अब जो आंखबस्त सल्लल्लाहु अलैहि व नल्लम के मुठलाने और उन की मुखा़लफ़त करने से उन को ग़रीबी ने आ घेरा, तो यों चिल्लाने लगे कि खुदा बखील है और बुल्ल की वजह से हम पर से अपने अता का हाथ खींच लिया है। अल्लाह तआला ने इन बे-अदवियों की वजह से उन पर लानत की और फ़रमाया कि हमारे तो दोनों हाथ खुले हैं और जिस तरह चाहते हैं, खर्च करते हैं।

या अय्युहरंसुलु बल्लिग मा उन्जि-ल इलै-क मिरंब्बि-क ७ व इल्लम्
तफ्अल् फ-मा-बल्लग-त रिसाल-तहू ७ वल्लाहु यअ-सिमु-क मिनन्नासि ७ इन्नल्ला-ह
ला यहिदल्-क्रोमल् - काफिरीन (६७) कुल् या अहलल् - किताबि
लस्तुम् अला शैइत् हुत्ता तुक्कीमुत्तौरा-त्त वल्-इन्जी-ल व मा उन्जि-ल

इलैकुम् मिरंब्बिकुम् ७ व ल-यजीदन्-न कसीरम्-
मिन्हुम् मा उन्जि-ल इलै-क मिरंब्बि-क
तुरयानव्-व कुफरत् ७ फ ला तअ-स अ-लल्-
क्रोमिल्-काफिरीन (६८) इन्नल्लजी-न आमनू
वल्लजी-न हादू वस्साबिऊ-न वन्नसारा मन्
आम-न बिल्लाहि वल्-यौमिल्-आखिरि व
अमि-ल सालिह्व फ ला खौफुत् अलैहिम् व ला
हुम् यह्जनून (६९) ल-कद् अ-खज्जा
मीसा-क बनी इस्रा-ई-ल व अर्सलन्
इलैहिम् रुसुलत् ७ कुल्लमा जा - अहुम्
रसूलुम्-बिमा ला तह्वा अन्फुसुहुम् ७
फरीकत् कज्जबू व फरीकय्यक्तुलून ७
(७०) व हसिबू अल्ला तकून फित-नतुत्

وَكَيْفَ يُنْفِخُ سَاحَ مَآعِشَلَنْ ۖ إِنَّهَا لَأَرْسَالُ بَلَاءٍ مَّا أُنْزِلَ
فِيكَ مِنْ ذِكْرٍ ۚ وَإِنْ لَوْ تَقَعَلْ فَمَا لَتَكُنْ رِسَالَتُهُ ۚ وَاللَّهُ
يَعْلَمُكَ مِنَ الْكَافِرِينَ ۖ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكَافِرِينَ ۖ
ثُمَّ لَا يَهْدِي الْكَافِرِينَ لَسَمْعُ عَلَى شَيْءٍ حَتَّى يُقِيمُوا الْغَزَاةَ ۚ
وَالْأَجْمِلُ وَمَا أُنْزِلَ إِلَيْكَ مِنْ ذِكْرٍ ۚ وَلَكِنَّكَ لَكَبِيرَاتٍ فَنَامَ
مَا أُنْزِلَ إِلَيْكَ مِنْ ذِكْرٍ طَعْنًا ۚ وَلَا تَأْسَ عَلَى الْقَوْمِ
الْكَافِرِينَ ۚ إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَالَّذِينَ هَادُوا وَالْغَافِلُونَ ۚ
الَّذِينَ مَنَ آمَنَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَا
خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ۚ لَقَدْ أَخَذْنَا مِيثَاقَ بَنِي
إِسْرَءِيلَ وَأَرْسَلْنَا إِلَيْهِمْ رَسُولًا قَالِ إِنَّهُمُ رُسُلُ رَبِّهِمْ
لَا تُقُوا أَنْفُسَكُمْ فَتَفَكَّرُوا ۚ وَفَرَّقْنَا لَعْنَتَنَا ۚ وَحَبِيبُوا
الَّذِينَ كَانُوا يَفْضَحُونَ ۚ وَصَلُّوا ۚ وَصَلُّوا ۚ تَابَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ لَوْ عَصَوْا
وَصَلُّوا كَيْفَ فَنَفَعَهُمُ اللَّهُ بِبَصِيرَةٍ ۚ لَقَدْ كَفَرَ
الَّذِينَ قَالُوا إِنَّ اللَّهَ هُوَ الْمَسِيحُ ابْنُ مَرْيَمَ ۚ وَقَالَ الْمَسِيحُ
بَنِي إِسْرَءِيلَ اعْبُدُوا اللَّهَ رَبِّي وَرَبَّكُمْ ۚ إِنَّهُ مَنْ يُشْرِكْ
بِاللَّهِ فَقَدْ حَرَّمَ اللَّهُ عَلَيْهِ الْجَنَّةَ وَمَأْوَاهُ النَّارُ ۚ وَمَا لِلظَّالِمِينَ
مِنْ أَنْصَارٍ ۚ لَقَدْ كَفَرَ الَّذِينَ قَالُوا إِنَّ اللَّهَ ثَلَاثُ ثُلُثٍ وَمَا

फ अमू व सम्मू सुम्-म ताबल्लाहु अलैहिम् सुम्-म अमू व सम्मू कसीरम्-मिन्हुम्
वल्लाहु बसीरम्-बिमा यअ-मलून (७१) ल-कद् क-फ-रल्लजी-न कालू
इन्नल्ला-ह हुवल-मसीहुब्नु मयं-म ७ व कालत्मसीहु या बनी इस्रा-ई-
लअ-बुदुल्ला-ह रब्बी व रब्बकुम् ७ इन्ह मय्युशिरक् बिल्लाहि फ-कद् हरंमल्लाहु
अलैहिल्-जन्न-त्त व मअ्वाहुन्नार ७ व मा लिज्जालिमी - न मिन् अन्सार
(७२) ल-कद् क-फ-रल्लजी-न कालू इन्नल्ला-ह सालिसु-सलासतिन् ७
व मा मिन् इलाहिन् इल्ला इलाहु-व्वाहिदुत् ७ व इल्लम् यत्तह
अम्मा यकूलून ल-य-मस्सन्नल्लजी-न क-फरु मिन्हुम् अजाबुत् अलीम (७३)

ऐ पैगम्बर ! जो इसाबि खुदा की तरफ से तुम पर नाज़िल हुए हैं, सब लोगों को पहुंचा दो और अगर ऐसा न किया तो तुम ने खुदा के पैगाम पहुंचाने में कोताही की (यानी पैगम्बरी का फ़र्ज अदा न किया) और खुदा तुम को लोगों से बचाए रखेगा। बेशक खुदा मुन्किरों को हिदायत नहीं देता। (६७) कहो कि ऐ अहले किताब ! जब तक तुम तौरात और इंजील को और जो (और किताबें) तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से तुम लोगों पर नाज़िल हुईं, उन को कायम न रखोगे, कुछ भी राह पर नहीं हो सकते और (यह क़ुरआन) जो तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से तुम पर नाज़िल हुआ है, इस से उन में से अबसर की सर-कशी और कुफ़ और बढ़ेगा, तो तुम काफ़िरों की क्रौम पर अफ़सोस न करो। (६८) जो लोग खुदा पर और आखिरत के दिन पर ईमान लाएंगे और नेक अमल करेंगे, चाहे वे मुसलमान हों या यहूदी या सितारा परस्त या ईसाई, उन को (क्रियामत के दिन) न कुछ ख़ौफ़ होगा और न वे ग़मनाक होंगे। (६९) हम ने बनी इस्राईल से अहद भी लिया और उन की तरफ़ पैगम्बर भी भेजे, (लेकिन) जब कोई पैगम्बर उन के पास ऐसी बातें ले कर आता, जिन को उन के दिल नहीं चाहते थे, तो वह (नबियों की) एक जमाअत को तो झुठला देते और एक जमाअत को क़त्ल कर देते थे। (७०) और यह ख़याल करते थे कि (इस से उन पर) कोई आफ़त नहीं आने की, तो वे अंधे और बहरे हो गये फिर खुदा ने उन पर मेहरबानी फ़रमायी, (लेकिन) फिर उन में से बहुत से अंधे और बहरे हो गए और खुदा उन के सब कामों को देख रहा है। (७१) वे लोग बे-शुबहा काफ़िर हैं, जो कहते हैं कि मरयम के बेटे (ईसा) मसीह खुदा हैं, हालांकि मसीह यहूद से यह कहा करते थे कि ऐ बनी इस्राईल ! खुदा ही की इबादत करो, जो मेरा भी परवरदिगार है और तुम्हारा भी, (और जान रखो कि) जो शरूख़ खुदा के साथ शिर्क करेगा, खुदा उस पर बहिश्त को हराम कर देगा और उस का ठिकाना दोज़ख़ है और ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं। (७२) वे लोग (भी) काफ़िर हैं, जो इस बात के कायल हैं कि खुदा तीन में का तीसरा है हालांकि उस एक माइद के सिवा कोई इबादत के लायक नहीं। अगर ये लोग ऐसे क़ौल (व अक्कीदों) से बाज़ नहीं आएंगे, तो उन में जो काफ़िर हुए हैं, वे तक्लीफ़ देने वाला अज़ाब पाएंगे। (७३) तो ये क्यों खुदा

अ-फ़-ला यतूबून इलल्लाहि व यस्तग़फ़िरूनहू ७ वल्लाहु ग़फ़ूररहीम (७४)
 मल्मसीहुनु मयं-म इल्ला रसूलुन् ८ कद् स-लत् मिन् कन्लिहिर्हसुलु ७ व
 उम्मुह सिद्दीकतुन् ७ काना यअकुलानित्तआ-म ७ उत्तुर् कै-फ़ नुबय्यिनु
 लहुमुलआयाति सुम्मतुर् अन्ना यअफ़कन (७५) कूल् अ-तअ-बुद्द-न मिन्

हुनिल्लाहि मा ला यम्लिकु लकुम् ज़रूर-व
 ला नफ़अन् वल्लाहु हुवस्समीअुल-
 अलीम (७६) कुल् या अह्लल्-किताबि
 ला तसलू फ़ी दीनिकुम् शैरल्-हक्कि व
 ला तत्तबिअू अह्वा-अ कौमिन् कद् ज़ल्लू
 मिन् कब्लु व अज़ल्लू कसीरव्-व ज़ल्लू
 अन् सवा- इस्सबील ★ (७७)

लुञ्जिनल्लजी-न क-फ़रू मिम्-बनी इस्राई-ल
 अला लिसानि दावू-द व औसबि मयं-म
 जालि-क बिमा अ-सव्-व कानू यअ-तदून (७८)
 कानू ला य-त-नाहौ-न अम्मुन्करिन् फ़-अ-लूह

ल बिअ-स मा कानू यफअलून (७६) तरा कसीरम्-मिन्हुम् य-त-वल्लौनल्लजी-न
क-फरू ७ ल-बिअ-स मा कदमत् लहुम् अन्फुसुहुम् अन् सखितुल्लाहु
अलैहिम् व फिलअजाबि हुम् खालिदून (८०) व लौ कानू युअमिन्-न
बिल्लाहि वन्नबिधिय व मा उन्जि-ल इलैहि मत्तखजूहुम् ओलिया-अ व लाकिन्-न
कसीरम्-मिन्हुम् फासिकून (८१) ल-त-जिदन्-न अशददन्नासि अदावतुल्-लिल्लजी-न
आमनुल्-यहू-द वल्लजी-न अशरकू ८ व ल - तजिदन्-न अकर-बहुम्
मवददतुल्-लिल्लजी-न आमनुल्लजी-न कालू इन्ना नसारा ९ जालि-क बि अन्-न
मिन्हुम् क्रिस्तीसी-न व रहबानव-व अन्नहुम् ला यस्तकिबलून (८२)

के आगे तीबा नहीं करते और उस से गुनाहों की माफ़ी नहीं मांगते। और खुदा तो बख़्शने वाला मेहरबान है। (७४) मसीह बिन मरयम तो सिर्फ़ (खुदा के) पैग़म्बर थे, उन से पहले भी बहुत-से रसूल गुजर चुके थे और उन की बालिदा (मरयम खुदा की बली और) सब्बी फ़रमांबरदार थीं। दोनों (इंसान थे और) खाना खाते थे। देखो, हम इन लोगों के लिए अपनी आयतें किस तरह खोल-खोल कर बयान करते हैं, फिर (यह) देखो कि ये किधर उलटे जा रहे हैं। (७५) कहो कि तुम खुदा के सिवा ऐसी चीज़ की क्यों पूजा करते हो, जिस को तुम्हारे नफ़ा और नुक़सान का कुछ भी अस्तियार नहीं और खुदा ही (सब कुछ) सुनता-जानता है (७६) कहो कि अहले किताब ! अपने दीन (की बात) में ना-हक़ मुबालागा न करो और ऐसे लोगों की ख्वाहिशों के पीछे न चलो, जो (खुद भी) पहले गुमराह हुए और भी अक्सरों को गुमराह कर गये और सीधे रास्ते से भटक गये। (७७) ✽

जो लोग बनी इस्राईल में काफ़िर हुए, उन पर दाऊद और ईसा बिन मरयम की जुबान से लानत की गयी, यह इस लिए कि ना-फ़रमानी करते थे और हृद से आगे बढ़ जाते थे। (७८) (और) बुरे कामों से जो वे करते थे, एक दूसरे को रोकते नहीं थे। बिला शुब्हा वे बुरा करते थे। (७९) तुम उन में से बहुतों को देखोगे कि काफ़िरों से दोस्ती रखते हैं। उन्होंने ने जो कुछ अपने वास्ते आगे भेजा है, बुरा है (वह यह) कि खुदा उन से ना-खुश हुआ और वे हमेशा अज़ाब में (पड़े) रहेंगे। (८०) और अगर वे खुदा पर और पैग़म्बर पर और जो किताब उन पर नाज़िल हुई थी, उस पर यक़ीन रखते तो उन लोगों को दोस्त न बनाते, लेकिन उन में अक्सर बद-किरदार हैं। (८१) (ऐ पैग़म्बर !) तुम देखोगे कि मोमिनों के साथ सब से ज़्यादा दुश्मनी करने वाले यहूदी और मुश्रिक हैं और दोस्ती के लिहाज़ से मोमिनों से करीब-तार उन लोगों को पाओगे, जो कहते हैं कि हम नसारा हैं, यह इस लिए कि उन में आलिम भी हैं और मशाइख़ भी और वे तकब्बुर नहीं करते। (८२)

और जब इस (किताब) को सुनते हैं, जां (सब से पिछले) पैग़म्बर (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर नाज़िल हुई तो तुम देखते हो कि उन की आंखों से आंसू जारी हो जाते हैं, इस लिए कि उन्होंने ने हक़ बात पहचान ली और वे (खुदा की जनाब में) अर्ज करते हैं कि ऐ परवर-दिगार ! हम ईमान लाए, तो हम को मानने वालों में लिख ले। (८३) और हमें क्या हुआ है कि

सातवां पारः वइजासमिञ्ज्रू

सूरतुल्मा-इदति आयत ८३ से १२०

व इजा समिञ्च मा उन्नि-ल इलरंसूलि तरा अअ-युनहुम् तफ्रीञ्चु मिनद्दम्भि मिम्मा
अ-रफू मिनल्ह्विक ६ यकूलू-न रब्बना आमन्ता फ़ुत्तुब्ना म-अश्शाहिदीन (८३)
व मा लना ला नुअमिनु बिल्लाहि व मा जा-अना मिनल्ह्विक ७ व नत्सञ्चु
अय्यदक्षि-लना रब्बुना म-अल्-क्रौमिस्सालिहीन (८४) फ़-असाबहुमुल्लाहु बिमा कालू

जन्नातिन् तजरी मिन् तहितहल्-अन्हार
 खालिदीन फ्रीहा व जालि-क जजा-उल्
 मुहिसनीन (८५) बल्लजीन क-फरू व कज्जबू
 बि आयातिन् उला-इ-क अस्हाबुल्-जहीम

★ (८६) या अय्युहल्लजी-न आमनू ला
तुहरिम् तयिबाति मा अ-हल्लल्लाहु लकुम् व
ला तअ-तद्वइल्लल्ला-ह ला युहिब्बुल्-मुअ-तदीन
(८७) व कुल् मिम्मा र-ज-क्रकुमुल्लाहु

हलालन् तय्यिबन् - वत्तकुलाहलली

अन्तुम् बिही मुअ्मिनून (८८) ला युआस्त्रिजु-
कुमुल्लाह बिल्लरिव फ्री ऐमानिकुम् व

लाकिय्युवाखिजुकुम् बिमा अक्कत्तुमुल्-ऐमा-न६
फ-कपफारतुह इत्तामु अ-श-रत्ति मसाकी-न

मिन औसति मा तूत्त्रिमू-न अहलीकुम् औ

क्र मल्लम् यजिद् क्रसियामु सलत्सत्ति

ऐमानिकुम् इजा ह-लप्तुम् वहफज् ऐमा

लकुम् आयातहा ल-अल्लकुम् तश्कुलून
यामन इन्नमलखम ह वल्लैसिक

रिज्जसुग्मिन्न अ-मलिशयैतानि फ़ज्जतिबह ल

मंजिल २

खुदा पर और हक बात पर, जो हमारे पास आयी है, ईमान न लाएं। और हम उम्मीद रखते हैं कि परवरदिगार हम को नेक बन्दों के साथ बहिश्त में दाखिल करेगा। (८४) तो खुदा ने उन को इस कहने के बदले (बहिश्त के) बाग अता फरमाये, जिन के नीचे नहरें बह रही हैं, वे हमेशा उन में रहेंगे और भले लोगों का यही बदला है। (८५) और जिन लोगों ने कुफ़ किया और हमारी आयतों को झुठलाया, वे जहन्नमी हैं। (८६) ★

मोमिनो ! जो पाकीजा चीजें खुदा ने तुम्हारे लिए हलाल की हैं, उनको हराम न करो और हद से न बढ़ो कि खुदा हद से बढ़ने वालों को दोस्त नहीं रखता। (८७) और हलाल पाक रोजी खुदा ने तुमको दी है, उसे खाओ और खुदा से, जिस पर ईमान रखते हो, डरते रहो। (८८) खुदा तुम्हारी बे-इरादा कसमों की तुमसे पकड़ न करेगा,^१ लेकिन पुस्ता कसमों पर (जिनके खिलाफ़ करोगे, तो) पकड़ लेगा, तो उस का कफ़ारा दस मुहताजों को औसत दर्जे का खाना खिलाना है, जो तुम अपने बाल-बच्चों को खिलाते हो या उन को कपड़े देना या एक गुलाम आजाद करना, और जिस को यह न मिले, वह तीन रोजे रखे। यह तुम्हारी कसमों का कफ़ारा है, जब तुम कसम खा लो (और उसे तोड़ दो) और (तुम को) चाहिए कि अपनी कसमों की हिफ़ाज़त करो। इस तरह खुदा तुम्हारे (समझाने के) लिए अपनी आयतें खोल-खोल कर बयान फ़रमाता है, ताकि तुम शुक्र करो। (८९) ऐ ईमान वालो ! सराब और जुआ और दुत और पांसे (ये सब) नापाक काम शैतान के अमलों से हैं, सो

१. जैसे कोई दूर से किसी आदमी को देखे और कहे कि खुदा की कसम यह तो अब्दुल्लाह है, मगर हकीकत में अब्दुल्लाह न हो या जैसे कुछ लोगों की आदत होती है कि बिला इरादा—'सा बल्लाह' या 'बला बल्लाह' या 'बल्लाह', 'बिल्लाह' कहते हैं। ऐसी कसमों पर कोई पकड़ नहीं है।

२. जैसे कोई आदमी कसम खाये कि मैं कभी मांस नहीं खाऊंगा, या निकाह नहीं करूंगा।

इन से बचते रहना, ताकि निजात पाओ। (६०) शैतान तो यह चाहता है कि शराब और जुए की वजह से तुम्हारे आपस में दुश्मनी और रंजिश डलवा दे और तुम्हें खुदा की याद से और नमाज से रोक दे, तो तुम को (इन कामों से) बाज रहना चाहिए।' (६१) और खुदा की फरमांवरदारी और (खुदा के) रसूल की इताअत करते रहो और डरते रहो। अगर मुंह फेंकोगे तो जान रखो कि हमारे पैगम्बर के जिम्मे तो सिर्फ पैग़ाम का खोल कर पहुंचा देना है। (६२) जो लोग ईमान लाये और नेक काम करते रहे, उन पर उन चीजों का कुछ गुनाह नहीं जो वह खा चुके, जब कि उन्होंने परहेज किया और ईमान लाये और नेक काम किए। फिर परहेज किया और भले काम किए और खुदा भला करने वालों को दोस्त रखता है। (६३) ★

मोमिनो ! किसी क्रूर शिकार से, जिन को तुम हाथों और नेजों से पकड़ सको, खुदा तुम्हारी आजमाइश करेगा, (यानी एहराम की हालत में शिकार के मना करने से), ताकि मालूम करे कि उस से शायबाना कौन डरता है, तो जो उस के बाद ज्यादाती करे, उस के लिए दुख देने वाला अज़ाब (तैयार) है। (६४) मोमिनो ! जब तुम एहराम की हालत में हो, तो शिकार न मारना और जो तुम में से जान-बूझ कर उसे मारे तो (या तो उस का) बदला (दे और वह यह है कि) उसी तरह का चारपाया, जिसे तुम में से दो एतबार वाले आदमी तै कर दें, कुर्बानी (करे और यह कुर्बानी) काबे पहुंचायी जाए, या कफ़कारा (दे और वह) मिस्कीनों को खाना खिलाना (है) या उस के बराबर रोज़े रखे ताकि अपने काम की सज़ा (का मज़ा) चखे (और) जो पहले हो चुका, वह खुदा ने माफ़ कर दिया और जो फिर (ऐसा काम) करेगा, तो खुदा उस से बदला लेगा और खुदा ग़ालिब और बदला लेने वाला है। (६५) तुम्हारे लिए दरिया (की चीजों) का शिकार और उन का खाना हलाल कर दिया गया है, (यानी) तुम्हारे और मुसाफ़िरों के फ़ायदे के लिए और जंगल (की चीजों) का शिकार जब तक तुम एहराम की हालत में रहो, तुम पर हराम है और खुदा से, जिस के पास तुम (सब) जमा किये जाओगे, डरते रहो। (६६) खुदा ने इज़ज़त के घर (यानी) काबे को लोगों के लिए अम्न की वजह मुकर्रर फ़रमाया है और इज़ज़त के महीनों को और कुर्बानी को और उन जानवरों को, जिन के गले में पट्टे बंधे हों, यह इस लिए कि तुम जान लो कि जो कुछ आसमानों में और जो कुछ ज़मीन में है, खुदा सब को जानता है और यह कि खुदा को हर चीज़ का इल्म है। (६७) जान

१. यह तर्जुमा हम ने 'फ़ हल अन्तुम मुस्तहन्न' का किया है और इस में सबाल नहीं है। इस में हुक्म ही हमारे नज़दीक सही है।

रखो कि खुदा सलत अजाब देने वाला है और यह कि खुदा बरक़ाने वाला मेहरबान भी है (६८) शम्बर के जिम्मे तो सिरुं (खुदा का पैग़ाम) पहुँचा देना है और जो कुछ तुम जाहिर करते हो और कुछ छिपाते हो, खुदा को सब मासूम है। (६९) कह दो कि ना-पाक और पाक चीज़ें बराबर नहीं होतीं, गो ना-पाक चीज़ों की ज्यादाती तुम्हें खुश ही लगे, तो अक्ल वालो ! खुदा से डरते रहो, ताकि कामियाबी हासिल करो (१००) * मोमिनो ! ऐसी चीज़ों के बारे में मत सवाल करो कि अगर (उन की हकीकतें) तुम पर जाहिर कर दी जाएं तो तुम्हें बुरी लगें और अगर कुरआन के नाज़िल होने के दिनों में ऐसी बातें पूछोगे, तो तुम पर जाहिर भी कर दी जाएंगी। (अब तो) खुदा ने ऐसी बातों (के पूछने) से दर-गुज़र फ़रमाया है और खुदा बरक़ाने वाला बुद्धिमान है। (१०१) इस तरह की बातें तुम से पहले लोगों ने भी पूछी थीं (मगर जब बतायी गयीं तो) फिर उन के इंकारी हो गये। (१०२) खुदा ने न तो बहीरा' कुछ चीज़ बनाया है और न साइबा' और न वसीला' और न हाम' बल्कि काफ़िर खुदा पर झूठ गढ़ते हैं और ये अक्सर अक्ल नहीं रखते। (१०३) और जब इन लोगों से कहा जाता है कि जो (किताब) खुदा ने नाज़िल फ़रमायी है, उस की और अल्लाह के रसूल की तरफ़ रज़ू करो, तो कहते हैं कि जिस तरीक़े पर हम ने अपने बाप-दादा को पाया है, वही हमें काफ़ी है। भला अगर उन के बाप-दादा, न तो कुछ जानते हों और न सीधे रास्ते पर हों, (तब भी ?) (१०४) ऐ ईमान वालो ! अपनी जानों की हिफ़ाज़त करो। जब तुम हिदायत पर हो, तो कोई गुमराह तुम्हारा कुछ भी बिगाड़ नहीं सकता। तुम सब को खुदा की तरफ़ से लौट कर जाना है। उस वक़्त वह तुम को तुम्हारे सब कामों से जो (दुनिया में) किये थे, आगाह करेगा (और उन का बदला देगा।) (१०५) मोमिनो ! जब तुम में से किसी की मौत आ मौजूद हो, तो शहादत (गवाही, का निसाब) यह है कि वसीयत के वक़्त तुम (मुसलमानों) में से दो मर्द अद्बल वाले (यानी एतबार वाले) गवाह हों, या अगर (मुसलमान न मिलें और) तुम सफ़र कर रहे हो और (उस वक़्त) तुम पर मौत की मुसीबत वाक़ेअ हो तो किसी दूसरे मजहब के दो (शख्सों को) गवाह (कर लो)। अगर तुम को उन गवाहों के बारे में कुछ शक हो, तो उन को (अस की) नमाज़ के बाद खड़ा करो और दोनों खुदा की कस्में खाएं कि हम शहादत का बदला नहीं लेंगे, गो हमारा रिश्तेदार ही हो और न हम अल्लाह की गवाही को छिपाएंगे, अगर ऐसा करेंगे, तो गुनाहगर

१. अंतनी जो बुतों की नज़ की जाती थी, उस के कान फाड़ कर छोड़ देते थे और कोई उस का दूध दूह नहीं सकता था।
२. जानवर जो बुतों के नाम पर छोड़ दिया जाता था और उस पर बोझ नहीं लावते थे।
३. अंतनी जो अक्ल उन्न में ऊपर तले दो मादा बच्चे देती, उसे बुतों के नाम पर छोड़ देते थे।
४. अंत जिस की नस्ल से कुछ बच्चे ले कर सवारी वगैरह का काम लेना छोड़ देते थे।
५. काफ़िरों ने बहीरा और साइबा और वसीला और हाम तो खुद मुक़र्रर कर रखे थे और यह कहते थे कि वह इब्राहीमी शरीअत के इक्क हैं और इन से अल्लाह का कुबं हासिल होता है। खुदा ने फ़रमाया, यह सब झूठ और खुदा पर बुहतान है। उस ने न किसी जानवर का नाम बहीरा वगैरह रखा, न उस को शरअी हैसियत दी, न इसे कुबं का जरिया क़रार दिया।

फइन् भुसि - र अला अन्नहुमस्तहक्का इस्मन् फआखरानि यकूमानि
मकामहुमा मिनल्लजीनस्-तहक्-क अलैहिमुल्-ओलयानि फयुक्सिमानि बिल्लाहि
ल-शहादतुना अहक्कु मिन् शहादति - हिमा व मअ - तदेना इन्ना
इजल्लमिन्अ-आलिमीन (१०७) जालि-क अदना अय्यअत् बिशशहादति अला
वज्जिहा ओ यखाफू अन् तुरद-द

ऐमानुम्बअ - द ऐमानिहिम् वत्तकुल्ला - ह
वस्मअ वल्लाहु ला यहिदल् - कौमल् -
फासिक्कीन (१०८) यो-म यज्मअल्लाहुर्-
रुमु - ल फ - यकूलु माज्जा उजिब्तुम्
कालू ला अिल्-म लना इन्न-क अन्-त
अल्लामुल्गुयूब (१०९) इज् कालल्लाहु
या ओसब्-न मर्यमज्जुर् निअ-मती अलै-क व
अला वालिदति - क इज् अय्यत्तु - क
बिरुहिल्कुदुसि तुकल्लिमुन्ना - स फिलमहिद
व कहल् व इज् अल्लम्तुकल् -
किता-ब वल्हिकम्-त वत्तीरा-त वल्इन्जी-ल

مَقَامَهُمْ مِنَ الَّذِينَ اسْتَحَقُّ عَلَيْهِمُ الْأَذَلَّ مِنْ أَشَدِّ مَا كَانُوا يَكُونُونَ
لَهُمْ أَجْرٌ مِنْ شَهَادَتِهِمَا وَمَا اسْتَعْتَذَرْنَا مِنْهُ إِلَّا إِذْ أُلْحَقَ
الْفُلِيُّونَ ۚ وَذَلِكَ أَنْ يَأْتُوا بِاللَّهِدَاءِ عَلٰى رُءُوسِهِمْ وَأَوْفُوا
أَنْ تُرَدَّ الْيَمَانُ بَعْدَ إِيمَانِهِمْ وَأَقْوَمُوا لِلَّهِ وَنُصَرُّوهُ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي
الْقَوْمَ الضَّالِّينَ ۚ يَوْمَ يَجْمَعُ اللَّهُ الرُّسُلَ فَيَقُولُ مَاذَا أُجِبْتُمْ
قَالُوا لَا عِلْمَ لَنَا ذَلِكَ أَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوبِ ۚ إِذْ قَالَ اللَّهُ لِيُيَسِّرَ
لِيكَرِّمُوا أَذْكَرَ نَعِيمٍ عَلَيْكَ وَعَلَىٰ وَالِدَيْكَ إِذْ أَنْذَرْتُكَ يَوْمَ
الْفُلَيْنِ فَتَلَوْتُمُ النَّاسَ فِي السَّيْرِ وَهَمَلْتُمْ ۚ وَلَا عَلَّمْتُمُ الْقُرْآنَ
لِحِكْمَةٍ وَالْزُّورَةَ وَلَا الْجَحِيلَ وَلَا عَلَّمْنَا مِنَ الْفُلَيْنِ لَكُنْهُ الْفُلُ
بِأَذْنٍ فَتَنَعَّمُوا فِيهَا فَتَنَعَّمُوا عَلَيْهِمْ بِأَذْنٍ وَتَوَرَّجُوا الْأَكْثَرُ
بِأَذْنٍ وَلَا تَحْزَنْهُمُ الْمَوْتُ بِأَذْنٍ ۚ وَلَا تَقَعَتْ بَيْنَ يَدَيْهِمْ أُولَئِكَ
أَزْجَرْتُمْ بِأَذْنٍ فَقَالَ الْيَوْمَ نَكْفُرُ بِكُمْ مِنْهُ هَذَا الْأَمْرُ
فِيهِمْ ۚ وَإِذْ أَوْحَيْتُ إِلَى الْمَوْدِسِ أَنْ ابْتَغِي وَابْتَغِي
قَالُوا أَمْكَا وَانْهَلْ بِأَنْتَ مُسْلِمُونَ ۚ إِذْ قَالَ الْمَوْدِسِيُّ
يُيَسِّرُ بْنُ سَرِيحٍ هَلْ يَسْتَطِيعُ رَبُّكَ أَنْ يُزِيلَ عَلَيْنَا سُلَيْمَانَ
فِي الشَّكَةِ قَالَ أَعُوذُ بِاللَّهِ أَنْ تَكُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ۚ قَالُوا لَوْ لَمْ
يَكُنْ وَهَذَا وَتَطْلُبُونَ قَالُوا يَا وَيْلَهُمْ أَنْ يَكُنْ مَدِينَةً وَكَانُوا

व इज् तरुल्-कु मिनत्तीनि कहै-अतिल्लैरि बि-इज्नी फ तन्फुल् फीहा
फ्रतकूनु तैरम् - बि - इज्नी व तुबिर-उल्-अक्-म-ह वल्-अब-र-स बि-इज्नी
व इज् तुल्लिरजुल्मौता बि-इज्नी व इज् क - फफ्तु बनी इस्रा - ई-ल
अन्-क इज् जिअतहुम् बिल्बय्थिनाति फ-कालल्लजी-न क-फरु मिन्हुम् इन्
हाज्जा इल्ला सिहरुम्-मुबीन (११०) व इज् औहेतु इलल्-हवारिय्थी-न
अन् आमिन् बी व बि-रसूली कालू आमन्ना वशहद् बि-अन्नना मुस्लिमून
(१११) इज् कालल्-हवारिय्थू-न या ओसब्-न मर्य-म हल् यस्ततीअु रब्बु-क
अय्युनज्जि-ल अलैना मा-इ-द-तुम्-मिनस्समा-इ कालत्तकुल्ला - ह इन् कुन्तुम्
मुज्मिनीन (११२) कालू नुरीदु अन् नअकु-ल मिन्हा व तत्त-इन्-न कुलूबुना
व नअ-ल-म अन् कद् सद्दतना व नकून अलैहा मिनशशाहिदीन (११३)

होगे। (१०६) फिर अगर मालूम हो जाए कि इन दोनों ने (झूठ बोल कर) गुनाह हासिल किया है तो जिन लोगों का उन्होंने हक मारना चाहा था, उन में से उन की जगह और दो गवाह खड़े हों, जो (मन्यत से) करीबी ताल्लुकात रखते हों, फिर वे खुदा की क़स्में खाएं कि हमारी गवाही उन की गवाही से बहुत सच्ची है और हम ने कोई ज़्यादाती नहीं की, ऐसा किया हो, तो हम बे-इसाफ़ हैं। (१०७) इस तरीक़े से बहुत करीब है कि ये लोग सही-सही गवाही दें या इस बात से डरें कि (हमारी) क़स्में उन की क़स्मों के बाद रद्द कर दी जाएंगी। और खुदा से डरो और (उस के हुक्मों को कान खोल कर सुनो और) खुदा ना-फ़रमान लोगों को हिदायत नहीं देता। (१०८) *

(वह दिन याद रखने के लायक़ है) जिस दिन खुदा पैग़म्बरों को जमा करेगा, फिर उनसे पूछेगा कि तुम्हें क्या जवाब मिला था। वे अर्ज करेंगे कि हमें कुछ मालूम नहीं। तू ही ग़ैब की बातों को जानता है। (१०९) जब खुदा (ईसा से) फ़रमाएगा कि ऐ ईसा बिन मरयम! मेरे उन एहसानों को याद करो, जो मैंने तुम पर और तुम्हारी वालिदा पर किए ~~जब~~ मैंने रुहुल कुद्स (यानी ज़िब्रील) से तुम्हारी मदद की। तुम अज़ूले में और जवान होकर एक ही नस्क़ पर लोगों से बातें करते थे और जब मैं ने तुम को किताब और हिक़मत और तौरात और इंजील सिखायी और जब तुम मेरे हुक्म से मिट्टी का जानवर बना कर उस में फूक मार देते थे, तो वह मेरे हुक्म से उड़ने लगता था और पैदाइशी अंधे और सफ़ेद दाग़ वाले मेरे हुक्म से चंगा कर देते थे और मुर्दे को मेरे हुक्म से (जिंदा कर के क़ब्र से) निकाल खड़ा करते थे और जब मैं ने बनी इस्राईल (के हाथों) को तुम से रोक दिया, जब तुम उन के पास खुले निशान ले कर आए, तो जो उन में से काफ़िर थे, कहने लगे कि यह तो खुला जादू है। (११०) और जब मैंने हवारियों की तरफ़ हुक्म भेजा कि मुझ पर और मेरे पैग़म्बर पर ईमान लाओ। वे कहने लगे कि (परवरदिगार!) हम ईमान लाये, तो गवाह रहियो कि हम फ़रमांवरदार हैं। (१११) (वह किस्सा भी याद करो) जब हवारियों ने कहा कि ऐ ईसा बिन मरयम! क्या तुम्हारा परवरदिगार ऐसा कर सकता है कि हम पर आसमान से (खाने का) स्वाद नाज़िल करे? उन्होंने ने कहा कि अगर ईमान रखते हो तो खुदा से डरो। (११२) वे बोले कि हमारी यह स्वाहिश है कि हम उस में से खाएं और हमारे दिल तसल्ली पाएं और हम जान लें कि तुम ने हम से सच कहा है और हम इस (स्वान के नाज़िल होने पर) गवाह रहें (११३) (तब)

१. हज़रत ईसा की पैरवी करने वाले और मदद करने वाले यानी साथी हवारी कहलाते थे। हवारी हकीकत में धोबी को कहते हैं और वे लोग भी ज़्यादातर धोबी थे। आजकल यह लफ़्ज़ ज़्यादा आम हो गया है और दूसरे लोगों के साथियों के लिए भी इसे बोलने लगे हैं।

ईसा बिन मरयम ने दुआ की कि ऐ हमारे परवरदिगार ! हम पर आसमान से खान नाज़िल फ़रमा कि हमारे लिए (वह बिन) ईद करार पाए यानी हमारे अगलों और पिछलों (सब) के लिए और वह तेरी तरफ़ से निशानी हो और हमें रिस्क दे, तू बेहतर रिस्क देने वाला है (११४) खुदा ने फ़रमाया, मैं तुम पर जरूर खान नाज़िल फ़रमाऊंगा, लेकिन जो इस के बाद तुम में से कुफ़ करेगा, उसे ऐसा अज़ाब दूंगा कि दुनिया वालों में किसी को ऐसा अज़ाब न दूंगा। (११५) ★

और (उस वक़्त को भी याद रखो) जब खुदा फ़रमाएगा, ऐ ईसा बिन मरयम! क्या तुमने लोगों से कहा था कि खुदा के सिवा मुझे और मेरी मां को माबूद मुक़रर करो? वह कहेंगे कि तू पाक है, मुझे कब मुनासिब था कि मैं ऐसी बात कहता, जिस का मुझे कुछ हक़ नहीं अगर मैं ने ऐसा कहा होगा, तो तुझ को मालूम होगा, (क्यों कि) जो बात मेरे दिल में है, तू उसे जानता है और जो तेरे ज़मीर में है, उसे मैं नहीं जानता, बेशक तू सबों का जानने वाला है। (११६) मैं ने उन से कुछ नहीं कहा, अलावा इस के, जिस का तू ने हुक्म दिया है, वह यह है कि तुम खुदा की इबादत करो, जो मेरा और तुम्हारा सब का परवरदिगार है और जब तक मैं उन में रहा उन (के हालात) की खबर रखता रहा। जब तू ने मुझे दुनिया से उठा लिया तो तू उन का निगरां था और तू हर चीज़ से खबरदार है। (११७) अगर तू उन को अज़ाब दे, तो ये तेरे बन्दे हैं और अगर बरक़श दे तो (तेरी मेहरबानी है।) बेशक तू ग़ालिब (और) हिक़मत वाला है। (११८) खुदा फ़रमायेगा कि आज वह दिन है कि सच्चों को उन की सच्चाई ही फ़ायदा देगी। उन के लिए बाग़ है, जिन के नीचे नहरें बह रही हैं। हमेशा-हमेशा उन में बसते रहेंगे। खुदा उन से खुश है और वे खुदा से खुश हैं, यह बड़ी कामियाबी है। (११९) आसमान और ज़मीन और जो कुछ इन (दोनों) में है, सब पर खुदा ही की बादशाही है और वह हर चीज़ पर कुदरत रखता है। (१२०) ★

६ सूर: अन्शाम ५५

सूर: अन्शाम मक्की है और इस में एक सौ पैंसठ आयतें और बीस हकूअ हैं।

शुरू खुदा का नाम ले कर जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

हर तरह की तारीफ़ खुदा ही को मुनासिब है जिस ने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया और अंधेरा और रोशनी बनायी, फिर भी काफ़िर (और चीज़ों को) खुदा के बराबर ठहराते

१. ये हवारी या तो जरूरतमंद थे या दिल के इत्मीनान के लिए उन्होंने ने माइद: (खान) उतरने की दख्वास्त की थी। कुछ भी हो खुदा ने उन पर खाने का खान नाज़िल फ़रमाया। तफ़सीर लिखने वालों ने लिखा है कि खान इतवार के दिन नाज़िल हुआ था, जो ईसाइयों की ईद है।

हुवल्लजी ख-ल-ककुम् मिन् तोनिन् सुम्-म कज्जा अ-ज-लत् व अ-जलुम्-
मुसम्मत् अिन्दह् सुम्-म अन्तुम् तस्तह् (२) व हुवल्लाहु फिस्समावाति व
फिल्अज्जि ७ यअ - लमु सिरंकुम् व जह-रकुम् व यअ-लमु मा तक्सिबून
(३) व मा तअतीहिम् मिन् आयतिम्-मिन् आयाति रब्बिहिम् इल्ला

कानू अन्हा मुअ-रिज़्जीन (४) फ-कद् कज्जब
बिल्हक्कि लम्मा जा - अहुम् ७ फसौ - फ
अतीहिम् अम्बा-उ मा कानू बिही यस्तहिज्जऊन
(५) अ-लम् यरो कम् अह्लकना मिन्
कब्लिहिम् मिन् कनिम्-मक्कन्नाहुम् फिल्अज्जि
मा लम् नुमक्किल्लकुम् व असल्लन्स्समा-अ
अलैहिम् मिद्रारव-व ज-अल्लल्-अन्हा-र
तजरी मिन् तह्तिहिम् फ - अह्लकनाहुम्
बिखूनबिहिम् व अन्शअना मिम्बअ-दिहिम् कनन्
आखरीन (६) व लौ नज़्जल्ला अलै-क
किताबन् फ्री किरतासिन् फ-ल-मसूहु बिऐदीहिम्
ल-क़ालल्लजीन क-फ़रू इन् हाज़ा इल्ला
सिह्रम्-मुबीन (७) व कालू लौल

لَقَدْ اَنزَلْنَا لَكَ اٰیٰتٍ مُّبِيْنًا ۝۱۶ هُوَ الَّذِيْ سَخَّرَ لَكُم مِّنْ دُوْنِهَا رِجَالًا ۝۱۷ لَّا يَدْرِيْكُمْ اَيُّ يَوْمٍ يَّجِيْءُكُمْ ۝۱۸ اَلَمْ تَرَ اَنَّا اَرْسَلْنَا نُوحًا بِرِسَالِنَا فَاَنذَرْتَهُ ۝۱۹ وَنَزَّلْنَا عَلٰی الْاَرْضِ طٰمُثًا ۝۲۰ وَنَزَّلْنَا عَلٰی الْاَرْضِ طٰمُثًا ۝۲۱ وَنَزَّلْنَا عَلٰی الْاَرْضِ طٰمُثًا ۝۲۲ وَنَزَّلْنَا عَلٰی الْاَرْضِ طٰمُثًا ۝۲۳ وَنَزَّلْنَا عَلٰی الْاَرْضِ طٰمُثًا ۝۲۴ وَنَزَّلْنَا عَلٰی الْاَرْضِ طٰمُثًا ۝۲۵ وَنَزَّلْنَا عَلٰی الْاَرْضِ طٰمُثًا ۝۲۶ وَنَزَّلْنَا عَلٰی الْاَرْضِ طٰمُثًا ۝۲۷ وَنَزَّلْنَا عَلٰی الْاَرْضِ طٰمُثًا ۝۲۸ وَنَزَّلْنَا عَلٰی الْاَرْضِ طٰمُثًا ۝۲۹ وَنَزَّلْنَا عَلٰی الْاَرْضِ طٰمُثًا ۝۳۰ وَنَزَّلْنَا عَلٰی الْاَرْضِ طٰمُثًا ۝۳۱ وَنَزَّلْنَا عَلٰی الْاَرْضِ طٰمُثًا ۝۳۲ وَنَزَّلْنَا عَلٰی الْاَرْضِ طٰمُثًا ۝۳۳ وَنَزَّلْنَا عَلٰی الْاَرْضِ طٰمُثًا ۝۳۴ وَنَزَّلْنَا عَلٰی الْاَرْضِ طٰمُثًا ۝۳۵ وَنَزَّلْنَا عَلٰی الْاَرْضِ طٰمُثًا ۝۳۶ وَنَزَّلْنَا عَلٰی الْاَرْضِ طٰمُثًا ۝۳۷ وَنَزَّلْنَا عَلٰی الْاَرْضِ طٰمُثًا ۝۳۸ وَنَزَّلْنَا عَلٰی الْاَرْضِ طٰمُثًا ۝۳۹ وَنَزَّلْنَا عَلٰی الْاَرْضِ طٰمُثًا ۝۴۰ وَنَزَّلْنَا عَلٰی الْاَرْضِ طٰمُثًا ۝۴۱ وَنَزَّلْنَا عَلٰی الْاَرْضِ طٰمُثًا ۝۴۲ وَنَزَّلْنَا عَلٰی الْاَرْضِ طٰمُثًا ۝۴۳ وَنَزَّلْنَا عَلٰی الْاَرْضِ طٰمُثًا ۝۴۴ وَنَزَّلْنَا عَلٰی الْاَرْضِ طٰمُثًا ۝۴۵ وَنَزَّلْنَا عَلٰی الْاَرْضِ طٰمُثًا ۝۴۶ وَنَزَّلْنَا عَلٰی الْاَرْضِ طٰمُثًا ۝۴۷ وَنَزَّلْنَا عَلٰی الْاَرْضِ طٰمُثًا ۝۴۸ وَنَزَّلْنَا عَلٰی الْاَرْضِ طٰمُثًا ۝۴۹ وَنَزَّلْنَا عَلٰی الْاَرْضِ طٰمُثًا ۝۵۰ وَنَزَّلْنَا عَلٰی الْاَرْضِ طٰمُثًا ۝۵۱ وَنَزَّلْنَا عَلٰی الْاَرْضِ طٰمُثًا ۝۵۲ وَنَزَّلْنَا عَلٰی الْاَرْضِ طٰمُثًا ۝۵۳ وَنَزَّلْنَا عَلٰی الْاَرْضِ طٰمُثًا ۝۵۴ وَنَزَّلْنَا عَلٰی الْاَرْضِ طٰمُثًا ۝۵۵ وَنَزَّلْنَا عَلٰی الْاَرْضِ طٰمُثًا ۝۵۶ وَنَزَّلْنَا عَلٰی الْاَرْضِ طٰمُثًا ۝۵۷ وَنَزَّلْنَا عَلٰی الْاَرْضِ طٰمُثًا ۝۵۸ وَنَزَّلْنَا عَلٰی الْاَرْضِ طٰمُثًا ۝۵۹ وَنَزَّلْنَا عَلٰی الْاَرْضِ طٰمُثًا ۝۶۰ وَنَزَّلْنَا عَلٰی الْاَرْضِ طٰمُثًا ۝۶۱ وَنَزَّلْنَا عَلٰی الْاَرْضِ طٰمُثًا ۝۶۲ وَنَزَّلْنَا عَلٰی الْاَرْضِ طٰمُثًا ۝۶۳ وَنَزَّلْنَا عَلٰی الْاَرْضِ طٰمُثًا ۝۶۴ وَنَزَّلْنَا عَلٰی الْاَرْضِ طٰمُثًا ۝۶۵ وَنَزَّلْنَا عَلٰی الْاَرْضِ طٰمُثًا ۝۶۶ وَنَزَّلْنَا عَلٰی الْاَرْضِ طٰمُثًا ۝۶۷ وَنَزَّلْنَا عَلٰی الْاَرْضِ طٰمُثًا ۝۶۸ وَنَزَّلْنَا عَلٰی الْاَرْضِ طٰمُثًا ۝۶۹ وَنَزَّلْنَا عَلٰی الْاَرْضِ طٰمُثًا ۝۷۰ وَنَزَّلْنَا عَلٰی الْاَرْضِ طٰمُثًا ۝۷۱ وَنَزَّلْنَا عَلٰی الْاَرْضِ طٰمُثًا ۝۷۲ وَنَزَّلْنَا عَلٰی الْاَرْضِ طٰمُثًا ۝۷۳ وَنَزَّلْنَا عَلٰی الْاَرْضِ طٰمُثًا ۝۷۴ وَنَزَّلْنَا عَلٰی الْاَرْضِ طٰمُثًا ۝۷۵ وَنَزَّلْنَا عَلٰی الْاَرْضِ طٰمُثًا ۝۷۶ وَنَزَّلْنَا عَلٰی الْاَرْضِ طٰمُثًا ۝۷۷ وَنَزَّلْنَا عَلٰی الْاَرْضِ طٰمُثًا ۝۷۸ وَنَزَّلْنَا عَلٰی الْاَرْضِ طٰمُثًا ۝۷۹ وَنَزَّلْنَا عَلٰی الْاَرْضِ طٰمُثًا ۝۸۰ وَنَزَّلْنَا عَلٰی الْاَرْضِ طٰمُثًا ۝۸۱ وَنَزَّلْنَا عَلٰی الْاَرْضِ طٰمُثًا ۝۸۲ وَنَزَّلْنَا عَلٰی الْاَرْضِ طٰمُثًا ۝۸۳ وَنَزَّلْنَا عَلٰی الْاَرْضِ طٰمُثًا ۝۸۴ وَنَزَّلْنَا عَلٰی الْاَرْضِ طٰمُثًا ۝۸۵ وَنَزَّلْنَا عَلٰی الْاَرْضِ طٰمُثًا ۝۸۶ وَنَزَّلْنَا عَلٰی الْاَرْضِ طٰمُثًا ۝۸۷ وَنَزَّلْنَا عَلٰی الْاَرْضِ طٰمُثًا ۝۸۸ وَنَزَّلْنَا عَلٰی الْاَرْضِ طٰمُثًا ۝۸۹ وَنَزَّلْنَا عَلٰی الْاَرْضِ طٰمُثًا ۝۹۰ وَنَزَّلْنَا عَلٰی الْاَرْضِ طٰمُثًا ۝۹۱ وَنَزَّلْنَا عَلٰی الْاَرْضِ طٰمُثًا ۝۹۲ وَنَزَّلْنَا عَلٰی الْاَرْضِ طٰمُثًا ۝۹۳ وَنَزَّلْنَا عَلٰی الْاَرْضِ طٰمُثًا ۝۹۴ وَنَزَّلْنَا عَلٰی الْاَرْضِ طٰمُTHًا ۝۹۵ وَنَزَّلْنَا عَلٰی الْاَرْضِ طٰمُTHًا ۝۹۶ وَنَزَّلْنَا عَلٰی الْاَرْضِ طٰمُTHًا ۝۹۷ وَنَزَّلْنَا عَلٰی الْاَرْضِ طٰمُTHًا ۝۹۸ وَنَزَّلْنَا عَلٰی الْاَرْضِ طٰمُTHًا ۝۹۹ وَنَزَّلْنَا عَلٰی الْاَرْضِ طٰمُTHًا ۝۱۰۰

उन्जि-ल अलैहि म-लकुन् ७ व लौ अन्जल्ला म-ल-कल्ल-लकुजियल्-अम्ह सुम्-म
ला युञ्जह् (८) व लौ ज-अल्लाहु म-ल-कल्ल-ज-अल्लाहु रजलव-व ल-लबस्ना
अलैहिम् मा यल्लिसून (९) व ल-कदिस्तुहिज्ज - अ बिरमुलिम् - मिन्
कब्लि-क फहा-क बिल्लजीन सखिरु मिन्हुम् मा कानू बिही यस्तहिज्जऊन
★ (१०) कुल् सीरु फिल्अज्जि सुम्मखुरु कै - फ कान- आकिबतुल्-
मुकब्जिबीन (११) कुल् लिमम्मा फिस्समावाति वल्अज्जि ७ कुल् लिल्लाहि
क त-ब अला नफिसहिरह-म-त् ७ ल-यज्मअन्नकुम् इला योमिल्कियामति ला
रे-ब फ्रीहि ७ अल्लजीन खसिरु अन्फुसहुम् फहुम् ला युज्मिनून (१२)

है। (१) वही तो है, जिसने तुमको मिट्टी से पैदा किया, फिर (मरने का) एक वक्त मुकर्रर कर दिया और एक मुहत उस के यहां और है, फिर भी तुम (ऐ काफ़िरो ! खुदा के बारे में) शक करते हो। (२) और आसमान और ज़मीन में वही (एक) खुदा है, तुम्हारी छिपी और खुली, सब बातें जानता है, और तुम जो अमल करते हो, सब का जानकार है। (३) और खुदा की निशानियों में से कोई निशानी उन लोगों के पास नहीं आती, मगर ये उस से मुंह फेर लेते हैं। (४) जब उन के पास हक़ आया, तो उस को भी झुठला दिया, सो उन को उन चीज़ों का जिन का ये मज़ाक उड़ाते हैं, बहुत जल्द अंजाम मालूम हो जाएगा। (५) क्या उन्होंने ने नहीं देखा कि हम ने उन से पहले कितनी उम्मतों को हलाक कर दिया, जिन के पांव मुल्क में ऐसा जमा दिए थे कि तुम्हारे पांव भी ऐसे नहीं जमाए और उन पर आसमान से लगातार मेंह बरसाया और नहरें बना दीं जो उन में (मकानों के) नीचे बह रही थीं। फिर उन को उन के बाद गुनाहों की वजह से हलाक कर दिया और उन के बाद और उम्मतें पैदा कर दीं। (६) और अगर हम तुम पर कागज़ों पर लिखी हुई किताब नाज़िल करते और ये उसे अपने हाथों से टटोल लेते तो जो काफ़िर हैं वह यही कह देते कि यह तो (साफ़ और) खुला जादू है। (७) और कहते हैं कि इन (पैगम्बर) पर फ़रिश्ता क्यों नाज़िल न हुआ, (जो उन की तस्दीक करता)। अगर हम फ़रिश्ता नाज़िल करते, तो काम ही का फ़सला हो जाता, फिर उन्हें (बिल्कुल) मोहलत न दी जाती। (८) और हम किसी फ़रिश्ते को भेजते, तो उस मद की सूरत में भेजते और जो शुब्हा (अब) करते हैं, उसी शुब्हे में उन्हें फिर डाल देते। (९) और तुम से पहले भी पैगम्बरों के साथ मज़ाक़ होता रहा है, सो जो लोग उन में से मज़ाक़ किया करते थे, उन को मज़ाक़ की सज़ा ने आ घेरा। (१०) ★

कहो कि (ऐ रिसालत के इंकारियो !) मुल्क में चलो-फिरो, फिर देखो कि झुठलाने वालों का क्या अंजाम हुआ। (११) (उन से) पूछो कि आसमान और ज़मीन में जो कुछ है, किस का है ? कह दो खुदा का। उसने अपनी (पाक) ज़ात पर रहमत को लाज़िम कर लिया है। वह तुम सब को क्रियामत के दिन, जिसमें कुछ भी शक नहीं, ज़रूर जमा करेगा। जिन लोगों ने अपने को नुकसान

१. मुशिरकों ने कहा था कि पैगम्बर फ़रिश्ता क्यों नहीं आता, इस पर हक़ तआला ने यह फ़रमाया कि जैसे अब आदमी की पैगम्बरी के कायल नहीं हैं, उस वक्त भी ताना करते कि यह तुम्हारी तरह का आदमी है।

ब - लह मा स - क - न फिल्लैलि वन्नहारि ७ व हुवस्समीअुल् - अलीम
(१३) कुल् अगैरत्लाहि अतखिजु वलिद्यत् फातिरिस्समावाति वल्अजि व
हु-व युत्तुजिमु व ला युत्तुअमु ७ कुल् इन्नी उमिरत्तु अन् अकू-न अव्व-ल मन्
अस्स-म व ला तकनन्-न मिनत्तुमुरिकीन (१४) कुल् इन्नी अखाफु इन्

असंतु रब्बी अज्जा-ब योमित् अजीम

(१५) मंग्युस्सक् अन्हु योमइजिन्

क-कद् रहिमह ५ व आलिकलफौजुल्मूबीन

(१६) व इत्यम्सस्कल्लाह बिज्जिरिन्

फला काशि-क लह इला ह-व व

इय्यम्सस-क बिखैरित् फहु-व अला कूलि

शैइन् कदीर (१७) व हवलकाहिरू

फौ - क़ अबादिही ५ व हुवल् - हकीमुल्-

खबीर (१८) कुल् अय्यु शैइन् अकबरु

शहाद - तन् ۛ कुलिल्लाह ۛ शहीदुम् -

बैनी व बैनकुम्फ उहि - य इलय-य

हाजलकुरुद-आनु लिउन्जिर - कुम् बिही व

मम्-ब-ल-ग, अइन्तकुम् ल-तशहदू - न अन-न

म-अल्लाहि आलि-ह-तन उरुंग ६ कल ला

इलाहं व्वाहिदं व - व इन्ननी बरी - उम

वें डाल रखा है, वे ईमान नहीं लाते । (१२) और जो मल्लूक रात और दिन में बसती है, सब उसी की है और वह सुनता-जानता है । (१३) कहो, क्या मैं खुदा को छोड़ कर किसी और को मददगार बनाऊँ कि (वही तो) आसमानों और जमीन का पैदा करने वाला है और वही (सब को) खाना देता है और खुद किसी से खाना नहीं लेता ।' (यह भी) कह दो कि मुझे यह हुक्म हुआ है कि मैं सब से पहले इस्लाम लाने वाला हूँ और यह कि तुम (ऐ पैगम्बर !) मुश्रिकों में न होना । (१४) (यह भी) कह दो कि अगर मैं अपने परवरदिगार की ना-फ़रमानी करूँ, तो मुझे बड़े दिन के अज़ाब का डर है । (१५) जिस शस्स से उस दिन अज़ाब टाल दिया गया, उस पर खुदा ने (बड़ी) मेहरबानी फ़रमायी और यह खुली कामियाबी है । (१६) और अगर खुदा तुम को कोई सख्ती पहुँचाए, तो इस के सिवा उस को कोई दूर करने वाला नहीं और अगर नेमत (व राहत) अता करे तो (कोई उस को रोकने वाला नहीं), वह हर चीज़ पर कादिर है । (१७) और वह अपने बन्दों पर ग़ालिब है और वह हकीम और ख़बरदार है । (१८) उन से पूछो कि सब से बढ़ कर (इसाफ़ के करीब) किस की गवाही है । कह दो कि खुदा ही मुझ में और तुम में गवाह है और यह क़ुरआन मुझ पर इस लिए उतारा गया है कि इसके ज़रिए से तुम को और जिस शस्स तक वह पहुँच सके उस को आगाह कर दूँ । क्या तुम इस बात की गवाही देते हो कि खुदा के साथ और भी माबूद हैं । (ऐ मुहम्मद !) कह दो कि मैं तो ऐसी गवाही नहीं देता । कह दो कि सिर्फ़ वही एक माबूद है और जिन को तुम लोग शरीक बनाते हो, मैं उन से बेख़ार हूँ ॥ (१९) जिन लोगों को हमने किताब दी है, वे इन (हमारे पैगम्बर) को इस तरह पहचानते हैं, जिस तरह अपने बेटों को पहचाना करते हैं, ॥ जिन्होंने अपने आप को नुक़सान में डाल रखा है, वे ईमान नहीं लाते । (२०)★

और उस शस्स से ज्यादा कौन ज़ालिम है, जिसने खुदा पर झूठ गढ़ा या उसकी आयतों को झूठलाया । कुछ शक नहीं कि ज़ालिम लोग निजात नहीं पाएंगे । (२१) और जिस दिन हम सब लोगों को जमा करेंगे, फिर मुश्रिकों से पूछेंगे कि (आज) वे तुम्हारे शरीक कहाँ हैं, जिन का तुम्हें दावा था ? (२२) तो उन से कुछ उज़र (बहाना) न बन पड़ेगा (और) इस के अलावा (कुछ चारा न होगा) कि कहें, खुदा की क़सम ! जो हमारा परवरदिगार है, हम शरीक नहीं बनाते थे । (२३) देखो, वे अपने ऊपर कैसा झूठ बोले और जो कुछ ये झूठ गढ़ा करते थे, सब उन से जाता

१. क्योंकि वह खाने-पीने की ज़रूरत से پاک है । उसे इस की ज़रूरत ही नहीं ।

व मिन्हुम् मय्यस्तमिभु इलै-क ७ व ज-अल्ला अला कुलुबिहिम् अकिन्नतन्
 मय्यफकहहु व फी आजानिहिम् वक्रन् ७ व इय्यरी कुल्-ल आयतिल्ला
 युअमिन् बिहा ७ हत्ता इजा जा-ऊ-क युजादिलून-क यकूलुलजी-न क-फरू
 इन् हाजा इल्ला असातीरू-अव्वलीन (२५) व हुम् यही-न अन्ह

व यन्ओ - न अन्ह ७ व इय्यहिलकू - न
 इल्ला अन्फुसहुम् व मा यश्रुलून (२६)
 व लौ तरा इज् वुकिफू अलन्नारि
 फकालू यालैतना नुरददु व ला नुकज्जि-व
 बिआयाति रब्बिना व नकून मिनल्-
 मुअमिनीन (२७) वल् बदा लहुम् मा
 कानू युरफू-न मिन् कब्लु ७ व लौ रुदद
 ल-आद् लिमा नूहु अन्ह व इल्लहुम्
 लकाज्जिबून (२८) व कालू इन् हि-य
 इल्ला ह्यातुनददुन्या व मा नहत्तु
 बिमब्बूसीन (२९) व लौ तरा इज्
 वुकिफू अला रब्बिहिम् ७ का - ल अलै-स

وَيَوْمَ مَنْ يَنْفَعُ إِلَيْكَ وَجْهًا عَلَىٰ غُلُوْبِهِمْ أَفَأَنْتُمْ تَعْلَمُونَ
 وَيَوْمَ إِذْ أَنْزَلْنَا مَوْدِيَّاتِنَا وَلَوْ أَنَّ كُلَّ شَيْءٍ لَدُنَّا بِمَا يَفْعَلُونَ عَلَىٰ إِذَا
 جَاءَ تِلْكَ لَيُؤَيِّدَنَّكَ يُقُولُ الَّذِينَ تَقُولُونَ هَذَا إِلَّا أَسَاطِيرُ
 الْأَوَّلِينَ ۝ وَهُمْ يَخْشَوْنَ غَايَةَ مَا يَرْجُونَ ۝ وَإِنْ يُبْطِلُونَ إِلَّا
 أَنْفُسَهُمْ وَمَا يَشْعُرُونَ ۝ وَلَوْ تَرَىٰ إِذْ تُفْعَلُونَ عَلَىٰ الثَّاقِبِ أَعْلَىٰ
 يُدْبِرُونَ لَأَسْأَلُكَ بِآيَاتِنَا وَتَكُونُ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ۝ كُلُّ
 شَيْءٍ أَلَيْسَ اللَّهُ بِأَعْلَمُ بِمَا يَفْعَلُونَ مِنْ خَلْقٍ وَلَوْ أَنَّ لِلَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ
 أَلْفًا مِثْلًا مِمَّا يَبْتَغُونَ مِنَ اللَّهِ فَتًا لَيُلَاقِيَنَّ اللَّهُ يَوْمَ الْحُكْمِ أَجْرَهُمْ
 بِلَا حِسَابٍ ۝ وَلَوْ تَرَىٰ إِذْ تُفْعَلُونَ أَلَيْسَ هَذَا
 بِالْحَقِّ قَالُوا بَلَىٰ وَرَبِّنَا قَالَ فَذُوقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنتُمْ تَكْفُرُونَ ۝
 قَدْ خَسِرَ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِ اللَّهِ وَاللَّهُ شَهِيدٌ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝
 قَالُوا الْمَسِيحُ ابْنُ مَرْيَمَ مَا نَحْنُ بِأَعْيُنِنَا ۝ وَهُمْ يَحْمِلُونَ آثَارَهُمْ عَلَىٰ
 ظُهُورِهِمْ إِلَّا آلَ الْأَنْبِيَاءِ مَا يَدْرُونَ ۝ وَمَا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا إِلَّا لَهْوٌ وَ
 لَعْوٌ وَلَئِنْ الْآخِرَةُ خَيْرٌ لِمَنِ يَنْتَعِلُونَ أَفَلَا يَعْقِلُونَ ۝ قُلْ
 نَحْمَدُ اللَّهَ الَّذِي يَسْمُكَ الَّذِينَ يَقُولُونَ وَأَنَّهُمْ لَا يَكْفُرُونَ بِهِ وَلَكِنْ
 الظَّالِمِينَ بآيَاتِ اللَّهِ بِحُجَّتِهِمْ ۝ وَقَدْ كَذَّبَتْ رُسُلٌ مِنْ قَبْلِكَ
 فَصَبْرًا عَلَيْهِمُ الْكَذِبَ وَأَوْدَوْا عَلَىٰ أَنْفُسِهِمْ نَصْرًا ۝ وَلَا تَجِدُ

हाजा बिल्हिक ७ कालू बला व रब्बिना ७ का-ल फज्जूकुल-अजा-व बिमा
 कुन्तुम् तवफूरून (३०) कद् खसिरल्लजी-न कज्जबू बिलिका-इल्लाहि
 हत्ता इजा जा-अत्-हुमुसाअत्तु बग-त-तन् कालू या हस्-र-तना अला
 मा फरूला फीहा ७ व हुम् यहिमलून औजारहुम् अला जुहरिहिम्
 अला सा-अ मा यजिरून (३१) व मल्हयातुददुन्या इल्ला लाअिबु-व-
 लहत्तु ७ व लददारू - आखिरतु खैरू - लिल्लजी-न यत्तकून ७ अ-फला
 तव-किलून (३२) कद् नअ-लमु इल्लहू ल-यहज्जुनकल्लजी यकूलून फ-इनहुम्
 ला युक्ज्जिबून-क व लाकिन्नज्जालिमी-न बिआयातिल्लाहि यज्हुदून
 (३३) व ल-कद् कुज्जिबत् हसुलुमिन् कबिल-क फ-स-बरू अला मा
 कुज्जिबू व ऊब् हत्ता अताहुम् नरूना ७ व ला मुबदि-ल
 लिकलिमातिल्लाहि ७ व ल-कद् जा-अ-क मिन् न-बइल् - मुसलीन (३४)

रहा। (२४) और उन में कुछ ऐसे हैं कि तुम्हारी (बातों की) तरफ कान रखते हैं और हम ने उन के दिलों पर तो परदे डाल दिए हैं कि उन को समझ न सकें और कानों में बोझ पैदा कर दिया है (कि सुन न सकें) और अगर ये तमाम निषानियां भी देख लें तब भी उन पर ईमान न लाएं, यहाँ तक कि जब तुम्हारे पास तुम से बहस करने को आते हैं, तो जो काफ़िर हैं, कहते हैं, यह (कुरआन) और कुछ भी नहीं, सिर्फ पहले लोगों की कहानियां हैं। (२५) वे इस से (और को भी) रोकते हैं और खुद भी परे रहते हैं, मगर (इन बातों से) अपने आप ही को हलाक करते हैं और (इस से) बे-खबर हैं। (२६) काश, तुम (उन को उस वक़्त) देखो, जब ये दोऊख के किनारे खड़े किये जाएंगे और कहेंगे कि ऐ काश ! हम फिर (दुनिया में) लौटा दिए जाएं, ताकि अपने परवरदिगार की आयतों को झुठलाएं नहीं और मोमिन हो जाएं। (२७) हां, ये जो कुछ पहले छिपाया करते थे, (आज) उन पर जाहिर हो गया और अगर ये (दुनिया में) लौटाए भी जाएं, तो जिन (कामों) से उनको मना किया गया था, वही फिर करने लगे। कुछ शक नहीं कि ये झूठे हैं। (२८) और कहते हैं कि हमारी जो दुनिया की ज़िंदगी है, वस यही (ज़िंदगी) है और हम (मरने के बाद) फिर ज़िंदा नहीं किये जाएंगे। (२९) और काश ! तुम (उन को उस) वक़्त देखो, जब ये अपने परवरदिगार के सामने खड़े किये जाएंगे और वह फ़रमाएगा, क्या यह (दोबारा ज़िंदा होना) हक़ नहीं, तो कहेंगे, क्यों नहीं, परवरदिगार की क़सम ! (बिल्कुल हक़ है।) खुदा फ़रमाएगा, अब कुफ़र के बदले (जो दुनिया में करते थे) अज़ाब (के मज़े) चखो। (३०) *

जिन लोगों ने खुदा के सामने हाज़िर होने को झूठ समझा, वे घाटे में आ गये, यहाँ तक कि जब उन पर क्रियामत यकायक आ मौजूद होगी, तो बोल उठेंगे कि (हाय !) उस ख़ता पर अफ़सोस है, जो हमने क्रियामत के बारे में की और वह अपने (आमाल के) बोझ अपनी पीठों पर उठाए हुए होंगे। देखो, जो बोझ ये उठा रहे हैं, बहुत बुरा है। (३१) और दुनिया की ज़िंदगी तो एक खेल होंगे। देखो, जो बहुत अच्छा घर तो आखिरत का घर है (यानी) उन के लिए, जो (खुदा से) डरते हैं, क्या तुम समझते नहीं ? (३२) हम को मालूम है कि इन काफ़िरों की बातें तुम्हें रंज पहुंचाती हैं, (मगर) ये तुम्हें झुठलाते नहीं, बल्कि ज़ालिम खुदा की आयतों से इंकार करते हैं। (३३) और तुम से पहले भी पैग़म्बर झुठलाए जाते रहे, तो वे झुठलाने और तक्लीफ़ देने पर सन्न करते रहे, यहाँ तक कि उन के पास हमारी मदद पहुंचती रही और खुदा की बातों को कोई भी बदलने वाला नहीं। और तुम को पैग़म्बरों (के अहवाल) की खबर पहुंच चुकी है, (तो तुम भी

व इन् कान-कबु-र अलै-क इअ-राजुहुम् फइनिस्त-तम्-त अन् तन्तगि-य
न-फ-कन् फिल्अजि ओ सुल्लमत् फिस्समाइ फ-तअतियहुम् बिआयतिन्
व लौ शा-अल्लाहु ल-ज-म-अहुम् अ-लल्हुदा फला तकूनन्-न मिनल्-जाहिलीन
● (३५) इन्नमा यस्तजीबुल्लजी-न यस्मअ-न बल्मोता यअसुहुमुल्लाहु

सुम्-म इलैहि युजअून (३६) व कालू
लोला नुज्जि-ल अलैहि आयतुम्-मिरंबिही
कुल् इन्नल्ला-ह कादिरुन् अला अय्युनज्जि-ल
आयतुव-व लाकिन्-न अक्सरहुम् ला यअ-लमून

(३७) व मा मिन् दाब्वतिन् फिल्अजि
व ला ताइरिय्यतीर बिजनाहेहि इल्ला
उ-ममुन् अम्सालुकुम् मा फरंत्ता फिल्-
किताबि मिन् शैत् सुम्-म इला रब्विहिम्
युह्शरून (३८) वल्लजी-न कज्जबू
बिआयातिना सुम्मुव-व बुकमुन् फिज्जुलुमाति
मय्य-श - इल्लाहु युज्जलिह् व मय्यशअ
यज्अल्हु अला सिरातिम्-मुस्तक्रीम (३९)

وَاللَّهُ
وَالْحَمْدُ
بِكَلَمَاتِهِ ۖ وَلَقَدْ جَاءَهُ مِنْ بَنِي إِسْرَءِيلَ ۖ وَإِنْ كَانَ كَبُرَ
عَلَيْكَ إِعْرَاضُهُمْ فَإِنْ شِئْتَ أَنْ تَسْفُتَ أَنْ تَسْقَى لِقَاكَ فِي الْأَرْضِ أَوْ
سُقَى السَّمَاءَ فَتَأْتِيَهُمْ بِآيَةٍ ۚ وَكَذَّبُوا عَنْكَ اللَّهُ يُعَذِّبُهُمْ عَلَى
الَّذِي فَلَا تَكُونُ مِنَ الْغَافِلِينَ ۚ إِنَّكَ يَتَّيِبُ إِلَيْهِ يَسْعُونَ
وَالْمَوْتُ يَمُوتُهُمُ اللَّهُ ثُمَّ إِلَيْهِ يُرْجَعُونَ ۚ وَقَالُوا لَا تَنْزِيلَ لَنَا مِنْ
أَيِّ قَوْمٍ ذِكْرُكَ ۚ قَالَ اللَّهُ قَالُوا عَلَى أَنْ يَنْزِلَ إِلَيْهِ وَلَكِنَّ الْكُفْرَ
الَّذِي يَكْفُرُونَ ۚ وَمَا مِنْ دَاكِرٍ فِي الْأَرْضِ وَلَا ظَلَمٍ يَبْطِئُ بِمَحْضِهِ
إِلَّا أَمْرٌ أَتَيْنَاكَ بِهِ ۚ مَا ظَنَّنَا بِالْكَافِرِينَ مِنْ شَيْءٍ ۚ وَلَقَدْ نَزَّلْنَاهُمْ
بِحُسْنٍ ۚ وَإِنَّ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا صُفْرًا وَيَكْفُرُونَ فِي الظُّلُمَاتِ مِنْ
تَحْتِ اللَّهِ يُعَذِّبُهُ ۚ وَمَنْ يُشَاقِقِ اللَّهَ عَلَى عِزَالِهِ فَيُفْضِرْهُ ۚ قَالَ
أَرَأَيْتُمْ إِنْ أَنْكَرُوا بِآيَاتِنَا أَنْتُمْ أَنْتُمْ السَّاعَةِ أَخَذَ اللَّهُ
تَعَالَى ۚ إِنَّ كُفْرَ صِدْقَيْنِ ۚ بَلِ إِيَّاكَ تَدْعُونَ وَيُفْضِرْ مَا
تَدْعُونَ إِلَيْهِ ۚ إِنَّ شَاءَ وَتَكُونُ مَا تَكُونُ ۚ وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا إِلَى
أُمَمٍ مِنْ قَبْلِكَ فَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَالْعَذَابُ لَهُمْ يُنْزِلُهُمْ ۚ
فَلَوْلَا إِعْرَاضُهُمْ بِآيَاتِنَا لَعَذَّبْنَا ۚ وَلَكِنْ قَسَتْ قُلُوبُهُمْ وَزَيَّنَ
لَهُمُ الشَّيْطَانُ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۚ فَلَمَّا كُنُوا مَا ذُكِّرُوا بِهِ فَهَجَرْنَا
عَنِ الْوَيْلِ كُلِّ شَيْءٍ ۚ وَلَقَدْ أَوْفَيْنَا آلَ نُوحٍ مَآثِرَهُمْ ۚ

कुल् अ-रपेतकुम् इन् अताकुम् अजाबुल्लाहि ओ अतकुमुस्साअतु अगैरल्लाहि
तदअून-इन् कुन्तुम् सादिकीन (४०) बल् इय्याहु तदअून फ-यक्षिफ
मा तदअून इलैहि इन् शा-अ व तन्सीन मा तुशिरकून (४१)
व ल - कद् असंत्ता इला उममिमिन् कबिल - क फ - अ - सज्जनाहुम्
बिल्बअसाइ वज्जर्राइ ल-अल्लहुम् य-त-ज्जर्अून (४२) फलोला इज्
जाअहुम् बअसुना तज्जर्अू व लाकिन् क - सत् कुलबुहुम् व जय-य-न
लहुमुशैतानु मा कानू यअ-लमून (४३) फ-लम्मा नसू मा जुविकर
बिही फ - तह्ना अलैहिम् अब्वा - व कुल्लि शैत् हत्ता इजा
फरिह् बिमा ऊ अ-सज्जनाहुम् बग-त-तन् फ-इजा हुम् मुल्लिसून (४४)

सब से काम लो) । (३४) और अगर उन का एराज तुम पर बोझ होता है, तो अगर ताकत हो तो जमीन में कोई सुरंग बूँद निकालो या आसमान में सीढ़ी (तलाश करो), फिर उन के पास कोई मोजजा लाओ और अगर खुदा चाहता तो सब को हिदायत पर जमा कर देता, पस तुम हर गिज ना-दानों में न होना ● (३५) बात यह है कि (हक़ को) कुबूल वही करते हैं, जो सुनते भी हैं और मुर्दों को तो खुदा (क्रियामत ही को) उठाएगा, फिर उसी की तरफ लौटकर जाएंगे ।' (३६) और कहते हैं कि उन पर उन के परवरदिगार के पास से कोई निशानी क्यों नाज़िल नहीं हुई । कह दो कि खुदा निशानी उतारने पर क्रुदरत रखता है, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते । (३७) और जमीन में जो चलने फिरने वाला (हैवान) या दो परों से उड़ने वाला जानवर है, उन की भी तुम लोगों की तरह जमाअतें हैं । हमने किताब (यानी लोहे मटफूज) में किसी चीज़ (के लिखने) में कोताही नहीं की, फिर सब अपने परवरदिगार की तरफ़ जमा किये जाएंगे । (३८) और जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया, वे बहरे और गूंगे हैं । (इसके अलावा) अंधेरे में (पड़े हुए), जिसको खुदा चाहे, गुमराह कर दे और जिसे चाहे सीधे रास्ते पर चला दे । (३९) कहो, (काफ़िरो !) भला देखो तो, अगर तुम पर खुदा का अज़ाब आ जाए या क्रियामत आ मौजूद हो, तो क्या तुम (ऐसी हालत में) खुदा के सिवा किसी और को पुकारोगे ? अगर सच्चे हो (तो बताओ) । (४०) (नहीं) बल्कि, (मुसीबत के वक़्त तुम) उसी को पुकारते हो, तो जिस दुख के लिए उसे पुकारते हो, वह अगर चाहता है, तो उसको दूर कर देता है और जिनको तुम शरीक बनाते हो, (उस वक़्त) उन्हें भूल जाते हो । (४१) ✱

और हमने तुम से पहले बहुत-सी उम्मतों की तरफ़ पैग़म्बर भेजे, फिर (उन की ना-फ़रमानियों की वजह से) हम उन्हें सस्त्रियों और तकलीफ़ों में पकड़ते रहे, ताकि आजिज़ी करें । (४२) तो जब उन पर अज़ाब आता रहा, क्यों नहीं आजिज़ी करते रहे, मगर उन के तो दिल ही सलत हो गये थे और जो वे काम करते थे, शैतान उन को (उन की नज़रों में) सजा कर दिखाता था । (४३) फिर जब उन्होंने उस नसीहत को, जो उन को की गयी थी भुला दिया, तो हमने उन पर हर चीज़ के दरवाज़े खोल दिए, यहां तक कि जब उन चीज़ों से जो उन को दी गयी थीं, खूब खुश हो गये, तो हमने उन को यकायक पकड़ लिया और वे उस वक़्त ना-उम्मीद हो कर रह गये । (४४) गरज़

१. यानी तुम्हारी बात तो वही लोग कुबूल करते हैं जो सुनते भी हैं और ये कुफ़्कार तो मुर्दा दिल हैं ये कब सुनने लगे । इन मुर्दों को तो खुदा क्रियामत ही के दिन उठाएगा और उन के आमास का बदला देगा ।

जालिम लोगों की जड़ काट दी गयी और सब तारीफ़ खुदा-ए-रब्बुल आलमीन ही के लिए है। (४५) (इन काफ़िरों से) कहो कि भला देखो तो, अगर खुदा तुम्हारे कान और आंखें छीन ले और तुम्हारे दिलों पर मुहर लगा दे तो खुदा के सिवा कौन-सा माबूद है जो तुम्हें ये नेमतें फिर बख़्शे? देखो हम किस-किस तरह अपनी आयतें बयान करते हैं। फिर भी ये लोग मुंह फेरे जाते हैं। (४६) कहो कि भला बताओ तो अगर तुम पर खुदा का अज़ाब बेख़बरी में या ख़बर आने के बाद आये, तो क्या जालिम लोगों के सिवा कोई और भी हलाक होगा? (४७) और हम जो पैग़म्बरों को भेजते रहे हैं, तो खुशख़बरी सुनाने और डराने को, फिर जो शरूस् ईमान लाये और भला आदमी हो जाए, तो ऐसे लोगों को न कुछ ख़ौफ़ होगा और न वे ग़मगीन होंगे। (४८) और जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया, उन की ना-फ़रमानियों की वजह से उन्हें अज़ाब होगा। (४९) कह दो कि मैं तुम से यह नहीं कहता कि मेरे पास अल्लाह तआला के ख़ज़ाने हैं और न (यह कि) मैं ग़ैब जानता हूँ और न तुम से यह कहता हूँ कि मैं फ़रिश्ता हूँ। मैं तो सिर्फ़ उस हुक्म पर चलता हूँ जो मुझे (खुदा की तरफ़ से) आता है, कह दो कि भला अंधा और आंख वाले बराबर होते हैं? तो फिर तुम ग़ौर क्यों नहीं करते? (५०) *

और जो लोग ख़ौफ़ रखते हैं कि अपने परवरदिगार के सामने हाज़िर किये जाएंगे (और जानते हैं कि) उस के सिवा न तो कोई उनका दोस्त होगा और न सिफ़ारिश करने वाला, उन को इस (क़ुरआन) के ज़रिए से नसीहत करो ताकि परहेज़गार बनें। (५१) और जो लोग सुबह व शाम अपने परवरदिगार से दुआ करते हैं और उस की ज़ात की तसबू में हैं, उन को (अपने पास से) मत निकालो। उनके हिसाब (आमाल) की जवाब देही तुम पर कुछ नहीं और तुम्हारे हिसाब की जवाब देही उन पर कुछ नहीं। (पस ऐसा न करना) अगर उन को निकालोगे, तो जालिमों में हो जाओगे। (५२) और इसी तरह हमने कुछ लोगों की कुछ से आजमाइश की है कि (जो दीलतमंद हैं, वे ग़रीबों के बारे में) कहते हैं, क्या यही लोग हैं, जिन पर खुदा ने हम में से फ़रज़ किया है। (खुदा ने फ़रमाया) भला खुदा शुक़ करने वालों को नहीं जानता। (५३) और जब तुम्हारे पास ऐसे लोग आया करें, जो हमारी आयतों पर ईमान लाते हैं, तो (उनसे) 'सलामु अलेकुम' कहा करो। खुदा ने अपनी (पाक) ज़ात पर रहमत को ज़रूरी कर लिया है कि जो कोई तुम में से नादानी से कोई बुरी हरकत कर बैठे, फिर उसके बाद तौबा कर ले और भला हो जाए, तो वह

१. साद बिन अबी वक्कास रिवायत करते हैं कि यह आयत हम छः आदमियों के हज़ू में उतरी है यानी माद रजि० और इब्ने मसूऊद रजि० और सुहैब रजि० और बिलाल रजि० और अम्मार रजि० और भिक़दाद रजि० के हज़ू में। हम लोग रमूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होते तो करीब हो कर बैठते और बातें सुनते। क़ुरैश के कुपफ़ार को यह बात ना-गवार हुई तो उन्होंने आप से कहा कि हमारा दिल आप की बातें सुनने को तो चाहता है, लेकिन हम को इन गुलामों के साथ बैठते हुए शर्म आती है। पस जब हम आप के पास आया करें तो आप उन को उठा दिया कौज़िए और जब चले जाया करें, तो फिर आप को अख़्तियार है, उन को अपने पास बिठा लिया करें। आप ने इस बात को मान लिया, तो उन्होंने न कहा कि आप हमें इस मज़मून की एक तहरीर लिख दीजिए। आप ने कागज़ मंगवाया और हज़रत अली रजि० को लिखने के लिए बुलाया। इतने में हज़रत ज़िन्नोब यह आयत ले कर आए कि अगरचे खुदा की तलब वाले ग़रीब हैं, लेकिन उन का ध्यान रखना चाहिए, तब से आप सल्ल० हमारा बहुत ध्यान रखने लगे।

व कजालि-क नुफस्सिलुल्-आयाति व लितस्तबी - न सबीलुल् - मुजिमीन
 * (५५) कुल् इन्नी नुहीतु अन् अअ - बुदल्लजी - न तद्अ - न मिन्
 हुनिल्लाहि ७ कुल् ला अत्तबिअ अह्वा - अकुम् ७ कद् जललतु इजव्व
 मा अ-न मिनल्-मुह्त्तदीन (५६) कुल् इन्नी अला बय्थियनतिम्-मिरब्बी

व कब्जन्तुम् बिही ७ मा अिन्दी मा
 तस्तअ - जिलू - न बिही ७ इनिल् - हुक्मु
 इल्ला लिल्लाहि ७ यकुस्सुल्-हक्-क व हु-व
 खैरुल्फासिलीन (५७) कुल् लो अन्-न
 अिन्दी मा तस्तअ-जिलू-न बिही लकुज्जियल्-
 अम्ह बेंनी व बेंनकुम् ७ वल्लाहु
 अअ-लमु बिज्जालिमीन (५८) व अिन्दहू
 मफातिह्लौबि ला यअ-लमुहा इल्ला हु-व ७
 व यअ-लमु मा फिल्वरि वल्वहिर ७ व मा
 तस्कुतु मिव्व-र - कतिन् इल्ला यअ-लमुहा
 व ला हव्वतिन् फी अलुमातिल्-अज्जि व ला
 रत्तबिक्-व ला याबिसिन् इल्ला फी किताबिम्-

الرَّحْمَةُ الْكَافَّةُ مَنْ عَمِلْ مِنْكُمْ سُوءًا بِجَهْلَةٍ ثُمَّ تَابَ مِنْهُ فَاعْلَمْ أَنَّ
 أَصْلَهُ كَانَ لَهُ غُفْرًا كَرِيمًا ۝ وَكَذَلِكَ يَفْعَلُ الْأَبْرَارُ وَيَسْتَجِيبُ
 جَوَابَ الْمُجْرِمِينَ ۝ قُلْ إِنِّي نَذَرْتُ لِلَّهِ دِينِي وَإِنِّي مُسْلِمٌ
 دُونِ اللَّهِ قُلْ لَا أُتْبِعُ أَهْوَاءَ قَوْمٍ قَدْ ضَلَّتْ رَأْسًا أَنَا مِنْ
 الْمُسْتَضِلِّينَ ۝ قُلْ إِنِّي عَلَى بَيِّنَةٍ مِّن رَّبِّي وَكَذَّبْتُم بِهِ مَا عُدِدْتُمُ
 مِنَ الْمُجْرِمِينَ بِهِ إِنِ الْحُكْمُ إِلَّا لِلَّهِ يَفْضِلُ الْحَقَّ وَهُوَ يُغْنِي الْعَالَمِينَ
 قُلْ لَّوْنًا وَعِنْدِي مَا تَشْتَعِلُونَ بِهِ تَفْضَى الْأُمُورَ بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ وَاللَّهُ
 أَعْلَمُ بِالظَّالِمِينَ ۝ وَعِنْدَهُ مَفَاتِحُ الْغَيْبِ لَا يُسْأَلُ أَلَمٌ وَسْأَلُوا
 فِي النَّارِ وَالْجَحِيمِ وَمَا تَعْطُونَ وَتَدْعُوا إِلَيْهَا ۝ وَلَا حِجَابَ فِي ظُلُمٍ
 الْأَرْضِ وَلَا رُحُبَ الْأَرْضِ إِلَّا فِي رَيْبٍ مِّمَّنْ ۝ قُلْ أَلَيْسَ بِتُؤْتَى
 بِالنِّيلِ وَيَسْمَرُ وَأَجْرُهُمْ بِالنَّارِ ثُمَّ يَفْضَلُ لِيُفْضَى إِلَيْكُمْ
 تَوَلَّوْا مِمَّ جَعَلْتُمْ دِينَكُمْ قُلْ إِنَّمَا كُنْتُ نَذِيرًا ۝ وَهُوَ الْغَافِرُ
 قُلْ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَقْرَبُوا حَتَّىٰ إِذَا جَاءَ أَمْرُكُمْ
 الْيَوْمَ تَوَكَّلْتُمْ رُسُلًا وَهُمْ لَا يُفْعَلُونَ ۝ قُلْ زِدُوا لِي الْيَوْمَ مِثْلَهُ
 الصِّحْقِ إِلَّا لَهُ الْعِزَّةُ وَهُوَ أَسْرَعُ الْحَاسِبِينَ ۝ قُلْ مَن مِّنكُمْ
 مِّنْ ظَلَمَ إِلَى الْبِرِّ وَالْجَوْدِ عَنَّا نَضَاعَ خُفْيَةً إِن لِّنُجْزِيَنَّ
 مِّنْ هَؤُلَاءِ لَكُلًّا مِّنْ شَرِّهِمْ ۝ قُلْ اللَّهُ يُجْزِيكُم مَّا كُنْتُمْ

मुबीन (५९) व हुवल्लजी य-त-वफाकुम् बिल्लैलि व यअ-लमु मा
 जरहतुम् बिन्नहारि सुम्-म यवअसुकुम् फीहि लियुकज्जा अ-जलुम् - मुसम्मन्
 सुम्-म इलैहि मजिअकुम् सुम्-म युनब्बिअकुम् बिमा कुन्तुम् तअ-मलून
 * (६०) व हुवल्काहिर् फौ - क अिबादिही व युसिलु अलैकुम्
 ह-फ-अ-तन् ७ हत्ता इज्जा जा - अ अह-दकुमुल्मौतु तवफफत्हु रसुलुना व
 हुन् ला युफरितून (६१) सुम्-म रुद्द इलल्लाहि मौलाहुमुल्-हक्कि ७
 अला लहुल्हुक्मुन् व हु - व अस्सरअल्-हासिबीन (६२) कुल् मय्युनज्जीकुम्
 मिन् अलुमातिल् - वरि वल्वहिर तद्अूनहू तज्जर्हअ-व - व खुफय-तन् ७ लइन्
 अन्जाना मिन् हाजिही ल-न-कूनन-न मिनश्शाकिरीन (६३) कुलिल्लाहु
 युनज्जीकुम् मिन्हा व मिन् कुल्लि कबिन् सुम्-म अन्तुम् तुशिरकून (६४)

बस्नाने वाला मेहरबान है। (५४) और इसी तरह हम अपनी आयतें खोल-खोल कर बयान करते हैं (ताकि तुम लोग उन पर अमल करो) और इस लिए कि गुनाहगारों का रास्ता जाहिर हो जाए। (५५) ✱

(ऐ पैगम्बर ! कुपकार से) कह दो कि जिन को तुम खुदा के सिवा पुकारते हो, मुझे उनकी इबादत से मना किया गया है। (यह भी) कह दो कि मैं तुम्हारी स्वाहिशों की पैरवी नहीं करूंगा, ऐसा करूं, तो गुमराह हो जाऊं और हिदायत पाये हुए लोगों में न रहूं। (५६) कह दो कि मैं तो अपने परवरदिगार की रोशन दलील पर हूं और तुम उस को झुठलाते हो। जिस चीज (यानी अजाब) के लिए तुम जल्दी कर रहे हो, वह मेरे पास नहीं है। (ऐसा) हुक्म अल्लाह ही के अस्तियार में है, वह सच्ची बात बयान फरमाता है और वह सबसे बेहतर फ़ैसला करने वाला है। (५७) कह दो कि जिस चीज के लिए तुम जल्दी कर रहे हो, अगर वह मेरे अस्तियार में होती, तो मुझ में और तुम में फ़ैसला हो चुका होता और खुदा जालिमों को खूब जानता है। (५८) और उसी के पास ग्रैब की कुजियां हैं, जिन को उस के सिवा कोई नहीं जानता और उसे जंगलों और नदियों की सब चीजों का इल्म है और कोई पत्ता नहीं झड़ता, मगर वह उस को जानता है और जमीन के अंधेरों में कोई दाना और कोई हरी और सूखी चीज नहीं है, मगर रोशन किताब में (लिखी हुई) है। (५९) और वही तो है जो रात को (सोने की हालत में) तुम्हारी रूह कब्ज कर लेता है और जो कुछ तुम दिन में करते हो, उस की खबर रखता है, फिर तुम्हें दिन को उठा देता है, ताकि (यही सिलसिला जारी रख कर ज़िदगी की) तै मुद्त पूरी कर दी जाए, फिर तुम (सब) को उसी की तरफ़ लौट कर जाना है। (उस दिन) वह तुम को तुम्हारे अमल, जो तुम करते हो (एक-एक कर के) बताएगा ✱ (६०) और वह अपने बन्दों पर गालिब है और तुम पर निगहबान भुकरर किए रखता है, यहां तक कि जब तुम में से किसी की मौत आती है, तो हमारे फ़रिश्ते उस की रूह कब्ज कर लेते हैं और वे किसी तरह की कोताही नहीं करते। (६१) फिर (क्रियामत के दिन तमाम) लोग अपने सच्चे मालिक अल्लाह के पास वापस बुलाये जाएंगे। सुन लो कि हुक्म उसी का है और वह बहुत जल्द हिसाब लेने वाला है। (६२) कहो, भला तुम को जंगलों और नदियों के अंधेरों से कौन खलासी देता है, (जब) कि तुम उसे आजिजी और (दिल में) छिपी नियाजमंदी से पुकारते हो (और कहते हो), अगर खुदा हम को इस (तंगी) से निजात बरसे, तो हम उस के बहुत शुक्रगुजार हों। (६३) कहो कि खुदा ही तुम को इस (तंगी) से और हर सस्ती से निजात बरसता है, फिर (तुम) उस के साथ शिकं करते हो। (६४) कह दो कि वह (इस पर भी) क़ुदरत रखता है

कुल् हुवल्कादिर अला अय्यव-अ-स अलैकुम् अजाबम्-मिन् फौकिकुम् औ मिन्
तहित अजुलिकुम् औ यत्तिब-सकुम् शिय-अव-व युजी-क बअ-ज्जकुम् बअ-स बअ-ज्जिन्
उय्मुर कै-फ नुसरिफुल्-आयाति ल-अल्लहुम् यफकहून (६५) व कम्ज-व
बिही कौमु-क व हुवलहक्कु ७ कुल् लस्तु अलैकुम् बिबकील ७ (६६)

लिकुल्लि न-बइम् - मुस्तकरव-व सौ - फ
तअ-लमून (६७) व इजा ररेतल्लजी-न
यखूज्ज-न फी आयातिना फ-अअ-रिज्ज अन्हुम्
हत्ता यखूज्ज फी हदीसिन् शैरिही ७ व
इम्मा युनिसियन्नकश-शैतानु फला तवअद्
बअ-दज्जिक्का म-अल्-कौमिज्जालिमीन (६८)
व मा अ-लल्लजी-न यत्तकू-न मिन्
हिंसाबिहिम् मिन् शैव-व लाकिन्
जिक्का ल-अल्लहुम् यत्तकू-न (६९) व
जिरल्लजीनत्-त-खजू दीनहुम् लजिबव-व
लहव-व गररहुमुल् - ह्यातुदुन्या व
जक्किर-बिही अन् तुव-स-ल नफसुम्-बिमा
क-स-बत् ७ ले-स लहा मिन् इनिल्लाहि

قُلْ كَيْفَ لَكُمْ إِذَا أُلْقِيْتُمْ فِي الْغَوَارِ مِنْ هَاهُنَا وَأَنْتُمْ أَعْمَىٰ ۖ فَتَرْجَفُونَ عِوًى ۚ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ لَعَنَ اللَّهُ ۖ وَالْعَوَّاتُ يُعِثُّونَ ۚ
قُلْ كَيْفَ لَكُمْ إِذَا أُلْقِيْتُمْ فِي الْغَوَارِ مِنْ هَاهُنَا وَأَنْتُمْ أَعْمَىٰ ۖ فَتَرْجَفُونَ عِوًى ۚ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ لَعَنَ اللَّهُ ۖ وَالْعَوَّاتُ يُعِثُّونَ ۚ
قُلْ كَيْفَ لَكُمْ إِذَا أُلْقِيْتُمْ فِي الْغَوَارِ مِنْ هَاهُنَا وَأَنْتُمْ أَعْمَىٰ ۖ فَتَرْجَفُونَ عِوًى ۚ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ لَعَنَ اللَّهُ ۖ وَالْعَوَّاتُ يُعِثُّونَ ۚ
قُلْ كَيْفَ لَكُمْ إِذَا أُلْقِيْتُمْ فِي الْغَوَارِ مِنْ هَاهُنَا وَأَنْتُمْ أَعْمَىٰ ۖ فَتَرْجَفُونَ عِوًى ۚ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ لَعَنَ اللَّهُ ۖ وَالْعَوَّاتُ يُعِثُّونَ ۚ
قُلْ كَيْفَ لَكُمْ إِذَا أُلْقِيْتُمْ فِي الْغَوَارِ مِنْ هَاهُنَا وَأَنْتُمْ أَعْمَىٰ ۖ فَتَرْجَفُونَ عِوًى ۚ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ لَعَنَ اللَّهُ ۖ وَالْعَوَّاتُ يُعِثُّونَ ۚ
قُلْ كَيْفَ لَكُمْ إِذَا أُلْقِيْتُمْ فِي الْغَوَارِ مِنْ هَاهُنَا وَأَنْتُمْ أَعْمَىٰ ۖ فَتَرْجَفُونَ عِوًى ۚ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ لَعَنَ اللَّهُ ۖ وَالْعَوَّاتُ يُعِثُّونَ ۚ
قُلْ كَيْفَ لَكُمْ إِذَا أُلْقِيْتُمْ فِي الْغَوَارِ مِنْ هَاهُنَا وَأَنْتُمْ أَعْمَىٰ ۖ فَتَرْجَفُونَ عِوًى ۚ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ لَعَنَ اللَّهُ ۖ وَالْعَوَّاتُ يُعِثُّونَ ۚ
قُلْ كَيْفَ لَكُمْ إِذَا أُلْقِيْتُمْ فِي الْغَوَارِ مِنْ هَاهُنَا وَأَنْتُمْ أَعْمَىٰ ۖ فَتَرْجَفُونَ عِوًى ۚ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ لَعَنَ اللَّهُ ۖ وَالْعَوَّاتُ يُعِثُّونَ ۚ
قُلْ كَيْفَ لَكُمْ إِذَا أُلْقِيْتُمْ فِي الْغَوَارِ مِنْ هَاهُنَا وَأَنْتُمْ أَعْمَىٰ ۖ فَتَرْجَفُونَ عِوًى ۚ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ لَعَنَ اللَّهُ ۖ وَالْعَوَّاتُ يُعِثُّونَ ۚ
قُلْ كَيْفَ لَكُمْ إِذَا أُلْقِيْتُمْ فِي الْغَوَارِ مِنْ هَاهُنَا وَأَنْتُمْ أَعْمَىٰ ۖ فَتَرْجَفُونَ عِوًى ۚ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ لَعَنَ اللَّهُ ۖ وَالْعَوَّاتُ يُعِثُّونَ ۚ

वलिप्यु-व-व ला शफीअुन् ७ व इन् तअ-दिल् कुल्-ल अदलिल्ला युअख्ज
मिन्हा ७ उला - इकल्लजी - न उन्सिलू बिमा क - सब ७ लहुम् शराबुम् -
मिन् ७ हमीमिव-व अजाबुन् अलीमुम्-बिमा कानू यफकहून ★ (७०) कुल्
अनदअ मिन् इनिल्लाहि मा ला यन्फअुना व ला यज्जुर्ना व नुरददु अला
अअ-काबिना बअ-द इज् हदानल्लाहु कल्लजिस्तहवतहुश-शयातीनु फिल्अज्जि
हैरा-न ७ लहू अस्हाबुंयदअूनहू इलल्-हुदअतिना ७ कुल् इन्-न हुदल्लाहि
हुवलहुदा ७ व उमिरना लिनुस्लि - म लिरबिबल् - आलमीन ७ (७१)
व अन् अक्रीमुस्सला-त् वत्तकूहु ७ व हुवल्लजी इलैहि तुहशरून (७२)

कि तुम पर ऊपर की तरफ से या तुम्हारे पांव के नीचे से अजाब भेजे या तुम्हें फ़िक्रों-फ़िक्रों कर दे और एक को दूसरे (से लड़ा कर आपस) की लड़ाई का मजा चखा दे। देखो हम अपनी आयतों को किस-किस तरह बयान करते हैं, ताकि ये लोग समझें। (६५) और इस (क़ुरआन) को तुम्हारी क्रोम ने झुठलाया, हालांकि वह हक़ है, कह दो कि मैं तुम्हारा दारोगा नहीं हूँ। (६६) हर ख़बर के लिए एक बक़्त मुकर्रर है और तुम को बहुत जल्द मालूम हो जाएगा। (६७) और जब तुम ऐसे लोगों को देखो, जो हमारी आयतों के बारे में बेहूदा बकवास कर रहे हों, तो उन से अलग हो जाओ, यहां तक कि वे और बातों में लग जाएं और अगर (यह बात) शैतान तुम्हें भुला दे, तो याद आने पर ज़ालिम लोगों के साथ न बैठो। (६८) और परहेज़गारों पर उन लोगों के हिसाब की कुछ भी ज़वाबदेही नहीं, हां नसीहत, ताकि वे भी परहेज़गार हों। (६९) और जिन लोगों ने अपने दीन को खेल और तमाशा बना रखा है और दुनिया की ज़िदगी ने उन को धोखे में डाल रखा है, उन से कुछ काम न रखो। हां, इस (क़ुरआन) के ज़रिए से नसीहत करते रहो, ताकि (क्रियामत के दिन) कोई अपने आमाल की सज़ा में हलाकत में न डाला जाए, (उस दिन) खुदा के सिवा न तो कोई उसका दोस्त होगा और न सिक़ारिश करने वाला और अगर वह हर चीज़, (जो घरती पर है,) मुआवज़े (के तौर पर) देना चाहे, तो वह उस से क़ुबूल न हो। यही लोग हैं कि अपने आमाल के बवाल में हलाकत में डाले गये उन के लिए पीने को ख़ीलता हुआ पानी और दुख देने वाला अजाब है, इस लिए कि कुपूर करते थे। (७०) ✽

कहो, क्या हम खुदा के सिवा ऐसी चीज़ को पुकारें, जो न हमारा भला कर सके न बुरा और जब हम को खुदा ने सीधा रास्ता दिखा दिया, तो (क्या) हम उल्टे पांव फिर जाएं? (फिर हमारी ऐसी मिसाल हो) जैसे किसी जिन्नात ने जंगल में भुला दिया हो (और वह) हैरान (हा रहा हो) और उस के कुछ साथी हों जो उस को रास्ते की तरफ़ बुलाएं कि हमारे पास चला आ। कह दो कि रास्ता तो वही है, जो खुदा ने बताया है और हमें तो यह हुक्म मिला है कि हम अल्लाह, रब्बुल आलमीन के फ़रमांबरदार हों। (७१) और यह (भी) कि नमाज़ पढ़ते रहो और उस से डरते रहो और वही तो है, जिस के पास तुम जमा किये

जाओगे । (७२) और वही तो है, जिस ने आसमानों और जमीन को तद्वीर से पैदा किया है और जिस दिन वह फरमायेगा कि होजा तो (हरर बरपा) हो जाएगा उस का इशार्द बर-हक है और जिस दिन सूर फूँका जाएगा (उस दिन) उसी की बादशाहत होगी । वही छिपे और जाहिर (सब) का जानने वाला है और वही हिकमत वाला और खबर वाला है । (७३) और (वह वक़्त भी याद करने के लायक है) जब इब्राहीम ने अपने बाप आज़र से कहा कि तुम बुतों को क्या माबूद बनाते हो । मैं देखता हूँ कि तुम और तुम्हारी क्रौम खुली गुमगही में हो । (७४) और हम इस तरह इब्राहीम को आसमान और जमीन के अजाइबात दिखाने लगे, ताकि वह खूब यक़ीन करने वालों में हो जाएं । (७५) (यानी) जब रात ने उन को (अंधेरे के परदे) से ढांप लिया, तो (आसमान में) एक सितारा नज़र पड़ा । कहने लगे, यह मेरा परवरदिगार है । जब वह शायब हो गया तो कहने लगे कि मुझे शायब हो जाने वाले पसन्द नहीं । (७६) फिर जब चांद को देखा कि चमक रहा है, तो कहने लगे, यह मेरा परवरदिगार है । लेकिन जब वह भी छिप गया, तो बोल उठे कि अगर मेरा परवरदिगार मुझे सीधा रास्ता नहीं दिखाएगा, तो मैं उन लोगों में हो जाऊंगा, जो भटक रहे हैं । (७७) फिर जब सूरज को देखा कि जगमगा रहा है, तो कहने लगे, मेरा परवरदिगार यह है, यह सब से बड़ा है, मगर जब वह भी डूब गया तो कहने लगे, लोगो ! जिन चीजों को तुम (खुदा का) शरीक बनाते हो, मैं उन से बे-ज़ार हूँ । (७८) मैंने सब से यक़्स होकर अपने को उसी ज़ात की तरफ़ मुतवज्जह किया, जिस ने आसमानों और जमीन को पैदा किया है और मैं मुश्रिकों में से नहीं हूँ । (७९) और उन की क्रौम उन से बहस करने लगी, तो उन्होंने कहा कि तुम मुझ से खुदा के बारे में (क्या) बहस करते हो, उसने तो मुझे सीधा रास्ता दिखा दिया है । और जिन चीजों को तुम उस का शरीक बनाते हो, मैं उन से नहीं डरता । हां, जो मेरा परवरदिगार कुछ चाहे । मेरा परवरदिगार अपने इल्म से हर चीज़ पर एहाता किये हुए है, क्या तुम ख्याल नहीं करते ? (८०) भला मैं उन चीजों से, जिन को तुम (खुदा का) शरीक बनाते हो, कैसे डरूँ, जब कि तुम इस से नहीं डरते कि खुदा के साथ शरीक बनाते हो, जिसकी उसने कोई सनद नाज़िल नहीं की । अब दोनों फ़रीक़ में से कौन-सा फ़रीक़ अमन (और दिल के मुकून) का हक़दार है, अगर समझ रखते हो (तो बताओ) (८१) जो लोग ईमान लाये और अपने ईमान को (शिरक के) जुल्म से गड्-भड् नहीं किया, उन के लिए अमन (और दिल का मुकून) है और वही हिदायत पाने वाले हैं । (८२) ★

और यह हमारी दलील थी जो हमने इब्राहीम को उन की क्रौम के मुकाबले में अता की थी । हम जिसके चाहते हैं, दर्ज बुलंद कर देते हैं । बेशक तुम्हारा परवरदिगार हिकमत वाला और इल्म

१. कुरआन मजिद से तो हज़रत इब्राहीम के वालिद का नाम आज़र मालूम होता है, लेकिन तौरात में उन का नाम तारिख़ लिखा है और नसब व तारीख के उलमा के नज़दीक भी उन का यही नाम है । तफ़्सीर लिखने वालों ने इस के जवाब में कहा है, शायद उन के दो नाम होंगे, एक आज़र, दूसरा तारिख़ या एक नाम होगा, दूसरा लक़ब । फिर यह कि आज़र फ़ारसी लफ़्ज़ है और इस का मतलब 'बूढ़ा आदमी' है । पस यह भी हो सकता है कि 'अबी हि आज़र' से यह मुराद हो कि उन्होंने ने बूढ़े बाप से कहा, कुछ लोगों ने कहा कि आज़र बुत का नाम था, शायद इस वजह से कि हज़रत इब्राहीम के वालिद उन की बहुत खिदमत करते हों, उन को भी आज़र कहने लगे । बहरहाल जो वजह भी हो, उन्हें आज़र भी कहते थे ।

वाला है। (८३) और हमने उन को इस्हाक और याकूब बरसे (और) सब को हिदायत दी और पहले नूह को भी हिदायत दी थी और उनकी औलाद में से दाऊद और सुलेमान और अय्यूब और यूसुफ और मूसा और हारून को भी और हम नेक लोगों को ऐसा ही बदला दिया करते हैं। (८४) और ज़करीया और यहया और ईसा और इलयास को भी। ये सब भले लोग थे। (८५) और इस्माईल और अल-यसअ और यूनस और लूत को भी और उन सब को दुनिया के लोगों पर फ़ज़ीलत बरही थी। (८६) और किसी-किसी को उन के बाप-दादा और औलाद और भाइयों में से भी और उन को चुन भी लिया था और सीधा रास्ता भी दिखाया था। (८७) यह खुदा की हिदायत है। इस पर अपने बन्दों में से जिसे चाहे चलाये। और अगर वे लोग शिकं करते, तो जो अमल वे करते थे, सब बर्बाद हो जाते। (८८) ये वह लोग थे, जिन को हमने किताब और हुक्म (शरीअत) और नबूवत अता फ़रमायी थी। अगर ये (कुफ़्कार) इन बातों से इन्कार करें तो हमने उन पर (ईमान लाने के लिए) ऐसे लोग मुक़रर कर दिए हैं कि वे उन से कभी इन्कार करने वाले नहीं। (८९) ये वह लोग हैं जिन को खुदा ने हिदायत दी थी, तो तुम उन्हीं की हिदायत की पंरसी करो। कह दो कि मैं तुम से इस (कुरआन) का बदला नहीं मांगता। यह तो दुनिया के लोगों के लिए सिर्फ़ नसीहत है। (९०) ✱

और उन लोगों ने खुदा की क़द्र जैसी जाननी चाहिए थी, न जानी। जब उन्होंने कहा कि खुदा ने इंसान पर (वह्य और किताब अग़रह) कुछ भी नाज़िल नहीं किया। कहो कि जो किताब मूसा ले कर आये थे, उसे किसने नाज़िल किया था, जो लोगों के लिए नूर और हिदायत थी और जिसे तुमने अलग-अलग पन्नों (पर नक़ल) कर रखा है। उन (के कुछ हिस्से) को तो जाहिर करते हो और अक्सर को छिपाते हो। तुम को वे बातें सिखायी गयीं, जिनको न तुम जानते थे और न तुम्हारे बाप-दादा। कह दो (इस किताब को) खुदा ही ने (नाज़िल किया था), फिर उन को छोड़ दो कि अपनी बेहूदा बक़वास में खेलते रहें। (९१) और (वैसी ही) यह किताब है, जिसे हमने नाज़िल किया है, बरक़त वाली, जो अपने से पहली (किताबों) की तस्दीक़ करती है और (जो) इस लिए (नाज़िल की गयी है) कि तुम मक्के और उसके आस-पास के लोगों को आगाह कर दो और जो लोग आख़िरत पर ईमान रखते हैं, वे उस किताब पर भी ईमान रखते हैं और वे अपनी

नमाजों की (पूरी) खबर रखते हैं। (६२) और उस से बढ़ कर जालिम कौन होगा, जो खुदा पर झूठ गढ़े या यह कहे कि मुझ पर बह्य आयी है, हालांकि उस पर कुछ भी बह्य न आयी हो और जो यह कहे कि जिस तरह की किताब खुदा ने नाज़िल की है, उस तरह की मैं भी बना लेता हूँ और काश ! तुम उन जालिम (यानी मुश्रिक) लोगों को उस वक़्त देखो, जब मौत की सल्लियों में (पड़े) हों और फ़रिश्ते (उन की तरफ़ अज़ाब के लिए) हाथ बढ़ा रहे हों कि निकालो अपनी जानें, आज तुम को खिल्लत के अज़ाब की सज़ा दी जाएगी, इसलिए कि तुम खुदा पर झूठ बोला करते थे और उस की आयतों से सरकशी करते थे। (६३) और जैसा हमने तुम को पहली बार पैदा किया था, ऐसा ही आज अकेले हमारे पास आए और जो (माल व मताअ) हमने तुम्हें अता फ़रमाया था, वह सब अपनी पीठ पीछे छोड़ आये और हम तुम्हारे साथ तुम्हारे सिफ़ारिशियों को भी नहीं देखते, जिन के बारे में तुम ख्याल करते थे कि वे तुम्हारे (शफ़ीअ यानी सफ़ाअत करने वाले और हमारे) मरीक हैं। (आज) तुम्हारे आपस के सब ताल्लुकात ख़त्म हो गये और जो दावे तुम किया करते थे, सब जाते रहे। (६४) ★

बेशक खुदा ही दाने और गुठली को फाड़ (कर उन से पेड़ वगैरह) उगाता है, वही जानदार को बे-जान से निकालता है और वही बे-जान का जानदार से निकालने वाला है। यही तो खुदा है, फिर तुम कहां बहके फिरते हो ? (६५) वही (रात के अंधेरे से) सुबह की रोशनी फाड़ निकालता है और उसी ने रात को आराम (की वजह ठहराया और सूरज और चांद को गिन्ती (का ज़रिया) बनाया है। ये खुदा के (मुक़रर किये हुए) अन्दाजे हैं, जो ग़ालिब (और) इल्म वाला है। (६६) और वही तो है, जिस ने तुम्हारे लिए सितारे बनाये, ताकि जंगलों और नदियों के अंधेरों में उन से रास्ते मालूम करो। अक्ल वालों के लिए हमने अपनी आयतें खोल-खोल कर बयान कर दी हैं। (६७) और वही तो है, जिसने तुम को एक शरूस से पैदा किया, फिर (तुम्हारे लिए) एक ठहरने की जगह है और एक सुपुर्द होने की।^१ समझने वालों के लिए हमने (अपनी) आयतें खोल-खोल कर बयान कर दी हैं। (६८) और वही तो है जो आसमान से वर्षा बरसाता है। फिर हम ही (जो वर्षा बरसाते हैं) उस में हर तरह की हरियाली उगाते हैं, फिर उस में से हरी-हरी कोंपलें निकालते हैं और इन कोंपलों में से एक दूसरे के साथ जुड़े हुए दाने निकालते हैं और खजूर के गांभे में से लटकते हुए गुच्छे और अंगूरों के बास और जैतून और अनार, जो एक-दूसरे से मिलते-जुलते भी हैं और नहीं भी मिलते। ये चीज़ें जब फलती हैं, तो उन के फलों पर और (जब पकती हैं तो) उन के पकने पर नज़र करो। इन में उन लोगों के लिए जो ईमान लाते हैं (खुदा की क़ुदरत की

१. यानी एक मुद्दत तक दुनिया में बिंदा रखे जाते, फिर ज़मीन में दफ़न हो कर खुदा के सुपुर्द किये जाते हो।

बहुत-सी) निशानियां हैं। (१६) और उन लोगों ने जिम्नों को खुदा का शरीक ठहराया, हालांकि उन को उसी ने पैदा किया और बे-समसे (झूठ-बुहतान) उस के लिए बेटे और बेटियां बना खड़ी कीं। वह इन बातों से जो वे उस के बारे में बयान करते हैं, पाक है और उसकी शान उन से बुसंद है। (१००) ★

(वही) आसमानों और जमीन का पैदा करने वाला (है), उस के औलाद कहां से हो, जबकि उस की बीबी ही नहीं और उस ने हर चीज को पैदा किया है और वह हर चीज की खबर रखता है। (१०१) यही (खूबियां रखने वाला) खुदा तुम्हारा परवरदिगार है। उसके सिवा कोई माबूद नहीं। (वही) हर चीज का पैदा करने वाला (है), तो उसी की इबादत करो और वह हर चीज का निगरां है। (१०२) (वह ऐसा है कि) निगाहें उस का इद्राक नहीं कर सकतीं और वह निगाहों का इद्राक कर सकता है और वह भेद जानने वाला खबरदार है। (१०३) (ऐ मुहम्मद ! उन से कह दो कि) तुम्हारे (पास) परवरदिगार की तरफ से (रोशन) दलोलें पहुंच चुकी हैं, तो जिस ने (उन को आंख खोलकर) देखा, उस ने अपना भला किया और जो अंधा बना रहा, उस ने अपने हक में बुरा किया और मैं तुम्हारा निगहबान नहीं हूँ। (१०४) और हम इसी तरह अपनी आयतें फेर-फेर कर बयान करते हैं, ताकि काफिर यह न कहें कि तुम (ये बातें अहले किताब से) सीखे हुए हो और ताकि समझने वाले लोगों के लिए तशरीह कर दें। (१०५) और जो हुक्म तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से तुम्हारे पास आता है, उसी की पैरवी करो। उस (परवरदिगार) के सिवा कोई माबूद नहीं और मुशिरकों से किनारा करो। (१०६) और अगर खुदा चाहता तो ये लोग शिकं न करते और (ऐ पंगम्बर) हमने तुम को उन पर निगहबान मुकर्रर नहीं किया और न तुम उन के वारोगा हो। (१०७) और जिन लोगों को ये मुशिरक खुदा के सिवा पुकारते हैं, उनको बुरा न कहना कि ये भी कहीं खुदा को बे-अदबी से बे-समझे बुरा (न) कह बैठें। इस तरह हमने हर एक फ़िर्क के आमाal (उन की नज़रों में) अच्छे कर दिखाये हैं। फिर उनको अपने परवरदिगार की तरफ लौट कर जाना है, तब वह उन को बतायेगा कि वे क्या-क्या किया करते थे। (१०८) और ये लोग खुदा की सलत-सलत क़समें खाते हैं कि अगर उनके पास कोई निशानी आये, तो वे उस पर ज़रूर ईमान ले आएँ। कह दो कि निशानियां तो सब खुदा ही के पास हैं और (मोमिनो !) तुम्हें क्या मालूम है, (ये तो ऐसे बद-बलत हैं कि उनके पास) निशानियां आती जाएँ, तब भी ईमान न लाएँ। (१०९) और हम उन के दिलों और आंखों को उलट देंगे (तो) जैसे ये इस (कुरआन) पर पहली बार ईमान नहीं लाये, (वैसे फिर न लाएंगे) और उन को छोड़ देंगे कि अपनी सरकशी में बहकते रहें। (११०) ★

१. जिस तरीक़े पर कुरआन मजीद में आयतें फेर-फेर कर बयान की गयी हैं, वह ऐसा नहीं है कि कोई यह कह सके कि ये मज़मून किसी शख्स से सीखे गये हैं। कहीं खुदा की कुदरत का बयान है, कहीं उस की हस्ती और बद्दनीयत की जोरदार दलीलें हैं। कहीं ईमान वालों को बशारतें सुनायी गयी हैं, कहीं कुशफ़ार को डराया गया है। कहीं नेक अमल करने के लिए हुक्म दिया गया है, कहीं बुरे आमाal से मना किया गया है, कहीं नसीहतें हैं, कहीं हिकमतें हैं। गरज़ तरह-तरह के बयान हैं और इसी लिए इशारा हुआ है कि हम इसी तरह (अपनी) आयतें फेर-फेर कर बयान करते हैं ताकि यह न कहें कि आहज़रत सल्ल० ने ये बातें यहूदी उलेमा से या किसी दूसरे से सीखी हैं।

आठवां पारः बलौ अन्नना

सूरतुल्-अन्आमि आयत १११ से १६७

व लो अन्नना नज्जल्ला इलैहिमुल्-मलाइकत्त व कल्लमहुमुल्-मोता व ह-शरना
अलैहिम् कुल-ल शैन् कुबुलम्मा कानू लियुअमिन् इल्ला अंध्यशा-अल्लाहु व
लाकिन-न अक्सरहुम् यज्जलून (१११) व कजालि-क ज-अल्ला लिक्लिलि नबिद्यिन्
अदुव्वन् शयातीनल्-इन्ति वलजिन्नि यूही बअ-जुहुम् इला बअ-जिन् जुहुरफल्कोलि
गुरुरत्त व लो शा-अ रब्बु-क मा फ-अल्लहु

फ-अर्हुम् व मा यप्तह्न (११२) व
लितस्या इलैहि अफइ-दतुल्लजी-न ला
युअ्मिन्-न बिल्आखिरति व लियर्जौहु
व लियक्तरिफू मा हुम् मुक्तरिफून् (११३)
अ-फ-गौरल्लाहि अब्तगी ह-क-म-व-व हुवल्लजी
अन्-ज-ल इलैकुमुल् - किता-ब मुफस्सलन्
वल्लजी-न आतेनाहुमुल्-किता-ब यअ-लमून् अन्नह
मुनज्जलुम्-मिरब्बि-क बिल्हक्क फला तकूनन्-न
मिनल्मुम्तरीन (११४) व तम्मत् कलिमतु
रब्बि-क सिद्क-व-व अदलन् ला मुबद्द-ल
लिकलिमातिही ८ व हुवस्समीअुल् - अलीम
(११५) व इन् तुतिअ अक्स-र मन्

फ़िल्अज़ि युज़िल्लू-क अन् सबीलिल्लाहि ॥ इय्यत्तबिअ-न इल्ल^उअन- न व इन्
हुम् इल्ला यरुहसून् (११६) इन्-न रब्ब-क हु-व अअ-लमु मयज़िल्लु अन् सबीलहि ॥
व हु-व अअ-लमु बिल्मुहत्तदीन (११७) फ़कुलू मिम्मा जुकिरस्मुल्लाहि
अलैहि इन् कुन्तुम् बिआयातिही मुअ्मिनीन (११८) व मा लकुम् अल्ला
तअकुलू मिम्मा जुकिरस्मुल्लाहि अलैहि व कद् फ़स्स-ल लकुम् मा हरं-म अलैकुम्
इल्ला मज़्ज़ुरितुम् इलैहि ॥ व इन्-न कसीरल्-लयुज़िल्लू-न बिअह्वाइहिम्
बिगैरि ज़िल्मत् ॥ इन् - न रब्ब-क हु-व अअ-लमु बिल्मुअ-तदीन (११९)

और अगर हम उन पर फ़रिषते भी उतार देते और मुर्दे भी उन से बातें करने लगते और हम सब चीज़ों को उनके सामने ला मौजूद भी कर देते, तो भी ये ईमान लाने वाले न थे इल्ला मा श्चाअल्लाह । बात यह है कि ये अक्सर नादान हैं । (१११) और इसी तरह हमने शैतान-इंसानों और ज़िन्नो—को हर पैगम्बर का दुश्मन बना दिया था । वे धोखा देने के लिए एक दूसरे के दिल में मुलम्मा की बातें डालते रहते थे और अगर तुम्हारा परवरदिगार चाहता, तो वे ऐसा न करते, तो उन को और जो कुछ ये गढ़ते हैं, उसे छोड़ दो । (११२) और (वे ऐसे काम) इस लिए भी (करते थे) कि जो लोग आखिरत पर ईमान नहीं रखते, उन के दिल उन की बातों पर मायल हों और वे उन्हें पसंद करें और जो काम वे करते थे, वही करने लगे । (११३) (कहो) क्या मैं खुदा के सिवा और इंसफ़ करने वाला हूँ, हालांकि उस ने तुम्हारी तरफ़ मतलब साफ़ करने वाली किताब भेजी है । और जिन लोगों को हमने किताब (तौरात) दी, वे जानते हैं कि वह तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से हक़ पर नाज़िल हुई कि तुम हरगिज़ शक़ करने वालों में न होना । (११४) और तुम्हारे परवरदिगार की बातें सच्चाई और इंसफ़ में पूरी हैं । उसकी बातों को कोई बदलने वाला नहीं और वह सुनता-जानता है । (११५) और अक्सर लोग, जो ज़मीन पर आबाद हैं, (गुमराह हैं) । अगर तुम उन का कहना मान लोगे, तो वे तुम्हें खुदा का रास्ता भुला देंगे । ये सिर्फ़ ख़याल के पीछे चलते और निरे अटकल के तीर चलाते हैं । (११६) तुम्हारा परवरदिगार उन लोगों को ख़ूब जानता है, जो उस के रास्ते से भटके हुए हैं और उन को भी ख़ूब जानता है जो रास्ते पर चल रहे हैं । (११७) तो जिस चीज़ पर (ज़िन्ह के तक्ल) खुदा का नाम लिया जाए, अगर तुम उस की आयतों पर ईमान रखते हो, तो उसे खा लिया करो । (११८) और वजह क्या है कि जिस चीज़ पर खुदा का नाम लिया जाए, तुम उसे खाओ, हालांकि जो चीज़ें उसने तुम्हारे लिए हाराम ठहरा दी हैं, वह एक-एक कर के बयान कर दी हैं । (बेशक उन को नहीं खाना चाहिए) मगर इस सूरत में कि उन के (खाने के) लिए ना-चार हो जाओ और बहुत से लोग बे-समझे बूझे अपने नफ़स की स्वाहिशों से लोगों को बहका रहे हैं । कुछ शक़ नहीं कि ऐसे लोगों को, जो (खुदा की मुकर्रर की हुई) हद से बाहर निकल जाते हैं, तुम्हारा परवरदिगार ख़ूब जानता है । (११९) और जाहिरी

और पोषादी (हर तरह का) गुनाह छोड़ दो। जो लोग गुनाह करते हैं, वह बहुत जल्द अपने किए की सजा पायेंगे। (१२०) और जिस चीज पर खुदा का नाम न लिया जाए, उसे मत खाओ कि उस का खाना गुनाह है। और शैतान (लोग) अपने साथियों के दिलों में यह बात बाँटते हैं कि तुम से झगड़ा करें और अगर तुम लोग उनके कहे पर चले तो बेशक तुम भी मुश्किल हुए। (१२१)*

भला जो पहले मुर्दा था, फिर हमने उस को जिंदा किया और उसके लिए रोशनी कर दी, जिस के जरिए से वह लोगों में चलता-फिरता है, कहीं उस शस्त्र जैसा हो सकता है, जो अंधेरे में पड़ा हुआ हो और उस से निकल ही न सके। इसी तरह काफिर जो अमल कर रहे हैं, वे उन्हें अच्छे मालूम होते हैं। (१२२) और इसी तरह हमने हर बस्ती में बड़े-बड़े मुजरिम पैदा किये कि उनमें मक्कारियाँ करते रहें और जो मक्कारियाँ ये करते हैं, उनका नुकसान उन्हीं को है और (इससे) बे-खबर हैं। (१२३) और जब उन के पास कोई आयत आती है, तो कहते हैं कि जिस तरह की रिसालत खुदा के पैगम्बरों को मिली है, जब तक उसी तरह की रिसालत हम को न मिले, हम हरगिज ईमान नहीं लाएंगे। इसको खुदा ही खूब जानता है कि (रिसालत का कोन-सा महल है और) वह अपनी पैगम्बरी किसे इनायत फरमाए। जो लोग जुर्म करने हैं, उन को खुदा के यहां जिल्लत और कडा अजाब होगा, इस लिए कि मक्कारियाँ करते थे। (१२४) तो जिस शस्त्र को खुदा चाहता है कि हिदायत बख्शे, उसका सीना इस्लाम के लिए खोल देता है और जिसे चाहता है कि गुमराह करे, उस का सीना तंग और घुटा हुआ कर देता है, गोया वह आसमान पर चढ़ रहा है। इस तरह खुदा उन लोगों पर जो ईमान नहीं लाते, अजाब भेजता है। (१२५) और यही तुम्हारे परवरदिगार का सीधा रास्ता है। जो लोग गौर (विचार) करने वाले हैं, उनके लिए हमने अपनी आयतें खोल-खोल कर बयान कर दी हैं। (१२६) उन के लिए उन के आमाल के बदले में परवर-दिगार के यहां सलामती का घर है और वही उनका दोस्तदार है। (१२७) और जिस दिन वह सब (जिन्न व इंस) को जमा करेगा (और फरमायेगा कि) ऐ जिन्नो के गिरोह! तुम ने इंसानों से बहुत (फ़ायदे) हासिल किये, तो जो इंसानों में उन के दोस्तदार होंगे, वे कहेंगे कि परवरदिगार! हम एक-दूसरे से फ़ायदा उठाते रहे और (आखिर) इस वक्त को पहुँच गये, जो तुने हमारे लिए मुकर्रर किया था। खुदा फरमायेगा (अब) तुम्हारा ठिकाना दोख है। हमेशा उसमें (जलते) रहोगे, मगर जो खुदा चाहे, बेशक तुम्हारा परवरदिगार हिक्मत वाला और खबरदार है। (१२८)

१. यानी जिस जानवर के जिब्ह करने के वक्त खुदा का नाम न लिया गया हो, उस का खाना हराम है। इमाम शाफ़ई रह० कहते हैं कि खुदा का नाम न लिए जाने से यह मुराद है कि जो जानवर गैर-खुदा के लिए जिब्ह किया जाए, ऐसे ही जानवर का खाना गुनाह है और इस की दलील उन के नजदीक इसी सूर: की आयत १४५ है। इस में तो कुछ शक ही नहीं कि गैर-अल्लाह के लिए किया गया जिब्ह हराम है, लेकिन एक जमाअते सहाबा, तारईन और फुक्हा का यह मजहब है कि जिस जानवर पर जिब्ह करते वक्त अल्लाह का नाम न लिया गया हो, चाहे मूल कर, चाहे जान-बूझ कर, उस का खाना भी हराम है। हां, एक हदीस से जो हजरत आइशा रजि० से रिवायत की गयी है, यह मालूम होता है कि अगर किसी जानवर के बारे में यह मालूम न हो कि जिब्ह के वक्त उस पर खुदा का नाम लिया गया है या नहीं, तो खुदा का नाम ले कर उस का खाना जायज है। हदीस यों है कि कुछ लोगों ने हजरत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की खिदमत में अज्र किया कि ऐ अल्लाह के रसूल! कुछ लोग हमारे पास गोश्त लाते हैं और हम नहीं जानते कि उस पर अल्लाह का नाम लिया गया है या नहीं। आप ने फरमाया कि तुम उस पर अल्लाह का नाम ले लिया करो और खा लिया करो।

२. जिनों से आदमियों का फ़ायदा उठाना यह है कि नफ़्स की आरजूओं की तरह दिखायी आदमियों को और जिनों का आदमियों से फ़ायदा यह है कि आदमी जिनों के ताबेदार हो गये।

और इसी तरह हम जालिमों को, उनके अमाल की वजह से, जो बे करते थे, एक दूसरे पर मुसल्लत कर देते हैं। (१२६) *

ऐ जिन्नों और इंसानों की जमाअत ! क्या तुम्हारे पास तुम्हीं में से पैगम्बर नहीं आते रहे ? जो मेरी आयतें तुम को पढ़-पढ़ कर सुनाते और उस दिन के सामने आ मौजूद होने से डराते थे। वे कहेंगे कि (परवरदिगार !) हमें अपने गुनाहों का इकरार है। इन लोगों को दुनिया की ज़िदगी ने धोखे में डाल रखा था और (अब) खुद अपने ऊपर गवाही दी कि कुफ़्र करते थे। (१३०) (ऐ मुहम्मद !) यह (जो पैगम्बर आते रहे और किताबें नाज़िल होती रहीं तो इस लिए कि तुम्हारा परवरदिगार ऐसा नहीं कि बस्तियों को ज़ुल्म से हलाक कर दे और वहाँ के रहने वालों को (कुछ भी) खबर न हो। (१३१) और सब लोगों के आमाल के लिहाज़ से दर्ज मुकर्रर हैं और जो काम ये लोग करते हैं, खुदा उन से बे-खबर नहीं। (१३२) और तुम्हारा परवरदिगार बे-परवा (और) रहमत वाला है। अगर चाहे (तो ऐ बन्दो !) तुम्हें ख़त्म कर दे और तुम्हारे बाद जिन लोगों को चाहे, तुम्हारा जानशी बनाये, जैसा तुम को भी दूसरे लोगों की नस्ल से पैदा किया है। (१३३) कुछ शक नहीं कि जो वायदा तुम से किया जाता है, वह पूरा होने वाला है और तुम (खुदा को) मरलूब नहीं कर सकते। (१३४) कह दो कि लोगो ! तुम अपनी जगह अमल किये जाओ, मैं (अपनी जगह) अमल किये जाता हूँ। बहुत जल्द तुम को मालूम हो जाएगा कि आखिरत में (बहिश्त) किस का घर होगा। कुछ शक नहीं कि मुशिरक निजात नहीं पाने के। (१३५) और (ये लोग) खुदा ही की पैदा की हुई चीजों यानी खेत और चौपायों में खुदा का भी एक हिस्सा मुकर्रर करते हैं और अपने (झूठे) क्याल से कहते हैं कि यह (हिस्सा) तो खुदा का और यह हमारे शरीक (यानी बुतों) का, तो जो हिस्सा उन के शरीकों का होता है, वह तो खुदा की तरफ़ नहीं जा सकता और जो हिस्सा खुदा का होता है, वह उन के शरीकों की तरफ़ जा सकता है। यह कैसा बुरा ईसाफ़ है ! (१३६) इसी तरह बहुत से मुशिरकों को उन के शरीकों ने उन के बच्चों को जान से मार डालना अच्छा कर दिखाया है, ताकि उन्हें हलाकत में डाल दें और उन के दीन को उन पर गड़-गड़ कर दें। और अगर खुदा चाहता तो वे ऐसा न करते, तो उन को छोड़ दो कि वह जानें और उन का झूठ। (१३७)

१. इस आयत में खुदा मुशिरकों की बुराई करता है कि उन्होंने ने तरह-तरह की कुफ़्र व शिर्क की रस्में निकाली हैं, जिन में औरों को खुदा का शरीक बनाया है। मरलूक तो खुदा की और उसी में से एक हिस्सा खुदा का मुकर्रर करते यानी सेती और फलों और चारपायों में एक हिस्सा खुदा और दूसरा हिस्सा बुतों को ठहराते। इस से बढ़ कर यह बेवक़ूफी कि बुतों को खुदा के मुक़ाबले में आगे रखते, इस तरह से कि अगर बुतों के हिस्से में से कुछ खर्च हो जाता तो उतना खुदा के हिस्से में से ले लेते और अगर खुदा के हिस्से में से कुछ खर्च हो जाता, तो बुतों के हिस्से में से न लेते और कहते कि खुदा गनी है और बुत फ़कीर हैं।

और अपने स्थान से यह भी कहते हैं कि ये चारपाए और खेती मना है। उसे उस शस्त्र के सिवा, जिसे हम चाहें, कोई न खाये, और (कुछ) चारपाए ऐसे हैं, कि उन की पीठ पर चढ़ना मना कर दिया गया है और कुछ मवेशी ऐसे हैं, जिन पर (जिन्हें करते-वक्त) खुदा का नाम नहीं लेते। सब खुदा पर झूठ है। वह बहुत जल्द उन को उन के झूठ का बदला देगा। (१३८) और यह भी कहते हैं कि जो बच्चा इन चारपायों के पेट में है, वह खास हमारे मदों के लिए है और हमारी औरतों को उस का खाना हराम है और अगर वह बच्चा मरा हुआ हो, तो सब उस में शरीक हैं (यानी उसे मद और औरतें सब खाएं) बहुत जल्द खुदा उन को उन के ढकोसलों की सजा देगा। बेशक वह हिम्मत वाला खबरदार है।' (१३९) जिन लोगों ने अपनी औलाद को बे-बकूफी से, बे-समझी से कल किया और खुदा पर झूठ गढ़ कर के उस की दी हुई रोजी को हराम ठहराया, वे घाटे में पड़ गये। वे बे-शुल्हा गुमराह हैं और हिदायत पाए हुए नहीं हैं। (१४०) ★●

और खुदा ही तो है जिस ने बाग पैदा किए, छतरियों पर चढ़ाए हुए भी और जो छतरियों पर नहीं चढ़ाये हुए, वह भी और खजूर और खेती, जिन के तरह-तरह के फल होते हैं और जंतून और अनाज जो (कुछ बातों में) एक-दूसरे से मिलते-जुलते हैं और (कुछ बातों में) नहीं मिलते, जब ये चीजें फलें तो उन के फल खाओ और जिस दिन (फल तोड़ो और खेती) काटो, तो खुदा का हक भी उस में से अदा करो। और बे-जा न उड़ाना कि खुदा बे-जा उड़ाने वालों को दोस्त नहीं रखता। (१४१) और चारपायों में बोझ उठाने वाले (यानी बड़े-बड़े) भी पैदा किये और जमीन से लगे हुए (यानी छोटे-छोटे) भी। (पस) खुदा की दी हुई रोजी खाओ और शैतान के कदमों पर न चलो, वह तुम्हारा खुला दुश्मन है। (१४२) (ये बड़े-छोटे चारपाए) आठ किस्म के (हैं), दो (-दो) भेड़ों में से और दो (-दो) बकरियों में (यानी एक-एक नर और एक-एक मादा)। (ऐ पैगम्बर ! उन से) पूछो कि (खुदा ने दोनों (के) नरों को हराम किया है या दोनों (की) मादियों को या जो बच्चा मादियों के पेट में लिपट रहा हो उसे, अगर सच्चे हो तो मुझे सनद से बताओ। (१४३)

१. मुस्लिमों ने एक यह भी रस्म निकाल रखी है कि अगर जानवर जिन्हें किया जाए और उस के पेट में से बच्चा निकले तो अगर बच्चा जिंदा निकले, मदों को उस का खाना हलाल और औरतों को हराम और अगर मुर्दा निकले तो मदों और औरतों सब के लिए हलाल।

व मिनल् - इबिलिस्नेनि व मिनल् - ब-कस्नेनि ७ कुल् अजिज-करेनि हर्-म
अमिल्-उन्सयेनि अम्मशत-म-लत् अलैहि अर्हामुल्-उन्सयेनि अम् कुन्तुम् शु-हदा-अ
इज् वस्साकुमुल्लाहु बिहज्जा ८ फ-मन् अज-लमु मिम्मनिपतरा अ - लल्लाहि
कजिबल्-लियुजिल्लन्ना-स बिगैरि अलिम् ७ इन्नल्ला-ह ला यहिदल्-क्रोमज्जालिमीन

★ (१४४) कुल् ला अजिदु फी मा

उहि-य इलय-य मुहरमन् अला ताजिमियत्-
अमुह् इल्ला अय्यकू-न मैत-तुन् ओ द-मम्-
मस्फूहन् ओ लहु-म खिन्जीरिन् फ-इन्ह रिज्मुन्

ओ फिस्किन् उहिल्-ल लिगैरिल्लाहि बिही ८
फ-मनिज्जुत्तुर-र गै-र बागिब-व ला आदिन् फइन्-न

रब्ब-क गफूरर्हीम (१४५) व अ-लल्-
लजी-न हादू हर्म्ना कुल्-ल जी जुफुरित् ८

व मिनल्ब-करि वल्ग-नमि हर्म्ना अलैहिम्
शुहुमहुमा इल्ला मा ह-म-लत् जुहुरुहुमा

अविल्हवाया ओ मल्-त-लत् बि-अज्मिन् ७

जालि - क जजैनाहुम् बिबगियहिम् ८ व ८

इन्ना ल-सादिकून् (१४६) फइन् कज्जबू-क फकूरब्बुकुम् जू रह्मतिव्वा-
सिअतिन् ८ व ला युरद्दु बअसुह् अनिल्कोमिल्-मुजिरमीन (१४७) स-य-कूलुल्लजी-न

अशरकू लो शा-अल्लाहु मा अशरक्ता व ला आबा-उना व ला हर्म्ना
मिन् शैदन् ७ क-जालि-क कज्जबल्लजी-न मिन् कबिलहिम् हत्ता जाकू बअ-सना ७

कुल् हल् अिन्दकुम् मिन् अलिम् फतुखिरजूह लना ७ इन् तत्तबिअ - न
इल्लज्जन्न-न व इन् अन्तुम् इल्ला तररसून् (१४८) कुल् फलिल्लाहिल्-

हुज्जतुल्-बालिगत् ८ फलो शा-अ ल-हदाकुम् अज्मजीन (१४९) कुल्
हलुम्-म शुहदा-अकुमुल्लजी-न यशहदू-न अन्नल्ला-ह हर्-म हाज्जा ८ फइन् शहिद्

फला तशहद् म-अहुम् ८ व ला तत्तबिअ अह्वा-अल्लजी-न कज्जबू बिआयातिना
वल्लजी-न ला युअ्मिन्-न बिल्-आखिरति व हुम् बिरबिहिम् यअ-दिलून् ★ (१५०)



और दो-(दो) ऊंटों में से और दो-(दो) गायों में से, (उन के बारे में भी उन से) पूछो कि (खुदा ने) दोनों (के) नरों को हराम किया है, या दोनों (की) मादियों को या जो बच्चा मादियों के पेट में लिपट रहा है, उस को। भला जिस वक्त खुदा ने तुम को इस का हुक्म दिया था, तुम उस वक्त मौजूद थे? तो उस शक्स से ज्यादा कौन जालिम है, जो खुदा पर झूठ गढ़े ताकि वे-जाने-बूझे लोगों को गुमराह करे। कुछ शक नहीं कि खुदा जालिम लोगों को हिदायत नहीं देता। (१४४) ★

कहो कि जो हुक्म मुझ पर नाज़िल हुए हैं, मैं उन में कोई चीज़, जिसे खाने वाला खाये, हराम नहीं पाता, इस के अलावा कि वह मरा हुआ जानवर हो या बहता लहू या सुअर का गोश्त कि ये सब नापाक हैं या कोई गुनाह की चीज़ हो कि उस पर खुदा के सिवा किसी और का नाम लिया गया हो और अगर कोई मजबूर हो जाए, लेकिन न तो ना-फ़रमानी करे और न हृद से बाहर निकल जाए, तो तुम्हारा परवरदिगार बख़्शने वाला मेहरबान है। (१४५) और यहूदियों पर हम ने सब नाखून वाले जानवर हराम कर दिए थे और गायों और बकरियों से उन की चर्बी हराम कर दी थी, सिवा इस के, जो उन की पीठ पर लगी हो या ओझड़ी में हो या हड्डी में मिली हो यह सज़ा हम ने उन को उन की शरारत की वजह से दी थी और हम तो सच कहने वाले हैं। (१४६) और अगर ये लोग तुम्हें झुठलाएं, तो कह दो कि तुम्हारा परवरदिगार फैली रहमत वाला है, मगर उस का अज़ाब गुनाहगार लोगों से नहीं टलेगा। (१४७) जो लोग शिर्क करते हैं, वे कहेंगे कि अगर खुदा चाहता, तो हम शिर्क न करते और न हमारे बाप-दादा (शिर्क करते) और न हम किसी चीज़ को हराम ठहराते। इसी तरह उन लोगों ने झुठलाया था, जो उन से पहले थे, यहां तक कि हमारे अज़ाब का मजा चख कर रहे। कह दो, क्या तुम्हारे पास कोई सनद है? (अगर है) तो उसे हमारे सामने निकालो। तुम सिर्फ़ ख्याल के पीछे चलते और अटकल के तीर चलाते हो। (१४८) कह दो कि खुदा ही की हुज्जत ग़ालिब है। अगर वह चाहता तो तुम सब को हिदायत दे देता। (१४९) कहो कि अपने गवाहों को लाओ जो बताएं कि खुदा ने ये चीज़ें हराम की हैं, फिर अगर वे (आ कर) गवाही दें, तो तुम उन के साथ गवाही न देना और न उन लोगों की स्वाहिशों की पैरवी करना, जो हमारी आयतों को झुठलाते हैं और जो आखिरत पर ईमान नहीं लाते और (बुतों को) अपने परवरदिगार के बराबर ठहराते हैं। (१५०) ★

१. जिन चीज़ों को खुदा ने यहूदियों पर उन के जुल्म और शरारत और मरकज़ी की वजह से हराम किया था, जिस का कुछ बयान मूर: निम्ना की आयत १६० में है, उन की तफ़्सील इस आयत में है। वे एक तो वह जानवर थे, जिन की उंगलियां फटी हुई हों, जैसे ऊंट और भूतुर मुंग और बतख़ या खुर वाले जानवर, जैसे गोर खुर या पंजे वाले दाँदों और गाय और बकरी की चर्बी, सिवा उस चर्बी के, जो उन की पीठ पर या ओझड़ी में लगी हुई हो या हड्डी से मिली हुई हो जैसे हाथ-पांव या पसली या ओंख या कान की चर्बी कि यह हलाल थी।

कुल् तआली अल्लु मा हर-म रब्बुकुम् अल्लकुम् अल्ला तुशिरकू बिही शंअव-व
बिल्बालिदेनि इहसानत् ८ व ला तक्तुलू ओलादकुम् मिन् इम्लाकिन्
नहनु नरब्बुकुम् व इय्याहुम् ८ व ला तकरबुल्-फवाहि-श मा अ-ह-र मिन्हा
व मा व - तन ८ व ला तक्तुलुन्नपसलती हुरस्मल्लाहु इल्ला बिल्हकिक्

जालिकुम् वस्साकुम् बिही ल - अल्लकुम्
तब्-किलून (१५१) व ला तकरबू
मालल्-यतीमि इल्ला बिल्लती हि-य अह्सनु
हत्ता यल्लु-ग अशुद्दह ८ व ओफुल्कै - ल
वल्मीजा - न बिल्किस्ति ८ ला नुकलिफु
नपसन् इल्ला वुस्रहा ८ व इजा
कुल्लुम् फअ-दिलू व ली का-न जा कुरबा ८
व बि - अह्दिदल्लाहि ओफू ८ जालिकुम्
वस्साकुम् बिही ल-अल्लकुम् त-जक्करून ८
(१५२) व अन्-न हाजा सिराती मुस्तक्रीमन्
फक्तबिअहु ८ व ला तक्तबिअस - सुबु - ल
फक्त-फर-क बिकुम् अन् सबीलिही ८ जालिकुम्

تَنَزَّلُوا أَنزَلَ مَا حَمَدَهُ رَبُّكُمْ عَلَيْهِمْ وَلَا تُفْسِدُوا كُتُبَهُمْ وَلَا يَلْبَسُوا بِهَا ثِيَابًا ۚ وَلَا تَتَّبِعُوا أَهْوَاءَ قَوْمٍ زَلَّ الْأَوَّلُونَ ۚ نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَالْوَاقِعَ
وَلَا تَقْرَأُ الْقُرْآنَ فَتَعْلَمُ أَنَّاهُ نَزَّلُ وَمَنْ يَتَّبِعِ أَهْوَاءَ قَوْمٍ فَلَا يُهْدِ إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ خَبِيرٌ ۚ
الَّذِينَ يَتَّبِعُونَ أَهْوَاءَ قَوْمٍ فَلَا يُهْدِ إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ خَبِيرٌ ۚ
وَلَا تَقْرَأُ الْقُرْآنَ فَتَعْلَمُ أَنَّاهُ نَزَّلُ وَمَنْ يَتَّبِعِ أَهْوَاءَ قَوْمٍ فَلَا يُهْدِ إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ خَبِيرٌ ۚ
وَلَا تَقْرَأُ الْقُرْآنَ فَتَعْلَمُ أَنَّاهُ نَزَّلُ وَمَنْ يَتَّبِعِ أَهْوَاءَ قَوْمٍ فَلَا يُهْدِ إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ خَبِيرٌ ۚ
وَلَا تَقْرَأُ الْقُرْآنَ فَتَعْلَمُ أَنَّاهُ نَزَّلُ وَمَنْ يَتَّبِعِ أَهْوَاءَ قَوْمٍ فَلَا يُهْدِ إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ خَبِيرٌ ۚ
وَلَا تَقْرَأُ الْقُرْآنَ فَتَعْلَمُ أَنَّاهُ نَزَّلُ وَمَنْ يَتَّبِعِ أَهْوَاءَ قَوْمٍ فَلَا يُهْدِ إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ خَبِيرٌ ۚ
وَلَا تَقْرَأُ الْقُرْآنَ فَتَعْلَمُ أَنَّاهُ نَزَّلُ وَمَنْ يَتَّبِعِ أَهْوَاءَ قَوْمٍ فَلَا يُهْدِ إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ خَبِيرٌ ۚ
وَلَا تَقْرَأُ الْقُرْآنَ فَتَعْلَمُ أَنَّاهُ نَزَّلُ وَمَنْ يَتَّبِعِ أَهْوَاءَ قَوْمٍ فَلَا يُهْدِ إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ خَبِيرٌ ۚ
وَلَا تَقْرَأُ الْقُرْآنَ فَتَعْلَمُ أَنَّاهُ نَزَّلُ وَمَنْ يَتَّبِعِ أَهْوَاءَ قَوْمٍ فَلَا يُهْدِ إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ خَبِيرٌ ۚ

वस्साकुम् बिही ल-अल्लकुम् तत्तकून (१५३) सुम्-म आतना मूसल्किता-ब
तमामन् अल्लज्जी अह-स-न व तपसीलल्लिकुल्लि शंअव-व हुदव-व रहमतुल्ल-अल्लहुम्
बिल्कि-इ रब्बिहिम् युअ्मिनून (१५४) व हाजा किताबुम् अन्जल्लाहु
मुबारकुन् फक्तबिअहु वक्तकू ल-अल्लकुम् तुहूमून ८ (१५५) अन् तकूलू
इल्ला उन्जिलल् - किताबु अला ताइफतैति मिन् कब्बिलना ८ व इन्
कुन्ना अन् दिरासतिहिम् लगाफिलीन ८ (१५६) औ तकूलू लौ अन्ना
उन्जिल-ल अल्लनल् - किताबु लकुन्ना अहदा मिन्हुम् ८ फ - कद् जा - अकुम्
बय्थिनतुम् - मिररब्बिकुम् व हुदव - व रहमतुल् ८ फ-मन् अउलमु मिम्मन्
कज्ज - व बिआयातिल्लाहि व स-द-फ अन्हा ८ स-नज्जिल्लजी-न यस्दिफून
अन् आयातिना सू - अल् - अजाबि बिमा कानू यस्दिफून (१५७)

कहो कि (लागो!) आओ मैं तुम्हें वे चीजें पढ़ कर सुनाऊँ, जो तुम्हारे परवरदिगार ने तुम पर हुराम कर दी हैं, (उन के बारे में उस ने इस तरह इत्साफ़ फ़रमाया है) कि किसी चीज़ को खुदा का शरीक न बनाना और मौ-बाप से (बद-सुलूकी न करना, बल्कि) सुलूक करते रहना और नादारी (के ख़तरे) से अपनी औलाद को क़त्ल न करना, क्योंकि तुम को और उन को हमीं रोज़ी देते हैं और बे-हयाई के काम ज़ाहिर हों। छिपे हुए, उन के पास न फटकना। और किसी जान (वाले) को जिस के क़त्ल को खुदा ने हुराम कर दिया है, क़त्ल न करना, मगर जायज़ तौर पर (यानी) जिस का शरीअत हुक़म दे। इन बातों की वह तुम्हें ताकीद फ़रमाता है, ताकि तुम समझो। (१५१) और यतीम के माल के पास भी न जाना, मगर ऐसे तरीक़े से कि बहुत पसंदीदा हो, यहां तक कि वह जवानी को पहुंच जाए और नाप और तौल इत्साफ़ के साथ पूरी-पूरी किया करो। हम किसी को तस्लीफ़ नहीं देते, मगर उस की ताक़त के मुताबिक़ और जब (किसी के बारे में) कोई बात कहो, तो इत्साफ़ से कहो, गो वह (तुम्हारा) रिश्तेदार ही हो और खुदा के अहद को पूरा करो। इन बातों का खुदा तुम्हें हुक़म देता है, ताकि तुम नसीहत करो। (१५२) और यह कि मेरा सीधा रास्ता यही है, तो तुम उसी पर चलना और और रास्तों पर न चलना कि (उन पर चल कर) खुदा के रास्तें से अलग हो जाओगे। इन बातों का खुदा तुम्हें हुक़म देता है, ताकि तुम परहेज़गार बनो। (१५३) (हां) फिर (सुन लो कि) हम ने मूसा को किताब दी थी, ताकि उन लोगों पर जो भले हैं, नेमत पूरी कर दें और (उस में) हर चीज़ का बयान (है) और हिदायत (है) और रहमत है, ताकि (उन की उम्मत के) लोग अपने परवरदिगार के सामने ज़ाहिर होने का यत्नीन करें। (१५४) *

और (ऐ कुफ़र करने वालो!) यह किताब भी हमीं ने उतारी है बरकत वाली, तो उस की पंखी करो और (खुदा से) डरो, ताकि तुम पर मेहरबानी की जाए। (१५५) (और इस लिए उतारी है) कि (तुम यों न) कहो कि हम से पहले दो ही ग़िरोहों पर किताबें उतरी हैं और हम उन के पढ़ने से (मजबूर और) बे-ख़बर थे। (१५६) या (यह न) कहो कि अगर हम पर भी किताब नाज़िल होती तो हम उन लोगों के मुकाबले कहीं सीधे रास्ते पर होते, सो तुम्हारे पास तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से दलील और हिदायत और रहमत आ गयी है। तो उस से बढ़ कर ज़ालिम कौन होगा जो खुदा की आयतों को झुठलाये और उन से (लोगों को) फेरे। जो लोग हमारी आयतों से फेरते हैं, इस फेरने की वजह से हम उन को बुरे अज़ाब की सज़ा देंगे। (१५७) ये इस

हल् यञ्जुह-न इल्ला अन् तज्ति-य-हुमुल्-मला-इकतु औ यज्ति-य रब्ब-क औ
 यज्ति-य बज्-जु आयाति रब्बि-क यौ-म यज्ती बज्-जु आयाति रब्बि-क ला यन्फज्जु
 नफसन् ईमानुहा लम् तकुन् आम-नत् मिन् कब्बु औ क-स-बत् फी ईमानिहा
 खरत् कुलिन-तज्रिह इन्ना मुन्तज्रिहन् (१५८) इन्नल्लजी-न फर्रकू दीनहुम्
 व कानू शि-य-अल्लस्-त मिन्हुम् फी शैइन्

इन्मा अम्हम् इल्ललाहि सुम् - म
 युनब्बिउहुम् बिमा कानू यफ्-अलून (१५९)
 मन् जा-अ बिल्ह-स-नति फ-लहू अशर
 अस्सालिहा व मन् जा-अ बिस्सयियज्ति
 फला युज्जा इल्ला मिस्लहा व हुम् ला
 युज्ज-लमून (१६०) कुल् इन्नी हदानी
 रब्बी इला सिरातिम् - मुस्तकीम्

दीनन् क्रि-य-मम्मिल्-ल-त् इब्राही-म हनीफ्
 व मा कान-मिनल्मुशिरकीन (१६१)
 कुल् इन्-न सलाती व नुसुकी व मट्या-य
 व ममाती लिल्लाहि रब्बिल् - आलमीन

بَعْدُ فَوْنٌ مِّنَ الْوَيْسَاءِ الْمَذَابِ بِمَا كَانُوا يَفْعَلُونَ
 مَلْ يَنْظُرُونَ إِلَّا أَنْ تَأْتِيَهُمُ الْمَلَائِكَةُ أَوْ يَأْتِيَ رَبُّكَ أَوْ يَأْتِيَ
 بَعْضُ آيَاتِكَ يَوْمَ يَأْتِي بَعْضُ آيَاتِكَ لَا تَفْعَلُونَ
 إِنَّمَا أَنْتَ مُنْذِرٌ مِّمَّنْ قَبْلَ الْأَوَّلِينَ
 قُلِ الْغُفُورُ إِنَّمَا مَنَعْتُكُمْ مِنَ الْغُفُورِ وَتَعْلَمُونَ
 وَبِمَا كَانُوا يَفْعَلُونَ
 وَمَنْ جَاءَ بِالسَّبْحَةِ فَلَا يُمْسِكُهَا وَلَا يُمْسِكُهَا
 قُلِ إِنِّي مَدِينٌ فِي ذِكْرِ الْوَيْسَاءِ الْمَذَابِ
 إِنْ يَوْمَ حُجَّتٍ وَمَا كَانَ مِنَ الشَّيْءِ
 وَلَكِنَّهُنَّ وَمَا كَانَ مِنَ الشَّيْءِ
 وَبِذَلِكَ نُفَصِّلُ الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ
 قُلِ الْغُفُورُ إِنَّمَا مَنَعْتُكُمْ مِنَ الْغُفُورِ
 وَلَا تَنْتَهِزُوا الزَّيْلَةَ وَلَا تَنْتَهِزُوا الزَّيْلَةَ
 بِمَا كُنْتُمْ تَفْعَلُونَ
 الْوَيْسَاءِ الْمَذَابِ
 الْوَيْسَاءِ الْمَذَابِ
 الْوَيْسَاءِ الْمَذَابِ

(१६२) ला शरी-क लहू व बिजालि-क उमिरतु व अ-न अव्वलुल्-
 मुस्-लिमीन (१६३) कुल् अ-नैरल्लाहि अब्गी रब्ब-व-व हु-व रब्बु कुल्लि
 शैइन् व ला तक्सिबु कुल्लु नफिसन् इल्ला अलैहा व ला
 तज्रिह वाजिरतु ब्विज - र उख्रा सुम् - म इला रब्बिकुम् मजिअकुम्
 फयुनब्बिउकुम् बिमा कुन्तुम् फीहि तख्तलिफून (१६४) व हुवल्लजी
 ज-अ-लकुम् खला-इफल्-अजि व र-फ-अ बज् - जकुम् फी-क बज् - जित्
 द-र-जातिल्-लियब्बु-वकुम् फी मा आताकुम् इन्-न रब्ब - क सरीअुल् -
 अक्राबि व इन्नहू ल - गफूरहीम (१६५)

के सिवा और किस बात के इत्तिजार में हैं कि उन के पास फ़रिश्ते आएँ, या खुद तुम्हारा परवर-दिगार आये या तुम्हारे परवरदिगार की कुछ निशानियाँ आयें (मगर) जिस दिन तुम्हारे परवर-दिगार की कुछ निशानियाँ आ जाएंगी, तो जो शस्स पहले ईमान नहीं लाया होगा, उस वक़्त उसे ईमान लाना कुछ फ़ायदा नहीं देगा या अपने ईमान (की हालत) में नेक अमल नहीं किये होंगे, (तो गुनाहों से तौबा करना मुफ़्रीद न होगा। (ऐ पैगम्बर ! उन से) कह दो कि तुम भी इत्तिजार करो, हम भी इत्तिजार करते हैं। (१५८) जिन लोगों ने अपने दीन में (बहुत से) रास्ते निकाले और कई-कई फ़िक्कें हो गये, उनसे तुमको कुछ काम नहीं। उन का काम खुदा के हवाले। फिर जो-जो कुछ वे करते रहे हैं, वह उन को (सब) बतायेगा।' (१५९) जो कोई (खुदा के हुज़ूर) नेकी ले कर आयेगा, उस की वैसी दस नेकियाँ मिलेंगी और जो बुराई लाएगा उसे सज़ा वैसी ही मिलेगी और उन पर जुल्म नहीं किया जाएगा। (१६०) कह दो कि मुझे मेरे परवरदिगार ने सीधा रास्ता दिखा दिया है (यानी सही दीन) मज़हब इब्राहीम का, जो एक (खुदा) ही की तरफ़ के थे, और मुशिरकों में से न थे। (१६१) (यह भी) कह दो कि मेरी नमाज़ और मेरी इबादत और मेरा जीना और मेरा मरना सब अल्लाह रब्बुल आलमीन के लिए है। (१६२) जिस का कोई शरीक नहीं और मुझ को इसी बात का हुक्म मिला है और मैं सब से अव्वल फ़रमावरदार हूँ। (१६३) कहो, क्या मैं खुदा के सिवा और परवरदिगार खोजूँ ? और वही तो हर चीज़ का मालिक है। और जो कोई (बुरा) काम करता है, तो उस का नुक़सान उसी को होता है। और कोई शस्स किसी (के गुनाह) का बोझ नहीं उठायेगा, फिर तुम सब को अपने परवरदिगार की तरफ़ लौट कर जाना है, तो जिन-जिन बातों में तुम इस्तिलाफ़ किया करते थे, वह तुम को बतायेगा। (१६४) और वही तो है, जिस ने ज़मीन में तुम को अपना नायब बनाया और एक दूसरे पर दर्जे बुलंद किये ताकि जो कुछ उस ने तुम्हें बरूसा है, उस में तुम्हारी आजमाइश करे। बेशक तुम्हारा परवरदिगार जल्द अज़ाब देने वाला मेहरबान भी है। (१६५) ★ ●

१. दीन में तफ़रका डालना और कई-कई फ़िक्कें बन जाना खुदा को सख़्त ना-पसन्द है। इसी लिए फ़रमाया है कि जिन लोगों ने दीन को टुकड़े-टुकड़े कर दिया और कई-कई फ़िक्कें बन गये, (ऐ पैगम्बर !) उन से तुम्हारा कोई मतलब नहीं। अल्लाह तआला की मर्जी तो यह है कि सब लोग एक दीन (यानी इस्लाम) पर जो सच्चा दीन है, चले और उस की हिदायतों पर अमल करें, मगर कोई किसी रास्ते पर चलता है, कोई किसी पर। किसी ने कोई तग़ीका अस्तियार किया है, किसी ने कोई राह और आपस में इत्तिफ़ाक़ की जगह नफ़रत व अदावत पैदा हो जाती है। कुछ शक़ नहीं कि इन बातों की वजह यह है कि वे क़ुरआन को ग़ौर से नहीं पढ़ते और उस के अहक़ाम पर नहीं चलते। अगर अल्लाह तआला के मक़सद को समझ लिया जाए तो इस्तिलाफ़ व तफ़रक़ का नाम व निशान न रहे।

७ सूरतुल् अअ्राफ़ि ३६

(मक्की) इस सूरा में अरबी के १४६३५ अक्षर, ३३८७ शब्द, २०६ आयत और २४ रुकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अलिफ्-लाम्-मीम्-साद् ८ (१) किताबुन् उन्जि - ल इलै-क फ़ला
यकुन् फ़ी सद्दिर-क ह-रजुम्-मिन्हु लितुन्जि-र बिही व जिबरा लिन्मुअमिनीन
(२) इत्तबिअ मा उन्जि-ल इलैकुम् मिरैन्बिकुम् व ला तत्तबिअ मिन्
हूनिही ओलिया-अ क़लीलम्-मा त-जकक़रून (३) व कम् मिन् क़र्यैतिन्

अहलकनाहा फजा-अहा बअसुना ब-यातन् औ
हुम् का-इलून (४) फमा का-न दअ-वाहम

इज् जा-अहुम् बअसुना इत्ता अन् कालू
इन्ना कुन्ना आलिमीन (५) फ-ल-न-स-अ-ल-न-ल-

लजीन उंसि-ल इलैहिम् व ल-नस्-अलन्नल्-
मसलीन ॥ (६) फ-ल-नकस्सन्-त अलैहिम्

बिजिलिम्ब-व मा कुन्ना गा-इबीन (७)

सकुलत् मवाजीनुह फ - उलाई-क हुमुल्-

फ्र-उला - इकलजी - न खसिरू अन्फुसहुम्

७ सूर: आराफ़ ३६

सूर: आराफ़ मक्की है और इस में दो सौ छः आयतें और चौबीस रुकूअ हैं।

शुरू खुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

अलिफ़-लाम-मीम स्वाद। (१) (ऐ मुहम्मद ! यह) किताब (जो) तुम पर नाज़िल हुई है, इस से तुम को तंगदिल नहीं होना चाहिए। (यह नाज़िल) इस लिए (हुई है) कि तुम इस के ज़रिए से (लोगों को) डर सुनाओ और (यह) ईमान वालों के लिए नसीहत है। (२) (लोगो !) जो (किताब) तुम पर तुम्हारे परवरदिगार के यहां से नाज़िल हुई है, उस की पैरबों करो और इस के सिवा और साथियों की पैरबी न करो (और) तुम कम ही नसीहत कुबूल करते हो। (३) और कितनी ही बस्तियां हैं कि हम ने तबाह कर डालीं, जिन पर हमारा अज़ाब (या तो रात को) आता था, जबकि वे सोते थे, या (दिन को) जब वे क़ैलूला (यानी दोपहर को आराम) करते थे। (४) तो जिस वक़्त उन पर अज़ाब आता था, उन के मुंह से यही निकलता था कि (हाय !) हम (अपने ऊपर) जुल्म करते रहे। (५) तो जिन लोगों की तरफ़ पैगम्बर भेजे गये, हम उन से भी पूछेंगे और पैगम्बरों से भी पूछेंगे। (६) फिर अपने इल्म से उन के हालात बयान करेंगे और हम कहीं ग़ायब तो नहीं थे। (७) और उस दिन (आमाल का) तुलना बर-हूक है, तो जिन लोगों के (अमलों के) वज़न भारी होंगे, वे तो निजात पाने वाले हैं। (८) और जिन के वज़न हल्के होंगे, तो यही लोग हैं, जिन्होंने ने अपने को घाटे में डाला, इस लिए कि हमारी आयतों के बारे में बे-इंसाफ़ी करते थे। (९) और हमोंने ज़मीन में तुम्हारा ठिकाना बनाया और इस में तुम्हारे लिए रोज़ी के सामान पैदा किए (मगर) तुम कम ही शुक्र करते हो। (१०) ★

और हमोंने तुम को (शुरू में मिट्टी से) पैदा किया, फिर तुम्हारी सूरत-शकल बनायी, फिर फ़रिश्तों को हुक्म दिया कि आदम के आगे सज्दा करो, तो (सब ने) सज्दा किया, लेकिन इब्लीस, कि वह सज्दा करने वालों में (शामिल) न हुआ। (११) (खुदा ने) फ़रमाया, जब मैं ने तुझ को हुक्म दिया, तो किस चीज़ ने तुझे सज्दा करने से रोका। उस ने कहा कि मैं इस से अफ़ज़ल हूँ। मुझे तू ने आग से पैदा किया है और इसे मिट्टी से बनाया है। (१२) फ़रमाया, तू (बहिश्त से) उतर जा। तुझे मुनासिब नहीं कि यहां घमंड करे, पस निकल जा, तू ज़लील है। (१३) उस ने कहा कि

मुझे उस दिन तक मुहलत अता फरमा, जिस दिन लोग (ऊँचों से) उड़ाए जाएंगे। (१४) फरमाया, (अच्छा,) तुझ को मुहलत दी जाती है। (१५) (फिर) शैतान ने कहा कि मुझे तो तू ने मलूज्न किया ही है। मैं भी तेरे सीधे रास्ते पर उन (को गुमराह करने) के लिए बैदूंगा। (१६) फिर उन के आगे से और पीछे से और दाएं से और बाएं से (गरज हर तरफ से) आऊंगा (और उन की राह मारूंगा) और तू उन में अक्सर को शुक्रगुजार नहीं पायेगा। (१७) (खुदा ने) फरमाया, निकल जा यहां से पाजी मर्दूद। जो लोग उन में से तेरी पैरवी करेंगे, मैं (उन को और तुझ को जहन्नम में डाल कर) तुम सब से जहन्नम को भर दूंगा। (१८) और (हम ने) आदम (से कहा कि) तुम और तुम्हारी बीबी बहिश्त में रहो-सहो और जहां से चाहो (और जो चाहो) खाओ, मगर इस पेड़ के पास न जाना, वरना गुनाहगार हो जाओगे। (१९) तो शैतान दोनों को बहकाने लगा ताकि उन के सतर की चीजें, जो उन से छिपी थीं, खोल दे और कहने लगा कि तुम को तुम्हारे परवरदिगार ने पेड़ से सिर्फ इस लिए मना किया है कि तुम फरिश्ते न बन जाओ या हमेशा जीते न रहो। (२०) और उन से क्रसम खा कर कहा कि मैं तो तुम्हारा भला चाहने वाला हूं। (२१) गरज (मर्दूद ने) धोखा दे कर उन को (गुनाह की तरफ) खींच ही लिया, जब उन्होंने उस पेड़ (के फल) को खा लिया, तो उन के सतर की चीज खुल गयीं और वह बहिश्त से (पेड़ों के) पत्ते (तोड़-तोड़ कर) अपने ऊपर चिपकाने (और सतर छिपाने) लगे। तब उन के परवरदिगार ने उन को पुकारा कि क्या मैं ने तुम को इस पेड़ (के पास जाने) से मना नहीं किया था और बता नहीं दिया था कि शैतान तुम्हारा खल्लम-खुल्ला दुश्मन है। (२२) दोनों कहने लगे कि परवरदिगार! हम ने अपनी जानों पर जुल्म किया और अगर तू हमें नहीं बल्लेगा और हम पर रहम नहीं करेगा, तो हम तबाह हो जाएंगे। (२३) (खुदा ने) फरमाया, (तुम सब बहिश्त से) उतर जाओ! (अब से) तुम एक-दूसरे के दुश्मन हो और तुम्हारे लिए एक (खास) वक्त तक जमीन पर ठिकाना और (जिंदगी का) सामान (कर दिया गया) है। (२४) (यानी) फरमाया कि उसी में तुम्हारा जीना होगा और उसी में मरना, उसी में से (क्रियामत को ज़िदा कर के) निकाले जाओगे। (२५) ★

ऐ बनी आदम! हम ने तुझ पर पोशाक उतारी कि तुम्हारा सतर ढांके और (तुम्हारे बदन को) जीनत (दे) और (जो) परहेजगारी का लिबास (है)। वह सब से अच्छा है। ये खुदा की निशानियां हैं ताकि लोग नसीहत पकड़ें। (२६) ऐ बनी आदम! (देखना कहीं) शैतान तुम्हें

या बनी आद-म ला यफ्तिनन्कुमुशतानु कमा अख-र-ज म - व-वैकुम्
मिनत्जनति यन्विभु अन्हुमा लिबा-सहुमा लियुरि - यहुमा सीआतिहिमा।
इन्नहू थराकुम् हु-ब व कबीलुह मिन् हैषु ला तरौनहुम् इन्ना ज-अल्लश्-
— र- भौनिया अ लिल्लजी-न ला युअमिनून (२७) व इजा फ-अलू

प्राहि-श-तत् कालू व-जदना अलेहा आबा-अना
 वल्लाहु अ-म-रना बिहा ७ कुल् इन्नल्ला-ह
 ला यज्मुह बिल्फह-शा-इ ७ अ - तक्लून-न
 अ-लल्लाहि मा ला तअ-लमून (२८) कुल्
 अ-म - र रब्बी बिल्किस्ति ७ अक्रीमू
 वज्जहकुम् अिन्-द कुल्लि मस्जिदिव्वदअहू
 मुख्लिसीन लहुद्दीन ७ कमा ब-द-अकुम्
 त-अहून् ७ (२९) फरीकन् हदा व फरीकन्
 हक्-क अलेहिमुज्जलालतु ७ इन्नहुमुत्त-खजुश-
 शयातीन ओलिया-अ मिन् दूनिल्लाहि व
 यत्सबून अन्नहुम् मुहत्तदून (३०) या
 बनी आद-म खज्ज जीन-तकुम् अिन्-द कुल्लि

الْحَقُّوْا ذٰلِكَ حَقُّوْا ذٰلِكَ مِنْ اٰیٰتِ الْوَحْيِ لَكُمْ يٰۤاٰمَنُوْنَ ۝ يٰۤاٰمَنُوْنَ لَا يَخْبِتُكُمْ الشَّيْطٰنُ كَمَا اَخْرَجَ اٰبِيْكُمْ مِنَ الْجَنَّةِ يَوْمَ اَخْرَجَ اٰدَمًا مِنْهَا سَاوِيًّا اَمَّا اَنْتُمَا فَكُنْتُمَا زَوْجًا مِّنْ قَبْلُ مِنْ هٰذَا فَلَمَّا عَلِمَا اَنْتُمَا لَهَا اِثْمًا اَوَّلًا لَّيْسَ لَكُمَا عَلَيْهِمْ عَذَابٌ ۝ۭ وَّاِذَا قَالُوْا فَاجِدْ لَنَا مِنْ اٰتَالِهٖ اَنْتُمَا قَالُوْا اِنَّا نَعْلَمُ اَنْتُمَا لَهَا قُل لِّلّٰهِ اَلْاَمْرُ اَيُّهَا الَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ عَلٰى اَللّٰهِ اَلْتَوَكَّلُوْنَ ۝ قُل اَمْرٌ مِّنِّيْ بِالْغَيْبِ ۝ وَاَعْبُدُوْا وَنَعْبُدْ جَدَّ كُلِّ مَسْجُوْدٍ ۝ وَاَدْعُوْهُ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ۝ كَمَا بَدَأَكُمْ تَعْبُدُوْنَ ۝ فَرِيقًا هَدٰى وَفَرِيقًا حَقَّ عَلَيْهِمُ الضَّلٰلَةُ ۝ اِنَّهُمْ اتَّخَذُوا الشَّيْطٰنِ اَوْلِيَآءَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَيَسْتَبِيْنُوْنَ اَنْتُمْ تَعْبُدُوْنَ ۝ يٰۤاٰمَنُوْنَ اَدْرَأْتُمْ اَنْتُمْ زَيْنَكُمْ جَدَّ كُلِّ مَسْجُوْدٍ ۝ وَكُلًّا وَاَقْرَبُوْا وَاسْتَبِيْنُوْا اِنَّهٗ لَا يَهْدِي السَّبِيْلَ ۝ قُل مِّنْ حَزَنٍ زَيْنَةُ اللّٰهِ السَّيِّئِ اَخْرَجَ اٰدَمًا وَطٰهِيْرًا مِنَ الْجَنَّةِ مِنَ الْبَرِّ ۝ قُلْ مَنَ الْبَرِّ اَمَّا اَنْتُمْ فَاِنَّمَا تَسِيْرُوْنَ فِي السَّبِيْلِ ۝ اَلَّذِيْنَ تَاْمُرُوْنَ كَاَمْرِ اللّٰهِ ۝ قُل اِنَّمَا حَرَّمَ بَيْنَ الْفَرٰشِ مَا ظَهَرَ مِنْهَا ۝ مَا بَيْنَ ۝ وَالْاَرْحَامِ ۝ وَبَيْنَ الْبَغْيِ وَبَيْنَ الْحَقِّ ۝ وَانْ تَكُوْنُوْا بِاللّٰهِ مَوَالِمَ ۝ يَتَّقِلُ يَتَّقِلُ يَتَّقِلُ ۝ وَانْ تَكُوْنُوْا عَلٰى اللّٰهِ مَوَالِمًا ۝ وَكُلُّ

मस्जिदिव - व कुल वशरबू व ला तुस्त्रिफूँ इन्नहू ला युहिब्बुल -
 मुस्त्रिफ्रीन * (३१) कुल मन् हर - र-म जीनतुल्लाहिल्लती अख-र-ज
 लिब्बिबादिही वत्थियबाति मिनरिफिक ५ कुल हि-य लिल्लजी - न
 आमनू फ़िल् - ह्यातिदुन्या खालि-स - तुय्यौमल् - क्रियामति ५ कजालि - क
 नुफ़स्सिलुल् - आयाति लिकौमिय्यअलमून (३२) कुल इन्नमा हर-र-म
 रन्बियल् - फ़वाहि-श मा अ-ह-र मिन्हा व मा ब - त - न वल्इस्-म
 वल्बग् - य बिगैरिल्हक्कि व अन् तुशिरकू बिल्लाहि मा लम् युनजिजल्
 बिही सुल्तानव-व अन् तक्रूल अल्ल्लाहि मा ला तअलमून (३३)

बहका न दे, जिस तरह तुम्हारे मां-बाप को (बहका कर) बहिष्कृत से निकलवा दिया और उन से उन के कपड़े उतरवा दिए, ताकि उन से सतर उन को खोल कर दिखा दे। वह और उस के भाई तुम को ऐसी जगह से देखते रहते हैं, जहां से तुम उन को नहीं देख सकते। हम ने शैतानों को उन्हीं लोगों का साथी बनाया है, जो ईमान नहीं रखते। (२७) और जब कोई बे-हयाई का काम करते हैं, तो कहते हैं कि हम ने अपने बुजुर्गों को इसी तरह करते देखा है और खुदा ने भी हम को यही हुक्म दिया है। कह दो कि खुदा बे-हयाई के काम करने का हुक्म हरगिज नहीं देता। भला तुम खुदा के बारे में ऐसी बात क्यों कहते हो, जिस का तुम्हें इल्म नहीं। (२८) कह दो कि मेरे परवरदिगार ने तो इत्साफ़ करने का हुक्म दिया है और यह कि हर नमाज के वक्त सीधा (किब्ले की तरफ़) रुख किया करो और खास उसी की इबादत करो और उसी को पुकारो। उस ने जिस तरह तुम को शुरू में पैदा किया था, उसी तरह तुम फिर पैदा होगे। (२९) एक फ़रीक़ को तो उस ने हिदायत दी और एक फ़रीक़ पर गुमराही साबित हो चुकी। इन लोगों ने खुदा को छोड़ कर शैतानों को दोस्त बना लिया और समझते (यह) हैं कि हिदायत पाये हुए हैं। (३०) ऐ बनी आदम! हर नमाज के वक्त अपने को मुजय्यन (सुसज्जित) किया करो। और खाओ और पियो और बे-जा न उड़ाओ कि खुदा बे-जा उड़ाने वालों को दोस्त नहीं रखता। (३१) ★

पूछो तो, कि जो जीनत (ब आराइश) और खाने-पीने की पाक चीजें खुदा ने अपने बन्दों के लिए पैदा की हैं, उन को हराम किस ने किया है? कह दो कि ये चीजें दुनिया की जिंदगी में ईमान वालों के लिए हैं और क्रियामत के दिन खास उन्हीं का हिस्सा होंगी। इसी तरह खुदा अपनी आयतें समझने वालों के लिए खोल-खोल कर बयान फ़रमाता है। (३२) कह दो कि मेरे परवर-दिगार ने तो बे-हयाई की बातों को, जाहिर हों या छिपी हुई और गुनाह को और ना-हक़ ज़्यादती करने को हराम किया है और इस को भी कि तुम किसी को खुदा का शरीक बनाओ, जिस की उस ने कोई सनद नाज़िल नहीं की और इस को भी कि खुदा के बारे में ऐसी बातें कहो, जिन का तुम्हें

१. जीनत उस चीज को कहते हैं, जिस से सजावट की जाए जैसे लिबास। इन्हे अब्बास कहते हैं कि जाहिलियत के ज़माने में लोग काबे का तवाफ़ नंगे करते थे। खुदा ने उस से मना फ़रमाया और हुक्म दिया कि जब तवाफ़ को या मस्जिद में नमाज को आओ, तो कपड़ा पहन कर आओ, नंगे न आओ। इस से नमाज में पदों की चीजों को ढांकना फ़र्ज हो गया। इल्म वालों के नज़दीक हर हालत में सतरे औरत ढांकना फ़र्ज है, चाहे आदमी तन्हा ही क्यों न हो। कुछ ने कहा कि सजाने से मुराद कंधी करना और लुब्धू लगाना है, मगर वही पहली बात सही है। और अगर कंधी भी कर ली जाए और लुब्धू भी लगा ली जाए तो सजावट पर सजावट है। 'खाओ और पियो' के इर्शाद से मक़सद खुदा की नेमतों से फ़ायदा उठाना है यानी पाकीज़ा और सुधरी चीजों से, जो खुदा ने तुम्हारे ही लिए पैदा की हैं फ़ायदा उठाओ और खुदा का शुक्र अदा करो। एक हदीस में आया है कि खाओ और पियो और पहनो और सद्का दो, लेकिन न बे-जा उड़ाओ, न इतराओ, क्योंकि अल्लाह तआला को यह बात भली लगती है कि अपनी नेमत अपने बंदे पर देखे। जिस तरह पाक रोज़ी के खाने-पीने की इजाज़त है, उसी तरह बे-जा उड़ाने से मना किया गया है यानी बे-ज़रूरत खाना या पेट-भरे की हालत में खाना कि यह ज़्यादा है, फ़िज़ूल-खर्ची में दाख़िल है। यह आयत फ़िज़ूल खर्ची करने वालों के हक़ में एक डरावा है।

२. इस आयत से पाया जाता है कि जिस तरह खाने-पीने की चीजों और माल का उड़ाना हराम है, इसी तरह उन को छोड़ देना और उन से फ़ायदा न उठाना भी खुदा को ना-यसन्द है और सब पूछो तो यह खुदा की नेमतों (शेष पृष्ठ २४३ पर)

व लिकुल्लि उम्मतिव अ-जलुत् फ-इजा जा-अ अ-जलुहुम् ला यस्तअखिर-न
सा-अतव-व ला यस्तकिदमून (३४) या बनी आद-म इम्मा यअतियन्नकुम्
रसुलुम्-मिन्कुम् यकुस्तू-न अलंकुम् आयाती ॥ फ - मनिस्तका व अस् - ल-ह
फला खोफुत् अलेहिम् व ला हुम् यदजून (३५) वल्लजी-न कज्जबू
बिआयातिना वस्तकबरु अन्हा उला-इ-क

अस्हाबुन्नारि ८ हुम् फ्रीहा खालिदून
(३६) फ-मन् अज-लमु मिम्मनिफतरा
अ - लल्लाहि कजिबत् औ कज्ज - ब
बिआयातिही ८ उला - इ - क यनालुहुम्
नसीबुहुम् मिनल् - किताबि ८ हत्ता इजा
जा - अहुम् रसुलुना य - त - वफकीनहुम् ॥
कालू ऐ-न मा कुन्तुम् तदअ-न मिन्
दूनिल्लाहि ८ कालू जल्लू अन्ना व
शहिदू अला अन्कुसिहिम् अन्नहुम् कानू
काफिरीन (३७) कालदखुलू फ्री उममिन्
कद् ख-लत् मिन् कब्लिकुम् मिनल्जिन्नि

वल्इन्सि फिन्नारि ८ कुल्लमा द - ख - लत् उम्मतुल् - ल-अ-नत् उस्तहा
हत्ता इजददारकू फ्रीहा जमीअन् ॥ कालत् उख्राहुम् लिअलाहुम्
रब्बना हा-उला-इ अ-जल्लूना फ-आतिहिम् अजाबत् जिअ-फम् - मिनन्नारि ॥
काल लिकुल्लिन् जिअ-फु-व-व लाकिल्ला तअ-लमून (३८) व कालत् अलाहुम्
लिउख्राहुम् फमा कान लकुम् अलंना मिन् फजिलन् फजूल-अजा-व
बिमा कुन्तुम् तक्सिबून (३९) इन्ललजी-न कज्जबू बिआयातिना
वस्तकबरु अन्हा ला तुफतहु लहुम् अब्बाबुस्समा - इ व ला
यदखुलूनजन्न - त हत्ता यलिजल्-ज - मलु फ्री सम्मिल् - खियाति ८ व
कजालि-क नज्जि-ल-मुजिरीन (४०) लहुम् मिन् जहन्न-म मिहादु-व-व
मिन् - फ्रीकिहिम् शवाशिन् ८ व कजालि - क नज्जिज्जालिमीन (४१)

أَمْ لَمْ يَلْمِزْهُمْ أَمْ لَا فَأَجَابَ أَنَّهُمْ لَا يَلْمِزُونَ سَاءَ مَا يَحْكُمُونَ
يَعْنِي أَنَّهُ إِذَا يَأْتِيَهُمْ رَسُولٌ مُبَشِّرٌ يَقُولُ عَلَيْهِمْ إِنِّي أَنَا
أَمْرٌ وَأَنَّهُمْ لَا يَلْمِزُونَ عَلَيْهِمْ وَلَا يَلْمِزُونَ ۝ وَالَّذِينَ كَذَّبُوا
بِآيَاتِنَا وَاسْتَكْبَرُوا عَنْهَا أُولَئِكَ نُخَصِّصُ لَهُمْ فِيهَا عَذَابًا ۝
لَهُمْ أَطْعَامٌ وَمِنْ أَفْئِدَتِنَا عَلَى أَنْ يَكْفُرُوا وَأُولَئِكَ فِي أَسْوَءِ
الْمَكَامِلِ ۝ وَنُفِخُ فِي سُورَةٍ مِّنَ الْكِتَابِ عَلَى إِدَارَةِ يَدِهِمْ رَتْلًا فَهُمْ يَدُوعُونَ
قَالَ الَّذِينَ مَلَكَتْهُمْ يَدُوعُونَ مِّنْ دُونِ اللَّهِ قَالَوَا ضَلُّوا عَنَّا وَ
شَهِدُوا عَلَى أَنْفُسِهِمْ أَنَّهُمْ كَانُوا أَكْفَرًا مِّنْ هَٰؤُلَاءِ ۝ قَالَ الْغَافِلُونَ إِنَّهُمْ
مَدَّ عَصَاهُمْ فِي الْأَرْضِ ۝ وَالْجِبْرِ وَالْإِنسِ فِي النَّارِ كُلًّا ذَلَّلْنَا طَائِفَاتٍ
لَّهُمْ أَفْعَالًا مِّنْ أُولَئِكَ ۝ إِذَا كَانُوا فِيهَا يَسْتَفْتُونَ ۝ قَالَتْ أَأَعْرَضْتُمْ عَنْهُمْ
وَلَا تَأْمُرُوهُمْ أَنْ يُقِيمُوا الصَّلَاةَ وَهُمْ يُكَذِّبُونَ ۝ وَنَسُوا حَظًّا مِمَّا كَانُوا يَعْمَلُونَ
وَضَعُفًا وَلَكِنْ لَّا تُغْنِي عَنْهُمْ كَيْفَتُهُمْ وَلَا كَثْرَتُهُمْ وَلَا هُمْ يَرْجِئُونَ ۝
لَقَدْ كُنَّا مِن فِضْلِ الْكَوْنِ قَلِيلًا وَإِنَّمَا تَرَكُوا بِإِتْمَانٍ كَبِيرًا ۝
إِنَّ الْبُؤْسَ لَكَانَ فِي أَيْمَانِهِمْ وَاسْتَكْبَرُوا عَنْهَا لَقَدْ عَلِمْتُمْ لَعْنَةَ آدَمَ إِذْ
كَانَ يَقُولُ لِلْمَلَائِكَةِ أَقِمُوا الصَّلَاةَ لِلَّذِينَ آمَنُوا ۝ وَلِلَّذِينَ كَفَرُوا
عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ وَلِلَّذِينَ كَفَرُوا عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ وَلِلَّذِينَ كَفَرُوا عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝
وَلِلَّذِينَ كَفَرُوا عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ وَلِلَّذِينَ كَفَرُوا عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ وَلِلَّذِينَ كَفَرُوا
عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ وَلِلَّذِينَ كَفَرُوا عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ وَلِلَّذِينَ كَفَرُوا عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝

कुछ इत्म नहीं। (३३) और हर एक फ़िक्रों के लिए (मौत का) एक वक़्त मुक़रर है। जब वह वक़्त आ जाता है, तो न तो एक घड़ी देर कर सकते हैं, न जल्दी। (३४) ऐ बनी आदम! (हम तुम को यह नसीहत हमेशा करते रहे हैं कि) जब हमारे पैगम्बर तुम्हारे पास आया करें और हमारी आयतों तुम को सुनाया करें (तो उन पर ईमान लाया करो कि) जो शरूअ (उन पर ईमान ला कर) खुदा से डरता रहेगा और अपनी हालत ठीक रखेगा, तो ऐसे लोगों को न कुछ ख़ौफ़ होगा और न वे शमनाक होंगे। (३५) और जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया और उनसे सर-ताबी की, वही दोखली हैं कि हमेशा उस में (जलते) रहेंगे। (३६) तो उस से ज्यादा ज़ालिम कौन है, जो खुदा पर झूठ बांधे या उस की आयतों को झुठलाये, उन को उन के नसीब का लिखा मिलता ही रहेगा, यहां तक कि जब उन के पास हमारे भेजे हुए (फ़रिश्ते) जान निकालने आएंगे, तो कहेंगे कि जिन को तुम खुदा के सिवा पुकारा करते थे, वे (अब) कहां हैं? वे कहेंगे, (मालूम नहीं) कि वे हम से (कहां) ग़ायब हो गये? और इक़रार करेंगे कि बेशक वे काफ़िर थे। (३७) तो खुदा फ़रमाएगा कि जिन्होंने और इन्सानों की जो जमाअतें तुम से पहले हो गुज़री हैं, उन्हीं के साथ तुम भी जहन्नम में दाख़िल हो जाओ। जब एक जमाअत (वहां) दाख़िल होगी तो अपनी (मजहबी) बहन (यानी अपनी जैसी दूसरी जमाअत) पर लानत करेगी, यहां तक कि जब सब उस में दाख़िल हो जाएंगे, तो पिछली जमाअत पहली के बारे में कहेगी कि ऐ परवरदिगार! इन्हीं लोगों ने हम को गुमराह किया था, तो इन को जहन्नम की आग का दोगुना अज़ाब दे। खुदा फ़रमाएगा कि (तुम) सब को दोगुना (अज़ाब दिया जाएगा), मगर तुम नहीं जानते। (३८) और पहली जमाअत पिछली से कहेगी कि तुम को हम पर कुछ भी फ़ज़ीलत न हुई, तो जो (अमल) तुम किया करते थे उसके बदले में अज़ाब के मजे चखो। (३९) *

जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया और उन से सर-ताबी की, उन के लिए न आसमान के दरवाज़े खोले जाएंगे और न वे बहिश्त में दाख़िल होंगे, यहां तक कि ऊंट सूई के नाके में से निकल जाए।^१ और मुनाहगारों को हम ऐसी ही सज़ा दिया करते हैं। (४०) ऐसे लोगों के लिए (नीचे) बिछौना भी जहन्नम (की आग) का होगा और ऊपर से ओढ़ना भी (इसी का) और ज़ालिमों को

(पृष्ठ २४१ का शेष)

की ना-मुफ़्ती है। अगर खुदा किसी को अच्छी क्रिस्म की चीज़ें खाने-पीने-पहनने को दे, तो वह उन को छोड़ कर मामूली चीज़ों को क्यों अपनाये? ऐसा करना खुदा की सुन्नत के खिलाफ़ है। उस ने तमाम खाने-पीने और पहनने की और ज़ेब व ज़ीनत की चीज़ें हलाल की हैं और जब तक कोई गरजी मजबूरी इकावट न बने, उन से फ़ायदा उठाना चाहिए। इमाम फ़रूक़द्दीन राज़ी रह० कहते हैं कि इस आयत में हर क्रिस्म के लिबास और ज़ेवर दाख़िल हैं। अगर घरों के लिए सोने और रेशम का पहनना हराम न होता तो आयत के आम होने से इस का मतलब उन पर सही ठहरता। गरब खाने-पीने और ज़ीनत की बेहतर और अच्छी चीज़ों को जुल्द (दुनिया को छोड़ देने) की बुनियाद पर छोड़ देना शलती है। हां, अगर कोई ब्राकसारी के ज़बे से अच्छे कपड़े न पहने और फटे-पुराने पहनने लगे, तो जायज़ है।

१. यह हकीक़त से मुताल्लिक़ है कि न ऊंट सूई के नाके में से निकल सके, न कुपकार बहिश्त में दाख़िल हों।

वल्लजी - न आसन् व अमिलुस्सालिहाति ला नुकल्लिफु नपसन् इल्ला
बुस्-अहा / उला-इ-क अस्हाबुलजन्नति ८ हुम् फ्रीहा खालिदून (४२) व
न-अ-ना मा फ्री सुदूरिहिम् मिन् गिल्लिन् तजरी मिन् तह्तिहिमुल्-अन्हार ९
व कालुल्-हम्दु लिल्लाहिल्लजी हदाना लिहाजा व मा कुन्ना लिनह-तदि-य

लौला अन् हदानल्लाहु ८ ल-कद् जा-अत्
रुसुलु रब्बिना बिल्हक्कि ७ व नूद् अन्
तिल्कुमुल्-जन्-नतु ऊरिस्तुमहा बिमा कुन्तुम्
तअ-मलून (४३) व नादा अस्हाबुल्-
जन्नति अस्हाबन्नारि अन् कद् व-जद्-ना मा
व-अ-दना रब्बुना हक्कन् फ-हल् वजतुम् मा
व-अ-द रब्बुकुम् हक्कन् ७ कालू न - अम् ८
फ-अ-ज-जन् मुअज्जिनुम् बैनहुम् अल्लअ-नतुल्लाहि
अ-ल्-अ-जालिमीन ११ (४४) अल्लजी-न यसुद्दून
अन् सबीलिल्लाहि व यग्नूनहा अि-व-जन् ८
व हुम् बिल्आखिरति काफिरून
१२ (४५) व बैनहुमा हिजाबुत् ८ व अ-ल-ल्-

الْحٰكِمِينَ ۝۷۳ اُولَٰئِكَ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ هُمْ فِيهَا
خٰلِدُونَ ۝۷۴ وَنَزَعْنَا مَا فِى صُدُورِهِمْ مِنْ عَلٰى تَجْعَلُوْنَ
تَحِيَّاتٍ لَّا تَهْذُوْنَ ۝۷۵ وَقَالُوا الصَّلٰوةُ الٰهٰى هٰذَا كُنْ اِلٰهًا ۝۷۶ وَمَا اَلٰهًا
اِغْتَدٰى كَوْلًا اَنْ هٰذَا مَا لَلّٰهِ اَقْدَرُ جَآءَتْ رُسُلٌ مِّنْ رَبِّهَا بِالْحَقِّ
وَنُودُوْا اَنْ وَلَكُمْ اِلٰهَةٌ اُوْرَثُوْهُمُا بِمَا كُنتُمْ تَعْبُدُوْنَ ۝۷۷
وَنَادٰى اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ اَصْحٰبُ النَّارِ اَنْ يَّجِدُوْا مَعًا وِعْدًا
رَّحِيْمًا ۝۷۸ اَقْبَلْ وَجِدْهُمْ مَّا وَعَدَ رَبُّكُمْ حَقًّا ۝۷۹ قَالُوْا هٰمْ
مُؤَقِّنٌ يَّبْتَغُوْنَ اَنْ يَّخْلَعُوْا عَنِ الْعٰلِيْنَ ۝۸۰ اَلَّذِيْنَ يَعْلَمُوْنَ
عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَيَعْبُوْهُ اِجْمَاعًا ۝۸۱ وَمَنْ اِلٰهٌ اَخْرَجُوْا ۝۸۲
بَيْنَهُمَا حَبَابٌ ۝۸۳ وَعَلِ الْاَعْرَابِ يَحٰلُ يَوْمَئِذٍ ۝۸۴ وَلَا يَسْمَعُوْنَ
۝۸۵ اَنَادُوْا اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ سَلٰمٌ عَلٰىكُمْ ۝۸۶ لَآ يَدْخُلُهَا اَنْفُسٌ مِّنْ
وَلَا اَعْرَابٍ ۝۸۷ اَصْحٰبُ النَّارِ اَلَا يَرٰوْنَ اَنْ يَّجْعَلُوْا
مِمَّ الْعٰرِبُ الْعٰلِيْنَ ۝۸۸ وَنَادٰى اَصْحٰبُ الْاَعْرَابِ يَحٰلُ يَوْمَئِذٍ
۝۸۹ يَسْمَعُوْنَ ۝۹۰ قَالُوْا مَا اَعْطٰى عَلٰىكُمْ جَسَعًا ۝۹۱ وَاَلَيْسَ لَكُمْ
اَعْوَادُ ۝۹۲ اَلَّذِيْنَ اَقْسَمْتُمْ لَا تَاْتِيٰهُمْ اَللّٰهُ بِرَحْمَةٍ ۝۹۳ اَوْخٰوُ الْجَنَّةِ لَا
خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا اَنۡتَرٰهُمۡ سَحَرٌ ۝۹۴ وَنَادٰى اَصْحٰبُ الْاَعْرَابِ
۝۹۵ اَلَّذِيْنَ اَقْسَمْتُمْ اَعْيٰبًا مِّنَ السَّحَرِ اَوْ مِمَّا رَزَقَكُمۡ اللّٰهُ ۝۹۶ قَالُوْا اِنْ

अम्-राफि रिजालुय्यअ-रिफून कुल्लम् - बिसीमाहुम् ८ व नादो अस्हाबुल् -
जन्नति अन् सलामुत् अलैकुम् लम् यदखुलूहा व हुम् यत्मअ - न
(४६) व इजा सुरिफत् अब्सारहुम् तिल्का - अ अस्हाबिन्नारि ११
कालू रब्बना ला तज-अल्ना म-अल् - क्रौमिअजालिमीन (४७) व
नादा अस्हाबुल् - अम्-राफि रिजालुय्यअ-रिफून-हुम् बिसीमाहुम् कालू मा
अग्नूना अन्कुम् जम्शुकुम् व मा कुन्तुम् तस्तबिबरून (४८)
अ - हा - उला - इल्लजी - न अक्सस्तुम् ला यनलुहुमुल्लाहु बिरह - मतिन् १२
उदखुलुल्-जन्न-त् ला खौफुन् अलैकुम् व ला अन्तुम् तह-जन्नून (४९)

हम ऐसी ही सजा देते हैं। (४१) और जो लोग ईमान लाये और नेक अमल करते रहे और हम (अमलों के लिए) किसी शास्त्र को उस की ताकत से ज्यादा तमलीक़ देते ही नहीं। ऐसे ही लोग जन्नत वाले हैं (कि) उस में हमेशा रहेंगे। (४२) और जो कीने (कपट) उन के सीनों में होंगे, हम सब निकाल डालेंगे उन के (महलों के) नीचे नहरें बह रही होंगी। और कहेंगे कि खुदा का शुक्र है, जिस ने हम को यहां का रास्ता दिखाया और अगर खुदा हम को रास्ता न दिखाता तो हम रास्ता न पा सकते। बेशक हमारे परवरदिगार के रसूल हक़ बात ले कर आये थे और उस (दिन) मुनादी कर दी जाएगी कि तुम उन आमाल के बदले में जो (दुनिया में) करते थे, इस बहिश्त के बारिस बना दिये गये हो ● (४३) और जन्नत वाले दोजखियों से पुकार कर कहेंगे कि जो वायदा हमारे परवरदिगार ने हम से किया था, हम ने उसे सच्चा पा लिया। भला जो वायदा तुम्हारे परवरदिगार ने तुम से किया था, तुम ने भी उसे सच्चा पाया? वे कहेंगे, हां, तो (उस वक़्त) उन में एक पुकारने वाला पुकार देगा कि बे-इन्साफ़ों पर खुदा की लानत, (४४) जो खुदा की राह से रोकते और उस में कज़ी ढूँढते और आखिरत से इन्कार करते थे (४५) उन दोनों, यानी जन्नत और दोजख के दमियान (आराफ़ नाम की) एक दीवार होगी, और आराफ़ पर कुछ आदमी होंगे जो सब को उन की सूरतों से पहचान लेंगे, तो वे जन्नत वालों को पुकार कर कहेंगे कि तुम पर सलामती हो। ये लोग (अभी) जन्नत में दाखिल तो नहीं हुए होंगे, मगर उम्मीद रखते होंगे। (४६) और जब उन की निगाहें पलट कर दोजख वालों की तरफ़ जाएंगी, तो अज़ करेंगे कि ऐ हमारे परवरदिगार! इस को ज़ालिम लोगों के साथ (शामिल) न कीजिये। (४७) ★

और आराफ़ वाले (काफ़िर) लोगों को, जिन्हें उन की सूरतों से शानसब करते होंगे, पुकारेंगे और कहेंगे (कि आज) न तो तुम्हारी जमाअत ही तुम्हारे कुछ काम आयी और न तुम्हारा तकब्बुर (यानी घमंड ही फ़ायदेमंद हुआ)। (४८) (फिर मोमिनों की तरफ़ इशारा कर के कहेंगे) क्या ये वही लोग हैं, जिन के बारे में तुम कस्में खाया करते थे कि खुदा अपनी रहमत से उन की दस्तगीरी नहीं करेगा, (तो मोमिनो!) तुम बहिश्त में दाखिल हो जाओ। तुम्हें कुछ डर नहीं और न तुम को

व नादा अस्थाबुल्लारि अस्थाबल्-जन्नति अन् अफ्रीजू अलैना मिनल्मा-इ ओ
मिम्मा र-ज-ककुमुल्लाहु ॥ कालू इन्नल्ला - ह हरं-महुमा अ - लल्काफिरीन ॥
(५०) अल्लखीनत्त-खजू दीनहुम् लह्वं-व लअिबं-व गरंतहुमुल्-ह्यातुदुन्या
फत्थी-म नत्साहम् कमा नसू लिक्का-अ यौमहिम् हाजा ॥ व मा कानू

बिआयातिना यज्हुद्न (५१) व ल-कद्
जिअ्नाहुम् बिकिताबिन् फ़स्सल्नाहु अला
अिल्मिन् हुदव-व रह्-म-तल्-लिकौमिन् यिअ्मिन् नून
(५२) हल् यच्चुल्-न इल्ला तअवीलहु

यो-म यञ्ती तञ्वीलुहू यक्लुल्लजी-न नसूह
मिन् कञ्जु कद् जा-अत् रुसुलु रब्बिना
बिल्हक्कि ८ फ - हल्लना मिन् शु-फ-आ-अ
फ-यश्फञ्जु लना औ नुरददु फ-नअ-म-ल गैरल्लजी
कुन्ना नअ-मलु ७ कद् खसिरु अन्फुसहुम् व
ज्जल-ल अन्हुम् मा कान् यफतरुन ★ (५३)

कुछ रंज व शम होगा। (५६) और दोखी जन्तियों से (गिड़गिड़ा कर) कहेंगे किसी क्रूर हम पर पानी बहाओ या जो रोखी खुदा ने तुम्हें दी है, उन में से (कुछ हमें भी दो)। वे जवाब देंगे कि खुदा ने बहिश्त का पानी और रोखी काफ़िरों पर हराम कर दी है, (५७) जिन्होंने अपने दीन को तमाशा और खेल बना रखा था और दुनिया की जिदगी ने उन को धोखे में डाल रखा था, तो जिस तरह ये लोग उस दिन के आने को भूले हुए थे और हमारी आयतों से मुँक़िर हो रहे थे, उसी तरह आज हम भी उन्हें भुला देंगे। (५८) और हम ने उन के पास किताब पहुंचा दी है, जिस को इल्म व दानिश के साथ खोल-खोल कर बयान कर दिया है (और) वह भोमिन लोगों के लिए हिदायत और रहमत है। (५९) क्या ये लोग उस से अज़ाब के वायदे के इतिज़ार में हैं? जिस दिन वह वायदा आ जाएगा, तो जो लोग उस को पहले से भूले हुए होंगे, वे बोल उठेंगे कि बेशक हमारे परवर-दिगार के रसूल हक ले कर आये थे। भला (आज) हमारे कोई सिफ़ारिशी हैं कि हमारी सिफ़ारिश करें वा हम (दुनिया में) फिर लौटा दिए जाएं कि जो (बुरा) अमल हम (पहले) करते थे, (वह न करें, बल्कि) उन के सिवा और (नेक) अमल करें। बेशक उन लोगों ने अपना नुक़सान किया और जो कुछ ये झूठ गढ़ा करते थे, उन से सब जाता रहा। (५३) *

कुछ शक नहीं कि तुम्हारा परवरदिगार खुदा ही है, जिस ने आसमानों और ज़मीन को छः दिन में पैदा किया फिर अर्श पर जा ठहरा। वही रात को दिन का लिबास पहनाता है कि वह उसके पीछे दौड़ता चला आता है और उसी ने सूरज और चांद और सितारों को पैदा किया। सब उसी के हुक्म के मुताबिक़ काम में लगे हुए हैं। देखो सब मल्लूक भी उसी की है और हुक्म भी (उसी का है)। यह खुदा-ए-रब्बुल आलमीन बड़ी बरक़त वाला है। (५४) (लोगो!) अपने परवरदिगार से आजिजी से और चुपके-चुपके दुआएं मांगा करो। वह हद से बढ़ने वालों को दोस्त नहीं रखता। (५५) और मुल्क में इस्लाह के बाद ख़राबी न करना और खुदा से ख़ौफ़ करते हुए और उम्मीद रख कर दुआएं मांगते रहना। कुछ शक नहीं कि खुदा की रहमत नेकी करने वालों से क़रीब है। (५६) और वही तो है जो अपनी रहमत (यानी बारिश) से पहले हवाओं को खुशख़बरी (बना कर) भेजता है, यहां तक कि जब वह भारी-भारी बादलों को उठा लाती है, तो हम उस को एक मरी हुई बस्ती की तरह हांक देते हैं। फिर बादल में मेंह (वर्षा) बरसाते हैं, फिर मेंह से हर तरह के फल पैदा करते हैं। इसी तरह हम मुदाओं (ज़मीन से) जिदा कर के बाहर निकालेंगे। (ये आयतें इस लिए बयान

१. खुदा तो भूलने वाला नहीं है। मतलब यह है कि हम उन के साथ ऐसा मामला करें जैसा कोई किसी को भुला देता है, यानी वे दोख़ में जलते रहेंगे और हम उन को पूछेंगे भी नहीं।
२. असल लफ़्ज़ 'इस्तेबा' इस्तेमाल हुआ है, जिस का मतलब डिवख़नरी में बुलंद होने और ठहरने के हैं। चारों इशाम और तमाम मुहिदियों का खुदा के बारे में यह मज़हब है कि वह अर्श पर मुस्तवी यानी ठहरा हुआ है और वह ठहरना ऐसा है, जो उस की शान के लायक है और जिस की असल सूरत मालूम नहीं। अल्लाह तआला की जो सिफ़तें हैं, उन पर लफ़्ज़ तो वही बोले जाते हैं, जो मल्लूक की सिफ़तों पर बोले जाते हैं, जैसे खुदा को भी कहते हैं कि देखता है, इन्सान को भी कहते हैं कि देखता है। खुदा को भी कहते हैं कि सुनता है, इन्सान को भी कहते हैं कि सुनता है, लेकिन खुदा का देखना और सुनना और तरह का है। मल्लूक की सिफ़तों का खुदा की सिफ़तों से कोई मेल नहीं और क़ुरआन की यह आयत इस पर दलील है—'ले-स कनिस्सि-ही शेउन'—यानी कोई उस के मिल्द नहीं। पस जब कोई चीज़ खुदा जैसी नहीं तो खुदा को 'मुजस्सम' कैसे कह सकते हैं?

(शेष पृष्ठ २४६ पर)

बल-ब-नदुसामिबु बलबु नबानुह बिइजिन रबिही ६ बल्लजी लबु - स ला
 बलबु इला नकिबु ७ कजाति-क मुसरिफु-बायाति लिक्कीमिदयबकुन ७ (५८)
 न-कृ बल्लला नूह इला कोमिही क-का-ल याकोमिअ-बुदुल्ला-ह मा लकुम्
 मिन् इलाहिन् गैरह ७ इन्नी अल्लाफ अलेकुम् अजा - ब योमिन् अजीम
 (५९) कालत्मलउ मिन् कोमिही इन्ना

न-नरा-क फी जलालिम्-मुदीन (६०) का-ल
 या कोमि ले-स बी जलालनु ब-ब लाकिन्नी
 रसूलुम् - मिरंबिबु - आल - मीन (६१)

उबल्लिगुकुम् रिसालाति रब्बी व अन्सहु लकुम्
 व बज-समु मिनल्लाहि मा ला तअ-लमून (६२)

ब-ब अजिलुम् अन् जा-अकुम् जिकरुम्-मिर-
 रन्बिकुम् अला रजुलिम्-मिन्कुम् लियुन्जि-रकुम्
 बलितसकू व ल-अल्लकुम् तुहमून (६३)

क-कज्जबुह क-अन्जनाहु बल्लजी-न म-अह
 फिल्लिफुल्लि व अररकनल्लजी - न कज्जबु
 बिबायातिना ७ इन्नुहम् कानू कोमन् अमीन
 ७ (६४) व इला आदिन् अल्लाहुम्

हुदन् ७ का-ल या कोमिअ-बुदुल्ला - ह मा लकुम् मिन् इलाहिन् गैरह
 ब-कना तलकून (६५) कालल्-मलउल्लजी-न क-फरु मिन् कोमिही इन्ना
 स-नरा-क फी सफाहतिव-व इन्ना ल-नजुन्नु-क मिनल्-काजिबीन (६६) का-ल

या कोमि ले-स बी सफाह-नु ब-ब लाकिन्नी रसूलुम्-मिरंबिबु-आल-मीन (६७)
 उबल्लिगुकुम् रिसालाति रब्बी व अ-न लकुम् नासिहुन् अमीन (६८)
 ब-ब अजिलुम् अन् जा-अकुम् जिकरुम्-मिरंबिबु-अला रजुलिम्-मिन्कुम्
 लियुन्जि-रकुम् ७ कज्जकू इज् ज-अ-लकुम् लु-ल-फा-अ मिम्बअ - दि कोमि

नूहिव-व आहकुम् फिल्लिफुल्लि बस्त-तुव ७ फज्जकू आला-अल्लाहि ल-अल्लकुम्
 तुप्सिहून (६९) कालू अजिअतना लिनअ-बुदुल्ला-ह वह-वह व न-अ-र मा कान
 य-बुहु आबा-उना ७ फज्जतिना बिमा तअिदुना इन् कुन्-त मिनस्सादिकीन (७०)

وَلَقَدْ عَلِمْتُمُ الْمَوْتَ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ يُحْيِي وَيُمِيتُ ۚ وَمَا لَكُم مِّنْ ذِكْرِ ۚ
 وَلَقَدْ عَلِمْتُمُ الْمَوْتَ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ يُحْيِي وَيُمِيتُ ۚ وَمَا لَكُم مِّنْ ذِكْرِ ۚ
 مَا تَدْرُسُونَ ۚ وَلَقَدْ عَلِمْتُمُ الْمَوْتَ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ يُحْيِي وَيُمِيتُ ۚ وَمَا لَكُم مِّنْ ذِكْرِ ۚ
 قَالَ لَوْلَا ذِكْرُ اللَّهِ فِي هَٰذَا لَآتَيْنَاكَ مِثْلَ هَٰذَا مِن مَّثَلٍ ۚ وَلَقَدْ عَلِمْتُمُ الْمَوْتَ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ يُحْيِي وَيُمِيتُ ۚ وَمَا لَكُم مِّنْ ذِكْرِ ۚ
 لَيْسَ فِي صَلَاتِهِ لَكُم مِّنْ ذِكْرِ ۚ وَلَقَدْ عَلِمْتُمُ الْمَوْتَ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ يُحْيِي وَيُمِيتُ ۚ وَمَا لَكُم مِّنْ ذِكْرِ ۚ
 يَسْأَلُونَكَ عَنِ الْمَوْتِ ۚ قُلْ هُوَ عِنْدَ رَبِّي ۚ إِنَّمَا أُخْبِرْتُمْ بِهِ لِكُلِّ قَوْمٍ مَّوَدَّةَ يَوْمٍ ۚ وَمَا لَكُم مِّنْ ذِكْرِ ۚ
 إِنَّمَا أُخْبِرْتُمْ بِهِ لِكُلِّ قَوْمٍ مَّوَدَّةَ يَوْمٍ ۚ وَمَا لَكُم مِّنْ ذِكْرِ ۚ
 لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ۚ وَلَقَدْ عَلِمْتُمُ الْمَوْتَ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ يُحْيِي وَيُمِيتُ ۚ وَمَا لَكُم مِّنْ ذِكْرِ ۚ
 وَأَفَرَأَيْتُمُ الْمَوْتِ ۚ لَكُم مِّنْ ذِكْرِ ۚ وَلَقَدْ عَلِمْتُمُ الْمَوْتَ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ يُحْيِي وَيُمِيتُ ۚ وَمَا لَكُم مِّنْ ذِكْرِ ۚ
 إِلَىٰ مَا تَعْلَمُونَ ۚ وَلَقَدْ عَلِمْتُمُ الْمَوْتَ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ يُحْيِي وَيُمِيتُ ۚ وَمَا لَكُم مِّنْ ذِكْرِ ۚ
 هُوَ الَّذِي يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ ۚ وَهُوَ يَخْتَارُ ۚ وَلَقَدْ عَلِمْتُمُ الْمَوْتَ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ يُحْيِي وَيُمِيتُ ۚ وَمَا لَكُم مِّنْ ذِكْرِ ۚ
 فِي سَعَادَتِهِ ۚ وَلَقَدْ عَلِمْتُمُ الْمَوْتَ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ يُحْيِي وَيُمِيتُ ۚ وَمَا لَكُم مِّنْ ذِكْرِ ۚ
 سَعَادَتِهِ ۚ وَلَقَدْ عَلِمْتُمُ الْمَوْتَ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ يُحْيِي وَيُمِيتُ ۚ وَمَا لَكُم مِّنْ ذِكْرِ ۚ
 وَأَلَمْ تَكُنْ لَهُ مِثْلَ مَا يَخْلُقُ ۚ وَهُوَ عَلِيمٌ ۚ وَلَقَدْ عَلِمْتُمُ الْمَوْتَ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ يُحْيِي وَيُمِيتُ ۚ وَمَا لَكُم مِّنْ ذِكْرِ ۚ
 عَلَىٰ رَجُلٍ يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ ۚ وَهُوَ عَلِيمٌ ۚ وَلَقَدْ عَلِمْتُمُ الْمَوْتَ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ يُحْيِي وَيُمِيتُ ۚ وَمَا لَكُم مِّنْ ذِكْرِ ۚ
 قَوْمٌ يَّوْمٌ ۚ وَكَانَ فِي السَّحَابِ بِخُفَاهُ ۚ فَكَانَ كَذِبًا ۚ وَلَقَدْ عَلِمْتُمُ الْمَوْتَ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ يُحْيِي وَيُمِيتُ ۚ وَمَا لَكُم مِّنْ ذِكْرِ ۚ
 تَسْأَلُونَكَ عَنِ الْمَوْتِ ۚ قُلْ هُوَ عِنْدَ رَبِّي ۚ إِنَّمَا أُخْبِرْتُمْ بِهِ لِكُلِّ قَوْمٍ مَّوَدَّةَ يَوْمٍ ۚ وَمَا لَكُم مِّنْ ذِكْرِ ۚ

की जाती है) ताकि तुम नसीहत पकड़ो। (५७) जो जमीन पाकीजा (है), उस में से सब्जा भी परवरदिगार के हुकम से (अच्छा ही) निकलता है और जो खराब है, उस में से जो कुछ निकलता है, नाकिस (खराब) होता है। इसी तरह हम आयतों को शुक्रगुजार लोगों के लिए फेर-फेर कर बयान करते हैं। (५८) हम ने नूह को उन की क्रीम की तरफ भेजा, तो उन्होंने (उस से) कहा, ऐ मेरी बिरादरी के लोगो! खुदा की इबादत करो, उस के सिवा तुम्हारा कोई माबूद नहीं। मुझे तुम्हारे बारे में बड़े दिन के अजाब का (बहुत ही) डर है। (५९) तो जो उन की क्रीम में सरदार थे, वे कहने लगे कि हम तुम्हें खुनी गुमराही में (पड़) देखते हैं। (६०) उन्होंने ने कहा, ऐ क्रीम! मुझ में किसी तरह की गुमराही नहीं है, बल्कि मैं दुनिया के परवरदिगार का पैगम्बर हूँ। (६१) तुम्हें अपने परवरदिगार के पैगाम पहुंचाता हूँ और तुम्हारी खैर-स्वाही करता हूँ और मुझ को खुदा की तरफ से ऐसी बातें मालूम हैं, जिन से तुम बे-खबर हो। (६२) क्या तुम को इस बात से ताज्जुब हुआ है कि तुम में से एक शरूस के हाथ तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से तुम्हारे पास नसीहत आयी, ताकि वह तुमको डराये और ताकि तुम परहेजगार बनो और ताकि तुम पर रहम खाया जाए। (६३) मगर उन लोगों ने उन को झुठलाया, तो हम ने नूह को और जो उन के साथ कश्ती में सवार थे, उन को तो बचा लिया और जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया था, उन्हें डुबा दिया। कुछ शक नहीं कि वे अंधे लोग थे। (६४) *

और (इसी तरह) आद क्रीम की तरफ उन के भाई हूद को भेजा। उन्होंने कहा कि भाइयो! खुदा ही की इबादत करो, उस के सिवा तुम्हारा कोई माबूद नहीं, क्या तुम डरते नहीं? (६५) तो उन की क्रीम के सरदार, जो काफिर थे, कहने लगे कि तुम हमें बेवकूफ नजर आते हो और हम तुम्हें झूठा स्याल करते हैं। (६६) उन्होंने ने कहा कि भाइयो! मुझ में बेवकूफी की कोई बात नहीं है, बल्कि मैं रब्बुल आलमीन का पैगम्बर हूँ। (६७) मैं तुम्हें खुदा के पैगाम पहुंचाता हूँ और तुम्हारा अमानतदार खैर-स्वाह हूँ। (६८) क्या तुम को इस बात से ताज्जुब हुआ है कि तुम में से एक शरूस के हाथ तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से तुम्हारे पास नसीहत आयी, ताकि वह तुम्हें डराये और याद तो करो जब उस ने तुम को नूह की क्रीम के बाद सरदार बनाया और तुम्हें फेलाव ज्यादा दिया, पस खुदा की नेमतों को याद करो, ताकि निजात हासिल करो। (६९) वे कहने लगे, क्या तुम हमारे पास इस लिए आये हो कि हम अकेले खुदा ही की इबादत करें और जिन को हमारे बाप-दादा पूजते चले आए हैं, उनको छोड़ दें? तो अगर सच्चे हो, तो जिस चीज से हमें डराते हो, उसे ले आओ। (७०)

(पृष्ठ २४७ का शेष)

मुजस्सम चीज की कैफियत मालूम होती है और खुदा की किसी सिफ़त की कैफियत मालूम नहीं। कोई शरूस नहीं बता सकता कि खुदा का देखना-सुनना किस तरह का है, क्योंकि न उस की ऐसी आंखें हैं, जिस तरह की हम रखते हैं, न ऐसे कान जिस तरह के हमारे हैं। पस जब उस का देखना और सुनना ही ऐसा है कि उस की कैफियत मालूम नहीं और वह उसी तरह का होगा, जैसा उस की शान है, तो उस के ठहरने की सूरत भी किसी को मालूम नहीं और वह भी उसी तरह का होगा, जैसे उस की शान को जंचता हो। हैरत की बात है कि लोग खुदा में दूसरी सिफ़तें तो जानते हैं, उन से उस को मुजस्सम करार नहीं देते, हालांकि मसलूक में उन सिफ़तों के लिए 'जिस्मियत' लाज़िम है, लेकिन 'इस्तबा' के लिए उस का मुजस्सम होना करार देते हैं और इस वजह से उस (शेष पृष्ठ २४१ पर)

काल कद् व-क-अ अलकुम् मिररब्बिकुम् रिज्जु-व-व ग-ज्ज-बुत् अतुजादिलूननी की
अस्मा-इत् सम्मंतुमूहा अन्तम् व आबा-उकुम् मा नज्जलल्लाहु बिहा मिन्
सुल्तानिन् फन्तजिह् इन्नी म-अकुम् मिनल्-मुन्तजिरीन (७१) फ-अज्जनाहु
वल्जजी-न म-अहु बि-रह्मतिम्-मिन्ना व कन्तु-अ-ना दाबिरल्लजी-न कज्जबू

बिआयातिना व मा कानू मुअ्मिनीन
★ (७२) व इला समू - द अस्साहुम्
सालिह्व काल या कौमिअ-बुदुल्ला-ह मा
लकुम् मिन् इलाहिन् गैरूह कद्
ज-अत्कुम् बय्यिनतुम्-मिररब्बिकुम् हाजिही
नाकतुल्लाहि लकुम् आय-तुन् फ-जल्हा
तअकुल् की अज्जिलाहि व ला त-मस्सूहा
बिस-इन् फयअ-खु-जकुम् अजाबुत् अलीम
(७३) कज्जकुरू इज् ज-अ - लकुम्
खु-लफा-अ मिम्बअ-दि आदिव-व बव्व-अकुम्
फिल्अज्जि तत्तखिज्ज-न मिन् सुह्लिहा कुसूरव-व
तन्हितूनल् - जिबा - ल बुयूतन् ८ फज्जकुरू
आला-अल्लाहि व ला तअ-सौ फिल्अज्जि मुफ्सीदीन (७४) कालल्म-लउल्-

مَا كَانَ يَمْلِكُ آيَاتُنَا أَنْ نُنَزِّلَ الْإِنْسَانَ مِنْ السَّمَاءِ أَنْ يَكُونَ مِنَ الْغَائِبِينَ
قَالَ كَذَّبْتُمْ عَلَيْكُمْ مِنْ رَبِّكُمْ وَجَسَّ الْإِنْسَانُ لَكُمْ لُطْفًا
فِي آيَاتِنَا وَلَكِنَّكُمْ كَفَرْتُمْ بِهَا فَكُنْتُمْ مِنَ الْغَائِبِينَ
سُلْطٰنٌ فَانْظُرْ إِلَىٰ مَعَاذٍ مِنَ الشَّظْوَةِ ۖ فَانْجِبْهُ
وَالَّذِينَ مَعَهُ بِحُجَّتِهِمْ وَمَا أَطْعَمُوا دَابِرَ الْوَيْلِ لَكُمْ بِآيَاتِنَا
مَا كَانُوا مُؤْمِنِينَ ۖ وَلَٰكِنْ كُنْتُمْ أَفْوَاحًا ۖ كَالَّذِينَ تَقُولُ مَا نَسْمَعُ
لَهُ مَا نَكْنُ مِنْهُ إِلَّا عَنَّا ۖ فَنَادَىٰ ذُو الْعَرْشِ مِنْ رَبِّكَ لَعْنَةُ
رَافِعَةِ اللَّهِ لَكُلِّ وَاحِدَةٍ ۖ فَذُنُوبُنَا كُلِّ فِي آيَاتِ اللَّهِ وَلَا تَسْمَعُوا
بِسْمِهِ قِيَامًا لَكُمْ مِنْ رَبِّكُمْ ۖ وَادْعُوا إِلَىٰ جَعَلَكُمْ عَذَابًا
مِنْ بَعْدِ عَذَابِكُمْ ۖ وَادْعُوا إِلَىٰ الْآيَاتِ ۖ فَتُحْذَرُونَ مِنْ سُلْطٰنِ الْغَوَا
وَالَّذِينَ الْبَحَالِ الْيَوْمَ ۖ كَذْكُرُوا الْآيَاتِ ۖ وَلَا تَسْمَعُوا
فِي الْأَرْضِ مُعْصِدِينَ ۖ قَالَ الْمَلَأَ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا
مِنْ قَوْمِهِ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا مِنَ الْإِيمَانِ وَمِنْهُمْ أَكْثَرُونَ
أَنَّ مَطْلَبَ الْمَرْسَلِ مِنْ رَبِّهِ ۖ فَالْوَارِثُ آيَاتِ اللَّهِ ۖ وَمَنْ مَوْلَانِ
عَلَىٰ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا ۖ آيَاتِ اللَّهِ ۖ اسْمُهُمْ كَوْمُونَ ۖ
كَعَمْرُو الْكَافَّةِ ۖ وَغَوَا عَنْ أَمْرِ رَبِّهِمْ ۖ وَقَالُوا لِمَ لَمْ يَأْتِ
أُودُنَا لَنْ كُنْتُمْ مِنَ الْمُرْسَلِينَ ۖ فَآخَذَ لَهُمُ الرَّجْفَةُ

लजीनस्तक्बरू मिन् कौमिही लिल्लजीनस्तुज्जिअफू लिमन् आम-न मिन्हुम्
अतअ-लमू-न अन्-न सालिह्व-मुसलुम्-मिररब्बिही कालू इन्ना बिमा उसि-ल
बिही मुअ्मिनून (७५) कालल्लजीनस्तक्बरू इन्ना बिल्लजी आमन्तुम्
बिही काफिरून (७६) फ-अ-करल्लाक-तु व अतो अन् अमिर रब्बिहम् व
कालू यासालिह्वतिना बिमा तअिदुना इन् कुन्-त मिनल् - मुसलीन
(७७) फ-अ-ख-जत्-हुमुरज्जकु फ-अस्बह की दारिहम् जासिमीन (७८)

हूद ने कहा कि तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से तुम पर अज़ाब और ग़ज़ब (का नाज़िल होना) मुकर्रर हो चुका है। क्या तुम मुझ से ऐसे नामों के बारे में झगड़ते हो, जो तुम ने और तुम्हारे बाप-दादा ने (अपनी तरफ से) रख लिए हैं, जिन की खुदा ने कोई सनद नाज़िल नहीं की, तो तुम भी इन्तिज़ार करो, मैं भी तुम्हारे साथ इन्तिज़ार करता हूँ। (७१) फिर हम ने हूद को और जो लोग उन के साथ थे, उन को निजात बल्भी और जिन्होंने ने हमारी आयतों को झुठलाया था, उन की जड़ काट दी और वे ईमान लाने वाले थे ही नहीं। (७२) ★

और समूद क्रौम की तरफ उन के भाई सालेह को भेजा, (तो) सालेह ने कहा कि ऐ क्रौम ! खुदा ही की इबादत करो, उस के सिवा तुम्हारा कोई माबूद नहीं। तुम्हारे पास तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से एक मोज़जा आ चुका है, (यानी) यही खुदा की ऊँटनी तुम्हारे लिए मोज़जा है, तो उसे (आज़ाद) छोड़ दो कि खुदा की ज़मीन में चरती फिरे और तुम उसे बुरी नीयत से हाथ भी न लगाना बरना दर्दनाक अज़ाब तुम्हें पकड़ लेगा। (७३) और याद तो करो जब उस ने तुम को आद क्रौम के बाद सरदार बनाया और ज़मीन पर आबाद किया कि नर्म ज़मीन से (मिट्टी ले कर) महल बनाते हो और पहाड़ों को काट-छांट कर घर बनाते हो, पस खुदा की नेमतों को याद करो, ज़मीन में फ़साद न करते फिरो। (७४) तो उन की क्रौम में सरदार लोग जो धमंड रखते थे, ग़रीब लोगों से, जो उनमें से ईमान ले आये थे, कहने लगे, भला तुम यकीन करते हो कि सालेह अपने परवरदिगार की तरफ से भेजे गये हैं ? उन्होंने ने कहा, हाँ, जो चीज़ वह दे कर भेजे गये हैं, हम उस पर बिला शुब्हा ईमान रखते हैं। (७५) तो घमंडी (सरदार) कहने लगे कि जिस चीज़ पर तुम ईमान लाये हो, हम तो उस को नहीं मानते। (७६) आखिर उन्होंने ने ऊँटनी (की कूँचों) को काट डाला और अपने परवरदिगार के हुक्म से सरकशी की और कहने लगे कि सालेह ! जिस चीज़ से तुम हमें डराते थे, अगर तुम (खुदा के) पैग़म्बर हो, तो उसे हम पर ले आओ। (७७) तो उन को भूचाल ने आ पकड़ा और वे अपने घरों में औंधे पड़े रह गये। (७८) फिर सालेह उन से (ना-उम्मीद हो कर)

(पृष्ठ २४६ का शेष)

की ताबील करना ज़रूरी समझते हैं। फिर इस के बावजूद सब उसको हर जगह हाज़िर और रगे गरदन से ज्यादा करीब भी समझते हैं। अगर खुदा को अर्थ पर ठहरने की वजह से उसे 'मुजस्सम' करार दिया जाए, तो वह सब जगह हाज़िर और रगे गरदन से ज्यादा नज़दीक कैसे माना जा सकता है। मुजस्सम महमूद होता है और जो हर जगह हाज़िर हो, वह ग़ैर महमूद। पस महमूद, ग़ैर-महमूद कैसे हो सकता है ? बहरहाल अल्लाह तआला मुजस्सम नहीं। उस की जितनी सिफ़तें हैं, उन की वह सूरत नहीं जो इन्सान की सूरतों की हैं, इस लिए इन्सानी सिफ़तों को अल्लाह तआला की सिफ़तों पर नहीं सोचा जा सकता और इसी लिए उस को मुजस्सम नहीं कह सकते। गरब यह कि खुदा ने जिन बातों को अपनी सिफ़त करार दिया है, उन को मानना चाहिए और उन की वह सूरत नहीं समझनी चाहिए जो मरूफ़ की सिफ़तों की होती है।

वह तत्त्व, जिस को अर्थ कहते हैं, उस की सूरत मालूम नहीं कि वह किस तरह का है, तो उस पर अल्लाह तआला के ठहरने की क्या सूरत मालूम हो सकती है ?

फ-त-बल्ला अन्हुम् व काल या कौमि ल-कद् अबलरतुकुम् रिसाल-त रब्बी
 व नसह्तु लकुम् व लाकिल्ला तुहिब्बूनन्नासिहीन (७६) व लूतन्
 इज् काल लिकौमिही अ-तअतूनल्-फाहिश-त मा स-ब-ककुम् बिहा मिन्
 अ-हदिम्-मिनल्-आलमीन (८०) इन्नकुम् ल-तअतूनरिजा-ल शह-व-तम्-मिन्
 इनिनिसा-इ ७ बल् अन्तुम् कौमुम्-मुस्तिफून
 (८१) व मा कान जवा-ब कौमिही
 इल्ला अन् कालू अखिरजूहुम् मिन्
 कयतिकुम् ७ इन्नहुम् उनासुय्य-त - तहहून
 (८२) फ-अन्जेनाहु व अहलहू इल्लम-
 र - अ-तहू कानत् मिनल्-गाबिरीन
 (८३) व अम्तर्ना अलैहिम् म-त-र-त्
 फन्बुर कै-फ का - न आकिबतुल्-मुजिमीन
 * (८४) व इला मद्य - न अखाहुम्
 शुअबन् ७ काल या कौमिअ-बुदुल्ला-ह मा
 लकुम् मिन् इलाहिन् गेरू ७ कद्
 जा-अत्कुम् बय्यिनतुम्-मिररिबिकम् फओफुल्कै-ल
 वल्मीजा - न व ला तब्खसुन्ना - स अश्या - अ हुम् व ला ताप्सद्
 फिल्-अजि बअ - द इस्लाहिहा ७ जालिकुम् खैरुल्लकुम् इन् कुन्तुम्
 मुअ्मिनीन ७ (८५) व ला तक्शुद् बिकुल्लि सिरातिन् तूअिद्-न व
 तमुद्द-न अन् सबीलिल्लाहि मन् आम-न बिही व तब्बूनहा अि-व-जन् ७
 वज्जुर् इज् कुन्तुम् कलीलन् फ-कस्-स - रकुम् वज्जुर् कै - फ
 कान आकिबतुल् - मुप्सिदीन (८६) व इन् का - न ता-इफतुम् -
 मिन्कुम् आमन् बिल्लजी उसिल्लु बिही व ता - इफतुल्लम् युअ्मिन्
 फइबिरू हत्ता यहकुमल्लाहु बैनना ७ व हु - व खैरल्-हाकिमीन (८७)

فَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ ۚ إِنَّكَ لَعَندَ عَلَيْنَا ۚ وَقَالَ يَسِّرْ لَنَا
 الْيُسْرَىٰ ۖ رَسَالَةَ رَبِّي وَأَصْبَحْتُ لَكَ وَكَانَ الْيُسْرَىٰ ۖ وَالْيُسْرَىٰ
 وَلَوْ لَمْ يَأْتِ الْيُسْرَىٰ ۖ إِنَّا لَوْنُ الْفَارِشَةِ مَسَافِعُهُمْ بِهَا مِنْ
 أَحَدٍ مِنَ الْمَلَكِينَ ۖ إِنَّكَ لَتَكُونُ الْيُسْرَىٰ شَوْءًا مِنْ دُونِ الْيُسْرَىٰ
 بَلْ أَشْهَرُ نَوْمٍ فَسِرُّونَ ۚ وَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهِ إِلَّا أَنْ قَالُوا
 أَتُحِبُّونَهُمْ قَوْمٌ لَا يَفْقَهُونَ إِلَّا نَاسٌ يَتَّبِعُونَ ۚ فَاجْعَلْهُ
 وَأَهْلَهُ إِلَّا أَصْرًا ۚ كَانَتْ مِنَ الْغَيْبِ ۖ وَأَسْرَارًا عَلَيْنَا
 قَطْعًا ۚ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُجْرِمِينَ ۚ وَإِلَىٰ
 مَدْيَنَ أَخَاهُ شُعَيْبًا ۚ قَالَ يَبْعَثُوا غِيَدًا ۚ وَاللَّهِ مَا لَكُمْ مِنْ
 الْغِيَدَةِ ۚ قَدْ جَاءَ أَشْهَرُ نَهْبَةٍ ۚ قَوْمٌ زَبُكُوا فَأَوْفُوا الْكَيْلَ
 وَالْمِيزَانَ وَلَا تَبْخَسُوا الْكُلَّ الْأَكْبَرُ ۚ هُمْ وَلَا تُغْنِيهِمْ فِي
 الْأَرْضِ بَدَلًا ۚ وَاصْلَحُوا ۚ ذَلِكُمْ غِيَدٌ لَكُمْ أَنْ تَتَمَّ قَوْمِي ۖ
 وَلَا تَقْصِدُوا رِجْلَ صِرَاطٍ ۚ وَتُعَذِّبُونَ ۚ وَتَصْطَفُونَ ۚ مَنْ سَجَدَ
 لِلَّهِ مِنْ أَمْنٍ بِهِ ۚ وَتَحْتَمِلُوا أَوْسَارًا ۚ وَالْكَرَّ الْأَكْبَرُ ۚ لَا
 تَكْرَهُوا ۚ وَالْطُّورَ ۚ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُجْرِمِينَ ۚ وَكَانَ
 كَانَ طَائِفَةٌ وَقَدْ أَمْنُوا بِاللَّهِ ۚ أَرْسَلَتْ بِهِ ۚ وَطَائِفَةٌ
 يَأْمُرُونَ بِفِتْنَةٍ ۚ وَخَافُوا ۚ وَاللَّهُ يَتَنَبَّأُ ۚ وَالْمُؤْمِنُونَ ۚ

फिरे और कहा कि ऐ मेरी कौम ! मैं ने तुम को खुदा का पैगाम पहुंचा दिया और तुम्हारी खैरखाही की, मगर तुम (ऐसे हो कि खैरखाहों को दोस्त ही नहीं रखते। (७६) और (इसी तरह जब हमने) लूत को (पैगम्बर बना कर भेजा, तो) उस वक्त उन्होंने ने अपनी कौम से कहा, तुम ऐसी बे-हयाई का काम क्यों करते हो कि तुम से पहले अहले आलम में से किसी ने इस तरह का काम नहीं किया। (८०) यानी नफ़स की स्वाहिष पूरा करने के लिए औरतों को छोड़ कर लौंडों पर गिरते हो। हकीकत यह है कि तुम लोग हृद से निकल जाने वाले हो। (८१) तो उन से इस का जवाब कुछ न बन पड़ा और बोले, तो यह बोले कि इन लोगों (यानी लूत और उन के घर वालों) को अपने गांव से निकाल दो (कि) ये लोग पाक बनना चाहते हैं। (८२) तो हम ने उन को और उन के घर वालों को बचा लिया, मगर उन की बीबी (न बची) कि वह पीछे रहने वालों में थी। (८३) और हम ने उन पर (पत्थरों का) मेंह बरसाया, सो देख लो कि गुनाहगारों का कैसा अंजाम हुआ। (८४) *

और मदनयन की तरफ उन के भाई शूऐब को भेजा, (तो) उन्होंने ने कहा कि ऐ कौम ! खुदा ही की इबादत करो, उस के सिवा तुम्हारा कोई माबूद नहीं। तुम्हारे पास तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से निशानी आ चुकी है, तो तुम नाप और तौल पूरी किया करो और लोगों को चीजें कम न दिया करो और जमीन में सुधार के बाद खराबी न करो। अगर तुम ईमान वाले हो तो समझ लो कि यह बात तुम्हारे हक में बेहतर है। (८५) और हर रास्ते पर मत बैठ कर कि जो शस्स खुदा पर ईमान लाता है, उसे तुम डराते और खुदा की राह से रोकते और उस में टेढ़ दूँढते हो और (उस वक्त को) याद करो, जब तुम थोड़े-से थे तो खुदा ने तुम को बड़ी जमाअत बना दिया और देख लो कि खराबी पैदा करने वालों का अंजाम कैसा हुआ। (८६) और अगर तुम में से एक जमाअत मेरी रिसालत पर ईमान ले आयी है और एक जमाअत ईमान नहीं लायी, तो सब किये रहो, यहां तक कि खुदा हमारे-तुम्हारे दर्मियान फ़ैसला कर दे और वह सब से बेहतर फ़ैसला करने वाला है। (८७)

१. जमीन में सुधार के बाद खराबी न करने से यह मुराद है कि जिस जमीन में गुनाह के काम होते थे, हाराम चीजों को हलाल कर लिया जाता था, क़त्ल व खूरेजी होती थी, जब उस में पैगम्बर आये और उन्होंने ने लोगों को खुदा की तरफ बुलाया तो उस का सुधार हो गया। अब उस भली जमीन में ऐसे काम न करो, जिन से यह समझा जाए कि सुधार खराबी में बदल गया और उस में फ़साद हो रहा है।

२. वे लोग डाकू और लूट-मार करने वाले थे। रास्तों पर बैठ कर लोगों को डराते थे कि अगर तुम हम को माल न दोगे तो हम तुम को क़त्ल कर डालेंगे या रास्ते से मुराद वे रास्ते हैं, जो हज़रत शूऐब की तरफ जाते थे। वे लोग उन रास्तों पर बैठ जाते थे और जिस शस्स को उस तरफ जाते देखते थे, उस को डराते-धमकाते थे कि तुम शूऐब के पास क्यों जाते हो। वह सूझा मक्कार है, खुदा का पैगम्बर नहीं, खुदा की राह से रोकने से मुराद हज़रत शूऐब के पास जाने और मोमिन बनने से मना करना है।

नवां पारः कालत्मलउ

सूरतुल्-अअ्राफि आयत ८८ से २०६

कालल्-मलउल्लजीनस्तक्बरु मिन् कौमिही लनुखिरजन्न-क याशुअं बु वल्लजी-न
 आमन् म-अ-क मिन् कर्यतिना औ ल-त-अदुन्-न फ्री मिल्लतिना ॥ काल-अ-व लौ
 कुन्ना कारिहीन (८८) कदिफतरैना अ-लल्लाहि कजिबन्न इन् अदना
 फ्री मिल्लतिकुम् बअ-द इज् नज्जानल्लाहु मिन्हा ॥ व मा यकूनु लना अन्
 नअ - द फ्रीहा इल्ला अय्यशा - अल्लाहु
 रब्बुना ॥ वसि-अ रब्बुना कुल-ल शैइत्
 अिल्मत् ॥ अ - लल्लाहि त-वक्कल्ला ॥
 रब्बनपतह बैनना व बै - न कौमिना
 बिल्हक्कि व अन्-त खैरुफातिहीन (८९)
 व कालल्-मलउल्लजी-न क-फरु मिन् कौमिही
 लइनित्तबअ-तुम् शुअं बन् इन्नकुम् इजल-ल
 खासिरुन् (९०) फ-अ-ख-जत्-हुमु र-रजफत्
 फ - अस्बह फ्री दारिहिम् जासिमीन
 (९१) अल्लजी-न कज्जबू शुअं बन् क-अल्लम्
 यग्नौ फ्रीहा ६ अल् - लजी - न
 कज्जबू शुअं बन् कानू हुमुल्खासिरीन (९२)
 फ-त-वल्ला अन्हुम् व काल या कौमि
 ल-कद् अब्लरतुकुम् रिसालाति रब्बी व
 न-सहत्तु लकुम् ६ फ-कै-फ आसा अला कौमिन् काफिरीन् (९३) व
 मा अर्सलना फ्री कर्यतिम् - मिन् नबिय्यत् इल्ला अ-खज्जा अहलहा
 बिल्बवसा-इ वज्जर्रा-इ ल-अल्लहुम् यज्जर्रून (९४) सुम्-म बददल्ला मकानस्-
 सय्यिबतिल्-ह-सन-त्त हत्ता अ-फ-व कालू कद् मस्-स आबा-अनज्ज-ज्जर्रा-उ
 वस्सर्रा-उ फ-अ-खज्जाहुम् बग-त-त-व-व हुम् ला यशुअरुन् (९५) व लौ
 अन्-न अहलल्कुरा आमन् वत्तकौ ल-फ-त-हना अलैहिम् ब-र-कातिम्-मिनस्समा इ
 वल्अजि व लाकिन् कज्जबू फ-अ-खज्जाहुम् बिमा कानू यक्सिबून (९६)

قَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ اشْكَلُوا مِنْ قَوْمِهِ لِتَشْرِكَكَ تَشْعِبُهُ
 وَالَّذِينَ امْتَدَّاهُمْ مِنْ قَوْمِهِمْ اَوْ تَمُوتُونَ فِي بَيْنِنَا مَا لَكُمْ اَنْ
 تَكْفُرُوا ۚ قَدْ اَفْتَرَيْنَا عَلَ اللَّهِ كَذِبًا اِنْ عَذَابُنَا يَلْمِزُكُمْ
 بَعْدَ اِذْ عَصَيْنَا اللَّهَ وَمَنْ يَكْفُرْ بِنَا اَنْ نَعُودَ فِيهَا اِلَّا اَنْ
 يَشَاءَ اللَّهُ رَبُّنَا وَسِعَ رَبُّنَا كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا عَلَی اللَّهِ تَوَكَّلْنَا
 رَبَّنَا بِمَا عَمِلْنَا وَاَنْتَ خَبِيرُ الْغَيْبِ ۝ وَ
 قَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ قَوْمِهِ لِيَكْفُرُوا سَعِيًا اَرْكَمُوا
 اِذَا امْسُرُونَ ۚ فَاعْلَمْتُمْ الْبَغْيَ فَاخْبِرُوا فَاِذَا رَجَعْتُمْ
 اِلَیْهِمْ كَذَّبُوا سَعِيًا اِنْ اَنْتُمْ اِلَیْهَا لَتَوَسِعُونَ ۚ اَلَّذِينَ كَذَّبُوا سَعِيًا
 فَاتُواهُمْ بِالسَّيْرِ ۚ قَوْلُ عَذَابٍ وَقَالَ يَتَوَلَّى الْاَشْجَقُ
 سَلْبًا رَیَّ وَنَحْنُ نَكْفُرُ كَذِبًا كَذِبًا اَمْ عَلَی قَوْمٍ فَرِحْنَ ۚ وَ
 مَا اَسْكَنَّا فَاِذَا مِنْ قَوْمٍ نَحْنُ اِلَّا اَشْجَقُ اَمْلَأْنَا بِالنَّارِ اَنْتُمْ وَنَحْنُ
 لِنَسْلَمُ يَتَوَكَّلُونَ ۚ ثُمَّ كَذَّبُوا اَنْ اَسْكَنَّا السَّيْرَ فَسَعَى عَوَا
 وَكَانُوا قَدْ مَسَّ اِيَّاهُ النَّارُ وَالنَّارُ فَاحْشَلْنَاهُمْ بَيْنَهُ وَهُمْ
 لَا يَشْعُرُونَ ۚ وَلَوْ اَنَّ اَهْلَ الْقَرْيَةِ امْتَدَّوْا اَلْعَوَا لَعَسَا عَلَیْهِمْ
 بَرَكٌ مِنَ السَّمَاءِ وَالْاَرْضِ وَلَكِنْ كَذَّبُوا فَاعْلَمْتُمْ بِمَا كَانُوا
 يَكْسِبُونَ ۚ اَفَاَمِنْ اَهْلِ الْقَرْيَةِ اِنْ يَأْتِيَهُمْ بَأْسٌ بَاسًا

(तो) उन की क्रौम में जो लोग सरदार और बड़े आदमी थे, वे कहने लगे कि शूऐब ! (या तो) हम तुम को और जो लोग तुम्हारे साथ ईमान लाए हैं, उन को अपने शहर से निकाल देंगे या तुम हमारे मजहब में आ जाओ। उन्होंने ने कहा, चाहे हम (तुम्हारे दीन से) बे-ज़ार ही हों (तो भी ?) (८८) अगर हम इस के बाद कि खुदा हमें इस से निजात बल्स चुका है, तुम्हारे मजहब में लौट जाएं, तो बेशक हम ने खुदा पर झूठ इफ़्तारा बांधा और हमें मुनासिब नहीं कि हम उस में लौट जाएं। हां, खुदा जो हमारा परवरदिगार है, वह चाहे तो (हम मजबूर हैं), हमारे परवरदिगार का इल्म हर चीज़ पर एहाता किए हुए है। हमारा खुदा ही पर भरोसा है। ऐ परवरदिगार ! हम में और हमारी क्रौम में इसाक के साथ फ़ैसला कर दे और तू सब से बेहतर फ़ैसला करने वाला है। (८९) और उन की क्रौम में से सरदार लोग जो काफ़िर थे, कहने लगे कि (भाइयो !) अगर तुम ने शूऐब की पैरवी की तो बेशक तुम घाटे में पड़ गये। (९०) तो उन को भूंचाल ने आ पकड़ा और वे अपने घरों में औंधे पड़े रह गये। (९१) (ये लोग) जिन्होंने ने शूऐब को झुठलाया था; ऐसे जबाद हुए कि गोया वे उन में कभी आबाद ही न हुए थे-न (गरज) जिन्होंने ने शूऐब को झुठलाया वे घाटे में पड़ गये। (९२) तो शूऐब उन में से निकल आये और कहा कि भाइयो ! मैं ने तुम को अपने परवरदिगार के पैग़ाम पहुंचा दिए हैं, और तुम्हारी खेरखाही की थी, तो मैं काफ़िरों पर (अज़ाब नाज़िल होने से) रंज व ग़म क्यों करूं ? (९३) ✱

और हम ने किसी शहर में कोई पैग़म्बर नहीं भेजा, मगर वहां के रहने वालों को जो ईमान न लाये, दुखों और मुसीबतों में डाल दिया, ताकि वे आजिजी और ज़ारी करें। (९४) फिर हम ने तक्वीक को आसूदगी (खुशहाली) से बदल दिया, यहां तक कि (माल व औलाद में) ज्यादा हो गये तो कहने लगे कि इसी तरह रंज व राहत हमारे बड़ों को भी पहुंचता रहा है, तो हम ने उन को यकायक पकड़ लिया और वे (अपने हाल में) बे-ज़बर थे। (९५) अगर इन बस्तियों के लोग ईमान ले आते और परहेज़गार हो जाते, तो हम उन पर आसमान और ज़मीन की बरकतों (के दरवाजे) खोल देते, मगर उन्होंने ने तो झुठलाया, सो उन के ज़ामाल की सज़ा में हम ने उन को पकड़

अ-फ-अमि-न अहलुलकुरा अंय्यअतियदुम् बअसुना बयातव्व हुम् ना-इमून

(६७) अ-व अमि-न अहलुक्कुरा अय्यअतियहम् बअसुता जुह्वहम् यल्-अबून

(६८) अ-फ्रम्निन् मकरत्लाहि ६ फला यम्नु मकरत्लाहि इल्लत्क्रोमुल्-

खासिरून ★ (६६) अ-व लम् यहिद लिल्लजी-न यरिसूनल् अर-ज़ मिम्बअ-दि

अहिलहा अल्लो नशा - उ अ-सब्नाहुम्

विज्ञानविहिम् ६ व नत्वञ् अला कुलविहिम्

प्रथम ला यस्मअन (१००) तिलकलकरा

नकस्य अलै-क मिन अम्मा-दवाः व न कट

नकुत्सु अल-क मिन् अम्बा-इहाठ व ल-कद्
 नकुत्सु अल-क मिन् अम्बा-इहाठ व ल-कद्

जा-अहम्, हसुलुहम्, बिल्बाय्यनाति ७ फमा

कानू लियुअमिन् बिमा कज्जबू मिन्

कबलु १ कजालि - क यत्बअल्लाहु अला

कुलबिल्काफ़िरीन (१०१) व मा व-जदना

लि-अक्सरिहिम् मिन् अ-हृदिन् ६ व इव्व-

लिया। (६६) क्या बस्तियों के रहने वाले इस से बे-खौफ़ हैं कि उन पर हमारा अजाब रात को आए और वे (बे-खबर) सो रहे हों। (६७) और क्या शहर वाले निडर हैं कि उन पर हमारा अजाब दिन चढ़े आ नाजिल हो और वे खेल रहे हों। (६८) क्या ये लोग खुदा के दांव का डर नहीं रखते? (मुन तो कि) खुदा के दांव से वही लोग निडर होते हैं जो घाटा पाने वाले हैं। (६९) ✖

क्या इन लोगों को जो अहले ज़मीन के (मर जाने के) बाद ज़मीन के मालिक होते हैं, यह बात हिदायत की वजह नहीं बनी कि अगर हम चाहें तो उन के गुनाहों की वजह से उन पर मुसीबत डाल दें और उन के दिलों पर मुहर लगा दें कि कुछ सुन ही न सकें। (१००) ये बस्तियां हैं, जिन के कुछ हालात हम तुम को सुनाते हैं, और उन के पास उन के पैगम्बर निशानियां ले कर आए, मगर वे ऐसे नहीं थे कि जिस चीज़ को पहले झुठला चुके हों, उसे मान लें। इसी तरह खुदा काफ़िरों के दिलों पर मुहर लगा देता है। (१०१) और हम ने उन में से अक्सरों में (अहद का निबाह) नहीं देखा और उन में अक्सरों को (देखा तो) बदकार ही देखा। (१०२) फिर इन (पैगम्बरों) के बाद हम ने मूसा को निशानियां दे कर फ़िअौन और उस के सरदारों के पास भेजा, तो उन्होंने ने उन के साथ कुफ़्र किया। सो देख लो, कि खराबी करने वालों का अंजाम क्या हुआ। (१०३) और मूसा ने कहा कि ऐ फ़िअौन ! मैं रब्बुल आलमीन का पैगम्बर हूं। (१०४) मुझ पर वाजिब है कि खुदा की तरफ़ से जो कुछ कहूं, सच ही कहूं। मैं तुम्हारे पास तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से निशानी ले कर आया हूं। सो बनी इस्राईल को मेरे साथ जाने की रुख़सत दे दीजिए। (१०५) फ़िअौन ने कहा कि अगर तुम निशानी ले कर आए हो, तो अगर सच्चे हो, तो लाओ (दिखाओ)। (१०६) मूसा ने अपनी लाठी (ज़मीन पर) डाल दी, तो वह उसी वक़्त खुला अज़दहा (हो गया), (१०७) और अपना हाथ बाहर निकाला तो उसी दम देखने वालों की निगाहों में सफ़ेद बरक़ि (था), (१०८) ✖

तो फ़िअौन की क़ौम में जो सरदार थे, वे कहने लगे कि यह बड़ा अल्लामा जादूगर है। (१०९) इस का इरादा यह है कि तुम को तुम्हारे मुल्क से निकाल दे, भला तुम्हारी क्या सलाह है? (११०) उन्होंने (फ़िअौन से) कहा कि फ़िलहाल मूसा और उस के भाई के मामले को माफ़ रखिए और शहरों में नक़ीब रवाना कर दीजिए, (१११) कि तमाम माहिर जादूगरों को आप के पास ले आए। (११२) (चुनाचे ऐसा ही किया गया) और जादूगर फ़िअौन के पास आ पहुंचे और कहने लगे, कि अगर हम जीत गये, तो हमें सिला (इनाम) अता किया जाए। (११३) (फ़िअौन ने)

क्रा-ल न-अम् व इन्नकुम् लमिन्ल्-मुकरंबीन (११४) कालू या मूसा इम्मा
अन् तुत्कि-य व इम्मा अन्नकू-न नहनुल्-मुल्कीन (११५) काल अल्कू
फ-लम्मा अल्की स-हूल् अअ-युनन्नासि वस्तरहूबूहुम् व जा-ऊ बिसिहिरन् अमीम
(११६) व ओहेना इला मूसा अन् अल्कि असाकू फइजा हि-य

तत्काल मा यअफिकून ६ (११७) क
वक्रअल-हक्क व ब-तल मा कानु यअ-मलून ६

(११८) फगुलिबू हुनालि - क वन्कलबू
सागिरीन & (११९) व उल्कियस्स-ह-रतु

साजिदीन ४ (१२०) कालू आमन्ना
बिरिन्बल - आलमीन ४ (१२१) रन्बि

मूसा व हारून (१२२) का-ल फिर्औनु
आमन्तुम् बिही कब-ल अन् आज-न लकुम्

इन् - न हाजा ल - मकरम् - एकतु मूहु
फिल्मदीनति लितुखिरजू मिन्हा अह-लहा

फसौ-फ तअ-लमून (१२३) ल-उ-कृत्ति-अन्-न
ऐदियकुम् व अरजु-लकुम् मिन् खिलाफिन्

सुम्-म लउसस्लिबन्नकुम् अज्-मभीन (१२४) काल् इन्ना इला रब्बिना
मुन्कलिबून ८ (१२५) व मा तन्किमु मिन्ना इल्ला अन् आमन्ना

बिबायाति रब्बिना लम्मा जा-अत्ता, रब्बना अफ्रिगु अलैना सगरव-व
तवफ्रना मुस्लिमीन ★ (१२६) व कालत्मलउ मिन् कौमि फिर्ओ-न
अ-त-ज-र मूसा व कौमहू लियुफ्सिदू फिल्अज्जि व य-ज-र-क व आलिह-त-क

क्रा - ल सनुकृत्तिलु अन्ना - अहुम् व नस्तद्वयी निसा - अहुम् व इन्ना
फ्रीकृहुम् काहिरुन (१२७) क्रा-ल मूसा लिकौमिहस्तजीनू बिल्लाहि

अंबादिही १ वल्आक्रिबतु लिलमुत्तीन (१२८) कालू उब्बीना मिन् कबूलि
अन् तब्ति-यना व मिम्बअ-दि मा जिब्तना ॥ का-ल असा रब्बुकुम् अय्युहिल-क
अदुव्वकुम् व यस्तखलि-फकुम् फिल्लअज्जि फ-यत्तु-र कं-फ तअ-मलन * (१२९)

कहा, हां (जहर) और (उस के अलावा) तुम मुकर्रिबों में दाखिल कर लिए जाओगे। (११४) (जब दोनों फरीक मुकर्रर दिन को जमा हुए, तो) जादूगरों ने कहा कि मूसा या तो तुम (जादू की चीज) डालो या हम डालते हैं। (११५) (मूसा ने) कहा, तुम ही डालो, जब उन्होंने (जादू की चीजें) डालीं तो लोगों की आंखों पर जादू कर दिया, (यानी नजरबन्दी कर दी) और (लाठियों और रस्सियों के सांप बना-बना कर) उन्हें डरा-डरा दिया और बड़ा भारी जादू दिखाया। (११६) (उस वक्त) हम ने मूसा की तरफ बह्य भेजी कि तुम भी अपनी लाठी डाल दो, वह फौरन (सांप बन कर) जादूगरों के बनाए हुए सांपों को (एक-एक कर के) निगल जाएगी। (११७) (फिर) तो हक साबित हो गया और जो कुछ फ़िअौनी करते थे, वातिल हो गया। (११८) और वे मरलूब हो गए और जलील हो कर रह गए। (११९) (यह सूरत देख कर) जादूगर सज्दे में गिर पड़े। (१२०) और कहने लगे कि हम जहान के परवरदिगार पर ईमान लाए, (१२१) (यानी) मूसा और हारून के परवरदिगार पर। (१२२) फ़िअौन ने कहा कि इस से पहले कि मैं तुम्हें इजाबत दूं, तुम उस पर ईमान ले आए ? बेशक यह फ़रेब है, जो तुम ने मिल कर शहर में किया है, ताकि शहर वालों को यहां से निकाल दो। सो बहुत जल्द (इस का नतीजा) मालूम कर लो। (१२३) मैं (पहले तो) तुम्हारे एक तरफ़ के हाथ और दूसरे तरफ़ के पांव कटवा दूंगा, फिर तुम सब को सूली चढ़वा दूंगा। (१२४) वह बोले कि हम तो अपने परवरदिगार की तरफ़ लौट कर जाने वाले हैं। (१२५) और उस के सिवा तुझ को हमारी कौन-सी बात बुरी लगी है कि जब हमारे परवरदिगार की निशानियां हमारे पास आ गयीं, तो हम उन पर ईमान ले आए। ऐ परवदिगार ! हम पर सब व इस्तिक्रामत के दहाने खोल दे और हमें (मारियो तो) मुसलमान ही मारियो। (१२६) *

और फ़िअौन की क्रोम में जो सरदार थे, कहने लगे कि क्या आप मूसा और उस की क्रोम को छोड़ दीजिएगा कि मुल्क में खराबी करें और आप से और आप के माबूदों से हाथ खींच लें। वह बोले कि हम उन के लड़कों को क़त्ल कर डालेंगे और लड़कियों को ज़िदा रहने देंगे और बे-शुल्हा हम उन पर ग़ालिब हैं। (१२७) मूसा ने अपनी क्रोम से कहा कि खुदा से मदद मांगो और साबित क़दम रहो। ज़मीन तो खुदा की है और वह अपने बन्दों में से जिसे चाहता है, उस का मालिक बनाता है और आखिर मला तो डरने वालों का है। (१२८)

१. रिवायत में है कि फ़िअौन ख़ल्क को अपनी बंदगी का हुकम करता था और आप सितारों को पूजता था और अपनी मक्ल के बूत बनवा कर क्रोम को देता था कि तुम उन की पूजा करो, ताकि वे बूत तुम को मुश से नज़दीक कर दें और सरदारों ने फ़िअौन को याद दिलायी मूसा के क़त्ल की, जो उन्होंने उस की क्रोम के एक आदमी का किया था।

व ल-कद् अ-खज्ना आ-ल फिर्ओ-न बिस्सिनी-न व नविसम्-मिनस्स-मराति
ल-अल्लहुम् यज्जवकरून (१३०) फइजा जा-अत्तुमुल्-ह-स-नत्तु कालू लना
हाजिही ६ व इन् तुसिन्दुम् सय्यिअत्तु यत्तय्यरू बिमूसा व मम्म - अहू
अला इन्नमा ता - इरुहुम् अिन्दल्लाहि व लाकिन् - न अक्सरहुम् ला
यअ-लमून (१३१) व कालू महम।

तञ्जलिना बिही मिन् आयत्तिल्-लितस-ह-रना
बिहा ॥ क्रमा नह्नु ल - क बिमुअ्मिनीन
(१३२) फ - अर्सल्ला अलैहिमुत्तुफा - न
वल्जरा-द वल्कुम्म-ल वज्जफादि-अ वद्-द-म
आयातिम् - मुफस्सलातिन् ^ف फस्तवबरू व
कानू क्रौमम्-मुजिरमीन (१३३) व लम्मा
व-क्र-अ अलैहिमुर्ज्जु कालू या मूसदअु लना
रब्ब-क बिमा अहि-द अिन्द-क ६ लइन्
क-श-फ्त अन्नरिज्-ज लनुअ्मिनन्-न ल-क व
लनुसिलन्-न म-अ-क बनी इस्रा - ई-ल६
(१३४) फ-लम्मा क-शफ्ना अन्हुमुर्ज्ज-ज
इला अ-जलिन् हुम् बालिशूहु इजा हुम्

١٢٦
فَقَالَتْ اِنَّكَ عَلَىٰ رِجْلٍ مِّنْ مَّوَالِكُمْ وَتَسْتَفْتِيهِمْ كَمَا
الْاَرْضُ تَسْتَفْتِيهِمْ تَعْمَلُونَ ۗ وَلَقَدْ اخَذْنَاكَ اَلْ يَدْعُونَ
بِالْحَيَاتِ وَيَقْصُونَ مِنَ الشَّجَرِ لَعَلَّكُمْ تَكُونُونَ ۝ كَذٰلِكَ
جَاءَهُمُ الْحَسَنَةُ قَالُوا النَّاسُ هٰذِهِ ۖ وَاِنْ نَّصِبْنَاهُمْ نَجْمًا يُضْطَرُّوْنَ
يَوْمَئِذٍ وَمَنْ قَعَدَ ۙ اَلَا يَكُنَا عَلَيْهِمْ عِزًّا فَيُتَوَكَّلُوْنَ ۙ وَلَكِنْ اَلَمْ نَكْمُلْ
لَكَ الْبَصِيْرَةَ ۙ وَكَلَّمَا تَاَمَنَّا بِهٖ مِنْ اٰمَةٍ لَّقَسَمْنَا بِهَا ۙ فَمَا
تَعْنِ لَكَ بِمُؤْمِنِيْنَ ۙ فَاَلَسْنَا عَلَيْهِمُ السُّوْقَانَ ۙ وَالْجِبَادُ وَاَلَا
الْقَتْلُ وَالضَّرَافَةُ ۙ وَلَلْمَاءُ لِيَّ عَذَابٍ لِّمَا كَانُوا عَلَيْهِمْ ۙ وَكَانُوا
قَوْمًا تَجَبَّرُ عَلَيْهِمْ ۙ وَلَقَدْ اَوْفَوْهُ عَلَيْهِمُ الْبَيْعَ ۙ قَالُوا يٰٓيَسُوٓءُ اَذْمُ لَنَا
رَبُّكَ بِمَا عٰهَدَ عِنْدَكَ لَنْ نَّكْفُفَ عَنْكَ الْبَيْعَ لَوْلَا اَنَّ لَكَ
وَلِلْمُؤْمِنِ ۙ مَعَكَ بَنِي اِسْرٰٓءِيْلَ ۙ فَلَمَّا كَتَبْنَا عَنْهُمْ الْبَيْعَ
اِلٰى اٰجُلٍ هُمُ بِالْهَرَمِ اِذَا هُمْ بِمُكَلِّفُونَ ۙ فَانْقَضٰتْ وَفِيْهِمْ فَاغْرَقْنَاهُمْ
فِي الْيَوْمِ بِاَلْفِ مِٔةٍ اَوْ اَلْيَسَارِ ۙ وَكَانُوا مِنْهَا غٰفِلِيْنَ ۙ وَادْرٰٓسْنَا
الصُّوْمَ الَّذِيْنَ كَانُوْا يَتَّبِعُوْنَ مِنْ مَّسَاقِيٓتِ الْاَرْضِ وَمَخَالِجِهَا
الَّتِيْ بَرَكْنَا فِيْهَا لَكُمْ ۙ وَنَحْنُ عٰبِدُ رَبِّكَ الْغَنِيِّ عَلٰى بَنِي اِسْرٰٓءِيْلَ
بِمَا صَبَرُوْا وَدَعَمْنَا مَا كَانُوا يَتَّبِعُوْنَ فَرَعُوْنَ وَفَوَّضْنَا ۙ وَمَا كَانُوا
يَعْرِضُوْنَ ۙ ۝ جَوْرًا ۙ يٰٓبَنِي اِسْرٰٓءِيْلَ الْبَحْرُ ۙ قَالُوْا عَلٰى قَوْمٍ

यन्कुसूम (१३५) फन्त-कम्ना मिन्हुम् फ-अरक्नाहुम् फित्यम्मि बिअन्नुहुम्
कण्जबू बिआयातिना व कानू अन्हा गाफिलीन (१३६) व औरस्नल्-
क्रौमल्लजी-न कानू युस्तञ्जअफू-न मशारि-क्ल-अञ्जि व मशारिबहल्लती बारक्ना
फ्रीहा ॥ व तम्मत् कलिमनु रब्बिकल्हुस्ना अला बनी इस्रा - ई - ल
बिमा सु-वरू ॥ व दम्मर्ना मा कान यस्नञ्जु फिर्औनु व कौमुहू व मा
कानू यब्-रिशून (१३७) व जावज्जा बि बनी इस्रा-ईलल्-बहूर फ-अतौ
अला क्रौमिय्यअ-कुफू - न अला अस्नामित्तहुम् ६ कालू या मूसज्जल् लना
इलाहन् कमा लहुम् आलिहनुन् ॥ काल इन्कुम् कौमुन् तज्जलून (१३८)

वे बोले कि तुम्हारे आने से पहले भी हम को तकलीफें पहुंचती रहीं और आने के बाद भी । मूसा ने कहा कि करीब है कि तुम्हारा परवरदिगार तुम्हारे दुश्मन को हलाक कर दे और उस की जगह तुम्हें जमीन में खलीफा बनाए, फिर देखे कि तुम कैसे अमल करते हो (१२९) और हम ने फ़िज़ीयों को कहतां और मेवां के मुकसान में पकड़ा ताकि नसीहत हासिल करें । (१३०) तो जब उन को सुख हासिल होता तो कहते कि हम इस के हकदार हैं और अगर सख्ती पहुंचती तो मूसा और उन के साथियों की बद-शगूनी बताते । देखो, उन की बद-शगूनी खुदा के यहां (तैं) है, लेकिन उन में अक्सर नहीं जानते । (१३१) और कहने लगे कि तुम हमारे पास (चाहे) कोई भी निशानी लाओ, ताकि उस से हम पर जादू करो, मगर हम तुम पर ईमान लाने वाले नहीं हैं । (१३२) तो हम ने उन पर तूफ़ान और टिड्डियां और जुएं और मेंढक और खून कितनी खुली हुई निशानियां भेजीं, मगर वे तकब्बुर (घमंड) ही करते रहे और वे लोग थे ही गुनाहगार । (१३३) और जब उन पर अज़ाब आता तो कहते कि मूसा हमारे लिए अपने परवरदिगार से दुआ करो, जैसा उस ने तुम से अह्द कर रखा है, अगर तुम हम से अज़ाब को टाल दोगे तो हम तुम पर ईमान भी लाएंगे और बनी इस्राईल को भी तुम्हारे साथ जाने (की इजाज़त) देंगे । (१३४) फिर जब हम एक मुद्दत के लिए, जिस तक उन को पहुंचना था, उन से अज़ाब दूर कर देते, तो वह अह्द को तोड़ डालते । (१३५) तो हम ने उन से बदला ले कर ही छोड़ा कि उन को दरिया में डुबो दिया, इस लिए कि वे हमारी आयतों को मुठलाते और उनसे बे-परवाई करते थे । (१३६) और जो लोग कमज़ोर समझे जाते थे, उनको (शाम यानी सीरिया की) जमीन के पूरब व पच्छिम का, जिसमें हम ने बरकत दी थी, वारिस कर दिया और बनी इस्राईल के बारे में उन के सब की वजह से तुम्हारे परवरदिगार का नेक वायदा पूरा हुआ और फ़िज़ीयों की क़ौम वाले जो (महल) बनाते और (अंगूर के बाग़) जो छतरियों पर चढ़ाते थे, सब को हम ने तबाह कर दिया (१३७) और हम ने बनी इस्राईल को दरिया से पार उतारा, तो वह ऐसे लोगों के पास जा पहुंचे जो अपने बुतों (की इबादत) के लिए बंठे रहते थे । (बनी इस्राईल) कहने लगे कि मूसा, जैसे इन लोगों के माबूद हैं, हमारे लिए भी माबूद बना दो । मूसा ने कहा कि तुम बड़े ही जाहिल लोग हो । (१३८) ये लोग जिस (काम) में (फंसे हुए) हैं,

१. ये सब बलाएं उन पर आयीं एक-एक हफ्ते के फ़र्क से । अब्बल हज़रत मूसा फ़िज़ीयों को कह आये कि अल्लाह तुम पर यह बला भेजेगा, वही बला आती, फिर परेशान हो जाते और हज़रत मूसा की लुत्तामद करते । उन को दुआ से दूर हो जाती और फिर इन्कारी हो जाते । आखिर को बबा पड़ी । आधी रात को सारे शहर में हर शख्स का पहला बेटा मर गया । वह मुदों के राम में फंस गये । हज़रत मूसा अपनी क़ौम को ले कर शहर से निकल गये । फिर कई दिन के बाद फ़िज़ीय फ़ौज समेत शर्क हो गया ।

इन्-न हा-उला-इ मुतब्बहम्मा हुम् फीहि व बातिलुम्मा कानू यअ-मलून
(१३६) का-ल अगोरस्लाहि अन्गीकुम् इलाहव-व-हु-व फइज-लकुम् अ-ल-
आलमीन (१४०) व इज् अन्जैनाकुम् मिन् आलि फिर्अ-नीन यसूमूनकुम्
सू-अलअजाबि ६ युक्तिलून-न अन्ना-अ-कुम् व यस्तह्यून-न निसा-अ-कुम् ७ व फी

जालिकुम् बला-उम् - मिरन्बिकुम् अजीम

★ (१४१) व वाअदना मूसा सलासीन

लैल-तव-व अत्मन्नाहा बिअशिरन् फ-तम्-म

मीकातु रन्बिही अबंजीन लैल-तव ६ व

का-ल मूसा लिअखीहि हारूनल्लुपनी फी

कौमी व अस्लिह व ला तलबिअ सबीलल्-

मुप्सिदीन (१४२) व लम्मा जा-अ मूसा

लिमीकातिना व कल्ल-महू रब्बुह ॥ का-ल

रन्बि अरिनी अजूर् इलै-क ७ का-ल लन्

तरानी व लाकिनिजूर् इलल् - ज-बलि

फइनिस्त-कर्-र मकानहू फसौ - फ तरानी ६

फ-लम्मा त-जल्ला रब्बुह लिल-ज-बलि ज-अ-लहू

وَمَنْ يَفْعَلْ عَمَلًا شَبِيحًا فَلَا يَمُوتُ سَاعَةً لَّا يَأْتِي الشَّامَ
الْبَاقِيَةَ قَالَ أَتَقُولُونَ عَجَبًا إِنَّ هَؤُلَاءِ مُتَبَّرُونَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ
فَكَأَنَّهُمْ يُفْعَلُونَ قَالَ أَغَيْرَ اللَّهِ أَبْغِيئَكُمْ إِلَهُاتُوهُمْ فَذَكِّرْهُمْ
عَلَى الْعُلُوبِينَ وَلَا تَجْعَلُوا مِنْ آلِ فِرْعَوْنَ يَوْمُ الْقَوْمِ
الْعَذَابِ يُحْطَلُونَ إِنَّهُمْ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ وَيُؤْمِنُونَ بِآيَاتِهِ
فَمِنْ ذِكْرِهِمْ يُفْعَلُونَ وَوَعَدْنَا مُوسَى ثَلَاثِينَ آيَةً وَكُنْتُمْ
بَعْضُكُمْ مِنْ بَعْضٍ رَّبِّهِ أَرْبَعِينَ آيَةً وَقَالَ مُوسَى لِأَخِيهِ
هَارُونَ الْخَلْفَ فِي قَوْمِي وَأَصْلِحْ وَلَا تَتَّبِعْ سَبِيلَ الْمُفْسِدِينَ
وَلَمَّا جَاءَ مُوسَى لِمِيقَاتِهِ وَكَلَّمَهُ رَبُّهُ قَالَ رَبِّ أَرِنِي
إِلَافَكَ قَالَ لَنْ تُبْقِيَنَّهُ وَلَكِنْ انظُرْ إِلَى الْجَبَلِ فَإِنِ اسْتَقَرَّ
مَكَانَهُ فَسَوْفَ تَرَاهُ فَنَظَرْنَا فَلَمْ يَكُنْ رَبُّهُ لِجَبَلٍ عَمَلَهُ وَكُنَّا
مُوسَى صَاحِبًا فَلَمَّا أَتَاهَا قَالَ سُبْحَنَكَ إِلَافُكَ وَنَاكَ أَوَّلُ
الْمُؤْمِنِينَ قَالَ يُسَمِّىَنَّ إِلَى أَصْحَابِكَ عَلَى الشَّامِ بِرَسُولِي
وَلَكَلَّافٍ فَقَدْ أَتَيْتُكَ وَكُنْتُ مِنَ الْكَاذِبِينَ وَكَتَبْنَا لَهُ
فِي الْوَارِثِ مِنْ عَمَلِهِ صَوْغَةً وَتَعْمِيدًا لِكُنْ تَحْتَهُ
فَتَلَمَّحَ الْفَوْفُ وَفَأَمْرًا مِنْكَ بِأَخَذِهَا بِأَسْفَلِهَا فَفَعَلُوا
الْفَرْقُونَ سَاحِبِينَ عَنْ آيَةِ الْكَلْبِ وَتَلَمَّحُوا فِي الْأَرْضِ

दकव-व खद-र मूसा सजिकन् ६ फ-लम्मा अफा-क-का-ल सुब्हान - क तुब्तु

इलै-क व अ-न अब्वलुल्-मुअमिनीन (१४३) का-ल या मूसा इन्निस्तफैतु-क

अलन्नासि बिरिसालाती व बिकलामी फखुज् मा आतैतु-क व कुम् -

मिनशशाकिरीन (१४४) व क-तब्ना लहू फिल्अल्वाहि मिन् कुल्लि शैइम्-

मोजिज-तव - व तफसीलल् - लिकुल्लि शैइव् ६ फ - खुज्-हा बिकुव्वतिव्वअमूर्

कौम-क यखुज् बिअह्सनिहा ७ स-अरीकुम् दारल् - फासिकीन (१४५)

बहु बरबाद होने वाला है और जो काम ये करते हैं, सब बेहूदा हैं। (१३६) (और यह भी) कहा कि भला मैं खुदा के सिवा तुम्हारे लिए कोई और माबूद खोजूँ, हालाँकि उस ने तुम को तमाम दुनिया वालों पर फ़ज़ीलत बरूषी है। (१४०) और (हमारे उन एहसानों को याद करो) जब हम ने तुम को फ़िअौनियों (के हाथ) से निजात बरूषी, वे लोग तुम को बड़ा दुख देते थे। तुम्हारे बेटों को तो क़त्ल कर डालते थे और बेटियाँ ज़िन्दा रहने देते थे और इस में तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से सस्त आजमाइश थी। (१४१) *

और हम ने मूसा से तीस रात की मीयाद मुक़रर की और दस (रातें) और मिला कर उसे पूरा (चिल्ला) कर दिया, तो उस के परवरदिगार की चालीस रात की मीयाद पूरी हो गयी। और मूसा ने अपने भाई हारून से कहा कि मेरे (तूर पहाड़ पर जाने के) बाद तुम मेरी क़ौम में जानशीन हो, (उन की) इस्लाह करते रहना और शरीरों के रास्ते पर न चलना।' (१४२) और जब मूसा हमारे मुक़रर किए हुए वक़्त पर (तूर पहाड़ पर) पहुँचे और उन के परवरदिगार ने उन से कलाम किया तो कहने लगे कि ऐ परवरदिगार ! तू मुझे (जलवा) दिखा कि मैं तेरा दीदार (भी) देखूँ। परवरदिगार ने फ़रमाया कि तुम मुझे हरगिज़ न देख सकोगे। हाँ, पहाड़ की तरफ़ देखते रहो, अगर यह अपनी जगह कायम रहा तो तुम मुझ को देख सकोगे। जब उन का परवरदिगार पहाड़ पर जाहिर हुआ तो (रब के अन्वार की तजल्ली ने) उस को रेज़ा-रेज़ा कर दिया और मूसा बे-होश हो कर गिर पड़े। जब होश में आये तो कहने लगे कि तेरी ज़ात पाक है और मैं तेरे हुज़ूर में तौबा करता हूँ और जो ईमान लाने वाले हैं उन में सब से अक्ल हूँ। (१४३) (खुदा ने (फ़रमाया, मूसा ! मैं ने तुम को अपने पैग़ाम और अपने कलाम से लोगों से मुस्ताज़ किया है, तो जो मैं ने तुम को अता किया है, उसे पकड़ रखो और (मेरा) शुक्र बजा लाओ। (१४४) और हम ने (तीस रात की) तख़्तियों में उन के लिए हर क्रिस्म की नसीहत और हर चीज़ की तपसील लिख दी, फिर (इज़ाद फ़रमाया कि) इसे ज़ोर से पकड़े रहो और अपनी क़ौम से भी कह दो कि इन बातों को, जो इस में (दर्ज हैं और) बहुत बेहतर हैं, पकड़े रहें। मैं बहुत जल्द तुम को ना-फ़रमान लोगों का घर

१. खुदा ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को चालीस रातों के लिए बुलाया था, ताकि उन को तीसरा इनायत की जाए। इन्ने अब्बास रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मूसा ने अपनी क़ौम से कहा कि खुदा ने मुझे तीस रात के लिए तलब फ़रमाया है। मैं तुम में अपने भाई हारून को अपनी जगह छोड़े जाता हूँ। जब मूसा अलैहिस्सलाम वहाँ से तयरीफ़ ले गये, तो अल्लाह तआला ने दस रातें और बढ़ा दीं। इस आखिरी दस दिन में बनी इस्राईल बछड़े की पूजा कर के गुमराह हो गये। चुनांचे सामरी के बछड़ा बनाने का क्रिस्सा आगे आता है। जिस तरह मूसा अलैहिस्सलाम ने अपनी क़ौम के लोगों से कहा था कि मैं तुम में अपने भाई हारून को जानशीन करता हूँ, इसी तरह हज़रत हारून से कहा कि आप मेरी कायम मक़ामी कीजिएगा और इन लोगों की इस्लाह करते रहिएगा ताकि कोई फ़साद न होने पाए।

दिखाऊंगा। (१४५) जो लोग जमीन में ना-हक़ घमंड करते हैं, उन को अपनी आयतों से फेर दूंगा। अगर वे सब निशानियां भी देख लें, तब भी उन पर ईमान न लाएं और अगर रास्ती का रास्ता देखें तो उसे (अपना) रास्ता न बनाएं। और अगर गुमराही की राह देखें तो उसे रास्ता बना लें। यह इस लिए कि उन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया और उस से ग़फलत करते रहे। (१४६) और जिन लोगों ने हमारी आयतों और आखिरत के आने को झुठलाया, उन के आमाल बर्बाद हो जाएंगे। वे जैसे अमल करते हैं वैसा ही उन को बदला मिलेगा। (१४७) ★

और मूसा की क्रोम ने मूसा के बाद अपने जेवर का एक बछड़ा बना लिया। (वह) एक जिस्म (था) जिस में से बैल की आवाज़ निकलती थी। उन लोगों ने यह न देखा कि वह न उन से बात कर सकता है और न उन को रास्ता दिखा सकता है उस को उन्होंने (माबूद) बना लिया और (अपने हक़ में) जुल्म किया। (१४८) और जब वे शमिदा हुए और देखा कि गुमराह हो गये हैं, तो कहने लगे कि अगर हमारा परवरदिगार हम पर रहम नहीं करेगा और हम को माफ़ नहीं फ़रमायेगा तो हम बर्बाद हो जाएंगे। (१४९) और जब मूसा अपनी क्रोम में निहायत गुस्से और अफ़सोस की हालत में वापस आये तो कहने लगे कि तुमने मेरे बाद बहुत ही बुरा काम किया। क्या तुम ने अपने परवरदिगार का हुक्म (यानी मेरा अपने पास आना) जल्द चाहा। (यह कहा) और (गुस्से की तेज़ी से तोरात की) तस्लियां डाल दीं और अपने भाई के सर (के बालों) को पकड़ कर अपनी तरफ़ खींचने लगे। उन्होंने कहा कि भाई जान! लोग तो मुझे कमज़ोर समझते थे और करीब था कि क़त्ल कर दें, तो ऐसा काम न कीजिए कि दुश्मन मुझ पर हंसें और मुझे ज़ालिम लोगों में मत मिलाइए। (१५०) तब उन्होंने दुआ की कि ऐ मेरे परवरदिगार! मुझे और मेरे भाई को माफ़ फ़रमा और हमें अपनी रहमत में दाख़िल कर, तू सब से बढ़ कर रहम करने वाला है। (१५१) ★

(खुदा ने फ़रमाया कि) जिन लोगों ने बछड़े को माबूद बना लिया था, उन पर परवरदिगार का ग़ज़ब वाक़े होगा और दुनिया की ज़िंदगी में ज़िल्लत (नसीब होगी) और हम झूठ गढ़ने वालों को ऐसा ही बदला दिया करते हैं। (१५२) और जिन्होंने बुरे काम किए, फिर उसके बाद तौबा कर ली और ईमान ले आए, तो कुछ शक़ नहीं कि तुम्हारा परवरदिगार इस के बाद (बरहस देगा कि वह)

१. ऐसा मालूम होता है कि मूसा अल-हिस्सलाम की क्रोम के रोग अक़ल व होश से काम नहीं लेते थे। मूसा अल-हिस्सलाम के तूर पहाड़ पर चले जाने के बाद, एक शस्स सामरी नाम का, जो उन्हीं लोगों में से था, उन से कहने लगा कि मैं तुम को एक खुदा बना देता हूँ, उस की पूजा किया करना। उन्हीं ने यह बात मान ली तो उस ने सोने के गहने इकट्ठा किये और उस को गला कर बछड़ा बनाया और उस के मुँह में हज़रत ज़िब्रील के घोड़े के पांव के तले की मुट्ठी भर मिट्टी, जो उस को मिल गयी थी, डाल दी। वह गाय की-सी आवाज़ करने लगा। सामरी ने कहा, लो यह खुदा है, इस की पूजा करो। वे उस की पूजा करने लगे। खुदा फ़रमाता है कि उन्हीं ने इतना न सोचा कि यह कैसा माबूद है, जो न कलाम करने की ताक़त रखता है और न हिदायत कर सकता है, भला बछड़ा क्या और खुदा क्या? और जो यह फ़रमाया कि मूसा की क्रोम ने मूसा के बाद अपने जेवर का एक बछड़ा बना लिया, हालांकि बछड़ा सामरी ने बनाया था, तो इस वजह से है कि सामरी उन्हीं में से था और सब उस के इस काम से खुश थे।

व लम्मा स-क-त अम्मूसत्ता-आबु अ-ख-आल् - अल्वा-हूँ व फ्री तुस्वतिहा
हुदवं-व रहमतुल्-तिल्लजी-न हुम् लिरब्बिहम् यंहबून (१५४) वरुता-र मूसा
कौमहू सब्बी-न रजुलल् लिमीकातिना ६ फ-लम्मा अ-ख-अत्-हुमुर्ज-फ्तु काल
रब्बि ली शिअ-त अह-लस्तहम् मिन् कब्बु व इय्या-य ७ अतुहिलकुना बिमा

क-अ-तस्सुफहाउ मिन्नाऽ इन् हि-य इल्ला
 किल्लतु - क^१ तुजिल्लु बिहा मन् तशाउ
 व तहदी मन् तशाउ, अन्-त बलिच्चुना
 कम्पिल्लना वहम्ना व अन्-त खैरुल्लाफिरीन
 (१५५) वक्तव लना फी हाजिहिददन्या

हृ-स-न-तृ-व-क्लि-आ-खिर-रति-इन्ना हुदना
इलै-क-क्रा-ल अजाबी उसीबु बिही मन्
अशाउह व रहमती वसि-अत कुल - ल

शेइन् ७ फ-स-अक्तुबुहा लिल्लजी-न यत्तकू-न
व युअत्तूनरज्जका-त् वल्लजी-न हुम् बिआयातिना
यअमिनन ८ (१५६) अल्लजी - न

यत्तबिअूनर् - रसूलन्तबिद्यल् - उम्मिय्यल्लजी

यजिद्वनह् मक्तबन् अिन्दहुम् फितोरति वल्इन्जीलि ँ यम्मुहुम्
बिल्मअ-रुफि व यन्हाहुम् अनिल्मुन्करि व युहिल्लु लहुमुत्तयिवाति व
युहरिमु अलैहिमुल्-खबाइ-स व य - ज-अ अन्हुम् इस्सरहुम् वल्अरलालल्लती
कानत् अलैहिम् ५ फल्लजी-न आमनू बिही व अज्जल्लु व न-स-रुहु
वत्तबअन्नरल्लजी उन्त्रि-ल म-अह् ॥ उलाइ-क हुमुल् - मुफिलहन ★ (१५७)

कुल् या अय्युहन्नासु इन्नी रसूलुल्लाहि इलैकुम् जमी-अ - निल्लजी लहू
मुल्कुस्समावाति वल्अज्जि ८ ला इला - ह इला हु - व युह्यी व
युमीतु फ - आमिन् बिल्लाहि व रसूलिहिनबिय्यिल् - उम्मिय्यिल्लजी
यअमिन् बिल्लाहि व कलिमातिही वत्तबिअहु ल-अल्लकुम् तह्त्तद्वन (१५८)

बख्शने वाला मेहरबान है। (१५३) और जब मूसा का गुस्सा दूर हुआ तो (तीरात की) तल्लियां उठा लीं और जो कुछ उन में लिखा था, वह उन लोगों के लिए, जो अपने परवरदिगार से डरते हैं, हिदायत और रहमत थी। (१५४) और मूसा ने उस मीआद पर, जो हमने मुकर्रर की थी, अपनी क्रोम के सत्तर आदमी चुन (कर के तूर पहाड़ पर हाजिर) किए। जब उन को जलजले ने पकड़ा तो मूसा ने कहा कि ऐ परवरदिगार ! अगर तू चाहता तो उन को और मुझ को पहले ही से हलाक कर देता। क्या तू इस काम की सजा में, जो हम में से बे-अकल लोगों ने किया है, हमें हलाक कर देगा। यह तो तेरी आजमाइश है। इस से तू जिस को चाहे, गुमराह करे और जिसे चाहे हिदायत बख्शे, तू ही हमारा कारसाज है, तो हमें (हमारे गुनाह) बख्श दे और हम पर रहम फ़रमा और तू सब से बेहतर बख्शने वाला है। (१५५) और हमारे लिए इस दुनिया में भी, भलाई लिख दे और आखिरत में, भी हम तेरी तरफ़ रुजू हो चुके। फ़रमाया कि जो मेरा अज्ञाब है, उसे तो जिस पर चाहता हूं नाज़िल करता हूं और जो मेरी रहमत है, वह हर चीज़ को शामिल है। मैं इस को उन लोगों के लिए लिख दूंगा जो परहेजगारी करते, और जकात देते और हमारी आयतों पर ईमान रखते हैं। (१५६) वे जो (मुहम्मद, अल्लाह के) रसूल के जो नबी-ए-उम्मी हैं, पैरवी करते हैं, जिन की (खूबियों) को वे अपने यहां तीरात और इंजील में लिखा हुआ पाते हैं, वे उन्हें नेक काम का हुकम देते हैं और बुरे काम से रोकते हैं और पाक चीज़ों को उन के लिए हलाल करते हैं और नापाक चीज़ों को उन पर हराम ठहराते हैं और उन पर से बोझ और तौक़ जो उन (के सर) पर (और गले में) थे, उतारते हैं, तो जो लोग उन पर ईमान लाए और उन का साथ दिया और उन्हें मदद दी और जो तूर उन के साथ नाज़िल हुआ है, उसकी पैरवी की, वही मुराद पाने वाले हैं। (१५७) ★

(ऐ मुहम्मद !) कह दो कि लोगो ! मैं तुम सब की तरफ़ खुदा का भेजा हुआ (यानी उस का रसूल) हूं। (वह) जो आसमानों और जमीन का बादशाह है, उसके सिवा कोई माबूद नहीं। वही ज़िदगी बख्शता और वही मौत देता है, तो खुदा पर और उस के रसूल पैगम्बर उम्मी पर, जो खुदा पर और उसके तमाम कलाम पर ईमान रखते हैं, ईमान लाओ और उनकी पैरवी करो, ताकि

हियायत पाओ । (१५८) और मूसा की क़ौम में से कुछ लोग ऐसे भी हैं जो हक़ का रास्ता बताते और उसी के साथ इंसफ़ करते हैं । (१५९) और हमने उनको (यानी बनी इस्राईल को) अलग-अलग करके बारह क़बीले (और) बड़ी-बड़ी जमाअतें बना दिया और जब मूसा से उन की क़ौम ने पानी तलब किया तो हम ने उनकी तरफ़ वदय्य भेजी कि अपनी लाठी पत्थर पर मार दो, तो उसमें से बारह चश्मे फूट निकले और सब लोगों ने अपना-अपना घाट मालूम कर लिया और हमने उनके (सरों पर) बादल को सायबान बनाये रखा और उन पर मन्न व सलूवा उतारते रहे (और उन से कहा कि) जो पाकीज़ा चीज़ें हम तुम्हें देते हैं, उन्हें खाओ और उन लोगों ने हमारा कुछ नुक़सान नहीं किया, बल्कि (जो) नुक़सान (किया) वह अपना ही किया । (१६०) और (याद करो) जब उन से कहा गया कि इस शहर में रहो-बसो, और इस में जहां से जी चाहे खाना (पीना) और (हां) शहर में जाना तो) 'हित्तुन' कहना और दरवाज़े में दाख़िल होना तो सज़्दा करना । हम तुम्हारे गुनाह माफ़ कर देंगे और नेकी करने वालों को और ज़्यादा देंगे । (१६१) मगर जो उन में ज़ालिम थे, उन्होंने उस लफ़्ज़ को, जिस का उन को हुक्म दिया गया था, बदल कर उसकी जगह और लफ़्ज़ कहना शुरू किया, तो हमने उन पर आसमान से अज़ाब भेजा इस लिए कि जुल्म करते थे । (१६२) *

और उनसे उस गांव का हाल तो पूछो, जो दरिया के किनारे बाक़ेअ था जब ये लोग हफ़्ते के दिन के बारे में हृद से आगे निकल जाने लगे (यानी) उस वक़्त कि उन के हफ़्ते के दिन मछलियां उनके सामने पानी के ऊपर आतीं और जब हफ़्ते का दिन न होता, तो न आतीं, इसी तरह हम उन लोगों को उनकी ना-फ़रमानियों की वजह से आज़माइश में डालने लगे । (१६३) ● और जब उनमें से एक जमाअत ने कहा कि तुम ऐसे लोगों को क्यों नसीहत करते हो, जिन को खुदा हलाक करने वाला या सस्त अज़ाब देने वाला है, तो उन्होंने कहा, इसलिए कि तुम्हारे परवरदिगार के सामने माज़रत कर सकें (यानी मजबूरी जाहिर कर सकें) और अज़ब नहीं कि वे परहेज़गारी अपनाएं । (१६४) जब उन्होंने इन बातों को भुला दिया, जिन की उन को नसीहत की गयी थी, तो जो लोग बुराई से मना करते थे, उनको हमने निजात दी और जो जुल्म करते थे, उनको बुरे अज़ाब में पकड़ लिया कि नाफ़रमानी किये जाते थे । (१६५) गरब जिन (बुरे) आमाल से उनको मना किया गया था, जब वे उन (पर इस़रार और हमारे हुक्म) से गरदनकुशी करने लगे, तो हम ने उन को हुक्म दिया कि ज़लील बन्दर हो जाओ । (१६६) और (उस वक़्त को याद करो) जब तुम्हारे

परवरदिगार ने (यहूद को) आगाह कर दिया था कि वह उन पर क्रियामत तक ऐसे शल्स को मुसल्लत रखेगा, जो उन को बुरी-बुरी तक्लीफ़ें देता रहे। बेशक तुम्हारा परवरदिगार जल्द अजाब करने वाला है और वह बरूशन वाला मेहरबान भी है। (१६७) और हमने उन को जमाअत-जमाअत कर के मुल्क में बिखरा दिया। कुछ उन में भले काम करने वाले हैं और कुछ और तरह वे (यानी बुरे) और हम आरामों और तक्लीफ़ों (दोनों) से उन की आजमाइश करते रहे ताकि (हमारी तरफ़) रुजूअ करें। (१६८) फिर उन के बाद ना-ख़लफ़ उनके कायम मक़ाम हुए, जो किताब के वारिस बने। यह (बे-झिन्नक) इस बे-क़ीमत दुनिया का माल व मताअ ले लेते हैं और कहते हैं कि हम बरूश दिए जाएंगे। और (लोग ऐसों पर तान करते हैं) अगर उन के सामने भी वंसा ही माल आ जाता है, तो वह भी उसे ले लेते हैं। क्या उन से किताब के बारे में अहद नहीं लिया गया कि खुदा पर सच के सिवा और कुछ नहीं कहेंगे और जो कुछ इस (किताब) में है, उस को उन्होंने पढ़ भी लिया है और आखिरत का घर परहेज़गारों के लिए बेहतर है, क्या तुम समझते नहीं? (१६९) और जो लोग किताब को मज़बूत पकड़े हुए हैं, और नमाज़ का इल्तिज़ाम रखते हैं (उन को हम बदला देंगे कि) हम भले लोगों का बदला बर्बाद नहीं करते। (१७०) और जब हमने उन (के सारों) पर पहाड़ उठा खड़ा किया, गोया वह सायबान था और उन्होंने ह्याल किया कि वह उन पर गिरता है, तो (हमने कहा कि) जो हमने तुम्हें दिया है, उसे जोर से पकड़े रहो और जो इसमें लिखा है, उस पर अमल करो ताकि बच जाओ। (१७१) ★

और जब तुम्हारे परवरदिगार ने बनी आदम से यानी उन की पीठों से उन की औलाद निकाली, तो उन से खुद उनके मुकाबले में इक्करार करा लिया (यानी उन से पूछा कि) क्या मैं तुम्हारा परवरदिगार नहीं हूँ? वे कहने लगे, क्यों नहीं; हम गवाह हैं: (कि तू हमारा परवरदिगार है)। (यह इक्करार इस लिए कराया था) कि क्रियामत के दिन (कहीं यों न) कहने लगो कि हम को इस की खबर ही न थी। (१७२) या यह (न) कहो कि शिकं तो पहले हमारे बड़ों ने किया था और हम तो उन की औलाद थे (जो) उन के बाद (पैदा हुए) तो क्या जो काम अहले बातिल करते रहे, उस के बदले तू हमें हलाक करता है। (१७३) और इसी तरह हम (अपनी) आयतें खोल-खोल कर बयान करते हैं, ताकि ये रुजू करें। (१७४) और उन को उस शल्स का हाल पढ़ कर सुना दो, जिस को हमने अपनी आयतें अता फ़रमायीं, तो उसने उनको उतार दिया, फिर शैतान उस के पीछे लगा,

व लौ शिअना ल-र-फअ-नाहु बिहा व लाकिन्नुह अस्-ल-द इलल्-अजि वत्त-ब-अ
हवाहु ६ फ-म-सलुह क-म - सलिल्कलिब ६ इन् तहिमल् अलैहि यल्हस् ओ
तल्हस्हु यल्हस् ६ जालि - क म-सलुल् - क्रौमिल्लजी-न कज्जबू बिआयातिनाह
फक्कुसिल्-क-स-स ल-अल्लहुम् य-त-फक्करुन् (१७६) सा-अ म-स-ल-निल्-क्रौमुल्लजी-न

कज्जबू बिआयातिना व अन्फुसहुम् कानू
यज्जलिमून् (१७७) मय्यहिदल्लाहु फहुबल्-
मुह्तादी ६ व मय्युज्जलिल् फ - उलाइ - क
हुमुल्सासिरुन् (१७८) व ल-कद् अ-रअना
लिज-हन्न-म कसीरम् - मिनल्जिन्नि बल् -
इन्सि ६ लहुम् कुलुबुल् - ला - यफ्कहू - न
बिहा ६ व लहुम् अज्-युनुल्-ला-युन्सिरू - न
बिहा ६ व लहुम् अज्जानुल् - ला-यस्मअ-न
बिहा ६ उलाइ-क कलअन्आमि बल् हुम्
अज्जलु ६ उलाइ - क हुमुल्गाफिलून्
(१७९) व लिल्लाहिल् - अस्माउल्-

وَمَا قَاتِمَةُ الشَّيْطَانِ فَكَانَ مِنَ الْعَرِينِ ۝ وَلَوْ شَاءَ لَرَفَعْنَاهُ
بِهِمَا وَلَوْ كَانَ لَهُ نَصِيرَةٌ ۝ وَالْأَرْضُ وَالْجِبَالُ وَالْأَنْشَارُ
الْكَلْبُ إِنَّ عَمَلَهُمْ عَلَيْهِمْ أَوْ ذَرَعَهُ يَلْعَنُهُ ذَلِكَ مَثَلُ
الْقَوْمِ الَّذِينَ كَذَبُوا بآيَاتِنَا فَاقْصُصْ الْقَصَصَ لَعَلَّهُمْ
يَتَذَكَّرُونَ ۝ سَاءَ مَثَلُ الْقَوْمِ الَّذِينَ كَذَبُوا بآيَاتِنَا وَانْصَبْنَاهُمْ
فِي الْأَرْضِ يُسْقَوْنَ ۝ مَنْ يَدْعُ اللَّهَ فَهُوَ الْبَصِيرُ ۝ وَمَنْ يُضْلِلِ
اللَّهُ فَمَا لَهُ شَافِعٍ ۝ وَالْقَدَرُ مَا يَفْعَلُهُمُ الْيَوْمَ مِنَ الْعَرِينِ
وَالْأَرْضُ لَهُمْ غُلُوبٌ لَا يَقْضُونَ بِهِمْ وَلَهُمْ عَيْنٌ لَا يَبْصُرُونَ
بِهِمْ وَلَهُمْ أَدَانٌ لَا يَبْصُرُونَ بِهِمْ أُولَئِكَ كَالْأَنْعَامِ بَلْ هُمْ
أَضَلُّ ۝ أُولَئِكَ هُمُ الْفَاعِلُونَ ۝ وَلِلَّهِ الْأَسْمَاءُ السُّمَى فَادْعُوهُ
بِهِمَا وَقَدْ أَوَدَّ الَّذِينَ يُضِلُّونَ فِي أَسْمَاءِهِمْ سَمِعُوا مَا كَانُوا
يَعْمَلُونَ ۝ وَمَنْ عَصَا عَنْ آلِهَةٍ أَعَادَ يَسُودَنَّ بِالْحَقِّ وَبِهِ
يَعْمَلُونَ ۝ وَالَّذِينَ كَذَبُوا بآيَاتِنَا فَاسْتَنْدَبُوا مِنْهُمْ مَنْ عَمِلَ
لَا يَسْمَعُونَ ۝ وَأَمَّا لَهُمْ ثُمَّ كَيْفَى مِثْقَالٍ ۝ أُولَئِكَ
يَتَذَكَّرُونَ ۝ وَأَمَّا لَهُمْ ثُمَّ كَيْفَى مِثْقَالٍ ۝ أُولَئِكَ
أَوْ لَمْ يَسْأَلُوا فِي مَلَكُوتِ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا عَنِ اللَّهِ
مِنْ حُكْمٍ ۝ وَإِنْ عَسَى أَنْ يَكُونَ قَرِيبٌ مِمَّا تُعْلَمُونَ ۝

हुस्ना फद्अहु बिहा ६ व जरुल्लजी - न
युल्हिद् - न फ्री अस्माइही ६ स - युज्जी-न
मा कानू यज्-मलून् (१८०) व मिम्मन् ख-लक्ना उम्मत् द्यहद्-न बिल्हक्क व
बिही यज्-दिलून् ★ (१८१) वल्लजी-न कज्जबू बिआयातिना स-नस्तदरिजुहुम्
मिन् हेसु ला यज् - लमून् ६ (१८२) व उल्ली लहुम् ६ इन् - न
कंदी मतीन् (१८३) अ-व लम् य-त-फक्करुन् मा बिसाहिबिहिम् मिन्
जिन्नतिन् ६ इन् हु-व इल्ला नजीरुम्मुबीन् (१८४) अ-व लम् यज्जुरू फ्री
म-ल-कूतिस्-समावाति वल्-अजि व मा ख-ल-कल्लाहु मिन् शैद्-व अन् असा
अय्यकून् कदिक-त-र-ब अ-जलुहुम् ६ फबिअय्यि हदीसिम्बअ-दह युज्मिन् (१८५)

तो वह गुमराहों में हो गया। (१७५) और अगर हम चाहते तो इन आयतों से उस (के दर्जे) को बुलंद कर देते, मगर वह तो पस्ती की तरफ मायल हो गया और अपनी स्वाहिश के पीछे चल पड़ा, तो उस की मिसाल कुत्ते की-सी हो गयी कि अगर सस्ती करो, तो जुबान निकाले रहे और यों ही छोड़ दो, तो भी जुबान निकाले रहे। यही मिसाल उन लोगों की है, जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया तो (उन से) यह क्रिस्सा बयान कर दो, ताकि वे फ़िर करें। (१७६) जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया, उन की मिसाल बुरी है और उन्होंने नुक्सान (किया, तो) अपना ही किया। (१७७) जिस को खुदा हिदायत दे, वही हिदायत पर है और जिस को गुमराह करे, तो ऐसे ही लोग नुक्सान उठाने वाले हैं। (१७८) और हम ने बहुत से जिन्न और इंसान दोखल के लिए पैदा किये हैं, उन के दिल हैं, लेकिन उनसे समझते नहीं और उन की आंखें हैं, मगर उन से देखते नहीं। और उन के कान हैं, पर उन से सुनते नहीं। ये लोग (बिल्कुल) चारपायों की तरह हैं बल्कि उन से भी भटके हुए। यही वे हैं जो गफ़लत में पड़े हुए हैं। (१७९) और खुदा के सब नाम अच्छे ही अच्छे हैं, तो उस को उसके नामों से पुकारा करो और जो लोग उसके नामों में टेढ़ (अपनाया) करते हैं, उन को छोड़ दो। वे जो कुछ कर रहे हैं, बहुत जल्द उस की सजा पाएंगे। (१८०) और हमारी मख़्लूक़ात में से एक वे लोग हैं, जो हज़र का रास्ता बताते हैं और उसी के साथ इंसान करते हैं। (१८१) ★

और जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया, उन को तर्तीब से इस तरीक़े से पकड़ेंगे कि उन को मालूम ही न होगा। (१८२) और मैं उन को मुहलत दिए जाता हूं, मेरी तद्बीर (बड़ी) मजबूत है। (१८३) क्या उन्होंने ग़ौर नहीं किया कि उन के साथी (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को (किसी तरह का भी) जुनून नहीं है। वह तो जाहिर-ज़हर डर सुनाने वाले हैं। (१८४) क्या उन्होंने आसमान व ज़मीन की बादशाही में और जो चीज़ें खुदा ने पैदा की हैं, उन पर नज़र नहीं की और इस बात पर (ख़याल नहीं किया) कि अजब नहीं उन (की मौत) का वक़्त नज़दीक पहुंच गया हो, तो इस के बाद वह और किस बात पर ईमान लाएंगे। (१८५) जिस शख्स को खुदा

मय्युज्ज-लिलित्ताहु कला हादि-य लहू व य-ज-रुहम् फ्री तुयानिहिम् यअ-महून

(१८६) यस्-अलू-न-क अनिस्साअत्ति अय्या-न मुस्साहा कुल् इन्नमा अत्तमुहा

अिन् - द रब्बी ६ ला युज्जलीहा लिबकितहा इला हु - व ॥ सकुलत

फ़िस्सगावाति बल्अज़ि ७ ला तअतीकुम् इल्ला बरत - तन् ७ यस्अलून - क

क-अन्न-क हफिय्युत अन्हा १ कल इन्मा

अिल्महा अिन्दल्लाहि व लाकिन-न अक्सरन्नामि

مَرْسَاً قُلْ إِنَّمَا عَلَّمْتُكُمْ الْقُرْآنَ لَتَعْلَمُوا يَوْمَ الْحُكْمِ

कल्लोयु ससिरो वला अरुषि ला ना तिक्कुरा ला अक्के यिस्तुल्लो वा कल

جَعَلَ عَلَىٰ رَأْسِهِ تَبَارَكَ تَعَالَىٰ لِيُثَبِّتَ الْمَلَكُوتَ عَلَىٰ عِزِّ لَدُنِّي وَلِيُذْهِبَ عَنَّا غَيْظَ رَبِّ لِيَمْسِكَ الثَّوَارَ لِيُجْزِيَ الْأَشْقِيَ

शअल्लाहु व ला कुन्तु अअ-लमुल्ग-व

नस्तस्मिन्नु मिनत्स्वार ङ व मा

मस्तानियस्तूड ६ इन् अ - न इल्ला

नज्जरुव् - व बशीरुल् - लिक्कौमियुअमिनून

* (१८८) हुवल्लजी ख - ल-ककुम् मिन्

नफिसव्वाहिदतिव-व ज-अ-ल मिन्हा जौजहा

तियस्कुन इलैहा ८ फ़-लम्मा त - ग़श्शाहा

ह-म-लत ह-म्लन खफीफत फ-मरत बिही

फ. लाभा अफकलद. द. अ. वला. द. यन्त्रवा. लव. भावेवमा. मरिचि. द. ला.

मित्रश्याकिरीत (१८६) कल्याण आनन्दराय गान्धिव न श्वर न न

[illegible]

जाना जाता हुआ है कस्तूरालाला हुआ जन्मा पुश्तकून (१६०) अयुश्चरकून

मा ला यल्लुकु शिवव-व हम् युल्ल-लकून रु (१११) व ला यस्तताञ्जन

लङ् लुप् नङ् इत्-व ला अन्तुसङ् यन्तुलन (१८५) व इन् तद् अहुम्

यत्ताबलकुम्, सवाउन्, अलकुम्, अ - दअतुमहुम्, अम्

गुमराह करे, उसको कोई हिदायत देने वाला नहीं और वह उन (गुमराहों) को छोड़े रखता है कि अपनी सरकशी में पड़े बहकते रहें। (१८६) (ये लोग) तुम से क्रियामत के बारे में पूछते हैं कि इस के बाक्तेअ होने का वक़्त कब है। कह दो कि इस का इल्म तो मेरे परवरदिगार ही को है। वही उसे उस के वक़्त पर जाहिर कर देगा वह आसमान और ज़मीन में एक भारी बात होगी और यकायक तुम पर आ जाएगी। यह तुम से इस तरह पूछते हैं कि गोया तुम इस को अच्छी तरह जानते हो। कहो कि इस का इल्म तो खुदा ही को है, लेकिन अक्सर लोग यह नहीं जानते। (१८७) कह दो कि मैं अपने फ़ायदे और नुक़सान का कुछ भी अस्तियार नहीं रखता, मगर जो खुदा चाहे और अगर मैं शैब की बातें जानता होता, तो बहुत से फ़ायदे जमा कर लेता और मुझ को कोई तक्लीफ़ न पहुंचती, मैं तो मोमिनों को डर और खुशख़बरी सुनाने वाला हूँ। (१८८) *

वह खुदा ही तो है, जिसने तुम को एक शरूस से पैदा किया, और उस से उसका जोड़ा बनाया, ताकि उस से राहत हासिल करे, सो जब वह उस के पास जाता है, तो उसे हल्का-सा हमल रह जाता है और वह उसके साथ चलती-फिरती है। फिर जब कुछ बोझा मालूम करती (यानी बच्चा पेट में बड़ा होता) है तो दोनों (मियां-बीवी) अपने परवरदिगार खुदा-ए अज़ब व जल्ल से इस्तिजा करते हैं कि अगर तू हमें सही व सालिम (बच्चा) देगा, तो हम तेरे शुक्रगुजार होंगे। (१८९) जब वह उनको सही व सालिम (बच्चा) देता है, तो उस (बच्चे) में जो वह उन को देता है, उसका शरीक मुकर्रर करते हैं। जो वे शिकं करते हैं, खुदा का (रुत्बा) इस से बुलंद है। (१९०) क्या वे ऐसों को शरीक बनाते हैं, जो कुछ भी पैदा नहीं कर सकते और खुदा पैदा किये जाते हैं। (१९१) और न उन की मदद की ताक़त रखते हैं और न अपनी ही मदद कर सकते हैं। (१९२) अगर तुम उन को सीधे रास्ते की तरफ़ बुलाओ, तो तुम्हारा कहा न मानें, तुम्हारे लिए बराबर है कि तुम उन को बुलाओ या चुपके हो रहो। (१९३) (मुशिरको!) जिन को तुम खुदा के सिवा पुकारते हो, वह (तुम्हारी) तरह के बन्दे ही हैं, (अच्छा) तुम उन को पुकारो, अगर सच्चे हो तो चाहिए कि वह

१. इस आयत की तफ़सीर में तमाम तफ़सीर लिखने वालों को बड़ी मुश्किल पेश आयी कि इस को हज़रत आदम व हव्वा का किस्सा समझ कर ख़याल किया कि हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से भी शिकं का बड़ा गुनाह हुआ, हालांकि नबी शिकं से माफ़ूम होते हैं। तो कुछ ने इस सवाल को इस तरह हल किया है कि यह गुनाह सिर्फ़ हव्वा से हुआ न कि आदम से, यह तो सिर्फ़ कहने का अन्दाज़ है जैसा कि और जगहों पर इस्तेमाल हुआ है।

तुम को जबाब भी दें। (१६४) भला उन के पांव हैं, जिन से चलें या हाथ हैं, जिन से पकड़ें या आंखें हैं जिन से देखें या कान हैं, जिन से सुनें ? कह दो कि अपने शरीकों को बुला लो और मेरे बारे में (जो) तद्बीर (करनी हो) कर लो और मुझे कुछ मुहलत भी न दो (फिर देखो कि) वह मेरा क्या कर सकते हैं ? (१६५) मेरा मददगार तो खुदा ही है जिस ने (हक) किताब नाज़िल की और नेक लोगों का वही दोस्तदार है। (१६६) और जिन को तुम खुदा के सिवा पुकारते हो, वह न तुम्हारी ही मदद की ताकत रखते हैं और न खुद अपनी ही मदद कर सकते हैं। (१६७) और अगर तुम उन को सीधे रास्ते की तरफ बुलाओ, तो मुन न सकें और तुम उन्हें देखते हो कि (देखने में) आंखें खोले तुम्हारी तरफ देख रहे हैं, मगर (सच में) कुछ नहीं देखते। (१६८) (ऐ मुहम्मद !) अपव (माफ़ करना) अस्तियार करो और नेक काम करने का हुक्म दो और जाहिलों से किनारा कर लो। (१६९) और अगर शैतान की तरफ से तुम्हारे दिल में किसी तरह कोई वस्वसा पैदा हो तो खुदा से पनाह मांगो, बेशक वह सुनने वाला (और) सब कुछ जानने वाला है। (२००) जो लोग परहेज़गार हैं, जब उन को शैतान की तरफ से कोई वस्वसा पैदा होता है तो चौंक पड़ते हैं और (दिल को आंखें खोल कर) देखने लगते हैं। (२०१) और इन (कुफ़्कार) के भाई उन्हें गुमराही में खींचे जाते हैं, फिर (उस में किसी तरह की) कोताही नहीं करते। (२०२) और जब तुम उन के पास (कुछ दिनों तक) कोई आयत नहीं लाते, तो कहते हैं कि तुमने (अपनी तरफ से) क्यों नहीं बना ली। कह दो कि मैं तो उसी हुक्म की पैरवी करता हूं, जो मेरे परवरदिगार की तरफ से मेरे पास आता है। यह (कुरआन) तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से दानिश व बसीरत और मोमिनों के लिए हिदायत और रहमत है। (२०३) और जब कुरआन पढ़ा जाए तो तवज्जोह से सुना करो और खामोश रहा करो, ताकि तुम पर रहम किया जाए। (२०४) और अपने परवरदिगार को दिल ही दिल में आज़िजी और खौफ़ से और पस्त आवाज से, सुबह व शाम याद करते रहो, और (देखना) ग़ाफ़िल न होना। (२०५) जो लोग तुम्हारे परवरदिगार के पास हैं, वे उस की इबादत से गरदन कुशी नहीं करते और उस पाक ज्ञात को याद करते और उसके आगे सज्दे करते रहते हैं।' (२०६) ★ ● □

१- इन आयत की तिलावत से सज्दा फ़र्ज़ होता है, जो कर लेना चाहिए।

८ सूरतुल्-अन्फ़ालि ८८

(मदनी) इस सूरः में अरबी के ५५२२ अक्षर, १२५३ शब्द, ७५ आयत और १० रुकूअ हैं।

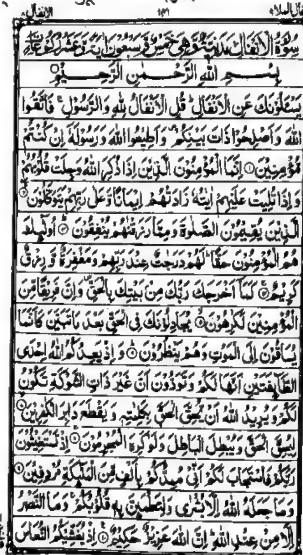
बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

यस्-अलून - क अनिल्-अन्फ़ालि ७ कुलिल् - अन्फ़ालु लिल्लाहि वरसूलि ८
फ़स्तकुल्लाह व अस्लिह जा-त बैनिकुम् ९ व अतीअुल्लाह व रसूलह इन्
कुनुम् मुअ्मिनीन (१) इन्मल्-मुअ्मिनूनल्लजी-न इजा जुकिरल्लाहु
वजिलत् कुलूबुहुम् व इजा तुलियत् अलैहिम् आयातुह जादतुहुम् ईमानव-व
अला रब्बिहिम् य-त - वक्कलून १० (२)

अल्लजी-न युकीमूनस्सला - त व मिम्मा
र-जकनाहुम् युन्फ़कून ११ (३) उलाइ-क
हुमुल्-मुअ्मिनू-न हक्कन् १२ लहुम् द-रजातुन्
अिन्-द रब्बिहिम् व मरिफ़-रतु-व-व रिफ़कुन्
करीम १३ (४) कमा अख्-र-ज-क रब्बु-क
मिम्बैति - क बिल्हक्कि १४ व इन् - न
फ़रीक़म्मिनल् - मुअ्मिनी - न लकारिहून १५

(५) युजादिलून-क फ़िल्हक्कि बअ-द मा
त-बय्य-न क-अन्नमा युसाकू-न इल्लमौति व
हुम् यत्बुरून् १६ (६) व इज् यअिदु-
कुमुल्लाहु इस्दत्ता - इफ़्तैति अन्नहा
लकुम् व त-वद्द-न अन्-न गै-र जातिशशौकति १७

तकून लकुम् व युरीदुल्लाहु अय्युहिक्कल्-हक्-क बिकलिमातिही व यक्त्-अ
दाबिरल्-काफ़िरीन १८ (७) लियुहिक्कल्-हक्-क व युन्तिलल् - बाति-ल व
लौ करिहल्-मुजिरमून १९ (८) इज् तस्तगीसू-न रब्बकुम् फ़स्तजा-ब लकुम्
अन्नी मुमिददुकुम् बिअल्फ़िम्-मिनल्-मला-इकति मुदिफ़ीन (९) व मा
ज-ज-लहुल्लाहु इल्ला बुशरा व लितत्मइन्-न बिही कुलूबुकुम् २० व मन्नस्
इल्ला मिन् अिन्दिल्लाहि २१ इन्नल्ला - ह अजीजुन् हकीम २२ (१०)



८ सूर: अन्फाल ८८

सूर: अन्फाल मदनी है और इसमें पचहत्तर आयतों और दस रुकूअ हैं।

शुरू खुदा का नाम लेकर जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

(ऐ मुहम्मद ! मुजाहिद लोग) तुमसे शनीमत के बारे में सवाल करते हैं (कि क्या हुक्म है।) कह दो कि शनीमत खुदा और उसके रसूल का माल है, तो खुदा से डरो और आपस में सुलह रखो और अगर ईमान रखते हो तो खुदा और उस के रसूल के हुक्म पर चलो। (१) मोमिन तो वे हैं कि जब खुदा का जिक्र किया जाता है, तो उन के दिल डर जाते हैं और जब उन्हें उस की आयतें पढ़ कर सुनायी जाती हैं, तो उन का ईमान और बढ़ जाता है और वे अपने परवरदिगार पर भरोसा रखते हैं। (२) (और) वे जो नमाज़ पढ़ते हैं और जो माल हमने उन को दिया है, उसमें से ये (नेक कामों) में खर्च करते हैं। (३) यही सच्चे मोमिन हैं और उन के लिए परवरदिगार के यहां (बड़े-बड़े) दर्जों और बलिश और इज्जत की रोज़ी है। (४) (उन लोगों को अपने घरों से उसी तरह निकलना चाहिए था) जिस तरह तुम्हारे परवरदिगार ने तुमको तद्बीर के साथ अपने घर से निकाला और (उस वक्त) मोमिनों की एक जमाअत ना-खुश थी (५) वे लोग हक़ बात में उस के जाहिर हुए पीछे तुम से झगड़ने लगे, गोया मौत की तरफ़ धकेले जाते हैं और देख रहे हैं। (६) और (उस वक्त को याद करो) जब खुदा तुम से वायदा करता था। कि (अब सुफ़ियान और अबूजहल के) दो गिरोहों में से एक गिरोह तुम्हारे (काबू में) हो जाएगा और तुम चाहते थे कि जो क़ाफ़िला (बे-शान व) शौकत (यानी बे-हथियार) है, वह तुम्हारे हाथ आ जाएगा और खुदा चाहता था कि अपने फ़रमान से हक़ को कायम रखे और क़ाफ़िरों की जड़ काट कर (फेंक) दे, (७) ताकि सच को सच और झूठ को झूठ कर दे, गो मुखरक ना-खुश ही हों। (८) जब तुम अपने परवरदिगार से फ़रियाद करते थे, तो उसने तुम्हारी दुआ कुबूल कर ली (और फ़रमाया) कि (तसल्ली रखो), हम हजार फ़रिशतों से जो एक-दूसरे के पीछे आते जाएंगे तुम्हारी मदद करेंगे। (९) और इस मदद को खुदा ने सिर्फ़ बशारत बनाया था कि तुम्हारे दिल इस से इत्मीनान हासिल करें और मदद तो अल्लाह ही की तरफ़ से है। बेशक़ खुदा सालिब हिकमत वाला है। (१०) ★

१. ये आयतें बद की लड़ाई से मूतालिफ़ हैं। कुछ तारीख़ लिखने वालों और तफ़सीर लिखने वालों ने इस लड़ाई को यह वजह लिखी है कि वह क़ाफ़िला, जो अबू सुफ़ियान शाम से ले कर आ रहा था, उस को प्यारे नबी सल्ल० और उन के सहाबियों रज़ि० ने यह ख़्याल कर के कि लोग बहुत कम हैं और माल बहुत थोड़ा है, लूट लेने के इरादे से कूच किया था। जब यह ख़बर मक्का के क़ुरैश को पहुंची, तो बहुत सी फ़ौज ले कर क़ाफ़िले को बचाने के लिए निकले और वज़्र नामी जगह पर लड़ाई शुरू हो गयी। लड़ाई का नतीजा यह था कि क़ुरैश के सत्तर आदमी मारे गये और इतने ही गिरफ़्तार हुए। जो माल व अस्बाब वह छोड़ कर भाग आये थे, वह सब मुसलमानों के हाथ आया। मगर क़ुरआनी आयतों से साफ़ मालूम होता है कि रसूल खुदा सल्ल० को मक्का के क़ुरैश का मदीने पर चढ़ाई करने का हाल पहले मालूम हो चुका था और इस के बाद आप ने उन के मुकाबले के लिए कूच फ़रमाया था। बेशक़ कुछ सहाबा किराम की राय होगी कि शाम के क़ाफ़िले को लूट लिया जाए और इसी गिरोह के बारे में खुदा ने फ़रमाया कि तुम बे-शान व शौकत गिरोह को लेना चाहते हो, मगर खुदा ने इस राय को मंज़ूर न (शेष २८१ पर)

इज् युगशीकुमुनुआ-स अ-म-न-तम्-मिन्ह व युनजिजलु अलैकुम् मिनस्सर्मा-इ
 मा-अल्-लियुतहिह-रकुम् बिही व युजिह-व अन्कुम् रिज्जशंतानि व लि-यॉबि-त
 अला कुलबिकुम् व युषाबि-त बिहिल्अक्दाम ७ (११) इज् यूही रब्बु-क
 इलल्-मला-इफति अन्नी म-अ-कुम् फ-सबिबतुल्लजी-न आमन् ७ स-उल्की फ्री

कुलूबिल्लजी-न क-फरहअ-ब फज़िरबू फ़ोक्कल-
अअ-नाकि बज़िरबू मिन्दुम् कुल-ल बनान,

(१२) जालि-क बिअन्-नहुम् शाकिकुल्ला-ह

व रसूलहूँ व मय्युशाकिकिल्ला - ह व

रसूलह फ़-इन्नल्ला-ह शदीदुल्-अक्राब (१३)

ज-हन्-नमु, व बिअ-सल्-मसीर (१६) फ़-लम् तक्तुलुहुम् व लाकिन्नल्ला-ह

जब उसने (तुम्हारी) तस्कीन के लिए अपनी तरफ से तुम्हें नींद (की चादर) उड़ा दी और तुम पर आसमान से पानी बरसा दिया ताकि तुम को उससे (नहला कर) पाक कर दे और शैतानी नजासत को तुम से दूर कर दे और इसलिए भी कि तुम्हारे दिलों को मजबूत करदे और इससे तुम्हारे पांव जमाए रखे। (११) जब तुम्हारा परवरदिगार फ़रिश्तों को इशादि फ़रमाता था कि मैं तुम्हारे साथ हूं, तुम मोमिनों को तसल्ली दो कि साबित क़दम रहें। मैं अभी-अभी काफ़िरों के दिलों में रोब व हैबत डाले देता हूं, तो उन के सर मार (कर) उड़ा दो और उन का पोर-पोर मार कर (तोड़) दो। (१२) यह (सज़ा) इस लिए दी गयी कि उन्होंने खुदा और उसके रसूल की मुख़ालफ़त की और जो शख्स खुदा और उसके रसूल की मुख़ालफ़त करता है, तो खुदा भी सख्त अज़ाब देने वाला है। (१३) यह (मजा तो यहां) चखो और यह (जाने रहो) कि काफ़िरों के लिए दोजख़ का अज़ाब (भी तैयार) है। (१४) ऐ ईमान वालो! जब लड़ाई के मैदान में कुफ़्कार से तुम्हारा मुकाबला हो तो उन से पीठ न फेरना। (१५) और जो शख्स लड़ाई के दिन इस सूरत के सिवा कि लड़ाई के लिए किनारे-किनारे चले (यानी हिक़मते अमली से दुश्मन को मारे) या अपनी फ़ौज में जा मिलना चाहे, उन से पीठ फेरेंगे तो (समझो कि) वह खुदा के ग़ज़ब में गिरफ़्तार हो गया और उस का ठिकाना दोजख़ है और वह बहुत ही बुरी जगह है। (१६) तुम लोगों ने उन (कुफ़्कार) को क़त्ल नहीं किया, बल्कि खुदा ने उन्हें क़त्ल किया और (ऐ मुहम्मद!) जिस वक़्त तुम ने कंकरियां फेंकी थीं, तो वह तुम ने नहीं फेंकी थी, बल्कि अल्लाह ने फेंकी थी। इस से यह गरज़ थी कि मोमिनों को अपने (एहसानों) से अच्छी तरह आजमा ले। बेशक़ खुदा सुनता-जानता है। (१७) (जात) यह (है), कुछ शक़ नहीं कि खुदा काफ़िरों की तद्बीर को कमजोर कर देने वाला है। (१८) (काफ़िरों!) अगर तुम (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर) फ़त्ह चाहते हो, तो तुम्हारे पास फ़त्ह आ चुकी। (देखो) अगर तुम (अपने फ़ैल से) रुक जाओ तो तुम्हारे हक़ में बेहतर है और अगर फिर (ना-फ़रमानी) करोगे, तो हम भी फिर (तुम्हें अज़ाब) करेंगे और तुम्हारी जमाअत, वह कितनी ही बड़ी हो, तुम्हारे कुछ भी काम न आयेगी और खुदा तो मोमिनों के साथ है ★ (१९) ऐ ईमान वालो! खुदा और उसके रसूल के हुक्म पर चलो और उससे रु-गरदानी न करो

(पृष्ठ २७६ का शेष)

फ़रमाया और यही चाहा कि हथियारों से लैस फ़ौज से जंग करें और बहादुरी दिखा कर फ़त्ह हासिल करें, चुनावे ऐसा ही हुआ। इस लड़ाई की वजह, जो उयादा सही लगती है, यह है कि मक्का के कुरैश को मुहाजिरों और मदीने के अंसार के साथ कड़ी दुश्मनी थी और वे हमेशा उन को तबलीफ़ पहुंचाने पर तैयार रहते थे, तो हुज़ूर सल्ल० अपने दुश्मनों के हालात और इरादों से आगाह रहने के लिए कभी-कभी मक्का के चारों तरफ़ आदमी रखाना फ़रमाते। चुनावे एक बार नख़ला नामी जगह को, जो मक्का और ताइफ़ के बीच बाक़ेअ है, आप ने कुछ लोगों को रखाना किया, जिन के सरदार आप के फ़ूफीज़ाद भाई अब्दुल्लाह बिन जह्श थे। नख़ला एक निहायत ख़तरनाक जगह थी और वहां जाने में बहुत ख़तरा था। आप ने अब्दुल्लाह को एहतियात के साथ एक सोल मुहर परचा दिया और फ़रमाया कि मक्के की तरफ़ बराबर चले चलो। तीन दिन के बाद इस परचे को खोल कर पढ़ना और जो कुछ उस में लिखा है, उस पर अमल करना। परचे में लिखा था, 'नख़ला तक चले जाओ और वहां पहुंच कर छिपे तोर पर कुरैश के हालात मालूम करो और हमारे पास उन की ख़बर लाओ।' मगर वहां (शेष पृष्ठ २८३ पर)

व ला तकून् कल्लजी-न कालू समिअ-ना व हुम् ला यस्मअन् (२१) इन्-न
शरद्दवाब्बि अिन्दल्लाहिस्सुम्मुल्-बुक्मुल्लजी-न ला यअ-किलून् (२२) व लौ
अलिमल्लाहु फ्रीहिम् खैरल्-ल अस्म-अहुम् व लौ अस्म-अहुम् ल-त-वल्लव्वहुम्
मुअ-रिजून (२३) या अय्युहल्लजी-न आमनुस्तजीबू लिल्लाहि व लिरसूलि इजा
दआकुम् लिमा युह्यीकुम् ८ वअ - लम्

अन्ल्ला-ह यहुलु बैनलूमर्रद व कल्बही व
अन्हू इलैहि तुहशरून (२४) वत्तकू
फित्-न-तल्ला-तुसीबन्ल्लजी-न ज-लम् मिन्कुम्
खास्सित्त ८ वअ-लम् अन्ल्ला - ह शदीदुल्-
अक्काब (२५) वज्जुकू इज् अन्तुम्

कलीलुम्-मुस्तज्ज-अफू-न फिल्अज्जि तखाफू-न
अय्य-त-खल्ल-फ-कुमुन्नासु फ-आवाकुम् व अय्य-
दकुम् बिनसिरही व र-ज-ककुम् मिनत्तय्यिबाति
ल-अल्लकुम् तशकुरून् (२६) या अय्युहल्लजी-न
आमनू ला तखूनुल्ला-ह वरसू-ल व तखून्
अमानातिकुम् व अन्तुम् तअ-लमून (२७)

वअ-लम् अन्नमा अम्बालुकुम् व औलादुकुम् फित्-न-तु व अन्ल्ला - ह
अिन्दहू अजरव्व अजीम★ (२८) या अय्युहल्लजी - न आमनू इन्
तत्तकुल्ला-ह यज्-अल्लकुम् फुर-कानव-व युक्फिफ् अन्कुम् सय्यिआतिकुम् व
यफिफ् लकुम् वल्लाहु जुल् - फजिल्ल - अजीम (२९) व इज्
यम्कुरु बिकल्लजी-न क-फरू लियुस्बितू-क औ यक्तुलू-क औ युहरिजू-क
व यम्कुरू-न व यम्कुरुल्लाहु वल्लाहु खैरल् - माकिरीन (३०) व
इजा तुल्ला अलैहिम् आयातुना कालू कद् समिअ-ना लौ नशाउ ल-कुल्ला
मिस्-ल हाजा ॥ इन् हाजा इल्ला असातीरुल् - अव्वलीन (३१)

اِنَّهُمْ سَمِعُوْنَ ۝ وَلَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ قَالُوْا سَمِعْنَا وَهُمْ
لَا يَسْمَعُوْنَ ۝ اِنْ شَاءَ الْوَكِيْلُ عِنْدَ اللّٰهِ الْعِزَّةِ الْبَكْرَةِ الَّذِيْنَ
لَا يَغْفِرُوْنَ ۝ وَلَوْ عَلِمَ اللّٰهُ فِيْهِمْ خَيْرًا لَّاسْمَعَهُمْ وَلَوْ اَرَادَ
لَهُمْ اَوْفًى مِّنْ مَّوْعِدٍ ۝ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اسْتَجِیْبُوْا لِلّٰهِ
وَلِرَسُوْلِهِۦ اِذَا دَعَاكُمْ لِمَا يُحْيِیْكُمْ ۚ وَاعْلَمُوْا اَنَّ اللّٰهَ يَحُوْلُ
بَيْنَ الْمَوْتِ وَقَلْبِهِۦ وَاِنَّهُۥ اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ۝ وَاتَّقُوا يَوْمَ تُدْعٰى
اِلَیْهِمْ فَهُمْ لَا يَسْمَعُوْنَ ۚ وَاعْلَمُوْا اَنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ
الْعِقَابِ ۝ وَلَآ تَزَالُ اِذْ اَنْتُمْ قٰیِلٌ مُّسْتَضْعَفُوْنَ فِی الْاَرْضِ
مَخَافُوْنَ اَنْ يُخَفَّفَ عَنْكُمُ الْعَاسِ فَاُتٰىكُمْ وَاَنْتُمْ لَا تَشْعُرُوْنَ
وَرَدَّكُمْ مِّنَ الْعِزَّةِ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ۝ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا
لَا تُخَوِّفُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهُ ۚ وَتُخَوِّفُوْا اَنْفُسَكُمْ ۚ وَانْتُمْ صٰلِحُوْنَ ۝
وَاعْلَمُوْا اَنَّكُمُ اَمْوَالُكُمْ وَاَنْفُسُكُمْ فِیْ شَيْءٍ ۚ وََاَنَّ اللّٰهَ عِنْدَهُۥ
اَجْرٌ عَظِيْمٌ ۝ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اِنْ تَقَرَّبْتُمْ اِلَى اللّٰهِ يَجْعَلْ لَّكُمْ
مُزَیْنًا ۚ وَیَكْفُرْ عَنْكُمْ سَيِّئَاتِكُمْ وَیَغْفِرْ لَكُمْ ۚ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ
الْعَظِيْمِ ۝ وَیُزَيِّنْ لَّكَ بِكَ الَّذِيْنَ اَقْرَبُوا وَلِیْنًا ۚ وَیَقْبَلُكَ
اَوْفًى مِّنْكَ ۚ وَیَسْكُرُوْنَ ۚ وَیَسْكُرُ اللّٰهُ ۚ وَاللّٰهُ خَبِرُ الْمُنِیْرِيْنَ ۝
وَإِذَا اُنْزِلَ عَلَیْهِمْ اِلٰهًا قَالُوْا اَاِذَا سَمِعْتُمُ الْاَوْفَیَّاءَ لَقُلْنَا سَمِعْنَا

व इज् कालुल्लाहुम्-म इन् क़ा-न हाजा हुवलहूक-क मिन् जिन्दि-क फ-अमिर्
अलैना हिजा-र-तुम्-मिनस्समाइ अविअतिना बिअजाबित् अलीम (३२)

व मा कानल्लाहु लियुअज्जिबहुम् व अन्-त फ़ीहिम् ७ व मा कानल्लाहु

मुअज्जिबहुम् व हुम् यस्तगिफ़रून (३३) व मा लहुम् अल्ला युअज्जिब-

हुमुल्लाहु व हुम् यमुद्द-न अनिल्-मस्जिदिल्-
हरामि व मा कानू औलिया-अहू ७ इन्

औलिया-उहू इल्लल्-मुत्तकू-न व लाकिन्-न

अक्स-रहुम् ला यअ-लमून (३४) व मा

कान-सलातुहुम् अिन्दल्बेति इल्ला मुकाअव्-व

तस्दि-य-तन् ७ फ़-ज्जूकुल् - अजा - ब बिमा

कुन्तुम् तक्फ़रून (३५) इन्ललजी-न

क-फ़रू युन्फ़िकू-न अम्वालहुम् लियमुद्द अन्

सबीलिल्लाहि ७ फ़-स-युन्फ़िकू-न-हा सुम् - म

तकूनु अलैहिम् हस्-र-तन् सुम्-म युरलबू-न ७

वल्लजी-न क-फ़रू इला ज - हन्न - म

युद्हारून ॥ (३६) लियमीजल्लाहुल् -

खबी-स मिनत्तय्यिबि व यज्-अ-लल्-खबी-स

बअ-ज्जह अला बअ-ज्जित् फ़-यर्कुमहू जमीअत्

फ़ - यज्ज - लहू फ़ी जहन्न-म ७ उला - इ - क हुमुल्सासिरून ★ (३७)

कुल् लिल्लजी-न क-फ़रू इय्यन्तहू युफ़- लहुम् मा कद् स - लफ ७ व

इय्यअूद् फ़-कद् म-ज्जत् सुन्नतुल् - अव्वलीन (३८) व कातिलू - हुम्

हत्ता ला तकू - न फ़ित्ततुव्-व यकूनद्दीनु कुल्लुहू लिल्लाहि ७ फ़इन्तिहौ

फ़इन्ल्ला-ह बिमा यअ - मलू - न बसीर (३९) व इन् तवल्लौ

फ़अ-लमू अन्ल्ला-ह मौलाकुम् ७ निअ-मल्मौला व निअ-मन्नसीर (४०)

قَالَ اللَّهُ إِنَّ هَذَا الْأَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ۖ وَإِذْ قَالُوا اللَّهُمَّ إِنَّا
كَانَ هَذَا هُوَ الْحَقُّ مِنْ عِنْدِكَ فَأَنْصِرْ عَلَيْنَا جُنُودًا مِنَ السَّمَاءِ
أَوْ أَتِنَا بِمُصِيبٍ ۚ وَاللَّهُ يَصْطَلِبُ بِهِمْ وَأَنْتَ فِيهِمْ
وَمَا كَانَ اللَّهُ مُعَذِّبُهُمْ وَهُمْ يَتَغَفَرُونَ ۖ وَمَا لَهُمْ أَلَّا
يَعْبُدُوا اللَّهَ وَهُمْ يُصُودُونَ مِنَ السَّيِّئَاتِ وَالْزَّالِمَاتِ وَمَا كَانُوا
أُولَئِكَ إِلَّا بَشَرٌ مِثْلُكُمْ وَلَكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ۖ
وَمَا كَانَ صَلَاتُهُمْ عِنْدَ الْبَيْتِ إِلَّا امْتِكَاءٌ وَتَضَلُّوا عَن ذِكْرِهِ
الْعَذَابِ يَمُكِّنُهُمْ كَقَوْمٍ زَكَّرُوا ۖ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا يُضِلُّونَ
أَمْوَالَهُمْ لِيَصُدَّوْا عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ فَسَيُضِلُّونَهَا ثُمَّ لَا يَكُونُ
عَلَيْهِمْ حَسْرَةٌ ثُمَّ يَغْلِبُونَهُ ۚ وَالَّذِينَ كَفَرُوا إِلَىٰ جَهَنَّمَ
يُحْمَلُونَ ۖ لِيُؤْمَرَ اللَّهُ الْعَبِيدَ مِنَ الْعَلِيِّ وَيُجْلَىٰ الْوَيْثُ
بَعْضُهُ عَلَىٰ بَعْضٍ فَيَرُكُهُ جَمِيعًا فَيُصَلُّوْنَ فِي جَهَنَّمَ أُولَئِكَ
هُمْ الْخَسِرُونَ ۖ قُلْ لِلَّذِينَ كَفَرُوا إِنِّي سَنَبِّئُهُمْ بِمَا لَهُمْ
فَأَازِلُهُمْ ۖ وَإِنْ يَقُولُوا فَتَنًا فَتَنَّا فَتَمِصَّتْ الْأَوَّلِينَ ۖ
وَقَالُوا هُمْ عَنَّا لَا تَكُونُ فِتْنَةً ۖ وَيَسْأَلُونَ الَّذِينَ كَفَرُوا
بَلْئَ قَدْ قَاتَلْتُمُوهُمْ فَلَا يَكُونُ اللَّهُ بِمَا يَعْبُدُونَ مُبْدِيَةً ۖ وَإِنْ
تَوَلَّوْا فَأَعْلَبُوا ۚ إِنَّ اللَّهَ مَوْلَاهُمْ يَوْمَ الْمَوْتِ وَبِعَمَلِهِمْ

مَنْ

ही क्या, सिर्फ अगले लोगों की हिकायतें है। (३१) और जब उन्होंने कहा कि ऐ खुदा ! अगर यह (कुरआन) तेरी तरफ़ बरहक है, तो हम पर आसमान से पत्थर बरसा या कोई और तकलीफ़ देने वाला अज़ाब भेज। (३२) और खुदा ऐसा न था कि जब तक तुम उन में थे, उन्हें अज़ाब देता और न ऐसा था कि वे बलिशश मांगे और उन्हें अज़ाब दे। (३३) और (अब) उन के लिए कौन-सी वजह है कि वह उन्हें अज़ाब न दे, जबकि वह मस्जिदे मोहतरम (में नमाज़ पढ़ने) से रोकते हैं और वे उस मस्जिद के मुतवल्ली भी नहीं। उसके मुतवल्ली तो सिर्फ़ परहेज़गार हैं, लेकिन उन में के अक्सर नहीं जानते, (३४) और उन लोगों की नमाज़ ख़ाना-ए-काबा के पास सीटियां और तालियां बजाने के सिवा कुछ न थी, तो तुम जो कुपूर करते थे, अब उस के बदले अज़ाब (का मज़ा) चखो। (३५) जो लोग काफ़िर हैं, अपना माल खर्च करते हैं कि (लोगों को) खुदा के रास्ते से रोकें, सो अभी और खर्च करेंगे मगर आखिर वह (खर्च करना) उनके लिए अफ़सोस (की वजह) होगा और वे मग़्लूब हो जाएंगे। और काफ़िर लोग दोज़ख की तरफ़ हाँके जाएंगे, (३६) ताकि खुदा पाक को ना-पाक से अलग कर दे और ना-पाक को एक दूसरे पर रख कर एक ढेर बना दे। फिर उस को दोज़ख में डाल दे। यही लोग घाटा पाने वाले हैं। (३७) ★

(ऐ पैगम्बर !) कुपकार से कह दो कि अगर वे अपने फ़ेलों से बाज़ आ जाएं तो जो हो चुका, वह उन्हें माफ़ कर दिया जाएगा और अगर फिर (वही हरकतें) करने लगेंगे तो अगले लोगों का (जो) तरीका जारी हो चुका है (वही उन के हक़ में बरता जाएगा), (३८) और उन लोगों से लड़ते रहो, यहां तक कि फ़िल्ता (यानी कुपूर का फ़साद) बाक़ी न रहे और दीन सब खुदा ही का हो जाए और अगर बाज़ आ जाएं तो खुदा उन के कामों को देख रहा है। (३९) और अगर रू-गरदानी करें तो जान रखो कि खुदा तुम्हारा हिमायती है (और) वह ख़ूब हिमायती और ख़ूब मददगार है। (४०)

दसवां पारः वज्र-लम्

सूरतुल्-अन्फालि आयत ४१ से ७५

वज्र-लम् अन्नमा गनिस्तुम् मिन् शैइत् फ-अन्-न लिल्लाहि खुमुसह व लिरसूलि
व लिजिल्लिकुरबा वलयतामा वलमसाकीनि वबिस्सवीजि ॥ इन् कुन्तुम्
आमन्तुम् बिल्लाहि व मा अन्जल्ला अला अब्दिना योमल्फुरकानि
योमल्-त-कल्-जम्आनि ॥ वल्लाहु अला कुल्लि शैइत् कदीर (४१) इज्

अन्तुम् बिल्-अद्वतिदुन्या व हुम् बिल्-अद्वतिल्
कुस्वा वरक्बु अस्फ-ल मिन्कुम् ॥ व लो

तवा - अत्तुम् लहत् - लफ्तुम् फिलमीआदि ॥

व लाकिल्-लियक्-जियल्लाहु अमरत् का-न

मफ् - अलल्-लियहिल - क मन्

ह-ल-क अम्बय्यिनतिव्-व यह्या मन् हय्-य

अम्बय्यिनतिव् ॥ व इन्नल्ला-ह ल - समीअुव्

अलीम ॥ (४२) इज् युरीकहुमुल्लाहु

फ्री मनामि-क कलीलव् ॥ व लो अराकहुम्

कसीरल्-ल फशिल्तुम् व ल-तनाज्अ-तुम् फिल्अमिर

व लाकिन्नल्ला-ह सल्ल-म ॥ इन्नह् अलीमुम्-

बिजातिस्सुदुर (४३) व इज् युरीकुम्हुम्

इजिल्लिकैतुम् फ्री अज्-युनिकुम् कलीलव्-व युक्लिल्लुकुम् फ्री अज्-युनिहिम्

लियक्-जियल्लाहु अमरत् का-न मफ्-अलल् ॥ व इलल्लाहि तुरज्अल् - उमूर

* (४४) या अय्युहल्लजी-न आमन् इज्जा लकीतुम् फि-अ-तन् फस्बुत्

वज्जुल्ला-ह कसीरल्-ल - अल्लकुम् तुफिलहन् ८ (४५) व अतीअुल्ला - ह

व रसूलह् व ला तनाज्अल् फ - तफशल् व तज् - ह - ब रीहकुम्

वस्बिरू ॥ इन्नल्ला - ह म-अस्साबिरीन ८ (४६) व ला तकून्

कल्लजी-न ख-र-ज् मिन् दियारिहिम् ब-तरव्-व रिआअन्नासि व यसुद्व-न

अन् सबीलिल्लाहि ॥ वल्लाहु बिमा यज् - मलू - न मुहीत (४७)

وَأَعْلَمُوا أَنَّمَا غَنِمْتُمْ مِنْ شَيْءٍ فَإِنَّ لِلَّهِ خُمُسَهُ وَلِلرَّسُولِ
وَلِذِي الْقُرْبَىٰ وَالْيَتَامَىٰ وَالسَّكِينِ وَأُولِي السَّبِيلِ إِن كُنْتُمْ
أَمْسَرْتُمْ أَوْ أَمْسَرَ لَكُمْ يَوْمَ الْفُرْقَانِ يَوْمَ تَقُومُ
السُّبُحَاتُ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۖ إِذَا أَنْتُمْ بِالْعُدَّةِ وَالنَّشِيرِ
وَهُوَ بِالْعُدَّةِ وَالنَّشِيرِ وَالرَّسُولِ أَسْعَلَ وَكَفَرُوا وَلَوْ تَوَاعَدْتُمْ
أَلَعَلَّكُمْ فِي الْبَيْتِ وَلَكِنَّ لَيْسَ اللَّهُ بِمَعْلُومٍ ۚ
لِيُؤْخَذَ مِنْ هَٰؤُلَاءِ عَن بَعْضِهِمْ غَرَضٌ ۖ وَعَنِ الْيَهُودِ
لِللَّهِ كَيْفَةٌ عَلَيْهِمْ ۖ إِذْ يُرِيدُ اللَّهُ فِي تَكْلِيفٍ لِّلنَّبِيِّ ۚ وَلَوْ
أَنَّكُمْ كُنْتُمْ فِي الشُّكِّ لَنُكَفِّرَنَّ عَنْكُمْ فِي الْأَمْرِ وَلَٰكِنَّ اللَّهَ
سَمِيرٌ ۚ عَلَيْهِمْ يَدِ الْأَمْرِ وَاللَّهُ قَدِيرٌ ۖ وَإِذْ يُرِيدُ اللَّهُ
فِي تَكْلِيفٍ لِّلنَّبِيِّ ۚ وَلَٰكِنَّ لَيْسَ اللَّهُ بِمَعْلُومٍ ۚ
كَانَ مَعْلُومًا ۖ وَاللَّهُ مُرْجِعُ الْأُمُورِ ۖ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا
إِذَا تَوَلَّيْتُمْ فَذَكَرُوا لِلَّهِ الْكِبْرَ الْعَظِيمَ ۖ تَقْرَأُونَ
وَأُطِيعُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَلَا تَتَّبِعُوا طَائِفَةً مِنْهُمْ يَتَّبِعُوا
وَأُطِيعُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَلَا تَتَّبِعُوا طَائِفَةً مِنْهُمْ يَتَّبِعُوا
سُوءَ مَا بَيَّنَّ بَطَرًا ۖ وَرَبُّكَ الْغَاثِ وَيُصَدِّدُونَ عَنْ
سَبِيلِ اللَّهِ وَاللَّهُ بِمَا يَعْمَلُونَ حَسِيرٌ ۖ وَإِذْ رَأَيْنَا لَهُمْ

और जान रखो कि जो चीज तुम (कुफ़्कार से) लूट कर लाओ उसमें से पांचवां हिस्सा खुदा का और उस के रसूल का और करारबतदारों का और यतीमों का और मुहताजों का और मुसाफ़ि़रों का है। अगर तुम खुदा पर और उस (मदद) पर ईमान रखते हो, जो (हक़ व बातिल में) फ़र्क़ करने के दिन (यानी बद्र की लड़ाई में) जिस दिन दोनों फ़ौजों में मुठभेड़ हो गयी, अपने बन्दे (मुहम्मद) पर नाज़िल फ़रमायी और खुदा हर चीज़ पर कादिर है। (४१) जिस वक़्त तुम (मदीने से) करीब के नाके पर थे और काफ़िर दूर के नाके पर और काफ़िला तुम से नीचे (उतर गया) था और अगर तुम (लड़ाई के लिए) आपस में करारदाद कर लेते तो तै किये हुए वक़्त पर (जमा होने) में आने-पीछे हो जाता, लेकिन खुदा को मंज़ूर था कि जो काम हो कर रहने वाला था, उसे कर ही डाले, ताकि ओ मेरे बसीरत पर (यानी यकीनी जान कर) मरे और जो जीता रहे, वह भी बसीरत पर (यानी हक़ पहचान कर) जीता रहे और कुछ शक़ नहीं कि खुदा सुनता-जानता है। (४२) उस वक़्त खुदा ने स्वाब में काफ़ि़रों को थोड़ी तायदाद में दिखाया और अगर बहुत कर के दिखाता तो तुम लोग जी छोड़ देते और (जो) काम (सामने था, उस) में झगड़ने लगते, लेकिन खुदा ने (तुम्हें इस से) बचा लिया। बेशक़ बहु सीनों की बातों तक को जानता है। (४३) और उस वक़्त जब तुम एक दूसरे के मुकाबले में हुए तो काफ़ि़रों को तुम्हारी नज़रों में थोड़ा कर के दिखाता था, और तुम को उन की निगाहों में थोड़ा कर के दिखाता था, ताकि खुदा को जो काम करना मंज़ूर था, उसे कर डाले और सब कामों का रज़ू खुदा ही की तरफ़ है। (४४) *

मोमिनो ! जब (कुफ़्कार की) किसी जमाअत स तुम्हारा मुकाबला हो, तो साबित क़दम रहो और खुदा को बहुत याद करो, ताकि मुराद हासिल करो। (४५) और खुदा और उस के रसूल के हुक्म पर चलो और आपस में झगड़ा न करना कि (ऐसा करोगे तो) तुम बुज़दिल हो जाओगे और तुम्हारा इक़बाल जाता रहेगा और सब्र से काम लो कि खुदा सब्र करने वाले का मददगार है। (४६) और उन लोगों जैसे न होना, जो इतराते हुए (यानी हक़ का मुकाबला करने के लिए) और लोगों को दिखाने के लिए घरों से निकल आये और लोगों को खुदा की राह से रोकते हैं। और जो आमाज़

(पृष्ठ २८५ का अन्ध)

हका जाना नहीं हो सकता। सातवीं आयत में दो गिरोहों का जिक़्र है, एक जो लड़ाई का साज़ व सामान नहीं रखता था और वह अबू सुक्रियान का तिज़ारत का काफ़िला था, जो शाम से आ रहा था। दूसरा गिरोह मक्का के क़ुरैश यानी अबू जहल का लश्कर था, जिस की तायदाद बहुत ज्यादा थी और जिस के साथ बहुत-सा जंग का सामान था, गरज़ बे-हथियार लोगों पर हमला करना तो खुदा को मंज़ूर और पसंद न था, हथियारों से लैस फ़ौज का मुकाबला किया गया, तो उस के वायदे के मुताबिक़ मुसलमानों को फ़तह हासिल हुई।

वे करते हैं, खुदा उन पर एहाता किये हुए है। (४७) और जब शैतानों ने उन के आमाल उन को सजा कर दिखाये और कहा कि आज के दिन लोगों में से कोई तुम पर गालिब न होगा और मैं तुम्हारा साथी हूँ, (लेकिन) जब दोनों फौजें एक दूसरे के मुकाबले में (आ खड़ी) हुईं तो पसपा हो कर चल दिया और कहने लगा कि मुझे तुम से कोई वास्ता नहीं। मैं तो ऐसी चीजें देख रहा हूँ, जो तुम नहीं देख सकते। मुझे तो खुदा से डर लगता है और खुदा सख्त अज़ाब करने वाला है। (४८) ★

उस वक़्त मुनाफ़िक़ और (काफ़िर), जिन के दिलों में मर्ज था कहते थे कि उन लोगों को उन के दीन ने घमंड में डाल रखा है और जो शक्स खुदा पर भरोसा रखता है, तो खुदा ग़ालिब हिकमत वाला है। (४९) और काश ! तुम उस वक़्त (की कैफ़ियत) देखो, जब फ़रिश्ते काफ़िरों की जानें निकालते हैं, उन के मुँहों और पीठों पर (कोड़े और हथोड़े वग़ैरह) मारते (हैं और कहते) हैं कि (अब) आग के अज़ाब (का मज़ा) चखो। (५०) यह उन (आमाल) की सज़ा है, जो तुम्हारे हाथों ने आगे भेजे हैं और यह (जान रखो) कि खुदा बन्दों पर जुल्म नहीं करता। (५१) जैसा हाल फ़िऔ'नियों का और उन से पहले लोगों का (हुआ था, वैसा ही उन का हुआ कि) उन्होंने खुदा की आयतों से कुफ़र किया, तो खुदा ने उनके गुनाहों की सज़ा में उन को पकड़ लिया। बेशक खुदा ज़बरदस्त और सख्त अज़ाब देने वाला है। (५२) यह इस लिए कि जो नेमत खुदा किसी क़ौम को दिया करता है, जब तक वे खुद अपने दिलों की हालत न बदल डालें, खुदा उसे बदला नहीं करता। और इस लिए कि खुदा सुनता-जानता है। (५३) जैसा हाल फ़िऔ'नियों और उन से पहले लोगों का (हुआ था, वैसा ही उनका हुआ), उन्होंने ने अपने परवरदिगार की आयतों को झुठलाया तो हमने उनके गुनाहों की वजह से हलाक कर डाला और फ़िऔ'नियों को डुबा दिया और वे सब ज़ालिम थे। (५४) जानदारों में सब से बद-तर खुदा के नज़दीक वे लोग हैं जो काफ़िर हैं, सो वे ईमान नहीं लाते। (५५) जिन लोगों से तुम ने (मुलह) का अह्द किया है, फिर वे हर बार अपने अह्द को तोड़े डालते हैं और (खुदा से) नहीं डरते। (५६) अगर तुम उनको लड़ाई में पाओ तो उन्हें ऐसी सज़ा दो कि जो लोग उनको पीछे (से मदद दे रहे) हों, वे उनको देख कर भाग जाएं। अजब नहीं कि उन को (इस से) इबरत (सबक) हो। (५७) और अगर तुम को किसी क़ौम से

दशाबाजी का खौफ हो तो (उन का अहद) उन्हीं की तरफ फेंक दो (और) बराबर (का जवाब दो)। कुछ शक नहीं कि खुदा दशाबाजों को दोस्त नहीं रखता। (५८) ★

और काफिर यह न स्वीकार करें कि वे भाग निकले हैं। वे (अपनी चालों से हम को हरगिज) आजित नहीं कर सकते। (५९) और जहां तक हो सके (फौज की जमईयत के) जोर से और घाड़ों के तैयार रखने से उन के (मुकाबले) के लिए मुस्तैद रहो कि उस से खुदा के दुश्मनों और तुम्हारे दुश्मनों और उन के सिवा और लोगों पर, जिन को तुम नहीं जानते और खुदा जानता है, हैबत बंठी रहेगी, और तुम जो कुछ खुदा के रास्ते में खर्च करोगे उस का सवाब तुम को पूरा-पूरा दिया जाएगा और तुम्हारा जरा नुकसान नहीं किया जाएगा। (६०) और अगर ये लोग मुलह की तरफ मायल हों, तुम भी उस की तरफ मायल हो जाओ और खुदा पर भरोसा रखो। कुछ शक नहीं कि वह सब कुछ मुनता (और) जानता है। (६१) और अगर यह चाहें कि तुम को फरेब दें, तो खुदा तुम्हें किरायात करेगा। वहीं तो है, जिसने तुम को अपनी मदद से और मुसलमानों (की जमाअत) से ताकत पहुंचायी। (६२) और उनके दिलों में उल्फत (मुहब्बत) पैदा कर दी और अगर तुम दुनिया भर की दीलत खर्च करते, तब भी उन के दिलों में उल्फत पैदा न कर सकते, मगर खुदा ही ने उनमें उल्फत डाल दी। बेशक वह जबर्दस्त (और) हक्मत वाला है। (६३) ऐ नबी! खुदा तुम को और मोमिनों को, जो तुम्हारे पैरो हैं, काफी है। (६४) ★

ऐ नबी! मुसलमानों को जिहाद पर उभारो। अगर तुम में २० आदमी साबित कदम रहने वाले होंगे, तो दो सौ काफिरों पर गालिब रहेंगे और अगर सौ (ऐसे) होंगे, तो हजार पर गालिब रहेंगे, इस लिए कि काफिर ऐसे लोग हैं कि कुछ भी समझ नहीं रखते। (६५) अब खुदा ने तुम पर से बोझ हल्का कर दिया और मालूम कर लिया कि (अभी) तुम में किसी क़दर कमजोरी है। पस अगर तुम में एक सौ साबित कदम रहने वाले होंगे, तो दो सौ पर गालिब रहेंगे और अगर एक हजार होंगे, तो खुदा के हुकम से दो हजार पर गालिब रहेंगे और खुदा साबित कदम रहने वालों का मददगार है। (६६) पैगम्बर को मुनासिब नहीं कि उसके क़ब्जे में क़ेदी रहें,

१. साबित कदम रहने वालों में मुग़द बहादुर और मजबूत दिल हैं और हकीकत में जिहाद करना भी बहादुरों का काम है और बहादुरी ईमानी क़ूबत से बढ़ती है। जितना ईमान ज्यादा होता है, उतनी ही बहादुरी ज्यादा होती है। इसी लिए हज़रत मरवेय कायनात मल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मुबारक अहद के मोमिनों के बारे में यह इशार्द हुआ है कि अगर तुम में बीस बहादुर होंगे तो दो सौ काफिरों पर गालिब रहेंगे और ईमान की इसी ताक़त की बुनियाद पर कुछ लोगों ने इसे 'हुकम' माना है यानी ईमान वालों को खुदा का हुकम यह है कि अगर काफिर उन में दस गुने भी हों, तब भी उन के मुकाबले में जमे रहें। अपने से दो गुने कुफ़्फ़ार के मुकाबले में साबित कदम रहने का हुकम इस ताक़त की ओर भी कमजोरी की बज़ह से है। चूनांचे इसी लिए बाद की आयत में यह इशार्द हुआ कि, 'अब खुदा ने तुम से बोझ हल्का कर दिया और मालूम कर लिया कि (अभी) तुम में कमजोरी है, पस अगर तुम में से एक हजार होंगे तो खुदा के हुकम से दो हजार पर गालिब रहेंगे। अब अगर दो गुने काफिर मुकाबले पर हों, तो हरगिज नहीं आगना चाहिए यानी कम से कम एक सौ मोमिन को दो सौ काफिरों पर भारी होना चाहिए और एक हजार को दो हजार पर।

मा कान लिनबियत् अंयकू-न लह अस्सा हत्ता युस्त्रि-न फ़िल्अज़ि॥तुरीदू-न
अ - र - ज़दुन्या वल्लाहु गुरीदुल् - आखि-र-तः वल्लाहु अज़ीजुन् हकीम
(६७) लौला किताबुम्-मिनल्लाहि स-ब-क ल-मस्सकुम् फ़ीमा अ-ख्तुम्
अज़ाबुन् अज़ीम (६८) फ़कुलू मिम्मा ग़निम्तुम् हलालन् तय्यिबव्व
-सकुल्ला - ह इन्नल्ला - ह ग़फ़रुर्हीम

★ (६६) या अय्यूहन्नविद्यु कुल्
लिमन् फ्री ऐदीकुम् मिनल्अस्सर्।
इय्यअ-लमित्लाहु फ्री कुलूबिकुम् खैरय्युअतिकुम्
खैरम्मिम्मा उखिअ मिन्कुम् व यगिफर्
लकुम् १ वल्लाहु गफूर्हीम (७०) व

इय्युरीद् खियान-त-क फ-कद् खानुल्ला-ह
मिन् कब्लु फ-अम्क-न मिन्हुम् ५ वल्लाहु
अलीमुव् हकीम (७१) इन्नल्लजी-न
आमनू व हाजरू व जाहद् बिअम्वालिहिम्
व अन्फुसिहिम् फी सबीलिल्लाहि वल्लजी-न
आवद्-व न-सरू उला-इक बअ - जुहुम्

ओलिया-उ बअ-जिन् ५ वल्लजी-न आमनू व लम् युहाजिरू मा लकुम्
 मिंव्वलायतिहिम् मिन् शैइव हत्ता युहाजिरू ६ व इनिस्तत्सरूकुम्
 फिद्दीनि फ - अलैकुमुन्नरू इल्ला अला कौमिम्बैनकुम् व बैनुम् मीसाकुन्
 वल्लाहु बिमा तअ-मलू-न बसीर (७२) वल्लजी-न क-फरू बअ-जुहुम्
 ओलिया-उ बअ-जिन् ५ इल्ला तफअलूहु तकुन् फित्-न - तुत् फिलअजि
 व फसादुव् कबीर ५ (७३) वल्लजी-न आमनू व हाजरू व जाहद
 फी सबीलिल्लाहि वल्लजी - न आवव - व न - सरू उलाइ-क हुमुल् -
 मुअ्मिनु-न हक्कन् ५ लहुम् मरिफ - रतुव् - व रिजकुत् करीम (७४)

जब तक (काफ़िरों को क़त्ल कर के) ज़मीन में कसरत से खून (न) बहा दे। तुम लोग दुनिया के माल के तालिब हो और खुदा आखिरत (की भलाई) चाहता है और खुदा ग़ालिब हिक्मत वाला है। (६७) अगर खुदा का हुक्म पहले न हो चुका होता, तो जो (फ़िद्व्या) तुम ने लिया है, उसके बदले तुम पर बड़ा अज़ाब नाज़िल होता। (६८) तो ग़नीमत का जो माल तुम को मिला है, उसे खाओ (कि वह तुम्हारे लिए) पाक-हलाल (है) और खुदा से डरते रहो। बेशक खुदा बरूशने वाला मेहरबान है। (६९) *

ऐ पैग़म्बर ! जो क़ैदी तुम्हारे हाथ में (गिरफ़्तार) हैं, उनसे कह दो कि अगर खुदा तुम्हारे दिलों में नेकी मालूम करेगा, तो जो (माल) तुम से छिन गया है, उस से बेहतर तुम्हें इनायत फ़रमाएगा। और तुम्हारे गुनाह भी माफ़ कर देगा और खुदा बरूशने वाला मेहरबान है। (७०) और अगर ये लोग तुम से दगा करना चाहेंगे तो ये पहले ही खुदा से दगा कर चुके हैं, तो उसने उन को (तुम्हारे) क़ब्ज़े में कर दिया और खुदा जानने वाला, हिक्मत वाला है। (७१) जो लोग ईमान लाये और वतन से हिज़रत कर गये और खुदा की राह में अपने माल और जान से लड़ें, वे और जिन्होंने (हिज़रत करने वालों को) जगह दी और उन की मदद की, वे आपस में एक दूसरे के साथी हैं। और जो लोग ईमान तो ले आये, लेकिन हिज़रत नहीं की, तो जब तक वे हिज़रत न करें, तुम को उन के साथ से कुछ वास्ता नहीं। और अगर वे तुमसे दीन (के मामलों) में मदद तलब करें तो तुम को मदद करनी ज़रूरी है, मगर उन लोगों के मुकाबले में कि तुम में और उन में (सुलह का) अह्द हो, (मदद नहीं करनी चाहिए) और खुदा तुम्हारे सब कामों को देख रहा है। (७२) और जो लोग काफ़िर हैं (वे भी) एक दूसरे के साथी हैं, तो (मोमिनो !) अगर तुम यह (काम) न करोगे तो मुल्क में फ़ि़त्ना बरपा हो जाएगा और बड़ा फ़साद मचेगा। (७३) और जो लोग ईमान लाये और वतन से हिज़रत कर गये और खुदा की राह में लड़ाइयां करते रहे और जिन्होंने (हिज़रत करने वालों को) जगह दी और उनकी मदद की, यही लोग सच्चे मुसलमान हैं। उन के लिए (खुदा

के यहां) बलिष्ठा और इज्जत की रोजी है। (७४) और जो लोग बाद में ईमान लाये और बतन से हिजरत कर गये और तुम्हारे साथ हो कर जिहाद करते रहे, वे भी तुम्हीं में से हैं और रिश्तेदार खुदा के हुक्म के मुताबिक एक दूसरे के ज्यादा हकदार हैं। कुछ शक नहीं कि खुदा हर चीज को जानता है। (७५) ★●

६ सूर: तोबा ११३

सूर: तोबा मइनी है और इस में एक सौ उन्तीस आयतें और सोलह रकूअ हैं।

(ऐ मुसलमानो ! अब) 'खुदा और उसके रसूल की तरफ से मुशिरकों से, जिन से तुम ने अह्द (समझौता) कर रखा था, बे-जारी (और जंग की तैयारी) है। (१) तो (मुशिरको ! तुम) जमीन में चार महीने चल फिर लो और जान रखो कि तुम खुदा को आजिज न कर सकोगे और यह भी कि खुदा काफ़िरों को रुसवा करने वाला है। (२) और हज्जे अकबर के दिन खुदा और उसके रसूल की तरफ से लोगों को आगाह किया जाता है कि खुदा मुशिरकों से बेज्जार है और उस का रसूल भी (उन से दस्तबरदार है)। पस अगर तुम तोबा कर लो, तो तुम्हारे हक में बेहतर है और न मानो (और खुदा से मुकाबला करो) तो जान रखो कि तुम खुदा को हरा नहीं सकोगे और (ऐ पैगम्बर !) काफ़िरों को दुख देने वाले अज्जब की खबर सुना दो। (३) अल-बत्ता, जिन मुशिरकों के साथ तुम ने अह्द किया हो, और उन्होंने तुम्हारा किसी तरह का क्रूसुर न किया हो और न तुम्हारे मुकाबले में किसी की मदद की हो, तो जिस मुद्दत तक उनके साथ अह्द किया हो, उसे पूरा करो (कि) खुदा परहेजगारों को दोस्त रखता है। (४) जब इज्जत के महीने गुजर जाएं, तो मुशिरकों को जहां पाओ, क़त्ल कर दो और पकड़ लो और घेर लो और हर घात की जगह पर उनकी ताक में बंठे रहो, फिर अगर वे तोबा कर लें और नमाज़ पढ़ने और ज़कात देने लगें, तो उन की राह छोड़ दो। बेशक खुदा बरूणने वाला मेहरबान है। (५) और अगर कोई मुशिरक तुम से पनाह चाहता हो, तो उसको पनाह दो, यहां तक कि खुदा का कलाम सुनने लगे, फिर उसको अमन की जगह वापस पहुंचा दो, इस लिए कि ये बे-खबर लोग हैं। (६) ★

१. इस सूर: के शुरू में बिस्मिल्लाह नहीं लिखी गयी और इस की बहुत-सी बजहें बयान की गयी हैं। इज्जत अली रज़ि० कहते हैं कि बिस्मिल्लाह में अमान है, क्योंकि इस में खुदा का नाम इस खूबी के साथ लिया जाता है, जो अमान का काम करने वाला है यानी रहमत और यह सूर: लड़ाई और जंग और अमान उठाने के लिए नाखिल हुई है, इस लिए इस में बिस्मिल्लाह नहीं है। कुछ ने कहा कि अरब की आदत थी कि जब उन में और किसी क्रिम में समझौता होता था और वे उस को तोड़ना चाहते थे, तो इस बारे में जो खत कि उस क्रिम को लिखते थे उस पर बिस्मिल्लाह नहीं लिखते थे। जब कुफ़्रार ने वह अह्द (समझौता), जो मुसलमानों ने खुदा के हुक्म से उन के साथ किया था, तोड़ डाला, तो खुदा ने मुसलमानों से फ़रमाया कि तुम को भी अपने अह्द पर कायम रहना जरूरी नहीं। पस चूंकि इस सूर: में अह्द तोड़ डाला गया है और इस के नाखिल होने पर हुजूर सल्ल० ने हज़न अली रज़ि० को मुशिरकों के पास भेजा। उन्होंने यह सूर: उन को सुना दी और उन से कह दिया कि अब समझौता टूट चुका है। चार महीने के बाद हर जगह तुम लोगों से जंग है, इस लिए उन की आदत के मुताबिक उन के शुरू में 'बिस्मिल्लाह' नहीं लिखी। इन के अलावा भी कई क़ौल हैं, मगर ज्यादा सही पहला क़ौल मालूम होता है।

२. जिन हिज्जा की दसवीं तारीख से रबीउल अब्बल आखिर की दसवीं तक।

कै-फ यकूनु लिमुशिरकी-न अह्दुत् अिन्दल्लाहि व अिन्-द रसूलिही इल्लल्-
लखी-न आहतुम् अिन्दल्-मस्जिदिल्-हरामि ८ फ-मस्तकामू लकुम् फस्तकीम्
लहुम् ७ इन्ल्ला-ह युहिब्बुल्-मुत्तकीन (७) कै-फ व इय्यउहुरू अलैकुम्
ला यर्कुबू फीकुम् इल्लव्-व ला जिम्म - तत् ७ युरजूनकुम् बिअफवाहिहिम्

व तअ्बा कुलुबुहुम् ८ व अक्सरुहुम्
फासिकून ८ (८) इश्तरो बिआयातिल्लाहि
स-म-नन् कलीलन् फ-सद्दु अन् सबीलिहि
इन्नुहुम् सा-अ मा कानू यअ-मलून (९)
ला यर्कुबू-न फी मुअ्मिनिन् इल्लव्-व ला
जिम्म-तत् ७ व उलाइ - क हुमुल्मुअ-तदून
(१०) फइन् ताबू व अकामुस्सला-त

व आतवुज्जका-त फइल्लवानुकुम् फिद्दीनि
व नुफस्सिलुल्-आयाति लिक्वोमिययअ-लमून
(११) व इन्-कसू ऐमानहुम् मिम्बअ-दि
अहिदिहिम् व त-अन् फी दीनिकुम् फक्कातिल्
अइम्म-तल् - कुफिर ॥ इन्नुहुम् ला
ऐमा-न - लहुम् ल-अल्लहुम् यन्तहून (१२)

अला तुक्कातिलून कौयन्-न-कसू ऐमानहुम् व हम्मू बिइहराजिरसूलि व
हुम् ब-दऊकुम् अव्व-ल मर्रतिन् ७ अ - तरुशौनहुम् ८ फल्लाहु अ-हक्कु अन्
तरुशौहु इन् कुन्तुम् मुअ्मिनीन (१३) कातिलू-हुम् युअज्जिब-हुमुल्लाहु
बिएदीकुम् व शुल्जिहिम् व यन्सुरकुम् अलैहिम् व यश्कि सूद् - र
कौमिम् - मुअ्मिनीन ॥ (१४) व युज्जिह् गै - अ कुलूबिहिम् ७ व
यतुबुल्लाहु अला मय्यशाउ ७ वल्लाहु अलीमुन् हकीम (१५)

بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَا يَعْلَمُونَ ۝ كَيْفَ يَكُونُ لِلشَّارِكِينَ عِندَ عِندِ
اللَّهِ وَعِندَ رَسُولِهِ إِلَّا الَّذِينَ عَاهَدُوا عِنْدَ النَّبِيِّ سِمْحًا
فَمَا اسْتَقْرَأُوا كُفْرًا فَاسْتَقْرَأُوا كُفْرًا إِنَّ اللَّهَ يَحِبُّ الْمُتَّقِينَ ۝
كَيْفَ وَإِنْ يَظُنُّوْا عَلَيْهِمْ لَا يَرْفَعُوْا إِلَيْهِمْ إِلَّا وَلَا ذَنْبًا
يُرْسِلُونَ كُفْرًا بِالْوَحْيِهِمْ وَتَأْتِي فَلَوْ بِهَؤُلَاءِ كُفْرًا فَيَسْخَرُونَ
أَسْخَرًا وَإِلَّا يَأْتِ اللَّهُ تَنَازُلًا كَلِمًا فَصَلِّدًا عَنْ سَبِيلِهِ إِنَّهُمْ
سَاءَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝ لَا يَرْفَعُونَ فِي مَوْجِهِمْ إِلَّا وَلَا ذَنْبًا
وَأُولَئِكَ هُمُ الْمُتَعَذِّبُونَ ۝ فَإِنْ تَابُوا وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ وَآتَوُا
الزَّكَاةَ وَآمَنُوا بِذِكْرِ الْيَوْمِ وَنَقَّضُوا الْأَيْمَانَ لِقَوْمٍ يَمْكُنُونَ ۝
وَأِنْ نَقَّضُوا أَيْمَانَهُمْ مِنْ بَعْدِ عَهْدِهِمْ وَكُنَّا فِي زَيْبٍ كُفْرًا
فَنَقَّضْنَا الْعَهْدَ إِنَّهُمْ لَا إِيمَانَ لَهُمْ لَعَنَهُمُ اللَّهُ وَنَعْنَعُهُمْ ۝
أَلَمْ تَقَاتِلْهُمْ قَوْمًا لَقَّوْا أَيْمَانَهُمْ وَهَمُّوا بِأَخْذِ الرَّسُولِ وَ
هُمْ يَكْفُرُونَ ۝ أَلَمْ يَكُنْ لَهُمْ مَوْعِدٌ أَنَّهُمْ إِذَا قَاتَلُوا بِأَمْرِ اللَّهِ
وَإِلَى اللَّهِ لَنَكُونُنَّ لَهُمْ قَوْمًا عَدُوًّا ۝ قَاتِلُوهُمْ يُعَذِّبُهُمُ اللَّهُ بِأَيْمَانِهِمْ
وَيُغْنِمُ عَنْهُمْ وَهُمْ عَلَيْهِمْ رِيفٌ صَدَقَ قَوْلُ الْمُؤْمِنِينَ ۝
وَيَدْعُ غَيْظَ فَلَوْ بِهَؤُلَاءِ وَيَتُوبُ اللَّهُ عَلَى مَنْ يَشَاءُ وَاللَّهُ
عَلِيمٌ خَبِيرٌ ۝ أَمْ حَسِبْتُمْ أَنْ تُتْرَكُوا وَلَنْ يُغْلِبَ اللَّهُ الَّذِينَ

भला मुश्रिकों के लिए (जिन्होंने अहद तोड़ डाला), खुदा और उसके रसूल के नजदीक अहद किस तरह कायम रह सकता है, 'हां, जिन लोगों के साथ तुम ने मस्जिद मोहतरम (यानी खाना-ए-काबा) के नजदीक अहद किया है अगर वे (अपने अहद पर) कायम रहें, तो तुम भी अपने कौल व करार (पर) कायम रहो। बेशक खुदा परहेजगारों को दोस्त रखता है। (७) (भला उन से अहद) किस तरह (पूरा किया जाए, जब उन का हाल यह है) कि अगर तुम पर गलबा पा लें, तो न कराबत का लिहाज करें, न अहद का, यह मुंह से तो तुम्हें खुश कर देते हैं, लेकिन उनके दिल (इन बातों को) कबूल नहीं करते और उन में अक्सर ना-फरमान हैं। (८) ये खुदा की आयतों के बदले थोड़ा सा फायदा हासिल करते और लोगों को खुदा के रास्ते से रोक्ते हैं। कुछ शक नहीं कि जो काम ये करते हैं, बुरे हैं। (९) ये लोग किसी मोमिन के हक में न तो रिश्तेदारी का पास करते हैं, न अहद का और ये हद से आगे बढ़ जाने वाले हैं। (१०) अगर ये तौबा कर लें और नमाज पढ़ने और जकात देने लगे, तो दीन में तुम्हारे भाई हैं और समझने वाले लोगों के लिए हम अपनी आयतें खोल-खोल कर बयान करते हैं। (११) और अगर अहद करने के बाद अपनी कस्मों को तोड़ डालें और तुम्हारे दीन में ताने करने लगे, तो उन कुफर के पेशवाओं से जंग करो, (ये बे-ईमान लोग हैं और) इन की कस्मों का कुछ-एतबार नहीं है। अजब नहीं कि (अपनी हरकतों से) बाज आ जाएं। (१२) भला तुम ऐसे लोगों से क्यों न लड़ो, जिन्होंने अपनी कस्मों को तोड़ डाला और (खुदा के) पैगम्बर के निकालने का पक्का इरादा कर लिया और उन्होंने तुम से (किया गया अहद तोड़ना) शुरू किया। क्या तुम ऐसे लोगों से डरते रहो, हालांकि डरने के लायक खुदा है, बशर्त कि ईमान रखते हो। (१३) उन से (खूब) लड़ो। खुदा उन को तुम्हारे हाथों से अजाब में डालेगा और रसवा करेगा और तुम को उन पर गलबा देगा और मोमिन लोगों के सीनों को शिफा बख्शेगा। (१४) और उन के दिलों से गुस्सा दूर करेगा और जिस पर चाहेगा, रहमत करेगा और

१. हदीबिया में कुफरार के साथ दस वर्ष का समझौता हुआ था और इस शर्त पर मुलह करार पायी थी कि जो लोग मुसलमानों की पनाह में हैं, उन पर न मक्के वाले खुद हमला करेंगे और न हमला करने वालों की मदद करेंगे और जो लोग मक्के वालों की पनाह में हैं, उन पर मुसलमान न हमला करेंगे और न हमला करने वालों की मदद करेंगे, मगर कुरैश ने अपना अहद तोड़ डाला। यानी बनूबक्र ने जो मक्के वालों की पनाह में थे, खुजामा पर, जो हजरत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पनाह में थे चढ़ाई कर दी और कुरैश ने उन की मदद की। यह वाकिया होने पर खुजामा में से एक शरस अन्न बिन सालिम नाम का हजरत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की खिदमत में हाजिर हुआ और कहा कि मक्के के काफ़िरो ने अपना अहद तोड़ डाला, तब आप ने फरमाया, मैं तुम्हारी मदद करूंगा। गरज आप को मक्के वालों से जंग करनी पड़ी। चूनांचे आप ने सन् ०८ हि० में उन पर चढ़ाई की और मक्का फ़तह कर लिया।

अम् हसिबुम् अन् तुतरकू व लम्मा यअ-लमिल्लाहुलज्जी-न जाहदू मिन्कुम् व
लम् यत्तखिज्जु मिन् इनिल्लाहि व ला रसूलिही व लम्मुअमिनी-न वलीज-तन्नु

वल्लाहु खबोरुम् - बिमा तअ - मलून ★ (१६) मा का-न लिम्मुशिरकी-न

अय्यअ-मुह मसाजिदल्लाहि शाहिदी-न अला अन्फुसिहिम् विल्कुफिर ७ उलाइ-क

हबितत् अअ - मालुहुम् ६ व फिल्लारि

हुम् खालिदून (१७) इन्मा यअ-मुह

मसाजिदल्लाहि मन् आम - न बिल्लाहि

वल्-योमिल्-आखिरि व अकामस्सला-त व

आतज्जका-त व लम् यत्-श इल्लल्ला-ह

फ-असा उलाइ-क अय्यकून मिन्ल्-मुहत्तदीन

(१८) अ-ज-अल्तुम् सिकाय-तल् - हाज्जि

व अिमार्-तल्-मस्जिदिल्-हरामि क - मन्

आम-न बिल्लाहि वल्-योमिल्-आखिरि व

जा-ह-द फी सबीलिल्लाहि ७ ला यस्तवू-न

अिन्दल्लाहि ७ वल्लाहु ला यहिदल्-कौमज्-

जालिमी-न (१९) अल्लजी-न आमनू व

हाजरू व जाहदू फी सबीलिल्लाहि ७ बिअम्वालिहिम् व अन्फुसिहिम्

अअ-अमु द-र-ज-तन् अिन्दल्लाहि ७ व उलाइ - क हुमुल्-फाइजून (२०)

युबशिशरुहुम् रब्बुहुम् बिरह्मतिमिन्हु व रिख्वानिव्-व जन्नातिल्लहुम् फीहा

नबीमुम्-मुकीम ॥ (२१) खालिदी - न फीहा अ-ब - दत् ७ इन्लला - ह

अिन्दह अजरू अजीम (२२) या अय्युहल्लजी - न आमनू ला

तत्तखिज्जु आबा - अकुम् व इल्लवानकुम् ओलिया - अ इनिस्तहब्बुल्कुफ - र

अ-लल्इमानि ७ व मय्य-त-वल्लहुम् मिन्कुम् फ-उलाइ-क हुमुज्जालिमून (२३)

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
جَاهِدُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَلَمْ يَجِدْ لَهُمْ دِينًا وَلَا رَسُولًا وَلَا
الْمُؤْمِنِينَ وَجِئَهُم بِالْحَقِّ فَأَعْمَلُوا فِي سَكَنٍ
الْمُؤْمِنِينَ أَنْ يَخْرُجُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ شَاهِدِينَ عَلَى الْكُفْرِ
أُولَئِكَ سَجِدُوا لِلْهِمْ وَأَفْكَرُوا فِي الْكُفْرِ وَالْجَاهِلِيَّةِ
سَبِيلَ اللَّهِ مِنْ أَمْنٍ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَأَقَامَ الصَّلَاةَ وَ
أَنَ الرَّكْعَةَ وَكَرَّمَ يَحْيَىٰ اللَّهُ فَصَلَّىٰ أُولَئِكَ أَنْ يَكُونُوا مِنَ
الْمُؤْمِنِينَ ۝ أَجْعَلُهُمْ نِعْمَةً لِّأَهْلِ الْبَيْتِ وَغُلَامًا مِّنَ الصَّالِحِينَ
كَمَنْ أَمَنَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَجَاهِدَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ لَا
يَسْتَوُونَ عِنْدَ اللَّهِ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ۝
الَّذِينَ آمَنُوا وَهَاجَرُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَأَمَّا أُولَئِكَ
وَأَنفُسُهُمْ أَغْلَقَهُمْ دَرَجَةً عِنْدَ اللَّهِ وَأُولَئِكَ هُمُ الْفَائِزُونَ ۝
يَتَّبِعُهُمُ الْخَيْرُ مِنْهُ رِضْوَانًا وَجَنَّتْ لَهُمْ فِيهَا
أَنْفُسُهُمْ فَخَبَّرَهُمْ اللَّهُ أَنَّ اللَّهَ عِنْدَ أَجْرِهِ
عَظِيمٌ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتْلُوا زَيْلَ مَا نَزَّلَ اللَّهُ وَتِلْكَ
إِنَّ اسْتَعْيَبُوا الْكُفْرَ عَلَى الْإِيمَانِ وَمَنْ يَتْلُكُمُ اللَّهُ فَتَكُنْ
هُمُ الظَّالِمُونَ ۝ فَلَنْ يَكُونَ أَكْوَافًا وَلَا تِلْكَ وَلَا تِلْكَ وَلَا تِلْكَ
وَأَكْوَافُهُمْ وَعَبَرُوا بِهَا مَسَافِرَهُمْ وَأَمْوَالُهُمْ وَأَمْوَالُهُمْ

खुदा सब कुछ जानता (और) हिक्मत वाला है। (१५) क्या तुम लोग यह ख्याल करते हो कि (वे-आज़माइश) छोड़ दिये जाओगे और अभी तो खुदा ने ऐंसे लोगों को अलग किया ही नहीं, जिन्होंने तुम में से जिहाद किये और खुदा और उसके रसूल और मोमिनों के सिवा किसी को दिली दास्त नहीं बनाया और खुदा तुम्हारे सब कामों को जानता है। (१६) *

मुशिरकों को मुनासिब नहीं कि खुदा की मस्जिदों को आबाद कर, जबकि वे अपने आप पर कुफर की गवाही दे रहे हैं। उन लोगों के सब अमल बेकार हैं, और ये हमेशा दोख़ में रहेंगे। (१७) खुदा की मस्जिदों को तो वे लोग आबाद करते हैं, जो खुदा पर और क़ियामत के दिन पर ईमान लाते हैं और नमाज़ पढ़ते और ज़कात देते हैं और खुदा के सिवा किसी से नहीं डरते। यही लोग, उम्मीद है कि हिदायत पाये हुए लोगों में (दाख़िल) हों। (१८) क्या तुमने हाजियों को पानी पिलाना और मस्जिदों में मोहतरम (यानी ख़ाना-ए-काबा) को आबाद करना उस शरू के अमल जैसा ख्याल किया है जो खुदा और आख़िरत के दिन पर ईमान रखता है और खुदा की राह में जिहाद करता है? ये लोग खुदा के नज़दीक बराबर नहीं हैं और खुदा ज़ालिम लोगों को हिदायत नहीं किया करता (१९) जो लोग ईमान लाये और वतन छोड़ गये और खुदा की राह में माल और जान से जिहाद करते रहे, खुदा के यहां इन के दर्जे बहुत बड़े हैं और वही मुराद को पहुंचने वाले हैं। (२०) उनका परवरदिगार उनको अपनी रहमत की ओर खुशनुदी की ओर बहिश्तों की खुशख़बरी देता है, जिन में उन के लिए हमेशा-हमेशा की नेमतें हैं। (२१) (और वे) उनमें हमेशा-हमेशा रहेंगे। कुछ शक नहीं कि खुदा के यहां बड़ा बदला तैयार है। (२२) ऐ ईमान वाले! अगर तुम्हारे (मां-) बाप और (बहन-) भाई ईमान के मुकाबले में कुफर को पसंद करें, तो उनसे दास्ती न रखो और जो उन से दास्ती रखेंगे, वे ज़ालिम हैं। (२३) कह दो कि अगर तुम्हारे बाप

कुल् इन् का-न आबाउकुम् व अन्नाउकुम् व इस्वानुकुम् व अज्वाजुकुम्
व अशीरतुकुम् व अम्बालु निक्-त-रफ्तुमूहा व तिजारतुत् तख्शो-न कसादहा
व मसाकिनु तर्जोनहा अ-ह-ब्-ब इलैकुम् मिनल्लाहि व रसूलिही व जिहादिन्
फी सबीलिही फ - त-रब्बसू हत्ता यत्तियल्लाहु बिअमिरही ७ वल्लाहु ला

यहिदल्-कौमल्-फासिकीन * (२४) ल-कद
न-स-र-कुमुल्लाहु फी मवाति-न कसीरतिव्-व
यो - म हुनैनिन् ॥ इज् अअ - ज - बत्कुम्
कस-रतुकुम् फ-लम् तुगिन अन्कुम् शैअव्-व
जाकत् अलैकुमुल्-अज्जु बिमा रहबत् सुम्-म
वल्लेतुम् मुद्विरीन ८ (२५) सुम् - म
अन्ज-लल्लाहु सकीन-तह अला रसूलिही व
अ-लल्-मुअमिनी-न व अन्ज-ल जुनदल्लम् तरीहा
व अज्जबल्लजी-न क-फरू ७ व जालि-क
जज्जाल्काफिरीन (२६) सुम्-म यतुबुल्लाहु
मिम्बअ-दि जालि-क अला मय्यशाउ ७ वल्लाहु
गफूरर्हीम (२७) या अय्युहल्लजी-न
आमनू इन्नमल्-मुशिरकू-न न - जसुन् फला

كَانَ اَوَّلُ مَنْ تَرَفَعَتْ نَفْسُهَا اَحَبُّ اِلَيْكُمْ مِنَ اللّٰهِ وَرَسُولِهِ ۖ وَكَانَ
فِي سَبِيلِهِ فَكَرِهَ اَحَقُّ اِلَى اللّٰهِ بِأَمْرِهِ ۖ وَاللّٰهُ لَا يَدْرِي
الْيَوْمَ الْغَيْبِينَ ۚ لَقَدْ نَعَّرَ اللّٰهُ فِي مَوَاطِنَ كَثِيرَةٍ ۚ وَيَوْمَ
حُتَيْنَ اِذَا احْبَبْتُمْ كُفْرًا فَكُفْرًا نَعْنَى عَدُوِّ شَيْءٍ اَوْ طَافَتْ
عَلَيْكُمْ اَلْاَرْضُ بِمَا رَحَبَتْ ثُمَّ وَاِلَيْكُمْ مُّدْبِرِينَ ۚ ثُمَّ اَنزَلَ
اللّٰهُ سَكِينَتَهُ عَلَى رُسُولِهِ وَعَلَى الْمُؤْمِنِينَ ۚ وَانزَلَ جُودًا
لِّمَنْ رَزَقَهَا ۚ وَعَذَبَ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ وَذَلِكَ جَزَاءُ الَّذِينَ ۝
ثُمَّ يَوَدُّ اللّٰهُ مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ اَنْ يَنْتَظِرَ ۚ وَاللّٰهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اِنَّمَا الْمُشْرِكُونَ نَجَسٌ فَلَا يَقْرَأُ بِكُتُبِ السَّعِيدِ
الصِّرَاطِ بَعْدَ عَامِلِهِ هَذَا ۚ وَانْ جَعَلْتُمْ عِيْلَةً فَيَسْئَلْكُمْ
اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهِ اِنْ شَاءَ اِنَّ اللّٰهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۝ قَالُوا الَّذِينَ
لَا يُؤْمِنُونَ بِاللّٰهِ وَلَا بِالْيَوْمِ الْآخِرِ وَلَا يُحَرِّمُونَ مَا حَرَّمَ
اللّٰهُ وَرَسُولُهُ وَلَا يَدِينُونَ دِينَ الْحَقِّ مِنَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ
حَتَّى يُبْطِلُوا الْبَيْعَةَ عَنْ يَدٍ وَهُمْ صَاغِرُونَ ۝ وَقَالَ الْيَهُودُ
عَزَبَ اَيْنَ اللّٰهُ وَقَالَ النَّصْرَى الْمَسِيحُ ابْنُ اللّٰهِ ۚ ذَٰلِكَ قَوْلُهُمْ
بِأَفْوَاهِهِمْ يُضَاهَوْنَ قَوْلَ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ قَبْلُ ۚ فَتَعْلَمُ
اللّٰهُ اَنْ يُّؤْتِيَهُمْ ۝ وَاعْتَدُوا اَحْبَابَهُمْ وَرَبَّاهُمْ اَرْبَابًا

यकरबुल्-मस्जिदल्-हरा-म बअ-द आमिहिम् हाजा ८ व इन् खिफतुम् अल-तन्
फसी - फ युनीकुमुल्लाहु मिन् फजिलही इन् शा-अ ७ इन्नल्ला-ह अलीमुन्
हकीम (२८) कातिलुल्लजी-न ला युअमिनू-न बिल्लाहि व ला बिल्-योमिल्-
आखिरि व ला युह्रिमू-न मा हरंमल्लाहु व रसूलुह व ला यदीनू-न
दीनल्-हक्कि मिनल्लजी-न ऊतुल्किता-ब हत्ता युअ-तुल्-जिज्-य-त अय्यदिव-व हुम्
सागिरून * (२९) व कालतिल्-यहदु अज्जरनिबुल्लाहि व कालतिन्सारल्-
मसीहुवुल्लाहि ७ जालि-क कौलुहुम् बि-अफवाहिहिम् ८ युज्जाहिऊ-न कौलल्लजी-न
क - फरू मिन् कब्बु ७ कात - लहुमुल्लाहु ८ अन्ना युअ - फकून (३०)

और बेटे और भाई और औरतें और खानदान के आदमी और माल, जो तुम कमाते हो और तिजारत, जिस के बन्द होने से डरते हो, और मकान, जिनको पसंद करते हो, खुदा और उस के रसूल से और खुदा की राह में जिहाद करने से, तुम्हें ज्यादा अजीब हों, तो ठहरे रहो, यहां तक कि खुदा अपना हुक्म (यानी अजाब) भेजे। और ना-फरमान लोगों को हिदायत नहीं दिया करता। (२४) ★

खुदा ने बहुत-से मौकों पर तुम को मदद दी है। और हुनैन (की लड़ाई) के दिन, जबकि तुम को अपनी (जमाअत की) ज्यादाती पर फ़ख्र था, तो वह तुम्हारे कुछ भी काम न आये और जमीन बावजूद (इतनी बड़ी) फ़राखी के, तुम पर तंग हो गयी, फिर तुम पीठ फेर कर फिर गये। (२५) फिर खुदा ने अपने पैगम्बर पर और मोमिनों पर अपनी तरफ़ से तस्कीन नाज़िल फ़रमायी (तुम्हारी मदद को फ़रिश्तों के) लश्कर, जो तुम्हें नज़र नहीं आते थे, (आसमान से) उतारे और काफ़िरों को अजाब दिया और कुफ़र करने वालों की यही सज़ा है। (२६) फिर खुदा इस के बाद जिस पर चाहे, मेहरबानी से तबज़्जोह फ़रमाये और खुदा बरूशने वाला मेहरबान है। (२७) मोमिनो! मुश्रिक तो पलीद हैं, तो इस वर्ष के बाद वे खाना-ए-काबा के पास न जाने पाएं और अगर तुम को ग़रीबी का डर हो, तो खुदा चाहेगा, तो तुम को अपने फ़ज़ल से ग़नी कर देगा। बेशक खुदा सब कुछ जानता (और) हिकमत वाला है। (२८) जो लोग अहले किताब में से खुदा पर ईमान नहीं लाते और न आख़िरत के दिन पर (यक़ीन रखते हैं) और न उन चीज़ों को हराम समझते हैं, जो खुदा और उसके रसूल ने हराम की हैं और न दीने हक़ को कुबूल करते हैं, उन से जंग करो, यहां तक कि ज़लील हो कर अपने हाथ से जिजया दें। (२९) ★

और यहूद कहते हैं कि उर्जर खुदा के बेटे हैं और ईसाई कहते हैं कि मसीह खुदा के बेटे हैं। यह उन के मूंह की बातें हैं। पहले काफ़िर भी इसी तरह की बातें कहा करते थे, ये भी उन्हीं की रीस करने लगे हैं। खुदा इनको हलाक करे, ये कहां बहके फिरते हैं। (३०) इन्होंने अपने उलेमा और

१. इन आयतों में खुदा ने उन मेहरबानियों का इश्हार फ़रमाया है, जो मुसलमानों पर की थीं। जब मक्का फ़तह हो चुका और मक्का वाले इस्लाम ले आये, तो जनाब रसूल खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह ख़बर पहुंची कि हवाज़िन क़बीले के लोग हुनैन में आप के साथ लड़ाई करने को जमा हैं। यह बाकिआ सन् ०८ हि० का है। हवाज़िन एक तीरंदाज़ क़ौम थी और हुनैन एक वादी है जो मक्के और तायफ़ के दर्मियान बाक़ेअ है। मुसलमानों की फ़ौज ग्यारह या बारह या सोलह हज़ार थी और काफ़िर सिर्फ़ चार हज़ार। इन्हें अपनी फ़ौज की ज्यादाती पर घमंड हो गया कि काफ़िर हैं ही क्या। उन को तो यों ही मार कर भगा देंगे। खुदा को घमंड पसन्द न था। जब ये दुश्मन की तरफ़ चले तो वे जंगल के रास्तों और पहाड़ के दरों में बड़ी मुस्तेदी से उन की घात में लगे हुए थे। हज़रत सल्ल० मय सहाबा रज़ि० के सुबह के अंधेरे में मैदान में उतरे थे कि उन्होंने ने यकायक तीरंदाजी शुरू कर दी। तनवारें खींच कर यक़वारगी ऐसा हमला किया कि मुसलमानों की फ़ौज बिखर गयी, मगर हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कि अपने ख़च्चर पर सवार थे, उसी तरह जमें रहे और उस को दुश्मनों की तरफ़ बढ़ाया। आप के चचा अब्बास रज़ि० रकाब पकड़े हुए थे और दूसरी रकाब अबू मुक्रियान बिन हसं बिन अब्दुल

(जैव पृष्ठ ३०३ पर)

मशाइल (बुजुर्गों) और मसीह इन्ने मरयम को अल्लाह के सिवा खुदा बना लिया, हालांकि उनको यह हुक्म दिया गया था कि एक खुदा के सिवा किसी की इबादत न करें। उस के सिवा कोई माबूद नहीं। और वह उन लोगों के शरीक मुकरर करने से पाक है। (३१) ये चाहते हैं कि खुदा के नूर को अपने मुंह से (फूंक मार कर) बुझा दें और खुदा अपने नूर को पूरा किये बगैर रहने का नहीं, अगरचे काफिरों को बुरा ही लगे। (३२) वही तो है जिसने अपने पैगम्बर को हिदायत और दीन हक देकर भेजा, ताकि उस (दीन) को (दुनिया के) तमाम दीनों पर गालिब करे, अगरचे काफिर ना-खुश हो हों। (३३) ● मोमिनो ! (अहले किताब के) बहुत-से आलिम और मशाइल लोगों का माल ना-हक खाते और (उन को) खुदा की राह से रोकते हैं और जो लोग सोना और चांदी जमा करते हैं और उस को खुदा की राह में खर्च नहीं करते, उन को उस दिन के दंदनाक अजाब की खुशखबरी सुना दो, (३४) जिस दिन वह माल दोऊल्ल को आग में (खूब) गर्म किया जाएगा, फिर उस में इन (बखीलों) की पेशानियां और पहलू और पीठें दागी जाएंगी (और कहा जाएगा कि) यह वही है, जो तुम ने अपने लिए जमा किया था, सो जो तुम जमा करते थे, (अब) उसका मजा चखो। (३५) खुदा के नजदीक महीने गिनती में (बारह हैं, यानी) उस दिन (से) कि उस ने आसमानों और जमीन को पैदा किया। खुदा की किताब में (वर्ष के) बारह महीने (लिखे हुए) हैं। उन में से चार महीने अदब के हैं। यही दीन (का) सीधा रास्ता है। तो इन (महीनों) में (ना-हक खुरेजी से) अपने आप पर जुल्म न करना और तुम सब के सब मुशिरकों से लड़ो, जैसे वे सब के सब तुम से लड़ते हैं और जान रखो कि खुदा परहेजगारों के साथ है। (३६) अमन के किसी महीने को हटा कर आगे-पीछे कर देना कुफर में बढ़ती करता है। इस से काफिर गुमराही में पड़े रहते हैं। एक साल तो उस को हलाल समझ लेते हैं और दूसरे साल हराम, ताकि अदब के महीनों की, जो खुदा ने मुकरर किये है, गिनती पूरी कर लें और जो खुदा ने मना किया है, उसको जायज कर लें। उन के बुरे अमल उन को भले दिखायी देते हैं और खुदा काफिर लोगों को हिदायत नहीं दिया करता। (३७) ★

(पृष्ठ ३०१ का शेष)

मुत्लिब के हाथ में थी। वह खूबचर को रोकते थे कि तेज न चले। हजरत अपना नामे मुबारक ले-ले कर मुसलमानों को पुकारते थे कि खुदा के बंदो ! कहां जाते हो, मेरी तरफ आओ। मैं खुदा का रमूल हूं। यह भी फरमाते थे कि 'अनन्नीयु ला क़िब० अनन्नु अन्जिल मुत्लिब'। लिखा है कि मी के करीब महावी मावित कदम रहे, बाक़ी सब के पांव उखड़ गये। आप ने अपने चचा अन्वास से, कि वह बुन्द आवाज थे, इशति फरमाया कि खूब जोर से पुकारें। वह पुकारने लगे तो लोग हजरत की तरफ रूजू हुए। जब कुछ लोग इन तरह पर जमा हो गये, तब हजरत ने उन को हमला करने का हुक्म दिया। चुनांचे इम हमले में हवाजिन को हार हुई। इम लड़ाई में खुदा ने मुसलमानों की मदद के लिए फ़रिश्तों का लश्कर भेजा, जो मुसलमानों की तमन्वी की वजह बना। गरज खुदा ने मुसलमानों को उन के इतराने और घमंड करने पर चेतावनी दे कर उन्हें जिताय़ा। इस लड़ाई में कुफ़र के क़त्ल और गिरफ़्तारी के अलावा बहुत-सा माल हाथ आया। कहते हैं कि इस से ज्यादा कोई बड़ी गनीमत हाथ नहीं आयी थी।

१. जीक्रादा, ज़िलहिज्जा, मुहर्रम, रजब।

या अय्युहल्लजी-न आमन् मा लकुम् इजा क्री-ल लकुमुत्फिरु फ्री
सबीलिल्लाहिस्साकल्लुम् इललुअज्जि अ - रज्जीतुम् बिल् - ह्यातिदुन्या मिनल्-
आखिरतिः फ-मा मताअल्-ह्यातिदुन्या फिल्आखिरति इल्ला कलील (३८)
इल्ला तन्फिरु युअज्जिबकुम् अज्जाबन् अलीमव्- व यस्तब्दिल

क्रोमन् गै-रकुम् व ला तज्जुरूहु शैअन्
बल्लाहु अला कुल्लि शैइन् कदीर (३६)
इल्ला तन्सुरूहु फ़-कद् न-स-रहुल्लाहु इज्
अख-र-जहुल्लजी-न क-फ़रू 'सानियस्नैनि इज्
हुमा फ़िल्गारि इज् यकूलु लिसाहिबिही
ला तहू - जन् इन्नल्ला - ह म - अना
फ़-अन्-ज-लल्लाहु सकी-न-तहू अलैहि व अय्यदहू
बिजुनूदिल्लम् तरीहा व ज-अ-ल कलिमतल-
लजी-न क-फ़रुस्सुपला ॥ व कलिमतुल्लाहि
हियल्युल्या ॥ वल्लाहु अज़ीजुव हकीम
(४०) इन्फ़रू ख़िफ़ाफ़व-व सिकालव-व
जाहिदू बिअम्बालिकुम् व अन्फ़ुसिकुम् फ़ी
सबीलिल्लाहि ॥ जालिकुम् खैरुल्लकुम् इन्

[illegible]

कुन्तुम् तअ-लमून (४१) लौ का-न अ-र-जन् करीबन्-व स-फ-रत् कासिदल्लतबअ-क
व लाकिम्-बअदत् अलैहिमुश्शुक्कतु व स-यह्लिफू-न बिल्लाहि लविस्त-तअ-ना
ल-ख-रज्जा म-अकुम् व युह्लिफू - न अन्फुसहुम् व वल्लाहु यअ - लमु इन्नहुम्
ल-काजिबून ★ (४२) अ-फल्लाहु अन्-क व लि-म अजिन्-त लहुम् हत्ता
य-त-वय्य-न ल-कल्लजी-न स - दकू व तअ-ल-मल्काजिबीन (४३) ला
यस्तअजिनु-कल्लजी-न युअमिन्-न बिल्लाहि वलयोमिल् - आखिरि अय्युजा-हिद्द
बिअम्बालिहिम् व अन्फुसिहिम् व वल्लाहु अलीमुम् - बिल्मुत्तकीन (४४)

मोमिनो ! तुम्हें क्या हुआ है कि जब तुम से कहा जाता है कि खुदा की राह में (जिहाद के लिए) निकलो, तो तुम (काहिली की वजह से) जमीन पर गिरे जाते हो (यानी घरों से निकलना नहीं चाहते) ? क्या तुम आखिरत (की नेमतों) को छोड़ कर दुनिया की ज़िंदगी पर खुश हो बैठे हो ? दुनिया की ज़िंदगी के फायदे तो आखिरत के मुकाबले बहुत ही कम हैं। (३८) अगर तुम न निकलोगे तो खुदा तुमको बड़ी तकलीफ का अज़ाब देगा और तुम्हारी जगह और लोग पंदा कर देगा (जो खुदा के पूरे फरमांबरदार होंगे) और तुम उस को कुछ नुकसान न पहुंचा सकोगे और खुदा हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है। (३९) अगर तुम पैगम्बर की मदद न करोगे तो खुदा उन का मददगार है। (वह वक़्त तुमको याद होगा) जब उन को काफ़िरों ने घरों से निकाल दिया, (उस वक़्त) दो (ही शस्त्र थे, जिन) में (एक अबूबक़र थे), दूसरे (खुद अल्लाह के रसूल), जब वे दोनों (सौर के) ग़ार में थे, उस वक़्त पैगम्बर अपने साथी को तसल्ली देते थे कि ग़म न करो, खुदा हमारे साथ है, तो खुदा ने उन पर तस्कीन नाज़िल फ़रमायी और उन को ऐसी फ़ौजों से मदद दी, जो तुम को नज़र नहीं आते थे और काफ़िरों की बात को पस्त कर दिया और बात तो खुदा ही की बुलंद है और खुदा ज़बरदस्त (और) हिक़मत वाला है। (४०) तुम हल्के हो या बोझिल (यानी माल व अस्बाब थोड़ा रखते हो या बहुत, घरों से) निकल आओ और खुदा के रास्ते में माल और जान से लड़ो। यही तुम्हारे हक़ में अच्छा है, बशर्ते कि समझो। (४१) अगर ग़नीमत का माल आसानी से हासिल हो जाने वाला और सफ़र भी हल्का-सा होता, तो तुम्हारे साथ (शौक से) चल देते, लेकिन सफ़र उनको दूर (का) नज़र आया, (तो उज़्र करेंगे) और खुदा की क़स्में खाएंगे कि अगर हम ताक़त रखते, तो बापके साथ निकल खड़े होते। ये (ऐसे उज़्रों से) अपने आप को हलाक कर रहे हैं और खुदा जानता है कि ये झूठे हैं। (४२) *

खुदा तुम्हें माफ़ करे। तुमने इससे पहले कि, वे लोग भी जाहिर हो जाते, जो सच्चे हैं और वे भी तुम्हें मालूम हो जाते जो झूठे हैं, उन को इजाज़त क्यों दी ? (४३) जो लोग खुदा पर और आखिरत के दिन पर ईमान रखते हैं, वे तुम से इजाज़त नहीं मांगते (कि पीछे रह जाएं, बल्कि चाहते हैं कि) अपने माल और जान से जिहाद करें और खुदा उरने वालों को जानता है। (४४)

इन्मा यस्तअजिनुकलजी-न ला युअमिन्-न बिल्लाहि वलयीमिल्-आखिरि
वर्ताबिन् कुलुबुहुम् फहुम् फ्री रैबिहिम् य-त-रब्ददून (४५) व लौ अरादुल्-
खुरू-ज त-अ-अद्द लहु अद्दत्त-व लाकिन् करिहल्लाहुम्बिआसहुम् फ-सब्-ब-तहुम् व
कीलकुअद्द मअत्काबिदीन (४६) लौ ख-रजू फीकुम् मा जादूकुम् इल्ला

खबालं-व ल औज्रजू खिलालकुम् यन्नूनुकुमुल्-
फित-न-त ८ व फीकुम् सम्माअ-न लहुम् ७

वल्लाहु अलीमुम् - बिअजालिमीन (४७)

ल-कदिब्त-गवल्-फित-न-त मिन् कब्लु व
कल्लबू ल-कल्-उमू-र हत्ता जा-अल्हक्कु

व अ-ह-र अम्हल्लाहि व हुम् कारिहून
(४८) व मिन्हुम् मय्यकूलुअ-अल्ली व

ला तफितन्नी ७ अला फिलिफित - नति
स-कतू ७ व इन्-न जहन्न-म लमुही-ततुम्

बिल्काफिरीन (४९) इन् तुसिब-क ह-स-नतुन्
तसुअहुम् ८ व इन् तुसिब-क मुसीबतु य्यकूलू

कद् अ - खज्जा अम - रना मिन् कब्लु
व य-त - वल्लव्वहुम् फरिहून (५०)

कुल्लय्युसीबना इल्ला मा क-त-बल्लाहु लना ८ हु-व मौलाना ८ व अ-लल्लाहि
फल्-य-त-वक्कलिल्-मुअमिन्-न (५१) कुल् हल् त-रब्बसून बिना इल्ला

इह्दल् - हुस - नयैनि ७ व नहनु न-त-रब्बसु बिकुम् अय्युसी-ब - कुमुल्लाहु
बिअजाबिम् - मिन् अन्दिही औ बिऐदीना ८ फ - त - रब्बसू इन्ना

म-अकुम् मु-त - रब्बसून (५२) कुल् अन्फिकू तोअच् औ करहल्-
लंय्युत - कब्ब - ल मिन्कुम् ७ इन्कुम् कुन्तुम् कौमच् फासिकीन (५३)

व मा म-न-अहुम् अन् तुक्ब-ल मिन्हुम् न-फ-कातुहुम् इल्ला अन्नहुम्
क - फरू बिल्लाहि व बिरसूलिही व ला यअतूनस्सला - त इल्ला व

हुम् कुसाला व ला युन्फिकू - न इल्ला व हुम् कारिहून (५४)

إِنَّا نَسْأَلُكَ اللَّهُمَّ الْيَوْمَ وَالْآخِرَ وَأَنْتَ أَهْلُهَا
فَلَا تُعَذِّبْهُمْ فِي رَيْبٍ مِنْكَ فَتَنْتَهِمُ ۝ وَأَنْتَ أَعْلَمُ الْغُيُوبِ
لَا تُعَذِّبْهُمْ عَذَابًا وَلَكِنْ كَرِهَ اللَّهُ لِقَائِهِمْ فَتَبَرَّكُوا وَقِيلَ
لِلَّذِينَ آمَنُوا الصَّادِقِينَ ۝ أَوْ عَرِجُوا فِي كَمَا أَذْنُكَ الْأَحْيَاءُ
وَالْأَمْوَاتُ جَمِيعًا يُسَمِعُونَ ۝ فَتَبَرَّكُوا وَسَمِعُوا لَهُمْ
وَاللَّهُ عَزِيزٌ عَلِيمٌ ۝ لَقَدْ أَتَيْنَا الْفِتْنَةَ مِنْ قَبْلُ وَلَكِنْ
لَكَ الْإِمْرُؤُا عَلَى جَهَنَّمَ وَالْحَقُّ وَأَمَرَ اللَّهُ وَمُحَمَّدٌ رُسُلُهُمْ
وَمِنْهُمْ مَنْ يَقُولُ ائْتِنَا بِآيَةٍ وَلَا تَقْصِبْ فِي الْآيَةِ الْفِتْنَةَ سَعْيًا
وَلَكِنْ جَهَنَّمَ لَظَهِيرَةٌ بِالْكَافِرِينَ ۝ إِنْ تُصِيبْ حَسَنَةً
أَوْ مُسْرَةً ۝ إِنْ تُصِيبْ مُسْرَةً يَقُولُوا أَكُنَّا بِآيَاتِكَ أَعْمَى
مِنْ قَبْلُ وَيَتَوَلَّوْا وَهُمْ يُرْمَوْنَ ۝ قُلْ لَنْ تُصِيبَنَا إِلَّا مَا
كَتَبَ اللَّهُ لَنَا فَمَوْمِلْنَا وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ۝
قُلْ هَلْ تَرْضَوْنَ بِنَا إِلَّا إِحْدَى الْحُسَيْنَيْنِ وَهِيَ زَكِيَّةٌ
بِمَا كُنَّا يُصِيبُكُمْ اللَّهُ بِعَذَابٍ مِنْ عَذَابٍ أَوْ يَأْتِي بِنَا
فَتَرْجِعُونَا إِنَّا مَعَكُمْ فَتَرْضَوْنَ ۝ قُلْ أَنْتُمْ أَهْلُهَا أَوْ كُنَّا
أَنْ يُصِيبَكُمْ وَكُنَّا لَكُمْ تَوَكُّلًا قَوْمًا مُؤْمِنِينَ ۝ وَآمَنَّا بِهِمْ
أَنْ تُصِيبَ مِنْهُمْ تَفْطِنًا إِلَّا اللَّهُمَّ كَفِّرُوا بِاللَّهِ وَمَوْلَاهُ

इजाजत वही लोग मांगते हैं, जो खुदा पर और पिछले दिन पर ईमान नहीं रखते और उनके दिल शक में पड़े हुए हैं, सो वे अपने शक में डाँबा-डोल हो रहे हैं। (४५) और अगर वे निकलने का इरादा करते हैं तो उसके लिए सामान तैयार करते, लेकिन खुदा ने उनका उठना (और निकलना) पसन्द न किया, तो उनको हिलने-जुलने ही न दिया और (उनसे) कह दिया गया कि जहां (माजूर) बैठे हैं, तुम भी उन के साथ बैठे रहो। (४६) अगर वे तुम में (शामिल होकर) निकल भी खड़े होते तो, तुम्हारे हक में शराहत करते और तुम में फ़साद डलवाने की गरज़ से दौड़े-दौड़े फिरते और तुम में उन के जामूस भी हैं और खुदा ज़ालिमों को ख़ूब जानता है। (४७) ये पहले भी फ़साद चाहने वाले रहे हैं और बहुत-सी बातों में उलट-फेर करते रहे हैं, यहां तक कि हक़ आ पहुंचा और खुदा का हुक्म ग़ालिब हुआ और वे बुरा मानते ही रह गये। (४८) और उन में कोई ऐसा भी है, जो कहता है कि मुझे तो इजाजत ही दीजिए और आफ़त में न डालिए। देखो, ये आफ़त में पड़ गये हैं और दोख़ल सब काफ़िरों को घेरे हुए है। (४९) (ऐ पैग़म्बर !)

अगर तुम को आराम (व. सुख) मिलता है, तो उन को बुरा लगता है और अगर कोई कठिन (घड़ी आ) पड़ती है, तो कहते हैं कि हमने अपना काम पहले ही (ठीक) कर लिया था और खुशियां मनाते लौट जाते हैं। (५०) कह दो कि हम को कोई मुसीबत नहीं पहुंच सकती, उस के अलावा, जो खुदा ने हमारे लिए लिख दी हो। वही हमारा कारसाज है और मोमिनों को खुदा ही का भरोसा रखना चाहिए। (५१) कह दो कि तुम हमारे हक़ में दो भलाइयों में से एक के इंतज़ार में हो और हम तुम्हारे हक़ में इस बात के इंतज़ार में हैं कि खुदा (या तो) अपने पास से तुम पर कोई अज़ाब नाज़िल करे या हमारे हाथों से अज़ाब दिलवाये तो तुम भी इंतज़ार करो, हम भी तुम्हारे साथ इंतज़ार करते हैं। (५२) कह दो कि तुम (माल) खुशी से खर्च करो या ना-खुशी से, हरगिज़ कुबूल नहीं किया जाएगा। तुम नाफ़रमान लोग हो। (५३) और उन के खर्च (मालों) के कुबूल होने में कोई चीज़ रोक नहीं बनी, सिवा इसके कि उन्होंने खुदा से और उसके रसूल से कुफ़र किया और नमाज़ को आते हैं, तो सुस्त व काहिल हो कर और खर्च करते हैं तो ना-खुशी से। (५४) तुम उन के माल और ओलाद से ताज्जुब न करना।

फला तुअ - जिब-क अम्बालुहुम् व ला नीलादुहुम् ७ इन्नमा युरीदुल्लाहु
 लियु-अज्जिबहुम् बिहा फिलह्यातिदुन्या व तज-ह-क अन्फुसुहुम् व हुम्
 काफिरून (५५) व यहिलफू-न बिल्लाहि इन्नहुम् लमिन्कुम् ७ व मा हुम्
 मिन्कुम् व लाकिन्नहुम् कौमुयपरकून (५६) लौ यजिदू-न मल्ज-अन् औ
 मगारातिन् औ मुद-ख-ल-ल वल्लौ इलैहि व
 हुम् यज्महून (५७) व मिन्हुम्
 मय्यल्मिन्-क फिस्स-द-काति ७ फ-इन् उअ-तू
 मिन्हा रज्जू व इल्लम् युअ-तौ मिन्हा
 इज्जा हुम् यस्खतून (५८) व लौ अन्नहुम्
 रज्जू मा आताहुमुल्लाहु व रसूलुह ॥
 व कालू हस्बुनल्लाहु सयुअतीनल्लाहु
 मिन् फजिलही व रसूलुह ॥
 इन्ना इलल्लाहि रागिबून * (५९)
 इन्नमस्स-द-कातु लिल्फुकरइ वल्मसाकीनि
 वल्आमिली-न अलैहा वल्मुअस्लफति कुलूबु-
 हुम् व फिरिकाबि वल्गारिमी-न व फी
 सबीलिल्लाहि वन्निस्सबीलि ७ फरी-ज - तूम् -
 मिनल्लाहि ७ वल्लाहु अलीमुन् हकीम (६०) व मिन्हुमुल्लजी - न
 युअजूनन्नबियू-य व यकूलू - न हु - व उज्जुनुब् ७ कुल् उज्जुनु खैरिल्लकुम्
 युअमिनु बिल्लाहि व युअमिनु लिल्-मुअमिनी-न व रहमतुल्-लिल्लजी - न
 आमनू मिन्कुम् ७ वल्लजी - न युअजू - न रसूलल्लाहि लहुम् अजाबुन्
 अलीम (६१) यहिलफू - न बिल्लाहि लकुम् लियुरज्जूकुम् ७ वल्लाहु
 व रसूलुह अ-हक्कु अय्युरज्जूहु इन् कानू मुअमिनीन (६२)
 अ-लम् यअ-लमू अन्नह मय्युहादिदिल्ला - ह व रसूलुह फअन् न लह
 ना-र ज-हन्न-म खालिदन् फीहा ७ जालिकल् - खिज्युल् - अजीम (६३)

لَا يَأْتِيَنَّكَ الْفَلَاحُ إِلَّا وَهُمْ كَسَالٌ وَلَا يَنْفَعُونَ إِلَّا وَهُمْ كَرْهُونَ
 فَلَا تُحِبُّكَ أَمْوَالُهُمْ وَلَا أَوْلَادُهُمْ إِنَّمَا يُرِيدُ اللَّهُ لِيُعَذِّبَهُمْ
 بِمَا فِي الصُّلُوبِ الَّذِينَ أُفْرِقُوا عَنْ أَهْلِهِمْ وَهُمْ كَارِهُونَ
 وَيَسْتَلْقُونَ بِأَلْوَانِهِمْ لِنَارِهِمْ وَأَمَّا قَوْمُكُمْ وَلِكَلْبِهِمْ قَوْمٌ
 يَقُولُونَ لَا تَرْجِعُوا إِلَيْنَا أَوْ مَعْرَابٍ أَوْ مَدْعَاةٍ كَوْنُوا
 الْيَوْمَ وَهُمْ يَجْمَعُونَ وَهُمْ قَوْمٌ يَلْمِزُونَ فِي الصَّدَقَاتِ فَلَنْ
 نُعْطُوا إِلَيْنَا أَوْ نَصْطَلُوا وَإِنْ لَمْ يَعْلَمُوا إِلَيْنَا إِنْ كُنَّا مُنْظَرُونَ
 لَوْ أَنَّهُمْ رَضُوا مَا آتَاهُمُ اللَّهُ وَرَسُولُهُ وَقَالُوا حَسْبُنَا اللَّهُ
 سَيُؤْتِينَا اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ وَرَسُولُهُ إِنَّا لِلَّهِ رَاغِبُونَ
 إِنَّمَا الصَّدَقَاتُ لِلْفُقَرَاءِ وَالْمَسْكِينِ وَالْعَمِلِينَ عَلَيْهَا وَالْوَالِدَ
 قُلُوبُهُمْ وَفِي الرِّقَابِ وَالْعُرْيُونَ وَفِي سَبِيلِ اللَّهِ وَالْبَنُونَ
 الْفُرْسَةُ مِنَ اللَّهِ وَاللَّهُ عَلَيْهِمْ حَكِيمٌ وَهُمْ الَّذِينَ يُؤْذُونَ
 النَّبِيَّ وَيَقُولُونَ هُوَ ذُنُوبُنْ قُلْ أَذُنْ خَيْرٌ لَكُمْ يَوْمَ تَأْتُوا
 بِلِقَاءِ رَبِّكُمْ فَذُوقُوا وَذُوقُوا الْعَذَابَ الَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ
 بِالْآخِرَةِ رَضُوا رَسُولَ اللَّهِ فَإِنَّ رِضْوَانَهُ لَكُلِّ نَفْسٍ مَرْضِيَّةٍ
 أَفَرَأَيْتُمْ أَنَّهُ مِنَ الْيَهُودِ وَاللَّهُ وَرَسُولُهُ فَإِنَّ لَهُ نَارَ

खुदा चाहता है कि इन चीजों से दुनिया की ज़िदगी में उन को अज़ाब दे और (जब) उन की जान निकले, तो (उस वक़्त भी) वे काफ़िर ही हों। (५५) और खुदा की क़स्में खाते हैं कि वे तुम्हीं में से हैं हालांकि वे तुम में से नहीं हैं। असल यह है कि ये डरपोक लोग हैं। (५६) अगर उन को कोई बचाव की जगह (जैसे क़िला) या ग़ार व मग़ाक या (ज़मीन के अंदर) घुसने की जगह मिल जाए, तो उसी तरह रस्सियां तुड़ाते हुए भाग जाएं। (५७) और उनमें कुछ ऐसे भी हैं कि सदक़ों (की तक्सीम) में तुम पर ताना ज़नी करते हैं। अगर उन को उसमें से (अच्छा-भला कुछ) मिल जाए तो खुश रहें और अगर (इस क़दर) न मिले तो झट ख़फ़ा हो जाएं। (५८) और अगर वे इस पर खुश रहते जो खुदा और उसके रसूल ने उनको दिया था और कहते कि हमें खुदा काफ़ी है और खुदा अपने फ़ज़ल से और पैग़म्बर (अपनी मेहरबानी से) हमें (फिर) दे देंगे और हमें तो खुदा ही की स्वाहिश है, (तो उन के हक़ में बेहतर होता)। (५९) ★

सदक़े (यानी ज़कात व ख़ैरात) तो मुसलिसों और मुहताजों और सदक़ात के लिए काम करने वालों का हक़ है और उन लोगों का जिन के दिलों का रखना मंज़ूर है और मुलामों के अज़ाब कराने में और क़र्ज़दारों (के क़र्ज़ अदा करने में) और खुदा की राह में और मुसाफ़िरों (की मदद) में (भी यह माल खर्च करना चाहिए। ये हुक्क) खुदा की तरफ़ से मुक़रर कर दिए गये हैं और खुदा जानने वाला (और) हिक्मत वाला है। (६०) और इन में कुछ ऐसे हैं, जो पैग़म्बर को ईज़ा (तक्लीफ़) देते हैं और कहते हैं कि यह शरस निरा कान है।' (उन से) कह दो कि (वह) कान (है, तो) तुम्हारी भलाई के लिए। वह खुदा का और मोमिनों (की बात) का यकीन रखता है और जो लोग तुम में ईमान लाये हैं, उन के लिए रहमत है और जो लोग रसूले खुदा को रंज पहुंचाते हैं, उनके लिए दर्दनाक अज़ाब (तैयार) है। (६१) मोमिनो! ये लोग तुम्हारे सामने खुदा की क़स्में खाते हैं, ताकि तुम को खुश कर दें, हालांकि अगर ये (दिल से) मोमिन होते, तो खुदा और और उसके पैग़म्बर खुश करने के ज़्यादा हक़दार हैं। (६२) क्या इन लोगों को मालूम नहीं कि जो शरस खुदा और उसके रसूल से मुकाबला करता है, तो उसके लिए जहन्नम की आग (तैयार) है, जिस में वह हमेशा (जलता) रहेगा, यह बड़ी रसवाई है। (६३) मुनाफ़िक़ डरते रहते हैं कि उन

१. कुछ मुनाफ़िक़ ज़नाब सरवरे कायनात को ईज़ा देते थे यानी कहते थे कि ये तो निरे कान हैं। जो कोई उन से बात कह देता है, उस को हमारे हक़ में सब जान लेते हैं और जब हम आ कर क़सम खा लेते हैं तो हमें सच्चा जानते हैं। खुदा ने फ़रमाया कि यह बात नहीं कि वह हक़ व बातिल में तमीज़ नहीं करते, बल्कि सच्चे को झूठे से खूब पहचानते हैं, लेकिन अमलन दरगुज़र करते हैं और जो मुनाफ़िक़ ऐसी बात कह कर पैग़म्बर खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ईज़ा देते हैं, उन को सल्ल अज़ाब होगा।

(के पैगम्बर) पर कहीं कोई ऐसी सूरत (न) उतर आये कि उनके दिल की बातों का उन (मुसलमानों) पर जाहिर कर दे। कह दो कि हंसी किये जाओ। जिस बात से तुम डरते हो, खुदा उस को जरूर जाहिर कर देगा। (६४) और अगर तुम उन से (इस बारे में) पूछो, तो कहेंगे कि हम तो यों ही बात-चीत और दिल्लगी करते थे कहो, क्या तुम खुदा और उस की आयतों और उस के रसूल से हंसी करते थे? (६५) बहाने मत बनाओ, तुम ईमान लाने के बाद काफिर हो चुके हो। अगर हम तुम में से एक जमाअत को माफ़ कर दें तो दूसरी जमाअत को सज़ा भी देंगे, क्योंकि वे गुनाह करते रहे हैं। (६६) ✱

मुनाफ़िक़ मर्द और मुनाफ़िक़ औरतें एक दूसरे के हम जिस (यानी एक ही तरह के) हैं, कि बुरे काम करने को कहते और नेक कामों से मना करते और (खर्च करने से) हाथ बन्द किये रहते हैं, उन्होंने खुदा को भुला दिया तो खुदा ने भी उन को भुला दिया। बेशक मुनाफ़िक़ ना-फ़रमान हैं। (६७) अल्लाह ने मुनाफ़िक़ मर्दों और मुनाफ़िक़ औरतों और काफ़िरों से जहन्नम की आग का वायदा किया है, जिसमें हमेशा (जलते) रहेंगे। वही उन के लायक़ हैं और खुदा ने उन पर लानत कर दी है और उनके लिए हमेशा का अज़ाब (तैयार) है। (६८) (तुम मुनाफ़िक़ लोग) उन लोगों की तरह हो, जो तुम से पहले हो चुके हैं, वह तुम से बहुत ताक़तवर और माल व औलाद में कहीं ज्यादा थे, तो वे अपने हिस्से से फ़ायदा उठा चुके सो जिस तरह तुम से पहले लोग अपने हिस्से से फ़ायदा उठा चुके हैं, उसी तरह तुम ने अपने हिस्से से फ़ायदा उठा लिया और जिस तरह वे बातिल में डूबे रहे, उसी तरह तुम बातिल में डूबे रहे। ये वह लोग हैं, जिन के अमल दुनिया और आख़िरत में बर्बाद हो गये। और यही नुक़सान उठाने वाले हैं। (६९) क्या इन को उन लोगों (के हालात) की ख़बर नहीं पहुंची, जो इन से पहले थे (यानी नूह और आद और समूद की क़ौम और इब्राहीम की क़ौम और मद्यन वाले, उलटी हुई वस्तियों वाले, उन के पास पैगम्बर निशानियां ले-ले कर आए और खुदा तो ऐसा न था कि उन पर जुल्म करता लेकिन वही अपने आप पर जुल्म करते थे। (७०)

वल्मुअमिन्-न वल्मुअमिनातु बअ-जुहुम् ओलिया-उ बअ-जिन् यअमुरू - न

बिल्-मअ-रूफि व यन्ही-न अनिल्मुन्कारि व युक्कीमूनस्सला-तु व युअतूनरजका-तु व

युतीअनल्ला-ह व रसूलह ॥ उलाइ-क स-यर्हमुहुमुल्लाह ॥ इन्नल्ला-ह अजीजुन्

हकीम (७१) व-अ-दल्लाहुल्-मुअमिनी-न वल्मुअमिनाति जन्नातिन् तजरी

मिन् तह्तिहल्-अन्हार खालिदी-न फ्रीहा व मसाकि-न तथिय-ब-तनु फ्री जन्नाति अदमिन् ॥

व रिज्जानुम् - मिनल्लाहि अक्बर ॥

जालि-क हुवल-फौजुल् - अजीम ★ (७२)

या अय्युहन्नबिय्यु जाहिदिल् - कुफ्रा - र

वल्मुनाफिकी - न वरलुम् अलैहिम् ॥ व

मअ्वाहुम् जहन्नमु ॥ व बिअस्लमसीर

(७३) यह्लिफू-न बिल्लाहि मा कालू ॥

व ल-कद् कालू कलि-म-तल्-कुफिर व क-फरू

बअ-द इस्लामिहिम् व हम्मू बिमा लम्

यनालू ॥ व मा न - कम् इल्ला अन्

अगनाहुमुल्लाह व रसूलह मिन् फज्जिलही ॥

फइय्यतूब यकु खैरल्लहुम् ॥ व इय्य-त-वल्लौ युअजिज्व-हुमुल्लाह अजाबन्

अलीमन् ॥ फिद्दुन्या वल्आखिरति ॥ व मा लहुम् फिलअजि मिन्वलिदियव्वला

नसीर (७४) व मिन्हुम् मन् आह-दल्ला-ह लइन् आताना मिन्

फज्जलिही ल-नस्सद्द-कन्-न व ल-नकूनन्-न मिनस्सालिहीन (७५) फ-लम्मा

आताहुम् मिन् फज्जलिही बखिलू बिही व त-व-ल्लव्-व हुम् मुअ-रिजून (७६)

وَالْمُؤْتَفِكِينَ أَتَيْنَهُمْ مِنْهُمْ يَوْمَ الْبَيْتِ فَكَانَ اللَّهُ
يُظَاهِرُهُمْ وَلَكِنْ كَانُوا أَتَيْنَهُمْ يَطْلُبُونَ ۝ وَالْمُؤْمِنُونَ
وَالْمُؤْمِنَاتُ بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ بَعْضٍ يَأْمُرُونَ بِالْمَعْرُوفِ
يَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ
يُحِبُّونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ أُولَئِكَ سَيَرْحَمُهُمُ اللَّهُ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ
حَكِيمٌ ۝ وَعَدَ اللَّهُ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ جَنَّاتٍ
مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا وَمَسْكَنٌ طَيِّبٌ فِي جَنَّاتِ
عَدْنٍ وَيَوْمَئِذٍ مِنَ اللَّهِ أَكْبَرُ ذَلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۝
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا الْكُفَّارَ وَالْمُنَافِقِينَ وَاغْلُظْ عَلَيْهِمْ
وَمَا لَهُمْ حَكْمٌ وَرِيشٌ الصَّيْحَةِ ۝ يَمْلِكُونَ بِاللَّهِ مَا قَالُوا
وَأَقْبَدَ قَالُوا الْكُفْرَ وَكَفَرُوا بَعْدَ إِسْلَامِهِمْ وَهُمْ
بِمَا كَانُوا يَفْعَلُونَ ۝ وَمَا نَقَمُوا إِلَّا أَنْ أَغْنَاهُمُ اللَّهُ وَرَسُولُهُ
مِنْ فَضْلِهِ فَإِنْ يَتُوبُوا إِلَيْنَا خَيْرٌ لَهُمْ وَإِنْ يَتُوبُوا بَعْدَ ذَلِكَ
فَهُمْ مِنَ الْكَافِرِينَ ۝ وَمِنْهُمْ مَن عَاهَدَ اللَّهُ لَنْ
يُفْضِلَهُمْ لَتَفْعَلُنَّ ۝ وَلَكُلَّ مَن مِنَ الظَّالِمِينَ ۝ وَلَكُلَّ
أَنَّهُمْ ۝ وَمِنْهُمْ مَن عَاهَدَ اللَّهُ لَنْ يَفْضِلَهُمْ لَتَفْعَلُنَّ ۝

और मोमिन मद और मोमिन औरतें एक दूसरे के दोस्त हैं कि अच्छे काम करने को कहते और बुरी बातों से मना करते और नमाज पढ़ते और जकात देते और खुदा और उसके पैगम्बर की इताअत करते हैं। यही लोग हैं, जिन पर खुदा रहम करेगा, बेशक खुदा गालिब हिकमत वाला है। (७१) खुदा ने मोमिन मदों और मोमिन औरतों से बहिश्तों का वायदा किया है, जिन के नीचे नहरें बह रही हैं (वे) उनमें हमेशा रहेंगे और हमेशा-हमेशा की बहिश्तों में उम्दा मकानों का (वायदा किया है) और खुदा की रजामंदी तो सब से बढ़ कर नेमत है। यही बड़ी कामियाबी है। (७२) ✱

ऐ पैगम्बर ! काफिरों और मुनाफिकों से लड़ो और उन पर सस्ती करो और उन का ठिकाना दोजख है और बुरी जगह है। (७३) ये खुदा की कस्में खाते हैं कि उन्होंने (तो कुछ) नहीं कहा, हालांकि उन्होंने कुपूर का कलिमा कहा है और ये इस्लाम लाने के वाद काफिर हो गये हैं और ऐसी बात का कस्द कर चुके हैं, जिस पर क्रुदरत नहीं पा सके और उन्होंने (मुसलमानों में) ऐब ही कीन-सा देखा है, सिवा इस के कि खुदा ने अपने फ़ज़ल से और उसके पैगम्बर ने (अपनी मेहरबानी से) उन को दौलतमंद कर दिया है, तो अगर ये लोग तीबा कर लें, तो उन के हक में बेहतर होगा और अगर मुंह फेर लें, तो खुदा उन को दुनिया और आखिरत में दुख देने वाला अजाब देगा और जमीन में उनका कोई दोस्त और मददगार न होगा। (७४) और उनमें कुछ ऐसे हैं, जिन्होंने खुदा से अहद किया था कि अगर वह हम को अपनी मेहरबानी से (माल) अता फ़रमाएगा, तो हम जरूर खैरात किया करेंगे और नेक लोगों में हो जाएंगे। (७५) लेकिन जब खुदा ने उनको अपने फ़ज़ल से (माल) दिया तो उसमें बुल्ल करने लगे और (अपने अहद से) रू-गरदानी कर के फिर बैठे। (७६) तो खुदा

फ-अअ-क-बहुम् निफाकन् फ्री कुलुबिहिम् इला योमि यल्कोनह बिमा अख-लफुल्ला-ह
मा व-अदूहु व बिमा कान् यक्जिबून (७७) अ-लम् यअ-लम् अन्नल्ला-ह
यअ-लमु सिरिहुम् व नज्वाहुम् व अन्नल्ला-ह अल्लामुल्गयूब ८ (७८) अल्लजी-न
यल्मिजूनल्-मुत्तव्विअी-न मिनल्-मुअ्मिनी - न फिस्स-द - क्राति वल्लजी - न

ला यजिदून-न इल्ला जुह्-दहुम् फ-यस्वरू-न
मिन्हुम् ७ सखिरल्लाहु मिन्हुम् ८ व
लहुम् अजाबुन् अलीम (७९) इस्तिफिर्
लहुम् औ ला तस्तिफिर् लहुम् ७ इन्
तस्तिफिर् लहुम् सब्अी - न मर-तन्
फ-तन्ग्यिफिरल्लाहु लहुम् ७ जालि-क बिअन्नहुम्
क-फरू बिल्लाहि व रसूलिही ७ वल्लाहु
ला यहिदल्कोमल् - फासिकीन * (८०)
फरिहल्-मुखल्लफून बिमकअदिहिम् खिला-फ
रसूलिल्लाहि व करिह् अय्युजाहिद्
बिअम्वालिहिम् व अन्फुसिहिम् फ्री सबीलिल्-
लाहि व कालू ला तन्फिरू फिल्हिर् ७

فَأَقْصِبْ يَدَاكَ فِي قَوْلِهِمْ إِنِّي نَذَرْتُ لِلرَّحْمَنِ قُرْبَانًا كُفْرًا فَاصْطَلْهُم بِأَسْخَاوِهِمْ
مَا وَعَدُوا وَمَا كَانُوا يَكْذِبُونَ ۝ أَلَمْ يَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ يَبْصُرُ
سُوءَهُمْ وَيَعْلَمُ مَا فِي قُلُوبِهِمْ ۝ الَّذِينَ
يَكْسِبُونَ الْظُلْمَ يَعْنِي مِنَ الْمُؤْمِنِينَ فِي الصَّدَقَاتِ وَالَّذِينَ
لَا يَحْدُونَ إِلَّا جَهْدَهُمْ فَيَحْشَرُونَ مِنْهُمْ سَخِرَ اللَّهُ مِنْهُمْ
وَأَلْهَمَهُمْ صَدَابَ الْكِبْرِ ۝ اسْتَغْفِرْ لَهُمْ أَوْ لَا تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ إِنْ
تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ سَبْعِينَ مَرَّةً فَلَنْ يَغْفِرَ اللَّهُ لَهُمْ ۝ ذَٰلِكَ
بِأَنَّهُمْ كَفَرُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ ۝ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفَاسِقِينَ ۝
قَوْمٌ الْمُخَلَّفُونَ بِمَقْعَدِ هَزْلَتٍ رَسُولُ اللَّهِ وَكُفْرُهُمْ أَنَّ
يُجَاهِدُوا بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَقَالُوا لَا
تُؤْمِرُوا فِي الْحَرْبِ قُلْ لَا جَهَنَّمَ أَشَدُّ حَرًّا لَوْ كُنَّا أَوْ
يَعْقِلُونَ ۝ قُلْ صَبْرًا وَلِيْلَا وَلِيْلَا كَثِيرًا جَزَاءً بِمَا كَانُوا
يَكْسِبُونَ ۝ فَإِنْ يَجْعَلِ اللَّهُ لِي طَافِقَةً مِنْهُمْ فَالْطَّافِقُونَ
بِالْخُرُوجِ فَقُلْ لَنْ تُخْرَجُوا مَعِيَ أَبَدًا وَلَنْ تُفَاتِلُوا مَعِيَ
عَدَاؤًا أَفَلَا تَرْضَوْنَ ۝ بِالْقُرْآنِ أَفَلَا تَهْتَدُونَ ۝ وَالْمُؤْمِنُونَ
وَالْمُؤْمِنَاتُ مَوَدَّةٌ بَيْنَهُمْ يَزِيلُ اللَّهُ عَنْ الْقُلُوبِ
وَالْأَفْئِدَةِ عَنْ أَهْلِ الْقُرْآنِ وَالْأَفْئِدَةِ عَنْ أَهْلِ الْقُرْآنِ
وَالْأَفْئِدَةِ عَنْ أَهْلِ الْقُرْآنِ وَالْأَفْئِدَةِ عَنْ أَهْلِ الْقُرْآنِ ۝ وَلَا

कुल् नारु ज-हन्न-म अशददु हरन् ७ लौ कानू यपकहून (८१) फल्-यद्दहक्
कलीलव्वल्-यब्कू कसीरन् ७ जज्अी - अम् - बिमा कानू यक्सिबून (८२)
फइर्-र-ज - अ-कल्लाहु इला ता-इफतिम्-मिन्हुम् फस्तअजून - क लिस्वरूजि
फकुल्लन् तरुजू मअि-य अ-ब-दव्व-व लन् तुकातिलू मअि-य अदुव्वन् ७ इन्नकुम्
रज्जीतुम् बिल्कुअदि अव्व-ल मरतिन् फकअदू म-अल्-खालिफीन (८३) व ला
तुसल्लि अला अ-हदिम्मिन्हुम् मा-त अ-ब-दव्व-व ला तकुम् अला कबिरही
इन्नहुम् क-फरू बिल्लाहि व रसूलिही व मातू व हुम् फासिकून (८४)

ने उसका अंजाम यह किया कि उस दिन तक के लिए, जिस में वे खुदा के सामने हाज़िर होंगे, उन के दिनों में निफ़ाक़ डाल दिया, इस लिए कि उन्होंने खुदा से जो वायदा किया था, उस के खिलाफ़ किया और इसलिए कि वे झूठ बोलते थे। (७७) क्या उनको मालूम नहीं कि खुदा उन भेदों और मश्वरों तक को जानता है और यह कि वह सब की बातें जानने वाला है। (७८) जो (ताक़त वाले) मुसलमान दिल खोलकर खैरात करते हैं और जो (बेचारे ग़रीब) सिर्फ़ उतना ही कमा सकते हैं, जितनी मज़दूरी करते (और उस थोड़ी-सी कमाई में से भी खर्च करते) हैं, उन पर जो (मुनाफ़िक़) तान करते और हंसते हैं, खुदा उन पर हंसता है और उन के लिए तक्लीफ़ देने वाला अज़ाब (तैयार) है। (७९) तुम उन के लिए बख़्शिश मांगो या न मांगो, (बात एक है) अगर उनके लिए सत्तर बार भी बख़्शिश मांगोगे, तो भी खुदा उन को नहीं बख़्शेगा, यह इस लिए कि उन्होंने खुदा और उसके रसूल से कुफ़र किया और खुदा ना-फ़रमान लोगों को हिदायत नहीं देता। (८०) *

जो लोग (तबूक की लड़ाई) में पीछे रह गये, वे पैग़म्बर (की मर्जी) के खिलाफ़ बैठे रहने से खुश हुए और इस बात को ना-पसंद किया कि खुदा की राह में अपने माल और जान से जिहाद करें और (औरों से भी) कहने लगे कि गर्मी में मत निकलना। (उन से) कह दो कि दोज़ख़ की आग़ इस से कहीं ज्यादा गर्म है। काश! ये (इस बात) को समझते। (८१) ये दुनिया में थोड़ा-सा हंस लें और (आख़िरत में) उनको उन आमाल के बदले, जो करते रहे हैं, बहुत-सा रोना होगा। (८२) फिर अगर खुदा तुम को उन में से किसी ग़िरौह की तरफ़ ले जाए और वह तुम से निकलने की इजाज़त तलब करें, तो कह देना कि तुम मेरे साथ हरगिज़ नहीं निकलोगे और न मेरे साथ (मदद-गार हो कर) दुश्मन से लड़ाई करोगे। तुम पहली बार बैठे रहने से खुश हुए तो अब भी पीछे रहने वालों के साथ बैठे रहो। (८३) और (ऐ पैग़म्बर!) इन में से कोई मर जाए तो कभी उस (के जनाजे) पर नमाज़ न पढ़ना और न उस की क़ब्र पर (जा कर) खड़े होना। ये खुदा और उस के रसूल के साथ कुफ़र करते रहे और मरे भी तो ना-फ़रमान (ही मरे), (८४) और उन के माल और

१. जनाब रसूल खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने खैरात के लिए हुक्म फ़रमाया तो मोमिन अपनी-अपनी ताक़त के मुताबिक़ माल लाने लगे। कोई तो बहुत-सा रुपया लाया और कोई अनाज। अब्दुर्रहमान बिन औफ़ चार हज़ार दिरहम लाये और कहा कि मेरे पास आठ हज़ार दिरहम थे। चार हज़ार मैं अल्लाह तआला को क़र्ब देने के लिए ले आया हूँ और चार हज़ार तो बीबी-बच्चों के खर्च के लिए छोड़ आया हूँ। आसिम के पास रुपया न था, वह चार सेर ग़ल्ला लाये, वह भी जी और कहने लगे कि मैं मज़दूरी कर के आठ सेर जी लाया था, चार सेर खैरात करता हूँ और चार सेर बच्चों के लिए रखे हैं। यह हालत देख कर मुनाफ़िक़ ताने देने और मज़ाक़ उड़ाने लगे। अब्दुर्रहमान को तो कहने लगे कि इस ने दिखावे के लिए इतना माल दे दिया है, ताकि लोग तारीफ़ करें और आसिम के बारे में कहने लगे कि इन मियां को देखो, न सोना, न चांदी, जो ही उठा लाए कि नाम खैरात करने वालों में होगा --

हम भी लहू लगा के ग़हीदों में मिल गये

मला जो क्या और खैरात क्या और खुदा को इन जवों की ज़रूरत ही क्या है? खुदा ने फ़रमाया कि जिस तरह से मुनाफ़िक़ मुसलमानों से मज़ाक़ करते हैं, खुदा भी इन को अज़ाब दे कर उन के मज़ाक़ का जवाब देगा।

व ला तुअ - जिब् - क अम्वालुहुम् व औलादुहुम् ५ इन्नमा युरीदुल्लाह

अय्यु-अज्जिबहुम् बिहा फिद्दुन्या व तज्-ह-क अन्फुसुहुम् व हुम् काफिरून (८५)

व इया उन्जि-लत् सूरतुन् अन् आभिन् बिल्लाहि व जाहिद् म-अ रसूलि

हिस्-तब्-ज-न-क उलुत्तौलि मिन्हुम् व कालू जर्ना तकुम्म-अल्-काअिदीन (८६)

रञ्ज बिअंयकून म-अल्-खवालिफि व तुबि-अ

अला कुलुबिहिम् फ़हुम् ला यफ़क़हून (८७)

लाकिनिरंसुलु वल्लजी-न आमनू म - अहू

जाहदु बिअम्वालिहिम् व अन्फसिहिम् ।

व उलाइ-क लहमल्लबैरात ५ व उलाइ-क

हमलूमपिलहन (८८) अ-अददल्लाह लहम

जन्मातिव तजरी मिन तह्तिहल - अन्नाह

खालिदी - न फ्रीहा ७ जालिकल - फौजल -

अग्रिम * (८६) व जा-अल-मअज्जिरु-त

मिनल-अअ-राबि लियअ - जन लहम व

क-अ-दल्लजीन क-अबल्ला - इ व रमलव

सयसीबल्लजी-न क-फरु मिन्हम अजाबन

अलीम (१०) लै-स अ-लजज-अफा-ह व क

ला यजिद-न मा यन्कि-न इ-रज-न इजा न-सह लिह्लादि व रसलिदी। मा

अ - लल - मद्रिसनी - न मिन सबीलित वललाह गफरुदीम ॥ (३९)

ब ला अ-लल्लजी-न इजा मा अतो-क लितहिम-लइम कल-व व अजिह

मा अहिमलकम् अलेहि त-वल्लव-व अअ-यनदम् तफीज मिनददमिअ द-ज-नन

मल्ला यजिद मा यन्फिकन ५ (२३) इत्तमममवील अ - लललजी - म

यस्तब्जिन-न - क व हम अग्निय - उ० रज बिअंयकन मअलववालिफ।

व त - व - अल्लाह अला कलबिहिम फहम ला यअ - लमन (३३)

[illegible]

औलाद से ताज्जुब न करना। इन चीजों से खुदा यह चाहता है कि उन को दुनिया में अजाब करे और (जब) उन की जान निकले तो (उस वक्त भी) ये काफिर ही हों। (८५) और जब कोई सूर: नाज़िल होती है कि खुदा पर ईमान लाओ और उस के रसूल के साथ हो कर लड़ाई करो, तो जो उन में दीलतमंद हैं, वे तुम से इजाज़त तलब करते हैं और कहते हैं कि हमें तो रहने ही दीजिए कि जो लोग घरों में रहेंगे, हम भी उन के साथ रहें। (८६) ये इस बात से खुश हैं कि औरतों के साथ, जो पीछे रह जाती हैं (घरों में बैठे) रहें। उन के दिलों पर मुहर लगा दी गयी है, तो ये समझते ही नहीं। (८७) लेकिन पैगम्बर और जो लोग उन के साथ ईमान लाये, सब अपने माल और जान से लड़े। इन्हीं लोगों के लिए भलाइयां हैं।^१ और यही मुराद पाने वाले हैं। (८८) खुदा ने उन के लिए बाग़ तैयार कर रखे हैं, जिन के नीचे नहरें बह रही हैं, हमेशा उन में रहेंगे, यह बड़ी कामियाबी है। (८९)। ★

और सहरा नशीनों में से भी कुछ लोग उज़्र करते हुए (तुम्हारे पास) आये कि उन को भी इजाज़त दी जाए और उन्होंने ने खुदा और उन के रसूल से झूठ बोला, वे (घर में) बैठे रहे। सो जो लोग उन में से काफिर हुए हैं, उन को दुख देने वाला अजाब पहुंचेगा। (९०) न तो बूढ़ों पर कुछ गुनाह है और न बीमारों पर और न उन पर जिन के पास खर्च मौजूद नहीं (कि जिहाद में शरीक हों, यानी) जबकि खुदा और उस के रसूल की भलाई चाहने वाले (और दिल से उन के साथ) हों। भले लोगों पर किसी तरह का इल्जाम नहीं है और खुदा बरुशने वाला मेहरबान है। (९१) और न उन (बे सर व सामान) लोगों पर (इल्जाम है कि तुम्हारे पास आए कि उन को सवारी दो और तुम ने कहा कि मेरे पास कोई ऐसी चीज़ नहीं, जिस पर तुम को सवार करूं, तो वह लौट गए और इन ग्रम से कि उन के पास खर्च मौजूद न था, उन की आंखों से आंसू बह रहे थे। (९२) इल्जाम तो उन लोगों पर है जो दीलतमंद हैं और (फिर) तुम से इजाज़त तलब करते हैं (यानी) इस बात से खुश हैं कि औरतों के साथ जो पीछे रह जाती हैं (घरों में बैठे) रहें। खुदा ने उन के दिलों पर मुहर

१. यानी उन के वास्ते दोनों दुनिया की नेकियां हैं, दुनिया में फ़तह और ग़नीमत का माल और आख़िरत में करामत और बहिस्त।

लगा दी है। पस वे समझते नहीं। (६३) जब तुम इन के पास वापस जाओगे, तो तुम से उज्र करेंगे। तुम कहना कि उज्र मत करो, हम हरगिब तुम्हारी बात नहीं मानेंगे। खुदा ने हम को तुम्हारे सब हालात बता दिए हैं और अभी खुदा और उस का रसूल तुम्हारे अमलों को (और) देखेंगे, फिर तुम गायब व हाज़िर के जानने वाले (एक खुदा) की तरफ़ लौटाए जाओगे। और जो अमल तुम करते रहे हो, वह सब तुम्हें बताएगा। (६४) जब तुम उन के पास लौट कर जाओगे, तो तुम्हारे सामने खुदा की कस्में खाएंगे, ताकि तुम उनको दरगुज़र करो, सो उन की तरफ़ तबज़ोह न करना। ये नापाक हैं और जो काम ये करते रहे हैं, उन के बदले उन का ठिकाना दोख है। (६५) ये तुम्हारे आगे कस्में खाएंगे, ताकि तुम उन से खुश हो जाओ, लेकिन अगर तुम उन से खुश हो जाओगे, तो खुदा तो नाफ़रमान लोगों से खुश नहीं होता। (६६) देहाती लोग सख़्त काफ़िर और सख़्त मुनाफ़िक़ हैं और इस काबिल हैं कि जो (शरीअत से) अहक़ाम खुदा ने अपने रसूल पर नाज़िल फ़रमाए हैं, उन्हें जानते (ही) न हों और खुदा जानने वाला (और) हिक़मत वाला है। (६७) और कुछ देहाती हैं कि जो कुछ खर्च करते हैं, उसे जुर्माना समझते हैं और तुम्हारे हक़ में मुसीबतों के इन्तिज़ार में हैं। उन्हीं पर बुरी मुसीबत (वाक़ेअ) हो और खुदा मुनने वाला (और) जानने वाला है। (६८) और कुछ देहाती ऐसे हैं कि खुदा पर और आख़िरत के दिन पर ईमान रखते हैं और जो कुछ खर्च करते हैं, उस को खुदा की कुब्रत और पैग़म्बर की दुआओं का ज़रिया समझते हैं। देखो वह बे-शुल्हा उन के कुब्रत (की वजह) है। खुदा उन को बहुत जल्द अपनी रहमत में दाख़िल करेगा। बेशक़ खुदा बरहाने वाला है। (६९) ★

जिन लोगों ने सबूक़त की (यानी सब से) पहले (ईमान लाए) मुहाजिरों में से भी और अन्सार में से भी और जिन्होंने भले लोगों के साथ उन की पैरवी की, खुदा उन से खुश है और वे खुदा से खुश हैं और उन के लिए बाग़ तैयार किए हैं, जिन के नीचे नहरें बह रही हैं (और) हमेशा उन में रहेंगे। यह कामियाबी है। (१००) और तुम्हारे पास-पड़ोस के कुछ देहाती मुनाफ़िक़ हैं और कुछ भदीने वाले भी निफ़ाक़ पर अड़े हुए हैं, तुम उन्हें नहीं जानते, हम जानते हैं। हम उन को दोहरा अज़ाब देंगे, फिर वह बड़े अज़ाब की तरफ़ लौटाए जाएंगे। (१०१) और कुछ और लोग हैं कि अपने

व मिम्मन् होलकुम् मिनल्अब् - राबि मुनाफिकू-न^१ व मिन् अहिल्ल-
मदीनति^२ म - रद्द अल्लिफाकि^३ ला तब् - लमुहुम्^४ नहन्
नअ-लमुहुम्^५ सनु-अज्जिबुहुम् मरतैनि सुम्-म युरददू-न इला अजाबिन् अजीम^६
(१०१) व आखरूनअ-त-रफू बिजुनुबिहिम् ख-लत् अ-म-लत् सालिह्व-व आख-र

सय्यिअत्^७ अ-सल्लाहु अय्यत् - व अलैहिम्^८
इन्नल्ला-ह गफूररहीम (१०२) खुज् मिन्
अम्बालिहिम् स-द-क-तून् तुतहिह्रहुम् व
तुजक्कीहिम् बिहा व सल्लि अलैहिम्^९
इन्-न सला-त-क स - कनुल्लहुम्^{१०} वल्लाहु
समीअुन् अलीम (१०३) अ-लम् यज्-लम्
अन्नल्ला-ह हु-व यक्बलुत्तौब-त अन् अिबादिही
व यखुज्जुस्स-द-क्राति व अन्नल्ला - ह
हुवत्तब्बाबुरहीम (१०४) व कुलिअ-मलू
फ-स-य-रल्लाहु अ-म-लकुम् व रसूलू वल्-
मुअ्मिन्-न^{११} व सतुरददू-न इला आलिमिलौबि
वशहादति फ-युनब्बिउकुम् बिमा कुन्तुम्
तब्-मलून^{१२} (१०५) व आखरून मुरजौन

عَلِ الْكَافِرِينَ لَا تَغْلِبُهُمْ مَنْ تَغْلِبُهُمْ سَعْيُهُمْ فَاَنْتُمْ تَكُونُونَ
يَوْمَئِذٍ اِلَى عَذَابٍ عَظِيمٍ ۝ اَوَلَمْ يَكُنْ لَهُمْ اَعْيُنٌ يَرَوْنَ
عَمَّا حَوْلَهُمْ وَالْاَنْفُسُ شَاهِدَةً اَنْهُمْ يَتُوبُونَ عَلَيْهِمْ اِنَّ
اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝ عَلٰى مَنْ اَمَّا لَهُمْ صَدَقَةٌ تَطْلُوْنَهَا
وَتَرَكُوْهُمُ ۝ وَصَلٰى عَلَيْهِمْ اِنْ صَلَوٰتِكَ سَكُنْ لَهُمْ وَاللّٰهُ مُسَوِّدٌ لِّوَجْهِ الْكَافِرِ
يَعْلَمُوْنَ اِنَّ اللّٰهَ هُوَ يُقَدِّرُ الْوَيْلَ لِمَنْ يَّعَادِيْهِ وَيَا خُلَاِءَ الصَّدَقَاتِ ۝ اِنَّ
اللّٰهَ هُوَ الْوَكِيْلُ الرَّحِيْمُ ۝ وَقُلْ اَعْمَلُواْ لِنَفْسِكُمْ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ
الضَّالِّينَ ۝ وَالْمُؤْمِنُوْنَ وَاسْتَعِيْذُوْا بِاللّٰهِ الْعَلِيْمِ الْغَنِيِّ ۝ وَكُلُّهُمْ
بِاَنْفُسِهِمْ لَاقِيْنَ ۝ اَوَلَمْ يَكُنْ لَهُمْ اَعْيُنٌ يَّرَوْنَ اِذَا اُنْفِقُواْ اَمْ اَعْيُنُهُمْ
اِذَا يَتُوْبُونَ عَلَيْهِمْ ۝ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۝ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَاسْتَعِيْذُوا
بِاللّٰهِ وَآلَوْا بِاَقْرَبِيْنَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالصَّادِقِيْنَ حَابِلِ اللّٰهِ
وَسُوْلُهُ مِنْ جَبَلٍ ۝ وَاسْتَعِيْذُوْا اِنْ رَاْتُمْ اَلَا اَلْحَسَنَ ۝ وَاللّٰهُ يَهْدِي الْقَوْمَ
الْمُسْتَقِيْمِيْنَ ۝ لَا تَقْرَءُ فَاَوْكِدَ السُّعْيِ اَنْفُسٌ عَلَى الشَّقْوَى
مِنْ اَقْبَابِهِمْ اَحْسَنَ اَنْ تَقْرَءُ فَاَوْكِدَ فَاَوْكِدَ اَنْ تَقْرَءُ
وَاللّٰهُ يُجِيبُ الْمُتَقَلِّبِيْنَ ۝ اَتَمَنَّ اَنْفُسُ نَبِيَّكَ عَلَى تَقْوٰى مِنْ
اللّٰهِ وَطَوْعَانٍ خَيْرٌ اَمْ رَمَنَ اَنْفُسُ نَبِيَّكَ عَلَى شَقْوٰى مِنْ
فَاَوْكِدَ اَوْكِدَ فَاَوْكِدَ اَلَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِيْنَ ۝ لَا

लिअमिरल्लाहि इम्मा युअज्जिबुहुम् व इम्मा यतूबु अलैहिम्^{१३} वल्लाहु
अलीमुन् हकीम (१०६) वल्लजीनत्त-खजू मस्जिदन् ज़िरारव-व कुपरव-व
तफ़रीकम्-बैनल्मुअ्मिनी-न व इस्दिलिमन् हार-बल्ला-ह व रसूलू मिन्
कब्लु^{१४} व ल-यहिलफ़ुन-न इन् अरदना इल्लल् - हुस्ना^{१५} वल्लाहु यशहदु
इन्नहुम् ल-काजिबून (१०७) ला तकुम् फ़ीहि अब-दव् ल-मस्जिदुन् उस्सि-स
अलत्तक्वा मिन् अव्वलि यौमिन् अहक्कु अन् तकू-म फ़ीहि^{१६} फ़ीहि
रिजालु य्युहिब्बून अय्यत-तहहर्^{१७} वल्लाहु युहिब्बुल् - मुत्तह-हिरीन (१०८)
अ फ-मन् अस्स-स बुन्यानहू अला तक्वा मिनल्लाहि व रिज़वानिन् खैरुन्
अम् मन् अस्स - स बुन्यानहू अला शफा जुशफ्व हारिक् फन्हा - र
बिही फ़ी नारि ज-हन्न-म^{१८} वल्लाहु ला यहिदल्-कौमअ्मालिमीन (१०९)

मुनाहों का (साफ़) इकरार करते हैं। उन्होंने ने अच्छे और बुरे अमलों को मिला-जुला दिया था। करीब है कि खुदा उन पर मेहरबानी से तबज्जोह फ़रमाये। बेशक़ खुदा बरक़ाने वाला मेहरबान है। (१०२) उन के माल में से ज़कात कुबूल कर लो कि उस से तुम उन को (ज़ाहिर में) भी पाक हो। (बातिल में भी) पाकीज़ा करते हो और उन के हक़ में दुआ-ए-ख़ैर करो कि तुम्हारी दुआ उन की तस्दीक़ की वजह है और खुदा सुनने वाला जानने वाला है। (१०३) क्या ये लोग नहीं जानते कि खुदा ही अपने बन्दों से तोबा कुबूल फ़रमाता और सद्कात (व ख़ैरात) लेता है और बेशक़ खुदा ही तोबा कुबूल करने वाला मेहरबान है। (१०४) और उन से कह दो कि अमल किये जाओ, खुदा और उस का रसूल और मोमिन (सब) तुम्हारे अमलों को द्रैख लेंगे और तुम ग़ायब व हाज़िर के जानने वाले (एक खुदा) की तरफ़ लौटाए जाओगे। फिर जो कुछ करते रहे हो, वह सब तुम को बता देगा। (१०५) और कुछ और लोग हैं, जिन का काम खुदा के हुक्म पर रुका हुआ है, चाहे उन को अज़ाब दे और चाहे माफ़ कर दे और खुदा जानने वाला, हिकमत वाला है। (१०६) और (उन में ऐसे भी हैं), जिन्होंने ने इस ग़रज़ से मस्जिद बनायी है कि नुक़सान पहुँचाएं और कुफ़्र करें और मोमिनों में फूट डालें और जो लोग खुदा और उस के रसूल से पहले जंग कर चुके हैं उन के लिए घात की जगह बनाएं और क़स्में खाएंगे कि हमारा मक़सूद तो सिर्फ़ भलाई थी, मगर खुदा ग़वाही देता है कि वे झूठे हैं। (१०७) तुम इस (मस्जिद) में कभी (जा कर) खड़े भी न होना, अल-बत्ता वह मस्जिद जिस की बुनियाद पहले दिन से तक्वा पर रखी गयी है, इस क़ाबिल है कि इस में जाया (और नमाज़ पढ़ाया) करो। इस में ऐसे लोग हैं जो पाक रहने को पसन्द करते हैं और खुदा पाक रहने वाले ही को पसन्द करता है। (१०८) भला जिस शरूस् ने अपनी इमारत की बुनियाद खुदा के ख़ौफ़ और उस की रज़ामंदी पर रखी, वह अच्छा है या वह जिस ने अपनी इमारत की बुनियाद गिर जाने वाली खाई के किनारे पर रखी कि वह उस को दोज़ख़ की आग में ले कर गिरी। और खुदा

१. मदीने में एक मस्जिद थी जो मस्जिदे क़बा के नाम से मशहूर थी। हज़रत सरवरे कायनात सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अक्सर हुक्मों के दिन वहाँ तशरीफ़ ले जाते और नमाज़ पढ़ते। मुनाफ़िक़ों ने चाहा कि उस के मुक़ाबले में अपनी एक अलग मस्जिद बनाएं। इस की बुनियाद यह हुई कि मदीने में आहज़रत के तशरीफ़ ले जाने से पहले एक शरूस् अबू आमिर नाम का रहता था जो जाहिलियत के ज़माने में ईसाई हो गया था, निहायत टेढ़े मिज़ाज का बादशी था। वह आप के मदीना में तशरीफ़ ले जाने पर इस्लाम तो क्या लाता, आप का खुल्लम-खुल्ला दुश्मन हो गया और वहाँ से निकल कर मक्के के काफ़िरों से जा मिला और उन को आहज़रत से लड़ने पर उभारा। चुनांचे उहद की लड़ाई हुई और वह उस में काफ़िरों के साथ था, फिर रोम के बादशाह के पास चला गया और उस से आहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मुक़ाबले के लिए मदद चाही। उस ने मदद का वायदा कर लिया। यह उस के पास ठहरा रहा और मदीने के काफ़िरों को लिख भेजा कि रोम से बहुत जल्द एक लश्कर आता है, जो मुसलमानों को तबाह कर देगा। तुम एक मजबूत जगह बना रखो, जहाँ वह शरूस्, जो उस के पास से पैग़ाम पहुँचाने आया करे, क्रियाम किया करे, तो उन लोगों ने मस्जिदे क़बा के पास ही एक मस्जिद बनानी शुरू की। इस मस्जिद को मस्जिदे अरार कहते हैं। जब वह तैयार हो चुकी, तो मुनाफ़िक़ आहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और कहने लगे कि हम ने बीमारों और कमज़ोरों के लिए, साथ ही बरसात के ख़याल से एक मस्जिद बनायी है। आप वहाँ तशरीफ़ ले चले और नमाज़ पढ़ें और बरकत की दुआ करें, ताकि वहाँ (शेष पृष्ठ ३२३ पर)

जालिम लोगों को हिदायत नहीं देता। (१०६) यह इमारत, जो उन्होंने बनायी है, हमेशा उन के दिलों में शक भरी बेचैनी (की वजह) रहेगी, मगर यह कि उन के टुकड़े-टुकड़े हो जाएं। और खुदा जानने वाला, हिक्मत वाला है। (११०) *

खुदा ने मोमिनों से उन की जानें और उन के माल खरीद लिए हैं (और इस के बदले में उन के लिए बहिश्त (तैयार की) है। ये लोग खुदा की राह में लड़ते हैं तो मारते भी हैं और मारे जाते भी हैं। यह तोरात और इंजील और कुरआन में सच्चा वायदा है, जिस का पूरा करना उसे जरूर है और खुदा से ज्यादा वायदा पूरा करने वाला कौन है, तो जो सौदा तुम उस से किया है, उस से खुश रहो और यही बड़ी कामियाबी है। (१११) तैबा करने वाले, इबादत करने वाले, हम्द करने वाले, रोजा रखने वाले, हकूअ करने वाले, सज्दा करने वाले, नेक कामों का हुक्म देने वाले और बुरी बातों से मना करने वाले, खुदा की हदों की हिफाजत करने वाले (यही मोमिन लोग हैं) और ऐ पैगम्बर मोमिनों को (बहिश्त की) खुशखबरी सुना दो। (११२) पैगम्बर और मुसलमानों को मुनासिब नहीं कि जब उन पर जाहिर हो गया कि मुखिरक दोखली हैं, तो उन के लिए बख्शिश मांगें, गो वे उन के कराबतदार (रिश्तेदार) ही हों। (११३) और इब्राहीम का अपने बाप के लिए बख्शिश मांगना तो एक वायदे की वजह से था, जो वह उस से कर चुके थे, लेकिन जब उन को मालूम हो गया कि वह खुदा का दुश्मन है, तो उस से बे-जाह्र हो गये। कुछ शक नहीं कि इब्राहीम बड़े नर्म दिल और बुंदबार थे। (११४) और खुदा ऐसा नहीं कि किसी क्रौम को हिदायत देने के बाद गुमराह कर दे, जब तक उन को वह चीज न बता दे, जिस से वह परहेज करें। बेशक खुदा हर चीज को जानता है। (११५) खुदा ही है, जिसके लिए आसमानों और ज़मीन की बादशाही है। वही ज़िदगानी बख्शता और मोत देता है, खुदा के सिवा तुम्हारा कोई दोस्त और मददगार नहीं है। (११६) बेशक खुदा ने पैगम्बर पर मेहरबानी की और मुहाजिरों और अन्सार पर, जो बावजूद इस के कि उन में से कुछ-एक के दिल जल्द फिर जाने को थे, कठिन घड़ी में पैगम्बर के साथ रहे, फिर खुदा ने उन पर मेहरबानी फ़रमायी। बेशक वह उन से बहुत ज्यादा मुहब्बत करने वाला और मेहरबान है। (११७) और उन तीनों पर भी,

(पृष्ठ ३२१ का शेष)

जमावत कायम हो जाए। आप को उस वक़्त तक बिल्कुल इल्म न था कि यह मस्जिद किस नीयत और किस गरज से बनायी गयी है। इस लिए आप ने फ़रमाया कि अब तो हम सफ़र में जा रहे हैं, जब वापस आएंगे, तब इन्शाअल्लाह वहां नमाज़ पढ़ेंगे। जब आप तबूक की लड़ाई से वापस हुए और मदीना पहुंचने में एक-आध दिन का रास्ता रह गया तो यह आयत नाज़िल हुई जिस से आप को मालूम हो गया कि मुनाफ़िकों का मक़सद इस मस्जिद के बनाने से, मुसलमानों को मस्जिद के ऊबा से, जिस की बुनियाद तक्वा पर रखी गयी थी, अलग करना और उन में फूट डालना था, तब आप ने हुक्म दिया कि हमारे पहुंचने से पहले वह मस्जिद ढा दी जाए और जला दी जाए। चुनांचे इस हुक्म की तामील की गयी और मस्जिद ढा दी गयी और जला दी गयी।

व अ-लस् - सलासतिल्-लजी-न खुलिफू हत्ता इजा ज़ाकत् अलैहिमुल् -
अरज़ु बिमा रहबत् व ज़ाकत् अलैहिम् अन्फुसुहुम् व अन्नू अल्ला मल्ज-अ
मिनल्लाहि इल्ला इलैहि सुम-म ता - ब अलैहिम् लियतूबू इन्नल्ला - ह
हुवत्तव्वाबुरहीम् * (११८) या अय्युहल्लजी-न आमनुत्तकुल्ला-ह व कून्

म-अस्सादिकीन (११९) मा कान-
लिअहिलल्-मदीनति व मन् हील - हुम्
मिनल्-अ-राबि अय्य-त-खल्लफू अरसूलिल्लाहि
व ला यर्गबू बिअन्फुसिहिम् अन्
नफिसही ज़ालि - क बिअन्नहुम् ला
युसीबुहुम् अ-मउव्-व ला न-स-बुव्-व ला
मस्म-स-तुन् फी सबीलिल्लाहि व ला य-त-ऊ-न
मोतिअय्यगीजुल्-कुफ़ार-र व ला यनालू-त
मिन् अदुव्विन्नैल् इल्ला कुति-ब लहुम्
बिही अ - मलुन् सालिहुन् इन्नल्ला - ह
ला युज़ीअु अजरल् - मुहिसनीन्
(१२०) व ला युन्फिकू-न न-फ-क-त-त-त्
सगीरतव्-व ला कबीरतव्-व ला यक्तअ-न

رَبُّكَ كَرِيمٌ ۝ اُولَئِكَ الَّذِيْنَ خَلَقْنَا اِنْسَانَ مِنْ عَلَقٍ ۚ وَإِذَا حَضَرَ
عَلَيْهِمُ الْاَمْرُ اَصْبَحَتْ اُصْحَابُ الْمَعَاذِ اَلَّذِيْنَ اَقْسَمْتُ لَهُمْ اَنْ
اَلَمْ يَكُنْ اَللّٰهُ الْاَوَّلُ الْاٰخِرُ ۚ اَلَّذِيْنَ تَوَكَّلْ عَلَيْهِمْ يَصُدُّوْنَ اِنَّ اِلٰهَ هُوَ
الْعَلِيُّ الْوَسِيْهُ ۚ اَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اَتُوا اَللّٰهَ وَكُونُوا
اَلطَّائِفِيْنَ ۝ مَا كَانَ لِاَهْلِ الْمَدِيْنَةِ وَمَنْ سَوَّلَهُمْ مِنْ
الْاَعْرَابِ اَنْ يَّخْلِفُوْا عَنْ رَّسُوْلِ اَللّٰهِ وَلَا يَرْجِعُوْا بِاَنفُسِهِمْ مِنْ
نَفْسِهِ ۚ ذٰلِكُمْ بِاَنَّهُمْ لَا يُفِيْضُوْنَ عَلٰى وَلَا نَصَبٍ وَلَا خَصْمَةٍ
فِيْ سَبِيْلِ اَللّٰهِ وَلَا يَطْعُوْنَ سَوِيْطَةَ الْكَفَّارِ ۚ وَلَا يَأْتِيْنَ مِنْ
عَدُوٍّ يَّوْمَ الْاَكْثَرِ لَهُمْ عَلٰى صَالِحِيْنَ اِنَّ اَللّٰهَ لَا يَهْدِيْ اَشْيَافَ
الشُّرْكِيِّيْنَ ۝ وَلَا يَنْفَعُوْنَ نَفَقَةً صَغِيْرَةً وَلَا كَبِيْرَةً ۚ وَلَا
يُطْعَمُوْنَ ۚ اَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اَصْبَحْكُمْ اَللّٰهُ اَحْسَنَ مَا كُنْتُمْ
يَسْمَعُوْنَ ۚ وَمَا كَانَ الْمُؤْمِنُوْنَ لِيَنْتَفِرُوْا كَآفَّةً ۚ فَلَوْلَا نَفَرَ
مِنْ كُلِّ بَنِيٍّ وَفَتْهُمْ عَلَيْهِ لِيَنْفَعُوْا فِيْ الْوَيْثَانِ وَلِيُجِدُوْا
مَوْجِبًا اِذَا رَجَعُوْا اِلَيْهِمْ لَعَلَّهُمْ يَحْذَرُوْنَ ۚ اَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اَلَا
اَنَّ اَلَّذِيْنَ يَكُوْنُكُمْ مِنْ الْكُفَّارِ وَهُم لَا يَعْلَمُوْنَ ۚ اَعْلَمُوْا اَنَّ
اَللّٰهَ مَعَ الْمُحْسِنِيْنَ ۝ وَاِذَا مَا اُنْزِلَتْ سُورَةٌ فَمِنْهُمْ مَنْ يَقُوْلُ
اَلْكَرَّمُ رَدَّاهُ عَلٰى الْيَمَانِ ۚ اَنَّا وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا اَكْرَمُ لِلّٰهِ اَلَا

वादियन् इल्ला कुति - ब लहुम् लियज्जि-य-हुमुल्लाहु अह-स-न मा कान
यज़-मलून (१२१) व मा कानल् - मुअ्मिनु-न लियन्फिकू काफ़कतन्
फ़लीला न - फ - र मिन् कुल्लि फ़िकंतिम् - मिन्हुम् ताइफतुल् -
लिय-त-फ़क़हू फ़िददीनि व लियुज्जिरू कोमहुम् इजा रजअ इलैहिम्
ल - अल्लहुम् यहज़रून * (१२२) या अय्युहल्लजी - न आमन्
क्रातिलुल्लजी - न यलूनकुम् मिनल्कुफ़ारि वल्यजिद् फ़ीकुम् ग़िल्-ज - तत्
वज़ - लम् अन्नल्ला-ह मअल्मुत्तकीन (१२३) व इजा मा उन्जि-ल-त्
सूरतुव् फ़मिन्हुम् मय्यकूलू अय्युकुम् जादतहु हाजिही ईमानत्
फ़-अम्मल्लजी-न आमन् फ़-जादत्-हुम् ईमानव्-व-हुम् यस्तविशरून (१२४)

ज़िन का मामला मुलतबी किया गया था, यहां तक कि ज़मीन अपने फैलाव के बाद भी उन पर तंग हो गयी और उन की जानें भी उन पर दूभर हो गयीं और उन्होंने ने जान लिया कि खुदा के हाथ से खुद उस के सिवा कोई पनाह नहीं। फिर (खुदा) ने उन पर मेहरबानी की ताकि तोबा करें। बेशक खुद तोबा कुबूल करने वाला मेहरबान है। (११८) ★

ऐ ईमान वालो ! खुदा से डरते रहो और सच्चों के साथ रहो। (११९) मदीना वालों को और जो उन के आस-पास देहाती रहते हैं, उन को मुनासिब न था कि खुदा के पैगम्बर से पीछे रह जाएं और न यह कि अपनी जानों को उन की जान से ज्यादा अजीज़ रखें। यह इस लिए कि उन्हें खुदा की राह में जो तक्लीफ़ पहुंचती है, प्यास की या मेहनत की या भूख की या वे ऐसी जगह चलते हैं कि काफ़िरों को गुस्सा आये या दुश्मनों से कोई चीज़ लेते हैं तो हर बात पर नेक अमल लिखा जाता है। कुछ शक नहीं कि खुदा भलों का बदला बर्बाद नहीं करता। (१२०) और (इसी तरह) वे जो खर्च करते हैं, थोड़ा या बहुत, या कोई मैदान तै करते हैं, तो यह सब कुछ उन के लिए (भले कामों में) लिख लिया जाता है, ताकि खुदा उनको उनके अमलों का बहुत अच्छा बदला दे। (१२१) और यह तो हो नहीं सकता कि मोमिन सब के सब निकल आएँ, तो यों क्यों न किया कि हर एक जमाअत में से कुछ लोग निकल जाते ताकि दीन (का इल्म सीखते और उस) में समझ पैदा करते और जब अपनी क़ौम की तरफ़ वापस आते तो उन को डर सुनाते ताकि वे हज़र करते। (१२२) ★

ऐ ईमान वालो ! अपने नज़दीक के (रहने वाले) काफ़िरों से जंग करो और चाहिए कि वह तुम में सस्ती (यानी मेहनत और लड़ाई की ताक़त) मालूम करें और जान रखो कि खुदा परहेज़गारों के साथ है। (१२३) ● और जब कोई सूर: नाज़िल होती है तो कुछ मुनाफ़िक़ (मजाक़ उड़ाते और) पूछते हैं कि इस सूर: ने तुम में से किस का ईमान ज्यादा किया है? सो जो ईमान वाले हैं, उन का तो ईमान ज्यादा किया और वे खुश

१. ये तीन शस्त्र भी उन्हीं लोगों में हैं, जो तबूक की लड़ाई से पीछे रह गये थे और जनाब रिसालत मआब के साथ लड़ाई में नहीं गये थे। तबूक एक क़ब्ज़े का नाम है, जो शाम और बादिल क़ुरा के दमियान बाक़ेअ है। इस लड़ाई से पीछे रह जाने वाले तीन क़िस्म के लोग थे—१. एक मुनाफ़िक़, ये बे-ईमान भला क्यों घर से निकलने लगे थे। उन्हीं ने तरह-तरह के शीले-बहाणे किये और इस वजह से खुदा ने उन पर सस्त्र लानत व तान की, २. दूसरे मुसलमान जो किसी मजबूरी से पीछे रह गये थे, ३. तीसरे यही तीन शस्त्र जो किसी मजबूरी से न गये। तो जिन शस्त्रों ने अपने क़ुदूरों को मान लिया, उन को माफ़ कर दिया गया, मगर इन तीन शस्त्रों का मामला मजा के तौर पर पचास दिन तक मुलतबी रखा गया। ये तीन शस्त्र मुरार बिन रबीअ, काब बिन मालिक और हिलाल बिन उमैया थे। इन दिनों में इन पर ऐसी सस्त्र हालत गुज़री कि उसे मौत से भी बद-तर समझते थे। आखिर सब कहने की वजह से उन के क़ुदूर भी माफ़ कर दिए गये।

व अम्मल्लजी - न फ्री कुलुबिहिम् म-र-जुत् फ-जादतहुम् रिज-सन् इला
रिज्जिहिम् व मातु व हुम् काफिरून (१२५) अ-व ला यरी-न अन्नहुम्
युफ्तनू-न फ्री कुल्लि आमिम्-मर-तन् औ मर-तनि सुम्-म ला यतू-न व ला हुम्
यज्जककलून (१२६) व ह्जा मा उन्जि-लत सूरतु न-अ-र बअ-जुहुम्

इला बअ - जिन् ७ हल् यराकुम् मिन्

अ-हदिन् सुम्मन्-रफू ७ स-र-फल्लाहु कुलूबहुम्

बिअन्नहुम् कौमुल्ला यफ्कहून (१२७)

ल-कद् जा-अ कुम् रसूलुम्-मिन् अन्फुसिकुम्

अजीजुन् अलैहि मा अनित्तुम् हरीसुन्

अलैकुम् बिल्मुअमिनी - न रऊफुर-हीम

(१२८) फ-इन् तवल्लौ फकुल्

हस् - बियल्लाहु ७ ला इला - ह

इल्ला हु-व ७ अलैहि त-वकलतु व हु-व ७

रब्बुल् - अर्शिल् - अजीम * (१२९)

هُوَ يَسْتَبْرِدُونَ ۝ وَإِنَّا الْإِنْسَانُ فِي قُلُوبِهِمْ قُرْصٌ فَرَادٍ لَهُمْ
يُجَسَّأُ إِلَىٰ بَعْضِهِمْ وَهَؤُلَاءِ يَوْمَهُمُ الَّذِي هُمْ فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ۝ وَلَا تَحْزَنْ
لَهُمْ ۝ وَإِنَّا لَأَرْسَلْنَا مُوسَىٰ نُفَخَ بِعَصَاكَ عَلَىٰ بَعْضِهِمْ إِلَىٰ بَعْضٍ
فَلَمَّا يَبْغِ بِكُمْ مِنْ أَجْلِ ذَٰلِكَ الصَّعْقُ فَأَنفَكُوا ۝ اللَّهُ غَالِبٌ عَلَىٰ أَمْرِهِ فَالْكَافِرُونَ
لَا يَتَّقُونَ ۝ لَقَدْ جَاءَهُ رَسُولٌ مِنْ أَنْفُسِكُمْ عَزِيزٌ عَلَيْهِ مَا
عَنِتُّوا حَرِيصٌ عَلَيْكَ بِالْمُؤْمِنِينَ رَؤُوفٌ رَحِيمٌ ۝ فَإِنْ تَوَلَّوْا
فَعَسَىٰ أَمْرُنَا أَنْ يَنْصُرَ عَلَيْكُمْ قَوْمٌ مِمَّنْ لَمْ تُحِطْ بِهُمْ مِنْ قَبْلُ
وَهُمْ رَاقِبُونَ ۝

१० सूरतु यूनस ५१

(मक्की) इस सूर: में अरबी के ७७३३ अक्षर, १८६१ शब्द, १०९ आयतें और ११ रकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर-रहमानिर-रहीम *

अलिफ्-लाम्-रा तिल्-क आयातुल्-किताबिल्-हकीम (१) अ-का-न
लिन्नासि अ-ज-बत् गन् औहना इला रजुलिम्-मिन्हुम् अन् अन्जिरिन्ना-स
व बश्शिरिल्लजी-न आमनू अन्-न लहुम् क-द-म सिद्किन् अिन्-द रब्बिहिम्
कालल्काफिरून इन्-न हाजा लसाहिरुम्-मुबीन (२) इन्-न रब्बकुमुल्लाहुल्लजी
ख-ल-कस्समावाति वल्अर-ज फ्री सित्तति अय्यामित् सुम्मस्तवा अ-लल्-अशि
युदब्बिहल् - अम् - र ७ मा मिन् शफ्रीअिन् इल्ला मिम्बअ - दि
इज्जिनी ७ जालिकुमुल्लाहु रब्बुकुम् फअ-बुद्हु ७ अ-फला त - जक्कलून (३)

होते हैं। (१२४) और जिनके दिलों में मर्ज है, उनके हक में गंदगी पर गंदगी ज्यादा की और वे मरे भी तो काफ़िर के काफ़िर। (१२५) क्या ये देखते नहीं कि ये हर साल एक या दो बार बला में फंसा दिए जाते हैं, फिर भी तौबा नहीं करते और न नसीहत पकड़ते हैं। (१२६) और जब कोई सूर: नाज़िल होती है, तो एक दूसरे की तरफ़ देखने लगते हैं (और पूछते हैं कि) भला तुम्हें कोई देखता है? फिर जाते हैं। खुदा ने उन के दिलों को फेर रखा है, क्योंकि ये ऐसे लोग हैं कि समझ से काम नहीं लेते। (१२७) (लोगो!) तुम्हारे पास तुम ही में से एक पैगम्बर आए हैं। तुम्हारी तकलीफ़ उन को बोझ जान पड़ती है और तुम्हारी भलाई के बड़े ख्वाहिशमंद हैं। और ईमान वालों पर निहायत मुहब्बत करने वाले (और) मेहरबान हैं। (१२८) फिर अगर ये लोग फिर जाएं (और न मानें) तो कह दो कि खुदा मुझे काफ़ी है। उस के सिवा कोई माबूद नहीं। उसी पर मेरा भरोसा है और वही बड़े अर्थ का मालिक है। (१२९) ★



१० सूर: यूनुस ५१

सूर: यूनुस मक्की है और इस में एक सौ नौ आयतें और ग्यारह रूकूअ हैं।

शुरू खुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

अलिफ़-लाम्-रा, यह बड़ी दानाई (हिकमत) की किताब की आयतें हैं। (१) क्या लोगों को ताज्जुब हुआ कि हम ने उन्हीं में से एक मद को हुक्म भेजा कि लोगों को डर सुना दो और ईमान वालों को खुशखबरी दे दो कि उन के परवरदिगार के यहां उन का सच्चा दर्जा है (ऐसे आदमी के बारे में) काफ़िर कहते हैं कि यह तो खुला जादूगर है। (२) तुम्हारा परवरदिगार तो खुदा ही है, जिस ने आसमान और ज़मीन छः दिन में बनाए, फिर अर्श (तक़्ते शाही) पर क़ायम हुआ। वही हर एक काम का इन्तिज़ाम करता है कोई (उस के पास) उस की इजाज़त हासिल किए बग़ैर (किसी) की सिफ़ारिश नहीं कर सकता। यही खुदा तुम्हारा परवरदिगार है, तो उसी की इबादत करो। भला

इलैहि मजिअकुम् जमीअन् ७ वअ - दल्लाहि हक्कन् ७ इन्नहं यब्दउल् -
खल्-क मुम् - म युअीदुह लियज्जियल्लजी-न आमन् व अमिलुस्सालिहाति
बिल्किस्ति ७ वल्लजी-न क-फरु लहम् शराबुम्-मिन् हमीमिव-व अजाबुन्
अलीमुम्-बिमा कानू यक्फरुन (४) हु-वल्लजी ज-अ-लशाम्-स ज़ियाअव्वल्क-म-र

नूरव्-व कद्-द-रह मनाजिल-ल लितअ-लम्
अ-द-दस्सिनी-न वल्हिसा-ब ७ मा ख-ल-कल्लाहु
जालि - क इल्ला बिल्हक्कि ७ युफस्सिलुल्-
आयाति लिक्ौमिय्यअ-लमून (५) इन्-न

फिस्तिलाफिल्लैलि वन्नहारि व मा
ख - ल - कल्लाहु फिस्समावाति वल्अज्जि

लआयातिल्लिकौमिय्यत्तकून (६) इन्नल्लजी-न
ला यरजू-न लिक्-अना व रजू बिल्हयातिदुन्या
वत्त-अन्नू बिहा वल्लजी - न हुम् अन्
आयातिना गाफिलून ७ (७) उलाइ-क

मअ्वाहुमुन्नार बिमा कानू यक्सबून (८)
इन्नल्लजी-न आमन् व अमिलुस्सालिहाति

यहदीहिम् रब्बुहुम् बिईमानिहिम् ७ तजरी मिन् तह्तिहिमुल् - अन्हार

फ्री जन्नातिन्नअीम (९) दअ-वाहुम् फ्रीहा मुब्हान-कल्लाहुम्-म व तहिय्यतुहुम्

फ्रीहा सलामुन् ७ व आखिरु दअ-वाहुम् अनिल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल्-

आलमीन ★ (१०) व लौ युअज्जिलुल्लाहु लिन्नासिश् - शरस्तिअ-जा-ल-हुम्

बिल्खरि लक्कुज्जि-य इलैहिम् अ-जलुहुम् ७ फ-न - अरल्लजी-न ला यजू - न

लिक्-अना फ्री तुग्यानिहिम् यअ-महून (११) व इजा मस्सल् -

इन्सानरब्बुहं द - आना लिजम्बिही औ काअिदन् औ काइमत्

फ-लम्मा क-शफना अन्हु जुरह मर्-र क-अल्लम् यदअुना इला जुरिम्मस्सह

कजालि-क जुयिय - न लिमुस्तिरफी-न मा कानू यअ - मलून (१२)

الْبُرْجَانِ
يَوْمَ تَجْهَرُ لَهُ الْجِبَالُ عَنْ أَنَّهَا لَأَنْبَاءُ يَوْمَ تُبْعَثُونَ
وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ
عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ ١٠ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ
لَهُمْ أَجْرٌ كَثِيرٌ ۝ ١١ وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ عَذَابٌ
أَلِيمٌ ۝ ١٢ وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ ١٣
وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ ١٤ وَالَّذِينَ كَفَرُوا
لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ ١٥ وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ
عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ ١٦ وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ
عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ ١٧ وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ
عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ ١٨ وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ
عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ ١٩ وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ
عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ ٢٠ وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ
عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ ٢١ وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ
عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ ٢٢ وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ
عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ ٢٣ وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ
عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ ٢٤ وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ
عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ ٢٥ وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ
عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ ٢٦ وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ
عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ ٢٧ وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ
عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ ٢٨ وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ
عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ ٢٩ وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ
عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ ٣٠ وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ
عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ ٣١ وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ
عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ ٣٢ وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ
عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ ٣٣ وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ
عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ ٣٤ وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ
عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ ٣٥ وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ
عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ ٣٦ وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ
عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ ٣٧ وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ
عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ ٣٨ وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ
عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ ٣٩ وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ
عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ ٤٠ وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ
عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ ٤١ وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ
عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ ٤٢ وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ
عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ ٤٣ وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ
عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ ٤٤ وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ
عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ ٤٥ وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ
عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ ٤٦ وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ
عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ ٤٧ وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ
عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ ٤٨ وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ
عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ ٤٩ وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ
عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ ٥٠ وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ
عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ ٥١ وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ
عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ ٥٢ وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ
عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ ٥٣ وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ
عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ ٥٤ وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ
عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ ٥٥ وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ
عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ ٥٦ وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ
عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ ٥٧ وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ
عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ ٥٨ وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ
عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ ٥٩ وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ
عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ ٦٠ وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ
عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ ٦١ وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ
عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ ٦٢ وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ
عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ ٦٣ وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ
عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ ٦٤ وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ
عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ ٦٥ وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ
عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ ٦٦ وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ
عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ ٦٧ وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ
عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ ٦٨ وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ
عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ ٦٩ وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ
عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ ٧٠ وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ
عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ ٧١ وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ
عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ ٧٢ وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ
عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ ٧٣ وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ
عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ ٧٤ وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ
عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ ٧٥ وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ
عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ ٧٦ وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ
عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ ٧٧ وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ
عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ ٧٨ وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ
عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ ٧٩ وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ
عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ ٨٠ وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ
عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ ٨١ وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ
عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ ٨٢ وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ
عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ ٨٣ وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ
عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ ٨٤ وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ
عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ ٨٥ وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ
عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ ٨٦ وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ
عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ ٨٧ وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ
عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ ٨٨ وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ
عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ ٨٩ وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ
عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ ٩٠ وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ
عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ ٩١ وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ
عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ ٩٢ وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ
عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ ٩٣ وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ
عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ ٩٤ وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ
عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ ٩٥ وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ
عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ ٩٦ وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ
عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ ٩٧ وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ
عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ ٩٨ وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ
عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ ٩٩ وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ
عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ ١٠٠

तुम और क्यों नहीं करते ? (३) उसी के पास तुम सब को लौट कर जाना है। खुदा का वायदा सच्चा है, वही सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम को पहली बार पैदा करता है, फिर वही उस को दोबारा पैदा करेगा, ताकि ईमान वालों और नेक काम करने वालों को इंसान के साथ बदला दे। और जो काफिर हैं उन के लिए पीने को बहुत गर्म पानी और दर्द देने वाला अज्जाब होगा, क्यों कि (खुदा से) इंकार करते थे। (४) वही तो है जिस ने सूरज को रोशन और चांद को मुनव्वर (नूर) बनाया और चांद की मंजिलें मुक़र्रर कीं, ताकि तुम वर्षों को गिनती और (कामों का) हिसाब मालूम करो। यह (सब कुछ) खुदा ने तद्बीर से पैदा किया है। समझने वालों के लिए वह अपनी आयतें खोल-खोल कर बयान फ़रमाता है। (५) रात और दिन के (एक दूसरे के पीछे) आने-जाने में और जो चीज़ें खुदा ने आसमान और ज़मीन में पैदा की हैं (सब में) डरने वालों के लिए निशानियां हैं। (६) जिन लोगों को हम से मिलने की उम्मीद नहीं और दुनिया की ज़िदगी से खुश और उसी पर मुत्मइन हो बैठे और हमारी निशानियों से नाफ़िल हो रहे हैं। (७) उन का ठिकाना उन (आमाल) की वजह से, जो वे करते हैं, दोज्ख है। (८) (और) जो लोग ईमान लाये और नेक काम करते रहे, उन को परवरदिगार उन के ईमान की वजह से (ऐसे महलों की) राह दिखाएगा (कि) उन के नीचे नेमत के बाग़ों में नहरें बह रही होंगी। (९) (जब वे) उन में (उन की नेमतों को देखेंगे, तो बे-साह्ता) कहेंगे, सुब्हानल्लाह और आपस में उन की दुआ 'सलामुन् अलैकुम्' होगी और उन का आखिरी क़ौल यह (होगा) कि खुदा-ए-रब्बुल आलमीन की हम्द (और उस का शुक्र) है। (१०) ★

और अगर खुदा लोगों की बुराई में जल्दी करता, जिस तरह वे भलाई चाहने में जल्दी करते हैं, तो उन की (उम्र की) मीयाद पूरी हो चुकी होती सो जिन लोगों को हम से मिलने की उम्मीद नहीं, उन्हें हम छोड़े रखते हैं कि अपनी सर-कशों में बहकते रहें। (११) और जब इंसान को तकलीफ़ पहुंचती है तो लेटा और बैठा और खड़ा (हर हाल में) हमें पुकारता है, फिर जब हम तकलीफ़ को इस से दूर कर देते हैं तो (बे-लिहाज हो जाता और) इस तरह गुज़र जाता है कि गोया किसी तकलीफ़ पहुंचने पर हमें कभी पुकारा ही न था। इसी तरह हृद से निकल जाने वालों का उन के

व ल-कद् अहलवनल्-कुरून मिन् कब्लिकुम् लम्मा अ-लम् ॥ व जा-अल्हम्
रसुलुहुम् बिल्बय्यिनाति व मा कानू लियुअमिन् ॥ कज्जालि - क नज्जिल्-
कौमल्-मुजिरमीन (१३) सुम्-म ज-अल्नाकुम् खलाइ-फ फिल्अज्जि मिम्बअ-दि
हिम् लिनखु-र कै-फ तअ-मलून (१४) व इजा तुल्ला अलैहिम् आयातुना

बय्यिनातिन् ॥ कालल्लजी - न ला यरजू-न
लिक्का-अनअति बिकुरआनिन् गैरि हाजा

ओ बद्दिल्हु ॥ कुल् मा यकूनु ली अन्
उबद्दिल्हु मिन् तिल्काइ नफसी ६ इन्
अत्तबिअ इल्ला मा यूहा इलय - य

इन्नी अखाफु इन् असैतु रब्बी अजा-ब
योमिन् अजीम (१५) कुल् लो शा-अल्लाहु

मा तलीतुहू अलैकुम् व ला अद्राकुम्
बिही ॥ फ - कद् लबिस्तु फ्रीकुम्

अमुरम्मिन् कब्लिही ॥ अ-फ़ला तअ-क़िलून
(१६) फ - मन् अज़लमु मिम्मनिफ़्तरा

अ - लल्लाहि कजिबन् ओ कज्ज - ब

وَمِنْ قَبْلِهِمْ لَنَا ظُلُمٌ ۖ وَاَجَاءَهُمْ رَسُولُهُمْ بِالْحَقِّ وَمَا كَانُوا
لِيُؤْمِنُوا ۚ كَذَلِكَ نَجْزِي الْقَوْمَ السَّيِّئِينَ ۖ لَوْ جَعَلْنَاهُمْ
فِي الْاَرْضِ مِنْ بَدْرِهِمْ لَنَنْظُرُنَّ عَنْهُمْ وَلَوْ اَنْشَأْنَاهُمْ
اٰنَا جُنُودًا ۚ قَالَ الَّذِينَ لَا يَرْجُونَ لِقَاءَنَا قَاتِلْهُمْ فَاَنْتُمْ
اَوْ لِقَالَهُمْ ۚ قُلْ مَا يَكُونُ لِيْ اَنْ اُبَدِّلَهُمْ تِلْقَآئِيْ لَعْنَتِيْ ۚ اِنْ
كَانَ اِلَّا مَا يُؤْتَىٰ اِلَىٰ اٰتِيٍّ لِّعَذَابٍ ۚ اِنْ عَصَيْتُمْ رَبِّيْ عَذَابِيْ
عَظِيْمٌ ۚ قُلْ لَوْ شَاءَ اللّٰهُ مَا تَكُونُوْنَ عَلَيْهِمْ وَلَا اُوْدَ اُنْكَارُهُمْ ۚ فَقَدْ
بَيَّنَّ فَيْكُم مَّا عَرَضْتُمْ عَلَيْهِمْ ۚ اَلَا تَتَذَكَّرُوْنَ ۚ فَمَنْ ظَلَمَ
مَنْ اَفْلَحَ عَلَى الْاَرْضِ ۚ اَوْ كَذَّبَ بِآيَاتِهِ الْغٰثِ الْغٰثِ ۚ اَوْ
يَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَضُرُّهُمْ وَلَا يَنْفَعُهُمْ ۚ وَيَقُولُوْنَ
قَوْلًا شَعْبًا ۚ اِنَّا جَعَلْنَا الْاَنۡفُسَ ۚ قُلْ اَلَيْسَ اللّٰهُ بِمَا لَا يَشَآءُوْا فِي السَّمٰوٰتِ
اَلَاۤ اِنَّ الْاَرْضَ سَعِيْدَةٌ ۚ وَلَعَلَّكُمْ تَعْلَمُوْنَ ۚ وَمَا كَانَ لِلّٰهِ اِلَّا
اَنۡدَ اَوَّلُهَا ۚ فَاسْتَلَفُوْا ۚ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَبِّكَ لَخَشِيَ
اَيُّكُمْ ۚ فَيُعَذِّبُهُمْ مِمَّا كَانُوْنَ عَلٰى ۚ يَقُولُوْنَ لَوْلَا اُنۡزِلَ عَلَيْنَا
اٰيَةٌ ۚ قُلْ اِنِّيْ اَتَّبِعُ اَمْرَ رَبِّيْ ۚ اِنِّيْ خَشِيَْتُ اَلَاۤ اِنَّ اَكْبَرَكُمْ
عِلْمًا ۚ اَتَقْتُمُ الْاَنۡفُسَ ۚ وَمَنْ يُّصۡغِرْهَا فَاَفۡفَعۡلَهُمْ ۚ اِنَّا جَعَلْنَا
اَلَاۤ اِنَّ اَكْبَرَكُمْ عِلْمًا ۚ اِنِّيْ اَتَّبِعُ اَمْرَ رَبِّيْ ۚ اِنِّيْ خَشِيَْتُ اَلَاۤ اِنَّ اَكْبَرَكُمْ

बिआयातिही ॥ इन्हू ला युफ़्लिहूल् - मुजिरमून (१७) व यअ - बुह-न

मिन् इन्लिल्लाहि मा ला यज़्ज़रुहुम् व ला यन्फ़अहुम् व यकूल-न हाउलाइ
शफ़-आउना अिन्दल्लाहि ॥ कुल् अतुनबिऊनल्ला - ह बिमा ला यअ - लमु

फ़िस्समावाति व ला फ़िल्अज्जि ॥ सुब्हानहू व तआला अम्मा युशिरकून
(१८) व मा कानन्नामु इल्ला उम्मत्तुव्वाहि-द - तन् फ़ख् - त - लफ़

व लौला कलिमतुन् स-ब-कत् मिर्रिबि-क लकुज़ि-य बैनहुम् फ़ी मा फ़ीहि
यख-तलिफ़ून (१९) व यकूल - न लौला उन्जि-ल अलैहि आयतुम्-

मिर्रिबिही ६ फ़कुल् इन्नमल् - गैबु लिल्लाहि फ़न्तजिहू ६ इन्नी
म-अकुम् मिनल्-मुन्तज़िरीन * (२०) व इजा अ - जकनन्ना-स रह-म-तम्-
मिम्बअ - दि ज़रा-अ मस्सतहुम् इजा लहुम् मक्-रन् फ़ी आयातिना ॥
कुलिल्लाहु अस्-रअ मकरत् ॥ इन्-न रसुलना यकतुबून मा तम्कूरून (२१)

आमास सजा कर दिखाए गए हैं। (१२) और तुम से पहले हम कई उम्मतों को, जब उन्होंने ने जुल्म अस्तियार किया, हलाक कर चुके हैं और उन के पास पैगम्बर खुली निशानियां ले कर आये, मगर वे ऐसे न थे कि ईमान लाते। हम गुनाहगार लोगों को इसी तरह बदला दिया करते हैं। (१३) फिर हम ने उन के बाद तुम लोगों को मुल्क में खलीफा बनाया, ताकि देखें कि तुम कैसे काम करते हो। (१४) और उन को हमारी आयतें पढ़ कर सुनायी जाती हैं, तो जिन लोगों को हम से मिलने की उम्मीद नहीं, वे कहते हैं कि (या तो) इस के सिवा कोई और कुरबान (बना) लाओ या इस को बदल दो। कह दो कि मुझ को अस्तियार नहीं है कि इसे अपनी तरफ से बदल दूं। मैं तो उसी हुक्म का ताबेअ हूं जो मेरी तरफ आता है। अगर मैं अपने परवरदिगार की ना-फ़रमानी करूं, तो मुझे बड़े (सख्त) दिन के अज़ाब से खौफ आता है। (१५) (यह भी) कह दो कि अगर खुदा चाहता तो (न तो) मैं ही यह (किताब) तुम को पढ़ कर सुनाता और न वही तुम्हें इस के बारे में बताता। मैं इस से पहले तुम में एक उन्न रहा हूं (और कभी एक कलिमा भी इस तरह का नहीं कहा), भला तुम समझते नहीं। (१६) तो उस से बढ़ कर जालिम कौन जो खुदा पर झूठ गढ़े और उस की आयतों को झुठलाए। बेशक गुनाहगार कामियाबी नहीं पाएंगे। (१७) और ये (लोग) खुदा के सिवा ऐसी चीजों की इबादत करते हैं, जो न उन का कुछ बिगाड़ ही सकती हैं और न कुछ भला ही कर सकती हैं और कहते हैं कि ये खुदा के पास हमारी सिफ़ारिश करने वाले हैं। कह दो, क्या तुम खुदा को ऐसी चीज बताते हो, जिस का वजूद उसे न आसमानों में मालूम होता है और न ज़मीन में। वह पाक है और (उस की शान) उन के शिकं करने से बहुत बुलंद है। (१८) और (सब) लोग (पहले) एक ही उम्मत (यानी एक ही मिल्लत पर) थे। फिर अलग-अलग हो गए और अगर एक बात जो तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से पहले हो चुकी है, न होती, तो जिन बातों में वे इस्तिलाफ करते हैं, उन में फ़ैसला कर दिया जाता। (१९) और कहते हैं कि इस पर उन के परवरदिगार की तरफ से कोई निशानियां क्यों नाज़िल नहीं हुई। कह दो कि सब (का इल्म) तो खुदा ही को है, सो तुम इतिज़ार करो। मैं भी तुम्हारे साथ इतिज़ार करता हूं। (२०) ★

और जब हम लोगों को तकलीफ़ पहुंचने के बाद (अपनी) रहमत (से सुख) का मज़ा चखाते हैं, तो वे हमारी आयतों में ही हीले करने लगते हैं। कह दो कि खुदा बहुत जल्द हीला करने वाला है। और जो हीले तुम करते हो, हमारे फ़रिश्ते उन को लिखते जाते हैं। (२१) वही तो है जो तुम

को जंगल और दरिया में चलने-फिरने और सैर करने की तौफ़ीक़ देता है, यहां तक कि जब तुम कश्तियों में (सवार) होते हो और कश्तियां पाकीजा हवा (के नर्म-नर्म झोंकों) से सबारों को ले कर चलने लगती हैं और वे उन से खुश होते हैं, तो यकायक़ी ज़न्नाटे की हवा चल पड़ती है और लहरें हर तरफ़ से उन पर (जोश मारती हुई) आने लगती हैं और वे ख्याल करते हैं कि (अब तो) लहरों में धिर गए, तो वह वक़्त खालिस खुदा ही की इबादत कर के उससे दुआ मांगने लगते हैं कि (ऐ खुदा!) अगर तू हम को इस से निजात बख़्शे तो हम (तेरे) बहुत ही शुक्रगुज़ार हों। (२२) लेकिन जब वह उन को निजात दे देता है, तो मुल्क में ना-हक़ शरारत करने लगते हैं। लोगो! तुम्हारी शरारत का बवाल तुम्हारी ही जानों पर होगा, तुम दुनिया की ज़िदगी के फ़ायदे उठा लो, फिर तुम को हमारे ही पास लौट कर आना है। उस वक़्त तुम को बताएंगे, जो कुछ तुम किया करते थे। (२३) दुनिया की ज़िदगी की मिसाल मेंह की-सी है कि हम ने उस को आसमान से बरसाया। फिर उस के साथ सब्ज़ा, जिसे आदमी और जानवर खाते हैं, मिल कर निकला, यहां तक कि ज़मीन सब्ज़े से खुशनुमा (हुई) और सज गयी और ज़मीन वालों ने ख्याल किया कि वह इस पर पूरा कब्ज़ा रखते हैं, यकायक़ रात को या दिन को हमारे (अज़ाब का हुक्म) आ पहुंचा, तो हम ने उस को काट (कर ऐसा कर) डाला कि गोया कल वहां कुछ था ही नहीं। जो लोग ग़ौर करने वाले हैं, उन के लिए हम (अपनी क़ुदरत की) निशानियां इसी तरह खोल-खोल कर बयान करते हैं। (२४) और खुदा सलामती के घर की तरफ़ बुलाता है और जिस को चाहता है सीधा रास्ता दिखाता है। (२५) जिन लोगों ने भले काम किए, उन के लिए भलाई है और (कुछ) और भी। और उन के मुंहों पर न तो स्याही छाएगी और न रसवाई। यही जन्मती है कि उस में हमेशा रहेंगे। (२६) और जिन्होंने ने बुरे काम किये, तो बुराई का बदला वैसा ही होगा और उन के मुंहों पर ज़िल्लत छा जाएगी और कोई उन को खुदा से बचाने वाला न होगा। उन के मुंहों (की स्याही का हाल होगा कि उन) पर गोया अंधेरी रात के टुकड़े उड़ा दिए गए हैं। यही दोख़बी है कि हमेशा उस में रहेंगे। (२७) और जिस दिन हम इन सब को जमा कर देंगे, फिर मुश्क़ों से कहेंगे कि तुम और तुम्हारे शरीक अपनी-अपनी जगह ठहरे रहो, तो हम उन में फूट डाल देंगे उन के शरीक (उन से) कहेंगे कि तुम हम को तो नहीं पूजा

करते थे। (२८) हमारे और तुम्हारे बर्गम्यान खुदा ही गवाह काफ़ी है। हम तुम्हारी पूजा से बिल्कुल बे-खबर थे। (२९) वहां हर आदमी (अपने आमाल की), जो उस ने आगे भेजे होंगे, बुहतान आडमाइश कर लेगा। और वे अपने सच्चे मालिक की तरफ़ लौट जाएंगे और जो कुछ वे बांधा करते थे, सब उन से जाता रहेगा। (३०) ★ ●

(उन से) पूछो कि तुम को आसमान व ज़मीन में रोज़ी कौन देता है या (तुम्हारे) कानों और आंखों का मालिक कौन है और बे-जान से जानदार कौन पंदा करता है और जानदार से बे-जान कौन पंदा करता है और दुनिया के कामों का इन्तिज़ाम कौन करता है। झट कह देंगे कि अल्लाह, तो कहो कि फिर तुम (खुदा से) डरते क्यों नहीं? (३१) यही खुदा तो तुम्हारा परवरदिगारे बर-हक है और हक़ बात के जाहिर होने के बाद गुमराही के सिवा है ही क्या? तो तुम कहां फिर जाते हो? (३२) इसी तरह खुदा का इश्ाद इन ना-फ़रमानों के हक़ में साबित हो कर रहा कि ये ईमान नहीं लाएंगे। (३३) (उन से) पूछो कि भला तुम्हारे शरीकों में कोई ऐसा है कि मल्लूक़ात को पहले पंदा करे (और) फिर उस को दोबारा बनाये। कह दो कि खुदा ही पहली बार पंदा करता है, फिर वही उस को दोबारा पंदा करेगा तो तुम कहां उलटे जा रहे हो? (३४) पूछो कि भला तुम्हारे शरीकों में कौन ऐसा है कि हक़ का रास्ता दिखाए। कह दो कि खुदा ही हक़ का रास्ता दिखाता है, भला जो हक़ का रास्ता दिखाए, वह इस काबिल है कि उस की पैरवी की जाए या वह कि जब तक कोई उसे रास्ता न बताए, रास्ता न पाए। तो तुम को क्या हुआ है, कैसा इंसफ़ करते हो? (३५) और उन में के अकसर सिर्फ़ उन (गुमान) की पैरवी करते हैं। और कुछ शक नहीं कि हक़ के मुक़ाबले में कुछ भी कारआमद नहीं हो सकता। बेशक़ खुदा तुम्हारे (तमाम) कामों को जानता है। (३६) और यह क़ुरआन ऐसा नहीं कि खुदा के सिवा कोई उस को अपनी तरफ़ से बना लाए। हां, (हां, यह खुदा का कलाम है), जो (किताबें) इन से पहले (की) हैं, उन की तस्दीक़ करता है और उन्हीं किताबों की (इस में) तफ़सील है। इस में शक नहीं (कि) यह रब्बुल आलमीन की तरफ़ से (नाज़िल हुआ) है। (३७) क्या ये लोग कहते हैं कि पैग़म्बर ने उस को अपनी तरफ़ से बना लिया है। कह दो कि अगर सच्चे हो, तो तुम भी इस तरह की एक सूर: बना लाओ और खुदा के सिवा जिन को तुम बुला सको, बुला भी लो। (३८) हकीक़त यह है कि जिस चीज़ के इल्म पर ये

१. यानी जब उस को उस के आमाल का बदला मिलेगा, तब उसे माफ़ूम हो जाएगा कि उस ने दुनिया में कैसे काम किए थे।

बल् कज्जबू बिमा लम् युहीतू बिअलिमही व लम्मा यअतिहिम् तअ-वीलुह
 कज्जालि-क कज्ज-बल्लजी-न मिन् कन्लिहिम् फल्लज्जु कै-फ का-न आकिबल्लुआलिमीन
 (३६) व मिन्हुम् मंयुअमिनु बिही व मिन्हुम् मल्ला युअमिनु बिही
 व रन्वु-क अअ-लमु बिल्मुप्पिस्वीन * (४०) व इन् कज्जबू-क फकुल्

ली अ - मली व लकुम् अ - मलुकुम्
अन्तुम् बरीऊन मिम्मा अअ-मलु व अन्न
बरीउम्-मिम्मा तअ-मलून (४१) व
मिन्हुम् मंय्यस्तमिअून इलै-क^७ अ-फ-अन्-त
तुस्मिअुसु-सुम्-म व लौ कानू ला यअ-क्लिून
(४२) व मिन्हुम् मंय्यत्थुरु इलै - क^७
अ-फ-अन्-त तहिदल्अुम्-य व लौ कानू ला
युन्सिरून (४३) इन्नल्ला - ह ला
यज्जिमुन्ना-स शैअंब-व लाकिन्नन्ना-स अन्कुसहुम्
यज्जिमून (४४) व यौ-म यहशुरुहुम्
क-अल्लम् यल्बसू इल्ला सा - अ - तुम्-
मिनन्नहारि य-त - आरफू-न बैनहुम्^७ कद्
खसिरल्लजी - न कज्जबू बिलिक्काइल्लाहि

[illegible]

व मा कानू मुह्तदीन (४५) व इम्मा नुरियन्-क बअ-जल्लजी
नअिदुहुम् औ न - त - वफ-यन्-क फ - इलैना मजिअुहुम् सुम्मल्लाहु
शहीदुन् अला मा यफ - अलून (४६) व लिकुल्लि उम्मतिरंसूलुन्
फइशा जा-अ रसूलुहुम् कुज्जि-य बैनहुम् बिल्किस्ति व हुम् ला युडलमून
(४७) व यकूलून मता हाजल्वअु-दु इन् कुन्तुम् सादिकीन (४८) कुल्
ला अम्लिकु लिनफसी ज़र - रंव-व ला नफ-अन् इल्ला मा शाअल्लाहु
लिकुल्लि उम्मतिन् अ-जलुन् इज्जा जा-अ अ-जलुहुम् फला यस्तअखिरून
साअ-तंव-व ला यस्तकिदमून (४९) कुल् अ-रऐतुम् इन् अताकुम्
अजाबुहु बयातन् औ नहारम्-माजा यस्तअ-जिलु मिन्हल-मुजिरमून (५०)

काबू नहीं पा सके, उस को (नादानी से) झुठला दिया और अभी इस की हकीकत उन पर खुली ही नहीं। इसी तरह जो लोग इन से पहले थे, उन्होंने ने झुठलाया था, सो देख जो जालिमों का कैसा अंजाम हुआ। (३९) और इन में से कुछ तो ऐसे हैं कि इस पर ईमान ले आते हैं और कुछ ऐसे हैं कि ईमान नहीं लाते। और तुम्हारा परवरदिगार शरीरों को खूब जानता है। (४०) *

और अगर यह तुम्हें झुठलाएं, तो कह दो कि मुझ को मेरे अमल (का बदला मिलेगा) और तुम को तुम्हारे अमल (का)। तुम मेरे अमलों के जवाबदेह नहीं हो और मैं तुम्हारे अमलों का जवाबदेह नहीं हूँ। (४१) और इन में कुछ ऐसे हैं कि तुम्हारी तरफ़ कान लगाते हैं, तो क्या तुम बहरों को सुनाओगे, अगरचे कुछ भी (सुनते,) समझते न हों। (४२) और कुछ ऐसे हैं कि तुम्हारी तरफ़ देखते हैं, तो क्या तुम अंधों को रास्ता दिखाओगे, अगरचे कुछ भी देखते (भालते) न हों। (४३) खुदा तो लोगों पर कुछ जुल्म नहीं करता, लेकिन लोग ही अपने आप पर जुल्म करते हैं (४४) और जिस दिन खुदा उन को जमा करेगा (तो वे दुनिया के बारे में ऐसा ह्याल करेंगे कि) गोया (वहां) घड़ी भर दिन से ज्यादा रहे ही नहीं थे (और) आपस में एक दूसरे को पहचानेंगे भी। जिन लोगों ने खुदा के सामने हाजिर होने को झुठलाया, वे घाटे में पड़ गये और राहयाब न हुए। (४५) अगर हम कोई अज्ञाव, जिस का इन लोगों से वायदा करते हैं, तुम्हारी आंखों के सामने (नाज़िल) करें या (इस वक़्त, जब) तुम्हारी ज़िदगी की मुह्त पूरी कर दें, तो उन को हमारे ही पास लौट कर आना है। फिर जो कुछ ये कर रहे हैं, खुदा उस को देख रहा है। (४६) और हर एक उम्मत की तरफ़ पैगम्बर भेजा गया, जब उन का पैगम्बर आता है, तो उन में इसाफ़ के साथ फ़ैसला कर दिया जाता है और उन पर कुछ जुल्म नहीं किया जाता। (४७) और ये कहते हैं कि अगर तुम सच्चे हो तो (जिस अज्ञाव का) यह वायदा (है, वह आयेगा) कब? (४८) कह दो कि मैं तो अपने नुक़सान और फ़ायदे का भी कुछ अख़्तियार नहीं रखता, मगर जो खुदा चाहे। हर एक उम्मत के लिए (मीत का) एक वक़्त मुक़रर है। जब वह वक़्त आ जाता है, तो एक घड़ी भी देर नहीं कर सकते और न जल्दी कर सकते हैं। (४९) कह दो कि भला देखो तो अगर उस का अज्ञाव तुम पर (यकायक) आ जाए, रात को या दिन को, तो फिर गुनाहगार किस बात की जल्दी करेंगे। (५०) क्या जब वह आ

१. यानी उन का तुम्हारी तरफ़ कान लगाना या नज़र करना उन को कुछ फ़ायदा नहीं देगा, क्योंकि उन की मियाल बहरों और अंधों की-सी है कि न सुन सकें, न देख सकें, खास तौर से इस हालत में कि अक़ल और समझ से कोरे हों। बहरे को इशारे से समझा सकते हैं, अंधे को आवाज़ से बता सकते हैं, मगर जो अक़ल ही न रहे, उस को किसी तरह समझाना भी नफ़ा नहीं देता। मतलब यह है कि लोग न शौक़ और तबज़्जोह से तुम्हारी बातों को सुनते हैं, न यक़ीन रखते हैं, इस लिए इन का हिदायत पाना कठिन है।

जाएगा, सब उस पर ईमान लाओगे (उस वक़्त कहा जाएगा कि) और अब (ईमान लाये ?) इसी के लिए तो तुम जल्दी मचाया करते थे। (५१) फिर ज़ालिम लोगों से कहा जाएगा कि हमेशा के अज़ाब का मज़ा चखो। (अब) तुम उन्हीं (आमाल) का बदला पाओगे, जो (दुनिया में) करते रहे। (५२) और तुम से पूछते हैं कि क्या यह सच है ~~कह दो~~ हां, खुदा की क़सम ! सच है ~~और तुम~~ और तुम (भाग कर खुदा को) आजिज़ नहीं कर सकोगे ~~(५३)~~ और अगर हर एक ना-फ़रमान शस्त्र के पास धरती की तमाम चीज़ें हों तो (अज़ाब से बचने के) बदले में (सब) दे डाले और जब वे अज़ाब देखेंगे तो (पछताएंगे और) नदामत को छिपाएंगे और उन में इंसफ़ के साथ क़ैसला कर दिया जाएगा और (किसी तरह का) उन पर जुल्म नहीं होगा। (५४) सुन रखो कि जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है, सब खुदा ही का है और यह भी सुन रखो कि खुदा का वायदा सच्चा है, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते। (५५) वही जान बख़्शता और (वही) मौत देता है और तुम लोग उसी की तरफ़ लौट कर जाओगे। (५६) लोगो ! तुम्हारे पास परवरदिगार की तरफ़ से नसीहत और दिलों की बी मारियों की शिफ़ा और मोमिनों के लिए हिदायत और रहमत आ पहुंची है। (५७) कह दो कि (यह किताब) खुदा के फ़ज़ल और उस की मेहरबानी से (नाज़िल हुई है,) तो चाहिए कि लोग इस से खुश हों। यह उस से कहीं बेहतर है, जो वे जमा करते हैं। (५८) कहो कि भला देखो तो, खुदा ने तुम्हारे लिए जो रोज़ी उतारी, तो तुम ने उस में से (कुछ को) हाराम ठहराया और (कुछ को) हलाल, (उनसे) पूछो, क्या खुदा ने तुम्हें इस का हुक्म दिया है या तुम खुदा पर झूठ गढ़ते हो ? (५९) और जो लींग खुदा पर झूठ गढ़ते हैं, वे क़ियामत के दिन के बारे में क्या ब्याल रखते हैं ? बेशक खुदा लोगों पर मेहरबान है, लेकिन अक्सर लोग शुक्र नहीं करते। (६०) *

और तुम जिस हाल में होते हो, या कुरअन में से कुछ पढ़ते हो, या तुम लोग कोई (और) काम करते हो, जब उस में लग जाते हो, हम तुम्हारे सामने होते हैं और तुम्हारे परवरदिगार से जरा बराबर भी कोई चीज़ छिपी हुई नहीं है, न ज़मीन में और न आसमान में और न कोई चीज़ उस से छोटी है या बड़ी, मगर राशन किताब में (लिखी हुई) है। (६१) सुन रखो कि जो खुदा के

अला इन्-न ओलिया-अल्लाहि ला खौफुन् अलैहिम् व ला हुम् यहजून
(६२) अल्लजी-न आमनू व कानू यत्तकून् (६३) लहुमुल्बुशरा

फिल्हयातिदुन्या व फिल्आखिरति (६४) ला तब्दी - ल लिक्लिमातिल्लाहि
जालि-क हुवल्फोजुल् - अजीम (६४) व ला यहजून - क कौलुहुम्

इन्न्अज्ज - त लिल्लाहि जमीअन्
हुवस्समीअल्-अलीम (६५) अला इन्-न

लिल्लाहि मन् फिस्समावाति व मन्
फिल्अज्ज (६५) व मा यत्तबिअल्लजी - न

यद-अ-न मिन् दूनिल्लाहि शु - रका - अ
इय्यत्तबिअ-न इल्लज् - जन्-न व इन्

हुम् इल्ला यरूसून (६६) हुवल्जजी
ज-अ-ल लकुमुल्लै - ल लितस्कून् फ्रीहि

वल्नहा-र मुब्सिरन् (६७) इन्-न फ्री जालि-क
लआयातिल - लिक्लीमियस्मअन् (६७)

कालुत्त-ख-जल्लाहु व - ल - दत् सुब्हानह
हुवल्गनिय्यु (६८) लहू मा फिस्समावाति

व मा फिल्अज्ज (६८) इन् अन्दकुम् मिन्
मुल्तानिम्-बिहाजस् (६९) अ तक्लून् अ-लल्लाहि मा ला तअ-लमून (६९) कुल्

इन्ल्लजी-न यफतरून अ-लल्लाहिल् - कजि - ब ला युफिलहून (६९)
मताअन् फिदुन्या सुम्-म इलैना मजिअहुम् सुम्-म नुजीकुहुमुल्-अजाबशदी-द

बिमा कानू यक्फुरून् (७०) वल्तु अलैहिम् न-ब-अ नूहिन् इज्
क्रा-ल लिक्लीमिही या कौमि इन् कान-कबु-र अलैकुम् मकामी व तज्कीरो

बिआयातिल्लाहि फ-अ-लल्लाहि त-वक्कल्लु फ-अजिमअ अम्रकुम् व शुरका-अ
कुम् सुम्-म ला यकुन् अम्रकुम् अलैकुम् गुम्-तन् सुम्-मज्ज इलय-य व ला

तुज्जिह्व (७१) फ-इन् तवल्लैतुम् फमा स-अल्लकुम् मिन् अजिरत् (७१) इन्
अजिर-य इल्ला अलल्लाहि (७२) व उमिरतु अन् अकून् मिनल्-मुस्लिमीन (७२)

ذَٰلِكَ ۚ وَلَا إِلَٰهَ إِلَّا فِي كِتَابٍ مُّبِينٍ ۚ الْآلَافُ ۚ أَوْ يُبَايِعُ اللَّهُ لَأَن يَكُونَ لَهُمْ
وَأَن يَكُونَ لَهُمْ ۚ الَّذِينَ آمَنُوا وَكَانُوا يَكْفُرُونَ ۚ لَهُمُ الْبُشْرَى
فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۚ وَفِي الْآخِرَةِ ۚ لَا يَمَسُّهُمْ فِيهَا مِنْ غَوْلٍ ۚ وَلَا يَحْزَنُونَ ۚ لَهُمْ
الْحَبْلُ الْمُطْمَئِنِّ ۚ وَلَا يَحْزَنُونَ ۚ لَهُمْ ۚ إِنَّ الْعَوْدَ لِلَّهِ جَمِيعًا ۚ هُوَ
السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۚ الْآلَافُ ۚ يَوْمَ نَفِثَ فِي الشَّجَرِ ۚ وَمَنْ فِي الْآخِرِ
وَمَا يَسْتَمِعُ الَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ شُرَكَاءَ ۚ إِنَّهُمْ لَا يَكْفُرُونَ إِلَّا
الْكُفْرَ ۚ وَإِنْ هُمْ إِلَّا يَكْفُرُونَ ۚ هُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْآيَاتِ
لِتَشْكُرُوا ۚ وَاللَّهُ أَكْبَرُ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ۚ
قَالُوا اتَّخَذَ اللَّهُ وَلَدًا ۚ وَلَدًا سَمِعْنَا ۚ هُوَ الْغَيْبُ ۚ لَهُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا
فِي الْأَرْضِ ۚ إِنْ عِنْدَكُمْ مِنْ سُلْطَانٍ بِهَٰذَا ۚ أَتَقُولُونَ عَلَى اللَّهِ
لَا تَعْلَمُونَ ۚ قُلْ إِنْ الَّذِينَ يُعَذِّبُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ لَا
يُعَذِّبُونَ ۚ وَمَا فِي الدُّنْيَا إِلَّا أَلْبَابُ مَرْجِعِهِمْ ۚ ثُمَّ إِلَهُكُمْ
الْعَذَابُ الشَّدِيدَ ۚ هَٰذَا كِتَابُ الْكَافِرِينَ ۚ وَأَنْتَ عَلِيمٌ بِأَسْمَاءِ
إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ يَوْمَئِذٍ إِنَّ كَانَ لَكُمْ عَلَيْكُمْ مَقَالٌ ۚ وَتَذَكَّرُونَ بِآيَاتِ
اللَّهِ ۚ فَعَلِ اللَّهُ فَعْلًا ۚ فَاجْعَلُوا أَمْرَكُمْ وَمِنْ كَذِبِكُمْ ۚ ثُمَّ لَا يَكُنْ
أَمْرُكُمْ عَلَيْكُمْ غِنًى ۚ ثُمَّ أَفْضَوْا إِلَىٰ وَلَا يَحْزَنُونَ ۚ وَإِنْ تَوَلَّيْتُمْ
فَمَا سَآئِلُكُمْ مِنْ أَجْرٍ ۚ إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا لَعَلَّ اللَّهُ أَهْرَءُ ۚ أَسْرَتْ أَنْ

दोस्त हैं, उनको न कुछ खोफ होगा और न वे शमनाह होंगे। (६२) (यानी) वे जो ईमान लाये और परहेजगार रहे, (६३) उन के लिए दुनिया की ज़िंदगी में भी खुशखबरी है और आखिरत में भी, खुदा की बातें बदलती नहीं, यही तो बड़ी कामियाबी है। (६४) और (ऐ पैगम्बर !) उन लोगों की बातों में शमखदा न होना (क्योंकि) इज़्जत सब खुदा ही की है। वह (सब कुछ) सुनता (और) जानता है। (६५) सुन रखो कि जो मरलूक आसमानों में है और जो लोग ज़मीन में हैं, सब खुदा ही के (बन्दे और उस के मरलूक) हैं और यह जो खुदा के सिवा (अपने बनाए हुए) शरीकों को पुकारते हैं, वे (किसी और चीज़ के) पीछे नहीं चलते, सिर्फ़ जन के पीछे चलते हैं और सिर्फ़ अटकलें दौड़ा रहे हैं। (६६) वही तो है, जिस ने तुम्हारे लिए रात बनायी, ताकि इस में आराम करो और रोज़ान दिन बनाया, (ताकि उस में काम करो) जो लोग सुनने (का मादा) रखते हैं, उन के लिए उन में निशानियां हैं। (६७) (कुछ लोग) कहते हैं कि खुदा ने बेटा बना लिया है। उस की ज़ात (ओलाद से) पाक है (और) वह बे-नियाज़ है। जो कुछ आसमानों में और जो कुछ ज़मीन में है, सब उसी का है, (ऐ झूठ गढ़ने वालो !) तुम्हारे पास इस (झूठी बात) की कोई दलील नहीं है। तुम खुदा के बारे में ऐसी बात क्यों कहते हो जो जानते नहीं ? (६८) कह दो कि जो लोग खुदा पर झूठ बूहतान बांधते हैं, फ़लाह (कामियाबी) नहीं पाएंगे। (६९) उन के लिए जो फ़ायदे हैं, दुनिया में (हैं), फिर उन को हमारी ही तरफ़ लौट कर आना है। उस वक़्त हम उन को कड़े अज़ाब (के ग़ज़े) चखाएंगे, क्योंकि कुफ़ (की बातें) किया करते थे। (७०) ● ★

और उन को नूह का किस्सा पढ़ कर सुना दो जब उन्होंने ने अपनी क़ौम से कहा कि ऐ मेरी क़ौम ! अगर तुम को मेरा तुम में रहना और खुदा की आयतों से नसीहत करना ना-गवार हो, तो मैं तो खुदा पर भरोसा रखता हूँ। तुम अपने शरीकों के साथ मिल कर एक काम (जो मेरे बारे में करना चाहो) मुकर्रर कर लो और वह तुम्हारी तमाम जमाअत (को मालूम हो जाए और किसी) से पोशीदा न रहे, फिर वह काम मेरे हक़ में कर गुज़रो और मुझे मुहलत न दो। (७१) और अगर तुम ने मुंह फेर लिया तो (तुम जानते हो कि) मैंने तुम से कुछ मुआवज़ा नहीं मांगा। मेरा मुआवज़ा तो खुदा के ज़िम्मे है और मुझे हुक्म हुआ है कि मैं फ़रमावन्दारों में रहूँ। (७२) लेकिन उन लोगों ने

फ-कज्जबूह फ-नज्जनाहु व मम्म-अहू फिलफुलिक व ज-अलनाहुम् खलाइ-फ व
अग्-रक्-नल्लजी-न कज्जबू बिआयातिना ८ फन्मूर् कै-फ का-न आकिबतुल् -
मुज्जरीन (७३) सुम्-म ब-अस्ना मिम्बअ-दिही रुसुलन् इला क्रौमिहिम्
फजाऊ-हुम् बिल्बयिनाति फमा कानू लियुअमिन् बिमा कज्जबू बिही मिन्
कब्नु ८ कज्जालि-क नत्बअ अला कुलुबिल्-

मुअ-तदीन (७४) सुम्-म ब-अस्ना मिम्बअ-दिहिम्
मूसा व हारु-न इला फिर्औ - न व
म-लइही बिआयातिना फस्तक्बरू व कानू
क्रौमम् - मुज्जरीमीन (७५) फ - लम्मा
जाअ-हुमुल् - हक्कु मिन् बिन्दिना कालू

इन्-न हाजा ल-सिह्रम्-मुवीन (७६)
काल मूसा अ-तकूल-न लिल्हक्कि लम्मा
जा - अकुम् ८ असिह्रन् हाजा ८ व ला
युफ्लिहृस् - साहिरून (७७) कालू
अजिअतना लितल्फि-तना अम्मा व-जदना
अलैहि आबा-अना व तकू - न लकुमल्-

किरियाउ फिलअज्जि ८ व मा नहनु लकुमा बिमुअमिनीन (७८) व काल-
फिर्औनुअतूनी बिकुल्लि साहिरित् अलीम (७९) फ-लम्मा जा-अस्-स-ह-रतु
काल लहुम् मूसा अल्कू मा अन्तुम् मुल्कून (८०) फ-लम्मा अल्कौ
का - ल मूसा मा जिअतुम् बिहिस्सिह्र ८ इन्नल्ला - ह सयुन्तिलुह
इन्नल्ला-ह ला युस्लिह अ-म-लल्मुफ्सिदीन (८१) व युहिक्कुल्लाहुल्-हक्-क
बिकलिमातिही व लौ करिहल् - मुज्जरीमून * (८२) फमा आम - न
लिमूसा इल्ला जुरिय्यतुम्-मिन् क्रौमिही अला खौफिमिन् फिर्औ-न व
मल-इहिम् अय्यफ्ति-नहुम् ८ व इन्-न फिर्औ-न ल - आलिन् फिलअज्जि ८ व
इन्नहू लमिनल्मुस्सिफीन (८३) व काल मूसा या क्रौमि इन् कुन्तुम्
आमन्तुम् बिल्लाहि फअलैहि तक्कलू इन् कुन्तुम् मुस्लिमीन (८४)

أَلَمْ يَكُنْ مِنَ السَّابِقِينَ ۝ فَكَذَّبُوهُ فَتَبَعْنَاهُ وَمَنْ لَمْ يَنْصُرْهُ
وَصَلَّى لَهُ عَصَافٌ ۝ وَأَعْرَضْنَا الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا فَانْظُرْ كَيْفَ
كَانَ عَاقِبَةُ الْمُتَكَبِّرِينَ ۝ ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْ بَعْدِهِ رَسُولًا إِلَى قَوْمِهِمْ
فَبَدَّوهُمْ بِالْجَنَابِ ثُمَّ كَانُوا يَنْوَابِلُوكُمُوكُوا مِنْ قَبْلِ
كَذَلِكَ نَطْمِئُ عَلَى قُلُوبِ الْمُتَكَبِّرِينَ ۝ ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْ بَعْدِهِمْ
مُوسَى وَهَارُونَ إِلَى فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ بِآيَاتِنَا فَاتَّكَبَرُوا أَكْثَرًا
قَوْمًا مُفْرِجِينَ ۝ فَلَمَّا جَاءَهُمُ الرُّسُلُ مِنْ عِنْدِنَا قَالَ أُولَئِكَ
أَشْرَارُ قَوْمِي ۝ قَالَ مُوسَى أَتَقُولُونَ لِلْحَقِّ لَمَّا جَاءَكُمْ أَمْ تُبَدِّلُونَ
كَلِمَاتِي ۝ وَلَا تَخْشَوْنَ الْعَذْرَ ۝ وَالَّذِي أَهْتَنَّا أَنْ لَا نُفْثِنَا وَأَجْعَلْنَا
عَلَيْهِمْ آيَةً أَنْ لَا يَخْلُقُوا كَمَا الْخَلْقَ فِي الْأَرْضِ وَمَا خَشِيَ عِندَنَا
بُخُورِي ۝ وَقَالَ فِرْعَوْنُ الثَّوَالِي بِحُلِّ عَصْرِ عَلَيْهِ ۝ فَلَمَّا
جَاءَهُ السَّعِيرَةُ قَالَ لَهُمْ مُوسَى أَتَأْتُمُونَنَا أَنْتُمْ تَقُولُونَ ۝ فَلَمَّا الْفُؤَا
كَال مُوسَى سَاحِلُكُمْ بِالْشُّعْرَانِ اللَّهُ سَيُجْلِي عَنْ إِلَهِكُمْ لَا
يَعْلَمُ عَمَلُ الْعَالَمِينَ ۝ وَيَحْيَى اللَّهُ الصَّلَى بِكَلِمَةٍ وَكَوْنُوا
الْمُتَوَكِّلِينَ ۝ ثُمَّ آمَنَ يُونُسُ بِالْآيَةِ الْآخِرَةِ مِنْ قَوْمِهِ عَلَى عَيْنِ
مَنْ فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِمْ أَنْ يَفْتِنَهُمْ ۝ وَإِنْ فِرْعَوْنَ لَمَّا لَمْ يَفِي
الْأَرْضِ وَإِنَّ لِمَنْ الْمُتَوَكِّلِينَ ۝ وَقَالَ مُوسَى يَتَوَكَّلُونَ عَلَى

उनको झुठलाया, तो हमने उनको और जो लोग उनके साथ नाव में सवार थे, सबको (तूफान से) बचा लिया और उन्हें (जमीन में) खलीफा बना दिया। और जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया, उन को शर्क कर दिया, तो (देख लो कि) जो लोग डराए गये थे, उन का कैसा अंजाम हुआ। (७३) फिर नूह के बाद हम ने और पैशम्बर अपनी-अपनी क्रोम की तरफ भेजे, तो वे उन के पास खुली निशानियां ले कर आये, मगर वे लोग ऐसे न थे कि जिस चीज को पहले झुठला चुके थे, उस पर ईमान ले आते। इसी तरह हम ज्यादाती करने वालों के दिलों पर मुहर लगा देते हैं। (७४) फिर उन के बाद हम ने मूसा और हारून को अपनी निशानियां दे कर फ़िर्औन और उस के सरदारों के पास भेजा, तो उन्होंने ने तकब्बुर (घमंड) किया और वे गुनाहगार लोग थे। (७५) तो जब उन के पास हमारे यहां से हक़ आया, तो कहने लगे कि यह खुला जादू है। (७६) मूसा ने कहा, क्या तुम हक़ के बारे में, जब वह तुम्हारे पास आये, यह कहते हो कि यह जादू है, हालांकि जादूगर फ़लाह नहीं पाने के। (७७) वे बोले, क्या तुम हमारे पास इस लिए आए हो कि (जिस राह) पर हम अपने बाप-दादा को पाते रहे हैं, उस से हम को फेर दो और (इस) देश में तुम दोनों ही की सरदारी हो जाए और हम तुम पर ईमान लाने वाले नहीं हैं। (७८) और फ़िर्औन ने हुक्म दिया कि सब माहिर जादूगरों को हमारे पास ले आओ। (७९) जब जादूगर आये, तो मूसा ने उन से कहा कि जो तुम को डालना हो, डालो। (८०) जब उन्होंने ने (अपनी रस्सियों और लाठियों को) डाला तो मूसा ने कहा कि जो चीजें तुम (बना कर) लाये हो, जादू है। खुदा इस को अभी नेस्त व नाबूद कर देगा। खुदा शरीरों के काम संवारा नहीं करता। (८१) और खुदा अपने हुक्म से सच को सच ही कर देगा, अगरचे गुनाहगार बुरा ही मानें। (८२) ★

तो मूसा पर कोई ईमान न लाया मगर उस की क्रोम में से कुछ लड़के (और वह भी) फ़िर्औन और उस के दरबारियों से डरते-डरते कि कहीं वह उन को आफ़त में न फंसा दे। और फ़िर्औन मुल्क में मुतकब्बिर व मुतगल्लिब और (किन्न व कुफ़ में) हृद से बड़ा हुआ था। (८३) और मूसा ने कहा कि भाइयो ! अगर तुम खुदा पर ईमान लाये हो तो अगर (दिल से) फ़रमांबरदार हो तो उसी

फ-कालू अ - लल्लाहि त-वक्कला ॐ रब्बना ला तज्-अल्ना फित-न-तल्लिल्-
 क्रोमिज्जालिमीन ॥ (८५) व नज्जिना बिरह्मति क मिनल्-क्रोमिल्-
 काफिरीन (८६) व ओहीना इला मूसा व अस्सीहि अन-तबव्ववा लिक्कोमि-
 कुमा बिमिस् - र बुयूतव्वज्जल् बुयूतकुम् क्रिबलतव्व-व अक्कीमुस्सला-त ॥ व

बश्शरिल्-मुअमिनीन (८७) व काल-
 मूसा रब्बना इन्न-क आत-त फिरऔ-न व
 म-ल-अह जीनतव्व - व अम्वालन् फिल्-
 ह्यातिददुन्या ॥ रब्बना लियुज्जिल्लू अन्
 सबील-क ॐ रब्बनत्तिम्स् अला अम्वालहिम्
 वस्दुद् अला कुलूबिहिम् फला युअमिन्
 हत्ता य-र-वुल्-अजावल् - अलीम (८८)
 काल-कद् उजीबद्दअ-वतु-कुमा फस्तकीमा
 व ला तत्तबिअन्नि सबीलल्लजी-न ला
 यअ-लमून (८९) व जावज्जना बिबनी
 इस्राईलल्-बह्-र फ-अत्ब-अहुम् फिरऔनु
 व जुनूदह बय्यव्व-व अद्वन् ॥ हत्ता इजा
 अद्-र-कहुल् - ग - रकु ॥ का - ल आमन्तु

أَمْسَلْنَا يَوْمَ نُوَكِّلُ أَنْ كُنْتُمْ قُلُوبًا غَافِلِينَ ۝ نَقَّالُوا عَلَى
 الْقُلُوبِ كُنَّا أَنْ يَخْلُوعًا وَأَنْتُمْ الْغَافِلِينَ ۝ وَكُنَّا
 وَنُصْنِئُ مِنَ الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ ۝ وَأَرْسَلْنَا إِلَى مُوسَى
 وَآخِيهِ هَارُونَ بِآيَاتِنَا أَنْ خُذَا فِي هَذِهِ أَسْمَاءَ الْغُلَامِ
 وَظِلِّمُ الْيَوْمِينَ ۝ وَقَالَ مُوسَى رَبَّنَا إِنَّكَ آتَيْتَ فِرْعَوْنَ
 وَمَلَأَ زَيْنَةً وَأَمْوَالًا فِي السَّمَوَاتِ رَبَّنَا لِتُعَذِّبَ عَنْ
 رَبَّنَا الْأَوْسَ عَلَى أَصْحَابِهِ أَصْحَابُ فَلَا يُؤْمِنُونَ ۝ رَبَّنَا
 بِرَبِّكَ الْعَذَابُ الْأَلِيمُ ۝ قَالَ قَدْ أُجِيبَتِ دَعْوَتُكُمَا فَاسْتَجِبَا
 وَلَا تَكُنْ مِنَ السَّاجِدِينَ ۝ وَجَاءَتْ يَاقِينَ بِزُكُلٍ
 الْيَمِينِ فَاسْتَجَبَ فِرْعَوْنَ وَجُنُودُهُ بِهَا وَاعْدُوا لَهُمْ إِذَا أَدْرَكَهُ
 الْفُرْقَانُ قَالَ آمَنْتُ إِنَّكَ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ الَّذِي آمَنَتْ بِهِ بَنُو إِسْرَءِيلَ
 وَأَنَا مِنَ الْمُسْلِمِينَ ۝ أَلَمْ يَأْتِ وَقَدْ عَصَيْتَ قَبْلَ وَكُنْتَ مِنَ
 الْمُفْسِدِينَ ۝ قَالَ يَوْمَ ذُنُوبِكَ يَبْدُوكَ لَكُنْ مِنْ أُولَى خَلْقِكَ
 لَمْ ۝ وَإِنْ كُنْ مِنْ الْقَائِلِينَ عَنْ رَبِّنَا الْغَافِلِينَ ۝ وَلَقَدْ بَوَّأْنَا
 بَنِي إِسْرَءِيلَ مِيقَاتَ صِدْقٍ وَرَزَقْنَاهُمْ مِنْ الظُّلُمَاتِ فَمَا
 أَصْغَوْا إِلَّا لَهَاخِلٍ ۝ وَأَنْتُمْ كُنْتُمْ تَكْفُرُونَ ۝ وَلَقَدْ بَوَّأْنَا
 الْيَوْمَ فَمَا كُنَّا مُؤْمِنِينَ ۝ وَلَقَدْ كُنْتَ فِي شَكٍّ مِنْهَا

अन्नहू ला इला - ह इल्लल्लजी आम-नत् बिही बनू इस्राई - ल व
 अन मिनल्-मुस्लिमीन (९०) अल्ता-न व कद् असे-त कब्लु व
 कुन्-त मिनल्-मुफिसदीन (९१) फल्यी-म नुनज्जी-क बि-ब-दनि-क लितकू-न
 लिमन् खल्फ-क आयतुन् ॥ व इन्-न कसीरम् - मिनन्नासि अन् आयातिना
 लगाफिलून * (९२) व ल - कद् बव्वअना बनी इस्राई-ल मुबव्व-अ
 सिदक्किव्व-र - जक्नाहुम् मिनत्तय्यिबाति ॐ फ-मल्ल - लफू . हत्ता जा-अहुमुल्-
 जिल्लु ॥ इन्-न रब्ब-क यक्ज़ी बन्नहुम् योमल् - क्रियामति फ्रीमा कान
 फ्रीहि यस्तलिफून (९३) फइन् कुन् - त फ्री शविकम्-मिम्मा अन्जल्ला
 इल्ल-क फस्अलिल्लजी-न यक्-रऊनल् - किता-ब मिन् कबिल - क ॐ ल - कद्
 जा-अकल् - हक्कु मिररिबि - क फला तकूनन्-न मिनल्-मुम्तरीन ॥ (९४)

पर भरोसा रखो। (८४) तो बोले कि हम खुदा ही पर भरोसा रखते हैं। ऐ हमारे परवरदिगार ! हम को जालिम लोगों के हाथ से आजमाइश में न डाल। (८५) और अपनी रहमत से काफ़ि़रों की क्रोम से निजात बरस। (८६) और हम ने मूसा और उस के भाई की तरफ़ बहा भेजी कि अपने लोगों के लिए मिस्र में घर बनाओ और अपने घरों को क़िब्ला (यानी मस्जिदें) ठहराओ और नमाज़ पढ़ो और मोमिनों को खुशख़बरी सुना दो। (८७) और मूसा ने कहा, ऐ परवरदिगार ! तू ने फ़ि़औन और उस के सरदारों को दुनिया की ज़िंदगी में (बहुत-सा) साज व सामान, धन-दौलत दे रखा है, ऐ परवरदिगार ! इन का मआल (अंजाम) यह है कि तेरे रास्ते से गुमराह कर दें। ऐ परवरदिगार ! इन के माल को बर्बाद कर दे और इन के दिलों को सलत कर दे कि ईमान न लाएं, जब तक दंदनाक अज़ाब न देख लें। (८८) (खुदा ने) फ़रमाया कि तुम्हारी दुआ क़ुबूल कर ली गयी, तो तुम साबित-क़दम रहना और बे-अक़लों के रास्ते न चलना। (८९) और हम ने बनी इस्राईल को दरिया से पार कर दिया, तो फ़ि़औन और उस के लश्कर ने सरकशी और तअदी से उन का पीछा किया, यहां तक कि जब उस को गर्क (के अज़ाब) ने आ पकड़ा तो कहने लगा, मैं ईमान लाया कि जिस (खुदा) पर बनी इस्राईल ईमान लाये हैं, उस के सिवा कोई माबूद नहीं, और मैं फ़रमांबरदारों में हूं। (९०) (जवाब मिला कि) अब (ईमान लाता है,) हालांकि तू पहले नाफ़रमानी करता रहा और फ़साद फैलाने वाला बना रहा ? (९१) तो आज हम तेरे बदन को (दरिया से) निकाल लेंगे, ताकि तू पिछलों के लिए इब्रत (सबक) हो और बहुत से लोग हमारी निशानियों से बे-ख़बर हैं। (९२) ★

और हम ने बनी इस्राईल को रहने को उम्दा जगह दी और खाने को पाकीज़ा चीज़ें अता कीं, लेकिन वह बावजूद इल्म हासिल होने के इस्तिलाफ़ करते रहे। बेशक जिन बातों में वे इस्तिलाफ़ करते रहे हैं, तुम्हारा परवरदिगार ! क्रियामत के दिन उन में उन बातों का फ़ैसला कर देगा। (९३) अगर तुम को इस (किताब के) बारे में, जो हम ने तुम पर नाज़िल की है, कुछ शक हो, तो जो लोग तुम से पहले की (उतरी हुई) किताबें पढ़ते हैं, उन से पूछ लो। तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से तुम्हारे पास हक़ आ चुका है, तो तुम हरगिज़ शक करने वालों में न होना। (९४) और न उन लोगों में

व ला तकूनन्-न मिनल्लजी-न कज्जबू बिआयातिल्लाहि फ-तकू-न मिनल्लासिरीन
(६५) इन्ललजी-न हक्कत् अलैहिम् कलिमतु रबिब-क ला युअमिनून
(६६) व लौ जा-अत्हुम् कुल्लु आयतिन् हत्ता य-रबुल्-अजाबल्-अलीम
(६७) फ-लौला कानत् कयंतुत् आम-नत् फ-न-फ-अह! ईमानुहा इल्ला

कौ-म यूनुस ७ लम्मा आमनू क - शफना
अन्हुम् अजाबल्-खिरिय फिल्-हयातिददुन्या
व मत्तअ-नाहुम् इला हीन (६८) व लौ
शा-अ रब्बु-क ल-आम-न मन् फिल्-अजि
कुल्लुहुम् जमीअत् अ-फ-अन्-त तुकिरहुन्ना-स
हत्ता यकूनू मुअमिनीन (६९) व मा
कान लिनफिसन् अन् तुअमि-न इल्ला
बिइजिल्लाहि ७ व यज्जालुरिज - स
अ-ललजी-न ला यअ-किलून (१००)
कुलिन्जुरू माजा फिस्समावाति वल्-अजि
व मा तुगिन्ल्-आयातु वन्नुजुह अन्
कौमिल्-ला युअमिनून (१०१) फ-हल्

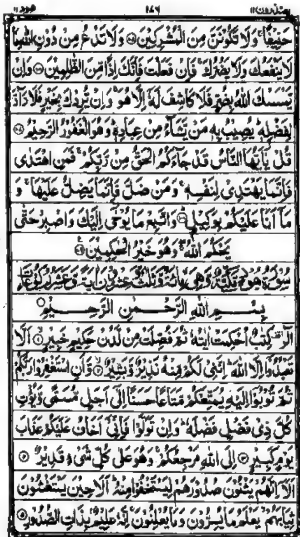
أَوَلَيْكَ الْإِنشَاءُ فَقُلِ الْإِنشَاءُ مِنْ رَبِّكَ لَقَدْ جَاءَكَ
الرُّسُلُ مِنْ رَبِّكَ فَلَا تَكُونُ مِنَ الْمُنْكَرِينَ ۝ وَلَا تَكُونُ مِنَ
الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِ اللَّهِ فَكَفَرُوا مِنَ الْحَقِّ ۝ إِنَّ الَّذِينَ
كَفَرُوا عَلَيْهِمْ كَذِبَاتٌ مِنْ رَبِّكَ لَا يُؤْمِنُونَ ۝ وَلَوْ جَاءَهُمْ كُلُّ
آيَةٍ حَتَّى يَرَوْا الْعَذَابَ الْأَلِيمَ ۝ فَلَوْ كَانَتْ قَرْيَةٌ آمَنَتْ
فَنَجَّيْنَاهَا الْإِسْلَامَ فَمِنْهُمْ مُؤْمِنٌ لَأَنَّا آمَنُوا الْكُفْرَ عَنْهُمْ وَعَلَى
الْإِنشَاءِ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَمَنْهُمْ نَجَارُ الْحَقِّ ۝ وَلَوْ كَانَتْ
لَا مُمْسِكٌ مِنْ فِي الْأَرْضِ فَكُلُّهُمْ جَبِينٌ ۝ فَأَنذَرْتُ لَكُمْ النَّاسَ حَتَّى
يَكُونُوا مُؤْمِنِينَ ۝ وَمَا كَانَ لَكُمْ أَنْ تُؤْمِنُوا إِلَّا بِإِذْنِ
اللَّهِ وَتَحْمِلُ الْغَنَمَ عَلَى الَّذِينَ لَا يَعْقِلُونَ ۝ قُلِ انظُرُوا
مَاذَا فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا تُعْطَى الْأَيْتِ وَالْخُدَّاءِ عَنْ
قَوْمٍ لَا يُؤْمِنُونَ ۝ قُلِ يَنْظُرُونَ الْأَرْضَ مِثْلَ الْأَرْضِ الَّذِينَ
خَلَقُوا مِنْ قَبْلِهِمْ قُلِ انظُرُوا إِلَى مَعْمَرَةٍ مِنَ السَّمَوَاتِ ۝
فَوَيْلٌ لِلنَّاسِ وَالَّذِينَ آمَنُوا أَكْذَابًا حَقًّا عَلَيْهِمْ السَّعِيرِينَ ۝
قُلِ يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنِّي نَزَّيْتُ فِي شَيْءٍ مِنْ رَبِّي فَلَا أُعَذِّبُ الَّذِينَ
تَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ وَلَكِنْ أُعَذِّبُ اللَّهَ الَّذِي يَتَوَكَّلُونَ
أَعْرَفُ أَنْ أَكُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ۝ وَأَنْ أَمْرُهُمْ لَكَ لِلَّذِينَ

यन्तजिरून इल्ला मिस-ल अय्यामिल्लजी-न खलौ मिन् कबिलहिम् ७ कुल्
फन्तजिरू इन्ली म-अकुम् मिनल्-मुन्तजिरीन (१०२) सुम्-म नुनज्जी
रसुलना वल्लजी - न आमनू कज्जालि - क ६ हक्कत् अलैना नुजिल् -
मुअमिनीन * (१०३) कुल् या अय्युहन्नामु इन् कुन्तुम् फी
शक्किम् - मिन् दोनी फला अअ-बुदुल्लजी-न तअ-बुद्द-न मिन् इनिल्लाहि
व लाकिन् अअ - बुदुल्लाहल्लजी य - त - वफाकुम् ६ व उमिरत् अन्
अकू - न मिनल् - मुअमिनीन (१०४) व अन् अकिम् वज्ह - क
लिद्दीनि हनीफन् ६ व ला तकूनन् - न मिनल् - मुशिरकीन (१०५)

होना, जो खुदा की आयतों को झुठलाते हैं, नहीं तो नुकसान उठाओगे। (६५) जिन लोगों के बारे में खुदा (के अज़ाब) का हुक्म करार पा चुका है, वे ईमान नहीं लाते, (६६) जब तक कि दर्दनाक अज़ाब न देख लें, चाहे उन के पास हर (तरह की) निशानी आ जाए। (६७) तो कोई बस्ती ऐसी क्यों न हुई कि ईमान लाती तो उस का ईमान उसे नफ़ा देता, हां, यूनुस की क़ौम कि जब ईमान लायी तो हम ने दुनिया की ज़िंदगी में उन से ज़िल्लत का अज़ाब दूर कर दिया और एक मुद्दत तक (दुनिया के फ़ायदों से) उन को नवाज़ा। (६८) और अगर तुम्हारा परवरदिगार चाहता, तो जितने लोग ज़मीन पर हैं, सब के सब ईमान ले आते। तो क्या तुम लोगों पर ज़बरदस्ती करना चाहते हो कि वे मोमिन हो जाएं। (६९) हालांकि किसी शक्स को क़ुदरत नहीं है कि खुदा के हुक्म के बग़ैर ईमान लाये और जो लोग बे-अक्ल हैं, उन पर वह (कुफ़ व ज़िल्लत) की नज़ासत डालता है। (१००) (इन कुफ़रार से) कहो कि देखो तो आसमानों और ज़मीन में क्या-क्या कुछ है, मगर जो लोग ईमान नहीं रखते, उन की निशानियां और डरावे कुछ काम नहीं आते। (१०१) जैसे (बुरे) दिन इन से पहले लोगों पर गुज़र चुके हैं। उसी तरह के (दिनों के) ये इन्तिज़ार में हैं। कह दो कि तुम भी इन्तिज़ार करो, मैं भी तुम्हारे साथ इन्तिज़ार करता हूँ। (१०२) और हम अपने पैग़म्बरों को और मोमिनों को निजात देते रहे हैं। इसी तरह हमारा ज़िम्मा है कि मुसलमानों को निजात दें। (१०३)

(ऐ पैग़म्बर !) कह दो कि लोगो ! अगर तुम को मेरे दीन में किसी तरह का शक हो तो (मुन रखो कि) जिन लोगों की तुम खुदा के सिवा इबादत करते हो, मैं उन की तो इबादत नहीं करता, बल्कि मैं खुदा की इबादत करता हूँ जो तुम्हारी रूहें क़ब्ज़ कर लेता है और मुझ को यही हुक्म हुआ है कि ईमान लाने वालों में हूँ। (१०४) और यह कि (ऐ मुहम्मद ! सब से) एकसू होकर (इस्लाम) दीन की पैरबी किए जाओ और मुश्रिकों में हरगिज़ न होना। (१०५) और खुदा को

व ला तद्भु मिन् दूनिल्लाहि मा ला यन्फभु-क व ला यज्जुर्ह-क ८ फ-इन्
 फ-अल्-त फइन्-क इजम्-मिबज्जालिमीन (१०६) व इय्यम्सकल्लाहु
 बिज्जुरिन् फला काशि-फ लहू इल्ला हु-व ८ व इय्युरिद-क बिखैरिन् फला
 राद - द लिफजिलही ७ युसीबु बिही मय्यशाउ मिन् अबादिही ७ व हुवल
 गफूरहीम (१०७) कुल् या अय्युहन्नासु
 कद् जा - अकुमुल्हककु मिररिबिकुम्
 फ - मनिह्त्तदा फ - इन्मा यह्त्तदी
 लिनफिसही ८ व मन् जल-ल फ - इन्मा
 यजिल्लु अलैहा ८ व मा अन अलैकुम्
 बिबकील ७ (१०८) वत्तबिअ- मा यूहा
 इलै - क वस्बिर् हत्ता यह्कुमल्लाहु ८
 व हु - व खैरुल्हाकिमीन * (१०९)



११ सूरतु हूदिन् ५२

(मक्की) इस सूर: में अरबी के ७६२४ अक्षर,
 १६३६ शब्द, १२३ आयतें और १० रकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

अलिफ् - लाम् - रा किताबुन्

उह्किमत् आयातुह् सुम्-म फुस्सिलत् मिल्लदुन् हकीमिन् खबीर १ (१)
 अल्ला तब्-बुद् इल्लल्ला-ह इन्ननी लकुम् मिन्हु नजीरुव-व बशीरुव-१ (२)
 व अनिस्तिफिरू रब्बकुम् सुम्-म तूब इलैहि युमत्तिअ-कुम् मताअन् ह-स-नन्
 इला अ-जलिम्-मुसम्मव-व युअति कुल-ल जी फजिलन् फजलह् ७ व इन्
 त-वल्लो फइन्नी अखाफु अलैकुम् अजा-ब योमिन् कबीर (३) इल्लल्लाहि
 मजिअकुम् ८ व हु-व अला कुल्लि शैइन् कदीर (४) अला इन्नहुम्
 यस्नू-न सुदूरहुम् लि-यस्तरूफु मिन्हु ७ अला ही-न यस्तराशू - न सियाबहुम् ७
 यअ-लमु मा युसिरू-न व मा युअ-लिनू-न इन्नह् अलीमुम्-बिजातिस्सुदूर (५)

छोड़ कर ऐसी चीज को न पुकारना, जो न तुम्हारा कुछ भला कर सके और न कुछ बिगाड़ सके । अगर ऐसा करोगे, तो जालिमों में हो जाओगे । (१०६) और अगर खुदा तुम को कोई तकलीफ पहुंचाए, तो उस के सिवा इस का कोई दूर करने वाला नहीं और अगर तुम से भलाई करनी चाहे तो उस के फ़ज़ल को कोई रोकने वाला नहीं । वह अपने बन्दों में से, जिसे चाहता है फ़ायदा पहुंचाता है और वह बख़्शने वाला मेहरबान है । (१०७) कह दो कि लोगो ! तुम्हारे परवरदिगार के यहां से तुम्हारे पास हक आ चुका है, तो जो कोई हिदायत हासिल करता है, तो हिदायत से अपने ही हक में भलाई करता है और जो गुमराही अस्लियार करता है, तो गुमराही से अपना ही नुक़सान करता है और मैं तुम्हारा वकील नहीं हूं । (१०८) और (ऐ पैग़म्बर !) तुम को जो हुक्म भेजा जाता है, उस की पैरवी किये जाओ और (तकलीफ़ों पर) सन्न करो, यहां तक कि खुदा फ़ैसला कर दे । वह सब से बेहतर फ़ैसला करने वाला है । (१०९) ★



११ सूर: हूद ५२

सूर: हूद मक्की है और इस में एक सौ तेईस आयतें और दस रुकूअ हैं ।

शुरू खुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है ।

अलिफ़-लाम्-रा, यह वह किताब है, जिस की आयतें मुस्तहक़ूम हैं और हकीम व ख़बीर खुदा की तरफ़ से तफ़्सील से बयान कर दी गयी हैं, (१) (वह यह) कि खुदा के सिवा किसी की इबादत न करो और मैं उस की तरफ़ से तुम को डर सुनाने वाला और ख़ुशख़बरी देने वाला हूं । (२) और यह कि अपने परवरदिगार से बख़्शिश मांगों और उस के आगे तौबा करो । वह तुम को एक मुकर्रर वक़्त तक नेक पूंजी से बहरा मंद करेगा (नवाज़ेगा) और हर बुजुर्गी वाले को उस की बुजुर्गी (की दाद) देगा और अगर रू-गरदानी करोगे तो मुझे तुम्हारे बारे में (क्रियामत के) बड़े दिन के अज़ाब का डर है । (३) तुम (सब) को खुदा की तरफ़ लौट कर जाना है और वह हर चीज पर कादिर है । (४) देखो, यह अपने सीनों को दोहरा करते हैं, ताकि खुदा से पर्दा करें । सुन रखो, जिस वक़्त ये कपड़ों में लिपट कर पड़ते हैं (तब भी) वह उन की छिपी और खुली बातों को जानता है । वह तो

दिसो तक की बातों से आगाह है। (५) और जमीन पर कोई चलने-फिरने वाला नहीं, मगर उस की रोजी खुदा के जिम्मे है, वह जहाँ रहता है, उसे भी जानता है और जहाँ सौया जाता है, उसे भी। यह सब कुछ रोशन किताब में (लिखा हुआ) है। (६) और वही तो है जिस ने आसमानों और जमीन को छः दिनों में बनाया और (उस वक्त) उस का अंश पानी पर था। (तुम्हारे पैदा करने से) मकसूद यह है कि वह तुम को आजमाये कि तुम में अमल के लिहाज से कौन बेहतर है और अगर तुम कहो कि तुम लोग मरने के बाद (जिंदा कर के) उठाए जाओगे, तो काफ़िर कह देंगे कि यह तो खुदा जादू है। (७) और अगर एक तँ मुद्त तक हम उन पर अज्ञाब को रोक दें, तो कहेंगे कि कौन-सी चीज़ अज्ञाब को रोके हुए है। देखो, जिस दिन वह उन पर वाक़ेअ होगा, (फिर) टलने का नहीं और जिस चीज़ का मज़ाक उड़ाया करते हैं, वह उन को घेर लेगी। (८) *

और अगर हम इंसान को अपने पास से नेमत बरखें, फिर उस से उसको छीन लें, तो ना-उम्मीद (और) ना-शुक्रा (हो जाता) है। (९) और अगर तकलीफ़ पहुँचने के बाद आसाइश (आराम मुख) का मज़ा चखाएँ, तो (खुश हो कर) कहता है कि (आ-हा) सब सस्तियाँ मुझ से दूर हो गयीं बेशक वह खुशियाँ मनाने वाला (और) फ़ख़्र करने वाला है। (१०) हाँ, जिन्होंने ने सब्र किया और नेक अमल किये, यही हैं जिन के लिए बख़्शिश और बड़ा बदला है। (११) शायद तुम कुछ चीज़ बख़्श में से जो तुम्हारे पास आती है, छोड़ दो और इस (ख्याल) से तुम्हारा दिल तंग हो कि (काफ़िर) यह कहने लगें कि उस पर कोई खज़ाना क्यों नहीं नाज़िल हुआ या उस के साथ कोई फ़रिश्ता क्यों नहीं आया? ऐ मुहम्मद! तुम तो सिर्फ़ नसीहत करने वाले हो और खुदा हर चीज़ का निगेहबान है। (१२) ये क्या कहते हैं कि इस ने क़ुरआन खुद से बना लिया है? कह दो कि अगर सच्चे हो तो तुम भी ऐसी दस सूरतें बना लाओ और खुदा के सिवा जिस-जिस को बुला सकते हो, बुला भी लो। (१३) अगर वे तुम्हारी बात क़बूल न करें तो जान लो कि वह खुदा के इल्म से उतरा है और यह कि उस के सिवा कोई माबूद नहीं, तो तुम्हें भी इस्लाम ले आना चाहिए। (१४)

१. यह आम लोगों से ख़िताब है, जो इस्लाम नहीं लाते थे, यानी जब क़ुरआन मजीद का यह एबाज देख चुके हो कि कोई शख्स ऐसा कलाम नहीं बना सकता, तो तुम को भी उसे मानना चाहिए कि खुदा का कलाम है और इस्लाम ले आना चाहिए।

मन् का-न युरिदुल्-ह्यातुदुन्या व जी-न-तहा नुवफिक् इलैहिम् अञ्-मालहुम्
फ्रीहा व हुम् फ्रीहा ला युन्क्सून (१५) उलाइकल्लजी-न लै-स लहुम्
फिल्आखिरति इल्लन्नार व हबि-त मा स-नञ् फ्रीहा व बातिलुम्मा कानू
यञ्-मलून (१६) अ-फ-मन् का-न अला बयियनतिम्-मिर्रिबिही व यत्लह

शाहिदुम्-मिन्हु व मिन् कबिलही किताबु

मूसा इमाम-व रह-म - तन्तु उलाइ - क

युअमिन् - न बिही व मंथ्यक्फर बिही

मिनल - अहंजाबि फल्लार मौबिदद

फला-तक फी मियंतिम - मिन्न ० ककरन

द्वक मिर्चिन्विक् च नास्ति च भावनादि -

हृत्पत्रं मिराब्ब-क व लाकिन-न अवसरन्नास ला

युष्मिन् (१७) व मन् अज्जलमु मिम्-

मानपतरा अ-लल्लाहि कजिबन्तु उलाइ-क

युञ्ज-रञ्ज-न अला रन्विहिम् व यकूलुल्-अश्हादु

हाउलाइलजी-न कजबू - अला रब्बिहिम्

अला लअ - नतुल्लाहि अ - लज्जालिमीन

(१८) अल्लजी-न यसुद्दु-न अन सबीलिल्लाहि

व यन्नहा अ - व - जन् ४ व

हम बिलआखिरति हम काफिरन (११)

फिल्मार्जि व मा का - न लहम मिन

यज्ञ-अफ लहमल - अजाब ५ मा कान

यन्त्रिस्तु (२०) जलाइकल्लजी-न खसिरु

कान यपतरून (२१) ला ज-र-म अ

(२२) इन्नल्लजी-न आमनू व अमिल

जो लोग दुनिया की जिंदगी और उस की खेब व जीत के तालिब हों, हम उन के आमाल का बदला उन्हें दुनिया ही में दे देते हैं और इस में उन का हक नहीं मारा जाता । (१५) ये वह लोग हैं, जिनके लिए आखिरत में (जहन्नम की) भाग के सिवा और कुछ नहीं और जो अमल उन्होंने ने दुनिया में किए, सब बर्बाद और जो कुछ वे करते रहे, सब झूठ । (१६) भला जो लोग अपने परवरदिगार की तरफ से (रोशन) दलील रखते हों और उन के साथ एक (आसमानी) गवाह भी उस की तरफ से हो और उस से पहले मूसा की किताब हो, जो पेशवा और रहमत है, (तो क्या वे कुरआन पर ईमान नहीं लाएंगे ?) यही लोग तो उस पर ईमान लाते हैं । और जो कोई और फ़िर्की में से इस का इंकारी हो, तो उस का ठिकाना आग है तो तुम इस (कुरआन) से शक में न होना, यह तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से हक है, लेकिन अक्सर लोग ईमान नहीं लाते । (१७) और इस से बढ़ कर जालिम कोन होगा, जो खुदा पर झूठ गढ़े, ऐसे लोग खुदा के सामने पेश किए जाएंगे और गवाह कहेंगे कि यही लोग हैं, जिन्होंने ने अपने परवरदिगार पर झूठ बोला था, सुन रखो कि जालिमों पर खुदा की लानत है । (१८) जो खुदा के रास्ते से रोकते हैं और उस में टेढ़ चाहते हैं और वे आखिरत से भी इंकार करते हैं, (१९) ये लोग ज़मीन में (कहीं भाग कर खुदा को) हरा नहीं सकते और न खुदा के सिवा कोई उन का हिमायती है, (ऐ पैगम्बर !) उन को दोगुना अज़ाब दिया जाएगा, क्योंकि ये (कुफ़ की ग्यादती की वजह से तुम्हारी बात) नहीं सुन सकते थे और न (तुम को) देख सकते थे । (२०) यही हैं जिन्होंने अपने आपको घाटे में डाला और जो कुछ ये गढ़ा करते थे, उनसे जाता रहा । (२१) बिला शुब्हा ये लोग आखिरत में सब से ज्यादा नुक्सान पाने वाले हैं । (२२) जो लोग ईमान लाये और नेक अमल किये और अपने परवरदिगार के आगे आजिबी की, यही जन्मत वाले हैं, हमेशा उस में रहेंगे । (२३) दोनों फ़िर्की (यानी काफ़िर व मोमिन) की मिसाल ऐसी है, जैसे एक अंधा-बहरा हो और एक देखता-सुनता, भला दोनों का हाल बराबर हो सकता है ? फिर तुम सोचते क्यों नहीं ? (२४) ★

और हम ने नूह को उन की क्रोम की तरफ भेजा (तो उन्होंने ने उन से कहा) कि मैं तुम को खोल-खोल कर डर सुनाने (और यह पैगाम पहुंचाने) आया हूँ, (२५) कि खुदा के सिवा किसी की

इबादत न करो। मुझे तुम्हारे बारे में दर्दनाक अज्ञात का डर है। (२१) तो उन की क्रोम के सरदार, जो काफिर थे, कहने लगे कि हम तुम को अपने ही जैसा एक आदमी देखते हैं और यह भी देखते हैं कि तुम्हारी पैरवी करने वाले वही लोग हुए हैं, जो हम में निचले दर्जे के हैं और वह भी जाहिर राय से (न कि शीर ब फिक्र से) और हम तुम में अपने ऊपर किसी तरह की क़बीलत नहीं देखते, बल्कि तुम्हें झूठा स्थाल करते हैं। (२७) उन्होंने ने कहा कि ऐ क्रोम ! देखो तो अगर मैं अपने परवरदिगार की तरफ़ से (रोशन) दलील रखता हूँ और उस ने मुझे अपने यहाँ से रहमत बरूणी हो, जिस की हकीकत तुम से छिपा रखी गयी है, तो क्या हम इस के लिए तुम्हें मजबूर कर सकते हैं और तुम हो कि उस से ना-खुश हो रहे हो। (२८) और ऐ क्रोम ! मैं इस (नसीहत) के बदले तुम से माल व ख़र की ख़्वाहिश नहीं रखता हूँ, मेरा बदला तो खुदा के जिम्मे है और जो लोग ईमान लाए हैं, मैं उन को निकालने वाला भी नहीं हूँ। वह तो अपने परवरदिगार से मिलने वाले हैं, लेकिन मैं देखता हूँ कि तुम लोग ना-दानी कर रहे हो। (२९) और ऐ मेरी क्रोम के लोगो ! अगर मैं उन को निकाल दूँ तो खुदा (के अज्ञात) से (बचाने के लिए) कौन मेरी मदद कर सकता है ? भला तुम शीर क्यों नहीं करते ? (३०) मैं न तुम से यह कहता हूँ कि मेरे पास खुदा के ख़जाने हैं और न यह कि मैं ग़ैब जानता हूँ और न यह कहता हूँ कि मैं फ़रिश्ता हूँ और न उन लोगों के बारे में, जिन को तुम नीची नज़र से देखते हो, यह कहता हूँ कि खुदा उन को भलाई (यानी आमाल का नेक बदला) नहीं देगा, जो उन के दिलों में है, इसे खुदा ख़ूब जानता है। अगर मैं ऐसा कहूँ तो बे-इन्साफ़ों में हूँ। (३१) उन्होंने ने कहा कि नूह ! तुम ने हम से झगड़ा तो किया और झगड़ा भी बहुत किया, लेकिन अगर सच्चे हा, तो जिस चीज़ से हमें डराते हो, वह हम पर ला नाज़िल करो। (३२) नूह ने कहा कि इस को तो खुदा ही चाहेगा, तो नाज़िल करेगा और तुम (उस को किसी तरह) हरा नहीं सकते। (३३) और अगर मैं यह चाहूँ कि तुम्हारी ख़ैरख़्वाही करूँ ख़ौर खुदा यह चाहे कि तुम्हें गुमराह करे, तो मेरी ख़ैरख़्वाही तुम को कुछ फ़ायदा नहीं दे सकती। वही तुम्हारा परवरदिगार है और तुम्हें उसी की तरफ़ लौट कर जाना है। (३४) क्या ये कहते हैं कि इस (पैग़म्बर) ने क़ुरआन अपने दिल से बना लिया है ? कह दो कि अगर मैं ने दिल से बना लिया है, तो मेरे गुनाह का बवाल मुझ पर जो गुनाह तुम करते हो, उस की जिम्मेदारी से मैं बरी हूँ। (३५) ★

और नूह की तरफ बह्य की गयी कि तुम्हारी क्रौम में जो लोग ईमान ला चुके, (ला चुके) उनके सिवा और कोई ईमान नहीं लाएगा, तो जो काम ये कर रहे हैं, उन की वजह से ग्रम न खाओ। (३६) और एक कश्ती हमारे हुक्म से हमारे सामने बनाओ और जो लोग जालिम हैं, उनके बारे में हम से कुछ न कहना, क्योंकि वे जरूर शर्क कर दिए जाएंगे। (३७) तो नूह ने कश्ती बनानी शुरू कर दी और जब उन की क्रौम के सरदार उनके पास से गुजरते तो उनका मजाक उड़ाते। वह कहते कि अगर तुम हमारा मजाक उड़ाते हो, तो जिस तरह तुम हमारा मजाक उड़ाते हो, उसी तरह (एक वक्त) हम भी तुम्हारा मजाक उड़ाएंगे। (३८) और तुम को जल्द मालूम हो जाएगा कि किस पर अज्ञाब आता है, जो उसे रसवा करेगा और किस पर हमेशा का अज्ञाब नाजिल होता है? (३९) यहां तक कि जब हमारा हुक्म आ पहुंचा और तन्नूर जोश मारने लगा तो हमने (नूह को) हुक्म दिया कि हर क्रिस्म (के जानदारों) में से जोड़ा-जोड़ा (यानी) दो (दो जानवर—एक-एक नर और एक-एक मादा) ले लो और जिस शस्स के बारे में हुक्म हो चुका है (कि हलाक हो जाएगा) उस को छोड़ कर अपने घर वालों को और जो ईमान लाया हो, उसको कश्ती में सवार कर लो और उनके साथ ईमान बहुत ही कम लोग लाए थे। (४०) (नूह ने) कहा कि खुदा का नाम लेकर (कि उसी के हाथ में) उस का चलना और ठहरना (है), उस में सवार हो जाओ। बेशक मेरा परवरदिगार बरहाने वाला मेहरबान है। (४१) और वह उनको लेकर (तूफान की) लहरों में चलने लगी, (लहरें क्या थीं), गोया पहाड़ (थे)। उस वक्त नूह ने अपने बेटे को कि (कश्ती से) अलग था, पुकारा कि बेटा ! हमारे साथ सवार हो जा और काफिरों में शामिल न हो। (४२) उसने कहा कि मैं (अभी) पहाड़ से जा लगूंगा, वह मुझे पानी से बचा लेगा। उन्होंने कहा कि आज खुदा के अज्ञाब से कोई बचाने वाला नहीं (और न कोई बच सकता है,) मगर जिस पर खुदा रहम करे। इतने में दोनों के दमियान लहर आ, रोक बन गयी और वह डूब कर रह गया। (४३) और हुक्म दिया गया कि ऐ जमीन ! अपना पानी निगल जा और ऐ आसमान ! थम जा, तो पानी लुप्त हो गया और काम तमाम कर दिया गया और कश्ती जूदी पहाड़ पर जा ठहरी और कह दिया गया कि बे-इसाक लोगों पर लानत (४४) और नूह ने अपने परवरदिगार को पुकारा और कहा कि परवरदिगार ! मेरा बेटा भी मेरे घर वालों में है, (तो उस को भी निजात दे), तेरा वायदा सच्चा

क्रा - ल या नूह इन्नहू लै - स मिन् अहिलक ॐ इन्नहू अ-मलुन् गैर
 सातिहिल् ॐ कला तस - अलि मा लै - स ल - क बिही अल्मुन्
 इन्नी अजिबु-क अन् तकून मिनल्-जाहिलीन (४६) क्रा-ल रब्बि इन्नी
 अजिबु-क अन् अस्अ - ल-क मा लै-स ली बिही अल्मुन् ॥ व इल्ला

तस्मिन् ली व तर्हम्नी अकुम्भिनल् -
 लासिरीन (४७) की - ल यानुहृष्टिबत्

बिसत्तामिम्-भिन्ना व ब-र-कातिन् अलै-क व
अला उम-मिम् - मिम्मम् - म - अक व

उम-मुत् सनुमत्तिअहुम् सुम्-म य-मत्सुहुम्
मिन्ना अजाबुत् अलीम (४८) तिल-क

मिन् अम्बाइलगांवि नूहीहा इले - क८
मा कुनन्त तअ-लमुहा अनन्त व ला कौमुक

मिन् कबिल हाजा फसिबर्
इन्गल - आक्रि-ब-त लिम्तकीन (४६)

व इला आदिन् अखाहुम् हूदन्
क्रा-ल या क्रौमिअ-बुदुल्ला-ह मा लकूम मिन्

इलाहिन् गैरूह ७ इन् अन्तुम् इल्ला
गफ्फरुल्ल (५०) या कोमि ल अस्अलकम

इल्ला अ-लल्लजी फ़-त-रनी अ-फ़ला तअ-किलून (५१) व या कौमिस-तसिफ़रू
रब्बकूम सुम-म तब इलैहि यूसिलिस-समा-अ अलैकूम मिदरारंव-व यजिदकूम

क्रुव्व-त्तन् इला क्रुव्वतिकुम् व ला त-त-वल्लो मुजिरमीन (५२) कालू या हूदु
मा जिव्व-तना विबध्दिनत्तिव्व मा नह्नु बितारिकी आलिहत्तिना अन् कौलि-क व

मा नहनु ल-क बिमुअमिनीन (५३) इन्नकूलु इल्लाअ-तरा-क बअ-जु आलिहतिना
बिमुइन्-का-ल इन्नी उश्हिदुल्ला-ह वश्हदू अन्नी बरीउम्-मिम्मा तुश्िरकू-न

(१४) मिन् दूनिहा फ़कादूना जमाअन् सुम्-म ला तुज्जल्लन (१५) इन्ना
त-यक्कल्लु अ-लल्लाहि रब्बी व रब्बिकुम्, मा मिन् दाब्बतिन् इल्ला हु-व
आखिजम-बिनासि-यतिबा, इन्-न रब्बी अला सिरातिम् - 'मस्तकीम् (५६)

है और तू सब से बेहतर हाकिम है। (४५) खुदा ने फरमाया कि नूह ! वह तेरे घर वालों में नहीं है। वह तो नाशाइस्ता (ना-जेबा) अमल है, तो जिस चीज की तुमको हकीकत मालूम नहीं, उसके बारे में मुझ से सवाल ही न करो और मैं तुमको नसीहत करता हूँ कि नादान न बनो। (४६) नूह ने कहा, परवरदिगार ! मैं तुझ से पनाह मांगता हूँ कि ऐसी चीज का तुझ से सवाल करूँ, जिस की मुझे हकीकत मालूम नहीं और अगर तू मुझे नहीं बल्लेशेगा, और मुझ पर रहम नहीं करेगा, तो मैं तबाह हो जाऊँगा। (४७) हुक्म हुआ कि नूह ! हमारी तरफ से सलामती और बरकतों के साथ (जो) तुम पर और तुम्हारे साथ की जमाअतों पर (नाज़िल की गयी है) उतर आओ और कुछ और जमाअतें होंगी, जिन को हम (दुनिया के फ़ायदों से) नवाज़ेंगे, फिर उन को हमारी तरफ से दंदनाक अज़ाब पहुँचेगा। (४८) ये (हालात) तमाम ग़ैब की ख़बरों में से हैं, जो हम तुम्हारी तरफ़ भेजते हैं और इससे पहले न तुम ही इनको जानते थे और न तुम्हारी क्रौम (ही इन को जानती थी), तो सन्न करो कि अंजाम परहेज़गारों ही का (भला) है। (४९) ★

और हमने आद की तरफ़ उन के भाई हूद को (भेजा)। उन्होंने कहा कि मेरी क्रौम ! खुदा ही की इबादत करो, उसके सिवा तुम्हारा कोई माबूद नहीं। तुम (शिकं करके खुदा पर) सिर्फ़ बुहतान बांधते हो। (५०) मेरी क्रौम ! मैं इस (वाज़ व नसीहत) का तुम से कुछ बदला नहीं मांगता। मेरा बदला तो उसके जिम्मे है, जिस ने मुझे पैदा किया। भला, तुम समझते क्यों नहीं ? (५१) और ऐ क्रौम ! अपने परवरदिगार से बल्लिश मांगो, फिर उसके आगे तौबा करो। वह तुम पर आसमान से मूसलाधार मेंह वरसाएगा और तुम्हारी ताक़त पर ताक़त बढ़ाएगा और (देखो) गुनाहगार बनकर रू-गरदानी न करो। (५२) वे बोले, हूद ! तुम हमारे पास कोई ज़ाहिर दलील नहीं लाए और हम (सिर्फ़) तुम्हारे कहने से न अपने माबूदों को छोड़ने वाले हैं और न तुम पर ईमान लाने वाले हैं। (५३) हम तो यह समझते हैं कि हमारे किसी माबूद ने तुम्हें आसेब पहुँचा (कर दीवाना कर) दिया है। उन्होंने कहा कि मैं खुदा को गवाह करता हूँ और तुम भी गवाह रहो कि जिन को तुम (खुदा का) शरीक बनाते हो, उन से बेज़ार हूँ। (५४) (यानी जिन की) खुदा के सिवा (इबादत करते हो, तो) तुम सब मिल कर मेरे बारे में (जो) तद्बीर (करनी चाही,) कर लो और मुझे मोहलत न दो। (५५) मैं खुदा पर, जो मेरा और तुम्हारा (सब का) परवरदिगार है, भरोसा रखता हूँ (ज़मीन पर) जो चलने फिरने वाला है, वह उसको चोटी से पकड़े हुए है। बेशक मेरा परवरदिगार सीधे रास्ते पर है। (५६) अगर तुम रू-गरदानी करोगे, तो जो पैग़ाम

मेरे हाथ तुम्हारी तरफ भेजा गया है, वह मैं ने तुम्हें पहुंचा दिया है और मेरा परवरदिगार तुम्हारी जगह और लोगों को ला बसाएगा और तुम खुदा का कुछ भी नुकसान नहीं कर सकते। मेरा परवर-दिगार तो हर चीज पर निगेहबान है। (५७) और जब हमारा हुक्म (अज्ञाब) आ पहुंचा तो हमने हूद को और जो लोग उन के साथ ईमान लाए थे, उनको अपनी मेहरबानी से बचा लिया और उन्हें भारी अज्ञाब से निजात दी। (५८) ये (वही) आद हैं, जिन्होंने खुदा की निशानियों से इन्कार किया और उसके पैगम्बरों की ना-फरमानी की और हर मुतकब्बिर व सर-कश का कहा माना। (५९) तो इस दुनिया में भी उनके पीछे लानत लगी रही और क्रियामत के दिन भी (लगी रहेगी)। देखो आद ने अपने परवरदिगार से कुपूर किया (और) सुन रखो हूद की क़ौम पर फिटकार है। (६०) ✱

और समूद की तरफ उन के भाई सालेह को (भेजा) तो उन्होंने कहा कि क़ौम ! खुदा ही की इबादत करो उस के सिवा तुम्हारा कोई माबूद नहीं, उसी ने तुम को ज़मीन से पैदा किया और उसमें आबाद किया, तो उस से मसिफ़रत मांगो और उसके आगे तौबा करो। बेशक मेरा परवरदिगार नज़दीक (भी है और दुआ का) कुबूल करने वाला (भी) है। (६१) उन्होंने कहा कि सालेह ! इस से पहले हम तुम से (कई तरह की) उम्मीदें रखते थे। (अब वे ख़त्म हो गयीं) क्या तुम हम को उन चीज़ों को पूजने से मना करते हो, जिन को हमारे बुजुर्ग पूजते आए हैं ? और जिस बात की तरफ़ तुम हमें बुलाते हो, इस में हमें ज़बरदस्त शुब्हा है। (६२) सालेह ने कहा, क़ौम ! भला देखो तो अगर मैं अपने परवरदिगार की तरफ़ से खुली दलील पर हूं और उसने मुझे अपने यहां से (नुबूत की) नेमत बरूशी हो, तो अगर मैं खुदा की ना-फ़रमानी करूं, तो उसके सामने मेरी मदद करेगा ? तुम तो (कुपूर की बातों से) मेरा नुक़सान करते हो। (६३) और (यह भी कहा कि) ऐ क़ौम ! यह खुदा की अंठनी तुम्हारे लिए एक निशानी (यानी मोज़जा) है तो इसको छोड़ दो कि खुदा की ज़मीन में (जहां चाहे) चरे और उसको किसी तरह की तक्लीफ़ न देना, वरना तुम्हें जल्द अज्ञाब आ पड़ेगा। (६४) मगर उन्होंने उसकी कूचे काट डालीं, तो (सालेह ने) कहा कि अपने घरों में तीन दिन (और) फ़ायदे उठा लो। यह बायदा है कि झूठा न होगा। (६५) जब हमारा हुक्म आ गया तो हमने सालेह को और जो लोग उन के साथ ईमान लाये थे, उनको अपनी मेहरबानी से बचा लिया और उस दिन की रसवाई से (बचाए रखा)। बेशक तुम्हारा परवरदिगार ताक़तवर

और जबरबस्त है। (६६) और जिन लोगों ने जुल्म किया था, उनको बिबाड़ (की शक्ल में अज़ाब) ने आ पकड़ा, तो वे घरों में औंधे पड़े रह गये, (६७) गोया कभी उन में बसे ही न थे। सुन रखो कि समूद ने अपने परवरदिगार से कुफ़ किया और सुन रखो समूद पर फिटकार है। (६८) ★

और हमारे फ़रिश्ते इब्राहीम के पास खुशख़बरी लेकर आए, तो सलाम कहा। उन्होंने भी (जवाब में) सलाम कहा। अभी कुछ देर भी नहीं हुई थी कि (इब्राहीम) एक मुना हुआ बछड़ा ले आए (६९) जब देखा कि उनके हाथ खाने की तरफ़ नहीं जाते (यानी वह खाना नहीं खाते) तो उन को अजनबी समझ कर दिल में डरे। (फ़रिश्तों ने) कहा कि डरिए नहीं, हम लूत की क्रोम की तरफ़ (उन के हलाक करने को) भेजे गये हैं। (७०) और इब्राहीम की बीवी (जो पास) खड़ी थी, हंस पड़ी, तो हम ने उसको इस्हाक के बाद याक़ूब की खुशख़बरी दी। (७१) उस ने कहा, ऐ हे मेरे बच्चा होगा? मैं तो बुढ़िया हूँ और यह मेरे मियाँ भी बूढ़े हैं। यह तो बड़ी अजीब बात है। (७२) उन्होंने कहा, क्या तुम खुदा की क़ुदरत से ताज्जुब करती हो? ऐ अहले बैत! तुम पर खुदा की रहमत और उसकी बरकतें हैं। वह तारीफ़ के लायक और बुजुर्गवार है। (७३) जब इब्राहीम से डर जाता रहा और उन को खुशख़बरी भी मिल गयी, तो लूत की क्रोम के बारे में लगे हम से बहस करने। (७४) बेशक इब्राहीम बड़े तहम्मुल वाले, नर्मदिल और रुजू करने वाले थे। (७५) ऐ इब्राहीम! इस बात को जाने दो। तुम्हारे परवरदिगार का हुक्म आ पहुँचा है और इन लोगों पर अज़ाब आने वाला है, जो कभी नहीं टलने का। (७६) और जब हमारे फ़रिश्ते लूत के पास आये, तो वह उन (के आने) से शमनाक और तंग दिल हुए और कहने लगे कि आज का दिन बड़ी मुश्किल का दिन है। (७७) और लूत की क्रोम के लोग उनके पास बे-तहाशा दौड़ते हुए आए और ये लोग पहले ही से गन्दा काम किया करते थे। लूत ने कहा कि ऐ क्रोम! यह (जो) मेरी (क्रोम की) लड़कियाँ हैं, ये तुम्हारे लिए (जायज और) پاک हैं, तो खुदा से डरो और मेरे मेहमानों के (बारे) में मेरी आबरू न खोओ। क्या तुम में से कोई भी शायस्ता (शिष्ट) आदमी नहीं! (७८) वे बोले, तुम को मालूम है कि तुम्हारी (क्रोम की) बेटियों की हमें कोई ज़रूरत नहीं और जो हमारी सारज़ है उसे तुम (ख़ूब) जानते हो। (७९) लूत ने कहा कि ऐ काश! मुझ में

१. जो फ़रिश्ते खुशख़बरी ले कर आए थे, वे ज़िब्रील, मीकाईल और इस्राफ़ील थे और ख़ूबसूरत नवजवान की शक्ल में आए थे। हज़रत इब्राहीम ने उन को मुअज़्जिब मेहमान समझ कर उन के लिए एक मोटा-ताज़ा बछड़ा बिन्दू किया और उसके कबाब बना कर उन के पास लाये। हज़रत इब्राहीम की बीवी हज़रत सारा ने जब देखा कि इब्राहीम मेहमानों की ख़ातिर और सत्कार करते हैं, तो खुद भी उन की ख़िदमत के लिए आ खड़ी हुयी। मेहमानों का यह हाल कि खाना सामने रखा है और उन के हाथ खाने की तरफ़ जाते ही नहीं, यह हाल देख कर हज़रत इब्राहीम के दिल में डर पैदा हुआ कि ये लोग किसी बुरे इरादे से न आये हों, क्योंकि उन लोगों की आदत थी कि जब कोई मेहमान आता और मेज़बान के यहाँ खाना न खाता, तो वह यह क़्याल करते कि यह नेक नीयत से नहीं आया, बल्कि किसी बुरे इरादे से आया है। मेहमानों ने कहा, डरिए नहीं, हम खुदा के फ़रिश्ते हैं और लूत की क्रोम को हलाक करने के लिए भेजे गए हैं। फ़रिश्तों का यह क़ौल सुन कर बीवी सारा हंस पड़ी। फिर फ़रिश्तों ने बीवी सारा को हज़रत इस्हाक और हज़रत इय्हाक के बाद हज़रत याक़ूब के पैदा होने की खुशख़बरी सुनायी, तो वह मारे खुशी के बे-सास्ता हंस पड़ी।

२. जब हज़रत इब्राहीम को फ़रिश्तों के आने की बज़ह मालूम हुई और उन की बीवी को हज़रत इस्हाक की (गेष पृष्ठ ३६५ पर)

तुम्हारे मुकाबले की ताकत होती या मैं किसी मजबूत किले में पनाह पकड़ सकता। (८०) फ़रिश्तों ने कहा कि लूत ! हम तुम्हारे परिवारदिगार के फ़रिश्ते हैं। ये लोग हरगिज तुम तक नहीं पहुंच सकेंगे, तो कुछ रात रहे ये अपने घर वालों को लेकर चल दो और तुम में से कोई शख्स पीछे फिर कर न देखे, मगर तुम्हारी बीबी कि जो आफ़त उन पर पड़ने वाली है, वही उस पर पड़ेगी। उनके (अज़ाब के) बायदे का वक्त सुबह है और क्या सुबह कुछ दूर है? (८१) तो जब हमारा हुक्म आया, हमने उस (बस्ती) को (उलट कर) नीचे-ऊपर कर दिया और उन पर पत्थर की तह-ब-तह कंकरियां बरसायीं, (८२) जिन पर तुम्हारे परिवारदिगार के यहां से निशान किये हुए थे और वह (बस्ती इन) जालिमों से कुछ दूर नहीं। ★ (८३) और मदयन की तरफ़ उनके भाई शुऐब को (भेजा), तो उन्होंने कहा कि ऐ क्रौम ! खुदा ही की इबादत करो, उसके सिवा तुम्हारा कोई माबूद नहीं। और नाप-तौल में कमी न किया करो। मैं तो तुम को खुशहाल देखता हूँ और (अगर तुम ईमान न लाओगे, तो) मुझे तुम्हारे बारे में एक ऐसे दिन के अज़ाब का डर है, जो तुम को घेर कर रहेगा। (८४) और क्रौम ! नाप और तौल इसाफ़ के साथ पूरी-पूरी किया करो और लोगों को उनकी चीज़ें कम न दिया करो और ज़मीन में खराबी करते न फिरो। (८५) अगर तुम को (मेरे कहने का) यकीन हो तो खुदा का दिया हुआ नफ़ा ही तुम्हारे लिए है और मैं तुम्हारा निगेहबान नहीं हूँ। (८६) उन्होंने कहा, शुऐब ! क्या तुम्हारी नमाज़ तुम्हें यह सिखाती है कि जिन को हमारे बाप-दादा पूजते आए हैं, हम उनको छोड़ दें या अपने माल से जो काम लेना चाहें, न लें। तुम बड़े नर्म दिल और रास्तबाज़ हो। (८७) उन्होंने कहा कि ऐ क्रौम ! देखो तो, अगर मैं अपने परिवारदिगार की तरफ़ से रोशन दलील पर हूँ और उस ने अपने यहां से मुझे नेक रोज़ी दी हो। (तो क्या मैं उनके खिलाफ़ करूंगा ?) और मैं नहीं चाहता कि जिस बात से मैं तुम्हें मना करूं, खुद मैं उसको करने लगूँ, मैं तो जहां तक मुझ से हो सके (तुम्हारे मामलों की) इस्लाह चाहता हूँ और (इस बारे में) मुझे तोफ़ीक़ का मिलना खुदा ही (के फ़जल) से है। मैं उसी पर भरोसा रखता हूँ और उसी की तरफ़ रुजूअ करता हूँ। (८८) और ऐ क्रौम ! मेरी मुख़ालफ़त तुम से कोई ऐसा काम न करा दे कि जैसी मुसीबत नूह की क्रौम या हूद की क्रौम या सालेह की क्रौम पर वाक़ेअ हुई थी, वैसी ही मुसीबत तुम पर वाक़ेअ हो और लूत की क्रौम (का ज़माना तो) तुम से कुछ दूर नहीं। (८९)

(पृष्ठ ३६३ का शेष)

बशारत भी मिल गयी और उन का डर भी दूर हो गया, तो वह हज़रत लूत के बारे में फ़रिश्तों से बातें करने लगे, जिस को खुदा ने अपने से मुताल्लिक़ फ़रमाया है। वे बातें यह थी कि जब फ़रिश्तों ने कहा कि हम लूत के गांव को तबाह करने आये हैं, तो हज़रत इब्राहीम ने कहा, क्या तुम ऐसे गांव को तबाह करोगे, जिस में तीन सौ मोमिन रहते हैं। फ़रिश्तों से कहा, नहीं। फिर इब्राहीम ने कहा, क्या तुम ऐसे गांव को हलाक़ करोगे, जिस में चालीस मोमिन हैं ? कहा नहीं। फिर उन्होंने कहा, भला जिस गांव में तीस या बीस या दस या पांच मोमिन हों, क्या तुम उस को भी हलाक़ करोगे ? कहा, नहीं। फिर उन्होंने कहा कि अगर उस गांव में एक ही मोमिन हो, तब भी उसे तबाह कर दोगे ? कहा, नहीं। तब इब्राहीम ने कहा कि उस गांव में तो लूत हैं। उन्होंने कहा, जो-जो उस में हैं, मालूम हैं। हम लूत को और उन के घर वालों को तो बचा लेंगे, पर उन की औरत नहीं बचेगी। हज़रत इब्राहीम, चूँकि बहुत नर्म दिल थे, इस लिए चाहते थे कि इन लोगों के अज़ाब में देर हो जाए, तो अच्छा

(शेष पृष्ठ ३६७ पर)

और अपने परवरदिगार से बलिशास मांगो और उसके आगे तीबा करो। बेशक मेरा परवरदिगार रहम वाला और मुहम्मत वाला है। (६०) उन्होंने कहा कि सुऐब ! तुम्हारी बहुत सी बातें हमारी समझ में नहीं आती और हम देखते हैं कि तुम हम में कमजोर भी हो और अगर तुम्हारे भाई-बंद न होते, तो हम तुमको संगसार कर देते और तुम हम पर (किसी तरह भी) सालिब नहीं हो। (६१) उन्होंने कहा कि क्रौम ! क्या मेरे भाई-बंदों का दबाव तुम पर खुदा से श्याबा है और उसको तुम ने पीठ पीछे डाल रखा है। मेरा परवरदिगार तो तुम्हारे सब अमाल पर एहाता किये हुए है। (६२) और मेरी क्रौम ! तुम अपनी जगह काम किये जाओ, मैं (अपनी जगह) काम किये जाता हूँ। तुमको बहुत जल्द मालूम हो जाएगा कि रसवा करने वाला अजाब किस पर आता है और झूठा कौन है और तुम भी इतिज्जार करो, मैं भी तुम्हारे साथ इतिज्जार करता हूँ। (६३) और जब हमारा हुक्म आ पहुंचा तो हमने सुऐब को और जो लोग उन के साथ ईमान लाए थे, उन को तो अपनी रहमत से बचा लिया और जो जालिम थे, उनको बिघाड़ ने आ दबोचा, तो वह अपने घरों में औंधे पड़े रह गये। (६४) गोया उनमें कभी बसे ही न थे। सुन रखो कि मदनन पर (बेसी ही) फिटकार है, जैसी समूद पर फिटकार थी। (६५) ✱

और हमने मूसा को अपनी निशानियां और रोशन दलील देकर भेजा। (६६) (यानी) क्रिऔन और उसके सरदारों की तरफ, तो वह क्रिऔन ही के हुक्म पर चले और क्रिऔन का हुक्म दुस्त नहीं था। (६७) वह क्रियामत के दिन अपनी क्रौम के आगे-आगे चलेगा और उनको दोख्त में जा उतारेगा और जिस मक्काम पर वे उतारे जाएंगे, वह बुरा है। (६८) और इस दुनिया में भी लानत उनके पीछे लगा दी गयी और क्रियामत के दिन भी (पीछे लगी रहेगी), जो इनाम उन को मिला है, बुरा है। (६९) ये (पुरानी) बस्तियों के थोड़े से हालात हैं, जो हम तुम से बयान करते हैं। इन में से कुछ तो बाक़ी हैं और कुछ का तहस-नहस हो गया। (१००) और हमने उन लोगों पर जुल्म नहीं किया, बल्कि उन्होंने खुद अपने ऊपर जुल्म किया, गरज जब तुम्हारे परवरदिगार का हुक्म आ पहुंचा, तो जिन माबूदों को, वे खुदा के सिवा पुकारा करते थे, वह उनके कुछ भी काम न आए और तबाह करने के सिवा उनके हक़ में और कुछ न कर सके। (१०१) और

(पृष्ठ ३६५ का गेष)

है। शायद वे ईमान से आए और बद-क़ेलियों से एक जाएं। क्रिश्तों ने इब्राहीम से कहा, यह ख्याल छोड़ दीजिए, उन के लिए अजाब का हुक्म हो चुका है और अजाब हो कर रहेगा।

१. मदनन हज़रत इब्राहीम के बेटे का नाम था, फिर उन की औलाद में से एक क़बीले का यह नाम हो गया। इस जगह यही क़बीला मुराद है।

१. 'बदूद' (मुहम्मत वाला) यानी बंदों को दोस्त रखे या बंदे उस को दोस्त रखें। क़ुत्बुल अग़रार मौलाना बाक़ूब चर्ची क़द-स सिरिह 'सारेह' 'अस्माउल्लाह' में बदूद के मानी इस तरह बयान किये हैं कि तमाम ख़ल्क के साथ नेकी का दोस्त रखने वाला और उन दिलों का दोस्त कि जो हक़ की तरफ़ झुके हुए हैं, यानी वह नेकी को दोस्त रखता है और नेक लोग उस को दोस्त रखते हैं।

व कजालि-क अरुजु रबि-क इजा अ-ख-जल्कुरा व हि-य जालिमतुन् इन्-न
अख-जहू अलीमुन् शदीद (१०२) इन्-न फ्री जालि-क ल-आयतल्-लिमन् खा-फ
अजाबल्-आलि-रति जालि-क योमुम् - मज्मुअल् - लहुन्नासु व जालि - क
योमुम्-महूद (१०३) व मा नु-अलिस्सह इल्ला लिअ - जलिम्-मअ-दूद

(१०४) यौ-म यअति ला त-कल्लमु नफसुन्
इल्ला बिइजिन्ही ८ फमिन्हुम् शकिम्यु-व-व
सबीद (१०५) फ-अम्मल्लजी-न शकू
फकिन्नारि लहुम् फ्रीहा जफ्रीर-व-व शहीक

(१०६) खालिदी-न फ्रीहा मा दामतिस्-
समावातु वल-अरजु इल्ला मा शा - अ
रब्बु-क इन्-न रब्ब-क फअ - आलुल्लिमा
युरीद (१०७) व अम्मल्लजी-न सुअदू

फकिल्जन्नति खालिदी-न फ्रीहा मा दामतिस्-
समावातु वल-अरजु इल्ला मा शा - अ
रब्बु-क अता-अन् गै-र मज्जुज (१०८)
फला तकु फ्री मियंतिम्मिम्मा यअ-बुदु
हा-उलाइ मा यअ-बुदु - न इल्ला कमा

وَكُلِّدَكَ أَخَذَ رَبُّكَ إِذَا أَخَذَ الْقُرْآنَ مِنْ طَائِفَةٍ وَإِنْ أَخَذَ
الْآخَرُ مِنْ طَائِفَةٍ لَمْ يَكُنْ مِنْ حَتَّى يَأْتِيَ الْآخَرُ وَأَمَّا
يَوْمَ الْقِيَامَةِ فَسَوْفَ يَكُونُ النَّاسُ أَكْثَرُ فِئَتٍ مُتَفَرِّقِينَ
وَمَنْ يَكْفُرْ فَلَهُ يَوْمَ يَأْتِ بِكَلِمَةٍ كَلِمَةٍ كَلِمَةٍ
كَلِمَةٍ وَكَذَلِكَ نَقُصُّ عَلَيْكَ الْقِصَّةَ الْأُولَى وَكَذَلِكَ
نَقُصُّ عَلَيْكَ الْقِصَّةَ الْآخِرَةَ وَأَمَّا الْقُوسَى فَكَانَ
رَبُّكَ إِذْ يُنَادِي النَّاسَ أَنْ اسْمِعُوا بَيْنَهُمْ وَالْقَاسِ
يَوْمَ يَكُونُ لِلنَّاسِ عَذَابٌ عَظِيمٌ فَلَا تَكُنْ مِنْ
الْمُتَعَذِّبِينَ وَأَمَّا الْكُفْرُ فَكَانَ مُقْتَرَنًا مَقْتَرَنًا
مُقْتَرَنًا مِنْ بَيْنِ الْقَوْمِ الْفَاسِقِينَ وَالَّذِينَ آمَنُوا
مِنْ بَيْنِ الْقَوْمِ الْفَاسِقِينَ وَالَّذِينَ آمَنُوا مِنْ بَيْنِ
الْقَوْمِ الْفَاسِقِينَ وَالَّذِينَ آمَنُوا مِنْ بَيْنِ الْقَوْمِ
الْفَاسِقِينَ وَالَّذِينَ آمَنُوا مِنْ بَيْنِ الْقَوْمِ الْفَاسِقِينَ
وَالَّذِينَ آمَنُوا مِنْ بَيْنِ الْقَوْمِ الْفَاسِقِينَ وَالَّذِينَ
آمَنُوا مِنْ بَيْنِ الْقَوْمِ الْفَاسِقِينَ وَالَّذِينَ آمَنُوا
مِنْ بَيْنِ الْقَوْمِ الْفَاسِقِينَ وَالَّذِينَ آمَنُوا مِنْ
بَيْنِ الْقَوْمِ الْفَاسِقِينَ وَالَّذِينَ آمَنُوا مِنْ بَيْنِ
الْقَوْمِ الْفَاسِقِينَ وَالَّذِينَ آمَنُوا مِنْ بَيْنِ الْقَوْمِ
الْفَاسِقِينَ وَالَّذِينَ آمَنُوا مِنْ بَيْنِ الْقَوْمِ الْفَاسِقِينَ

यअ-बुदु आबाउहुम् मिन् कबलु व इन्ना लमुवफूहुम् नसीबहुम् गै - र
मन्कूस (१०९) व-ल-क्रद् आतेना मूसल्किता - ब फख्तुलि - फ फ्रीह
व लौला कलिमतुन् स-ब-कत् मिरंब्बि-क लकुज्जि-य बेनहुम् व इन्नुहुम् लफ्री
शकिम्-मिन्हु मुरीब (११०) व इन् - न कुल्लल्लम्मा लयुवफिफयन्नुहुम्
रब्बु-क अअ-मालहुम् इन्नु बिमा यअ-मलू-न खबीर (१११) फस्तकिम्
कमा उमिर-त व मन् ता-ब म-अक व ला तत्तो इन्नु बिमा तअ-मलू-न
बसीर (११२) व ला तर्कनू इलल्लजी-न ज-लमू फ-त-मस्सकुमुन्नाह
व मा लकुम् मिन् इन्निल्लाहि मिन् ओलिया-अ सुम्-म ला तुन्सरून (११३)
व अकिमिस्सला-तु त-र - फयिन्नहारि व जु-ल्-फम् - मिनल्लैलि इन्नल् -
ह-स-नाति युज्हिन्नस्-सय्यिआति जालि-क जिबरा लिज्जाकिरीन ८ (११४)

तुम्हारा परवरदिगार जब ना-फरमान बस्तियों को पकड़ा करता है, तो उस की पकड़ इसी तरह की होती है। बेशक उसकी पकड़ दुख देने वाली (और) सख्त है। (१०२) इन (क्रिस्तीयों) में उस शस्त्र के लिए, जो आखिरत के अज़ाब से डरे, इब्रत है। यह वह दिन होगा, जिसमें सब लोग हकूटो किए जाएंगे और यही वह दिन होगा, जिसमें सब (खुदा के सामने) हाज़िर किए जाएंगे। (१०३) और हम उसके लाने में एक तै वक़्त तक ताखीर कर रहे हैं। (१०४) जिस दिन वह आ जाएगा, तो कोई शस्त्र खुदा के हुक्म के बग़ैर बोल भी नहीं सकेगा। फिर उनमें से कुछ बद-बस्त होंगे और कुछ नेक-बस्त। (१०५) तो जो बद-बस्त होंगे वे दोजख़ में (डाल दिए जाएंगे), उस में उनको चिल्लाना और घाड़ना होगा। (१०६) (और) जब तक आसमान व ज़मीन हैं, हमेशा उसी में रहेंगे, मगर जितना तुम्हारा परवरदिगार चाहे। बेशक तुम्हारा परवरदिगार जो चाहता है, कर देता है। (१०७) और जो नेक-बस्त होंगे, वे बहिश्त में (दाखिल किए जाएंगे और) जब तक आसमान और ज़मीन हैं, हमेशा इसी में रहेंगे, मगर जितना तुम्हारा परवरदिगार चाहे, यह (खुदा की) बल्शिश है, जो कभी ख़त्म नहीं होगी। (१०८) तो ये लोग, जो (ग़ैर-खुदा की) पूजा करते हैं, उस से तुम शक में न पड़ना, ये इसी तरह पूजा करते हैं, जिस तरह पहले से इन के बाप-दादा पूजा करते आये हैं और हम उन को उन का हिस्सा पूरा-पूरा वग़ैर कुछ घटाए-बढ़ाए देने वाले हैं। (१०९) ★

और हमने मूसा को किताब दी, तो उसमें इस्तिलाफ़ किया गया और अगर तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से एक बात पहले न हो चुकी होती, तो उन में फ़ैसला कर दिया जाता और वे तो इस से भारी शुबّه में (पड़े हुए) हैं। (११०) और तुम्हारा परवरदिगार इन स. को (क्रियामत के दिन) उन के आमाल का पूरा-पूरा बदला देगा। बेशक जो अमल ये करते हैं, वह उसे जानता है। (१११) सो (ऐ पैगम्बर!) जैसा तुम को हुक्म होता है (उस पर) तुम और जो लोग तुम्हारे साथ तौबा कर चुके हैं, क़ायम रहो और हृद से आगे न जाना। वह तुम्हारे सब अमल देख रहा है। (११२) और जो लोग ज़ालिम हैं, उन की तरफ़ मायल न होना, नहीं तो तुम्हें (दोज़ख़ की) आग आ लिपटेगी और खुदा के सिवा तुम्हारे और दोस्त नहीं हैं। अगर तुम ज़ालिमों की तरफ़ मायल हो गये, तो फिर तुम को (कहीं से) मदद न मिल सकेगी। (११३) और दिन के दोनों सिरों (यानी सुबह और शाम के वक़्तों में और रात की चंद पहली) साअतों में नमाज़ पढ़ा करो। कुछ शक नहीं कि नेकियां गुनाहों को दूर कर देती हैं, यह उनके लिए नसीहत है, जो नसीहत

वस्बिर् फ-इन्लला-ह ला युजीअु अज-रल्-मुह्सनीन (११५) फलीला कान-
मिनल्कुरुनि मिन् कब्लिकुम् उलू बक्रियतिद्यह्वी-न अनिल्फसादि फिल्अज्रि
इल्ला कलीलम्-मिम्मन् अन्जना मिहम् ८ वत्त - ब - अल्लजी-न जलम् मा
उत्तिफू फीहि व कानू मुजिमीन (११६) व मा का - न रब्बु-क

लियुहिलकल्-कुरा बिज्रुलिम् - व अहलुहा

मुस्लिहून (११७) व ली शा-अ रब्बु-क

ल-ज-अ-सन्ना-स उम्मतुव्वाहिद-त्त्व - व ला

यजालू-न मुस्तलिफीन ॥ (११८) इल्ला

मर्रहि-म रब्बु-क ७ व लिजालि-क ख-ल-क

हुम् ७ व तम्मत् कलिमतु रब्बि - क ल

अम्-ल-अन्-न जहन्न-म मिनल्-जिन्नति वन्नासि

अज-मजीन (११९) व कुल्लन् नकुस्सु

अलै-क मिन् अम्बाइरुसुलि मा नुसबितु

बिही फुआ-द - क ८ व जा - अ-क फी

हाजिहिल्-हक्कु व मौअिजतु व-व जिक्का

लिल्मुअ्मिनीन (१२०) व कुल् लिल्लजी-न

ला युअ्मिनूनअ-मलू अला मकानतिकुम् ७

इन्ना आमिलून ॥ (१२१) वन्तजिरू ८ इन्ना मुन्तजिरून (१२२) व

लिल्लाहि गैबुस्समावाति वल्अज्रि व इलैहि युर्जअुल्-अम्ह कुल्लुह फअ-बुदहु व

त-वक्कल् अलैहि ७ व मा रब्बु-क बिगाफिलिन् अम्मा तअ-मलून * (१२३)

ذٰلِكَ وَكَرِيْهُمُ الْكَافِرُوْنَ ۝ وَاَصْحٰبُ مَآئِیْنِ ۝ اَللّٰهُ لَا يُحِبُّهُمْ اَصْحٰبُ
الْمُصْحِفِیْنَ ۝ فَاُولٰٓئِكَ اَمَّا مِنَ الْعٰرِفِیْنَ مِنْ قَبْلِكَ اُولٰٓئِكَ اَمَّا
یَبْقَوْنَ عَنِ الْفَسَادِ فِی الْاَرْضِ اِلَّا قَلِیْلٌ مِّنْ اٰمِنٰتٍ وَّابِقِیَّتِهِمْ
وَاٰمِنِ الدِّیْنِ ظَلَمُوْا مَا اُتُوْا بِهٖ وَكَانُوْا مُجْرِمِیْنَ ۝ وَاَمَّا اَمَّا
ذٰلِكَ اِلٰهَیْكَ الْغٰیْبِ یُظٰهَرُ وَاَمَّا اَمَّا اَمَّا اَمَّا ۝ وَذٰلِكَ اِلٰهَیْكَ
یَجْعَلُ النَّاسَ اٰثَمًا وَّیُجِدُكَ وَكَذٰلِكَ اَلَا تَتَذَكَّرُ ۝ اِلَّا مِّنْ رَّبِّمْ
ذٰلِكَ وَذٰلِكَ اَلَا تَتَذَكَّرُ ۝ وَتَمَّتْ كَلِمَةُ رَبِّكَ لَا مَلٰٓئِكَةَ جَهَنَّمَ مِنْ
الْبَشَرِ وَالتَّائِبِ اٰمِنِیْنَ ۝ وَكَذٰلِكَ نَقُصُّ عَلَیْكَ مِنْ اٰیٰتِ الْاَوَّلِیْنَ
وَمَا نَشِئْتُ بِهٖ فَوَآدِیْكَ وَجَآءَكَ فِیْ هٰذِهِ السَّعٰی وَنُوحِیْتُ ۝ وَكَذٰلِكَ
وَالْمُؤْمِنِیْنَ ۝ وَقُلْ لِلَّذِیْنَ لَا یَلٰٓئِقُوْنَ اَعْلَآءًا عَلٰی مَا كُنَّا فَعَلًا
اِلَّا اَعْمَلُوْنَ ۝ وَاسْتَظِرُّوْا اِلٰیَّ اَمَّا مَنَظَرُوْنَ ۝ وَلَهُمْ عَذَابُ السَّعٰوِیْ
وَالْاَرْضِ ۝ وَاِلٰیهِ یَرْجِعُ الْاَمْرُ كُلُّهُ ۝ فَاعْبُدُوْهُ وَتَوَكَّلْ عَلَیْهِ
وَمَا اَنْتَ بِمُعَذِّبُوْنَ ۝
سُوْرَةُ یُوْسُفَ ۝ وَهُوَ الَّذِیْ اَرْسَلْنَا اٰیٰتِیْكَ عَلٰی قُلُوْبِ
یٰۤاٰیُّهَا الَّذِیْ اَرْسَلْنَاكَ بِالْحَقِّ ۝ اِنَّا اَنْزَلْنٰهُ قُرْءٰنًا عَرَبِیًّا لِّعَلَّیْكَ
تَفْقَهُ ۝ مِّنْ نَّحْنُ نَقُصُّ عَلَیْكَ اَحْسَنَ الْقَصَصِ بِمَا اَوْحٰیْنَا

१२ सूरतु यूसु-फ ५३

(मक्की) इस सूर: में अरबी के ७४११ अक्षर, १८०८ शब्द, १११ आयत और १२ रकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

अलिफ् - लाम् - रा तिल - क आयातुल् - किताबिल् - मुवीन

(१) इन्ना अन्जलनाहु कुर-आनन् अ-रबियल्-ल-अल्लकुम् तअ-किलून (२)

कुबूल करने वाले हैं। (११४) और सब किये रहों कि खुदा नेक लोगों का बदला बर्बाद नहीं करता। (११५) तो जो उम्मतें तुम से पहले गुजर चुकी हैं, उनमें ऐसे होशमंद क्यों न हुए, जो मुल्क में खराबी करने से रोकते, हां (ऐसे) थोड़े से (ये), जिन को हम ने उन में से मुस्लिमी बल्शी और जो जालिम थे, उन्हीं बातों के पीछे लगे रहे, जिन में ऐश व आराम था और वे गुनाहों में डूबे हुए थे। (११६) और तुम्हारा परवरदिगार ऐसा नहीं है कि बस्तियों में, जबकि वहां के रहने वाले नेक हों जुल्म के तौर पर तबाह कर दे। (११७) और अगर तुम्हारा परवरदिगार चाहता तो तमाम लोगों को एक ही जमाअत कर देता, लेकिन वे हमेशा इस्तिलाफ करते रहेंगे। (११८) मगर जिन पर तुम्हारा परवरिगार रहम करे और इसी लिए उस ने उनको पैदा किया है और तुम्हारे परवरदिगार का क़ौल पूरा हो गया कि मैं दोखख को जिन्नों और इंसानों, सब से भ्रर दूंगा। (१२०) ऐ (मुहम्मद !) और पैगम्बरों के वे सब हालात जो हम तुम से बयान करते हैं, उन से हम तुम्हारे दिल को कायम रखते हैं और इन (किस्सों) में तुम्हारे पास हक़ पहुंच गया और (यह) मोमिनों के लिए नसीहत और इब्रत है। (१२०) और जो लोग ईमान नहीं लाए उन से कह दो कि तुम अपनी जगह अमल किये जाओ, हम (अपनी जगह) अमल किये जाते हैं। (१२१) और (आमाल के नतीजे का) तुम भी इन्तिज़ार करो, हम भी इन्तिज़ार करते हैं। (१२२) और आसमानों और ज़मीन की छिपी चीजों का इल्म खुदा ही को है और तमाम मामलों का पलटना उसी की तरफ़ है, तो उसी की इबादत करो और उसी पर भरोसा रखो और जो कुछ तुम कर रहे हो, तुम्हारा परवरदिगार उस से बे-खबर नहीं। (१२३) ★



१२ सूर: यूसुफ ५३

सूर: यूसुफ मक्की है और इसमें एक सौ ग्यारह आयतें और बारह हकूअ हैं।

शुरू खुदा का नाम लेकर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है। ❦

अलिफ-लाम-रा, यह रोशन किताब की आयतें हैं। (१) हमने इस कुरआन को अरबी में नाज़िल किया है, ताकि तुम समझ सको। (२) (ऐ पैगम्बर !) हम इस कुरआन के ज़रिए से, जो

नहनु नकुसु अलै - क अह-स-नल्-क-ससि बिमा ओहना इलै-क हाजल्-
 कुरआन-न व इन् कुन्-त मिन् कब्लिही लमिनल्गाफिलीन (३) इज्
 का-ल यूसुफु लि-अबीहि या अ-बति इन्नी र-ऐतु अ-ह-द अ-श-र कौकबव्वशम-स
 वल्क-म-र रऐतुहुम् ली साजिदीन (४) का-ल या बुनय-य ला तकुसु

रब्ब-या-क अला इस्वति-क फ-यकीद ल-क
 कंदत् इन्तश्शतान लिल्इन्सानि अदुव्वुम्-
 मुबीन (५) व कजालि-क यजतबी-क

रब्बु-क व युअल्लिमु-क मिन् तअबीलिल्-
 अहादीसि व युतिम्मु निअ-म-तह अलै-क व
 अला आलि यअ-कू-व कमा अतम्महा अला
 अ-बवै-क मिन् कब्लु इब्राही - म व
 इस्हा-क इन्-न रब्ब-क अलीमुत् हकीम
 * (६) ल - कद् कान-फी यूसु-फ व
 इस्वतिही आयातुल्लिस् - सा-इलीन (७)

इज् कालू ल - यूसुफ व अखूहु अहब्बु
 इला अबीना मिन्ना व नहनु अुस्बतुन्

إِنَّكَ هَذَا الْقُرْآنُ ۖ وَلَنْ نُّنْفِخَ بِهِ فِي الصُّفُوفِ ۚ إِذْ قَالَ
 يُوسُفُ لِأَبِيهِ يَا أَبَتِ إِنِّي رَأَيْتُ أَحَدَ عَشَرَ كَوْكَبًا وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ
 رَايَهُمْ لِي سَبْعِينَ ۖ قَالَ يَبْنَؤُكَ ۖ قَالَ يَبْنَؤُكَ ۖ قَالَ يَبْنَؤُكَ ۖ قَالَ يَبْنَؤُكَ ۖ
 يُكَيِّدُكَ اللَّهُ كَيْدًا ۚ إِنَّ الظَّالِمِينَ لِلنَّاسِ لَأَعْدَاءُ مُبِينُونَ ۖ وَكَذَلِكَ
 بَيَّضْنَاكَ رَبُّكَ وَيَعْلَمُكَ مِنْ تَارِيخِ الْأَحْيَاءِ وَيُسَبِّحُ بِحَمْدِهِ
 عَلَيْكَ وَعَلَى آلِ يَعْقُوبَ لَمَّا اتَّخَذَ إِبْرَاهِيمَ مِنْ قَبْلِ إِبْرَاهِيمَ
 إِيَّاهُ رَبًّا ۖ إِنَّكَ رَبُّكَ عَلَيْهِ حَكِيمٌ ۖ لَقَدْ كَانَ فِي يُوسُفَ وَإِسْحَاقَ
 آيَاتٍ لِكَالِبِينَ ۖ إِذْ قَالُوا لِلْيُوسُفَ وَأَخُوهُ احْبَبَ إِلَى آبَائِنَا مَا
 كُنْ عَصِيَّةً ۚ إِنَّ آبَاءَنَا لَفِي ضَلَالٍ مُبِينٍ ۖ أَفَتَأْتِيهِمْ
 أَوْطَاسُوهُ أَضْأَلُ لَمْ يَكُنْ لَهُمْ أَيْدِيكُمْ وَكَانُوا مِنْ بَعْدِهِمْ
 ضَالِّينَ ۖ قَالَ قَائِلٌ مِنْهُمْ وَنَهَّمُوا يُوسُفَ وَالْقَوَاعِ فِي عَيْبِ
 الْحَبِّ يَأْتِيهِمْ بَعْضُ الشَّيْءِ وَإِنْ كُنْتُمْ فَرِيلِينَ ۖ قَالُوا يَا أَبَا
 مَا لَكَ يَا كَامَنًا عَلَى يُوسُفَ وَإِنَّا لَنُحِبُّونَ ۖ أَرْسَلَهُ مَتَاعًا
 رَبُّهُ وَيَلْبَسُ وَإِنَّا لَنُحِبُّونَ ۖ قَالَ إِنِّي تُخِشُّونِي أَنْ تَذَاهِبُوا
 بِهِ وَاعْلَمْتُ أَنَّ بِأَخِيهِ الْيُوسُفَ وَأَخُوهُ غُلَّوْنَ ۖ قَالُوا لَنْ
 أَكُلَهُ الْيُوسُفَ وَكُنْ عَصِيَّةً ۚ إِنَّا إِذَا الْغَيْرُونَ ۖ كَلَّمَا ذَهَبُوا
 وَاجْتَمَعُوا أَنْ يَجْمَعُوا فِي عَيْبِ الْحَبِّ وَأَرْسَلُوا إِلَيْهِ وَاسْتَبَدُّوا

इन - न अबाना लफी ज़लालिम् - मुबीन (८) उक्तुलू यूसु - फ
 अविर्तरहू अर-जय्यखलु लकुम् वजहु अबीकुम् व तकून मिम्बअ-दिही लौमन्
 सलिहीन (९) का-ल काइलुम्-मिन्हम् ला तकतुलू यूसु-फ व अल्कूहु फी
 गयाबतिल्-जुब्बि यल्तकित्हु बअ-जुस्-सय्यारति इन् कुन्तुम् फाअिलीन (१०)
 कालू या अबाना माल-क ला तअम्ना अला यूसु-फ व इन्ना लहू
 लनासिहून (११) अर्सिल्हु म-अना शदय्यर्तअ व यल-अब् व इन्ना लहू
 लहाफिज़ून (१२) का-ल इन्नी ल-यहजुनुनी अन् तज्हब् बिही व
 अखाफु अय्यअकुलहुज्जिअबु व अन्तुम् अन्हु गाफिलून (१३) कालू
 लइन् अ-क-लहुज्जिअबु व नहनु अुस्बतुन् इन्ना इजल्लखासिरून (१४)

हमने तुम्हारी तरफ भेजा है, तुम्हें एक बहुत अच्छा क्रिस्ता सुनाते हैं और तुम इस से पहले बे-खबर थे। (३) जब यूसुफ ने अपने वालिद से कहा कि अब्बा ! मैं ने (स्वाब में) ग्यारह सितारों और सूरज और चांद को देखा है। देखता (क्या) हूं कि वे मुझे सज्दा कर रहे हैं। (४) उन्होंने कहा कि बेटा ! अपने स्वाब का जिक्र अपने भाइयों से न करना, नहीं तो वे तुम्हारे हक में फरेब की की चाल चलेंगे। कुछ शक नहीं कि शैतान इंसान का खुला दुश्मन है। (५) और इसी तरह खुदा तुम्हें बगुंजोदा (चुना हुआ खास) करेगा और (स्वाब की) बातों की ताबीर का इल्म सिखाएगा और जिस तरह उस ने अपनी नेमत पहले तुम्हारे दादा, परदादा इब्राहीम और इस्हाक पर पूरी की थी, उसी तरह तुम पर और याकूब की औलाद पर पूरी करेगा। बेशक तुम्हारा परवरदिगार (सब कुछ) जानने वाला (और) हिकमत वाला है। (६) *

हां, यूसुफ और उन के भाइयों (के क्रिस्ते) में पूछने वालों के लिए (बहुत सी) निशानियां हैं। (७) जब उन्होंने (आपस में) तजिकरा किया कि यूसुफ और उसका भाई अब्बा को हम से ज्यादा प्यारे हैं, हालांकि हम जमाअत (की जमाअत) हैं। कुछ शक नहीं कि अब्बा खुली गलती पर हैं। (८) तो यूसुफ को (या तो जान से) मार डालो या किसी मुल्क में फेंक आओ, फिर अब्बा की तबज्जोह सिर्फ तुम्हारी तरफ हो जाएगी और इसके बाद तुम अच्छी हालत में हो जाओगे। (९) उन में से एक कहने वाले ने कहा कि यूसुफ को जान से न मारो, किसी गहरे कुएं में डाल दो कि कोई राह चलता आदमी निकाल (कर और मुल्क में) ले जाएगा। अगर तुम को करना है (तो यों करो)। (१०) (यह मशिवरे कर के वे याकूब से) कहने लगे कि अब्बा जान ! क्या वजह है कि आप यूसुफ के बारे में हमारा एतबार नहीं करते, हालांकि हम उस के खैरस्वाह हैं। (११) कल उसे हमारे साथ भेज दीजिए कि खूब मेवे खाये और खेले-कूदे। हम उस के निगहबान हैं। (१२) उन्होंने कहा कि यह बात मुझे गमनाक किये देती है कि तुम उसे ले जाओ (यानी वह मुझ से जुदा हो जाए) और मुझे यह खोफ है कि तुम (खेल में) उस से ग्राफिल हो जाओ और उसे भेड़िया खा जाए। (१३) वे कहने लगे कि अगर हमारी मौजूदगी में, कि हम एक ताकतवर जमाअत हैं, भेड़िया

१. यहूदियों ने जनाब रिसालत, मआब से कहा कि हमें उन पैगम्बर का हाल बताइए, जो शाम में रहते थे और उन का बेटा मिला की तरफ निकाल दिया गया था। वह बेटे के ग्रम में इतना रोते रहे कि आंख की रोजनी जाती रही। कहते हैं कि उस वक़्त मक्का में कोई शरूस अहले किताब में से न था और न कोई ऐसा आदमी था जो पिछले नबियों के हालात का इल्म रखता हो। इस लिए यहूदियों ने एक शरूस को मदीने से यह सवाल करने को हजरत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास मक्का में भेजा, तब खुदा ने यह सूर: नाजिल फरमायी।

२. हजरत यूसुफ अलैहिस्सलाम के ग्यारह भाई थे, जिन में से दस तो सीतेले थे और एक सगे। उन का नाम बिन यामीन था और यह सब में छोटे थे। यहां 'इस के भाई' से मुराद यही बिन यामीन हैं।

फ-लम्मा ज-हबू बिही व अज-मअ अय्यज-अलूहु फी गयाबनिश्-जुबिब ८ व
 ओहूना इलैहि ल-तुनबिब-अन्न-हुम् बिअम्रिहिम् हाजा व हुम् ला यश-अरुन
 (१५) व जाऊ अबाहुम् अिशाअय्यव-कून ७ (१६) कालू या अबाना

इन्ना ज-हब्ना नस्तबिकु व त-रकना यूसुफ अिन्-द मताअिना फ-अ-क-ल-हुज-

जिअबु ८ व मा अन्-त बिमुअमिनिल्लना

व लौ कुन्ना सादिकीन (१७) व जाऊ

अला कमीसिही बिदमिन् कजिबिन् ७

काल-बल् सव्व-लत् लकुम् अन्कुसुकुम्

अम-रन् ७ फ - सव्वन् जमीलुन् ७ वल्लाहुल् -

मुस्तआनु अला मा तसिफून (१८) व

जाअत् सय्यारतुन् फ-असलू वारि - दहुम्

फ-अद्ला दल्-वह ७ काल-या बुश्रा हाजा

गुलामुन् ७ व अ - सरूहु बिज्जा - अ-तन् ७

वल्लाहु अलीमुम् - बिमा यअ-मलून (१९)

व शरीहु बि-स-मनिम् - बख्तिन् दराहि-म

मअ - दूदतिन् ८ व कानू फीहि मिनज् -

जाहिदीन (२०) व कालल्लजिश्तराहु मिम्मिस्-र लिम-र-अतिही अकिरमी

मस्-वाहु असा अय्यन्फ-अना ओ नत्तखि-जहू व-ल-दन् ७ व कजालि-क मक्कन्ना

लियूसु-फ फिल्-अजि ७ व लिनु-अल्लिमहू मिन् तअवीलिल्-अहादीसि ७ वल्लाहु

गालिबुन् अला अम्रिही व लाकिन्-न अक्सरन्नासि ला यअ-लमून (२१) व

लम्मा ब-ल-गा अशुद्दहू आत्तनाहु हुक्मव्-व अिल-मन् ७ व कजालि-क नज्जिल्-

मुहिसनीन (२२) व रा-व-दत्-हुल्लती हु-व फी बैतिहा अन् नफिसही व

गल्ल-कतिल्-अब-वा-ब व कालत् है-त लक ७ काल-मआजल्लाहि इन्नहू रब्बी

अह-सन मस्वा-य ७ इन्नहू ला युफ्लिहुज्जालिमून (२३) व ल-कद् हम्मत्

बिही ८ व हम्-म बिहा लौला अररआ बुर्हा-न रबिबही ७ कजालि-क लिनसिर-फ

अन्हुस्सू - अ वल् - फहशा-अ ७ इन्नहू मिन् अिबादिनल्-मुख-लसीन (२४)

بَارِئُوهَذَا وَهَذَا يُشْعُرُونَ ۝ وَجَاءُوا بِالْفَرْعَةِ يُرِيدُونَ
 قَالُوا يَا أَبَانَا مَاذَا هَذَا لَشَيْءٍ وَكَرِهْنَا يُوسُفَ عِنْدَ مَلِكِنَا
 الرَّابِّ ۝ وَمَا أَنْتَ بِمُؤْمِنًا وَكَرِهْنَا صِدْقِينَ ۝ وَجَاءُوا عَلَى
 قَتِيلَةٍ بِدِرْءٍ كَذِبٍ قَالِ يَا لَيْلَ لَكُمُ الْفِتْنَةُ أَفَرَأَيْتُمْ لَصَدِ
 قِيْلَ وَاللَّهِ السَّعْلَانِ عَلَى الْفِتْنَةِ ۝ وَجَاءَتْ سَيِّدَةُ الْوَارِثَةِ
 وَابْتَدَأَتْ فَادُلُّهُ قَالَ يَبْنَؤُ هَذَا عِلْمٌ وَأَسْرُوهَ بَصَاعَهُ
 اللَّهُ عَلَيْهِمْ بِمَا يَعْمَلُونَ ۝ وَتَرَوْهُ بِمِثْقَلِ خَيْشٍ دَلَامَهُ مَعْدُونًا
 وَكَانُوا فِيهِ مِنَ الزَّاهِدِينَ ۝ وَقَالَ الَّذِي اشْتَرَاهُ مِنْ مِصْرَ
 لِإِسْرَائِيلَ أَرَأَيْتُمْ مَثْوَاهُ عِنْدَ أَنْ يَفْتَعَلَ أَرَأَيْتُمْ وَلَدًا وَكَذَلِكَ
 مَكَاتِلُ الْيُوسُفَ فِي الْأَرْضِ ۝ وَلَعَلَّكَ مِنَ الْإِسْرَائِيلِ
 وَاللَّهُ غَالِبٌ عَلَى أَمْرِهِ ۝ وَلَكِنْ أَكْثَرُ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ۝ وَلَمَّا
 بَلَغَ أَشُدَّهُ آتَيْنَاهُ حُكْمًا وَعِلْمًا ۝ وَكَذَلِكَ فَجَّرْنَا النِّسْيِينَ ۝
 وَارْوَدَتْ الْيَقْنَىَ هَوْنِي بَيْنَ عَيْنَيْهِمْ وَعَلَّقَهَا الْأَبْوَابَ ۝ وَقَالَتْ
 هَيْبَتُكَ قَالَ مَعَاذَ اللَّهِ إِنَّهُ رَبِّي أَحْسَنَ مَثْوَايَ إِنَّكَ لَا يَعْلَمُ
 الظَّالِمُونَ ۝ وَلَقَدْ هَمَّتْ بِهٖ وَهَمَّ بِهَا لَوْ أَنَّ الْأَيْمَانَ لَمْ يَكُنْ
 كَذَلِكَ لَيَصْرَفُنَّ عَنْهُ الشَّوْءَ وَالْفِتْنَةَ إِنَّ اللَّهَ مِنْ عَلَوَاتِ الْغَالِبِينَ
 وَلَسْتَ بِالْبَاقِ ۝ وَقَدْ فُتِنَ مِنْهُ مِنْ دُونِ الْفِتْنَةِ عَالِدُ الْوَالِدِ

खा गया, तो हम बड़े नुकसान में पड़ गये। (१४) गरज जब वे उस को ले गये और इस पर एक राय हो गये कि उसको गहरे कुएं में डाल दें, तो हमने यूसुफ की तरफ बह्य भेजी कि (एक वक्त ऐसा आयेगा कि) तुम उन को इस व्यवहार से आगाह करोगे और उनको (इस बह्य की) कुछ खबर न होगी। (१५) (यह हरकत करके) वे रात के वक्त बाप के पास रोते हुए आये, (१६) (और) कहने लगे कि अब्बाजान ! हम तो दौड़ने और एक दूसरे से आगे निकलने में लग गये और यूसुफ को अपने सामान के पास छोड़ गये तो भेड़िया खा गया और आप हमारी बात को, गो हम सच ही कहते हों, मान कर न देंगे (१७) और उनके कुरते पर झूठ-मूठ का लहू भी लगा लाये। याकूब ने कहा (कि हकीकत यों नहीं है), बल्कि तुम अपने मन से (यह) बात बना लाये हो। अच्छा सब (कि वही) खूब (है) और जो तुम बयान करते हो, उसके बारे में खुदा ही से मदद चाहिये। (१८) (अब खुदा की शान देखो कि उस कुएं के करीब) एक क्राफिला आया और उन्होंने (पानी के लिये) अपना सक्का भेजा। उस ने कुएं में डोल लटकाया (तो यूसुफ उससे लटक गये)। वह बोला, जहे किस्मत ! यह तो (निहायत हसीन) लड़का है और उसको कीमती सरमाया समझ कर छिपा लिया और जो कुछ वे करते थे, खुदा को सब मालूम था। (१९) और उसको थोड़ी-सी कीमत (यानी) गिनती के कुछ दिरहमों पर बेच डाला और उन्हें उन (के बारे) में कुछ लालच भी न था। (२०) ★

और मिस्र में जिस शहस ने उस को खरीदा, उसने अपनी बीवी से, (जिस का नाम जुलेखा था) कहा कि इस को इज्जत व इकराम से रखो। अबज नहीं कि यह हमें फायदा देया हम इसे अपना बेटा बना लें। इस तरह हमने यूसुफ को (मिस्र की) धरती पर जगह दी और गरज यह थी कि हम उन को (ख्वाब की) बातों की ताबीर सिखाएं और खुदा अपने काम पर गालिब है, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते। (२१) और जब वह अपनी जवानी को पहुंचे तो हमने उनको हिवमत और इल्म दिया और भले लोगों को हम इसी तरह बदला दिया करते हैं। (२२) तो जिस औरत के घर में वह रहते थे उसने उन को अपनी तरफ मायल करना चाहा और दरवाजे बन्द करके कहने लगी, (यूसुफ !) जल्दी आओ। उन्होंने कहा कि खुदा पनाह में रखे, वह (यानी तुम्हारे मियां) तो मेरे आका हैं, उन्होंने मुझे अच्छी तरह से रखा है, (मैं ऐसा जुल्म नहीं कर सकता,) बेशक जालिम लोग फ़लाह नहीं पाएंगे। (२३) और उस औरत ने उनका क्रस्द किया और उन्होंने उसका क्रस्द किया। अगर वह अपने परवरदिगार की निशानी न देखते (तो जो होता, होता,) यों इसलिए (किया गया) कि हम उनसे बुराई और बे-हयाई को रोक दें। बेशक वह हमारे खालिस बन्दों में से थे। (२४)

१. कुरते पर झूठ-मूठ का लहू लगा लाये, ताकि यह समझा जाए कि भेड़िया सचमुच खा गया है, लेकिन यह ख्याल न किया कि भेड़िया सचमुच खा जाता, तो भेड़िए के दांतों से कुरता भी फट जाता, हानांकि वह बिल्कुल मालिम था। जब इन मक्कारों ने हजरत याकूब से आ कर कहा कि यूसुफ को भेड़िया खा गया, तो उन्होंने ने कुरता ही देख कर समझ लिया कि ये झूठ कहते हैं और कहा, भेड़िया तो बड़ा अक्लमंद था कि यूसुफ को तो खा गया और कुरता न फटने दिया।

२. उस शहस का नाम क्रुत्फ़ीर था। कुछ लोगों ने लुत्फ़ीर कहा है। यह मिस्र के बादशाह का, जिस का नाम ख्यान बिन वलीद था, बख़ीर था और उस का लक़ब 'अजीज' था।

३. जुलेखा का क्रस्द जैसा होगा, जाहिर है, क्योंकि वह यूसुफ अलैहिस्सलाम के हुस्न व जमाल पर फ़रेक्ता हो (मेष पृष्ठ ३७७ पत्र)

वस्त-व-कल्बा-व व कद्-दत् कमी-सूह् मिन् दुबुरिक्-व अल्फया सय्यि-दहा ल-दल्बाबि
कालत् मा जजा-उ मन् अरा-द बि-अहिल-क सूअन् इल्ला अय्युस्ज-न औ
अजाबुन् अलीम (२५) का-ल हि-य रा-व-दत्नी अन् नफ्सी व शहि-द
शाहिदुम्-मिन् अहिलहाऽ इन् का-न कमीसूह् कुद-द मिन् कुबुलिन् फ-स-द-कत्

व ह-व मिनल्काजिबी-न (२६) व इन्

का-न कमीसुह कुद्-द मिन् दुबुरिन् फ-क-ज-बत्

व ह-व मिनस-सादिकीन (२७) फ-लम्मा

रआ कमी-सह कद-द मिन् दबूरित काल

इत्त-मिन् कैदि-कन-न इत्त-न कै-द-कन-न

अजीम (३६) : यसफ अअ-रिज अन

संस्कृत-विभाग

—वि — विमल कर्णिक ५ (३१)

इन्नाक कुन्ति मिनल्-खातिइन ★ (२६)

व का-ल निस्-वतुन् फ़िल्-मदानात्तुम-र-अतुल्-

अजीह तुरावदु फताहा अन

नप्सिही ८ कद् श-ग-फहा हुबन् ५ इन्ना

ल-न-राहा फ्री जलालिम्-मुबीन (३०)

क्र-लम्मा समिअत् बिमकिरहिन्-न असं-लत् इलैहिन्

आतत् कुल-ल वाहिदातुम्-मिहनु-न ति
 क-लामा गो-नह अकबर-तह व कृतअ-न ऐ

मा हाजा ब - शरत् इन् हाजा इल

क्रालत् फञ्जालिकुन् - नल्लजी लुप्तुन्ननी

नफ़िसही फ़स्तअ-सम ५ व लइल्लम् यज्ञ-ज
 निरुद्धिनी (३३) का-ल

यद् - अननी इलं हि ८ व इत्ला तस्तिरफ्

इलैहिनन् व अकुम्मिनल्-जाहिलीन (३३)

अन्तु कंदहुन्-न इन्नह हुवस्समीअुल्-अलीम

मिम्बळ-दि मा र-अवुल् - आयात ल -

मञ्जिल
- ३/१३ या ० - ४५/१४ या ६

[illegible]

और दोनों दरवाजे की तरफ भागे (आगे यूसुफ, पीछे जुलेखा) और औरत ने उनका कुरता पीछे से पकड़ कर जो खींचा, तो) फाड़ डाला और दोनों को दरवाजे के पास औरत का खाविद मिल गया, तो औरत बोली कि जो शरूस तुम्हारी बीवी के साथ बुरा इरादा करे, उस की इस के सिवा क्या सजा है कि या तो कैद किया जाए या दुख का अजाब दिया जाए। (२५) यूसुफ ने कहा, उसी ने मुझ को अपनी तरफ मायल करना चाहा था। उस के कबीले में से एक फ़ैसला करने वाले ने यह फ़ैसला किया कि अगर उसका कुरता आगे से फटा हो, तो यह सच्ची और यूसुफ झूठा। (२६) और अगर कुरता पीछे से फटा हो तो यह झूठी और वह सच्चा। (२७) जब उसका कुरता देखा (तो) पीछे से फटा था, (तब उसने जुलेखा से कहा) कि यह तुम्हारा ही फ़रेब है और कुछ शक नहीं कि तुम औरतों के फ़रेब बड़े (भारी) होते हैं। (२८) यूसुफ ! इस बात का ख्याल न कर और (जुलेखा) तू अपने गुनाह की बलिश माग, बेशक खता तेरी ही है। (२९) *

और शहर में औरतें बातें करने लगीं कि अजीज़ की बीवी अपने गुलाम को अपनी तरफ मायल करना चाहती है और उसकी मुहब्बत उसके दिल में घर कर गयी है। हम देखते हैं कि वह खुली गुमराही में है। (३०) जब जुलेखा ने इन औरतों की (बातें, जो हक़ीक़त में यूसुफ के दीदार के लिए एक) चाल (थी) सुनी तो उनके पास (दावत का) पंगाम भेजा और उनके लिए एक महफ़िल सजायी और (फल काटने के लिए) हर एक को एक-एक छुरी दी और (यूसुफ से) कहा कि इनके सामने बाहर आओ। जब औरतों ने उनको देखा तो उन (के हुस्न) का रोब ऐसा छा गया कि (फल काटते-काटते) अपने हाथ काट लिए। और बे-सास्ता बोल उठीं कि सुब्हानल्लाह ! (यह हुस्न !) यह आदमी नहीं, कोई बुजुर्ग फ़रिश्ता है। (३१) तब जुलेखा ने कहा, यह वही है जिसके बारे में तुम मुझे ताने देती थीं और बेशक मैं ने उस को अपनी तरफ मायल करना चाहा, मगर यह बचा रहा और अगर यह वह काम न करेगा, जो मैं इसे कहती हूँ, तो कैद कर दिया जाएगा और ज़लील होगा। (३२) यूसुफ ने दुआ की कि परवरदिगार ! जिस काम की तरफ़ ये मुझे बुलाती हैं, उस के मुक़ाबले में मुझे कैद पसन्द है और अगर तू मुझ से उन के फ़रेब को न हटायेगा, तो मैं उन की तरफ़ मायल हो जाऊंगा और नादानों में दाखिल हो जाऊंगा। (३३) तो खुदा ने उन की दुआ क़बूल कर ली और उन से औरतों का मकर ख़त्म कर दिया। बेशक वह सुनने (और) जानने वाला है। (३४) फिर दावजूद इस के कि वे लोग निशान देख चुके थे, उन की राय यही ठहरी कि कुछ दिनों के लिए उन को कैद ही कर दें। (३५) *

(पृष्ठ ३७५ का शेष)

रही थी, मगर यूसुफ का क्रुद ऐसा नहीं हो सकता, क्योंकि वह ऐसे काम से खुदा की पनाह मांगते हैं और अमानत में ख़ियानत करने को जुल्म समझते हैं और यह कह कर जुलेखा का कहां नहीं मानते। वह उस के इस्रार से उस की तरफ़ झुक तो गये, लेकिन किसी रज़ामंदी, चाव और दिल से नहीं, बल्कि बे-मन से और जब क्रुद इन्सानो तबीयत के तक्राजे से न हो और उस में इरादा न शामिल हो यानी सिर्फ़ ख्याल ही ख्याल हो, इस पर पकड़ नहीं। जुलेखा के क्रुद में दिल का चाव शामिल था, इस्रार था और यूसुफ के क्रुद में चाव न था। दोनों के क्रुद में बड़ा फ़र्क था। अब्बल तो यूसुफ अलैहिस्सलाम का क्रुद चाव का न था, फिर उन्होंने ने परवरदिगार की कोई निशानी देख ली, तो वह क्रुद भी जाता रहा।

व द-ख-ल म-अहुस्सिज्-न फ-तयानि ७ का-ल अ-हदुहुमा इन्नी अरानी अ-अ-सिर
खम्-रन् ८ व का-ल-आखर इन्नी अरानी अहिम्लु फी-क रअ-सी खुब-जन्
तअ - कुलुत्तैर मिन्हु नब्बिअ - ना बितअ - वीलिही ८ इन्ना नरा - क
मिनल्मुहिस्सीनी (३६) का-ल ला यअतीकुमा तआमुन् तुज्जकानिही इत्ला

नब्बअ-तुकुमा बितअ - वीलिही कब् - ल

अय्यअ - ति - यकुमा ७ जालिकुमा मिम्मा

अल्ल-मनी रब्बी ७ इन्नी तरक्तु मिल्ल-त

कोमिल्ला युअमिनू-न बिल्लाहि व हुम्

बिल्आखिरति हुम् काफिरून (३७)

वत्तबअ-तु मिल्ल-त आबाइ इब्राही - म

व इस्हा-क व यअ-कू-ब ७ मा का-न लना

अन् नुशिर - क बिल्लाहि मिन् सैइत्

जालि-क मिन् फज़िल्लाहि अलैना व

अ-ल्लन्नासि व लाकिन्-न अक्सरन्नासि ला

यश्कुरून (३८) या साहिबयिस्-सिज्नि

अ-अबाबुम्-मुत-फरिक्कू-न खैरुन् अमिल्लाहुल्-

वाहिदुल्-कहहार ७ (३९) मा तअ-बुद्द-न मिन् इनिही इत्ला अस्मा-अन्

सम्मंतुमूहा अन्तुम् व आबाउकुम् मा अन्ज - लल्लाहु बिहा मिन् मुल्तानिन् ७

इनिह्वकुम् इत्ला लिल्लाहि ७ अ - म - र अल्ला तअ-बुद्द इत्ला इय्याहु ७

जालिकद-दीनुल्-कय्यिमु व लाकिन्-न अक्सरन्नासि ला यअ-लमून (४०)

या साहिबयिस्-सिज्नि अम्मा अहदुकुमा फ-यस्की रब्बहु खम् - रन् ८ व

अम्मल् - आखर फयुस् - लबु फ - तअकुलुत्तैर मिरअ - सिही ७ कुज़ियल् -

अम्मल्लजी फ्रीहि तस्तफितयान ७ (४१) व का-ल लिल्लजी अन् - न

अन्नह नाजिम् - मिन्हुमज - कुरनी अिन् - द रब्बि - क फ-अस्साहुशैतानु

जिक् - र रब्बिही फ - लबि - स फ़िस्सिज्नि बिज्ज-अ सिनीन (४२)

وَوَعَلَّ مَعَهُ الْجِنَّ فَنَبَّيْنَا إِلَيْهِمْ مَا فِي آيَاتِنَا وَلَقَدْ أَخَذْنَاهُ بَعَثَ الْأَنْفُسَ إِلَى الْأَرْضِ فَاعْلَمْ أَنَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَكَانَ مُعْتَدٍ أَنْ يُعَذِّبَ النَّاسَ لَمَّا هَارَوْا وَلَقَدْ جَاءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ وَلَكِنْ أَبَدُوا لَوْلَا إِدْرَاقٌ أَتَيْنَاهُمُ بِهِمْ فَلَا تُفْسِدُوا أَرْضَكُمْ وَلَا تَكُونُوا يُنَادِيهِمْ فِي ظُلُمٍ إِنَّ جَهَنَّمَ بَاطِنٌ لَّهُمْ هُنَا وَالْجَنَّةُ هُنَا لِمَنْ كَفَرَ بِاللَّهِ مِنْ دُونِهِ لَا يَسْمَعُ إِلَّا هَمْسًا وَلَهُ الْأَمْرُ هِيَ تَجْنَبُ الْعَيْنُ وَالْحَدِيدُ وَقَدْ هَمَّ أَنْ يَنْزِلَ فِيهَا مِنْ سَحَابٍ مِمَّنْ يَنْزِلُ فِي السَّمَاءِ فَاسْتَفْتَاهُ فِيهَا لَوْلَا طَافُ الْأَرْضِ بِشَرِّ النَّاسِ لَعَذَابُ اللَّهِ فِي الْآخِرَةِ وَلَقَدْ جَاءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ وَلَكِنْ أَبَدُوا لَوْلَا إِدْرَاقٌ أَتَيْنَاهُمُ بِهِمْ فَلَا تُفْسِدُوا أَرْضَكُمْ وَلَا تَكُونُوا يُنَادِيهِمْ فِي ظُلُمٍ إِنَّ جَهَنَّمَ بَاطِنٌ لَّهُمْ هُنَا وَالْجَنَّةُ هُنَا لِمَنْ كَفَرَ بِاللَّهِ مِنْ دُونِهِ لَا يَسْمَعُ إِلَّا هَمْسًا وَلَهُ الْأَمْرُ هِيَ تَجْنَبُ الْعَيْنُ وَالْحَدِيدُ وَقَدْ هَمَّ أَنْ يَنْزِلَ فِيهَا مِنْ سَحَابٍ مِمَّنْ يَنْزِلُ فِي السَّمَاءِ فَاسْتَفْتَاهُ فِيهَا لَوْلَا طَافُ الْأَرْضِ بِشَرِّ النَّاسِ لَعَذَابُ اللَّهِ فِي الْآخِرَةِ وَلَقَدْ جَاءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ وَلَكِنْ أَبَدُوا لَوْلَا إِدْرَاقٌ أَتَيْنَاهُمُ بِهِمْ فَلَا تُفْسِدُوا أَرْضَكُمْ وَلَا تَكُونُوا يُنَادِيهِمْ فِي ظُلُمٍ إِنَّ جَهَنَّمَ بَاطِنٌ لَّهُمْ هُنَا وَالْجَنَّةُ هُنَا لِمَنْ كَفَرَ بِاللَّهِ مِنْ دُونِهِ لَا يَسْمَعُ إِلَّا هَمْسًا وَلَهُ الْأَمْرُ هِيَ تَجْنَبُ الْعَيْنُ وَالْحَدِيدُ وَقَدْ هَمَّ أَنْ يَنْزِلَ فِيهَا مِنْ سَحَابٍ مِمَّنْ يَنْزِلُ فِي السَّمَاءِ فَاسْتَفْتَاهُ فِيهَا لَوْلَا طَافُ الْأَرْضِ بِشَرِّ النَّاسِ لَعَذَابُ اللَّهِ فِي الْآخِرَةِ

और उन के साथ दो और जवान भी जेल में वाजिल हुए। एक ने उन में से कहा कि (मैं ने स्वाब देखा है।) देखता (क्या) हूँ कि शराब (के लिए अंगूर) निचोड़ रहा हूँ। दूसरे ने कहा कि (मैं ने भी स्वाब देखा है।) मैं यह देखता हूँ कि अपने सर पर रोटियाँ उठाये हुए हूँ और जानवर उन में से खा रहे हैं (तो) हमें उन की ताबीर बता दीजिए कि हम तुम्हें नेक देखते हैं। (३६)

यूसुफ ने कहा कि जो खाना तुम को मिलने वाला है, वह आने नहीं पायेगा कि मैं इस से पहले तुम को उन की ताबीर बता दूँगा। यह उन (बातों) में से है, जो मेरे परवरदिगार ने मुझे सिखायी हैं। जो लोग खुदा पर ईमान नहीं लाते और आखिरत के दिन का इन्कार करते हैं, मैं उन का मजहब छोड़े हुए हूँ। (३७) और अपने बाप-दादा, इब्राहीम और इसहाक और याकूब के मजहब पर चलता हूँ हमें मुनासिब नहीं है कि किसी चीज को खुदा के साथ शरीक बनाएं। यह खुदा का फ़जल है, हम पर भी और लोगों पर भी। लेकिन अक्सर लोग शुक्र नहीं करते। (३८) मेरे जेलखाने के साथियो ! भला कई जुदा-जुदा आक्रा अच्छे या (एक) खुदा-ए-यक्ता व ग़ालिब। (३९) जिन चीजों को तुम खुदा के सिवा पूजते हो, वे सिर्फ़ नाम हैं, जो तुम ने और तुम्हारे बाप-दादा ने रख लिए हैं। खुदा मे उन की कोई सनद नाज़िल नहीं की। (सुन रखो कि) खुदा के सिवा किसी की हुकूमत नहीं है। उस ने इर्शाद फ़रमाया है कि उस के सिवा किसी की इबादत न करो। यही सीधा दीन है, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते। (४०) मेरे जेल के साथियो ! तुम में से एक (जो पहला स्वाब बयान करने वाला है, वह) तो अपने आक्रा को शराब पिलाया करेगा और जो दूसरा है, वह सूनी दिया जाएगा और जानवर उस का सर खा-खा जाएंगे। जो बात तुम मुझ से पूछते थे, उस का फ़ैसला हो चुका है। (४१) और दोनों शरूस्सों में से जिस के बारे में (यूसुफ ने) ख्याल किया कि वह रिहाई पा जाएगा, उस से कहा कि अपने आक्रा से मेरा जिक्र भी करना, लेकिन जैतान ने उन का अपने आक्रा से जिक्र करना भुला दिया और यूसुफ कई वर्ष जेलखाने ही में रहे। (४२) *

व कालत्मलिकु इन्नी अरा सब-अ ब-करातिन् सिमानिय्यअकुलुहुन्-न सञ्जुन्
 अजाफु व-व सब-अ सुम्बुलातिन् खुजिरव - व उख - र याबिसातिन् ७ या
 अय्युहल्मलउ अप्तुनी फी रुब्या-य इन् कुन्तुम् लिह्-अया तअ-बुरुन (४३)
 काल् अज्जासु अह्लामित् ८ व मा नहुन् बितअवीलिन् - अह्लामि

बिअलिमीन (४४) व कालल्जजी नजा
 मिन्हुमा वद-क-र बअ-द उम्मतिन् अन्त
 उनब्बिउकुम् बितअवीलिही फ - असिलून्

(४५) यूसुफु अय्युहस्सिद्दीकु अफितना फी
 सब्बि ब-क-रातिन् सिमानिय्यअकुलुहुन्-न
 सञ्जुन् अजाफु व - व सब्बि सुम्बुलातिन्
 खुजिरव - व उख - र याबिसातिल्लअल्ली

अजिअ इलन्नासि ल-अल्लहुम् यअ-लमून्
 (४६) का-ल तअ-रअ-न सब-अ सिनी-न
 द-अ-बन् ८ फमा हसत्तुम् फ-अरुहु फी

सुम्बुलिही इल्ला कलीलम् - मिम्मा
 तअकुलून् (४७) सुम्-म यअती मिम्बअ-दि

जालि-क सञ्जुन् शिदादु य्यअकुल-न मा कददम्तुम् लहुन्-न इल्ला कलीलम्-
 मिम्मा तुह्सिनुन् (४८) सुम्-म यअती मिम्बअ-दि जालि-क आमुन् फीहि
 युगासुन्नासु व फीहि यअ - सिरुन् * (४९) व कालल् - मलिकुअतूनी
 बिही ८ फलम्मा जा - अहर् - रसूलु कालजिअ - इला रब्बि - क फस्अल्हु
 मा बालुन्-निस्वतिल्लाती कत्तअ-न ऐदि-यहुन्-न ७ इन्-न रब्बी बिकैदिहिन्-न
 अलीम (५०) का-ल मा खत्बुकुन्-न इज् रावतुन-न यूसु - फ अन्
 नफिसही ७ कुल् - न हा - श लिल्लाहि मा अलिम्मा अलैहि मिन् सूइन्
 कालतिम्-र-अतुल् - अजीजिल्वा - न हस-ह-सल् - हक्कु अ-न रावतुह् अन्
 नफसिही व इन्हू लमिनस्सादिकीन (५१) जालि-क लियअ-ल-म अन्नी
 लम् अखुन्हु बिल्याबि व अन्नल्ला-ह ला यहदी कैदल्खाइनीन (५२)

وَسَمِعَ سُبُلَيْبُ خَطْمَهُ وَاعْرَبَسَ بِأَيْدِيهِ الْمَلِكُ أَفْشَرُ فِي
 دُعَائِهِ إِنَّ لَكُمْ لِلَّذِينَ اعْتَدَوْنَ قَالُوا أَصْنُفُ أَكْلاَمِهِ وَ
 مَا حُنَّ بِأَوْبِلِ الْأَحْلَامِ بِطِينٍ ۝ وَقَالَ الَّذِي تَجَاهَلُهَا
 وَذَكَرَ عَمْدَ أَعْمَى أَنَا أَنْتُمْ تَعْلَمُونَ قَارِيضِينَ ۝ يَوْمَئِذٍ
 الضُّلُوفُ أَفْئِتًا فِي سَمِيعٍ بِقَرَّتْ بِسَانٍ فَأَكَلْنَ سَمِيعَ عِمَامٍ
 وَسَمِعَ سُبُلَيْبُ خَطْمَهُ وَاعْرَبَسَ بِأَيْدِيهِ لَمَلِ الْأَمْرِ إِلَى النَّاسِ
 أَنْهَرُ يَسْلُوكُونَ ۝ قَالَ تَزْرَعُونَ سَمِيعَ سِينٍ دَابَّاهُ فَحَصَدْتُمْ
 فَذَرَوْنِي سُبُلَيْبُ الْأَقْلِيَاءُ مَا أَكَلْتُمْ ۝ تَوْبَاتِي مِنْ بَعْدِ
 ذَلِكَ سَمِعَ شِدَادُ الْخَلْقِ مَا ذَرَعْتُمْ لَهْنُ الْأَقْلِيَاءُ وَمَا
 تَحْصُونَ ۝ تَوْبَاتِي مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ عَامٍ فَوَيْلٌ لِلنَّاسِ
 فِيمَا يُعْصِرُونَ ۝ وَقَالَ الْمَلِكُ أَتُوبِي بِهِ قَالَتْ جَارَةٌ
 أَرَأَيْتَ قَالَ ارْجِعِي إِلَى رَبِّكَ مَثَلُهُ مَا بَالُ الشُّعُورِ الَّتِي
 تَقْعَنُ أَيْدِيَهُنَّ إِنَّ رَبِّي بِكَذِبِينَ عَلَيْهِ ۝ قَالَ مَا خَطْبُكَ
 إِذْ رَأَوْنِي بِذُنُوبٍ يَوْمَئِذٍ عَنْ نَفْسِهِ قَلْبًا حَاسِدًا فَمَا عَلَيْنَا
 عَلَيْهِ مِنْ شَيْءٍ قَالَتْ أَتَأْتِي الْعَرْشَ الْأَعْلَى وَالْحُجُوجُ حُجُوجُ
 أَنَا رَأَوْنَهُ عَنْ نَفْسِهِ وَإِنَّهُ لَمِنَ الضَّالِّينَ ۝ ذَلِكَ
 بِمَا كَانُوا يَفْعَلُونَ ۝ وَالْعَبْدُ الَّذِي لَمْ يَلْقَ اللَّهَ لَا يَلْقَى إِلَهًا إِلَّا يَزِينُ

और बादशाह ने कहा कि मैं (ने स्वाब देखा है।) देखता (क्या) हूँ कि सात मोटी गायें हैं, जिन को सात दुबली गायें खा रही हैं और सात हरी बालियाँ हैं और (सात) सूखी। ऐ सरदारो ! अगर तुम स्वाबों की ताबीर दे सकते हो, तो मुझे मेरे स्वाब की ताबीर बताओ। (४३) उन्होंने ने कहा, ये तो परेशान से स्वाब हैं और हमें ऐसे स्वाबों की ताबीर नहीं आती। (४४) अब वह शरूस, जो दोनों कैदियों में से रिहाई पा गया था और जिसे मुद्दत के बाद वह बात याद आ गयी, बोल उठा कि मैं आप को उसकी ताबीर (ला) बताता हूँ। मुझे (जेलखाने) जाने की इजाजत दीजिए। (४५) (गरज वह यूसुफ के पास आया और कहने लगा) यूसुफ ! ऐ बड़े सच्चे (यूसुफ !) हमें (इस स्वाब की ताबीर) बताइए कि सात मोटी गायों को सात दुबली गायें खा रही हैं और सात बालियाँ हरी हैं और सात सूखी ताकि मैं लोगों के पास जा (कर ताबीर बताऊँ), अजब नहीं कि वे (तुम्हारी कद्र) जानें। (४६) उन्होंने ने कहा कि तुम लोग सात साल लगातार खेती करते रहोगे, तो जो (अनाज) काटो तो थोड़े से अनाज के सिवा, जो खाने में आए, उसे बालियों ही में रहने देना। (४७) फिर इस के बाद (सूखे के) सात सलत (साल) आएंगे कि जो (अनाज) तुम ने जमा कर रखा होगा, वे उस सब को खा जाएंगे, सिर्फ वही थोड़ा-सा रह जाएगा, जो तुम एहतियात से रख छोड़ोगे। (४८) फिर इस के बाद एक साल ऐसा आएगा कि खूब मेंह बरसेगा और लोग उस में रस निचोड़ेंगे (४९) (यह ताबीर सुन कर) बादशाह ने हुक्म दिया कि यूसुफ को मेरे पास ले आओ। जब कासिद उन के पास गया, तो उन्होंने ने कहा कि अपने आका के पास वापस जाओ और उन से पूछो कि उन औरतों का क्या हाल है, जिन्होंने अपने हाथ काट लिए थे। बेशक मेरा परवर-दिगार उन के मर्कों को खूब जानता है। (५०) बादशाह ने (औरतों से) पूछा कि भला उस वक्त क्या हुआ था, जब तुमने यूसुफ को अपनी तरफ मायल करना चाहा। सब बोल उठीं कि 'हाशा लिल्लाह' हम ने उस में कोई बुराई नहीं मालूम की। अजीज की औरत ने कहा कि अब सच्ची बात तो जाहिर हो ही गयी है। (असल यह है कि) मैं ने उस को अपनी तरफ मायल करना चाहा था और वह बेशक सच्चा है। (५१) (यूसुफ ने कहा कि मैंने) यह बात इस लिए (पूछी है) कि अजीज को यक़ीन हो जाए कि मैं ने उस की पीठ पीछे उस की (अमानत में) खियानत नहीं की और खुदा खियानत करने वालों के मर्कों को (सीधा) रास्ता नहीं दिखाता। (५२) और मैं अपने आप को

तेरहवां पारः व मा उबरिउ

सूरतु यूसु-फ आयत ५३ से १११

व मा उबरिउ नपसी ८ इन्नन्फ - स ल-अम्मारतुम् - बिस्सू-इ इल्ला मा
रहि-म रब्बी ७ इन्-न रब्बी गफूर्रहीम (५३) व कालल्-मलिकुअतूनी
बिही अस्तखिलरहु लिनपसी ८ फ-लम्मा कल्ल - महु का - ल इन्नकल्-यो-म
लदेना मकीनुन् अमीन (५४) कालज्अत्नी अला खजा इनिल् - अजि ८

इन्नी हफीजुत् अलीम (५५) व कजालि-क मक्कन्ना लियूसु-फ फिल्अजि ८

य-त-बव्वउ मिन्हा हैसु यशाउ ७ नुसीबु
बिरहू-मतिना मन् नशाउ व ला नुजीअ

अजरल्-मुहिसनीन (५६) व ल-अजरल्-
आखिरति खैरलिल्लजी-न आमनू व कानू

यत्तकून् * (५७) व जा - अ इस्वतु

यूसु-फ फ-द-खलू अलैहि फ-अ-र-फहुम् व हुम्
लहू मुन्किरून (५८) व लम्मा जह-ह-ज-हुम्

बिजहाजिहिम् कालअतूनी बि - अखिल्लकुम्

मिन् अबीकुम् ८ अला तरौ - न अन्नी

ऊफिल्-कै-ल व अना खैरल्-मुन्जिलीन

وَمَا يَرَىٰ يُنْفِىٰ ۖ إِنَّ النَّفْسَ لَأَمَّارَةٌ بِالسُّوءِ ۚ إِنَّ مَا يُصَوِّرُ
إِنَّ رَبِّي غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝ وَقَالَ الْمَلِكُ الْتَمَزْتُ بِهِ اسْتَفْضَيْتُ بَطْنِي
فَلَمْ أَكُنْ ۖ قَالَ إِنَّكَ الْيَوْمَ لَكِنَّا مَكِينٌ ۖ أَيْبَنَ ۝ قَالَ جَعَلَنِي
عَلَىٰ خَزَائِنِ الْأَرْضِ ۖ إِنِّي حَفِيظٌ عَلَيْكَ ۝ وَكَذَلِكَ مَنَّ اللَّهُ عَلَىٰ
يُوسُفَ ۖ يَكُونُ أَمِينًا عَلَىٰ مَا يَشَاءُ ۖ يُصِيبُ بِرَحْمَتِهِ مَن يَشَاءُ
وَلَا يُضِلُّ أَجْرَ الْمُحْسِنِينَ ۝ وَلَكِنَّ الْأَخْيَرَ خَيْرٌ لِلَّذِينَ آمَنُوا
وَكَانُوا يَتَّقُونَ ۝ وَبَاءَ أَخُوهُ يُوسُفَ ۖ دَخَلُوا عَلَيْهِ فَتَعَرَّفُوا
فَهَمُّهُ لَمَّا رَأَوْهُ ۝ وَلَمَّا جَعَلَهُ مُبْتَلًى ۖ قَالَ الْتَمَزْتُ بِهِ
لَكُم مِّنْ بَنِي إِسْرَءِيلَ ۖ لَا تَرَوْنَ إِلَىٰ أَوْفَىٰ الْكَيْلِ وَأَنَّا لَمُتَّغِينَ
فَإِنَّ لَكُمْ تَأْوِيلَ بِهِ ۖ فَلَا كَيْلَ لَكُمْ عِنْدِي وَلَا تَعْرَبُونَ ۝ قَالَ
سَمِعُوا وَعَسَىٰ أَنهَ ۖ وَأَنَّا لَمُتَّغِينَ ۝ وَقَالَ يَفْتَخِرُونَ ۖ جَعَلُوا
بِضَاعَهُمْ فِي بَعَادَةِ لَعَلَّهُمْ يَجْعِدُونَهَا ۖ إِذَا انْقَلَبُوا إِلَىٰ أَهْلِهِمْ
لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ۖ فَلَمَّا رَجَعُوا إِلَىٰ أَهْلِهِمْ قَالُوا يَا أَبَانَا مَن مِّنْ
الْكَيْلِ فَأَمْسَلَ مَعَهُ ۖ إِنَّا كُنَّا لَمُتَّغِينَ ۖ وَقَالَ لَطُفْلُونَ ۖ قَالَ
مَنْ أَمْسَلَ عَلَيْكَ إِلَّا أَنَا ۖ أَمْسَلْتُ عَلَىٰ أَخِيهِ ۖ مَن قَبْلُ ۖ فَانَّهُ
خَيْرٌ حَفِيظٌ ۖ وَهُوَ رَحِيمٌ ۖ وَلَمَّا انْقَلَبُوا لَعَلَّهُمْ يَجْعِدُوا
بِضَاعَهُمْ رَوَتْ لَهُمْ قَالُوا يَا أَبَانَا مَا نَبْئُكَ ۖ فَذَكَرَ لَهُ

(५९) फइल्लम् तअतूनी बिही फला कै-ल लकुम् अिदी व ला तवरबून
(६०) कालू सनुराविदु अन्हु अबाहु व इन्ना लफाअिलून (६१) व का-ल
लिफ्तयानिहिज्-अलू बिज्जा-अ-तहुम् फी रिहालिहिम् ल-अल्लहुम् यअ-रिफूनहा
इज्क-लबू इला अहिलहिम् ल-अल्लहुम् यजिअून (६२) फ-लम्मा र-ज-अ
इला अबीहिम् कालू या अबाना मुनि - अ मिन्तल्कैलु फ - असिल्
म-अना अखाना नक्तल् व इन्ना लहू लहाफिजून (६३) का-ल हल्
आमनुकुम् अलैहि इल्ला कमा अमिन्नुकुम् अला अखीहि मिन्
कब्लु ७ फल्लाहु खैरल् हाफिजब् व हु - व अहंमु-राहिमीन (६४)

पाक-साफ नहीं कहता, क्यों कि नपसे अम्मार (इंसान को) बुराई ही सिखाता रहता है, मगर यह कि मेरा परवरदिगार रहम करे। बेशक मेरा परवरदिगार बल्लशने वाला मेहरबान है। (५३) बादशाह ने हुक्म दिया कि उसे मेरे पास लाओ। मैं उसे अपना खास मुसाहिब बनाऊंगा। फिर जब उन से बातें कीं तो कहा कि आज से तुम हमारे यहां दर्जे वाले और एतबार वाले हो। (५४) (यूसुफ ने) कहा, मुझे इस मुल्क के खजानों पर मुकर्रर कर दीजिए, क्यों कि मैं हिफाजत भी कर सकता हूं और इस काम को जानता हूं। (५५) इस तरह हम ने यूसुफ को मुल्क (मिस्र) में जगह दी और वह उस मुल्क में जहां चाहते थे। रहते थे हम अपनी रहमत जिस पर चाहते हैं, करते हैं और नेक लोगों के अज्र को बर्बाद नहीं करते। (५६) और जो लोग ईमान लाए और डरते रहे, उन के लिए आखिरत का अज्र बहुत बेहतर है। (५७) ✱

और यूसुफ के भाई (कन्आन से मिस्र में गल्ला खरीदने के लिए) आए तो यूसुफ के पास गये तो यूसुफ ने उनको पहचान लिया और वह उनको न पहचान सके। (५८) जब यूसुफ ने उनके लिए उन का सामान तैयार कर दिया तो कहा कि (फिर आना तो) जो बाप की तरफ से तुम्हारा एक और भाई है, उसे भी मेरे पास लेते आना। क्या तुम नहीं देखते कि मैं नाप भी पूरी-पूरी देता हूं और मेहमानदारी भी खूब करता हूं। (५९) और अगर तुम उसे मेरे पास न लाओगे, तो न तुम्हें मेरे यहां से गल्ला मिलेगा, और न तुम मेरे पास ही आ सकोगे। (६०) उन्होंने ने कहा कि हम उस के बारे में उसके वालिद से तज्किरा करेंगे और हम यह (काम) करके रहेंगे। (६१) और (यूसुफ ने) अपने नौकरों से कहा कि उन का सरमाया (यानी गल्ले की कीमत) उन के शलीतों में रख दो। अबब नहीं कि जब ये अपने बाल-बच्चों में जाएं तो उसे पहचान लें (और) अबब नहीं कि ये फिर यहां आएँ। (६२) जब वे अपने बाप के पास वापस गए तो कहने लगे कि अब्बा ! (जब तक हम बिन यामीन को साथ न ले जाएँ) हमारे लिए गल्ले की पाबंदी कर दी गयी है, तो हमारे साथ हमारे भाई को भेज दीजिए, ताकि हम फिर अनाज लाएं और हम इस के निगेहबान हैं। (६३) (याकूब ने) कहा कि मैं इस के बारे में तुम्हारा एतबार नहीं करता, मगर बेसा ही जैसा पहले इस के भाई के बारे में किया था, सो खुदा ही बेहतर निगेहबान है और वह सब से ज्यादा रहम

व लम्मा क-तहू मताअहुम् व-जहू बिज्ञा-अ-तहुम् रुददत् इलेहिम् १ काल
या अबाता मा नगी १ हाजिही बिज्ञाअतुना रुदवत् इलेना ८ व नमीह
अह-लना व नहफज्जु अल्लाना व नरदादु कै-ल बओरिन् १ जालि-क कैलुं ध्यसीर
(६५) काल-लन् उसि-लहू म-अकुम् हत्ता तुअतूनि मौसिकम्-मिनल्लाहि

त-तअतुन्ननी बिही इल्ला अंग्युदा-त बिकुम्
फ-तम्मा आतोहु मौसिकहुम् कालल्लाहु अला
मा नकूलु वकील (६६) व का-ल या
बनिय-य ला तदखुलू मिम्बाबिन्वाहिदिन्वदखुलू

मिन् अब्बाबिम् - मुतफरिक्कतिन् ५

व मा उरुनी अन्कुम् मिनल्लाहि मिन्

शैइन्न ۞ इनिलहकम् इल्ला लिल्लाहि ۞

अलैहि तवकलत ८ व अलैहि

फल-य-त-वक्कलिल-मु-त-वक्किलन (६७) व

लम्मा द-ख-ल मिन ह्यस अ-म-रहम अबहम

— — — — —

मा कान्ति युग्मा अन्धुम् मिनल्लाहि मिन्

शइन् इल्ला हाज-तन् फी नफ़्स यअ-कू-ब

कञ्जाहा ५ व इन्नहू लजू अलिमल्लिमा अ

ला यञ्-लभून् * (६८) व लम्मा द-स

अखाहु का-ल इन्नी अ-न असू-क फला
 (१०) न-न-न न-न न-न विजयविजि

(६६) फ्र-लम्मा जह-ह-प-हुन् विजहाजिह
अस्वीदि सम्-म अज्ज - न मअज्जिनन् अ

(੧੯੯) ਕਾਲ ਵ ਅਕਬਲ ਅਲੈਹਿਮ ਮਾਤ

नफ़क्रिदू सुवाअल्-मलिकि व लिमन् जा -

अना बिही जमीन (७२) कालू त

जिम्ना लिनुफ्सि-द फ़िल्अज़ि व मा कु

क्रमा जज्ञाउहू इन् कुत्तुम् काजिबीन

मंजुजि-द फी रहिलही फहु-व जजाउहू, क

करने वाला है। (६४) और जब उन्होंने अपना सामान देखा कि उन का सरमाया उन को वापस कर दिया गया है' कहने लगे, अब्बा! हमें (और) क्या चाहिए? (देखिए) यह हमारी पूजी हमें वापस कर दी गयी है। अब हम अपने बाल-बच्चों के लिए फिर गल्ला लाएंगे और अपने भाई की निगेहबानी करेंगे और एक ऊंट बोझ ज्यादा लाएंगे (कि) यह अनाज (जो हम लाए हैं) बोझ है। (६५) (याकूब ने) कहा कि जब तक तुम खुदा का अहद न दो कि उस को मेरे पास (सही व सलाम) ले आओगे, मैं इसे हरगिज तुम्हारे साथ नहीं भेजने का, मगर यह कि तुम घेर लिए जाओ (यानी बे-बस हो जाओ तो भयबूरी है)। जब उन्होंने ने उन से अहद कर लिया, तो (याकूब) ने कहा कि जो कौल व क़रार हम कर रहे हैं, उस का खुदा वकील (जामिन) है। (६६) और हिदायत की कि बेटा! एक ही दरवाजे से दाखिल न होना, बल्कि अलग-अलग दरवाजों से दाखिल होना और मैं खुदा की तद्बीर तो तुम से नहीं रोक सकता। (बेशक) हुक्म उसी का है। मैं उसी पर भरोसा रखता हूँ और भरोसे वालों को उसी पर भरोसा रखना चाहिए। (६७) और जब वे उन-उन जगहों से दाखिल हुए, जहाँ-जहाँ से (दाखिल होने के लिए) बाप ने उन से कहा था तो वह तद्बीर खुदा के हुक्म को ज़रा भी टाल नहीं सकती थी। हां, वह याकूब के दिल की स्वाहिश थी, जो उन्होंने ने पूरी की थी और बेशक वह इल्म वाले थे, क्योंकि हम ने उन को इल्म सिखाया था, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते। (६८) ✱

और जब वे लोग यूसुफ के पास पहुंचे तो यूसुफ ने अपने सगे भाई को अपने पास जगह दी और कहा कि मैं तुम्हारा भाई हूँ तो जो सुलूक ये (हमारे साथ) करते रहे हैं, इस पर अफ़सोस न करना। (६९) जब उन का सामान तैयार कर दिया, तो अपने भाई के शलीते में गिलास रख दिया, फिर (जब वे आबादी से बाहर निकल गये तो) एक पुकारने वाले ने आवाज़ दी कि काफ़िले वालो! तुम तो चोर हो।' (७०) वे उन की तरफ़ मुतवज्जह हो कर कहने लगे कि तुम्हारी क्या चीज़ खोयी गयी है। (७१) वह बोले कि बादशाह (के पानी पीने) का गिलास खोया गया है और जो शख्स उस को ले आए, उस के लिए एक ऊंट बोझ (इनाम) और मैं उस का जामिन हूँ। (७२) वे कहने लगे कि खुदा की क़सम! तुम को मालूम है कि हम (इस) मुल्क में इस लिए नहीं आए कि खराबी करें और न हम चोरी किया करते हैं। (७३) बोले कि अगर तुम झूठे निकले (यानी चोरी साबित हुई) तो उस की सज़ा क्या है? (७४) उन्होंने ने कहा कि उस की सज़ा यह कि जिस के शलीते में वह मिले, वही उस का बदल क़रार दिया जाए। हम ज़ालिमों को यही सज़ा

१. पुकारने वाले ने उन को सच में चोर समझा था, क्योंकि उन को यह मालूम न था कि हज़रत यूसुफ़ अब्रह-मलाम ने यह तद्बीर की है।

फ-ब-द-अ बिओअयतिहिम् कब्-ल विअ-इ अखीहि मुम्मस्तख-र-जहा मिन्विअ-इ
अखीहि कजालि - क किदना लियसु-फ मा का - न लियअखु-ज अखाहु
फी दीनित्मलिकि इल्ला अय्यशअल्लाहु नफअु द - र - जातिम् - मन
नशाउ व फौ - क कुल्लि जी अलिम्नु अलीम (७६) कालू

इय्यस्त्रिक् फ-कद् स-र-क अखुल्लहू मिन्
कब्लु ८ फ - असरहा यूसुफु फी नफसिही
व लम् युब्दिहा लहुम् ८ का-ल अन्तुम्
शरम्-मकानन् ८ वल्लाहु अज् - लमु बिमा
तसिफून (७७) कालू या अय्युहल्-अजीजु
इन-न लहु अ-बन् शैखन् कबीरन् फखुज्
अ - ह - दना मकानहू ८ इन्ना नरा - क
मिनल्मुहसिनीन (७८) का-ल मअजल्लाहि
अन्नअखु-ज इल्ला मव्व-जदना मता-अना
अिन्दहू ॥ इन्ना इजल्लजालिमून

★ (७६) फ-लम्मस्तै-असू मिन्हु ख - लम्
नजियत् ८ का-ल कबीरहुम् अ-लम् तअ-लम्
अन-न अबाकुम् कद् अ-ख-ज अलैकुम् मौसिकम्-

मिनल्लाहि व मिन् कब्लु मा फरत्तुम् फी
हत्ता यअज-न ली अबी औ यहकुमल्लाहु ली ८ व हु-व खैरुल्-हाकिमीन
(८०) इजिअ इल्ला अबीकुम् फकूल या अबाना इन्नब-न-क स-र-क ८
व मा शहिदना इल्ला बिमा अलिम्ना व मा कुन्ना लिताबि हाफिजीन
(८१) वस् - अलिल् - कयतल्लती कुन्ना फीहा वल्-ओरल्लती अकबल्ला
फीहा ८ व इन्ना लसादिकून (८२) का-ल वल् मव्व-लत् लकुम् अन्फुसुकुम्
अमरन् ८ फ - सब - रुन् जमीलुन् ८ अ-सल्लाहु अय्यअतियनी बिहिम् जमीअन्
इन्नुहू हुवल्-अलीमुल्-हकीम (८३) व त-वल्ला अन्हम् व का-ल या अ-सफा
अला यूसु-फ वय्यज्जत् अताहु मिनल्हुज्जिन् फहु-व कजीम (८४) कालू तल्लाहि
नफ-नउ तज्जुह यूसु-फ हत्ता तकून ह-र-ज्जत् औ तकून मिनल्-हालिमीन (८५)

وَالْأَسْفَلِ ۝ كَذَلِكَ يَذْكُرُ الْيُوسُفَ مَا كَانَ لِيُخَدَّ أَحَاهُ فِي وَبِنِ الْمَلِكِ إِلَّا أَنْ
يَشَاءَ اللَّهُ تَرْفَعُ دَرَجَاتٍ مَنْ تَشَاءُ وَفَوْقَ كُلِّ عَلَمٍ عَلَيْهِ ۝
قَالُوا إِنِّي بِكَ لَوَقَّافِينَ إِنَّكَ مِنْ أَهْلِ قَوْمٍ لَمُتَ عَنْهُمْ الْيُوسُفُ فِي
نَفْسِهِ وَلَمْ يُبَيِّهْهَا لَهُمْ قَالُوا أَنْتُمْ تَحْكُمُونَ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا
تَصِفُونَ ۝ قَالُوا يَا أَيُّهَا الْعَزِيزُ إِنَّ لَهُ أَهْلًا بِأَهْلِكَ أَفَتُخَذِّلُ أَسَدَنَا
مَكَانَهُ إِنَّا نَرَاكَ مِنَ الْمُحْسِنِينَ ۝ قَالَ مَعَادُ اللَّهِ إِنَّ تُخَذِّلُونَا
مِنْ وَجَدْنَا مَعَا عِنْدَهُ إِنَّا إِنْ أَرَادْنَا لَظْلِمُونَ ۝ فَلَمَّا اسْتَمْتَعُوا بِهِ
خَلَعُوا أَجْمَعًا قَالُوا كَيْفَ نُحْكِمُكَ لَهُمْ أَنْ تُبَاهِيَ قَوْمًا أَخْلَ عَلَيْهِمْ
قُوَّةٌ قَوْمِ اللَّهِ وَمِنْ قَبْلِ مَا تَقْضِيهِمْ يَوْمَ يَكُنُ لِمَنْ يَرَى الْأَرْضَ
سَعًى يَأْتِي فِي آيٍ أَوْ يُخَذِّلُ اللَّهُ فِي وَهُوَ خَيْرُ الْحَاكِمِينَ ۝ إِجْعَلُوا
إِلَى أَيْتِكُمْ قَوْلُوا يَا أَبَانَا إِنَّ لَكَ عِنْدَ رَبِّكَ إِدْعَاءً فَأَعْبَدْنَا
وَمَا لَنَا الْغَيْبِ حَافِظِينَ ۝ وَنَسِىَ الْفَرِيضَةَ الَّتِي كَانَتْهَا وَالْغِيصَ
الَّتِي أَقْبَلْنَا فِيهَا وَإِنَّا لَصَادِقُونَ ۝ قَالَ بَلْ سَوَّلَتْ لَكُمْ أَنْفُسُكُمْ
أَمْرًا فَصَبِرُوا جِئْتُكُمْ بِهَذَا خَبِيرًا ۝ إِنَّهُ
هُوَ الْعَزِيزُ الْعَلِيمُ ۝ وَتَوَلَّى عَنْهُمْ وَقَالَ يَأْسَى عَلَى يُوسُفَ
وَأَيْسَئَتْ عَيْنُهُ مِنَ الْغَمِّ فَوَقَّظِيهِ ۝ قَالُوا إِنَّا لَنَنصُوهُ
لَذِكْرُ يُوسُفَ حَتَّى تَكُونَ حَرَضًا أَوْ تَكُونَ مِنَ الْهَاجِرِينَ ۝

दिया करते हैं। (७५) फिर यूसुफ ने अपने भाई के शलीते से पहले उन के शलीतों को देखना शुरू किया। फिर अपने भाई के शलीते में से उस को निकाल लिया। इस तरह हम ने यूसुफ के लिए तद्बीर की (बरन्) बादशाह के कानून के मुताबिक वह खुदा की मशीयत के सिवा अपने भाई को नहीं ले सकते थे। हम जिस के चाहते हैं दर्ज बुलन्द करते हैं और हर इल्म वाले से दूसरा इल्म वाला बड़ कर है। (७६) (यूसुफ के भाइयों ने) कहा कि अगर इस ने चोरी की हो तो (कुछ अजब नहीं कि) इस के एक भाई ने भी पहले चोरी की थी। यूसुफ ने इस बात को अपने दिल में छिपाए रखा और उन पर जाहिर न होने दिया (और) कहा कि तुम बड़े बद-कामाश (दुष्ट) हो और जो तुम बयान करते हो, खुदा उसे खूब जानता है (७७) वे कहने लगे कि ऐ अजीज ! इस के बालिद बहुत बूढ़े हैं (और इस से बहुत मुहब्बत रखते हैं) तो (उस को छोड़ दीजिए और) उस की जगह हम में से किसी को रख लीजिए, हम देखते हैं कि आप एहसान करने वाले हैं। (७८) (यूसुफ ने) कहा कि खुदा पनाह में रखे कि जिस शस्स के पास हम ने अपनी चीज पायी है, उस के सिवा किसी और को पकड़ लें। ऐसा करें तो हम (बड़े) बे-इसाफ हैं। (७९) ★

जब वे इस से ना-उम्मीद हो गये तो अलग हो कर सलाह करने लगे। सब से बड़े ने कहा, क्या तुम नहीं जानते कि तुम्हारे बालिद ने तुम से खुदा का अहद लिया है और इस से पहले भी तुम यूसुफ के बारे में कुमूर कर चुके हो, तो जब तक बालिद साहब मुझे हुक्म न दें, मैं तो इस जगह से हिलने का नहीं या खुदा मेरे लिए कोई और तद्बीर करे और वह सब से बेहतर फ़ैसला करने वाला है। (८०) तुम सब बालिद साहब के पास जाओ और कहो कि अब्बा ! आप के साहबजादे ने (वहां जा कर) चोरी की और हम ने तो अपने जानते आप से (उस के ले आने का) अहद किया था, मगर हम ग़ैब (की बातों) के (जानने और) याद रखने वाले तो नहीं थे। (८१) और जिस बस्ती में हम (ठहरे) थे, वहां से (यानी मिस्र वालों से) और जिस क़ाफ़िले में आए हैं, उस से पूछ लीजिए और हम (इस बयान में) बिल्कुल सच्चे हैं। (८२) (जब उन्होंने ये बात याकूब से आ कर कही तो) उन्होंने ने कहा (कि हकीकत यों नहीं है), बल्कि यह बात तुम ने अपने दिल से बना ली है, तो सब्र ही बेहतर है। अजब नहीं कि खुदा इतने सब को मेरे पास ले आए। बेशक वह जानने वाला (और) हिक्मत वाला है। (८३) फिर उन के पास से चले गये और कहने लगे कि हाय अफ़सोस, यूसुफ ! (हाय अफ़सोस !) और रंज व दुख में (इस क़दर रोये कि) उन की आंखें सफ़ेद हो गयीं और उन का दिल ग्रम से भर रहा था। (८४) बेटे कहने लगे कि खुदा की क़सम ! अगर आप यूसुफ को इसी तरह याद ही करते रहेंगे, तो या तो बीमार हो जाएंगे या जान ही दे

१. इब्राहीमी शरीअत में चोर की सज़ा यह थी कि जिस की चोरी की हो, उस को एक वर्ष तक मम्लूक गुलाम बना कर रखा जाए, इस के बाद छोड़ दिया जाए। यही सज़ा यूसुफ अलैहिस्सलाम के भाइयों ने बयान की और इसी के मुताबिक बिन यामीन को ले लिया गया, वरना मिस्र का क़ानून तो यह था कि चोर को मारें-पीटें और चोरी के माल से दोगुना जुर्माना ले लें और यह क़ानून इजाज़त नहीं देता था कि जिस के पास से चीज निकले, उस को पकड़ लिया जाए। गरज यह तद्बीर हुज़रत यूसुफ ने इस लिए की थी कि उन को मालूम था कि याकूब की शरीअत में चोर की सज़ा उसे गिरफ़्तार कर के एक साल तक गुलाम बना रखना है और इसी से वह अपने मक़सद में कामयाब रहे।

२. उस के एक भाई से उन की मुराद यूसुफ अलैहिस्सलाम थे, क्योंकि बिन यामीन और यूसुफ एक मां से थे और (शेष पृष्ठ ३८६ पर)

का-ल इन्नमा अशू बस्सी व हुजनी इल्लाहि व अल-मु मिनल्लाहि मा
ला तअ-लमून (८६) या बनिथ्यजहबू फ त-हस्ससू मिय्यू-सु-फ व अखीहि व ला
तै-असू मिर्रीहिल्लाहि इन्नहू ला यै-असु मिर्रीहिल्लाहि इल्लल्-कौमुल्-
काफिरून (८७) फ-लम्मा द-खलू अलैहि कालू या अय्युहल्-अजीजु मस्सना

व अह-ल-नज्जबू व जिअना बिबिज्जाअतिम्-
मुज्जातिन् फ-ओफि लनल्कै-ल व त-सद-दक्
अलैना इन्नल्ला-ह यज्जिल्-मु-त-सदिदकीन
(८८) का-ल हल् अलिम्तुम् मा फ-अल्तुम्

बियूसु-फ व अखीहि इज् अन्तुम्
जाहिलून (८९) कालू अ-इन्न-क ल-अन्-त
यूसुफु का - ल अ-न यूसुफ व हाजा
अखी कद् मन्ल्लाहु अलैना

इन्नहू मय्यत्कि व यस्बर् फइन्नल्ला-ह
ला युजीअ अजरल्-मुहिसनीन (९०)

कालू तल्लाहि ल-कद् आस-र-कल्लाहु अलैना
व इन् कुन्ना ल - खातिईन (९१)

का-ल ला तस्री-व अलैकुमुल् - यो - म यरिफरल्लाहु लकुम् व हु - व
अहमुर-राहिमीन (९२) इजहबू बिकमीसी हाजा फ-अल्कूहु अला वजिह
अबी यय्ति बसीरन् व अतूनी बिअहिलकुम् अज्मअीन (९३)

व लम्मा फ-स-लतिल्-अीर का-ल अबूहुम् इन्नी ल-अजिदु री-ह यूसु-फ लौला
अन् तुफन्निदून (९४) कालू तल्लाहि इन्न-क लफी जलालिकल्-कदीम (९५)
फ-लम्मा अन् जा-अल्-बशीर अल्काहु अला वजिहही फतद् - द बर्सा-रन्

का-ल अ-लम् अकुलकुम् इन्नी अअ-लमु मिनल्लाहि मा ला तअ-लमून
(९६) कालू या अबानस्तगिफ् लना जुनूबना इन्ना कुन्ना खातिईन (९७)
का-ल सौ-फ अस्तगिफ् लकुम् रब्बी इन्नहू हुबल्-गफूरहीम (९८)

قَالَ اِنَّكَ اَنْتَ اَرِيٌّ وَحُرِّيٌّ اِلَى اللّٰهِ وَاَعْلَمُ مِنَ اللّٰهِ اَلَا تَتَلَوْنَ
يٰ بَنِي اٰدَمَ فَاَتَمُّوا مِنْ يُّوسُفَ وَآخِضُوْا وَلَا تَتَّبِعُوا مِنْ دُوْرِهِ
اللّٰهُ اِنَّهُ لَا يَهْدِيْ مَنْ يُّوْسُفَ مِنْ دُوْرِهِ اِلَّا الْقَوْمَ الْكَافِرِيْنَ ۝ لَمَّا
وَعَلَوْ عَلَيْهِ قَالُوْا يَا اَيُّهَا الْعَبْدُ مَسْنَا وَاهَلْنَا الضُّرَّ وَجَعَلْنَا
بِيْسَاعًا مِّنْ جِسْمٍ قَالُوْا لَنَا الْكِيلُ وَتَصَدَّقْ عَلَيْنَا اِنَّ اللّٰهَ
يَجْزِي الْمُتَصَدِّقِيْنَ ۝ قَالَ هَلْ عَلِمْتُمْ مَّا فَعَلْتُمْ بِيُّوسُفَ وَ
آخِضُوْا اِذَا اَنْتُمْ جَاهِلُوْنَ ۝ قَالُوْا اِنَّكَ لَا تَذِكُّنَا اَنْتَ اَنْتَ اَوَّلُ
وَهَذَا اَمْرٌ قَدَمْنِ اللّٰهِ عَلَيْنَا اِنَّهٗ مِنْ رَّبِّيْ وَيُضَيِّقُ عَلَيْنَا
لَا نُجِيْهِ اَجْرَ الْمُصْنِفِيْنَ ۝ قَالُوْا اَلَمْ نَقْدِرْ لَكَ اللّٰهُ عَلَيْنَا وَا
اِنَّ لَنَا لَلْغَاطِيْنَ ۝ قَالَ لَا تَرْجِعْ عَلَيْنَا الْيَوْمَ يُغْفِرُ اللّٰهُ لَكُمْ
وَهُوَ اَرْحَمُ الرَّاحِمِيْنَ ۝ اِذْ هَبُوا بَيُّوسُفَ هٰذَا اَلْقَوْهُ عَلَى
جَبَلٍ اَوْ يَابٍ يَبِيْضٍ ۝ اَتَوْنِيْ بِأَعْيُنِكُمْ اَجْمَعِيْنَ ۝ وَلَمَّا تَصَدَّقَ
الْعَبْدُ قَالَ اٰتَوْهُمْنِيْ اِنْ كُنْتُمْ رِجْمُ يُّوسُفَ لَوْ اَنَّكُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝
قَالُوْا اَلَمْ نَقْدِرْ لَكَ لَعْنُ صَلَاحِ الْعَبْدِ ۝ فَلَمَّا اَنَّ جَاءَ الْبَشِيْرَ
اَلَّهُ عَلَى وَجْهِهِ ۝ فَارْتَدَّ بَيُّوسُفَ ۝ قَالَ اَلَمْ اَقُلْ لَّكُمْ اِنِّيْ اَعْلَمُ
مِنْ اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ۝ قَالُوْا يَا اَيُّهَا السَّخِرُ لَمَّا اَدْبَارُكَ اَلَا تَأْتَا
خَطِيْئِيْنَ ۝ قَالَ سَوَءٌ اَسْتَغْفِرُ لَكُمْ اِنَّهٗ هُوَ الْعَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ۝

दगे। (८५) उन्होंने ने कहा कि मैं तो अपने गम व दुख को खुदा से ही बाहिर करता हूँ और खुदा की तरफ से वह बातें जानता हूँ, जो तुम नहीं जानते। (८६) बेटा ! (यों करो कि एक बार फिर) जाओ और यूसुफ और उस के भाई को खोजो और खुदा की रहमत से ना-उम्मीद न हो कि खुदा की रहमत से बे-ईमान लोग ना-उम्मीद हुआ करते हैं। (८७) जब वे यूसुफ के पास गए तो कहने लगे कि अजीब ! हमें और हमारे बाल-बच्चों को बड़ी तकलीफ हो रही है और हम थोड़ी सी पूँजी लाए हैं। आप हमें (इस के बदले) पूरा अनाज दीजिए और ख़ैरात कीजिए कि खुदा ख़ैरात करने वालों को सवाब देता है। (८८) (यूसुफ ने) कहा, कि तुम्हें मालूम है कि जब तुम ना-दानी में फंसे हुए थे तो तुम ने यूसुफ और उस के भाई के साथ क्या किया था ? (८९) वे बोले, क्या तुम्हीं यूसुफ हो ? उन्होंने ने कहा, हाँ मैं ही यूसुफ हूँ और (बिन यामीन की तरफ इशारा कर के कहने लगे), यह मेरा भाई है। खुदा ने हम पर बड़ा एहसान किया है। जो शस्स खुदा से डरता और सन्न करता है तो खुदा नेक लोगों का बदला बर्बाद नहीं करता। (९०) वे बोले, खुदा की क़सम ! खुदा ने तुम को हम पर फ़ज़ीलत बख़्शी है और बेशक हम ख़ताकार थे। (९१) (यूसुफ ने) कहा कि आज के दिन (से) तुम पर कुछ इताब (व मलामत) नहीं है। खुदा तुम को माफ़ करे और वह बहुत रहम करने वाला है। (९२) यह मेरा कुरता ले जाओ और इसे वालिद साहब के मुँह पर डाल दो। उन की रोशनी वापस आ जाएगी और अपने तमाम बाल-बच्चों को मेरे पास ले आओ। (९३) और जब क़ाफ़िला (मिस्ल से) रवाना हुआ, तो उन के वालिद कहने लगे कि अगर मुझ को यह न कहो कि (बूढ़ा) बहक गया है, तो मुझे तो यूसुफ की बू आ रही है। (९४) वे बोले कि खुदा की क़सम ! आप उसी पुरानी ग़लती में पड़े हुए हैं। (९५) जब खुशख़बरी देने वाला आ पहुँचा तो कुरता याक़ूब के मुँह पर डाल दिया और उन की रोशनी लौट आयी, (और बेटों से कहने लगे), क्या मैं ने तुम से नहीं कहा था कि मैं खुदा की तरफ़ से वे बातें जानता हूँ, जो तुम नहीं जानते। (९६) बेटों ने कहा कि अब्बा ! हमारे लिए हमारे गुनाह की मफ़िरत माँगिए, बेशक हम ख़ताकार थे। (९७) उन्होंने ने कहा कि मैं अपने परवरदिगार से तुम्हारे लिए बख़्शिश माँगूंगा।

(पृष्ठ ३८७ का शेष)

वे दूसरी माओं से, मगर यूसुफ अलैहिस्सलाम ने कभी चोरी नहीं की और यूसुफ जैसा शस्स चोरी कर सकता ही नहीं। जिस वाक़िए को उन लोगों ने चोरी क़रार दिया, वह यों हुआ था कि जब यूसुफ पैदा हुए, तो उन की फ़की उन की परवरिश करने लगी और वह उन से निहायत मुहब्बत रखती थीं। जब आप कुछ साल के हुए तो याक़ूब अलैहिस्सलाम बहन के पास आए और कहा कि अब यूसुफ को दे दो। वह उन को अपने से दम भर जुदा करना भी ग़बारा नहीं कर सकती थीं। उन्होंने ने कहा खुदा की क़सम ! मैं इस को अपने से अलग नहीं करूँगी। तुम इसे कुछ मुह्त और मेरे पास रहने दो, ताकि मैं इसे देख-देख कर दिल ठंडा करती रहूँ। जब याक़ूब अलैहिस्सलाम बहन के पास से बाहर चले गये तो उन्होंने ने यूसुफ को अपने पास रखने की क्या तद्बीर की कि हज़रत इस्हाक़ का एक पटका उन के पास था, जो मीरास के तौर पर उस शस्स को मिलता था, जो सब में बड़ा होता था और चूँकि याक़ूब अलैहिस्सलाम की यह बहन सब में बड़ी थीं, इस लिए वह उन को मिला था, तो उन्होंने ने वह पटका यूसुफ की कमर से बांध दिया और मशहूर यह किया कि पटका गुम हो गया है और उसे खोजना शुरू किया। जब खोजने पर न मिला तो कहा कि घर वालों की जामा तलाशी करनी चाहिए। जामा तलाशी की तो यूसुफ की कमर से बंधा हुआ मिला। तब कहा कि उस ने मेरी चोरी की है, इस लिए मैं इसे छोड़ने की नहीं और इस

(शेष पृष्ठ ३८१ पर)

बेशक वह बरूशने वाला मेहरबान है। (६८) जब (ये सब लोग) यूसुफ के पास पहुंचे, तो यूसुफ ने अपने मां-बाप को अपने पास बिठाया और कहा कि भिख में दाखिल हो जाइए। खुदा ने चाहा तो अमन व सुकून में रहिएगा। (६९) और अपने मां-बाप को तख्त पर बिठाया और सब यूसुफ के आगे सज्दे में गिर पड़े और (उस वक्त) यूसुफ ने कहा, अब्बा जान ! यह मेरे उस स्लाब की ताबीर है, जो मैं ने पहले (बचपन में) देखा था। मेरे परवरदिगार ने उसे सच कर दिया और उस ने मुझ पर (बहुत से) एहसान किए हैं कि मुझ को जेलखाने से निकाला और इस के बाद कि शतान ने मुझ में और मेरे भाइयों में फसाद डाल दिया था, आप को गांव से यहां लाया। बेशक मेरा परवरदिगार जो चाहता है तदबीर से करता है। वह जानने वाला (और) हिकमत वाला है। (१००) (जब ये सब बातें हो लीं, तो यूसुफ ने खुदा से दुआ की कि) ऐ मेरे परवरदिगार ! तू ने मुझ को हुक्मत से नवाजा और स्लाबों की ताबीर का इल्म बरूशा। ऐ आसमानों और जमीन के पैदा करने वाले ! तू ही दुनिया व आखिरत में मेरा कारसाज है। तू मुझे (दुनिया से) अपनी इताअत (की हालत) में उठाइयो और आखिरत में अपने नेक बंदों में दाखिल कीजियो। (१०१) (ऐ पैगम्बर !) ये खबरें गैब में से हैं जो हम तुम्हारी तरफ भेजते हैं और जब यूसुफ के भाइयों ने अपनी बात पर इत्तिफाक किया था और वे फ़रेब कर रहे थे, तो तुम उनके पास तो न थे। (१०२) और बहुत से आदमी, गो तुम (किननी हो) स्वाहिश करो, ईमान लाने वाले नहीं हैं। (१०३) और तुम उनसे इस (खैर-स्वाही) का कुछ बदला भी तो नहीं मांगते। यह कुरआन और कुछ नहीं तमाम दुनिया के लिए नसीहत है। (१०४) ★

और आसमान व जमीन में बहुत-सी निशानियां हैं, जिन पर ये गुजरते हैं और इनसे मुंह छिपाते हैं। (१०५) और ये अक्सर खुदा पर ईमान नहीं रखते, मगर (उसके साथ) शिकं करते हैं। (१०६) क्या ये (इस बात) से बे-खौफ हैं कि उन पर खुदा का अजाब नाज़िल हो कर उन को ढांप ले या उन पर यकायक क्रियामत आ जाए और उन्हें खबर भी न हो। (१०७) कह दो कि मेरा रास्ता तो यह है मैं खुदा की तरफ बुलाता हूँ (यकीन के मुताबिक) समझ-बूझ कर मैं भी (लोगों को खुदा की तरफ बुलाता हूँ) और मेरी पैरवी करने वाले भी और खुदा पाक है और मैं शिकं करने वालों में से नहीं

(पृष्ठ ३८६ का जेष)

तदबीर से उन को अपने पाम रख लिया। चूंकि यूसुफ अलैहिस्सलाम पर चोरी का इल्जाम था, इस लिए याकूब अलैहिस्सलाम भी मजबूर थे और बेटे को बहन में नहीं ले सकते हैं, गरज यूसुफ फूफी के पाम रहने और परवरिश पाने रहे, यहां तक कि फूफी का इत्तिफाक हो गया। भला यह वाकिया चोरी है और कोई शक्म इसे मुन कर कह सकता है कि हजरत यूसुफ ने चोरी की थी ? तफ्मीर लिखने वालों ने इस के मिबा कई और बातें लिखी हैं। जैसे, घर में एक मुर्गी थी, वह उन्होंने ने फ़कीर को दे दी थी या दस्तरख्वान से खाना ले जाते थे और मुहताजों को दे आते थे, मगर ये बातें ऐसी हैं जिन्हें देख कर चोरी नहीं कहा जा सकता और सब तो यह है कि यूसुफ अलै० पर चोरी का इल्जाम मिफ़्र भ्रूठ है। यूसुफ के भाइयों को तो झूठ बोलने में झिझक थी ही नहीं, तफ्मीर लिखने वालों ने भी ऐसी झूठी बातों को चोरी करार देने और उन को यूसुफ से मुताल्लिक कर देने की शक्ती की है।

१. यानी खुदा को मानने भी है और यह जानने भी है कि जमीन व आसमान और जो कुछ उन में है, उन का पैदा करने वाला और मालिक वही है, मगर साथ ही तुतों की पूजा भी करते हैं या उन को खुदा की वराबरी का पैदा करने वाला और मालिक वही है, मगर साथ ही तुतों की पूजा भी करते हैं या उन को खुदा की वराबरी का भी ठहराते हैं। यह ख़ुदा हुआ शिकं है। इस तरीके पर खुदा को मानने वाला मोमिन नहीं कहलाता, मुश्रिक

(जेष पृष्ठ ३६३ पर)

व मा असंत्ना मिन् कन्निल-क इत्ला रिजालन् नूही इलंहिम् मिन्
 अहलित्कुरा ७ अ-फ-लम् यसीरु फिल्अजि क-यत्तुह क-फ का-न आकिबतुल्लजी-न
 मिन् कन्निलहिम् ७ व ल-दारुल् - आखिरति खैरलिल-लजीनत्तकौ ७ अ - फला
 तअ-किलून (१०६) हुत्ता इजस्ते-अ-सर् - रुमुलु व जम्नू अन्नहम् कद्
 कुजिबू जा-अहुम् नस्रुना ॥ फनुज्जि-य मन्
 नशाउ ७ व ला युरददु बअ-मुना अनिल-
 क्रोमिल्-मुज्जिमीन (११०) ल-कद् का-न
 फी कससिहिम् अबरतुल् - लिउलिल् -
 अल्बाबि ७ मा का - न हदीसय्युपतरा व
 लाकिन् तस्दीकल्लजी बै - न यदेहि व
 तफसी-ल कुलिल शैव - व हुदव - व
 रह-म-तुल् - लिकौमिय्युअमिनून ★ (१११)

१३ सूरतुरःशदि ६६

(मदनी) इस सूरः में अरबी के ३६१४ अक्षर,
 ८६३ शब्द, ४३ आयतें और ६ खूक़ा हैं ।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

अलिफ् - लाम्-मीम्-रा तिल - क

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اَلْقُوا اَنْفُسَكُمْ فِى الْاَرْضِ حَيْثُ رَزَقْتُمْ
 كُنْتُمْ كَانُ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَكَذٰلِكَ اُنْزِلَتْ عَلَيْهِ الْاٰيٰتُ
 اَنْتَوُا اَنْتَوُا تَقُوْلُوْنَ ۝ سَلٰى اِلٰهَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَ
 الْاَرْضِ قَدْ كُنُوْا اَجَادُهُمْ فَصَرُّوْا فِىْ شَيْءٍ مِّنْ شَيْءٍ وَلَا
 يَرْءُ بِاَنْفُسَا عِى الْقَوِيْرِ الْمُجْرِمِيْنَ ۝ لَقَدْ كَانَ فِىْ صُوْرِهِمْ
 عِبْرَةٌ لِاُولٰٓئِى الْاَلْبَابِ مَا كَانَ حَدِيْثًا يُفْعَلُوْا وَلٰكِنْ
 تَصْدِيْقَ الَّذِى يَنْبِىْ يَدِّوْهُ وَتَصْدِيْقَ كُلِّ شَيْءٍ وَهَدٰى
 وَاصْفٰةً لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُوْنَ ۝
 يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اَلْقُوا اَنْفُسَكُمْ فِى الْاَرْضِ حَيْثُ رَزَقْتُمْ
 كُنْتُمْ كَانُ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَكَذٰلِكَ اُنْزِلَتْ عَلَيْهِ الْاٰيٰتُ
 اَنْتَوُا اَنْتَوُا تَقُوْلُوْنَ ۝ سَلٰى اِلٰهَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَ
 الْاَرْضِ قَدْ كُنُوْا اَجَادُهُمْ فَصَرُّوْا فِىْ شَيْءٍ مِّنْ شَيْءٍ وَلَا
 يَرْءُ بِاَنْفُسَا عِى الْقَوِيْرِ الْمُجْرِمِيْنَ ۝ لَقَدْ كَانَ فِىْ صُوْرِهِمْ
 عِبْرَةٌ لِاُولٰٓئِى الْاَلْبَابِ مَا كَانَ حَدِيْثًا يُفْعَلُوْا وَلٰكِنْ
 تَصْدِيْقَ الَّذِى يَنْبِى يَدِّوْهُ وَتَصْدِيْقَ كُلِّ شَيْءٍ وَهَدٰى
 وَاصْفٰةً لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُوْنَ ۝

आयातुल् - किताबि ७ वल्लजी उन्जि - ल इल - क मिररिबिकल् - हक्कु
 व लाकिन्-न अक्सरन्नासि ला युअमिनून (१) अल्लाहुल्लजी र-फ-अस्-
 समावाति बिगैरि अ-म-दिन् तरीनहा सुम्मस्तवा अ-लल्अशि व सरुवरश-
 शम-स वल्क - म - र ७ कुल्लु य्यजरी लि - अ-जलिम् - मुसम्मन् ७ युदब्बिरुल-
 अम-र युफस्सिलुल्-आयाति ल-अल्लकुम् बिलिकाइ रबिबकुम् तूकिनून (२)
 व हुवल्लजी मद्दल्-अर्-ज व ज-अ-ल फीहा रवासि - य व अन्हारुल्
 व मिन् कुलिलस्समराति ज - अ - ल फीहा जोजनिस्नेनि युगिशल् -
 लेलन्नहा-र ७ इन्-न फी जालि-क लआयातिल् - लिकौमिय्य-त-फक्कलून (३)

है। (१०८) और हम ने तुम से पहले बस्तियों के रहने वालों में से मद ही भेजे थे। जिन की तरफ हम बहा भेजते थे, क्या इन लोगों ने देश में (घूमना-फिरना) नहीं किया कि देख लेते कि जो लोग उन से पहले थे, उन का अंजाम क्या हुआ और मुत्तकियों के लिए आखिरत का घर बहुत अच्छा है। क्या तुम समझते नहीं? (१०९) यहां तक कि जब पैगम्बर ना-उम्मीद हो गये और उन्होंने स्याल किया कि (अपनी) मदद के बारे में जो बात उन्होंने कही थी, उस में वे सच्चे न निकले। तो उनके पास हमारी मदद आ पहुंची। फिर जिसे हम ने चाहा, बचा दिया और हमारा अज्ञात उतर कर गुनाहगार लोगों से फिरा नहीं करता। (११०) उन के क्रिस्ते में अकलमंदों के लिए सबक है। यह (कुरआन) ऐसी बात नहीं है जो (अपने दिल से) बना ली गयी हो, बल्कि जो किताबें इस से पहले (नाज़िल हुई) हैं, उन की तस्दीक (करने वाला) है और हर चीज़ की तफ़्सील (करने वाला) और मोमिनों के लिए हिदायत और रहमत है। (१११) ★

१३ सूरः रआद ६६

सूरः राद मक्की है और इस में ४३ आयतें और छः रुकूअ हैं।

शुरू खुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

अलिफ़-लाम्-मीम्-रा, (ऐ मुहम्मद!) ये (अल्लाह की) किताब की आयतें हैं और जो तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से तुम पर नाज़िल हुआ है, हक़ है, लेकिन अक्सर लोग ईमान नहीं लाते। (१) खुदा वही तो है, जिस ने तूनों के बग़ैर आसमान, जैसा कि तुम देखते हो, (इतने) ऊँचे बनाये, फिर अशर पर जा ठहरा और सूरज और चांद को काम में लगा दिया। हर-एक एक तैं मीयाद तक घूम रहा है। वही (दुनिया के) कामों का इतिजाम करता है। (इस तरह) वह अपनी आयतें खोल-खोल कर बयान करता है कि तुम अपने परवरदिगार के रू-ब-रू जाने का यक़ीन करो। (२) और वह वही है जिस ने ज़मीन को फैलाया और उस में पहाड़ और दरिया पैदा किए और हर तरह के मेवों की दो-दो क्रिस्में बनायीं। वही रात को दिन का लिबास पहनाता है। ग़ौर करने वालों के लिए इस में बहुत

(पृष्ठ ३६१ का मेष)

कहलाता है और शिकं ऐसा गुनाह है, जो कभी नहीं बख़्शा जाएगा। (अल्लाह तआला हमें उस से पनाह दे)। कुछ लोगों ने इस आयत को मुनाफ़िकों पर चर्प्पा किया है कि ज़ाहिर में वे मोमिन थे और अन्दर से मुश्रिक। कुछ लोगों ने कहा है कि इस से मुराद अहले किताब हैं यानी यहूदी और ईसाई कि वे खुदा को भी मानते हैं और साथ ही उबैर और ईसा अलैहिस्सलाम को खुदा का बेटा भी कहते हैं और यह शिकं है, क्योंकि खुदा ओलाद से پاک है। कुछ लोगों ने कहा है कि ऐसे दिखावट करने वाले लोग मुराद हैं कि वे खुदा पर ईमान रखते हैं, लेकिन चूँकि ख़ास अमल खुदा के लिए नहीं करते, बल्कि दिखावे के लिए करते हैं और दिखावे के लिए अमल करना शिकं में दाख़िल है, इस लिए वे मुश्रिक हैं। मोख़ सादी रह० के मुताबिक़ जो सिक़तें खुदा की ज़ात से मस्मूस हैं, उन के बारे में यह एतकाद रखना कि वे किसी और में भी पायी जाती हैं, यह भी शिकं है और आज-कल जो मुसलमान खुदा के भी क़ायल हैं और साथ ही क़ब्र-परस्ती, पीर-परस्ती और ताबिया परस्ती भी करते हैं उन में और इसी तरह की और भीजों में खुदा के-से तसर्फ़ात मानते हैं, इस आयत में वे भी शामिल हैं। अल्लाह तआला मुसलमानों को तीक़ीक़ बख़्शे कि वे उस को इस तरह जानें और उस पर इस तरह ईमान रखें कि उस में शिकं बिल्कुल न मिला हो, उन का ईमान शिकं से बिल्कुल पाक हो और वे ख़ालिस मोमिन हों।

व फ़िल्अज़ि क़ि-त-अम्-मु-तजाविरातु व-व जन्नातुम्-मिन् अज-नाबिब्-व जर्अ-व-व
नखीलुन् सिन्वानु व-व गैर सिन्वानियुस्का बिमाइ व्वाहिदिन् व नुफ़िज़्ज़लु
बअ-ज़हा अला बअ-ज़िन् फ़िल्उकुलि इन्-न फ़ी जालि-क लआयातिल्-लिकौमिय्यअ-
किलुन् (४) व इन् तअ-जब् फ़-अ-जबुन् कौलुहुम् अ इजा कुन्ता तुगबत्

अ इन्ना लफी खलिक्नु जदीदिनु

उलाइकलजी-न क - फ़रु बिरबिहिम् ८ व

उलाइकलु - अगलालु फ्री अम् - नाकिहिम्

व उलाइ - क अस्हाबुन्नारि ८ हुम् फ्रीहा

खालिदून (५) व यस्तअ-जिलून-क बिस्-

सथ्ययति कबल्हस-नति व कद् ख-लत्

मिन् कल्लिहिमुल् - मसुलातु, व इन् - न

रब्ब-क लजू मगिफ़-रतिल्-लिन्नासि अला

अल्मिहम् ८ व इन-न रङ्ग-क ल-शदीदुल्-

जिकाव (६) व यकूलुलजा-न क-फरु लाला

दल्लमा अन्तः सन्निहन्तः विक्रिन्तः कौशिकः

हाद + (१९) अल्लाह गअ-वस गं

तगीजुल् - अर्हामु व मा तज्जदादु व

(८) आलिमुल्-गाबि वशहादतिल् - कबीर
मिन्कूम मन अ-सरल-कौल व मन ज-ह-र

बिल्ललि व सारिबुम् - बिल्लहार (१०)

ला, युगस्थिर मा बिक्रौमिन् हत्ता युग

इजा अरादल्लाहु बिक्रीमिन् सू-अन् फला

युग्मिण्डु - सहायसु - सिकल ८ (१२)

वल्मलइकतु मिन् खीकृतिही ८ व यु
मंय्यशाउ व हम यजादिल-न फिल्लादि १२

—

★ह. १/७ आ ७

सी निशानियां हैं। (३) और जमीन में कई तरह के क़तात हैं, एक दूसरे से मिले हुए और अंगूर के बाज़ और खेती और खज़ूर के पेड़, कुछ की बहुत सी शाखें होती हैं और कुछ की इतनी नहीं होतीं (इस के बावजूद कि) पानी सब को एक ही मिलता है और हम कुछ मेवों को कुछ पर लज्जन में बढ़ा देते हैं। इस में समझने वालों के लिए बहुत-सी निशानियां हैं। (४) अगर तुम अजीब बात सुननी चाहो तो काफ़िरों का यह कहना अजीब है कि जब हम (मर कर) मिट्टी हो जाएंगे तो क्या फिर से पैदा होंगे। यही लोग हैं जो अपने परवरदिगार से मुक़िर हुए हैं और यही हैं जिन की गरदनो में तौक होंगे, और यही दोख़्त वाले हैं कि हमेशा उस में (जलते) रहेंगे। (५) और ये लोग भलाई से पहले तुम से बुराई के जल्द चाहने वाले (यानी अज़ाब चाहने वाले) हैं, हालांकि उन से पहले अज़ाब (वाक़अ) हो चुके हैं और तुम्हारा परवरदिगार लोगों को उन की बे-इसाफ़ियों के बावजूद माफ़ करने वाला है और बेशक तुम्हारा परवरदिगार सस्त अज़ाब देने वाला है। (६) और काफ़िर लोग कहते हैं कि इस (पेशम्बर) पर उस के परवरदिगार की तरफ़ से कोई निशानी कियों नाज़िल नहीं हुई।' सो (ऐ मुहम्मद!) तुम तो सिर्फ़ हिदायत करने वाले हो और हर एक क़ौम के लिए रहनुमा हुआ करता है। (७) ★

खुदा ही उस बच्चे को जानता है, जो औरत के पेट में होता है और पेट के सुकड़ने और बढ़ने को भी (जानता है) और हर चीज़ का उस के यहां एक अन्दाज़ा मुक़रर है। (८) वह छिपे और खुले का जानने वाला है। सब से बुजुर्ग (और) बुलंद रुबा है। (९) कोई तुम में से चुपके से बात कहे या पुकार कर या रात को कहीं छिप जाए या दिन (की रोशनी) में खुल्लम-खुल्ला चले-फिरे (उस के नज़दीक) बराबर है। (१०) उस के आगे और पीछे खुदा के चौकीदार हैं, जो खुदा के हुक्म से उस की हिफ़ाज़त करते हैं। खुदा उस (नेमत) को, जो किसी क़ौम को (हासिल) है, नहीं बदलता, जब तक कि वह अपनी हालत को न बदले और जब खुदा किसी क़ौम के साथ बुराई का इरादा करता है, तो फिर वह फिर नहीं सकती और खुदा के सिवा उन का कोई मददगार नहीं होता। (११) और वही तो है जो तुम को डराने और उम्मीद दिलाने के लिए बिजली दिखाता और भारी-भारी बादल पंदा करता है। (१२) और राद और फ़रिश्ते सब उस के डर से उस की तस्बीह व तहमीद करते रहते हैं और वही बिजलियां भेजता है, फिर जिस पर चाहता है गिरा भी देता है और वे खुदा के

१. मक्का के काफ़िर कहते थे कि जैसे हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की लाठी अज़दहा होती थी और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम मुँह को खिन्दा करते थे, वैसा ही काम यह नबी सल्ल० वयों नहीं करते ?

२. राद नाम है एक फ़रिश्ते का, जो बदली का रखवाला है।

वारे में अगड़ते हैं और वह बड़ी ताकत वाला है। (१३) सूदमंद पुकारना तो उसी का है और जिन को ये लोग उस के सिवा पुकारते हैं, वह उन की पुकार को किसी तरह कुबूल नहीं करते, मगर उस शरूस की तरह जो अपने दोनों हाथ पानी की तरफ फैला दे, ताकि (दूर ही से) उस के मुंह तक आ पहुंचे, हालांकि वह (उस तक कभी भी) नहीं आ सकता और (इसी तरह) काफिरों की पुकार बेकार है। (१४) और जितनी मल्लूक आसमानों और जमीन में है, खुशी से या जबरदस्ती से खुदा के आगे सज्दा करती है और उन के साथ भी सुबह व शाम सज्दा करते हैं। (१५) उन से पूछो कि आसमानों और जमीन का परवरदिगार कौन है? (तुम ही उन की तरफ से) कह दो कि खुदा फिर (उन से) कहो कि तुम ने खुदा को छोड़ कर ऐसे लोगों को क्यों कारसाज बनाया है जो खुद अपने नफा-नुक्सान का भी कुछ अस्तियार नहीं रखते? (यह भी) पूछो, क्या अंधा और आंखों वाला बराबर है? या अंधेरा और उजाला बराबर हो सकता है? भला उन लोगों ने जिन को खुदा का शरीक मुकर्रर किया है, क्या उन्होंने खुदा की-सी मल्लूकात पैदा की है, जिस की वजह से उन की मल्लूकात मुश्तबह हो गयी है। कह दो कि खुदा ही हर चीज का पैदा करने वाला है और वह यकता (और) जबरदस्त है। (१६) उसी ने आसमान से मेहं बरसाया, फिर उस से अपने-अपने अन्दाजे के मुताबिक नाले बह निकले, फिर नाले पर फूला हुआ शाय आ गया और जिस चीज को ज़ेवर या कोई और सामान बनाने के लिए आग में तपाते हैं, उस में भी ऐसा ही भाग होता है। इस तरह खुदा हक और बातिल की मिसाल बयान फरमाता है। सो शाय तो सूख कर खत्म हो जाता है। और (पानी) जो लोगों को फायदा पहुंचाता है, वह जमीन में ठहरा रहता है। इस तरह खुदा (सही और गलत की) मिसालें बयान फरमाता है, (ताकि तुम समझो)। (१७) जिन लोगों ने खुदा के हुक्म को कुबूल किया, उन की हालत बहुत बेहतर होगी और जिन्होंने इस को कुबूल न किया अगर धरती के सब खजाने उन के अस्तियार में हों, तो वे सब के सब और उन के साथ उतने ही और, (निजात) के बदले में खर्च कर डालें, (मगर निजात कहां?) ऐसे लोगों का हिसाब भी बुरा होगा और उन का ठिकाना भी दोख है और वह बुरी जगह है। (१८) ★ ●

भला जो शरूस यह जानता है कि जो कुछ तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से तुम पर नाज़िल हुआ है, हक है, वह उस शरूस की तरह है, जो अंधा है? और समझते तो वही हैं, जो अक्लमंद

१. जो यक़ीन लाया अल्लाह पर, वह खुशी से सर रखता है उस के हुक्म पर और जो न यक़ीन लाया आखिर उस पर भी उसी का हुक्म जारी है और परछाइयां सुबह-शाम जमीन पर फैल जाती हैं, यही है उन का सज्दा।

हैं। (१६) जो खुदा के अह्द को पूरा करते हैं और इकरार को नहीं तोड़ते। (२०) और जिन (कराबतदारों) के जोड़े रखने का खुदा ने हुक्म दिया है, उन को जोड़े रखते और अपने परवरदिगार से डरते रहते और बुरे हिसाब से खौफ रखते हैं। (२१) और जो परवरदिगार की खुशूदी हासिल करने के लिए (मुसीबतों पर) सन्न करते हैं और नमाज पढ़ते हैं और जो (माल) हम ने उन को दिया है, उस में से छिपे और बाहिर खर्च करते हैं और नेकी से बुराई को दूर करते हैं। यही लोग हैं जिन के लिए आक़िबत का घर है, (२२) (यानी) हमेशा रहने के बाग, जिन में वे दाखिल होंगे और उन के बाप-दादा और बीवियों और औलाद में से जो नेक होंगे, वे भी (बहिश्त में जाएंगे) और फ़रिश्ते (बहिश्त के) हर एक दरवाज़े से उन के पास आएंगे, (२३) (और कहेंगे) तुम पर रहमत हो (यह) तुम्हारी साबित क़दमी का बदला है और आक़िबत का घर खूब (घर) है। (२४) और जो लोग खुदा से पक्का अह्द कर के उस को तोड़ डालते और जिन (कराबत के रिश्तों) के जोड़े रखने का खुदा ने हुक्म दिया है, उन को काट डालते हैं और मुल्क में फ़साद करते हैं, ऐसों पर लानत है और उनके लिए घर भी बुरा है। (२५) खुदा जिस की चाहता है, रोज़ी फैला देता है, और जिस की चाहता है तंग कर देता है और काफ़िर लोग दुनिया की ज़िदगी पर खुश हो रहे हैं और दुनिया की ज़िदगी में आख़िरत (के मुकाबले) में (बहुत) थोड़ा फ़ायदा है। (२६)★

और काफ़िर कहते हैं कि इस (पैग़म्बर पर) उस के परवरदिगार की तरफ़ से कोई निशानी क्यों नाज़िल नहीं हुई। कह दो कि खुदा जिसे चाहता है, गुमराह करता है और जो (उस की तरफ़) ख़ू होता है, उस को अपनी तरफ़ का रास्ता दिखाता है। (२७) (यानी) जो लोग ईमान लाते और जिन के दिल खुदा की याद से आराम पाते हैं (उन को) और सुन रखो कि खुदा की याद से दिल आराम पाते हैं। (२८) जो लोग ईमान लाए और नेक अमल किए, उन के लिए खुशहाली और उम्दा ठिकाना है। (२९) (जिस तरह हम और पैग़म्बर भेजते रहे हैं) उसी तरह (ऐ मुहम्मद) हम ने तुम को इस उम्मत में, जिस से पहले बहुत सी उम्मतें गुजर चुकी हैं, भेजा है, ताकि तुम उन को वह (किताब) जो हम ने तुम्हारी तरफ़ भेजी है, पढ़ कर सुना दो और ये लोग रहमान को नहीं मानते। कहो, वही तो मेरा परवरदिगार है, उस के सिवा कोई माबूद नहीं। मैं उसी पर भरोसा

१. यानी ईमान की तौफ़ीक़ देता है वग़ैर भोज़ा दिखाए उस को, जो कोई उस की तरफ़ आजिजी करता है और खुदा की तरफ़ सब को छोड़ कर फिरता है।

व लो अन्-न कुरआनत् सुधिरत् बिहिल्-जिबालु ओ कुत्तिअत् बिहिल्-
अर - जु ओ कुल्लि - म बिहिल्मोता ७ बल् लिल्लाहिल् - अम्ह जमीअत् ७
अ-फ-लम् यै-असिल्लजी-न आमन् अल्लौ यशाउल्लाहु ल-ह-दन्ना-स जमीअत् ७ व
ला यजालुल्लजी-न क-फरु तुसीबुहुम् बिमा स-न-अ कारिअतुत् ओ तहुल्लु

करीबम्मिन् दारिहिम् हत्ता यअति - य
वअ-दुल्लाहि ७ इन्नल्ला - ह ला युल्लिफुल्-
मीआद ★ (३१) व ल - कदिस्तुहिज-य
बिरुसुलिम् - मिन् कबिल - क फ अम्लैतु
लिल्लजी-न क-फरु सुम-म अ-खज-तुहुम्
फकै-फ कान अक्राब (३२) अ-फ-मन् हु-व
काइमुन् अला कुल्लि नफिसम् - बिमा
क-स-बत् ७ व ज-अल् लिल्लाहि शु-रका-अ
कुल् सम्पुहुम् ७ अम् तुनबिऊनहू बिमा
ला यअ-लमु फिल्अजि अम् बिजाहिरिम्-
मिनल्कौलि ७ बल् जुथिय-न लिल्लजी - न
क-फरु मक्हरुम् व सुद्हु - अनिस्सबीलि ७

بِالْحَقِّ عَلَىٰ مَوْجِي لَآ إِلَهَ إِلَّا هُوَ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَإِلَيْهِ مَتَابُ ۚ
وَلَإِنْ كُنَّا لَمَرُجُوتٍ بِذِي الْحِجَابِ ۚ وَطُغِيَ بِهِ الْأَرْضُ أَطْرَافُ
الْحَقِّ بَلْ يَرَوْنَ مَرْجُوتًا أَلَمْ يَأْتِ الْبَشَرُ إِلَّا مَتَابًا ۚ
أَوَلَمْ يَكُنْ لَهُ الْكَافِرُ حِمِيمًا ۚ وَلَا يَرَى الَّذِينَ كَفَرُوا
أَصْحَابَهُمْ يَهَاجِرُونَهُمْ أَفَرَأَوْهُمُ اتَّخَذُوا آلَهُمُ الْبَشَرِ
بَلَىٰ ۚ وَمَنْ يَتَّخِذِ الْبَشَرَ آلَافًا ۚ وَلَقَدْ اسْتَفْهِنُوا
بِرُسُلِهِمْ فَنُفِثُوا فَنُفِثُوا فَنُفِثُوا فَنُفِثُوا فَنُفِثُوا
كَانَ عَذَابُهُمْ ۚ الْبَشَرُ هُوَ الَّذِي هُوَ عَلَىٰ نَفْسِهِ بِالسَّيِّئَةِ
وَالْجَوْنِ ۚ فَلَمْ يَكُنْ لَهُمْ مَوْلَا يُدْفِعُ عَنْهُمْ فِي أَرْضِهِمْ
بَلْ كَانُوا مِنَ الْبَشَرِ لَكَاظِمِينَ ۚ وَلَمْ يَكُنْ لَهُمْ مَوْلَا
يُجِئُهُمْ وَمَنْ يَخْلُقِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ مَّالٍ ۚ لَقَدْ عَلِمُوا أَنَّهُ
صَبْرٌ عَلَيْهِمْ ۚ وَلَقَدْ كَذَّبَ الْأَطْغَىٰ أَشْقَىٰ ۚ وَمَا لَهُمْ مِنَ اللَّهِ مِنْ
شَيْءٍ ۚ سَمِعَ الْكَلْبُ الْوَعْدَ ۚ وَمِنَ الْمَكُونِ تُحَسِّرُونَ مِنَ الْمَاءِ
أَكْثَرًا ۚ وَأَكْثَرُهَا يُمَالُ ۚ إِنَّكَ غَفُورٌ ۚ ذُو فَضْلٍ ۚ كَرِيمٌ
لَقَدْ أَتَيْنَاكَ الْكِتَابَ بِغُرُورٍ ۚ بِمَا أَتَىٰ الْبَشَرَ
مِنَ الْأَنْبِيَاءِ ۚ مَنْ يَكْفُرْ بَعْضُهُمْ فَإِنَّا أَكْثَرُ ۚ إِنَّ أَعْيُنَ
اللَّهِ لَا أَصْغَرُ ۚ بِهَذَا نَذِيرًا ۚ وَلَآ إِلَهَ إِلَّا هُوَ ۚ وَكَذَلِكَ الْخُرُوجُ

व मंयुजिलिल्ललाहु फमा लहू मिन् हाद (३३) लहुम् अजाबुत् फिल्ल-
हयातिदुन्या व ल-अजाबुल्-आखिरति अशक्कु ७ व मा लहुम् मिनल्लाहि
मिब्वाक (३४) म-सलुल-जन्नतिल्लती बुअिदल् - मुत्तकू - न ७ तजरी मिन
तहितहल्-अन्हारु ७ उकुलुहा दाइमु व - व मिल्लुहा ७ तिल-क अक्बल्लजीनत्तक्व-
व उक्बल् - काफिरीनन्नार (३५) वल्लजी - न आतेनाहुमुल् -
किता-ब यपरहू-न बिमा उन्जि-ल इलै-क व मिनल्-अहजाबि मंयुनिकर
बअ - ज़हू ७ कुल् इन्नमा उमिरुत् अन् अअ-बुदल्ला-ह व ला उशिर-क
बिही ७ इलैहि अदअ व इलैहि मआब (३६) व कजालि-क अन्जल्लाहु
हुकमव अ-रबिय्यन् ७ व ल - इनित्तबअ-त अहवाअहुम् बअ-द मा जा-अ-क
मिनल्-अलिम् ७ मा ल-क मिनल्लाहि मिब्बलिथियव-व ला वाक ★ (३७)

रखता हूं और उसी की तरफ रुजू करता हूं। (३०) और अगर कोई कुरआन ऐसा होता कि उस (के अक्षर से) पहाड़ चल पड़ते या जमीन फट जाती या मुर्दों से कलाम कर सकते (तो यही कुरआन इन खूबियों वाला होता मगर) बात यह है कि सब बातें खुदा के अख्तियार में हैं, तो क्या मोमिनों का इस से इत्मीनान नहीं हुआ कि अगर खुदा चाहता तो सब लोगों को हिदायत के रास्ते पर चला देता और काफिरों पर हमेशा उन के आमाल के बदले बला आती रहेगी या उन के मकानों के क़रीब नाज़िल होती रहेगी. यहां तक कि खुदा का वायदा आ पढ़ें। बेशक खुदा वायदा खिलाफ़ नहीं करता। (३१) ★

और तुम से पहले भी रसूलों का मज़ाक़ होता रहा है, तो हम ने काफ़िरों को मोहलत दी, फिर पकड़ लिया, सो (देख लो कि) हमारा अज़ाब, कैसा था। (३२) तो क्या जो (खुदा हर) नफ़स के आमाल का निगरां (व निगहबान) है (वह बुतों की तरह बे-इल्म व बे-खबर हो सकता है) और उन लोगों ने खुदा के शरीक मुकर्रर कर रखे हैं। उन से कहो कि (ज़रा) उन के नाम तो लो। क्या तुम उसे ऐसी चीज़ बताते हो जिस को वह ज़मीन में (कहीं भी) मालूम नहीं करता या (सिर्फ़) जाहिरी (बातिल और झूठी) बात के (पीछे चलते हो)। असल यह है कि काफ़िरों को उन के फ़रेब खूबसूरत मालूम होते हैं और वे (हिदायत के) रास्ते से रोक लिए गए हैं और जिसे खुदा गुमराह करे, उसे कोई हिदायत करने वाला नहीं। (३३) उन को दुनिया की ज़िंदगी में भी अज़ाब है और आख़िरत का अज़ाब तो बहुत ही सख़्त है और उन को खुदा (के अज़ाब से) कोई भी बचाने वाला नहीं। (३४) जिस बाग़ का मुत्तक़ियों से वायदा किया गया है, उस की खूबियां ये हैं कि उस के नीचे नहरें बह रही हैं, उस के फल हमेशा (कायम रहने वाले) हैं और उस के साए भी। यह उन लोगों का अंजाम है, जो मुत्तक़ी हैं और काफ़िरों का अंजाम दोज़ख़ है। (३५) और जिन लोगों को हम ने किताब दी है, वे उस (किताब) से जो तुम पर नाज़िल हुई है, खुश होते हैं और कुछ फ़िक्रें, जिन की कुछ बातें नहीं भी मानते। कह दो कि मुझ को यही हुक्म हुआ है कि खुदा ही की इबादत करूं और उस के साथ (किसी को) शरीक न बनाऊं। मैं उसी की तरफ़ बुलाता हूं और उसी की तरफ़ मुझे लौटना है। (३६) और इसी तरह हम ने इस कुरआन को अरबी जुबान का फ़रमान नाज़िल किया है और अगर तुम इल्म (व दानिश) आने के बाद उन लोगों की स्वाहिशों के पीछे चलोगे तो खुदा के सामने कोई न तुम्हारा मददगार होगा और न कोई बचाने वाला। (३७) ★

व ल-कद् असंत्ता रुसुलम्-मिन् कबिल-क व ज-अल्ता लहुम् अज्वाजद्-व
जुरिय्य-तन् ७ व मा का - न लिरसुलिन् अंग्यअति-य बिआयतिन् इत्ता
बिइजिनल्लाहि ७ लिकुलि अ - जलिन् किताब (३८) यम्हुल्लाहु मा
यशाउ व युस्बितु ६ व अिन्दह उम्मुल् - किताब (३९) व इम्मा

नुरियन्-क बअ - जल्लजी नअिदुहुम् औ
न-त-वफ-यन्-क फ-इन्मा अलंकल्-बलामु
व अलैनल्-हिसाब (४०) अ-व लम् यरी
अन्ना नअितिल् - अर-ज नन्कुसुहा मिन्
अत्राफिहा ७ वल्लाहु यद्कुमु ला
मुअक्क - ब लिहुक्मिही ७ व हु - व
सरीअल् - हिसाब (४१) व कद्
म-क-रल्लजी-न मिन् कबिलहिम् फलिल्लाहिल्-
मकर जमोअन् ७ यअ - लमु मा तक्सिबु
कुल्लु नपिसन् ७ व स-यअ-लमुल् - कुफ्फार
लिमन् अक्बद्दार (४२) व यकूल्लजी-न
क - फरू लस् - त मुसलन् ७ कुल् कफा
बिल्लाहि शहीदम् - बैनी व बैनकुम् ७ व
मन् अिन्दह अिल्मुल् - किताब (४३)

وَلَكِنَّ الْبَعْضَ أَهْوَأَ مِنْهُ بَعْدَ مَا جَاءُكَ مِنْهُ
مَا لَكَ مِنَ الْقَوْمِ الَّذِينَ وَلَا آتِي ۖ وَقَدْ كُنَّا سَلَامًا مِنَ
نَبِيِّكَ وَجَعَلْنَا لَهُمْ آيَاتٍ وَآيَاتٍ ذُرِّيَّةً ۖ وَمَا كَانَ لِرَسُولٍ أَنْ
يَأْتِيَ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ لِيُخْلِىَ آيَاتٍ ۖ يَخْلِي مَا يَخْلَى
وَيُخْلِى مَا يَخْلِي ۖ وَإِنْ تَأْمُرْ بِكُفْرٍ بَعْضُ الَّذِينَ
يُؤْمِنُونَ لَا يُؤْمِنُونَ ۖ وَإِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلَاءُ وَعَلَيْكَ الْحِسَابُ ۖ أَوْ
لَمْ يَزِدْكَ الْإِنْفَاقَ فِي الْأَرْضِ تَنْقُصُهَا مِنْ أَطْرَافِهَا ۖ وَاللَّهُ يَحْكُمُ لَا
مُعْتَدِلَ عَلَيْهِ ۖ وَهُوَ بِرِيعِ الْحِسَابِ ۖ وَقَدْ مَكَرَ الَّذِينَ مِنْ
تَحْتِهِ قُلُوبُهُمْ أَلَمْ يَجْعَلْ لَهُمُ اللَّهُ مَقَاتِلًا يُفِرُّ فِيهَا
أَلَمْ يَجْعَلْ لَهُمُ الْغَارَاتِ ۖ وَيَقُولُ الَّذِينَ كَفَرُوا لَسْتَ مُرْسَلٌ
قُلْ كَلَىٰ اللَّهُ شَهِيدٌ بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ ۖ وَمَنْ عِنْدَ اللَّهِ الْكُفَىٰ
يَوْمَ يُؤْتِيهِمْ أَجْرَهُمْ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۖ فَتَوَلَّىٰ مُدَارِكًا وَفِرًّا
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
الرَّحْمَنُ ۚ أَنْزَلَهُ إِلَىٰ الْغَارِ يُخْرِجُ الْنَّاسَ مِنَ الظُّلُمَاتِ إِلَىٰ النُّورِ
يُؤْتِيهِمُ الْوَسْطَىٰ الْعَظِيمَ ۚ الْغُيُوبِ ۚ اللَّهُ الَّذِي لَهُ مَا فِي
السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۚ وَهُوَ يُكْفِيكَ مِنْ عَذَابِ شَرِّهِ
الَّذِينَ يُسَكِّرُونَ الْعِصَىٰ الدُّنْيَا عَلَى الْآخِرَةِ وَيَصُدُّونَ عَنْ

१४ सूरतु इब्राही-म ७२

(मक्की) इस सूर: में अरबी के ३६०१ अक्षर, ८४५ शब्द, ५२ आयतों और ७ रुकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

अलिफ्-लाम्-रा ७ किताबुन् अन्बल्लाहु इलै - क लितुहिरजन्ना - स
मिन्उल्लुमाति इलन्नूर ७ बिइजिन रब्बिहिम् इला सिरातिल् -
अजीजिल् - हमीद ७ (१) अल्लाहिल्लजी लहु मा फ़िस्समावाति व मा
फ़िल्अज्जि ७ व वैलुल्लिल् - काफ़िरी - न मिन् अजाबिन् शदीद ७ (२)
अल्लजी-न यस्तहिब्बूनल्-हयातुदुन्या अ-ल्-आखिरति व यसुद्दू - न अन्
सबीलिल्लाहि व यग्नूहहा अि-व-जन् ७ उलाइ-क फी ज़लालिम्-बअीद (३)

और (ऐ मुहम्मद !) हम ने तुम से पहले भी पैगम्बर भेजे थे और उनको वीवियां और ओलाद भी दी थी और किसी पैगम्बर के अल्लियार की बात न थी कि खुदा के हुक्म के बगैर कोई निशानी लाए। क़ज़ा (का) हर (हुबभ किताब में) लिखा हुआ है। (३८) खुदा जिस को चाहता है, मिटा देता है और (जिस को चाहता है) कायम रखता है और उसी के पास असल किताब है। (३९) और अगर हम कोई अज़ाब, जिस का उन लोगों से वायदा करते हैं, तुम्हें दिखाएं (यानी तुम्हारे सामने उन पर नाज़िल करें) या तुम्हारी ज़िदगी की मुद्त पूरी कर दें (यानी) तुम्हारे इतिक़ाल के बाद अज़ाब भेजें, तो तुम्हारा काम (हमारे हुक्मों का) पहुंचा देना है और हमारा काम हिसाब लेना है। (४०) क्या उन्होंने ने नहीं देखा कि हम ज़मीन को उस के किनारों से घटाते चले आते हैं।' और खुदा (जैसा चाहता है) हुक्म करता है, कोई उस के हुक्म का रद्द करने वाला नहीं और वह जल्द हिसाब लेने वाला है। (४१) जो लोग उन से पहले थे, वे भी (बहुतेरी) चालें चलते रहे, सो चाल तो सब अल्लाह ही की है। हर नफ़्स जो कुछ कर रहा है, वह उसे जानता है और काफ़िर जल्द मालूम करेंगे कि आक़िबत का घर (यानी अच्छाई का अंजाम) किस के लिए है ? (४२) और काफ़िर लोग कहते हैं कि तुम (खुदा के) रसूल नहीं हो। कह दो कि मेरे और तुम्हारे दमियान खुदा और वह शख्स, जिस के पास (आसमानी) किताब का इल्म है, गवाह काफी है। (४३) *

१४ सूर: इब्राहीम ७२

सूर: इब्राहीम मक्की है और इस में १२ आयतें और सात रकूअ हैं।

शुरू खुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

अलिफ़-ताम्-रा, यह एक (पुरनूर) किताब (है), इस को हम ने तुम पर इस लिए नाज़िल किया है कि लोगों को अंधेरे से निकाल कर रोशनी की तरफ ले जाओ (यानी) उन के परवरदिगार के हुक्म से ग़ालिब और तारीफ़ के काबिल (खुदा) के रास्ते की तरफ। (१) वह खुदा कि जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है, सब उसी का है और काफ़िरों के लिए सलत अज़ाब (की वजह) से खराबी है, (२) जो आखिरत के मुक़ाबले दुनिया को पसन्द करते और (लोगों को) खुदा के रास्ते से रोकते और उस में टेढ़ा चाहते हैं। ये लोग परले सिरे की गुमराही में हैं। (३) और हम ने कोई

१. ज़मीन के घटाने से यह मुराद है कि कुछ मुल्क से कम होता जाता और इस्लाम फैलता जाता है। किसी ने कहा कि देहात वीरान हुए जाते हैं। किसी ने कहा कि जानें और फल और मेवे जाया हो रहे हैं।

२. ज़िम के पास किताब का इल्म है, उस से मुराद या तो अब्दुल्लाह बिन सलाम हैं जो अहले किताब में से थे और जिन्होंने ने हुब्रत की रिस्सालत की गवाही दी थी और इस्लाम ले आये थे, चुनांचे वह इस बात के कायल भी थे कि यह आयते इलाही के हक में नाज़िल हुई है या आम अहले किताब मुराद हैं जिन की पिछली किताबों से आप की गवाही मालूम है।

व मा असंल्ला मिरसूलिन् इल्ला बिलिसानि कोमिही लियुबय्यिन् लहुम्
फयुजिल्लुल्लाहु मय्यशा - उ व यहदी मय्यशाउ ७ व हुवल-अजीजुल्-हकीम
(४) व ल-कद् असंल्ला मूसा बिआयातिना अन् अहरिज् कोम-क मिनज्-
जुलुमाति इलन्नूर ७ व जविकरहुम् बिअय्यामिल्लाहि ७ इन् - न फी

जालि-क लआयातिल्लिकुल्लि सबारिन्
शकूर (५) व इज् का - ल मूसा
लिकोमिह्लिकुल् निअ-म-तल्लाहि अलैकुम्
इज् अन्जाकुम् मिन् आलि फिर्अ - न
यसूमनकुम् सूअल्-अजाबि व युजबिहन्-
अब्ना-अकुम् व यस्तह्यू - न निसा-अकुम्
व फी जालिकुम् बलाउम् - मिरबिबकुम्
अजीम * (६) व इज् त - अज्ज - न
रब्बकुम् लइन् श-कर्तुम् ल-अजीदन्नकुम् व
लइन् क-फर्तुम् इन्-न अजाबी ल-शदीद
(७) व का-ल मूसा इन् तक्फुरू
अन्नुम् व मन् फिल्अजि जमीअन्

سُبْحَانَ اللَّهِ وَبِخُورِهَا جِئْنَاكَ يَا حَلِيَّ بَعِثْ
أَرْسَلْنَا مِنْ رَسُولٍ إِلَّا بِلِسَانٍ تُفَاهٍ لِمَنْ يَحْكُمُ لَهُ يُفْصَلُ اللَّهُ
مَنْ يَشَاءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَشَاءُ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ وَقَدْ
أَرْسَلْنَا نُوحِيًّا بِأَمْرِنَا أَنْ أَخْبِرْ قَوْمَكَ مِنَ الظَّالِمِينَ أَنْ يَكْفُورُوا
وَدَرَّ عَنْهُمُ الْغَوِيُّ فَكَانَ لِقَاءُ إِبْرَاهِيمَ لِقَاءً عَسِيفًا
وَإِذْ قَالَ مُوسَى لِقَوْمِهِ أَذْكُرُوا بَعْدَ اللَّهِ مَا كُنْتُمْ تَعْبُدُونَ
فَإِنْ أَلْقَيْتُمْ بُطُورًا فَاعْلَمُوا أَنَّهُمْ لَكُمْ سُوءُ الْعَذَابِ وَلِيْلَكُمْ بُطُورًا
يَخْسِفُونَ بِهَا لَكُمْ وَفِي ذَلِكَ لَكُمْ بَلَاءٌ فَمَنْ يُكْفِرْ عَظِيمًا وَإِذْ
تَأْتَى السَّاعَةُ لَنْ نَسْأَلَ لَكُمْ شِرْكَاءَ لَكُمُ الْكَيْدُ مُنْهَدٍ وَلَكِنْ لَقَدْ مَنَّ اللَّهُ عَلَى
الْعَالَمِينَ وَقَالَ مُوسَى إِنَّ لَكُمْ أَعْيُنًا وَمَنْ فِي الْأَرْضِ
جِئْنَاكُمْ فَأَنْتُمْ لَكُمُ الْكَيْدُ مُنْهَدٍ وَاللَّهُ يَأْتِيكُمْ بِنُورٍ مِنَ الْغَيْبِ مِنْ
قَبْلِكُمْ قَوْمُ نُوحٍ وَأَعَادُ وَتِلْكَ مِنْ بَعْدِهِمْ مِنْ قَبْلِهِمْ
إِلَّا اللَّهُ جَاءَهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ وَفَعَدَّ إِلَهُنَّ فِي الْأَوَّلِينَ
وَقَالُوا الْكَاذِبُ تَابُوا أَرْسَلْنَاهُ بِهَذَا نَحْنُ شَاكٍ وَمَا نَدَّ مُوسَى
إِلَّا وَفُوسٌ قَالَتْ رُسُلُهُمْ إِنِّي اللَّهُ شَافِعُ فَأَطِيعُوا أَمْرًا
وَالْأَرْضِ يَدْعُوهُمْ لِقَائِهِمْ لَكُمْ مِنْ دُونِهِمْ وَبِهِمْ حُرْمَةٌ
أَجَلٌ مُسَمًّى قَالُوا إِنْ أَنْتُمْ إِلَّا بَشَرٌ مِثْلُنَا فَأْتُوا بِنُورٍ إِنْ

फइन्नल्ला-ह लगनिय्युन् हमीद (८) अ-लम् यअत्तिकुम् न-बउल्लजी-न मिन्
कब्लिकुम् कोमि नूहि-व आदि-व समू-द ७ वल्लजी-न मिम्बअ - दिहिम्
ला यअ - लमुहुम् इल्लल्लाहु ७ जाअत्हुम् रुमुहुम् बिलबय्यिनाति फरद्द
ऐदि-यहुम् फी अपवाहिहिम् व कालू इन्ना क - फर्ना बिमा उंसिल्लुम्
बिही व इन्ना लफी शविकम् - मिम्मा तद्अूनना इलैहि मुरीब ● (९)
कालत् रुमुहुम् अफिल्लाहि शक्कुन् फातिरिस्समावाति वल्अजि ७ यद्अुकुम्
लियरिफि-र लकुम् मिन् जुनूबिकुम् व यु-अल्लि-रकुम् इला - जलिम् -
मुसम्मत् ७ कालू इन् अन्नुम् इल्ला ब-शक्-मिस्लुना ७ तुरीद-न अन् तसुद्दना
अम्मा का-न यअ-बुदु आवाउना फअ-तूना बिसुल्लानिम् - मुबीन (१०)

पैगम्बर नहीं भेजा, मगर अपनी क्रीम की जुवान बोलता था, ताकि उन्हें (खुदा के हुक्म) खोल-खोल कर बता दे, फिर खुदा जिसे चाहता है, गुमराह करता है और जिसे चाहता है, हिदायत देता है और वह गालिब (और) हिकमत वाला है, (४) और हम ने मूसा को अपनी निशानियां दे कर भेजा कि अपनी क्रीम को अंधेरे से निकाल कर रोशनी में ले जाओ और उन को खुदा के दिन याद दिलाओ, इस में उन लोगों के लिए जो सन्न करने वाले और शुक करने वाले हैं, (खुदा की क्रुदरत की) निशानियां हैं। (५) और जब मूसा ने अपनी क्रीम से कहा कि खुदा ने जो तुम पर मेहरबानियां की हैं, उन को याद करो, जब कि तुम को फिर्आन की क्रीम (के हाथ) से मुस्लिमी दी। वे लोग तुम्हें बुरे अज़ाब देते थे और तुम्हारे बेटों को मार डालते थे और औरत जात यानी तुम्हारी लड़कियों को ज़िदा रहने देते थे और उस में तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से बड़ी (सलत) आजमाइश थी, (६) *

और जब तुम्हारे परवरदिगार ने (तुम को) आगाह किया कि अगर शुक करोगे, तो मैं तुम्हें ज्यादा दूंगा और अगर नाशुकी करोगे तो (याद रखो कि) मेरा अज़ाब (भी) सलत है। (७) और मूसा ने (साफ़-साफ़) कह दिया कि अगर तुम और जितने और लोग ज़मीन में हैं, सब के सब नाशुकी करो, तो खुदा भी बे-निमाज़ (और) तारीफ़ के काबिल है। (८) भला तुम को उन लोगों (के हालात) की खबर नहीं पढ़ेंगी जो तुम से पहले थे (यानी) नूह और आद और समूद की क्रीम और जो उन के बाद थे, जिन का इल्म खुदा के सिवा किसी को नहीं। (जब) उन के पास पैगम्बर निशानियां ले कर आए तो उन्होंने अपने हाथ उन के मुंहों पर रख दिए (कि खामोश रहो) और कहने लगे कि हम तो तुम्हारी रिसालत को नहीं मानते और जिस चीज़ की तरफ़ तुम हमें बुलाते हो, हम उस से भारी शक में हैं ● (९) उन के पैगम्बरों ने कहा, क्या (तुम को) खुदा (के बारे) में शक है, जो आसमानों और ज़मीन का पैदा करने वाला है। वह तुम्हें इस लिए बुलाता है कि तुम्हारे मुताबक बल्लूने और (फ़ायदा पढ़ाने के लिए) एक मुकरर मुद्दत तक तुम को मोहलत दे। वे बोले तुम तो हमारे ही जैसे आदमी हो, तुम्हारा यह मंशा है कि जिन चीज़ों को हमारे बड़े पूजते रहे हैं, उन (के पूजने) से हम को वन्द कर दो तो (अच्छा!) कोई खुली दलील लाओ (यानी मोज़ाज़ा

१. काफ़िर कहते थे कि और जुवान में कुरआन उतरता, तो हम यक़ीन करते, यह तो उस शल्स की बोली है, गायद आप कह लाता हो, इस का यह जवाब है।

२. खुदा के दिनों से मुराद वे वाकिए हैं जो उस की तरफ़ से जाहिर होते रहते हैं।

दिल्लाओ) । (१०) पैगम्बरों ने उन से कहा कि हां, हम तुम्हारे ही जैसे आदमी हैं, लेकिन खुदा अपने बन्दों में से, जिस पर चाहता है (नुबूत का) एहसान करता है और हमारे अस्तित्व की बात नहीं कि हम खुदा के हुक्म के बगैर तुम को (तुम्हारी फरमाइश के मुताबिक) मोजजा दिलाएँ और खुदा ही पर मोमिनों को भरोसा रखना चाहिए । (११) और हम क्यों न खुदा पर भरोसा रखें हालांकि उस ने हम को हमारे (दीन के सिधे) रास्ते बताए हैं, और जो तकलीफें तुम हम को देते हो, उस पर सब करेंगे और भरोसा करने वालों को खुदा ही पर भरोसा रखना चाहिए । (१२) ★

और जो काफ़िर थे उन्होंने ने अपने पैगम्बरों से कहा कि (या तो) हम तुम को अपने मुल्क से बाहर निकाल देंगे या हमारे मजहब में दाखिल हो जाओ । तो परवरदिगार ने उन की तरफ बह्य भेजी कि हम ज़ालिमों को हलाक कर देंगे । (१३) और उन के बाद तुम को उस ज़मीन में आबाद कर देंगे । यह उस शरूत के लिए है जो (क़ियामत के दिन) मेरे सामने खड़े होने से डरे और मेरे अज़ाब से खौफ़ करे । (१४) और पैगम्बरों ने (खुदा से अपनी) फ़तह चाही, तो हर सरकार, ज़िद्दी, ना-मुराद रह गया । (१५) उस के पीछे दोख है और उसे पीप का पानी पिलाया जाएगा, (१६) वह उस को घूट-घूट पिएगा और गले से नहीं उतार सकेगा और हर तरफ़ से उसे मौत आ रही होगी, मगर वह मरने में नहीं आएगा और उस के पीछे सक्त अज़ाब होगा । (१७) जिन लोगों ने अपने परवरदिगार से कुफ़ किया, उन के आमाल की मिसाल राख की-सी है कि आंधी के दिन उस पर जोर की हवा चले (और) उसे उड़ा ले जाए, (इसी तरह) जो काम वे करते रहे, उन पर उन को कुछ कुदरत न होगी । यही तो परले सिरे की गुमराही है । (१८) क्या तुम ने नहीं देखा कि खुदा ने आसमानों और ज़मीन को तद्बीर से पैदा किया है, अगर वह चाहे, तो तुम को नाबूद कर दे और (तुम्हारी जगह) नयी मल्लूक पैदा कर दे । (१९) और यह खुदा को कुछ भी मुश्किल नहीं । (२०) और (क़ियामत के दिन) सब लोग खुदा के सामने खड़े होंगे, तो (अक़ल के) कमज़ोर (पैरवी करने वाले अपने) धमंडी (सरदारों) से कहेंगे कि हम तो तुम्हारी पैरवी करने वाले थे । क्या तुम खुदा का कुछ अज़ाब हम पर से हटा सकते हो ? वे कहेंगे कि अगर खुदा हम को हिदायत करता तो हम तुम को हिदायत करते । अब हम धवराएं या सब करें, हमारे हक में बराबर है । कोई जगह (भागने

और) रिहाई की हमारे लिए नहीं है * (२१) जब (हिसाब-किताब का काम) फ़सला हो चुकेगा, तो ज़ंतान कहेगा (जो) बायदा खुदा ने तुम से किया था, (वह तो) सच्चा (था) और (जो) बायदा मैं ने तुम से किया था, वह झूठा था और मेरा तुम पर किसी तरह का जोर नहीं था। हां, मैं ने तुम को (गुमराही और बातिल की तरफ़) बुलाया, तो तुम ने (जल्दी से और बे-दलील) मेरा कहना मान लिया तो, (आज) मुझे मलामत न करो, अपने आप ही को मलामत करो। न मैं तुम्हारी फ़रियादरसी कर सकता हूँ और न तुम मेरी फ़रियादरसी कर सकते हो। मैं इस बात से इंकार करता हूँ कि तुम पहले मुझे शरीक बनाते थे। बेशक जो ज़ालिम हैं, उन के लिए दर्द देने वाला अज़ाब है। (२२) और जो ईमान लाये और नेक अमल किये, वे बहिश्तों में दाखिल किये जाएंगे, जिन के नीचे नहरें बह रही हैं, अपने परवरदिगार के हुक्म से हमेशा उन में रहेंगे, वहां उन की साहब-सलामत सलाम होगा। (२३) क्या तुम ने नहीं देखा कि खुदा ने पाक बात की कौसी मिसाल बयान फ़रमायी है, (वह ऐसी है) जैसे पाक पेड़, जिस की जड़ मज़बूत (यानी ज़मीन को पकड़े हुए) हो और शाखें आसमान में।^१ (२४) अपने परवरदिगार के हुक्म से हर वक़्त फल आता (और मेवे देता) हो और खुदा लोगों के लिए मिसालें बयान फ़रमाता है, ताकि वे नसीहत पकड़ें। (२५) और नापाक बात की मिसाल नापाक पेड़ की-सी है, (न जड़ मज़बूत न शाखें ऊंची) ज़मीन के ऊपर ही से उखाड़ कर फेंक दिया जाए, उस को ज़रा भी क़रार (व सबात) नहीं।^१ (२६) खुदा मोमिनों (के दिलों) को (सही और) पक्की बात से दुनिया की ज़िदगी में भी मज़बूत रखता है और आखिरत में भी (रखेगा) और खुदा बे-इन्साफ़ों को गुमराह कर देता है और खुदा जो चाहता है, करता है। (२७)★

क्या तुम ने उन लोगों को नहीं देखा, जिन्होंने खुदा के एहसान को ना-शुक्री से बदल दिया और अपनी क़ौम को तबाही के घर उतारा। (२८) (वह घर) दोख है, (सब ना-शुक्र) उस में दाखिल होंगे और वह बुरा ठिकाना है। (२९) और उन लोगों ने खुदा के शरीक मुकर्रर किये कि (लोगों को) उस के रास्ते से गुमराह करें। कह दो कि (कुछ दिन) फ़ायदे उठा लो। आखिरकार

१. पाक बात से मुराद कलिमा-ए-तौहीद 'ला इला-ह इल्लल्लाह' है। फ़रमाया कि कलिमा-ए-तौहीद की मिसाल उम पाक पेड़ की-सी है, जिस की जड़ ज़मीन में मज़बूत हो और उस की शाखें बुलंदी में आसमान तक पहुँची हुई हों और हर मौसम में फल देता हो। कलिमा-ए-तौहीद की जड़ भी दिलों में कायम व मुस्तहक़म होती है और उस की शाखें यानी अमल आसमान पर चढ़ते रहते हैं और उन की बरकत हर वक़्त हासिल होती रहती है।

२. ना-पाक बात से मुराद शिर्क का कलिमा है। फ़रमाया शिर्क के क़लमे की मिसाल ऐसे पेड़ की है, जिस की जड़ ज़मीन पर से उखाड़ दी गयी हो, उसे ज़रा क़रार व सबात न हो यानी शिर्क का कलिमा बिल्कुल बे-असल होता है, न उस के लिए मज़बूत दलील होती है, न शिर्क के कामों की कुबूलियत होती है, न उस में ख़ैर व बरकत होती है।

तुम को दोजख की तरफ लोट कर जाना है। (३०) (ऐ पैगम्बर!) मेरे मोमिन बन्दों से कह दो कि नमाज़ पढ़ा करें और उस दिन के आने से पहले, जिस में न (आमाल) का सौदा होगा और न दोस्ती (काम आएगी) हमारे दिए हुए माल में से छिपे और जाहिर खर्च करते रहें। (३१) खुदा ही तो है, जिस ने आसमान और ज़मीन को पैदा किया और आसमान से मेह बरसाया, फिर उस से तुम्हारे खाने के लिए फल पैदा किए और कशियों (और जहाज़ों) को तुम्हारे फ़रमान के तहत किया, ताकि दरिया (और समुन्दर) में उस के हुक्म से चलें और नहरों को भी तुम्हारे फ़रमान के तहत किया। (३२) और सूरज और चांद को तुम्हारे लिए काम में लगा दिया कि दोनों (दिन-रात) एक दस्तूर पर चल रहे हैं और रात और दिन को भी तुम्हारे लिए काम में लगा दिया। (३३) और जो कुछ तुम ने मांगा, सब में से तुम को इनायत किया और अगर खुदा के एहसान गिनने लगे तो गिन न सको, (मगर लोग नेमतों का शुक्र नहीं करते)। कुछ शक नहीं कि इंसान बड़ा बे-इंसाफ़ और ना-शुक्रा है। (३४) ★

और जब इब्राहीम ने दुआ की कि मेरे परवरदिगार! इस शहर को (लोगों के लिए) अम्न की जगह बना दे और मुझे और मेरी औलाद को इस बात से कि बुतों की पूजा करने लगे, बचाए रख। (३५) ऐ परवरदिगार! उन्होंने बहुत से लोगों को गुमराह किया है, सो जिस शहस ने मेरा कहा माना, वह मेरा और जिस ने मेरी ना-फ़रमानी की, तो तू बरहाने वाला मेहरबान है। (३६) ऐ परवरदिगार! मैं ने अपनी औलाद (मक्का के) मैदान में, जहां खेती नहीं, तेरे इपज़त (व अदब) वाले घर के पास ला बसायी है, ऐ परवरदिगार! ताकि ये नमाज़ पढ़ें, तो लोगों के दिलों को ऐसा कर दे कि उन की तरफ़ झुके रहें और उन को मेवों से रोज़ी दे ताकि (तेरा) शुक्र करें। (३७) ऐ परवरदिगार! जो बात हम छिपाते और जाहिर करते हैं, तू सब जानता है और खुदा से कोई चीज़ छिपी हुई नहीं, (न) ज़मीन में, न आसमान में। (३८) खुदा का शुक्र है, जिस ने मुझ को बड़ी उम्र में इस्माईल और इस्हाक बरहो। बेशक मेरा परवरदिगार दुआ सुनने वाला है। (३९) ऐ परवरदिगार! मुझ को (ऐसी तोफ़ीक़ इनायत) कर कि नमाज़ पढ़ता रहूं और मेरी औलाद को भी (यह तोफ़ीक़ बरहो), ऐ परवरदिगार! मेरी दुआ क़बूल फ़रमा। (४०) ऐ परवरदिगार! हिसाब (-किताब) के दिन मुझ को और मेरे मां-बाप को और मोमिनों को मफ़िरत कीजियो, (४१) ★

१. यानी इलाही! मक्का को सब बलाओं और आफ़तों से अमान में रख।

और (मोमिनो !) मत ख्याल करना कि ये जालिम जो अमल कर रहे हैं, खुदा उन से वे-खबर है। वह उन को उस दिन तक मुहलत दे रहा है, जबकि (दहशत की वजह से) आखें खुली की खुली रह जाएंगी, (४२) (और लोग) सर उठाए हुए (क्रियामत के मैदान की तरफ) दौड़ रहे होंगे, उन की निगाहें उन की तरफ लौट न सकेंगी और उन के दिल (मारे डर के) हवा हो रहे होंगे। (४३) और लोगों को उस दिन से आगाह कर दो, जब उन पर अज़ाब आ जाएगा, तब जालिम लोग कहेंगे कि ऐ हमारे परवरदिगार ! हमें थोड़ी सी मोहलत की मुदत अता कर, ताकि हम तेरी (तौहीद की) दावत कुबूल करें और (तेरे) पैगम्बरों के पीछे चलें। (तो जवाब मिलेगा) क्या तुम पहले क़स्में नहीं खाया करते थे कि तुम को (उस हाल से जिस में तुम हो) ज़वाल (और क्रियामत को आमाल का हिसाब) नहीं होगा। (४४) और जो लोग अपने आप पर जुल्म करते थे, तुम उन के मकानों में रहते थे और तुम पर जाहिर हो चुका था कि हम ने उन लोगों के साथ किस तरह (का मामला) किया था और तुम्हारे (समझाने) के लिए मिसालें भी बयान कर दी थीं। (४५) और उन्होंने (बड़ी-बड़ी) तद्बीरों की और उन की (सब) तद्बीरें खुदा के यहां (लिखी हुई) हैं, गो वे तद्बीरें ऐसी (ग़ज़ब की) थीं कि उन से पहाड़ भी टल जाएं। (४६) तो ऐसा ख्याल न करना कि खुदा ने जो अपने पैगम्बरों से बायदा किया है, उस के खिलाफ़ करेगा। बेशक खुदा ज़बरदस्त (और) बदला लेने वाला है। (४७) जिस दिन यह ज़मीन दूसरी ज़मीन से बदल दी जाएगी और आसमान भी (बदल दिए जाएंगे) और सब लोग खुदा-ए-यगाना व ज़बरदस्त के सामने निकल खड़े होंगे। (४८) और उस दिन तुम गुनाहगारों को देखोगे कि जंजीरों में जकड़े हुए हैं। (४९) उन के कुरते गंधक के होंगे और उन के मुँहों को आग लिपट रही होगी। (५०) यह इस लिए कि खुदा हर शरूस को उस के आमाल का बदला दे, बेशक खुदा जल्द हिसाब लेने वाला है। (५१) यह (क़ुरआन) लोगों के नाम (खुदा का पैग़ाम) है, ताकि उन को उस से डराया जाए और ताकि वे जान लें कि वही अकेला माबूद है और ताकि अक़ल वाले नसीहत पकड़ें। (५२) ★

१५ सूर: हिज्र ५४

सूर: हिज्र मक्की है और इस में ६९ आयतें और छः रुकूअ हैं !

शुरू खुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

अलिफ़-लाम्-रा, यह (खुदा की) किताब और रोशन क़ुरआन की आयतें हैं। (१) किसी वक़्त

काफिर लोग आरजू करेंगे कि ऐ काश ! वे मुसलमान होते । (२) (ऐ मुहम्मद !) उन को उन के हाल पर रहने दो कि खा सें और फायदे उठा लें और (लम्बी) उम्मीद उन को (दुनिया में) फंसाए रहे । बहुत जल्द उन को (इस का अंजाम) मालूम हो जाएगा । (३) और हम ने कोई वस्ती हलाक नहीं की, मगर उस का वक्त लिखा हुआ और तै था । (४) कोई जमाअत अपनी (वक्त की) मुद्दत से न आगे निकल सकती है, न पीछे रह सकती है । (५) और (काफिर) कहते हैं कि ऐ शरूस् ! जिस पर नसीहत (की किताब) नाज़िल हुई है, तू तो दीवाना है । (६) अगर तू सच्चा है, तो हमारे पास फ़रिश्तों को क्यों नहीं ले आता ? (७) (कह दो) हम फ़रिश्तों को नाज़िल नहीं किया करते, मगर हक के साथ और उस वक्त उन को मोहलत नहीं मिलती । (८) बेशक यह (किताब) नसीहत हम ही ने उतारी है और हम ही इस के निगेहबान हैं । (९) और हम ने तुम से पहले लोगों में भी पंगम्बर भेजे थे । (१०) और उन के पास कोई पंगम्बर नहीं आता था, मगर वे उस का मज़ाक उड़ाते थे । (११) इसी तरह हम (इस झूठ और गुमराही) को गुमराहों के दिलों में दाखिल कर देते हैं । (१२) सो वे इस पर ईमान नहीं लाते और पहलों का खब्या भी यही रहा है, (१३) और अगर हम आसमान का कोई दरवाज़ा खोल दें और वे उस में चढ़ने भी लगे, (१४) तो भी यही कहें कि हमारी आंखें नशीली हो गयी हैं, बल्कि हम पर जादू कर दिया गया है । (१५) ★

और हम ही ने आसमान में बुर्ज बनाये और देखने वालों के लिए उस को सजा दिया । (१६) और हर शैतान, धुत्कारे हुए से उसे महफूज कर दिया । (१७) हां, अगर कोई चोरी से सुनना चाहे, तो चमकता हुआ अंगारा उस के पीछे लपकता है । (१८) और ज़मीन को भी हम ही ने फैलाया और उस पर पहाड़ (बना कर) रख दिए और उस में हर एक संजीदा चीज़ उगायी । (१९) और हम ही ने तुम्हारे लिये और उन लोगों के लिए, जिन को तुम रोज़ी नहीं देते, उस में रोज़ी के सामान पैदा किए । (२०) और हमारे यहां हर चीज़ के खजाने हैं और हम उन को मुनासिब मिक्दार में

व असंलरिया-ह ल-वाक्कि-ह फ-अन्जलना मिनस्समाइ माअत् फ - अस्कूना
कुम्ह ८ व मा अन्तुम् लह बिखाजिनीन (२२) व इन्ना ल - नहनु
नुह्यी व नुमीतु व नहनुल्-वारिस्सून (२३) व ल - कद् अलिमनल्-
मुस्तबिदमी-न मिन्कुम् व ल-कद् अलिम्-नल्-मुस्तअ-खिरीन (२४) व इन्-न

रख-क हु-व यद्गुरुमु १ इन्नह हकीमुन्
अलीम * (२५) व ल-कद् ख-लकून-

इत्ता-न मिन् सत्सालिम्भिन् ह - म-इम्-
मत्तन ८ (२६) वल्जान् - न ख-लकृत्ताह

मिन् कळु मिन्नारिस्-समूम (२७) व
इज का-ल रब्ब-क लिस्मलाइकति इन्नी

खालिकुम् - ब-श-रम्मिन् सत्सालिम् - मिन्
ह-म-इम-मस्नन (२६) फइजा सव्वंतह

व न-क्रस्तु फ्रीहि मिरुही फ-क्रअ लहू
माजिदीन (२६) फ-म-ज-दल - मलाइकत

कुल्लुहुम् अज्मअून ॥ (३०) इल्ला

(३१) का-ल या इब्लीसु माल-क अल्ला तकू-न म-अस्-साजिदीन (३२)
का-ल लम अ-कलिल-अस्ज-द लिब-शरित् ख-लकतह मिन् सल्सालिम् - मिन्

हृ-म-इम्-मस्तून (३३) काल फल-रज् मिन्हा फइन्त-क रजोमव्-॥ (३४)
 व इन्त अलैकल-लअ-न-त इला योमिद्दीन (३५) काल रब्बि फ-अब्जिर्नी
 इला योमि गल-थयन (३६) काल फइन्त-क मिन्तल-मन्बरीत ॥ (३७)

इला यौमिल्-वक्तिल् - मञ्ज-लूम (३८) का-ल रब्बि बिमा अरवैतनी
लउञ्जय्यितन-न लहुम् फिलार्जि व ल-उगिवयन्नहुम् अञ्-मजीन॥ (३९) इल्ला

(४१) इन्-न अबादी लै-स ल-क अलैहिम् सुल्तानुल् इल्ला मनिस्तब-अ-क मिनल्-गावीन (४२) व इन्-न जहन्न-म लमौअिदुहम् अज-मअीन ۞ (४३) लहा

सर्व-अनु अन्वाबिन् ७ लिङ्गुलि बाबिम् - मिन्हुम् जुज्जुम् - मक्कसूम ★ (४४)

उतारते रहते हैं। (२१) और हम ही हवाएं चलाते हैं (जो बादलों के पानी से) भरी हुई (होती है) और हम ही आसमान से मेह बरसाते हैं और हम ही तुम को उस का पानी पिलाते हैं और तुम तो उस का खजाना नहीं रखते, (२२) और हम ही जिदगी बलशते और हम ही मीत देते हैं और हम ही सब के बारिस (मालिक) हैं, (२३) और जो लोग तुम में पहले गुजर चुके हैं, हम को मालूम है और जो पीछे आने वाले हैं, वे भी हम को मालूम हैं, (२४) और तुम्हारा परवरदिगार (क्रियामत के दिन) उन सब को जमा करेगा, वह बड़ा जानने वाला (और) खबरदार है। (२५) ★

और हम ने इन्सानों को खनखनाते सड़े हुए गारे से पैदा किया है, (२६) और जिनों को इन से भी पहले बे-धुएं की आग से पैदा किया था, (२७) और तुम्हारे परवरदिगार ने फरिश्तों से फरमाया कि मैं खनखनाते हुए सड़े हुए गारे से एक बशर बनाने वाला हूँ। (२८) जब उस को (इंसानी शक्ल में) ठीक कर लूँ और उस में अपनी (क्रीमती चीज यानी) रूह फूंक दूँ, तो उस के आगे सज्दे में गिर पड़ना। (२९) तो फरिश्ते तो सब के सब सज्दे में गिर पड़े ! (३०) मगर शैतान कि उसने सज्दा करने वालों के साथ होने से इंकार कर दिया, (३१) (खुदा ने) फरमाया कि इब्लीस तुझ को क्या हुआ कि कि तू सज्दा करने में शामिल न हुआ। (३२) (उस ने) कहा, मैं ऐसा नहीं हूँ कि इंसान को, जिस को तू ने खनखनाते सड़े हुए गारे से बनाया है, सज्दा करूँ। (३३) खुदा ने फरमाया, यहां से निकल जा, तू मर्दूद है। (३४) और तुझ पर क्रियामत के दिन तक लानत (बरसेगी)। (३५) (उस ने) कहा कि परवरदिगार ! मुझे उस दिन तक मोहलत दे, जब लोग (मरने के बाद) जिंदा किए जाएंगे। (३६) फरमाया कि तुझे मोहलत दी जाती है। (३७) मुकर्रर वक्त (यानी क्रियामत) के दिन तक। (३८) (उस ने) कहा कि परवरदिगार ! जैसा तू ने मुझे रास्ते से अलग किया है, मैं भी जमीन में लोगों के लिए (गुनाहों को) सजा कर दिखाऊंगा और सब को बहकाऊंगा। (३९) हां, उन में जो तेरे मुल्लिस बन्दे हैं, (उन पर काबू चलना मुश्किल है)। (४०) (खुदा ने) फरमाया कि मुझ तक (पहुंचने का) यही सीधा रास्ता है। (४१) जो मेरे (मुल्लिस) बन्दे हैं, उन पर तुझे कुछ कुदरत नहीं (कि उन को गुनाह में डाल सके) हां, बद राहों में से जो तेरे पीछे चल पड़े। (४२) और उन सब के वायदे की जगह जहन्नम है। (४३) उस के सात दरवाजे हैं।^१ हर एक दरवाजे के लिए उन में से जमाअतें तक्सीम कर दी गयी हैं। (४४) ★

१. इन्ने अब्बास कहते हैं कि दरवाजों से मुराद तक्के हैं यानी दोजख के नीचे-ऊपर मात तक्के और मंजिलें हैं। पहला तक्का जहन्नम है, दूसरा लज्जा, तीसरा हुतमा, चौथा सओर, पांचवां मकर, छठा जहीम, सातवां हादिया। कतादा ने कहा कि ये दर्जे अमल के लिहाज से हैं, मगर इसका इत्म खुदा ही को है कि किस तरह के अमल और अक़ादे के लिए कौन-सा तक्का है।

इन्नाल्मुत्तकीन् फी जन्नातिव - व अयून् ७ (४५) उदखलूहा बिसलामिन्
आमिनीन् (४६) व न-जअ-ना मा फी सुदूरिहिम् मिन् गिल्लिन् इख-वानन्
अला सुहरिम्-मु-त-काबिलीन् (४७) ला यमस्सुहुम् फीहा न-स-बुव-व मा हुम्
मिन्हा बिमुखरजीन् (४८) नब्बिअ जिबादी अन्नी अ-नल् - गफूरहीम्

(४९) व अन्-न अजाबी हुवलअजाबुल्-

अलीम् (५०) व नब्बिअहुम् अन् ज़ैफ़ि

इब्राहीम् (५१) इज् द - खलू

अलैहि फ-कालू सलामत् ७ का - ल इन्ना

मिन्कुम् वजिलून् (५२) कालू ला

तोजल् इन्ना नुबशिशरु - क बिगुलामिन्

अलीम् (५३) का-ल अ-बशशरतुमूनी अला

अम्मस्सनियल् - कि-बरु फबि-म. तुबशिशरुन

(५४) कालू बशशर्ना-क बिल्हक्कि फला

तकुम्मिनल्-कानितीन् (५५) का-ल व

मय्यकूनतु मिरह्मति रब्बिह् इल्लज्जाल्लून्

(५६) का-ल फ मा खत्बुकुम् अय्युहल्-

मुसलून् (५७) कालू इन्ना उसिल्ना इला कौमिम् - मुज्रिमीन्

(५८) इल्ला आ-ल लूतिन् ७ इन्ना लमुनज्जुहुम् अज् - मअीन् ७ (५९)

इल्लम्-र-अतह् कद्दना ७ इन्हा लमिनल्-गाबिरीन् (६०) फ - लम्मा

जा-अ आ-ल लूति-निल्-मुसलून् ७ (६१) का-ल इन्नकुम् कौमुम्-मुन्करुन

(६२) कालू बल् जिअना-क बिमा कानू फीहि यस्तरुन (६३) व अतैना-क

बिल्हक्कि व इन्ना लसादिकून् (६४) फ अस्ति बिअहिल-क बिकित्तिअम्

मिनल्लैलि वत्तबिअ अदबारहुम् व ला यत्तफित् मिन्कुम् अ-ह-दुव्वम्ज़ु हैसु

तुअ-मरुन (६५) व कज़्ज़ाना इलैहि जालिकल्-अम्-र अन्-न दाबि-र हाउलाइ

मक्तुअम् - मुस्बिहीन् (६६) व जा-अ अहलुल् - मदीनति यस्तबिशरुन

(६७) का-ल इन् - न हाउलाइ ज़ैफ़ी फ ला तफज़्ज़हून् ७ (६८)

بَابُ فِيهِمْ جَزَاءُ مَقْصُورِهِمْ إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ ۖ
أَدْخِلْنَاهُمْ عَلَيْهَا أَيْمِينَ ۖ وَوَعَدْنَا مَا فِي صُدُورِهِمْ مِنْ غَيْرِ
إِلَافًا عَلَىٰ رُءُوفٍ رَحِيمِينَ ۖ لَا يَدْخُلُوهَا الضَّالُّونَ وَمَا لَهُمْ
فِيهَا مِنْ حِسَابٍ ۖ يَتَنَبَّهُونَ إِلَىٰ أَنْ لَا يَسْمَعُوا سَعِيرًا ۖ وَ
إِنْ عَنَّا فِي هُوَ الْعَذَابُ الْأَلِيمُ ۖ وَتَتَنَبَّهُونَ عَنْ ضَيْفِ إِبْرَاهِيمَ
إِذْ دَخَلُوا عَلَيْهِ فَقَالُوا سَلَامًا ۖ قَالَ إِنَّا أَنْتُمْ وَجَلُونَ ۖ قَالُوا
لَا تَوْجَلْ إِنَّا نَحْنُ الْغَالِبُونَ عَلَيْهِ ۖ قَالَ إِنْ تَنْتَوْنِ عَلَىٰ أَنْ
تَمْنَحُوا الْكَبِيرَ قَبْلَ تَنْبِئُونِ ۖ قَالُوا لَسْتَ لَنَا بِبَاقٍ ۖ فَلَا تَكُنْ مِنَ
الْغَافِلِينَ ۖ قَالَ وَمَنْ يَقْطَعُ مِنْ أَحْسَنِ رَبِّهِ إِلَّا الضَّالُّونَ ۖ
قَالَ مَا أَخْطَأَكُمْ إِلَهُ الْمُرْسَلُونَ ۖ قَالُوا إِنَّا أَنْزَلْنَاهُ إِلًا قَوْمِ
مُجْرِمِينَ ۖ إِلَّا إِنْ لَوْ ۖ إِنَّا نَسْتَفْتِيهِمْ أَجْمَعِينَ ۖ إِلَّا أَمْرًا
قَدَرْنَا ۖ إِنَّا لَمِنَ الْغَافِرِينَ ۖ فَلَمَّا جَاءَ الْوَيْلَ الْمُرْسَلُونَ ۖ
قَالَ إِنَّكُمْ قَوْمٌ مَنَّكُونَ ۖ قَالُوا أَوَلَمْ نَجْعَلْكُمْ أَكْوَافًا ۖ يَمْنَحُونَ
وَأَتَيْنَاكَ بِالْحَقِّ ۖ وَإِنَّا لَصَادِقُونَ ۖ فَأَنْصَرِفْ ۖ قَالُوا لَمْ يَنْقُصْ مِنَ الْبَيْتِ
وَأَتَيْنَاكُمْ بِأَنْزَارٍ ۖ وَلَا يَلْتَفِتُونَ ۖ وَتَمْنَحُ أَحَدًا وَتَصُوحُّ تَمْرُونَ
وَضُحْبًا ۖ إِلَيْهِ ذَلِكَ الْأَمْرُ ۖ إِنَّ دَابِرَهُمْ لَوْ مَقْطُوعٌ فَضِيلِينَ ۖ
وَجَاءَ أَهْلَ الْمَدِينَةِ يَسْتَبْشِرُونَ ۖ قَالَ إِنَّ هَؤُلَاءِ ضَلُّوا ضَلِيلًا

जो मुत्तकी है, बागों और चरमों में होंगे। (४५) (उन से कहा जाएगा कि) उन में सलामती (और सुकून) से दाखिल हो जाओ, (४६) और उन के दिलों में जो कदूरत (गंदगी) होगी, उसको हम निकाल (कर साफ़ कर) देंगे, (गोया) भाई-भाई तस्त्तों पर एक-दूसरे के सामने बैठे हुए हैं। (४७) न उन को वहां कोई तकलीफ़ पहुंचेगी और न वे वहां से निकाले जाएंगे। (४८) (ऐ पैगम्बर!) मेरे बन्दों को बता दो कि मैं बड़ा बख़्शने वाला (और) मेहरबान हूँ। (४९) और यह कि मेरा अज़ाब भी दर्द देने वाला अज़ाब है। (५०) और उन को कोई इब्राहीम के मेहमानों के हालात सुना दो (५१) वह इब्राहीम के पास आए तो सलाम कहा, (उन्होंने) कहा, हमें तो तुम से डर लगता है। (५२) (मेहमानों ने) कहा कि डरिये नहीं, हम आप को एक दानिशमंद लड़के की खुशखबरी देते हैं। (५३) (वह) बोले कि जब मुझे बुढ़ापे ने आ पकड़ा, तो तुम खुशखबरी देने लगे। अब किस बात की खुशखबरी देते हो। (५४) (उन्होंने) कहा कि हम आप को सच्ची खुशखबरी देते हैं। आप मायूस न होजिए। (५५) (इब्राहीम ने) कहा कि खुदा की रहमत से (मैं) मायूस क्यों होने लगा इस से) मायूस होना गुमराहों का काम है। (५६) फिर कहने लगे कि फ़रिश्तो! तुम्हें (और) क्या काम है? (५७) (उन्होंने) कहा कि हम एक गुनाहगार क़ौम की तरफ़ भेजे गये हैं (कि उस को अज़ाब करें), (५८) मगर लूत के घर वाले कि उन सब को हम बचा लेंगे। (५९) अल-बत्ता उन की ओरत (कि) उस के लिए हम ने ठहरा दिया है कि वह पीछे रह जाएगी। (६०) ★

फिर जब फ़रिश्ते लूत के घर गये, (६१) तो लूत ने कहा, तुम तो अनजान से लोग हो। (६२) वे बोले कि (नहीं), बल्कि हम आप के पास वह चीज़ ले कर आए हैं, जिस में लोग शक करते थे। (६३) और हम आप के पास यक़ीनी बात ले कर आए हैं और हम सच कहते हैं। (६४) तो आप कुछ रात रहे-से अपने घर वालों को ले निकलें और खुद उन के पीछे चलें और आप में से कोई शक्स पीछे मुड़ कर न देखे और जहां आप को हुक्म हो, वहां चले जाइए। (६५) और हम ने लूत की तरफ़ बख़्श भेजी कि इन लोगों की जड़ मुबह होते-होते काट दी जाएगी। (६६) और शहर वाले (लूत के पास) खुश-खुश (बीड़े) आए। (६७) (लूत ने) कहा कि ये मेरे मेहरबान हैं, (कही

१. यानी हम ऊपर से आसमी नहीं, फ़रिश्ते हैं। क़ौम पर अज़ाब लाए हैं।

वत्तकुल्ला-ह व ला तुल्लुन (६६) कालू अ-व लम् नन्-ह-क अनिल्-आलमीन
(७०) का - ल हाउलाइ बनाती इन् कुन्तुम् फाअिलीन ॥ (७१)

ल-अम्ह-क इन्नहुम् लफी सक-रतिहिम् यअ-महन (७२) फ-अ-ख-जत्-हुमुस्सैहु
मुशिरकीन ॥ (७३) फ-ज-अल्ना आलियहा साफलहा व अम्तर्ना अलैहिम्

हिजा-र-तम् - मिन् सिज्जील ॥ (७४)

इन्-न फी जालि - क लआयातिल्लिल् -

मुत-वस्सिमीन (७५) व इन्नहा लबिसबीलिम्-

मुकीम (७६) इन-न फी जालि - क

ल-आयतिल्लिल् - मुअ्मिनीन ॥ (७७) व

इन् का-न अस्हाबुल्-ऐकति ल-जालिमीन

(७८) फन्-त - कम्ना मिन्हुम् ॥ व

इन्हुमा लबिइमामिम् - मुबीन

★ (७९) व ल-कद् कज्ज-ब अस्हाबुल् -

हिज्रिल्-मुर्सलीन ॥ (८०) व आतैनाहुम्

आयातिना फ-कानू अन्हा मुअ् - रिज्जीन

(८१) व कानू यन्हिन्-न मिनल्जिबालि

बुयूतन् आमिनीन (८२) फ-अ-ख-जत्-हुमुस्सैहु

मुस्बिहीन ॥ (८३) फमा अरना अन्हुम् मा कानू

यकिसबून् ॥ (८४) व मा ख-लक्नस्-समावाति वल्अ-र-ज्ज व मा बैतहुमा

इल्ला बिल्हक्कि ॥ व इन्नस्सा-अ-त लआतियतुन् फस्फहिस्-सफहल्-जमील (८५)

इन्-न रब्ब-क हुवल्-खल्लाकुल्-अलीम (८६) व ल-कद् आतैना-क सब्अम्मिनल्-मसानी

वल्-कुरआनल्-अज्जीम (८७) ला तमुद्दन्-न अन्नै-क इला मां मत्तअ-ना

बिही अज्वाजम्-मिन्हुम् व ला तहजन् अलैहिम् वल्फिज्ज जना-ह-क लिल्-

मुअ्मिनीन (८८) व कुल् इन्नी अनन्नजीरुल् - मुबीन ॥ (८९) कमा

अज्जल्ना अ-लल्-मुक्तसिमीन ॥ (९०) अल्लजी-न ज-अ - लुल् - कुरआ - न

अज्जी-न (९१) फ-व रब्बि-क ल-नस्अ-लन्नहुम् अज्जमीन ॥ (९२) अम्मा कानू

यअ-मलून ॥ (९३) फस्दअ-बिमा तुअ्मर व अअ-रिज्ज अनिल्-मुशिरकीन (९४)

تَقْصُرُونَ فِي وَالْقُرْآنِ وَلَا تَعْلَمُونَ ۚ وَالْأُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ عَنِ الْعَالَمِينَ ۚ قَالَ هَٰؤُلَاءِ بِمَا عَمِلُوا قُضِيَ ۚ لَقَدْ سَدَّ لَهُمْ سُبُلَهُمْ ۚ وَلَقَدْ سَدَّ لَهُمُ الصُّبُحَةَ مَشْرِقِينَ ۚ جَعَلْنَا ۚ عَلَيْهِمْ سُلُكًا ۚ وَأَفْطَرْنَا عَلَيْهِمْ حِمْلًا ۚ وَمَنْ يَحْمِلِ ۚ إِنَّ فِي ۚ ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّمُتَوَسِّئِينَ ۚ وَإِنَّهَا لَلسَّبِيلُ يَمِينٌ ۚ إِنَّ فِي ۚ ذَلِكَ لَآيَةً لِّلْمُؤْمِنِينَ ۚ وَإِنْ كَانَ أَصْحَابُ الْأَيْكَةِ ظَالِمِينَ ۚ فَاتَّقُوا اللَّهَ ۚ إِنَّهُمْ لَفِي سُبُلِهِ ۚ وَأَتَيْنَهُمْ يُنَادُوا أَبْعِدْهُنَّ مِنَّا ۚ وَأَعْلَاهَا مَغْرَضٌ ۚ وَإِنَّ ۚ كَانُوا لَيُفْسِدُونَ ۚ مِنَ الْعَالَمِينَ ۚ وَأَخَذَ اللَّهُ الْعَهْدَ ۚ مِنْهُمْ ۚ فَآخَذَهُمْ عَهْدَهُمْ ۚ فَاذْكُرُوا ۚ عَهْدَكُمْ ۚ وَأَنْتُمْ لَكُمْ ۚ وَالشُّعْرَاءُ ۚ وَالْأَرْضَ ۚ وَمَا بَيْنَهُمَا ۚ أَزِلَ ۚ وَإِنَّ الشَّاعَةَ لَآيَةً ۚ فَاطْمِنُ الصُّلَمَ ۚ الْعَبِيلُ ۚ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ الْخَلَقُ الْعَلِيمُ ۚ وَلَقَدْ ۚ آتَيْنَاكَ سَبْعًا مِّنَ النَّبَاتِ وَالْقُرْآنِ الْعُظِيمِ ۚ لَا تَدْنُ عَنْكَ ۚ إِلَى ۚ مَتَاعًا ۚ لَّآ إِذْ ۚ جَاءَهُمْ ۚ وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ ۚ وَخَفِضْ ۚ جَنَاحَكَ لِمَنِ مِيزِينَ ۚ وَقُلْ إِنِّي أَنَا الْقَدِيرُ الْمَعِينُ ۚ كَمَا ۚ أُنْزِلَ ۚ عَلَى ۚ الْمُفْطِينِ ۚ الَّذِينَ جَعَلَ الْقُرْآنَ ۚ عِصِينَ ۚ أَوْرَثَكَ لَشَتْلَهُمْ أَجْمَعِينَ ۚ عَنَّا ۚ كَانُوا يَعْلَمُونَ ۚ فَاصْبِرْ ۚ

मंजिल ॥ रु-बमा १४ आ १६ ॥ रु-बमा १४

इन के बारे में) मुझे कसबा न करना। (६८) और खुदा ने इरो और मेरी बे-आबरूई न की-जियो। (६९) वे बोले, क्या हम ने तुम को सारे जहान (की हिमायत व तरफदारी) से मना नहीं किया? (७०) (उन्होंने) कहा कि अगर तुम्हें करना ही है, तो यह मेरी (क्रौम की) लड़कियां हैं, (इन से शादी कर लो)। (७१) (ऐ मुहम्मद!) तुम्हारी जान की कसम! वे अपनी मस्ती में मदहोश (हो रहे) थे। (७२) सो उन को सूरज निकलते-निकलते चिचाड़ ने आ पकड़ा। (७३) और हम ने उस (शहर) को (उलट कर) नीचे-ऊपर कर दिया और उन पर खंगर की पथरियां बरसायीं। (७४) बेशक इस (किस्से) में सूझ-बूझ वालों के लिए निशानी है। (७५) और वह (शहर) अब तक सीधे रास्ते पर (मोजूद) है। (७६) बेशक इस में ईमान लाने वालों के लिए निशानी है। (७७) और बन के रहने वाले (यानी शुऐब की क्रौम के लोग) भी गुनाहगार थे। (७८) तो हम ने उन से भी बदला लिया और ये दोनों शहर खुले रास्ते पर (मोजूद) हैं। (७९)★

और हिज्र (की वादी) के रहने वालों ने भी पैगम्बरों को झुठलाया। (८०) हम ने उन को अपनी निशानियां दीं और वे उन से मुंह फेरते रहे। (८१) और वे पहाड़ों को काट-छांट कर घर बनाते थे (कि) अमन (व इत्मीनान) से रहेंगे। (८२) तो चीख ने उन को सुबह होते-होते आ पकड़ा। (८३) और जो काम वे करते थे, वे उन के कुछ भी काम न आये। (८४) और हम ने आसमानों और जमीन को और जो (मख्लूकत) उन में हैं, उस को तद्बीर के साथ पैदा किया है और क्रियामत तो जरूर आ कर रहेगी, तो तुम (उन लोगों से) अच्छी तरह से दर-गुजर करो। (८५) कुछ शक नहीं कि तुम्हारा परवरदिगार ही (सब कुछ) पैदा करने वाला (और) जानने वाला है। (८६) और हम ने तुम को सात (आयतें), जो (नमाज में) दोहरा कर पढ़ी जाती हैं (यानी सूर: अल-हम्दु) और अजमत वाला कुरआन अता फरमाया है। (८७) और हम ने काफ़िरों की कई जमाअतों को, जो (दुनिया के फ़ायदों से) नवाजा है, तुम उन की तरफ (रखत से) आंख उठा कर न देखना और न उनके हाल पर ग़म करना और मोमिनों से खातिर और तवाजो से पेश आना, (८८) और कह दो कि मैं तो एलानिया डर मुनाने वाला हूं, (८९) (और हम इन काफ़िरों पर इसी तरह अजाब नाज़िल करेंगे), जिस तरह उन लोगों पर नाज़िल किया, जिन्होंने तक्सीम कर दिया। (९०) यानी कुरआन को (कुछ मानने और कुछ न मानने से) टुकड़े-टुकड़े कर डाला। (९१) तुम्हारे परवरदिगार की क़रम! हम उन से जरूर पूछ-ताछ करेंगे, (९२) उन कामों की, जो वे करते रहे। (९३)● पस जो हुक्म तुम को (खुदा की तरफ से) मिला है वह (लोगों को) सुना दो और

१. मक्का से शाम को जाते हुए वह बस्ती राह पर नज़र आती थी।

२. हिज्र के रहने वालों से मुराद समूद की क्रौम है। हिज्र मदीने और शाम के दमियान एक बस्ती थी। समूद की क्रौम वहां रहती थी।

इन्ना कफ़नाकल् - मुस्तहिजईन ॥ (६५) अल्लजी-न यज-अलून-न म-अल्लाहि
इलाहन् आख-रुफ़सी-फ़ यअलमून (६६) व ल-क़द् नअ-लमु अन्न-क यज़ीकु
सदरु-क बिमा यकूलून ॥ (६७) फ़-सबिह् बिहम्दि रबिब-क व कुम्-
मिनस्साजिदीन ॥ (६८) वअ-बुद् रबब-क हत्ता यअति-य-कल्-यकीन ★ (६९)

१६ सूरतुन्नह्ल-लि ७०

(मक्की) इस सूर. में अरबी के ७६७४ अक्षर,
१८७१ शब्द, १२८ आयतें और १६ रकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

अता अमरुल्लाहि फ़ ला तस्तअ-जिलूहु ७

मुब्हानह व तआला अम्मा युशिरकून (१)

युनज़िलुल् - मलाइ - क-त बिर्हहि मिन्

अम्रिही अला मय्यशाउ मिन् अिबादिही

अन् अन्जिरू अन्नह ला इला-ह इल्ला

अन फ़त्तकून (२) ख-ल-कस्-समावाति

वलअर् - ज़ बिल्हक्कि ७ तआला अम्मा

युशिरकून (३) ख-ल-कल्-इन्सान मिन् नुत्फ़तिन् फ़इजा हु-व खसीमुम्-

मुबीन (४) वल्-अन्आ-म ख-ल-कहाल लकुम् फ़ीहा दिफ़ुव-व मनाफ़िअ व

मिन्हा तअ-कुलून ७ (५) व लकुम् फ़ीहा जमालुन् हीन तुरीह-न व हीन

तसरहन् ७ (६) व तहिमलु अस्क़ालकुम् इला ब-लदिल्लम् तकून बालिगीहि

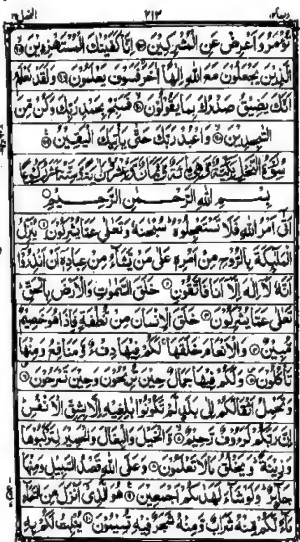
इल्ला बिशिकिल्-अन्फ़ुसि ७ इन्-न रबबकुम् ल-रऊफ़ुरहीम ७ (७) वल्खै-ल

वल्बिगा-ल वल्हमी-र लितरकबूहा व जी-न - तन् ७ व यखलुकु मा ला

तअ - लमून (८) व अ - लल्लाहि कस्रुस्सबीलि व मिन्हा जाइरुल्

व लौ शा-अ ल-हदाकुम् अज्-मयीन ★ (९) हुवल्लजी अन्ज़-ल मिनस्-

समाइ माअल्लकुम् मिन्हु शराबु-व-व मिन्हु श-जरुन् फ़ीहि तुसीमून (१०)



मुसिरकों का (जरा) ख्याल न करो। (६४) हम तुम्हें उन लोगों की (बुराई) से बचाने के लिए जो तुम से मजाक करते हैं, काफ़ी हैं। (६५) जो खुदा के साथ और माबूद करार देते हैं, सो बहुत जल्द उन को (इन बातों का अंजाम) मालूम हो जाएगा। (६६) और हम जानते हैं कि उन की बातों से तुम्हारा दिल तंग होता है, (६७) तो तुम अपने परवरदिगार की तस्बीह कहते और (उस की) खूबियां बयान करते रहो और सज्दा करने वालों में दाखिल रहो। (६८) और अपने परवरदिगार की इबादत किये जाओ, यहां तक कि तुम्हारी मौत (का वक़्त) आ जाए। (६९) ★

१६ सूर: नहल ७०

सूर: नहल मक्की है और इस में १२८ आयतें और सोलह रुकूअ हैं।

शुरू खुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

खुदा का हुक्म (यानी अज्ञाब गोया) आ ही पहुंचा तो (काफ़िरों!) इस के लिए जल्दी मत करो। ये लोग जो (खुदा का) शरीक बनाते हैं, वह इस से पाक और बाला-तर है। (१) वही फ़रिश्तों को पैग़ाम दे कर अपने हुक्म से अपने बन्दों में से, जिस के पास चाहता है, भेजता है कि (लोगों को) बता दो कि मेरे सिवा कोई माबूद नहीं, तो मुझी से डरो। (२) उसी ने आसमानों और ज़मीन को हिवमत के साथ पैदा किया, उस की जात इन (काफ़िरों) के शिकंसे ऊंची है। (३) उसी ने इंसान को नुत्फ़े से बनाया, मगर वह उस (पैदा करने वाले) के बारे में एलानिया झगड़ने लगा, (४) और चारपायों को भी उसी ने पैदा किया, उस में तुम्हारे लिए जड़ाबल और बहुत से फ़ायदे हैं और इन में से कुछ को तुम खाते भी हो। (५) और जब शाम को उन्हें (जंगल से) लाते हो और जब सुबह को (जंगल) चराने ले जाते हो, तो उन से तुम्हारी इज़्ज़त व शान है। (६) और (दूर-दूर के) इन शहरों में जहां तुम मशक्कत भरी तकलीफ़ के बग़ैर नहीं पहुंच सकते, वे तुम्हारे बोझ उठा कर ले जाते हैं। कुछ शक नहीं कि तुम्हारा परवरदिगार निहायत शक्कत (मुहब्बत) वाला मेहरबान है। (७) और उसी ने घोड़े और खच्चर और गधे पैदा किये ताकि तुम उन पर सवार हो और (वह तुम्हारे लिए) रौनक व जीनत (भी हैं) और वह (और चीज़ें भी) पैदा करता है, जिन की तुम को खबर नहीं। (८) और सीधा रास्ता तो खुदा तक जा पहुंचता है और कुछ रास्ते टेढ़े हैं, (वे उस तक नहीं पहुंचते) और अगर वह चाहता तो तुम सब को सीधे रास्ते पर चला देता। (९) ★

वही तो है जिस ने आसमान में पानी बरसाया, जिसे तुम पीते हो और उस से पेड़ भी (हरे-भरे होते हैं), जिन में तुम अपने चारपायों को चराते हो। (१०) उसी पानी से वह तुम्हारे लिए

१. जाड़े के सामान को जड़ाबल कहते हैं।

युम्बितु लकुम् बिहिज्-जर-अ वरजैतू-न वन्नखी-ल वल्-अब्-ना-ब व मिन्
कुत्लिस्स-मराति ७ इन्-न फी जालि-क ल-आ-यतल्-लिकोमिय्य-त-फक्करुन (११)
व सख्ख-र लकुमुल्लै-ल वन्नहा-र ७ वषशम्-स वल्क-म-र ७ वन्नुजूमु मुसख्खरातुम्-
बि-अमरिही ७ इन्-न फी जालि-क लआयातिल्-लिकोमिय्यअ-क्लिन् ॥

(१२) व मा ज-र-अ लकुम् फिलअजि
मुख्तलिफन् अत्वानुह ७ इन्-न फी जालि-क
ल-आयतल्-लिकोमिय्यज्जक्करुन (१३)

व हुवल्लजी सख्ख-रल्-वह-र लि-तअकुल्
मिन्हु लह-मन् तरिय्यव-व तस्तख्रिज् मिन्हु
हिल्-य-तन् तल्बसूनहा ७ व तर-ल्फल्-क
मवाखि-र फीहि व लि-तव्तशू मिन् फजिलही
व ल-अल्लकुम् तश्कुरून (१४) व अल्का

फिल्अजि रवासि-य अन् तमी-द बिकुम् व
अन्हारव-व सुबुल्-ल-अल्लकुम् तह-तदून
(१५) व अलामातिन् ७ व बिन्नजिम हुम्
यह्त्तदून (१६) अ-फ-मय्यख्लुकु क-मल्ला

الزُّكْرِ وَالزُّيُونِ وَالنَّخِيلِ وَالْأَعْنَابِ وَمِنْ كُلِّ الثَّمَرِ إِنَّ فِي
ذَلِكَ لَآيَةً لِّقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ۝ وَنَحْنُ لَكُمْ لَئِيلُ وَالنَّهَارِ وَقَدَسِ
وَالْقَمَرِ وَالصُّبُورِ مَشْرِقًا وَأَمْرًا ۝ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِّقَوْمٍ
يَعْقِلُونَ ۝ وَمَا ذَرَأْنَا لَكُمُ فِي الْأَرْضِ حَتْفًا الْوَنَاءِ إِنَّ فِي ذَلِكَ
لَآيَةً لِّقَوْمٍ يَذَّكَّرُونَ ۝ وَهُوَ الَّذِي سَخَّرَ الْبَحْرَ لَكُمْ طَرِيقًا فَاكُونُوا مِنْهُ
طَرِيقًا وَسَخَّرَ جَوَارِمَهُ جَلِيَّةً تَلْبَسُوهَا وَتَرَى الْفُلَ يَكُونُ
بَيْنَهُ وَيَتَّبِعُوا مِنْ بَيْنِهِمْ وَتَلْمَسُ الْوَنَاءُ ۝ وَالْفُلَى فِي الْأَرْضِ
أَوَّابِينَ ۝ إِنَّ تَحْيِيْلَكُمْ وَأَنفُسًا لَكُمْ لَهْدَلِكُمْ ۝ وَلَقَدْ عَلَّمْنَا
وَالصُّبُورِ ۝ آمَنَ يَحْيَى ۝ كَمَنْ لَا يَخْلُقُ أَفَلَا
تَذَكَّرُونَ ۝ وَلَنْ نَعْدَّ وَاعِيَةً لِّلْفُلِ لَوْ أَنَّ الْفُلُوعُ
أَجْمَعَةَ ۝ وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا يَدْعُونَ وَمَا تَعْلَمُونَ ۝ وَلِلَّهِ يَتَّخِذُ
مَنْ دُونُ اللَّهِ يَخْلُقُونَ شَيْئًا وَهُمْ يُخْفُونَ ۝ أَمْ أَمْرًا عَرِ
سِيًّا وَمَا يَشْعُرُونَ ۝ إِنَّا نَبْعَثُ ۝ إِلَهُ ۝ وَاحِدًا
فَالَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ قُلُوبُهُمْ مُّكْرَمَةٌ وَهُمْ يُسْكِنُونَ
لَا جِزْمَانَ اللَّهُ يَعْلَمُ مَا يَدْعُونَ وَمَا يُعْلَمُونَ ۝ إِنَّهُ لَا يُحِبُّ
السُّكْرَانَ ۝ وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ مَاذَا أُنْزِلَ لَكُمْ فَاذْكُرُوا ۝ فَاذْكُرُوا
الَّذِينَ ۝ لِيَعْلَمُوا أَنَّكُمْ كَاذِبُونَ ۝ وَمِنْ أَوَّارٍ

यख्लुकु ७ अ-फला त-जक्करुन (१७) व इन् त-अदूद् निअ-म-तुल्लाहि ला तुहसहा ॥
इन्नल्ला-ह ल-गफूर-रहीम (१८) वल्लाहु यअ-लमु मा तुसिरू-न व मा
तुअ-लिन्नू (१९) वल्लजी-न यदू-न मिन् हुनिल्लाहि ला यख्लुकू-न शैअव-व
हुम् युख्लकून ७ (२०) अम्वातुन् शैरु अह्याइन् ७ व मा यशूरु - न ॥
अथ्या - न युअसून ★ (२१) इलाहुकुम् इलाहु व्वाहिदुन् ७ फल्लजी - न ला
युअमिन्नू-न बिल्आखिरति कुलूबुहुम् मुन्कि-रतु व-व हुम् मुस्तक्बिरुन (२२) ला
ज-र-म अन्नल्ला-ह यअ-लमु मा तुसिरू-न व मा युअ-लिन्नू-न ७ इन्नहू ला-युहिबुल्-
मुस्तक्बिरीन (२३) व इजा की-ल लहुम् माजा अन्-ज - ल रब्बुकुम् ॥
काल् असातीरुल् - अब्वलीन ॥ (२४) लियहिमल् औजारहुम्
कामि-ल - तय्योमल् - क्रियामति ॥ व मिन् औजारिल्लजी - न युजिल्लनहुम्
बिसेरि अलिमन् ७ अला सा - अ मा यजिरुन ★ (२५)

लेती और जंतून और खजूर और अंगूर (और अनगिनत पेड़) उगाता है और हर तरह के फल (पंदा करता है), और गौर करने वालों के लिए इस में (अल्लाह की क़ुदरत की बड़ी) निशानी है। (११) और उसी ने तुम्हारे लिए रात और दिन और मूरज और चांद को काम में लगाया और उसी के हुक्म से सितारे भी काम में लगे हुए हैं, समझने वालों के लिए, इस में (खुदा की क़ुदरत की बहुत सी) निशानियां हैं। (१२) और जो तरह-तरह के रंगों की चीजें उस ने ज़मीन में पैदा कीं, (सब तुम्हारे फ़रमान के तहत कर दीं), नसीहत पकड़ने वालों के लिए इस में निशानी है। (१३) और वही तो है, जिस ने दरिया को तुम्हारे अस्लियार में किया ताकि उस में से ताज़ा गोश्त खाओ और उस से ज़ेवर (बग़ैरह) निकालो, जिसे तुम पहनते हो और तुम देखते हो कि कश्तियां दरिया में पानी को फाड़ती चली जाती हैं और इस लिए भी (दरिया को तुम्हारे अस्लियार में किया) कि तुम खुदा के फ़रल से रोज़ी तलाश करो और ताकि उस का शुक्र अदा करो। (१४) और उसी ने ज़मीन पर पहाड़ (बना कर) रख दिए कि तुम को ले कर कहीं शुक न जाए और नहरें और रास्ते बना दिए ताकि एक जगह से दूसरी जगह तक (आसानी से) जा सको। (१५) और (रास्तों में) निशानात बना दिए और लोग सितारों से भी रास्ते मालूम करते हैं। (१६) तो जो (इतनी मल्लू-कात) पंदा करे, क्या वह ऐसा है, जो कुछ भी पंदा न कर सके? तो फिर तुम गौर क्यों नहीं करते? (१७) और अगर तुम खुदा की नेमतों को गिनना चाहो, तो गिन न सको। बेशक खुदा बख़्शने वाला मेहरबान है। (१८) और जो कुछ तुम छिपाते और जो कुछ जाहिर करते हो, सब खुदा जानता है। (१९) और जिन लोगों को ये खुदा के सिवा पुकारते हैं, वे कोई चीज़ भी तो नहीं बना सकते, बल्कि खुद उन को जोर बनाते हैं। (२०) (वे) लाशें हैं, बे-जान, उन को यह भी तो मालूम नहीं कि उठाए कब जाएंगे। (२१) ★

तुम्हारा माबूद तो अकेला खुदा है, तो जो आखिरत पर ईमान नहीं रखते, उन के दिल इंकार कर रहे हैं और वे सर-कश हो रहे हैं। (२२) ये जो कुछ छिपाते हैं और जो जाहिर करते हैं, खुदा जरूर उस को जानता है। वह सर-कशी को हरगिज़ पसंद नहीं करता। (२३) और जब इन (काफ़िरों से) कहा जाता है कि तुम्हारे परवरदिगार ने क्या उतारा है, तो कहते हैं कि (वे तो) पहले लोगों की हिकायतें हैं। (२४) (ऐ पैग़म्बर! उन को बकने दो) ये क्रियामत के दिन अपने (आमाल के) पूरे बोझ भी उठाएंगे और जिन को यह बे-तहकीक़ गुमराह करते हैं, उन के बोझ भी (उठाएंगे)। सुन रखो कि जो बोझ ये उठा रहे हैं, बुरे हैं। (२५) ★

कद् म-क-रल्लजी-न मिन् क़बिलहिम् फ-अ-तल्लाहु बुन्यानहुम् मिनल्-क़वाअिदि
फ-ख़र-र अलैहिमुस्सकफ़ु मिन् फ़ोक्कहिम् व अताहुमुल्-अजाबु मिन् हैसु ला
यशुरून (२६) सुम्-म यौमल्क्रियामति युख़ज़ीहिम् व यकूल ऐ-न शुरकाइयल्-
लजी-न कुन्तुम् तुशाक्कू-न फ़ीहिम् ॥ क़ालल्लजी - न ऊतुल्-अल्-म इन्नल् -

ख़िजयल्-यो-म वस्सू - अ अ-लल्-काफ़िरीन ॥

(२७) अल्लजी - न त - त्वफ़फ़ाहुमुल्-

मलाइकतु ज़ालिमी अन्फ़ुसिहिम्

फ-अल्कबुस्स-ल-म मा कुन्ना नअ-मलु मिन्

सूइन् ॥ बला इन्नल्ला - ह अलीमुम् -

बिमा कुन्तुम् तअ-मलून (२८) फ़दख़लू

अब्बा-ब ज-हन्न-म ख़ालिदी - न फ़ीहा ॥

फ-ल्बिअस् मस्वल् मु-त-कबिरीन (२९)

व फ़ी-ल लिल्लजीनत्तक़ी माज़ा अन्ज-ल

रख़ुकुम् ॥ क़ालू ख़ैरन् ॥ लिल्लजी - न

अह्सन् फ़ी हाज़िहिद् - दुन्या ह-स-नतुन् ॥

व ल-दारुल्-आख़िरति ख़ैरन् ॥ व लनिअ-म ॥

दारुल्-मुत्तकीन ॥ (३०) जन्नातु अर्दिन्यदख़लूनहा तजरी मिन् तह्तिहल्-

अन्हार लहुम् फ़ीहा मा यशऊन ॥ कज़ालि - क यजज़िल्लाहुल् - मुत्तकीन

(३१) अल्लजी-न त-त-वफ़फ़ाहुमुल्-मलाइकतु तय्यिबी-न ॥ यकूल-न सलामुन्

अलैकुमुदख़लुलु - जन्न - त बिमा कुन्तुम् तअ - मलून (३२) हल्

यज्जुरू - न इल्ला अन् तअतियहुमुल् - मलाइकतु औ यअति - य अम्ह

रब्बि-क ॥ कज़ालि-क फ-अ-लल्लजी-न मिन् क़बिलहिम् ॥ व मा अ-ल-महुमुल्लाहु

व लाकिन् कानू अन्फ़ुसहुम् यज़िलमून (३३) फ-असाबहुम् सय्यिआतु मा

अमिलू व हा - क़ बिहिम् मा कानू बिही यस्तहिज़ऊन * (३४)

الَّذِينَ يُضِلُّونَهُمْ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۖ أَكْثَرُ سَاءَ مَا يَكُونُونَ ۚ وَكَانَ لِكُلِّ قَوْمٍ نَصِيبٌ
وَمِن قَوْلِهِمْ ۖ قَالَ اللَّهُ لِيُنْزِلَ الْهَرَمُ مِنَ الْقَوْمِ الَّذِي هُوَ عَلَيْهِمُ التَّحَفُ
وَمِن قَوْلِهِمْ ۖ وَأَتَيْنَهُمُ الْعَذَابَ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُونَ ۚ وَهُمْ
الْقِيَمُ يُخْرِجُهُمْ وَيَقُولُ آيُنْ شَرَّ كَاوَى الَّذِينَ لَدُنْهُمْ تَكَادُونَ
فِيهِمْ ۚ قَالَ الَّذِينَ أَوْفُوا الْعَهْدَ إِن الْفِتْنَى إِلَيْنَا ۚ وَالَّذِينَ كَفَرُوا
الَّذِينَ تَوَدَّعُهُمْ الْمَلِكَةُ طَالِيْنَ أَتَيْنَهُمْ ۚ وَالْقَوْمُ الْمَعْمُورُ
وَمِن قَوْلِهِمْ ۖ بَلَىٰ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِمَا أَنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۚ وَكَانَ الْيَوْمَ
نَحْمُ خَلِيدِينَ فِيهَا فَلَيْسَ مَعْنَى التَّكْوِينِ ۚ وَقِيلَ لِلَّذِينَ
أَتَوْا مَا أَتَا أَنْزِلْ رَبُّكُمْ ۚ قَالَُوا خَيْرُ الَّذِينَ أَحْسَنُوا إِلَىٰ هَٰؤُلَاءِ
الَّذِينَ أَحْسَنُوا ۚ وَلَكِنَّ الْأَجْرَ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ وَكَانَ الْيَوْمَ
عَدُوٌّ يَدْخُلُونَهَا أُخْرَىٰ مِنْ شَيْءِ الْأَمْرِ لَهَا ۚ وَمَا يَكُونُونَ
لَكَ بِشَيْءٍ مِنَ الشَّيْءِ ۚ الَّذِينَ تَوَدَّعُهُمُ الْمَلِكَةُ طَالِيْنَ
يَقُولُونَ سَلُوا عَلَيْهِمْ ۚ أَدْخَلُوا الْجَنَّةَ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۚ هَلْ
يُظْهَرُونَ إِلَّا أَنْ تَأْتِيَهُمُ الْمَلِكَةُ أَوْ يَأْتِيَ أَمْرٌ ۚ كَذَلِكَ
الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ وَمَا ظَنَّهُمُ اللَّهُ وَلَكِنْ كَانُوا أَفْكَهَمُ
يُظْلِمُونَ ۚ فَأَصَابَهُمْ سَيِّئَاتُ مَا عَمِلُوا ۚ وَرَأَىٰ يَهُودَ مَا كَانُوا
يَسْتَفِرُّونَ ۚ وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا الْوَيْلَ لَنَا اللَّهُ مَا عَادَنَا نَارَ

इन से पहले लोगों ने भी (ऐसी ही) मक्कारियां की थीं, तो खुदा (का हुक्म) उन की इमारत के स्तूनों पर आ पहुंचा और छत उन पर उन के ऊपर से गिर पड़ी। और (ऐसी तरफ से) उन पर अज़ाब आ वाक़ेअ हुआ, जहां से उन को ख्याल भी न था। (२६) फिर वह उन को क्रियामत्त के दिन भी ज़लील करेगा और कहेगा कि मेरे वे शरीक कहां हैं, जिन के बारे में तुम झगड़ा करते थे? जिन लोगों को इल्म दिया गया था, वे कहेंगे कि आज काफ़िरों की हसवाई और बुराई है। (२७) (उन का हाल यह है कि) जब फ़रिश्ते उन की रूहें कब्ज़ करने लगते हैं (और ये) अपने ही हक में जुल्म करने वाले (होते हैं) तो इताअतगुज़ार व फ़रमांबरदार हो जाते हैं (और कहते हैं) कि हम कोई बुरा काम नहीं करते थे। हां, जो कुछ तुम किया करते थे, खुदा ख़ूब जानता है। (२८) सो दोऊल्ला के दरवाज़ों में दाख़िल हो जाओ, हमेशा उस में रहोगे, अब तकबुर (घमंड) करने वालों का बुरा ठिकाना है। (२९) और (जब) परहेज़गारों से पूछा जाता है कि तुम्हारे परवरदिगार ने क्या नाज़िल किया है, तो कहते हैं कि बेहतरीन (कलाम)। जो लोग भले हैं, उन के लिए इस दुनिया में भी मलाई है और आख़िरत का घर तो बहुत अच्छा है और परहेज़गारों का घर बहुत ख़ूब है। (३०) (वह) हमेशा के बहिश्त (हैं) जिन में वे दाख़िल होंगे, उन के नीचे नहरें वह रही हैं वहां जो चाहेंगे, उन के लिए मयस्सर होगा। खुदा परहेज़गारों को ऐसा ही बदला देता है। (३१) (उन की हालत यह है कि) जब फ़रिश्ते उन की जानें निकालने लगते हैं और ये (कुफ़ व शिर्क से) पाक होते हैं, तो 'सलामुन अलैकुम' कहते हैं (और कहते हैं कि) जो अमल तुम किया करते थे, उन के बदले में बहिश्त में दाख़िल हो जाओ। (३२) क्या ये (काफ़िर) इस बात के इन्तिज़ार में हैं कि फ़रिश्ते उन के पास (जान निकालने) आएंगे या तुम्हारे परबदिगार का हुक्म (अज़ाब का) आ पहुंचे। इसी तरह उन लोगों ने किया था जो उन से पहले थे और खुदा ने उन पर जुल्म नहीं किया, बल्कि वे खुद अपने आप पर जुल्म करते थे। (३३) तो उन के आमांल के बुरे बदले मिले और जिस चीज़ के साथ वे ठट्ठे किया करते थे, उस ने उन को (हर तरफ से) घेर लिया। (३४) ★

व काललजी-न अशरकू लौ शाअल्लाहु मा अ-बदना मिन् दूनिही मिन् शैइन्
नहनु व ला आबाउना व ला हरम्मा मिन् दूनिही मिन् शैइन् कजालि-क
फ-अ-ललजी - न मिन् कबिलहिम् ८ फ - हल् अ-लरसुलि इल्लल् - बलागुल-
मुबीन (३५) व ल-कद् ब-अस्ता फ्री कुलि उम्मतिरसूलत् अनिअ-बुदुल्ला-ह
वज्जतिबुत् - तागू - त ८ फमिन्हुम् मन्

ह - दल्लाहु व मिन्हुम् मन् हक्कत्
अलैहिज्जलालतु ८ फसीरू फिलअजि
फयूरू कै-फ का-न आकिबतुल्-मुकज्जिबीन
(३६) इन् तहिरस् अला हुदाहुम्
फ-इन्ल्ला-ह ला यहदी मय्युज्जिल्लु व मा
लहुम् मिन्नासिरीन (३७) व अक्समू
बिल्लाहि जह - द ऐमानिहिम् ॥ ला
यअसुल्लाहु मय्यमूत् ८ बला वअ-दन् अलैहि
हक्कव-व लाकिन - न अक्सरन्नासि ला
यअ-लमून ॥ (३८) लियुबय्यि-न लहुमुलजी
यख्तलिफून फ्रीहि व लियअ-ल-मल्लजी-न क-फरू
अन्नहुम् कानू काजिबीन (३९) इन्मा

وَفِيهِ مِنْ شَرِّهِمْ مَنْ وَكَانَ آيَاتُهُمْ نَارًا مِنْ دُونِهَا
شَرُّهُ كَذَلِكَ نَعْلَمُ الَّذِينَ مِنْ جِبِلِّهِمْ قُلُوبُ عَلَى الْأَرْضِ
الْبَلَاءِ الْيَمِينِ ۖ وَلَقَدْ بَعَثْنَا فِي الْأَنْفُسِ أَنْ أَعْلَمُوا اللَّهَ
وَالْجَنَّةَ وَالْجَهَنَّمَ قَدْ بَعَثْنَا مِنْ هَدَى اللَّهِ وَمِنْهُمْ مَنْ حَقَّتْ
عَلَيْهِ الْعُقُوبَةُ فَبَدَّلْنَا الْأَرْضَ فَانْظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ
الْمُكَذِّبِينَ ۚ إِنَّهُمْ حَرُّوا عَلَى هَذَا نَهْمٍ فَإِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ
الْفَاسِقِينَ وَمَا لَهُمْ مِنْ لُجُومٍ ۖ وَاسْتَوُوا بِاللَّهِ جَعَلَ الْإِيمَانُ
لَا يَعْصِي اللَّهُ مَنْ يَمُوتُ بَلٍ وَعَدَّ عَلَيْهِمْ عَذَابًا ۖ إِنَّ الْكَافِرِينَ
لَا يَعْلَمُونَ ۚ لَيْسَ لَهُمْ الْقُدْرَةُ أَنْ يَنْصَرِفُوا فِيهِمْ وَيُعْصِمَهُمُ الَّذِينَ
كَفَرُوا وَالْكَافِرُ كَانُوا كَذِبِينَ ۚ إِنَّمَا تَوَلَّى الْيَهُودَ وَالنَّصَارَةَ
قُلُوبُ لَهُمْ لَكِنْ قُلُوبُهُمْ ۖ وَالَّذِينَ هَارَوْا بِالْقَوْمِ فِي اللَّهِ مِنْ بَعْضِ مَا
ظَلَمُوا النَّبِيَّ كَانُوا فِي الدُّنْيَا حَسَةً ۖ وَكَانُوا فِي الْأَمْرِ وَالْكَرَمِ
كَانُوا يَعْلَمُونَ ۚ الَّذِينَ صَبَرُوا عَلَى رَيْبِهِمْ يَتَذَكَّرُونَ ۖ وَمَا
أَنْتُمْ مِنْ جِبِلِّ الْأَرْضِ إِلَّا أَصْحَابُ الْأَنْفُسِ الْأَعْلَى الَّذِينَ
كَانُوا لَا يَعْلَمُونَ ۚ وَالَّذِينَ هَارَوْا بِالْقَوْمِ فِي اللَّهِ مِنْ بَعْضِ مَا
ظَلَمُوا النَّبِيَّ كَانُوا فِي الدُّنْيَا حَسَةً ۖ وَكَانُوا فِي الْأَمْرِ وَالْكَرَمِ
كَانُوا يَعْلَمُونَ ۚ الَّذِينَ صَبَرُوا عَلَى رَيْبِهِمْ يَتَذَكَّرُونَ ۖ فَأَمَّا الَّذِينَ كَفَرُوا
فَالَّذِينَ أَنْزَلَ اللَّهُ بِهِمْ الْكِتَابَ تَوَلَّوْا بَيْنَهُمُ الْعَذَابَ بَيْنَ

क्रौलुना लिशैइन् इजा अ-रदनाहु अन् नकू-ल लह कुन् फ-यकून * (४०)
वल्लजी-न हाजरू फिल्लाहि मिम्बअ-दि मा जुलिमू लनुबविअन्नहुम् फिदुन्या
ह-सन - तन् ८ व ल - अजरू - आखिरति अक्बरल्लौ कानू यअ - लमून ॥
(४१) अल्लजी-न स-बरू व अला रबिहिम् य-त-वकलून (४२) व मा
असंला मिन् कबिल-क इल्ला रिजालन्नूही इलैहिम् फस्-अल अहलज्जिबिर
इन् कुन्तुम् ला तअ-लमून ॥ (४३) बिल्बय्यिनाति वज्जुबुरि ८ व अन्जल्ला
इलैकज्जिक-र लितुबय्यि-न लिन्नासि मा नुज्जि-ल इलैहिम् व ल-अल्लहुम् य-त-फक्करून
● (४४) अ-फ-अमिनललजी - न म-करस्सय्यिआति अय्यस्सिफिल्लाहु बिहिमुल्-
अर-ज ओ यअति-य-हुमुल् - अजाबु मिन् हैसु ला यअरून ॥ (४५)

और मुशिरक कहते हैं कि अगर खुदा चाहता तो न हम ही उस के सिवा किसी चीज को पूजते और न हमारे बड़े ही (पूजते) और न उस के (फरमान के) बगैर हम किसी चीज को हाराम ठहराते। (ऐ पैगम्बर !) इसी तरह इन से अगले लोगों ने किया था, तो पैगम्बरों के जिम्मे (खुदा के हुक्मों को) खोल कर पहुंचा देने के सिवा और कुछ नहीं। (३५) और हम ने हर जमाअत में पैगम्बर भेजा कि खुदा ही की इबादत करो और बुनों (की पूजा करने) से बचो, तो उन में कुछ ऐसे हैं, जिन को खुदा ने हिदायत दी और कुछ ऐसे हैं, जिन पर गुमराही साबित हुई, सो जमीन पर चल-फिर कर देख लो कि झुठलाने वालों का अंजाम कैसा हुआ। (३६) अगर तुम इन (काफिरों) को हिदायत के लिए ललचाओ, तो जिस को खुदा गुमराह कर देता है, उस को हिदायत नहीं दिया करता और ऐसे लोगों का कोई मददगार भी नहीं होता। (३७) और ये खुदा की सख्त-सख्त क़स्में खाते हैं कि जो मर जाता है, खुदा उसे (क्रियामत के दिन क़ब्र से) नहीं उठाएगा। हरगिज़ नहीं ! यह (खुदा का वायदा) सच्चा है और इस का पूरा करना उसे ज़रूर है, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते, (३८) ताकि जिन बातों में ये इस्तिलाफ़ करते हैं, वह उन पर जाहिर कर दे और इस लिए कि काफिर जान लें कि वे झूठे थे। (३९) जब हम किसी चीज का इरादा करते हैं तो हमारी बात यही है कि उस को कह देते हैं कि "हो जा" तो वह हो जाती है। (४०)★

और जिन लोगों ने जुल्म सहने के बाद खुदा के लिए वतन छोड़ा, हम उन को दुनिया में अच्छा ठिकाना देंगे और आखिरत का बदला तो बहुत बड़ा है काश ! वे (उसे) जानते। (४१) यानी वे लोग जो सन्न करते हैं और अपने परवरदिगार पर भरोसा रखते हैं। (४२) और हम ने तुम से पहले मदीं ही को पैगम्बर बना कर भेजा था, जिन की तरफ़ हम वहा भेजा करते थे। अगर तुम लोग नहीं जानते, तो अहले किताब से पूछ लो। (४३) (और उन पैगम्बरों को) दलीलें और किताबें दे कर (भेजा था) और हम ने तुम पर भी यह किताब नाज़िल की है ताकि जो (इशारात) लोगों पर नाज़िल हुए हैं, वह उन पर जाहिर कर दे और ताकि वे गौर करें●(४४) क्या जो लोग बुरी-बुरी चालें चलते हैं, इस बात से बे-ख़ौफ़ हैं कि खुदा उन को जमीन में धंसा दे या (ऐसी तरफ़ से) उन पर अज़ाब आ जाए जहां से उन को खबर ही न हो। (४५) या उन को चलते-फिरते पकड़ ले।

ओ यञ्जुजहुम् क्री तक्रल्लुबिहिम् क्रमा हुम् बिमुअ-जिजीन ॥ (४६) ओ
यञ्जुजहुम् अला तखव्वुफिन् ५ फ-इन्-न रब्बकुम् ल - रऊफुरंहीम (४७)
अ व लम् यरौ इला मा ख-ल-कल्लाहु मिन् शैड य्य-तफ्ययउ जिलालुह अनिल्-
यमीनि वश्शमाइलि मुज्जदल् - लिन्लाहि व हुम् दाखिरुन (४८) व

लि॒ल्लाहि॑ यस्जु॒दु मा॑ फि॒स्समा॑वाति॒ व
मा॑ फि॒ल्अ॒जि मि॒न् दा॒ब्बति॑व्वल्-मल॑इक॒तु
व हु॒म् ला॑ यस्त॒विब॑रून् (४९) यखाफू-न
रव्वहु॒म् मि॒न् फौ॒किहि॒म् व यफू-अलू-न मा॑
युअ॒-मरून् * □ (५०) व काल॒ल्लाहु॑ ला
तत्तखिजू॑ इलाहे॒निस्ने॑नि ८ इन्नमा हु - व
इलाहु॑ व्वाहि॒दुन् ८ फइय्या - य फह॑बून्
(५१) व लहू॑ मा फि॒स्समा॑वाति
वल्अ॒जि व लहु॑द्दीनु॒ वासि॑बन् ७ अ-फ-गैर॒ल्लाहि॑
तत्तकून् (५२) व मा बि॒कुम् मि॒न्
निअ॒-मति॑न् फमि॒नल्ला॑हि सु॒म् - म इजा
मस्सकु॒मुज्ज॑ररु फ-इलै॒हि तज्ज॑रून् ८ (५३)

٢١٤
عِبَادُكَ يَقُولُونَ ۖ أَوْ يَأْخُذُهُمْ فِي تَقْلُوبِهِمْ مَا هُمْ بِمُؤْمِنِينَ ۚ
أَوْ يَأْخُذُهُمْ عَلَى تَحَوُّبٍ لِّأَن يَكُونُوا رُفُوحًا ۖ وَلَمْ يَرَوْا
إِلَّا مَا عَلَنَ اللَّهُ مِنْ شَيْءٍ وَيَتَّبِعُوا ظِلَّ الْعِشِيِّ وَالشَّكَلِ
مُجِدِّدٍ لِلَّهِ وَمُحْدِثٍ دُخُونٍ ۖ وَيَقُولُ يَحْدُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي
الْأَرْضِ مِنْ دَابَّةٍ وَالنَّاسِ ۖ وَهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُونَ ۖ يَتَخَفُونَ
رَأْسَهُمْ فَمَنْ قُوَّتُهُمْ وَهُمْ يَفْضَحُونَ مَا يُمْرُونَ ۖ ذَٰلِكَ اللَّهُ الَّذِي لَا تُخْذِلُهُ
الْأَهْلِيَّةُ الشُّبُهَاتُ ۖ الْقَوْلُ الْوَاحِدُ ۖ وَلَا يَلَاكِيهِمْ ۖ وَلَهُ مَا
فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ وَلَهُ الدِّينُ وَاصِبًا أَفَغَيْرَ اللَّهِ تَتَّبِعُونَ ۖ
وَمَا لَهُمْ مِنْ نِعْمَةٍ ۖ كَيْفَ يَكُونُ اللَّهُ ثُمَّ إِذَا مَنَّكَ اللَّهُ فَلَا يُبَدِّلُ كَيْدُكَ
شَيْئًا ۖ إِذَا نَفَخَ الْفُخْرَ عَلَّمَهُ الْوَيْلُ ۖ يَنْفَكُ بِرَهْمِهِ يَفْرُكُونَ ۖ
يَكْفُرُونَ بِمَا آتَيْنَاهُمْ فَتَقْصُرَ مَنَافِعُ عَنْهُمْ ۖ وَيَجْعَلُونَ
لِذَا يَكْمَلُونَ نَبِيًّا ۖ فَمَا زِدْهُمْ تِلْكَ فَتَشْلُجْ عَا كُنْهُمْ
تَقْرُونَ ۖ وَيَجْعَلُونَ لِلَّهِ الْبَنَاتِ سُبْحَةً وَلَهُمْ مَا يَشْتَهُونَ ۖ
وَإِذَا يُفْرَكُهُمْ لَا تُفْنِي ظُلَّ وَجْهِهِ مَسُودًا أَوْ قَوْلًا لَّيْمًا ۖ
يَكُونُ مِنَ الْعَوْرُونَ سَوَاءً مَا يُقْرَبُ إِلَيْهِ ۖ يَكْمَلُ عَلَى هَذِهِ
أَعْرَبُ دُخَانٍ فِي الرَّأْيِ ۖ أَلَا سَاءَ مَا يَحْكُمُونَ ۖ وَلَكِنْ مِنْ لَا
يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ ۖ مَثَلُ الْتَعَدَّى ۖ وَلَهُ الْمَثَلُ الْأَعْلَى ۖ وَهُوَ الْعَزِيزُ

मुम्-म इजा क-अ-फ़ज़्ज़ुर-र अन्कुम् इजा फ़रीकुम् - मिन्कुम् बि़रबि़हिम्
युशिरकून ॥ (५४) लियक्फ़ुरू बि़मा आतेनाहुम् ॥ फ़-त - मत्तअ फ़सौ - फ़
तअ-लमून (५५) व यज्-अलू-न लिमा ला यज्-लमून-न नसीबम् मिम्मा र-ज़कना-
हुम् ॥ तल्लाहि ल-तुस्अलुन-न अम्मा कुन्तुम् तफ़तरून (५६) व यज्अलू-न
लिल्लाहिल्-बनाति मुहानहू ॥ व लहुम् मा यशतून (५७) व इजा
बुशिश-र अ-हदुहुम् बिल्उन्सा अल्-ल वज्हुहू मुस्वद्वव-व हु-व कज़ीम ८ (५८)
य-त-वारा मिनल्-कौमि मिन् सूइ मा बुशिश-र बिही ॥ अ-युम्सिकुहू अना
हनिन् अम् यदुस्सुहू फ़ित्तुराबि ॥ अला सा - अ मा यहकुमून (५९)
लिल्लजी-न ला युअ्मिन्-न बिल्आखिरति म - स-नुस्सोइ ९ व लिल्लाहिल् -
म - सलुल् - अअ - ला ॥ व हुवल - अज़ीज़ुल् - हकीम ★ (६०)

वे (खुदा को) आजिज़ नहीं कर सकते। (४६) या जब उन को अज़ाब का डर पैदा हो गया हो, तो उन को पकड़ ले। बेशक तुम्हारा परवरदिगार बहुत शपकृत करने वाला (और) मेहरबान है। (४७) क्या उन लोगों ने खुदा की मख़्लूक़ात में से ऐसी चीज़ें नहीं देखीं, जिन के साए दाएं से (बाएं को) और बाएं से (दाएं को) लौटते रहते हैं, (यानी) खुदा के आंगे आजिज़ हो कर सज्दे में पड़े रहते हैं। (४८) और तमाम जानदार जो आसमानों में हैं, सब खुदा के आगे सज्दे करते हैं और फ़रिश्ते भी और ये तनिक भी घमंड नहीं करते। (४९) और अपने परवरदिगार से, जो उन के ऊपर है, डरते हैं और जो उन को इर्शाद होता है, उस पर अमल करते हैं। (५०) ✱□

और खुदा ने फ़रमाया है कि दो-दो माबूद न बनाओ। माबूद वही एक है, तो मुसी से डरते रहो। (५१) और जो कुछ आसमानों में और जो कुछ ज़मीन में है, सब उसी का है और उसी की इबादत ज़रूरी है तो तुम खुदा के सिवा ओरों से क्यों डरते हो? (५२) और जो नेमतें तुम को मिली हैं, सब खुदा की तरफ से हैं, फिर जब तुम को कोई तकलीफ़ पहुंचती है, तो उसी के आगे चिल्लाते हो। (५३) फिर जब वह तुम को तकलीफ़ से दूर कर देता है तो कुछ लोग तुम में से खुदा के साथ शरीक करने लगते हैं। (५४) ताकि जो (नेमतें) हम ने उन को अता फ़रमायी हैं, उन की ना-शुक्री करें तो (मुश्रिको!) दुनिया में फ़ायदे उठा लो। बहुत जल्द तुम को (इस का अंजाम) मालूम हो जाएगा। (५५) और हमारे दिए हुए माल में से ऐसी चीज़ों का हिस्सा मुकर्रर करते हैं, जिन को जानते ही नहीं। (काफ़िरो!) खुदा की क़सम जो कि तुम झूठ गढ़ते हो, उसकी तुम से ज़रूर पूछ होगी, (५६) और ये लोग खुदा के लिए तो बेटियां तज्बीज़ करते हैं (और) वह उन से पाक है और अपने लिए (बेटे), जो पसंदीदा (और दिल पसंद) हैं, (५७) हालांकि जब उन में से किसी को बेटी (के पैदा होने की) ख़बर मिलती है, तो उस का मुंह (ग़म की वजह से) काला पड़ जाता है और (उस के दिल को तो देखो तो) वह दुखी हो जाता है। (५८) और इस बुरी ख़बर से (जो वह सुनता है) लोगों से छिपता-फिरता है (और सोचता है) कि क्या ज़िल्लत बर्दाश्त कर के लड़की को ज़िदा रहने दे या ज़मीन में गाड़ दे। देखो, ये जो तज्बीज़ करते हैं, बहुत बुरी है। (५९) जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं रखते, उन्हीं के लिए बुरी बातें (मुनासिब) हैं और खुदा को बुलंद सिफ़त (जेब देती है) और वह ग़ालिब हिम्मत वाला है। (६०) ✱

और अगर खुदा लोगों को उन के जुल्म की वजह में पकड़ने लगे, तो एक जानदार को ज़मीन पर न छोड़े लेकिन उन को एक मुक़रर वक़्त तक मोहलत दिए जाता है। जब वह वक़्त आ जाता है, तो एक घड़ी न पीछे रह सकते हैं, न आगे बढ़ सकते हैं। (६१) और ये खुदा के लिए ऐसी चीज़ें तज़्बीज़ करते हैं, जिन को खुदा ना-पसन्द करते हैं और जुबान से झूठ बके जाते हैं कि उन को (क्रियामत के दिन) भलाई (यानी निजात) होगी। कुछ शक नहीं कि उन के लिए (दोज़ख़ की) आग (तैयार) है और ये (दोज़ख़ में) सब से आगे भेजे जाएंगे। (६२) खुदा की क़सम! हम ने तुम से पहली उम्मतों की तरफ़ पैग़म्बर भेजे, तो शैतान ने उन के (बुरे) अमल उन को सजा कर दिखाए, तो आज भी वही उन का दोस्त है और उन के लिए दर्दनाक अज़ाब है। (६३) और हम ने जो तुम पर किताब नाज़िल की है, तो इस के लिए कि जिस मामले में इन लोगों को इस्तिलाफ़ है, तुम उन का फ़ैसला कर दो और (यह) मोमिनों के लिए हिदायत और रहमत है। (६४) और खुदा ही ने आसमान से पानी बरसाया, फिर उस से ज़मीन को उस के मरने के बाद ज़िदा किया। बेशक इस में सुनने वालों के लिए निशानी है। (६५) ★

और तुम्हारे लिए चारपायों में भी सबक़ (हामिल करने और ग़ौर करने की) जगह है कि उन के पेटों में जो गोबर और लहू है, उस से हम तुम को खालिस दूध पिलाते हैं जो पीने वालों के लिए खुशगवार है। (६६) और खज़ूर और अंगूर के मेवों से भी (तुम पीने की चीज़ें तैयार करते हो) कि उन से शराब बनाते हो और अच्छी रोज़ी (खाते हो), जो लोग समझ रखते हैं, उन के लिए इन (चीज़ों) में (खुदा की क़ुदरत की) निशानी है। (६७) और तुम्हारे परवरदिगार ने शहद की मक्खियों को इशाद़ फ़रमाया कि पहाड़ों में और पेड़ों में और ऊंची-ऊंची छतरियों में, जो लोग बनाते हैं, घर बना। (६८) और हर किस्म के मेवे खा और अपने परवरदिगार के साफ़ रास्तों पर चली जा। उस के पेट में पीने की चीज़ निकलती है, जिस के मुल्लतलक़ रंग होते हैं, उस में लोगों (के कई मज़ों) की शिफ़ा है। बेशक मोचने वालों के लिए उस में भी निशानी है। (६९) और खुदा

१. ऊंची-ऊंची छतरियों से मुराद वे छतरियाँ हैं, जो अंगूर की बेल चढ़ाने के लिए डाली जाती है।

वल्लाहु ल-ल-ककुम् सुम्-म य-त - वफाकुम् ^ममिन्कुम् मय्युरददु इला
अजलिल अमुरि लिफै ला यअ-ल-म बअ-द अलिम् शैअत् इन्नल्ला-ह अलीमुत्
कदीर (७०) वल्लाहु फज्ज-ल बअ-ज्जकुम् अला बअ - जित् फिरिजिक
फ-मल्लजी-न फज्जिलू बिराद्दी-रिज्जिहिम् अला मा म-ल-कत् ऐमानुहुम् फहुम्

फीहि सवाउत् अ - फ-बिनिअ - मतिल्लाहि

यज्हुदन (७१) वल्लाहु ज-अ-ल लकुम् मिन्

अन्फुसिकुम् अज्वाजव-व ज-अ-ल लकुम् मिन्

अज्वाजिकुम् बनी-न व ह-फ-द-त-व-र-ज-ककुम्

मिनत्तय्यिबाति अ-फ-बिल्लिबातिलि युअमिन् - न

व बिनिअ - मतिल्लाहि हुम् यक्फुरून

(७२) व यअ-बुद्द-न मिन् हुन्निल्लाहि मा

ला यम्लिकु लहुम् रिज्जकम्-मिनस्समावाति

वल्अज्जि शैअव-व ला यस्ततीअून (७३)

फ-ला तज्जिबू लिल्लाहिल - अम्सा - ल

इन्नल्ला-ह यअ-लमु व अन्तुम् ला तअ-लमून

(७४) ज-र-बल्लाहु म-स-लन् अब्दम्-मम्लूकल्-

أَزَلِ الْمُرِّيكَ لَا يَمْلِكُ بَعْدَ عِلْمِ شَيْءٍ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ فَلْيَرِ
وَاللَّهُ نَقَلَ بَعْضَكُمْ عَلَى بَعْضٍ فِي الْوُجُوهِ فَكَانَ الَّذِينَ يُخْلَعُونَ
بِرَأْفَتِهِ رِزْقَهُمْ عَلَى مَا كَانُوا يَسْأَلُونَ فَمَا تَزِيدُهُمْ سِوَاكَ
اللَّهُ يَخْلَعُ وَهُوَ اللَّهُ جَعَلَ لَكُمُ الْوَسْطَةَ الْأُولَى وَجَعَلَ لَكُمُ
فِي أَنْفُسِكُمْ بَيْنَ وَحْدَةٍ وَرَأْفَةٍ مِنَ الطَّيِّبَاتِ لِكَيْ تَطْلُبَ
رِزْقَكُمْ وَتَرْضَوْا بِرِزْقِهِمْ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ فَلْيَرِ
وَاللَّهُ جَعَلَ لَكُمُ الْوَسْطَةَ الْأُولَى وَجَعَلَ لَكُمُ الْوَسْطَةَ
الْأُولَى وَجَعَلَ لَكُمُ الْوَسْطَةَ الْأُولَى وَجَعَلَ لَكُمُ
الْوَسْطَةَ الْأُولَى وَجَعَلَ لَكُمُ الْوَسْطَةَ الْأُولَى
وَاللَّهُ جَعَلَ لَكُمُ الْوَسْطَةَ الْأُولَى وَجَعَلَ لَكُمُ
الْوَسْطَةَ الْأُولَى وَجَعَلَ لَكُمُ الْوَسْطَةَ الْأُولَى
وَاللَّهُ جَعَلَ لَكُمُ الْوَسْطَةَ الْأُولَى وَجَعَلَ لَكُمُ
الْوَسْطَةَ الْأُولَى وَجَعَلَ لَكُمُ الْوَسْطَةَ الْأُولَى

ला यक्दिह अला शैइव-व मरंजकनाहु मिन्ना रिज्जकत् ह-स-नत् फहु-व युन्फिकु

मिन्हु सिरव-व जहरन् हल् यस्तवून अल्हम्दु लिल्लाहि बल्

अक्सह-हुम् ला यअ-लमून (७५) व ज-र-बल्लाहु म-स-ल-र-जुलैनि अ-हदुहुमा

अक्कमु ला यक्दिह अला शैइव-व हु-व कल्लुन् अला मौलाहु ऐनमा युवज्जिहह

ला यअति बिखैरित् हल् यस्तवी हु-व व मय्यअमुर बिल्अद्लि

व हु-व अला सिरातिम्-मुस्तकीम् (७६) व लिल्लाहि सैबुस्समावाति

वल्अज्जि व मा अम्हस्साअति इल्ला क - लम्लिह - ब-सरि ओ हु - व

अवरबु इन्नल्ला - ह अला कुलिल शैइत् कदीर (७७) वल्लाहु

अख-र-जकुम् मिम्-बुतुनि उम्महातिकुम् ला तअ-ल-मून शैअव-व ज-अ-ल

लकुमुस्सम् - अ वल्अब्सा - र वल्अफ्इ-द-त् ल-अल्लकुम् तश्कुरून (७८)

ही ने तुम को पैदा किया, फिर वहां तुम को मौत बेता है और तुम में कुछ ऐसे होते हैं कि निहायत खराब उम्र को पहुंच जाते हैं और (बहुत कुछ) जानने के बाद हर चीज से बे-इल्म हो जाते हैं। बेशक (खुदा सब कुछ) जानने वाला (और) क्रुदरत वाला है। (७०) ★

और खुदा ने रोजी (और दौलत) में कुछ को कुछ पर फ़ज़ीलत दी है तो जिन लोगों को फ़ज़ीलत दी है, वे अपनी रोजी अपने मम्लूकों को तो दे डालने वाले हैं नहीं कि सब उस में बराबर हो जाएं, तो क्या ये लोग अल्लाह की नेमत के इंकारी है? (७१) और खुदा ही ने तुम में से तुम्हारे लिए औरतें पैदा कीं और औरतों से तुम्हारे बेटे और पोते पैदा किए और खाने को तुम्हें पाकीज़ा चीज़ें दीं, तो क्या ये बे-असल चीज़ों पर एतकाद रखते और खुदा की नेमतों से इंकार करते हैं? (७२) और खुदा के सिवा ऐसों को पूजते हैं, जो उन को आसमानों और ज़मीन में रोजी देने का ज़रा भी अस्तियार नहीं रखते और न (किसी और तरह की) क्रुदरत रखते हैं। (७३) तो (लोगो!) खुदा के बारे में (शलत) मिसालें न बनाओ। (सही मिसालों का तरीक़ा) खुदा ही जानता है और तुम नहीं जानते। (७४) खुदा एक और मिसाल बयान फ़रमाता है कि एक गुलाम है जो (बिल्कुल) दूसरे के अस्तियार में है और किसी चीज़ पर क्रुदरत नहीं रखता और एक ऐसा शलस है, जिस को हम ने अपने यहां से (बहुत-सा) माल बेहतर अता फ़रमाया है और वह उस में से (रात-दिन) छिपे और खुले खर्च करता है, तो क्या दोनों शलस बराबर हैं? (हरगिज़ नहीं) अलहम्दु लिल्लाह! लेकिन इन में से अक्सर लोग समझ नहीं रखते। (७५) और खुदा एक और मिसाल बयान फ़रमाता है कि दो आदमी हैं एक उन में से गूंगा (और दूसरे की मिल्क) है, (बे-अस्तियार व कमजोर) कि किसी चीज़ पर क्रुदरत नहीं रखता और अपने मालिक को दूभर हो रहा है। वह जहां उसे भेजता है (ख़र से कभी) भलाई नहीं लाता। क्या ऐसा (गूंगा-बहरा) और वह शलस जो (मुनता-बोलता और) लोगों को इंसाफ़ करने का हुक़म देता है और खुद सीधे रास्ते पर चल रहा है, दोनों बराबर हैं? (७६) ★

और आसमानों और ज़मीन का इल्म खुदा ही को है और (खुदा के नज़दीक) क्रियामत का आना यों ही है, जैसे आंख का झपकना, बल्कि (उस से भी) जल्दतर। कुछ शक नहीं कि खुदा हर चीज़ पर क्रुदरत रखता है। (७७) और खुदा ही ने तुम को तुम्हारी मांओं के पेट से पैदा किया कि तुम कुछ नहीं जानते थे और उस ने तुम को कान और आंखें और दिल (और उन के अलावा और)

१. यानी खुदा के दो बन्दे, एक बहुत निकम्मा, न हिल सके, न चल सके, जैसा कि गूंगा गुलाम, दूसरा रसूल जो अल्लाह की राह बतावे हज़ारों को और आप बन्दगी-पर कायम रहे, उस की पिरबी करना बेहतर है या इस की ?

अ-लम् यरी इलत्तरि मुमरूखरातिन् फ्री जव्विस्समाइ ७ मा युम्सिकुहुन्-न
इल्लल्लाहु ७ इन्-न फ्री जालि-क ल-आयातिल् - लिक्कौमियुअमिन्न (७६)
वल्लाहु ज-अ-ल लकुम् मिम्-बुयूतिकुम् स-क-तन्-व ज-अ-ल लकुम् मिन् जुलूदिल्-
अन्नामि बुयूतन् तस्तखिफफूनहा यौ-म अअ-निकुम् व यौ-म इक्कामतिकुम् ७

व मिन् अस्वाफिहा व औबारिहा व
अशआरिहा असासव-व मताअन् इलाहीन

(८०) वल्लाहु ज-अ-ल लकुम् मिम्मा
ख-ल-क ज़िलालव-व ज-अ-ल लकुम् मिन्लजिबालि
अकनानव-व ज-अ-ल लकुम् सराबी - ल
तक्कीकुमुल्हर - र व सराबी-ल तक्कीकुम्
बअ-सकुम् ७ कजालि-क युतिम्मु निअ-मतह
अलैकुम् ल-अल्लकुम् तुस्लिमून (८१)

फ-इन् त-वल्लो फ-इन्नमा अलैकल्-बलागुल्-
मुबीन (८२) यअ-रिफू-न निअ-म-तल्लाहि
सुम् - म युन्किरूनहा व अक्सरुहुमुल् -
काफिरून * (८३) व यौ - म नअसु

السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ وَالْأَفْئِدَةَ لَكُمْ نُفُوسٌ ۖ أَكْثَرُ
إِلَى الْعَذَابِ مُسْتَوْتُونَ فِي جَهَنَّمَ مَا يَكْفُرُونَ إِلَّا اللَّهُ ۚ إِنَّ
فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ۖ وَاللَّهُ جَعَلَ لَكُمْ فُرْقَانَ
بَيْنَكُمْ وَبَيْنَ مَا كُفَرْتُمْ بِهِ مِنَ الظَّالِمِينَ يَوْمَ تَكُونُ
يَوْمَ تَكُونُ أَمْوَالُكُمْ وَأَنْفُسُكُمْ وَأَوْيَاتُكُمْ
وَأَنْفُسُكُمْ أَتَانًا وَمَتًا إِلَى جَهَنَّمَ ۖ وَاللَّهُ جَعَلَ لَكُمْ فُرْقَانَ
خَلْقَ عِلْمًا وَجَعَلَ لَكُمْ مِنَ الْعَمَالِ الْآثَانَ وَجَعَلَ لَكُمْ
سَرَائِلَ يُنَافِكُ الْعَمَلُ وَسَرَائِلَ نَفْسِكُمْ بِأَسْمِكُمْ كَذَلِكَ يَبْهَتُونَ
بِفَسْخِهَا عَلَيْكُمْ لَكُمْ تَسْمِينُونَ ۖ وَلَئِنْ تَوَلَّوْا فَأُولَٰئِكَ هُمُ
السَّامِيُّونَ ۖ يَوْمَ تَكُونُ نَفْسُكُمْ رَبْعَةً وَاللَّهُ يَكْفُرُ عَنْهَا وَالْكَافِرُ
الْكَاذِبُونَ ۖ يَوْمَ تَبْصُرُ مِنْ كُلِّ أُنْفٍ هَيْدًا ثُمَّ لَا يَخُوفُونَ
لِلَّذِينَ كَفَرُوا وَلَا هُمْ يُنصَرُونَ ۖ وَإِذَا رَأَى الَّذِينَ ظَلَمُوا
السَّعَابَ فَلَا يَخَفُ عَنْهُمْ وَلَا هُمْ يُنظَرُونَ ۖ وَإِذَا سَأَلَ
الَّذِينَ أَشْرَكُوا مَرْكَزَهُمْ قَالَ أَوْفُوا بِكُلِّ شَيْءٍ عَلَى الَّذِينَ
لَكُمْ عَدَاوَةٌ مِنْ ذُنُوبِكُمْ فَاقْبَلُوا إِلَيْهِمْ قَوْلًا لَّيْسَ لَكُمُ
وَالْقَوْلَ إِلَى اللَّهِ يَوْمَ يَذَرُ السَّعَابَ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَا كُنْتُمْ
يَعْتَوُونَ ۖ الَّذِينَ كَفَرُوا وَصَدَّ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ فُتِنُوا

मिन् कुल्लि उम्मतिन् शहीदन् सुम्-म ला युअजनु लिल्लजी-न क-फरू व ला
हुम् युस्तअ-तबून (८४) व इजा र-अल्लजी-न अ - लमुल्-अजा-ब फला
युखफफु अन्हुम् व ला हुम् युअरून (८५) व इजा र-अल्लजी-न
अशरकू शु-रका - अहुम् कालू रब्बना हाउलाइ शु-रकाउनल्-लजी-न कुन्ना
नदअ मिन् इति - क ७ फ-अल्कौ इलैहिमुल्कौ-ल इन्नकुम् ल - काजिबून ७
● (८६) व अल्कौ इलल्लाहि यौमइजि-निस् - स - लम - व ज़ल् - ल
अन्हुम् मा कानू यफ्तरून (८७) अल्लजी-न क-फरू व सद्द अन् सबीलिल्लाहि
जिदनाहुम् अजाबन् फौकल् - अजाबि बिमा कानू युफ्सिदून (८८)

अंग दिए, ताकि तुम शुक्र करो। (७८) क्या इन लोगों ने परिवर्तों को नहीं देखा कि आसमान की इबा में घिरे हुए (उड़ते रहते) हैं। उन को खुदा ही थामे रखता है। ईमान वालों के लिए इस में (बहुत-सी) निशानियाँ हैं। (७९) और खुदा ही ने तुम्हारे लिए घरों को रहने की जगह बनाया। और उसी ने चौपायों की खालों से तुम्हारे डेरे बनाए, जिन को तुम हल्का देख कर और हज़र सफ़र (ठहरने की हालत) में काम में लाते हो और उन की ऊन और रेशम और बालों से तुम सामान और बरतने की चीज़ें (बनाते हो, जो) मुद्त तक (काम देती हैं।) (८०) और खुदा ही ने तुम्हारे (आराम के) लिए अपनी पंदा की हुई चीज़ों के साए बनाए और पहाड़ों में शारें बनायीं और कुरते बनाये, जो तुम को गर्मी से बचाएँ और (ऐसे) कुरते (भी) जो तुम को जंग (के हथियारों के नुक़सान) से बचाये रखें। इसी तरह खुदा अपना एहसान तुम पर पूरा करता है, ताकि तुम फ़रमा-बरदार बनो। (८१) और अगर ये लोग मुंह मोड़ें तो (ऐ पैगम्बर!) तुम्हारा काम सिर्फ़ खोल कर सुना देना है। (८२) ये खुदा की नेमतों को जानते हैं, मगर (जान कर) उन से इंकार करते हैं और ये अक्सर ना-शुक्र हैं। (८३) ★

और जिस दिन हम हर उम्मत में से गवाह (यानी पैगम्बर) खड़ा करेंगे तो न तो कुफ़ार को बोलने की इजाज़त मिलेगी और न उन के उज़्र कुबूल किए जाएंगे। (८४) और जब ज़ालिम लोग अज़ाब देख लेंगे, तो फिर न तो उन के अज़ाब ही में कमी की जाएगी और न उन को मोहलत ही दी जाएगी। (८५) और जब मुश्रिक अपने (बनाये हुए) शरीकों को देखेंगे, तो कहेंगे कि परवर-दिगार! ये वही हमारे शरीक हैं, जिन को हम तेरे सिवा पुकारा करते थे, तो वे (उन के कलाम को रद्द कर देंगे और) उन से कहेंगे कि तुम तो झूठे हो (८६) और उस दिन खुदा के सामने सिर झुका देंगे और जो तूफ़ान वे बांधा करते थे, सब उन से जाता रहेगा। (८७) जिन लोगों ने कुफ़ किया और (लोगों को) खुदा के रास्ते से रोका, हम उन को अज़ाब पर अज़ाब देंगे, इस लिए कि

व यो-म नब्असु फ्री कुल्लि उम्मतिन् शहीदन् अलैहिम् मिन् अन्फुसिहिम् व
जिअ-ना बि-क शहीदन् अला हाउलाइ ७ व नज्जलना अलैकल्-किता - व
तिब्बानल्-लिकुल्लि शैद्व-व हुदव्-व रहमतव्-व बुशरा लिलमुस्लिमीन ★ (८६)
इन्लला - ह यअमुर बिल्अदलि वल्इहसानि व ईताइ जिल्कुर्बा व

यन्हा अनिल् - फहशाइ वलमुन्कारि
वल्बरिय ८ यअिजुकुम् ल - अल्लकुम्
तज्जककलून (६०) व ओफू बिअहिदल्लाहि
इजा आहतुम् व ला तन्कुजुल्-ऐमान-न
बअ-द तौकीदिहा व कद् ज-अल्लुमुल्ला-ह
अलैकुम् कफ्रीलन् ७ इन्लला-ह यअ - लमु
मा तफ-अलून (६१) व ला तकून कल्लती
न-क-ज्जत् गज-लहा मिम्बअ-दि कुव्वतिन्
अन्कासन् ७ तत्तखिजून- ऐमानकुम् द-ख-लम्-
बैनकुम् अन् तकून- उम्मतुन् हि-य अर्बा मिन्
उम्मतिन् ७ इन्मा यल्लुकुमुल्लाहु
बिही ७ व ल-युबय्थिनन्-न लकुम् योमल् -

عَذَابًا لِّقَوْمٍ الْعَذَابُ بِمَا كَانُوا يَعْسُدُونَ ۝ وَيَوْمَ نَبْعَثُ
كُلَّ أُمَّةٍ شَهِيدًا عَلَيْهِمْ مِنْ أَنْفُسِهِمْ وَجُذُنًا ذَلِيلًا ۝ وَنَبْعَثُ
عَلَى كُلِّ أُمَّةٍ رَّسُولًا ۚ وَكُنَّا عَلَى الْكَفْرِ بَيِّنَاتٍ لِّأُولِي الْأَلْبَابِ ۚ
وَنُوحِیْهُمُ الْبَيِّنَاتِ ۚ إِنَّ اللَّهَ بِأَمْرِ الْعَالَمِينَ ۚ إِنَّ اللَّهَ
الْإِنْشَانِ وَالْإِنْسَانِ ذِي الْقُرْبَىٰ وَيُنْفِیْ عَنِ الْعَصَاةِ وَالشُّكْرِ
وَالْبَيِّنَاتِ ۚ يَعْلَمُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ۝ وَأَوْفُوا بِعَهْدِ اللَّهِ إِذَا
عَاهَدْتُمْ وَلَا تَنْقُضُوا الْأَيْمَانَ بَعْدَ تَوْكِيدِهَا وَقَدْ جَعَلَهُ اللَّهُ
عَلَيْكُمْ فَيْدًا ۚ إِنَّ اللَّهَ بِعَلَمِهِ لَعَلَّوْنَ ۝ وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ
نَعَصْتُمْ عَنْهَا مِنْ بَعْدِ قَوْلِ الْأَوَّلَىٰ إِنَّكُمْ كُنْتُمْ مَخْلُوعًا
بِعَهْدِ اللَّهِ أَنْ تَكُونَ مِنْ أُمَّةٍ مِنْ أُمَّةٍ لَّمَّا يَلْعَنُ اللَّهُ أُمَّةً
وَلَيَبْعَثَنَّ لَكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ مَا لَكُمْ فِيهِ مِنْ مَّخْلُوعُونَ ۝ وَلَوْ
شَاءَ اللَّهُ لَجَعَلَكُمْ أُمَّةً وَاحِدَةً وَلَكِنْ يَفْضُلُ مِنْ شَاءَ ۚ
يَعْدِي مِنْ شَاءَ ۚ وَلَسْتَ عَلَىٰ شَيْءٍ بِمَعْلُومُونَ ۝ وَلَا
تَكُونُوا كَالَّذِينَ كَانُوا يَلْعَنُونَ قَوْلَ قَدِمَ بَعْدَ قَوْلِهِمْ لَا تَكُونُوا
الْقَوْمَ بِمَا صَدَّقُوا عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ وَلَكِنَّ عَذَابَ عَظِيمٍ ۝
وَلَا تَقْرَأُوا بِهَذَا الْقُرْآنِ لَئِنْ لَمْ يَأْمُرْ اللَّهُ فَوَاحِشَكُمْ
إِنَّكُمْ تَكُونُونَ ۚ بِأَعْيُنِكُمْ رُبَّمَا ۚ وَمَا عِنْدَ اللَّهِ إِلَّا وَالْقَوِيُّ

क्रियामति मा कुन्तुम् फ्रीहि तस्तलिफून (६२) व लो शा-अल्लाहु ल-ज-अ-लकुम्
उम्मुतुन्वाहि-द-तुव् - व लाकिथ्युजिल्लु मय्यशाउ व यहदी मय्यशाउ ७ व
ल-नुस्अलुन्-न अम्मा कुन्तुम् तअ-मलून (६३) व ला तत्तखिज् ऐमानकुम्
द-ख-लम्-बैनकुम् फ-तजिल्ल-ल क-दमुम्-बअ-द सुबूतिहा व तज्जूकुस्-अ बिमा
स-दल्लुम् अन् सबीलिल्लाहि ८ व लकुम् अजाबुन् अजीम (६४) व
ला तशतरू बि - अहिदल्लाहि स-म - नन् कलीलन् ७ इन्मा अिन्दल्लाहि
हु - व खैरल्लकुम् इन् कुन्तुम् तअ - लमून (६५) मा अिन्दकुम्
यन्फदु व मा अिन्दल्लाहि बाकिन् ७ व त - नज्जियन्लज्जी - न
स - बरु अजरहुम् बि - अहसनि मा कानू यअ - लमून (६६)

शरारत किया करते थे। (८८) और (उस दिन को याद करो) जिस दिन हम हर उम्मत में से खुद उन पर गवाह लड़े करेंगे और (ऐ पैगम्बर!) तुम को इन लोगों पर गवाह लाएंगे। और हम ने तुम पर (ऐसी) किताब नाज़िल की है कि (इस में) हर चीज़ का बयान (तफ़्सील से) है। और मुसलमानों के लिए हिदायत और रहमत और बशारत है। (८९)*

खुदा तुम को इंसफ़ और एहसान करने और रिश्तेदारों को (खर्च से मदद) देने का हुक्म देता है और बे-हयाई और ना-माकूल कामों से और सर-कशी से मना करता है (और) तुम्हें नसीहत करता है, ताकि तुम याद रखो। (९०) और जब खुदा से पक्का अहद करो तो उस को पूरा करो और जब पक्की कस्में खाओ तो उन को मत तोड़ो कि तुम खुदा को अपना उमानतदार मुकरर कर चुके हो और जो कुछ तुम करते हो, खुदा उस को जानता है। (९१) और उस औरत की तरह न होना जिस ने मेहनत से तो सूत काता फिर उस को तोड़ कर टुकड़े-टुकड़े कर डाला कि तुम अपनी कस्मों को आपस में इस बात का ज़रिया बनाने लगे कि एक गिरोह दूसरे गिरोह से ज्यादा ग़ालिब रहे। बात यह है कि खुदा तुम्हें इस से आजमाता है और जिन बातों में तुम इस्तिलाफ़ करते हो, क्रियामत को उन की हकीकत तुम पर जाहिर कर देगा। (९२) और अगर खुदा चाहता, तो तुम (सब) को एक ही जमाअत बना देता लेकिन वह जिसे चाहता है, गुमराह करता है और जिसे चाहता है, हिदायत देता है और जो अमल तुम करते हो, (उस दिन) उन के बारे में तुम से ज़रूर पूछा जाएगा। (९३) और अपनी कस्मों को आपस में इस बात का ज़रिया न बनाओ कि (लोगों के) कदम जम चुकने के बाद लड़-खड़ा जाएं और इस वजह से कि तुम ने लोगों को खुदा के रास्ते से रोका, तुम को बुराई का मज़ा चखना पड़े और बड़ा सलत अज़ाब मिले। (९४) और खुदा से जो तुम ने अहद किया है (उस को मत बेचो और) उस के बदले थोड़ी सी कीमत न लो (क्योंकि वायदा पूरा करने का) जो (बदला) खुदा के यहां मुकरर है, वह अगर समझो तो तुम्हारे लिए बेहतर है। (९५) जो कुछ तुम्हारे पास है, वह ख़त्म हो जाता है, और जो खुदा के पास है, वह बाक़ी है (कि कभी ख़त्म नहीं होगा) और जिन लोगों ने सब किया, हम उन को उन के आमाल का बहुत अच्छा बदला देंगे। (९६) जो शस्त्र

मन् अमि-ल सालिहम्-मिन् अ-करिन् औ उन्सा व हु-व मुअमिनुन् फ-लनुहिययन्ह
हयातन् तय्यि-ब-तन् ८ व-ल - नज्जियन्नुहम् अजरहुम् बिअह्सनि मा कानू
यअ-मलून (६७) फइजा क - रअतल् - कुरआ-न फस्तअज् बिल्लाहि
मिनश्शतानिर्-रजीम (६८) इन्नुह लै-स लह सुल्तानुन् अ-लल्लजी - न

आमनू व अला रब्बिहिम् य-त-वकलून (६९)

इन्मा सुल्तानुह अ-लल्लजी-न य-त-वल्लोनह

वल्लजी-न हुम् बिही मुशिरकून * (१००)

व इजा बद्दल्ला आ-यत्तम् - मका - न

आयतिव - वल्लाहु अअ - लमु बिमा

युनज्जिलु कालू इन्मा अन्-त मुफतरिन्

बल् अक्सरुहुम् ला यअ-लमून (१०१)

कुल् नरज-लह रुहुल् - कुदुसि मिररब्बि-क

बिल्हक्कि लियुसब्बि-तल्लजी-न आमनू व

हुदव-व बुशरा लिल्-मुस्लिमीन (१०२)

व ल-कद् नअ-लमु अन्नहुम् यकूल-न इन्मा

युअल्लिमुह व - शरन् ८ लिसानुल्लजी

الَّذِينَ صَبَرُوا أَبْرَهُمْ بِأَحْسَن مَّا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝ مَنْ عَمِلَ
صَالِحًا تَرَاهُ ذَكَرًا وَأُنْثَىٰ وَنُفُورًا ۝ فَلْيُصْبِرْ لَهُ حِوْرًا طَيِّبًا
وَلْيُصْبِرْ لَهُمُ أَبْرَهُمْ بِأَحْسَن مَّا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝ وَإِذَا قُرَأَتْ
الْقُرْآنُ فَاسْتَعِذْ بِاللَّهِ مِنَ الْقِطْظِ الرَّجِيمِ ۝ إِنَّهُ لَمَنْ لَّهُ
سُلْطَانٌ عَلَى الَّذِينَ آمَنُوا وَعَلَىٰ رَبِّهِمْ يَوْمَئِذٍ ۝ إِنْ سَأَلْتَهُ
عَلَىٰ الَّذِينَ يَبُولُونَ وَالَّذِينَ هُمْ بِهِ مُشْرِكُونَ ۝ وَإِذَا بُدِّئَ
رَبُّكَ كِتَابًا فَمَا مِنْ آلِهَةٍ أَنْ يَعْلَمَ مَا يَنْزِلُ فِيهَا إِلَّا أَنْتَ مُخْبِرٌ
بِمَنْ أَوْفَرُوا يُعْمَلُونَ ۝ قُلْ نَزَّلَهُ رُوحُ الْقُدُسِ مِنْ
رَبِّكَ بِالْحَقِّ لِيُثَبِّتَ الَّذِينَ آمَنُوا وَهُدًى وَبُشْرَىٰ لِلْمُسْلِمِينَ
وَلَقَدْ عَلِمُوا أَنَّهُمْ يَقُولُونَ إِلَّا يُعْمَلُ بِشَرِّ آلِهَةٍ
يُلْحَدُونَ إِلَيْهِمْ أَفْجَبٌ ۝ وَهَذَا الْإِنْسَانُ عَرَفَ مُبَرِّئِينَ ۝ وَإِنْ
الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ يَا أَيُّهَا اللَّهُ لَا يَهْدِيهِمْ اللَّهُ وَلَهُمْ عَذَابٌ
أَلِيمٌ ۝ إِنَّمَا يُعَذِّبُ الْكَافِرِينَ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ
وَاللَّهُ وَأُولَئِكَ هُمُ الْكَافِرُونَ ۝ مَنْ كَفَرَ بِاللَّهِ مِنْ بَعْدِ
إِيمَانِهِ لَا مَنَ لَهُ إِلَّا الْآزَىٰ وَقَلْبُهُ مُطْمَئِنٌّ بِالْإِيمَانِ وَلَكِنْ
مَنْ شَرَّ مَشَرًّا فَالْقَوْمُ صَدَاقٌ لَهُمْ عَذَابٌ مِنَ اللَّهِ وَلَهُمْ
عَذَابٌ عَظِيمٌ ۝ ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ اسْتَحْبَبُوا الصُّورَةَ الدُّنْيَا عَلَىٰ

युल्हद्-न इलैहि अअ-जमियुव-व हाजा लिसानुन् अ-रबियुम्-मुबीन (१०३)

इन्लल्लजी - न ला युअमिनुन् बिआयातिल्लाहि ॥ ला यहदीहिमुल्लाहु व

लहुम् अजाबुन् अलीम (१०४) इन्मा यफतरिल् - कजिबल्लजी-न ला

युअमिनुन् बिआयातिल्लाहि ८ व उलाइ-क हुमुल्-काजिबून (१०५) मन्

क-फ-र बिल्लाहि मिम्बअ-दि ईमानिही इल्ला मन् उकिर-ह व कल्बुह

मुत-मइन्नुम्-बिल्ईमानि व लाकिम्मन् श-र-ह बिल्कुफिर सद्-रन् फ-अलैहिम्

श - ज़बुम् - मिनल्लाहि ८ व लहुम् अजाबुन् अजीम (१०६)

जालि - क बि - अन्नहुमुस्त - हब्बुल् - हयातुदुन्या अ - लल् - आखिरति ॥

व अल्लला - ह ला यहिदल् - कौमल् - काफिरीन (१०७)

नेक अमल करेगा, मर्द हो या औरत, और वह मोमिन भी होगा, तो हम उस को (दुनिया में) पाक (और आराम की) जिदगी से जिदा रखेंगे और (आखिरत में) उन के आमाल का निहायत अच्छा बदला देंगे। (६७) और जब तुम कुरआन पढ़ने लगे तो शैतान मर्दूद से पनाह मांग लिया करो, (६८) कि जो मोमिन हैं और अपने परवरदिगार पर भरोसा रखते हैं, उन पर उस का कुछ जोर नहीं चलता। (६९) उस का जोर उन्हीं लोगों पर चलता है, जो उस को साथी बनाते हैं, और उस के (वस्वसे की) वजह से (खुदा के साथ) शरीक मुकर्रर करते हैं। (१००)★

और जब हम कोई आयत किसी आयत की जगह बदल देते हैं और खुदा जो कुछ नाज़िल फरमाता है उसे खूब जानता है, तो (काफ़िर) कहते हैं तुम तो (यों ही) अपनी तरफ़ से बना लाते हो। सच तो यह है कि उन में अक्सर नादान हैं। (१०१) कह दो कि इस को रूहुल कुदस तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से सच्चाई के साथ ले कर नाज़िल हुए हैं ताकि यह (कुरआन) मोमिनों को साबित क़दम रखे और हुक्म मानने वालों के लिए तो (यह) हिदायत और बशारत है। (१०२) और हमें मालूम है कि ये कहते हैं कि इस (पैगम्बर) को एक शरूस सिखा जाता है मगर जिस की तरफ़ (तामील का) तात्लुक जोड़ते हैं उस की जुबान तो अज़मी है और यह साफ़ अरबी जुबान है। (१०३) जो लोग खुदा की आयतों पर ईमान नहीं लाते, उन को खुदा हिदायत नहीं देता और उन के लिए दर्दनाक अज़ाब है। (१०४) झूठ तो वही लोग गढ़ते हैं, जो खुदा की आयतों पर ईमान नहीं लाते और वही झूठे हैं। (१०५) जो शरूस ईमान लाने के बाद खुदा के साथ कुफ़ करे, वह नहीं जो (कुफ़ पर जबरदस्ती) मजबूर किया जाए और उस का दिल ईमान के साथ मुत्मईन हो, बल्कि वह जो (दिल से और) दिल खोल कर कुफ़ करे, तो ऐसों पर अल्लाह का ग़ज़ब है और उन को बड़ा सख्त अज़ाब होगा। (१०६) यह इसलिए कि उन्हीं ने दुनिया की जिदगी को आखिरत के मुकाबले में अजीज़ रखा और इस लिए कि खुदा काफ़िर लोगों को हिदायत नहीं

उला-इकलजी-न त-ब-अल्लाहु अला कुलूबिहिम् व सम्बिहिम् व अब्सारिहिम्
 व उला-इ-क हुमुल्पाफिलून (१०८) ला ज-र-म अन्नहुम् फिल्आखिरति
 हुमुल्पासिलून (१०९) सुम्-म इन्-न रब्ब-क लिल्लजी-न हाजरू मिम्बअ-दि मा
 फुतिन् सुम्-म जाहद् व स-बरू ॥ इन्-न रब्ब-क मिम्बअ-दिहा ल-गफूररहीम

★ (११०) यौ-म तअती कुल्लु नफ्सिन्

तुजादिलु अन्नफ्सिहा व तुवफा कुल्लु
 नफ्सिम्मा अमिलत् व हुम् ला युम्-लमून

(१११) व ज़-र-बल्लाहु म-स-लन् क-र-य-तन्

कानत् आमि-न-तम् - मुत्तइन्नतय्यअतीहा

रिज-कुहा र-ग - दम्मिन् कुल्लि मकानिन्

फ-क-फ-रत् बि-अन्अमिल्लाहि फ-अजा-क-हल्लाहु

लिबासल्जूअि वल्लौफि बिमा

कानू यस - नअून (११२) व ल-कद्

जाअहुम् रसूलुम् - मिन्हुम् फ - कज्जबूहु

फ अ-ख-ज-हुमुल्-अजाबु व हुम् जालिमून

(११३) फकुलू मिम्मा र-ज-ककुमुल्लाहु

हलालन् तय्यिबव वशकुरू निअ - म - तल्लाहि इन् कुन्तुम् इय्याहु

तअ-बुद्दून् (११४) इन्नमा हर-म अलैकुमुल्मेत-त वद-द-म व लहमल्-स्निजोरि

व मा उहिल-ल लिगौरिल्लाहि बिही ॥ फ-मनिज़तुर-र गै-र बाशिव-व ला

आदिन् फ - इन्नल्ला - ह गफूर - रहीम (११५) व ला तकूलू

लिमा तसिफु अल - सि-नतुकुमुल् - कजि - ब हाजा हलालु व - व हाजा

हरामुल् - लिताफतुरू अ - लल्लाहिल् - कजि - ब इन्नल्लजी - न

यफतुरू - न अ - लल्लाहिल् - कजि - ब ला युफ्लिहून (११६)

मताअुन् कलीलु व लहुम् अजाबुन् अलीम (११७)

الْآخِرَةُ ۖ إِنَّ اللَّهَ لَا يُغْنِي عَنِ الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ ۖ وَأُولَئِكَ
 الَّذِينَ طَعِمَ اللَّهُ عَلَىٰ ثُلُثِ هِمَّتِهِمْ وَتَمَتَّعُوا بِأَصْدَارِهِمْ ۖ وَأُولَئِكَ
 هُمُ الْغَافِلُونَ ۖ لَاحِرَمٌ أَلَهُمْ فِي الْآخِرَةِ هُمُ السَّيِّدُونَ ۖ
 تِلْكَ رِزْقُكَ يَا ذَا الْبَرِّ ۖ وَاجْعَلُوا مِنْ بَعْدِ مَا فَتَنَّا لُتُجْهَدُوا
 وَصَبْرًا ۖ إِنَّ رِزْقَكَ مِنْ بَعْدِ مَا لُتُجْهَدُوا رَجِيمٌ ۖ يَوْمَ تَأْتِي
 كُلُّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ ۖ عَنْ نَفْسِهَا وَتُؤْتَىٰ كُلُّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ
 وَهُم لَا يَظُنُّونَ ۖ وَصَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا قُرْبَةً كَانَتْ أَمَةً
 فُطِمَتْ عَنْهَا آيَةُهَا رِزْقًا رِزْقًا مِنْ كُلِّ مَكَانٍ فَكَفَرَتْ
 بِأَن تُغْلِبَ اللَّهُ فَاذْلَمَهَا اللَّهُ لَيْسَ الْغَوِيُّ وَالْخَوِيُّ بِمَا كَانُوا
 يَصْنَعُونَ ۖ وَلَقَدْ جَاءَهُمْ رَسُولٌ مِنْهُمْ فَكَذَّبُوهُ فَأَعْدَاهُمُ
 الْعَذَابُ وَهُمْ ظَالِمُونَ ۖ فَكَلِمَاتٌ يَتَذَكَّرُ اللَّهُ عَلَيْهَا طَائِفٌ
 مِنَ الْمُشْكِرِينَ ۖ وَاجْعَلِ اللَّهُ لَكُمْ آيَةً فَتَعْلَمُونَ ۖ إِنَّكُمْ حَرَضَ
 عَلَيْهِمُ السَّيِّئَةَ وَالَّذِينَ هُمْ عَنْهَا غَوِيُونَ وَمَا أَوَّلَ بَغْيٍ لِلَّهِ فِيهِ
 فَمَنْ أَضَلُّ مِمَّنْ بَاءَ وَلَا عِلْمَ كَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَحِيمًا ۖ وَ
 لَا تَقُولُوا إِنَّمَا أَصْحَابُ الْكِتَابِ الْبَغْيُ هَذَا حُلٌّ وَهَذَا
 حَرَامٌ لَقَدْ عَلِمْنَا عَلَى اللَّهِ الْكِتَابِ أَنَّ الَّذِينَ يُبَغُّونَ عَلَى
 اللَّهِ الْكِتَابِ لَا يَغْلِبُونَ ۖ مَتَاءً فَلْيَن ۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ

देता। (१०७) यही लोग हैं, जिन के दिलों पर और कानों पर और आँखों पर खुदा ने मुहर लगा रखी है और यही गफ़लत में पड़े हुए हैं। (१०८) कुछ शक नहीं कि ये आखिरत में घाटा उठाने वाले होंगे। (१०९) फिर जिन लोगों ने तकलीफ़ें उठाने के बाद वतन छोड़ा, फिर जिहाद किये और जमे रहे, तुम्हारा परवरदिगार उन को बेशक इन (आजमाइशों) के बाद बख़्शने वाला (और उन पर) रहमत करने वाला है। (११०) ★

जिस दिन हर नफ़्स (शरूस्, जीव) अपनी तरफ़ से झगड़ा करने आएगा और हर शरूस् को उस के आमाल का पूरा-पूरा बदला दिया जाएगा और किसी का नुक़सान नहीं किया जाएगा। (१११) और खुदा एक बस्ती की मिसाल बयान फ़रमाता है कि (हर तरह) अमन-चैन से बसती थी, हर तरफ़ से फँलाव के साथ रोज़ी चली आती थी, मगर उन लोगों ने खुदा की नेमतों की नाशुकी की, तो खुदा ने उन के आमाल की वजह से उन को भूख और ख़ौफ़ का लिबास पहना कर (ना-शुकी का) मज़ा चखा दिया। (११२) और उन के पास उन्हीं में से एक पैग़म्बर आया, तो उन्हीं ने उस को झूठलाया, सो उन को अज़ाब ने आ पकड़ा और वे ज़ालिम थे। (११३) पर खुदा ने जो तुम को पाक हलाल रोज़ी दी है, उसे खाओ और अल्लाह की नेमतों का शुक्र करो, अगर उसी की इबादत करते हो। (११४) उस ने तुम पर मुर्दार और लहू और सुअर का गोश्त हाराम कर दिया है और जिस चीज़ पर खुदा के सिवा किसी और का नाम पुकारा जाए (उस को भी), हाँ अगर कोई ना-चार हो जाए तो बशर्ते कि गुनाह करने वाला न हो और न हृद से निकलने वाला हो, तो खुदा बख़्शने वाला मेहरबान है (११५) और यों ही झूठ, जो तुम्हारी जुबान पर आ जाए, मत कह दिया करो कि यह हलाल है और यह हाराम है कि खुदा पर झूठ ब्रह्मान बांधने लगे। जो लोग खुदा पर झूठ ब्रह्मान बांधते हैं, उन का भला नहीं होगा। (११६) (झूठ का) फ़ायदा तो थोड़ा सा है, मगर (उस के बदले) उनको दर्दनाक अज़ाब (बहुत) होगा। (११७) और जो चीज़ें हम तुमको

व अ-ललजी-न हादू हर्रमा मा क-सना अल-क मिन् कब्लु व मा
ज-लमनाहुम् व लाकिन् कान् अन्फुसहुम् यझिलमून (११८) सुम्-म इन्-न
रब्ब-क लिललजी-न अमिलुस्स-अ बिजहालतिन् सुम्-म ताबू मिम्बअ-दि जालि-क व
अस्-लह ॥ इन् - न रब्ब - क मिम्बअ - दिहा ल-गफूर-रहीम * (११९)

इन्-न इब्राही - म का - न उम्म-तन्
कानितल् - लिल्लाहि हनीफन् व
लम् यकु मिनल् - मुशिरकीन ॥ (१२०)
आकिरल् - लि-अन् - अमिही इज्जतबाहु व
हदाहु इला सिरातिम्-मुस्तक्रीम (१२१)
व आतेनाहु फिद्दुन्या ह-स-न - तन् व
इन्नह फिल्आखिरति लमिनस् - सालिहीन
(१२२) सुम्-म औहेना इलै-क अनित्तबिअ-

الْبَيْتِ ۝ وَعَلَى الَّذِينَ هَادُوا حَزُونًا مِمَّا فُضِّضُوا عَلَيْهِ
مِنْ قَبْلِ ۝ وَمَا ظَنَّهُمْ وَلَكِنْ كَانُوا أَنفُسَهُمْ يَظُنُّونَ ۝
ثُمَّ إِنَّ رَبَّكَ لِلَّذِينَ عَمِلُوا الصَّالِحَاتِ ثُمَّ قَالُوا مِنْ
بَعْدِ ذَلِكَ وَأَنصَلُوا إِنَّ رَبَّكَ مِنْ بَعْدِهَا لَغَفُورٌ رَحِيمٌ ۝
إِنَّهُمْ كَانُوا أَتَمَّةً كَانَ اللَّهُ فِيهِمْ حَيْثُ ۝ وَلَمْ يَكُنْ مِنَ الشَّاكِرِينَ ۝
ثُمَّ أَكْرَمْتَهُ بِالْقِسْبَةِ ۝ وَهَدَّاهُ إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ۝ وَآتَيْنَاهُ
فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً ۝ وَإِنَّهُ فِي الْآخِرَةِ لَمِنَ الصَّالِحِينَ ۝ ثُمَّ
أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ أَنْ الْقِيمَ صَلَاةً ۝ وَإِبْرَاهِيمَ حَنِيفًا ۝ وَمَا كَانَ مِنَ
الشَّاكِرِينَ ۝ إِنَّا جَعَلْنَا شَدِيدًا عَلَى الَّذِينَ أَتَيْنَاهُ أَنْ يُؤَدُّوا
إِلَيْكَ أَلِيمَ بَيْتِهِمْ ۝ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۝ وَمَا كَانُوا يَفْقَهُونَ ۝
أَدْنَىٰ إِلَىٰ سَبِيلِ رَبِّكَ بِالْحَمْدِ ۝ وَالْمَوْضِعَةِ الْحَسَنَةِ ۝ وَ
جَادِلْهُمْ بِالَّتِي هِيَ ۝ أَتَسْتَأْذِنُ رَبَّكَ فَأَعْتَدُ مِنْ صَلَاتِكَ
سَبْعِينَ ۝ وَمَا أَعْلَمُ بِالْمُتَعَذِّبِينَ ۝ وَإِنْ عَاقَبْتُمْ فَعَاقِبُوا
بِإِحْسَانٍ ۝ مَا عُوذُكُمْ بِهِ ۝ وَلَكِنْ صَبْرُهُمْ لَهُمْ خَيْرٌ ۝ وَالظَّالِمُونَ ۝
وَأَصْبِرْ ۝ وَمَا صَبْرُكَ إِلَّا بِاللَّهِ ۝ وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَلَا تَكُ
فِي ضَلَالٍ مِمَّن يَظُنُّونَ ۝ إِنَّ اللَّهَ مَعَ الَّذِينَ اتَّقَوْا ۝
الَّذِينَ هُمْ فَاعِلُونَ ۝

मिलल्-तु इब्राही-म हनीफन् व मा का-न
मिनल् - मुशिरकीन (१२३) इन्नमा
जुअिलस्-सब्नु अ-लल्-लजीनख-त-लफू फ्रीहि
व इन्-न रब्ब-क ल - यहकुमु बेनहुम्
योमल्-क्रियामति फ्रीमा कानू फ्रीहि यरुतलिफून (१२४) उद्अ इला
सबीलि रब्बि-क बिल्हिकमति वल्मौअज्जतिल्-ह-स-नति व जादिल्हुम् बिल्लतो
हि-य अहसनु इन्-न रब्ब-क हु-व अअ-लमु बिमन् जल-ल अन् सबीलही व
हु-व अअ-लमु बिल्मुह-तदीन (१२५) व इन् आकबुम् फ-आकिबू बिमिस्लि
मा अकिबुम् बिही व लइन् स-बर्तुम् लहु-व खैरल्लिस्साबिरीन (१२६)
वस्बिर् व मा सवर् - क इल्ला बिल्लाहि व ला तह - जन्
अलैहिम् व ला तकु फ्री जैकिम् - मिम्मा यम् - कुरून (१२७)
इन्नल्ला - ह म - अलजीनत् - त - कबल्लजी-न हुम् मुहिसनून * (१२८)

पहले बयान कर चुके हैं वह यहूदियों पर हराम कर दी थी और हम ने उन पर कुछ जुल्म नहीं किया, बल्कि वही अपने आप पर जुल्म किया करते थे। (११८) फिर जिन लोगों ने नादानी से बुरा काम किया, फिर उसके बाद तौबा की और नेक हो गये, तो तुम्हारा परवरदिगार (उन को) तौबा करने और नेक हो जाने के बाद उन को बख्शने वाला और (उन पर) रहमत करने वाला है। (११९)★

बेशक इब्राहीम (लोगों के) इमाम (और) खुदा के फरमावरदार थे, जो एक तरफ़ के हो रहे थे और मुशिरकों में से न थे।^१ (१२०) उस की नेमतों के शुरुआत थे। खुदा ने उन को चुन लिया था और (अपनी) सीधी राह पर चलाया था। (१२१) और हम ने उन को दुनिया में भी खूबी दी थी और वह आखिरत में भी नेक लोगो में होंगे। (१२२) फिर हम ने तुम्हारी तरफ़ वक्ष्य भेजी कि दीने इब्राहीम की पैरवी अस्तियार करो, जो एक तरफ़ के हो रहे थे और मुशिरकों में से न थे। (१२३) हफ़ते (शनिवार) का दिन तो उन्हीं लोगों के लिए मुकर्रर किया गया था, जिन्होंने उस में इस्तिलाफ़ किया और तुम्हारा परवरदिगार क्रियामत के दिन उन बातों का फ़ैसला कर देगा, जिन से वे इस्तिलाफ़ करते थे। (१२४) (ऐ पैगम्बर!) लोगों को दानिश और नेक नसीहत से अपने परवरदिगार के रास्ते की तरफ़ बुलाओ और बहुत ही अच्छे तरीके से उन से मुनाजरा करो। जो उस के रास्ते से भटक गया तुम्हारा परवरदिगार उसे भी खूब जानता है और जो रास्ते पर चलने वाले हैं, उन्हें भी खूब जानता है। (१२५) अगर उन को तकलीफ़ देनी चाहो, तो उतनी ही दो, जितनी तकलीफ़ तुम को उन से पहुंची और अगर सन्न करो, तो वह सन्न करने वालों के लिए बहुत अच्छा है। (१२६) और सन्न ही करो और तुम्हारा सन्न भी खुदा ही की मदद से है और उन के बारे में शम न करो और जो ये बुरी चालें चलते हैं, उस से तंगदिल न हो। (१२७) कुछ शक नहीं कि जो परहेजगार हैं और जो नेक और भले हैं, खुदा उन का मददगार है। (१२८)★

१. यानी हलाल और हराम में और दीन की बातों में अमल मिल्लते इब्राहीम है और सब लोग जो कहते हैं आप को 'हनीफ़' और शिकं करते हैं, वे आप की राह पर नहीं।

पन्द्रहवां पारः सुब्हानल्लजी

१७ सूरतु बनी इस्राईल ५०

(मक्की) इस सूरः में अरबी के ६७१० अक्षर १५८२ शब्द, १११ आयतें और १२ रूकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

सुब्हानल्लजी अस्सु बिअब्दिही लैलम्मिनल् - मस्जिदिल् - हुरामि इलल् -
मस्जिदिल् - अक्सल्लजी बारकना हौलहु लिनुरियहु मिन् आयातिना
इन्नुह हुवस्समीअुल्-बसीर (१) व आतना मूसल्-किताब व ज-अल्नाहु
हुदल्लिबनी इस्राई - ल अल्ला तत्तखिजू मिन् दूनी वकीला ॥ (२)
जुरिय्य-त्त मन् ह-मल्ला म-अ नूहिन् ॥ इन्नुह
कान अब्दन् शकूरा (३) व कज्जना
इला बनी इस्राई - ल फ़िल्किताबि
लतुफ़सिदुन-न फ़िल्अजि मरतैनि व ल-तअ-लुन्-न
अलुव्वन् कबीरा (४) क-इजा जा-अ
वअ-दु ऊलाहुमा ब-अस्ना अलैकुम् अबादल्लना
उली बअसिन् शदीदिन् फ़ जासू
खिलालद्दियारि ॥ व कान वअ-दम्-मफ़ूला
(५) सुम्-म र-ददना लकुमुल्करत्त अलैहिम्
व अम्ददनाकुम् बि-अम्वालिव्-व बनी-न व
ज-अल्नाकुम् अक्स-र नफ़ीरा (६) इन्
अहू - सन्तुम् अहू - सन्तुम् लिअन्फ़ुसिकुम्
व इन् अ-सअ-तुम् फ़-लहा ॥ फ़ - इजा
जा-अ वअ-दुल्आखिरति लियसूउ वुजूहकुम् व लियदख़लुल्-मस्जि-द कमा
द-ख़लुहु अव्व-ल मरतित्व-व लियुतब्बिहू मा अलौ तत्बीरा (७) असा रब्बुकुम्
अय्यर-ह-मकुम् ॥ व इन् अतुतुम् अदना ॥ व ज-अल्ना ज-हन्न-म लिल्काफ़िरी-न
हसीरा (८) इन्-न हाजल्कुरआ-न यहदी लिल्लती हि-य अक्वमु व युबशिशल्-
मुअ्मिनीनल्लजी-न यअ-मलूनस्-सालिहाति अन्-न लहुम् अज-रन् कबीरा ॥ (९)



१७ सूर: बनी इस्राईल ५०

सूर: बनी इस्राईल मक्की है और इस में एक सौ ग्यारह आयतें और बारह श्लोक हैं।

शुरू खुदा का नाम लेकर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

वह (जात) पाक है, जो एक रात अपने बन्दे को मस्जिदुल हुराम (यानी खाना काबा) से मस्जिदे अक्सा (यानी बैतुल मक्दिस) तक, जिस के चारों तरफ हम ने बरकतें रखी हैं, ले गया, ताकि हम उसे अपनी (कुदरत की) निशानियां दिखाएं। बेशक वह सुनने वाला (और) देखने वाला है। (१) और हम ने मूसा को किताब इनायत की थी और उस को बनी इस्राईल के लिए रहनुमा मुकर्रर किया था कि मेरे सिवा किसी को कारसाज न ठहराना। (२) ऐ उन लोगों की ओलाद! जिन को हम ने नूह के साथ (किशती में) सवार किया था ! बेशक नूह (हमारे) शुक्र-गुजार बन्दे थे। (३) और हम ने किताब में बनी इस्राईल से कह दिया था कि तुम जमीन में दो बार फसाद मचाओगे और बड़ी सरकशी करोगे। (४) पस जब पहले (वायदे) का वक्त आया, तो हम ने अपने सख्त लड़ाई लड़ने वाले बन्दे तुम पर मुसल्लत कर दिए और वे शहरों के अन्दर फल गये और वह वायदा पूरा हो कर रहा। (५) फिर हम ने दूसरी बार तुम को उन पर गलबा दिया और माल और बेटों से तुम्हारी मदद की और तुम को बड़ी जमाअत बना दिया (६) अगर तुम भला करोगे तो अपनी जानों के लिए करोगे और अगर बुरा करोगे तो (उन का) बवाल भी तुम्हारी ही जानों पर होगा, फिर जब दूसरे (वायदे) का वक्त आया (तो हम ने फिर अपने बन्दे भेजे) ताकि तुम्हारे चेहरों को बिगाड़ दें और जिस तरह पहली बार मस्जिद (बैतुल मक्दिस) में दाखिल हो गये थे, उसी तरह फिर उस में दाखिल हो जाएं और जिस चीज पर गलबा पाएं उसे तबाह कर दें। (७) उम्मीद है कि तुम्हारा परवरदिगार तुम पर रहम करे और अगर तुम फिर वही (हरकतें) करोगे तो हम भी वही (पहला-सा सुलूक) करेंगे ॥ और हमने जहन्नम को काफ़िरों के लिए कंदखाना बना रखा है। (८) यह कुरआन वह रास्ता दिखाता है, जो सब से सीधा है और मोमिनों को जो नेक अमल करते हैं, खुशखबरी देता है कि उन के लिए बड़ा अज्र है। (९) और

यह भी (बताता है) कि जो आखिरत पर ईमान नहीं रखते, उन के लिए दुख देने वाला अज़ाब तैयार कर रखा है। (१०)★

और इंसान जिस तरह (जल्दी से) भलाई मांगता है, इसी तरह बुराई मांगता है और इंसान जल्दबाज़ (पैदा हुआ) है। (११) और हम ने दिन और रात को दो निशानियां बनाया है, रात की निशानी को तारीक बनाया और दिन की निशानी को रोशन, ताकि तुम अपने परवरदिगार का फ़ल (यानी) रोज़ी तलाश करो और वर्षों की गिनती और हिसाब जानो और हम ने हर चीज़ की (अच्छी तरह) तफ़्सील कर दी है। (१२) और हमने हर इंसान के आमाल को (किताब की सूरत में) उस के गले में लटका दिया है और क़ियामत के दिन (वह) किताब उसे निकाल दिखाएंगे, जिसे वह खुला देखेगा। (१३) कहा जाएगा (कि) अपनी किताब पढ़ ले, तू आज अपना आप ही हिसाब लेने वाला काफ़ी है। (१४) जो शरूस हिदायत अपनाता है, तो अपने लिए अपनाता है और जो गुमराह होता है, तो गुमराही का नुक़सान भी उसी को होगा और कोई शरूस किसी दूसरे का बोझ नहीं उठाएगा और जब तक हम पैग़म्बर न भेज लें, अज़ाब नहीं दिया करते (१५) और जब हमारा इरादा किसी बस्ती के हलाक करने का हुआ तो वहां के खुशहाल लोगों को (गंदी बातों पर) लगा दिया, तो वे ना-फ़रमानियां करते रहे। फिर उस पर (अज़ाब का) हुक्म साबित हो गया और हमने उसे हलाक कर डाला। (१६) और हमने नूह के बाद बहुत सी उम्मतों को हलाक कर डाला और तुम्हारा परवरदिगार अपने बन्दों के गुनाहों को जानने और देखने वाला काफ़ी है। (१७) जो शरूस दुनिया (की खुशहाली) का स्वाहिशमंद हो तो हम उस में से जिसे चाहते हैं और जितना चाहते हैं, जल्द दे देते हैं, फिर उस के लिए जहन्नम को (ठिकाना) मुक़र्रर कर रखा है, जिस में नक़रीन सुन कर और (खुदा की दरगाह से) रांदा हो कर दाख़िल होगा। (१८) और जो शरूस आखिरत की तलब में हो और उस में इतनी कोशिश करे जितनी वह कर सकता है और वह मोमिन भी हो तो ऐसे ही लोगों की कोशिश ठिकाने लगती है। (१९) हम उन को और उन

कुल्लन्नुमिदु हाउलाइ व हाउलाइ मिन् अता - इ रबिब - क व मा
का-न अताउ रबिब-क मद्जुरा (२०) उन्जुर् कै-फ फ़ज़ज़लना बअ-ज़हुम् अला
बअ-ज़िन् व लल्आखिरतु अकबर द-र-जातिव-व अकबर तफ़ज़ीला (२१) ला
तज्जल् म-अल्लाहि इलाहन् आख-र फ़-तक्वु-द मज्मूमम्-मल्लूला ★ (२२)

व कज़ा रब्बु-क अल्ला तअ-बुद् इल्ला
इय्याहु व बिल् - वालिदनि इहसानव

इम्मा यन्नुगान्-न अन्दकल्-कि-ब-र अ-हदुहुमा
ओ किलाहुमा फ़ला तकुल्लहुमा उफ़्किव-व ला

तन्हर्हुमा व कुल्लहुमा कौलन् करीमा
(२३) वस्फ़िज़ लहुमा जनाहज़-ज़ुल्लि

मिनरह्मति व कुरब्बिर् - हम्हुमा कमा
रब्बयानी सुगीरा (२४) रब्बुकुम्

अज - लमु जिमा फ़ी नुफ़सिकुम् इन्
तकून स़ालिही-न फ़-इन्नहू का-न लिल्-अव्वाबी-न

गफ़ूरा (२५) व आति जल्कुर्बा हक्कह
वल्मिस्की-न वन्नस्बीलि व ला तुबजिज़

तन्ज़ीरा (२६) इन्नल् - मुबजिज़ी - न कानू
व कानश्शैतानु लिरब्बिही कफ़ूरा (२७) व इम्मा तुअ - रिज़न-न

अन्हुमुब्तिगा-अ रह्मतिम्-मिर् - रब्बि-क तरजूहा फ़-कुल्लहुम् कौलम्-मैसूरा
(२८) व ला तज-अल् य-द-क मलूल-तन् इला अुनुकि-क व ला तम्बुह

कुल्लल्बस्ति फ़-तक्वु-द मलूमम्-मद्सूरा (२९) इन्-न रब्ब-क यम्सुतुरिज़-क
लिमय्यशाउ व यकिदर इन्नहू का - न बिअिबादिही खबीरम् - बसीरा

★ (३०) व ला तक्तुलू औलादकुम् खश - य - त इम्लाकिन् नहनु
नरज़ुकुहुम् व इय्याकुम् इन्-न क्त-लहुम् का-न खित्-अव कबीरा (३१)
व ला तकरबुजिज़ना इन्नहू का-न फ़ाहि-श-तव व सा-अ सबीला (३२)

وَمَا كَانَ عَقَابُ رَبِّكَ وَمَا كَانَ عَقَابُ رَبِّكَ مَحْظُورًا
أَلَمْ تَكُنْ مِنْ قَبْلُ مَعَهُمْ عَلَى بَعْضِ الْأَحْزَابِ أَنْ يَكُونَ
أَكْبَرُ هَضْبًا ۚ لَا تَجْعَلْ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ فَتُفْضَلُ مِنْهُمْ
عَذَابًا ۚ وَكَفَى رِبَاكَ أَكْثَرًا ۚ وَالَّذِينَ آمَنُوا
إِنَّمَا يَتَّبِعُونَ عِندَكَ إِلَهًا وَاحِدًا ۚ وَالَّذِينَ لَا تَدْرِي
وَلَا تَعْلَمُونَ ۚ وَالَّذِينَ لَا تَدْرِي ۚ وَالَّذِينَ لَا تَدْرِي
لِلَّهِ مِنَ الْغَيْبِ وَفَلَّاتُ السَّمَاوَاتِ لَا يَكُنَّ صُورًا ۚ
وَلَقَدْ عَلِمْتُمُ ابْنَ آدَمَ إِذْ قَالَ لِلَّهِ رَبِّهِمْ إِنِّي وَضَعْتُ
لِلْآدَمِينَ عَقَابًا ۚ وَأَبَدَ الَّذِينَ كَذَبُوا لَكَ وَالْمُكَذِّبِينَ ۚ وَابْنَ
الْحَبْلِ ۚ وَلَا تَجْعَلْ لِكُلِّ دِينٍ كَلِمًا ۚ فَتُفْضَلُ مِنْهُمْ
الْقَبِيلِينَ ۚ وَكَانَ الْقَبِيلُ يَرْبِيهِمْ قَوْمًا ۚ وَإِنَّمَا تَعْرِضُ
عَنْهُمْ لِنَمَّةٍ لَمْ تَحْمِلْ مِنْ رَبِّكَ شَيْئًا ۚ فَكُنْ لَهُمْ لَدُنْكَ
وَلَا تَجْعَلْ لِكُلِّ دِينٍ كَلِمًا ۚ وَلَا تَدْرِي ۚ وَالَّذِينَ لَا تَدْرِي
فَقَدْ عَلِمْتُمُ ابْنَ آدَمَ إِذْ قَالَ لِلَّهِ رَبِّهِمْ إِنِّي وَضَعْتُ
لِلْآدَمِينَ عَقَابًا ۚ وَأَبَدَ الَّذِينَ كَذَبُوا لَكَ وَالْمُكَذِّبِينَ ۚ
وَابْنَ الْحَبْلِ ۚ وَلَا تَجْعَلْ لِكُلِّ دِينٍ كَلِمًا ۚ فَتُفْضَلُ مِنْهُمْ
الْقَبِيلِينَ ۚ وَكَانَ الْقَبِيلُ يَرْبِيهِمْ قَوْمًا ۚ وَإِنَّمَا تَعْرِضُ
عَنْهُمْ لِنَمَّةٍ لَمْ تَحْمِلْ مِنْ رَبِّكَ شَيْئًا ۚ فَكُنْ لَهُمْ لَدُنْكَ
وَلَا تَجْعَلْ لِكُلِّ دِينٍ كَلِمًا ۚ وَلَا تَدْرِي ۚ وَالَّذِينَ لَا تَدْرِي

को, सब को तुम्हारे परवरदिगार की बलिषाश से मदद देते हैं और तुम्हारे परवरदिगार की बलिषाश (किसी से) हकी हुई नहीं। (२०) देखो हम ने किस तरह कुछ को कुछ पर फ़ज़ीलत बल्की है और आखिरत दर्जों में (दुनिया से) बहुत बरतर और बरतरी में कहीं बढ़ कर है। (२१) और खुदा के साथ कोई और माबूद न बनाना कि मलामतें सुन कर और बेकस हो कर बैठे रह जाओगे। (२२)★

और तुम्हारे परवरदिगार ने इशार्द फ़रमाया है कि उस के सिवा किसी की इबादत न करो। और मां-बाप के साथ भलाई करते रहो। अगर उन में से एक या दोनों तुम्हारे सामने बुढ़ापे को पहुंच जाएं, तो उन को उफ़ तक न कहना और न उन्हें झिड़कना और उन से बात अदब के साथ करना। (२३) और नियाज़मंदी के साथ उन के आगे झुके रहो और उन के हक़ में दुआ करो कि ऐ परवरदिगार! जैसा उन्होंने ने मुझे बचपन में (मुहब्बत से) पाला-पोसा है, तू भी उन (के हाल) पर रहमत फ़रमा। (२४) जो कुछ तुम्हारे दिलों में है, तुम्हारा परवरदिगार उसे अच्छी तरह जानता है। अगर तुम नेक होगे, तो वह रज़ूअ लाने वालों को बरूश देने वाला है। (२५) और रिश्तेदारों और मुहताजों और मुसाफ़िरों को उन का हक़ अदा करो और फ़िज़ूलखर्ची से माल न उड़ाओ। (२६) कि फ़िज़ूलखर्ची करने वाले तो शैतान के भाई हैं और शैतान अपने परवरदिगार (की नेमतों) का कुफ़ान करने वाला (यानी ना-शुका) है। (२७) और अगर तुम अपने परवरदिगार की रहमत के इन्तिज़ार में, जिस की तुम्हें उम्मीद हो, उन (हक़दारों) की तरफ़ तवज्जोह न कर सको, तो उन से नमी से बात कह दिया करो। (२८) और अपने हाथ को न तो गरदन से बंधा हुआ (यानी बहुत तंग) कर लो (कि किसी को कुछ दो ही नहीं) और न बिल्कुल खोल ही दो (कि सभी कुछ दे डालो और अंजाम यह हो) कि मलामत किए हुए और निचले हो कर बैठ जाओ। (२९) बेशक तुम्हारा परवरदिगार, जिस की रोज़ी चाहता है, फैला देता है और (जिस की रोज़ी चाहता है) तंग कर देता है। वह अपने बन्दों से खबरदार है और (उनको) देख रहा है★ (३०)

और अपनी औलाद को मुफ़िलसी के डर से क़ल्ल न करना, (क्योंकि) उन को और तुम को हम ही रोज़ी देते हैं। कुछ शक़ नहीं कि इन का मार डालना सल्लत गुनाह है। (३१) और ज़िना

१. यानी रंज व अफ़सोस और ना-खुशी का कलिया मुंह से न निकालना और न घुड़कना-झिड़कना और यह जो फ़रमाया कि बुढ़ापे को पहुंच जाएं तो उन को उफ़ तक न कहना, यह इस लिए कि बुढ़ापे में मां-बाप की कुछ क़द्र और परवाह नहीं की जाती। उन की इज़ज़त, अदब और एहताराम करना, चाहे वे ज़वान हों या बूढ़े, दोनों हालतों में फ़र्ज है। इस्मानियत और सबादतमंदी का तकाज़ा भी यही है कि मां-बाप को सुन रखा जाए, उन का अदब किया जाए। वह शम्स निहायत ख़ुशनसीब है, जो मां-बाप की ख़िदमत करे और उन को सुन रखे।

२. यानी देने को कुछ पास नहीं है और हाथ तंग होने की वजह से उन की तरफ़ तवज्जोह नहीं कर सकते और चाहें यह हो कि खुदा दे तो उन को दो। तो इस शक़ल में उन को नमी से समझा दिया करो कि खुदा के फ़ज़ल से माल हाथ आता है तो तुम को भी देते हैं।

व ला तक्तुलुन्-नफसलती हर-मल्लाहु इल्ला बिल्हक्क व मन् कुति-ल
मज्जुमव फ-कद् अ-अल्ला लिबलियिही सुत्तानव फला युस्तिफ-फिल्कतिल
इन्नुह का-न मन्सुरा (३३) व ला तकरबू मालल् - यतीमि इल्ला
बिलती हि-य अह्सनु हत्ता यल्लु - ग अशुद्दह व ओफू बिल्अहिद

इन्नुअह - द का - न मस्कला (३४)

व ओफुल्क-ल इजा किलुम् व जिन्

बिल् - क्रिस्तासिल् - मुस्तकीमि जालि - क

खैरव-व अह्सनु तअ-वीला (३५) व ला

तक्फु मा लै-स ल-क बिही अल्मुत्

इन्स्सम्-अ वल्ब-स-र वल्फुआ - द कुल्लु

उलाइ-क का-न अन्हु मस्कला (३६)

व ला तग्थि फिल्अजि म-र-हन् इन्-क

लन् तहिरकल्-अर्-ज व लन् तब्लुगल्-जिबा-ल

तूला (३७) कुल्लु जालि-क का-न सयियउह

बिन्-द रब्बि-क मक्कहा (३८) जालि-क

मिम्मा ओह इलै-क रब्बु-क मिनल्हिकमति

व ला तजजल् म-अल्लाहि इलाहन् आख-र फ तुल्का फी ज-हन्न-म मलम-

मद्दुरा (३९) अ-फ-अस्फाकुम् रब्बुकुम् बिल्बनी-न वत्त-ख-ज मिनल्-मलाइकति

इनासन् इन्नुकुम् ल - तक्लून् कौलन् अजीमा (४०) व ल - कद्

सरफना फी हाजल् - कुरआनि लि - यज्जवकरु व मा यजीदुहुम् इल्ला

नुफूरा (४१) कुल् लौ का-न म-अह आलिहतुव कमा यक्लून् इजल्लव्तगौ

इला जिल्अशि सबीला (४२) सुव्हानह व तआला अम्मा यक्लून्

अलुव्वन् कबीरा (४३) तुसब्बिह लहस्सावातुस-सब्बु वल्अर्जु व मन्

फीहिन् - न व इम्मिन् शैइन् इल्ला युसब्बिह बिह्मिद्दी व लाकिल्ला

तफ्कह - न तस्बीहहुम् इन्नुह का - न हलीमन् गफूरा (४४)

وَأَنذَرْتُكَ الْفَسَادَ الَّذِي جَاءَ الْإِبْرَاهِيمَ وَمَنْ قَبْلَ إِبْرَاهِيمَ إِنَّكَ كَانَ
مُعَذِّبًا وَلَا تَقْرَأُ مَا كَانَ الْحَبِيبُ إِلَّا الْفَاتِيحَةَ مِنْ آمَنَ عَلَى
يَوْمِ الْقَدَرِ وَأَوْرَثَ الْفَتَى إِيَّاهُ الْفَتْحَ كَانَ سُورًا وَأَوْرَثَ
الْحَكِيمَ إِذَا طَعَنَ وَتَوَلَّى الْفَتْحَ طَائِفَ السُّورِ ذَلِكَ عَمَلُ
أَمْرٍ وَأَوْرَثَ وَلَا تَقْرَأُ مَا كَانَ الْفَتْحُ عَلَيْهِ عَمَلُ الْفَتْحِ
وَالْحَبِيبُ وَالْفَتْحُ عَلَى الْفَتْحِ كَانَ عَمَلُ سُورَةٍ وَلَا تَقْرَأُ
الْأَرْضَ مَرَّةً لَكَ لَنْ تَقْرَأَ الْأَرْضَ وَمَنْ جَاءَ الْفَتْحَ الْفَتْحَ
كَانَ ذَلِكَ كَانَ سَيِّدُهُ وَعَنْدَ رَبِّكَ مَكْرُمًا ذَلِكَ مِمَّا أَوْصَى
الْفَتْحَ ذَلِكَ مِنَ الْفَتْحِ وَلَا تَقْرَأُ مِمَّا الْفَتْحُ الْفَتْحُ الْفَتْحُ
جَمْعُهُ مِمَّا أَمَرَ سُورًا الْفَتْحُ مِمَّا رَكَّبَ الْفَتْحَ وَالْفَتْحُ مِنَ
الْفَتْحِ الْفَتْحُ الْفَتْحُ الْفَتْحُ الْفَتْحُ الْفَتْحُ الْفَتْحُ الْفَتْحُ
الْفَتْحُ الْفَتْحُ الْفَتْحُ الْفَتْحُ الْفَتْحُ الْفَتْحُ الْفَتْحُ الْفَتْحُ
كَانَ الْفَتْحُ الْفَتْحُ الْفَتْحُ الْفَتْحُ الْفَتْحُ الْفَتْحُ الْفَتْحُ
مِمَّا جَاءَ الْفَتْحُ الْفَتْحُ الْفَتْحُ الْفَتْحُ الْفَتْحُ الْفَتْحُ
وَمَنْ جَاءَ الْفَتْحُ الْفَتْحُ الْفَتْحُ الْفَتْحُ الْفَتْحُ الْفَتْحُ
جَمْعُهُ الْفَتْحُ الْفَتْحُ الْفَتْحُ الْفَتْحُ الْفَتْحُ الْفَتْحُ

के पाम भी न जाना कि वह बे-हयाई और बुरी राह है। (३२) और जिस जानदार का मारना खुदा ने हाराम किया है, उसे कत्ल न करना मगर जायज तौर पर (घानी शरीअत के फत्वे के मुताबिक) और जो शरस जुल्म से कत्ल किया जाए, हम ने उस के वारिस को अस्तियाग दिया है (कि जालिम क्रातिल से बदला ले) तो उस को चाहिए कि कत्ल (के क्रिसास) में ज्यादाती न करे कि वह मंसूर व फल्हयाब है। (३३) और यतीम के माल के पास भी न फटकना, मगर ऐमे तरीके से कि बहुत बेहतर हो, यहां तक कि वह जवानी को पहुंच जाए और अहद (वायदे) को पूरा करो कि अहद के बागे में जरूर पूछ होगी। (३४) और जब (कोई चीज) नाप कर देने लगे, तो पैमाना पूरा भरा करो और (जब तोल कर दो, तो) तराजू सीधी रख कर तोला करो। यह बहुत अच्छी बात है और अंजाम के लिहाज से भी बहुत बेहतर है। (३५) और (ऐ बन्दे!) जिस चीज का तुझे इल्म नहीं, उस के पीछे न पड़ कि कान और आंख और दिल इन सब (अंगों) से जरूर पूछ-ताछ होगी। (३६) और जमीन पर अकड़ कर (और तन कर) मत चल कि तू जमीन को फाड़ तो नहीं डालेगा और न लंबा हो कर पहाड़ों (की चोटी) तक पहुंच जाएगा। (३७) इन सब (आदतों) की बुराई तेरे परवरदिगार के नज़दीक बहुत ना-पसन्द है। (३८) (ऐ पैगम्बर!) यह उन (हिदायतों) में से हैं जो खुदा ने हिकमत की बातें तुम्हारी तरफ वह्य की हैं और खुदा के साथ कोई और माबूद न बनाना कि (ऐसा करने में) मलामत किया हुआ और (खुदा की दरगाह से) धुत्कारा हुआ बना कर जहन्नम में डाल दिए जाओगे। (३९) (मुशिरको!) क्या तुम्हारे परवर-दिगार ने तुम को तो लड़के दिए और खुद फरिश्तों को वैदियां बनाया। कुछ शक नहीं कि (यह) तुम बड़ी (ना-मुनासिब) बात कहते हो। (४०) ★

और हम ने इस क़ुरआन में तरह-तरह की बातें बयान की हैं, ताकि लोग नसीहत पकड़ें, मगर वे इस में और विदक जाते हैं। (४१) कह दो कि अगर खुदा के साथ और माबूद होते, जैसा कि ये कहते हैं, तो वे जरूर (खुदा-ए-) मालिके अर्श की तरफ (लड़ने-भिड़ने के लिए) रास्ता निकालने। (४२) वह पाक है और जो कुछ ये बकवास करते हैं, उस से (इस का रुत्बा) बहुत ऊंचा है। (४३) मातों आसमान और जमीन और जो लोग उन में हैं, सब उसी की तस्बीह करते हैं और (मख्लूक़ात में से) कोई चीज नहीं मगर उस की तारीफ़ के साथ तस्बीह करती है, लेकिन तुम उन की तम्बीह को नहीं समझते, बेशक वह बुर्दबार (और) बल्लाने वाला है। (४४) और जब

तुम कुरआन पढ़ा करते हो, तो हम तुम में और उन लोगों में जो आखिरत पर ईमान नहीं रखते, हिजाब (पर्दा) पर हिजाब कर देते हैं। (४५) और उन के दिलों पर पर्दा डाल देते हैं कि उसे समझ न सकें और उन के कानों में बोझ पैदा कर देते हैं और जब तुम कुरआन में अपने परवरदिगार यकता का जिक्र करते हो, तो वे बिदक जाते और पीठ फेर कर चल देते हैं। (४६) ये लोग जब तुम्हारी तरफ कान लगाते हैं, तो जिस नीयत से ये सुनते हैं, हम उसे खूब जानते हैं और जब ये फूसी करते हैं, (यानी) जब जालिम कहते हैं कि तुम तो एक ऐसे शरस की परवी करते हो, जिस पर जादू किया गया है। (४७) देखो, उन्होंने ने किस-किस तरह की तुम्हारे बारे में बातें बनायीं, सो ये गुमराह हो रहे हैं और रास्ता नहीं पा सकते ● (४८) और कहते हैं कि जब हम (मर कर बोसीदा) हड्डियां और चूर-चूर हो जाएंगे, तो क्या नये सिर से पैदा हो कर उठेंगे। (४९) कह दो कि (चाहे तुम) पत्थर हो जाओ या लोहा, (५०) या कोई और चीज, जो तुम्हारे नजदीक (पत्थर लोहे से भी) बड़ी (सस्त) हो, (अट कहेंगे) कि (भला) हमें दोबारा कौन जिलाएगा? कह दो वही जिस ने पहली बार पैदा किया, तो (ताज्जुब से) तुम्हारे आगे सर हिलाएंगे और पूछेंगे कि ऐसा कब होगा? कह दो उम्मीद है कि जल्द होगा। (५१) जिस दिन वह तुम्हें पुकारेगा, तो तुम उस की तारीफ के साथ जवाब दोगे और ख्याल करोगे कि तुम (दुनिया में) बहुत कम (मुहत) रहे। (५२) *

और मेरे बन्दों से कह दो कि (लोगों से) ऐसी बातें कहा करें, जो बहुत पसंदीदा हों, क्योंकि जैतान (बुरी बातों से) उन में फ़साद डलवा देता है। कुछ शक नहीं कि शैतान इंसान का खुला दुश्मन है। (५३) तुम्हारा परवरदिगार तुम को खूब जानता है। अगर चाहे तो तुम पर रहम करे या अगर चाहे तो तुम्हें अज़ाब दे और हम ने तुम को उन पर दारोगा (बना कर) नहीं भेजा। (५४) और जो लोग आसमानों और ज़मीन में हैं, तुम्हारा परवरदिगार उन्हें खूब जानता है। और हमने कुछ पैगम्बरों को कुछ पर फ़ज़ीलत बरूनी और दाऊद को ज़बूर दी। (५५) कहो कि (मुश्रिकों!) जिन लोगों के बारे में तुम्हें (माबूद होने का) ख्याल है, उन को बुला देखो। वह तुम से तकलीफ़ के दूर करने या उस को बदल देने का कुछ अस्तिपार नहीं रखते। (५६) ये लोग,

जिन को (खुदा के सिवा) पुकारते हैं, वे खुद अपने परवरदिगार के यहाँ (तक्करूब का) जर्गिया तलाश करते हैं कि कौन उन में (खुदा का) ज्यादा मुकररब (होता) है और उस की रहमत के उम्मीदवार रहते हैं और उस के अज्ञाब से लोफ रखते हैं। बेशक तुम्हारे परवरदिगार का अज्ञाब डरने की चीज है। (५७) और (कुफ़ करने वालों की) कोई बस्ती नहीं मगर क्रियामत के दिन में पहले हम उसे हलाक कर देंगे या सलत अज्ञाब से मुअज्जब करेंगे। यह किताब (यानी तक्दीर) में लिखा जा चुका है। (५८) और हम ने निशानियां भेजनी इसलिए बन्द कर दीं कि अगले लोगों ने उन को झुठलाया था और हम ने समूद को अंटनी (सालेह की नुबूवत की खुली) निशानी दी, तो उन्होंने उस पर जुल्म किया और हम जो निशानियां भेजा करते हैं, तो डराने को। (५९) जब हम ने तुम से कहा कि तुम्हारा परवरदिगार लोगों को पहाता किए हुए है और जो नुमाइश हम ने तुम्हें दिखायी, उस को लोगों के लिए आजमाइश किया और इसी तरह (यूहर के) पेड़ को, जिस पर कुरआन में लानत की गयी और हम उन्हें डराने हैं तो उन को उस से बड़ी (सलत) सरकशी पंदा हुई है। (६०) ★

और जब हमने फ़रिश्तों में कहा कि आदम को सज्दा करो, तो सब ने सज्दा किया, मगर इब्नीस ने न किया, बोला, भला मैं ऐमे शरूम को सज्दा करूँ, जिस को तू ने मिट्टी में पंदा किया है। (६१) (और तान के तीर पर) कहने लगा कि देख तो यही वह है जिसे तू ने मुझ पर फ़ज़ीलत दी है। अगर तू मुझ को क्रियामत के दिन तक की माहलन दे, तो मैं थोड़े से शरूयों के सिवा उस की (तमाम) औलाद की जड़ काटता रहूँगा। (६२) खुदा ने फ़रमाया (यहाँ में) चला जा। जो शरूस इन में से तेरी पेरवी करेगा, तो तुम सब की सज़ा जहन्नम है (और वह) पूरी सज़ा (है)। (६३) और उन में से जिस को बहका सके, अपनी आवाज में बहकाता रह और उन पर अपने सवारों और प्यादों को चढ़ा कर लाता रह और उन के माल और औलाद में शरीक होता रह और उन से बायदे करता रह और शैतान जो बायदे उन से करता है, सब धोखा है। (६४) जो मेरे (मुख़लिस) बन्दे है, उन पर तेरा कुछ जोर नहीं और ऐ (पैगम्बर!) तुम्हारा परवरदिगार कारसाज काफ़ी है। (६५) तुम्हारा परवरदिगार वह है, जो तुम्हारे लिए दरिया में किशियां चलाता है, ताकि तुम उस के फ़ज़ल में (गंजी) तलाश करो। बेशक वह तुम पर मेहरबान है। (६६) और जब तुम को

दरिया में तक्लीफ पहुंचती है (यानी डूबने का खौफ होता है) तो जिन को तुम पुकारा करते हो सब उस (परवरदिगार) के सिवा गुम हो जाते हैं। फिर जब वह तुम को (डूबने से) बचा कर खुशकी की तरफ ले जाता है, तो तुम मुंह फेर लेते हो और इंसान है ही ना-मुका। (६७) क्या तुम (इस से) बे-खौफ हो कि खुदा तुम्हें खुशकी की तरफ (ले जा कर ज़मीन में) धंसा दे या तुम पर संगरेजों की भरी हुई आंधी चला दे, फिर तुम अपना कोई निगहबान न पाओ। (६८) या (इस से) बे-खौफ हो कि तुम को दूसरी बार दरिया में ले जाए, फिर तुम पर तेज हवा चलाए और तुम्हारे कुफ़ की वजह से तुम्हें डुबो दे। फिर तुम उस गर्क की वजह से अपने लिए कोई हमारा (पीछा करने वाला) न पाओ। (६९) और हम ने बनी आदम को इज्जत बरूशी और उन को जंगल और दरिया में सवारी दी और पाकीजा रोज़ी अता की और अपनी बहुत-सी मल्लूकात पर फ़ज़ीलत दी। (७०) ★

जिस दिन हम सब लोगों को उन के पेशवाओं के साथ बुलाएंगे, तो जिन (के आमांल) की किताब उन के दाहिने हाथ में दी जाएगी, वह अपनी किताब को (खुश हो-हो कर) पढ़ेंगे और उन पर धागे बराबर भी जुल्म न होगा। (७१) और जो शरूस इस (दुनिया) में अंधा हो, वह आखिरत में भी अंधा होगा, और (निजात के) रास्ते से बहुत दूर, (७२) और ऐ पंगम्बर! जो वक्ष्य हम ने तुम्हारी तरफ भेजी है, करीब था कि ये (काफ़िर) लोग तुम को इस से बिचला दें, ताकि तुम इस के सिवा और बातें हमारे बारे में बना लो और उस वक़्त वह तुम को दोस्त बना लेते। (७३) और अगर हम तुम को साबित कदम न रहने देते तो तुम किमी क़दर उन की तरफ मायल होने ही लगे थे। (७४) उस वक़्त हम तुम को ज़िदगी में भी (अज़ाब का) दोगुना और मरने पर भी दोगुना अज़ाब चखाते, फिर तुम हमारे मुकाबले में किसी को अपना मददगार न पाते। (७५) और करीब था कि ये लोग तुम्हें ज़मीन (मक्का) से फिसला दें ताकि तुम्हें वहां से देश निकाला दे दें और उस वक़्त तुम्हारे पीछे यह भी न रहते, मगर कम। (७६) जो पंगम्बर हम ने तुम से पहले भेजे थे, उन का (और उन के बारे में हमारा, यही) तरीका रहा है और तुम हमारे तरीके में तब्दीली न पाओगे। (७७) ★

(ऐ मुहम्मद!) सूरज के ढलने से रात के अंधेरे तक (जुहर, अस्त्र, मरिरब, इशा की) नमाज़ें और सुबह को क़ुरआन पढ़ा करो, क्यों कि सुबह के वक़्त क़ुरआन का पढ़ना मूजिबे हुज़ूर (फ़रिश्ता) है। (७८) और रात के हिस्से में जागा करो (और तहज्जुद की नमाज़ पढ़ा करो)। (यह रात का जागना) तुम्हारे लिए ज़्यादाती (की वजह) है, और (तहज्जुद की नमाज़ तुम को नफ़ल) है करीब है कि खुदा तुम को मक्कामे महमूद में दाख़िल करे। (७९) और कहो कि ऐ परवरदिगार! मुझे

१. काफ़िर कहते थे कि इस कलाम में नसीहत की बातें अच्छी हैं, मगर हर जगह शिक़ पर ऐब रखा है, यह बदल डाल, तो हम इस सब को मानें।

(मदीने में) अच्छी तरह दाखिल कीजियो और (मक्के से) अच्छी तरह निकालियो और अपने यहां से जोर व क़ूबत को मेरा मददगार बनाइयो। (८०) और कह दो कि हक़ आ गया और बातिल नाबूद हो गया: बेशक़ बातिल नाबूद होने वाला है। (८१) और हम क़ुरआन (के ज़रिए) से वह चीज़ नाजिल करते हैं, जो मोमिनों के लिए शिक्का और रहमत है और ज़ालिमों के हक़ में तो इस में नुक़सान ही बढ़ता है। (८२) और जब हम इंसान को नेमत बरक़शते हैं, तो मुंह फेर लेता और पहलू फेर लेता है और जब उसे सस्ती पहुंचती है तो ना-उम्मीद हो जाता है। (८३) कह दो कि हर शरूस् अपने तरीक़े के मुताबिक़ अमल करता है, सो तुम्हारा परवरदिगार उस शरूस् को खूब जानता है, जो सब से ज़्यादा सीधे रास्ते पर है। (८४) ★

और तुम से रूह के बारे में सवाल करते हैं। कह दो कि वह मेरे परवरदिगार की एक शान है और तुम लोगों को (बहुत ही) कम इल्म दिया गया है। (८५) और अगर हम चाहें तो जो (किताब) हम तुम्हारी तरफ़ भेजते हैं, उसे (दिलों से) मिटा दें। फिर तुम उस के लिए हमारे मुक़ाबले में किसी को मददगार न पाओ। (८६) मगर (उस का क़ायम रहना) तुम्हारे परवरदिगार की रहमत है। कुछ शक़ नहीं कि तुम पर उस का बड़ा फ़ज़ल है। (८७) कह दो कि अगर इन्सान और ज़िन्न इस बात पर जमा हों कि इस क़ुरआन जैसा बना लाएं, तो इस जैसा न ला सकें, अगरचे वे एक दूसरे के मददगार हों। (८८) और हम ने इस क़ुरआन में सब बातें तरह-तरह से बयान कर दी हैं, मगर अक्सर लोगों ने इंकार करने के सिवा क़ुबूल न किया। (८९) और कहने, लगे कि हम तुम पर ईमान नहीं लाएंगे, जब तक कि (अजीब व ग़रीब बातें न दिखाओ, यानी या तो) हमारे लिए ज़मीन में से चश्मा जारी कर दो, (९०) या तुम्हारा ख़जूरों और अंगूरों का कोई बाग़ हो और उस के बीच में नहरें बहा निकालो, (९१) या जैसा तुम कहा करते हो हम पर आसमान के टुकड़े ला गिराओ या खुदा और फ़रिश्तों को (हमारे) सामने ले आओ। (९२) या तुम्हारा सोने का घर हो या तुम आसमान पर चढ़ जाओ और हम तुम्हारे चढ़ने को भी नहीं मानेंगे, जब तक कि कोई किताब न लाओ, जिसे हम पढ़ भी लें। कह दो कि मेरा परवरदिगार पाक़ है। मैं तो सिर्फ़ एक पैग़ाम पहुंचाने वाला इंसान हूं। (९३) ★

और जब लोगों के पास हिदायत आ गयी तो उन को ईमान लाने से इस के सिवा कोई चीज रुकावट न हुई कि कहने लगे कि क्या खुदा ने आदमी को पैगम्बर कर के भेजा है। (१४) कह दो कि अगर जमीन में फ़रिश्ते होते (कि इस में) चलते-फिरते (और) आराम करते (यानी बसते) तो हम उन के पास फ़रिश्तों को पैगम्बर बना कर भेजते। (१५) कह दो कि मेरे और तुम्हारे दमियान खुदा ही गवाह काफ़ी है। वही अपने बन्दों से खबरदार (और उनको) देखने वाला है। (१६) और जिस शक्स को खुदा हिदायत दे, वही हिदायत पाया हुआ है और जिन को गुमराह करे तो तुम अल्लाह के सिवा उन के दोस्त नहीं पाओगे और हम उन को क्रियामत के दिन आँधे मुँह अंधे-गूंगे और बहरे (बना कर) उठाएंगे। और उन का ठिकाना दोख है। जब (उस की आग) बुझने को होगी तो हम उन को (अजाब देने) के लिए और भड़का देंगे (१७) यह उन की सज़ा है, इस लिए कि वे हमारी आयतों से कुफ़ करते थे और कहते थे कि जब हम (मर कर सड़ी-गली) हड्डियाँ और चूरा-चूरा हो जाएंगे तो क्या नये सिरों से पैदा किये जाएंगे? (१८) क्या उन्होंने नहीं देखा कि खुदा जिस ने आसमानों और जमीन को पैदा किया है, इस बात की कुदरत रखता है कि उन जैसे (लोग) पैदा कर दे और उस ने उन के लिए एक वक़्त मुक़र्रर कर दिया है, जिस में कुछ भी शक नहीं। तो ज़ालिमों ने इंकार करने के सिवा (उसे) कुबूल न किया। (१९) कह दो कि अगर मेरे परवरदिगार की रहमत के ख़जाने तुम्हारे हाथ में होते, तो तुम खर्च हो जाने के डर से (उन को) बन्द रखते और इंसान दिल का बहुत तंग है। (१००)★

और हम ने मूसा को नौ खुली निशानियाँ दीं, तो बनी इस्राईल से मालूम कर लो कि जब वह उन के पास आए तो फ़िज़ाँन ने उन से कहा कि मूसा ! मैं ख़याल करता हूँ कि तुम पर जादू किया गया है। (१०१) उन्होंने ने कहा कि तुम यह जानते हो कि आसमानों और जमीन के परवरदिगार के सिवा उन को किसी ने नाज़िल नहीं किया (और वह भी तुम लोगों के) समझाने को और ऐ फ़िज़ाँन ! मैं ख़याल करता हूँ कि तुम हलाक हो जाओगे। (१०२) तो उस ने चाहा कि उन को (मिस्र की) धरती से निकाल दे, तो हम ने उस को और जो उस के साथ थे, सब को डुबो दिया। (१०३) और उस के बाद बनी इस्राईल ने कहा कि तुम इस मुल्क में रहो-सहो, फिर जब आखिरत का वायदा आ जाएगा, तो हम तुम सब को जमा कर के ले जाएंगे। (१०४) और हम ने

इस कुरआन को सच्चाई के साथ नाज़िल किया है और वह सच्चाई के साथ नाज़िल हुआ (ये मुहम्मद!) हम ने तुम को सिर्फ़ खुशखबरी देने वाला और डर सुनाने वाला बना कर भेजा है (१०५) और हम ने कुरआन को जुज़-जुज़ कर के नाज़िल किया है ताकि तुम लोगों का ठहर-ठहर कर, पढ़ कर सुनाओ और हम ने उस को आहिस्ता-आहिस्ता उतारा है। (१०६) कह दो कि तुम इस पर ईमान लाओ या न लाओ, (यह हक़ है) जिन लोगों को इस से पहले इल्म (किताब) दिया गया है, जब वह उन को पढ़ कर सुनाया जाता है, तो वे ठोड़ियों के बल सज्दे में गिर पड़ते हैं। (१०७) और कहते हैं कि: हमारा परवरदिगार पाक है। बेशक हमारे परवरदिगार का वायदा पूरा हो कर रहा। (१०८) और वे ठोड़ियों के बल गिर पड़ते हैं और रोते जाते हैं और इस से उन को और ज्यादा आजिजी पैदा होती है □ (१०९) कह दो कि तुम (खुदा को) अल्लाह (के नाम से) पुकारो या रहमान (के नाम से), जिस नाम से पुकारो, उस के सब नाम अच्छे हैं, और न नमाज़ बुलंद आवाज़ से पढ़ो और न धीरे, बल्कि उस के बीच का तरीका अस्तियार करो। (११०) और कहो कि सब तारीफ़ खुदा ही को है, जिस ने न तो किमी को बेटा बनाया है और न उसकी बादशाही में कोई शरीक है और न इस वजह से कि वह आजिज़ व नातवा है, कोई उस का मददगार है और उस को बड़ा जान कर उस की बड़ाई करते रहो। (१११)★



१८ सूर: कहफ़ ६६

सूर: कहफ़ मक्की है और इस में एक मी दम आयतें और बारह रूकूअ हैं।

शुरू खुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

सब तारीफ़ खुदा ही को है, जिस ने अपने बन्दे (मुहम्मद) पर (यह) किताब नाज़िल की और हम में किसी तरह की टेढ़ (और पेचीदगी) न गम्बी, (१) (बल्कि) सीधी (और आसान उतांगी) ताकि (लोगों को) मसलत अजाब से जो उस की तरफ़ से (आने वाला) है, डराए और मोमिनों को जो नेक अमल करते हैं, खुशखबरी सुनाए कि उन के लिए (उन के कामों का) नेक बदला (यानी बहिश्त) है। (२) जिस में वे हमेशा-हमेशा रहेंगे। (३) और उन लोगों को भी डराए, जो कहते हैं कि खुदा ने (किसी को) बेटा बना लिया है। (४) उन को इस बात का कुछ भी इल्म नहीं और न उन के बाप-दादा ही को था। (यह) बड़ी सख्त बात है, जो उन के मुंह से निकलती है (और कुछ शक़ नहीं कि) ये जो कुछ कहते हैं, सिर्फ़ झूठ है। (५) (ऐ पैगम्बर!) अगर ये इम कलाम पर ईमान न लाएँ, तो शायद तुम उनके पीछे रंज करके अपने आप को हलाक कर

१. अल्लाह का नाम रहमान लोग जानने थे, इस पर यह फ़रमाया कि नाम बहुतेरे हैं, अल्लाह वही एक है और पुकारने की नमाज़ में बहुत चिल्लाना भी नहीं और बहुत दबी आवाज़ भी नहीं। बीच की चाल पसंद रहे।

इन्ना ज-अल्ना मा अ-लल्अज्जि जी-नत्तल्हा लिनब्लु-वहुम् अय्युहुम् अहसन्
अ-मला (७) व इन्ना ल-जाअिलून मा अलेहा सओदन् जरुजा (८)
अम् हसिब-त अन्-न अस्हाबल्कह्फि वर्रकीमि कानू मिन् आयातिना अ-ज-बा
(९) इज् अवल्फित्यतु इलल्-कह्फि फ-कालू रब्बना आतिना मिल्लदुन-क
रह्-म-तुव-व हय्यिअ लना मिन् अम्रिना र-शदा

(१०) फ - ज़रब्ना अला आजानिहिम्

फिल्-कह्फि सिनी - न अ-द-दा (११)

सुम्-म ब-अस्ताहुम् लिनअ-ल-म अय्युहल्हिज्बैनि

अहसा लिमा लबिस् अ - मदा (१२)

नहनु नक्स्सु अलै-क न-ब-अहुम् बिल्हक्कि

इन्नहुम् फित्यतुन् आमनू बिरबिहिम् व

जिदनाहुम् हुदव (१३) व

र-बत्ना अला कुलूबिहिम् इज् कामू फ-कालू

रब्बुना रब्बुस्समावाति वल्अज्जि लन्ददु-व

मिन्दूनिही इलाहल्लकद् कुल्ला इजन्

श-त-ता (१४) हाउलाइ कौमुनत्त-खजू

मिन् दूनिही आलिह-तन् लौला यत्तून

अलैहिम् बिसुल्लानिम्-बय्यिनिन् फ-मन् अज्-लमु

कजिबा (१५) व इज्जिअ-त-जत्तुसुहुम् व मा यज्-बुदू-न

इल्लल्ला - ह फअ-व इलल्कह्फि यन्शुर् लकुम् रब्बुकुम्

मिर्रह्मतिही व युहय्यिअ लकुम् मिन्

अम्रिकुम् मिर्रफक्का (१६) व-त-रश्-शम-स इजा

त-ल-अत्-त-जावरु अन् कह्फिहिम्

जातल्यमीनि व इज्जा ग-र-बत्-त-किर्रजुहुम्

जातशिश्मालि व हुम् फी फज्-वतिम्-मिन्हु

जालि-क मिन् आयातिल्लाहि मय्यहिदल्लाहु

फहुवल्मुहतदिह व मय्युज्जलिल् फ-लन् तजि-द लहू

वलिyyम्-मुसिबा (१७) व तह्सबुहुम् ऐकाज्ज-वहुम्

रुकूदु व नुकल्लिबुहुम् जातल्यमीनि व जातश्-

शिमालि व कल्बुहुम् बासितुन् जिआहि बिल्वसीदि

लवित्तलअ - त अलैहिम् ल-वल्-त मिन्हुम्

फिरारव-व समुलिअ-त मिन्हुम् रुअ-बा (१८)

وَاللَّهُ عَلِيمٌ خَبِيرٌ ۝١٨
إِنَّا جَعَلْنَا مَا عَلَى الْأَرْضِ زِينَةً لِّهَا لِيُتَذَكَّرَ ۝١٩
وَاللَّهُ يَخْتَارُ ۝٢٠
وَاللَّهُ يَخْتَارُ ۝٢١
وَاللَّهُ يَخْتَارُ ۝٢٢
وَاللَّهُ يَخْتَارُ ۝٢٣
وَاللَّهُ يَخْتَارُ ۝٢٤
وَاللَّهُ يَخْتَارُ ۝٢٥
وَاللَّهُ يَخْتَارُ ۝٢٦
وَاللَّهُ يَخْتَارُ ۝٢٧
وَاللَّهُ يَخْتَارُ ۝٢٨
وَاللَّهُ يَخْتَارُ ۝٢٩
وَاللَّهُ يَخْتَارُ ۝٣٠
وَاللَّهُ يَخْتَارُ ۝٣١
وَاللَّهُ يَخْتَارُ ۝٣٢
وَاللَّهُ يَخْتَارُ ۝٣٣
وَاللَّهُ يَخْتَارُ ۝٣٤
وَاللَّهُ يَخْتَارُ ۝٣٥
وَاللَّهُ يَخْتَارُ ۝٣٦
وَاللَّهُ يَخْتَارُ ۝٣٧
وَاللَّهُ يَخْتَارُ ۝٣٨
وَاللَّهُ يَخْتَارُ ۝٣٩
وَاللَّهُ يَخْتَارُ ۝٤٠
وَاللَّهُ يَخْتَارُ ۝٤١
وَاللَّهُ يَخْتَارُ ۝٤٢
وَاللَّهُ يَخْتَارُ ۝٤٣
وَاللَّهُ يَخْتَارُ ۝٤٤
وَاللَّهُ يَخْتَارُ ۝٤٥
وَاللَّهُ يَخْتَارُ ۝٤٦
وَاللَّهُ يَخْتَارُ ۝٤٧
وَاللَّهُ يَخْتَارُ ۝٤٨
وَاللَّهُ يَخْتَارُ ۝٤٩
وَاللَّهُ يَخْتَارُ ۝٥٠
وَاللَّهُ يَخْتَارُ ۝٥١
وَاللَّهُ يَخْتَارُ ۝٥٢
وَاللَّهُ يَخْتَارُ ۝٥٣
وَاللَّهُ يَخْتَارُ ۝٥٤
وَاللَّهُ يَخْتَارُ ۝٥٥
وَاللَّهُ يَخْتَارُ ۝٥٦
وَاللَّهُ يَخْتَارُ ۝٥٧
وَاللَّهُ يَخْتَارُ ۝٥٨
وَاللَّهُ يَخْتَارُ ۝٥٩
وَاللَّهُ يَخْتَارُ ۝٦٠
وَاللَّهُ يَخْتَارُ ۝٦١
وَاللَّهُ يَخْتَارُ ۝٦٢
وَاللَّهُ يَخْتَارُ ۝٦٣
وَاللَّهُ يَخْتَارُ ۝٦٤
وَاللَّهُ يَخْتَارُ ۝٦٥
وَاللَّهُ يَخْتَارُ ۝٦٦
وَاللَّهُ يَخْتَارُ ۝٦٧
وَاللَّهُ يَخْتَارُ ۝٦٨
وَاللَّهُ يَخْتَارُ ۝٦٩
وَاللَّهُ يَخْتَارُ ۝٧٠
وَاللَّهُ يَخْتَارُ ۝٧١
وَاللَّهُ يَخْتَارُ ۝٧٢
وَاللَّهُ يَخْتَارُ ۝٧٣
وَاللَّهُ يَخْتَارُ ۝٧٤
وَاللَّهُ يَخْتَارُ ۝٧٥
وَاللَّهُ يَخْتَارُ ۝٧٦
وَاللَّهُ يَخْتَارُ ۝٧٧
وَاللَّهُ يَخْتَارُ ۝٧٨
وَاللَّهُ يَخْتَارُ ۝٧٩
وَاللَّهُ يَخْتَارُ ۝٨٠
وَاللَّهُ يَخْتَارُ ۝٨١
وَاللَّهُ يَخْتَارُ ۝٨٢
وَاللَّهُ يَخْتَارُ ۝٨٣
وَاللَّهُ يَخْتَارُ ۝٨٤
وَاللَّهُ يَخْتَارُ ۝٨٥
وَاللَّهُ يَخْتَارُ ۝٨٦
وَاللَّهُ يَخْتَارُ ۝٨٧
وَاللَّهُ يَخْتَارُ ۝٨٨
وَاللَّهُ يَخْتَارُ ۝٨٩
وَاللَّهُ يَخْتَارُ ۝٩٠
وَاللَّهُ يَخْتَارُ ۝٩١
وَاللَّهُ يَخْتَارُ ۝٩٢
وَاللَّهُ يَخْتَارُ ۝٩٣
وَاللَّهُ يَخْتَارُ ۝٩٤
وَاللَّهُ يَخْتَارُ ۝٩٥
وَاللَّهُ يَخْتَارُ ۝٩٦
وَاللَّهُ يَخْتَارُ ۝٩٧
وَاللَّهُ يَخْتَارُ ۝٩٨
وَاللَّهُ يَخْتَارُ ۝٩٩
وَاللَّهُ يَخْتَارُ ۝١٠٠

दोगे । (६) जो चीज जमीन पर है, हम ने उस को जमीन के लिए जीनत बनाया है, ताकि लोगों की आजमाइश करें कि उन में कौन अच्छे अमल करने वाला है । (७) और जो चीज जमीन पर है, हम उस को (नाबूद कर के) बंजर मैदान कर देंगे । (८) क्या तुम स्थूल करते हो कि गार और लौह बाले हमारी निशानियों से अजीब थे । (९) जब वे जवान गार में जा रहे तो कहने लगे कि ऐ हमारे परवरदिगार ! हम पर अपने यहां से रहमत नाज़िल फरमा और हमारे काम में दुस्ती (के सामान) मुहय्या कर । (१०) तो हम ने गार में कई साल तक उन के कानों पर (नींद के) परदे डाले (यानी उन को सुलाए) रखा । (११) फिर उन को जगा उठाया, ताकि मालूम करें कि जितनी मुहत वे (गार में) रहे, दोनों जमाअतों में से उस की मिनदार किस को खूब याद है । (१२)★

हम इन के हालात तुम से सही-सही बयान करते हैं । वे कई जवान थे, जो अपने परवरदिगार पर ईमान लाए थे और हम ने उन को और ज्यादा हिदायत दी थी । (१३) और उन के दिलों को मबूत (यानी मजबूत) कर दिया । जब वे (उठ) खड़े हुए तो कहने लगे कि हमारा परवरदिगार आसमानों और जमीन का मालिक है, हम उस के सिवा किसी को माबूद (समझ कर) न पुकारेंगे । (अगर ऐसा किया) तो उस वक़्त हम ने अक्ल से दूर की बात कही । (१४) इन हमारी क्रोम के लोगों ने उस के सिवा और माबूद बना रले हैं । भला ये उन (के खुदा होने) पर कोई खली दलील क्यों नहीं लाते, तो उस से ज्यादा कौन जालिम है, जो खुदा पर झूठ गढ़े । (१५) और जब तुम ने इन (मुश्रिकों) से और जिन की ये खुदा के सिवा इबादत करते हैं, उन से किनारा कर लिया है, तो गार में चल रहो । तुम्हारा परवरदिगार तुम्हारे लिए अपनी रहमत फैला देगा और तुम्हारे कामों में आसानी (के सामान) मुहय्या करेगा । (१६) और जब सूरज निकले तो तुम देखो कि (घूप) उन के गार से दाहिनी तरफ़ सिमट जाए और जब डूबे तो उन से बायीं तरफ़ कतरा जाए और वे उस के मैदान में थे । ये खुदा की निशानियों में से हैं, जिस को खुदा हिदायत दे, उसे हिदायत मिल गयी और जिस को गुमराह करे, तो तुम उस के लिए कोई दोस्त, राह बताने वाला न पाओगे । (१७)★

और तुम उन को स्थाल करो कि जाग रहे हैं, हालांकि वे सोते हैं और हम उन को दाएं और बाएं करवट बदलाते थे और उनका कुत्ता चौखट पर दोनों हाथ फैलाए हुए था । अगर तुम उनको झांक कर देखते तो पीठ फेर कर भाग जाते और उन से रोब में आ जाते । (१८) और इसी तरह हम ने

१. तफ़्सीरी में लिखा है कि ये लोग क्रोम के सरदारों की औलाद थे । एक दिन ईद का दिन था । वे बाहर मेले में गये तो देखते हैं कि लोग बुतों को पूज रहे हैं और उनके नाम पर जानवर बिल्कुल कर रहे हैं खुदा ने उनके दिल की आंखें सूझ-बूझ के नूर से रोशान कर दी थी तो उन्होंने लोगों की बुतपरस्ती की हरकत को ना-मसवीदगी की नज़र से देखा और दिल में कहा कि ये बातें तो खुदा ही के लिए मुनासिब हैं जो आसमान व जमीन का पैदा करने वाला है, फिर ये अपनी क्रोम के लोगों से दूर ही रहने लगे । बुनाये सब से पहले इन में से एक शख्स एक पेड़ के साए तले अलग जा बैठा । दूसरा भी वही आ कर बैठ गया, फिर तीसरा भी उन के पास आया और बैठ गया, चौथा आया, फिर पांचवां । ये लोग आपस में एक दूसरे को नहीं जानते थे, इसी वजह से अपने दिल का हाल एक दूसरे से कहते हुए डरते और शिंशकते थे । आखिर एक उन में से बोला कि माहिबो ! तुम जो अपने भाई-बन्धों से अलग हो कर यहां आ बैठे हो, इस की कोई न कोई वजह जरूर है और वह हर शख्स को मच्चाई के साथ बयान कर देना चाहिए । दूसरे ने कहा, भाई ! सब तो यह है कि मैं ने यह स्थाल किया कि जो काम हमारी क्रोम के लोग कर रहे हैं, बातिल है और इबादत का हकदार सिर्फ़ एक खुदा है, जो आसमानों और जमीन का पैदा करने वाला है । तीसरे ने कहा कि खुदा की क़सम !

(मेष पृष्ठ ४६१ पर)

व कज्जालि-क व-अस्नाहुम् लि-य-त-सा^१लू बंनहुम्^२ का-ल का^३इलुम् - मिन्हुम्
कम् लबिस्तुम्^४ कालू लबिस्ना यौमन् औ वअ-ज्ज यौमिन्^५ कालू रब्बुकुम्
अअ-लमु बिमा लबिस्तुम्^६ फव-असू अ-ह-दकुम् बिवरिकिकुम् हाजिही इलल-
मदीनति फलयरज्जर अथ्यहा^७ अज्जका तआमन् फल-यअतिकुम् विरिज्जकिम्-मिन्हु

दल्-य-तालरतफ व ला युग्मिअरन्-न बिकुम्
अ - ह-दा (१६) इन्नहम् इन्ध्यअहर्

अलैकुम् यर्जुमूकुम् औ युओदूकुम् फ्री
मिल्लतिहिम् व लन् तुफ्लिह इजन्

अब्ब-दा (२०) व कजालि-क अअ-सर्ना

अलैहिम् लियअ-लम् अन-न वअ-दल्लाहि
हक्कु व-व अन्नस्सा-अ-त्तु ला रै-व फ्रीहा

इज् य-त-नाजङ्-न बैनहुम् अम्-रहुम् फ-कालुब्न्

अलैहिम् बून-यानत् b रब्बूहम् अअ - लम्

बिहिम ५ काललजी - न ग - लब अला

अमिरहिम ल-नत्तखिजन-न अलैहिम मस्जिदा

(२१) स-यकल-त सला-सतर-राबिअहम

कलबदम १ व गकल-न खम्सतन मादिसदम

$\frac{1}{2} \times \frac{1}{2} = \frac{1}{4}$

कल्बुहुम् रज्-मम्-बल्गाबि ७ व यकूलू - न सभ्-अनु व-व सोमिनुहुम् कल्बुहुम्

कुरब्बा अजलमु बिअद्दतहिम् मा यअलमुहुम् इल्ला कलालुन् फला

नुमोर्न फ्राहम् इल्ला मिराबन् आहिरव् - व ला तस्तफात फ्राहम्

मिन्हुम् अ-ह-दा ★ (२२) वे ला तकूलन्-न लिशइत् इन्ना फ्राअलुन् जालि-क

गदा (२३) इल्ला अय्यशाल्ललहु वज्जुरब्ब-क इज्जा नसा-त व कुलु

असा अय्याहृदयान् रब्बी लि-अक्-र-ब मिन् हाजा र-श-दा (२४) व लाबिसू फा

काहिफाहम् सलास मिअतुन् सिनो-न वज्दाद् तिस्रा (२५) कुलल्लाहु अजलमु

बिमा लबिसू ६ लहू गेबुस्समावाति वल्अज्जि ७ अन्सर् बिहो व आस्मअ ८ मा

उन को उठाया ताकि आपस में एक दूसरे से मालूम करें। एक कहने वाले ने कहा कि तुम (यहां) कितनी मुदत रहे? उन्होंने कहा कि एक दिन या इस से भी कम! उन्होंने ने कहा कि जितनी मुदत तुम रहे हो, तुम्हारा परवरदिगार ही उस को खूब जानता है। तो अपने में से किसी को यह रुपया दे कर शहर को भेजो, वह देखे कि अच्छा खाना कौन-सा है, तो उस में से खाना ले आए और धीरे-धीरे आए-जाए और तुम्हारा हाल किसी को न बताए (१६) अगर वह तुम पर गलबा पा लेंगे तो तुम्हें पत्थर मार-मार कर हलाक कर देंगे या फिर अपने मजहब में दाखिल कर लेंगे और उस वक्त तुम कभी कामियाबी नहीं पाओगे। (२०) और इसी तरह हम ने (लोगों को) उन (के हाल) से खबरदार कर दिया, ताकि वे जानें कि खुदा का वायदा सच्चा है और यह कि क्रियामत (जिस का वायदा किया जाता है) इस में कुछ शक नहीं। उस वक्त लोग उन के बारे में आपस में झगड़ने लगे और कहने लगे कि उन (के गार) पर इमारत बना दो। उन का परवरदिगार उन (के हाल) को खूब जानता है। जो लोग उन के बारे में गलबा रखते थे, कहने लगे कि हम उन (के गार) पर मस्जिद बनाएंगे। (२१) (कुछ लोग) अटकल-पच्चू कहेंगे कि वे तीन थे (और) चौथा उन का कुत्ता था और (कुछ) कहेंगे कि वे पांच थे (और) छठा उन का कुत्ता था और (कुछ) कहेंगे कि वे सात थे और आठवां उन का कुत्ता था। कह दो कि मेरा परवरदिगार ही उन की गिनती खूब जानता है। उनको जानते भी हैं तो थोड़े ही लोग (जानते हैं), तो तुम उन (के मामले) में बात-चीत न करना, मगर सरसरी सी बातें और न उनके बारे में उनमें से किसी से कुछ मालूम ही करना (२२) *

और किसी काम के बारे में न कहना कि मैं इसे कल कर दूंगा, (२३) मगर (इश्शा अल्लाह) कह कर, (यानी अगर) खुदा चाहे तो (कर दूंगा) और जब खुदा का नाम लेना भूल जाओ, तो याद आने पर ले लो और कह दो कि उम्मीद है कि मेरा परवरदिगार मुझे इस से भी ज्यादा हिदायत की बातें बताए। (२४) और गार वाले अपने गार में नौ ऊपर तीन सी साल रहे। (२५) कह दो कि जितनी मुदत वे रहे, उसे खुदा ही खूब जानता है। उसी को आसमानों और जमीन की छिपी बातें (मालूम) हैं। वह क्या खूब देखने वाला और क्या खूब सुनने वाला है। उस के सिवा उन का कोई कारसाज नहीं और न वह अपने हुकम में किसी को शरीक करता है। (२६) और अपने परवर-

(पृष्ठ ४६७ का शेप)

मेरे दिल में भी यही स्थाल पैदा हुआ था। चौथे ने कहा कि मेरा भी यही स्थाल है। गरज सब एक ही स्थाल के हो गये और अपनी एक जुदा इबादतगाह बना ली। इस में एक खुदा की इबादत करते और बुतों की पूजा से जरा भी तान्त्रिक न रखते। उन का यह हाल लोगों को मालूम हुआ तो उन्होंने ने बादशाह से जा चुगली खायी। बादशाह बड़ा जाबिर व जालिम और तंगनजर था, लोगों को कुफ्र व शिर्क पर तैयार करता और उन से जबरदस्ती वृत्तपरस्ती कराता। बादशाह ने उन को बुलाया और पूछा किया। उन्होंने ने सब कुछ सच-सच बयान कर दिया। बादशाह ने उन को डराया-धमकाया और कुछ मोहलत दी कि खुदापरस्ती से रुक जाएं, मगर खुदापरस्ती और तोहीद ऐसी नहीं कि जब दिल में बैठ जाए तो कभी निकल सके। उन्होंने ने यह मलाह की कि अब इन लोगों से तुम्हें कुछ मतलब नहीं रहा, तो उन में रहना क्या जरूरी है। बेहतर यह है कि गार में चल रहें।

२. यानी जो खुदा चाहता है (वही होता है) और खुदा (की मदद) के सिवा (किसी को) कुछ ताकत व कुदरत नहीं।

बल्मु मा' ऊहि - य इलै-क मिन् किताबि रब्बि - क ह ला मुबद्दि-ल
लिकलिमातिही व लन् तजि-द मिन् दूनिही मुत्त - ह - दा (२७)

बस्बिर् नफ्-स-क म-अल्लजी-न यदअून रब्बहुम् बिलादाति बलअशिथिय युरीदू-न
वजहह व ला तअ-दु अना-क अन्हुम् उ तुरीदु जीमतल् - हयातिद् - दुन्या

व ला तुतिअ मन् अग्-फल्ना कल्बहू

अन् जिबिरना वत्त-ब-अ हवाहु व कान-न

अम्रूह फुरुता (२८) व कुलिल्हक्कु

मिर् - रब्बिकुम् फ-मन् शा - अ फल् -

युअमिव - व मन्शाअ फल्यक्फुर् ॥ इन्ना

अज-तदना लिज्जालिमी-न नारत् ॥ अहा-त

बिहिम् सुरादिकुहा ॥ व इय्यस्तगीस

युसासू बिमाइन् कल्मुहिल यश्विल् -

वुज्ज - ह ॥ बिअ - सशराबु ॥ व सा - अत्

मुर्तफ-का (२९) इन्नल्लजी-न आमनू व

अमिलुस्सालिहाति इन्ना ला नुज्जीअ

अज-र मन् अह-स-न अ-म-ला उ (३०)

उलाइ-क लहुम् जन्नातु अदनिन् तजरी

وَقُلْ إِنَّمَا أَدَّبْتُ الْقُرْآنَ عَلَىٰ مَن لَّيَاسٍ ۚ إِنَّكَ تَرَىٰ أَفْئِدَةً لَا تُفْقِدُ
وَقُلْ إِنَّمَا أَدَّبْتُ الْقُرْآنَ عَلَىٰ مَن لَّيَاسٍ ۚ إِنَّكَ تَرَىٰ أَفْئِدَةً لَا تُفْقِدُ
وَقُلْ إِنَّمَا أَدَّبْتُ الْقُرْآنَ عَلَىٰ مَن لَّيَاسٍ ۚ إِنَّكَ تَرَىٰ أَفْئِدَةً لَا تُفْقِدُ
وَقُلْ إِنَّمَا أَدَّبْتُ الْقُرْآنَ عَلَىٰ مَن لَّيَاسٍ ۚ إِنَّكَ تَرَىٰ أَفْئِدَةً لَا تُفْقِدُ
وَقُلْ إِنَّمَا أَدَّبْتُ الْقُرْآنَ عَلَىٰ مَن لَّيَاسٍ ۚ إِنَّكَ تَرَىٰ أَفْئِدَةً لَا تُفْقِدُ
وَقُلْ إِنَّمَا أَدَّبْتُ الْقُرْآنَ عَلَىٰ مَن لَّيَاسٍ ۚ إِنَّكَ تَرَىٰ أَفْئِدَةً لَا تُفْقِدُ
وَقُلْ إِنَّمَا أَدَّبْتُ الْقُرْآنَ عَلَىٰ مَن لَّيَاسٍ ۚ إِنَّكَ تَرَىٰ أَفْئِدَةً لَا تُفْقِدُ
وَقُلْ إِنَّمَا أَدَّبْتُ الْقُرْآنَ عَلَىٰ مَن لَّيَاسٍ ۚ إِنَّكَ تَرَىٰ أَفْئِدَةً لَا تُفْقِدُ
وَقُلْ إِنَّمَا أَدَّبْتُ الْقُرْآنَ عَلَىٰ مَن لَّيَاسٍ ۚ إِنَّكَ تَرَىٰ أَفْئِدَةً لَا تُفْقِدُ
وَقُلْ إِنَّمَا أَدَّبْتُ الْقُرْآنَ عَلَىٰ مَن لَّيَاسٍ ۚ إِنَّكَ تَرَىٰ أَفْئِدَةً لَا تُفْقِدُ

मिन् तहितहिमुल्-अन्हार युहल्लौ-न फ्रीहा मिन् असावि-र मिन् ज-हबिव-व

यल्बसून सियाबन् खुज्जर्म-मिन् सुन्दुसिव-व इस्तबरकिम् - मुत्तकिई-न फ्रीहा

अलल्-अराइकि ॥ निअ - मस्सवाबु ॥ व हसुनत् मुर्त-फ-का (३१) वज्जिर्ब

लहुम् म-स-लरजुलैनि ज-अल्ना लिअहदिहिमा जन्नतैनि मिन् अअ-नाबिव-व

ह-फफ्नाहुमां बिनख्लिव-व ज-अल्ना बेनहुमा जर्आ ॥ (३२) किल्तल्-जन्नतैनि

आतत् उकुलहा व लम् तज्जिल् मिन्हु शेअव-व फज्जर्ना खिलालहुमा

न-ह-रा ॥ (३३) व का - न लहू स - मरन् उ फका-ल लिसाहिबिही व

हु-व युहाविरूह अन-अक्सर मिन्-क मालव-व अ-अज्जु न-फ-रा (३४) व

द-ख-ल जन्नतह व हु-व जालिमुल्-लिनफ्सिही उ कान-ल मा' अजुन्नु अन् तबी-द

हाजिही अ-ब-दा ॥ (३५) व मा' अजुन्नुस्सा - अ - त काइ-म - तव-व

लइर्दित्तु इला रब्बी ल - अजिदन् - न खैरम्-मिन्हा मुत्क-लबा (३६)

दिगार की किताब को, जो तुम्हारे पास भेजी जाती है, पढ़ते रहा करो। उस की बातों को कोई बदलने वाला नहीं और उस के सिवा तुम पनाह भी नहीं पाओगे। (२७) और जो लोग मुबह व शाम अपने परवरदिगार को पुकारते और उस की खुशी चाहते हैं, उन के साथ सन्न करते रहो और तुम्हारी निगाहें उन में से (गुजर कर) और तरफ न दौड़ें कि दुनिया की ज़िदगी की जीतत चाहने लगे और जिस शस्स के दिल को हम ने अपनी याद से गाफ़िल कर दिया है और वह अपनी स्वाहिश की पैरवी करता है और उस का काम हद से बढ़ गया है, उस का कहा न मानना (२८) और कह दो कि (लोगो!) यह कुरआन तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से हक़ (पर) है, तो जो चाहे ईमान लाए और जो चाहे काफ़िर रहे। हम ने ज़ालिमों के लिए (दोज़ख की) आग तैयार कर रखी है, जिस की क़नातें उस को घेर रही होंगी और अगर क्रियाद करेंगे, तो ऐसे खौलते हुए पानी से, उन की दादरसी की जाएगी जो पिघले हुए तांबे की तरह (गर्म होगा और जो) मुहों को भून डालेगा। (उन के पीने का) पानी भी बुरा और आरामगाह भी बुरी। (२९) और जो ईमान लाए और काम भी नेक करते रहे, तो हम नेक काम करने वालों का बदला बर्बाद नहीं करते। (३०) ऐसे लोगों के लिए हमेशा रहने के बाग़ हैं, जिन में उन के (महलों के) नीचे नहरें बह रही हैं। उनको वहां सोने के कंगन पहनाए जाएंगे और वे बारीक दीबा और अतलस के हरे कपड़े पहना करेंगे (और) तस्त्तों पर तकिए लगा कर बैठा करेंगे। (क्या) खूब बदला और (क्या) खूब आरामगाह है★(३१) और उन से दो शस्सों का हाल बयान करो, जिन में से एक को हम ने अंगूर के दो बाग़ (इनायत) किए थे और उन के चारों तरफ़ खजूरों के पेड़ लगा दिए थे और उन के दमियान खेती पैदा कर दी थी। (३२) दोनों बाग़ (ज़्यादा से ज़्यादा) फल लाते और उन की (पैदावार) में किमी तरह की कमी न होती और दोनों में हम ने एक नहर भी जारी कर रखी थी। (३३) और (इम तरह) उस (शस्स) को (उन की) पैदावार (मिलती रहती) थी, तो (एक दिन) जबकि वह अपने दास्त में बातें कर रहा था, कहने लगा कि मैं तुम से माल (व दौलत) में भी ज़्यादा हूं और जन्धे (और जमाअत) के लिहाज़ से भी ज़्यादा इज़ज़त वाला हूं। (३४) और (ऐसी शक्तियों से) अपने तक में जुलम करता हुआ अपने बाग़ में दाखिल हुआ कहने लगा कि मैं नहीं ख़याल करता कि यह बाग़ कभी तबाह हो। (३५) और न ख़याल करता हूं कि क्रियामत बरपा हो और अगर मैं अपने परवरदिगार की तरफ़ लौटाया भी जाऊं, तो (वहां) ज़रूर इसमें अच्छी जगह पाऊंगा। (३६)

का-ल लहू साहिबूह व हु-व युहाविहू अ-क-फर्-त बिलजी ख-न-क-क मिन्
तुराबिन् सुम्-म मिन् नुत्फतिन् सुम्-म सव्वा-क रजुला ७ (३७) लाकिन्-न
हुबलाहु रब्बी व ला उशिरकु बिरब्बी अ-ह-दा (३८) व लौला इज् द-खल-त
जन्न-त-क कुल-त मा शा-अल्लाहु ॥ ला कुव्व-त इल्ला बिल्लाहि ६ इन् तरनि

अ-न अ-कल्-ल मिन्-क मालव्-व व-ल-दा ६

(३६) फ - असा रब्बी अय्युअतियनि

खैरमिन् जन्नति-क व युसि-ल अलेहा

हुस्बानम् - मिनस्समाइ फतुस्बि-ह सजीदन्

ज-ल-का ॥ (४०) औ युस्बि-ह माउहा

गौरन् फ-लन् तस्तती-अ लहू त-ल-बा (४१)

व उही-त बि-स-मरिही फ-अस्ब-ह युकल्लिबु

कफ्फहि अला मा अन्फ-क फीहा व हि-य

खावि-यतुन् अला अरुशिहा व यकूलु

यालैतनी लम् उशिरक् बिरब्बी अ-ह-दा

(४२) व लम् तकुल्लहू फि-अतु व्यन्सुरुहू

मिन् हुनिल्लाहि व मा कान मुत्तसिरा ७

(४३) हुनालिकल्-वलायतु लिल्लाहि

हकिक् ७ हु-व खैरन् सवाबव-व खैरन् अक्बा ७ (४४) वज्रिब लहुम् म-स-लल्-

हयातिद्-दुन्या कमाइन् अन्जल्लाहु मिनस्समाइ फस्त-ल-त बिही नबातुलअज्रि

फ-अस्ब-ह हशीमन् तज्-रूहुरियाहु ७ व कानल्लाहु अला कुल्लि शैम्-मुवतदिरा

(४५) अल्मालु वल्बनू-न जीनतुल्-हयातिद् - दुन्या ६ वल्बाकियातुस्-सालिहातु

खैरन् अिन-द रब्बि-क सवाबव-व खैरन् अ-म-ला (४६) व यौ-म नुसय्यिहल्-जिबा-ल

व त-रल्-अर-ज़ बारिज-तुव-व ह-शर-नाहुम् फ-लम् नुगादिर् मिन्हुम् अ-ह-दा ६

(४७) व अरिज़् अला रब्बि-क सफ्फत् ७ ल-कद् जिअतुमूना कमा खलनाकुम्

अव्व-अ मररतिम् ७ बल् ज-अन्तुम् अल्लन् नज्-अ-ल लकुम् मौअिदा (४८) व

वज्रिअल्-किताबु फ-त-रल्-मुजिरमी-न मुश्फिकी-न मिम्मा फीहि व यकूलू-न यावै-ल-तना

मालि हाजल्-किताबि ला युगादिह सगी-र-तुव-व ला कबीरतुन् इल्ला अहसाहा ६

व व-ज्जू मा अमिलू हाज़िरन् ७ व ला यज़लिम् रब्बु-क अ-ह-दा ७ (४९)

وَبَيْنَا أَصْفًا لَهُ قَالَ لَهُ مَا جَاءَكَ وَأَمَّا جَمْعُ الْفَرَسِ بِالْفَرَسِ خَلَقَتْ
مِنْ ثَوَابِ اللَّهِ مَنْ خَلَقَهُ تَوَسَّلَ بِهِ رَجُلًا ۖ إِنَّكَ مِنَ اللَّهِ ذِي وَكْرٍ
الْقَوْمِ بِرَأْسِهِ ۖ وَلَوْلَا إِذْ دَخَلْتَ جَنَّتَكَ قُلْتَ مَاذَا لَكَ اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ
الْمُتَوَكِّلُونَ تَرَى أَنَا أَفْقَلُ مِنْكَ مَا لَا وَكْرَ ۖ فَصَبْرٌ رَبِّيَ
تَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ وَبِإِذْنِهِ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ الْكَافِرَ الشَّاكِرَ فَصَبْرٌ
صَبْرٌ الْإِنْسَانُ لَوْ أَنَّهُمْ مَعَهُ مَا لَمْ يَخْرُجْ لَمْ يَخْرُجْ لَهُ خَلْقٌ ۖ وَبِإِذْنِهِ
بِإِذْنِهِ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ الْكَافِرَ الشَّاكِرَ فَصَبْرٌ رَبِّيَ ۖ وَبِإِذْنِهِ
وَلَوْلَا الْيَقِينُ لَمْ يَخْلُقْ لَهُ رَبِّيَ ۖ وَبِإِذْنِهِ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ الْكَافِرَ
مِنْ دُونِ اللَّهِ ۖ وَبِإِذْنِهِ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ الْكَافِرَ الشَّاكِرَ فَصَبْرٌ
تَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ ۖ وَبِإِذْنِهِ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ الْكَافِرَ الشَّاكِرَ فَصَبْرٌ
مِنْ نَسَمَةٍ فَخَلَقْنَا لَهُ بِبَيْتِ الْأَرْضِ فَصَبْرٌ رَبِّيَ ۖ وَبِإِذْنِهِ
وَلَوْلَا اللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ مُقْتَدِرٌ ۖ الْكَلْبُ وَالْبَيْتُونَ وَبَيْتُ الْبَيْتِ
لَهُمَا وَالْبَيْتُ الْبَيْتُ خَيْرٌ مِنْ ذَلِكَ تَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ ۖ وَبِإِذْنِهِ
يَوْمَ لَسْتُ الْبَيْتَ لَسْتُ لَسْتُ لَسْتُ لَسْتُ لَسْتُ لَسْتُ لَسْتُ لَسْتُ لَسْتُ لَسْتُ
وَلَوْلَا اللَّهُ ۖ وَبِإِذْنِهِ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ الْكَافِرَ الشَّاكِرَ فَصَبْرٌ
أَلَمْ تَرَ أَنِّي رَحِيمٌ ۖ إِنَّكَ تَجِدُ الْكَافِرِينَ ۖ وَبِإِذْنِهِ خَلَقْنَا
مَنْزِلَ الْمُؤْمِنِينَ ۖ وَبِإِذْنِهِ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ الْكَافِرَ الشَّاكِرَ فَصَبْرٌ

नो उस का दोस्त, जो उस से बात-चीत कर रहा था, कहने लगा कि क्या तुम उस (खुदा) से कुफ़ करते हो, जिस ने तुम को मिट्टी से पैदा किया, फिर नुफ़े से, फिर तुम्हें पूरा मर्द बनाया। (३७) मगर मैं यह कहता हूँ कि खुदा ही मेरा परवरदिगार है और मैं अपने परवरदिगार के साथ किसी को शरीक नहीं करता। (३८) और (भला) जब तुम अपने बाग़ में दाखिल हुए, तो तुम ने 'माशा अल्लाह ला कू-ब-त इल्ला बिल्लाह' क्यों न कहा, अगर तुम मुझे माल व औलाद में अपने से कमतर देखते हो? (३९) तो अजब नहीं कि मेरा परवरदिगार मुझे तुम्हारे बाग़ से बेहतर अता फ़रमाए और इस तुम्हारे बाग़ पर आसमान से आफ़त भेज दे, तो वह साफ़ मैदान हो जाए। (४०) या उस (की नहर) का पानी गहरा हो जाए तो फिर तुम उसे न ला सको। (४१) और उस के मेवों को अज़ाब ने आ घेरा और वह अपनी छतरियों पर गिर कर रह गया, तो जो माल उस ने उस पर खर्च किया था, उस पर (हसरत से) हाथ मलने लगा और कहने लगा कि काश मैं अपने परवरदिगार के साथ किसी को शरीक न बनाता। (४२) (उस वक़्त) ख़ुदा के सिवा कोई ज़माअत उस की मदद-गार न हुई और न वह बदला ले सका। (४३) यहां (से साबित हुआ) कि हुकूमत सब ख़ुदा-ए-बरहक़ की है, उसी का सिला बेहतर और (उसी का) बदला अच्छा है। (४४)★

और उस ने दुनिया की ज़िंदगी की मिसाल भी बयान करो, (वह ऐसी है,) जैसे पानी, जिसे हम ने आसमान से बरसाया, तो उस के साथ ज़मीन को ज़रखेजी मिल गयी, फिर वह चूरा-चूरा हो गयी कि हवाएं उसे उड़ाती फिरती हैं और ख़ुदा तो हर चीज़ पर कुदरत रखता है। (४५) माल और बेटे तो दुनिया की ज़िंदगी की (रीनक़ व) जीनत हैं और नेकियां जो बाक़ी रहने वाली हैं, वे सवाब के लिहाज़ से तुम्हारे परवरदिगार के यहां बहुत अच्छी और उम्मीद के लिहाज़ से बहुत बेहतर हैं। (४६) और जिस दिन हम पहाड़ों को चलाएंगे और तुम ज़मीन को साफ़ मैदान रखोगे और उन (लोगों) को हम जमा कर लेंगे तो उन में से किसी को भी नहीं छोड़ेंगे। (४७) और सब तुम्हारे परवरदिगार के सामने सफ़ बांध कर लाए जाएंगे (तो हम उन से कहेंगे कि) जिस तरह हम ने तुम को पहली बार पैदा किया था, (इसी तरह आज) तुम हमारे सामने आए, लेकिन तुम ने तो यह ह्वायल कर रखा था कि हम ने तुम्हारे लिए (क्रियामत का) कोई वक़्त मुकर्रर ही नहीं किया। (४८) और (अमलों की) किताब (खोल कर) रखी जाएगी तो तुम गुनाहगारों को देखोगे कि जो कुछ उस में (लिखा) होगा, उस से डर रहे होंगे और कहेंगे, हाय शामत ! यह कैसी किताब है कि न छोटी बात को छोड़ती है, न बड़ी को, (कोई बात भी नहीं) मगर उसे लिख रखा है और जो अमल किए होंगे, सब को हाज़िर पाएंगे और तुम्हारा परवरदिगार किसी पर जुल्म नहीं करेगा। (४९)★

और जब हम ने फ़रिस्तों को हुक्म दिया कि आदम को सज्दा करो तो सब ने सज्दा किया, मगर इब्लीस (ने न किया)। वह ज़िन्नो में से था, तो अपने परवरदिगार के हुक्म से बाहर हो गया। क्या तुम उस को और उस की औलाद को मेरे सिवा दोस्त बनाते हो, हालांकि वे तुम्हारे दुश्मन हैं, और (शतान की दोस्ती) ज़ालिमों के लिए (खुदा की दोस्ती का) बुरा बदल है। (५०) मैं ने उन को न तो आसमानों और ज़मीन के पैदा करने के वक़्त बुलाया था और न ख़ुद उन के पैदा करने के वक़्त और मैं ऐसा न था कि गुमराह करने वालों को मददगार बनाता। (५१) और जिस दिन ख़ुदा फ़रमाया कि (अब) मेरे शरीकों को, जिन के बारे में तुम (ख़ुदा होने का) गुमान रखते थे, बुलाओ, तो वह उन को बुलाएंगे, मगर वे उन को कुछ जवाब न देंगे और हम उन के बीच से एक हलाकत की जगह बना देंगे। (५२) और गुनाहगार लोग दोख़ को देखेंगे, तो यक़ीन कर लेंगे कि वे उस में पड़ने वाले हैं और इस से बचने का कोई रास्ता न पाएंगे * (५३) और हम ने इस क़ुरआन में लोगों (के समझाने) के लिए तरह-तरह की मिसालें बयान फ़रमायी हैं, लेकिन इंसान सब चीज़ों से बढ़ कर झगड़ालू है। (५४) और लोगों के पास जब हिदायत आ गयी, तो उन को किस चीज़ ने मना किया कि ईमान लाएं और अपने परवरदिगार से बख़्शिश मांगें, इस के अलावा कि (इस बात के इतिज़ार में हों कि) उन्हें भी पहलों का-सा मामला पेश आए या उन पर अज़ाब सामने मौजूद हो। (५५) और हम जो पंगम्बरों को भेजा करते हैं, तो सिर्फ़ इस लिए कि (लोगों को ख़ुदा की नेमतों की) खुशख़बरियां सुनाएं और (अज़ाब से) डराएं और जो काफ़िर हैं, वह बातिल (की मनद) से झगड़ा करते हैं, ताकि उस के हक़ को फिसला दें और उन्होंने ने हमारी आयतों को और जिस चीज़ से उन को डराया जाता है, हंसी बना लिया। (५६) और उससे ज़ालिम कौन है, जिस को उस के परवरदिगार के कलाम से समझाया गया, तो उस ने उस से मुंह फेर लिया और जो आमाal वह आगे कर चुका, उन को भूल गया, हम ने उन के दिलों पर परदे डाल दिए कि इसे समझ न सकें और कानों में बोझ (पैदा कर दिया है कि सुन न सकें) और अगर तुम उन को रास्ते की तरफ़ बुलाओ तो कभी रास्ते पर न आएंगे। (५७) और तुम्हारा परवरदिगार बख़्शने वाला, रहमत वाला है। अगर वह उन के करतूतों पर उन को पकड़ने लगे, तो उन पर झट अज़ाब भेज दे, मगर उन के लिए एक वक़्त (मुक़र्रर कर रखा) है कि उस के अज़ाब से कोई पनाह की जगह न पाएंगे। (५८)

और ये बस्तियां (जो वीरान पड़ी हैं), जब उन्होंने ने (कुफ्र में) जुलम किया, तो हम ने उन को तबाह कर दिया और उन की तबाही के लिए एक वक्त मुक़रर कर दिया था। (५६)★

और जब मूसा ने अपने शागिर्दों से कहा कि जब तक मैं दो दरियाओं के मिलने की जगह न पहुंच जाऊं, हटने का नहीं, चाहे वर्षों चलता रहूं। (६०) जब उन के मिलने की जगह पर पहुंचे, तो अपनी मछली भूल गये, तो उसने दरिया में सुरंग की तरह अपना रास्ता बना लिया। (६१) जब आगे चले तो (मूसा ने) अपने शागिर्दों से कहा कि हमारे लिए खाना लाओ, इस सफ़र से हम को बड़ी थकन हो गयी है। (६२) (उस ने) कहा कि भला आप ने देखा कि जब हम ने पत्थर के पास आगम किया था, तो मैं मछली (वहीं) भूल गया और मुझे (आप से) उस का जिक्र करना शैतान ने भूला दिया और उस ने अजब तरह से दरिया में अपना रास्ता लिया। (६३) (मूसा ने) कहा, यही तो (वह जगह) है, जिसे हम खोजा करते थे, तो वे अपने पांव के निशान देखते-देखते लौट गये। (६४) (वहां) उन्होंने ने हमारे बन्दों में से एक बन्दा देखा, जिस को हम ने अपने यहां से रहमत (यानी नुबूत या विलायत की नेमत) दी थी और अपने पास से इल्म बरूना था। (६५) मूसा ने उन से (जिन का नाम खिज़्र था) कहा कि जो इल्म (खुदा की तरफ़ से) आप को सिखाया गया है, अगर आप उस में से मुझे कुछ भलाई (की बातें) सिखाएं तो मैं आप के साथ रहूँ। (६६) (खिज़्र ने) कहा कि तुम मेरे साथ रह कर सब नहीं कर सकोगे, (६७) और जिस बात की तुम्हें खबर ही नहीं, उस पर सब कर भी क्यों कर सकते हो। (६८) मूसा ने कहा, खुदा ने चाहा, तो आप मुझे सब करने वाला पाइएगा और मैं आप के इर्शाद के खिनाफ़ नहीं करूंगा। (६९) (खिज़्र ने) कहा, अगर तुम मेरे साथ रहना चाहो तो (शर्त यह है), मुझ में कोई बात न पूछना, जब तक मैं खुद उस का जिक्र तुम से न करूं। (७०)★

तो दोनों चल पड़े, यहां तक कि जब कश्ती में सवार हुए, तो (खिज़्र ने) कश्ती को फाड़ डाला। (मूसा ने) कहा, क्या आप ने उस को इस लिए फाड़ा है कि सवारों को डुबो दें। यह तो आप ने बड़ी (अजीब) बात की। (७१) (खिज़्र ने) कहा, क्या मैं ने नहीं कहा था कि तुम मेरे साथ सब न कर सकोगे। (७२) (मूसा ने) कहा कि जो भूल मुझ से हुई, उस पर पकड़ न कीजिए और मेरे मामले में मुझ पर मुश्किल न डालिए। (७३) फिर दोनों चले, यहां तक कि (रास्ते में) एक लडका मिला, तो (खिज़्र ने) उसे मार डाला। (मूसा ने) कहा कि आप ने एक बे-गुनाह शरूस को (नाहक) बग़ैर किसी के मार डाला। (यह तो) आप ने बुरी बात की। (७४) (खिज़्र ने)

१. अमल लपड़ 'फ़ता' है, जिस का मतलब जवान है। 'फ़ता' से यहां मुराद यूसेअ बिन नून है। चूँकि वह मूसा अलैहिस्सलाम के साथ रहते और उन से इल्म हासिल किया करते थे, इस लिए हम ने उन को जवान की जगह शागिर्द लिखा है। कुछ लोगों ने कहा कि वह यूसेअ के भाई थे। कुछ लोगों ने कहा कि मूसा अलैहिस्सलाम का गुलाम था।

२. किसी ने मूसा अलैहिस्सलाम से पूछा कि सब से ज्यादा आलम कौन है? उन्होंने ने कहा कि मैं हूँ। खुदा ने बरू की कि मेरा एक बन्दा दो दरियाओं के मिलने की जगह में है, वह तुम से ज्यादा इल्म रखता है, तो मूसा अलैहिस्सलाम ने उस से मिलने और इल्म हासिल करने की गरज़ से सफ़र का इरादा किया। यह बन्दे, जैसा कि हदीसों में साबित है, खिज़्र थे। उन का नाम जैसा कि सहीह बुख़ारी में अबू हुरैरह रजि० से रिवायत किया गया है, खिज़्र (शेष पृष्ठ ४७६ पर)

सोलहवां पारः का-ल अ-लम

सूरतुल् कह्फ़ि आयत ७५ से ११०

का-ल अ-लम् अकुल्ल-क इन्त-क लन् तस्तती-अ मअि-य सुवरा (७५) का-ल इन्
स-अल्लु-क अन् शैडम्-बअ-दुहा फ ला तुसाहिन्नी ४ कद् ब-लग्-त मल्लदुन्नी
अजरा (७६) फन्त-लका हत्ता इज्जा अ-तया अह-ल कर-यत्ति-निस-तत्त-अमा
अह-लहा फ अबौ अय्युज्जयिफु हुमा फ-ब-जदा फीहा जिदारय्युरीदु अय्यन्कज्ज-ज्ज

फ-अक्रामहू.^१ का-ल लौ शिअ-त लत्त-खज्ज-त

अलैहि अजरा (७७) का-ल हाजा किराकु

बैनी व बैनि-क ८ सउनब्विउ-क बितअवीलि

मा लम् तस्ततिअ अलैहि सग्रा (७८)

अम्मस्सफीनत्तु फ़-कानत् निमसाकी-न यअ-मलू-न

फिल्बहिर फ-अरत्तु अन् अ-आब-हा व का-न

वरा-अहुम् मलिकु द्यस्त्रुजु कुल्-ल सफ़ीनतिन्

गस्त्रा (७६) व अम्मल्गुलामु फ्रका-न

अ-ब-वाहु मुञ्मिनेनि फ-खशीना' अय्युहि-क-हुमा

तुम्हानव-व कुपरा ६ (८०) फ - अरदना

अय्युव्द-लहुमा रब्बुहुमा खरम्-मिन्हु जकातुव्-व

अकर-ब रहमा (८१) व अम्मल्-जदरि

हि-^३हि-^३हि-^३हि-

फ्रकान- लिगुलामिन यतामिन फिल-मदानति

व का-न तद्दतहू काञ्जुल्लहूमा व का-न

अबूहमा सोलहत्ठ फ़-अरा-द रब्बु-क अय
कन्जहमा रहंमत्तमिर - रब्बि - क ६ व

जालि-क तअवीलु मा लम् तस्तिअ अलैहि

अन् जिल्करुननि कुल् स-अत्लू अलकुम्

मवकन्ना लहू फिलअज्ज व आतनाहु मि
 ए अन्न अ म न ना (८५) इत्ता इजा

तगरब फी अनिन हमि-अतिव-व व-ज-द

कर्णेनि इम्मा अन् तुअजिज-ब व इम्मा अ

कहा, क्या मैं ने नहीं कहा था कि तुम से मेरे साथ सन्न नहीं हो सकेगा ? (७५) उन्होंने ने कहा कि अगर मैं इस के बाद (फिर) कोई बात पूछूँ, (यानी एतराज करूँ), तो मुझे अपने साथ न रखिएगा कि आप मेरी तरफ से उज़् (क़बूल करने में इतिहा) को पहुँच गये। (७६) फिर दोनों चले, यहाँ तक कि एक गांव वालों के पास पहुँचे और उन से खाना तलब किया। उन्होंने उन की मेहमानी करने से इंकार किया। फिर उन्होंने ने वहाँ एक दीवार देखी जो (झुक कर) गिरा चाहती थी तो (खिज़ू ने) उस को सीधा कर दिया। (मूसा ने) कहा कि अगर आप चाहते तो उन से (उस का) मुआवज़ा लेते, (ताकि खाने का काम चलता।) (७७) (खिज़ू ने) कहा कि अब मुझ में और तुम में अलगाव, (मगर) जिन बातों पर तुम सब न कर सके, मैं उन का तुम्हें भेद बताए देता हूँ। (७८) (कि वह जो) क़स्ती (थी) ग़रीब लोगों की थी, जो दरिया में मेहनत (कर के) यानी क़श्तियाँ चला कर गुज़ारा करते थे और उन के सामने (की तरफ़) एक बादशाह था, जो हर एक क़स्ती को ज़बर-दस्ती छीन लेता था, तो मैं ने चाहा कि उसे ऐबदार कर दूँ (ताकि वह उसे ग़सब न कर सके)। (७९) और वह जो लड़का था, उस के मां-बाप दोनों मॉमिन थे, हमें डर हुआ कि वह (बड़ा हो कर) बद-किरदार होगा, कहीं) उन को सर-क़शी और कुफ़ में न फंसा दे।' (८०) तो हम ने चाहा कि उनका परवरदिगार उस की जगह उन को और (बच्चा) अता फ़रमाए जो पाक-मिज़ाजी में बेहतर और मुहब्बत में ज़्यादा करीब हो। (८१) और वह जो दीवार थी, सो दो यतीम लड़कों की थी (जो) शहर में (रहते थे) और उस के नीचे उन का खज़ाना (दफ़न) था और उन का बाप एक नेक आदमी था, तो तुम्हारे परवरदिगार ने चाहा कि वे अपनी ज़वानी को पहुँच जाएँ और (फिर) अपना खज़ाना निकालें। यह तुम्हारे परवरदिगार की मेहरबानी है और ये काम मैं ने अपनी तरफ़ से नहीं किए। यह उन बातों की हकीक़त है, जिन पर तुम सब न कर सके। (८२) ★

और तुम से ज़ुलक़र्नैन के बारे में पूछते हैं। कह दो कि मैं उस का किसी क़दर हाल पढ़ कर सुनाता हूँ। (८३) हम ने उस की ज़मीन में बड़ी दस्तरस (पहुँच) दी थी और हर तरह का सामान अता किया था। (८४) तो ज़प्ने (सफ़र का) एक सामान किया। (८५) यहाँ तक कि जब सूरज के डूब जाने की जगह पहुँचा तो उसे एता पाया कि एक कीचड़ की नदी में डूब रहा है और उस (नदी) के पास एक क़ौम देखी। हम ने कहा, ज़ुलक़र्नैन ! तुम उन को चाहे तबलीफ़ दो, चाहे उन (के बारे) में भलाई अस्तियार करो, (दोनों) बातों की तुम को क़ुदरत है। (८६) (ज़ुलक़र्नैन ने) कहा कि

(पृष्ठ ४७७ का शेष)

इस लिए हुआ कि वह एक सूखी घास पर बैठे थे और वह उन के नीचे हरी-भरी हो गयी।

३. लफ़्ज़ों का तर्जुमा तो यह है कि एक लड़के से मिले, मगर ऐसे मौके पर इसी तरह बात करते हैं, जिस तरह हम ने लिखा है।

१. यानी बूँक लड़का मां-बाप के तरीके पर न होता और कुफ़ और सरकशी करता, इस लिए खिज़ू को यह डर हुआ कि जब यह लड़का बड़ा हो, तो उस के मां-बाप कहीं उस की मुहब्बत में अंधे हो कर कुफ़ की ना-फ़रमानों में न फंसे जाएँ, इस लिए उस को मार डालना अल्लाह तआला के हुक्म से था।

जो (कुछ ब बच-किरवारी से) जुलम करेगा उसे हम अज्ञाब देंगे, फिर (जब) वह अपने परवरदिगार की तरफ लौटाया जाएगा, तो वह भी उसे बुरा अज्ञाब देगा। (८७) और जो ईमान लाएगा और नेक अमल करेगा, उस के लिए बहुत अच्छा बचला है और हम अपने मामले में (उस पर किसी तरह की सख्ती नहीं करेंगे, बल्कि) उस से नर्म बात कहेंगे। (८८) फिर उस ने एक और सामान (सफ़र का) किया। (८९) यहां तक कि सूरज के निकलने की जगह पर जा पहुंचा तो देखा कि वह ऐसे लोगों पर निष्कलता है, जिन के लिए हम ने सूरज के उस तरफ कोई ओट नहीं बनायी थी। (९०) (हकीकत) यों (थी) और जो कुछ उस के पास था, हम को सब की खबर थी। (९१) फिर उस ने एक और सामान किया। (९२) यहां तक कि दो दीवारों के दमियान पहुंचा, तो देखा कि उन के उस तरफ कुछ लोग हैं कि बात को समझ नहीं सकते। (९३) उन लोगों ने कहा कि जुलकनन ! याजूज और माजूज जमीन में फ़साद करते रहते हैं। भला हम आपके लिए खर्च (का इतिजाम) कर दें कि आप हमारे और उन के दमियान एक दीवार खींच दें। (९४) (जुलकनन ने) कहा कि खर्च की जो कुदरत खुदा ने मुझे बख़शी है, वह बहुत अच्छा है, तुम मुझे (बाजू) की ताक़त से मदद दो। मैं तुम्हारे और उन के दमियान एक मजबूत ओट बना दूंगा। (९५) तुम लोहे के (बड़े-बड़े) तख़्ते लाओ, (चुनांचे काम जारी कर दिया गया), यहां तक कि जब उस ने दोनों पहाड़ों के दमियान (का हिस्सा) बराबर कर दिया (और) कहा कि (अब इसे) धौको, यहां तक कि जब उस को (धौक-धौक कर) आग कर दिया तो कहा कि (अब) मेरे पास तांबा लाओ कि उस पर पिघला कर ढाल दूं। (९६) फिर उन में यह कुदरत न रही कि उस पर चढ़ सकें और न यह ताक़त रही कि उस में नज़ब लगा सकें। (९७) बोला कि यह मेरे परवरदिगार की मेहरबानी है। जब मेरे परवरदिगार का वायदा आ पहुंचेगा, तो उस को (ढा कर) हमवार कर देगा और मेरे परवरदिगार का वायदा सच्चा है। (९८) (उस दिन) हम उनको छोड़ देंगे कि (घरती पर फैल कर) एक दूसरे में धुस जाएंगे और सूर फूँका जाएगा, तो हम सब को जमा कर लेंगे। (९९) और उस दिन जहन्नम को काफ़िरों के सामने लाएंगे, (१००) जिन की आंखें मेरी याद से परदे में थीं और सुनने की ताक़त नहीं रखते थे। (१०१)★

क्या काफ़िर यह स्याल करते हैं कि वे हमारे बन्दों को हमारे सिवा (अपना) कारसाब बनाएंगे, (तो हम सफ़ा नहीं होंगे)। हम ने (ऐसे) काफ़िरों के लिए जहन्नम की मेहरबानी तैयार

कर रही है। (१०२) कह दो कि हम तुम्हें बताएं कि जो अमलों के लिहाज से बड़े नुकसान में हैं, (१०३) वह लोग, जिन की कोशिश दुनिया की ज़िंदगी में बर्बाद हो गयी और वे समझे हुए हैं कि अच्छे काम कर रहे हैं। (१०४) ये वह लोग हैं जिन्होंने अपने परवरदिगार की आयतों और उस के सामने जाने से इन्कार किया, तो उन के आमाल ज़ाय्या हो गये और हम क्रियामत के दिन उन के लिए कुछ भी बखान कायम नहीं करेंगे।' (१०५) यह उन की सज़ा है (यानी) जहन्नम, इस लिए कि उन्होंने ने कुफ़ किया और हमारी आयतों और हमारे पैग़म्बरों की हंसी उड़ायी। (१०६) जो लोग ईमान लाए और नेक अमल किए, उन के लिए बहिश्त के बाग़ में मेहमानी होंगे। (१०७) हमेशा उन में रहेंगे और वहां से मकान बदलना न चाहेंगे। (१०८) कह दो कि अगर समुन्दर मेरे परवरदिगार की बातों के (लिखने के) लिए स्याही हो, तो इस से पहले कि मेरे परवरदिगार की बातें पूरी हों, समुन्दर ख़त्म हो जाए, अगरचे जो हम वंसा ही और उस की मदद को लाएं। (१०९) कह दो कि मैं तुम्हारी तरह का एक बशर हूं, अल-बत्ता मेरी तरफ़ बह्य आती है कि तुम्हारा मानूद (वही) एक मानूद है, तो जो शरूस अपने परवरदिगार से मिलने की उम्मीद रखे, चाहिए कि नेक अमल करे और अपने परवरदिगार की इबादत में किसी को शरीक न बनाए। (११०)★

१६ सूर: मरयम ४४

सूर: मरयम मक्की है और इस में ६८ आयतें और छः रुकूअ हैं।

शुरू खुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

काफ़-हा-या-ऐन-स्वाद, (१) (यह) तुम्हारे परवरदिगार की मेहरबानी का बयान (है, जो उस ने) अपने बन्दे ज़करीया पर (की थी), (२) जब उन्होंने ने अपने परवरदिगार को दबी आवाज से पुकारा। (३) (और) कहा कि ऐ मेरे परवरदिगार! मेरी हड्डियां बुझाये की वजह से कमजोर हो गयी हैं और सर झोला मारने लगा है। और ऐ मेरे परवरदिगार! मैं तुझ से मांग कर कभी महरूम नहीं रहा। (४) और मैं अपने बाद अपने भाई-बन्दों से डरता हूं और मेरी बीबी बांस है, तो मुझे अपने पास से एक बारिस अता फ़रमा, (५) जो मेरी और याक़ूब की औलाद की भीरास का मालिक हो और (ऐ) मेरे परवरदिगार उस को खुश अतवार (अच्छे तीर-तरीक़े वाला) बनाइयो।' (६) ऐ ज़करीया! हम तुम को एक लड़के की खुशख़बरी देते हैं, जिस का नाम यहा है। इस से पहले हम ने इस नाम का कोई शरूस पैदा नहीं किया। (७) उन्होंने ने कहा, परवरदिगार!

१. वे जाक़िरत को मांगते न थे, तो इस के वास्ते कुछ काम न किया, फिर एक परला क्या तोलना?

२. यानी बालों की सफ़ेदी की वजह से सर आग की तरह चमकने लगा है।

३. भीरास के मालिक होने से मुराद नुबूत का बारिस होना है, न कि माल व दौलत का, क्योंकि पैग़म्बर की नज़रों में माल व दौलत कुछ चीज़ नहीं होती, जिस के लिए खुदा से बारिस मांगें। उन के नज़दीक जो चीज़ सब से बेहतर और विरासत के क़ाबिल है, वह खुदा का दीन और उस के बन्दों की हिदायत है और पैग़म्बर के इन्हीं कामों के लिए खुदा से औलाद मांगने की उम्मीद होनी चाहिए, साथ ही जैसा कि हदीस से साबित है, पैग़म्बर का साल खुदा की राह में सद्का होता है, उस का कोई बारिस नहीं होता।

क्रा-ल रविः भन्ता यकूनु ली गुलामु ब-व कानतिम्-र-अती आकिरं-व कद् ब-लरतु
मिनलकि-वरि अितिम्या (८) क्रा-ल कजालि-क ८ क्रा-ल रवु-क हु-व अ-ल्य-य
हय्यिनु ब-व कद् ल-लस्तु-क मिन् कस्तु ब लम् तकु शैवा (९) क्रा-ल रविज-अली
आ-य-तत्तु १ क्रा-ल आयतु-क अरुला तकुल्लिमन्ना-स सला-स लयालिनु सविध्या (१०)

मेरे यहां किस तरह लड़का पैदा होगा, जिस हाल में मेरी बीबी बांझ है और मैं बुढ़ापे की इतिहा को पहुंच गया हूं। (८) हुक्म हुआ कि इसी तरह (होगा) तुम्हारे परवरदिगार ने फ़रमाया है कि मुझे यह आसान है और मैं पहले तुम को भी तो पैदा कर चुका हूं और तुम कुछ चीज़ न थे। (९) कहा कि परवरदिगार ! मेरे लिए कोई निशानी मुकर्रर फ़रमा। फ़रमाया, निशानी यह है कि तुम सही व सालिम हो कर तीन (रात -दिन) लोगों से बात न कर सकोगे। (१०) फिर वह (इबादत के) हुज्रे से निकल कर अपनी क़ौम के पास आए, तो उन से इशारे से कहा कि सुबह व शाम (खुदा को) याद करते रहो। (११) ऐ यहा ! (हमारी) किताब को ख़ोर से पकड़े रहो और हम ने उन को लड़कपन ही में हुक्म (दानाई) अता फ़रमायी थी। (१२) और अपने पास से शफ़क़त और पाकीज़गी (दी थी) और वह परहेज़गार थे। (१३) और मां-बाप के साथ नेकी करने वाले थे और सरकश (और) ना-फ़रमान नहीं थे। (१४) और जिस दिन पैदा हुए और जिस दिन वक़ात पाएंगे और जिस दिन ज़िंदा कर के उठाए जाएंगे, उन पर सलाम और रहमत (है)। (१५)★

और किताब (क़ुरआन) में मरयम का भी ज़िक्र करो जब वह अपने लोगों से अलग हो कर पूरब की तरफ़ चली गयीं, (१६) तो उन्होंने ने उन की तरफ़ से पर्दा कर लिया, (उस वक़्त) हम ने उन की तरफ़ अपना फ़रिश्ता भेजा, तो वह उनके सामने ठीक आदमी (की शक्ल) बन गया। (१७) (मरयम) बोलीं कि अगर तुम परहेज़गार हो तो मैं तुम से खुदा की पनाह मांगती हूं। (१८) उन्होंने कहा कि मैं तो तुम्हारे परवरदिगार का भेजा हुआ (यानी फ़रिश्ता) हूं (और इस लिए आया हूं) कि तुम्हें पाकीज़ा लड़का बख़्शूं। (१९) (मरयम) ने कहा कि मेरे यहां लड़का कैसे होगा, मुझे किसी इंसान ने छुआ तक नहीं और मैं बद-कार भी नहीं हूं। (२०) (फ़रिश्ते ने) कहा कि यों ही (होगा)। तुम्हारे परवरदिगार ने फ़रमाया कि यह मुझे आसान है और (मैं उसे इसी तरीक़े पर करूंगा) पैदा ताकि उस को लोगों के लिए अपनी तरफ़ से निशानी और रहमत (व मेहरबानी का ज़रिया) बनाऊं और यह काम मुकर्रर हो चुका है। (२१) तो वह उस (बच्चे) के साथ हामिला हो गयीं और उसे ले कर एक दूर जगह चली गयीं। (२२) फिर दर्देबहे (बच्चा पैदा होने के वक़्त का दर्द) उन को खज़ूर के तने की तरफ़ ले आया। कहने लगीं कि काश मैं इस से पहले मर चुकती और भूली-बिसरी हो गयी होती। (२३) उस वक़्त उन के नीचे की तरफ़ से फ़रिश्ते ने उन को आवाज़ दी कि ग़मनाक न हो। तुम्हारे परवरदिगार ने तुम्हारे नीचे एक चश्मा पैदा कर दिया है। (२४) और खज़ूर के तने को पकड़ कर अपनी तरफ़ हिलाओ, तुम पर ताज़ा खज़ूरें झड़

पड़ेंगी। (२५) तो लाओ और पियो और आंखें ठंडी करो। अगर तुम किसी आदमी को देखो तो कहना कि मैं ने खुदा के लिए रोजे की मन्नत मानी, तो आज मैं किसी आदमी से हरगिज़ बात नहीं करूंगी। (२६) फिर वह उस (बच्चे) को उठा कर अपनी क्रीम के लोगों के पास ले आयी। वे कहने लगे कि मरयम ! यह तो तू ने बुरा काम किया। (२७) ऐ हाकून की बहन ! न तो तेरा बाप बुरी आदतों वाला था और न तेरी मां ही बद-कार थी। (२८) तो मरयम ने उस लड़के की तरफ इशारा किया। वह बोले कि हम इस से कि गोद का बच्चा है, किस तरह बात करें। (२९) (बच्चे ने) कहा कि मैं खुदा का बन्दा हूं, उस ने मुझे किताब दी है और नबी बनाया है। (३०) और मैं जहां हूं (और जिस हाल में हूं) मुझे बरकत वाला बनाया है और जब तक ज़िदा हूं, मुझ को नमाज़ और ज़कात का हुक्म इर्शाद फ़रमाया है। (३१) और (मुझे) अपनी मां के साथ नेक सुलूक करने वाला (बनाया है) और सरकश व बद-बस्त नहीं बनाया, (३२) और जिस दिन मैं पैदा हुआ, जिस दिन मैं मरूंगा और जिस दिन ज़िदा कर के उठाया जाऊंगा, मुझ पर सलाम (व रहमत) है। (३३) यह मरयम के बेटे ईसा हैं (और यह) सच्ची बात है, जिसमें लोग शक करते हैं। (३४) खुदा की ख़ान नहीं कि किसी को बेटा बनाए, वह पाक है, जब किसी चीज़ का इरादा करता है, तो उस को यही कहता है कि हो जा, तो वह हो जाती है। (३५) और बेशक खुदा ही मेरा और तुम्हारा परवरदिगार है, तो उसी की इबादत करो, यही सीधा रास्ता है। (३६) फिर (किताब वालों के) फ़िक्रों ने आपस में इस्तिलाफ़ किया, सो जो लोग काफ़िर हुए हैं, उन को बड़े दिन (यानी क्रियामत के दिन) हाज़िर होने से खराबी है। (३७) वे जिस दिन हमारे सामने आएंगे, कैसे सुनने वाले और कैसे देखने वाले होंगे, मगर ज़ालिम आज खुली गुमराही में हैं। (३८) और उन को हसरत (व अफ़सोस) के दिन से डरा दो, जब बात फ़ैसला कर दी जाएगी और (अफ़सोस !) वे शफ़लत में (पड़े हुए) हैं और ईमान नहीं लाते। (३९) हम ही ज़मीन के और जो लोग उस पर (बसते) हैं, उन के वारिस हैं और हमारी ही तरफ़ उन को लौटना होगा। (४०) *

और किताब में इब्राहीम को याद करो। बेशक वह निहायत सच्चे पैगम्बर थे। (४१) जब उन्होंने अपने बाप से कहा कि अन्वा ! आप ऐसी चीज़ों को क्यों पूजते हैं, जो न मुनें और न देखें

१. हाकून से यहां वह हाकून मुराद नहीं, जो हज़रत मूसा के भाई थे, क्योंकि वह हज़रत मरयम से मुहूर्तों पहले हो गुजरे थे यानी रिस्तेदारी के लिहाज़ से वह हाकून मुराद नहीं हैं, बल्कि नेकी और परहेज़गारी में एक जैसे होने के एतबार से मुराद हैं, यानी तू हाकून जैसी नेक और परहेज़गार थी, गोया उन की बहन थी, फिर तू ने यह काम किया। अली बिन तल्हा और सुदी ने कहा कि हाकून की बहन इस लिए कहा गया कि वह हज़रत मूसा के भाई हाकून की नस्ल से थीं और अरब की आदत है कि जो शक्स जिम क्रीम और क़बीले का होता है उस को उस क्रीम और क़बीले का भाई कह कर पुकारते हैं, जैसे तमीमी को 'अब्बा तमीम' (तमीम के भाई) और मुज़री या अब्बा मुज़र' (मुज़र के भाई) कहते हैं। इसी तरह यहां भी हज़रत मरयम को हज़रत हाकून की बहन कह कर पुकारा।

और न आप के कुछ काम आ सकें। (४२) अब्बा ! मुझे ऐसा इल्म मिला है, जो आप को नहीं मिला, तो मेरे साथ होजिए, मैं आप को सीधी राह पर चला दूंगा। (४३) अब्बा ! शैतान की पूजा न कीजिए बेशक शैतान खुदा का ना-फ़रमान है। (४४) अब्बा ! मुझे डर लगता है कि आप को खुदा का अज़ाब आ पकड़े, तो आप शैतान के साथी हो जाएं। (४५) उस ने कहा कि इब्राहीम ! क्या तू मेरे माबूदों से बरग़श्ता है ? अगर तू बाज़ न आएगा, तो मैं तुझे संगसार करूंगा और तू हमेशा के लिए मुझ से दूर हो जा। (४६) (इब्राहीम ने) "सलामुन अलैकुम" कहा (और कहा कि) मैं आपके लिए अपने परवरदिगार से बल्खिश मांगूंगा। बेशक वह मुझ पर निहायत मेहरबान है। (४७) और मैं आप लोगों से और जिन को आप खुदा के सिवा पुकारा करते हैं, उन से किनारा करता हूँ और अपने परवरदिगार ही को पुकारूंगा। उम्मीद है कि मैं अपने परवरदिगार को पुकार कर महरूम नहीं रहूंगा। (४८) और जब इब्राहीम उन लोगों से और जिन की वे खुदा के सिवा पूजा किया करते थे, अलग हो गये, तो हम ने उन को इस्हाक़ और (इस्हाक़ को) याक़ूब बल्ले और सब को पैग़म्बर बताया। (४९) और उन को अपनी रहमत से (बहुत-सी चीज़ें) इनायत कीं और उन का बेहतर ज़िक्र बुलंद किया। (५०)★

और किताब में मूसा का भी ज़िक्र करो। बेशक वह (हमारे) चुने हुए और भेजे हुए (रसूल) पैग़म्बर थे। (५१) और हम ने तूर की दाहिनी तरफ़ पुकारा और बातें करने के लिए नज़दीक बुलाया। (५२) और अपनी मेहरबानी से उन को उन का भाई हारून पैग़म्बर अता किया। (५३) और किताब में इस्माईल का भी ज़िक्र करो। वह वायदे के सच्चे और (हमारे) भेजे हुए नबी थे। (५४) और अपने घर वालों को नमाज़ और ज़कात का हुक्म करते थे और अपने परवरदिगार के यहां पसंदीदा (व बग़ुज़ीदा) थे। (५५) और किताब में इद्रीस का भी ज़िक्र करो। वह भी निहायत सच्चे नबी थे। (५६) और हम ने उन को ऊंची जगह उठा लिया था। (५७) ये वह लोग हैं जिन पर खुदा ने अपने पैग़म्बरों में से फ़ज़ल किया (यानी) आदम की औलाद में से और उन लोगों में से जिन को हम ने नूह के साथ (क़स्ती में) सवार किया और इब्राहीम और याक़ूब की औलाद में से और उन लोगों में से जिन को हम ने हिदायत दी और चुन लिया, जब उन के सामने हमारी आयतें पढ़ी जाती थीं तो सज्दे में गिर पड़ते और रोते रहते थे□ (५८) फिर उन के बाद कुछ

१. यानी नुबूत का बुलंद दर्जा या दुनिया में बुलंद मर्तबा बरहना था या यह कि आसमान की तरफ़ उठा लिया था।

ना-खलफ़ उन के जानशीन हुए, जिन्होंने नमाज़ की (छोड़ दिया, गोया उसे) खो दिया और नफ़स की बहाहिशों के पीछे लग गये, बहुत जल्द उन को गुमराही (की सज़ा) मिलेगी। (५६) हाँ, जिस ने तोबा की और ईमान लाया और नेक अमल किए तो ऐसे लोग बहिश्त में दाखिल होंगे और उन का कुछ नुक़सान न किया जाएगा। (६०) (यानी) हमेशा की बहिश्त (में) जिस का खुदा ने अपने बन्दों से वायदा किया है (और जो उन की आंखों से छिपा हुआ है।) बेशक उस का वायदा (नेकों के सामने) आने वाला है। (६१) वे उस में सलाम के सिवा कोई बेहूदा कलाम न सुनेंगे और उन के लिए सुबह व शाम खाना तैयार होगा। (६२) यह वह जन्नत है जिस का हम अपने बन्दों में से ऐसे शख्स को मालिक बनाएंगे, जो परहेज़गार होगा। (६३) और (क्रिश्तों ने पंगम्बर को जवाब दिया कि) हम तुम्हारे परवरदिगार के हुक्म के सिवा उतर नहीं सकते, जो कुछ हमारे आगे है और जो पीछे है और जो उन के दमियान है, सब उसी का है और तुम्हारा परवरदिगार भूलने वाला नहीं। (६४) (यानी) आसमान और ज़मीन और जो उन दोनों के दमियान है सब का परवरदिगार, तो उसी की इबादत करो और उस की इबादत पर साबित क़दम रहो, भला तुम कोई उस का हम-नाम (एक नाम वाला) जानते हो? (६५)*

और (काफ़िर) इंसान कहता है कि जब मैं मर जाऊंगा तो क्या जिंदा कर के निकाला जाऊंगा? (६६) क्या (ऐसा) इंसान याद नहीं करता कि हम ने उस को पहले भी तो पैदा किया था और वह कुछ भी चीज़ न था। (६७) तुम्हारे परवरदिगार की क़सम! हम उन को जमा करेंगे और शैतानों को भी, फिर इन सब को जहन्नम के गिदं हाज़िर करेंगे (और वे) घुटनों पर गिरे हुए (होंगे)। (६८) फिर हर जमाअत में से हम ऐसे लोगों को खींच निकालेंगे, जो खुदा से सलत सर-कशी करते थे। (६९) और हम उन लोगों को खूब जानते हैं, जो उन में दाखिल होने के ज़्यादा लायक हैं। (७०) और तुम में कोई (शख्स) नहीं, मगर उसे उस पर गुज़रना होगा। यह तुम्हारे परवरदिगार पर ज़रूरी और मुक़रर है। (७१) फिर हम परहेज़गारों को निजात देंगे और ज़ालिमों को उस में घुटनों के बल पड़ा हुआ छोड़ देंगे। (७२) और जब उन लोगों के सामने हमारी आयतें पढ़ी जाती हैं, तो जो काफ़िर हैं, वे मोमिनों से कहते हैं कि दोनों फ़रीक़ में से मकान किस के अच्छे और मज्लिसों में से किस की बेहतर है? (७३) और हम ने उन से पहले बहुत-सी उम्मतें हलाक कर दीं। वे लोग (उन से) ठाट और दिखावे में कहीं अच्छे थे। (७४) कह दो कि जो शख्स गुमराही में

१. बक-बक न सुनेंगे और समामुन अलैकुम की आवाज़ सुनेंगे।

पड़ा हुआ है, खुदा उस को धीरे-धीरे मोहलत दिए जाता है, यहां तक कि जब उस चीज को देख लेंगे, जिस का उन से बायबा किया जाता है, स्वाह अजाब, और स्वाह क्रियामत तो (उस वक्त) जान लेंगे कि मकान किस का बुरा है और लश्कर किस का कमजोर है। (७५) और जो लोग हिदायत पाए हुए हैं, खुदा उन को ज्यादा हिदायत देता है और नेकियां जो बाकी रहने वाली हैं, वे तुम्हारे परबरदिगार के बदले के लिहाज से खूब और अंजाम के एतबार से बेहतर हैं। (७६) भला तुम ने उस शस्त्र को देखा जिस ने हमारी आयतों से कुफ़ किया और कहने लगा कि (अगर मैं नये सिरे से जिंदा हुआ भी तो यही) माल और औलाद मुझे (वहां) मिलेगा। (७७) क्या उस ने गीब की खबर पा ली है, या खुदा के यहां (से) अहद ले लिया है? (७८) हरगिज नहीं! यह जो कुछ कहता है, हम उस को लिखते जाते और धीरे-धीरे अजाब बढ़ाते जाते हैं, (७९) और जो चीजें यह बताता है, उन के हम वारिस होंगे और यह अकेला हमारे सामने आएगा। (८०) और उन लोगों ने खुदा के सिवा और माबूद बना लिए हैं, ताकि वह उन के लिए (इच्छत व) मदद (की वजह) हो। (८१) हर गिज नहीं। वे (झूठे माबूद) उन की पूजा से इन्कार करेंगे और उन के दुश्मन (व मुखालिफ़) होंगे, (८२) *

क्या तुम ने नहीं देखा कि हम ने शैतानों को काफ़िरों पर छोड़ रखा कि वे उन को उभारते रहते हैं, (८३) तो तुम उन पर (अजाब के लिए) जल्दी न करो और हम तो उन के लिए (दिन) गिन रहे हैं, (८४) जिस दिन हम परहेजगारों को खुदा के सामने मेहमानों (के तौर-पर) जमा करेंगे। (८५) और गुनाहगारों को दोखल की तरफ़ प्यासे हांक ले जाएंगे (८६) (तो लोग) किसी की सिफ़ारिश का अस्तियार न रखेंगे, मगर जिस ने खुदा से इकरार लिया हो (८७) और कहते हैं खुदा बेटा रखता है। (८८) (ऐसा कहने वालो! यह तो) तुम बुरी बात (जुबान पर) नाते हो। (८९) करीब है कि इस (झूठ गढ़ने) से आसमान फट पड़े और जमीन फट जाए और पहाड़ टुकड़े-टुकड़े हो कर गिर पड़ें, (९०) कि उन्होंने खुदा के लिए बेटा तम्बीज किया। (९१) और खुदा को मुनासिब नहीं कि किसी को बेटा बनाए। (९२) तमाम शस्त्र जो आसमानों और जमीन में हैं, सब खुदा के रू-ब-रू बन्दि हो कर आएंगे। (९३) उस ने उन (सब) को (अपने इल्म से) घेर रखा और (एक-एक को) गिन रखा है, (९४) और सब क्रियामत के दिन उस के सामने अकेले-अकेले हाजिर होंगे। (९५) और जो लोग ईमान लाए और नेक अमल किए, खुदा उन की मुहब्बत (मस्लूकात के दिल में) पैदा कर देगा। (९६) (ऐ पैगम्बर!) हम ने यह (कुरआन)

फइन्नमा यस्सर्नाहु बिलिसानि-क लितुबशिश-र बिहिल्-मुत्तकी-न व तुन्जि-र
बिही क्रौमल्-सुद्दा (९७) व कम् अहलकना कब-लहुम् मिन् कनिन्
हल् तुहिस्सु मिन्हुम् मिन् अ-हदिन् औ तस्मअ लहुम् रिक्जा (९८)

२० सूरतु ताहा ४५

(मक्की) इस सूर. में अरबी के ५४६६ अक्षर,
१२५१ शब्द, १३५ आयतें और ८ रकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

ता - हा ८ (१) मा अन्जलना

अलैकल् - कुरआ - न लितयक्का ॥ (२)

इल्ला तज्जि-र-तुल् - लिमंय्यरुशा ॥ (३)

तन्बीलम्-मिम्मन् ख-ल-कल्अर्-ज्ज वस्समावातिल्-

अला ॥ (४) अर्रह्मानु अ - लल् -

अशिस्तवा (५) लहु मा फिस्-समावाति

व मा फिल्अज्जि व मा बेनुहुमा व मा

तह-तस्सरा (६) व इन् तज्-हर् बिल्कौलि

फ-इन्नहु यअ-लमुस्सिर-र व अल्फा (७) अल्लाहु ला इला-ह इल्ला

हु-व ॥ लहुल् - अस्मा - उल् - हुस्ना (८) व हल् अता - क हदीसु

मूसा (९) इज् रआ नारन् फ - का - ल लिअहिलहिम्कुस् इन्नी

आनस्तु नारल्ल-अल्ली आतीकुम् मिन्हा बि-क-बसिन् औ अजिदु अ-लन्नारि

हुदा (१०) फ-लम्मा अताहा नूदि-य या मूसा ॥ (११) इन्नी अन

रब्बु-क फल्लअ नअ - लै-क ८ इन्न-क बिल्वादिल्-मुकद्दसि तुवा ॥ (१२)

व अनस्तर्तु-क फस्तमिअ लिमा यूहा (१३) इन्ननी अनल्लाहु ला इला-ह

इल्ला अन फअ-बुदनी ॥ व अकिमिस्सला-त्त लिजिवरी (१४) इन्नस्सा-अ-त्त

आतियतुन् अकादु उरुफ्रीहा लितुज्जा कुल्लु नफिसम्-बिमा तस्आ (१५)

फला गसुद्दन्न-क अन्हा मल्ला युअमिनु बिहा वत्तअ-ह वाहु फ-तर्दा (१६)

व मा तिल्-क बियमीनि-क या मूसा (१७) का-ल हि-य असाय ८ अ-त-वक्कउ

अलैहा व अहुशु बिहा अला गनमी व लि-य फ्रीहा मआरिबु उल्वा (१८)



तुम्हारी जुबान में आसान (नाज़िल) किया है ताकि तुम इस से परहेजगारों को खुशखबरी पहुंचा दो और झगड़ालुओं को डर सुना दो। (६७) और हम ने इस से पहले बहुत से गिरोहों को हलाक कर दिया है, भला तुम उन में किसी को देखते हो या (कहीं) उन की भनक सुनते हो। (६८)★●

२० सूर: ता हा ४५

सूर: त्वा हा मक्की है और इस में एक सौ पैंतीस आयतें और आठ रकूअ हैं।

शुरू खुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

त्वा हा, (१) (ऐ मुहम्मद!) हमने तुम पर क़ुरआन इसलिए नाज़िल नहीं किया कि तुम मुशक़क़त में पड़ जाओ।^१ (२) बल्कि उस शस्त्र को नसीहत देने के लिए (नाज़िल किया है) जो डर रखता है। (३) यह उस ज़ात का उतारा हुआ है, जिस ने ज़मीन और ऊंचे-ऊंचे आसमान बनाए। (४) (यानी खुदा-ए-रहमान, जिस ने अर्थ पर करार पकड़ा। (५) जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है और जो कुछ इन दोनों के बीच में है, और जो कुछ (ज़मीन की) मिट्टी के नीचे है, सब उसी का है। (६) और अगर तुम पुकार कर बात कहो तो वह तो छिपे भेद और बहुत छिपी बात तक को जानता है। (७) (वह) माबूद (बरहक) है (कि) उस के सिवा कोई माबूद नहीं है, उस के (सब) नाम अच्छे हैं। (८) और क्या तुम्हें मूसा के हाल की खबर मिली है? (९) जब उन्होंने आग देखी तो अपने घर के लोगों से कहा कि तुम (यहां) ठहरो, मैं ने आग देखी है। (मैं वहां जाता हूं) शायद उस में से मैं तुम्हारे पास अंगारे लाऊं या आग (की जगह) का रास्ता मालूम कर सकूँ। (१०) जब वहां पहुंचे तो आबाज़ आयी कि मूसा! (११) मैं तो तुम्हारा परवरदिगार हूँ, तो अपनी जूतियां उतार दो, तुम (यहां) पाक मैदान (यानी) तुवा में हो। (१२) और मैं ने तुम को चुन लिया है, तो जो हुक्म दिया जाए, उसे सुनो। (१३) बेशक मैं ही खुदा हूँ, मेरे सिवा कोई माबूद नहीं, तो मेरी इबादत किया करो, और मेरी याद के लिए नमाज़ पढ़ा करो। (१४) क्रियामत यक़ीनन आने वाली है। मैं चाहता हूँ कि उस (के वक़्त) को पोशीदा रखूँ, ताकि हर शस्त्र जो कोशिश करे, उस का बदला पाए।^२ (१५) तो जो शस्त्र उस पर ईमान नहीं रखता और अपनी ख्वाहिश के पीछे चलता है, (कहीं) तुम को उस (के यक़ीन) से रोक न दे, तो (इस शकल में) तुम हलाक हो जाओ। (१६) और मूसा यह तुम्हारे दाहिने हाथ में क्या है? (१७) उन्होंने ने कहा यह मेरी लाठी है, इस पर मैं सहारा लगाता हूँ और इस से अपनी बकरियों के लिए पत्ते झाड़ता हूँ और इस में मेरे और भी कई फ़ायदे

१. जब क़ुरआन नाज़िल होना शुरू हुआ तो जनाब रिस्ालत मआब ज़्यादा से ज़्यादा इबादत करते और बहुत ज़हमत उठाते, रातों को नमाज़ में खड़े रहते और क़ुरआन शरीफ़ पढ़ते रहते, इस से एक तो सेहत में ख़लल बाक़ैअ होने का डर होता था, दूसरे काफ़िरों ने आप से कहना शुरू किया कि क़ुरआन तो आप के लिए सख़्त तक्लीफ़ की वजह बन गया, तब यह आयत नाज़िल हुई कि अल्लाह तआला ने आप को ऐसी मशक़क़त उठाने से मना करमाया।

२. हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को भी पहली बख़्त में नमाज़ का हुज़म है और हमारे पैग़म्बर को भी 'ब रब्ब-क फ़क-बिबर' और क्रियामत को छिपाता हूँ यानी बक़्त किसी को नहीं बताता।

हैं। (१८) फ़रमाया कि मूसा ! इसे डाल दो। (१९) तो उन्होंने उस को डाल दिया और वह यकायक सांप बन कर दौड़ने लगा। (२०) खुदा ने फ़रमाया कि उसे पकड़ लो और डरना मत। हम उस को अभी उस की पहली हालत पर लौटा देंगे। (२१) और अपना हाथ अपनी बगल से लगा लो, वह किसी ऐब (व बीमारी) के बग़ैर सफ़ेद (चमकता-दमकता) निकलेगा। (यह) दूसरी निशानी (है), (२२) ताकि हम तुम्हें अपनी बड़ी निशानियां दिखाएं (२३) तुम फ़िर्ऑन के पास जाओ (कि) वह सरकश हो रहा है। (२४)★

कहा, मेरे परवरदिगार ! (इस काम के लिए) मेरा सीना खोल दे। (२५) और मेरा काम आसान कर दे, (२६) और मेरी जुबान की गिरह खोल दे, (२७) ताकि वह मेरी बात समझ लें, (२८) और मेरे घर वालों में से (एक को) मेरा वज़ीर (यानी मददगार) मुक़र्रर फ़रमा, (२९) (यानी) मेरे भाई हाज़न को। (३०) उस से मेरी ताक़त को मज़बूत कर, (३१) और उसे मेरे काम में शरीक कर, (३२) ताकि हम तेरी बहुत-सी तस्बीह करें। (३३) और तुझे ज़्यादा से ज़्यादा याद करें (३४) तू हम को (हर हाल में) देख रहा है। (३५) फ़रमाया, मूसा ! तुम्हारी दुआ क़बूल की गयी। (३६) और हम ने तुम पर एक बार और भी एहसान किया था। (३७) जब हम ने तुम्हारी मां को इल्हाम किया था, जो तुम्हें बताया जाता है। (३८) (वह यह था) कि उसे (यानी मूसा को) संदूक में रखौ, फिर उस (संदूक) को दरिया में डाल दो तो दरिया उस को किनारे पर डाल देगा (और) मेरा और उस का दुश्मन उसे उठा लेगा और (मूसा !) मैं ने तुम पर अपनी तरफ़ से मुहब्बत डाल दी, (इसलिए कि तुम पर मेहरबानी की जाए) और इसलिए कि तुम मेरे सामने परवरिश पाओ (३९) जब तुम्हारी बहन (फ़िर्ऑन के यहां) गयी और कहने लगी कि मैं तुम्हें ऐसा शरूस बताऊं जो उस को पाले, तो (इस तरीक़े से) हम ने तुम को तुम्हारी मां के पास पहुंचा दिया ताकि उन की आंखें ठंडी हों और वह रंज न करें और तुम ने एक शरूस को मार डाला तो हम ने तुम को ग्रम से मुक़िलसी दी और हम ने तुम्हारी (कई बार) आजमाइश की। फिर तुम कई साल मदयन वालों में ठहरे रहे, फिर ऐ मूसा ! तुम (रिसालत की क़ाबिलियत के) अन्दाज़े पर आ पहुंचे। (४०) और मैं ने तुम को अपने (काम के) लिए बनाया है। (४१) तो तुम और तुम्हारा भाई दोनों हमारी निशानियां ले कर जाओ और मेरी याद में सुस्ती न करना। (४२) दोनों फ़िर्ऑन के पास जाओ, वह सरकश हो रहा है। (४३) और उस से नमी से बात करना शायद वह शीर करे या डर जाए। (४४) दोनों कहने लगे कि

काला रब्बना इन्ना नस्त्राफु अय्यफह-त अलैना ओ अय्यत्ता (४५) का-ल ला तस्त्राफा इन्नी म-अकुमा अस्मभु व अरा (४६) फ़अतियाहु फ़कूला इन्ना रसूला रब्बि-क फ़असिल् म-अना बनी इस्राई-ल ॥ व ला तुअजिजबहुम् कद् जिअ-ना-क बि-आयतिम्-मिररब्बि-क ॥ वस्सलामु अला मनिस्-ब-अल्-हुदा

(४७) इन्ना कद् ऊहि-य इलैना अन्लअजा-ब अला मन् कज्ज-ब व त-वल्ला (४८) का-ल फ़-मर्-रब्बुकुमा या मूसा (४९) का-ल रब्बुनल्लजी अज-ता कुल्-ल ओइन् खल्कह सुम्-म हदा (५०) का-ल फ़-मा बालुल्-कुरुनिल्-ऊला (५१) का-ल जिल्मुहा जिन्-द रब्बी फ़ी किताबिन् ॥ ला यजिअल्लु रब्बी व ला यन्-स- (५२) - ल्लजी ज - अ - ल लकुमुल्-अर्-ज्ज महद्व-व स-ल-क लकुम् फ़ीहा सुबुल्-ब-व अन्ज-ल मिनस्समाइ मा - अन् ॥ फ़-अख्-रज्जा बिही अज्-वाजम्मिन् नवातिन् शत्ता (५३) कुलू वर्औ अन्-आमकुम् इन्-न फ़ी जालि - क ल-आयातिल्लि-

قَالَ اَنْ يَّلَاحُ عَلَيْهِ اَوْ اَنْ يَّلَاحُ عَلَيَّ ۚ قَالَ لَا يَحْكُمُ اَنْفُسُ مَعَكُمْ
اَسْمَءُ وَاَنْفِ ۚ قَالَتْ فَذَلِكُنَّ الَّذِي لُمْتُنَّ صَاحِبَهُ فَالتَّمَاثُلُ مِنَ النَّاسِ
اِلَى النَّاسِ ۚ وَلَا تَعْلَمُوهُمْ فَتُصَدِّقُهُمْ بِمَا يَكْفُرُونَ ۚ لَوْ كُنَّ عَلَّمُوا
مَنْ رَّبِّهِمْ هَدَّيْنَاهُمْ ۚ اِنَّا فَتَنَّا الْاَنْفُسَ اِنَّ الْاَعْدَابَ لَمِنْ كُنَّا
وَقَالَ ۚ قَالَتْ مَن رَّبُّكَ اَسْمَاءُ ۚ قَالَتْ الَّذِي يَخْلُقُ لَكُمْ اَنْفُسَكُمْ
عَلَيْهِ تَعْلَمُونَ ۚ قَالَتْ فَذَلِكُنَّ الَّذِي لُمْتُنَّ الْاَوَّلَ ۚ قَالَتْ وَلَيْسَ
لِي فِي كَيْفٍ اَوْ يَحْكُمُ لِي ۚ وَلَا يَكُنِيَ ۚ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ
الْاَرْضَ مَهْدًا وَاَنْتُمْ اَعْلَمُ ۚ اَسْمَاءُ ۚ قَالَتْ مَن رَّبُّكَ اَسْمَاءُ ۚ قَالَتْ
يَا اَوَّلِي ۚ اَمَّا اَنْفُسُكُمْ فَمِنْ اَنْفُسِكُمْ ۚ فَذَلِكُنَّ الَّذِي لُمْتُنَّ
الْاَوَّلَ ۚ قَالَتْ مَن رَّبُّكَ اَسْمَاءُ ۚ قَالَتْ الَّذِي يَخْلُقُ لَكُمْ اَنْفُسَكُمْ
عَلَيْهِ تَعْلَمُونَ ۚ قَالَتْ فَذَلِكُنَّ الَّذِي لُمْتُنَّ صَاحِبَهُ فَالتَّمَاثُلُ
مِنَ النَّاسِ اِلَى النَّاسِ ۚ وَلَا تَعْلَمُوهُمْ فَتُصَدِّقُهُمْ بِمَا يَكْفُرُونَ
ۚ لَوْ كُنَّ عَلَّمُوا مَنْ رَّبُّهُمْ هَدَّيْنَاهُمْ ۚ اِنَّا فَتَنَّا الْاَنْفُسَ اِنَّ
الْاَعْدَابَ لَمِنْ كُنَّا ۚ قَالَتْ فَذَلِكُنَّ الَّذِي لُمْتُنَّ الْاَوَّلَ ۚ قَالَتْ
وَلَيْسَ لِي فِي كَيْفٍ اَوْ يَحْكُمُ لِي ۚ وَلَا يَكُنِيَ ۚ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ
الْاَرْضَ مَهْدًا وَاَنْتُمْ اَعْلَمُ ۚ اَسْمَاءُ ۚ قَالَتْ مَن رَّبُّكَ اَسْمَاءُ ۚ قَالَتْ
يَا اَوَّلِي ۚ اَمَّا اَنْفُسُكُمْ فَمِنْ اَنْفُسِكُمْ ۚ فَذَلِكُنَّ الَّذِي لُمْتُنَّ
الْاَوَّلَ ۚ قَالَتْ مَن رَّبُّكَ اَسْمَاءُ ۚ قَالَتْ الَّذِي يَخْلُقُ لَكُمْ اَنْفُسَكُمْ
عَلَيْهِ تَعْلَمُونَ ۚ قَالَتْ فَذَلِكُنَّ الَّذِي لُمْتُنَّ صَاحِبَهُ فَالتَّمَاثُلُ
مِنَ النَّاسِ اِلَى النَّاسِ ۚ وَلَا تَعْلَمُوهُمْ فَتُصَدِّقُهُمْ بِمَا يَكْفُرُونَ

उलिन्नुहा * (५४) मिन्हा ख-लक्नाकुम् व फ़ीहा नुओदुकुन् व मिन्हा नुलिरजुकुम् तार-तन् ऊहरा (५५) व ल-कद् अरैनाहु आयातिना कुल्लहा फ़-कज्ज-ब व अबा (५६) का-ल अजिअ-तना लितुलिर-जना मिन् अजिना बिसिहिर-क या मूसा (५७) फ़-ल-नअतियन्-क बिसिहिरम्-मिस्लिही फ़ज्-अल्-बैनना व बैन-क मौअदल्ला नुखलिफूह नहनु व ला अन्-त मकानन् सुवा (५८) का-ल मौअिदुकुम् योमुज्जीनति व अय्युहशरन्नासु जुहा (५९) फ़-त-वल्ला फ़िरऔनु फ़-ज-म-अ कैदह सुम्-म अता (६०) का-ल लहुम् मूसा वेलकुम् ला तपतरह अ-लल्लाहि कजिबन् फ़-युस्हितकुम् बिअजाबिन् ॥ व कद् खा-ब मनिफ़तरा (६१) फ़-त-नाज्जू अम्-रहुम् बैनहुम् व अ-सहन्नज्वा (६२) काल इन् हाज्जानि ल-साहिरानि युरीदानि अय्युल्रिजाकुम् मिन् अजिकुम् बिसिहिरहिमा व य्जहबा बि - तरीकति - कुमुल् - मुस्ला (६३)

हमारे परवरदिगार ! हमें डर है कि वह हम पर जुल्म करने लगे या ज्यादा सरकश हो जाए। (४५) (खुदा ने) फरमाया कि डरो मत, मैं तुम्हारे साथ हूँ (और) सुनता और देखता हूँ। (४६) (अच्छा) तो उस के पास जाओ और कहो कि हम आप के परवरदिगार के भेजे हुए हैं, तो बनी इस्राईल को हमारे साथ जाने की इजाजत दीजिए और उन्हें अज्ञाब न कीजिए। हम आप के पास आप के परवरदिगार की तरफ से निशानी ले कर आए हैं और जो हिदायत की बात माने, उस को सलामती हो। (४७) हमारी तरफ यह वृत्त्य आयी है कि जो झुठलाए और मुंह फेरे, उस के लिए अज्ञाब (तैयार) है। (४८) (गरज मूसा और हारून फ़िर्औन के पास गये।) उसने कहा कि मूसा तुम्हारा परवरदिगार कौन है ? (४९) कहा कि हमारा परवरदिगार वह है जिस ने हर चीज को उस की शकल व सूरत बरूशी, फिर राह दिखायी। (५०) कहा तो पहली जमाअतों का क्या हाल हुआ ? (५१) कहा कि उनका इल्म मेरे परवरदिगार को है, (जो) किताब में (लिखा हुआ है)। मेरा परवरदिगार न चूकता है, न भूलता है। (५२) वह (वही तो है,) जिस ने तुम लोगों के लिए ज़मीन को फ़श बनाया और उस में तुम्हारे लिए रास्ते जारी किए और आसमान से पानी बरसाया, फिर उससे क्रिस्म-क्रिस्म की रूईदगियां (पेड़-पौधे) पैदा कीं। (५३) (कि खुद भी) खाओ और अपने चारपायों को भी चराओ। बेशक इन (बातों) में अक़ल वालों के लिए (बहुत सी) निशानियां हैं। (५४)★

इसी (ज़मीन) से हम ने तुम को पैदा किया और इसी में तुम्हें लौटाएंगे और इसी से दूसरी बार निकालेंगे (५५) और हम ने फ़िर्औन को अपनी सब निशानियां दिखायीं, मगर वह झुठलाता और इंकार ही करता रहा। (५६) कहने लगा कि मूसा ! क्या तुम हमारे पास इसलिए आए हो कि अपने जादू (के जोर) से हमें हमारे मुल्क से निकाल दो। (५७) तो हम भी तुम्हारे मुकाबले में ऐसा ही जादू लाएंगे, तो हमारे और अपने दमियान एक वक़्त मुकर्रर कर लो कि न तो हम उस के खिलाफ़ करें और न तुम। (और यह मुकाबला) एक हमवार मैदान में (होगा) (५८) (मूसा ने) कहा कि आप के लिए जीनत के दिन का वायदा है और यह कि लोग उस दिन चाश्त के वक़्त इकट्ठे हो जाएं। (५९) तो फ़िर्औन लौट गया और अपने सामान जमा कर के फिर आया। (६०) मूसा ने उन (जादूगरों) से कहा कि हाय ! तुम्हारी कम-बरूती ! खुदा पर झूठ न गढ़ो कि वह तुम्हें अज्ञाब से फ़ना कर देगा और जिस ने झूठ गढ़ा, वह ना-मुराद रहा। (६१) तो वे आपस में अपने मामले में झगड़ने और चुपके-चुपके काना-फूसी करने लगे। (६२) कहने लगे, ये दोनों जादूगर हैं, चाहते हैं कि अपने जादू (के जोर) से तुमको तुम्हारे मुल्क से निकाल दें और

तुम्हारे साइस्ता मजहब को नाबूद कर दें। (६३) तो तुम (जादू का) सामान इकट्ठा कर लो और फिर कतार बांध कर आओ, आज जो गालिब रहा, वही कामियाब हुआ। (६४) बोले कि मूसा या तो तुम (अपनी चीज) डालो या हम (अपनी चीजें) पहले डालते हैं। (६५) मूसा ने कहा, नहीं, तुम ही डालो। (जब उन्होंने ने चीजें डालीं) तो यकायक उस की रस्सियां और लाठियां मूसा के रुयाल में ऐसी आने लगीं कि वह (मैदान में इधर-उधर) दौड़ रही हैं। (६६) (उस वक्त) मूसा ने अपने दिल में खौफ मालूम किया। (६७) हमने कहा, खौफ न करो, बेशक तुम ही गालिब हो। (६८) और जो चीज (यानी लाठी) तुम्हारे दाहिने हाथ में है, उसे डाल दो कि जो कुछ उन्होंने ने बनाया है, उस को निगल जाएगी। जो कुछ उन्होंने ने बनाया है (यह तो) जादूगरों के हथकंडे हैं और जादूगर जहां जाए, कामियाबी नहीं पाएगा। (६९) (शरब यह कि यों ही हुआ) तो जादूगर सज्दे में गिर पड़े (और) कहने लगे कि हम मूसा और हारून के परवरदिगार पर ईमान लाए। (७०) (फ़िर्आन) बोला कि इस के पहले कि मैं तुम्हें इजाजत दूं, तुम उस पर ईमान ले आए। बेशक वह तुम्हारा बड़ा (यानी उस्ताद) है, जिस ने तुम को जादू सिखाया है, सो मैं तुम्हारे हाथ और पांव, मुस्लालिफ़ (तरफ़) से कटवा दूंगा और खजूर के तनों पर सूली चढ़वा दूंगा, (उस वक्त) तुम को मालूम होगा कि हम में से किस का अज़ाब ज्यादा सख्त और देर तक रहने वाला है। (७१) उन्होंने ने कहा कि जो दलीलें हमारे पास आ गयी हैं, उन पर और जिस ने हम को पैदा किया है, उस पर हम आप को हरगिज़ तर्जोह नहीं देंगे, तो आप को जो हुकम देना हो, दे दीजिए और आप (जो) हुकम दे सकते हैं, वह सिर्फ़ इसी दुनिया की ज़िदगी में (दे सकते हैं)। (७२) हम अपने परवरदिगार पर ईमान ले आए ताकि वह हमारे गुनाहों को माफ़ करे और (उसे भी) जो आप ने हम से ज़बरदस्ती जादू कराया और खुदा बेहतर और बाकी रहने वाला है (७३) जो शक्स अपने परवरदिगार के पास गुनाहगार हो कर आएगा तो उस के लिए जहन्नम है, जिस में न मरेगा, न जिएगा। (७४) और जो उस के रू-ब-रू ईमानदार हो कर आएगा और अमल भी नेक किए होंगे, तो ऐसे लोगों के लिए ऊंचे-ऊंचे दर्जे हैं। (७५) (यानी) हमेशा रहने के बाग़, जिन के नीचे नहरें बह रही हैं, हमेशा उन में रहेंगे और यह उस शक्स का बदला है, जो पाक हुआ। (७६)★

और हमने मूसा की तरफ वृष्ट्य भेजी कि हमारे बन्दों को रातों-रात निकाल ले जाओ, फिर उन के लिए दरिया में लाठी मार कर खुश रास्ता बना दो, फिर तुम को न तो (फ़िर्ऑन के) आ पकड़ने का डर होगा और न (डूबने का) डर। (७७) फिर फ़िर्ऑन ने अपने लश्कर के साथ उन का पीछा किया तो दरिया (की मौजों) ने उन पर चढ़ कर उन्हें ड़ांक लिया (यानी डुबो दिया)। (७८) और फ़िर्ऑन ने अपनी क्रीम को गुमराह कर दिया और सीधे रास्ते पर न डाला। (७९) ऐ याक़ूब की ओलाद ! हमने तुम को तुम्हारे दुश्मन से निजात दी और तोरात देने के लिए तुम से तूर पहाड़ की दाहिनी तरफ़ मुकर्रर की और तुम पर मन्न व सलवा नाज़िल किया। (८०) (और हुक्म दिया कि) जो कुछ पाकीज़ा चीज़ें हमने तुम को दी हैं, उन को खाओ और उस में हृद से न निकलना, वरना तुम पर मेरा ग़ज़ब नाज़िल होगा। और जिस पर मेरा अज़ाब नाज़िल हुआ, वह हलाक हो गया। (८१) और जो तौबा करे और ईमान लाए और नेक अमल करे, फिर सीधे रास्ते चले, उस को मैं बख़्श देने वाला हूँ। (८२) और ऐ मूसा ! तुम ने अपनी क्रीम से (आगे चले आने में) क्यों जल्दी की ? (८३) कहा वह मेरे पीछे (आ रहे हैं) और ऐ मेरे परवरदिगार ! मैं ने तेरी तरफ़ आने की जल्दी इस लिए की कि तू खुश हो। (८४) फ़रमाया कि हम ने तुम्हारी क्रीम को तुम्हारे बाद आजमाइश में डाल दिया है और सामेरी ने उन को बहका दिया है। (८५) और मूसा गुस्से और ग़म की हालत में अपनी क्रीम के पास वापस आए और कहने लगे कि ऐ क्रीम ! क्या तुम्हारे परवरदिगार ने तुम से अच्छा वायदा नहीं किया था ! 'क्या (मेरी जुदाई की) मुद्त तुम्हें लंबी (मालूम) हुई या तुम ने चाहा कि तुम पर तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से ग़ज़ब नाज़िल हो और (इसलिए) तुम ने मुझ से जो वायदा (किया था, उस के) खिलाफ़ किया। (८६) वे कहने लगे कि हमने अपने अस्तियार से तुम से वायदा खिलाफ़ नहीं किया, बल्कि हम लोगों के ज़ेवरों का बोझ उठाए हुए थे, फिर हमने उस को (आग में) डाल दिया और इसी तरह सामरी ने डाल दिया। (८७) तो उस ने उन के लिए एक बछड़ा बना दिया (यानी उस का) क़ालिब, जिस की आवाज़ गाय की-सी थी, तो लोग कहने लगे कि यही तुम्हारा माबूद है और यही मूसा का माबूद है, मगर वह भूल गये हैं। (८८) क्या वे लोग नहीं देखते कि वह उन की किसी बात का जवाब नहीं देता और न उन के नुक़सान और नफ़ा का कुछ अस्तियार रखता है। (८९)★

और हाज़र ने उन में पहले ही कह दिया था कि लोगो ! इस से सिर्फ़ तुम्हारी आजमाइश की गयी है और तुम्हारा परवरदिगार तो ख़ुदा है, तो मेरी पैरवी करो और मेरा कहा मानो। (९०)

१. वायदा तोरात देने का। हज़रत मूसा क्रीम से तीस दिन का वायदा कर के पहाड़ पर गये थे, वहाँ चालीस दिन लगे, पीछे बछड़ा पूजने लगे।

वे कहने लगे कि जब तक मूसा हमारे पास वापस न आयें, हम तो उस (की पूजा) पर कायम रहेंगे। (११) (फिर मूसा ने हाकून से) कहा कि हाकून ! जब तुम ने उन को देखा था कि गुमराह हो गये हैं, तो तुम को किस चीज ने रोका ? (१२) (यानी) इस बात से कि तुम मेरे पीछे बले आओ, भला तुम ने मेरे हुक्म के खिलाफ़ (क्यों) किया ? (१३) कहने लगे कि भाई मेरी दाढ़ी और सर (के बालों) को न पकड़िए, मैं तो इस से डरा कि आप यह न कहें कि तुम ने बनी इस्राईल में फूट डाल दी और मेरी बात को ध्यान में न रखा। (१४) (फिर सामरी से) कहने लगे कि सामरी तेरा क्या हाल है ? (१५) उस ने कहा कि मैं ने ऐसी चीज देखी जो औरों ने नहीं देखी, तो मैं ने फ़रिश्ते के पैरों के निशान से (मिट्टी की) एक मुट्ठी भर ली, फिर उस को (बछड़े के कालिब में) डाल दिया और मुझे मेरे जी ने (इस काम को) अच्छा बताया। (१६) (मूसा ने) कहा, जा तुझ को (दुनिया की) ज़िदगी में यह (सज़ा) है कि कहता रहे कि मुझ को हाथ न लगाना।^१ और तेरे लिए एक और वायदा है (यानी अज़ाब का) जो तुझ से टल न सकेगा और जिस माबूद (की पूजा) पर तू (कायम व मोतकिफ़) था, उस को देख, हम उसे जला देंगे, फिर उस (की राख) को उड़ा कर दरिया में बिखेर देंगे। (१७) तुम्हारा माबूद खुदा ही है, जिस के सिवा कोई माबूद नहीं, उस का इल्म हर चीज़ पर छाया हुआ है। (१८) इस तरह पर हम तुम से वे हालात बयान करते हैं, जो गुज़र चुके हैं और हम ने तुम्हें अपने पास से नसीहत (की किताब) अता फ़रमायी है। (१९) जो शस्त्र इस से मुंह फरेगा, वह क्रियामत के दिन (गुनाह का) बोझ उठाएगा। (१००) (ऐसे लोग) हमेशा उस (अज़ाब) में (पड़े) रहेंगे और यह बोझ क्रियामत के दिन उन के लिए बुरा होगा। (१०१) जिस दिन सूर फूँका जाएगा और हम गुनाहगारों को इकट्ठा करेंगे और उन की आंखें नीली-नीली होंगी। (१०२) (तो) वे आपस में धीरे-धीरे कहेंगे कि तुम (दुनिया में) सिर्फ़ दस ही दिन रहे हो। (१०३) जो बातें ये करेंगे, हम ख़ूब जानते हैं। उस वक़्त उन में सब से अच्छी राह वाला (यानी अक्ल व होश वाला) कहेगा कि (नहीं, बल्कि) सिर्फ़ एक ही दिन ठहरे हो। (१०४)★

और तुम से पहाड़ों के बारे में पूछते हैं, कह दो कि खुदा उन को उड़ा कर बिखेर देगा। (१०५) और ज़मीन को हमवार मैदान कर छोड़ेगा, (१०६) जिस में न तुम टेढ़ (और

१. यानी बनी इस्राईल को गुमराह करने की बज़ह से अल्लाह तआला ने उस को यह सज़ा दी कि तमाम उन्न सब से अलग रहा। उस की यह हालत थी कि अगर वह किसी को हाथ लगाता या कोई उस को हाथ लगाता तो दोनों के तप आ जाती, इस लिए वह यही कहता रहा कि कोई मुझे छुए नहीं। यह दुनिया का अज़ाब था और आखिरत का अज़ाब अलग रहा।

यौमइजियत्तबिअूनद् - दाअि-य ला अि-व-ज लहू ८ व ख-श-अतिल् - अस्वातु
लिर्हमाणि फला तस्मअ इत्ला हम्सा (१०८) यौमइजिल्ला तन्फअुश-शफाअतु
इत्ला मन् अजि-न लहरह्मानु व रज्जि-य लहू कौला (१०९) यअ-लमु मा
बैन ऐदीहिम् व मा खल्फहुम् व ला युहीतून बिही अिल्मा (११०) व

अ - नत्सि - वुजूहु लिल्हय्यिल् - कय्यूमि

व कद् खा-ब मन् ह-म-ल अल्मा (१११) व

मय्यअ-मल् मिनस्सालिहाति व हु-व मुअ्मिनुन्

फला यखाफु अल्मव-व ला हज्मा (११२)

व कजालि-क अन्जल्लाहु कुरआनन् अ-र-बिय्यव-व

सरफ्ना फ्रीहि मिनल्ववीदि ल-अल्लहुम्

यत्तकू-न ओ युहिदसु लहुम् जिकरा (११३)

फ-त-आलल्लाहुल् - मलिकुल्हक्कु ८ व ला

तअ-जल् बिल्कुरआनि मिन् कलि अय्युकज्जा

इलै - क वह्युह ८ व कुरैबि जिदनी

अिल्मा (११४) व ल-कद् अहिदना इला

आद-म मिन् कब्लु फ-नसि-य व लम् नजिद्

लहू अरमा (११५) व इज् कुलना

लिम्मलाइकतिस्जुद् लिआद-म फ-स-जद् इत्ला इब्ली-स ८ अबा (११६)

फकुलना या आदमु इन्-न हाज्जा अदुव्वुल्ल-क व लिज्जोजि-क फला युख्रिजन्नकुमा

मिनल्जन्नति फ-तश्का (११७) इन्-न ल-क अल्ला तजू-अ फ्रीहा व ला

तअ-रा ८ (११८) व अन्न-क ला तअमउ फ्रीहा व ला तज्हा (११९)

फ-वस्-व-स इलैहिश्शैतानु काल या आदमु हल् अदुल्लु-क अला श-ज-रतिल्-

खुल्दि व मुल्किल्-ला यब्ला (१२०) फ-अ-कला मिन्हा फ-ब-दत् लहुमा

सौआतुहुमा व तफ्रिका यल्लिफानि अलैहिमा मिव्व - रकिल् - जन्नति ८ व

असा आदमु रब्बूह फ - गवा (१२१) सुम्मज्तबाहु रब्बूह

फता-ब अलैहि व हदा (१२२) कालहिबता मिन्हा जमीअम्-बअ-जुकुम्

लिबअ - जिन् अदुव्वुन् ८ फइम्मा यअ्तियन्नकुम् मिन्नी हुदन्

फ - मनिस्त-ब-अ हुदा - य फला यजिल्लु व ला यश्का (१२३)

يَوْمَ لَا يُغْنِي عَنْهُمْ كَيْفُ الْحِسَابِ وَلَا يُلَاقُونَ أَهْلًا وَلَا عِلًا وَلَا عِزًّا ۖ وَسُئِلُوا عَمَّا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۚ
فَأُولَئِكَ فِي عَذَابٍ مُّتَسَاوِينَ ۚ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ أَجْرٌ غَيْرُ الْمُتَسَاوِينَ ۚ وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ عَذَابٌ مُّشْتَرِكٌ ۖ هُوَ الَّذِي كَانُوا يَكْفُرُونَ ۚ
وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ أَجْرٌ غَيْرُ الْمُتَسَاوِينَ ۚ وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ عَذَابٌ مُّشْتَرِكٌ ۖ هُوَ الَّذِي كَانُوا يَكْفُرُونَ ۚ
وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ أَجْرٌ غَيْرُ الْمُتَسَاوِينَ ۚ وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ عَذَابٌ مُّشْتَرِكٌ ۖ هُوَ الَّذِي كَانُوا يَكْفُرُونَ ۚ
وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ أَجْرٌ غَيْرُ الْمُتَسَاوِينَ ۚ وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ عَذَابٌ مُّشْتَرِكٌ ۖ هُوَ الَّذِي كَانُوا يَكْفُرُونَ ۚ
وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ أَجْرٌ غَيْرُ الْمُتَسَاوِينَ ۚ وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ عَذَابٌ مُّشْتَرِكٌ ۖ هُوَ الَّذِي كَانُوا يَكْفُرُونَ ۚ
وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ أَجْرٌ غَيْرُ الْمُتَسَاوِينَ ۚ وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ عَذَابٌ مُّشْتَرِكٌ ۖ هُوَ الَّذِي كَانُوا يَكْفُرُونَ ۚ
وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ أَجْرٌ غَيْرُ الْمُتَسَاوِينَ ۚ وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ عَذَابٌ مُّشْتَرِكٌ ۖ هُوَ الَّذِي كَانُوا يَكْفُرُونَ ۚ
وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ أَجْرٌ غَيْرُ الْمُتَسَاوِينَ ۚ وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ عَذَابٌ مُّشْتَرِكٌ ۖ هُوَ الَّذِي كَانُوا يَكْفُرُونَ ۚ
وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ أَجْرٌ غَيْرُ الْمُتَسَاوِينَ ۚ وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ عَذَابٌ مُّشْتَرِكٌ ۖ هُوَ الَّذِي كَانُوا يَكْفُرُونَ ۚ

पस्ती) देखोगे, न टीला (और बुलंदी), (१०७) उस दिन लोग एक पुकारने वाले के पीछे चलेंगे और उस की पैरवी से कतरा न सकोगे और खुदा के सामने आवाजें पस्त हो जाएंगी, तो तुम धीमी आवाज के सिवा कुछ न सुनोगे। (१०८) उस दिन (किसी की) सिफारिश कुछ फायदा न देगी, मगर उस शस्स की, जिसे खुदा इजाजत दे और उस की बात को पसन्द फरमाए। (१०९) जो कुछ उन के आगे है और जो कुछ उन के पीछे है, वह उस को जानता है और वह (अपने) इल्म से खुदा (के इल्म) पर एहाता नहीं कर सकते। (११०) और उस जिंदा व कायम के सामने मुंह नीचे हो जाएंगे और जिस ने जुल्म का बोझ उठाया, वह ना-मुराद रहा। (१११) और जो नेक काम करेगा और मोमिन भी होगा, तो उस को न जुल्म का डर होगा और न नुकसान का। (११२) और हमने उस को इसी तरह का अरबी कुरआन नाज़िल किया है और उस में तरह-तरह के डरावे बयान कर दिए हैं, ताकि लोग परहेज़गार बनें या खुदा उन के लिए नसीहत पैदा कर दे। (११३) तो खुदा जो सच्चा बादशाह है आलीक़दर है और कुरआन की वृथ्वा जो तुम्हारी तरफ भेजी जाती है, उस के पूरा होने से पहले कुरआन के (पढ़ने के) लिए जल्दी न किया करो और दुआ करो कि मेरे परवरदिगार मुझे और ज्यादा इल्म दे। (११४) और हमने पहले आदम से वायदालिया था, मगर वह (उसे) भूल गये और हमने उन में सन्न व सबात न देखा। (११५)★

और जब हमने फ़रिश्तों से कहा कि आदम के आगे सज्दा करो तो सब सज्दे में गिर पड़े मगर इब्लीस ने इंकार किया। (११६) हमने फ़रमाया कि आदम ! यह तुम्हारा और तुम्हारी बीवी का दुश्मन है, तो यह कहीं तुम दोनों को बहिश्त से निकलवा न दे, फिर तुम तक्लीफ में पड़ जाओ। (११७) यहां तुम को यह (आराम) है कि न भूखे रहो, न नंगे। (११८) और यह कि न प्यासे रहो और न धूप खाओ। (११९) तो शैतान ने उन के दिल में वस्वसा डाला और कहा कि आदम ! भला मैं तुम को (ऐसा) पेड़ बताऊं (जो) हमेशा की जिंदगी (का फल) दे और (ऐसी) बादशाहत कि कभी खत्म न हो। (१२०) तो दोनों ने उस पेड़ का फल खा लिया, तो उन पर उन की शर्मगाहें जाहिर हो गयीं और वे अपने (बदन) पर बहिश्त के पत्ते चिपकाने लगे और आदम ने अपने परवरदिगार के (हुक्म के) खिलाफ़ किया, तो (वे अपनी मंज़िल से) बे-राह हो गये। (१२१) फिर उन के परवरदिगार ने उन को नवाज़ा तो उन पर मेहरबानी से तबज्जोह फरमायी और सीधी राह बतायी। (१२२) फ़रमाया कि तुम दोनों यहां से नीचे उतर जाओ। तुम में कुछ कुछ के दुश्मन (होंगे), फिर अगर मेरी तरफ़ से तुम्हारे पास हिदायत आए तो जो शस्स मेरी हिदायत की पैरवी करेगा, वह न गुमराह होगा और न तक्लीफ़ में पड़ेगा। (१२३)

व मन् अञ्-र-ज्ज अन् जिबरी फइन्-न लहू मजी-श-तन् जन्क-व-व नहृशुरूह योमल्कियामति
अञ्-मा (१२४) का-ल रब्बि लि-म ह-शर्तनी अञ्-मा व कद् कुन्तु बसीरा (१२५)
का-ल कजालि-क अ-तत्-क आयातुना फ-नसीतहा व कजालिकल्-यो-म तुन्सा
(१२६) व कजालि-क नज्जी मन् अस्-र-फ व लम् युअमिम्-बिआयाति

रब्बिही ७ व ल - अजाबुल् - आखिरति
अ-शद्दु व अब्का (१२७) अ-फ लम् यहिद
लहुम् कम् अह-लक्-ना कब-लहुम् मिनल्कुरुनि
यम्शू-न फ्री मसाकिनहिम् ७ इन् - न फ्री
जालि-क लआयातिल्लिजलिन्नुहा ★ (१२८)

व लौला कलिमतुन् स-ब-क्त् मिररब्बि-क
ल-का-न लिजाम्व-व अ-ज-लुम् - मुसम्-म
(१२९) फस्बिर् अला मा यकूलू-न व
सब्बिह बिह्मिद रब्बि-क कब-ल तुलूअि-श-
शमिस् व कब् - ल गुरुबिहा व मिन्
आनाइल्लैलि फ-सब्बिह व अत-राफन्नहारि
ल-अल्ल-क तज्जा (१३०) व ला तमुद्-दन्-न
ऐनेक इला मा मत्तअ-ना बिही अज्वाजम्-

मिन्हुम् जह-र-तुल्-हयातिद्दुन्या ७ लिनफ्तिनहुम् फ्रीहि ७ व रिज्कु रब्बि - क
खैरुव-व अब्का (१३१) वअ्मुर् अह-ल-क बिस्सलाति वस्तबिर् अलेहा ७ ला
नस्-अलु-क रिज्-क्त् ७ नहृनु नरजुक्-क ७ वल्आकिबतु लिस्सक्वा (१३२) व
कालू लौला यअ-तीना बिआयतिम् - मिररब्बिही ७ अ - व लम् तअतिहिम्
बय्यिनतु मा फिस्सुहुफिल्-ऊला (१३३) व लो अन्ना अह - लकनाहुम्
बिअजाबिम् - मिन् कब्लिही ल - कालू रब्बना लौला असल - त इलैना
रसूलन् फ-नत्तबि - अ आयाति - क मिन् कब्लि अन् नजिल् - ल व
नख्जा (१३४) कुल् कुलुम् - मु - त - रब्बिसुन् फ - त - रब्बसु ७
फ-स-तअ-ल-मू-न मन् अस्हाबुस्-सिरातिस्सविद्यि व मनिहतदा ★ (१३५)



और जो मेरी नसीहत से मुंह फेरेगा, उसकी जिंदगी तंग हो जाएगी और क्रियामत को हम उसे अंधा कर के उठाएंगे (१२४) वह कहेगा कि मेरे परवरदिगार ! तू ने मुझे अंधा करके क्यों उठाया, मैं तो देखता-भालता था । (१२५) खुदा फरमाएगा कि ऐसा ही (चाहिए था) तेरे पास हमारी आयतें आयीं तो तू ने उनको भुला दिया, इसी तरह आज हम तुझको भुला देंगे । (१२६) और जो शरूस हृद से निकल जाए और अपने परवरदिगार की आयतों पर ईमान न लाए, हम उस को ऐसा ही बदला देते हैं और आखिरत का अज्ञाब बहुत सस्त और बहुत देर रहने वाला है । (१२७) क्या यह बात उन लोगों के लिए हिदायत की वजह न बनी कि हम उन से पहले बहुत से फ़िक्रों को हलाक कर चुके हैं, जिन के रहने की जगहों में ये चलते-फिरते हैं । अकल वालों के लिए इस में बहुत-सी निशानियां हैं । (१२८)★

और अगर एक बात तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से पहले ही से न होती और (आमाल के बदले के लिए) एक मीयाद मुकर्रर न हो चुकी होती तो अज्ञाब (का आना) जरूरी हो जाता । (१२९) पस जो कुछ ये बकवास करते हैं, उस पर सब करो और सूरज के निकलने से पहले और उस के डूबने से पहले अपने परवरदिगार की तस्बीह व तहमीद किया करो, और रात की (अब्बल) घड़ियों में भी उस की तस्बीह किया करो और दिन के किनारों (यानी दोपहर के करीब बृहर के वक़्त भी), ताकि तुम खुश हो जाओ । (१३०) और कई तरह के लोगों को, जो हमने दुनिया की (जिंदगी में) आराम की चीज़ों से नवाजा है, ताकि उन की आज्ञामाइश करें, उन पर निगाह न करना और तुम्हारे परवरदिगार की (दी हुई) रोज़ी बहुत बेहतर और बाक़ी रहने वाली है । (१३१) और अपने घर वालों को नमाज़ का हुक्म करो और उस पर कायम रहो । हम तुम से रोज़ी नहीं चाहते बल्कि तुम्हें हम रोज़ी देते हैं और (नेक) अंजाम तक्वा (वालों) का है । (१३२) और कहते हैं कि यह (पैगम्बर) अपने परवरदिगार की तरफ से हमारे पास कोई निशानी क्यों नहीं लाते, क्या उन के पास पहली किताबों की निशानी नहीं आयी ? (१३३) और अगर हम उन को पैगम्बर (के भेजने) से पहले किसी अज्ञाब से हलाक कर देते तो वे कहते कि ऐं हमारे परवरदिगार ! तू ने हमारी तरफ कोई पैगम्बर क्यों न भेजा कि हम जलील और रुसवा होने से पहले तेरे कलाम (व अहकाम) की पंरबी करते । (१३४) कह दो कि सब (आमाल के नतीजे के) इतिबार में हैं, सो तुम भी इतिबार में रहो । बहुत जल्द तुम को मालूम हो जाएगा कि (दीन के) सीधे रास्ते पर चलने वाले कौन हैं और (जन्नत की तरफ) राह पाने वाले कौन हैं (हम या तुम) ? (१३५)★

२१ सूरः अंबिया ७३

सूरः अंबिया मक्की है और इस में एक सौ बारह आयतें और सात रुकूअ हैं ।

भुरू खुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है ।

लोगों का (आमाल के) हिसाब (का वक्त) नज़दीक आ पहुंचा है और वे ग़फ़लत में (पड़े उस से) मुंह फेर रहे हैं । (१) उन के पास कोई नयी नसीहत उन के परवरदिगार की तरफ़ से नहीं आती, मगर वे उसे खेलते हुए सुनते हैं । (२) उन के दिल ग़फ़लत में पड़े हुए हैं और ज़ालिम लोग (आपस में) चुपके-चुपके बातें करते हैं कि यह (शरूब कुछ भी) नहीं, मगर तुम्हारे जैसा आदमी है तो तुम आंखों देखते जादू (की लपेट) में क्यों आते हो ? (३) (पैग़म्बर ने) कहा कि जो बात आसमान और ज़मीन में (कही जाती) है, मेरा परवरदिगार उसे जानता है और वह सुनने वाला (और) जानने वाला है । (४) बल्कि (ज़ालिम) कहने लगे कि (यह क़ुरआन) परेशान (बातें हैं, जो) ह्वाब (में देख ली) हैं, (नहीं) बल्कि उस ने इस को अपनी तरफ़ से बना लिया है, (नहीं) बल्कि यह (शेर है जो इस) शायर (का ह्वाला) है । तो जैसे पहले (पैग़म्बर निशानियां दे कर) भेजे गए थे (उसी तरह) यह भी हमारे पास कोई निशानी लाए । (५) इन से पहले जिन बस्तियों को हमने हलाक किया, वे ईमान नहीं लाती थीं, तो क्या ये ईमान ले आएंगे ? (६) और हमने तुम से पहले मर्द ही (पैग़म्बर बना कर) भेजे, जिन की तरफ़ हम बह्य भेजते थे । अगर तुम नहीं जानते तो जो याद रखते हैं, उन से पूछ लो । (७) और हमने उन के ऐसे जिस्म नहीं बनाए थे कि खाना न खाएं और न वे हमेशा रहने वाले थे । (८) फिर हमने उन के बारे में (अपना) वायदा सच्चा कर दिया तो उन को और जिस को चाहा, निजात दी और हृद से निकल जाने वालों को हलाक कर दिया । (९) हमने तुम्हारी तरफ़ ऐसी किताब नाज़िल की है, जिस में तुम्हारा तज़क़िरा है, क्या तुम नहीं समझते ? (१०) ✱

और हमने बहुत सी बस्तियों को जो ज़ालिम थीं, हलाक कर मारा और उन के बाद और लोग पैदा कर दिए । (११) जब उन्होंने ने हमारे अज़ाब (के मुक़दमे) को देखा, तो लगे उस से भागने । (१२) मत भागो और जिन (नेमतों) में तुम ऐश व आराम करते थे उन की ओर अपने घरों की तरफ़ लौट जाओ, शायद तुम से (इस बारे में) पूछा जाए । (१३) कहने लगे, हाय

१. यानी यह मुहम्मद पैग़म्बर तो हैं नहीं, तुम्हारे जैसे एक आदमी हैं और जो यह क़ुरआन सुनाते हैं, वह जादू है, जिस को सुन कर आदमी उस की तरफ़ झुक पड़ता है, तो तुम जान-बूझ कर उस के जादू में क्यों फंसते हो ?

शामत ! बेशक हम जालिम थे । (१४) तो वह हमेशा इसी तरह पुकारते रहे यहाँ तक कि हमने उन को (सेती की तरह) काट कर (और आग की तरह) झुला कर ढेर कर दिया । (१५) और हमने आसमान और जमीन को और जो (मल्लूकात) इन दोनों के दमियान है, उस को खेल-तमाशा के लिए पैदा नहीं किया । (१६) अगर हम चाहते कि खेल (की चीजें यानी बीबी व लड़के) बनाएं तो अगर हम को करना ही होता तो हम अपने पास से बना लेते । (१७) (नहीं), बल्कि हम सब को झूठ पर खींच भारते हैं, तो वह उस का सर तोड़ देता है और झूठ उसी वक्त नाबूद हो जाता है और जो बातें तुम बनाते हो, उन से तुम्हारी ही खराबी है । (१८) और जो लोग आसमानों में और जो जमीन में हैं, सब उसी की (मल्लूक और उसी का माल) हैं और जो (फ़रिश्ते) उस के पास हैं, वे उस की इबादत से न कतराते हैं और न उकताते हैं । (१९) रात-दिन (उस की) तस्बीह करते रहते हैं, (न थकते हैं), न थमते हैं । (२०) भला लोगों ने जो जमीन की चीजों से (कुछ को) माबूद बना लिया है (तो क्या) वह उन को (मरने के बाद) उठा खड़ा करेंगे ? (२१) अगर आसमान और जमीन में खुदा के सिवा और माबूद होते, तो जमीन व आसमान फ़साद से भर जाते । जो बातें ये लोग बताते हैं, अर्श का मालिक, खुदा उन से पाक है । (२२) वह जो काम करता है, उस की पूछ-ताछ नहीं होगी और (जो काम ये लोग करते हैं, उस की) उन से पूछ-ताछ होगी । (२३) क्या लोगों ने खुदा को छोड़ कर और माबूद बना लिए हैं कह दो कि (इस बात पर) अपनी दलील पेश करो । यह (मेरी और) मेरे साथ वालों की किताब भी है और जो मुझ से पहले (पंगम्बर) हुए हैं, उन की किताबें भी हैं, बल्कि (वात यह है कि) उन में अक्सर हक बात को नहीं जानते और इसलिए उस से मुंह फेर लेते हैं । (२४) और जो पंगम्बर हमने तुम से पहले भेजे, उन की तरफ़ यही वक्य भेजी कि मेरे सिवा कोई माबूद नहीं, तो मेरी ही इबादत करो । (२५) और कहते हैं कि खुदा बेटा रखता है, वह पाक है, (उस के न बेटा है, न बेटी है), बल्कि (जिन को ये लोग उस के बेटे-बेटियाँ समझते हैं) वे उस के इफ़्जत वाले बन्दे हैं । (२६) उस के आगे बढ़ कर बोल नहीं सकते और उस के हुक्म पर अमल करते हैं । (२७) जो कुछ उन के आगे हो चुका है और जो पीछे होगा, वह सब जानता है और वे (उस के पास किसी की) सिकारिश नहीं कर सकते, मगर उस शरस की, जिस से खुदा खुश हो और वे उस की

व मय्यकुल् मिन्हुम् इन्ती^१ इलाहुम्-मिन् हुनिही कज्जालि-क नज्जीहि जहन्न-म्
कज्जालि-क नज्जिज्ज-आलिमीन ★ (२६) अ - व लम् य-रल्लजी-न क-फह^१

अन्तस्-समावाति वल्-अ-ञ्ज कानता रत्-कन् फ्र-फ्र-तक्नाहुमा ७ व ज-अल्ना
मिनल्माइ कुल्-ल शैइत् हय्यिन् ७ अ-फला युअमिन्नून् (३०) व ज-अल्ना

फिल्अजि रवासि-य अन् तमी-द बिहिम्
व ज - अल्ना फ्रीहा फिजाजन् सबलल-

ल-अल्लहुम् यहूतदून (३१) व ज-अल्लहस्समा-अ
सक्फम् - महफूअंवह - व हम् अन्

आयातिहा मुअ - रिजून (३२) व
हुवल्लजी ख-ल-कल्लै-ल वन्नहा-र वशशम-स

वल्क-म-र७ कुल्लुत् फी. फ - लकिथ्यस्वहून्
(३३) व मा ज-अल्ना लिब-श-रिम्-मिन्

क्रान्तिकल् - खुल् - द ७ अ - फइम् - मित्त
फहुमुल्-खालिदून (३४) कुल्लु नफ्सिन्

जाइक-तुल् - मौति ॥ व नब्लकुम् बिषशरि
वल्सैरि फित्-न - तुन् ॥ व इलैना तुर्जअन

(३५) व इजा रआकल्लजी-न क-फर يَسْمَعُونَ وَلَقَدْ اسْتَمَعِيَ رَسُولٌ مِنْ قَوْمِكَ مَا كَانَ بِالْمَلِئِينَ
इंय्यत्तखिजून-क इल्ला हुजुवन् अ-हाजल्लजी यज्जुर् आलिह-तकुम् ७ व हुम्

बिखिररु - रहमानि हुम् काफिरून (३६) खुलिकल् - इन्सानु मिन्
अ-जलिन्, सउरीकुम् आयाती फ़ला, तस्तअज़िलून (३७) व यकूलून मता

हजल् वञ्-दु इन् कुन्तुम् सादिकान् (३८) ला यञ्-लमुल्कजी-न क-फह हा-न
ला यकुफ्फून अन्वुज्जहि-हिमुन्ना-र व ला अन् जुहूरिहिम् व ला हुम् युन्सून (३९)

बल् तञ्जतीहिम् बरत-तन् फ तब-हतुहुम् फ ला यस्ततीअून रद्दहा व ला हुम्
युञ्जरून (४०) व ल-कदिस्तुहिज्-अ बिरुमुलिम्-मिन् कबिल-क फहा-क

हेबत से डरते रहते हैं। (२८) और जो आदमी उन में से यह कहे कि खुदा के सिवा मैं मानूँ हूँ, तो उसे हम दोख़ की सज़ा देंगे और ज़ालिमों को हम ऐसी ही सज़ा दिया करते हैं। (२९)★

क्या काफ़िरों ने नहीं देखा कि आसमान और ज़मीन दोनों मिले हुए थे, तो हमने जुदा-जुदा कर दिया और तमाम जानदार चीज़ें हमने पानी से बनायीं, फिर ये लोग ईमान क्यों नहीं लाते ? (३०) और हमने ज़मीन में पहाड़ बनाये ताकि लोगों (के बोझ) से हिलने (और झुकने) न लगे और उस में कुशादा रास्ते बनाये, ताकि लोग उन पर चलें। (३१) और आसमान को महफूज़ छत बनाया, इस पर भी वे हमारी निशानियों से मुँह फेर रहे हैं। (३२) और वही तो है, जिस ने रात और दिन और सूरज और चांद को बनाया (ये) सब (यानी सूरज और चांद और सितारे) आसमान में (इस तरह चलते हैं, गोया) तैर रहे हैं। (३३) और (ऐ पेंगम्बर !) हमने तुम से पहले किसी आदमी को हमेशा की ज़िदगी नहीं बख़्शी, मला, अगर तुम मर जाओ तो क्या ये लोग हमेशा रहेंगे ।' (३४) हर नफ़्स को मौत का मज़ा चखना है और हम तुम लोगों को सक्ती और आसूदगी में आजमाइश के तौर पर डाल देते हैं और तुम हमारी तरफ़ ही लौट कर आओगे। (३५) और जब काफ़िर तुम को देखते हैं तो तुम्हारा मज़ाक़ उड़ाते हैं कि क्या यही अल्ल है जो तुम्हारे मानूँदों का ज़िक्र (बुराई से) किया करता है, हालाँकि वह खुद रहमान के नाम में मुक़िर है। (३६) इंसान (कुछ ऐसा जल्दबाज़ है कि गोया) जल्दबाज़ी ही से बनाया गया है। मैं तुम लोगों को बहुत जल्द अपनी निशानियाँ दिखाऊँगा, तो तुम जल्दी न करो। (३७) और कहते हैं कि अगर तुम सच्चे हो तो (जिस अज़ाब की) यह धमकी (है, वह) कब (आएगा) ? (३८) ऐ काश ! काफ़िर उस वक़्त को जानें, जब वे अपने मुँहों पर से (दोख़ की) आग को रोक न सकेंगे और न अपनी पीठों पर से और न उन का कोई मददगार होगा। (३९) बल्कि क्रियामत् उन पर यकायक आ बाक़ेअ होगी और उन के होश खो देगी, फिर न तो वे उस को हटा सकेंगे और न उन को मोहलत दी जाएगी। (४०) और तुम से पहले भी पेंगम्बरों के साथ मज़ाक़ होता रहा है, तो जो लोग उन में से मज़ाक़ किया करते थे, उन को उसी (अज़ाब) ने जिस की हंसी उड़ाते थे, आ घेरा। (४१)★

१. काफ़िर कहते थे कि जब मुहम्मद चल बसेंगे, तो इस्लाम का ख़ोर भी मिट जाएगा और ये सब ताम-शाम जाता रहेगा। जितनी यह धूम-धाम है, उन्हीं के दम से है। खुदा ने फ़रमाया कि ये लोग तुम्हारी मौत का इन्तिज़ार करते हैं, लेकिन तुम इन्तिक़ाल कर जाओगे, तो ये भी हमेशा नहीं रहेंगे, मौत इन को भी फ़ना कर देगी और तुम्हारे इन्तिक़ाल से इस्लाम क्यों नाबूद होने लगा, वह तुम्हारी ज़ात से मुताल्लिक नहीं है कि जब तक तुम्हारी ज़िदगी हो, तब तक उस की हस्ती हो, वह हमेशा रहेगा और कभी फ़ना होगा और हकीकत है कि इस्लाम आहंबरत के इन्तिक़ाल के बाद घटा नहीं, बल्कि दिन-ब-दिन बढ़ता गया और तमाम दुनिया में फैल गया और क्रियामत् तक रहेगा।

कहो कि रात और दिन में खुदा से तुम्हारी कौन हिफाजत कर सकता है ? बात यह है कि ये अपने परवरदिगार की याद से मुंह फेरे हुए हैं । (४२) क्या हमारे सिवा इन के और माबूद हैं कि इन को (मुसीबतों) से बचा सकें, वे आप अपनी मदद तो कर ही नहीं सकेंगे और न हम से पनाह ही दिए जाएंगे, (४३) बल्कि हम उन लोगों को और उन के बाप-दादा को नवाजते रहे, यहां तक कि (इसी हालत में) उन की उम्रें बसर हो गयीं । क्या ये नहीं देखते कि हम जमीन को उस के किनारों से घटाते चले आते हैं, तो क्या ये लोग गलबा पाने वाले हैं ।' (४४) कह दो कि मैं तुम को खुदा के हुक्म के मुताबिक नसीहत करता हूं और बहरों को जब नसीहत की जाए तो वे पुकार को सुनते ही नहीं । (४५) और अगर उन को तुम्हारे परवरदिगार का थोड़ा-सा अज्ञाब पहुंचे तो कहने लगें कि हाय कमबख्ती ! हम बेशक गुनाहगार थे । (४६) और हम क्रियामत के दिन इंसाफ़ की तराजू खड़ी करेंगे, तो किसी शल्स का ज़रा भी हक़ न मारा जाएगा और राई के दाने के बराबर भी (किसी का अमल) होगा तो हम उस को ला मौजूद करेंगे और हम हिसाब करने को काफ़ी हैं । (४७) और हमने मूसा और हारून को (हिदायत और गुमराही में) फ़र्क़ कर देने वाली और (मुकम्मल) रोशनी और नसीहत (की किताब) अता की (यानी) परहेज़गारों के लिए । (४८) जो बिन-देखे अपने परवरदिगार से डरते हैं और क्रियामत का भी डर रखते हैं । (४९) और यह मुबारक नसीहत है, जिसे हमने नाज़िल फ़रमाया है, तो क्या तुम इस से इंकार करते हो (५०) *● और हमने इब्राहीम को पहले ही से हिदायत दी थी और हम उन (के हाल) को जानते थे, (५१) जब उन्होंने ने अपने बाप और अपनी कौम के लोगों से कहा कि ये क्या भूलियां हैं जिन (की इबादत) पर तुम मोतकिफ़ (ब काइम) हो । (५२) वे कहने लगे कि हमने अपने बाप-दादा को उन की पूजा करते देखा है । (५३) (इब्राहीम ने) कहा कि तुम भी (गुमराह हो) और तुम्हारे बाप-दादा भी खुली गुमराही में पड़े रहे । (५४) वे बोले, क्या तुम हमारे पास (सच से) हक़ लाए हो या (हम से) खेल (की बातें) करते हो । (५५) (इब्राहीम ने) कहा,

१. हम घटाते चले आते हैं यानी अरब के मुल्क में मुसलमानी फैलने लगी है, कुफ़ कटने लगा ।

(नहीं), बल्कि तुम्हारा परवरदिगार आसमानों और ज़मीन का परवरदिगार है, जिसने उन को पैदा किया है और मैं इस (बात) का गवाह (और इसी का फ़ायल) हूँ। (५६) और खुदा की क्रम ! जब तुम पीठ फेर कर चले जाओगे, तो मैं तुम्हारे बुतों से एक चाल चलूंगा। (५७) फिर उन को तोड़ कर टुकड़े-टुकड़े कर दिया, मगर एक बड़े (बुत) को (न तोड़ा), ताकि वह उस की तरफ़ हज़ूअ करें। (५८) कहने लगे कि हमारे माबूदों के साथ यह मामला किस ने किया ? वह तो कोई ज़ालिम है। (५९) लोगों ने कहा कि हमने एक जवान को उन का ज़िक्र करते हुए सुना है, उसे इब्राहीम कहते हैं। (६०) वे बोले कि उसे लोगों के सामने लाओ ताकि वे गवाह रहें। (६१) (जब इब्राहीम आये तो बुतपरस्तों ने) कहा कि भला इब्राहीम ! यह काम हमारे माबूदों के साथ तू ने किया है ? (६२) (इब्राहीम ने) कहा, बल्कि यह उन के इन बड़े (बुत) ने किया (होगा) अगर ये बोलते हों तो इन से पूछ लो। (६३) उन्होंने अपने दिल में गौर किया, तो आपस में कहने लगे, बेशक तुम ही बे-इंसाफ़ हो। (६४) फिर (शर्मिन्दा हो कर) सर नीचा कर लिया, (इस पर भी इब्राहीम से कहने लगे कि) तुम जानते हो, ये बोलते नहीं। (६५) (इब्राहीम ने) कहा कि फिर तुम खुदा को छोड़ कर क्यों ऐसी चीज़ों को पूजते हो, जो न तुम्हें कुछ फ़ायदा दे सकें और न नुक़सान पहुंचा सकें ? (६६) अफ़सोस है तुम पर और जिन को तुम खुदा के सिवा पूजते हो उन पर ! क्या तुम अबल नहीं रखते ? (६७) (तब वे) कहने लगे कि अगर तुम्हें (इस से अपने माबूद का बदला लेना और) कुछ करना है तो उस को जला डालो और अपने माबूदों की मदद करो। (६८) हमने हुक्म दिया, ऐ आग ! सर्व हो जा और इब्राहीम पर सलामती (की वजह बन जा)। (६९) उन लोगों ने बुरा तो उन का चाहा था, मगर हमने उन्हीं को नुक़सान में डाल दिया। (७०) और इब्राहीम और लूत को उस धरती की तरफ़ बचा निकाला, जिस में हमने दुनिया वालों के लिए बरकत रखी थी। (७१) और हमने इब्राहीम को इस्लाम अता किए, और उस पर याक़ूब और सब को नेक किया। (७२) और उनको पेशवा बनाया कि हमारे हुक्म से हिदायत करते थे और उन को नेक काम करने और नमाज़ पढ़ने और ज़कात देने का हुक्म भेजा और वे हमारी इबादत

व लुतन् आतैनाहु हुकमव-व अल्मव-व नज्जेनाहु मिनल्-करयतिल्लती कानत्
तब्-मलुल् - खबाइ-स ७ इन्नुहुम् कानू क्री-म सोइत् फासिक्रीन ॥ (७४)
व अद्-खल्लाहु क्री रहमतिना ७ इन्नुह मिनस्सालिहीन * (७५) व नूहन्
इज् नादा मिन् कब्बु फस्-त-जब्ना लहू फ-नज्जेनाहु व अहलहू मिनल्-कबिल्-
अजीम ८ (७६) व न - सनाहु मिनल्-

क्रीमिल्लजी - न कज्जबू बिआयातिना ७

इन्नुहुम् कानू क्री-म सोइत् फ-अररकनाहुम्

अज्-मभीन (७७) व दावू-द व सुलैमा-न

इज् यहकुमानि फिलहसि इज् न-फ-शत्

क्रीहि ग - नमुल् - क्रीमि ८ व कुन्ना

लिहूक्मिहिम् शाहिदीन ॥ (७८)

फ-फह-हम्नाहा सुलैमा-न ८ व कुल्लन् आतैना

हुकमव - व अल्मव - व सरखर्ना म-अ

दावू-दल्-जिबा-ल युसब्बिहू-न वत्त-र ७ व

कुन्ना फाजिलीन (७९) व अल्लम्नाहु

सन्-अ-तु लबूसिल्लकुम् लितुहिसनकुम् मिम्-

बस्सिकुम् ८ फ-हल् अन्तुम् शाकिरून (८०) व लिसुलैमानर् - री - ह

आसि-फ - तन् तजरी बिअमिरही इलल् - अज्जिल्लती बारकना क्रीहा ७ व

कुन्ना बिकुल्लि शैइन् आलिमीन (८१) व मिनश्-शयातीनि मय्यगूसू-न

लहू व यज्-मलू-न अ-म-लन् दून जालि-क ८ व कुन्ना लहुम् हाफिजीन ॥

(८२) व अय्यू-व इज् नादा रब्बहू अन्नी मस्सनियज्जुहू व अन्-त

बरहूमर् - राहिमीन ८ (८३) फस्त - जब्ना लहू फ - क - शफ्ना मा

बिही मिन् ज़ुरि-व आतैनाहु अह-लहू व मिस-लहुम् म-अहुम् रह-म-तुम्-

मिन् अन्दिना व जिकरा लिल्आबिदीन (८४) व इस्माअी - ल व

इद्री - स व जल्किफिल ७ कुल्लुम् - मिनस्साबिरीन ८ (८५)



किया करते थे। (७३) और लूत (का क्रिस्ता याद करो जब उन) को हमने हुकम (यानी हिक्मत व नुबूत) और इल्म बरूशा और उस वस्ती से, जहां के लोग गन्दे काम किया करते थे, बचा निकाला। बेशक वे बुरे और बद-किरदार लोग थे। (७४) और उन्हें अपनी रहमत (के महल) में दाखिल किया। कुछ शक नहीं कि वे नेक किरदारों में थे। (७५)★

और नूह का (क्रिस्ता भी याद करो) जब (इस से) पहले उन्होंने हमें पुकारा तो हमने उन को दुआ कुबूल फरमायी और उन को और उन के साथियों को बड़ी घबराहट में निजात दी। (७६) और जो लोग हमारी आयतों को झुठलाते थे, उन पर नुसरत बरूशी। वे बेशक बुरे लोग थे, सो हमने उन सब को डुबो दिया। (७७) और दाऊद और सुलेमान (का हाल भी सुन लो कि) जब वे एक खेती का मुकदमा फ़ैसला करने लगे, जिस में कुछ लोगों की बकरियां रात को चर गयीं (और उसे रौंद गयी) यीं और हम उन के फ़ैसले के वक्त मौजूद थे। (७८) तो हमने फ़ैसला (करने का तरीका) सुलेमान को समझा दिया और हमने दोनों को हुकम (यानी हिक्मत व नुबूत) और इल्म बरूशा था। और हमने पहाड़ों को दाऊद का ताबेअ कर दिया था कि उन के साथ तस्बीह करते थे और जानवरों को भी (ताबेअ) कर दिया था और हम ही (ऐसा) करने वाले थे। (७९) और हमने तुम्हारे लिए उन को एक (तरह का) लिबास बनाना भी सिखा दिया, ताकि तुम को लड़ाई (के नुस्सान) से बचाए, पस तुम को शुक्रगुजार होना चाहिए। (८०) और हमने तेज हवा सुलेमान के (फ़रमान के) ताबेअ कर दी थी, जो उन के हुकम से उस मुल्क में चलती थी, जिस में हमने बरकत दी थी (यानी शाम) और हम हर चीज से खबरदार हैं। (८१) और देवों (की जमाअत को भी उन के ताबेअ कर दिया था कि उन) में से कुछ उन के लिए गोते मारते थे और इस के सिवा और काम भी करते थे और हम उन के निगहबान थे। (८२) और अब्यूब (को याद करो,) जब उन्हें अपने परवरदिगार से दुआ की कि मुझे तकलीफ़ हो रही है और तू सब से बढ़ कर रहम करने वाला है। (८३) तो हमने दुआ कुबूल कर ली और जो उन को तकलीफ़ थी, वह दूर कर दी और उन को बाल-बच्चे भी अता फ़रमाये और अपनी मेहरबानी से उन के साथ उतने ही और (बरूशे) और इबादत करने वालों के लिए (यह) नसीहत है। (८४) और इस्माईल और इद्रीस जुलक़िफ़ल (को भी याद करो), ये सब सब करने वाले थे। (८५)

१. हज़रत इब्ने अब्बास से रिवायत है कि हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम का यह फ़ैसला कि बकरियां खेती वालों को दिसवा दी, हज़रत सुलेमान अलै० को चरवाहों से यह हाल मालूम हुआ तो उन्होंने कहा कि अगर मैं तुम्हारा मुकदमा फ़ैसला करता तो कुछ और फ़ैसला करता। यह ख़बर हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम को हुई तो उन्होंने हज़रत सुलेमान को बुला कर कहा कि तुम इस मुकदमे का क्या फ़ैसला करते हो। उन्होंने कहा कि मेरा फ़ैसला यह है कि खेती वालों को बकरियां दिलायी जाएं कि उन के दूध वहीरह से फ़ायदा उठाएं और बकरियों के मालिक खेती में बीज डालें और खेती करें। जब खेती इस हालत में हो जाए, जिस हालत में पहले थी तो उस को खेती वाले से लें और बकरियां उन के मालिकों को वापस कर दी जाएं।

व अद - खल्लाहुम् फी रह्मतिना ७ इन्नहुम् मिनस् - सालिहीन (८६)
 व जन्नूनि इज् ज-ह-ब मुगाज़िबन् फ-अन-न अल्लन् नकिद-र अलैहि फनादा
 फिज्जुलुमाति अल् - ला इला - ह इल्ला अन्-त सुब्हा-न-क इन्नी कुन्तु
 मिनज्जालिमीन ८ (८७) फस्-त - जब्ना लहू ७ व नज्जनाहु मिनल्-गम्मि

व कजालि-क नुज्जिल्-मुअ्मिनीन (८८)

व ज-करिया इज् नादा रब्बहू रब्बि ला

त-जर्नी फर्-दव्-व अन्-त खैल्-वारिसीन ८

(८९) फस्-त-जब्ना लहू ७ व व-हब्ना लहू

यह्या व अस् - लह्ना लहू जौजहू ८

इन्नहुम् कानू युसारिअ-न फिल्लैराति व

यदअूनना र-ग-बव्-व रह-बन् ८ व कानू लना

खाशिअीन (९०) वल्लती अह-स-नत्

फज्हा फ-न-फरना फीहा मिर्रहिना व

ज-अल्नाहा वब-नहा आयतल्-लिआलमीन

(९१) इन - न हाजिही उम्मतुकुम्

उम्मतुब्वाहि-द - तव्-व अ-न रब्बुकुम्

फअ-बुद्दुन (९२) व त-कत्तअ् अम्-रहुम्

बेनहुम् ८ कुल्लुन् इलैना राजिअून (९३)

सालिहाति व हु-व मुअ्मिनुन् फला कुफरा-न लिसअ्-यिही ८ व इन्ना लहू

कातिबून (९४) व हुरामुन् अला कर-यतिन् अह-लकनाहा अन्नहुम् ला

यजिअून (९५) हत्ता इजा फुतिहत् यअजूज व मअजूज व हुम् मिन्

कुल्लि ह-दबिय्यन्सिलून (९६) वक्त-र-बल्-वअ-दुल्-हक्कु फ-इजा हि - य

शाखि-सतुन् अब्सारल्लजी-न क-फरू ८ यावैलना कद् कुन्ना फी गफ-लतिम्-

मिन् हाजा बल् कुन्ना आलिमीन (९७) इन्नकुम् व मा तअ-बुद्दुन मिन्

दुनिल्लाहि ह-सबु जहन्न-म ८ अन्तुम् लहा वारिद्दुन (९८) लौ कान

हाउलाइ आलि-ह - तम् - मा व - रद्दाह ८ व कुल्लुन् फीहा सालिद्दुन

(९९) लहूम् फीहा अफ्रीह-व-व हुम् फीहा ला यस् - मअून (१००)

الْمُؤْمِنِينَ ۝ وَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ ۚ إِنَّكَ أَتَىٰ عِلْمَ رَبِّكَ أَكْثَرُ ۝
 وَاتَّبِعْ سَبِيلَ الْمُؤْمِنِينَ ۝ إِنَّ هَٰذَا أُمَّتُكَ أُمَّةً وَاحِدَةً ۖ إِنَّمَا فَتَنَّ الَّذِينَ مِن دُونِهِمْ ۚ فَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ ۚ إِنَّكَ أَتَىٰ عِلْمَ رَبِّكَ أَكْثَرُ ۝
 وَاتَّبِعْ سَبِيلَ الْمُؤْمِنِينَ ۝ إِنَّ هَٰذَا أُمَّتُكَ أُمَّةً وَاحِدَةً ۖ إِنَّمَا فَتَنَّ الَّذِينَ مِن دُونِهِمْ ۚ فَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ ۚ إِنَّكَ أَتَىٰ عِلْمَ رَبِّكَ أَكْثَرُ ۝
 وَاتَّبِعْ سَبِيلَ الْمُؤْمِنِينَ ۝ إِنَّ هَٰذَا أُمَّتُكَ أُمَّةً وَاحِدَةً ۖ إِنَّمَا فَتَنَّ الَّذِينَ مِن دُونِهِمْ ۚ فَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ ۚ إِنَّكَ أَتَىٰ عِلْمَ رَبِّكَ أَكْثَرُ ۝
 وَاتَّبِعْ سَبِيلَ الْمُؤْمِنِينَ ۝ إِنَّ هَٰذَا أُمَّتُكَ أُمَّةً وَاحِدَةً ۖ إِنَّمَا فَتَنَّ الَّذِينَ مِن دُونِهِمْ ۚ فَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ ۚ إِنَّكَ أَتَىٰ عِلْمَ رَبِّكَ أَكْثَرُ ۝
 وَاتَّبِعْ سَبِيلَ الْمُؤْمِنِينَ ۝ إِنَّ هَٰذَا أُمَّتُكَ أُمَّةً وَاحِدَةً ۖ إِنَّمَا فَتَنَّ الَّذِينَ مِن دُونِهِمْ ۚ فَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ ۚ إِنَّكَ أَتَىٰ عِلْمَ رَبِّكَ أَكْثَرُ ۝
 وَاتَّبِعْ سَبِيلَ الْمُؤْمِنِينَ ۝ إِنَّ هَٰذَا أُمَّتُكَ أُمَّةً وَاحِدَةً ۖ إِنَّمَا فَتَنَّ الَّذِينَ مِن دُونِهِمْ ۚ فَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ ۚ إِنَّكَ أَتَىٰ عِلْمَ رَبِّكَ أَكْثَرُ ۝
 وَاتَّبِعْ سَبِيلَ الْمُؤْمِنِينَ ۝ إِنَّ هَٰذَا أُمَّتُكَ أُمَّةً وَاحِدَةً ۖ إِنَّمَا فَتَنَّ الَّذِينَ مِن دُونِهِمْ ۚ فَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ ۚ إِنَّكَ أَتَىٰ عِلْمَ رَبِّكَ أَكْثَرُ ۝
 وَاتَّبِعْ سَبِيلَ الْمُؤْمِنِينَ ۝ إِنَّ هَٰذَا أُمَّتُكَ أُمَّةً وَاحِدَةً ۖ إِنَّمَا فَتَنَّ الَّذِينَ مِن دُونِهِمْ ۚ فَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ ۚ إِنَّكَ أَتَىٰ عِلْمَ رَبِّكَ أَكْثَرُ ۝
 وَاتَّبِعْ سَبِيلَ الْمُؤْمِنِينَ ۝ إِنَّ هَٰذَا أُمَّتُكَ أُمَّةً وَاحِدَةً ۖ إِنَّمَا فَتَنَّ الَّذِينَ مِن دُونِهِمْ ۚ فَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ ۚ إِنَّكَ أَتَىٰ عِلْمَ رَبِّكَ أَكْثَرُ ۝
 وَاتَّبِعْ سَبِيلَ الْمُؤْمِنِينَ ۝ إِنَّ هَٰذَا أُمَّتُكَ أُمَّةً وَاحِدَةً ۖ إِنَّمَا فَتَنَّ الَّذِينَ مِن دُونِهِمْ ۚ فَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ ۚ إِنَّكَ أَتَىٰ عِلْمَ رَبِّكَ أَكْثَرُ ۝
 وَاتَّبِعْ سَبِيلَ الْمُؤْمِنِينَ ۝ إِنَّ هَٰذَا أُمَّتُكَ أُمَّةً وَاحِدَةً ۖ إِنَّمَا فَتَنَّ الَّذِينَ مِن دُونِهِمْ ۚ فَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ ۚ إِنَّكَ أَتَىٰ عِلْمَ رَبِّكَ أَكْثَرُ ۝

और हमने उन को अपनी रहमत में दाखिल किया। बेशक वह नेक थे। (८६) और जुन्नून (को याद करो), जब वह (अपनी कौम से नाराज हो कर) गुस्से की हालत में चल दिए और क्याल कि हम उन पर काबू नहीं पा सकेंगे, आखिर अंधेरे में (खुदा को) पुकारने लगे कि "तेरे सिवा कोई माबूद नहीं। तू पाक है" (और) बेशक मैं क़ूसूरवार हूँ। (८७) तो हमने उन की दुआ क़बूल कर ली और उन को ग़म से निजात बरूथी। और ईमान वालों को हम इसी तरह निजात दिया करते हैं। (८८) और ज़करीया (को याद करो), जब उन्होंने अपने परवरदिगार को पुकारा कि परवरदिगार! मुझे अकेला न छोड़ और तू सब से बेहतर वारिस है। (८९) तो हमने उन की पुकार सुन ली और उनको यह्या बरूथे और उन की बीबी को औलाद के काबिल बना दिया। ये लोग लपक-लपक कर नेकियां करते और हमें उम्मीद और डर से पुकारते और हमारे आगे आजिबी किया करते थे। (९०) और उन (मरयम) को (भो याद करो), जिन्होंने अपनी पाकदामनी को बचाए रखा, तो हमने उन में अपनी रूह फूक दी और उन को और उन के बेटे को दुनिया वालों के लिए निशानी बना दिया। (९१) यह तुम्हारी जमाअत एक ही जमाअत है, और मैं तुम्हारा परवरदिगार हूँ, तो मेरी ही इबादत किया करो। (९२) और ये लोग अपने मामले में आपस में बंट गये (मगर) सब हमारी तरफ़ रुजूअ करने वाले हैं। (९३)★

जो नेक काम करेगा और मोमिन भी होगा, तो उस की कोशिश बेकार न जाएगी और हम उस के लिए (आमाल का सवाब) लिख रहे हैं। (९४) और जिस बस्ती (वालों) को हमने हलाक कर दिया, महाल है कि (रुजूअ करें) वह रुजूअ नहीं करेंगे। (९५) यहां तक कि याज़ूज और माज़ूज खोल दिए जाएं और वे हर बुलंदी से दौड़ रहे हों। (९६) और (क्रियामत का) सच्चा वायदा करीब आ जाए, तो यकायक काफ़िरों की आंखें खुली की खुली रह जाएं (और कहने लगें कि) हाय! शामत हम इस (हाल) से ग़फ़लत में रहे, बल्कि हम (अपने हक़ में) ज़ालिम थे। (९७) (काफ़िरो! उस दिन) तुम और जिन की तुम खुदा के सिवा इबादत करते हो, दोज़ख़ का इंधन होंगे (और) तुम (सब) उस में दाखिल हो कर रहोगे। (९८) अगर ये लोग (हकीकत में) माबूद होते तो उस में दाखिल न होते, सब उस में हमेशा (जलते) रहेंगे। (९९) वहा उन को चिल्लाना होगा और उस में (कुछ) न सुन सकेंगे। (१००) जिन लोगों के लिए हमारी तरफ़ से पहले भलाई मुकर्रर हो चुकी है, वे इस से दूर रखे जाएंगे। (१०१) (यहां तक कि) उस

१. रुजूअ न करने के दो मानी हो सकते हैं—एक तो यह कि क्रियामत से पहले दुनिया की तरफ़ रुजूअ न करेंगे, दूसरे यह कि खुदा की तरफ़ रुजूअ यानी तौबा न करेंगे।

इन्नल्लजी-न स-ब-कत् लहुम् मिन्नल्-हुत्ना ॥ उलाइ-क अन्हा मुब् - अदून ॥
 (१०१) ला यस् - मअून-न हसीसहा ८ व हुम् फी मश-त-हत् अन्फुसुहुम्
 खालिदून ८ (१०२) ला यहजुनुहुमुल्-फ-ज-अल्-अकबर व त-त-लक्काहुमुल्-
 मलाइकतु ८ हाजा योमुकुमुल्लजी कुन्तुम् तू-अदून (१०३) यो-म नत्विस्-

समा-अ क-तथियस् - सिजिल्लि लिल्कुतुबि
 कमा ब-दअूना अव्व-ल खल्किन् नुजीदुह
 वअू-दन् अलैना ८ इन्ना कुन्ना फाअिलीन
 (१०४) व ल-कद् क-तब्ना फिज्जबूरि मिम्-
 बअू-दिज्जिकिर अन्नल्-अर-ज यरिसुहा अिबादियस्-
 सालिहून (१०५) इन् - न फी हाजा
 ल-ब-लागल्-लिकौमिन् आबिदीन ८ (१०६)
 व मा असल्ला-क इल्ला रहू-म-तुल्-
 लिल्आलमीन (१०७) कुल् इन्नमा यूहा
 इलय-य अन्नमा इलाहुकुम् इलाहु ब्वाहिदुन् ८
 फ-हल् अन्तुम् मुस्लिमून (१०८) फ-इन्
 त-वल्लौ फकुल् अज्जन्तुकुम् अला सवाइत् ८
 व इन् अद्री अ-करीबुत् अम् बजीदुम्मा तू-अदून (१०९) इन्नहू यअ-लमुल्-
 जहूर मिनल्कौलि व यअ-लमु मा तक्-तुमून (११०) व इन् अद्री ल-अल्लहू
 फित-नतुल् - लकुम् व मताअुन् इला हीन (१११) का-ल रब्बिहकुम्
 बिल्हक्कि ८ व रब्बुन-र-रहमानुल् - मुस्तआनु अला मा तसिफून ★● (११२)

وَقُلْ هَٰذَا لَا يَأْتِيَنَّكُمْ ۖ إِنَّ الدِّينَ سَبَقَ لَكُمْ وَمَا الْمُشْرِكُونَ
 إِلَيْكَ عَنْهَا يَتَّبِعُونَ ۖ لَا يَأْتِيَنَّكُمْ حِسَابُهَا وَظَرْفُ مَا
 أَفْقَتِ الْكُفْرَ خَلِدُونَ ۖ لَا يَحْزَنُهُمُ الْفَرْدُ الْآلِ وَتَكْلَفُهُمُ
 الْمَكِيلَةُ ۖ هَٰذَا يَوْمُكُمُ الَّذِي كُنْتُمْ تُوعَدُونَ ۖ يَوْمَ نَطْوِي
 السَّمَاءَ كَطَيِّ السِّجِلِّ لِلْكُفْبِ ۖ مَا بَدَأْنَا أَوَّلَ خَلْقٍ يُوعَدُ ۖ وَعَآ
 عَلَيْنَا أَكَا فُتُونِ ۖ وَلَقَدْ كَفَبْنَا فِي الْآيَاتِ مِنْ بَعْدِ الْآيَةِ
 أَنْ الْأَرْضُ نَبْهَآ عِبَادِي الظَّالِمُونَ ۖ إِنَّ فِي هَٰذَا لَبَآئِلَ الْقُرْ
 ْآنِ ۖ هَٰذَا أَرْسَلْنَاكَ بِالْحَقِّ بِنُورٍ ۖ قُلْ إِنِّي أَنَا
 إِلَهٌ لَا أُشْرِكُ بِهِ أَحَدٌ ۖ قُلْ إِنَّمَا كُنْتُ نَذِيرٌ ۖ وَإِنْ تَوَلَّوْا
 فَقُلْ أَذْنُكُمْ عَلَى سَوَاءٍ ۖ وَلَنْ أَدْرِي أَلِغَرِيبٍ أَمْ يَجِيبُ ۖ مَا
 أَوْعَدُونَ ۖ إِنَّهُمْ يَعْلَمُونَ الْجَهَنَّمَ مِنَ الْقَوْلِ وَيَعْلَمُونَ أَكْثَرُونَ ۖ
 وَلَنْ أَدْرِي أَلَمَآ فُتِنَ أَكُفْرًا ۖ وَإِلَىٰ جَهَنَّمَ ۖ قُلْ إِنِّي أَعْلَمُ
 بِالشَّقِ ۖ وَإِنَّ الْإِنْسَانَ لِرَبِّهِ لَكَنَّاظِرٌ ۖ عَلَىٰ مَا تُحِثُّونَ
 فِيهِ ۖ يَوْمَ السَّجْدِ ۖ مَلَأْنَا مِنْ دُونِهَا ۖ وَسَيَعْلَمُ الْيَوْمَ الَّذِي يَكْفُرُونَ
 بِشَرِّ اللَّهِ الْخَيْرَ ۖ مِنَ الرِّجْسِ ۖ يَوْمَ
 لَا يَكُنُ لِلنَّاسِ قُوَّةٌ أَكْثَرُ ۖ إِنَّ زَلْزَلَةَ السَّاعَةِ ۖ وَفِي هَٰذَا
 يَوْمَ تَرَوْنَهَا تَذْهَلُ كُلُّ مُرْضِعَةٍ عَنَّا أَرْضُهَا وَرُكْعَتَانِ ۖ وَنَضَعُ كُلَّ

२२ सूरतुल्-हज्जि १०३

(मदनी) इस सूर: में अरबी के ५४३२ अक्षर, १२८३ शब्द, ७८ आयतें और १० हकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर-रहमानिर-रहीम •

या अय्युहन्नासुत्तक् रब्बकुम् ८ इन्-न जल्-ज-ल-तस् - साअति शंउत्
 अजीम (१) यो-म तरीनहा तज्जहलु कुल्लु मुज्जि-अतिन् अम्मा अज्ज-अत्
 व त-ज-अ कुल्लु जाति-हम्मिन् हम - लहा व त - रन्ना - स सुकारा
 व मा हुम् बिसुकारा व लाकिन् - न अजाबल्लाहि शदीद (२)

की आवाज भी तो नहीं सुनेंगे और जो कुछ उन का जी चाहेगा उस में (यानी हर तरह के ऐश और मजे में) हमेशा रहेंगे। (१०२) उन को (इस दिन का) बड़ा भारी खौफ़ गमगीन नहीं करेगा और फ़रिश्ते उन को लेने आएंगे (और कहेंगे कि) यही वह दिन है, जिस का तुम से वायदा किया जाता था। (१०३) जिस दिन हम आसमान को इस तरह लपेट लेंगे, जैसे खतों का तूमार लपेट लेते हैं, जिस तरह हमने (काइनात) को पहले पैदा किया था, उसी तरह दोबारा पैदा कर देंगे। (यह) वायदा (है जिस का पूरा करना) ज़रूरी है। हम ऐसा ज़रूर करने वाले हैं। (१०४) और हमने नसीहत (की किताब यानी तोरात) के बाद ज़बूर में लिख दिया था कि मेरे नेक बन्दे मुल्क के वारिस होंगे, (१०५) इबादत करने वाले लोगों के लिए इस में (खुदा के हुक्मों की) तब्लीग़ है। (१०६) और (ऐ मुहम्मद!) हमने तुम को तमाम दुनिया के लिए रहमत बना कर भेजा है। (१०७) कह दो कि मुझ पर (खुदा की तरफ़ से) यह बख़्त आती है कि तुम सब का माबूद एक खुदा है, तो तुम को चाहिए कि फ़रमांबरदार हो जाओ। (१०८) अगर ये लोग मुंह फेरें तो कह दो कि मैं ने तुम सब को एक जैसे (खुदा के हुक्मों से) आगाह कर दिया है और मुझ को मालूम नहीं कि जिस चीज़ का तुम से वायदा किया जाता है, वह (बहुत) जल्द (आने वाली) है। (उस का वक़्त) दूर है। (१०९) जो बात पुकार कर की जाए, वह उसे भी जानता है और जो तुम छिपा कर करते हो, उसे भी जानता है। (११०) और मैं नहीं जानता शायद वह तुम्हारे लिए आजमाइश हो और एक मुद्दत तक (तुम उस से) फ़ायदा (उठाते रहो)। (१११) (पैगम्बर ने) कहा कि ऐ मेरे परवरदिगार! हज़क के साथ फ़ैसला कर दे और हमारा परवरदिगार बड़ा मेहरबान है, उसी से उन बातों में जो तुम बयान करने हो, मदद मांगी जाती है। (११२) ★●

२२ सूर: हज्ज १०३

सूर: हज्ज मदनी है और इस में ७८ आयतें और दस रुकूअ हैं।

शुरू खुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

लोगो! अपने परवरदिगार से डरो कि क्रियामत का जलजला एक बड़ा हादिसा है। (१) (ऐ मुखातब!) जिस दिन तू उस को देखेगा, (उस दिन यह हाल होगा कि) तमाम दूध पिलाने वाली औरतें अपने बच्चों को भूल जाएंगी और तमाम हमल बालियों के हमल गिर पड़ेंगे और लोग तुझ को मतवाले नज़र आएंगे, मगर वे मतवाले नहीं होंगे, बल्कि (अज्ञाब देख कर मदहोश हो रहे

होने)। बेशक खुदा का अज्ञाब सक्षत है। (२) और कुछ लोग ऐसे हैं जो खुदा (की शान) में इल्म (और सूझ-बूझ) के बगैर झगड़ते और हर शैतान-सरकश की पैरबी करते हैं। (३) जिस के बारे में सिख दिया गया है कि जो उसे दोस्त रखेगा तो वह उस को गुमराह कर देगा और दोजख के अज्ञाब का रास्ता दिखाएगा। (४) लोगो! अगर तुम को (मरने के बाद) जी उठने में कुछ शक हो तो हमने तुम को (पहली बार भी तो) पैदा किया था, (यानी शुरू में) मिट्टी से, फिर उस से नुत्का बना कर, फिर उस से खून का लोथड़ा बना कर, फिर उससे बोटी बना कर, जिसकी बनावट पूरी भी होती है और अधूरी भी, ताकि तुम पर अपना 'पैदा करने वाला' होना जाहिर कर दे और हम जिस को चाहते हैं एक मुकर्रर मीआद तक पेट में ठहराए रखते हैं, फिर तुम को बच्चा बनाकर निकालते हैं, फिर तुम जवानी को पहुंचते हो और कुछ (बुढ़ापे से पहले) मर जाते हैं और कुछ (बूढ़े खूसट हो जाते और बुढ़ापे की) बहुत खराब उम्र की तरफ लौटाए जाते हैं कि (बहुत कुछ) जानने के बाद बिल्कुल बे-इल्म हो जाते हैं और (ऐ देखने वाले!) तू देखता है (कि एक वक्त में) जमीन सूखी (पड़ी होती है), फिर जब हम उस पर मेंह बरसाते हैं तो वह हरी-भरी हो जाती है और उमरने लगती है और तरह-तरह की रौनकदार चीजें उगाती है। (५) इन कुदरतों से जाहिर है कि खुदा ही (सब कुछ कुदरत रखने वाला है, जो) बरहक है और यह कि वह मुद्ों को ज़िदा कर देता है और यह कि वह हर चीज पर कुदरत रखता है। (६) और यह कि क्रियामत आने वाली है। इस में कुछ शक नहीं और यह कि खुदा सब लोगों को, जो क़ब्रों में हैं, जिला उठाएगा। (७) और लोगों में कोई ऐसा भी है जो खुदा (की शान) में बगैर इल्म (बे दानिश) के और बगैर हिदायत के और बगैर रोशन किताब के झगड़ता है। (८) (और घमंड से) गरदन मोड़ लेता (है) ताकि (लोगों को) खुदा के रास्ते से गुमराह कर दे, उस के लिए दुनिया में खिल्लत है और क्रियामत के दिन हम उसे जलती (आग के) अज्ञाब का मजा चखाएंगे। (९)

(ऐ सरकश !) यह उस (कुफ़) की सजा है, जो तेरे हाथों ने आगे भेजा है और खुदा अपने बन्दों पर जुल्म करने वाला नहीं ★ (१०) और लोगों में कोई ऐसा भी है जो किनारे पर (खड़ा हो कर) खुदा की इबादत करता है। अगर उस को कोई (दुनिया का) फ़ायदा पहुंचे तो उस की बजह से मुतमइन हो जाए और अगर कोई आफ़त आ पड़े तो मुह के बल लोट जाए (यानी फिर काफ़िर हो जाए)। उस ने दुनिया में भी नुक़सान उठाया और आखिरत में भी यही तो खुला नुक़सान है। (११) यह खुदा के सिवा ऐसी चीज़ को पुकारता है, जो न उसे नुक़सान पहुंचाए और न फ़ायदा दे सके, यही तो परले दर्जे की गुमराही है। (१२) (बल्कि) ऐसे शक़््स को पुकारता है, जिस का नुक़सान फ़ायदे से ज़्यादा करीब है, ऐसा दोस्त भी बुरा और ऐसा साथी भी बुरा। (१३) जो लोग ईमान लाए और नेक अमल करते रहे, खुदा उन को बहिश्तों में दाख़िल करेगा, जिन के नीचे नहरें चल रही हैं। कुछ शक़ नहीं कि खुदा जो चाहता है, करता है। (१४) जो आदमी यह गुमान करता हो कि खुदा उस को दुनिया और आखिरत में मदद नहीं देगा, तो उस को चाहिए कि ऊपर की तरफ़ (यानी अपने घर की छत में) एक रस्सी बांधे फिर (उस से अपना) गला घोंट ले, फिर देखे कि क्या यह तद्बीर उस के गुस्से को दूर कर देती है। (१५) और इसी तरह हमने इस कुरआन को उतारा है (जिस की तमाम) बातें खुली हुई (हैं) और यह (याद रखो) कि खुदा जिस को चाहता है, हिदायत देता है। (१६) जो लोग मोमिन (यानी मुसलमान) हैं और जो यहूदी हैं और सितारापरस्त और ईसाई और मजूसी और खुदा के मुश्रिक, इन (सब) में क्रियामत के दिन फ़ैसला कर देगा। बेशक़ खुदा हर चीज़ से बा-ख़बर है। (१७) क्या तुम ने नहीं देखा कि जो (मख़्लूक) आसमानों में है और जो ज़मीन में है और सूरज और चांद और सितारे और पहाड़ और पेड़ और चारपाए और बहुत से इंसान खुदा को सज्दा करते हैं और बहुत से ऐसे हैं, जिन पर अज़ाब साबित हो चुका है और जिस आदमी को खुदा ज़लील करे, उस को कोई इफ़जत देने वाला नहीं। बेशक़ खुदा जो चाहता है, करता है □ (१८) ये दो (फ़रीक़) एक दूसरे के दुश्मन अपने परवरदिगार (के बारे) में झगड़ते हैं, तो जो काफ़िर हैं उन के लिए आग के कपड़े काटे जाएंगे (और) उन के सरों पर जलवा हुआ पानी डाला जाएगा। (१९) इस से उन के पेट के

अन्दर की चीजें और खालें गल जाएंगी। (२०) और उन (के मारने-ठोकने) के लिए लोहे के हथोड़े होंगे। (२१) जब वे चाहेंगे कि इस रंज (व तमलीक की वजह) से बोझ से निकल जाएं, तो फिर उसी में लौटा दिए जाएंगे और (कहा जाएगा कि) जलने के अज़ाब का मज़ा चखते रहो। (२२)★

जो लोग ईमान लाए और नेक अमल करते रहे, खुदा उन को बहिस्तों में दाखिल करेगा, जिन के तले नहरें बह रही हैं। वहां उन को सोने के कंगन पहनाए जाएंगे और मोती, और वहां उन का लिबास रेशमी होगा। (२३) और उन को पाक कलाम की हिदायत की गयी और (खुदा-ए-) हमीद की राह बतायी गयी। (२४) जो लोग काफ़िर हैं और (लोगों को) खुदा के रास्ते से और मस्जिदें मोहतरम से, जिसे हमने लोगों के लिए एक जैसी (इबादतगाह) बनाया है, रोकते हैं, चाहे वे वहां के रहने वाले हों या बाहर से आने वाले और जो इस में शरारत से टेढ़ा रास्ता (और कुफ़) अपनाना चाहे, उस को हम दर्द देने वाले अज़ाब का मज़ा चखाएंगे★ (२५) और (एक वक़्त था) जब हमने इब्राहीम के लिए खाना-काबा को मक़ाम मुक़र्रर किया (और इशार्द फ़रमाया) कि मेरे साथ किसी चीज़ को शरीक न कीजियो और तवाफ़ करने वालों और क्रियाम करने वालों और रुकूअ करने वालों (और) सज्दा करने वालों के लिए मेरे घर को साफ़ रखा करो। (२६) और लोगों में हज़ के लिए निदा कर दो कि तुम्हारी तरफ़ पैदल और दुबले-दुबले अंठों पर, जो दूर (-दूर के) रास्तों से चले आते हों, (सवार हो कर) चले आएँ, (२७) ताकि अपने फ़ायदे के कामों के लिए हाज़िर हों और (कुर्बानी के) मालूम दिनों में चारपायों (के जिन्ह के वक़्त) जो खुदा ने उन को दिए हैं, उन पर खुदा का नाम लें। उस में से तुम खुद भी खाओ और हवे-कुचले फ़कीर को भी खिलाओ। (२८) फिर चाहिए कि लोग अपना मेल-कुचैल दूर करे और नज़रें पूरी करें और पुराने घर (यानी बैतुल्लाह) का तवाफ़ करें। (२९) यह (हमारा हुक्म है) और जो शल्ल अदब की चीज़ों की, जो खुदा ने मुक़र्रर की हैं अज़मत रखे, तो यह परवरदिगार के नज़दीक उस के हक़ में बेहतर है और तुम्हारे लिए मवेशी हलाल कर दिए गए हैं, सिवा उन के जो तुम्हें पड़ कर मुनाए जाते हैं तो कुत्तों की पत्नीदी से बचो और मूठी बात से बचो, (३०)

सिर्फ़ एक खुदा के हो कर और उस के साथ शरीक न ठहरा कर और जो शल्स (किसी को) खुदा के साथ शरीक मुकर्रर करे, तो वह गोया ऐसा है जैसे आसमान से गिर पड़े, फिर उस को परिदे उचक ले जाए या हवा किसी दूर जगह उड़ा कर फेंक दे। (३१) यह (हमारा हुक्म है) और जो शल्स अदब की चीजों की, जो खुदा ने मुकर्रर की हैं, अचमत रखे, तो यह (काम) दिलों की परहेज़गारी में से है। (३२) उन में एक मुकर्रर वक्त तक तुम्हारे लिए फ़ायदे हैं, फिर उन को पुराने घर (यानी बेतुलाह) तक पहुंचना (और ज़िन्ह होना) है। (३३)★

और हम ने हर एक उम्मत के लिए कुर्बानी का तरीका मुकर्रर कर दिया है, ताकि जो मवेशी चारपाए खुदा ने उन को दिए हैं, (उन के ज़िन्ह करने के वक्त) उन पर खुदा का नाम लें, सो तुम्हारा माबूद एक ही है, तो उसी के फ़रमांबरदार हो जाओ और आजिज़ी करने वालों को खुश-ख़बरी सुना दो। (३४) ये वह लोग हैं कि जब खुदा का नाम लिया जाता है, तो उन के दिल डर जाते हैं और (जब) उन पर मुसीबत पड़ती है, तो सन्न करते हैं और नमाज़ आदाब से पढ़ते हैं और जो (माल) हम ने उन को अता फ़रमाया है, उस में से (नेक कामों में) खर्च करते हैं। (३५) और कुर्बानी के ऊंटों को भी हम ने तुम्हारे लिए 'खुदा शायर' मुकर्रर किया है। उन में तुम्हारे लिए फ़ायदे हैं, तो (कुर्बानी करने के वक्त) क़तार बांध कर उन पर खुदा का नाम लो। जब पहलू के बल गिर पड़ें तो उन में से खाओ और (क्रनाअत) से बैठ रहने वालों और सवाल करने वालों को भी खिलाओ। इस तरह हम ने उन को तुम्हारे ताबेअ कर दिया है, ताकि तुम शुक्र करो। (३६) खुदा तक न उन का गोशत पहुंचता है और न खून, बल्कि उस तक तुम्हारी परहेज़गारी पहुंचती है। इसी तरह खुदा ने उन को तुम्हारा ताबेअ कर दिया है, ताकि इस बात के बदले कि तुम को हिदायत ब्रह्मी है, उसे बुजुर्गी से याद करो और (ऐ पैग़म्बर!) नेकों को खुशख़बरी सुना दो। (३७) खुदा तो मोमिनों से उन के दुश्मनों को हटाता रहता है। बेशक खुदा किसी ख़ियानत करने वाले और नेमत को ठुकराने वाले को दोस्त नहीं रखता। (३८)★●

जिन मुसलमानों से (खामखाह) लड़ाई की जाती है, उन को इजाज़त है (कि वे भी लड़ें), क्योंकि उन पर जुल्म हो रहा है और खुदा (उन की मदद करेगा, वह) यकीनन उन की मदद पर

कुदरत रखता है। (३६) ये वह लोग हैं कि अपने घरों से ना-हक निकाल दिए गए, (उन्होंने ने कुछ कुसूर नहीं किया) हां, यह कहते हैं कि हमारा परवरदिगार खुदा है और अगर खुदा लोगों को एक-दूसरे से न हटाता रहता तो (राहिबों के) पूजा-घर और (ईसाइयों के) गिरजे और (यहूदियों की) और (मुसलमानों की) मस्जिदें, जिन में खुदा का बहुत-सा जिक्र किया जाता है, गिराये जा चुकी होतीं। और जो शरूस खुदा की मदद करता है, खुदा उस की जरूर मदद करता है। बेशक खुदा ताकत वाला और शालिब है। (४०) तो ये लोग हैं कि अगर हम उन को मुल्क में गलबा दें तो नमाज पढ़ें और जकात अदा करें और नेक काम करने का हुक्म दें और बुरे कामों से बचना करें और सब कामों का अंजाम खुदा ही के अस्तियार में है। (४१) और अगर ये लोग तुम को झुठलाते हैं, तो उन से पहले नूह की क्रौम और आद और समूद भी (अपने पैगम्बरों को) झुठला चुके हैं, (४२) और इब्राहीम की क्रौम और लूत की क्रौम भी, (४३) और मदन के रहने वाले भी और मूसा भी तो झुठलाए जा चुके हैं, लेकिन मैं काफ़िरो को मोहलत देता रहा, फिर उन को पकड़ लिया, तो (देख लो कि) मेरा अज़ाब कैसा (सल्ल) था। (४४) और बहुत-सी बस्तियां हैं कि हम ने उन को तबाह कर डाला था कि वे ना-फ़रमान थीं, सो वे अपनी छतों पर गिर पड़ी हैं और (बहुत से) कुएं बेकार और (बहुत से) महल वीरान (पड़े हैं)। (४५) क्या उन लोगों ने मुल्क में सैर नहीं की, ताकि उनके दिल ऐसे होते कि उन से समझ सकते और कान (ऐसे) होते कि उन से सुन सकते। बात यह है कि आंख अंधी नहीं होतीं, बल्कि दिल, जो सीनों में हैं, (वे) अंधे होते हैं। (४६) और (ये लोग) तुम से अज़ाब के लिए जल्दी कर रहे हैं और खुदा अपना वायदा हर गिज़ खिलाफ़ नहीं करेगा और बेशक तुम्हारे परवरदिगार के नज़दीक एक दिन तुम्हारे हिसाब के मुताबिक़ हजार वर्ष के बराबर है। (४७) और बहुत-सी बस्तियां हैं कि मैं उन को मोहलत देता रहा और वे ना-फ़रमान थीं। फिर मैं ने उन को पकड़ लिया और मेरी ही तरफ़ लौट कर आना है। (४८)★

(ऐ पैगम्बर !) कह दो कि लोगो ! मैं तुम को खल्लम-खल्ला नसीहत करने वाला हूं। (४९)

तो जो लोग ईमान लाए और नेक काम किए, उन के लिए बलिशश और आबरू की रोज़ी है। (५०)

और जिन लोगों ने हमारी आयतों में (अपने झूठे गुमान में) हमें आजिज करने के लिए कोशिश की, वे दोखल वाले हैं। (५१) और हम ने तुम से पहले कोई रसूल और नबी नहीं भेजा, मगर (उस का यह हाल था कि) जब वह कोई आरजू करता था तो शैतान उस की आरजू में (वस्वसा) डाल देता था, तो जो (वस्वसा) शैतान डालता है, खुदा उस को दूर कर देता है, फिर खुदा अपनी आयतों को मजबूत कर देता है और खुदा इल्म (और) हिक्मत वाला है। (५२) गरज (इस से) यह है कि जो (वस्वसा) शैतान डालता है, उस को उन लोगों के लिए, जिन के दिलों में बीमारी है और जिन के दिल सलत हैं, आजमाइश का जरिया ठहराए। बेशक ज़ालिम परले दर्जे की मुखालफ़त में हैं। (५३) और यह भी गरज है कि जिन लोगों को इल्म अता हुआ है, वे जान लें कि वह (यानी वह) तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से हक़ है, तो वह इस पर ईमान लाएं और उन के दिल खुदा के आगे आजिजी करें और जो लोग ईमान लाए हैं, खुदा उन को सीधे रास्ते की तरफ़ हिदायत करता है। (५४) और काफ़िर लोग हमेशा इससे शक में रहेंगे, यहां तक कि क्रियामत उन पर अचानक आ जाए या एक ना-मुबारक दिन का अज़ाब उन पर अचानक आ वाक़ेअ हो। (५५) उस दिन बादशाही खुदा ही की होगी (और) वह उन में फ़ैसला कर देगा, तो जो लोग ईमान लाए और नेक अमल करते रहे, ये नेमत के बाग़ों में होंगे। (५६) और जो काफ़िर हुए और हमारी आयतों को झुठलाते रहे, उन के लिए ज़लील करने वाला अज़ाब होगा। (५७) ★

और जिन लोगों ने खुदा की राह में हिजरत की, फिर मारे गये या मर गये, उन को खुदा अच्छी रोज़ी देगा और बेशक खुदा सब से बेहतर रोज़ी देने वाला है। (५८) वह उन को ऐसी जगह दाख़िल करेगा, जिसे वे पसंद करेंगे और खुदा तो जानने वाला (और) बुर्दबार है। (५९) यह (बात खुदा के यहां ठहर चुकी है) और जो शल्स (किसी को) उतनी ही तकलीफ़ दे, जितनी तकलीफ़ उस को दी गयी, फिर उस शल्स पर ज्यादाती की जाए, तो खुदा उस की मदद करेगा। बेशक खुदा माफ़ करने वाला (और) बरूशने वाला है। (६०) यह इस लिए कि खुदा रात को दिन में दाख़िल करता है और दिन को रात में दाख़िल करता है और खुदा तो सुनने वाला, देखने

जालि-क बि-अन्नल्ला-ह हुवल्-हक्कु व अन्-न मा यद्-अ-न मिन्-ह निही हुवल्वातिनु

व अन्नल्ला-ह हुवल्-अलिय्युल्-कबीर (६२) अ-लम् त-र अन्नल्ला-ह अन्ज-ल

मिनस्समा-इ मा-अन् फ - तुस्बिहल्-अर-जु मुहज्जर-तन् ष इन्नल्ला-ह लतीफुन्

खबीर (६३) लहू मा फिस्समावाति व मा फिल्-अजिज ष इन्नल्ला-ह

लहुवल्-गनिय्युल् - हमीद (६४) अ-लम्

त-र अन्नल्ला-ह सहख-र लकुम् मा फिल्-अजिज

वल्फुल् - क तजरी फिल्वहिर बिअमिरही

व युम्सिकुस्समा-अ अन् त-क-अ अ-लल्-अजिज

इल्ला बिइज्जिनी ष इन्नल्ला - ह बिन्नासि

ल - रऊफुरहीम (६५) व हुवल्लजी

अह-याकुम् सुम् - म युमीतुकुम् सुम्-म

युह्यीकुम् ष इन्ल् - इन्सा - न ल - कफूर

(६६) लिकुल्लि उम्मतिन् ज - अल्ना

मन्-स-कन् हुम् नासिकूहु फला युनाजिअन्न-क

फिल्-अमिर वद्-अ इला रब्बि-क ष इन्न-क

ल-अला हुदम्-मुस्तकीम (६७) व इन् जादलू-क फकुलिल्लाहु

तअ-मलून (६८) अल्लाहु यद्कुमु वैनकुम् यौमल्-क्रियामति

फ्रीहि तख-तलिफून (६९) अ-लम् तअ-लम् अन्नल्ला-ह यअ-लमु

मा फिस्समा-इ

वल्-अजिज ष इन्-न जालि-क फ्री किताबिन् ष इन्-न जालि-क अ-लल्लाहि

यसीर

(७०) व यअ-बुद्द-न मिन् इन्निल्लाहि मा लम् युनजिजल् बिही सुल्तानव्-व

मा लै-स लहुम् बिही अल्मुन् ष मा लि-ज्जालिमी-न मिन् नसीर (७१)

وَيُؤَيِّدُ الْفَكَارَ فِي السَّيْلِ وَأَنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ۝ ذَٰلِكَ
بِأَنَّ اللَّهَ هُوَ الْحَقُّ وَأَنَّ مَا يُدْعَوْنَ مِنْ دُونِهِ مُوْتَابِعُونَ
وَأَنَّ اللَّهَ هُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيرُ ۝ أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ أَنزَلَ مِنَ
السَّمَاءِ مَاءً فَخَسِبَهُ الْأَرْضُ خَضِرَةً إِنَّ اللَّهَ لَكَلِيمٌ
عَلِيمٌ ۝ لَهُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۝ وَإِلَى
اللَّهِ الْمَوَاقِبُ ۝ الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي هُوَ لَكُمْ رَءِيسٌ
فِي الْأَرْضِ وَالْعَالَمِ ۝ يَخْرِقُ الْحَبَّ وَالْعُيُودَ ۝ وَيَسْخَرُ
أَن تَقْعَ عَلَى الْأَرْضِ إِلَّا بِإِذْنِهِ ۝ إِنَّ اللَّهَ بِالسَّكِينِ لَرَوٌّ
وَجِيدٌ ۝ وَهُوَ الَّذِي أَنشَأَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ ۝ لَوْ
لَا الْإِنْسَانُ لَكَفَرٌ ۝ وَلَٰكِن مَّا جَعَلْنَا نَسُوا شُكْرَهُمْ
لَا يَذْكُرُوا ۝ فَذَكِّرْ إِلَىٰ رَبِّكَ ۝ إِنَّكَ لَعَلَّ هَٰذَا
مُنشَوْرٌ ۝ وَإِنْ جَدَدْتُمْ فَقُلِ اللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا تَعْمَلُونَ ۝
اللَّهُ يَمْشِي بَيْنَ يَدَيْكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۝ يَوْمَ الْقِيَامَةِ
أَلَمْ تَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ ۝ إِنَّ
ذَٰلِكَ فِي كِتَابٍ ۝ إِنَّ ذَٰلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ ۝ وَيَعْبُدُونَ مِنْ
دُونِ اللَّهِ مَا لَمْ يَنْزِلْ بِهِ سُلْطَانٌ ۝ وَمَا لَيْسَ لَهُمْ بِهِ
عِلْمٌ ۝ وَمَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ نَّصِيرٍ ۝ وَإِذَا نَسِلَ عَلَيْكُمْ

वाला है। (६१) यह इस लिए कि खुदा ही बरहक है और जिस चीज को (काफिर) खुदा के सिवा पुकारते हैं, वह झूठ है और इस लिए कि खुदा बड़ी शान वाला और बड़ा है। (६२) क्या तुम नहीं देखते कि खुदा आसमान से मेंह बरसाता है, तो जमीन हरी-भरी हो जाती है। बेशक खुदा मेहरबान और सबरदार है। (६३) जो कुछ आसमान में है और जो कुछ जमीन में है, उसी का है और बेशक खुदा बे-नियाज (और) तारीफ के काबिल है। (६४) ★

क्या तुम नहीं देखते कि जितनी चीजें जमीन में हैं (सब) खुदा ने तुम्हारे ताबेअ कर रखी हैं और कश्तियां (भी) जो उसी के हुक्म से दरिया में चलती हैं और वह आसमान को थामे रहता है कि जमीन पर (न) गिर पड़े, मगर उस के हुक्म से। बेशक खुदा लोगों पर बहुत शफ़क़त करने वाला मेहरबान है। (६५) और वही तो है जिस ने तुम को ज़िदगी दी, फिर तुम को मारता है, फिर तुम्हें ज़िदा भी करेगा और इन्सान तो (बड़ा) ना-शुक्रा है। (६६) हम ने हर एक उम्मत के लिए एक शरीअत मुकर्रर कर दी, जिस पर वे चलते हैं तो ये लोग तुम से इस मामले में झगड़ा न करें और तुम (लोगों को) अपने परवरदिगार की तरफ़ बुलाते रहो। बेशक तुम सीधे रास्ते पर हो। (६७) और अगर ये तुम से झगड़ा करें, तो कह दो कि जो अमल तुम करते हो, खुदा उन को खूब जानता है। (६८) जिन बातों में तुम इस्तिनाफ़ करते हो, खुदा तुम में क्रियामत के दिन उन का फ़सला कर देगा। (६९) क्या तुम नहीं जानते कि जो कुछ आसमान और जमीन में है, खुदा उस को जानता है। यह (सब कुछ) किताब में (लिखा हुआ) है। बेशक यह सब खुदा को आसान है। (७०) और (ये लोग) खुदा के सिवा ऐसी चीजों की इबादत करते हैं, जिन की उस ने कोई संनद नाज़िल नहीं फ़रमायी और न उन के पास इस की कोई दलील है और जालिमों का कोई भी मददगार नहीं

होगा। (७१) और जब उन को हमारी आयतें पढ़ कर सुनायी जाती हैं, तो (उन की शकल बिगड़ जाती है और) तुम उन के चेहरों में साफ तौर पर ना-खुशी (की निशानियां) देखते हो। क़रीब होते हैं कि जो लोग उन को हमारी आयतें पढ़ कर सुनाते हैं, उन पर हमला कर दें। कह दो कि तुम को इस से भी बुरी चीज़ बताऊं! वह (दोज़ख़ की) आग है, जिस का खुदा ने काफ़िरों से वायदा किया है और वह बुरा ठिकाना है। (७२)★

लोगो! एक मिसाल बयान की जाती है, उसे ग़ौर से सुनो कि जिन लोगों को तुम खुदा के सिवा पुकारते हो, वे एक मक्खी भी नहीं बना सकते, अगरचे उस के लिए सब जमा हो जाएं और अगर उन से मक्खी कोई चीज़ छीन ले जाए तो उसे उस से छुड़ा नहीं सकते। तालिब और मल्लूब (यानी आबिद और माबूद दोनों) गये-गुजरे हैं। (७३) इन लोगों ने खुदा की क़द्र जैसी करनी चाहिए थी, नहीं की, कुछ शक नहीं कि खुदा ज़बरदस्त (और) ग़ालिब है। (७४) खुदा फ़रिश्तों में से पैग़ाम पहुंचाने वाले चुन लेता है और इंसानों में से भी, बेशक़ खुदा सुनने वाला (और) देखने वाला है। (७५) जो उन के आगे है और जो उन के पीछे है, वह इसे जानता है और सब लोगों का रुज़ूअ खुदा ही की तरफ़ है। (७६) मोमिनो! रुज़ूअ करते और सज्दे करते और अपने घर-परिवार की इबादत करते रहो और नेक काम करो ताकि कामियाबी पाओ। (७७) और खुदा (की राह) में जिहाद करो, जैसा जिहाद करने का हक़ है। उस ने तुम को चुन लिया है और तुम पर दीन (की किसी बात) में तंगी नहीं की (और तुम्हारे लिए) तुम्हारे बाप इब्राहीम का दीन (पसंद किया) उसी ने पहले (यानी पहली किताबों में) तुम्हारा नाम मुसलमान रखा था और इस किताब में भी (वही नाम रखा है, तो जिहाद करो) ताकि पैग़म्बर तुम्हारे बारे में गवाह हों और तुम लोगों के मुक़ाबले में गवाह हो और नमाज़ पढ़ो और ज़कात दो और जुदा (के दीन की रस्सी) को पकड़ो रहो। वही तुम्हारा दोस्त है और ख़ूब मददगार है। (७८)★

अठारहवां पारः कद अफ-ल-हल् मुअमिनू-न

२३ सूरतुल्-मुअमिनू-न ७४

(मक्की) इस सूरः में अरबी के ४५३८ अक्षर, १०७० शब्द, ११८ आयतें और ६ रकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम •

कद अफ-ल-हल्-मुअमिनून् ॥ (१) अल्लजी-न हुम् फ्री सुलातिहिम्
खाशिअून ॥ (२) वल्लजी-न हुम् अनिल्लमिन् मुअरिजून ॥ (३) ॥ वल्लजी-न हुम्
लिफ्रज्जाति फाअिलून ॥ (४) वल्लजी-न हुम् लिफ्रज्जिहिम् हाफिजून ॥ (५)
इल्ला अला अन्वाजिहिम् ओ मा म-ल-कत् एमानुहुम् फ-इन्नहुम् गैर

मलूमौन ॥ (६) फ-मनिब्ता वराअ जालि-क
फ-उलाइ-क हुमुल्आदून ॥ (७) वल्लजी-न
हुम् लि-अमानाति - हिम् व अहिदहिम्
राअून ॥ (८) वल्लजी-न हुम् अला

स-ल-वातिहिम् युहाफिजून ॥ (९) उलाइ-क
हुमुल् - वारिसून ॥ (१०) अल्लजी-न

यरिसूनल् - फिर्दौ - स ७ हुम् फ्रीहा
खालिदून ॥ (११) व ल-कद् ख-लक्नल्-इन्सान

मिन् सुलालतिम् - मिन् तीन ॥ (१२)
सुम्-म ज-अल्नाहु नुत-फ-तन् फ्री करारिम्-

मकीन ॥ (१३) सुम् - म ख-लक्न-न न
नुत-फ-त अ-ल-क-तन् फ-ख-लक्नल्-अ-ल-क-त

मुज्-ग-तन् फ-ख-लक्नल्-मुज्-ग-त अजामन्
फ-कसौनल्-अजाम लह् - मन् ७ सुम् - म

अन्शअनाहु खल्कन् आख-र ७ फ-त-बा-र-कल्लाहु अह्सनुल्-खालिक्नीन ७ (१४)
सुम्-म इन्नकुम् बअ-द जालि-क ल-मय्यितून ७ (१५) सुम्-म इन्नकुम् यौमल्-

क्रियामति तुब-असून ॥ (१६) व ल-कद् ख-लक्ना फौककुम् सब-अ तराइ-क
व मा कुन्ना अनिल्लखलिक् गाफिलीन ॥ (१७) व अन्जल्ना मिनस्समाइ

मा-अम् - बि-क - दरिन् फ-अस्कन्नाहु फिल्अजि ७ व इन्ना अला जहाबिम्-
बिही लक्कादिहून ॥ (१८) फ-अन्शअना लकुम् बिही जन्नातिम्मिन् नखीलिब-व
अअ-नाबिन् लकुम् फ्रीहा फवाकिहु कसीरतु व-व मिन्हा तअ-कुलून ॥ (१९)



२३ सूर: मुअ्मिनून ७४

सूर: मुअ्मिनून मक्की है और इस में एक सौ अठारह आयतें और छः रुकूअ हैं।

सुरू खुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

बेशक ईमान वाले कामियाब हो गये, (१) जो नमाज़ में इज्ज व नियाज़ करते हैं, (२) और जो बेहूदा बातों से मुंह मोड़े रहते हैं, (३) और जो ज़कात अदा करते हैं, (४) और जो अपनी शर्मगाहों की हिफाज़त करते हैं, (५) मगर अपनी बीवियों से या (बांदियों से), जो उन की मिल्कियत होती है कि (उन से सोहबत करने से) उन्हें मलामत नहीं, (६) और जो इन के सिवा औरों के तालिब हों, वे (खुदा की मुकर्रर की हुई) हद से निकल जाने वाले हैं, (७) और जो अमानतों और इकरारों का ध्यान करते हैं, (८) और जो नमाज़ों की पाबंदी करते हैं, (९) यही लोग मीरास हासिल करने वाले हैं। (१०) (यानी) जो बहिश्त की मीरास हासिल करेंगे (और) उस में हमेशा रहेंगे। (११) और हम ने इन्सान को मिट्टी के खुलासे से पैदा किया है। (१२) फिर उस को एक मजबूत (और महफूज़) जगह में नुत्फा बना कर रखा। (१३) फिर नुत्फे का लोथड़ा बनाया, फिर लोथड़े की बोटी बनायी, फिर बोटी की हड्डियां बनायीं, फिर हड्डियों पर गोश्त (-पोस्त) चढ़ाया, फिर उस को नयी सूरत में बना दिया, तो खुदा जो सब से बेहतर बनाने वाला, बड़ा बरकत वाला है। (१४) फिर इस के बाद तुम मर जाते हो। (१५) फिर क्रियामत के दिन उठा खड़े किये जाओगे। (१६) और हम ने तुम्हारे ऊपर (की तरफ़) सात आसमान पैदा किए और हम खल्क़त से शक्ति नहीं हैं। (१७) और हम ही ने आसमान से एक अन्दाजे के साथ पानी उतारा, फिर उस को ज़मीन में ठहरा दिया और हम उस के ताबूद कर देने पर भी क़ादिर हैं। (१८) फिर हम ने उस से तुम्हारे लिए ख़जूरों और अंगूरों के बाग़ बनाए, उन में तुम्हारे लिए बहुत-ने मेवे पैदा होते हैं

१. 'खुलासा' 'मुलासा' का तर्जुमा है। मुलासा उस को कहते हैं, जो किसी चीज़ के साफ़ और खालिस करने से उस में से निकालते हैं और वही खुलासा है और उसी को पल कहते हैं।

व श-ज-र-तत् तखरुज् मिन्-तूरि सैना-अ तम्बुतु बिद्दुहिन् व सिबगिल्लि-
आकिलीन (२०) व इन्-न लकुम् फिल-अन्आमि ल-अब्-र-तत् ७ नुस्कीकुम्
मिम्मा फी बुतूनिहा व लकुम् फीहा मनाफिअु कसी-रतु व-व मिन्हा तअकुलून
(२१) व अलैहा व अ-लल्फुल्लि तुह्मलून ★ (२२) व ल-कद् असल्ला

नूहन् इला कोमिही फ - का - ल या

कोमिअ-बुदुल्ला-ह मा लकुम् मिन् इलाहिन्

गैरूह ७ अ-फला तत्तकून (२३) फ-कालल-

म-ल-उल्लजी-न क-फरू मिन् कोमिही मा हाजा

इल्ला ब - श-रम् - मिस्तुकुम् ७ युरीदु

अय्य-त-फज्ज-ल अलैकुम् ७ व लौ शा-अल्लाहु

ल - अन्ज - ल मलाइक - तम् ७ मा

समिअ - ना बिहज्जा फी आबाइनल् -

अब्बलीन ७ (२४) इन् हु - व इल्ला

रजुलुम्-बिही जिन्नतुन् फ-त-रब्बस् बिही

हत्ता हीन (२५) का-ल रब्बिन्सुर-नी

बिमा कज्जबून (२६) फ-औहिना इलैहि

अनिस्-नअल्-फुल-क बि-अ-युनिना व वहियना

फ - इजा जा-अ अम्हना व फारतन्नूर ७

फस्तुक फीहा मिन् कुल्लिन् जौजेनिस्नेनि व अह-ल-क इल्ला मन् स-ब-क

अलैहिल्-क्रौलु मिन्हुम् ७ व ला तुखातिब्नी फिल्लजी - न अ-लम् ७ इन्नुहम्

मुरकून (२७) फ-इजस्तवै-त अन्-त व मम्-म-अ-क अ-लल्फुल्लि फकुल्लि-

हम्दु लिल्लाहिल्लजी नज्जाना मिनल्-कोमिअ्जालिमीन (२८) व कुरैबि

अन्जिल्ली मुन्-ज-लम्-मुबारकव-व अन्-त खैरल्-मुन्जिलीन (२९) इन्-न फी

जालि-क लआयातिव-व इन् कुन्ना लमुत्तलीन (३०) सुम्-म अन्शअना मिम्-

बअ-दिहिम् कर-नन् आखरीन ७ (३१) फ-असल्ला फीहिम् रसूलम्-मिन्हुम्

अनिअ-बुदुल्ला-ह मा लकुम् मिन् इलाहिन् गैरूह ७ अ-फला तत्तकून ★ (३२)

व कालल्-मल-उ मिन् कोमिहिल्लजी-न क-फरू व कज्जबू बिलिकाइल्-आखिरति

व अत-रफनाहुम् फिल-हयातिदुन्या ७ मा हाजा इल्ला ब-श-रम् - मिस्तुकुम् ७

यअकुलु मिम्मा तअकुलू - न मिन्हु व यशरबु मिम्मा तशरबून (३३)



और उनमें से तुम खाते हो। (१९) और वह पेड़ भी (हम ही ने पैदा किया) जो तूरे सैना में पैदा होता है (यानी ज़ंतून का पेड़ कि) खाने के लिए रोगन और सालन लिए हुए उगता है। (२०) और तुम्हारे लिए चारपायों में भी इब्रत (और निशानी) है कि जो उन के पेटों में है, उस से हम तुम्हें (दूध) पिलाते हैं और तुम्हारे लिए उन में (और भी) बहुत से फ़ायदे हैं और कुछ को तुम खाते भी हो। (२१) और उन पर और कश्तियों पर तुम सवार होते हो। (२२)★

और हम ने नूह को उन की क़ौम की तरफ़ भेजा, तो उन्होंने उन से कहा कि ऐ क़ौम ! खुदा ही की इबादत करो, उस के सिवा तुम्हारा कोई माबूद नहीं, क्या तुम डरते नहीं ? (२३) तो उनकी क़ौम के सरदार जो काफ़िर थे, कहने लगे कि यह तो तुम ही जैसा आदमी है, तुम पर बड़ाई हासिल करना चाहता है और अगर खुदा चाहता तो फ़रिश्ते उतार देता। हम ने अपने अगले बाप-दादा में तो यह बात कभी सुनी नहीं। (२४) इस आदमी को जो दीवानगी (का मरज़) है, तो इसके बारे में कुछ मुद्त इन्तिज़ार करो। (२५) (नूह ने) कहा कि परवरदिगार। उन्होंने ने मुझे झुठलाया है, तो मेरी मदद कर। (२६) पस हम ने उन की तरफ़ वह्य भेजी है कि हमारे सामने और हमारे हुक्म से एक क़स्ती बनाओ। फिर जब हमारा हुक्म आ पहुंचे और तनूर (पानी से भर कर) जोश मारने लगे तो सब (क़िस्म के जानवरों) में से जोड़ा-जोड़ा (यानी नर और मादा) दो-दो क़स्ती में बिठा लों और घर वालों को भी, सिवा उन के, जिन के बारे में उन में से (हलाक होने का) हुक्म पहले (लागू) हो चुका है और ज़ालिमों के बारे में हमसे कुछ न कहना। वे ज़रूर डुबो दिए जाएंगे। (२७) और जब तुम और तुम्हारे साथी क़स्ती में बैठ जाओ तो (खुदा का शुक्र करना और) कहना कि तारीफ़ खुदा ही के लिए है, जिस ने हम को ज़ालिम लोगों से निजात बरूशी। (२८) और (यह भी) दुआ करना कि ऐ परवरदिगार ! हम को मुबारक जगह उतारियो और तू सब से बेहतर उतारने वाला है। (२९) बेशक इस (क़िस्से) में निशानियां हैं और हमें तो आजमाइश करनी थी, (३०) फिर इन के बाद हम ने एक और जमाअत पैदा की। (३१) और उन्हीं में से एक पैग़म्बर भेजा (जिस ने उन से कहा) कि खुदा की इबादत करो (कि) उसके सिवा तुम्हारा कोई माबूद नहीं। तो क्या तुम डरते नहीं ? (३२)★

तो उन का क़ौम के सरदार जो काफ़िर थे और आखिरत के आने को भूठ समझते थे और दुनिया की ज़िंदगी में हम ने उन को आसूदगी दे रखी थी, कहने लगे कि यह तो तुम ही जैसा आदमी है, जिस क़िस्म का खाना तुम खाते हो, उसी तरह का यह भी खाता है और जो (पानी) तुम पीते

हो, उसी किस्म का यह भी पीता है। (३३) अगर तुमने अपने ही जैसे आदमी का कहा मान लिया, तो घाटे में पड़ गये। (३४) क्या यह तुम से यह कहता है कि जब तुम मर जाओगे और मिट्टी हो जाओगे और हड्डी (के सिवा कुछ न रहेगा) तो तुम (जमीन से) निकाले जाओगे? (३५) जिस बात का तुम से वायदा किया जाता है (बहुत) दूर और (बहुत) दूर है। (३६) जिंदगी तो यही हमारी दुनिया की जिंदगी है कि (इस में) हम मरते और जीते हैं और हम फिर नहीं उठाए जाएंगे। (३७) यह तो एक ऐसा आदमी है, जिस ने खुदा पर झूठ गढ़ा है और हम इस को मानने वाले नहीं। (३८) (पैगम्बर ने) कहा कि ऐ परवरदिगार! उन्होंने मुझे झूठा समझा है, तू मेरी मदद कर। (३९) फ़रमाया कि ये थोड़े ही असें में शमिदा हो कर रह जाएंगे। (४०) तो उन को बरहक (वायदे के मुताबिक) जोर की आवाज़ ने आ पकड़ा, तो हम ने उन को कूड़ा कर डाला, पस ज़ालिम लोगों पर लानत है। (४१) फिर उन के बाद हम ने और जमाअतें पैदा कीं। (४२) कोई जमाअत अपने वक़्त से न आगे जा सकती है, न पीछे रह सकती है। (४३) फिर हम एक के बाद एक अपने पैगम्बर भेजते रहे। जब किसी उम्मत के पास उस का पैगम्बर आता था, वे उसे झुठला देते थे, तो हम भी कुछ को कुछ के पीछे (हलाक करते और उन पर अज़ाब) लाते रहे और उन के अफ़साने बनाते रहे। पस जो लोग ईमान नहीं लाते, उन पर लानत। (४४) फिर हम ने मूसा और उन के भाई हाज़ून को अपनी निशानियां और ज़ाहिरी दलील दे कर भेजा। (४५) (यानी) फ़िज़ौन और उस की जमाअत की तरफ़, तो उन्होंने ने घमंड किया और वे सरकश लोग थे। (४६) कहने लगे कि क्या हम उन अपने दो आदमियों पर ईमान ले आएँ और उन की क़ौम के लोग हमारे ख़िदमतगार हैं। (४७) तो उन लोगों ने उन को झुठलाया, सो (आखिर) हलाक कर दिए गए। (४८) और हम ने मूसा को किताब दी थी, ताकि वे लोग हिदायत पाएं। (४९) और हम ने मरयम के बेटे (ईसा) और उन की मां को (अपनी) निशानी बनाया था और उन को एक ऊंची जगह पर, जो रहने के लायक थी और जहां (निथरा हुआ) पानी जारी था पनाह दी थी। (५०)★

ऐ पैगम्बरों! पाकीजा चीज़ें खाओ और नेक अमल करो। जो अमल तुम करते हो, मैं उन को जानता हूँ। (५१) और यह तुम्हारी जमाअत (हकीकत में) एक ही जमाअत है और मैं तुम्हारा

फ-त-कत्तअ अम् - रहम् बेगहुम् जुबुरत् कुल्लु हिजिबम् - बिमा लदैहिम्
फरिहून (५३) फ-जरहुम् फी गम्-रतिहिम् हत्ता हीन (५४) अ-यह्सबून
अन्नमा नुमिददुहुम् बिही मिम्मालिव-व बनीन ॥ (५५) नुसारिबु लहुम्
फिल्-खैराति ॥ बल् ला यशअरून (५६) इन्नल्लजी-न हुम् मिन् खश्यति

रब्बिहिम् मुश्फिकून ॥ (५७) वल्लजी-न
हुम् बिआयाति रब्बिहिम् युअमिनून ॥ (५८)

वल्लजी - न हुम् बिरब्बिहिम् ला
युश्फिकून ॥ (५९) वल्लजी - न युअतून-
मा आतव-व कुलबुहुम् वजि-लतुन् अन्नहुम्
इला रब्बिहिम् राजिअून ॥ (६०)

उलाइ-क युसारिअून फिल्-खैराति व हुम्
लहा साबिकून (६१) व ला नुकल्लिफु
नफसन् इल्ला वुस - अहा ५ व लदैना
किताबु द्यन्तिकु बिल्हक्कि व हुम् ला
युज्जलमून (६२) बल् कुलबुहुम् फी
गम्-रतिम्-मिन् हाजा व लहुम् अअ-मालुम्-

मिन् दूनि जालि-क हुम् लहा आमिलून (६३) हत्ता इजा अ-खजना
मुत्-र-फीहिम् बिल्अजाबि इजा हुम् यज्-अरून ॥ (६४) ला तज्-अरुल्-
यो-म इन्नकुम् मिन्ना ला तुन्सरून (६५) कद कानत् आयाती तुल्ला
अलकुम् फकुन्तुम् अला अज्-काबिकुम् तन्किमून (६६) मुस्तकिबरी-न
बिही सामिरन् तहजूरून (६७) अ-फ लम् यददव्वरल्-कौ-ल अम् जा-अहुम्
मा लम् यअति आबा-अ-हुमुल्-अव्वलीन ५ (६८) अम् लम् यअ-रिफ् रसुलहुम्
फहुम् लह् मुन्किरून ५ (६९) अम् यकूलून बिही जिन्नतुन् ५ बल् जा-अहुम्
बिल्हक्कि व अक्सरहुम् लिहक्कि कारिहून (७०) व लवित्त-ब-अप्-हक्कु
अहवा-अहुम् ल-फ-स-दतिस्-समावातु वल्अरज् व मन् फीहिन्-न ५ बल् आतैनाहुम्
बिजिविरहिम् फहुम् अन् जिक्विरहिम् मुअ-रिज्-न ५ (७१) अम् तस्-अलुहुम्
खजन् फ-खराज् रब्बि-क खैरव-व हु - व खैरुल् राजिकीन (७२)



परवरदिगार हूँ, तो मुझ से डरो। (५२) फिर उन्होंने ने आपस में अपने काम को मुतफर्रिक कर के जुदा-जुदा कर दिया। जो चीज जिस फ़िक्र के पास है, वह इस में खुश हो रहा है। (५३) तो उन को एक मुद्त तक उन की शफ़लत ही में रहने दो। (५४) क्या ये लोग यह ख्याल करते हैं कि हम जो हुनिया में उन को माल और बेटों से मदद देते हैं, (५५) (तो इस से) उन की भलाई में जल्दी कर रहे हैं, (नहीं,) बल्कि ये समझते ही नहीं। (५६) जो लोग अपने परवरदिगार के ख़ोफ़ में डरते हैं, (५७) और जो अपने परवरदिगार की आयतों पर ईमान रखते हैं, (५८) और जो अपने परवरदिगार के साथ शरीक नहीं करते, (५९) और जो दे सकते हैं, देते हैं और उन के दिल इस बात में डरते हैं कि उन को अपने परवरदिगार की तरफ़ लौट कर जाना है, (६०) यही लोग नेकियों में जल्दी करते और यही उन के लिए आगे निकल जाते हैं। (६१) और हम किसी शरूम को उस की ताक़त से ज्यादा तकलीफ़ नहीं देते और हमारे पास किताब है, जो सच-सच कह देती है और उन (लोगों) पर जुल्म नहीं किया जाएगा। (६२) मगर उन के दिल इन (बातों) की तरफ़ में शफ़लत में (पड़े हुए) हैं, और इन के सिवा और आमाल भी हैं जो ये करते रहते हैं। (६३) यहां तक कि जब हम ने उन में से खाते-पीते लोगों को पकड़ लिया, तो वे उस वक़्त तिलमिला उठेंगे। (६४) आज मत तिलमिलाओ, तुम को हम से कुछ मदद नहीं मिलेगी। (६५) मेरी आयतें तुम को पढ़-पढ़ कर सुनायी जाती थीं और तुम उल्टे पांव फिर-फिर जाते थे। (६६) उस से सरकशी करते, कहानियों में लगे रहते और बेहूदा बकवास करते थे। (६७) क्या उन्होंने ने इस कलाम में ग़ौर नहीं किया, या उन के पास कोई ऐसी चीज़ आयी है जो उन के अगले बाप-दादा के पास नहीं आयी थी। (६८) या ये अपने पैग़म्बर को जानते-पहचानते नहीं, इस वजह से उनको नहीं मानते? (६९) क्या ये कहते हैं कि इसे सौदा है (नहीं,) बल्कि वह उन के पास हक़ को ले कर आए हैं और उन में अक्सर हक़ को ना-पसन्द करते हैं। (७०) और अगर (खुदा-ए-बर-) हक़ उन की स्वाहिशों पर चले तो आसमान और ज़मीन, और जो उन में हैं, सब टूट-फूट जाएं, बल्कि हम ने उस के पास उन की नसीहत (की किताब) पहुंचा दी है और वे अपनी (किताब) नसीहत से मुंह फेर रहे हैं। (७१) क्या तुम उन से (तक़लीफ़ के बदले में) कुछ माल मांगते हो, तो तुम्हारे परवरदिगार का माल बहुत अच्छा है और वह सब से बेहतर रोज़ी देने वाला है। (७२) और तुम तो उन को सीधे रास्ते की

● हल्म १/४ ★र. ४/४ मा २७

तरफ़ बुलाते हो (७३) और जो लोग आखिरत पर ईमान नहीं लाते, वे रास्ते से अलग हो रहे हैं। (७४) और अगर हम उन पर रहम करें और जो तकलीफ़ें उन को पहुंच रही हैं, वे दूर करें, तो अपनी सरकशी पर अड़े रहें (और) भटकते (फिरें)। (७५) और हम ने उन को अज़ाब में भी पकड़ा, तो उन्होंने ने खुदा के आगे आजिज़ी न की और वे आजिज़ी करते ही नहीं, (७६) यहां तक कि जब हम ने उन पर तेज़ अज़ाब का दरवाज़ा खोल दिया, तो उस वक़्त वहां ना-उम्मीद हो गये। (७७)★

और वही तो है जिस ने तुम्हारे कान और आंखें और दिल बनाए (लेकिन) तुम कम शुक्र-गुजारी करते हो। (७८) और वही तो है जिस ने तुम को ज़मीन में पैदा किया और उसी की तरफ़ तुम जमा हो कर जाओगे। (७९) और वही है जो ज़िदगी बल्लशता है और मोत देता है और रात और दिन का बदलते रहना उसी का तसर्बफ़ है, क्या तुम समझते नहीं? (८०) बात यह है कि जो बात अगले (काफ़िर) कहते थे, उसी तरह की (बात) ये कहते हैं। (८१) कहते हैं कि जब हम मर जाएंगे और मिट्टी हो जाएंगे और (सड़ी-गली) हड्डियों (के सिवा कुछ न रहेगा) तो क्या हम फिर उठाए जाएंगे? (८२) यह वायदा हम से और हम से पहले हमारे बाप-दादा से भी होता चला आया है, (अजी) यह तो सिर्फ़ अगले लोगों की कहानियां हैं। (८३) कहो कि अगर तुम जानते हो तो (बताओ कि) ज़मीन और जो कुछ ज़मीन में है (सब) किस का माल है? (८४) शत बोल उठेंगे कि खुदा का। कहो कि फिर तुम सोचते क्यों नहीं? (८५) (उन से) पूछो कि सात आसमानों का कौन मालिक है और बड़े अर्श का (कौन) मालिक (है)? (८६) बे-सास्ता कह देंगे कि (ये चीज़ें) खुदा ही की हैं। कहो कि फिर डरते क्यों नहीं? (८७) कहो कि अगर तुम जानते हो तो (बताओ कि) वह कौन है जिस के हाथ में हर चीज़ की बादशाही है और वह पनाह देता है और उसके मुकाबले में कोई किसी को पनाह नहीं दे सकता। (८८) फ़ौरन कह देंगे कि (ऐसी बादशाही तो) खुदा ही की है। कहो कि फिर तुम पर जादू कहां से पड़ जाता है? (८९) बात यह है कि हमने उनके पास हक़ पहुंचा दिया है और ये (जो बुतपरस्ती किए जाते हैं) बेशक झूठे हैं। (९०) खुदा ने न तो किसी को (अपना) बेटा बनाया है और न उस के साथ कोई और माबूद है, ऐसा होता तो हर माबूद अपनी-अपनी मल्लूकात को लेकर चल देता और एक दूसरे पर ग़ालिब आ जाता। ये लोग जो कुछ (खुदा के बारे में) बयान करते हैं, खुदा उस से पाक है। (९१) वह पोशीदा और

जाहिर को जानता है और (मुशिरक) जो उस के साथ शरीक करते हैं, (उस की शान) उस से बुलंद है। (६२) *

(ऐ मुहम्मद !) कहो कि ऐ परवरदिगार ! जिस अज़ाब का इन (कुफ़्कार) से वायदा हुआ है, अगर तू मेरी ज़िदगी में उन पर नाज़िल कर के मुझे भी दिखाये, (६३) तो ऐ परवरदिगार ! मुझे (उस से महफूज़ रखियो और) इन जालिमों में शामिल न कीजियो। (६४) और जो वायदा हम उन से कर रहे हैं, हम तुम को दिखा कर उन पर नाज़िल करने की कुदरत रखते हैं। (६५) और बुरी बात के जवाब में ऐसी बात कहो जो बहुत अच्छी हो और ये जो कुछ बयान करते हैं, हमें खूब मालूम है। (६६) और कहो कि ऐ परवरदिगार ! मैं शैतानों के वस्वसों से तेरी पनाह मांगता हूँ। (६७) और ऐ परवरदिगार ! इस से भी तेरी पनाह मांगता हूँ कि वह मेरे पास आ मौजूद हों। (६८) (ये लोग इसी तरह ग़फ़लत में रहेंगे) यहां तक कि जब उन में से किसी के पास मौत आ जाएगी तो कहेगा कि ऐ परवरदिगार ! मुझे फिर दुनिया में वापस भेज दे, (६९) ताकि मैं उसमें जिसे छोड़ आया हूँ, नेक काम किया करूं, हरगिज़ नहीं यह एक (ऐसी) बात है कि वह उसे जुबान से कह रहा होगा (और उस के साथ अमल नहीं होगा) और उस के पीछे बरज़ख है, (जहां वे) उस दिन तक कि (दोबारा) उठाए जाएंगे, (रहेंगे)। (१००) फिर जब सूर फूँका जाएगा, तो न तो उन में रिश्तेदारियां रहेंगी और न एक-दूसरे को पूछेंगे। (१०१) तो जिन के (अमलों के) बोझ

क्रा-ल कम् लबिस्तुम् फिलअजि अ-द-द सिनीन (११२) कालू लबिस्तु योमव
ओ बअ-ज योमिन् फस-अलिल-आदीन (११३) क्रा-ल इल्लबिस्तुम् इल्ला
कलीलली अन्नकुम् कुन्तुम् तअ-लमून (११४) अ-फ-हसिन्तुम् अन्नमा ख-लकना-
कुम् अ-ब-संव-द अन्नकुम् इल्लैना ला तुजंअन (११५) फ-त-आलल्-साहल्

मलिकुल - हक्कु ८ ला इला - ह इल्ला
हु-व ८ रब्बुल - अशिल - करीम (११६)
व मम्यदु म-अल्लाहि इलाहन् आख-र^१ ला
बुर्हा - न लहू बिही^१ फ-इन्नामा हिसाबुह
जिन् - द रब्बिही^१ इन्नाह ला युफिलहुल-
काफिरुन (११७) व कुर-रब्बिगफिर वरहम्
व अन् - त खैरु - राहिमीन ★ (११८)

भारी होंगे, वे कामियाबी पाने वाले हैं। (१०२) और जिन के बोर हल्के होंगे, वे वह लोग हैं, जिन्होंने अपने आपको घाटे में डाला, हमेशा बोज़ख़ में रहेंगे। (१०३) आग़ उन के मुँहों को झुलसा देगी और वे उस में त्योंरी चढ़ाये हुए होंगे। (१०४) क्या तुम को मेरी आयतें पढ़ कर सुनायी जाती थीं, (नहीं), तुम उन को (सुनते थे और) झूठलाते थे। (१०५) ऐ हमारे परवरदिगार! हम पर हमारी कम-बलती ग़ालिब हो गयी और हम रास्ते से भटक गये। (१०६) ऐ परवरदिगार! हम को इस में से निकाल दे। अगर हम फिर (ऐसे काम) करें तो ज़ालिम होंगे। (१०७) (खुदा) फ़रमाएगा कि इसी में ज़िल्लत के साथ पड़े रहो और मुझ से बात न करो। (१०८) मेरे बन्दों में एक ग़िरोह था, जो दुआ किया करता था कि ऐ हमारे परवरदिगार! हम ईमान लाए, तो तू हम को बरह दे और हम पर रहम कर और तू सबसे बेहतर रहम करने वाला है। (१०९) तो तुम उनसे मज़ाक़ करते रहे, यहां तक कि उन के पीछे मेरी याद भी भूल गये और तुम (हमेशा) उनसे हंसी किया करते थे। (११०) आज मैं ने उनको उनके सब्र का बदला दिया कि वे कामियाब हो गये। (१११) (खुदा) पूछेगा कि तुम ज़मीन में कितने वर्ष रहे? (११२) वे कहेंगे कि हम एक दिन या एक दिन से भी कम रहे थे, गिनती करने वालों से पूछ लीजिए। (११३) (खुदा) फ़रमाएगा कि (वहां) तुम (बहुत ही) कम रहे। काश! तुम जानते होते। (११४) क्या तुम यह ख़्याल करते हो कि हमने तुम को बे-फ़ायदा पैदा किया है और यह कि तुम हमारी तरफ़ लौट कर नहीं आओगे? (११५) तो खुदा जो सच्चा बादशाह है (उस की शान इस से) ऊंची है। उस के सिवा कोई माबूद नहीं। (वही) बुजुर्ग़ अर्श का मालिक है। (११६) और जो आदमी खुदा के साथ और माबूद को पुकारता है, जिस को उस के पास कुछ सनद नहीं, तो उसका हिसाब खुदा ही के यहां होगा। कुछ शक़ नहीं कि काफ़िर कामियाबी नहीं पाएंगे। (११७) और खुदा से दुआ करो कि मेरे परवरदिगार मुझे बरह दे और (मुझ पर) रहम कर और तू सब से बेहतर रहम करने वाला है। (११८) ★

२४ सूर: नूर १०२

सूर: नूर मदनी है और इस में चौंसठ आयतें और नौ रूक़ूअ हैं।

शुरू खुदा का नाम लेकर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

यह (एक) सूर: है जिस को हमने नाज़िल किया और उस (के हुक्मों) को फ़ज्र कर दिया और उसमें खुले मतलब वाली आयतें नाज़िल कीं, ताकि तुम याद रखो। (१) बद-कारी करने वाली औरत और बद-कारी करने वाला मर्द (जब उन की बद-कारी साबित हो जाए तो) दोनों में से हर एक को ती डुरें मारो और अगर तुम खुदा और आख़िरत के दिन पर ईमान रखते हो, तो खुदा की शरअ (के हुक्म) में तुम्हें उन पर हर ग़िज़ तरस न आए और चाहिए कि उन की सज़ा के वक़्त मुसलमानों की एक जमाअत भी मौजूद हो। (२) बद-कार मर्द तो बद-कार या मुशिरक औरत के सिवा निकाह नहीं करता और बद-कार औरत को भी बद-कार या मुशिरक मर्द के सिवा और कोई निकाह में नहीं लाता। और यह (यानी बद-कार औरत से निकाह करना) मोमिनों पर ह़राम है। (३) और जो लोग परहेज़गार औरतों को बद-कारी का ऐब लगाए और उस पर चार गवाह न लाएं तो उन को बस्सी डुरें मारो और कभी उनकी गवाही कुबूल न करो और यही बदकिरदार

१. यानी वह भी बद-कार या मुशिरक मर्द के सिवा किसी से मियां-बीबी का ताल्लुक़ पैदा नहीं करती।

इल्लल्लजी-न ताबू मिम्-बअ-दि जालि-क व अस्लहूँ फइन्लला-ह गफूहर्-
रहीम (५) वल्लजी-न यरूम-न अज्वाजहुम् व लम् यकुल्लहुम् शुहदाउ
इल्ला अन्फुमुहुम् फ-शहादतु अ - हदिहिम् अर्बअु शहादातिम् - बिल्लाहि॥
इन्लहू लमिनस्-सादिकीन (६) वल्-खामिसतु अन्-न लअ-न-तल्लाहि अलैहि

इन् का-न मिनल्-काजिबीन (७) व
यदरऊ अन्हल्-अजा-ब अन् तशह-द अर्ब-अ
शहादातिम् - बिल्लाहि ॥ इन्लहू लमिनल् -
काजिबीन ॥ (८) वल्-खामि-स-त अन्-न
ग-ब-बल्लाहि अलैहा इन् का-न मिनस्-
सादिकीन (९) व लौला फज़लुल्लाहि
अलैकुम् व रहमतुह व अन्नल्ला-ह तव्वाबुन्
हकीम ★ (१०) इन्लल्लजी - न जाऊ

बिल् - इफिक अस्बतुम् - मिन्कुम् ७ ला
तह्सबूह शरल्लकुम् ७ वल् हु-व खैरल्लकुम् ७
लिकुल्लिमिरइम्-मिन्हुम् मक-त-स-ब मिनल्-
इस्मिँ वल्लजी त-वला किररहू मिन्हुम्

लहू अजाबुन् अजीम (११) लौला इज् समिअ-तुम्हु अन्नल्-मुअ्मिन्-न
वल् - मुअ्मिनातु बिअन्फुसिहिम् खैरव ॥ - व कालू हाजा इफकुम् -
मुबीन (१२) लौला जाऊ अलैहि बि-अर-ब - अति शुहदा-अ ८ फइज्
लम् यअतू विशशु-ह-दाई फउला-द-क अिन्दल्लाहि हुमुल्काजिबून (१३) व
लौला फज़लुल्लाहि अलैकुम् व रहमतुह फिदुन्या वल्आखिरति ल-मस्सकुम्
फ्री मा अ - फज़तुम् फ्रीहि अजाबुन् अजीम ८ (१४) इज्
त-लक्क्रीनहू बिअत्सिनतिकुम् व तकूलू-न बिअफ्वाहिकुम् मा लै-स लकुम्
बिही अल्मु-व-व तह्सबूनहू हथियनव ७ व हु-व अिन्दल्लाहि अजीम (१५)
व लौला इज् समिअ - तुम्हु कुल्लुम् मा यकूनु लना अन्
न-त-कल्ल-म बिहाजा ८ सुहदा-न - क हाजा बुहतानुन् अजीम (१६)

وَمِنْ بَعْضِ ذَٰلِكَ وَأَصْلَحُوا ۖ إِنَّ اللَّهَ عَوْدُ رَجِيمٍ ۚ وَالَّذِينَ يَزِينُونَ
أَزْوَاجَهُمْ وَكُنُفَهُنَّ لَهُمْ مَهْرًا ۖ وَلَا تَعْصِمُهُمْ بِذَٰلِكَ أَعْيُنُهُمْ ۚ
أُولَٰئِكَ يَرْجَوْنَ بِاللَّذِيقَةِ ۖ لَيْسَ الْخَبِيرِينَ ۚ وَالْثَّانِي أَنَّهُ لَعَنَ
اللَّهُ عَلَىٰ إِبْرَاهِيمَ إِذْ كَانَ مِنَ الْكَاذِبِينَ ۚ وَيَذَرُوا عَنْهَا لَعْنًا ۖ إِنَّ
فَعْلَهُمْ أُولَٰئِكَ يَرْجَوْنَ بِاللَّذِيقَةِ ۖ لَيْسَ الْكَاذِبِينَ ۚ وَالْثَّانِي
أَنَّهُ عَصَبَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ ۖ إِنَّ كَانُ مِنَ الْخَبِيرِينَ ۚ وَلَا تَعْصِمُهُ
اللَّهُ عَلَيْهِمْ وَرَحْمَتَهُ ۚ إِنَّ اللَّهَ تَوَّابٌ حَكِيمٌ ۚ إِنَّ الَّذِينَ جَاءُوا
بِالْإِفْكِ عُصْبَةٌ لَّهُمْ ۚ لَا حَسْبُهُمْ شَرُّ الْكَافِرِينَ ۚ وَلَمْ يَكُنْ لَكَ
بِإِفْكِ الْمَرْءِ قَبْلُ ۚ وَمَا أَكْتَسَبَ مِنَ الْإِفْكِ وَالَّذِي يُؤْتِي كَيْدًا
مِنْهُمْ ۚ إِنَّ عَذَابَ عَظِيمٍ ۚ لَوْلَا إِذْ تَعْلَمُونَهُ مَقَامُ الْمُؤْمِنِينَ ۚ
وَالْمُؤْمِنَاتُ يَأْكُلْنَ مِنْ حَيْثُ ۚ وَقَالُوا هَٰذَا الْفُتَيَانُ ۚ لَوْلَا
جَاءُوا عَلَيْهِمْ بِآرَبَةٍ مِّنْهُمْ ۚ فَذَرُوا بَيْنَهُمَا وَاللَّهْدَىٰ ۚ وَكَذَٰلِكَ
عَذَّبَ اللَّهُ الْكَاذِبِينَ ۚ وَلَا تَعْصِمُهُ اللَّهُ عَلَيْهِمْ وَرَحْمَتَهُ ۚ فِي
الْأَنفِ وَالْأُذُنِ ۚ لَسْتُ فِي مَا أَقْصَىٰ عَنِ عَذَابِ عَظِيمٍ ۚ إِذْ
تَلْقَوْنَ فِيهَا سَبِيحًا وَمَقُولُونَ بِاقُولِهِمْ ۚ لَئِنْ لَمْ يَرْجِعُوا
فِيْنَا ۚ وَهُمْ عَنِ اللَّهِ عَظِيمٍ ۚ وَلَا إِذْ تَعْلَمُونَهُ مَقَامُ الْمُؤْمِنِينَ ۚ
إِنَّ الْكَاذِبِينَ ۚ لَسْتُ فِي مَا أَقْصَىٰ عَنِ عَذَابِ عَظِيمٍ ۚ يَعْصِمُهُ

है। (४) हाँ, जो इस के बाब तोबा कर लें और (अपनी हालत) संवार लें तो खुदा (भी) बख़्शने वाला मेहरबान है। (५) और ज़ालिम अपनी औरतों पर बदकारी की तोहमत लगाएँ और खुद उन के सिवा उनके गवाह न हों तो हर एक की गवाही यह है कि पहले तो चार बार खुदा की क़सम खाएँ कि बेशक सच्चा है। (६) और पांचवीं (बार) यह (कहे) कि अगर वह झूठा हो तो उस पर खुदा की लानत। (७) और औरत से सज़ा को यह बात टाल सकती है कि वह पहले चार बार खुदा की क़सम खाएँ कि बेशक यह झूठा है। (८) और पांचवीं (बार) यों (कहे) कि अगर यह सच्चा हो तो मुझ पर खुदा का ग़ज़ब (नाज़िल) हो। (९) और अगर तुम पर खुदा का फ़ज़ल और उसकी मेहरबानी न होती (तो बहुत-सी) ख़राबियाँ पैदा हो जातीं (मगर वह आम करम वाला है) और यह कि खुदा तोबा क़बूल करने वाला (और) हुकीम है। (१०)★

जिन लोगों ने बोहतान बांधा है, तुम ही में से वह एक जमाअत है, उस को अपने हक़ में बुरा न समझना, बल्कि वह तुम्हारे लिए अच्छा है। उन में से जिस शख्स ने गुनाह का जितना हिस्सा लिया उसके लिए उतना वबाल है और जिसने उनमें से उस बोहतान का बड़ा बोझ उठाया है, उस को बड़ा अज़ाब होगा। (११) जब तुम ने वह बात मुनी थी, तो मोमिन मदों और औरतों ने क्यों अपने दिलों में नेक गुमान न किया और (क्यों न) कहा कि यह खुला तूफ़ान है। (१२) ये (झूठ गढ़ने वाले) अपनी बात (की तस्दीक़) के (लिए) चार गवाह क्यों न लाए, तो जब ये गवाह नहीं ला सके, तो खुदा के नज़दीक़ यही झूठे हैं। (१३) और अगर दुनिया और आखिरत में तुम पर खुदा का फ़ज़ल और उस की रहमत न होती तो जिस काम में तुम लगे हुए थे, उसकी वजह से तुम पर बड़ा (सख़्त) अज़ाब नाज़िल होता। (१४) जब तुम अपनी जुबानों से इसका एक दूसरे से ज़िक़्र करते थे और अपने मुँह से ऐसी बात कहते थे, जिसका तुम को कुछ भी इल्म न था और तुम उसे एक हल्की बात समझते थे और खुदा के नज़दीक़ वह बड़ी (भारी) बात थी। (१५) और जब तुम ने उसे सुना था, तो क्यों न कह दिया कि हमें मुनासिब नहीं कि ऐसी बात जुबान पर लाएं। (परवरदिगार!) तू पाक है, यह तो (बहुत) बड़ा बोहतान है। (१६)

खुदा तुम्हें नसीहत करता है कि अगर मोमिन हो तो फिर कभी ऐसा (काम) न करना। (१७) और खुदा तुम्हारे (समझाने के) लिए अपनी आयतें खोल-खोल कर बयान फ़रमाता है और खुदा जानने वाला (और) हिम्मत वाला है। (१८) जो लोग इस बात को पसन्द करते हैं कि मोमिनों में बे-हयाई (यानी बद-कारी की तोहमत की खबर) फैले, उन को दुनिया और आखिरत में दुख देने वाला अज़ाब होगा और खुदा जानता है और तुम नहीं जानते। (१९) और अगर तुम पर खुदा का फ़ज़ल और उस की रहमत न होती, (तो क्या कुछ न होता, मगर वह करीम है) और यह कि खुदा निहायत मेहरबान और रहीम है। (२०) ★●

मोमिनो ! शैतान के क़दमों पर न चलना और जा शस्स शैतान के क़दमों पर चलेगा, तो शैतान तो बे-हयाई (की बातें) और बुरे काम ही बताएगा और अगर तुम पर खुदा का फ़ज़ल और उसकी मेहरबानी न होती, तो एक शस्स भी तुम में पाक न हो सकता, मगर खुदा जिस को चाहता है, पाक कर देता है और खुदा सुनने वाला (और) जानने वाला है। (२१) और जो लोग तुम में फ़ज़ल वाले और वुसूअत वाले हैं, वे इस बात की क़सम न खाएं कि रिश्तेदारों और मुहताजों और बतन छोड़ जाने वालों को कुछ खर्च-पात न देंगे, उन को चाहिए कि माफ़ कर दें और दरगुज़र करें। क्या तुम पसन्द नहीं करते कि खुदा तुम को बरूश दे और खुदा तो बरूशने वाला मेहरबान है? (२२) जो लोग परहेज़गार (और) बुरे कामों से बे-खबर (और) ईमानदार औरतों पर बद-कारी की तोहमत लगाते हैं, उन पर दुनिया और आखिरत (दोनों) में लानत है और उनको सख्त अज़ाब होगा। (२३) (यानी क्रियामत के दिन) जिस दिन उन की जुबानों और हाथ और पांव सब उनके कामों की गवाही देंगे। (२४) उस दिन खुदा उन को (उन के आमाल का) पूरा-पूरा (और) ठीक बदला देगा और उनको मालूम हो जाएगा कि खुदा बर-हक़ (और हक़ को) जाहिर करने वाला है। (२५) ना-पाक औरतें ना-पाक मर्दों के लिए हैं और ना-पाक मर्द ना-पाक औरतों के लिए और पाक औरतें पाक मर्दों के लिए हैं और पाक मर्द पाक औरतों के लिए। ये (पाक लोग) इन (झूठों) की बातों से बरी हैं (और) उनके लिए बहिश और नेक रोज़ी है। (२६) ★

मोमिनो ! अपने घरों के सिवा दूसरे (लोगों के) घरों में घर वालों से इजाज़त लिए और उन को सलाम किए बग़ैर दाख़िल न हुआ करो, यह तुम्हारे हक़ में बेहतर है (और हम यह नसीहत इस

१. आमत 'इनल्लख़ी-न जाऊ बिल इफ़िक' से ले कर यहाँ तक दस आयतें उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा रजि-यल्लाहु अन्हा की शान में नाज़िल हुई हैं। इन में अल्लाह तआला ने उन को इस तोहमत से पाक जाहिर फ़रमाया है, जो मुनाफ़िक्कों ने उन के बारे में गड़ रखा था और जिस को ज्यादातर अब्दुल्लाह बिन उवई बिन सलूल, मुनाफ़िक्कों के सरदार ने मशहूर किया था और जिस का ज़िक्र मुसलमानों में भी हुआ। इस बाकिफ़ की तफ़सील इस तरह है—

हज़रत आइशा रजि० खुद फ़रमाती हैं कि प्यारे नबी सल्ल० की आशत थी कि जब आप किसी सफ़र को तशरीफ़ ले जाने का इरादा फ़रमाते, तो अपनी बीवियों में कुरआ डालते। जिस बीबी के नाम का कुरआ निकलता, उस को आप अपने साथ ले जाते। एक लड़ाई में मेरे नाम का कुरआ निकला और मैं आप के साथ गयी और यह सफ़र परदे के हुक़म के नाज़िल होने के बाद का था। मैं ऊंट पर सवारी करती और हौबज़ यानी कज़ाबे में बैठती थी। जब आप लड़ाई से फ़ारिज़ हो चुके और लौटते हुए मदीने के करीब पहुँचे तो एक रात कूच का एलान किया गया। मैं उस वक़्त (हज़रत पूरी करने) बसी गयी, यहाँ तक कि फ़ौज़ आगे बढ़ गयी। जब डेरे के पास आयी तो देखा (शेष पृष्ठ ५६१ पर)

लिए करते हैं कि) शायद तुम याद रखो। (२७) अगर तुम घर में किसी को मौजूद न पाओ तो जब तक तुम को इजाजत न दी जाए उसमें मत दाखिल हो और अगर (यह) कहा जाए कि (इस वक्त) लौट जाओ तो लौट जाया करो। यह तुम्हारे लिए बड़ी पाकीजगी की बात है और जो काम तुम करते हो, खुदा सब जानता है। (२८) (हां) अगर तुम किसी ऐसे मकान में जाओ, जिस में कोई न बसता हो और उस में तुम्हारा सामान (रखा) हो तो तुम पर कुछ गुनाह नहीं और जो कुछ तुम जाहिर करते हो और जो छिपाते हो, खुदा को सब मालूम है। (२९) मोमिन मर्दों से कह दो कि अपनी नज़रें नीची रखा करें और अपनी शर्मगाहों की हिफाजत किया करें। यह उन के लिए बड़ी पाकीजगी की बात है (और) जो काम ये करते हैं, खुदा उन से खबरदार है। (३०) और मोमिन औरतों से भी कह दो कि वे भी अपनी निगाहें नीची रखा करें और अपनी शर्मगाहों की हिफाजत किया करें और अपनी जीनत (यानी जेवर की जगहों) को जाहिर न होने दिया करें, मगर जो उस में से खुला रहता हो और अपने सीनों पर ओढ़नियां ओढ़े रहा करें और अपने खाविंद और बाप और समुर और बेटे और खाविंद के बेटों और भाइयों और भतीजों और भांजों और अपनी (ही क्रिस्म की) औरतों और लौंडी-गुलाम के सिवा, और उन खादिमों के, जो औरतों की स्वाहिश न रखें या ऐसे लड़कों के, जो औरतों के परदे की चीज़ों को न जानते हों, (गरज इन लोगों के सिवा) किसी पर जीनत (और मिगार की जगहों) को जाहिर न होने दें और अपने पांव (ऐसे तौर से ज़मीन पर) न मारें कि (अंकार कानों में पहुंचे और) उन का छिपा जेवर मालूम हो जाए और मोमिनो! सब खुदा के आगे तौबा करो ताकि कामियाब रहो। (३१) और अपनी क्रौम की बेवा औरतों के निकाह कर दिया करो और अपने गुलामों और लौंडियों के भी जो नेक हों (निकाह कर दिया करो) और वे गरीब होंगे तो खुदा उन को अपने फ़ज़ल से खुशहाल कर देगा

(पृष्ठ ५५६ का शेष)

कि मेरा मनकों का हार कहीं रास्ते में टूट कर गिर गया है। मैं हार खोजने लौट गयी और उस को खोजते-खोजते मुझे देर हो गयी। इतने में वे लोथ आ गये जो मेरे होदज का कसा करते थे और उन्होंने मेरे होदज को उठा लिया और उस को मेरे ऊंट पर कम दिया। बूँक औरनें उस ज़माने में दुस्ली-पतली होती थीं और उन के सवार होने से होदज कुछ भारी नहीं हो जाता था, इस लिए उन्होंने मेरे होदज के हल्केपन का कुछ स्थान न किया और यह न समझा कि मैं उस में नहीं हूँ, गरज वे ऊंट को ले कर चल दिए। मुझे को अपना हार उस वक्त मिला, जब लश्कर गुज़र गया। मैं लश्कर के पड़ाव में आयी, हालांकि वहां कोई नहीं था, फिर अपनी मंजिल को, जहां उतरने हुई थी, चली गयी, इस स्थान से कि जब लोग मुझे गुम पाएंगे, तो आ कर ले जाएंगे। इसी बीच मुझे नींद आ गयी और मैं वहीं सो गयी।

उधर सपवान बिन मुअत्तल जो रात के आखिरी हिस्से में लश्कर के पीछे, आराम लेने के लिए उतर पड़ा था, मुबह के करीब चला। जब मेरी मंजिल के करीब पहुंचा, तो मेरे बारे में स्थान किया कि कोई आदमी सो रहा है। वह मेरे पास आया और मुझे देख कर पहचान लिया, क्योंकि परदे के हुकम से पहने वह मुझे देख चुका था। मैं ने चादर से धूँध निकाल लिया और मैं क्रम खा कर कहती हूँ कि न तो उस ने मुझ से कोई बात की, न मैं ने उस से कोई बात मुनी, अलावा 'इन्ना लिस्लाहि ब इन्ना अलैहि राजिकन' के, जो उस ने सवारी के बिठाते वक़्त

(शेष पृष्ठ ५७७ पर)

और खुदा (बहुत) दम्भत वाला और (सब कुछ) जानने वाला है ।' (३२) और जिस को व्याह की ताकत न हो, वे पाकदामनी को अस्वियार किए रहें, यहाँ तक कि खुदा उन को अपने फ़जल में लानी कर दे और जो गुलाम तुम से मुकातबत चाहें, अगर तुम उन में (सलाहियत और) नेकी पाओ तो उन से मुकातबत कर लो और खुदा ने जो माल तुम को बख़्शा है, उस में से उन को भी दो और अपनी लौंडियों को अगर वे पाकदामन रहना चाहें, तो (बे-शर्मी में) दुनिया की ज़िंदगी के फ़ायदे हासिल करने के लिए बद-कारी पर मजबूर न करना और जो उन को मजबूर करेगा तो उन (बेचारियों) के मजबूर किए जाने के बाद खुदा उन को बख़्शने वाला मेहरबान है । (३३) और हमने तुम्हारी तरफ़ रोज़ाना आयतें नाज़िल की हैं और जो लोग तुम से पहले गुज़र चुके हैं, उन की ख़बरें और परहेज़गारों के लिए नसीहत । (३४)★

खुदा आसमानों और ज़मीन का नूर है । उस के नूर की मिसाल ऐसी है कि गोया एक ताक़ है, जिस में चिराग़ है और चिराग़ एक क़ंदील में है और क़ंदील (ऐसी साफ़-शुफ़ाफ़ है कि) गोया मोती का सा चमकता हुआ तारा है । इस में एक मुबारक पेड़ का तेल जलाया जाता है, (यानी) ज़ैतून कि न पूरब की तरफ़ है, न पच्छिम की तरफ़ । (ऐसा मालूम होता है कि) उस का तेल, चाहे आग़ उम न भी छूए, जलने को तैयार है, (बड़ी) ग़ंशनी पर रोशनी (हो रही है) । खुदा अपने नूर से जिस को चाहता है, सीधी राह दिखाता है और खुदा (जो) मिसालें बयान फ़रमाता है (तो) लोगों के (ममझाने के) लिए और खुदा हर चीज़ जानता है । (३५) (वह क़ंदील) उन घरों में (है) जिनके बारे में खुदा ने इर्शाद फ़रमाया है कि बुलन्द किए जाएं और वहाँ खुदा के नाम का जिक्र किया जाए (और) उन में मुबह व शाम उस की तस्बीह करते रहें । (३६) (यानी ऐसी) लोग, जिन को खुदा के जिक्र और नमाज़ पढ़ने और ज़कात देने में न सीदागरी शक़िल करती है, न ख़रीदना-बेचना, वह उग़ दिन से जब दिल (ख़ौफ़ और घबराहट की वजह से) उलट जाएंगे और आंखें (ऊपर चढ़ जाएंगी), उरते हैं । (३७) ताकि खुदा उन को उन के अमलों का बहुत अच्छा बदला दे और अपने फ़जल में ज़्यादा भी अता करे और खुदा जिस को चाहता है, बे-शुमार ग़ुज़ी देता है । (३८) और जिन लोगों ने कुफ़्र किया, उन के आमाल (की मिसाल ऐसी है) जैसे मैदान में रेत कि प्यामा उम पानी समझे, यहाँ तक कि जब उस के पास आग़ तो उसे कुछ भी न पाए और खुदा ही का अपने पाम देखे, तो वह उसे उस का हिमाब पूरा-पूरा चुका दे और

१. हबश्न ने फ़रमाया, ऐ अली ! तीन कामों में देर न करना—फ़र्ज़ नमाज़ का जब वक़्त आवे, दूसरे जनाज़ा जब मौजूद हो, तीसरे रांड औरत जब उस की जात का मर्द मिले । जो कोई दूसरा ख़ाबिद करने को ऐब जाने, उस का ईमान मलामत नहीं और जो लौंडी-ग़ुलाम नेक हों यानी व्याह देने से बर्ज़ में न पड़ जाएं कि तुम्हारा काम छोड़ दें ।

औ क - जुलुमातिन् फ़ी बहिरल् - लुज्जिज्यिय्यशाहु मौजुम्-मिन् फ़ौकिही
मौजुग्मिन् फ़ौकिही सहाबुन् ७ जुलुमातुम् - बअ-जुहा फ़ौ-क बअ-जिन् ७ इजा
अख-र-ज य-दह लम् य-कद् यराहा ७ व मल्लम् यज-अलिल्लाहु लह नूरन् क्रमा
लह मिन्नूर * (४०) अ-लम् त-र अन्तल्ला-ह युसब्बिहु लह मन् फ़िस्तमावाति

वल्अज्जि वल्लह साफ़फ़ातिन् ७ कुल्लुन्
कद् अलि-म सलातह व तस्बी-हह ७ वल्लाहु
अलीमुम्-बिमा यफ़-अलून (४१) व

लिल्लाहि मुल्कुस्समावाति वल्अज्जि ७ व
इलल्लाहिल्-मसीर (४२) अ-लम् त-र

अन्तल्ला-ह युज्जी सहाबन् सुम्-म युअल्लिफ़ु
बैनहू सुम्-म यज्-अलुह रुकामन् फ़-त-रल्-
वद् - क यखरुजु मिन् खिलालिही ७ व

युनज्जिलु मिनस्समाइ मिन् जिबालिन्
फ़ौहा मिम्-ब-रदिन् फ़युसीबु बिही मंय्यशाउ
व यहरिफ़ुह अम् - मंय्यशाउ ७ यकादु

सना बकिही यजहबु बिल्अब्सार ७ (४३)
युकल्लिबुल्लाहुल्लै-ल वन्नहा-र ७ इन्-न फ़ी
जालि-क ल-अब-र-तुल-लिउलिन् - अब्सार

(४४) वल्लाहु ख-ल-क कुल-ल दाब्बिअत्-मिम्माइन् ७ फ़मिन्हुम् मंय्यम्शी अला
बलिही ७ व मिन्हुम् मंय्यम्शी अला रिजलैनि ७ व मिन्हुम् मंय्यम्शी
अला अर - बजिन् ७ यखलुकुल्ला-हु मा यशाउ ७ इन्तल्ला-ह अला कुल्लि
शैइन् कदीर (४५) ल - कद् अन्जल्ला आयातिम् - मुबय्यिनातिन् ७
वल्लाहु यहदी मंय्यशाउ इला सिरातिम्-मुस्तकीम (४६) व यकूल-न

आमन्ना बिल्लाहि व बिरसूलि व अ-तअ-ना सुम्-म य-त-वल्ला फ़रीकुम्-मिन्हुम्
मिम्बअ-दि जालि-क ७ व मा उलाइ-क बिल्-मुअमिनीन (४७) व इजा दुअ
इलल्लाहि व रसूलिही लि - यहकु - म बैनहुम् इजा फ़रीकुम् - मिन्हुम्
मुअ-रिजून (४८) व इय्यकुल् - लहुमुल्-हक्कु यअत् इलैहि मुज्जिनीन ७

(४९) अफ़ी कुलबिहिम् म-र-जुन् अमिर्ताब अम् यखाफ़-न अय्यहीफ़ल्लाहु
अलैहिम् व रसूलुह ७ बल् उलाइ - क हुमुज्जालिमून * (५०)



खुदा जल्द हिसाब करने वाला है। (३९) या (उन के आमाँल की मिसाल ऐसी है) जैसे गहरे दरिया में अंधेरे, जिस पर लहर चढ़ी आती हो (और) उस के ऊपर और लहर (आ रही हो और) उस के ऊपर बादल हो, गरज अंधेरे ही अंधेरे हों, एक पर एक (छाया हुआ), जब अपना हाथ निकाले तो कुछ न देख सके और जिस को खुदा रोशनी न दे उस को (कहीं भी) रोशनी नहीं (मिल सकती)। (४०)★

क्या तुम ने नहीं देखा कि जो लोग आसमानों और ज़मीन में हैं, खुदा की तस्बीह करते रहते हैं और पर फँलाए हुए जानवर भी और सब अपनी नमाज़ और तस्बीह (के तरीक़े) जानते हैं और जो कुछ वे करते हैं (सब) खुदा को मालूम है। (४१) और आसमान और ज़मीन की बादशाही खुदा ही के लिए है और खुदा ही की तरफ़ लौट कर जाना है। (४२) क्या तुम ने नहीं देखा कि खुदा ही बादलों को चलाता है, फिर उन को आपस में मिला देता है, फिर उन को तह-ब-तह कर देता है, फिर तुम देखते हो कि बादल में से मेंह निकल (कर बरस) रहा है और आसमान में जो (ओलों के) पहाड़ हैं, उन से ओले नाज़िल करता है, तो जिस पर चाहता है, उस को बरसा देता है और जिस से चाहता है, हटा रखता है, और बादल में जो बिजली होती है, उस की चमक आँखों को (चकाचौंध कर के आँखों की रोशनी को) उचके लिए जाती है। (४३) खुदा ही रात और दिन को बदलता रहता है। रोशनी वालों के लिए इसमें बड़ी इब्रत है। (४४) और खुदा ही ने हर चलने-फिरने वाले जानदार को पानी से पैदा किया तो उन में से कुछ ऐसे हैं कि पेट के बल चलते हैं और कुछ ऐसे हैं जो दो पांव पर चलते हैं और कुछ ऐसे हैं जो चार पांव पर चलते हैं। खुदा जो चाहता है, पैदा करता है, बेशक खुदा हर चीज़ पर कुदरत रखता है। (४५) हम ही ने रोशन आयतें नाज़िल की हैं और खुदा जिस को चाहता है, सीधे रास्ते की तरफ़ हिदायत करता है। (४६) और (कुछ लोग) कहते हैं कि हम खुदा पर और रसूल पर ईमान लाए और (उन का) हुक्म मान लिया, फिर उस के बाद उन में से एक फ़िर्का फिर जाता है और ये लोग ईमान वाले ही नहीं हैं। (४७) और जब उन को खुदा और उस के रसूल की तरफ़ बुलाया जाता है, ताकि (अल्लाह के रसूल) उन का झगड़ा चुका दें, तो उन में से एक फ़िर्का मुंह फेर लेता है। (४८) और अगर (मामला) हक़ (हो और) उन को (पहुँचता) हो तो उनकी तरफ़ फ़रमांबरदार हो कर चले आते हैं। (४९) क्या उन के दिलों में बीमारी है या (ये) शक़ में है या उन को यह डर है कि खुदा और उस का रसूल उन पर जुल्म करेंगे? (नहीं), बल्कि ये खुद ज़ालिम हैं। (५०)★●

इन्नमा का-न क्रीलल्-मुअमिनी-न इजा दुअ इलल्लाहि व रसूलिही लि-यहकु-म
बैनहुम् अय्यकूलु समिअ-ना व अ-तअ-ना ७ व उलाइ-क हुमुल्-मुफिलहून (५१)
व मय्युतिअल्ला-ह व रसू-लहू व यरुशल्ला-ह व यत्तक-हि फउलाइ-क हुमुल्फाइजून
(५२) व अक्समू बिल्लाहि जहू - द ऐमानिहिम् ल - इन् अ-मंतहुम्

ल-यरुजुन्-न ७ कुल् ला तुक्सिमू ८ ता-अतुम्

मअ-रुफतुत् ७ इन्नल्ला - ह खबीरुम् - बिमा

तअ-मलून (५३) कुल् अतीअल्ला-ह व

अतीअरसू-ल ८ फ-इन् त - वल्लौ फ-इन्नमा

अलैहि मा हुम्मि-ल व अलैकुम् मा हुम्मिल्तुम् ७

व इन् तुतीअहु तहतदू ७ व मा अ-लरसूलि

इल्लल्-बलागुल्-मुबीन (५४) व अ-दल्-

लाहुल्-लजीन आमनू मिन्कुम् व अमिलुस्-

सालिहाति ल-यस्-तख-लिफन्-न-हुम् फिलअजि

क-मस्-तख-ल-फल्-लजी-न मिन् कबिलहिम्

व लयुमकिनन्-न लहुम् दीनहुमुल्लजिर्-तज्जा

लहुम् व लयुबदिदलन्नहुम् मिम्बअ-दि खौफिहिम्

अम्-नन् ७ यअ-बुदूननी ला युशिरकू-न बी शअत् ७ व मन् क-फ-र अअ-द आलि-क

फउलाइ-क हुमुल्-फासिकून (५५) व अकीमुस्सला-त व आतुज्जका-त व

अतीअरसू-ल ल-अल्लकुम् तुर-हमून (५६) ला तह-सबन्नल्लजी-न क-फरु मुअ-

जिजी-न फिलअजि ८ व मअ-वा-हुमुन्नाह ७ व ल-बिअसल्-मसीर (५७) या

अय्युहल्लजी-न आमनू लि-यस्तअ-जिन्-कुमुल्लजी-न म-ल-कत् ऐमानुकुम् वल्लजी-न

लम् यल्लुगुल्-हुलु-म मिन्कुम् सला - स मर्रातिन् ७ मिन् कबिल सलातिल्-

फजिर् व ही-न त-ज्ज-अ-न सियाबकुम् मिन्उज्जहीरति व मिम्बअ-दि सलातिल्

अिशाई ७ सलासु ओरातिल्लकुम् ७ लै-स अलैकुम् व ला अलैहिम् जुनाहुम्-

अअ-दहन्-न ७ तव्वाफू-न अलैकुम् अअ - जुकुम् अला अअ-जिन् ७ कजालि-क

युबधियनुल्लाहु लकुमुल् - आयाति ७ वल्लाहु अलीमुन् हकीम (५८)

هُوَ الْقَلِيمُونَ ۝ اِنَّا كَا۟نَ الْوٰمِنِي۟نَ اِذَا دُعِيَ اِلَى اللّٰهِ وَرَسُولِهِۦ لِيُقِيمُو۟ا الصَّلٰوةَ ۝ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ۝
وَمَنْ يُضِلّۡهُ اللّٰهُ وَرَسُولُهُۥ ۙ فَاِنَّهُۥٓ ذٰلِكَ فِى۟ الْاٰفَا۟تِ ۝ اَوۡصُوا بِاللّٰهِ جِدۡدَ اٰمَارَاتِهِۦمۡ لِيۡنَ اَمْرُهُمْ يُعۡزِزُ ۚ قُلۡ لَا تَقۡسِمُو۟ا
طَاعَةَ مَعۡرُوۡفَةٍ ۚ اِنَّ اللّٰهَ خَبِيۡرُ مَا تَصۡنَعُوۡنَ ۝ قُلۡ اَطِيعُوا اللّٰهَ وَاَطِيعُوا الرَّسُوۡلَ ۚ قُلۡ اِنَّا عَلٰى مَا جِئۡتُ بِكُمْ مَّا جِئۡتُ
وَاِنۡ تَصِیۡحُوۡهُ فَتَقۡتُلُوۡا ۙ وَمَا عَلٰى الرَّسُوۡلِ اِلَّا الْبَلٰغُ الْمُبِيۡنُ ۝ وَعَلٰى
اللّٰهِ اَلۡيٰنَ ۚ اَمَّا بَعۡدُ ۚ وَعَلٰى الْعَظِيۡمِ اَلۡيٰسَعۡتُ ۚ فَاِنَّ فِى۟ الْاَرْضِ لَآ
اَسۡخَفَافَ لِّاَلۡیٰنِ مِنْۢ بَعۡلِهِۦمۡ ۚ وَلَيَسَّ لَّهُمۡ وِیۡسَعُۢمۡ ۚ اَلۡلّٰهُ
اَرۡضٰی بِهَمۡ ۚ وَلَيَسَّ لَّهُمۡ مِّنۢ بَعۡدِ عَوۡفِهِمۡ اَنۡ يَّصۡدِقُوۡا لَآ اٰمِرُوۡنَ
فِی۟ شَیۡءٍ ۚ وَمَنْ يَّرۡفَعۡ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰ۟قِرُونَ ۝ وَاَوۡصُوا
الصَّلٰوةَ ۚ وَآتُوا الزَّكٰوةَ ۚ وَاطِيعُوا الرَّسُوۡلَ لَعَلَّكُمْ تُرۡحَمُونَ ۝ لَا
تَحۡسَبَنَّ اَلۡلّٰهَ یَنۡقُصُ وَاعۡمُرُوۡنَ فِی۟ الْاَرْضِ وَمَا وَضَعُ لَکَآءُ
لِّیۡسَ الْحَرۡجُ ۙ یٰۤاَیُّهَا الَّذِیۡنَ اٰمَنُوا اَلۡیٰسَعۡتُ لَکُمۡ فِی۟ الَّذِیۡنَ
اٰتٰکُمُ وَالَّذِیۡنَ لَمْ یَسۡلُکُوۡا اِلَیۡکُمۡ مِنْکُمْ ذٰلِکَ مِنْۢ بَعۡدِ
صَلٰوةِ الْعِشَیۡ ۚ وَحِیۡنَ تَضَعُوۡنَ رِیۡاۤیَکُمۡ فِی۟ الطَّٰغُوۡتِ ۚ وَمِنْۢ بَعۡدِ
صَلٰوةِ الْغَدِ ۙ اَلۡیٰسَعۡتُ لَکُمۡ عَلَیۡهِمْ وَلَا عَلَیۡهِمْ جَآءُ

मोमिनों की तां यह बात है कि जब खुदा और उस के रसूल की तरफ़ बुलाए जाएं ताकि वे उन में फ़ैसला करें, तो कहें कि हमने (हुक्म) सुन लिया और मान लिया और यही लोग फ़ज़ाह (कामियाबी) पाने वाले हैं। (५१) और जो शक्स खुदा और उस के रसूल की फ़रमांबरदारी करेगा और उन से डरेगा, तो ऐसे ही लोग मुराद को पहुंचने वाले हैं। (५२) और (ये) खुदा की सल्ल-सल्ल कस्में खाते हैं कि अगर तुम उन को हुक्म दो तो (सब घरों से) निकल खड़े हों, कहू दो कि कस्में मत खाओ, पसंदीदा फ़रमांबरदारी (चाहिए)। बेशक खुदा तुम्हारे सब आमाल से खबरदार है। (५३) कहू दो कि खुदा की फ़रमांबरदारी करो और (खुदा के) रसूल के हुक्म पर चलो। अगर मुंह मोड़ोगे तो रसूल पर (उस चीज़ का अदा करना) है जो उन के जिम्मे है और तुम पर (उस चीज़ का अदा करना) है जो तुम्हारे जिम्मे है और अगर तुम उन के फ़रमान पर चलोगे तो सीधा रास्ता पा लोगे और रसूल के जिम्मे तो साफ़-साफ़ (खुदा के अहक़ाम का) पहुंचा देना है। (५४) जो लोग तुम में से ईमान लाए और नेक काम करते रहे, उन से खुदा का वायदा है कि उनको मुल्क का हाकिम बना देगा, जैसा उनसे पहले लोगों को हाकिम बनाया था और उन के दीन को उनके लिए पसन्द किया है मज़बूत व पायदार करेगा और ख़ौफ़ के बाद उनको अमन बख़्शेगा। वे मेरी इबादत करेंगे और मेरे साथ किसी चीज़ को शरीक न बनाएंगे और जो इस के बाद कुफ़ करें तो ऐसे लोग बद-किरदार हैं। (५५) और नमाज़ पढ़ते रहो और ज़कात देते रहो और (खुदा के) पैग़म्बर के फ़रमान पर चलते रहो, ताकि तुम पर रहमत की जाए। (५६) (और) ऐसा ह्याल न करना कि काफ़िर लोग (हम को) मग़लूब कर देंगे, (ये जा ही कहाँ सकते हैं) इन का ठिकाना दोज़ख़ है और वह बहुत बुरा ठिकाना है। (५७)★

मोमिनो! तुम्हारे गुलाम-लौंडियां और जो बच्चे तुम में से बुलूग़ को नहीं पहुंचे, (बालिश नहीं हुए), तीन बार (यानी तीन वक़्तों में) तुम से इज़ाज़त लिया करें। (एक तो) सुबह की नमाज़ में पहले और (दूसरे गर्मी की) दोपहर को, जब तुम कपड़े उतार देते हो और (तीसरे) इशा की नमाज़ के बाद। (ये) तीन (वक़्त) तुम्हारे पर्दे (के) हैं। इन के (आगे-) पीछे (यानी दूसरे वक़्तों में) न तुम पर कुछ गुनाह है और न उन पर कि (काम-काज के लिए) एक-दूसरे के पास आते-रहते हो। इस तरह खुदा अपनी आयतें खोल-खोल कर ब्रयान फ़रमाता है और खुदा बड़ा दम वाला (और) बड़ा हिक्मत वाला है। (५८) और जब तुम्हारे लड़के बालिश हो जाएं तो उन

को भी इसी तरह इजाजत लेनी चाहिए, जिस तरह उन मे भगले (यानी बड़े आदमी) इजाजत हासिल करते रहे हैं, इस तरह खुदा तुम से अपनी आयतें खोल-खोल कर बयान फ़रमाता है और खुदा जानने वाला (और) हिकमत वाला है। (५६) और बड़ी उन्न की औरतें, जिन को निकाह की उम्मीद नहीं रही और वे कपड़े उतार (कर सर नंगा कर) लिया करें, तो उन पर कुछ गुनाह नहीं बशर्त कि अपनी ज़ीनत की चीज़ें न जाहिर करें और अगर इस से भी बचें तो (यह) उन के हक़ में बेहतर है और खुदा मुनता-जानता है। (६०) न तो अंधे पर कुछ गुनाह है और न लंगड़े पर और न बीमार पर और न खुद तुम पर कि अपने घरों से खाना खाओ या अपने बापों के घरों से या अपनी मांओं के घरों से या भाइयों के घरों से या अपनी बहनों के घरों से या अपने चचाओं के घरों से या अपनी फूफियों के घरों से या अपने मामुओं के घरों से या अपनी खालाओं के घरों से या उस घर से, जिस की कुंजियां तुम्हारे हाथ में हों या अपने दोस्तों के घरों से (और इस का भी) तुम पर कुछ गुनाह नहीं कि सब मिल कर खाना खाओ या अलग-अलग। और जब घरों में जाया करो तो अपने (घर वालों) को सलाम किया करो। (यह) खुदा की तरफ़ से मुबारक और पाकीज़ा तोहफ़ा है। इस तरह खुदा अपनी आयतें खोल-खोल कर बयान फ़रमाता है, ताकि तुम समझो। (६१)★

मोमिन तो वे हैं जो खुदा पर और उस के रसूल पर ईमान लाए और जब कभी ऐसे काम के लिए जो जमा हो कर करने का हो, पैग़म्बरे खुदा के पास जमा हों, तो उन से इजाजत लिए बग़ैर चले नहीं जाते। ऐ पैग़म्बर ! जो लोग तुम से इजाजत हासिल करते हैं, वही खुदा पर और उस के रसूल पर ईमान रखते हैं, तो जब ये लोग तुम से किसी काम के लिए इजाजत मांगा करें, तो उन में से जिसे चाहा करो, इजाजत दे दिया करो और उन के लिए खुदा से बलिशश मांगा करो। कुछ शक़ नहीं कि खुदा बलशाने वाला मेहरबान है। (६२) मोमिनो ! पैग़म्बर के बुलाने को ऐसा स्थान न

ला तज्जलू दुआअरसूलि बेनकुम् कदुआइ बअ - जिकुम् बअ - जन् ८ कद
यअ-लमुल्लाहुल्लजी-न सु-त-सल्ललू-न मिन्कुम् निवाजन् ८ फल्-यह-जगिन्-लजी-न
युसूलिफू-न अन् अमिरही अन् तुसीबहुम् फित्-नतुन् औ युसीबहुम् अजाबुन् अलीम
(६३) अला इन्-न लिल्लाहि मा फिस्समावाति वल्अजि ८ कद यअ-लमु मा
अन्तुम् अलैहि ८ व यो-म युजअ-न इलैहि
फयुनब्बिउहुम् बिमा अमिलू ८ वल्लाहु
बिकुल्लि शैइन् अलीम ★ (६४)

२५ सूरतुल्-फुर्कानि ४२

(मक्की) इस सूरः में अरबी के ३६१६ अक्षर,

६०६ शब्द, ७७ आयत और ६ रुकूअ हैं ।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम •

तबारकल्लजी नज्ज - लल् - फुर्कान
अला अब्दिही लि-यकू-न लिल्आलमी-न
नजीरा ॥ (१) अल्लजी लह मुल्कुस्-
समावाति वल्अजि व लम् यत्तखिज् व-ल-दंव-व
लम् यकुल्लहू शरीकुन् फिलमुल्कि व ख-ल-क
कुल्-ल शैइन् फ-कद-द-रहू तक्दीरा (२) वत्तखजू मिन् इनिही आलिहतल्ला
यक्लुकू-न शैअव-व हुम् युख-लकू-न व ला यम्लिकू-न लिअन्फुसिहिम् ज़रर्व-व ला
नफ-अव-व ला यम्लिकू-न मौतव-व ला ह्यातव-व ला नुशूरा (३) व कालल्लजी-न
क-फल् इन् हाजा इल्ला इफकुनिफतराहु व अ - आनहू अलैहि कौमुन्
आखरू-न ८ फ - कद् जाऊ जुलमव्वजूरा ८ (४) व कालू असातीरुल्-
अव्वलीनक-त-त-वहा फहि-य तुम्ला अलैहि बुक-र-तंव-व असीला (५) कुल्
अन्-ज-लहुल्लजी यअ-लमुस्सिर-र फिस्समावाति वल्अजि ८ इन्हू का-न गफूर्-र-
रहीमा (६) व कालू मालिहाजरसूलि यअ-कुलुत्तआ-म व यम्शी फिलअस्वाकि ८
लीला उन्जि-ल इलैहि - म-ल-कुन् फ-यकू-न म-अहू नजीरा ॥ (७)



करना जैसा तुम आपस में एक दूसरे को बुलाते हो। बेशक खुदा को वे लोग मालूम हैं, जो तुम में से आंख बचा कर चल देते हैं तो जो लोग उन के हुक्म की मुखालफ़त करते हैं, उन को डरना चाहिए कि (ऐसा न हो कि) उन पर कोई आफ़त पड़ जाए या तक्लीफ़ देने वाला अज़ाब नाज़िल हो। (६३) देखो जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है, सब खुदा ही का है। जिस (दंग) पर तुम हो, वह उसे जानता है और जिस दिन लोग उस की तरफ़ लौटाए जाएंगे तो जो अमल वे करते रहे, वह उन को बता देगा और खुदा हर चीज़ को जानता है। (६४)★

२५ सूरः फ़ुर्कान ४२

सूरः फ़ुर्कान मक्की है और इस में ७७ आयतें और छः रकूअ हैं।

शुरू खुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

वह (खुदा-ए-अज़्ज़ व जल्ल) बहुत ही बरकत वाला है, जिस ने अपने बन्दे पर क़ुरआन नाज़िल फ़रमाया, ताकि दुनिया वालों को हिदायत करे। (१) वही कि आसमानों और ज़मीन की बादशाही उसी की है और जिस ने (किसी को) बेटा नहीं बनाया और जिस का बादशाही में कोई शरीक नहीं और जिस ने हर चीज़ को पैदा किया, फिर उस का एक अन्दाज़ा ठहराया। (२) और (लोगों ने) उस के सिवा और माबूद बना लिए हैं, जो कोई चीज़ भी पैदा नहीं कर सकते और खुद पैदा किए गये हैं और न अपने नुक़सान और नफ़ा का कुछ अस्तियार रखते हैं और न मरना उन के अस्तियार में है और न जीना और न (मर कर) उठ खड़े होना। (३) और काफ़िर कहते हैं कि यह (क़ुरआन) मनगढ़ंत बातें हैं, जो इस (रिसालत के दावेदार) ने बना ली है और लोगों ने इस में उस की मदद की है। 'ये लोग (ऐसा कहने से) ज़ुल्म और झूठ पर (उतर) आए हैं। (४) और कहते हैं कि यह पहले लोगों की कहानियां हैं, जिन को उस ने जमा कर रखा है। और वह सुबह व शाम उस को पढ़-पढ़ कर सुनायी जाती है। (५) कह दो कि उस को उस ने उतारा है जो आसमानों और ज़मीन की छिपी बातों को जानता है। बेशक वह बल्शने वाला मेहरबान है। (६) और कहते हैं, यह कैसा पैगम्बर है कि खाना खाता है और बाज़ारों में चलता-फिरता है, इस पर कोई फ़रिश्ता क्यों नाज़िल नहीं किया गया कि इस के साथ हिदायत करने को रहता। (७) या

ओ युल्का इलैहि कन्जुन् ओ तकून् लहू जन्तु व्यङ्कुलु मिन्हा ^b व
 कालज्जालिम्-न इन् तत्तबिअ - न इत्ता रजुलम्-मस्हरा (८) उन्जुर
 कै-फ़ ज़-रबू ल-कल्-अम्सा-ल फ़जल्लू फ़ला यस्ततीअ-न सबीला ★ (९)
 तबारकल्लजी इन् शा-अ ज-अ-ल ल-क खैरम्मिन् जालि-क जन्नातिन् तजरी मिन्
 तह्तिहल्-अन्हार ॥ व यज् - अल् ल-क

कुसूरा (१०) बल् कञ्जबू बिस्साअति
व अञ्-तद्-ना लिमन् कञ्ज-ब बिस्साअति
सञ्जीरा (११) इजा र-अहुम् मिम्-
मकानिम्-बओदिन् समिअ लहा त-गय्युञ्च-व
जफ़ीरा (१२) व इजा उल्कू मिन्हा मकानन्
जय्यिक्रम्-मुकरनी-न दओ हुनालि-क सुबरा

(१३) ला तद्भुल्-यो-म सुबूरंवाहिदंभवद्भु
सुबूरन् कसीरा (१४) कुल्
अ जालि-क खैरन् अम् जन्तुल्-खुल्दिल्-
लती वुअिदल् - मुत्तकू-न ^b कानत् लहुम्
जज्जअं-व मसीरा (१५) लहुम् फ्रीहा
मा यशाऊ-न खालिदी-न ^b का - न अला

रब्बि-क वअ-दम्-मस्ऊला (१६) व यो-म यद्दशुरुहुम् व मा यअ-बुद्द-न मिन्
दूनि-ल्लाहि फ-यकूलु अ अन्तुम् अज्ज-लल्लुम् अिबादी हाउला-इ अम् हुम्
जल्लुस्सबील (१७) कालू सुब्हान-क मा का-न यम्बगी लना अन् नत्तखि-अ
मिन् दूनि-क मिन् ओलिया-अ व लाकिम्-मत्तअ-तहुम् व आवा-अहुम् हत्ता
नसुज्जिक्-रट व कानू कौमम्बूरा (१८) फ-कद् कज्जबूकुम् बिमा तकूल-न
फमा तस्ततीअ-न सफ्व-व ला नस्सर्त्ट व मय्यज्जलिम् मिन्कुम् नुज्जिक्हु अजावत्
कबीरा (१९) व मा अरसल्ला कबल-क मिनल्-मुर्सली-न इल्ला इन्नहुम्
ल-यअकुलूनत्-तआ-म व यम्शू-न फिलअस्वाक्कि व ज-अल्ला बअ - ज़कुम्
लिबअ-ज्जिन फित-न-तन् व अतस्बिरू-न व का-न रब्बु-क बसीरा ★ (२०)

उस की तरफ़ (आसमान से) लखाना उतारा जाता या उस का कोई बाग़ होता कि उसमें से खाया करता और ज़ालिम कहते हैं कि तुम तो एक जादू किए हुए शरूस की पेंखी करते हो। (८) (ऐ पैग़म्बर!) देखो तो ये तुम्हारे बारे में किस-किस तरह की बातें करते हैं, सो गुमराह हो गये और रास्ता नहीं पा सकते ★ (९) वह (खुदा) बहुत बरकत वाला है, जो अगर चाहे, तो तुम्हारे लिए इस से बेहतर (चीज़ें) बना दे, (यानी) बाग़, जिन के नीचे नहरें बह रही हों, और तुम्हारे लिए महल बना दे। (१०) बल्कि ये तो क्रियामत ही को झुठलाते हैं और हमने क्रियामत के झुठलाने वालों के लिए दोख़ख़ तैयार कर रखी है। (११) जिस वक़्त वह उन को दूर से देखेगी, तो (ग़ज़बनाक हो रही होगी और ये) उस के जोशे (ग़ज़ब) और चीखने-चिल्लाने को सुनेंगे। (१२) और जब ये दोख़ख़ की किसी तंग जगह में (ज़ंजीरों में) जकड़ कर डाले जाएंगे तो वहां मौत को पुकारेंगे। (१३) आज एक ही मौत को न पुकारो, बहुत-सी मौतों को पुकारो। (१४) पूछो कि यह बेहतर है या हमेशा की जन्नत, जिस का परहेज़गारों से वायदा है। यह उन (के अमलों का) बदला और रहने का ठिकाना होगा। (१५) वहां जो चाहेंगे, उन के लिए (मयस्सर) होगा, हमेशा उस में रहेंगे। यह वायदा खुदा को (पूरा करना) ज़रूरी है और इस लायक है कि मांग लिया जाए। (१६) और जिस दिन (खुदा) इन को और उन को जिन्हें ये खुदा के सिवा पूजते हैं, जमा करेगा, तो फ़रमाएगा, क्या तुम ने मेरे इन बन्दों को गुमराह किया था या ये खुद गुमराह हो गये थे। (१७) वे कहेंगे, तू पाक है, हमें यह बात मुनासिब न थी कि तेरे सिवा औरों को दोस्त बनाते, लेकिन तू ने ही उन को और उन के बाप-दादा को बरतने की नेमतें दीं, यहां तक कि वे तेरी याद को भूल गये और ये हलाक होने वाले लोग थे। (१८) तो (काफ़िरो!) उन्होंने ने तो तुम को तुम्हारी बात में झुठला दिया پس (अब) तुम (अज़ाब को) न फेर सकते हो। न (किसी से) मदद ले सकते हो। और जो शरूस तुम में से जुल्म करेगा, हम उस को बड़े अज़ाब का मज़ा चखाएंगे। (१९) और हमने तुम से पहले जितने पैग़म्बर भेजे हैं, सब खाना खाते थे और बाज़ारों में चलते-फिरते थे और हम ने तुम्हें एक-दूसरे के लिए आजमाइश बनाया। क्या तुम सब करोगे और तुम्हारा परवरदिगार तो देखने वाला है। (२०) ★

और जो लोग हम से मिलने की उम्मीद नहीं रखते, कहते हैं कि हम पर फ़रिश्ते क्यों न नाज़िल किये गये या हम आँख से अपने परवरदिगार को देख लें। ये अपने ह्याल में बड़ाई रखते हैं और (इसी वजह से) बड़े सरकश हो रहे हैं। (२१) जिस दिन ये फ़रिश्तों को देखेंगे, उस दिन गुनाहगारों के लिए कोई खुशी की बात नहीं होगी और कहेंगे (खुदा करे तुम) रोक लिए (और बंद कर दिए) जाओ। (२२) और जो उन्होंने न अमल किए होंगे, हम उन की तरफ़ मुतवज्जह होंगे तो उनको उड़ती खाक कर देंगे। (२३) उस दिन जलन्त वालों का ठिकाना भी बेहतर होगा और आराम की जगह भी खूब होगी। (२४) और जिस दिन आसमान बादल के साथ फूट जाएगा और फ़रिश्ते नाज़िल किए जाएंगे। (२५) उस दिन सच्ची बादशाही खुदा ही की होगी और वह दिन काफ़िरों पर (सलत) मुश्किल होगा। (२६) और जिस दिन (अंजाम से बे-ख़बर) जालिम अपने हाथ काट-काट खाएगा (और) कहेगा कि ऐ काश! मैंने पैग़म्बर के साथ रास्ता अपनाया होता। (२७) हाय शामत! काश! मैंने पलां शल्लस को दोस्त न बनाया होता। (२८) उस ने मुझ को नसीहत (की किताब) के मेरे पास आने के वाद बहका दिया और शैतान इसान को वक़्त पर दगा देने वाला है। (२९) और पैग़म्बर कहेंगे कि ऐ परवरदिगार! मेरी क्रौम ने इस क़ुरआन को छोड़ रखा था। (३०) और इसी तरह हमने गुनाहगारों में से हर पैग़म्बर का दुश्मन बना दिया और तुम्हारा परवरदिगार हिदायत देने और मदद करने को काफ़ी है। (३१) और काफ़िर कहते हैं कि इस पर क़ुरआन एक ही बार क्यों नहीं उतारा गया, इस तरह (धीरे-धीरे) इसलिए (उतारा गया) कि इस से तुम्हारे दिल को कायम रखें और (इसी वास्ते) हम उस को ठहर-ठहर कर पढ़ते रहे हैं। (३२) और ये लोग तुम्हारे पास जो (एतराज़ की) बात लाते हैं, हम तुम्हारे पास सही और ख़ुब बेहतर ज़बाब भेज देते हैं। (३३) जो लोग अपने मुंहों के बल दोज़ख़ की तरफ़ जमा किए जाएंगे, उन का ठिकाना भी बुरा है और वे रास्ते से भी बहके हुए हैं। (३४)★

और हमने मूसा को किताब दी और उन के भाई हारून को मददगार बना कर उन के साथ मिला दिया। (३५) और कहा कि दोनों उन लोगों के पास जाओ, जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया। (जब झुठलाने पर अड़े रहे) तो हमने उन को हलाक कर डाला। (३६) और नूह की

१. यानी खुदा तुम से पनाह में रहे। अरबों की आदत है कि जब उन में से किसी पर कोई मक्ती और आफ़त व बला नाज़िल होती है, तो कहते हैं 'हिज-रम मद्बूरा' जैसे हम कहते हैं कि खुदा की पनाह।

२. यानी आममान के फटने के साथ वह बदली भी फट जाएगी, जो आममान और लोगों के दमियान है। कुछ लोगों ने कहा कि आममान फट जाएगा, इस हाल में कि उस पर बादल होगा। कुछ लोगों ने कहा कि आसमान बादल की वजह से फट जाएगा यानी बदली जाहिर होगी और उस की वजह से आममान फट जाएगा।

३. प्यारे नबी मल्ल० क्रियामत के दिन खुदा से शिकायत करेंगे कि मेरे परवरदिगार! मेरी क्रौम ने क़ुरआन को छोड़ दिया। छोड़ देने की कई शकलें हैं—इस को न मानना और इस पर ईमान न मानना भी छोड़ देना है। इस में ग़ौर न करना और सोच-ममज़ कर न पढ़ना भी छोड़ देना है। इस के दुक्मों का न मानना और इस की मना की हुई चीज़ों से न रुकना भी छोड़ देना है। क़ुरआन की परवाह न कर के दूसरी चीज़ों जैसे बेहदा नावेनों, शैवानों, लाव बातों, खेल-तमाशों, राग व रंग में लगा रहना भी छोड़ देना है। अक्रौम है कि आजकल के मुसलमान क़ुरआन की तरफ़ से निहायत गाफ़िल हो रहे हैं। उस के पढ़ने-मोचने-ममज़ने और हिदायतों से फ़ायदा उठाने की तरफ़ तवज्जोह नहीं करते और यह ख़ुस्मज़-ख़ुस्मा क़ुरआन मज़ीद का छाड़ना है। अल्लाह तआला उन (मेप पृष्ठ ५७७ पर)

व को-म नूहिल्लम्मा कब्जबुरुसु-ल अग्-रब्नाहुम् व ज-अल्नाहुम् लिन्नासि आ-य-तन्
 व अअ-तद्ना लिज्जालिमी-न अजाबन् अलीमा (३७) व आदव-व समू-द
 व अस्थाबरंस्सि व कुरुनम्-बैन जालि-क कसीरा (३८) व कुल्लन् ज-रब्ना
 लहुल्-अम्मा-ल व कुल्लन् तब्बर्ना तत्बीरा (३९) व ल-कद् अतो अ-ल-ल्

कर्यतिल्लती उम्ति - रत् म-त - र-स्सोइ
 अ-फ-लम् यकून् यरीनहा बल् कानू ला
 यरजून नुशूरा (४०) व इजा रओ-क
 इय्यत्तखिजू - न - क इल्ला हुजुवा
 अहाजल्लजी ब-अ-सल्लाहु रसूला (४१)
 इन् का-द लयुजिल्लुना अन् आलिहतिना
 लीला अन् स - बर्ना अलैहा

व सौ-फ यअ-लमू-न ही-न यरीनल्-अजा-ब
 मन् अ-जल्लु सबीला (४२) अ-रऐ-त
 मनित्त-ख-जा इलाहह हवाहु अ-फ-अन्-त
 तकून् अलैहि वकीला (४३) अम्
 तह्सबु अन्-न अक्स-रहुम् यस्मअ-न औ
 यअ-किलू-न इन् हुम् इल्ला कल्-अन्आमि
 बल् हुम् अ-जल्लु सबीला * (४४) अ-लम्

त-र इला रब्बि-क कै-फ मददज्जिल-ल व लौ शा-अ ल-ज-अ-लह साकिनन् सुम्-म
 ज-अल्लश्शम्-स अलैहि दलीला (४५) सुम्-म क-बज्जनाहु इलैना कब्जयसीरा
 (४६) व हुवल्लजी ज-अ-ल लकुमुल्लै-ल लिबासव्वन्नौ-म सुबातव-व ज-अ-लन्-
 नहा-र नुशूरा (४७) व हुवल्लजी असं-लरिया-ह बुशरम्-बैन यदै रहमतिही
 व अन्जल्लना मिनस्समाइ माअन् तहूरल्- (४८) - लिनुहिय - य बिही
 बल्द-तुम्-मैतव-व नुस्कि-यहू मिम्मा ख-लव्ना अन्आमव-व अनासिय-य कसीरा (४९)
 व ल-कद् सरफनाहु बैनहुम् लियज्जक्करु फ - अबा अक्सरुन्नासि इल्ला
 कुफूरा (५०) व लौ शिअना ल-ब-अस्ना फी कुल्लि कर-यतिन् नजीरा
 (५१) फ़ला तुतिअिल्-काफिरी-न व जाहिद्हुम् बिही जिहादन् कबीरा (५२)

كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا فَاهْتَدَوْا وَمَا نَزَّلْنَا الذِّكْرَ إِلَّا كَذِّبُوا الْإِنشِرَافَ
 الْفَرْقَ وَجَعَلْنَاهُمْ لَكَاسٍ أَيْ وَجَعَلْنَا الْقُلُوبَ عَلَيْهِمْ أَكْأَسًا
 عَلَا وَكُنُوا وَأَصْحَابُ الْوَيْلِ وَقُرُونِ الَّذِينَ فِي ذَلِكَ أَهْلُ الْوَيْلِ
 لَهُ الْإِنشِرَافَ وَلَا تَنْتَهِرُ تَنْتِهِرَهُ وَلَقَدْ أَتَا عَلَى الْقَوْمِ لَوْنُ الْغَيْظِ
 مَعْرُوفُهُ الْقَوْمُ لَوْنُهُمْ بَلْ كَانُوا لَا يَتَنَبَّهُونَ وَهُمْ لَا إِذًا
 رَأَوْهُ إِلَّا بُعْثْنَاهُمْ فَأَخَذْنَا الْقَوْمَ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي الْعَذَابِ إِنَّ
 كَذِّبُوا لَكُنْ أَهْلًا مِنَ الْعَذَابِ إِنَّهُمْ كَانُوا فِيهِ يَسْتَمِعُونَ
 جَوْنُ يَوْمِ الْعَذَابِ مِنْ أَهْلِ سَبِيلِهِ أَرَأَيْتُمْ مَنِ اخْتَارَ
 قَوْمَهُ أَلَمْ يَكُنْ عَلَيْهِمْ وَلِيًّا أَمْ يُحِبُّونَ الَّذِينَ هُمْ يَكْفُرُونَ
 أَوْ يَحِبُّونَ مَنْ هُمُ الْكَافِرُونَ أَمْ يَحِبُّونَ أَهْلَ الْوَيْلِ
 بَلْ كَيْفَ يَدْرِي الْغُلَّ وَكَوْنَهُ لَيْسَ بِمَعْلُومٍ سَأَلْنَا عَنْ أَهْلِ الْوَيْلِ
 الَّذِينَ كَفَرُوا فَنُفِخَ فِي سُورَةٍ فَإِنَّا أَتَيْنَاهُم بِسُورَةٍ وَمِنْ دُونِهَا
 لِكُلِّ أُمَّةٍ أَمَّا الْوَيْلُ فَكَانَ لِلَّهِ فَجَعَلَ اللَّهُ لِكُلِّ شَيْءٍ قَدْرًا
 أَمَّا الْوَيْلُ فَكَانَ لِلَّهِ فَجَعَلَ اللَّهُ لِكُلِّ شَيْءٍ قَدْرًا
 أَمَّا الْوَيْلُ فَكَانَ لِلَّهِ فَجَعَلَ اللَّهُ لِكُلِّ شَيْءٍ قَدْرًا
 أَمَّا الْوَيْلُ فَكَانَ لِلَّهِ فَجَعَلَ اللَّهُ لِكُلِّ شَيْءٍ قَدْرًا

कोम ने भी जब पैगम्बरों को मृत्तलाया, तो हमने उन्हें डुबो दिया और लोगों के लिए निशानी बना दिया और जालिमों के लिए हमने दुख देने वाला अजाब तैयार कर रखा है। (३७) और आद और समूद और कुनू बालों और उनके दमियान और बहुत मी जमाअतों को भी (हलाक कर दिया)। (३८) और सब के (समझाने के) लिए हमने मिसालें बयान कीं और न (मानने पर) सब का तहस-नहस कर दिया। (३९) और ये (काफिर) उस बस्ती पर भी गुजर चुके हैं, जिस पर बुग्री तरह का मेंह बरमाया गया था, वे इस को देखते न होंगे, बल्कि उन को तो (मरने के बाद) जी उठने की उम्मीद ही नहीं। (४०) और ये लोग जब तुम को देखते हैं, तो तुम्हारी हंसी उड़ाते हैं कि क्या यही शरूम है, जिस को खुदा ने पैगम्बर बना कर भेजा है। (४१) अगर हम अपने माबूदों के बारे में माबित क़दम न रहते, तो यह ज़रूर हम को बहका देता (और) उन से (फेर देता) और ये बहुत जल्द मालूम कर लेंगे, जब अज़ाब देखेंगे कि सीधे रास्ते में कौन भटका हुआ है। (४२) क्या तुम ने उस शरूम को देखा, जिस ने नफ़स की स्वाहिश को माबूद बना रखा है। तो क्या तुम उस पर निगहबान हो सकते हो? (४३) या तुम यह ख्याल करते हो कि इन में अक्सर सुनते या समझते हैं? (नहीं) ये तो चौपायों की तरह के हैं बल्कि उन से भी ख़ादा गुमराह हैं★(४४) भला तुम ने अपने परवरदिगार (की कुदरत) को नहीं देखा कि वह साग को किस तरह लंबा कर (के फेला) देता है और अगर वह चाहता तो उस को (बे-हर्कत) ठहरा रखता, फिर मूरज को उस का रहनुमा बना देता है। (४५) फिर हम उस को धीरे-धीरे अपनी तरफ़ ममेट लेते हैं। (४६) और वही तो है, जिस ने ग़त को तुम्हारे लिए पर्दा और नींद को आराम ममेट लेते हैं। (४७) और वही तो है, जो अपनी रहमन बनाया और दिन को उठ खड़े होने का वक़्त ठहराया। (४८) और वही तो है, जो अपनी रहमन के मेंह के आगे हवाओं को खुणख़बरी बना कर भेजता है और हम आसमान से पाक (और निशरा हुआ) पानी बरमाते हैं। (४९) ताकि इस से मुर्दा शहर (यानी बंजर ज़मीन) को ज़िदा कर दें और फिर हम उसे बहुत में चौपायों और आदमियों को, जो हमने पैदा किए हैं, पिनाते हैं। (५०) और हमने इस (क़ुरआन की आयतों) को तरह-तरह से लोगों में बयान किया ताकि नसीहत पकड़ें, मगर बहुत में लोगों ने इंकार के सिवा क़बूल न किया। (५१) और अगर हम चाहते तो हर बस्ती में डराने वाला भेज देते। (५२) तो तुम काफ़िरों का क़हा न मानो और उनसे इस क़ुरआन के हुक्म

(पृष्ठ ५७५ का जैप)

को इस तरह तबज़ोह देने और उन की तिलावत में रंग रहने की तौकीद बसो ताकि वे उन पर अमल करें और उन को शानों दुनिया की कामियाबी हामिल हो।

व हुवल्लजी म-र-जल्-बहरेनि हाजा अजबुन् फुरातु व-व हाजा मिल्हुन् उजाजुन्
 व ज-अ-ल बेनहुमा बजख्व-व हिजरम्-महजुरा (५३) व हुवल्लजी ख-ल-क
 मिनल्माई ब-श-रन् फ-ज-अ-लहू न-स-बं-व-व सिहरन् व का-न रब्बु-क कदीरा (५४)
 व यअ-बुद्-न मिन् हुनिल्लाहि मा ला यन्फअहुम् व ला यजुर्हुम् व कानल्काफि
 अला रब्बिही जहीरा (५५) व मा

अर-सल्ता-क इल्ला मुबशिशरव-व नजीरा
 (५६) कुल् मा अस्अलुकुम् अलैहि मिन्
 अजिरन् इल्ला मन् शा-अ अय्यत्तखि-ज इला
 रब्बिही सबीला (५७) व त-व-कल्
 अ-लल्-हय्यिल्लजी ला यमूतु व सबिह
 बिहम्दिही व कफा बिही बिजुनबि
 अबादिही खबीरा ॥ (५८)

جاءكم بهجهاد الكيد وهو الذي مره البصير هذا غلب
 اوتى هذا اياه اجاب وجعل بينهما اربعا وعشرين سجدة
 من كذب خلق من الله بغير حجة لها ولا حق ولا عدل
 وجعل من دون الله ما لا ينفعهم ولا يضرهم وكان العاد على
 ربه كفيروا وما اسلك الا ميثقا وتوبوا قل ما اسئلكم عليه
 من اجر الا من شاء ان يعبدني ربه سبيلا وتوكل على
 الله الذي لا يموت وسبح بحمده وانك من عبادي خيرا
 الذي خلق السموات والارض وما بينهما في ستة ايام
 على العرش العظيم فقل يا عبادي اذعوا لاني قد انا
 الرحمن فاعبوا الرحمن استعبدوا لمن اذعوا فاعبوا
 تبارك الذي جعل في السماء سجدة وجعل فيها ليل ونهار
 وهو الذي جعل الليل والنهار خلفة لمن اذعوا واذعوا
 سجدة واعبدوا الرحمن الذين يشئون على الارض هودا
 اذعوا لهم الطغوت قالوا سبحانك والذين يظنون انهم
 معك اذعوا والذين يقولون ربنا اصف عاكلي طعامك
 ان علينا كان عذابك انما انت مستورا واما ما و
 الذين اذا اتواهم لم يقولوا وادبروا وكان بين ذلك قوا

अल्लजी ख-ल-कस्समावाति वल्अर-ज व मा
 बेनहुमा फी सित्तति अय्यामिन् सुम्मस्तवा
 अ-लल्अशि ठं अरह्मानु फस् - अल् बिही
 खबीरा (५९) व इजा की-ल लहुमुस्जुद
 लिरह्मानि कालू व मरह्मानु अनस्जुद

लिमा तअमुरुनावजादहुम् नुफूरा ★ □ (६०) तबार-कल्लजी ज-अ-ल फिस्समाई
 बुरुजव-व ज-अ-ल फीहा सिराजव-व क्र-म-रम्-मुनीरा (६१) व हुवल्लजी ज-अ-
 लल्ल-ल वल्नहा-र खिल्फतल्लिमन् अरा-द अय्यज्जक्क-र औ अरा-द शुकूरा (६२)
 व अबादुरह्मानिल्लजी-न यम्शू-न अलल्अजि हौनव-व इजा खा-त-बहुमुल्-जाहिलू-न
 कालू सलामा (६३) वल्लजी-न यबीतू-न लिरब्बिहिम् सुज्जदव-व क्रियामा (६४)
 वल्लजी-न यकलू-न रब्ब-नरिफ अन्ना अजा-ब जहन्म-म इन्-न अजाबहा का-न
 गरामा (६५) इन्नहा सा-अत् मुस्तकरव-व मुकामा (६६) वल्लजी-न इजा
 अन्फकू लम् युसिरफू व लम् यकतुरू व का-न बेन जालि-क कवामा (६७)

के मुताबिक बड़े जोर से लड़ो। (५२) और वही तो है जिस ने दो नदियों को मिला दिया, एक का पानी मीठा है, प्यास बुझाने वाला और दूसरे का खारी है छाती जलाने वाला और दोनों के दमियान एक आड़ और मजबूत ओट बना दी। (५३) और वही तो है, जिस ने पानी से आदमी पैदा किया, फिर उस को नसब वाला और दामादी रिश्ते वाला बनाया और तुम्हारा परवरदिगार (हर तरह की) कदरत रखता है। (५४) और ये लोग खुदा को छोड़ कर ऐसी चीज की पूजा करते हैं कि जो न उन को फायदा पहुंचा सके और न नुस्सान और काफिर अपने परवरदिगार की मुखालफत में बड़ा जोर मारता है। (५५) और हमने (ऐ मुहम्मद !) तुम को सिर्फ खुशी और अजाब की खबर सुनाने को भेजा है। (५६) कह दो कि मैं तुम से इस (काम) का मुआवजा नहीं मांगता। हां, जो शरूस चाहे अपने परवरदिगार की तरफ (जाने का) रास्ता अस्तिहार कर ले। (५७) और उस (खुदा-ए-) जिदा पर भरोसा रखो जो (कभी) नहीं मरेगा और उस की तारीफ के साथ तस्बीह करते रहो और वह अपने बन्दों के गुनाहों से खबर रखने का काफी है। (५८) जिस ने आसमानों और जमीन को और जो कुछ इन दोनों के दमियान है, छः दिन में पैदा किया, फिर अर्श पर जा ठहरा, (वह जिसका नाम रहमान यानी) बड़ा मेहरबान (है), तो उसका हाल किसी बा-खबर से मालूम कर लो, (५९) और जब इन (काफिरों) से कहा जाता है कि रहमान को सज्दा करो तो कहते हैं कि रहमान क्या ? क्या जिसके लिए तुम हम मे कहते हो, हम उस के आगे सज्दा करें ? और उस से विदकते हैं। (६०) ★ □

(और खुदा) बड़ी बरकत वाला है, जिस ने आसमानों में बुर्ज बनाए और उन में (सूरज का निहायत रोशन) चिराय और चमकता हुआ चांद भी बनाया। (६१) और वही तो है जिस ने रात और दिन को एक-दूसरे के पीछे आने-जाने वाला बनाया। (ये जानें) उस शरूस के लिए, जो गौर करना चाहे या शुक्र-गुजारी का इरादा करे (सोचने और समझने की है)। (६२) और खुदा के बन्दे तो वे हैं जो जमीन पर आहिस्तगी में चलते हैं और जब जाहिल लोग उन से (जाहिलाना) बात-चीत करते हैं तो सलाम कहते हैं। (६३) और वे जो अपने परवरदिगार के आगे सज्दे कर के और (इस्लाम व अदब से) खड़े रह कर रातों बसर करते हैं। (६४) और वे जो दुआ मांगते रहते हैं कि ऐ परवरदिगार ! दोजख के अजाब को हम से दूर रखियो कि उस का अजाब बड़ी तकलीफ की चीज है। (६५) और दोजख ठहरने और रहने की बहुत बुरी जगह है। (६६) और वे कि जब खच करते हैं तो न बे-जा उड़ाते हैं और न तंगी को काम में लाते हैं, बल्कि एतदाल के साथ, न

१. किसी का बाप, किसी का बेटा, किसी का ममुर, किसी का दामाद बना दिया।

२. जानमों के यह मानी कि वह जाती है, तो यह आता है और यह जाता है तो वह आती है।

जरूरत से ज्यादा, न कम । (६७) और वे जो खुदा के साथ किसी और माबूद को नहीं पुकारते और जिस जानदार को मार डालना खुदा ने हराम किया है, उस को कत्ल नहीं करते, मगर जायज तरीके (यानी शरीअत के हुकम) से और बद-कारी नहीं करते और जो यह काम करेगा, सख्त गुनाह में पड़ा होगा । (६८) क्रियामत के दिन उस को दूना अज़ाब होगा और ज़िल्लत व ख़्तारी से हमेशा उस में रहेगा । (६९) मगर जिस ने तौबा की और ईमान लाया और अच्छे काम किये तो ऐसे लोगों के गुनाहों को खुदा नेकियों से बदल देगा और खुदा तो बरूशने वाला मेहरबान है । (७०) और जो तौबा करता और नेक अमल करता है, तो बेशक वह खुदा की तरफ़ रुजूअ करता है । (७१) और वे जो झूठी गवाही नहीं देते और जब उन को बेहूदा चीज़ों के पास से गुजरने का इत्तिफ़ाक़ हो तो बुझुगों जैसे अन्दाज़ से गुजरते हैं । (७२) और वे कि जब उन को परवरदिगार की बातें समझायी जाती हैं तो उन पर अंधे और बहरे हो कर नहीं गिरते, (बल्कि गौर व फ़िक से सुनते हैं) । (७३) और वे जो (खुदा से) दुआ मांगते हैं कि ऐ परवरदिगार ! हम को हमारी बीवियों की तरफ़ से (दिल का चीन) और औलाद की तरफ़ से आंख की ठंडक अता फ़रमा और हमें परहेज़गारों का इमाम बना । (७४) इन (ख़ूबियों के) लोगों को उन के सब के बदले ऊंचे-ऊंचे महल दिए जाएंगे और वहां फ़रिश्ते उन से दुआ व सलाम के साथ मुलाक़ात करेंगे । (७५) उसमें वे हमेशा रहेंगे और वह ठहरने और रहने की बहुत ही उम्दा जगह है । (७६) कह दो कि अगर तुम (खुदा को) नहीं पुकारते तो मेरा परवरदिगार भी तुम्हारी कुछ परवाह नहीं करता । तुम ने झुठलाया है, सो उस की सज़ा (तुम्हारे लिए) लाज़िम (जरूरी) होगी । (७७) ★□

२६ सूर: शुअरा ४७

सूर: शुअरा मक्की है और इस में दो सौ सत्ताईस आयतें और ग्यारह रुकूअ हैं ।

शुरू खुदा का नाम लेकर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है ।

त्वा-सीम्-मीम् । (१) ये रोशन किताब की आयतें हैं । (२) (ऐ पैगम्बर!) शायद तुम इस (रंज) से कि ये लोग ईमान नहीं लाते, अपने आप को हलाक कर दोगे । (३) अगर हम चाहें तो इन पर आसमान से निशानी उतार दें, फिर इन की गरदनें उस के आगे झुक जाएं (४) और उन के पास (खुदा-ए-) रहमान की तरफ़ से कोई नयी नसीहत नहीं आती, मगर उस से मुंह फेर लेते हैं (५) सो ये तो झुठला चुके, अब इन को उस चीज़ की हकीकत मालूम होगी, जिस की हंसी उड़ाते

अ-व-लम् यरो इलल्अजि कम् अम्बत्ता फ्रीहा मिन् कुल्लि जौजिन् करीम (७)

इन्-न फ्री जालि-क लआयतत् व मा का-न अक्सरहुम् मुअ्मिनीन (८) व

इन्-न रब्ब-क लहुवल्-अजीजुर्रहीम * (९) व इज् नादा रब्बु-क मूसा

अनिअतिल्-कौमज्-जालिमीन ॥ (१०) कौ-म फिर्औ - न ७ अला यत्तकू - न

(११) का - ल रब्बि इन्नी अस्वाफु

अय्युकज्जिबून ७ (१२) व यज़ीकू सद्री

व ला यन्तलिक्कु लिसानी फ-असिल् इला

हारून (१३) व लहुम् अ-लय-य जम्बुन्

फ-अस्वाफु अय्यक्तुलून ८ (१४) का - ल

कल्ला ८ फज् - हबा बिआयातिना इन्ना

म-अकुम् मुस्तमिअून (१५) फअ्तिया

फिर्औ-न फकूला इन्ना रसूलु रब्बिल् -

आलमीन ॥ (१६) अन् असिल् म-अना

बनी इस्राईल् ७ (१७) का-ल अ-लम्

नुरब्बि-क फ्रीना वलीद्व-व लबिस्-त फ्रीना

मिन् अमुरि - क सिनीन ॥ (१८)

व फ-अल्-त फअ-ल्-त-कल्लती फ-अल्-त व अन्-त

मिनल्काफिरीन (१९) का-ल फ-अल्तुहा

इज्व्-व अ-न मिनज़्जाल्लीन ७ (२०) फ-फररतु मिन्कुम् लम्मा खिफ्तुकुम्

फ-व-ह-व ली रब्बी हुक्मव्-व ज-अ-लनी मिनल्-मुर्सलीन (२१) व

तिल्-क निअ-मतुन् तमुन्नुहा अ-लय-य अन् अब्बत्-त बनी इस्राईल् ७ (२२) का-ल

फिर्औनु व मा रब्बुल्-आलमीन ७ (२३) का-ल रब्बुस्समावाति वल्अजि

व मा बैनहुमा ७ इन् कुन्तुम् मूकिनीन (२४) का-ल लिमन् होलह अला

तस्तमिअून (२५) का-ल रब्बुकुम् व रब्बु आबाइकुमुल्-अव्वलीन (२६)

का-ल इन्-न रसूलकुमुल्लजी उसि-ल इलैकुम् ल-मज्जून (२७) का-ल रब्बुल्-

मशिरकि वल्-मशिरबि व मा बैनहुमा ७ इन् कुन्तुम् तअ-किलून (२८)

سَمْعُكُمْ ۖ اَوَلَمْ يَرَوْا اِلَى الدِّينِ كَمْ اَنْشَأْنَا مِنْ قَبْلِ تَعْمِيرِهِمْ اِنْ فِي ذَلِكَ لَآيَةٌ وَّكَانَ الْاَكْثَرُ مُؤْمِنِينَ ۝ وَاَنْ رَبُّكَ لَظَهْرُ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ ۝ وَلَوْلَا رَحْمَةُ رَبِّكَ لَأَمْسَلَ الْعَالَمِينَ ۝ قَوْمُ يَرْوَعُونَ الْاَيْتُونَ ۝ قَالَ رَبِّ اِنِّي اَنْتَ بَدَّلْتَنِي ۝ وَبَدَّلْتَ صَدْرِي ۝ وَكَرِهْتَ لِي اَنْ تَكُونَ اِلَى هَذِهِ ۝ وَلَمْ تَعْلَمْ دُخْبًا ۝ قَالَتْ اَنْ تَقْتُلَنِي ۝ قَالَ كَلَّا ۝ فَاَذْهَبْ بِاِيَّتِي اَرَا مَعْلُوفَةً ۝ فَاَيُّهَا يَرْوَعُونَ تَقُولُ اِنَّا رَسُوْلُ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝ اَنْ اَرْسَلَ مَعَنَا اَيُّهَا الرَّاكِبُ قَالَ اَمَّا لَوْ كُنَّا نَعْلَمُ اَنَّا اَوَّلُ الْاَنْبِيَاءِ ۝ فَيَتَاَمَرُونَ عَلَيْهِمْ فَعَلَتْ لَعْنَتُ الْاَوَّلَى ۝ قَالَتْ وَانْتَ مِنَ الْاَكْثَرِينَ ۝ قَالَ مَعْلُوفَةً اِذَا قَالَا مِنَ الْعَالَمِينَ ۝ تَقَرَّرَتْ وَهَلْ اَتَاكَ مَعْلُوفَةٌ ۝ اَنْ يَكُنْ مَعْلُوفَةً ۝ وَبَدَّلْتَ صَدْرِي ۝ وَلَوْلَا رَحْمَةُ رَبِّكَ لَأَمْسَلَ اَنْ جَدَّدْتَ بَنِي يَرْوَعُونَ ۝ قَالَ يَرْوَعُونَ ۝ وَارَبُّ الْعَالَمِينَ ۝ قَالَ رَبُّ السَّمَوَاتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا اِنْ لَكُمْ مُؤْمِنُونَ ۝ كَانَ لَكُمْ حَقُّهُ ۝ اَلَا تَسْتَعْتَبُونَ ۝ قَالَ رَبُّكُمْ وَارَبُّ الْاَنْبِيَاءِ الْاَوَّلِينَ ۝ قَالَ اِنْ رَسُوْلُكُمُ الَّذِي اَرْسَلَ اِلَيْكُمْ مُصَدِّقًا قَالَ رَبُّ الشُّرَاقِ وَالْعَرَبِ وَمَا بَيْنَهُمَا اِنْ لَكُمْ تَقْوَى ۝	
--	--

बे। (६) क्या उन्होंने ने ज़मीन की तरफ नहीं देखा कि हम ने उस में हर किस्म की कितनी उमदा चीज़ें उगायी हैं। (७) कुछ शक नहीं कि इस में (खुदा की क़ुरत की) निशानी है, मगर ये अक्सर ईमान लाने वाले नहीं (८) और तुम्हारा परवरदिगार ग़ालिब (और) मेहरबान है। (९) ★

और जब तुम्हारे परवरदिगार ने मूसा को पुकारा कि ज़ालिम लोगों के पास जाओ। (१०) (यानी) फ़िर्औन की क़ौम के पास, क्या यह डरते नहीं? (११) उन्होंने ने कहा कि मेरे परवरदिगार मैं डरता हूँ कि ये झूठा समझें। (१२) और मेरा दिल तंग होता है और मेरी जुबान रुकती है, तो हाक़ूत को हुक़म भेज (कि मेरे साथ चलें)। (१३) और उन लोगों का मुझ पर एक गुनाह (यानी क़िल्ली के खून का दावा) भी है, सो मुझे यह भी डर है कि मुझ को मार ही डालें (१४) फ़रमाया, हरगिज़ नहीं! तुम दोनों हमारी निशानियाँ ले कर जाओ, हम तुम्हारे साथ सुनने वाले हैं। (१५) तो दोनों फ़िर्औन के पास जाओ और कहो कि हम तमाम ज़हान के मालिक के भेजे हुए हैं। (१६) (और इसलिए आए हैं) कि आप बनी इस्राईल को हमारे साथ जाने की इज़ाज़त दें। (१७) (फ़िर्औन ने मूसा से) कहा, क्या हम ने तुम को कि अभी बच्चे थे, परवरिश नहीं किया और तुम ने वषों हमारे यहां उम्र बसर (नहीं) की? (१८) और तुम ने एक और काम किया था, जो किया, तुम ना-शुके मालूम होते हो (१९) (मूसा ने) कहा कि (हां,) वह दूरक़त मुझ से अचानक हो गयी थी, और मैं ख़ताकारों में था। (२०) तो जब मुझे तुम से डर लगा तो तुम में से भाग गया, फिर खुदा ने मुझ को नुबूवत व इल्म बढ़ाया और मुझे पैग़म्बरों में से किया। (२१) और (क्या) यही एहसान है जो आप मुझ पर रखते हैं कि आप ने बनी इस्राईल को गुलाम बना रखा है? (२२) फ़िर्औन ने कहा कि तमाम ज़हान का मालिक क्या? (२३) कहा कि आसमानों और ज़मीन और जो कुछ इन दोनों में है, सब का मालिक, बशर्ते कि तुम लोगों को यक़ीन हो। (२४) फ़िर्औन ने अपने अहाली-मवाली से कहा कि क्या तुम सुनते नहीं? (२५) (मूसा ने) कहा कि तुम्हारा और तुम्हारे पहले बाप-दादा का मालिक। (२६) (फ़िर्औन ने) कहा कि (यह) पैग़म्बर, जो तुम्हारी तरफ़ भेजा गया है, बावला है। (२७) (मूसा ने) कहा कि पूरब और पच्छिम और जो कुछ इन दोनों में है, सब का मालिक, बशर्ते कि तुम को समझ हो। (२८) (फ़िर्औन ने) कहा कि अगर तुम ने

१. गो मूसा अलैहिस्सलाम के साथ फ़िर्औन ने सुलूक किया और उन की अच्छी तरह और एक मुहत्त तक परवरिश (शेष पृष्ठ ५८५ पर)

मेरे सिवा किसी और को मायूस बनाया, तो मैं तुम्हें कैद कर दूंगा। (२६) (मूसा ने) कहा, चाहे मैं आप के पास रोशन चीज लाऊं (यानी मोजजा ?)। (३०) (फ़िर्औन ने) कहा, अगर सच्चे हो तो उसे लाओ (दिन्याओ)। (३१) पस उन्होंने ने अपनी लाठी डाल दी, तो वह उसी वक़्त ख़ुला अरुद्धा बन बयी। (३२) और अपना हाथ जो निकाला, तो उसी दम देखने वालों के लिए सफ़ेद (बराक़) नज़र आने लगा। (३३) ★

फ़िर्औन ने अपने पास के सरदारों से कहा कि यह तो फ़न में कामिल जादूगर है। (३४) चाहता है कि तुम को अपने जादू (के जोर) से अपने मुल्क से निकाल दे, तो तुम्हारी क्या राय है ? (३५) उन्होंने ने कहा कि उस के और उस के भाई (के बारे में) कुछ ठहरिए और शहरों में नक़ीब भेज दीजिए, (३६) कि सब माहिर जादूगरों को (जमा कर के) आप के पास ले आएँ। (३७) तो जादूगर एक मुक़र्रर दिन की मीयाद पर जमा हो गए (३८) और लोगों से कह दिया गया कि तुम (सब) को इकट्ठे हो जाना चाहिए, (३९) ताकि अगर जादूगर ग़ालिब रहें तो हम उन की पंखी करने वाले हो जाएँ। (४०) जब जादूगर आये, तो फ़िर्औन से कहने लगे कि अगर हम ग़ालिब रहें, तो हमें इनाम भी मिलेगा ? (४१) फ़िर्औन ने कहा, हाँ, और तुम मुक़र्रबों में दाख़िल हो जाओगे। (४२) मूसा ने उन से कहा कि जो चीज डालनी चाहते हो, डालो। (४३) तो उन्होंने ने अपनी रस्मियाँ और लाठियाँ डालीं और कहने लगे कि फ़िर्औन के इक़बाल की क़सम ! हम जरूर ग़ालिब रहेंगे। (४४) फिर मूसा ने अपनी लाठी डाली तो वह उन चीज़ों को, जो जादूगरों ने बनायी थीं, निगलने लगी। (४५) तब जादूगर सज़दे में गिर पड़े। (४६) (और) कहने लगे कि हम तमाम ज़हान के मालिक पर ईमान लाए, (४७) जो मूसा और हारून का मालिक है। (४८) फ़िर्औन ने कहा, क्या इस से पहले कि मैं तुम को इज़ाज़त दूँ, तुम उस पर ईमान ले आए ? बेशक यह तुम्हारा बड़ा है, जिस ने तुम को जादू सिखाया है। सो बहुत जल्द तुम (इस का अंजाम) मालूम कर लोगे कि मैं तुम्हारे हाथ और पांव मुख़ालिफ़ तरफ़ से काट दूंगा और तुम सब को सूनी पर चढ़ा दूंगा। (४९) उन्होंने ने कहा, कुछ तुक़सान (की बात) नहीं। हम अपने परवरदिगार की

(पृष्ठ ५८३ का शेष)

की, मगर मूसा अलैहिस्सलाम ने अपने बारे में अपनी क़ौम का ज़्यादा ख़याल किया, जिसे इस ज़ालिम ने निहायत ज़िल्लत की हालत में रखा था और ऊँचे ख़याल वाले नेक दिल लोग अपनी जात के बारे में हमेशा अपनी क़ौम की मलाए को अहम समझा करते हैं, इस लिए उन्होंने ने फ़िर्औन का एहसान सुन कर यह ज़बाब दिया कि भला आप का मुझ पर यही एहसान है कि आप ने मेरी क़ौम को गुलाम बना रखा और ज़िल्लत और मुसीबत में फंसा रखा है। एहसान तो तब था जब मेरी क़ौम के साथ भी मुलूक किया जाता।

तरफ लौट जाने वाले हैं। (५०) हमें उम्मीद है कि हमारा परवरदिगार हमारे गुनाह बल्हा देगा, इस लिए कि हम पहले ईमान लाने वालों में हैं। (५१) ★

और हम ने मूसा की तरफ बह्य भेजी कि हमारे बन्धों को रात को ले निकलो कि (फ़िऔ'नियों की तरफ से) तुम्हारा पीछा किया जाएगा। (५२) तो फ़िऔ'नियों ने शहरों में नकीब (एलानची) रवाना किए। (५३) (और कहा) कि ये लोग थोड़ी सी जमाअत हैं। (५४) और ये हमें गुस्ता दिला रहे हैं। (५५) और हम सब साज और सामान के साथ हैं। (५६) तो हम ने उन को बागों और चश्मों से निकाल दिया, (५७) और खजानों और उम्दा मकानों से। (५८) (उन के साथ हम ने) इस तरह (किया) और इन चीजों का वारिस बनी इस्माईल को कर दिया। (५९) तो उन्होंने ने सूरज निकलते (यानी सुबह को) उन का पीछा किया। (६०) जब दोनों जमाअत आमने-सामने हुईं, तो मूसा के साथी कहने लगे कि हम तो पकड़ लिए गये। (६१) मूसा ने कहा, हर गिज नहीं, मेरा परवरदिगार मेरे साथ है, वह मुझे रास्ता बताएगा। (६२) उस वक्त हम ने मूसा की तरफ बह्य भेजी कि अपनी लाठी दरिया पर मारो तो दरिया फट गया और हर एक टुकड़ा (यों) हो गया (कि) गोया बड़ा पहाड़ (है)। (६३) और दूसरों को वहां हमने करीब कर दिया। (६४) और मूसा और उन के साथ वालों को (तो) बचा लिया। (६५) फिर दूसरों को डुबो दिया। (६६) बेशक इस (क्रिस्से) में निशानी है, लेकिन ये अक्सर ईमान लाने वाले नहीं। (६७) और तुम्हारा परवरदिगार तो गालिब और मेहरबान है। (६८) ★

और उन को इब्राहीम का हाल पढ़ कर सुना दो, (६९) जब उन्होंने ने अपने बाप और अपनी कौम के लोगों से कहा कि तुम किस चीज को पूजते हो? (७०) वे कहने लगे कि हम कुतों को पूजते हैं और उन (की पूजा) पर कायम हैं। (७१) (इब्राहीम ने) कहा कि जब तुम उन को पुकारते हो, तो क्या वे तुम्हारी (आवाज) सुनते हैं? (७२) या तुम्हें फ़ायदा दे सकते या नुकसान पहुंचा सकते हैं? (७३) उन्होंने ने कहा, (नहीं), बल्कि हम ने अपने बाप-दादा को इसी तरह करते देखा है। (७४) (इब्राहीम ने) कहा, क्या तुम ने देखा कि जिन को तुम पूजते रहे हो, (७५) तुम भी और तुम्हारे अगले बाप-दादा भी, (७६) वे मेरे दुश्मन हैं, मगर (अल्लाह) रम्बुल आलमीन (मेरा दोस्त है), (७७) जिस ने मुझे पैदा किया है और वही मुझे रास्ता दिखाता है। (७८) और वह जो मुझे खिलाता और पिलाता है। (७९) और जब मैं बीमार पड़ता हूं, तो मुझे शिफ़ा बल्हाता

१. दूसरों से मुराद फ़िऔन और उस की पैरवी करने वाले हैं।

है। (८०) और वह जो मुझे मारेगा (और) फिर जिंदा करेगा। (८१) और वह जिस से मैं उम्मीद रखता हूँ कि क्रियामत के दिन मेरे गुनाह बरुसेगा। (८२) ऐ परवरदिगार ! मुझे इल्म और सूझ-बूझ अता फ़रमा और नेकों में शामिल कर। (८३) और पिछले लोगों में मेरा जिक्र (जारी) कर। (८४) और मुझे नेमत की बहिश्त के वारिसों में कर। (८५) और मेरे बाप को बरुश दे कि वह गुमराहों में से है। (८६) और जिस दिन लोग उठा खड़े किए जाएंगे, मुझे हसवा न कीजियो। (८७) जिस दिन न माल ही कुछ फ़ायदा दे सकेगा और न बेटे। (८८) हाँ, जो शरस खुदा के पास पाक दिल ले कर आया, (वह बच जाएगा), (८९) और बहिश्त परहेजगारों के करीब कर दी जाएगी। (९०) और दोऊख गुमराहों के सामने लायी जाएगी। (९१) और उन से कहा जाएगा कि जिन को तुम पूजते थे, वे वहाँ हैं? (९२) (यानी जिन को) खुदा के सिवा (पूजते थे) क्या वे तुम्हारी मदद कर सकते हैं या खुद बदला ले सकते हैं? (९३) तो वे गुमराह (यानी बुत और बुतपरस्त) औंधे मुँह दोऊख में डाल दिए जाएंगे। (९४) और शतान के लश्कर सब के सब (जहन्नम में दाखिल होंगे)। (९५) वहाँ वे आपस में झगड़ेंगे और कहेंगे, (९६) कि खुदा की कसम ! हम तो खुली गुमराही में थे। (९७) जब कि तुम्हें (खुदा-ए-) रब्बुल आलमीन के बराबर ठहराते थे, (९८) और हम को इन गुनाहगारों ही ने गुमराह किया था, (९९) तो (आज) न कोई हमारा सिफ़ारिश करने वाला है, (१००) और न गर्मजोश दोस्त। (१०१) काश, हमें (दुनिया में) फिर जाना हो, तो हम भोमियों में हो जाएं। (१०२) बेशक इस में निशानी है और इन में अक्सर ईमान लाने वाले वही। (१०३) और तुम्हारा परवरदिगार तो ग़ालिब और मेहरबान है। (१०४) ★

नूह की कौम ने भी पैग़म्बरों को झुठलाया, (१०५) जब उन से उन के भाई नूह ने कहा कि तुम डरते क्यों नहीं? (१०६) मैं तो तुम्हारा अमानतदार पैग़म्बर हूँ। (१०७) तो खुदा से डरो और मेरा कहा मानो। (१०८) और मैं इस काम का तुम से बदला नहीं मांगता। मेरा बदला तो खुदा-ए-रब्बुल आलमीन ही पर है। (१०९) तो खुदा से डरो और मेरे कहने पर चलो। (११०) वे बोले कि क्या हम तुम को मान लें और तुम्हारी पैरवी करने वाले तो नीच लोग हुए हैं। (१११) (नूह ने)

कहा कि मुझे क्या मालूम कि वे क्या करते हैं। (११२) उन का हिसाबे (आमाल) मेरे परवरदिगार के ज़िम्मे है, काश ! तुम समझो। (११३) और मैं मोमिनों को निकाल देने वाला नहीं हूँ। (११४) मैं तो सिर्फ़ खोल-खोल कर नसीहत करने वाला हूँ। (११५) उन्होंने ने कहा कि नूह अगर तुम मानोगे नहीं तो पत्थर मार-मार कर हलाक कर दिए जाओगे। (११६) (नूह ने) कहा कि परवरदिगार मेरी क्रौम ने तो मुझ को झुठला दिया (११७) सो तू मेरे और उन के दमियान एक खुला फ़ैसला कर दे और मुझे और जो मोमिन मेरे साथ हैं, उन को बचा ले। (११८) पस हम ने उन को और उन के साथ भरी हुई कश्ती में (सवार थे) उन को बचा लिया। (११९) फिर इस के बाद बाक़ी लोगों को डुबो दिया। (१२०) बेशक इस में निशानी है और इन में अक्सर ईमान लाने वाले नहीं थे। (१२१) और तुम्हारा परवरदिगार तो ग़ालिब (और) मेहरबान है। (१२२) ★

आद ने भी पैगम्बरों को झुठलाया, (१२३) जब उन से उन के भाई हूद ने कहा, क्या तुम डरते नहीं ? (१२४) मैं तो तुम्हारा अमानतदार पैगम्बर हूँ। (१२५) तो खुदा से डरो और मेरा कहा मानो। (१२६) और मैं इस का तुम से कुछ बदला नहीं मांगता। मेरा बदला (खुदा-ए-) रब्बुल आलमीन के ज़िम्मे है। (१२७) भला तुम हर ऊँची जगह पर बेकार निशान तामीर करते हो। (१२८) और महल बनाते हो, शायद तुम हमेशा रहोगे। (१२९) और जब (किसी को) पकड़ते हो, तो जालिमाना पकड़ते हो। (१३०) तो खुदा से डरो और मेरी इताअत करो। (१३१) और उस से, जिस ने तुम को उन चीज़ों से मदद दी, जिन को तुम जानते हो, डरो। (१३२) उस ने तुम्हें चारपायों और बेटों से मदद दी, (१३३) और बाग़ों और चश्मों से, (१३४) मुझ को तुम्हारे बारे में बड़े (सलत) दिन के अज़ाब का डर है। (१३५) वे कहने लगे, हमें नसीहत करो या न करो, हमारे लिए बराबर है। (१३६) ये तो अगलों के ही तरीक़े हैं। (१३७) और हम पर कोई अज़ाब नहीं आएगा, (१३८) तो उन्होंने ने हूद को झुठलाया, सो हम ने उन को हलाक कर डाला। बेशक इस में निशानी है और इन में अक्सर ईमान लाने वाले नहीं थे। (१३९) और तुम्हारा परवरदिगार तो ग़ालिब (और) मेहरबान है। (१४०) ★

(और) समूद (क्रौम) ने भी पैगम्बरों को झुठलाया, (१४१) जब उन से उन के भाई सालेह ने कहा कि तुम डरते क्यों नहीं ? (१४२) मैं तो तुम्हारा अमानतदार पैगम्बर हूँ, (१४३) तो खुदा

१. इन लोगों को बड़ा शौक था ऊँचे मजबूत मीनारे बनाने का, जिस से कुछ काम न निकले, मगर नाम और रहने की इमारतें बड़े तकलुक से माल ख़राब करते हो। बाग़े इरम इन्हीं का मग़हर है।

२. यानी अगले लोग भी इसी तरह बहिश्त की नेमतों की तारीफ़ें किया करते थे और दोख़ के अज़ाब से डराया करते थे।

से डरो और मेरा कहा मानो, (१४४) और मैं इस का तुम से बदला नहीं मांगता। मेरा बदला (खुदा-ए-) रब्बुल आलमीन के जिम्मे है। (१४५) क्या जो चीजें (तुम्हें) यहां (मिलती) हैं, उन में तुम बे-खोफ छोड़ दिए जाओगे ! (१४६) (यानी) बाग और चण्मे, (१४७) और खेतियां और खजूरें जिन के खोशे लतीफ और नाजुक होते हैं। (१४८) और तकल्लुक से पहाड़ों को काट-काट कर घर बनाते हो, (१४९) तो खुदा से डरो और मेरे कहे पर चलो। (१५०) और हृद से आगे बढ़ जाने वालों की बात न मानो, (१५१) जो मुल्क में क्रसाद करते हैं और सुधार नहीं करते। (१५२) वे कहने लगे कि तुम पर तो जादू की मार है। (१५३) तुम और कुछ नहीं, हमारी ही तरह के आदमी हो। अगर सच्चे हो तो कोई निशानी पेश करो। (१५४) (सालेह ने) कहा, (देखो) यह ऊंटनी है, (एक दिन) इस की पानी पीने की बारी है और एक तैं दिन तुम्हारी बारी। (१५५) और इस को कोई तकलीफ न देना, (नहीं तो) तुम को सल्ल अज्जाब आ पकड़ेंगा। (१५६) तो उन्होंने उस की कूचें काट डालीं, फिर शर्मिन्दा हुए। (१५७) सो उन को अज्जाब ने आ पकड़ा। बेशक इस में निशानी है और इन में अक्सर ईमान लाने वाले नहीं। (१५८) और तुम्हारा परवरदिगार तो गालिब (और) मेहरबान है। (१५९) ★

(और) लूत की क्रीम ने भी पैगम्बरों को झुठलाया, (१६०) जब उन से उन के भाई लूत ने कहा कि तुम क्यों नहीं डरते ? (१६१) मैं तो तुम्हारा अमानतदार पैगम्बर हूँ, (१६२) तो खुदा से डरो और मेरा कहा मानो, (१६३) और मैं तुम से इस (काम) का बदला नहीं मांगता। मेरा बदला (खुदा-ए-) रब्बुल-आलमीन के जिम्मे है। (१६४) क्या तुम अहले आलम (दुनिया वालों) में मे नड़कों पर मायल होते हो ? (१६५) और तुम्हारे परवरदिगार ने जो तुम्हारे लिए तुम्हारी बीवियां पैदा की हैं, उन को छोड़ देते हो। सब तो यह है कि तुम हृद से निकल जाने वाले लोग हो। (१६६) वे कहने लगे कि लूत ! अगर तुम मानोगे नहीं, तो देश-निकाला दे दिए जाओगे। (१६७) (लूत ने) कहा कि मैं तुम्हारे काम से सल्ल बेजार हूँ। (१६८) ऐ मेरे परवरदिगार ! मुझ को और मेरे घर वालों को इन-के कामों (के बबाल से) निजात दे। (१६९) सो हमने उन को और उन के घर वालों को, सब को निजात दी। (१७०) मगर एक बुढ़िया कि पीछें रह गयी। (१७१) फिर हमने ओरों को हलाक कर दिया। (१७२) और उन पर मेंह बरसाया, सो जो मेंह-उन (लोगों) पर बरसा, जो

डराये गये थे, वह बुरा था। (१७३) बेशक इस में निशानी है और उन में अक्सर ईमान लाने वाले नहीं थे। (१७४) और तुम्हारा परवरदिगार तो गालिब (और) मेहरबान है। (१७५) ★

और बन के रहने वालों ने भी पैगम्बरों को झुठलाया, (१७६) जब उन में शुऐब ने कहा कि तुम डरते क्यों नहीं, (१७७) मैं तो तुम्हारा अमानतदार पैगम्बर हूँ, (१७८) तो खुदा से डरो और मेरा कहा मानो। (१७९) और मैं इस (काम) का तुम से कुछ बदला नहीं मांगता। मेरा बदला तो (खुदा-ए-) रब्बुल आलमीन के जिम्मे है। (१८०) (देखो) पैमाना पूरा भरा करो और नुक्सान न किया करो। (१८१) और तराजू सीधी रख कर तौला करो। (१८२) लोगों को उन की चीजें कम न दिया करो और मुल्क में फसाद न करते फिरो। (१८३) और उस से डरो, जिसने तुम को और पहली खलकत को पैदा किया। (१८४) वे कहने लगे कि तुम पर जादू हो गया है। (१८५) और तुम और कुछ नहीं, हम ही जैसे आदमी हो और हमारा ख्याल है कि तुम झूठ हो। (१८६) अगर सच्चे हो तो हम पर आसमान से एक टुकड़ा ला गिराओ। (१८७) (शुऐब ने) कहा कि जो काम तुम करते हो, मेरा परवरदिगार उसे खूब जानता है। (१८८) तो उन लोगों ने उन को झुठलाया, पस सायबान के अजाब ने उन को आ पकड़ा। बेशक वह बड़े (सल्ल) दिन का अजाब था। (१८९) इसमें यकीनन निशानी है और इनमें अक्सर ईमान लाने वाले नहीं थे। (१९०) और तुम्हारा परवरदिगार तो गालिब (और) मेहरबान है। (१९१) ★

और यह (कुरआन खुदा-ए-) रब्बुल आलमीन का उतारा हुआ है। (१९२) इस को अमानतदार फरिश्ता लेकर उतरा है। (१९३) (यानी उस ने) तुम्हारे दिल पर (इल्का किया है, यानी डाल दिया है) ताकि (लोगों को) नसीहत करते रहें। (१९४) (और इल्का भी) खुली (जोरदार) अरबी जुबान में (किया है) (१९५) और इसकी सबर पहले पैगम्बरों की किताबों में (लिखी हुई) है। (१९६) क्या उनके लिए यह सनद नहीं है कि बनी इस्राईल के उलेमा इस (बात) को जानते हैं। (१९७) और अगर हम इस को किसी गैर जुबान वाले पर उतारते। (१९८) और वह उसे उन (लोगों) को पढ़ कर सुनाता, तो वे उसे (कभी) न मानते। (१९९) इसी तरह हमने इकार को गुनाहगारों के दिलों में दाखिल कर दिया। (२००) वे जब तक दर्द देने वाला अजाब न

देख लें, उसको नहीं मानेंगे। (२०१) वह उन पर अचानक आ पड़ेगा और उन्हें खबर भी न होगी। (२०२) उस वक्त कहेंगे, क्या हमें मोहलत मिलेगी? (२०३) तो क्या ये हमारे अजाब को जल्दी तलब कर रहे हैं? (२०४) भला देखो तो, अगर हम उन को वर्षों फ़ायदे देते रहें, (२०५) फिर उन पर वह (अजाब) आ वाक़ेअ हो, जिसका उनसे वायदा किया जाता है, (२०६) तो जो फ़ायदे ये उठाते रहे, उन के किस काम आएंगे? (२०७) और हमने कोई बस्ती हलाक नहीं की, मगर उस के लिए नसीहत करने वाले (पहले भेज देते) थे। (२०८) (ताकि) नसीहत (कर दें) और हम ज़ालिम नहीं हैं। (२०९) और इस (क़ुरआन) को शैतान लेकर नाज़िल नहीं हुए। (२१०) यह काम न तो उन को मुनासिब है और न वे इसकी ताक़त रखते हैं। (२११) वे (आसमानी बातों के) सुनने (की जगहों) से अलग कर दिए गए हैं। (२१२) तो खुदा के सिवा किसी और माबूद को मत पुकारना, वरना तुम को अजाब दिया जाएगा। (२१३) और अपने क़रीब के रिश्तेदारों को डर मुना दो। (२१४) और जो मोमिन तुम्हारे पैरो हो गये हैं, उन से नमी से पेश आओ। (२१५) फिर अगर लोग तुम्हारी नाफ़रमानी करें तो कह दो कि मैं तुम्हारे आमांल से बे-ताल्लुक हूँ। (२१६) और (खुदा-ए-) ग़ालिब (और) मेहरबान पर भरोसा रखो, (२१७) जो तुम को जब तुम (तहज़ुद के वक़्त) उठते हो, देखता है, (२१८) और नमाज़ियों में तुम्हारे फिरते को भी। (२१९) बेशक वह सुनने वाला (और) जानने वाला है। (२२०) (अच्छा) मैं तुम्हें बताऊँ कि शैतान किस पर उतरते हैं? (२२१) हर झूठे गुनाहगर पर उतरते हैं, (२२२) जो सुनी हुई बात (उसके कान में) डालते हैं और वे अक्सर झूठे हैं। (२२३) और शायरों की पैरवी गुमराह लोग किया करते हैं। (२२४) क्या तुमने नहीं देखा कि वे हर वादी में सर मारते फिरते हैं। (२२५) और कहते वह हैं जो करते नहीं, (२२६) मगर जो लोग ईमान लाये और नेक काम किये और खुदा को बहुत याद करते रहें और अपने ऊपर ज़ल्म होने के बाद बदला लिया और ज़ालिम बहुत जल्द जान लेंगे कि कौन-सी जगह लोट कर जाते हैं। (२२७) ★



२७ सूर: नम्ल ४८

सूर: नम्ल मक्की है और इसमें तिरानवे आयतें और सात रकूअ हैं।

शुरू खुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

त्वा-सीन। ये क़ुरआन और रोशन किताब की आयतें हैं। (१) मोमिनों के लिए हिदायत और

१. यानी क्रियाम से रकूअ में जाने और रकूअ से सज़्दे में जाने को भी देखता है।

२. इन आयतों में शायरों की बुराई बयान फ़रमायी गयी है, लेकिन बुराई के क़ाबिल शायर वही हैं जो बुरे और ना-नाक शेर कहते हैं और जो ऐसे शेर कहें जिन में खुदा की तारीफ़ हो या जिन से उस के दीन की मदद हो, वह तारीफ़ के क़ाबिल और सबाब के हक़दार हैं।

३. यानी अगर किसी ने उस की हिज़ब (शेर में बुरे नाम से याद करना) कही हो और वह भी उस की हिज़ब कर के उस से बदला ले तो यह जायज़ है।

दृष्टव-व बुधरा लिप्-मुअमिनीन ५(२) अल्लजी-न युकीमूनस्सला-त्त व युअ-तूनरजका-त्त
व हुम् बिल्-आखिरति हुम् यूकिनून (३) इन्नल्लजी-न ला युअमिनी-न
बिल्आखिरति जय्यन्ना लहुम् अअ-मालहुम् फहुम् यअ-महून ५(४) उलाई-कल्लजी-न
लहुम् सूउल्-अजाबि व हुम् फिल्आखिरति हुमुल् अल्लरून (५) व इन्न-क
ल-तु-लवकल् - करआ-न मिल्लदून हकीमिन्

अलीम ● (६) इब्न का - ल मूसा
लिअह्लिही इन्नी आनस्तु नारत्

स-आतीकुम् मिन्हा बि-ख-बरिन् औ आतीकुम्
बिशिहाबिन् क-ब-सिल्-ल-अल्लकुम् तस्तूलन् (७)

फलम्मा ज-अहं नूदि-य अम्बूरि-क मन् फिन्नारि
 व मन् होलहा ५ व सुव्हानल्लाहि रब्बिल्-

आलमीन (८) या मूसा इन्ह अनल्लाहुल्-
अजीजुल् - हकीम ॥ (६) व अल्लि.

असा-क ५ फ-लम्मा र-आहा तहतजु क-अन्नहा
जान्नु व्वल्ला मुद्बिरव-व लम् युअक्किव ५

या मूसा ला त-खफ इन्नी ला यखाफु
ल-दय्यल् - मुसलून (१०) इल्ला

पन् अ-ल-म सुम्-म बद्-द-ल हुस्-नम्-बअ-द सूडन् फइन्नी गफूर्-रहीम (११)
व अदखिल् य-द-क फी जैबि-क तरुज् बेज्जा - अ मिन् गैरि सूडन्

फ्री तिस्वि आयातिन् इला फिर्ओ - न व क्रोमिही ७ इन्नहुम् कानू
क्रोमन् फ्रासिकीन (१२) फ-लम्मा जाअत्तुम् आयातुना मुब्सि-र-तत्तु

कालू हाजा सिंहम्-मुवीन (१३) व ज-हदू बिहा, वस्त-क-नत्हा अन्सुहुम्
मुल्म-व-अ मुलुवन् ७ फल्लुर कै-फ कान आक्रिबतुल् - मुपिसदीन ★ (१४)

सुशखबरी हैं। (२) वे, जो नमाज पढ़ते और जकात देते और आखिरत का यकीन रखते हैं। (३) जो लोग आखिरत पर ईमान नहीं रखते, हमने उन के आमाल उन के लिए सजा दिए हैं, तो वे परेशान भटक रहे हैं। (४) यही लोग हैं, जिन के लिए बड़ा अज्ञान है और वे आखिरत में भी बहुत नुकसान उठाने वाले हैं। (५) और तुम को कुरआन हकीम व अलीम (खुदा) की तरफ से अता किया जाता है ● (६) जब मूसा ने अपने घर वालों से कहा कि मैं ने आग देखी है। मैं वहां से (रास्ते का) पता लाता हूं या सुलगता हुआ अंगारा तुम्हारे पास लाता हूं, ताकि तुम तापो। (७) जब मूसा उस के पास आए तो निदा (आवाज) आयी कि वह जो आग में (तजल्ली दिखाता) है, बरकत वाला है और वह जो आग के आस-पास है और खुदा जो पूरी दुनिया का परवरदिगार है, (८) ऐ मूसा ! मैं ही खुदा-ए-गालिब व हकीम हूं। (९) और अपनी लाठी डाल दो। जब उसे देखा तो (इस तरह) हिल रही थी गोया सांप है, तो पीठ फेर कर भागे और पीछे मुड़ कर न देखा। (हुक्म हुआ कि) मूसा डरो मत, हमारे पास पैगम्बर डरा नहीं करते। (१०) हां, जिस ने जुल्म किया, फिर बुराई के बाद उसे नेकी से बदल दिया, तो मैं बख्शने वाला मेहरबान हूं। (११) और अपना हाथ अपने गरबान में अन्ना, बे-ऐब सफ़ेद निकलेगा। (इन दो मोज़ाओं के साथ जो) नौ मोज़ाओं में (दाखिल हैं) फ़िऔ न और उसकी क़ौम के पास (जाओ) कि वे बद-किरदार लोग हैं। (१२) जब उनके पास हमारी रोशन निशानियां पहुंचीं, कहने लगे, यह खुला जादू है। (१३) और बे-इंसाफ़ी और घमंड से उन से इंकार किया, लेकिन उन के दिल उन को मान चुके थे, सो देख लो कि फ़साद करने वालों का अंजाम कैसा हुआ। (१४) ★

और हमने दाऊद और सुलेमान को इल्म बख़्शा और उन्होंने कहा कि खुदा का शुक्र है, जिस ने हमें अपने बहुत-से-मोमिन बन्दों पर बड़ाई दी। (१५) और सुलेमान दाऊद के जानसीन हुए और

कहने लगे कि लोगो ! हमें (खुदा की तरफ से) जानवरों की बोली सिखायी गयी है और हर चीज इनायत फ़रमायी गयी है । बेशक यह (उस की) खुली मेहरबानी है । (१६) और मुलेमान के लिए ज़िन्नो और इंसानों और परियों के लश्कर जमा किए गये और वे क्रिस्मवार किए गए थे । (१७) यहां तक कि जब चींटियों के मैदान में पहुंचे तो एक चींटी ने कहा कि चींटियो ! अपने-अपने बिलों में दाखिल हो जाओ, ऐसा न हो कि मुलेमान और उसके लश्कर तुमको कुचल डालें और उन को खबर भी न हो । (१८) तो वह उस की बात से हंस पड़े और कहने लगे कि ऐ परवरदिगार ! मुझे तोफ़ीक़ दे कि जो एहसान तूने मुझ पर और मेरे मां-बाप पर किए हैं, उनका शुक्र करूं और ऐसे नेक काम करूं कि तू उन से खुश हो जाए और मुझे अपनी रहमत से अपने बन्दों में दाखिल फ़रमा । (१९) और जब उन्होंने जानवरों का जायजा लिया, तो कहने लगे, क्या वजह है कि हुदहुद नज़र नहीं आता, क्या कहीं ग़ायब हो गया है ? (२०) मैं उसे सलत सज़ा दूंगा या ज़िन्ह कर डालूंगा या मेरे सामने (अपनी बे-क्रसूरी की) खुली दलील पेश करे । (२१) अभी-अभी ही देर हुई थी कि हुदहुद आ मौजूद हुआ और कहने लगा कि मुझे एक ऐसी चीज़ मालूम हुई है, जिस की आप को खबर नहीं और मैं आपके पास (शहर) सब्बा से एक यक़ीनी खबर लेकर आया हूं । (२२) मैं ने एक औरत देखा कि इन लोगों पर बादशाहत करती है और हर चीज़ उसे मिली हुई है और उसका एक बड़ा तस्त है । (२३) मैं ने देखा कि वह और उसकी क्रोम (के लोग) खुदा को छोड़ कर सूरज को सज्दा करते हैं और शैतान ने उन के आमाल उन्हें सज़ा कर दिखाए हैं और उनको रास्ते से रोक रखा है, पस वे रास्ते पर नहीं आते । (२४) (और नहीं समझते) कि खुदा को जो आसमानों और ज़मीन में छिपी चीज़ों को जाहिर कर देता और तुम्हारे छिपे और जाहिर आमाल को जानता है, क्यों सज्दा न करें ? (२५) खुदा के सिवा कोई इबादत के लायक नहीं, वही बड़े अर्श का मालिक है । (२६) (मुलेमान ने) कहा, (अच्छा) हम देखेंगे, तू ने सच कहा है या तू झूठा है । (२७) यह मेरा ख़त ले जा और इसे उनकी तरफ़ डाल दे, फिर उनके पास से फिर आ और देख कि वे क्या जवाब देते हैं ? (२८) मलका (रानी) ने कहा कि दरबार बालो ! मेरी तरफ़ एक नामा (पत्र) डाला गया है । (२९) वह मुलेमान की तरफ़ से है और (मज़मून यह है) कि शुरू खुदा का नाम ले

अल्ता तअ-लू अलय-य वअत्तूनी मुस्लिमीन ★ (३१) कालत् या अय्युहल्-
म-लउ अफ्तूनी फी अम्रीमा कुन्तु काति-अ-तन् अम्-रव् हत्ता तश-हदून (३२) कालू
नहनु उलू कुव्वतिब-व उलू बअसित् शदीदिव-वल्-अम्ह इलैकि फन्मुरी माजा
तअ-मुरीन (३३) कालत् इन्नलमुलू-क इजा द-खलू कर-य-तत् अपसदूहा व ज-अल्

अअिख-त अहिलहा अजिल्ल - तव् ८ व
कजालि-क यफ्-अलून (३४) व इन्नी
मुसि-लनुत् इलैहिम् बिहदिय्यतिन् फनाजि-र-नुम्
बि-म यजिअलू-मुसलून (३५) फल-ममा
जा-अ मुलैमा-न का-ल अतुमिददूननि बिमालिन्
फमा आतानि-यल्लाहु खैरम्मिम्मा आताकुम्

बल् अन्तुम् बिहदिय्यतिकुम् तफ्-रहून (३६)
इजिअ इलैहिम् फल-नअतियन्नहुम् बिजुनूदिल्ला
कि-ब-ल लहुम् बिहा व लनुख्रिजन्नहुम् मिन्हा
अजिल्ल-तव्-व हुम् सागिरून (३७) का-ल या
अय्युहल्म-लउ अय्युकुम् यअत्तीनी बिअशिहा
कव-ल अय्यअत्तूनी मुस्लिमी-न (३८) का-ल
अफरीतुम्-मिनलजिन्नि अन आती-क बिही
कव-ल अन् तकू-म मिम्मकामि-क ८ व इन्नी

अलैहि लकविय्युन् अमीन (३९) काललजी अन्दह अल्मुम्मिनल्-किताबि
अन आती-क बिही कव-ल अय्यर-तद्-द इलै-क तर्फु-क फल-ममा रआहु मुस्तकिरैत्
अन्दह का - ल हाजा मिन् फज्जलि रब्बी लिलयब्लु - वनी अ - अशकुर
अम् अकफुर ७ व मन् श-क-र फ-इन्मा यशकुर लिनफिसही ८ व मन्
क-फ-र फ-इन्न रब्बी गिनिय्युन् करीम (४०) का-ल नक्किरु लहा अर्-शहा
नय्मर् अ-तह-तदी अम् तकून् मिनललजी-न ला यह-तदून (४१) फल-ममा जा-अत्
की-ल अहाकजा अर्शुकि ७ कालत् क-अन्नह हु-व ८ व अतीनल्-अल् - म
मिन् कव्लिहा व कुन्ना मुस्लिमीन (४२) व सद्दहा मा कानत्
तअ-बुदु मिन्दूनिल्लाहि ७ इन्नहा कानत् मिन् कौमिन् काफिरीन (४३)



कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है। (३०) (बाद इस के यह) कि मुझे से सर-कशी न करो और इत्ताअत गुजार हो कर मेरे पास चले आओ। (३१) ★

(सत सुना कर) कहने लगी कि ऐ दरबारियो ! मेरे इस मामले में मुझे मशिवरा दो, जब तक तुम हाजिर न हो (और सलाह न दो), मैं किसी काम का फ़सला करने वाली नहीं। (३२) वे बोले कि हम बड़े जोरावर और सख्त लड़ाकू हैं और हुकम आपके अस्तियार में है, तो जो हुकम दीजिएगा, (उसके नतीजे पर) नज़र कर लीजिएगा। (३३) उसने कहा कि बादशाह जब किसी शहर में दाखिल होते हैं, तो उसको तबाह कर देते हैं और वहां के इज्जत वालों को ज़लील कर दिया करते हैं और इसी तरह यह भी करेंगे। (३४) और मैं उनकी तरफ़ कुछ तोहफ़ा भेजती हूँ और देखती हूँ कि क़ासिद क्या जवाब लाते हैं। (३५) जब (क़ासिद) सुलेमान के पास पहुंचा, तो (सुलेमान ने) कहा, क्या तुम मुझे माल से मदद देना चाहते हो, जो कुछ खुदा ने मुझे अता फ़रमाया है, वह उस से बेहतर है, जो तुम्हें दिया है। सच तो यह है कि अपने तोहफ़े से तुम ही खुश होते होगे। (३६) उनके पास वापस जाओ। हम उन पर ऐसे लश्कर लेकर हमला करेंगे, जिन के मुकाबले की उन में ताकत न होगी और उनको वहां से बे-इज्जत करके निकाल देंगे और वे ज़लील होंगे। (३७) (सुलेमान ने) कहा कि ऐ दरबार वालो ! कोई तुम में ऐसा है कि इससे पहले कि वे लोग फ़रमांबरदार हो कर हमारे पास आएँ, मलका का तख़्त मेरे पास ले आए। (३८) ज़िन्नो में से एक क़वी हैकल ज़िन्न ने कहा कि इस से पहले कि आप अपनी जगह से उठें, मैं उस को आप के पास ला हाजिर करता हूँ और मुझे इस पर कुदरत (भी) हासिल है (और) अमानतदार (भी) हूँ। (३९) एक शरूस जिसको (खुदा की) किताब का इल्म था, कहने लगा कि मैं आप की आंख के झपकने से पहले-पहले उसे आप के पास हाजिर किए देता हूँ। जब (सुलेमान ने) तख़्त को अपने पास रखा हुआ देखा, तो कहा कि यह मेरे परवरदिगार का फ़ज़ल है, ताकि मुझे आजमाए कि मैं शुक्र करता हूँ या नेमत की ना-शुक्री करता हूँ और जो शुक्र करता है तो अपने ही फ़ायदे के लिए शुक्र करता है और जो ना-शुक्री करता है, तो मेरा परवरदिगार बे-परवाह (और) करम वाला है। (४०) (सुलेमान ने) कहा कि मलका के (अज़ल के इम्तिहान के) लिए उस के तख़्त की सूरत बदल दो, देखें कि वह सूझ रखती है या उन लोगों में से है, जो सूझ नहीं रखते। (४१) जब वह आ पहुंची, तो पूछा गया कि क्या आप का तख़्त भी इसी तरह का है ? उस ने कहा कि यह तो गोया बिल्कुल उसी जैसा है और हमको इससे पहले ही (सुलेमान की बड़ाई और शान का) इल्म हो गया था और हम फ़रमांबरदार हैं। (४२) और वह जो खुदा के सिवा (और की) पूजा करती थी, (सुलेमान ने) उस को उस से मना किया (इस से पहले तो) वह काफ़िरों में से थी। (४३) (फिर) उस से कहा

की-ल ल-हृद-कुलिस्सर-हृद-क-लम्मा र-अतहु हसि-बत-हु लुजजतव्-व क-श-फत् अन्
साक्रेहा ७ का-ल इन्नह सर-हुम् - मुमरंदुम् - मिन् कवारी-र ७ कालत् रबिब
इन्नी अ-लम्मु नफसी व अस्-लम्तु म-अ सुलैमान लिल्लाहि रबिबल्-आलमीन (४४)
व ल-कद् असल्ला इला समू-द अल्लाहुम् सालिहन् अनिअ-बुदुल्ला-ह क-इजा-हुम्
फरीकानि यस्तसिम्न (४५) का-ल या क्रीमि

ति-म तस्तञ्ज-जिलू-न बिस्सय्यति कब्-ल-ल-
ह-स-नति ६ लौ ला तस्तग् - फिरुनल्ला-ह
त-अल्लकुम् तुर-हमून (४६) कालुत्तय्यर्ना बि-क
व बिमम्म-अ-क ७ काल ताईरकुम् अिन्दल्लाहि
बल् अन्तुम् क्रोमुन् तुप्तनून (४७) व कान

अज्मजीन (५१) फ-तिल-क बुयूतहुम् खावि-य-तुम्-बिमा अ-लम् ७ इन्-न फी
जालि-क लआयतुल्-लिकौमिय्यअ-लमून (५२) व अन्जेनल्लजी-न आमनू व कानू
यत्तकून (५३) व लूतन् इज् काल-लिकौमिही अ-तअ-तूनल्-फाहि-श-त व
अन्तुम् तुब्सिरून (५४) अ-इन्नकुम् ल-तअतूनर्-रिजा-ल शह-व-तुम् - मिन्
दूनिनिसाई ७ बल् अन्तुम् क्रौमुन् तज्-हलून (५५) फमा कान-जवा-व क्रौमिही
इल्ला अन् कालू अख्रिज् आ - ल लूतिम् - मिन् कयंतिकुम् ८ इन्नहुम्
उनासुय्य-त-तह-हुरून (५६) फ-अन्जेनाहु व. अह-लहू इल्लमर-अ-तहू कददर्नाहा
मिनल्गाबिरीन (५७) व अम्तर्ना अलैहिम् म-त-रन् ८ फसा-अ म-त-रल्-
मुज्जरीन ★ (५८) कुलि-हम्दु लिल्लाहि व सलामुन् अला अिबादिहिल्-
लजीनस् - तफा ७ अल्लाहु खैरुन् अम्मा युशिरकून ७ (५९)

मया कि महल में बलिया। जब उस ने उस (के क्रमों) को देखा, तो उसे पानी का हीरा समझा और (कपड़ा उठा कर) अपनी पिंडलियां खोल दीं। (सुलेमान ने) कहा, यह ऐसा महल है, जिसके (नीचे भी) शीशे जड़े हुए हैं। वह बोल उठी कि परवरदिगार! मैं अपने आप पर जल्म करती रही थी और (अब) मैं सुलेमान के हाथ पर खुदा-ए-रब्बुल आलमीन पर ईमान लाती हूँ। (४४) ★

और हम ने समुद्र की तरफ उन के भाई सालेह को भेजा कि खुदा की इबादत करो, तो वे दो फ़रीक़ हो कर आपस में झगड़ने लगे। (४५) (सालेह ने) कहा कि ऐ क्रौम! तुम भलाई से पहले बुराई के लिए क्यों जल्दी करते हो (और) खुदा से बलिशाश क्यों नहीं मांगते, ताकि तुम पर रहम किया जाए। (४६) वे कहने लगे कि तुम और तुम्हारे साथी हमारे लिए बुरे शत्रुन हैं (सालेह ने) कहा कि तुम्हारी बद-शगुनी खुदा की तरफ़ से है, बल्कि तुम ऐसे लोग हो जिन की आजमाइश की जाती है। (४७) और शहर में नौ शस्त्र थे, जो मुल्क में फ़साद किया करते थे और इस्लाम से काम नहीं लेते थे। (४८) कहने लगे कि खुदा की क़सम खाओ कि हम रात को उस पर और उस के घर वालों पर छापा मारेंगे, फिर उस के वारिसों से कह देंगे कि हम तो घर वालों की हलाकत की जगह पर गये ही नहीं और हम सच कहते हैं। (४९) और वे एक जाल चले और हम भी एक जाल चले और उनको कुछ ख़बर न हुई। (५०) तो देख लो कि उन की जाल का अंजाम कैसा हुआ। हम ने उन को और उन की क्रौम, सब को हलाक कर डाला। (५१) अब ये उन के घर उन के जल्म की बजह से खाली पड़े हैं। जो लोग समझ रखते हैं, उनके लिए इसमें निशानी है। (५२) और जो लोग ईमान लाए और डरते थे, उनको हम ने निजात दी। (५३) और सूत को (याद करो), जब उन्होंने अपनी क्रौम से कहा कि तुम बे-हयाई (के काम) क्यों करते हो और तुम देखते हो। (५४) क्या तुम औरतों को छोड़ कर लज्जत (हासिल करने) के लिए मर्दों की तरफ़ मायल होते हो। सच तो यह है कि तुम जाहिल लोग हो। (५५) तो उन की क्रौम के लोग (बोले, तो) यह बोले और इस के सिवा उन का कुछ जवाब न था कि लूट के घर वालों को अपने शहर से निकास दो। ये लोग पाक बनाना चाहते हैं। (५६) तो हम ने उन को और उन के घर वालों को निजात दी, मगर उन की बीबी, कि उस के बारे में मुक़रर कर रखा था (कि वह) पीछे रह जाने वालों में होगी। (५७) और हम ने उन पर मेंह बरसाया सो (जो) मेंह उन लोगों पर (बरसा), जिन को भुतनबह कर दिया गया था, बुरा था। (५८) ★

कह दो कि सब तारीफ़ खुदा ही को (मुनासिब) है और उस के बन्दों पर सलाम है, जिन को उस ने चुन लिया। भला खुदा बेहतर है या वे, जिन को ये (उस का) शरीक बनाते हैं। (५९)

१. लफ़्ज़ों का तर्जुमा है 'सुलेमान के साथ' मगर यहां मुराद है 'सुलेमान ने हाथ पर', इस लिए हम ने यही तर्जुमा किया है।

२. हज़रत सालेह ज़लीहिस्सलाम उन लोगों को खुदा पर ईमान लाने के लिए कहते थे कि ईमान लाओगे तो तुम्हारा भवा होगा, बरना तुम पर अज़ाब नाज़िल होगा। वे लोग न ईमान लाते थे, न भलाई के लिए कोशिश करते थे, बल्कि यह कहते थे कि वह अज़ाब, जिस से तुम हम को डराते हो, जल्दी नाज़िल कराओ। सालेह ज़लीहिस्सलाम ने कहा, तुम अज़ाब के लिए क्यों जल्दी मचाते हो। खुदा से बलिशाश मांगो, ताकि बजाए अज़ाब के तुम पर खुदा की रहमत नाज़िल हो।

भसा किस ने आसमानों और जमीन को पैदा किया और (किस ने) तुम्हारे लिए आसमान से पानी बरसाया ? (हम ने ।) फिर हम ने उस से हरे-भरे बाग उगाए । तुम्हारा काम तो न था कि तुम उन के पेड़ों को उगाते, तो क्या खुदा के साथ कोई और भी माबूद है ? (हरगिज नहीं,) बल्कि ये लोग रास्ते से अलग हो रहे हैं । (६०) भला किस ने जमीन को करारगाह बनाया और उस के बीच नहरें बनायीं और उस के लिए पहाड़ बनाए और (किस ने) दो दरियाओं के बीच ओट बनायी । (यह सब कुछ खुदा ने ही बनाया ।) तो क्या खुदा के साथ कोई और माबूद भी है ? (हरगिज नहीं,) बल्कि उन में अक्सर समझ नहीं रखते । (६१) भला कौन बेकरार की इल्तिजा क़बूल करता है, जब वह उस से दुआ करता है । और (कौन उस की) तकलीफ़ को दूर करता है और (कौन) तुम को जमीन में (अगलों का) जानशीन बनाता है ? (यह सब कुछ खुदा करता है) तो क्या खुदा के साथ कोई और माबूद भी है ? (हरगिज नहीं, मगर) तुम बहुत कम गौर करते हो ? (६२) भला कौन तुम को जंगल और दरिया के अंधेरों में रास्ता बताता और (कौन) हवाओं को अपनी रहमत के आगे खुशखबरी बना कर भेजता है ? (यह सब कुछ खुदा करता है,) तो क्या खुदा के साथ कोई और माबूद भी है ? (हरगिज नहीं,) ये लोग जो शिकंठ करते हैं, खुदा (की शान) उस से बुलंद है । (६३) भला कौन खलक़त को पहली बार पैदा करता, फिर उस को बार-बार पैदा करता रहता है और (कौन) तुम को आसमान और जमीन से रोज़ी देता है ? (यह सब कुछ खुदा करता है,) तो क्या खुदा के साथ कोई और माबूद भी है ? (हरगिज नहीं,) कह दो कि (मुश्रिको !) अगर तुम सच्चे हो, तो दलील पेश करो । (६४) कह दो कि जो लोग आसमानों और जमीन में हैं, खुदा के सिवा ग्रैब की बातें नहीं जानते और न यह जानते हैं कि (ज़िदा कर के) उठाए जाएंगे । (६५) बल्कि आखिरत (के बारे) में उन का इल्म 'मुन्तही' (ख़त्म) हो चुका है ।' बल्कि वे इस से शक में हैं, बल्कि इस से अंधे हो रहे हैं । (६६) ★

और जो लोग काफ़िर हैं, कहते हैं कि जब हम और हमारे बाप-दादा मिट्टी हो जाएंगे, तो क्या हम फिर (क़ब्रों) से निकाले जाएंगे । (६७) यह बायदा हम से और हमारे बाप-दादा से पहले से होता चला आया है । (कहां का उठना और कंसी क्रियामत !) यह तो सिर्फ़ पहले लोगों की कहानियां हैं । (६८) कह दो कि मुल्क में चलो-फिरो, फिर देखो कि गुनाहगारों का अंजाम क्या हुआ है ? (६९) और उन (के हाल) पर ग्रम न करना और न उन चालों से, जो ये कर रहे हैं,

१. यानी आखिरत के बारे में उन का इल्म कुछ भी नहीं है और उस का ख़ात्मा हो गया है ।

व यकूल-न मता हजलवअ-हु इन् कुन्तुम् सादिकीन (७१) कुल् असा अय्यकू-न
रदि-फ लकुम् बअ-जुल्लजी तस्तअ-जिलून (७२) व इन्-न रब्ब-क लजू फजिलन्
अलन्नासि व लाकिन्-न अवस-रहुम् ला यशकुरून (७३) व इन्-न रब्ब-क ल-यअ-लमु
मा तुकिन्नु मुद्रुहुम् व मा-युअ-लिनून (७४)

बल्अजि इल्ला फी किताबिम् - मुबीन
(७५) इन्-न हजलकुरआ-न यकस्सु अला
बनी इस्राई-ल तक्स-रल्लजी हुम् फीहि
यस्तलिफून (७६) व इन्नहू ल-हुदव्-व
रह-मतुल्-लिमुअमिनीन (७७) इन्-न
रब्ब - क यकज़ी बै-नहुम् बिहुविमही ८ व
हुवल्अजीबुल् - अलीम ९ (७८)

फ - त - वकल् अ-लल्लाहि १ इन्न - क
अलल् - हक्किल्-मुबीन (७९) इन्न-क
ला तुस्मिअल्मोता व ला तुस्मिअस्-
मुम्मद्दुआ-अ इजा वल्लो मुद्बिरीन (८०)
व मा अन् - त बिहादिल् - अम्यि अन्

فِي حَقِّهِمَا يَسْكُرُونَ ۝ وَيَكْفُرُونَ مَعَ هَذَا الضُّلَّانِ كَثِيرٌ ۝ قُلْ عَلَىٰ أَن تَكُونُوا دُونَكُمْ بَعْضُ الَّذِينَ
تَسْتَحْسِنُونَ ۝ وَإِنَّ رَبَّكَ لَذُو فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ
لَا يَشْكُرُونَ ۝ وَإِنَّ رَبَّكَ لَيَعْلَمُ مَا تُكِنُّ صُدُورُهُمْ وَمَا
يُعْلِنُونَ ۝ وَمَا مِنْ عَاقِبَةٍ فِي السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ إِلَّا فِي حُسْبٍ
لَّيْسَ ۝ إِنَّ هَذَا الْقُرْآنَ يَكْفِي عَلَىٰ بَعْضِ الْأُمُورِ ۝ أَلَمْ يَكُنْ
أَلَدَىٰ مَوْجِهَةِ مَعْشَرَ الْفُلُوفِ ۝ وَأَلَدَىٰ لَدَىٰ وَسْطَةِ الْأَوَّلِينَ ۝
إِنَّ رَبَّكَ يَقْضِي سِتْرَ الْمُكَذِّبِينَ ۝ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْعَلِيمُ ۝ تَوَكَّلْ
عَلَى اللَّهِ إِنَّكَ عَلَىٰ السَّيِّئِ ۝ إِنَّكَ لَا تُشِيرُ الْيَقِينَ وَلَا تُنْعِمُ
الشُّعْرَ الَّذِي عَمَّا وَدَّ أَنْ تَأْمُرَ بِهِ ۝ وَمَا أَنتَ بِهَدِي الْعَصَىٰ عَنْ
صَلَاتِهِمْ ۝ إِنَّ سِيرَ الْأَمْرِ لَمِنْ أَمْرٍ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا ۝ وَلَا
تَقْرَ الْعَوْلَ عَلَيْهِمْ أَشْرَفًا لِّقَوْلِهِمْ ۝ إِنَّ الْأَرْضَ لِلْكَافِرِينَ
إِنَّ النَّاسَ كَانُوا بِآيَاتِنَا لَا يَتَّقُونَ ۝ وَيَوْمَ نَحْشُرُ مِنْ تَحْتِ الْأُفُقِ
قَوْمًا مِمَّنْ لَمْ يَكُنْ يَدَّبَّرُوا بِآيَاتِنَا ۝ إِنَّهُمْ يُخَوِّفُونَ ۝ حَتَّىٰ إِذَا جَاءَهُمْ وَقَالَ
أَكْبَرْتُمْ بِالْبَيْتِ ۝ وَلَمْ تُحِطُوا بِهَا ۝ إِنَّمَا آدَاءُ أَكْثَرْتُمْ تَعْلُونَ ۝
وَقَرَّ الْعَوْلَ عَلَيْهِمْ بِمَا ضَلُّوا ۝ إِنَّهُمْ لَا يَتَّقُونَ ۝ أَلَمْ يَدْعُوا
إِلَّا لِيَعْمَلُوا الْبَلَّ ۝ إِنَّهُمْ كَانُوا فِي ذَلِكَ

जलालतिहिम् १ इन् तुस्मिअ इल्ला मय्युअमिनु बिआयातिना फहुम्
मुस्लिमून (८१) व इजा व-क-अल्कोलु अलैहिम् अख-रज्-ना लहुम् दाब्बतुम्
मिन्बल्अजि तुकल्लिमुहुम् १ अन्नन्ना-स कानू बिआयातिना ला यूकिनून ★ (८२)
य यौ-म नहशुरु मिन् कुल्लि उम्मतिन् फोजम्मिम्-मय्युकज्जिबु बिआयातिना
फहुम् यूजअून (८३) हत्ता इजा जाऊ का-ल अ-कज्जब्तुम् बिआयाती व लम्
तुहीतु बिहा अल्मन् अम्माजा कुन्तुम् तअ-मलून (८४) व व-क-अल्कोलु अलैहिम्
बिमा अ-लमू फहुम् ला यन्तिकून (८५) अ-लम् यरौ अन्ना ज-अल-नल्लै-ल लियस्कुन्
फीहि वन्नहा-र मुब्सरन् १ इन्-न फी जालि-क लआयातिल्-लिकौमियुअमिनून (८६)

तंगदिल होना । (७०) और कहते हैं कि अगर तुम सच्चे हो, तो यह वायदा कब पूरा होगा ? (७१) कह दो कि जिस (अजाब) के लिए तुम जल्दी कर रहे हो, शायद उस में मे कुछ तुम्हारे नजदीक आ पहुंचा हो । (७२) और तुम्हारा परवरदिगार तो लोगों पर फ़जल करने वाला है, लेकिन इन में मे अक्सर शुक् नहीं करते । (७३) और जो बातें उन के सीनों में छिपी होती हैं और जो काम वे जाहिर करते हैं, तुम्हारा परवरदिगार उन (सब) को जानता है । (७४) और आसमानों और ज़मीन में कोई छिपी चीज़ नहीं है, मगर (वह) रौशन किताब में (लिखी हुई) है । (७५) बेशक यह कुरआन बनी इस्राईल के सामने अक्सर बातें, जिन में वे इस्तिलाफ़ करते हैं, बयान कर देता है । (७६) और बेशक यह मोमिनों के लिए हिदायत और रहमत है । (७७) तुम्हारा परवरदिगार (क़ियामत के दिन) उन में अपने हुक्म से फ़सला कर देगा और वह ग़ालिब (और) इल्म वाला है । (७८) तो खुदा पर भरोसा रखो, तुम तो खुले हक़ पर हो । (७९) कुछ शक नहीं कि तुम मुद्दों को (बात) नहीं सुना सकते और न बहरों को, जब कि वे पीठ फेर कर फिर जाएं, आवाज़ सुना सकते हो । (८०) और न अंधों को गुमराही में (निकाल कर) रास्ता दिखा सकते हो । तुम तो उन्हीं को सुना सकते हो, जो हमारी आयतों पर ईमान लाते हैं और वे फ़र्मांबरदार हो जाते हैं । (८१) और जब उन के बारे में (अजाब का) वायदा पूरा होगा, तो हम उन के लिए ज़मीन में से एक जानवर निकालेंगे, जो उन से बयान कर देगा, इस लिए कि लोग हमारी आयतों पर ईमान नहीं लाते थे । (८२)★

और जिस दिन हम हर उम्मत में से उस ग़िरोह को जमा करेंगे, जो हमारी आयतों को झुठलाते थे, तो उन की जमाअतबंदी कर दी जाएगी । (८३) यहां तक कि जब (सब) आ जाएंगे तो (खुदा) फ़र्माएगा कि क्या तुम ने मेरी आयतों को झुठला दिया था और तुम ने (अपने) इल्म से उन पर एहाता तो किया ही न था । भला तुम क्या करते थे ? (८४) और उन के जुल्म की वज़ह से उन के हक़ में (अजाब) का वायदा पूरा हो कर रहेगा, तो वे बोल भी न सकेंगे । (८५) क्या उन्होंने नहीं देखा कि हम ने रात को (इस लिए) बनाया है कि इस में आराम करें और दिन को रौशन (बनाया है कि इस में काम करें) । बेशक इस में मोमिन लोगों के लिए निशानियां हैं । (८६) और जिस दिन

व यो-म युन्फल् फिस्सूरि फ-फजि-अ मन् किस्समावाति व मन् फिल् अजि इल्ला
मन् शा-अल्लाहु व कुल्लुन् अतोहु दाखिरीन (८७) व त-रल्जिबा-ल
तह-सबुहा जामि-द-तुव-व हि-य तमुर्ह मरस्सहाबि मुन्-अल्लाहिल्लजी अत-क-न
कुल्-ल शैइन् इन्नह खबीरुम् - बिमा तफ्-अलून (८८) मन् जा - अ

बिल्-ह-स-नति फ-लहू खैरुम्-मिन्हा व हुम्
मिन् फ-ज्जि-य्योमइजिन् आमिनून (८९)

व मन् जा-अ बिस्सयि-अति फ-कुब्बत् वुजूहुहुम्
फिन्नारि हल् तुज्जी-न इल्ला मा कुल्लुम्
तअ-मलून (९०) इन्मा उमिरतु अन्

अअ-बु-द रब् - ब हाजिहिल्-बल्दतिल्लजी
हर-महा व लहू कुल्लु शैइ-व-व उमिरतु
अन् अकू - न मिनल्मुस्लिमीन (९१)

व अन् अत-लुवल्-कुरआ-न फ-मनिहतदा
फ-इन्मा यह-तदी लिनफ्सिही व मन्
जल्-ल फ-कुल् इन्नमा अन मिनल्-मुन्जिरीन
(९२) व कुलिह्मुद्दु लिल्लाहि सयुरीकुम्

आयातिही फ-तअ-रिफूनहा व मा रब्बु-क बिगाफिलिन् अम्मा तअ-मलून (९३)

الَّذِينَ يَقُولُ يُؤْمِنُونَ ۖ وَيَوْمَ يُنْفَخُ فِي السُّمُورِ فَيَقُولُ مَنْ فِي
السُّمُورِ ۖ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ ۖ وَالَّذِينَ شَاءَ اللَّهُ ۚ وَلِلَّهِ الْوَحْدَانِ
وَتَرَى الْجِبَالَ تَحْسِبُهَا جَمَادٍ ۖ وَتَوَدُّ أَنْ تَنْجَارَ ۚ فَصَبَّ
اللَّهُ إِلَيْنَا الْغَمَّ ۚ كُلُّ شَيْءٍ خَائِبٌ إِلَّا عِلْمَ اللَّهِ ۚ وَلَهُ الْغَنَاءُ
بِالسُّعُودِ ۚ فَكَيْفَ يُعَذِّبُ الْمُؤْمِنِينَ ۚ وَالْمُؤْمِنِينَ ۚ وَ
مَنْ جَاءَ بِالسُّعُودِ ۚ فَكَيْفَ يُعَذِّبُ الْمُؤْمِنِينَ ۚ وَالْمُؤْمِنِينَ ۚ
مَا كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ۚ إِنَّكُمْ أَرَأَيْتُمْ أَنْ تَعْبُدُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ
الَّذِي خَرَّبَكُمْ عَنْ آلِهَتِكُمْ ۚ فَتَبْنُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ ۚ قُلْ
وَأَنْ تَأْخُذُوا الْقُرْآنَ ۚ فَمِنْ حَيْثُ لَاقِيَكَ لِتُقْسِمَ ۚ وَ
مَنْ حَلَّ ظُلْمَ الْأَنْفُسِ الْفَاسِقِينَ ۚ وَقُلِ الْحَقُّ لِلَّهِ ۚ وَتَرَى
الْمُؤْمِنِينَ ۚ وَمَا رَأَيْتُمْ بِهَا قِيْلَ إِلَّا كَذِبٌ ۚ وَمَنْ جَاءَ
بِالسُّعُودِ ۚ فَكَيْفَ يُعَذِّبُ الْمُؤْمِنِينَ ۚ وَالْمُؤْمِنِينَ ۚ
يَسْمِعُ اللَّهُ الْمُؤْمِنِينَ ۚ وَالْمُؤْمِنِينَ ۚ وَالْمُؤْمِنِينَ ۚ
طَسْمَةً ۚ تِلْكَ آيَاتُ الْكِتَابِ الْمُبِينِ ۚ تَقُولُوا عَلَيْنَا مِنْ
مُؤْنَى ۚ وَتَرَى الْمُؤْمِنِينَ ۚ وَالْمُؤْمِنِينَ ۚ وَالْمُؤْمِنِينَ ۚ
فِي الْأَرْضِ ۚ وَجَعَلْنَا أَهْلَهَا لِيُشَاقِقُوا فَخْرَهُ ۚ وَجَعَلْنَا
لَهُمْ آيَةً ۚ وَتَرَى الْمُؤْمِنِينَ ۚ وَالْمُؤْمِنِينَ ۚ وَالْمُؤْمِنِينَ ۚ

२८ सूरतुल् क-ससि ४६

(मक्की) इस सूर: में अरबी के ६०११ अक्षर, १४५४ शब्द, ८८ आयतें और ६ रुकूअ है ।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम •

ता-सीम्-मीम् (१) तिल्-क आयातुल् - किताबिल् - मुबीन (२)
नल्लू अलै - क मिन् न - बइ मूसा व फिर्ओ - न बिल्हविक
लिक्रीमियुअमिनून (३) इन्-न फिर्ओ-न अला फिल्अजि व ज-अ-ल अह-लहा
शि-य - अय्यस्तज्जिफु ताई-फ - तम् - मिन्हुम् युजब्बिह अब - ना - अहुम्
व यस्तह्यी निसा - अहुम् इन्नह कान-न मिनल् - मुफ्सिदीन (४)

सूर फूका जाएगा, तो जो लोग आसमानों और जो जमीन में हैं, सब घबरा उठेंगे, मगर वह जिसे खुदा चाहे और सब उस के पास आजिज हो कर चले आएंगे। (८७) और तुम पहाड़ों को देखते हो, तो ख्याल करते हो कि (अपनी जगह पर) खड़े हैं, मगर वे (उस दिन) इस तरह उड़ते फिरेंगे जैसे बादल। (यह) खुदा की कारीगरी है, जिस ने हर चीज को मजबूत बनाया। बेशक वह तुम्हारे कामों की खबर रखता है। (८८) जो शस्त्र नेकी ले कर आएगा, तो उस के लिए उस से बेहतर (बदला तैयार) है और ऐसे लोग (उस दिन) घबराहट से बे-खीफ होंगे। (८९) और जो बुराई ले कर आएगा, तो ऐसे लोग औंधे मुंह दोखल में डाल दिए जाएंगे। तुम को तो उन ही आमाल का बदला मिलेगा, जो तुम करते रहे हो। (९०) (कह दो,) मुझ को यही इशारे हुआ है कि इस शहर मक्का के मालिक की इबादत कहां, जिस ने इस को मोहतरम (और अदब की जगह) बनाया है और सब चीज उस की है और यह भी हुक्म हुआ है कि उस का हुक्मबरदार रहूं। (९१) और यह भी कि कुरआन पढ़ा कहां, तो जो शस्त्र सीधा रास्ता अपनाता है तो अपने ही फायदे के लिए अपनाता है और जो गुमराह रहता है तो कह दो कि मैं तो सिर्फ नसीहत करने वाला हूं। (९२) और कहो कि खुदा का शुक है, वह तुम को बहुत जल्द अपनी निशानियां दिखाएगा, तो तुम उन को पहचान लोगे और जो काम तुम करते हो, तुम्हारा परवरदिगार उन से बे-खबर नहीं है। (९३) ★



२८ सूरः क्रसस् ४६

सूरः क्रसस् मक्की है और इस में ८८ आयतें और ६ रकूअ हैं।

शुरू खुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

ता-सीम-मीम। (१) ये रोशन किताब की आयतें हैं। (२) (ऐ मुहम्मद!) हम तुम्हें मूसा और फ़िअौन के कुछ हालात मोमिन लोगों (के सुनाने) के लिए सही-सही सुनाते हैं, (३) कि फ़िअौन ने मुल्क में सर उठा रखा था और वहां के रहने वालों को गिरोह-गिरोह बना रखा था, उन में से एक गिरोह को (यहां तक) कमजोर कर दिया था कि उन बेटों को जिन्हें कर डालता और उन की लड़कियों को जिंदा रहने देता। बेशक वह फ़साद फैलाने वालों में था। (४) और हम चाहते

व नुरीदु अन् नमुन्-न अ-लल्लजीनस्-तुज्ज-अफू फिल्-अजि व नज-अ-लहुम्
अ-इम्मत्-व नज्-अ-ल-हुमुल्-वारिसीन ॥ (५) व नुमक्कि-न लहुम् फिल्-अजि
व नुरि-य फिर्ओ-न व हामा-न व जुनूदहुमा मिन्हुम् मा कानू यह्जरून (६)
व ओहेना इला उम्मि मूसा अन् अजिओहि ८ फ-इजा खिफति

अलेहि फअल्कीहि फिल्यम्मि व ला
तखाफी व ला तह्जनी ८ इन्ना
राद्दूहु इलेकि व जाअिलूहु मिनल् -
मुसलीन (७) फल्-त-क-तह् आलु फिर्ओ-न
लि-यकू-न लहुम् अदुव्व-व ह-ज-नन् इन्-न
फिर्ओ-न व हामा-न व जुनूदहुमा कानू
खातिइन (८) व कालतिम् - र-अतु
फिर्ओ-न कुरंतु अनिल्ली व ल - क
ला तक्तुलूहु ९ असा अय्यन्-फ - अना
ओ नत्तखि - जह व-ल-द-व-व हुम् ला
यश्जरून (९) व अस्-ब-ह फुआदु उम्मि
मूसा फारिगन् १० इन् कादत् लतुब्दी
बिही लौला अर - बत्ना अला
कलिबहा लितकू - न मिनल् - मुअ्मिनीन
(१०) व कालत् लिउस्तिही कुस्सीहि ११ फ - बसुरत् बिही अन्

जुनुबि-व हुम् ला यश-जरून ॥ (११) व हरंम्ना अलेहिल् - मराजि-अ
मिन् कब्बु फ - कालत् हल् अदुल्लुकुम् अला अह - लि बैतियक्फुलूनह
लकुम् व हुम् लह नासिहून (१२) फ-र-द-दनाहु इला उम्मिही क
त-कर-र अन्हा व ला तह्-ज-न व लि-त-अ-ल-म अन्-न वअ-द-ल्लाहि हक्कु-व-व
लाकिन्-न अक्स-र-हुम् ला यअ-ल-मून * (१३) व लम्मा ब-ल-ग अशुद्दह
वस्तवा आतेनाहु हुक्म-व अल्मन् १४ व कजालि-क नज्जिल्-मुहिस्नीन (१४)

وَيُذَكِّرُ أَنَّ كَسَى عَلَى الَّذِينَ اسْتَفْزَعُوا فِي الْأَرْضِ وَجَعَلَهُمْ
أَيُّهُ وَجَعَلَهُمُ الرُّبُوبِينَ ۖ وَتَمَكَّنَ لَهُمْ فِي الْأَرْضِ وَنَبَى
فِرْعَوْنَ وَمَعْمَنَ وَجَعَلَهُمَا نَمُسًا كَاثِرًا يَحْذَرُونَ ۖ وَ
أَوْحَيْنَا إِلَىٰ أُمِّيَّتِي أَنْ أَصْلَحِهَا وَأَعِزَّنِي عَلَيْهِ ۖ وَأَلْقَيْتُ
فِي الْحَيَاةِ وَلَا تَخَافِي وَلَا تَحْزَنِي ۖ إِنَّا رَأَيْنَاكَ الْيَقِينِ وَجَعَلْنَا
مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ۖ فَالْتَمَعْنَا إِلَىٰ فِرْعَوْنَ لِيَكُونَ لَهُمْ عَدُوًّا
وَكَاثِرًا ۖ إِنَّ فِرْعَوْنَ وَمَعْمَنَ وَجَعَلَهُمَا كَاثِرًا يَحْذَرُونَ ۖ وَقَالَتِ
الْمُرَاتُ فِرْعَوْنَ كَرِهْتَ عَنِّي يَا لَكْ لَا تَقْطَعُونَ عَنِّي بَيْنَنَا
أَوْ تَجِدُنَا ۖ وَلَوْلَا أَوْفَرُ لَا يَقْعُرُونَ ۖ وَأَصْبَحَ نَوَافِدُ أُمِّيَّتِي
فِرْعَوًّا ۖ إِنَّ كَذِبَ الْقَبْدِي بِهِ لَوْلَا أَنْ رَأَيْنَا عَلَىٰ قَلْبِهَا لَيَكُونَ
مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ۖ وَقَالَتِ لِحُوتِهَا قُضِيَ قَبْرُكَ بِه عَنْ
نَجْبٍ وَهَلَا يَقْعُرُونَ ۖ وَحَرَمْنَا عَلَيْهِ الرَّاغِبِينَ مِنْ قَبْلِ
فَقَالَتْ هَلْ أَرَبُّكَ عَلَىٰ أَهْلِ بَيْتِي وَكَافُلُهُ ۖ لَكُمْ وَهَلْ لَكُمْ
نُصْرُونَ ۖ كَرَدْنَاهُ إِلَىٰ آيَةِ كَيْ تَقْرَعِيهَا وَلَا تَحْنِ وَلَا تَكْلَمْ
إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ وَلَكِنْ أَكْفَرْتُمْ بِالْعِلْمِ ۖ وَلَكِنَّا
بِلِقَاءِ اللَّهِ أَشَدُّ ۖ وَأَسْمَىٰ أَتَيْنَهُ حَمَلًا وَكَذَلِكَ نَجْزِي
الْمُحْسِنِينَ ۖ وَدَخَلَ الْمَرْيَمَةُ عَلَىٰ جَنِّي عَمَلَكُمْ رَبَّنَا

वे कि जो लोग मुल्क में कमखोर कर दिए गए हैं, उन पर एहसान करें और उन को पेशवा बनाएं और उन्हें (मुल्क का) वारिस करें। (५) और मुल्क में उन को क़ुदरत दें और फ़िअौन और हामान और उन की फ़ौज को वह चीज दिखा दें, जिस से वे डरते थे। (६) और हम ने मूसा की मां की तरफ़ वहाँ भेजी कि उस को दूध पिलाओ, जब तुम को इस के बारे में कुछ डर पैदा हो, तो उसे दरिया में डाल देना और न तो खौफ़ करना और न रंज करना। हम उस को तुम्हारे पास वापस पहुंचा देंगे और (फिर) उसे पैगम्बर बना देंगे। (७) तो फ़िअौन के लोगों ने उस को उठा लिया, इस लिए कि (नतीजा यह होना था कि) वह उन का दुश्मन और (उन के लिए) शम (की वजह) हो। बेशक फ़िअौन और हामान और उन के लश्कर चूक गये। (८) और फ़िअौन की बीवी ने कहा कि (यह) मेरी और तुम्हारी (दोनों की) आंखों की ठंडक है, इस को क़त्ल न करना, शायद यह हमें फ़ायदा पहुंचाए, या हम इसे बेठा बना लें और वे (अंजाम) से बे-ख़बर थे। (९) और मूसा की मां का दिल बे-क्रार हो गया। अगर हम उन के दिल को मज़बूत न कर देते, तो करीब था कि वह इस (गुस्से) को ज़ाहिर कर दें। गरज यह थी कि वे मॉमिनो में रहे। (१०) और उस की बहन से कहा कि उस के पीछे-पीछे चली जा, तो वह उसे दूर से देखती रही और उन (लोगों) को कुछ ख़बर न थी। (११) और हम ने पहले ही से उस पर (दाइयों के) दूध हराम कर दिए थे, दो मूसा की बहन ने कहा कि मैं तुम्हें ऐसे घर वाले बताऊं कि तुम्हारे लिए इस (बच्चे) को पालें और उस की ख़रख़ाही (से परवरिश) करें। (१२) तो हम ने (इस तरीक़े से) उन को उन की मां के पास वापस पहुंचा दिया, ताकि उन की आंखें ठंडी हों और वह शम न खाएं और मालूम करें कि खुदा का वायदा सच्चा है, लेकिन ये अक्सर नहीं जानते। (१३) ★ ●

और जब मूसा जवानी को पहुंचे और भरपूर (जवान) हो गये, तो हम ने उन को हिकमत और इल्म इनायत किया और हम नेकों को ऐसा ही बदला दिया करते हैं। (१४) और वह ऐसे वक़्त

व द-स-न-ल-मदी-न-त अला हीनि गफू-लतिम्-मिन् अह-लिहा फ-व-ज-द फीहा रजु-
 लैनि यक्ततिलानि ॥ हाजा मिन् शीअतिही व हाजा मिन् अदुव्विही ॥
 फस्तगा-सहुल्लजी मिन् शीअतिही अलल्लजी मिन् अदुव्विही ॥ फ-व-क - जहू
 मूसा फ - कज़ा अलैहि ॥ का - ल हाजा मिन् अ - मलिश्शैतानि ॥ इन्नहू

अद्वयम्-मुजित्तलुम्-मुबीन (१५) का - ल

रन्धि इन्नी अ-लम्तु नप्सी फ़ग-फ़िर् ली

क - ग - फ - र लह ७ इल्लह हुवल-

गफ़रुद्दीन (१६) का-ल रजिब बिमा

अन-अम-त अ-लय-य फ-लन अक-न जहीरल-

लिम्फजिरमीन (१७) क-अस-ब-ह फिल्मदीनति

साङ्ख्य - त - रक्कब फ-इजल्लजिस्तन्सरह

बिल - अम - सि अस्तमिखड्ड ६ का - ल

लह ममा इल्ल-क ल-गविश्यम - मबीत

(a) ———

(१८) फलम्मा अन् अरा-द अद्यान्त-श

बिल्लजा हु-व अदुवुल् - लहुमा प्रका - ल

या मूसा अतुरादु अन् तक्तु-लना कमी

क्र-तल् - त नफ् - सम् - बिल्अम्स

इन् तुरीदु इल्ला अन् तकू-न जब्बारन्

मिनल्-मुस्लिहीन (१६) व जा - अ

यस-आं का-ल या मूसा इन्नल्-म-ल-अ

प्रवरुज् इन्तो ल-क मिनन्नासिहीन (२०)

क्रा-ल रब्बि नज्जिनी मिनल्क्रोमज्-आलम

तिल्का-अ मद्-य-न का-ल असा रब्बी अय्यह-

लम्मा व-र-द मा-अ मद्-य-न व-ज-द

व व-ज-द मिन् दूनिहिमुम्-र-अतेनि तज्जुव

शहर में दाखिल हुए कि वहा के रहने वाले बे-खबर हो रहे थे, तो देखा कि वहां दो शस्त्र लड़ रहे थे, एक तो मूसा की क्रौम का है और दूसरे उन के दुश्मनों में से। तो जो शस्त्र उन की क्रौम में से था, उस ने दूसरे शस्त्र के मुकाबले में, जो मूसा के दुश्मनों में से था, मदद तलब की, तो उन्होंने ने उस को मुक्का मारा और उस का काम तमाम कर दिया।^१ कहने लगे कि यह काम तो शतान (के बहकावे) से हुआ। बेशक वह (इन्सान का) दुश्मन और खुला बहकाने वाला है। (१५) बोले कि ऐ परवरदिगार ! मैं ने अपने आप पर जुलूम किया, तो मुझे बरूश दे, तो खुदा ने उन को बरूश दिया। बेशक वह बरूशने वाला मेहरबान है। (१६) कहने लगे कि ऐ परवरदिगार ! तूने जो मुझ पर मेहरबानी फरमायी है, मैं (आगे) कभी गुनाहगारों का मददगार न बनूँ। (१७) गरज यह कि मुबह के वक़्त शहर में डरते-डरते दाखिल हुए कि देखें (क्या होता है), तो यकायक वही शस्त्र जिस ने कल उन से मदद मांगी थी, फिर उन को पुकार रहा है। (मूसा ने) उस से कहा कि तू तो खुली गुमराही में है। (१८) जब मूसा ने इरादा किया कि उस शस्त्र को, जो उन दोनों का दुश्मन था, पकड़ लें, तो वह (यानी मूसा की क्रौम का आदमी) बोल उठा कि जिस तरह तुम ने कल एक शस्त्र को मार डाला था, (उसी तरह) चाहते हो कि मुझे भी मार डालो। तुम तो यही चाहते हो कि मुल्क में जुलूम व सितम करते फिरो और यह नहीं चाहते कि नेकों में हो। (१९) और एक शस्त्र शहर के परली तरफ से दौड़ता हुआ आया (और बोला कि मूसा शहर के) रईस तुम्हारे बारे में मश्विरे करते हैं कि तुम को मार डालें, सो तुम यहां से निकल जाओ। मैं तुम्हारा खैरखाह हूँ। (२०) मूसा वहां से डरते-डरते निकल खड़े हुए कि देखें (क्या होता है और) दुआ करने लगे कि ऐ परवरदिगार ! मुझे जालिम लोगों से निजात दे। (२१)★

और जब मदयन की तरफ रुक किया तो कहने लगे, उम्मीद है कि मेरा परवरदिगार मुझे सीधा रास्ता बताए। (२२) और जब मदयन के पानी (की जगह) पर पहुंचे तो देखा कि वहां लोग जमा हो रहे (और अपने चारपायों को) पानी पिला रहे हैं और उन के एक तरफ दो औरतें (अपनी बकरियों को) रोके खड़ी हैं। मूसा ने (उन से) कहा, तुम्हारा क्या काम है ? वे बोलीं कि जब तक चरवाहे (अपने चारपायों को) ले न जाएं, हम पानी नहीं पिला सकते और हमारे वालिद बड़ी उम्र

१. कहते हैं कि जिस शस्त्र को हज़रत मूसा ने मुक्का मारा था, वह क्रिश्चन का बावरची था और वह हज़रत मूसा की क्रौम के शस्त्र को बेगार के लिए मजबूर कर रहा था। जब उस ने मूसा अलैहिस्सलाम को देखा तो उन से मदद चाही। मूसा अलैहिस्सलाम ने उस मजलूम को जालिम के हाथ से बचाने की नीयत से उस क्रिश्चन को मुक्का मारा और वह मर कर रह गया। यह क़तल अगरचे जान-बूझ कर न था, बल्कि इत्तिफ़ाक़ की बात थी, फिर भी मूसा अलैहिस्सलाम इस काम पर बहुत शमिन्दा हुए और अपनी शान के लिहाज़ से उस को ख़ता मान कर के खुदा से माफ़ी चाही।

फ-सका लहुमा सुम्-म त-वल्ला इलम्जिल्लि फ-का-ल रन्वि इन्नी लिमा
अन्जल्-त इलय-य मिन् खैरिन् फकीर (२४) फजा-अतहु इहदाहुमा तम्शी
अ-नस्तिह्याइन् कालत् इन्-न अबी यदअ - क लियज्जि-य-क अज् - र
मा सक्के-त लना फ-लम्मा जा-अह व कस्-स अलैहिल्क-स-स॥ काल-ल ला

त - खफ् ^{تَفْخَفُ} नजी - त ^{نَجِي} मिनल् -
कौमिज्जालिमीन (२५) कालत् इहदा-
हुमा या अ-वतिस्तअ-जिहुं इन्-न खै-र
मनिस्तअ-जतल् - कविद्युल् अमीन (२६)
का-ल इन्नी उरीदु अन् उन्कि - ह-क
इह-दब-न-तय-य हातेनि अला अन् तअजु-रनी
समानि-य हिजजिन् फ-इन् अत्मम् - त
अश-रन् फमिन् जिन्दि-क-उ व मा उरीदु
अन् अशुक-क अलै - क-स - तजिदुनी
इन्शाअल्लाहु मिनस्सालिहीन (२७) का-ल
जालि-क बैनी व बै-न - क-अध्य-मल् -
अ-जलैनि कज्जतु फला अुद्वा-न अ-लय-य
वल्लाहु अला मा नकूलु वकील (२८)

سَلَىٰ صُدُورِ الرِّعَاءِ وَأَيُّهَا الشَّيْخُ كَبِيرُ ۖ فَسَلَىٰ لَهُمَا نَوَاقِلُ
لِلْأَقْبَلِ فَقَالَ رَبِّ إِنِّي لَمَّا أَتَيْتُكَ مِنْ خَيْرٍ فَفَرَّغْتُ ۖ فَكَلَّمْتُ
أَحَدَهُمَا فَكَلَّمْتُ عَلَىٰ سَمْعِي ۖ قَالَتْ إِنَّ أَيْنَ يَدْعُوكَ يُعِيرُكَ
أَجْرًا مَسْقُوتًا ۖ إِنَّا كُنَّا جَاهِدًا وَقَضَىٰ عَلَيْهِ الْقَضَىٰ ۖ قَالَ
لَا تُخَفِّفْ ۖ فَتَحَوَّيْتُ مِنَ الْقَوْمِ الطَّيِّبِينَ ۖ كَانَتْ لِي دَعْوَاهُمَا أَنَا
لِشَاجِرَةٍ ۖ إِنَّ عَمْرٍاءَ لَشَجَرَتِ الْقَوْمِ الْأَمِينِ ۖ قَالَ إِنِّي
أُرِيدُ أَنْ أَتِيَّكَ إِحْدَىٰ اثْنَتَيْنِ هَتَيْنِ عَنْ أَنْ تَأْخُذَنِي شَيْءٌ
بِجَبِّ ۖ فَإِنْ أَتَيْتَ عَشْرًا فَمِنْ عِنْدِكَ ۖ وَمَا أُرِيدُ أَنْ أَشُقَّ
عَلَيْكَ مُسْهِمِي ۖ إِنَّ شَاءَ اللَّهُ مِنَ الطَّيِّبِينَ ۖ قَالَ فَظَلَمْتَنِي
وَبَيْنَكَ إِنَّمَا الْأَجَلُ قَضِيَتْ فَلَا مَدَانَ عَلَىٰ ۖ وَاللَّهِ عَلَيَّ
مَا تَقُولُ ۖ وَكَيْفَ ۖ فَلَمَّا قَضَىٰ مَوْسَىٰ الْأَجَلَ وَسَارَ بِأَهْلِهِ آنَسَ
مِنْ جَانِبِ الطُّورِ نَارًا ۖ قَالَ لِأَهْلِهِ امْكُثُوا إِنِّي آنَسْتُ نَارًا
لَعَلَّ الْبَيْتَ مِنْهَا يَخْرُجُ ۖ وَبَدَأُوا مِنْ النَّارِ يَخْلِكُونَ وَيَصْلَحُونَ
فَلَمَّا أَتَاهَا نُورٌ مِنْ شَاطِئِ الْوَادِ الْأَيْمَنِ فِي الْبُقْعَةِ الْمُبَارَكَةِ
مِنَ الْعَمْرِ ۖ وَأَنْ يُسَمِّيَ إِلَٰهَ الْأَنْبِيَاءِ رَبِّ الطَّيِّبِينَ ۖ وَأَنْ يُسَمِّيَ
عَسَلًا ۖ فَلَمَّا أَتَاهَا ذُكِّرَتْ بِمَا كَانُوا يَفْعَلُونَ ۖ وَفِي مَدْيَنَ إِذْ دَعَا بَنُو إِدْرِيسَ
يُوسَىٰ وَقِيلَ لَهُمَا قَدْ كَانَا فِي الْغَيْبِ ۖ وَكَانَ أَبُوهُمَا صَالِحًا فَأَرَادَ اللَّهُ بِكُمُ الْبَحْثَ

फ-लम्मा कज्जा मूसल्-अ-ज-ल व सा-र बि-अहिलही आ-न-स मिन् जानिबित्तूर
नारन् का-ल लि-अहिलहिम्कुसू इन्नी आनस्तु ना-रल्ल - अल्ली आतीकुम्
मिन्हा बि-ख-बरिन् ओ जज्-वतिम्-मिनन्नारि ल-अल्लकुम् तस्तलून (२६)
फ-लम्मा अताहा नूदि-य मिन् शाति-इल् - वादिल् - ऐमनि फिल्लुबुक्-अतिल्-
मुबा-र-कति मिनश्श-ज-रति अय्यामूसा इन्नी अनल्लाहु रब्बुल् - आलमीन॥
(३०) व अन् अल्कि असा - क-फ - लम्मा र - आहा तहतज्जु
क - अन्नहा जन्नुवल्ला मुद् - बिरव - व लम् यु - अक्किब् या मूसा
अक्किब् व ला त - खफ् ^{تَفْخَفُ} इन् - क मिनल् - आमिनीन (३१)

के बूढ़े हैं। (२३) तो मूसा ने उन के लिए (बकरियों को) पानी पिला दिया, फिर साए की तरफ चले गये और कहने लगे कि परवरदिगार ! मैं इस का मुहताज हूँ कि तू मुझ पर अपनी नेमत नाजिल करमाए। (२४) (थोड़ी देर के बाद) उन में से एक औरत जो शर्माती और लजाती चली आती थी, मूसा के पास आयी (और) कहने लगी कि तुम को मेरे वालिद बुलाते हैं कि तुम ने जो हमारे लिए पानी पिलाया था, उस का तुम को बदला दें। जब वह उन के पास आए और उन से (अपना) माजरा बयान किया, तो उन्होंने ने कहा कि कुछ खौफ न करो। तुम जालिम लोगों से बच आए हो। (२५) एक लड़की बोली कि अब्बा ! इन को नौकर रख लीजिए, क्योंकि बेहतर नौकर जो आप रखें, वह है (जो) मजबूत और अमानतदार (हो)। (२६) (मूसा से) कहा कि मैं चाहता हूँ, अपनी इन दो बेटियों में से एक को तुम से ब्याह दूँ, इस (बायदे) पर कि तुम आठ वर्ष मेरी खिदमत करो और अगर दस साल पूरे कर दो, तो वह तुम्हारी तरफ से (एहसान) है और मैं तुम पर तक्लीफ डालनी नहीं चाहता, तुम मुझे इन्शाअल्लाह नेक लोगों में पाओगे। (२७) मूसा ने कहा कि मुझ में और आप में यह (पक्का बायदा हुआ), मैं जो-भी मुदत (चाहूँ) पूरी कर दूँ, फिर मुझ पर कोई ज्यादाती न हो और हम जो समझौता करते हैं, खुदा उस का गवाह है। (२८)★

जब मूसा ने मुदत पूरी कर दी और अपने घर के लोगों को ले कर चले, तो तूर की तरफ से आग दिखाई दी, तो अपने घर वालों से कहने लगे कि (तुम यहां) ठहरो। मुझे आग नज़र आयी है, शायद मैं वहां से (रास्ते का) कुछ पता लाऊँ या आग का अंगारा ले आऊँ, ताकि तुम तापो। (२९) जब उस के पास पहुंचे तो मैदान के दाएं किनारे से एक मुबारक जगह में, एक पेड़ में से आवाज़ आयी कि मूसा ! मैं तो खुदा-ए-रब्बुल आलमीन हूँ। (३०) और यह कि अपनी लाठी डाल दो। जब देखा कि वह हरकत कर रही है, गोया सांप है, तो पीठ फेर कर चल दिए और पीछे मुड़ कर भी न देखा। (हम ने कहा कि) मूसा आगे आओ और डरो मत, तुम अम्न पाने वालों में हो। (३१)

उस-लुक् य-द-क फी जैबि-क तख-रज् बेज्जा-अ मिन् गैरि सूइ-व-वज्रमुम्
इलै-क जना-ह-क मिनरंहिब फ-जानि-क बुर्हानानि मिरंहिब-क इला फिर्ओ-न
व मल-इही इन्नुहुम् कानू कौमन् फासिकीन (३२) का - ल रब्बि
इन्नी क-तल्लु मिन्हुम् नफसन् फ-अखाफु अय्यक्तुलून (३३) व अखी

हारुनु हु - व अप्सहु मिन्नी लिसानन्
फ - असिल्हु मअ - य रिद्अय्युसदिदकुनी
इन्नी अखाफु अय्युकज्जिबून (३४)

का-ल सनशुददु अजु-द-क बि-अखी-क व नज्जलु
लकुमा सुल्लानन् फ ला यसिलू-न इलैकुमा
८ बिआयातिना ९ अन्तुमा व

मनित्त-ब-अ-कुमल्-गालिबून (३५) फ-लम्मा
जा-अहुम् मूसा बिआयातिना बय्यिनातिन्
कालू मा हाज्जा इल्ला सिह्रम्-मुफ्तरव-व
मा समिअ-ना बिहाज्जा फी आबाइनल्-
अव्वलीन (३६) व का-ल मूसा रब्बी
अज-लमु बिमन् जा - अ बिल्हुदा मिन्
अन्दिही व मन् तकून लहू आकिबतुद्दारि

इन्नुहू ला युफ्लिह्ज्जालिमून (३७) व का-ल फिर्ओनु या अय्युहल्म-ल-उ
मा अलिम्नु लकुम् मिन् इलाहिन् गैरी ८ फ ओकिद् ली या हामानु
अलत्तीनि फज्-अल्ली सर - हल-ल - अल्ली अत्तलिअ इला इलाहि मूसा
व इन्नी ल-अजुन्नुहू मिनल्काजिबीन (३८) वस्तक्-ब-र हु-व व जुनूदहू फिलअज्जि
बिगैरिलहक्कि व अन्नू अन्नुहुम् इलैना ला युरज्जून (३९)
फ-अ-अज्जनाहु व जुनूदहू फ - न - बज्जाहुम् फिल्यम्मि ८ फज्जुर् कै - फ
कान आकिबतुअ-जालिमीन (४०) व ज - अल्लाहुम् अ-इम्मत्तय्यद-अ-न
इलन्नारि ८ व यौमल्कियामति ला युत्सरून (४१)

فِي جَيْبِكَ خَزَّاهُ مِنْ غَيْرِ مَوَاقِفٍ ۖ وَأَضْمَرَ لَكَ جَانِحًا
مِنَ الرِّيحِ فَذَلِكَ بَعْثَانِي مِنْ رَبِّكَ إِلَى ذُرْعُونٍ وَمَنْ لِي بِهِ
الْهَمُّ كَلَّا قَدْ مَاتَ مُفَوِّقِينَ ۖ قَالَ رَبِّ لِي تَكَلَّمَ مِنْهُمْ نَفْسًا
فَأَخْبَأْتُ أَنْ يَتَّبِعُونِي ۖ وَأَمْسَى فَهَرُونَ هُوَ أَفْصَحُ مِنِّي لِسَانًا
فَأَرْسَلَهُ مَعِيَ بِأَفْصَحَ قَوْلِي لِي أَنْتَ أَنْ لَيْكَ بَيِّنَاتٌ ۖ
قَالَ سَفَعْتُ خَصْدًا بِأَيْمِيكَ وَتَحَمَّلْتُ لِمَا لَسْتُ أَفْلَاحِيصُونَ
الْبَيْتَةَ بِأَيْمَانِي أَنَا وَمَنْ تَحَمَّلْتُ الظُّلُمُونَ ۖ فَلَمَّا جَاءَهُمْ
مُوسَى بِأَيْمَانِهِمْ أَتَوْهُمَا هَذَا الْإِسْرَافُ مُفْتَرِي ۖ وَمَا
سَمِعْنَا بِهَذَا فِي آيَاتِنَا الْأَوَّلِينَ ۖ وَقَالَ مُوسَى رَبِّ لِي أَعْلَمْ
بِمَنْ جَاءَ بِالْهَدْيِ مِنْ عِنْدِكَ ۖ وَمَنْ تَكُونُ لَهُ عَائِيَةُ الدَّارِ
إِنَّهُ لَا يُغْنِيهِ الظُّلُمُونَ ۖ وَقَالَ ذُرْعُونُ يَا أَيُّهَا الْمَلِكُ مَا عَمِلْتَ
لَكَ مِنْ الْوَعْدِ ۖ فَأَوْدَى بِي يَدَايَ عَنْ عِلِّ الظُّلُمِ نَابِلِ
لِي فَصَلِّ الْعَلِيَّ أَهْلِي إِلَى الْوَسْطَى ۖ وَإِنِّي أَكْطَفُ مِنَ
الْكُذِبِينَ ۖ وَاسْتَلْهُهُ وَجْهَهُ فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ
وَعَلَّمَهُ الْكُفْرَ الْيَمِينُ لَا يَرْضَوْنَ ۖ فَاعْتَدَهُ وَجْهَهُ فَمِنْ
فِي السَّيْرِ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَائِيَةُ الظُّلُمِينَ ۖ وَجَعَلْتَهُمْ إِبْرَاقَةً
وَيَدْعُونَ لِي الْكَارِ وَيَوْمَ الْقِيَامِ لَا يَنْصَرُونَ ۖ وَاتَّبَعْتَهُمْ

अपना हाथ गरेबान में डालो तो बगैर किसी ऐब के सफ़ेद निकल आएगा और डर दूर होने (की वजह) से अपने बाजू को अपनी तरफ मुकेड़ लो। ये दो दलीलें तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से हैं। (उन के साथ) फ़िअौन और उस के दरबारियों के पास (जाओ) कि वे नाफ़रमान लोग हैं। (३२) (मूसा ने) कहा, ऐ परवरदिगार ! उन में का एक शस्स मेरे हाथ से क़त्ल हो चुका है, सो मुझे डर है कि वे (कहीं) मुझ को न मार डालें। (३३) और हाज़ून (जो) मेरा भाई (है) उस की जुबान मुझ से ज्यादा साफ़ है तो उस को मेरे साथ मददगार बना कर भेज कि मेरी तस्दीक़ करे, मुझे डर है कि वे लोग मुझे झुठला देंगे। (३४) (खुदा ने) फ़रमाया, हम तुम्हारे भाई से तुम्हारे बाजू को मज़बूत करेंगे और तुम दोनों को ग़लबा देंगे, तो हमारी निशानियों की वजह से वे तुम तक पहुंच न सकेंगे (और) तुम और जिन्होंने तुम्हारी पैरवी की, ग़ालिब रहोगे। (३५) और जब मूसा उन के पास हमारी खुली निशानियां ले कर आये, तो वे कहने लगे कि यह तो जादू है, जो इस ने बना खड़ा किया है और ये (बातें) हम ने अपने अगले बाप-दादा में तो (कभी) सुनी नहीं। (३६) और मूसा ने कहा कि मेरा परवरदिगार उस शस्स को ख़ूब जानता है, जो उस की तरफ़ से हक़ ले कर आया है और जिस के लिए आक़िबत का घर (यानी बहिश्त) है। बेशक ज़ालिम निजात नहीं पाएंगे। (३७) और फ़िअौन ने कहा कि ऐ दरबारियो ! मैं तुम्हारा, अपने सिवा, किसी को खुदा नहीं जानता, तो हामान मेरे लिए गारे को आग लगा (कर ईटें पका) दो, फिर एक (ऊंचा) महल बना दो, ताकि मैं मूसा के खुदा की तरफ़ चढ़ जाऊं और मैं तो उसे झूठा समझता हूं। (३८) और वह और उस के लश्कर मुल्क में ना-हक़ घमंड में ख़ूर हो रहे थे और ख़्याल करते थे कि वे हमारी तरफ़ लौट कर नहीं आएंगे। (३९) तो हम ने उन को और उन के लश्करो को पकड़ लिया और दरिया में डाल दिया, सो देख लो कि ज़ालिमों का कैसा अंजाम हुआ। (४०) और हम ने उन को पेशवा बनाया था। वे (लोगों को) दोज़ख़ की तरफ़ बुलाते थे और क्रियामत के दिन उन की मदद

१. हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की जुबान में लुकनत थी और उन को ख़्याल था कि वे लुकनत की वजह से तक्रीर साफ़ न कर सकेंगे, इस लिए खुदा से इस्तिज़ा की कि मेरे भाई हाज़ून को, जिन की जुबान साफ़ है, मेरे साथ मददगार बना कर भेज, ताकि उन दलीलों को, जो जुबान की लुकनत की वजह से अच्छी तरह बयान न कर सकें, वह अपनी साफ़ जुबान होने की वजह से अच्छी तरह बयान कर सकें और उन लोगों के ज़ेहन में बिठा दें।

व अतबअ-नाहुम् फी हाजिहिदुन्या लअ-न-तन् व यीमल्-कियामति हुम्
मिनल्-मक्बूहीन * (४२) व ल-कद् आतैना मूसल्किता-व मिम्बअ-दि मा
अह-लक-नल्-कुरुनल्-ऊला बसाइ-र लिन्नासि व हुदव-व रह-म-तल्-ल-अल्ल-
हुम् य-त-जक्करुन (४३) व मा कुन्-त बिजानिबिल्-गर्बियि इज् कजैना इला

मूसल्-अम्-र व मा कुन्-त मिनशहाहिदीन

(४४) व लाकिन्ना अन्शअ-ना कुरुनन्

फ-त - ताव-ल अलैहिमुल् - अमुर व मा

कुन्-त सावियन् फी अहिल मद-य-न ततल्

अलैहिम् आयातिना ॥ व लाकिन्ना कुन्ना

मुसिलीन (४५) व मा कुन्-त बिजानिबित्तूरि

इज् नादैना व लाकिरह-म-तम्-मिररिबि-क

लितुन्जि - र क्रोमम्मा अताहुम् मिन्

नजीरिम् मिन् कबिल - क ल - अल्लहुम्

य-त-जक्करुन (४६) व लौ ला अन्

तुसीबहुम् मुसीबतुम्-बिमा कद्-द-मत् ऐदीहिम्

फ-यकूल रब्बना लौ ला अर्सल-त इलैना

रसूलन् फ-नत्तबि-अ आसाति-क व नकू-न मिनल्-मुअमिनीन (४७) फ-लम्मा

जा-अ-हुमुल्हक्कु मिन् अिन्-दिना कालू लौ ला ऊति-य मिस्-ल मा ऊति-य

मूसा ॥ अ - व-लम् यक्फुरू बिमा ऊति - य मूसा मिन् कबलु कालू

सिहरानि तज्जहरा ॥ व कालू इन्ना बिकुल्लिन् काफिरुन (४८)

कुल् फअतू बिकिताबिम् - मिन् अिन्दिल्लाहि हु - व अह - दा मिन्दुमा

अत्तबिअ-हु इन् कुन्तुम् सादिकीन (४९) फ-इल्लम् यस्तजीबू ल-क फअ-लम्

अन्नमा यत्तबिअ-न अह-वा-अहुम् ॥ व मन् अजल्लु मिम्मनित्त-व-अ हवाहु बिगैरि

हुदम्मिनल्लाहि ॥ इन्नल्ला - ह ला यहिदल् - क्रोमज्ज - जालिमीन * (५०)

فِي هَذِهِ الدِّينِ الْعَمَلُ رُبُّهُمُ هُوَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ۝ وَ
لَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ مِنْ بَعْدِ مَا أَهْلَكْنَا الْقُرُونَ الْأُولَى
بَصَائِرَ لِلنَّاسِ وَهُدًى وَرَحْمَةً لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ۝ وَمَا
كُنْتُ بِجَانِبِ الْقُرَيْشِ إِذْ دَعَيْنَاهُمْ إِلَى مُوسَى الْأَمْرِ وَمَا كُنْتُ
مِنَ الْقَاهِلِينَ ۝ وَلَكِنَّا أَنشَأْنَا قُرُونًا فَتَطَاوَلَ عَلَيْهِمُ الْعُمُرُ
وَمَا كُنْتُ تَاوِيلًا فِي أَهْلِ مَدْيَنَ تَتَلَوَّ عَلَيْهِمُ آيَاتُنَا وَلَكِنَّا
كُنَّا مُرْسِلِينَ ۝ وَمَا كُنْتُ بِجَانِبِ الطُّورِ إِذْ دَعَيْنَاهُ وَلَكِن
رَحْمَةً مِن رَّبِّكَ يُنَادِيهِمْ فَمَا أَصَابَهُمُ مِنْ نَارٍ مِنْ رَبِّكَ
لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ۝ وَلَوْلَا أَن نَّصِيبَهُمْ حُصْبَةً مِّنَ الْهَرَمِ
أَيُّوبُ يُقَالُوا دُعِيَ الْوَلَدُ أَرْسَلَهُ إِلَهُهُ فَأَسْرَبَ إِلَيْهِ
وَكُنْتُ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ۝ فَلَمَّا جَاءَهُمْ الْحُسْبَىٰ مِنْ عِندِنَا
قَالُوا الْوَلَدُ أَتَىٰ مِن بَيْنِ أَوْفَىٰ أَوَّلَهُمْ نَبَأًا مِّمَّا أَتَىٰ
مُوسَىٰ مِنْ قَبْلُ قَالُوا يُغَيِّرُ نَحْنُهُمْ أَفَلَا تَدَّبَّرُونَ ۝ وَتِلْكَ
آيَاتُ رَبِّكَ تُقَالُ لِرَبِّكَ مِنْ عِندِ اللَّهِ مُوَفَّقِينَ وَهُمْ
أَكْبَرُ ۝ إِنَّ لَكُمْ صِدْقِينَ ۝ وَكَانَ لَكُمْ حُجَّتُكَ فَاعْلَمْ
أَنَّ الْيَوْمَ هُوَ أَمْرٌ وَمَنْ أَضَلُّ مِمَّنِ اتَّبَعَ هَوَاهُ بَعْدَ
هُدًى مِنَ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ۝ وَلَقَدْ

नहीं की जाएगी। (४१) और इस दुनिया में हम ने उन के पीछे लानत लगा दी और वे क्रियामत के दिन भी बद-हालों में होंगे। (४२) ★

और हम ने पहली उम्मतों के हलाक करने के बाद मूसा को किताब दी, जो लोगों के लिए बसीरत और हिदायत और रहमत है, ताकि वे नसीहत पकड़ें। (४३) और जब हम ने मूसा की तरफ हुक्म भेजा, तो तुम (तूर के) पश्चिम की तरफ नहीं थे और न इस वाकिए के देखने वालों में थे। (४४) लेकिन हम ने (मूसा के बाद) कई उम्मतों को पैदा किया, फिर उन पर मुह्त लम्बी बीत गयी और न तुम मदयन वालों में रहने वाले थे कि उन को हमारी आयतें पढ़-पढ़ कर सुनाते थे। हां, हम ही तो पैगम्बर भेजने वाले थे। (४५) और न तुम उस वक्त, जब कि हम ने (मूसा को) आवाज़ दी, तूर के किनारे थे, बल्कि (तुम्हारा भेजा जाना) तुम्हारे परवरदिगार की रहमत है, ताकि तुम उन लोगों को जिन के पास तुम से पहले कोई हिदायत करने वाला नहीं आया, हिदायत करो ताकि वे नसीहत पकड़ें। (४६) और (ऐ पैगम्बर ! हम ने तुम को इस लिए भेजा है कि) ऐसा न हो कि अगर इन (आमाल) की बजह से जो उन के हाथ आगे भेज चुके हैं, उन पर कोई मुसीबत बाक़ेअ हो, तो ये कहने लगे कि ऐ परवरदिगार ! तू ने हमारी तरफ कोई पैगम्बर क्यों न भेजा कि हम तेरी आयतों की पैरवी करते और ईमान लाने वालों में होते। (४७) फिर जब उन के पास हमारी तरफ से हक़ आ पहुंचा, तो कहने लगे कि जैसी (निशानियां) मूसा को मिली थीं, वैसी इस को क्यों नहीं मिली ? क्या जो (निशानियां) पहले मूसा को दी गयी थीं, उन्होंने ने उन में कुफ़्र नहीं किया ? कहने लगे कि दोनों जादूगर हैं एक दूसरे के मुवाफ़िक़ और बोले कि हम सब से मुक़िर हैं। (४८) कह दो कि अगर सच्चे हो, तो तुम खुदा के पास से कोई और किताब ले आओ, जो इन दोनों (किताबों) से बड़ कर हिदायत करने वाली हो, ताकि मैं भी उसी की पैरवी करूं। (४९) फिर अगर ये तुम्हारी बात कुबूल न करें, तो जान लो कि ये सिर्फ़ अपनी स्वाहिशों की पैरवी करते हैं और उस से ज्यादा कौन गुमराह होगा जो खुदा की हिदायत को छोड़ कर अपनी स्वाहिश के पीछे चले। बेशक़ ख़दा ज़ालिम लोगों को हिदायत नहीं देता। (५०) ★

और हम (एक के बाद एक) लगातार उन लोगों के पास (हिदायत की) बातें भेजते रहे हैं, ताकि नसीहत पकड़ें।' (५१) जिन लोगों को हम ने इस से पहले किताब दी थी, वे इस पर ईमान ले आते हैं (५२) और जब (कुरआन) उन को पढ़ कर सुनाया जाता है, तो कहते हैं कि हम इस पर ईमान ले आए। बेशक वह हमारे परवरदिगार की तरफ से बर-हक है (और) हम तो इस से पहले के हुक्मबर्दार हैं। (५३) इन लोगों को दोगुना बदला दिया जाएगा, क्योंकि सन्न करते रहे हैं और भलाई के साथ बुराई को दूर करते हैं और जो (माल) हम ने उन को दिया है, उस में से खर्च करते हैं। (५४) और जब बेहूदा बात सुनते हैं, तो उस से मुंह फेर लेते हैं और कहते हैं कि हम को हमारे आमाल और तुम को तुम्हारे आमाल, तुम को सलाम। हम जाहिलों के स्वास्तगार (चाहने वाले) नहीं हैं। (५५) (ऐ मुहम्मद !) तुम जिस को दोस्त रखते हो, उसे हिदायत नहीं कर सकते, बल्कि खुदा ही जिस को चाहता है, हिदायत करता है और वह हिदायत पाने वालों को खूब जानता है। (५६) और कहते हैं कि अगर हम तुम्हारे साथ हिदायत की पैरवी करें, तो अपने मुल्क से उचक लिए जाएं। क्या हम ने उन को हरम में, जो अम्न की जगह है, जगह नहीं दी, जहां हर किस्म के मेवे पहुंचाए जाते हैं (और यह) रिजक हमारी तरफ से है, लेकिन उनमें से अक्सर नहीं जानते। (५७) और हम ने बहुत-सी बस्तियों को हलाक कर डाला, जो अपनी दीलत (की ज्यादाती) में इतरा रहे थे, सो ये उन के मकान हैं, जो उन के बाद आबाद नहीं हुए, मगर बहुत कम और उन के पीछे हम ही उन के वारिस हुए। (५८) और तुम्हारा परवरदिगार बस्तियों को हलाक नहीं किया करता, जब तक उन के बड़े शहर में पैगम्बर न भेज ले, जो उन को हमारी आयतें पढ़-पढ़ कर सुनाये, और हम बस्तियों को हलाक नहीं किया करते, मगर इस हालत में कि वहां के बाशिंदे जालिम हों। (५९) और जो चीज तुम को दी गयी है, वह दुनिया की ज़िदगी का फ़ायदा और उस की जीनत है और जो खुदा के पास है, वह बेहतर और बाकी रहने वाली है। क्या तुम समझते नहीं ? (६०) ★

भला जिस शस्स से हम ने नेक बायदा किया और उस ने उसे हासिल कर लिया तो क्या वह उस शस्स का-सा है, जिस को हम ने दुनिया की ज़िदगी के फ़ायदे से नवाजा। फिर वह क्रियामत के दिन उन लोगों में हो, जो (हमारे रु-ब-रु) हाज़िर किए जाएंगे। (६१) और जिस (दिन) (खुदा)

१. बातें 'कौल' का तर्जुमा है और इस से मुराद कुरआन मजीद की आयतें हैं, जो एक दूसरे के बाद आती रहतीं।

उन को पुकारेगा और कहेगा कि मेरे वे शरीक कहां हैं, जिन का तुम्हें दावा था ? (६२) (तो) जिन लोगों पर (अज्ञाब का) हुक्म साबित हो चुका होगा, वे कहेंगे कि हमारे परवरदिगार ! ये वह लोग हैं, जिन को हम ने गुमराह किया था और जिस तरह हम खुद गुमराह हुए थे उसी तरह उन को गुमराह किया था, (अब) हम तेरी तरफ (मुतवज्जह हो कर) उन से बे-बार होते हैं। ये हमें नहीं पूजते थे। (६३) और कहा जाएगा कि अपने शरीकों को बुलाओ, तो वे उन को पुकारें और वे उन को जवाब न दे सकेंगे और (जब) अज्ञाब को देख लेंगे (तो तमन्ना करेंगे कि) काश ! वे हिदायत पाये हुए होते। (६४) और जिस दिन (खुदा) उन को पुकारेगा और कहेगा कि तुम ने पैगम्बरों को क्या जवाब दिया ? (६५) तो वे उस दिन खबरों से अंधे हो जाएंगे और आपस में कुछ भी पूछ न सकेंगे। (६६) लेकिन जिस ने तोबा की ओर ईमान लाया और नेक अमल किए, तो उम्मीद है कि वह निजात पाने वालों में हो। (६७) और तुम्हारा परवरदिगार जो चाहता है, पैदा करता है और (जिसे चाहता है) चुन लेता है। उन को (इस का) अस्तियार नहीं है, ये जो शिकं करते हैं, खुदा उस से पाक व ऊंचा है। (६८) और उन के सीने, जो कुछ छिपाते हैं और जो ये जाहिर करते हैं, तुम्हारा परवरदिगार उस को जानता है। (६९) और वही खुदा है, उस के सिवा कोई माबूद नहीं, दुनिया और आखिरत में उसी की तारीफ है और उसी का हुक्म और उसी की तरफ तुम लौटाए जाओगे। (७०) कहो, भला, देखो तो अगर खुदा तुम पर हमेशा क्रियामत के दिन तक रात (का अंधेरा) किए रहे, तो खुदा के सिवा कौन माबूद है, जो तुम को रांशनी ला दे, तो क्या तुम मुनते नहीं ? (७१) कहो, तो भला देखो तो अगर खुदा तुम पर हमेशा क्रियामत तक दिन किए रहे, तो खुदा के सिवा कौन माबूद है कि तुम को रात ला दे, जिस में तुम आराम करो, तो क्या तुम देखते नहीं ? (७२) और उस ने अपनी रहमत से तुम्हारे लिए रात को और दिन को बनाया, ताकि तुम उसमें आराम करो और (उस में) उसका फ़जल तलाश करो और ताकि शुक्र करो। (७३)

१. तर्जुमा का तर्जुमा तो यह है कि उस दिन उन पर खबरें अंधी हो जाएंगी लेकिन उर्दू मुहावरे को ध्यान में रखते हुए उस का तर्जुमा इस तरह किया गया।

और जिस दिन वह उन को पुकारेगा और कहेगा कि मेरे वे शरीक, जिन का तुम्हें दावा था, कहां हैं ? (७४) और हम हर एक उम्मत में से गवाह निकाल लेंगे, फिर कहेंगे कि अपनी दलील पेश करो, तो वे जान लेंगे कि सब बात खुदा की है और जो कुछ वे झूठ गढ़ा करते थे, उन से जाता रहेगा । (७५) ★

क्राबून मूसा की क्रौम में से था और उन पर सरकशी करता था और हमने उस को इतने खजाने दिए थे कि उन की कुंजियां एक ताकतवर जमाअत को उठानी मुश्किल होतीं । जब उस से उस की क्रौम ने कहा कि इतराइये मत कि खुदा इतराने वालों को पसन्द नहीं करता । (७६) और (माल) तुम को खुदा ने अता फरमाया है, उस से आखिरत (की भलाई) तलब कीजिए और दुनिया से अपना हिस्सा न भुलाइए' और जैसी खुदा ने तुम से भलाई की है (वैसी) तुम भी (लोगों से) भलाई करो और मुल्क में फसाद न चाहो, क्योंकि खुदा फसाद करने वालों को दोस्त नहीं रखता । (७७) बोला कि यह (माल) मुझे इल्म (के ज़ोर) से मिला है । क्या उस को मालूम नहीं कि खुदा ने उस से पहले बहुत सी उम्मतें, जो उस से ताकत में बड़ कर और जमइयत में ज्यादा थीं, हलाक कर डाली हैं और गुनाहगारों से उन के गुनाहों के बारे में पूछा नहीं जाएगा ।' (७८) तो (एक दिन) क्राबून (बड़ी) सजावट (और ठाठ) से अपनी क्रौम के सामने निकला । जो लोग दुनिया की ज़िंदगी के तलबगार थे, कहने लगे कि जैसा (माल व मता) क्राबून को मिला है, काश ! (ऐसा ही) हमें भी मिले । वह तो बड़ा ही किस्मत वाला है । (७९) और जिन लोगों को इल्म दिया गया था, वे कहने लगे कि तुम पर अफसोस, मोमिनों और नेक लोगों के लिए, (जो) सबाब खुदा (के यहां तैयार है, वह) कहीं बेहतर है । और वह सिर्फ़ सब करने वालों ही को मिलेगा । (८०) पस हमने क्राबून को और उस के घर को ज़मीन में धंसा दिया, तो खुदा के सिवा कोई जमाअत उस की मददगार न हो सकी और न वह बदला ले सका । (८१) और वे लोग जो

१. यानी दुनिया में नेक अमल कीजिए कि आखिरत में यही साथ जाएंगे ।

२. यानी गुनाहगारों से पूछ कर उन को सबा नहीं दी जाएगी, बल्कि जब उन को अज़ाब का होना ज़रूर है, तो न पूछने की ज़रूरत है, न उन को बून व बरा करने की ताकत ।

ब अम्बहल्लजी-न तमन्नी मकानहू बिल्अम्सि यकूलू-न वै-क-अन्नल्ला-ह यम्मुतुरिज्-क
लिमग्गशाउ मिन् अिबादिही व यक्दिहः लौ ला अम्मन्नल्लाहु अलेना
स-ख - स - फ़ बिना ७ वै - क-अन्नहू ला युफिलहुल् - काफिरून ★ (८२)
तिल्कद्दाहल्-आखिरतु नज-अलुहा लिल्लजी-न ला युरीदू-न अलुव्वन् फिलअजि

ब ला फ़सादन् ७ वल् - आकिबतु
लिल्मुत्तकीन (८३) मन् जा-अ बिल-ह-स-नति
फ़ - लहू खैरुम्मिन्हा ८ व मन् जा - अ
बिस्सम्यिअति फ़ला युज्जल्लजी - न

अमिलुस्सम्यिअति इल्ला मा कानू यअ-मलून
(८४) इन्नल्लजी फ़-र-ज्ज अलैकल्-कुरआ-न

ल - राद्दु - क इला मआदिन् ७ कुरब्बी

अअ-तमु मन् जा-अ बिल्हुदा व मन् हु-व फ़ी

ज्जलालिम्-मुबीन (८५) व मा कुन्-त

तर्जू अय्युल्का इलैकल् - किताबु इल्ला

रह-म-तम्-मिरंबिब-क फ़ला तकूनन्-अहीरल्-

लिल्काफ़िरोन (८६) व ला यमुद्दुन्न-क

अन् आयातिल्लाहि बअ-द इज् उज्जिलत्

इलै-क वद्बु इला रबिब-क व ला तकूनन्-न मिनल्-मुशिरकीन ८ (८७)

व ला तद्बु म-अल्लाहि इलाहन् आख-र-ज्जला इला-ह इल्ला हु-व कुल्लु शैइन्

हालिकुन् इल्ला वज् - हहू ७ लहुल्हुवमु व इलैहि तुजअन ★ ● (८८)

وَيَكُنِ اللَّهُ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ وَيَقْدِرُ لَهُ
أَن يَمُنَ لَهُ عَلَيْهِ يَنْصَعِبُ مَا يَشَاءُ لَكُلِّ الْفِرْقَانِ
تِلْكَ الْقَدَرُ الْأَخْرَجَ لِمَنْ يَشَاءُ مِنَ الْوَحْيِ لَا يَرْيَدُونَ عُلَاقِي الْأَرْضِ
وَلَا أَسْدَادُ وَالْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِينَ
وَمَنْ جَاءَ بِالصَّحْفَةِ فَلَهُ خَيْرٌ
وَمَنْ جَاءَ بِالصَّحْفَةِ فَلَهُ خَيْرٌ
إِلَّا مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ
إِنِ الَّذِينَ قَرِضُوا عَلَيْكَ الْغُرَافَ
لَا كَلَّكَ لِي مَعَادٍ قُلْ إِنِّي أَعْلَمُ مَنْ جَاءَ بِالْهَدْيِ وَمَنْ
فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ
وَأَكَلَتْ تَرْتِجُونَ أَن يُغْنِيَنَّكَ الْكُتُبُ إِلَّا
مَعَصَا مِنْ رَبِّكَ فَلَا تَكُونَنَّ عَلَيْهِمْ لَكَ يَدٌ
عَنِ أَبِي لَهَبٍ بَعْدَ إِذْ أَنْزَلْنَا إِلَيْكَ وَادْعُ إِلَى رَبِّكَ وَلَا تَكُونَنَّ
مِنَ الْمُشْرِكِينَ
قُلْ مَنْ يَمْلِكُ إِلَّا وَجْهُهُ لَهُ الْأَمْوَالُ وَالْيَوْمِزُّ
لِلَّهِ الْغَالِبِينَ
يَسْمُو اللَّهُ الرِّجْلَيْنِ
الْوَحْيِ الْحَسْبُ النَّاسُ إِن يَشَاءُوا لَنَقُولَنَّ إِنَّمَا وَهْمٌ
يُفْتَنُونَ
وَلَقَدْ فَتَنَّا الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَلَيَعْلَمَنَّ اللَّهُ
الَّذِينَ صَدَقُوا وَلَيَعْلَمَنَّ الْكَافِرِينَ
أَمْ حَسِبَ الَّذِينَ

२६ सूरतुल-अन्कबूति ८५

(मक्की) इस सूर: में अरबी के ४४१० अक्षर, ६६० शब्द, ६६ आयतें और ७ हकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम •

अलिफ़ - लाम् - मीम् ८ (१) अ-हसिबन्नासु अय्युत्तरकू अय्यकूल

आमन्ना व हुम् ला युफ्तनून (२) व ल-कद् फ़-त-न्नल्लजी-न मिन् कबिलहिम्

फ़ ल-यअ-ल-मन्नल्लाहुल्-लजी-न स-दकू व ल-यअ-ल-मन्नल् काजिबीन (३)

मजिल ५
★ ८. ८/११ आ ७ व. लाजिम ★ ८. ८/१२ आ ६ ● ८. ३/४

कल उस के रुखे की तमन्ना करते थे, सुबह को कहने लगे, हाय शामत ! खुदा ही तो अपने बन्दों में से जिस के लिए चाहता है, रोजी फँसा देता है और (जिस के लिए चाहता है) तंग कर देता है । अगर खुदा हम पर एहसान न करता तो हमें भी धँसा देता । हाय खराबी ! काफ़िर निजात नहीं पा सकते । (८२) ★

वह (जो) आखिरत का घर (है) हमने उसे उन लोगों के लिए (तैयार) कर रखा है जो मुल्क में जुल्म और फ़साद का इरादा नहीं रखते और (नेक) अंजाम तो परहेज़गारों ही का है । (८३) जो शस्त्स लेकी ले कर आएगा, उस के लिए इस से बेहतर (बदला मौजूद) है और जो बुराई लाएगा तो जिन लोगों ने बुरे काम किए, उन को बदला भी उसी तरह का मिलेगा, जिस तरह के वे काम करते थे । (८४) (ऐ पैग़म्बर !) जिस (खुदा) ने तुम पर क़ुरआन (के हुक्मों को) फ़र्ज़ किया है, वह तुम्हें बाज़ ग़श्त^१ की जगह लौटा देगा । कह दो कि मेरा परवरदिगार उस शस्त्स को भी ख़ूब जानता है, जो हिदायत ले कर आया और (उस को भी), जो खुली गुमराही में है । (८५) और तुम्हें उम्मीद न थी कि तुम पर यह किताब नाज़िल की जाएगी, मगर तुम्हारे परवरदिगार की मेहरबानी से (नाज़िल हुई), तो तुम हरगिज़ काफ़िरों के मददगार न होना । (८६) और वे तुम्हें खुदा की आयतों (की तल्लीग) से, बाद इस के कि वह तुम पर नाज़िल हो चुकी हैं, रोक न दें और अपने परवरदिगार को पुकारते रहो और मुश्रिकों में हरगिज़ न होजियो । (८७) और खुदा के साथ किसी और को माबूद (समझ कर) न पुकारना उस के सिवा कोई माबूद नहीं । उस की जात (पाक) के सिवा हर चीज़ फ़ना होने वाली है । उसी का हुक्म है और उसी की तरफ़ तुम लौट कर जाओगे । (८८) ★●

२६ सूरः अंकबूत ८५

सूरः अंकबूत मक्की है और इस में उनहत्तर आयतें और सात रुकूअ हैं ।

शुरू खुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है ।

अलिफ़-लाम्-मीम, (१) क्या ये लोग यह ह्याल किए हुए हैं कि (सिर्फ़) यह कहने से कि हम ईमान ले आए, छोड़ दिए जाएंगे और उन की आजमाइश नहीं की जाएगी । (२) और जो लोग इन से पहले हो चुके हैं, हमने उन को भी आजमाया था (और उन को भी आजमाएंगे), सो खुदा उन को ज़रूर मालूम करेगा, जो (अपने ईमान में) सच्चे हैं और उन को भी, जो झूठे हैं । (३)

१. बाज़ ग़श्त की जगह से या तो क्रियामत मुराद है या बहिस्त ।

अम् हसिबल्लजी-न यअ-मलूनस्-सय्यिआति अय्यस्बिकूना सा-अ मा यहकुमून
(४) मन् कान-न यरजू लिक्काअल्लाहि फइन्-न अ-ज-लल्लाहि लआतिन् व
हुवस्समीअल्-अलीम (५) व मन् जाह-द फ-इन्नमा युजाहिदु लिनफिसही
इन्नल्ला-ह लगनिय्युन् अनिल् - आलमीन (६) वल्लजी - न आमन् व

अमिलुस्सालिहाति ल-नुकफिफरन-न अन्हम्
सय्यिआतिहिम् व ल-नज्जियन्नहुम् अह-स-नल्लजी
कानू यअ-मलून (७) व वस्सैनल्-इन्सान
बिवालिदैहि हुस्-नन् व इन् जाहदा-क
लितुशिर-क बी मा लै-स ल-क बिही अल्मुन्
फला तुतिअ - हुमा इलय-य मजिअकुम्
फ-उनब्बिउकुम् बिमा कुन्तुम् तअ-मलून (८)
वल्लजी-न आमन् व अमिलुस्सालिहाति ल-
नुदखिलन्नहुम् फिस्सालिहीन (९) व मिनन्नासि
मय्यकूलु आमन्ना बिल्लाहि फइज्जा
ऊजिय-य फिल्लाहि ज-अ-ल फित्ततुन्नासि
क-अज्जाबिल्लाहि व लइन् ज-अ नस्रुम्-
मिरंब्बि-क ल-यकूलुन्-न इन्ना कुन्ना म-अकुम्

अ-व लैसल्लाहु बिअअ-लम बिमा फी सुदूरिल्-आलमीन (१०) व ल-यअ-लमन्नल्
लाहुल्लजी-न आमन् व ल-यअ-ल-मन्नल्-मुनाफिकीन (११) व कालल्लजी-न
क-फरू बिल्लजी-न आमनुत्तबिअ सबीलना वल-नहू-मिल् खतायाकुम् व मा
हुम् बिहामिली-न मिन् खतायाहुम् मिन् शैइन् इन्नहुम् ल-काजिबून (१२)
व ल-यहिमलुन्-न अस्कालहुम् व अस्कालम्-म-अ अस्कालिहिम् व ल-युस्अलुन्-न
योमल्-क्रियाप्रति अम्मा कानू यफ्तरून (१३) व ल - कद् असल्ला
नूहन् इला कोमिही फ-लबि - स फीहिम् अल - फ स - नतिन् इल्ला
खम्सी-न आमन् व फ-अ-ख-ज - हुमुत्तूफानु व हुम् आलिमून (१४)

يَسْأَلُونَكَ عَنِ الَّذِينَ كَفَرُوا فَقُلْ أَسْأَلُ اللَّهَ عَنِ السَّامِعِينَ ۝ مَنْ كَانَ
يَعِزُّهُ اللَّهُ فَلَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَالْأَوَّلُ ۝ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۝
وَمَنْ جَاهِدْنَا فَإِنَّمَا يُجَاهِدُ لِنَفْسِهِ إِنَّ اللَّهَ لَغَفُورٌ رَحِيمٌ ۝
وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَنُكَفِّرَنَّ عَنْهُمْ سَيِّئَاتِهِمْ وَ
لَنُعْطِيَنَّهُمْ أَجْرَهُم بِأَحْسَنِ الَّذِي كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝ وَكَفَى الْإِنْسَانَ
بِرَأْسِهِ ۝ إِنَّهُ كَانَ لَشَكًّا ۝ وَلَنُجَاهِدَنَّ لَكَ يَوْمَ أَلَمَسْنَا لَكَ الْإِبْرَاهِيمَ ۝
فَلَا تَعْظُمْنَا إِنَّا رَبُّكُمْ فَاتَّبِعُوا مَا نَأْمُرُكُمْ ۝ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا
الصَّالِحَاتِ لَنُدْخِلَنَّهُمْ الْجَنَّاتِ ۝ وَأَوَدَىٰ فِي اللَّهِ جَعَلَ خِزْيَةً
فَافْسِدْ كُذَّابٌ لِّئَلَّا يُفْقَرُوا ۝ وَلَكِنَّ أَكْثَرَهُمْ قَوْمٌ لَا يَفْقَهُونَ ۝ إِنَّا
لَنُكَلِّمُهُمْ وَإِنَّمَا تَأْمُرُ بِمَا يَصُدُّونَ ۝ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا
الصَّالِحَاتِ لَنُدْخِلَنَّهُمُ الْجَنَّاتِ ۝ وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَنُكَفِّرَنَّ عَنْهُمْ
سَيِّئَاتِهِمْ وَلَنُعْظِيَنَّهُمْ مِنْ عَذَابِهِمْ ۝ وَمَنْ يُضْلِلِ اللَّهُ فَمَا لَهُ
مُجِيرٍ ۝ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَنُدْخِلَنَّهُمُ الْجَنَّاتِ ۝
وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَنُكَفِّرَنَّ عَنْهُمْ سَيِّئَاتِهِمْ وَلَنُعْظِيَنَّهُمْ مِنْ
عَذَابِهِمْ ۝ وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا إِلَىٰ قَوْمِهِ نَبِيًّا ۝
فَظَاهَرَهُمْ الْقَبَسُ ۝ وَكَانَ مِنْهُمْ قَوْمٌ يَكْفُرُونَ ۝

क्या वे लोग, जो बुरे काम करते हैं, यह समझे हुए हैं कि ये हमारे क़ाबू से निकल जाएंगे। जो ख्याल ये करते हैं, बुरा है। (४) जो शस्स खुदा की मुलाक़ात की उम्मीद रखता हो, तो खुदा का (मुक़रर किया हुआ) वक्त ज़रूर आने वाला है और वह सुनने वाला (और) जानने वाला है। (५) और जो शस्स मेहनत करता है, तो अपने ही फ़ायदे के लिए मेहनत करता है (और) खुदा तो सारी दुनिया से बे-परवा है। (६) और जो लोग ईमान लाए और नेक अमल करते रहे, हम उन के गुनाहों को उन से दूर कर देंगे और उन को उन के आमाल का बहुत अच्छा बदला देंगे। (७) और इंसान को अपने मां-बाप के साथ नेक सुलूक करने का हुक्म दिया है। (ऐ मुखातब !) अगर तेरे मां-बाप तेरे पीछे पड़ें कि तू मेरे साथ किसी को शरीक बनाए, जिस की हकीकत तुझे नहीं मालूम, तो उन का कहना न मानियो। तुम सब को मेरी तरफ़ लौट कर आना है। फिर जो कुछ तुम करते थे, मैं तुम को जता दूंगा। (८) और जो लोग ईमान लाए और नेक अमल करते रहे, उन को हम नेक लोगों में दाखिल करेंगे। (९) और कुछ लोग ऐसे हैं, जो कहते हैं कि हम खुदा पर ईमान लाए। जब उन को खुदा (के रास्ते) में कोई तकलीफ़ पहुंचती है, तो लोगों की तकलीफ़ को (यों) समझते हैं, जैसे खुदा का अज़ाब और अगर तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से मदद पहुंचे, तो कहते हैं कि हम तो तुम्हारे साथ थे। क्या जो दुनिया वालों के सीनों में है, खुदा उसे नहीं जानता ? (१०) और खुदा उन को ज़रूर मालूम करेगा जो (सच्चे) मोमिन हैं और मुनाफ़िकों को भी मालूम कर के रहेगा। (११) और जो काफ़िर हैं, वे मोमिनों से कहते हैं कि हमारे तरीक़े की पैरवी करो, हम तुम्हारे गुनाह उठा लेंगे, हालांकि वे उन के गुनाहों का कुछ भी बोझ उठाने वाले नहीं। कुछ शक़ नहीं कि ये झूठे हैं। (१२) और ये अपने बोझ भी उठाएंगे और अपने बोझों के साथ और (लोगों के) बोझ भी और जो बोहतान ये बांधते रहे, क्रियामत के दिन उन की उन से ज़रूर पूछ-ताछ हांगी। (१३) ★

और हमने नूह को उन की क्रौम की तरफ़ भेजा, तो वह उन में पचास वर्ष कम हजार वर्ष रहे, फिर उन को तूफ़ान (के अज़ाब) ने आ पकड़ा और वह जालिम थे। (१४) फिर हमने नूह

को और कष्टी वालों को निजात दी और कष्टी को दुनिया वालों के लिए निशानी बना दिया। (१५) और इब्राहीम को, (याद करो) जब उन्होंने ने अपनी क्रीम से कहा कि खुदा की इबादत करो और उस से डरो। अगर तुम समझ रखते हो, तो यह तुम्हारे हक में बेहतर है। (१६) तुम तो खुदा को छोड़ कर बुतों को पूजते और तूफान बांधते हो, तो जिन लोगों को तुम खुदा के सिवा पूजते हो, वे तुम को रोज़ी देने का अस्तियार नहीं रखते, पास खुदा ही के यहां से रोज़ी तलब करो और उसी की इबादत करो और उसी का शुक्र करो, उसी की तरफ़ तुम लौट कर जाओगे। (१७) और अगर तुम (मुझे) झुठलाओ तो तुम से पहले भी उम्मतें (अपने पैगम्बरों को) झुठला चुकी हैं और पैगम्बर के ज़िम्मे खोल कर मुना देने के सिवा और कुछ नहीं। (१८) क्या उन्होंने ने नहीं देखा कि खुदा किस तरह खल्कत को पहली बार पैदा करता है, फिर (किस तरह) उस को बार-बार पैदा करता रहता है, यह खुदा को आसान है। (१९) कह दो कि मुल्क में चलो-फिरो और देखो कि उस ने किस तरह खल्कत को पहली बार पैदा किया है, फिर खुदा ही पिछली पैदाइश पैदा करेगा। बेशक खुदा हर चीज़ पर कादिर है। (२०) वह जिसे चाहे अज़ाब दे और जिस पर चाहे रहम करे और उसी की तरफ़ तुम लौटाए जाओगे। (२१) और तुम (उस को) न ज़मीन में आजिज़ कर सकते हो, न आसमान में और खुदा के सिवा तुम्हारा कोई दोस्त है और न मददगार। (२२)★

और जिन लोगों ने खुदा की आयतों से और उस के मिलने से इन्कार किया, वे मेरी रहमत से ना-उम्मीद हो गये हैं और उन को दर्द देने वाला अज़ाब होगा। (२३) तो उन की क्रीम के लोग जवाब में बोले, तो यह बोले, कि उसे मार डालो या जला दो, मगर खुदा ने उन को आग (की जलन) से बचा लिया। जो लोग ईमान रखते हैं, उन के लिए उस में निशानियां हैं। (२४) और इब्राहीम ने कहा कि तुम जो खुदा को छोड़ कर बुतों को ले बैठे हो, तो दुनिया की ज़िदगी में आपसी दोस्ती के लिए, (मगर) फिर क्रियामत के दिन एक दूसरे (की दोस्ती) से इन्कार कर दोगे और एक दूसरे पर लानत भेजोगे और तुम्हारा ठिकाना दोज़ख़ होगा और कोई तुम्हारा मददगार न

होगा । (२५) पस उन पर (एक) लूट ईमान लाए और (इब्राहीम) कहने लगे कि मैं अपने परवरदिगार की तरफ हजरत करने वाला हूँ । बेशक वह शालिव हिक्मत वाला है । (२६) और हम ने उनको इस्हाक और याकूब बल्ले और उन की औलाद में पैगम्बरी और किताब (मुकर्रर) कर दी और उन को दुनिया में भी उन का बदला दिया और वे आखिरत में भी नेक लोगों में होंगे, (२७) और लूट (को याद करो,) जब उन्होंने ने अपनी क्रौम से कहा कि तुम (अजब) बे-हयाई अपनाते हो, तुम से पहले दुनिया वालों में से किसी ने ऐसा काम नहीं किया । (२८) क्या तुम (लज्जत के इरादे से) लौंडों की तरफ मायल होते और (मुसाफिरों की) लूट-मार करते हो और अपनी मज्लिसों में ना-पसन्दीदा काम करते हो, तो उन की क्रौम के लोग जवाब में बोले तो यह बोले कि अगर तुम सच्चे हो, तो हम पर अजाब ले आओ । (२९) (लूट ने) कहा कि ऐ मेरे परवरदिगार ! इन फसादी लोगों के मुकाबले में मुझे नुसरत इनायत फरमा । (३०) ★

और जब हमारे फरिश्ते इब्राहीम के पास खुशी की खबर ले कर आए, तो कहने लगे कि हम इस बस्ती के लोगों को हलाक कर देने वाले हैं कि यहां के रहने वाले ना-फरमान हैं । (३१) (इब्राहीम ने) कहा कि इस में तो लूट भी हैं । वे कहने लगे कि जो लोग (यहां) रहते हैं, हमें सब मालूम हैं । हम उन को और उन के घर वालों को बचा लेंगे, अलावा उन की बीवी के, कि वह पीछे रहने वालों में होगी । (३२) और जब हमारे फरिश्ते लूट के पास आए तो वह उन (की वजह से) ना-खुश और तंग-दिल हुए । फरिश्तों ने कहा, कुछ खौफ न कीजिए और न रंज कीजिए । हम आप को और आप के घर वालों को बचा लेंगे, मगर आप की बीवी कि पीछे रहने वालों में होगी । (३३) हम इस बस्ती के रहने वालों पर, इस वजह से कि ये बद-किरदारी करते रहे हैं,

॥ व. लाजिम ★ रु. ४/१६ आ १४

आसमान में अज़ाब नाशिल करने वाले हैं । (३४) और हमने समझने वाले लोगों के लिए इस बस्ती में एक खुली निशानी छोड़ दी । (३५) और मदयन की तरफ उनके भाई शुऐब को भेजा, तो उन्होंने कहा, ऐ कौम ! खुदा की इबादत करो और पिछले दिन (के आने) की उम्मीद रखो और मुल्क में फ़साद न मचाओ । (३६) मगर उन्होंने उनको झूठा समझा, सो उनको जलजले (के अज़ाब) ने आ पकड़ा और वे अपने घरों में औंधे पड़े रह गये । (३७) और आद और समूद को भी (हम ने हलाक कर दिया), चुनांचे उन के (वीरान) घर तुम्हारी आँखों के सामने हैं और शैतान ने उन के आमाँल उन को सजा दिए और उन को (सीधे) रास्ते से रोक दिया, हालाँकि वे देखने वाले (नोग) थे । (३८) और क़ारून और फ़िऔन और हामान को भी (हलाक कर दिया) । और उन के पास मूसा खुली निशानियाँ ले कर आए, तो वे मुल्क में घमंड करने लगे और वे (हमारे) क़ाबू से निकल जाने वाले न थे । (३९) तो हमने सब को उन के गुनाहों की वजह से पकड़ लिया, सो उन में कुछ तो ऐसे थे जिन पर हमने पत्थरों का मेह वरसाया और कुछ ऐसे थे जिन को चिंघाड़ ने आ पकड़ा और कुछ ऐसे थे, जिन को हम ने ज़मीन में धंसा दिया और कुछ ऐसे थे जिन को डुबा दिया और खुदा ऐसा न था कि उन पर जुल्म करता, लेकिन वही अपने आप पर जुल्म करते थे । (४०) जिन लोगों ने खुदा के सिवा (औरों को) कारसाज़ बना रखा है, उन की मिसाल मकड़ी की-सी है कि वह भी एक (तरह का) घर बनाती है और कुछ शक नहीं कि तमाम घरों से कमज़ोर मकड़ी का घर है ~~है~~ काश ! ये (इस बात को) जानते । (४१) ये जिस चीज़ को खुदा के सिवा पुकारते हैं (चाहे वह कुछ ही हो, खुदा उसे जानता है और वह ग़ालिब (और) हिक्मत वाला है । (४२) और ये मिसालें हम लोगों के (समझाने के) लिए बयान करते हैं और इसे तो इल्म वाले ही समझते हैं । (४३) खुदा ने आसमानों और ज़मीन को हिक्मत के साथ पैदा किया है । कुछ शक नहीं कि ईमान वालों के लिए इस में निशानी है । (४४) ★

इक्कीसवां पारः उत्तु मा ऊहि-य

सूरतुल-अनकबूति आयात ४५ से ६६

उत्तु मा ऊहि-य इलै-क मिनल्किताबि व अक्मिस्सला-तु ७ इन्स्सला-तु
तन्हा अनिल् - फ़हशा-इ वल्मुन्करि ७ व ल-जिकरुल्लाहि अवबर ७ वल्लाहु
यअ-लमु मा तस्-नअून (४५) व ला तुजादिल् अहलल्किताबि इल्ला बिल्लती
हि-य अह्सनु ७ इल्लल्लजी-न अ-लमु मिन्हुम् व कूल आमन्ना बिल्लजी

उन्जि-ल इलैना व उन्जि-ल इलैकुम् व
इलाहुना व इलाहुकुम् वाहिदु व-व नहनु लह
मुस्लिमून (४६) व कजालि-क अन्जल्ला
इलैकल्-किता-ब ७ फ़ल्लजी - न आतेनाहुमुल्-
किता - ब युअ्मिन् - न बिही ७ व मिन्
हाउलाइ मय्युअ्मिनु बिही ७ व मा
यज्हुदु बिआयातिना इल्लल् - काफिरून
(४७) व मा कुन्-त तल्लू मिन् कविलही
मिन् किताबि-व ला तखुतुह बिद्यमीनि-क
इजल्-लर-ताबल्-मुवित्लून (४८) बल् हु-व
आयातुम् - बय्यिनातुन् फ़ी सुदूरिल्लजी-न
अतुलअिल-म ७ व मा यज्हुदु बिआयातिना
इल्लअजालिमून (४९) व कालू लौला

أَتْلُ مَا أُوحِيَ إِلَيْكَ مِنَ الْكِتَابِ وَأَقِمِ الصَّلَاةَ إِنَّ الصَّلَاةَ
تَنْهَى عَنِ الْفَحْشَاءِ وَالْمُنْكَرِ وَلَذِكْرُ اللَّهِ أَكْبَرُ وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا
تَصْنَعُونَ ۝ وَلَا تَجْأُولُوا أَعْلَ الْكِتَابِ إِلَّا إِلَهُنَّ مِنَ آمَنَ
الَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْهُمْ وَوَقُولُوا آمَنَّا بِالَّذِي أُنْزِلَ إِلَيْنَا وَإِلَى
إِلَهِكُمْ وَالْهَذَا إِلَهُكُمْ وَإِلَهُكُمْ وَاحِدٌ لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُولَدْ
لَكُمْ إِلَهُكُمْ إِلَهُكُمْ ۝ فَالَّذِينَ لَا يَرْجُونَ عَذَابَ اللَّهِ
وَمِنْ هَؤُلَاءِ مَنْ يُؤْمِنُ بِهِ وَمَا يَجْحَدُ بِالْحَقِّ إِلَّا الْكَافِرُونَ ۝
وَمَا كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ مِنْ قَبْلِهِ مِنْ كَيْفٍ وَلَا عِظَمَ بِعَيْنِكَ إِذَا
كَرِهَ الْمُسْلِمُونَ ۝ كُلُّ هَؤُلَاءِ يَكْفُورُ فِي صُدُورِهِمْ
أَوْفُوا الْعَهْدَ وَمَا يَجْحَدُ بِالْحَقِّ إِلَّا الظَّالِمُونَ ۝ وَقَالُوا لَوْلَا
أُنْزِلَ عَلَيْهِ آيَاتٌ مِنْ رَبِّهِ قُلْ إِنَّمَا الْآيَاتُ عِنْدَ اللَّهِ وَإِنَّمَا
أَنَا نَذِيرٌ مُبِينٌ ۝ أَوْ لَوْ يَكْفُورُ كَيْفَ أَتَزَلُّ عَلَيْكَ الْأَعْيُنُ
عَلَيْهِمْ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَرَحْمَةً وَذِكْرًا لِقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ۝
قُلْ كُلُّ لِلَّهِ يُبَيِّنُ وَبِعَهْدِهِمْ نَبِيًّا ۝ يَعْلَمُونَ فِي الشَّعْبِ
وَالْأَرْضِ وَالَّذِينَ آمَنُوا بِالْبَاطِلِ وَكَفَرُوا بِاللَّهِ أُولَئِكَ
الْفٰرِقُونَ ۝ وَيَتَحَدَّثُونَ بِالْعَذَابِ وَلَوْ أَنَّهُمْ فُهِقُوا
بِحَبْلٍ مِنَ الْعَذَابِ وَلَئِذَا يَسْتَمِعُونَ فَتَنًا وَلَهُمْ لَاسْمَعُونَ ۝

उन्जि - ल अलैहि आयातुम् - मिरिबिही ७ कुल् इन्मल् - आयातु
अिन्दल्लाहि ७ व इन्मा अन नजीरुम् - सुबीन (५०) अ - व लम्
यक-फ़िहिम् अन्ना अन्जल्ला अलैकल्-किता-ब युल्ला अलैहिम् ७ इन्-न फ़ी
जालि-क ल-रह-म-तु-व-व जिकरा लिक्कौमिधुअ्मिन्न (५१) कुल् कफा
बिल्लाहि बैनी व बैनकुम् शहीदु ७ यअ-लमु मा फ़िस्समावाति वल्अजि
वल्लजी - न आमनू बिल्बातिलि व क - फ़रु बिल्लाहि ७ उलाइ - क
हुमुल्लासिरुन् (५२) व यस्तअ-जिलून-क बिल्अजाबि ७ व लौला अ-ज-लुम्-
मुसम्मल्-लजा-अ-हुमुल्-अजाबु व ल-यअति-यन्नहुम् बरत-तु-व-व हुम् ला यशरुन् (५३)

(ऐ मुहम्मद !) यह किताब जो तुम्हारी तरफ बह्य की गयी है, उस को पढ़ा करो और नमाज के पाबन्द रहो । कुछ शक नहीं कि नमाज बेहयाई और भुरी बातों से रोकती है और खुदा का जिक्र बड़ा (अच्छा काम) है और जो कुछ तुम करते हो, खुदा उसे जानता है । (४५) और अहले किताब से अगड़ा न करो, मगर ऐसे तरीके से, कि निहायत अच्छा हो, हां जो उन में से बे-इसाफी करें, (उन के साथ इसी तरह अगड़ा करो) और कह दो कि जो (किताब) हम पर उतरी और जो (किताबें) तुम पर उतरीं, हम सब पर ईमान रखते हैं और हमारा और तुम्हारा माबूद एक ही है और हम उसी के फरमांबरदार हैं । (४६) और इसी तरह हम ने तुम्हारी तरफ किताब उतारी है, तो जिन लोगों को हम ने किताबें दी थीं, वे उस पर ईमान ले आते हैं और कुछ उन (मुश्रिक) लोगों में से भी इस पर ईमान ले आते हैं और हमारी आयतों से वही इन्कार करते हैं जो काफिर (शुरू ही से) हैं । (४७) और तुम इस से पहले कोई किताब नहीं पढ़ते थे और न उसे अपने हाथ से लिख ही सकते थे, ऐसा होता तो बातिल वाले जरूर शक करते । (४८) बल्कि ये रोशन आयतें हैं । जिन लोगों को इल्म दिया गया है, उन के सीनों में (महफूज) और हमारी आयतों से वही लोग इन्कार करते हैं, जो बे-इन्साफ हैं । (४९) और (काफिर) कहते हैं कि इस पर उस के परवरदिगार की तरफ से निशानियां क्यों नाज़िल नहीं हुयीं । कह दो कि निशानियां तो खुदा ही के पास हैं और मैं तो खुल्लम-खुल्ला हिदायत करने वाला हूं । (५०) क्या इन लोगों के लिए यह काफ़ी नहीं कि हम ने तुम पर किताब नाज़िल की जो उन को पढ़ कर सुनायी जाती है । कुछ शक नहीं कि मोमिन लोगों के लिए इस में रहमत और नसीहत है । (५१) ★

कह दो कि मेरे और तुम्हारे दर्मियान खुदा ही गवाह काफ़ी है । जो चीज आसमानों में और जमीन में है, वह सब को जानता है और जिन लोगों ने बातिल को माना और खुदा से इन्कार किया, वही नुकसान उठाने वाले हैं । (५२) और ये लोग तुम से अज़ाब के लिए जल्दी कर रहे हैं । अगर एक वक्त मुकर्रर न (हो चुका) होता तो उन पर अज़ाब आ भी गया होता और वह (किसी वक्त में) उन पर जरूर आ कर रहेगा और उन को मालूम भी न होगा । (५३) ये तुम से अज़ाब के

यस्तअ-जिलून-क बिल्अजाबि व इन्-न ज-हन्न-म लमुही-त-तुम्-बिल्काफिरीन
(५४) यो-म यगशाहुमुल्-अजाबु मिन् फौकिहिम् व मिन् तहित अरजुलिहिम्
व यकूलु जूकू मा कुन्तुम् तअ-मलून (५५) याअिबादि-यल्-लजी-न आमन्
इन्-न अर-जी वासि-अ-तुन् फइय्या-य फअ-बुदून (५६) कुल्लु नफिसन्

जाइकतुलमोति सुम् - म इलेना
तुर्जअन (५७) वल्लजी-न आमन् व
अमिलुस्सालिहाति लनुबवि-अन्नहुम् मिनल्जनति
गु-र-फन् तजरी मिन् तहितहल् - अन्हार
खालिदी - न फ्रीहा निअ - म अजरुल् -
अमिलीन (५८) अल्लजी - न
स-बरू व अला रब्बिहिम् य-त-वकलून (५९)
व-क-अय्यिम् - मिन् दाब्बतिल्ला तहिमलु
रिज् - कहा अल्लाहु यरजुकुहा व
इय्याकुम् व हुवस्समीअल् -
अलीम (६०) व ल-इन् स-अल्लतहुम् मन्
ख-ल-कस्समावाति वल्-अर-ज़ व सल्ल-रशशम्-स
वल्क-म-र ल - यकूलुन्ल्लाहु फ - अन्ना

يَسْخَرُونَكَ مِنَ الْعَذَابِ وَإِنَّ جَهَنَّمَ لَمُحِيطَةٌ بِالْكَافِرِينَ
وَمَنْ يَصْنَعْ لَهُ الْعَذَابَ مِنْ تَوَقُّعِهِمْ وَمَنْ يَحِبُّ أَنْ يَكُونَ مِنْهُمْ
فَأُولَئِكَ يَكُونُونَ مِنَ الْمُنْكَرِينَ ۝ وَيَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّا فَعَلْنَا
لَكُمْ آيَةً إِذْ أَخْرَجْنَا مِنَ الْمَدِينَةِ الْقَوْمَ الَّذِينَ ظَلَمُوا فِيكُمْ وَهُمْ لَا يَسْمَعُونَ
لَكُمْ كَلِمَةً وَلَا يَذْكُرُونَ آيَاتِنَا وَلَكِنْ نَسُوا اللَّهَ فَرَسُوا خَلْقًا فَبَدَّلَ الْوَعْدَ
وَأُولَئِكَ يَكُونُونَ مِنَ الْمُنْكَرِينَ ۝ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَنُكَفِّرَنَّ عَنْهُمْ
سَيِّئَاتِهِمْ وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ أَجْرَهُمْ بِأَحْسَنِ مِنْ ذَلِكَ ۝ وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَنُكَفِّرَنَّ عَنْهُمْ
سَيِّئَاتِهِمْ وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ أَجْرَهُمْ بِأَشَدِّ مِنْ ذَلِكَ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ وَالَّذِينَ
آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَنُدْخِلَنَّهُمْ الْجَنَّاتِ وَأَنفُسُهُمْ فِيهَا خَالِدِينَ ۝ وَالَّذِينَ
آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَنُكَفِّرَنَّ عَنْهُمْ سَيِّئَاتِهِمْ وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ أَجْرَهُمْ بِأَحْسَنِ
مِنْ ذَلِكَ وَلَهُمْ فِيهَا زَوْجٌ مِمَّا يَشَاءُونَ ۝ وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَلَمْ يُؤْمَرُوا
بِالْحَدِيثِ لَنُكَفِّرَنَّ عَنْهُمْ سَيِّئَاتِهِمْ وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ أَجْرَهُمْ بِأَشَدِّ مِنْ ذَلِكَ
وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَنُدْخِلَنَّهُمْ الْجَنَّاتِ
وَأَنفُسُهُمْ فِيهَا خَالِدِينَ ۝ وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَلَمْ يُؤْمَرُوا بِالْحَدِيثِ لَنُكَفِّرَنَّ
عَنْهُمْ سَيِّئَاتِهِمْ وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ أَجْرَهُمْ بِأَشَدِّ مِنْ ذَلِكَ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝

युअ-फकून (६१) अल्लाहु यन्सुतुरिज्-क लिमय्यशाउ मिन् अिबादिही व यकिदर
लह इन्ल्ला-ह बिकुल्लि शेइन् अलीम (६२) व ल-इन् स-अल्लतहुम्
मन् नज्ज-ल मिनस्समाइ मा-अन् फ-अह्या बिहिल्अर-ज़ मिम्बअ-दि मोतिहा
ल-यकूलुन्ल्लाहु कुलिल्हम्दु लिल्लाहि बल् अक्सरुहुम् ला यअ - किलून
(६३) व मा हाजिहिल् - हयातुददुन्या इल्ला लह - वु-व-व लअिबुल
व इन्नद्दारल्-आखि-र-त लहि-यल्-ह-य-वानु लो कानू यअ-लमून (६४)
फइया रकिबू फिलफुत्कि द-अ - वुल्ला - ह मुख्लिसी - न लहुददी - न
फ - लम्मा नज्जाहुम् इलल्बर् इजा हुम् युशिरकून (६५)
लि-यकफुक बिमा आतेनाहुम् व लि-य-त-मत्तअ-फसो-फ यअ-लमून (६६)

लिए जल्दी कर रहे हैं और दोजल तो काफ़िरों को घेर लेने वाली है। (५४) जिस दिन अज्ञान उन को उन के ऊपर से नीचे ढांक लेगा और (खुदा) फ़रमाएगा कि जो काम तुम किया करते थे, (अब) उन का मज़ा चखो। (५५) ऐ मेरे बन्दो ! जो ईमान लाए हो, मेरी ज़मीन फँली हुई है, तो मेरी ही इबादत करो। (५६) हर नफ़स मौत का मज़ा चखने वाला है, फिर तुम हमारी ही तरफ़ लौट कर आओगे। (५७) और जो लोग ईमान लाए और नेक अमल करते रहे, उन को हम बहिश्त के ऊँचे-ऊँचे महलों में जगह देंगे, जिन के नीचे नहरें बह रही हैं। हमेशा उन में रहेंगे। (नेक) अमल करने वालों का (यह) ख़ूब बदला है, (५८) जो सन्न करते और अपने परवरदिगार पर भरोसा रखते हैं। (५९) और बहुत से जानवर हैं, जो अपनी रोज़ी उठाए नहीं फिरते। खुदा ही उन को रोज़ी देता है और तुम को भी और वह सुनने वाला (और) जानने वाला है। (६०) और अगर उन से पूछो कि आसमानों और ज़मीन को किस ने पैदा किया और सूरज और चांद को किस ने (तुम्हारे) हुक्म के ताबेअ किया, तो कह देंगे, ख़दा ने, तो फिर ये कहाँ उल्टे जा रहे हैं ? (६१) खुदा ही अपने बन्दों में से जिस के लिए चाहता है रोज़ी फैला देता है और जिस के लिए चाहता है, तंग कर देता है। बेशक़ खुदा हर चीज़ को जानता है। (६२) और अगर तुम उन से पूछो कि आसमान से पानी किस ने बरसाया, फिर उस से ज़मीन को उस के मरने के बाद (किस ने) ज़िंदा किया, तो कह देंगे कि खुदा ने। कह दो कि खुदा का शुक्र है, लेकिन इन में अक्सर नहीं समझते। (६३) ★

और यह दुनिया की ज़िंदगी तो सिर्फ़ खेल और तमाशा है और (हमेशा की) ज़िंदगी की (जगह) तो आख़िरत का घर है। काश ये (लोग) समझते ! (६४) फिर जब ये क़शती में सवार होते हैं तो खुदा को पुकारते (और) ख़ालिस उसी की इबादत करते हैं, लेकिन जब ज़ह उन को निजात देकर खुशकी पर पहुंचा देता है, तो श्रुति शिकं करने लग जाते हैं। (६५) तबकि जो हम ने उन को बरखा है, उस की ना-शुकी करें और फ़ायदा उठाएं, (तो ख़ैर), बहुत जल्द उन को मालूम

हो जाएगा। (६६) क्या उन्होंने ने नहीं देखा कि हम ने हरम को अमन की जगह बनाया है, और लोग उन के गिर्द ब नवाह (पास के इलाक़े) से उचक लिए जाते हैं। क्या ये लोग बातिल पर एतकाद रखते हैं और खुदा की नेमतों की ना-शुकी करते हैं। (६७) और उस से जालिम कौन, जो खुदा पर मूठ बोहतान बांधे या जब हक़ वात उस के पास आए तो उसे झुठलाए? क्या काफ़िरों का ठिकाना जहन्नम में नहीं है? (६८) और जिन लोगों ने हमारे लिए कौशिश की, हम उन को जरूर अपने रास्ते दिखा देंगे और खुदा ती नेकों के साथ है। (६९) ★

३० सूर: रूम ८४

सूर: रूम मक्की है और इस में साठ आयतें और छः रुकूअ हैं।

शुरू खुदा का नाम लेकर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत करम वाला है।

अलिफ़-लाम-मीम्, (१) रूम (वाले) मसलूब हो गए, (२) नज़दीक के मुल्क में और वे मसलूब होने के बाद बहुत जल्द ग़ालिब आ जाएंगे, (३) कुछ ही साल में, पहले भी और अब पीछे भी खुदा ही का हुक्म है और उस दिन मोमिन खुश हो जाएंगे। (४) (यानी) खुदा की मदद से, वह जिसे चाहता है, मदद देता है और वह ग़ालिब (और) मेहरबान है। (५) (यह) खुदा का वायदा (है)। खुदा अपने वायदे के खिलाफ़ नहीं करता, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते। (६) ये तो दुनिया की ज़ाहिरी ज़िदगी को जानते हैं और आखिरत (की तरफ़) से ग़ाफ़िल हैं। (७) क्या इन्होंने अपने दिल में गौर नहीं किया कि खुदा ने आसमानों और ज़मीन को और जो कुछ इन दोनों के दमियान है, उन को हिवमत से और एक मुकर्रर वक़्त तक के लिए पैदा किया है और बहुत-से-लोग अपने परवरदिगार से मिलने के कायल ही नहीं। (८) क्या इन लोगों ने मुल्क में सैर नहीं की, (सैर करते) तो देख लेते कि जो लोग इन से पहले थे, उन का अंजाम कैसा हुआ। वे इन से जोर व ताक़त में कहीं ज्यादा थे और उन्होंने ज़मीन को जोता और उस को इस से ज्यादा आबाद किया था, जो इन्होंने आबाद किया और उन के पास उन के पैग़म्बर निशानियाँ ले कर आते रहे, तो खुदा ऐसा न था कि उन पर जुल्म करता, बल्कि अपने आप पर जुल्म करते थे। (९) फिर जिन लोगों ने बुराई की,

१. इन वायतों में रूमियों के ग़ालिब होने की पेशीनगोई की, जो वाक़ेअ आ चुकी। वाक़िया यह हुआ कि रूम और फ़ारस वालों में जंग हो गयी और फ़ारस वाले ग़ालिब आए। चूँकि रूमी अहले किताब यानी नसारा थे और फ़ारस वाले मुश्रिक, इस लिए कि मक्का के मुश्रिक मोमिनों से कहते थे कि जिस तरह फ़ारस वाले जो हमारी तरह मुश्रिक हैं रूमियों पर, जो तुम्हारी तरह अहले किताब हैं, ग़ालिब हो गये हैं, इसी तरह जब हम में तुम में जंग होगी तो हम भी तुम पर ग़ालिब होंगे। कुफ़्रार की इस बात से मोमिनों को रंज हुआ, तब ये आयतें नाज़िल हुयीं। इन में कुछ साल में रूमियों के ग़ालिब हो जाने की ख़बर दी गयी थी और वह बिल्कुल सही निकली। आयत में 'बिज-अ सिनीन' का लफ़्ज़ आया है 'बिज-अ' कहते हैं, तीन नवेंसे तक को। सातवें साल फिर रूम और फ़ारस में लड़ाई हुई तो रूमी फ़ारस वालों पर ग़ालिब आए। अल्लाह तआला की क़ुदरत को देखिए कि इधर बढ़ की लड़ाई में मुसलमान मक्के के काफ़िरों पर ग़ालिब आए, इस से मुसलमानों को दोहरी खुशी हुई, क्योंकि खुदा का वायदा सच्चा निकला और वह 'अय्यदुस्तुदिक्कीन' जो वायदा करता है, उस को सब कर दिखाता है।

सुम्-म कान आक्रिबतुल्लजी-न असाउस्सू-आ अन् कज्जबू बिआयातिल्लाहि व
 कानू बिहा यस्तह-जिऊन ★ (१०) अल्लाहु यवदउल्लल्-क सुम्-म युजीदुह
 सुम्-म इलैहि तुर्जअन (११) व यौ-म तकूमस्साअतु युल्लिसुल्-मुजिरमून (१२)
 व सम् यकुल्लहुम् मिन् शुरका-इहिम् शु-फ़ाउ व कानू बिशु-र-काइहिम्
 काफ़िरीन (१३) व यौ-म तकूमस्साअतु
 यौमइजिय-त-फ़रंकून (१४) फ़-अम्मल्लजी-न
 आमनू व अमिलुस्-सालिहाति फ़हुम् फ़ी
 रोज़ातियुह-बरून (१५) व अम्मल्लजी-न
 क-फ़रू व कज्जबू बिआयातिना व लिक्का-इल्-
 आखिरति फ़-उलाइ - क फ़िल्-अजाबि
 मुहज़रून (१६) फ़-सुब्हानल्लाहि ही-न
 तुस्सू-न व ही-न तुस्बहून (१७) व
 लहुल्-हम्दु फ़िस्समावाति वल्-अज्जि व अशिय्य-व-व
 ही-न तुडिहूरून (१८) युल्लिरजुल्-हय-य
 मिनल् - मय्यिति व युल्लिरजुल् - मय्यि-त
 मिनल्-हय्यि व युह्यिल्-अर्-ज्ज बअ - द
 मौतिहा ७ व कजालि - क तुख़रजून

عَمْرُوهُمَا وَجَاءَتْهُمْ رُسُلُهُم بِالْبَيِّنَاتِ لَمَّا كَانُوا فِي غَمٍّ مُّبِينٍ ۝ وَلَكِنْ
 كَانُوا أَتَسْمَعُونَ ۝ ثُمَّ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ اسَاءُوا السُّوءَ أَنِ
 لَدُنْهُمْ رَآيَاتٌ مِّنَ النَّوْءِ وَكَانُوا يُعْذِرُونَ ۝ اللَّهُ يَسْمَعُ الْخُفْيَاتِ ثُمَّ
 يُبَيِّنُهَا لَئَلَّيْكَ يَرْجِعُونَ ۝ وَيَوْمَ نَقُومُ السَّاعَةَ يُبَيِّنُ لِلْجَافِرِينَ
 وَلَئِنْ لَّمْ يَكُنْ لَهُمْ مِنَ اللَّهِ عِلْمٌ فَذُوقُوا الْعَذَابَ بِمَا كَانُوا يُفْرِين ۝
 وَيَوْمَ نَقُومُ السَّاعَةَ يُبَيِّنُ لِمَنْ يَشَاءُ ۝ وَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَتَلُوا
 الظُّلُمَاتِ فَهَمُومٌ ۝ رُفُوعٌ يُخْبِرُونَ ۝ وَأَمَّا الَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا
 بِآيَاتِنَا وَلِقَاءِ الْآخِرَةِ فَأُولَئِكَ فِي الْعَذَابِ مُخَصَّرُونَ ۝ فَبُئْسَ
 اللَّهُ جُنُودُهُ لِمَنْ يَشَاءُ ۝ وَجِبْنَ الْمُغْلِبِينَ ۝ وَلَهُ الْحُكْمُ فِي السَّمَوَاتِ وَ
 الْأَرْضِ ۝ وَعِندَهُ أَوْبَاقُ الْمُظْهِرِينَ ۝ يُخْرِجُ الْغَمَّ الْغَمِّ مِنَ السَّحَابِ وَ
 يُخْرِجُ السَّحَابَ مِنَ السَّمَاءِ وَيُصْهِرُ الْأَرْضَ بِمَدَامِهَا ۝ وَكَذَلِكَ
 نُخْرِجُكُمْ مِنَ الْأَرْضِ وَلَكُمْ لُجُجٌ مِّنَ الْأَرْضِ ۝ ثُمَّ تَوَلَّيْتُمُ
 مُدْبِرِينَ ۝ وَمِنْ آيَاتِهِ أَن يَخْلُقَ لَكُمْ مِّنْ تُرَابٍ نَّفْسًا ۝ وَتَوَلَّيْتُمُ
 الْبَاطِلَ وَجَعَلَ بَيْنَكُمْ مَوَدَّةً وَرَحْمَةً ۝ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ
 يَعْقِلُونَ ۝ وَمِنْ آيَاتِهِ خَلْقُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَاجْتِصَاتُ
 السَّجَدِ ۝ وَالْأَوَّلُ ۝ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّلْعَالَمِينَ ۝ وَمِنْ آيَاتِهِ
 مَنَاقِلُ الْبَاقِلِ وَالْقَتَارِ ۝ وَالْبَاقِلُ يَتَغَيَّبُ ۝ إِنَّ فِي ذَلِكَ

★ (१९) व मिन् आयातिही अन् ख-ल-ककुम् मिन् तुराबिन् सुम्-म इज्ज
 अन्तुम् ब-शरुन् तन्तशिरून (२०) व मिन् आयातिही अन् ख-ल-क लकुम्
 मिन् अन्फुसिकुम् अज्-वाजल्-लितस्कुन् इलैहा व ज-अ-ल बंनकुम् म-वद्-द-त-व-व
 रह-म-तन् ७ इन्-न फ़ी जालि-क लआयातिल् - लिक्कौमिय-त-फ़क्करून (२१)
 व मिन् आयातिही खल्कुस्समावाति वल्-अज्जि वख-तिलाफ़ु अल-सिनसिकुम्
 व अल्वानिकुम् ७ इन-न फ़ी जालि-क लआयातिल् - लिल्-आलमीन (२२)
 व मिन् आयातिही मनामुकुम् बिल्लैलि वन्नहारि वब - तिंशाउकुम् मिन्
 फ़जिलही ७ इन्-न फ़ी जालि-क लआयातिल् - लिक्कौमिय-त-मजून (२३)

उन का अंजाम भी बुरा हुआ, इसलिए कि खुदा की आयतों को झुठलाते और उन की हंसी उड़ाते रहे थे। (१०) ★

खुदा ही खलकत को पहली बार पैदा करता है, वही उस को फिर पैदा करेगा, फिर तुम उसी की तरफ लौट जाओगे। (११) और जिस दिन कियामत बरपा होगी, गुनाहगार ना-उम्मीद हो जायेंगे। (१२) और उन के (बनाए हुए) शरीकों में से कोई उन का सिफ़ारिश न होगा और वे अपने शरीकों से इन्कारी हो जायेंगे। (१३) और जिस दिन कियामत बरपा होगी, उस दिन वे अलग-अलग फ़िर्कें हो जायेंगे। (१४) तो जो लोग ईमान लाए और नेक अमल करते रहे, वे (बहिश्त के) बाग़ में खुशहाल होंगे। (१५) और जिन्होंने ने कुफ़्र किया और हमारी आयतों और आखिरत के आने को झुठलाया, वे अज़ाब में डाले जायेंगे। (१६) तो जिस वक़्त तुम को शाम हो और जिस वक़्त सुबह हो, खुदा की तस्बीह करो, (यानी नमाज़ पढ़ो), (१७) और आसमानों और ज़मीन में उसी की तारीफ़ है और तीसरे पहर भी और जब दोपहर हो, (उस वक़्त भी नमाज़ पढ़ा करो), (१८) वही जिन्दा को मुर्दे से निकालता और (वही) मुर्दे को जिन्दा से निकालता है और (वही) ज़मीन को उस के मरने के बाद जिन्दा करता है और इसी तरह तुम (दोबारा ज़मीन में से) निकाले जाओगे। (१९) ★

और उसी की निशानियों (और तसहफ़ात) में से है कि उस ने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया। फिर अब तुम इन्सान हो कर जगह-जगह फैल रहे हो। (२०) और उसी की निशानियों (और तसहफ़ात) में से है कि उस ने तुम्हारे लिए तुम्हारी ही जिन्स की औरतें पैदा कीं, ताकि उन की तरफ़ (मायल हो कर) आराम हासिल करो और तुम में मुहब्बत और मेहरबानी पैदा कर दी। जो लोग शीर करते हैं, उन के लिए इन बातों में (बहुत-सी) निशानियां हैं। (२१) और उसी की निशानियों (और तसहफ़ात) में से है आसमानों और ज़मीन का पैदा करना और तुम्हारी जुबानों और रंगों का जुदा-जुदा होना, अक्ल वालों के लिए इन बातों में (बहुत सी) निशानियां हैं। (२२) और उसी की निशानियों (और तसहफ़ात) में से है तुम्हारा रात और दिन में सोना और उस के फ़ज़ल का तलाश करना, जो लोग सुनते हैं उन के लिए इन (बातों) में (बहुत-सी) निशानियां हैं। (२३) और उसी

की निशानियों (और तसहफ़ात) में से है कि तुम को सौक और उम्मीद दिलाने के लिए बिजली दिखाता है और आसमान से मेह बरसाता है, फिर ज़मीन को उस के मर जाने के बाद ज़िंदा (बहरा-भरा) कर देता है। अक़ल वालों के लिए इन (बातों) में बहुत-सी निशानियाँ हैं। (२४) और उसी की निशानियों (और तसहफ़ात) में से है कि आसमान और ज़मीन उस के हुक्म से कायम हैं। फिर जब वह तुम को ज़मीन में से (निकालने के लिए) आवाज़ देगा, तो तुम श्रुत निकल पड़ोगे। (२५) और आसमानों और ज़मीन में जितने (फ़रिश्ते और इन्सान वगैरह) हैं, उसी के (मम्लूक) हैं (और) तमाम उस के फ़रमाबंददार हैं। (२६) और वही तो है जो ख़ल्क़त को पहली बार पैदा करता है, फिर उसे दोबारा पैदा करेगा और यह उस को बहुत आसान है और आसमानों और ज़मीन में उस की ख़ान बहुत बुलंद है और वह ग़ालिब हिक़मत वाला है। (२७) ★ ●

वह तुम्हारे लिए तुम्हारे ही हाल की एक मिसाल बयान फ़रमाता है कि भला जिन (लौंडी-गुलामों) के तुम मालिक हो, वह उस (माल) में जो हम ने तुम को अता फ़रमाया है, तुम्हारे शरीक हैं? और (क्या) तुम उस में (उन को अपने) बराबर (मालिक) समझते हो (और क्या) तुम उन से इस तरह डरते हो, जिस तरह अपनों से डरते हो? इस तरह हम अक़ल वालों के लिए अपनी आयतें खोल-खोल कर बयान करते हैं, (२८) मगर जो जातिम हैं, बे-समझ अपनी स्वाहिशों के पीछे चलते हैं, तो जिस को खुदा गुमराह करे, उसे कौन हिदायत कर सकता है? और उन का कोई मददगार नहीं। (२९) तो तुम एक तरफ़ के हो कर दीन (खुदा के रास्ते) पर सीधा मुंह किए चले जाओ (और) खुदा की फ़ितरत को, जिस पर उस ने लोगों को पैदा किया है, (अख़्तियार किए रहो)।^१ खुदा की बनायी हुई (फ़ितरत) में तब्दीली नहीं हो सकती। वही सीधा दीन है, लेकिन बक्सर लोग नहीं जानते। (३०) (मोमिनो!) उसी (खुदा) की तरफ़ रुजूअ किए रहो और उस से डरते रहो और नमाज़ पढ़ते रहो और मुश्रिकों में न होना। (३१) (और न) उन लोगों में होना, जिन्होंने अपने दीन को टुकड़े-टुकड़े कर दिया और (खुद) फ़िक्क-फ़िक्क हो गये। सब फ़िक्क उसी से खुश हैं, जो उन के पास है। (३२) और जब लोगों को तक्लीफ़ पहुंचती है तो अपने परवरदिगार को पुकारते और उसी की तरफ़ रुजूअ होते हैं। फिर जब-जब वह उन को अपनी रहमत का मज़ा चखाता है, तो एक फ़िक्का उन में से अपने परवरदिगार से शिकं करने लगता

१. फ़ितरत से मुराद अल्लाह तआला की तौहीद है यानी उस को एक-एक कर के समझना और उस के साथ किसी को शरीक न बनाना, यह तौहीद ही खुदा का दीन है और इसी तौहीद को खुदा ने इन्सान की फ़ितरत में दाख़िल किया है। अगर किसी शख्स को पैदा होते ही उस की हालत पर छोड़ दिया जाए और शिकं करने वाले उस के दिल में मुश्रिकाना ख़्यालात न डालें, तो वह कभी शिकं नहीं करेगा। वह तौहीद पर पैदा हुआ है। न यहूदी होगा, न ईसाई, न आग का पुजारी, न सूरज का पुजारी, न बुतों का पुजारी, बल्कि ख़ालिस तौहीद परस्त होगा और तौहीद के सिवा कुछ न जानेगा। बूक़ तौहीद खुदा की तरफ़ से इन्सान की फ़ितरत में दाख़िल की गयी है, इस लिए उस को अल्लाह की फ़ितरत से ताबीर फ़रमाया है और हुक्म दिया है कि तौहीद को, जो अल्लाह तआला का सीधा दीन है, अख़्तियार किये रहो, इस में हरगिज़ तब्दीली न होने पाए।

है, (३३) ताकि जो हम ने उस को बरसा है उस की ना-शुकी करें, सो (खैर) फायदे उठा लो। बहुत जल्द तुम को (इस का अंजाम) मालूम हो जाएगा। (३४) क्या हम ने उन पर कोई ऐसी दलील उतारी है कि उन को खुदा के साथ शिकं करना बताती है। (३५) और जब हम लोगों को अपनी रहमत का मजा चखाते हैं, तो उस से खुश हो जाते हैं और अगर उन के अमलों की वजह से जो उन के हाथों ने आग भेजे हैं, कोई तक्लीफ पहुंचे, तो ना-उम्मीद हो कर रह जाते हैं। (३६) क्या उन्होंने ने नहीं देखा कि खुदा ही जिस के लिए चाहता है, रोजी फैला देता है और (जिस के लिए चाहता है) तंग करता है। बेशक इस में ईमान लाने वालों के लिए निशानियां हैं। (३७) तो रिश्तेदारों और मुहताजों और मुसाफ़िरों को उन का हक देते रहो। जो लोग खुदा की खुशनुदी की तलब में हैं, यह उन के हक में बेहतर है और यही लोग निजात हासिल करने वाले हैं। (३८) और जो तुम सूद देते हो कि लोगों के माल में बढ़ती हो, तो खुदा के नज़दीक उस में बढ़ती नहीं होती और जो तुम ज़कात देते हो और उस से खुदा की रज़ामंदी तलब करते हो, तो (वह बरकत की वजह है, और) ऐसे ही लोग (अपने माल को) दो-गुना तीन-गुना करने वाले हैं। (३९) खुदा ही तो है, जिस ने तुम को पैदा किया, फिर तुम को रोज़ी दी, फिर तुम्हें मारेगा, फिर ज़िदा करेगा। भला तुम्हारे (बनाए हुए) शरीकों में भी कोई ऐसा है जो इन कामों में से कुछ कर सके। वह पाक है और (उस की शान) उन के शरीकों से बुलंद है। (४०) ★

खुशकी और तरी में लोगों के आमाल की वजह से फ़साद फैल गया है, ताकि खुदा उन को उनके कुछ आमाल का मजा चखाये, अजब नहीं कि वे रुक जाएं। (४१) कह दो कि मुल्क में चलो-फिरो और देखो कि जो लोग (तुम से) पहले हुए हैं, उनका कैसा अंजाम हुआ है। उनमें ज्यादातर मुश्रिक ही थे। (४२) तो उस दिन से पहले, जो खुदा की तरफ़ से आ कर रहेगा और रुक नहीं सकेगा, दीन (के रास्ते) पर सीधा मुंह किए चलो। उस दिन (सब) लोग बिखरे हुए हो जाएंगे। (४३) जिस शरस ने कुफ़ किया, तो उस के कुफ़ का नुक्सान उसी को है और जिस ने नेक अमल किए, तो ऐसे

लोग अपने ही लिए आरामगाह बुरुस्त करते हैं। (४४) जो लोग ईमान लाए और नेक अमल करते रहे, उनको खुदा अपने फ़ज़ल से बदला देगा। बेशक वह काफ़िरों को दोस्त नहीं रखता। (४५) और उसी की निशानियों में से है कि हवाओं को भेजता है कि खुशख़बरी देती हैं, ताकि तुम को अपनी रहमत के मज्जे चखाए और ताकि उस के हुक्म से कश्तियां चले और ताकि तुम उस के फ़ज़ल से (रोज़ी) तलब करो, अजब नहीं कि तुम शुक़ करो। (४६) और हमने तुम से पहले भी पैग़म्बर भेजे, तो वे उनके पास निशानियां ले कर आए, सो जो लोग नाफ़रमानी करते थे, हमने उन से बदला ले कर छोड़ा और मोमिनों की मदद हम पर ज़रूरी थी। (४७) खुदा ही तो है, जो हवाओं को चलाता है, तो वे बादल को उभारती हैं, फिर खुदा उस को जिस तरह चाहता है, आसमान में फैला देता और तह-ब-तह कर देता है, फिर तुम देखते हो कि उस के बीच में से मेंह निकलने लगता है। फिर जब वह अपने बन्दों में से जिन पर चाहता है, उसे बरसा देता है, तो वे खुश हो जाते हैं। (४८) और पहले तो वे मेंह उतरने से पहले ना-उम्मीद हो रहे थे। (४९) तो (ऐ देखने वाले!) खुदा की रहमत की निशानियों की तरफ़ देख कि वह किस तरह ज़मीन को उस के मरने के बाद ज़िंदा करता है। बेशक वह मुर्दों को ज़िंदा करने वाला है और वह हर चीज़ पर कादिर है। (५०) और अगर हम ऐसी हवा भेजें कि वे (उस की वजह से) खेती को देखें (कि) पीली (हो गयी है), तो इस के बाद वे ना-शुक्री करने लग जाएं। (५१) तो तुम मुर्दों को (बात) नहीं सुना सकते और न बहरों को कि जब वे पीठ फेर कर फिर जाएं, आवाज़ सुना सकते हो। (५२) और न अंधों को उनकी गुमराही से (निकाल कर) सीधे रास्ते पर ला सकते हो। तुम तो उन ही लोगों को सुना सकते हो, जो हमारी आयतों पर ईमान लाते हैं, सो वही फ़रमांबरदार हैं। (५३)

खुदा ही तो है, जिसने तुम को (शुरू में) कमज़ोर हालत में पैदा किया, फिर कमज़ोरी के बाद ताक़त इनायत की, फिर ताक़त के बाद कमज़ोरी और बुढ़ापा दिया। वह जो चाहता है, पैदा करता है और वह इल्म वाला (और) कुदरत वाला है। (५४) और जिस दिन क्रियामत बरपा होगी, गुनाहगार क़स्में लाएंगे कि वे (दुनिया में) एक घड़ी से ज़्यादा नहीं रहे थे। इसी तरह वे

व कालल्लजी-न ऊतुल्-अल्-म बल्-ईमा-न ल-कद् लबिस्तुम् फी किताबिल्लाहि
इला यौमिल्-बअ-सि फ हाजा यौमुल्-बअ-सि व लाकिन्नकुम् कुन्तुम् ला
तअ-लमून (५६) फयौमइखिल्ल-ला यन्फअल्लजी-न अ-लमू मअ-जि-र-तुहुम् व ला
हुम् युस्तअ-तबून (५७) व ल-कद् ज-रब्ना लिन्नासि फी हाजल्-कुरआनि मिन्
कुल्लि म-सलिन् व लइन् जिअ - तहुम्
बिआयतिल्-ल-यकूलन्नल्लजी-न क-फरु इन्
अन्तुम् इल्ला मुबित्लून (५८) कजालि-क
यत-बअल्लाहु अला कुलूबिल्लजी - न ला
यअ-लमून (५९) फस्बिर् इन् - न
वअ-दल्लाहि हक्कु व-व ला यस्तखिफफन्नकल्-
लजी - न ला यूकिनून ★ (६०)

३१ सूरतु लुक्मान-न ५७

(मक्की) इस सूर: में अरबी के २२१७ अक्षर,
५४४ शब्द, ३४ आयतें और ४ हकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

अलिफ - लाम् - मीम् (१)

तिल्-क आयातुल् - किताबिल्-हकीम ॥ (२)

हुदव-व रहमतल् - लिल्मुह्सनीन ॥ (३)

अल्लजी-न युक्कीमूनस्सला-त व युअतूनफ्जका-त व हुम् बिल्आखिरति हुम् यूकिनून ॥

(४) उलाइ-क अला हुदम्-मिर्रब्बिहिम् व उलाइ-क हुमुल्मुफ्लिहून (५)

व मिनल्लासि मन्थशरी लह-वल्-हदीसि लियुजिल्ल-ल अन् सबीलिल्लाहि बिगैरि

बिल्मिन् व यत्तखि-जहा हुजुवन् ॥ उलाइ-क लहुम् अजाबुम्-मुहीन (६) व

इजा तुल्ला अलैहि आयातुना वल्ला मुस्तकिबरन् क-अल्लम् यस्मअ-हा क-अन्-न फी

उजुनैहि वक्र-रन् फ-बशिशहं बि-अजाबिन् अलीम (७) इन्नल्लजी-न आमन्

व अमिलुस्सालिहाति लहुम् जल्लातुन्नमीम ॥ (८) खालिदी - न

फीहा वअ - दल्लाहि हक्कु व हुवल् - अजीजुल् - हकीम (९)



(रास्ते से) उलटे जाते थे। (५५) और जिन लोगों को इस्लाम और ईमान दिया गया था, वे कहेंगे कि खुदा की किताब के मुताबिक तुम क्रियामत तक रहे हो और यह क्रियामत ही का दिन है, लेकिन तुम को इसका यकीन ही न था। (५६) तो उस दिन जालिम लोगों को उनका उज्र कुछ फायदा न देगा और न उन से तौबा क़बूल की जाएगी। (५७) और हम ने लोगों के (समझाने के) लिए इस क़ुरआन में हर तरह की मिसाल बयान कर दी है और अगर तुम उनके सामने कोई निशानी पेश करो, तो ये काफ़िर कह देंगे कि तुम तो झूठे हो। (५८) इसी तरह खुदा उन लोगों के दिलों पर, जो समझ नहीं रखते, मुहर लगा देता है। (५९) पस तुम सन्न करो। बेशक़ खुदा का वायदा सच्चा है और (देखो) जो लोग यकीन नहीं रखते, वे तुम्हें ओछा न बना दें। (६०)★

३१ सूर: लुक्मान ५७

सूर: लुक्मान मक्की है और इसमें चौतीस आयतें और चार रकूअ हैं।

शुरू खुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

अलिफ़ लाम्-मीम्, (१) यह हिकमत की (भरी हुई) किताब की आयतें हैं। (२) मुह्सिनों के लिए हिदायत और रहमत, (३) जो नमाज़ की पाबन्दी करते और ज़कात देते और आखिरत का यकीन रखते हैं। (४) यही अपने परवरदिगार की (तरफ़) से हिदायत पर हैं और यही निज़ात पाने वाले हैं। (५) और लोगों में कोई ऐसा है, जो बेहूदा हिकायतें खरीदता है, ताकि (लोगों को) बे-समझे खुदा के रास्ते से गुमराह करे और उसका मज़ाक़ उड़ाए। यही लोग हैं, जिनको ज़लील करने वाला अज़ाब होगा। (६) और जब उस को हमारी आयतें सुनायी जाती हैं, तो अकड़ कर मुंह फेर लेता है, गोया उनको सुना ही नहीं जैसे उन के कानों में बोझ है, तो उस को दंद देने वाले अज़ाब की सुशख़बरी सुना दो। (७) जो लोग ईमान लाये और नेक काम करते रहे, उन के लिए नेमत के बाग़ हैं, (८) हमेशा उन में रहेंगे। खुदा का वायदा सच्चा है और वह शालिब हिकमत

वाला है। (६) उसी ने आसमानों को स्तूनों के बगैर पैदा किया, जैसा कि तुम देखते हो और जमीन पर पहाड़ (बना कर) रख दिए, ताकि तुम को हिला-हिला न दे और उस में हर तरह के जानवर फैला दिए और हम ही ने आसमान से पानी उतारा, फिर (उस से) उस में हर किस्म की नफ़ीस चीजें उगायीं। (१०) यह तो खुदा की पैदाइश है, तो मुझे दिखाओ कि खुदा के सिवा जो लोग हैं, उन्होंने क्या पैदा किया है? सच तो यह है कि ये जालिम खुली गुमराही में हैं। (११)★

और हमने लुक्मान को हिक्मत बरशी कि खुदा का शुक करो और जो शस्स शुक करता है, तो अपने ही फ़ायदे के लिए शुक करता है और जो ना-शुकी करता है, तो खुदा भी बे-परवाह (और) हम्द (व तारीफ़) के लायक है। (१२) और (उस वक़्त को याद करो,) जब लुक्मान ने अपने बेटे को नसीहत करते हुए कहा कि बेटा खुदा के साथ शिकं न करना शिकं तो बड़ा (भारी) जुल्म है। (१३) और हम ने इंसान को, जिसे उस की मां तकलीफ़ पर तकलीफ़ सह कर पेट में उठाए रखती है (फिर उस को दूध पिलाती है) और (आखिरकार में) दो वर्ष में उस का दूध छुड़ाना होता है, (अपने, साथ ही) उसके मां-बाप के बारे में ताकीद की है कि मेरा भी शुक करता रह और अपने मां-बाप का भी (कि तुम को) मेरी ही तरफ़ लौट कर आना है●(१४) और वे तेरे पीछे पड़े हों कि तू मेरे साथ किसी ऐसी चीज़ को शरीक करे, जिस का तुझे कुछ भी इल्म नहीं, तो उन का कहना न मानना। हां, दुनिया के कामों में उन का अच्छी तरह साथ देना और जो शस्स मेरी तरफ़ रुजूआ लाये, उस के रास्ते पर चलना, फिर तुम को मेरी तरफ़ लौट कर आना है। तो जो काम तुम करते रहे, मैं सब से तुम को आगाह करूंगा। (१५) (लुक्मान ने यह भी कहा कि) बेटा! अगर कोई अमल (मान लो) राई के दाने के बराबर भी (छोटा) हो और हो भी किसी पत्थर के अन्दर या आसमानों में (छिपा हुआ हो) या जमीन में, खुदा उस को क्रियामत के दिन ला मौजूद करेगा। कुछ शक नहीं कि खुदा लतीफ़ (और) खबरदार है। (१६) बेटा! नमाज़ की पाबन्दी रखना और (लोगों को) अच्छे कामों के करने का हुक्म और बुरी बातों से मना करते रहना और जो मुसीबत तुझ पर आए, उस पर सन्न करना। बेशक ये बड़ी हिम्मत के काम हैं। (१७) और (घमंड में आ कर) लोगों से गाल न फुलाना और जमीन में अकड़ कर न चलना कि खुदा किसी इतराने वाले खुद-पसंद को पसंद नहीं करता। (१८) और अपनी जाल में दमियानी रास्ता अपनाए रहना और (बोलते वक़्त) आवाज़ नीची रखना, क्योंकि (ऊंची आवाज़ गधों की-सी है और कुछ शक नहीं कि)

सब से बुरी आबाज गंधी की है★(१६) क्या तुम ने नहीं देखा कि जो कुछ आसमानों में और जो कुछ जमीन में है, सब को खुदा ने तुम्हारे क़ादू में कर दिया है और तुम पर अपनी जाहिरी और भीतरी नेमतें पूरी कर दी हैं और कुछ लोग ऐसे हैं कि खुदा के बारे में झगड़ते हैं, न इल्म रखते हैं और न हिदायत और न रोशन किताब। (२०) और जब उन से कहा जाता है कि जो (किताब) खुदा ने नाज़िल करमायी है, उसी की पैरबी करो, तो कहते हैं कि हम तो उसी की पैरबी करेंगे, जिस पर अपने बाप-दादा को पाया। भला अगरचे शैतान उन को दोखल के अज़ाब की तरफ़ बुलाता है, (तब भी?) (२१) और जो शस्त्त अपने आप को खुदा का क़रमांबरेदार कर दे और भला भी हो तो उस ने मजबूत दस्तावेज़ हाथ में ले ली और (सब) कामों का अंजाम खुदा ही की तरफ़ है। (२२) और जो कुफ़्र करे तो उस का कुफ़्र तुम्हें ग़मनाक न कर दे। उन को हमारी तरफ़ लौट कर आना है, फिर जो काम वे किया करते थे, हम उन को बता देंगे। बेशक खुदा दिलों की बातों को जानता है। (२३) हम उन को थोड़ा-सा फ़ायदा पहुंचाएंगे, फिर सलत्त अज़ाब की तरफ़ मजबूर कर के ले जाएंगे। (२४) और अगर तुम उन से पूछो कि आसमानों और जमीन को किस ने पैदा किया, तो बोल उठेंगे कि खुदा ने, कह दो कि खुदा का शुक्र है, लेकिन उन में अबसर समझ नहीं रखते। (२५) जो कुछ आसमानों और जमीन में है (सब) खुदा ही का है। बेशक खुदा बे-परवाह (और) हम्द (व तारीफ़) के लायक़ है। (२६) और अगर यों हो कि जमीन में जितने पेड़ हैं (सब के सब) क़लम हों और समुन्दर (का तमाम पानी) स्याही हो (और) इस के बाद सात समुन्दर और (स्याही हो जाएं) तो खुदा की बातें (यानी उस की सिफ़तें) ख़त्म न हों। बेशक खुदा ग़ालिब हिक़मत वाला है। (२७) (खुदा को) तुम्हारा पैदा करना और जिला उठाना एक शस्त्त (के पैदा करने और जिला उठाने) की तरह है, बेशक खुदा सुनने वाला, देखने वाला है। (२८) क्या तुम ने नहीं देखा कि खुदा ही रात को दिन में दाख़िल करता है और उसी ने सूरज और उसी ने चांद को (तुम्हारे) क़रमान के तहत कर रखा है। हर-एक-एक मुक़रर वक़्त तक चल रहा है और यह कि खुदा तुम्हारे सब अमल से ख़बरदार है। (२९) यह इस लिए कि खुदा की जात बर-हूक़ है और जिन को ये लोग खुदा के सिन्ना पुकारते हैं, वे बेकार हैं और यह कि खुदा ही ऊंचे भर्तबे वाला और बड़ा है। (३०) ★

अ-लम् न-र अन्नल्कुल-क तजरी फिल्लहिर बिनिअ-मतिल्लाहि लियुरि-यकुम् मिन्
आयातिही ॥ इन्-न फी जालि-क लआयातिल्-लिकुल्लि सम्बारिन् शकूर (३१) व
इजा गशि-यहुम् मौजुन् कऊजु - ललि द-अवुल्ला-ह मुखलिसी - न लहुद्-
दी - न ८ क - लम्मा नऊजाहुम् इल्लहिर फमिन्हुम् मुक्तसिदुन् ॥ व मा

यज्हुदु बिआयातिना इल्ला कुल्लु खत्तारिन्
कफूर (३२) या अय्युहन्नासुत्तकू रब्बकुम्
वरुशो योमल्ला यज् - जी बालिदुन्
अव्व-तदिही ॥ व ला मौलूदुन् हु-व जाजिन्
अव्वालिदिही शौअन् ॥ इन्-न वअ-दल्लाहि
हफकुन् फ-ला तगुरन्नकुमुल् - हयातुदुन्या
व सा यगुरन्नकुम् बिल्लाहिल्-गरूर (३३)
इन्नल्ला - ह अिन्दह अिलमुस्साअति ८ व
युनज्जिलुल् - गै - स ८ व यअ - लमु मा
फिल्अर्हामि ॥ व मा तद्री नफसुम्-माजा
तक्सिबु ग - दन् ॥ व मा तद्री
नफसुम् - बि - अय्यि अजिन् तमूतु ॥
इन्नल्ला - ह अलीमुन् खबीर * (३४)

فَإِنْ لَمْ يَكُنْ فِي ذَلِكَ لَاحِظٌ لِحَقِّ صَلَاتِهِمْ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَفِي الْحَقِّ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ
وَاللَّهُ دَعَا إِلَهُهُ خَلِصِينَ لَهُ الَّذِينَ فَلَا يَدْعُونَ إِلَّا إِلَهُهُمْ إِلَّا الْإِنْسَانُ الْكَافِرُ
تَعْبُدُوا بِمِلَّةِ أَبِيكُمْ إِبْرَاهِيمَ الْأَوَّلَ عَلَى خَلْقِهِ كَذَرَى ۖ إِنَّ الْإِنْسَانَ لِرَبِّهِ لَكَنَّا
كَفَرٌ ۚ وَأَعْتَدْنَا لِلْكَافِرِينَ مِنْ أَلِيمٍ ۚ وَالَّذِينَ هُمْ عَنْ صَلَاتِهِمْ سَاهُونَ ۚ وَالَّذِينَ هُمْ عَنْ صَلَاتِهِمْ سَاهُونَ ۚ
عَنِ الْوَيْلِ لِلَّذِينَ هُمْ عَنْ صَلَاتِهِمْ سَاهُونَ ۚ وَالَّذِينَ هُمْ عَنْ صَلَاتِهِمْ سَاهُونَ ۚ وَالَّذِينَ هُمْ عَنْ صَلَاتِهِمْ سَاهُونَ ۚ
يَتَذَكَّرُ أَلَهُ الْوَيْلِ لِلَّذِينَ هُمْ عَنْ صَلَاتِهِمْ سَاهُونَ ۚ وَالَّذِينَ هُمْ عَنْ صَلَاتِهِمْ سَاهُونَ ۚ وَالَّذِينَ هُمْ عَنْ صَلَاتِهِمْ سَاهُونَ ۚ
وَيَعْلَمُ مَا فِي الْأَرْحَامِ وَمَا تَدْعُونَ نَفْسَ مَا أَكْتُمِبَ غَدًا ۚ وَمَا
تَدْعُونَ نَفْسَ مَا فِي الْأَرْضِ سَوَاءٌ لَكُمْ أَمْ تَدْعُونَ اللَّهَ عَلَيْهِمْ حَبِيرٌ ۚ
يَوْمَ السَّجْدَةِ ۚ وَكَذَلِكَ تَقْرَأُ الْقُرْآنَ وَإِنْ سَأَلْتَهُ لَمَّا تَقْرَأُ الْقُرْآنَ
يَسْمِعُ اللَّهُ الْأَوْصِيَاءَ الرَّحِيمِينَ
أَلَمْ تَكُنْ مِنَ الْكَافِرِينَ ۚ رَبِّ وَمَنْ رَبُّ الْعَالَمِينَ ۚ أَلَمْ تَكُنْ مِنَ
الَّذِينَ هُمْ عَنْ صَلَاتِهِمْ سَاهُونَ ۚ وَالَّذِينَ هُمْ عَنْ صَلَاتِهِمْ سَاهُونَ ۚ وَالَّذِينَ هُمْ عَنْ صَلَاتِهِمْ سَاهُونَ ۚ
فَإِنْ لَمْ يَكُنْ فِي ذَلِكَ لَاحِظٌ لِحَقِّ صَلَاتِهِمْ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَفِي الْحَقِّ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ
وَاللَّهُ دَعَا إِلَهُهُ خَلِصِينَ لَهُ الَّذِينَ فَلَا يَدْعُونَ إِلَّا إِلَهُهُمْ إِلَّا الْإِنْسَانُ الْكَافِرُ
تَعْبُدُوا بِمِلَّةِ أَبِيكُمْ إِبْرَاهِيمَ الْأَوَّلَ عَلَى خَلْقِهِ كَذَرَى ۖ إِنَّ الْإِنْسَانَ لِرَبِّهِ لَكَنَّا
كَفَرٌ ۚ وَأَعْتَدْنَا لِلْكَافِرِينَ مِنْ أَلِيمٍ ۚ وَالَّذِينَ هُمْ عَنْ صَلَاتِهِمْ سَاهُونَ ۚ وَالَّذِينَ هُمْ عَنْ صَلَاتِهِمْ سَاهُونَ ۚ
عَنِ الْوَيْلِ لِلَّذِينَ هُمْ عَنْ صَلَاتِهِمْ سَاهُونَ ۚ وَالَّذِينَ هُمْ عَنْ صَلَاتِهِمْ سَاهُونَ ۚ وَالَّذِينَ هُمْ عَنْ صَلَاتِهِمْ سَاهُونَ ۚ
يَتَذَكَّرُ أَلَهُ الْوَيْلِ لِلَّذِينَ هُمْ عَنْ صَلَاتِهِمْ سَاهُونَ ۚ وَالَّذِينَ هُمْ عَنْ صَلَاتِهِمْ سَاهُونَ ۚ وَالَّذِينَ هُمْ عَنْ صَلَاتِهِمْ سَاهُونَ ۚ
وَيَعْلَمُ مَا فِي الْأَرْحَامِ وَمَا تَدْعُونَ نَفْسَ مَا أَكْتُمِبَ غَدًا ۚ وَمَا
تَدْعُونَ نَفْسَ مَا فِي الْأَرْضِ سَوَاءٌ لَكُمْ أَمْ تَدْعُونَ اللَّهَ عَلَيْهِمْ حَبِيرٌ ۚ
يَوْمَ السَّجْدَةِ ۚ وَكَذَلِكَ تَقْرَأُ الْقُرْآنَ وَإِنْ سَأَلْتَهُ لَمَّا تَقْرَأُ الْقُرْآنَ
يَسْمِعُ اللَّهُ الْأَوْصِيَاءَ الرَّحِيمِينَ

३२ सुरतुस-सज्दति ७५

(मक्की) इस सूर में अरबी के १५७७ अक्षर, २७४ शब्द, ३० आयतें और ३ हकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम •

अलिफ् - लाम् - मीम् ८ (१) तन्जीलुल्किताबि ला रै-ब फीहि
मिर्रब्बिल् - आलमीन ॥ (२) अम् यकूलूनफतराहु ८ बल् हुवल्लहक्क
मिर्रब्बि-क लितुज्जि-र कौमम्-मा अताहुम् मिन् नजीरिम्-मिन् कबिल-क ल-अल्लहुम्
यहु-तद्दुन (३) अल्लाहुल्लजी ख-ल-कस्समावाति वल्अर-ज्ज व मा बैनहुमा फी
सित्ति अय्यामिन् सुम्मस्तवा अलल्अशि ॥ मा लकुम् मिन् दूनिही मिव्वलियव्वला
शफीअन् ॥ अ-फ-ला त-तु - जक्करुन (४) युदब्बिहल्-अम्-र मिनस्समाह
इलल्अज्जि सुम्-म यअ-रुज्ज इलैहि फी योमिन् कान-न मिक्दारुह् अल्-फ स-नत्तिम्मिम्मा
त-अुददुन (५) जालि-क आलिमुल्-गैबि वशहादतिल्-अजीजुर्रहीम ॥ (६)

क्या तुम ने नहीं देखा कि खुदा ही की मेहरबानी से कश्शियाँ दारिया में चलती हैं, ताकि वह तुम को अपनी कुछ निशानियाँ दिखाए। बेशक इस में हर सत्र करने वाले (और) शुक्र करने वाले के लिए निशानियाँ हैं। (३१) और जब उन पर (दारिया की) लहरें सायबानों की तरह छा जाती हैं, तो खुदा को पुकारने (और) खालिस उस की इबादत करने लगते हैं, फिर जब वह उन को निजात दे कर खुशकी पर पहुँचा देता है, तो कुछ ही इंसान पर कायम रहते हैं और हमारी निशानियों से वही इन्कार करते हैं, जो वायदा तोड़ने वाले (और) ना-शुके हैं। (३२) लोगो! अपने परवर-दिगार से डरो और उस दिन का खौफ करो कि न तो बाप अपने बेटे के कुछ काम आए और न बेटा बाप के कुछ काम आ सके। बेशक खुदा का वायदा सच्चा है, पस दुनिया की ज़िदगी तुम को धोखे में न डाल दे और न धोखा देने वाला (शैतान) तुम्हें खुदा के बारे में किसी तरह का फ़रेब दे।' (३३) खुदा ही को क़ियामत का इल्म है और वही मंह बरसाता है और वही (हमिला के) पेट की चीज़ों को जानता है (कि नर है या मादा) और कोई शक्स नहीं जानता कि वह कल क्या करेगा। और कोई नफ़स नहीं जानता कि किस ज़मीन में उसे मौत आएगी। बेशक खुदा ही जानने वाला (और) खबरदार है। (३४) ★

३२ सूर: सज्दा ७५

सूर: सज्दा मक्की है और इस में तीस आयतें और तीन रुकूअ हैं।

शुरू खुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

अलिफ़-लाम्-मीम्, (१) इस में कुछ शक नहीं कि इस किताब का नाज़िल किया जाना तमाम दुनिया के परवरदिगार की तरफ़ से है। (२) क्या ये लोग यह कहते हैं कि पैगम्बर ने इस को खुद से बना लिया है? (नहीं,) बल्कि वह तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से बर-हक़ है, ताकि तुम उन लोगों को हिदायत करो, जिन के पास तुम से पहले कोई हिदायत करने वाला नहीं आया, ताकि ये रास्ते पर चलें। (३) खुदा ही तो है, जिस ने आसमानों और ज़मीन को और जो चीज़ें इन दोनों में हैं, सब को छः दिन में पैदा किया, फिर अर्श पर कायम हुआ। उस के सिवा तुम्हारा न कोई दोस्त है और न सिफ़ारिश करने वाला। क्या तुम नसीहत नहीं पकड़ते? (४) वही आसमान से ज़मीन तक (के) हर काम का इन्तिज़ाम करता है। फिर वह एक दिन जिस की मिक़दार तुम्हारी गिनती के मुताबिक़ हजार वर्ष की होगी, उस की तरफ़ चढ़ाई (और रुजूअ) करेगा। (५) यही तो छिपे और जाहिर का जानने वाला (और) ग़ालिब (और) रहम वाला (खुदा) है। (६) जिस ने हर चीज़

१. यानी शैतान धोखा दे कि अल्लाह ग़फ़ूर और रहीम है और दुनिया का जीना बहका दे कि जिस को यहाँ भला है, उस को वहाँ भी भला है।

अल्लजी अह-स-न कुल-ल शैइन् ल-ल-कहू व ब-व-अ सल्लकल् - इन्सानि
मिन् तीन (७) सुम्-म ज-अ-ल नस्-लहू मिन् सुलालतिम्-मिम्-मा-इम्-महीन
(८) सुम् - म सव्वाहु व न-फ-ल कीहि मिरूहिही व ज-अ-ल
लकुमुस्तम्-अ बल्-अव्सा-र बल्-अफ-र-त ७ कलीलम्-मा तयकुरुन (९) व

काल् अ-इजा ज-ललना फिल्अजि अ इन्ना
लफी ललिकन् जदीदिन् ४ बल् हुम्
बिलिकाइ रबिहिम् काफिरुन (१०)
कुल् य-त-वपफाकुम् म-लकुल् - मोतिल्लजी
बुकि-ल बिकुम् सुम्-म इला रबिबुम्
तुज्जून * (११) व लौ तरा इजिल्-
मुजिरमू-न नाकिसू रुजसिहिम् अिन् - द
रबिबिहिम् ७ रब्बना अब्-सर्ना व समिअ-ना
फजिअ-ना नअ-मल् सालिहन् इन्ना मूकिनून
(१२) व लौ शिअना लआतैना कुल-ल
नफसिन् हुदाहा व लाकिन् हक्कल्-कौलु
मिन्नी ल-अम्-ल-अन्-न ज-हल्-म मिनल्जिन्ति
बन्नासि अज्मबीन (१३) फज्जू बिमा
नसीतुम् लिका - अ योमिकुम् हाजा ७

الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ هَؤُلَاءِ أُجْرُهُمْ مُعْطَاوْنَ مِنْ دُونِ الْحِسَابِ
وَالَّذِينَ كَانُوا يَتَّبِعُونَ هَؤُلَاءِ سَوْفَ يُعَذَّبُونَ عَذَابًا مُتَعَدًّا
وَالَّذِينَ كَانُوا يُدْعَوْنَ إِلَى الْإِسْلَامِ وَكَانُوا يَكْفُرُونَ لَأُولَئِكَ عَذَابُ اللَّهِ
الْعَظِيمُ وَالَّذِينَ كَانُوا يُدْعَوْنَ إِلَى الْإِسْلَامِ وَكَانُوا يُجَاهِدُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ
وَكَانُوا يَكْفُرُونَ لَأُولَئِكَ عَذَابُ اللَّهِ الْعَظِيمُ وَالَّذِينَ كَانُوا يُدْعَوْنَ
إِلَى الْإِسْلَامِ وَكَانُوا يُجَاهِدُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَكَانُوا يُكْفِرُونَ
لَأُولَئِكَ عَذَابُ اللَّهِ الْعَظِيمُ وَالَّذِينَ كَانُوا يُدْعَوْنَ إِلَى الْإِسْلَامِ
وَكَانُوا يُجَاهِدُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَكَانُوا يُكْفِرُونَ لَأُولَئِكَ
عَذَابُ اللَّهِ الْعَظِيمُ وَالَّذِينَ كَانُوا يُدْعَوْنَ إِلَى الْإِسْلَامِ وَكَانُوا
يُجَاهِدُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَكَانُوا يُكْفِرُونَ لَأُولَئِكَ عَذَابُ اللَّهِ
الْعَظِيمُ وَالَّذِينَ كَانُوا يُدْعَوْنَ إِلَى الْإِسْلَامِ وَكَانُوا يُجَاهِدُونَ
فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَكَانُوا يُكْفِرُونَ لَأُولَئِكَ عَذَابُ اللَّهِ الْعَظِيمُ
وَالَّذِينَ كَانُوا يُدْعَوْنَ إِلَى الْإِسْلَامِ وَكَانُوا يُجَاهِدُونَ فِي سَبِيلِ
اللَّهِ وَكَانُوا يُكْفِرُونَ لَأُولَئِكَ عَذَابُ اللَّهِ الْعَظِيمُ

इन्ना नसीनाकुम् व जूकू अजाबल्-खुल्दि बिमा कुन्तुम् तअ-मलून (१४)
इन्ना युअमिनु बिआयातिनल्-लजी-न इजा बुकिरू बिहा खरू मुज्जदव-व सब्बहू
बिह्मिद रबिबिहिम् व हुम् ला यस्तमिबहव (१५) त-त - जाफा
जुनुबुहुम् अनिल्मज्जाजिअि यदअ-न रब्बहुम् खौफ-व-व त-म-अ-व-व मिम्मा
र-ज्जनाहुम् युन्फिकून (१६) फ ला तअ-लमु नफसुम्मा उल्लि-य लहुम् मिन्
कुरंति अअ-युनिन् ७ अजा-अम्-बिमा कानू यअ-मलून (१७) अ-फ-मन् का-न
मुअमिनन् क-मन् का-न फासिकूर् लला यस्तवून (१८) अम्मल्लजी-न
आमनू व अमिलुस्सालिहाति फ-लहुम् जन्नातुल् - मअ्वा नुजुलम् - बिमा
कानू यअ - मलून (१९) व अम्मल्लजी-न फ-सकू फ-मअ-वाहुमुन्नाह
कुल्लमा अराहू अय्यखरूज् मिन्हा उबीहू फीहा व की - ल
लहुम् जूकू अजाबन्नारिल्लजी कुन्तुम् बिही तुकजिबून (२०)

को बहुत अच्छी तरह बनाया (पानी) उस को पैदा किया और इन्सान की पैदाइश को मिट्टी से शुरू किया। (७) फिर उस की नस्ल-खुलासे से (पानी) हकीर पानी से पैदा की, (८) फिर उस को दुस्त किया, फिर उस में अपनी (तरफ से) रूह फूँकी और तुम्हारे कान और आँखें और दिल बनाये (मगर) तुम बहुत कम शुक्र करते हो। (९) और कहने लगे कि जब हम जमीन में मलिया-मेट हो जाएंगे, तो क्या नये सिरे से पैदा होंगे। सच तो यह है कि ये लोग अपने परवरदिगार के सामने जाने ही के कायल नहीं। (१०) कह दो कि मौत का फरिश्ता, जो तुम पर मुकर्रर किया गया है, तुम्हारी रूहें कब्ज कर लेता है, फिर तुम अपने परवरदिगार की तरफ लौटाये जाओगे। (११) ★

(और तुम ताज्जुब करो), जब देखो कि गुनाहगार अपने परवरदिगार के सामने सर झुकाए होंगे (और कहेंगे कि) ऐ हमारे परवरदिगार! हम ने देख लिया और सुन लिया, तो हम को (दुनिया में) वापस भेज दे कि नेक अमल करें। बेशक हम यकीन करने वाले हैं। (१२) और अगर हम चाहते, तो हर शख्स को हिदायत कर देते, लेकिन मेरी तरफ से यह बात करार पा चुकी है कि मैं दोख को जिन्यों और इन्सानों, सब से भर दूँगा। (१३) सो (अब आग के) मज्जे चखो, इस लिए कि तुमने उस दिन के आने को भुला रखा था, (आज) हम भी तुम्हें भुला देंगे और जो काम तुम करते थे, उनकी सजा में हमेशा के अजाब के मज्जे चखते रहो। (१४) हमारी आयतों पर तो वही लोग ईमान लाते हैं कि जब उन को उन से नसीहत की जाती है, तो सज्दे में गिर पड़ते और अपने परवरदिगार की तारीफ के साथ तस्बीह करते हैं और धमंड नहीं करते □ (१५) उन के पहलू बिछीनों से अलग रहते हैं (और) वह अपने परवरदिगार को खोफ और उम्मीद से पुकारते और जो (माल) हम ने उन को दिया है, उस में से खर्च करते हैं। (१६) कोई मपस नहीं जानता कि उन के लिए कंसी आँखों की ठंडक छिपा कर रखी गयी है, यह उन के आमाल का बदला है, जो वे करते थे। (१७) भला जो मोमिन हो, वह उस शख्स की तरह हो सकता है जो नाफरमान हो? दोनों बराबर नहीं हो सकते □ (१८) जो लोग ईमान लाए और नेक अमल करते रहे, उन के (रहने के) लिए बाग हैं। यह मेहमानी उन कामों का बदला है, जो वे करते थे। (१९) और जिन्होंने ना-फरमानी की, उन के (रहने के) लिए दोखल है। जब चाहेंगे कि उस में से निकल जाएँ, तो उसमें लौटा दिए जाएंगे और उन से कहा जाएगा कि जिस दोखल के अजाब को तुम झूठ समझते थे, उस के

व ल-नुजीकल्लहुम् मिनल् - अजाबिल् - अदना हुनल् - अजाबिल् - अकबरि
ल-अल्लहुम् यजिअून (२१) व मन् अज्-लमु मिम्मन् जुकि-र बिआयाति रबिही
सुम्-व अज्-र-अ अन्हा ७ इन्ना मिनल् - मुजिरमी-न मुन्तकिमून ★ (२२)
व ल-कद् आतेना मूसल्किता-व फ ला तकुन् फी मियतिम्-मिल्-लिका-इही व

ज-अल्लाहु हुदल्लिबनी इस्राईल ८ (२३)

व ज - अल्ला मिन्हुम् अइम्मतय्यहद् - न
बिअम्रिना लम्मा स - बरू ९ व कानू
बि-आयातिना यूकिनून (२४) इन्-न रब्ब-क
हु-व यफ़िसलु बैनहुम् यौमल्कियामति फ्रीमा
कानू फ्रीहि यस्-तलिफून (२५) अ-व लम्
यहिद् लहुम् कम् अह-लक्-ना मिन् कब-लिहिम्
मिनल्कुरुनि यम्शू-न फ्री मसाकिनिहिम्
इन्-न फ्री जालि-क लआयातिन् ७ अ-फला
यस्-मअून (२६) अ-व लम् यरौ अन्ना
नसूकुल्मा-अ इलल्-अज़िल्-जुहज़ि फ-नुख्रिजु
बिही ज़र-अन् तअ-कुलु मिन्हु अन्आमुहुम्
व अन्कुसुहुम् ७ अ-फ ला युब्सिरून ● (२७)

وَمَا أَجِدُوا فِيهَا آيَةً وَلَكِنْ أَعَدَّ الْعَذَابَ لِلْكَافِرِينَ
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّبِعُوا مِنْ الْآيَاتِ دُونَ الْعَدَابِ
لَا تَكُونُوا مِنْ يَحْسَبُونَ أَنَّ الْآيَاتِ مُتَعَدَّةٌ لَكُمْ
فَمَا تَكُونُونَ فِي مَرْوَةٍ مِنْ لِقَائِهِ وَجَعَلْنَاهُ هُدًى لِمَنْ أَرَادَ
وَجَعَلْنَاهُ آيَةً لِمَنْ أَهْلَكَ الْأَعْيُنُ وَكَانُوا بِآيَاتِنَا
يُؤْتُونَ وَإِنْ تَكْفُرْ يَوْمَ يُنْفَخُ الْأَوَاقِبُ وَمِمَّا كَانُوا
فِيهِ يَخْتَلِفُونَ أَوْ أَمْسَحُ الْوُجُوهَ أَمْ أَمْسَحُ الْوُجُوهَ
الَّذِينَ يَتَّبِعُونَ فِي سُلُوكِهِمْ إِنْ فِي ذَلِكَ آيَاتٍ لِمَنْ يَتَذَكَّرُ
أَوْ يَتُوبُ أَوْ يُنذِرُ أَوْ يَتَذَكَّرُ أَوْ يَتُوبُ أَوْ يُنذِرُ
مِنْهُ أَمْ أَمْسَحُ الْوُجُوهَ أَمْ أَمْسَحُ الْوُجُوهَ أَمْ أَمْسَحُ
الْقُلُوبَ أَمْ أَمْسَحُ الْوُجُوهَ أَمْ أَمْسَحُ الْوُجُوهَ
وَلَا تَكُونُوا مِنْ يَحْسَبُونَ أَنَّ الْآيَاتِ مُتَعَدَّةٌ
لَكُمْ فَمَا تَكُونُونَ فِي مَرْوَةٍ مِنْ لِقَائِهِ وَجَعَلْنَاهُ
هُدًى لِمَنْ أَرَادَ وَجَعَلْنَاهُ آيَةً لِمَنْ أَهْلَكَ الْأَعْيُنُ
وَمَا أَجِدُوا فِيهَا آيَةً وَلَكِنْ أَعَدَّ الْعَذَابَ لِلْكَافِرِينَ
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّبِعُوا مِنْ الْآيَاتِ دُونَ الْعَدَابِ
لَا تَكُونُوا مِنْ يَحْسَبُونَ أَنَّ الْآيَاتِ مُتَعَدَّةٌ
لَكُمْ فَمَا تَكُونُونَ فِي مَرْوَةٍ مِنْ لِقَائِهِ وَجَعَلْنَاهُ
هُدًى لِمَنْ أَرَادَ وَجَعَلْنَاهُ آيَةً لِمَنْ أَهْلَكَ الْأَعْيُنُ

व यकूल - न मता हाजल्फरहु इन् कुनुम् सादिकीन (२८) कुल्
यौमल्फतिह ला यन्फज़ल्लजी-न क-फरू ईमानुहुम् व ला हुम् युन्ज़रून
(२९) फ-अज् - रिज़् अन्हुम् वन्तज़िर् इन्हुम् मुन्तज़िरून ★ (३०)

३३ सूरतुल् अहज़ाबि ६०

(मदनी) इस सूर: में अरबी के ५६०६ अक्षर, १२१० शब्द, ७३ आयतें और ६ हकूब हैं।

बिस्मिल्लाहिरंद्मानिरंद्हीम .

या अय्युहन् - नबिय्युत्-तकिल्-ला-ह व ला तुतिअिल् - काफ़ीरी-न
वल्मुनाफ़िक्की-न ७ इन्लला-ह का-न अलीमन्-हकीमा ७ (१) वत्तबिअ मा यूहा
इलै-क मिररब्बि-क ७ इन्लला-ह का-न बिमा तअ-मलू-न खबीरा ७ (२)

बड़े बल्लो । (२०) और हम उन को (क़ियामत के) बड़े अज़ाब के सिवा दुनिया के अज़ाब का भी बड़ा बलाएंगे, शायद (हमारी तरफ़) लौट आएँ । (२१) और उस शस्त्र से बढ़कर ज़ालिम कौन, जिस को उस के परवरदिगार की आयतों से नसीहत की जाए, तो वह उन से मुंह फेर ले । हम गुनाह-गारों से ज़रूर बदला लेने वाले हैं । (२२) ★

और हम ने मूसा को किताब दी, तो तुम उनके मिलने से शक में न होना और हमने उस (किताब) को (या मूसा को) बनी इस्राईल के लिए हिदायत (का ज़रिया) बनाया । (२३) और उन में से हम ने पेशवा बनाये थे, जो हमारे हुक्म से हिदायत किया करते थे, जब वे सब करते थे और वे हमारी आयतों पर यक़ीन रखते थे । (२४) बेशक तुम्हारा परवरदिगार उन में जिन बातों में वे इस्तिस्लाफ़ करते थे, क़ियामत के दिन फ़ैसला कर देगा । (२५) क्या उनको इन (बातों) से हिदायत न हुई कि हम ने इन से पहले बहुत-सी उम्मतों को, जिन के बसने की जगहों में ये चलते-फिरते हैं, हलाक कर दिया । बेशक इस में निशानियाँ हैं, तो ये सुनते क्यों नहीं ? (२६) क्या इन्होंने नहीं देखा कि हम इस बंजर ज़मीन की तरफ़ पानी बलाते हैं, फिर इससे खेती पैदा करते हैं, जिस में से इन के चीपाए भी खाते हैं और वे भी (खाते हैं), तो ये देखते क्यों नहीं ? ● (२७) और कहते हैं अगर तुम सच्चे हो, तो यह फ़ैसला कब होगा ? (२८) कह दो कि फ़ैसले के दिन काफ़िरों को उनका ईमान लाना कुछ भी फ़ायदे का न होगा और न उन को मुहलत दी जाएगी । (२९) तो उनसे मुंह फेर लो और इन्तिज़ार करो, ये भी इन्तिज़ार कर रहे हैं । (३०) ★



३३ सूर: अहज़ाब ६०

सूर: अहज़ाब मदनी है और इस में तिहत्तर आयतें और नौ रुकूअ हैं ।

शुरू खुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है ।

ऐ पैगम्बर ! खुदा से डरते रहना और काफ़िरों और मुनाफ़िकों का कहा न मानना । बेशक खुदा जानने वाला (और) हिकमत वाला है । (१) और जो (किताब) तुम को तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से बह्य की जाती है, उसी की पैरवी किए जाना । बेशक खुदा तुम्हारे सब अमलों से

१. यानी तुम मूसा से ज़रूर मिलोगे । कुनाबे आप मेराज की रात आसमान पर हज़रत मूसा अलै० से मिले, जैसा कि हदीस में है ।

खबरदार है। (२) और खुदा पर भरोसा रखना और खुदा ही कार-साज काफ़ी है। (३) खुदा ने किसी आदमी के पहलू में दो दिल नहीं बनाये और न तुम्हारी औरतों को, जिन को तुम मां कह बैठते हो, तुम्हारी मां बनाया और न तुम्हारे लय-पालकों को, तुम्हारे बेटे बनाया।^१ ये सब तुम्हारे मुंह की बातें हैं और खुदा तो सच्ची बात फ़रमाता है और वही सीधा रास्ता दिखाता है। (४) मोमिनो ! लय-पालकों को उन के (असली) बापों के नाम से पुकारा करो कि खुदा के नज़दीक यही बात दुस्त है। अगर तुम को उन के बापों के नाम मालूम न हों, तो दीन में वे तुम्हारे भाई और दोस्त हैं और जो बात तुम से ग़लती से हो गयी हो, उस में तुम पर कुछ गुनाह नहीं, लेकिन जो दिली इरादे से करो (उस पर पकड़ है) और खुदा बरूशने वाला मेहरबान है। (५) पैगम्बर मोमिनों पर उनकी जानों से भी ज्यादा हक़ रखते हैं और पैगम्बर की बीबियां उनकी माएं हैं और रिश्तेदार आपस में अल्लाह की किताब के मुताबिक़ मुसलमानों और मुहाजिरों से एक दूसरे (के तर्क) के ज्यादा हक़दार हैं, मगर यह कि तुम अपने दोस्तों से एहसान करना चाहो। यह हुक्म किताब (यानी कुरआन) में लिख दिया गया है। (६) और जब हमने पैगम्बरों से अह्द लिया और तुम से और नूह से और इब्राहीम से और मूसा से और मरयम के बेटे ईसा से और अह्द भी उन से पक्का लिया, (७) ताकि सच कहने वालों से उन की सच्चाई के बारे में मालूम करे और उसने काफ़िरों के लिए दुख देने वाला अज़ाब तैयार कर रखा है। (८) ★

मोमिनो ! खुदा की उस मेहरबानी को याद करो, जो (उस ने) तुम पर (उस वक़्त) की, जब फ़ौजें तुम पर (हमला करने को) आयीं, तो हमने उन पर हवा भेजी और ऐसे लश्कर (नाज़िल किए), जिन को तुम देख नहीं सकते थे और जो काम तुम करते हो, खुदा उन को देख रहा है। (९) जब वे तुम्हारे ऊपर और नीचे की तरफ़ से तुम पर (चढ़) आए और जब आंखें फिर गयीं और दिल (मारे दहशत के) गलों तक पहुंच गये और तुम खुदा के बारे में तरह-तरह के गुमान करने लगे। (१०) वहां मोमिन आजमाए गए और सलत तौर पर हिलाए गए। (११) और जब मुनाफ़िक़

१. यानी न बीबी मां कह देने से मां हो जाती है, न लयपालक असली बेटे के हुक्म में होता है।

व इम् यकूलु-मुनाकिऊ-न बल्लजी-न की कुलूबिहिम् म-र-जुम्मा व-अ-द-नल्लाह
 व रसूलुह इल्ला गुरुरा (१२) व इज् कालसाई-क-तुम् - मिन्दुम्
 या अह-ल यस्ति-ब ला मुका-म लकुम् कजिअई व यस्तअजिनु करीकुम्-मिन्दुमुन्-
 नबिय-य अकूलू - न इन्-न बुयूतना औरतुन् व मा हि-य बिओरतिन् है

इम्पुरीदू-न इल्ला किरारा (१३) व लो
दुखिलत् अलैहिम् मिन् अक्तारिहा सुम्-म
मुइलुल्-फित्-न-त लआतौहा व मा त-लब्बम्
बिहा इल्ला यसीरा (१४) व ल-कद्
कानू आहदुल्ला-ह मिन् कब्लु ला युवल्लूनल्-
अद्बा-र ७ व कान-अहदुल्लाहि मस्जूला
(१५) कुल्लंध्यन्क-अ - कुमुल्-फिरार इन्
फररतुम् मिनल्मौति अविल्कतिल व इजल्ला
तुमत्तअ-न इल्ला कलीला (१६) कुल्
मन् जल्लजी यअ-सिमुकुम् मिनल्लाहि इन्
अरा-द बिकुम् सूअन् औ अरा-द बिकुम्
रह-म-तन् ७ व ला यजिदू-न लहुम् - मिन्
दूनिल्लाहि वलिय्यव-व ला नसीरा (१७)

और वे लोग जिनके दिलों में बीमारी है, कहने लगे कि खुदा और उसके रसूल ने तो हम से सिर्फ ओले का वायदा किया था। (१२) और जब उन में से एक जमाअत कहती थी कि ऐ मदीना वाले ! (यहां) तुम्हारे (ठहरने की) जगह नहीं, तो लौट चलो और एक गिरोह उन में से पंगम्बर से इजाअत मांगने और कहने लगा कि हमारे घर खुले पड़े हैं, "हालांकि वे खुले नहीं" थे, वे तो सिर्फ भागना चाहते थे। (१३) और अगर फौजें मदीने के चारों तरफ से उन पर आ दाखिल हों, फिर उन से खाना जंगी के लिए कहा जाए, तो (क्रौरन) करने लगे और इसके लिए बहुत कम ठहरें। (१४) हालांकि पहले खुदा से इक्करार कर चुके थे कि पीठ नहीं फेरेंगे और खुदा से (जो) इक्करार (किया जाता है, उस) की जरूर पूछ-ताछ होगी। (१५) कह दो कि अगर तुम मरने या मारे जाने से भागते हो, तो भागना तुम को फायदा नहीं देगा और उस वक्त तुम बहुत ही कम फायदा उठाओगे। (१६) कह दो कि अगर खुदा तुम्हारे साथ बुराई का इरादा करे, तो कौन तुम को उससे बचा सकता है या अगर तुम पर मेहरबानी करनी चाहे, (तो कौन उसको हटा सकता है ?) और ये लोग खुदा के सिवा किसी को न अपना दोस्त पाएंगे और न मददगार। (१७) खुदा तुम में से उन लोगों को भी जानता है, जो (लोगों को) मना करते हैं और अपने भाइयों से कहते हैं कि हमारे पास चले आओ और लड़ाई में नहीं आते, मगर कम। (१८) (यह इस लिए कि) तुम्हारे बारे में बुल्ल करते हैं। फिर जब डर (का वक्त) आए तो तुम उन को देखो कि तुम्हारी तरफ देख रहे हैं (और) उनकी आंखें (उसी तरह) फिर रही हैं, जैसे किसी को मौत से ग्रही आ रही हो। फिर जब डर जाता रहे, तो तेज जुबानों के साथ तुम्हारे बारे में जुबानदराजी करें और माल में बुल्ल करें। ये लोग (हक्रीकत में) ईमान लाए ही न थे, तो खुदा ने उन के आमाल बर्बाद कर दिए और यह खुदा को आसान था। (१९) (डर की वजह से) ख्याल करते हैं कि फौजें नहीं गयीं और अगर लश्कर आ जाएं तो तमन्ना करें कि (काबा !) गंवारों में जा रहें (और) तुम्हारी खबर पूछा करें और अगर तुम्हारे दमियान हों, तो लड़ाई न करें, मगर कम। (२०) ★

तुमको खुदा के पैगम्बर की पैरवी (करनी) बेहतर है, (यानी) उस शस्त्र की जिसे खुदा (से मिलने) और क्रियामय के दित (के आने) की उम्मीद हो और यह खुदा का जिक्र ज्यादा से ज्यादा करता हो। (२१) और जब मोमिनों ने (काफ़िरों के) सहकर को देखा, तो कहने लगे, यह वही है, जिस का खुदा और उस के पैगम्बर ने हम से वायदा किया था और खुदा और उस के पैगम्बर ने सब कहा था और इससे उनका ईमान और हताशत और ज्यादा हो गयी। (२२) मोमिनों में कितने ही ऐसे शस्त्र हैं कि जो इकरार उन्होंने खुदा से किया था, उस को सब कर दिखाया, तो उन में कुछ ऐसे हैं, जो अपने नज़ू से फ़ारिग हो गये और कुछ ऐसे हैं कि इन्तिज़ार कर रहे हैं और उन्होंने (अपने झौल को) जरा भी नहीं बदला, (२३) ताकि खुदा सक्कों को उन की सच्चाई का बदला दे और मुनाफ़िकों को चाहे तो अज़ाब दे या (चाहे) तो उन पर मेहरबानी करे। बेशक खुदा बलवान वाला मेहरबान है। (२४) और जो काफ़िर थे, उनको खुदा ने फेर दिया। वे अपने गुस्से में (भरे हुए थे), कुछ भलाई हासिल न कर सके और खुदा मोमिनों को लड़ाई के बारे में काफ़ी हुक्म और खुदा ताक़तवर और ज़बरदस्त है। (२५) और अहले किताब में से, जिन्होंने उन की मदद की थी, उन को उनके क़िलों से उतार दिया, और उन के दिलों में दहशत डाल दी, तो कितनों को तुम क़त्ल कर देते थे और कितनों को क़ैद कर लेते थे। (२६) और उन की ज़मीन और उनके घरों और उन के माल का और उस ज़मीन का, जिसमें तुमने पांव भी नहीं रखा था, तुम को वारिस बना दिया और खुदा हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है। (२७) ★

ऐ पैगम्बर ! अपनी बीवियों से कह दो, अगर तुम दुनिया की ज़िदगी और उसकी जीनत व आराइश चाहती हो, तो आओ, मैं तुम्हें माल दूँ और अच्छी तरह से रक्कत कर दूँ, (२८) और अगर तुम खुदा और उसके पैगम्बर और आक़िबत के घर (यानी बहिश्त) की तलाश रखती हो, तो तुम में जो, नेकी करने वाली हैं, उनके लिए खुदा ने बड़ा बदला तैयार कर रखा है। (२९) ऐ पैगम्बर की बीवियो ! तुम में से जो कोई खुली ना-शाइस्ता हरकत करेगी, उस को दोगुनी सज़ा दी

बाईसवां पारः व मंयक्रनुत

सूरतुल्-अहूजाबि आयात ३१ से ७३

व मंथक-नुत् मिन्कुन्-न लिल्लाहि व रसूलिही व तअ-मल् सालिहन् नुअ-तिहा अज-रहा
मरतैनि॥ व अअ-तदना लहा रिज्-कन् करीमा (३१) यानिसा-अन्नबिद्यि लस्तुन्-न
क-अ-हृदिम्-मिनन्सिहा इनित्तकैनुन्-न फ ला तख-ज्जअ-न बिल्कौलि फ-यत्म-अल्लजी
फ्री कल-बिही म-र-ज्जव-व कल-न कौलम्-मअ-रूफा (३२) व कइ-न फ्री

बुधूतिकुन्-न व ला त-बरंज्-न त-बरंजल्-

जाहिलिय्यतिल्-ऊला व अक्रिम्-नस्सला-त्त व

आतीनश्चका-त् व अतिअ-नल्ला-ह व रसूलहू

इन्ममा युरीदुल्लाह लियुज्-हि-ब अन्कुमुरिज-स

अह-लल्-बैति व युतह-हि-रकुम् तत्-हीराऽ

(३३) वज्रकुर-न मा युत्ता फी बुध्तिक्कुन्-

मिन् आयातिल्लाहि वल् - हिक्मति

इन्नुल्लाह का-न लतीफुन् खबीरा★(३४)

इल्लल् - मुस्लिमी - न वल्मुस् - लिमाति

वल्मुञ्जिनी-न वल्-मुञ्जिनाति वल्कानिती-न

वल्कानिताति वस्सादिकी - न वस्सादिकाति

वस्साबिरी-न वस्साबिराति वल्-खाशआ-न

वल्-स्त्राशआति वल्-मु-त-सुददिक्रा-न वल् -

मु-त-सद्दिकाति वस्सा-इमी-न वस्सा-इमाति

हाक्रियाति वज्याकिरानल्ला - ह कसारवज्या

मग्-फि-र-तव-व अज-रन् अजामा (३५)

जाएगी और यह (बात) खुदा को आसान है। (३०) और जो तुम में से खुदा और उस के रसूल की फरमांवरदार रहेगी और नेक अमल करेगी, उस को हम दोगुना सवाब देंगे और उसके लिए हम ने इच्छत की रोजी तैयार कर रखी है। (३१) ऐ पैगम्बर की बीवियो ! तुम और औरतों की तरह नहीं हो, अगर तुम परहेजगार रहना चाहती हो तो (किसी अजनबी शरूस से) नर्म-नर्म बातें न किया करो, ताकि वह शरूस जिसके दिल में किसी तरह का मर्ज है, कोई उम्मीद (न) पैदा कर ले और (उन में) दस्तूर के मुताबिक बात किया करो। (३२) और अपने घरों में ठहरी रहो और जिस तरह (पहले) जाहिलियत (के दिनों) में इन्हारे जमाल करती थीं, उस तरह चीनत न दिखाओ और नमाज पढ़ती रहो और जकात देती रहो और खुदा और उस के रसूल की फरमांवरदारी करती रहो। ऐ (पैगम्बर के) अहले बैत ! खुदा चाहता है कि तुम से ना पाकी (का मल-कुचल) दूर कर दे और तुम्हें बिल्कुल पाक-साफ़ कर दे। (३३) और तुम्हारे घरों में जो खुदा की आयतें पढ़ी जाती हैं और हक्मत (की बातें सुनायी जाती हैं) उन को याद रखो। बेशक खुदा लतीफ़ और बा-ख़बर है। (३४) ★

(जो लोग खुदा के आगे इताअत का सर झुकाने वाले हैं, यानी) मुसलमान मर्द और मुसलमान औरतें और मोमिन मर्द और मोमिन औरतें और फरमांवरदार मर्द और फरमांवरदार औरतें और रास्तबाज (सच्चे) मर्द और रास्तबाज औरतें और सन्न करने वाले मर्द और सन्न करने वाली औरतें और खुशूअ करने वाले मर्द और खुशूअ करने वाली औरतें और खंरात करने वाले मर्द और खंरात करने वाली औरतें और रोज़े रखने वाले मर्द और रोज़े रखने वाली औरतें और अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाजत करने वाले मर्द और हिफ़ाजत करने वाली औरतें और खुदा को ज्यादा से ज्यादा याद करने वाले मर्द और ज्यादा से ज्यादा याद करने वाली औरतें, कुछ शक नहीं कि उनके लिए खुदा ने बलिश और बड़ा बदला तैयार कर रखा है। (३५) और किसी मोमिन मर्द और मोमिन औरत को हक नहीं है कि जब खुदा और उस का रसूल कोई अन्न मुकर्रर कर दे, तो वे इस काम में अपना भी कुछ अस्तियार समझें और जो कोई खुदा और उस के रसूल की ना-फरमानी करे, वह खुला गुमराह

हो गया।' (३६) और जब तुम उस शस्त्र से जिस पर खुदा ने एहसान किया और तुमने भी एहसान किया, यह कहते थे कि अपनी बीवी को अपने पास रहने दो और खुदा से डरो और तुम अपने दिल में, वह बात छिपाते थे, जिस को खुदा जाहिर करने वाला था और तुम लोगों से डरते थे, हालांकि खुदा ही इसका ज्यादा हकदार है कि उस से डरो। फिर जब जैद ने उस से (कोई) हाजत (मुताल्लिक) न रखी (यानी उसको तलाक दे दी), तो हम ने तुम से उस का निकाह कर दिया, ताकि मोमिनों के लिए उन के मुंह बोले बेटों की बीवियों (के साथ निकाह करने के बारे) में जब वह उन से (अपनी) हाजत (मुताल्लिक) न रखें, (यानी तलाक दे दें), कुछ तंगी न रहे और खुदा का हुक्म वाक़ेब हो कर रहने वाला था। (३७) पैगम्बर पर इस काम में कुछ तंगी नहीं, जो खुदा ने उन के लिए मुकर्रर कर दिया, और जो लोग पहले गुजर चुके हैं, उनमें भी खुदा का यही दस्तूर रहा है और खुदा का हुक्म ठहर चुका था, (३८) और जो खुदा के पैगाम (ज्यों के त्यों) पहुंचाते और उस से डरते और खुदा के सिवा किसी से नहीं डरते थे और खुदा ही हिसाब करने को काफ़ी है। (३९) मुहम्मद तुम्हारे मर्दों में से किसी के वालिद नहीं हैं, बल्कि खुदा के पैगम्बर और नबियों (की नुबूवत) की मुहर (यानी उस को खत्म कर देने वाले हैं) और खुदा हर चीज़ को जानता है। (४०)★

ऐ ईमान वाले! खुदा का बहुत ज़िक्र किया करो। (४१) और सुबह और शाम उसकी पाकी बयान करते रहो। (४२) वही तो है, जो तुम पर रहमत भेजता है और उस के फ़रिस्ते भी, ताकि तुम को अंधेरों से निकाल कर रोशनी की तरफ़ ले जाए और खुदा मोमिनों पर मेहरबान है। (४३) जिस दिन वह उन से मिलेंगे उन का तोहफ़ा (खुदा की तरफ़ से) सलाम होगा और उस ने उनके लिए बड़ा सवाब तैयार कर रखा है। (४४) ऐ पैगम्बर! हमने तुम को गवाही देने वाला और डराने वाला बनाकर भेजा है, (४५) और खुदा की तरफ़ बुलाने वाला और रीशन चिराग़। (४६) और मोमिनों को खुशख़बरी सुना दो कि उन के लिए खुदा की तरफ़ से बड़ा फ़ज़ल है। (४७) और काफ़िरों और मुनाफ़िकों का कहा न मानना और न उनके तकलीफ़ देने पर नज़र करना और खुदा पर भरोसा रखना और खुदा ही कारसाज़ काफ़ी है। (४८) मोमिनो! जब तुम मोमिन औरतों से निकाह कर के उन को हाथ लगाने (यानी उन के पास जाने) से पहले तलाक़ दे दो, तो तुम को कुछ अस्तिथार नहीं कि उन से इद्दत पूरी कराओ। उन को कुछ फ़ायदा (यानी खर्च) दे कर अच्छी

१. इस आयत में, जिन भियां-बीवी का ज़िक्र है, वह जैद और जैनुब रज़ि० हैं, चुनांचे जैद रज़ि० के नाम का अगली आयत में खुले तौर पर भी ज़िक्र आया है। दोनों आयतों में जिस वाक़िए की तरफ़ इशारा है, वह इस तरह पर है कि जैनुब जनाबे रसूल खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की फूफी की बेटो थीं और जाहिर है कि एक ऊंचे ख़ानदान की लड़की थीं। जैद भी एक शरीफ़ अरब थे जो बचपन में पकड़े गये थे और जवानी के क़रीब, गुलामी की हालत में मक्के में आ कर बेचे गये। आहज़रत ने उन को ख़रीद लिया और आज़ाद कर के अपने यहां रखा। जैद रज़ि० में, इस के अलावा कि उन पर गुलाम आज़ाद का लफ़्ज़ बोला जाता हो और कोई बुराई न थी और वह आहज़रत सल्ल० की निगाह में बहुत इज़्ज़त रखते थे, यहां तक कि आप ने उन को लयपालक बना लिया। आप जानते थे कि गुलाम हो कर बेचे जाने से असली शराफ़त में फ़र्क़ नहीं आ सकता—

हज़ार बार जो यूसुफ़ बिके गुलाम नहीं।

तो आप ने इरादा फ़रमाया कि उन का जैनुब के साथ निकाह कर दें, ताकि आप के ख़ानदान में उन की इज़्ज़त ज़्यादा हो, साथ ही यह भी भक़ूब था कि गुलाम आज़ाद इस्लाम मज़हब में छोटे न समझे जाएं और उन की

(शेष पृष्ठ ५८५ पर)

या अम्युहन्नबिद्यु इन्ना अहलत्ता ल-क अज्वा-ज-कल्लाती आतं-त उजूरहुन्-न व मा
म-ल-कत् यमीनु-क मिम्मा अफा-अल्लाहु अलै-क व बनाति अम्मि-क व बनाति
अम्माति-क व बनाति खालि-क व बनाति खालातिकल्लाती हाजर-न म-अ-क-वम्-
र-अतम् - मुअमि-न-तन् इव्व-ह-बत् नपसहा लिन्नबिद्यि इन् अरादन्नबिद्यु

अभ्यस्तन्कि-हहा ॐ खालि-स-तुल्ल - क मिन्
दूनिल् - मुअमिनी-न ७ कद् अलिम्ना मा
फ-रज्ना अलैहिम् फी अज्वाजिहिम् व मा
म-ल-कत् ऐमानुहुम् लिक्कैला यकू-न अलै-क
ह-र-जुन् ७ व कानल्लाहु गफूर - रहीमा

(५०) तुर्जी मन् तशाउ मिन्हुन्-न व
तुअवी इलै-क मन् तशाउ ७ व मनिस्तगै-न
मिम्मन् अ-जल-त फला जुना-ह अलै-क ७
जालि-क अदना अन्तकर-र अअ-युनु-हुन्-न व
ला यहजन्-न व यरज्जै-न बिमा आतैतहुन्-न
कुल्लुहुन्-न ७ वल्लाहु यअ - लमु मा फी
कुलूबिकुम् ७ व कानल्लाहु अलीमन्
हलीमा (५१) ला यहिल्लु ल-कन्तिसाउ
मिम्बअ-द व ला अन् त-बद-द-ल बिहिन-न मिन्

अञ्-वाजिक्-व लो अञ्-ज-ब-क हुस्तुहुन्-न इल्ला मा म-ल-कत् यमीनु-क७ व कानल्-
लाहु अला कुल्लि शैर्-रकीबा ★ (५२) या अय्युहल्लजी-न आमनू ला तद्खुलू
बुयूतन्नबिय्य इल्ला अय्युअ-ज-न लकुम् इला तआमिन् गै-र नाजिरी-न इनाहु७ व
लाकिन् इवा दुअीतुम् फद्-खुलू फइजा तअिम्तुम् फन्तशिरू व ला मुस्तअ-निसी-न
लि-हदीसिन्७ इन्-न जालिकुम् कान-न युअिन्नबिय-य फ-यस्तह्यी मिन्कुम्७ वल्लाहु
ला यस्तह्यी मिनल् - हकिक्७ व इजा स-अल्तुमूहुन्-न मताअन् फसअलू -
हुन् - न मिन्नराइ हिजाबिन्७ जालिकुम् अत्हर लिकुलूबि - कुम् व
कुलूबिहिन्-न७ व मा कान लकुम् अन् तुअजू रसूलल्लाहि व ला अन् तन्किह
अज्वाजहु मिम्बअ-दिही अ-ब-दन्७ इन्-न जालिकुम् कान-न अिन्दल्लाहि अजीमा (५३)

तरह से रहसत कर दो। (४६) ऐ पैगम्बर ! हम ने तुम्हारे लिए तुम्हारी बीवियां, जिन को तुम ने उन के मङ्ग दे दिए हैं, हलाल कर दी हैं और तुम्हारी लौडियां, जो खुदा ने तुम को (काफ़िरों से ग़नीमत के माल के तौर पर) दिलवायी हैं और तुम्हारे चचा की बेटियां और तुम्हारी फूफियों की बेटियां और तुम्हारे मामुओं की बेटियां और तुम्हारी खालाओं की बेटियां, जो तुम्हारे साथ वतन छोड़ कर आयी हैं, सब हलाल हैं और कोई मोमिन औरत अगर अपने आप पैगम्बर को बरूषा दे (यानी मङ्ग लेने के बग़ैर निकाह में आना चाहे) बशर्त कि पैगम्बर भी उस से निकाह करना चाहें, (वह भी हलाल है, लेकिन यह इजाज़त) (ऐ मुहम्मद !) खास तुम ही को है, सब मुसलमानों को नहीं, हम ने उन की बीवियों और लौडियों के बारे में जो (मङ्ग, अदा करने के लिए ज़रूरी) मुकर्रर कर दिया है, हम को मालूम है (यह) इस लिए (किया गया है) कि तुम पर किसी तरह की तंगी न रहे और खुदा बरूषने वाला मेहरबान है। (५०) (और तुम को यह भी अस्तिथार है कि) जिस बीबी को चाहो, अलग रखो और जिसे चाहो अपने पास रखो और जिसको तुम ने अलाहिदा कर दिया हो, अगर उस को फिर अपने पास तलब कर लो, तो तुम पर कुछ गुनाह नहीं। यह (इजाज़त) इस लिए है कि उन की आंखें ठंडी रहें और वे गमनाक न हों और जो कुछ तुम उनको दो, उसे लेकर सब खुश रहें और जो कुछ तुम्हारे दिलों में है, खुदा उसे जानता है और खुदा जानने वाला (और) बुद्वार (हलीम) है। (५१) (ऐ पैगम्बर !) इन के सिवा और औरतें तुम को जायज़ नहीं और न यह कि इन बीवियों को छोड़ कर और बीवियां कर लो, चाहे उन का हुस्न तुम को (कैसा ही) अच्छा लगे, मगर वह, जो तुम्हारे हाथ का माल है, (यानी लौडियों के बारे में) तुम को अस्तिथार है और खुदा हर चीज़ पर निगाह रखता है। (५२) ★

मोमिनो ! पैगम्बर के घरों में न जाया करो, मगर इस सूरत में कि तुम को खाने के लिए इजाज़त दी जाए और उस के पकने का इन्तिज़ार भी न करना पड़े, लेकिन जब तुम्हारी दावत की जाए तो जाओ और जब खाना खा चुको, तो चल दो और बातों में जी लगा कर न बैठ रहो। यह बात पैगम्बर को तकलीफ़ देती थी और वह तुम से शर्म करते थे, (और कहते नहीं थे), लेकिन खुदा सच्ची बात के कहने से शर्म नहीं करता और जब पैगम्बर की बीवियों से कोई सामान मांगो, तो पदों के बाहर मांगो। ये तुम्हारे और उन के दोनों के दिलों के लिए बहुत पाकीज़गी की बात है और तुम को यह मुनासिब नहीं कि पैगम्बर खुदा को तकलीफ़ दो और न यह कि उन की बीवियों से कभी उनके बाद निकाह करो। बेशक यह खुदा के नज़दीक बड़ा (गुनाह का काम) है। (५३) अगर तुम

(पृष्ठ ६७३ का शेष)

इस्लाम भी आज़ादों की तरह ही की जाए यानी आज़ाद और गुलाम में जो अरब वाले फ़र्क करते हैं, वह मुसलमानों में न हो, चुनावें इन ही मामलों को सामने रख कर आप ने ज़ैद का निकाह ज़ैनब से कर दिया। ज़ैनब आखिर औरत थीं और पुराने ह्याल उन के दिल में बँडे हुए थे, उन्होंने ने हमेशा ज़ैद से अपने को अपज़ल समझा और उन को अपने से कमतर समझा। ये बातें ऐसी थीं कि मियां-बीबी में मुबक़रत पैदा नहीं होने देती थीं। आखिर ज़ैद इस बात पर मजबूर हो गये कि ज़ैनब को तलाक़ दे दें। यह हालत देख कर आहज़रत को बहुत फ़िक्र हो गया। आप दिल से तो यही बात चाहते थे कि ज़ैनब रज़ि० ज़ैद रज़ि० ही की बीबी रहें और जिस रिश्ते से एक बड़ी इस्लाम मक्सूद थी, वह बाक़ी रहे। इसी लिए आप ज़ैद को समझाते थे कि मियां खुदा का ख़ौफ़ करो और ज़ैनब को तलाक़ देने से बाज़ रहो, लेकिन आप को यह भी डर था कि लोग कहेंगे, कैसा बे-जोड़ रिश्ता करा दिया था, (शेष पृष्ठ ६७७ पर)

किसी चीज को जाहिर करो या उसको छिपाए रखो, तो (याद रखो कि) खुदा हर चीज से बा-खबर है। (५४) औरतों पर अपने वापों से (पर्दा न करने में) कुछ गुनाह नहीं और न अपने बेटों से और न अपने भाइयों से और न अपने भतीजों से और न अपने भाजों से, न अपनी (क्रिस्म की) औरतों से और न लौंडियों से और (ऐ औरतों!) खुदा से डरती रहो। बेशक खुदा हर चीज को जानता है। (५५) खुदा और उसके फ़रिश्ते पैगम्बर पर दरूद भेजते हैं। मोमिनो! तुम भी पैगम्बर पर दरूद और सलाम भेजा करो। (५६) जो लोग खुदा और उस के पैगम्बर को रंज पहुंचाते हैं, उन पर खुदा दुनिया और आखिरत में लानत करता है और उन के लिए उस ने जलील करने वाला अज़ाब तैयार कर रखा है। (५७) और जो लोग मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों को ऐसे काम (की तोहमत) से जो उन्होंने न किया हो, तकलीफ़ दें, तो उन्होंने बोहतान और खुले गुनाह का बोझ अपने सर पर रखा। (५८)★

ऐ पैगम्बर! अपनी बीवियों और बेटियों और मुसलमानों की औरतों से कह दो कि (बाहर निकला करें तो) अपने (मुंहों) पर चादर लटका (कर घूँघट निकाल) लिया करें। यह बात उनके लिए पहचान (और फ़र्क) की वजह होगी तो कोई उन को तकलीफ़ न देगा और खुदा बल्लशने वाला मेहरबान है। (५९) अगर मुनाफ़िक़ और वे लोग, जिन के दिलों में मर्ज है और जो मदीने (के शहर) में बुरी-बुरी खबरें उड़ाया करते हैं, (अपने किरदार से) रुकेंगे नहीं, तो हम तुम को उनके पीछे लगा देंगे, फिर वहां तुम्हारे पड़ोस में न रह सकेंगे, मगर थोड़े दिन। (६०) (वह भी फिटकारे हुए) जहां पाये गये, पकड़े गये और जान से मार डाले गये। (६१) जो लोग पहले गुजर चुके हैं, उन के बारे में भी खुदा की यही आदत रही है, और तुम खुदा की आदत में तन्दीली न

(पृष्ठ ६७५ का शेव)

जो क़ायम न रह सका। खुदा ने फ़रमाया कि इस मामले में लोगों के डरने की क्या जरूरत थी, डर तो सिर्फ़ हम से चाहिए। लोगों का दस्तूर है कि सुधार के मामलों में ही तरह-तरह की बातें किया करते हैं, इस के अलावा आप को यह फ़िक्र लग गया कि अगर इन मियां-बीबी में अलहिदयी बाक़ेअ हुई, तो ज़ैनब रज़ि० के बारे में बड़ी मुश्किल पेश आयेगी कि ज़ैद की बीबी बनीं रहने की वजह से लोग ज़ैनब के एहतुराम व अदब में कमी करेंगे और यह बात आप को मंजूर न थी और हो सकती भी न थी। जब आप ज़ैद रज़ि० की इच्छत करते और लोगों से करानी चाहते थे, तो ज़ैनब रज़ि० की तहकीर क्योंकि गवारा कर सकते। आखिर में ज़ैद और ज़ैनब रज़ि० का ताल्लूक़ क़त्म हो कर रहा।

इस मौक़े पर खुदा को तीन और सुधार करने थे—एक यह कि इस्लाम में लयपालक का वह हक़ न समझा जाए, जो अपने बेटे का है और दोनों क्रिस्म के ताल्लूक़ात में जो फ़र्क़ है, वह जाहिर कर दिया जाए। दूसरे यह कि मुंह बोले लड़कों की औरतें सगे लड़कों की औरतों की तरह हराम न समझी जाएं। चुनाने खुदा के हुक्म से आंख़रत सल्ल० खुद हज़रत ज़ैनब रज़ि० से निकाह कर लिया।

लयपालक बनाना एक पुरानी रस्म है और इस्लाम ने इस को जायज़ रखा है, लेकिन लयपालक बेटों को सगे बेटों के-से हुक्क़ नहीं दिए और न उन की औरतों से निकाह करना सगे बेटों की औरतों के साथ निकाह करने के बराबर समझा, तीसरे यह कि मुलामों की तलाक़ दी हुई औरतों की हैसियत, जिन को शरीफ़ अरब वाले अपनी बीबी बनाने से शिक्कते थे, वही फ़रार दी जाए जो आबादों की तलाक़ दी हुई औरतों का है, यानी उन से बे-सिक्कत निकाह कर लिया जाए और ये तीनों सुधार आंख़रत सल्ल० ही की बरक़तों वाली ज़ात से शुरू हुआ।

पाओगे (६२) लोग तुम से क्रियामत के वारे में पूछते हैं (कि कब आएगी ?) कह दो कि इसका इत्म खुदा ही को है और तुम्हें क्या मालूम है, शायद क्रियामत करीब ही आ गयी हो। (६३) बेशक खुदा ने काफ़िरों पर लानत की है और उनके लिए (जहन्नम की) आग तैयार कर रखी है। (६४) उस में हमेशा-हमेशा रहेंगे, न किसी को दोस्त पाएंगे और न मददगार। (६५) जिस दिन उन के मुंह आग में उलटाए जाएं, कहेंगे, ऐ काश् ! हम खुदा की फ़रमांबरदारी करते और (अल्लाह के) रसूल का हुक्म मानते। (६६) और कहेंगे कि ऐ हमारे परवरदिगार ! हमने अपने सरदारों और बड़े लोगों का कहा माना, तो उन्होंने हमको रास्ते से गुमराह कर दिया। (६७) ऐ हमारे परवरदिगार ! उनको दोगुना अज़ाब दे और उन पर बड़ी लानत कर। (६८) ★

मोमिनो ! तुम उन लोगों जैसे न होना, जिन्होंने मूसा को (ऐब लगा कर) रंज पहुंचाया, तो खुदा ने उन को बे-ऐब साबित किया और वह खुदा के नज़दीक आबरू वाले थे। (६९) मोमिनो ! खुदा से डरा करो और बात सीधी कहा करो। (७०) वह तुम्हारे सब अमाल दुरुस्त कर देगा और तुम्हारे गुनाह बल्श देगा और जो शक्स खुदा और उसके रसूल की फ़रमांबरदारी करेगा, तो बेशक बड़ी मुराद पाएगा। (७१) हमने अमानत (के बोझ) को आसमानों और ज़मीन पर पेश किया तो उन्होंने उस के उठाने से इन्कार किया और उस से डर गये और इंसान ने उसको उठा लिया। बेशक वह ज़ालिम और जाहिल था। (७२) ताकि खुदा मुनाफ़िक़ मर्दों और मुनाफ़िक़ औरतों और मुशिरक़ मर्दों और मुशिरक़ औरतों को अज़ाब दे और खुदा मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों पर मेहरबानी करे और खुदा तो बल्शने वाला मेहरबान है। (७३) ★



३४ सूर: सबा ५८

सूर: सबा मक्की है और इस में चौवन आयतें और छः रुकूअ हैं।

शुरू खुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

सब तारीफ़ खुदा ही को (मुनासिब) है, (जो सब चीज़ों का मालिक है, यानी) वह कि जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है, सब उसी का है और आखिरत में भी उसी की तारीफ़

१. अमानत से मुराद अल्लाह तआला के अहकाम और फ़राइज हैं, जिन के उठाने से आसमान ने भी अपनी बे-बसी जाहिर की और ज़मीन और पहाड़ों ने भी, मगर इन्सान ने अपनी ताकत तो देखी नहीं, कहा कि मैं इस बोझ को उठाऊंगा, नादानी से उस को उठा तो लिया, लेकिन उठाते ही खुदा के हुक्म के खिलाफ़ अमल करने लगा और अल्लाह तआला की तरफ़ से गुस्से का शिकार हुआ। जब समझा कि मैं ने बड़ी नादानी की और अपने हक़ में बड़ा कुल्म किया और लगा खुदा से माफ़ी मांगने। इस मुट्ठी भर ख़ाक़ को देखो और उस की ताक़त को देखो और उस की हिम्मत को देखो। खुदा की अमानत को कुबूला तो जाहिर हो गया 'इन्हू का-न ज़लूमन ज़हला'।

यअ-लमु मा यलिजु फिल्अज्जि व मा यरुजु मिन्हा व मा यन्जिलु मिनस्समाइ
व मा यअ-रुजु फीहा ७ व हुवर्-रहीमुल्-गफूर (२) व कालल्लजी-न
क-फरु ला तअ - तीनस्साअतु ७ कुल् बला व रब्बी ल - तअतियन्नकुम्
आलिमिल्-गैबि ८ ला यअ - जुबु अन्हु मिस्कालु जर्रतिन् फिस्समावाति व
ला फिल्अज्जि व ला अस्सह मिन् जालि-क

व ला अवबह इल्ला फी किताबिम्-
मुबीनिल्-५ (३) - लि-यज्जियल् - लजी-न
आमनू व अमिलुस्सालिहाति ७ उलाइ - क
लहुम् मग-फि-रतु व-व रिज्कुन् करीम (४)
वल्लजी-न सअी फी आयातिना मुआजिजी-न
उलाइ - क लहुम् अजाबुम् - मिरिज्जिन्
अलीम (५) व य-रल्लजी-न अतुल्-
अिल्मल्लजी उन्जि-ल इलै-क मिरिबि-क
हुवल्-हक्-क ॥ व यहदी इला सिरातिल्-
अज्जीजिल्-हमीद (६) व कालल्लजी-न
क-फरु हल् नदुल्लुकुम् अला रजुलिथ्युनब्बिउकुम्
इज्जा मुज्जिक्तुम् कुल् - ल मुमज्जकिन् ॥

فِي الْآخِرَةِ ۚ وَهُوَ الْعَلِيمُ الْعَزِيزُ ۝ يَسْمُو مَا يَكُونُ فِي الْأَرْضِ وَمَا
يَخْرُجُ مِنْهَا وَمَا يَنْزِلُ مِنَ السَّمَاءِ وَمَا يَعْرُجُ فِيهَا ۚ وَهُوَ
الرَّحِيمُ الْغَفُورُ ۝ وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لَا تَأْتِينَا السَّاعَةُ قُلْ
بَلْ وَرَأَيْتُمُ الْمَظْيَرَ عَلَى الْغَيْبِ لَا يَعْزُبُ عَنْهُ مِثْقَالُ ذَرَّةٍ
فِي السَّمَوَاتِ وَلَا فِي الْأَرْضِ وَلَا أَصْغَرُ مِنْ ذَلِكَ وَلَا أَكْبَرُ
إِلَّا فِي كِتَابٍ مُبِينٍ ۝ لَيُجْزَى الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ
أُولَئِكَ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَرِزْقٌ كَرِيمٌ ۝ وَالَّذِينَ سَعَوْا لِإِيْتِنَا
مُعْجِزِينَ أُولَئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مِنْ رِجْزِ الْإِلَهِ ۝ وَيَرَى الَّذِينَ
أَدْرَأُوا الْعِلْمَ الَّذِينَ آمَنُوا إِلَٰهَهُمْ رَبُّكَ وَهُوَ الْحَقُّ وَهُمْ عَلَى
بَيِّنَاتٍ ۝ وَرَأَى الْعَرَبِ الْعِزِينَ الْعِزِينَ ۝ وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا هَلْ نَدْرَأُكَ
عَلَى سَنَابِلِنَا ۚ لَوْ كُنَّا نَعْلَمُ الْغَيْبَ لَأَنزَلْنَاكَ مِنَ السَّمَاءِ
مِثْقَالُ ذَرَّةٍ ۚ أَفَتَدْرَى عَلَى الْغُفُلِ كَذِبًا أَوْ يَرَاهُ جُلُودُ الَّذِينَ
لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ فِي الْعَذَابِ وَالضَّلَالِ الْعَبِيدِ ۝ أَفَلَا يَرَوْنَ
إِلَّا مَآئِينَ يَتَّبِعُهُمْ وَمَا خَلَقَهُمْ مِنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ ۚ إِنَّ
تَنَاقُضَهُمْ بِهَٰذَا الْأَرْضِ أَوْ أَسْبَاطَهُمْ كَيْفَ تَكُونُ السَّاعَةُ
إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً لِّكُلِّ عَبِيدٍ ۝ وَلَقَدْ آتَيْنَا الْوَدَّ وَنَا
فَصَلَّاهُمْ لِيَأْتِيَهُمْ وَالظَّالِمُ وَأَتَىٰ آلَهُ الْعَبِيدِ ۝ أَم

इन्नुकुम् लफी खल् - किन् जदीद ८ (७) अफतरा अलल्लाहि कजिबन्
अम् बिही जिन्नतुन् ७ बलिल्लजी-न ला युअमिनू-न बिल्-आखिरति फिल् -
अजाबि वज्जलालिल्-बदीद (८) अ-फ-लम् यरी इला मा बं-न ऐदीहिम् व मा
खल्कहुम् मिनस्समाइ वल्अज्जि ७ इन् न - शअ नरिसफ् बिहिमुल्अर - ज
ओ नुस्कित् अलैहिम् कि-स-फम्-मिनस्समाइ ७ इन्-न फी जालि-क लआयतल्-
लिकुल्लि अब्दिम् - मुनीब ★(९) व ल-कद् आतेना दाव् - द मिन्ना
फज्ज-लन् ७ या जिबालु अन्बिबी म-अह वल्लै-र ८ व अलन्ना लहुल्-हदीद ७ (१०)

है और वह हिकमत वाला (और) खबरदार है। (१) जो कुछ जमीन में दाखिल होता है और जो उसमें से निकलता है और जो आसमान से उतरता है और जो उस पर चढ़ता है, सब उसकी मालूम है और वह मेहरबान (और) बख्शने वाला है। (२) और काफिर कहते हैं कि (क़ियामत की) घड़ी हम पर नहीं आएगी। कह दो, क्यों नहीं (आएगी), मेरे परवरदिगार की क़सम ! वह तुम पर ज़रूर आ कर रहेगी, (वह परवरदिगार) शैब का जानने वाला (है), ज़र्रा भर चीज़ भी उस से छिपी नहीं, (न) आसमानों में और न ज़मीन में और कोई चीज़ उस से छोटी या बड़ी नहीं, मगर रोशन किताब में (लिखी हुई) है। (३) इस लिए कि जो लोग ईमान लाए और नेक अमल करते रहे, उन को बदला दे। यही हैं, जिन के लिए बख़्शिश और इज़्जत की रोज़ी है। (४) और जिन्होंने हमारी आयतों में कोशिश की कि हमें हरा दें, उन के लिए सख्त दंद देने वाले अज़ाब की सज़ा है। (५) और जिन लोगों को इल्म दिया गया है, वे जानते हैं कि जो (क़ुरआन) तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से तुम पर नाज़िल हुआ है, वह हक़ है और ग़ालिब (और) तारीफ़ के क़ाबिल (ख़ुदा) का रास्ता बताता है। (६) और काफिर कहते हैं कि भला हम तुम्हें ऐसा आदमी बताएं, जो तुम्हें ख़बर देता है कि जब तुम (मर कर) बिल्कुल पारा-पारा हो जाओगे, तो नए सिरे से पैदा होंगे। (७) या तो उस ने ख़ुदा पर झूठ बांध लिया है, या उसे जुनून है। बात यह है कि जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं रखते, वह आफ़त और परले दर्जे की गुमराही में (पड़े) हैं। (८) क्या उन्होंने उस को नहीं देखा, जो उन के आगे और पीछे है यानी आसमान और ज़मीन। अगर हम चाहें, तो उनको ज़मीन में धंसा दें या उन पर आसमान के टुकड़े गिरा दें। इस में हर बन्दे के लिए, जो रुज़ूम करने वाला है, एक निशानी है। (९) ★

और हमने दाऊद को अपनी तरफ़ से बरतरी बख़्शी थी। ऐ पहाड़ों ! इन के साथ तस्बीह करो और परिदों को (उन के वश में कर दिया) और उनके लिए हमने लोहे को नर्म कर दिया, (१०)

अनिअ-मलू साबिगातिव-व कद्दिर् फिस्सदि वअ-मलू सालिहन् ७ इन्नी बिमा
तअ-मलू-न बसीर (११) व लि-मुलैमानर्-री-ह गुदुव्वुहा शहृव-व रवाहुहा शहृन्
व अ-सल्ला लहू अंनल्किरिर् ७ व मिनल्जिन्नि मय्यअ-मलु बे-न यदेहि बिइजि
रन्बिही ७ व मय्यजिग् मिन्हुम् अन् अमिरना नुजिक्हु मिन् अजाबिस्सीर (१२)

यअ - मलू - न लहू मा यशाउ मिम्-
महारी-व व तमासी-ल व जिफानिन् कलजवाबि
व कुदूरिर्-रासियातिन् ७ इअ-मलू आ - ल
दावू-द शुक् - रन् ७ व कलीलुम् - मिन्
अबादि-यश-शकूर (१३) फ-लम्मा कज्जना
अलेहिल्-मो-त मा दल्लहुम् अला मोतिही
इल्ला दाब्बतुल् - अजि तअकुलु
मिन्स-अ-तहू ७ फ-लम्मा खर्-र त-बय्यनतिल्-
जिन्नु अल्लौ कानू यअ-लमूनल्-गै-ब मा लबिस्
फिल् - अजाबिल् - मुहीन ७ (१४)
ल-कद् का-न लि-स-बइन् फी मस्कनिहिम्
आयतुन् ७ जन्नतानि अय्यमीनिव - व
शिमालिन् ७ कुलू मिररिक्क रन्बिकुम्

اعْمَلْ سَابِغَةً وَفِيهِ فِي النَّارِ وَاعْمَلْ صَالِحًا إِنِّي بِمَا تَصِفُونَ
عَبِيرٌ ۝ وَلَيْسَ لَكَ عَلَيْهِمْ حَقٌّ شَيْءٌ فَاغْلُظْ ۝ وَلَيْسَ لَكَ عَلَيْهِمْ حَقٌّ شَيْءٌ فَاغْلُظْ ۝ وَلَيْسَ لَكَ عَلَيْهِمْ حَقٌّ شَيْءٌ فَاغْلُظْ ۝
لَهُ عَيْنُ الْغُطُوفِ وَمَنْ الْحَيُّ مَنْ يَقُولُ بَيْنَ يَدَيْهِ بِإِذْنِ رَبِّهِ
وَمَنْ يَنْزِعُ مِنْهُ مِزَانٌ مِرْقَافَةٍ مَنْ عَذَابُ الْتَوْبِ ۝ يَعْلَمُونَ
لَهُ مَا يَشَاءُ مِنْ عَذَابٍ وَتَسْلِيلٍ وَجَدْنَا كَالْجَوَابِ وَقُدُورِ
أَرْسَابٍ مُدْبِغَةٍ ۝ دَاخِلٌ فِي عَذَابٍ مُنْتَهَى ۝ لَكَ فِي الْكُفُورِ
فَلَنَأْتِيَنَّكَ عَلَيْهِمُ الْمَوْتُ مَا دُلُّهُمْ عَلَى مَوْتِهِ إِلَّا دَأْبَهُ الْأَرْضِ
تَأْكُلُ مِنْ عَصَاكَ فَلَنُحَرِّقَنَّهُمْ فِي الْعَذَابِ الْأَلِيمِ ۝ أَنْ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ
الْعَذَابِ مَا يَبْغُوا فِي الْعَذَابِ الْمُبِينِ ۝ لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِي
مَسْكَنِهِمْ آيَةٌ ۝ جِئْتُمْ عَنْ قَبِيلِكُمْ وَأَنْتُمْ تَبْغُونَ ۝ لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِي
أَنْفُسِكُمْ آيَةٌ ۝ بَلَدُهُ خَلْفَهُ ۝ وَرَبُّهُ عَزَّ وَجَلَّ ۝ تَأْمُرُهُمْ أَنْ يَكُونُوا
عَلَيْهِمْ سَبِيلَ الْعَرَبِ ۝ وَإِنْ يَتَّبِعْتُمْ تَعْلِيمَهُمْ جَسَتْ مِنْ ذُلِّ الْإِنْسَانِ
حُطٌّ وَأَنْتُمْ تَبْغُونَ ۝ وَمَنْ يَتَّبِعْ الْكُفْرَ ۝ ذَلِكَ جَزَاءُ الْكُفْرِ ۝
لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِي أَنْفُسِكُمْ آيَةٌ ۝ وَمَنْ يَتَّبِعْ الْكُفْرَ ۝ وَمَنْ يَتَّبِعْ الْكُفْرَ ۝
الَّذِي يَبْغِيهَا فَرَى ظَاهِرَهُ ۝ وَقَدْ نَافِلُهُ الشَّيْءُ بِرَبِّهِ ۝
لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِي أَنْفُسِكُمْ آيَةٌ ۝ وَمَنْ يَتَّبِعْ الْكُفْرَ ۝ وَمَنْ يَتَّبِعْ الْكُفْرَ ۝
أَنْفُسُهُمْ فَسَمَكْنَاهُمْ أَصْلَابَهُمْ وَمَوَاقِلَهُمْ مِنْ مَكْرِي إِذَا فِي

वशकुरू लहू बलदतुन् तय्यिबतु व-व रब्बुन् गफूर (१५) फ-अअ-रजू फ-असल्ला
अलेहिम् संलल्-अरिमि व बददल्लाहुम् बिजन्नतैहिम् जन्नतैनि जवातै उकुलिन् खम्-
तिव-व अस्लिब-व शेइम्मिन् सिदरिन् कलील (१६) जालि-क जज्जना-
हुम् बिमा क-फरू ७ व हल् नुजाजी इल्लल्-कफूर (१७) व ज-अल्ला
बेनहुम् व बेनल्-कुरल्लती बारकना फ्रीहा कुरन् आहिरतव-व कद्दर्ना फीहस्स-र सीरू
फ्रीहा लयालि-य व अय्यामन् आमिनीन (१८) फ-कालू रब्बना बाअिद् बे-न
अस्फारिना व अ-लमू अन्कुसहुम् फ-ज-अल्लाहुम् अहादी-स व मज्जकना-हुम् कुल्-ल
मुमज्जकिन् ७ इन्-न फी जालि-क लआयातिल्-लिकुलिस् सबारिन् शकूर (१९)

कि कुशादा जिरहे बनाओ और कड़ियों को अन्दाजे से जोड़ो और नेक अमल करो, जो अमल तुम करते हो, मैं उन को देखने वाला हूँ। (११) और हवा को (हम) ने सुलेमान का ताबेअ कर दिया था, उस की सुबह की मंजिल एक महीने की राह होती और शाम की मंजिल भी महीने भर की होती और उन के लिए हम ने तांबे का चश्मा बहा दिया था और जित्तों में से ऐसे थे, जो उनके परवरदिगार के हुक्म से उनके आगे काम करते थे और जो कोई उनमें से हमारे हुक्म से फिरेगा, उस को हम (जहन्नम की) आग का मज्जा चखाएंगे। (१२) वे जो चाहते, वे उन के लिए बनाते यानी किले और मुजस्समे' और (बड़े-बड़े) लगन जैसे तलाब और देंगे, जो एक ही जगह रखी रहें। ऐ दाऊद की औलाद ! (मेरा) शुक्र करो और मेरे बंदों में शुक्रगुजार थोड़े हैं। (१३) फिर जब हम ने उनके लिए मौत का हुक्म दिया, तो किसी चीज से उनका मरना मालूम न हुआ, मगर धुन के कीड़े से, जो उनकी लाठी को खाता रहा। जब लाठी गिर पड़ी, तब जित्तों को मालूम हुआ (और कहने लगे) कि अगर वे ग़ैब जानते होते तो ज़िल्लत की तकलीफ़ में न रहते। (१४) सबा (वालों) के लिए उन के रहने-सहने की जगह में एक निशानी थी (यानी) दो बाग़, (एक) दाहिनी तरफ़ और (एक) बायीं तरफ़। अपने परवरदिगार का दिया खाओ और उसका शुक्र करो। (यहां तुम्हारे रहने को यह) पाकीजा शहर है और (वहां बरूशने को) खुदा-ए-गफ़्फ़ार। (१५) तो उन्होंने (शुक्रगुजारी से) मुंह फेर लिया, पस हम ने उन पर ज़ोर का सैलाब (बाढ़) छोड़ दिया और उन्हें उन के बाग़ों के बदले दो ऐसे वाग़ दिए, जिन के मेवे बद-मज्जा थे और जिन में कुछ तो भाऊ था और थोड़ी-सी बेरियां। (१६) यह हमने उन की ना-शुकी की उन को सज़ा दी और हम सज़ा ना-शुके ही को दिया करते हैं। (१७) और हमने उन के और (शाम में) उन की बस्तियों के दमियान, जिन में हमने बरकत दी थी, (एक दूसरे से मिले हुए) दीहात बनाए थे, जो सामने नज़र आते थे और उन में आने-जाने का अन्दाज़ा मुक़रर कर दिया था कि रात-दिन बे-खौफ़ व ख़तर चलते रहो, (१८) तो उन्होंने दुआ की कि ऐ परवरदिगार ! हमारे सफ़रों में दूरी (और लंबाई पैदा) कर दे और (इस से उन्होंने अपने हक़ में ज़ुल्म किया, तो हम ने (उन्हें बर्बाद कर के) उनके अफ़साने बना दिए और उन्हें बिल्कुल बिस्तर दिया। इसमें हर सब्र करने वाले और शुक्र करने वाले के लिए निशानियां

१. हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम की शरीअत में मुजस्समे यानी मूर्तियां बनाना जायज़ था। ये मूर्तियां नबियों और नेक लोगों और आलिमों और फ़रिश्तों की होती थीं, जो मस्जिदों और इबादतग़ाहों में रखी जाती थीं, और मसूद इस से यह होता था कि उन को देख कर लोगों के दिलों में खुदा की इबादत का ख़याल भौक़ हो और वह उस में ख़याल लगा हुआ हो। अरब वालों ने ग़ज़ब कर दिया कि मूर्तियों को पूजने लगे यानी उन को (अल्लाह की पनाह) खुदा समझने लगे, इन्सान के लिए जो सब से शानदार मल्लूक है, बे-इन्तिहा ज़िल्लत और अल्लाह तआला के हक़ में निहायत ज़ुल्म है। मुहम्मदी शरीअत में जानदार की मूर्ति बनाना मना कर दिया गया, ताकि बुतपरस्ती की जड़ कट जाए।

व ल-कद् सद्-द-क अलैहिम् इल्लीमु अन्नह कत्त-ब-अहु इत्ला करीकम्-मिनल्-
मुअ्मिनी-न (२०) व मा का-न लहू अलैहिम् मिन् मुल्लानिन् इत्ला लिनअ-ल-म
मंय्युअ्मिनु बिल्आलिररि मिम्मन् इ-व मिन्हा फी शायिकन् ७ व रब्बु-क
अला कुल्लि शेइन् हुफीअ * (२१) कुलिद्अुल्लजी - न ज-अम्नुम् मिन्

दूनित्साहि ६ ला यम्लिकू - न मिष्का - ल
जरंतिन् किस्समावाति व ला किल्भज्जि व
मा लहुम् फीहिमा भिन् शिर्किव्व-व मा लहू
मिन्हुम् भिन् अहीर (२२) व ला

तन्कञ्ज - शकाअतु अिन्दहू इल्ला लिमन्
अजिन लहू हत्ता इजा फुज्जिअ अन्
कुलूबिहिम् कालू माजा ॥ का - ल
रब्बुकुम् कालुहूक - क ८ व हुवल् -
अलिय्युल्-कबीर (२३) कुल् मय्यज्जुकुम्
मिनस्समावाति वलअज्जि कलिल्लाह॥

हैं। (१९) और ज़ैतान ने उन के बारे में अपना ख्याल सच कर दिखाया कि मोमिनों की एक जमाअत के सिवा वे उसके पीछे चल पड़े। (२०) और उसका उन पर कुछ जोर न था, मगर (हमारा) मकसूद यह था कि जो लोग आखिरत में शक रखते हैं, उन से उन लोगों को, जो उस पर ईमान रखते हैं अलग कर दें और तुम्हारा परवरदिगार हर चीज पर निगहबान हैं। (२१)★

कह दो कि जिन को तुम खुदा के सिवा (माबूद) ख्याल करते हो, उन को बुलाओ, वह आसमानों और ज़मीन में ज़र्रा भर चीज के भी मालिक नहीं हैं और न उन में उन की शिकंते है और न उन में से कोई खुदा का मददगार है। (२२) और खुदा के यहां (किसी के लिए) सिकारिश फ़ायदा न देगी, मगर उस के लिए, जिस के बारे में वह इजाज़त बरूशे, यहां तक कि जब उन के दिलों से बेचैनी दूर कर दी जाएगी, तो कहेंगे कि तुम्हारे परवरदिगार ने क्या फ़रमाया है? फ़रिश्ते कहेंगे कि हक़ (फ़रमाया है) और वह ऊंचे मंतेबे वाला (और) बहुत बड़ा है। (२३) पूछो कि तुम को आसमानों और ज़मीन से कौन रोज़ी देता है? कहो कि खुदा और हम या तुम (या तो) सीधे रास्ते पर हैं या खुली गुमराही में (२४) कह दो कि न हमारे गुनाहों की तुम से पूछ-गछ होगी और न तुम्हारे आमाल की हम से पूछ-गछ होगी। (२५) कह दो कि हमारा परवरदिगार हम को जमा करेगा, फिर हमारे दमियान इसाफ़ के साथ फ़ैसला कर देगा और वह खूब फ़ैसला करने वाला (और) इल्म वाला है। (२६) कहो कि मुझे वे लोग तो दिखाओ जिन को तुम ने (खुदा का) शरीक बना कर उस के साथ मिला रखा है। कोई नहीं, बल्कि वही (अकेला) खुदा ग़ालिब (और) हिकमत वाला है। (२७) और (ऐ मुहम्मद!) हमने तुम को तमाम लोगों के लिए खुशखबरी सुनाने वाला और डराने वाला बना कर भेजा है, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते। (२८) और कहते हैं, अगर तुम सच कहते हो, तो यह (क़ियामत का) वायदा कब पूरा होगा? (२९) कह दो कि तुम से एक दिन का वायदा है, जिस से न एक घड़ी पीछे रहोगे, न आगे बढ़ोगे। (३०)★●

और जो काफ़िर हैं, वे कहते हैं कि हम न तो इस क़ुरआन को मानेंगे और न उन (किताबों) को, जो उन से पहले की हैं और काश! (इन) ज़ालिमों को तुम उस वक़्त देखो, जब वे अपने परवरदिगार के सामने खड़े होंगे और एक दूसरे से रद्द कर रहे होंगे। जो लोग कमजोर समझे जाते थे, वे बड़े लोगों से कहेंगे कि अगर तुम न होते, तो हम ज़रूर मोमिन हो जाते। (३१)

कालल्लजीनस-तक्करु लिल्लजीनस-तुज्जिअकू अ-नह्नु स-दद् - नाकुम् अनिल्लहुदा

बअ-द इज् जा-अकुम् वल् कुन्तुम् मुजिरमीन (३२) व कालल्लजीनस-तुज्जिफू

लित्त्वजीनस-तक्बर् बल् मक-रुल्लैलि वन्नहारि इज् तम्-मुल्लनना अन् नक्फु-र

बिल्लाहि व नज़्-अ-ल लहू अन्दादत्, व असर्हन्दात-त लम्मा र-अबुल्-

अञ्जा-ब १ व ज-अल - नल् - अरला-ल फ्री

अञ्-नाकिल्लजी-न क-फ़रु १ हल् युज्जो-न

इत्ला मा कानू यअ-मलून (३३) व मा

असंल्ला फ्री क्यतिम्-मिन् नजीरिन् इल्ला

क्रा-ल मृत-रफहा॥ इत्ता बिमा॥ उसिल्तुम्

बिही काफिरून (३४) व कालू नहनु

अक्सर अम - वालंव-व औलादंव-व मा

नहन् बिम्-आज्जबीन (३५) क्ल् इन्-न रब्बी

यन्मसूत्र - रिज्ज-क लिमंध्यशाउ व यकिदरु

व लाकिन्-न अक्सरन्नासि ला यअ-लमून (३६) ★

व मा अम्बालुकुम् व ला औलादुकुम्

बिल्लती तक्ररिबूकूम बिन्दना जुल्फा इल्ला

मन आम - न व अमि - ल सालिहन्.

क-उलाइ-क लहम जजाउज़-ज़िअ-फ़ि बिम

— 1 —

आमिनून (३७) वल्लजा - न यस्मिन्

उल्लेख-क फ़िल्-अज़ाबि मुह-ज़रून (३८)

[illegible]

मध्यशास्त्रं मिन् प्रबोद्धं यं वाग्दत्तं लघु

बड़े लोग कमजोरों से कहेंगे कि भला हमने तुम को हिदायत से, जब वह तुम्हारे पास आ चुकी थी, रोका था, (नहीं) बल्कि तुम ही गुनाहगार थे। (३२) और कमजोर लोग बड़े लोगों से कहेंगे, (नहीं) बल्कि (तुम्हारी) रात-दिन की चालों ने (हमें रोक रखा था), जब तुम हम से कहते थे कि हम खुदा से कुफ़्र करें और उस का शरीक बनाएं और जब वे अज़ाब को देखेंगे, तो दिल में शर्मिन्दा होंगे और हम काफ़िरों की गर्दनों में तौक डाल देंगे। बस, जो अमल करते थे, उन्हीं का उन को बदला मिलेगा। (३३) और हमने किसी बस्ती में कोई डराने वाला नहीं भेजा, मगर वहां के खुशहाल लोगों ने कहा कि जो चीज़ तुम दे कर भेजे गये हो, हम उस के कायल नहीं। (३४) और (यह भी) कहने लगे कि हम बहुत सा माल और आल-औलाद रखते हैं और हम को अज़ाब नहीं होगा। (३५) कह दो कि मेरा रब जिस के लिए चाहता है, रोज़ी फ़ैला सकता है और (जिस के लिए चाहता है) तंग कर देता है, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते। (३६)★

और तुम्हारा माल और औलाद ऐसी चीज़ नहीं कि तुम को हमारा मुकर्रब बना दें, हां, (हमारा मुकर्रब वह है) जो ईमान लाया और नेक अमल करता रहा, ऐसे ही लोगों को उन के आमाल की वजह से दोगुना बदला मिलेगा और वे सुकून से कोठों में बैठे होंगे, (३७) जो लोग हमारी आयतों में कोशिश करते हैं कि हमें हरा दें, वे अज़ाब में हाज़िर किए जाएंगे। (३८) कह दो कि मेरा परवरदिगार अपने बन्दों में से, जिस के लिए चाहता है, रोज़ी कुशादा करता है और (जिसके लिए चाहता है) तंग कर देता है और तुम जो चीज़ खर्च करोगे, वह इसका (तुम्हें) बदला देगा। वह सब से बेहतर रोज़ी देने वाला है। (३९) और जिस दिन वह इन सब को जमा करेगा, फिर फ़रिश्तों से फ़रमाएगा, क्या ये लोग तुम को पूजा करते थे? (४०) वे कहेंगे, तू पाक है, तू ही

क्रालु सुब्-हान-क अन्त वलियुना मिन् द्वनिहिम् ७ बल् कानू यअ-बुद्वनल्-जिन्-न
अक्सरुहम् बिहिम् मुअमिनून (४१) फल्-यो-म ला यम्लिकु बअ-जुकुम् लिबअ-जिन्
नफ-अ-व-व ला ज़रन् ७ व नकूलु लिल्लजी-न अ-लमू जूकू अजाबन्नारिल्लती कुन्तुम्
बिहा तुक्जिबून (४२) व इजा तुत्ला अलैहिम् आयातुना बय्यिनातिन्
क्रालु मा हाजा इत्ला रजुलु य्युरिदु

अय्यसुददकुम् अम्मा कान यञ्-बुदु आबाउकुम् ६
व कालू मा हाजा इल्ला इपकुम्-
मुप्तरन् ७ व कालल्लजी - न क - फरू
लिल्हक्कि लम्मा जाअहुम् ॥ इन् हाजा
इल्ला सिहरुम्-मुबीन (४३) व मा
आतंनाहुम् मिन् कुतुबिय्यदरूसूनहा व मा
अर्सल्ला इलैहिम् कव्-ल-क मिन् नजीर ८

(४४) व कञ्जबल्लजी-न मिन् कब्लिहिम्॥
व मा बल्लू मिअ-शा-र मा आतैनाहुम् फ-कञ्जबू
रसुली फकै-फ का-न नकीर ★ (४५)

कुल् इन्ना अ - अज्जुक्कुम् बिवाहिदत्तिन्
अन् तक्कू लिल्लाहि मस्ता व फुरादा सुम्-म
त-त - फक्कल मा बिसाहिबिक्कुम् मिन्

हमारा दोस्त है, न ये, बल्कि ये जिन्नों को पूजा करते थे और अक्सर उन ही को मानते थे। (४१) तो आज तुम में से कोई किसी को नफ़ा और नुक़सान पहुंचाने का अस्तिथार नहीं रखता और हम ज़ालिमों से कहेंगे कि दोज़स के अज़ाब का, जिस को तुम झूठ समझते थे, मज़ा चखो। (४२) और जब उन को हमारी रोशन आयतें पढ़ कर सुनायी जाती हैं, तो कहते हैं, यह एक (ऐसा) शस्त्र है, जो चाहता है कि जिन चीज़ों की तुम्हारे बाप-दादा पूजा किया करते थे, उन से तुम को रोक दे और (यह भी) कहते हैं कि यह (क़ुरआन) सिर्फ़ झूठ है, जो (अपनी तरफ़ से) बना लिया गया है और काफ़िरों के पास जब हज़क आया तो उस के बारे में कहने लगे कि यह तो खुला जादू है। (४३) और हमने न तो उन (मुश्रिकों) को किताबें दीं, जिन को ये पढ़ते हैं और न तुम से पहले उन की तरफ़ कोई डराने वाला भेजा, (मगर उन्होंने ने झुठला दिया)। (४४) और जो लोग उन से पहले थे, उन्होंने ने झुठलाया था और जो कुछ हमने उन को दिया था, ये उस के दसवें हिस्से को भी नहीं पहुंचे। तो उन्होंने तेरे पैग़म्बरों को झुठलाया, सो मेरा अज़ाब कैसा हुआ? (४५)★

कह दो कि मैं तुम्हें एक नसीहत करता हूँ कि तुम खुदा के लिए दो-दो और अकेले-अकेले खड़े हो जाओ, फिर ग़ौर करो। तुम्हारे साथी को बिल्कुल सौदा नहीं, वह तो तुम को सस्त अज़ाब (के आने) से पहले सिर्फ़ डराने वाले हैं। (४६) कह दो कि मैं ने तुम से कुछ बदला मांगा हो, तो वह तुम्हारा। मेरा बदला खुदा ही के ज़िम्मे है और वह हर चीज़ से सबरदार है। (४७) कह दो कि मेरा परवरदिगार ऊपर से हज़क उतारता है (और वह) ग़ैब की बातों का जानने वाला है। (४८) कह दो कि हज़क आ चुका और बातिल (माबूद) न तो पहली बार पैदा कर सकता है और न दोबारा पैदा करेगा। (४९) कह दो कि अगर मैं गुमराह हूँ तो मेरी गुमराहीं का नुक़सान मुझी को है और और अगर हिदायत पर हूँ, तो यह उसीकी तुफ़ील है, जो मेरा परवरदिगार मेरी तरफ़ वहत्य भेजता है, बेशक वह सुनने वाला (और) नज़दीक है। (५०) और काश तुम देखो, जब ये घबरा जाएंगे तो (अज़ाब से) बच नहीं सकेंगे और नज़दीक ही से पकड़ लिए जाएंगे, (५१)

१. यानी जो माल और दीलत पहले काफ़िर रखते थे, उस का दसवां हिस्सा भी इन अरब के काफ़िरों के पास नहीं, मगर हम ने उन को भी तबाह व बर्बाद कर दिया और यह तो कुछ ऐसी हकीकत नहीं रखते, इन को मिटा देना क्या मुश्किल है?

व काल् आमन्ना बिही ८ व अन्ना लहुमुत् - तनावुशु मिम् - मकानिम् -
बजीदिन् - ८ (५२) - व कद् क-फरु बिही मिन् कलु ८ व यक्जि-
फून बिलौबि मिम्-मकानिम्-बजीद (५३) व ही-ल बेनहुम् व बे-न मा यस्तह-न
कमा फुअि-ल बिअश्याअि-हिम् मिन् कलु ८ इन्नहुम् कानू फी शविकम्-मुरीब (५४)

३५ सूरतु फातिरिन् ४३

(मक्की) इस सूरः में अरबी के ३२८६ अक्षर,

७६२ शब्द, ४५ आयतें और ५ रुकूअ हैं ।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

अल-हम्दु लिल्लाहि फातिरिस्समावाति

वल्अजि जाअिलिल् - मला-इकति रुमुल्न

उली अजिन्-हतिम्-मस्ना व मुला-स व

रुबा - अ ८ यज़ीदु फिल्लिल् मा यशाउ ८

इन्नल्ला-ह अला कुल्लि शैइन् कदीर (१)

मा यस्तहिल्लाहु लिन्नासि मिर्रह्-मतिन् फला

मुस्सि - क लहा ८ व मा युम्सिक् ८

फला मुसि-ल लहु मिम्बअ-दिही ८ व हुवल्-

अजीजुल्-हकीम (२) या अय्युहन्नासुज्जु

निअ-म-तल्लाहि अलेकुम् ८ हल् मिन् खालिक्त् गैरुल्लाहि यज्जु कुकुम् मिनस्समाइ वल्अजि ८

ला इला-ह इल्ला हु-व ८ फ-अन्ना तुअ-फकून (३) व इय्युकज्जिबू-क फ-कद् कुज्-

जिबत् रुमुलुम्-मिन् कलि-क ८ व इलल्लाहि तुज्अुल्-उमूर (४) या अय्युहन्नासु

इन्-न वअ-दल्लाहि हुक्कुन् फला तगुरन्नकुमुल्-हयातुदुन्या ८ व ला यगुरन्नकुम्

बिल्लाहिल् - गरूर (५) इन्नशंता - न लकुम् अदुवुन् फतखिज्जुह

अदुवुन् ८ इन्नमा यदअ् हिज्बह् लियकून् मिन् अस्हाबिस्सअीर ८

(६) अल्लजी-न क - फरु लहुम् अजाबुन् शदी - दुन् ८ वल्लजी - न

आमन् व अमिलुस्सालिहाति लहुम् मरिफ-र-तु-व-व अजरुन् कबीर (७)



और कहेंगे कि हम इस पर ईमान ले आए और (अब) इतनी दूर में उन का हाथ ईमान के लेने को कैसे पहुंच सकता है ? (५२) और पहले तो इस से इंकार करते रहे और बिन देखे दूर ही में (अटकन के) तीर चलाते रहे । (५३) और उन में और उन की स्वाहिश की चीखों में पर्दा रोक बना दिया गया, जैसा कि पहले उन के हमजिमों (उन्हीं जैसे लोगों) में किया गया, वह भी उलझन में डालने वाले शक में पड़े हुए थे । (५४)★



४३ सूरः फ़ातिर ३५

सूरः फ़ातिर मक्की है और इस में ४५ आयतें और पांच रुकूअ हैं ।

शुरू खुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है ।

सब तारीफ़ खुदा ही के लिए है, जो आसमानों और ज़मीन का पैदा करने वाला (और) फ़रिश्तों को क़ासिद बनाने वाला है, जिन के दो-दो और तीन-तीन और चार-चार पर हैं, वह (अपनी) मरहूलक में जो चाहता है, बढ़ाता है । बेशक खुदा हर चीज़ पर कुदरत रखता है । (१) खुदा जो अपनी रहमत (का दरवाज़ा) खोल दे तो कोई उस को बन्द करने वाला नहीं और जो बन्द कर दे तो उस के बाद कोई उस को खोलने वाला नहीं और वह ग़ालिब हिकमत वाला है । (२) लोगों ! खुदा के जो तुम पर एज़मान हैं, उन को याद करो । क्या खुदा के सिवा कोई और पैदा करने वाला (और रोज़ी देने वाला) है, जो तुम को आसमान और ज़मीन से रोज़ी दे ? उस के सिवा कोई माबूद नहीं, पर तुम कहां बहकें फिरते हो ? (३) और (ऐ पैग़म्बर !) अगर ये लोग तुम को झुठलाएँ, तो तुम में पहले भी पैग़म्बर झुठलाए गए हैं और (सब) काम खुदा ही की तरफ़ लौटाए जायेंगे । (४) लोगों ! खुदा का वायदा सच्चा है, तो तुम को दुनिया की ज़िदगी धोखे में न डाल दे और न (ज़तान) धोखा देने वाला तुम्हें धोखा दे । (५) ज़तान तुम्हारा दुश्मन है, तुम भी उसे दुश्मन ही समझो । वह अपने (पैरुओं के) गिराह को बुलाता है, ताकि वह दोऊन वालों में हों, (६) जिन्होंने कुफ़्र किया । उन के लिए सख्त अज़ाब है और जो ईमान लाए और नेक अमल करते रहे, उन के लिए बलिशाह और बड़ा सवाब है । (७)★

भला जिस शरूस को उस के बुरे आमाल सजा कर के दिखाए जाएं और वह उन को उम्दा समझने लगे, तो (क्या वह भला आदमी जैसा हो सकता है) ? बेशक खुदा जिस को चाहता है, गुमराह करता है और जिस को चाहता है, हिदायत देता है, तो उन लोगों पर अफ़सोस कर के तुम्हारा दम न निकल जाए। ये जो कुछ करते हैं, खुदा उसे जानता है। (८) और खुदा ही तो है, जो हवाए चलाता है और वे बादल को उभारती हैं, फिर हम उस को एक बे-जान शहर की तरफ़ चलाते हैं, फिर उस से ज़मीन को उस के मरने के बाद ज़िदा कर देते हैं। इसी तरह मुर्दों को जी उठना होगा। (९) जो शरूस इज़ज़त की तलब में है, तो इज़ज़त तो सब खुदा ही की है। उसी की तरफ़ पाकीज़ा कलिमे चढ़ते हैं और नेक अमल उन को बुलंद करते हैं और जो लोग बुरे-बुरे मक्क करते हैं, उन के लिए सख्त अज़ाब है और उन का मक्क नाबूद हो जाएगा। (१०) और खुदा ही ने तुम को मिट्टी से पैदा किया, फिर तुल्ले से, फिर तुम को जोड़ा-जोड़ा बना दिया और कोई औरत न हामिला होती है, और न जानती है, मगर उस के इल्म से और न किसी बड़ी उम्र वाले को उम्र ज़्यादा दी जाती है और न उस की उम्र कम की जाती है, मगर (सब कुछ) किताब में (लिखा हुआ है)। बेशक यह खुदा को आसान है। (११) और दोनों दरिया (मिल कर) एक जैसे नहीं हो जाते, यह तो मीठा है, प्यास बुझाने वाला, जिस का पानी खुशगवार है और यह खारी है, कड़वा और सब से तुम ताज़ा गोश्त खाते हो और ज़ेवर निकालते हो, जिसे पहनते हो। और तुम दरिया में कश्तियों को देखते हो कि (पानी को) फाड़ती चली जाती हैं, ताकि तुम उस के फ़रल से (रोज़ी) खोजो और ताकि शुक्र करो। (१२) वही रात को दिन में दाखिल करता और (वही) दिन को रात में दाखिल करता है और उसी ने सूरज-चांद को काम में लगा दिया है। हर-एक एक मुकर्रर वक़्त तक चल रहा है। यही खुदा तुम्हारा परवरदिगार है, उसी की बादशाही है और जिन लोगों को तुम उस के सिवा पुकारते हो, वे खज़ूर की गुठली के छिलके के बराबर भी तो (किसी चीज़ के)

मालिक नहीं। (१३) अगर तुम उन को पुकारो, तो वे तुम्हारी पुकार न सनें और अगर सुन भी लें, तो तुम्हारी बात को झुबूल न कर सकें और क्रियामत के दिन तुम्हारे शिकं से इंकार कर देंगे और बा-खबर (खुदा) की तरह तुम को कीईं खबर नहीं देगा। (१४) ★●

लोगो ! तुम (सब) खुदा के मुहताज हो और खुदा बे-परवा, हम्द (वसना) के लायक है। (१५) अगर चाहे तो तुम को नाबूद कर दे और नयी मल्लूक ला आबाद करे। (१६) और यह खुदा को कुछ मुश्किल नहीं। (१७) और कोई उठाने वाला दूसरे का बोझ न उठाएगा और कोई बोझ में दबा हुआ अपना बटाने को किसी को बुलाए, तो कोई उस में से कुछ न उठाएगा, चाहे रखतेदार ही हो। (ऐ पैगम्बर !) तुम उन ही लोगों को नसीहत कर सकते हो, जो बिन-देखे अपने परवरदिगार से डरते और नमाज़ एहतिमाम से पढ़ते हैं और जो शरूस पाक होता है, अपने ही लिए पाक होता है और (सब को) खुदा ही की तरफ लौट कर जाना है। (१८) और अंधा और आंख वाला बराबर नहीं। (१९) और न अंधेरा और रोशनी, (२०) और न साया और घूप, (२१) और न ज़िदे और मुर्दे बराबर हो सकते हैं। खुदा जिस को चाहता है, सुना देता है और तुम उन को जो कब्रों में (दफन) हैं, सुना नहीं सकते। (२२) तुम तो सिर्फ़ हिदायत करने वाले हो। (२३) हमने तुम को हक के साथ खुशखबरी सुनाने वाला और डराने वाला भेजा है और कोई उम्मत नहीं, मगर इस में हिदायत करने वाला गुस्सर चुका है। (२४) और अगर ये तुम्हें झुठलाएं, तो जो लोग उन से पहले थे, वे भी झुठला चुके हैं, उन के पास उन के पैगम्बर निशानियां और सहीफ़े और रोशत किताबें ले-ले कर आते रहे। (२५) फिर मैं ने काफ़िरों को पकड़ लिया, सो (देख लो कि) मेरा अज़ाब कैसा हुआ। (२६) ★

क्या तुम ने नहीं देखा कि खुदा ने आसमान से मेंह बरसाया तो हम ने उस से तरह-तरह के रंगों के मेवे पैदा किए और पहाड़ों में सफ़ेद और लाल रंगों के क़तए (टुकड़े) और (कुछ) काले-स्याह हैं। (२७) इंसानों और जानवरों और चौपायों के भी कई तरह के रंग हैं। खुदा से तो उस के बन्दों में से वही डरते हैं, जो इल्म वाले हैं। वेशक़ खुदा सालिब (और) बलशने वाला है। (२८)

इन्ललजी-न यस्तू-न किताबल्लाहि व अकामुस्सला-त व अन्फकू मिम्मा र-जक-
नाहुम् सिरर-व अलानि-य-तय्यर-ज-न तिजारतल्लन् तबूर ॥ (२६) लियुवफिफ-
यहुम् उजूरहुम् व यजीदहुम् मिन् फज्जलिही ॥ इन्लह गफूरन् शकूर (३०) बल्लजी
ओहना इले - क मिनल्किताबि हुबल्हक्कु मुसदिदकल्लिमा बे-न यदेह ॥

इन्लला - ह बिअिबादिही ल - खबीरम्-
बसीर (३१) सुम् - व औरस्नल् -
किताबल् - लजीनस्तफैना मिन् बिबादिना ॥
फमिन्हुम् आलिमुल् - लिनफिसही ॥ व
मिन्हुम् मुक्तसिदुन् ॥ व मिन्हुम् साबिकुम्-बिल्-
खैराति बिइज्जिल्लाहि ॥ जालि-क हुबल्-फज्जलुल्-
कबीर ॥ (३२) जन्नातु अदिनय्यदखुलूनहा युहल्-
लौ-न फ्रीहा मिन् असावि-र मिन् ज-ह-बिब-व
लुब्लुअन् ॥ व लिबासुहुम् फ्रीहा हरीर (३३)
व कालुल्-हम्दु लिताहिल्लजी अज्-ह-व
अल्लल् - ह-ज-न ॥ इन्-न रब्बना ल-गफूरन्
शकूर-नि-॥ (३४) -ल्लजी अ-हल्लना
दारल् - मुकामति मिन् फज्जलिही ॥ ला

أَقَامُوا الصَّلَاةَ وَآتَوُا الزَّكَاةَ بِرِزْقِهِمْ وَأَعْلَانِ لِلْعَالَمِينَ إِيمَانَهُمْ
لَنْ يَتُوبَ عَلَيْهِمْ أَجْرُهُمْ يَوْمَ تَحْمِلُ أَرْضُهُمْ إِنَّهُمْ خَشَوْا
هُوَ الَّذِي أُوتِيتُمْ مِنَ الْكِتَابِ مِنْ قَبْلِهِ هُوَ الَّذِي هُوَ مَعَكُمْ
بَيْنَ يَدَيْهِ إِنَّ اللَّهَ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۝ تَزَوَّجْنَا الْكَافِرَ
الَّذِينَ اصْطَفَيْنَا مِنْ أَنْبِيَائِهِمْ فَمِنْ قَبْلِهِمْ طَافُوا فِي الْأَرْضِ
وَوَجَدُوا سُبُلَ الْغَايِبِ ۚ بَارِئِينَ لَكَ مِنْ ذَلِكَ هُوَ الْفَضْلُ الْكَبِيرُ ۚ عَلِمْنَا
عَلَيْكَ تَكَلُّفَ النَّاسِ مِنْ بَيْنِ أَيْدِيهِمْ أَنْ تَبْلُغَ إِلَى الْكَافِرِ ۚ
إِنَّهُمْ يَخِفُّونَ مِنْكَ ۚ وَالَّذِينَ لَا يَكْفُرُونَ بِالْكَافِرِ ۚ إِنَّا جَمَعْنَاهُمْ
لَكَ رَجْمًا غَافِقًا ذُكُورًا ۚ الَّذِي أَتَاكَ مِنَ الْغَمَامِ ۚ مِنْ قَبْلِهِمْ
لَا يَسْتَأْذِنُ الْكَافِرُ وَلَا يَسْتَأْذِنُ الْغَايِبُ ۚ وَالَّذِينَ تَعْلَمُ مَا فِي الْأَرْضِ
جَمْعُهُمْ لَا يَفْعَلُ عَلَيْهِمْ شَيْئًا وَلَا يَخَفُ عَلَيْهِمْ شَيْئًا ۚ عَلِمْنَا
كَذَلِكَ تَجْرِي أُمُورُكَ وَهُمْ يَصْطَرِّحُونَ فِيهَا رَبَّنَا أَخْرِجْنَا
تَعْمَلْ صَالِحًا غَيْرَ الَّذِي كُنَّا عَمَلًا ۚ أَوَلَمْ نَعْلَمْ كُنَّا عَمَلًا غَيْرًا
مَنْ تَكْفُرْ ۚ وَجَاءَ الْفَوْزُ لِلْغَايِبِ ۚ فَذُوقُوا الْعَذَابَ ۚ مِنَ قَوْلِهِمْ
لَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ۚ وَالَّذِينَ لَا يُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَيَكْفُرُونَ بِالْحَقِّ
الَّذِينَ يَكْفُرُونَ بِالْحَقِّ ۚ وَالَّذِينَ لَا يُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَيَكْفُرُونَ بِالْحَقِّ
الَّذِينَ لَا يُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَيَكْفُرُونَ بِالْحَقِّ ۚ وَالَّذِينَ لَا يُؤْتُونَ

यमस्सुना फ्रीहा न-स-बु-व ला यमस्सुना फ्रीहा लुगूब (३५) बल्लजी-न क-फरू
लहुम् नार ज-हल्ल-म ॥ ला युक्ज्जा अलैहिम् फ-यमूत् व ला युक्ज्जफकू अन्हुम् मिन्
अजाबिहा ॥ कज्जालि-क नज्जी कुल्-ल कफूर ॥ (३६) व हुम् यस्तरिस्-न
फ्रीहा ॥ रब्बना अख्रिज्जा नअ-मल् सलिहन् गैरल्लजी कुन्ना नअ - मलु ॥
अ-व लम् नुअम्मिर-कुम् मा य-त - जक्कर फ्रीहि मन् त-जक्कर-र व
जा-अकुमुल्लजीर ॥ फ - जूकू फमा लिज्जालिमी-न मिन् नसीर ★ (३७)
इन्लला-ह आलिमु गैबिस्समावाति बल्अज्जि ॥ इन्लह अलीमुम्-बिजातिस्सुदूर (३८)
हुबल्लजी ज-अ - लकुम् खलाइ-फ फिल्लज्जि ॥ फ-मन् क-फ-र फ - अलैहि
कुफरहुम् ॥ व ला यजीदुल् - काफिरी-न कुफरहुम् अिन्-द रबिबिहम् इल्ला
मक्तन् ॥ व ला यजीदुल् - काफिरी-न कुफरहुम् इल्ला खसारा (३९)

जो लोग खुदा की किताब पढ़ते और नमाज की पाबन्दी करते हैं और जो कुछ हमने उन को दिया है, उस में से छिपे और जाहिर खर्च करते हैं, वे उस तिजारत (के फायदे) के उम्मीदवार हैं, जो कभी तबाह नहीं होगी, (२९) क्योंकि खुदा उन को पूरा-पूरा बदला देगा और अपने फ़ज़ल से कुछ ज्यादा भी देगा। वह तो बरूशने वाला (और) कद्रदां है। (३०) और यह किताब जो हमने तुम्हारी तरफ़ भेजी है, बर-हक़ है और उन (किताबों) की तस्दीक़ करती है, जो इस से पहले की हैं। बेग़क़ खुदा अपने बन्दों से खबरदार (और उन को) देखने वाला है। (३१) फिर हमने उन लोगों को किताब का वारिस ठहराया, जिन को अपने बन्दों में से चुना, तो कुछ तो उन में से अपने आप पर जुल्म करते हैं और कुछ बीच के रास्ते पर हैं और कुछ खुदा के हुक्म से नेकियों में आगे निकल जाने वाले हैं। यही बड़ा फ़ज़ल है, (३२) (उन लोगों के लिए) हमेशा की जन्नतें (हैं) जिन में वे दाख़िल होंगे। वहां उन को सोने के कंगन और मोती पहनाए जाएंगे और उन का लिबास रेशमी होगा। (३३) वे कहेंगे कि खुदा का शुक्र है, जिस ने हम से ग्रम दूर किया। बेशक़ हमारा परवरदिगार बरूशने वाला (और) कद्रदां है, (३४) जिस ने हम को अपने फ़ज़ल से हमेशा के रहने के घर में उतारा। यहां न तो हम को रंज पहुंचेगा और न हमें थकन ही होगी। (३५) और जिन लोगों ने कुफ़ किया, उन के लिए दोज़ख़ की आग़ है, न उन्हें मौत आएगी कि मर जाएं और न उस का अज़ाब ही उन से हल्का किया जाएगा। हम हर एक ना-शुक्र को ऐसा ही बदला दिया करते हैं। (३६) वे उस में चिल्लाएंगे कि ऐ परवरदिगार! हम को निकाल ले, (अब) हम नेक अमल किया करेंगे, न वह जो (पहले) करते थे। क्या हमने तुम को इतनी उम्र नहीं दी थी कि उस में जो सोचना चाहता, सोच लेता और तुम्हारे पास डराने वाला भी आया, तो अब मज़े चलो, ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं। (३७) ★

बेशक़ खुदा ही आसमानों और ज़मीन की छिपी बातों का जानने वाला है। वह तो दिल के भेदों तक को जानता है। (३८) वही तो है, जिस ने तुम को ज़मीन में (पहलों का) जानशी बनाया, तो जिस ने कुफ़ किया, उस के कुफ़ का नुक्सान उसी को है और काफ़िरों के हक़ में उन के कुफ़ से परवरदिगार के यहां ना-खुशी ही बढ़ती है और काफ़िरों को उन का कुफ़, नुक्सान ही

कुल् अ-र-ऐ-नुम् गु-र-का-अ-कुमुल्लजी-न तद्भू-न मिन् हुनिल्लाहि ७ अरुनी माजा
स-ल-कू मिनल्अजि अम् लहुम् शिरकुन् फिस्समावाति ७ अम् आतनाहुम् किताबन्
फहुम् अला बय्यिनतिम्-मिन्हु ७ बल् इय्यअदुम्-आलिमू-न बअ-जुहुम् बअ-जन् इल्ला
गुरुरा (४०) इन्नल्ला - ह गुम्सिकुस - समावाति बल्अर - ज अन्

तबूला ७ व लइन् जालता इन्
अम-स-कहुमा मिन् अ-हदिम् - मिम्बअ-दिही ७
इन्नहू का-न हलीमन् गफूरा (४१) व
अक्समू बिल्लाहि जह-द ऐमानिहिम् लइन्
जा-अहुम् नजीरुल्-ल-य-कूनन्-न अहदा मिन्
इहदल् - उममि ७ फ-लम्मा जा - अहुम्
नजीरुम्मा जादहुम् इल्ला नुफू-र-नि- ७ (४२)
स्तिक्वारन् फिल्अजि व मकरस्सय्यिड ७

व ला यहीकुल् - मकरस्सय्यिड इल्ला
बिअहिलही ७ फ - हल् यन्जुरू - न इल्ला
मुन्नतल् - अब्वली-न ७ फ - लन् तजि - द
लिमुन्नतिल्लाहि तब्दीला ७ व लन्
तजि-द लिमुन्नतिल्लाहि तह्वीला (४३)
अ-व लम् यसीरू फिल्अजि फयत्जुरू कै-फ का-न

आकिबतुल्लजी-न मिन् कबिलहिम् व कान् अशद्-द मिन्हुम् कुव्वतन् ७ व मा कानल्-
लाहु लियुअ-जिजहू मिन् शैइन् फिस्समावाति व ला फिल्अजि ७ इन्नहू का-न अलीमन्
कदीरा (४४) व लो युआखिजुल्लाहुन्-ना-स बिमा क-सबू मा त-र-क
अला अहिरहा मिन् दाबितिव-व लाकिथ्युअलिखरुहुम् इला अ-जलिम्-मुसम्मन् ७
फ-इजा जा-अ अ-ज-लुहुम् फ-इन्नल्ला-ह का-न बिअबादिही बसीरा * (४५)



३६ सूरतु यासीन ४९

(मक्की) इस सूर: में अरबी के ३०६० अक्षर, १७३६ शब्द, ८३ आयतें और ५ रकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिरं ह्मानिरंहीम •

यासीन् ७ (१) वल्कुरआनिल्-हकीम ७ (२) इन्न-क लमिनल्-मुसलीन ७ (३)

झ्यादा करता है। (३६) भला तुम ने अपने शरीकों को देखा, जिन को तुम खुदा के सिवा पुकारते हो, मुझे दिखाओ कि उन्होंने ज़मीन से कौन सी चीज़ पैदा की है, या (बताओ कि) आसमानों में उन की शिकंठा है या हम ने उन को किताब दी है, तो वे उस की सनद रखते हैं? (इन में मे कोई बात भी नहीं), बल्कि ज़ालिम जो एक दूसरे को वायदा देते हैं, सिर्फ धोखा है। (४०) खुदा ही आसमानों और ज़मीन को थामे रखता है कि टल न जाए अगर वे टल जाएं तो खुदा के सिवा कोई ऐसा नहीं जो उनको थाम सके। बेशक वह बुदबंदार (और) बरूशने वाला है। (४१) और ये खुदा की सलत-सलत क़स्में खाते हैं कि अगर उन के पास कोई हिदायत करने वाला आए, तो ये हर एक उम्मत से बढ़कर हिदायत पर हों, मगर जब उन के पास हिदायत करने वाला आया तो उस से उन को नफरत ही बढ़ी। (४२) यानी (उन्होंने) मुल्क में घमंड करना और बुरी चाल चलना (अस्तिथार किया) और बुरी चाल का वबाल उस के चलने वाले ही पर पड़ता है। ये अगले लोगों के रवंगे के सिवा और किसी चीज़ के इत्तिज़ार में नहीं, सो तुम खुदा की इबादत में हरगिज़ तब्दीली न पाओगे और खुदा के तरीक़े में कभी तब्दीली न देखोगे। (४३) क्या उन्होंने ज़मीन में सर नहीं की, ताकि देखते कि जो लोग उन से पहले थे, उन का अंज़ाम क्या हुआ, हालांकि वे इन से ताक़त में बहुत ज्यादा थे। और खुदा ऐसा नहीं कि आसमानों और ज़मीन में कोई चीज़ उस को आजिज़ कर सके। वह इल्म वाला (और) कुदरत वाला है। (४४) और अगर खुदा लोगों को उनके आमाल की वजह से एकड़ने लगता तो रू-ए-ज़मीन पर एक भी चलने-फिरने वाले को न छोड़ता, लेकिन वह उन को मुक़रर वक़्त तक मोहलत दिए जाता है। सो जब उन का वक़्त आ जाएगा, तो (उन के आमाल का बदला देगा), खुदा तो अपने बन्दों को देख रहा है। (४५) ★



३६ सूर: यासीन ४९

सूर: यासीन मक्की है और इस में तिरासी आयतें और पांच रकूअ हैं।
शुरू खुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

यासीन, (१) क़सम है क़ुरआन की, जो हिकमत से भरा हुआ है। (२) (ऐ मुहम्मद !)

१. यानी अल्लाह तआला के उस तरीक़े का, जो अगले लोगों के साथ बरता जाता था, इत्तिज़ार करते हैं और वह यह कि उन के कुफ़ की वजह से उन पर अज़ाब नाज़िल किया जाता था, ये भी अज़ाब ही के इत्तिज़ार में हैं।

बेशक तुम पैगम्बरों में से हो, (३) सीधे रास्ते पर। (४) (यह खुदा-ए) गालिब (और) मेहरबान ने नाज़िल किया है, (५) ताकि तुम उन लोगों को, जिन के बाप-दादा की तंबीह नहीं की गयी थी, तंबीह कर दो। वे गफलत में पड़े हुए हैं। (६) उन में से अक्सर पर (खुदा की) बात पूरी हो चुकी है, सो वे ईमान नहीं लाएंगे। (७) हमने उन की गरदनों में तौक डाल रखे हैं और वे ठोड़ियों तक (फसे हुए) हैं, तो उन के सर उलल रहे हैं। (८) और हमने उन के आगे भी दीवार बना दी और उन के पीछे भी, फिर उन पर पर्दा डाल दिया, तो ये देख नहीं सकते। (९) और तुम उन को नसीहत करो या न करो, उन के लिए बराबर है, वे ईमान नहीं लाने के। (१०) तुम तो सिर्फ उस शख्स को नसीहत कर सकते हो, जो नसीहत की पैरवी करे और खुदा से गायबाना डरे सो उस को मरिफ़रत और बड़े सवाब की खुशखबरी सुना दो। (११) बेशक हम मुर्दों को ज़िदा करेंगे और जो कुछ वे आगे भेज चुके और (जो) उन के निशान पीछे रह गये, हम उन को लिख देते हैं और हर चीज़ को हमने रोशन किताब (यानी लोहे महफूज़) में लिख रखा है। (१२) ★

और उन से गांव वालों का किस्सा बयान करो, जब उन के पास पैगम्बर आये।' (१३) (यानी) जब हमने उन की तरफ़ दो (पैगम्बर) भेजे, तो उन्होंने उन को झुठलाया, फिर हमने तीसरे से ताक़त पहुंचायी, तो उन्होंने ने कहा कि हम तुम्हारी तरफ़ पैगम्बर हो कर आए हैं।' (१४) वे बोले कि तुम (और कुछ) नहीं, मगर हमारी तरह के आदमी (हो) और खुदा ने कोई चीज़ भी नाज़िल नहीं की, तुम सिर्फ़ झूठ बोलते हो। (१५) उन्होंने ने कहा कि हमारा परवरदिगार जानता है कि हम तुम्हारी तरफ़ (पैग़ाम) दे कर भेजे गये हैं। (१६) और हमारे ज़िम्मे तो साफ़-साफ़ पहुंचा देना है और बस। (१७) वे बोले कि हम तुम को ना-मुबारक देखते हैं। अगर तुम मानोगे नहीं, तो हम तुम्हें संगसार कर देंगे और तुम को हम से दुख देने वाला अज़ाब पहुंचेगा। (१८) उन्होंने कहा कि तुम्हारी नहूसत तुम्हारे साथ है।' क्या इसलिए कि तुम को नसीहत की गयी, बल्कि ऐसे लोग हो जो हम से आगे निकल गये हो।' (१९) और शहर के परले किनारे से एक आदमी दौड़ता हुआ आया।' कहने लगा कि ऐ मेरी क्रौम! पैगम्बरों के पीछे चलो, (२०) ऐसों के जो तुम से बदला नहीं मांगते और वे सीधे रास्ते पर हैं। (२१) और मुझे क्या है कि मैं उस की

१. मुल्क रूम में अन्ताकिया एक गांव था, यह वहां के लोगों का किस्सा है।

२. कहते हैं, ये लोग हज़रत ईसा अलै० के हवारीयों में से थे, जिन को अल्लाह तआला ने हज़रत ईसा के बाद पैगम्बरी अता फ़रमायी थी। पहले दो पैगम्बरों का नाम यूहन्ना और शमऊन था और तीसरे का शुक्रम।

३. यानी नहूसत जो तुम्हारे बुरे आमाल की वजह से है, तुम जहां भी होंगे, वह तुम्हारे साथ होगी।

४. यानी जो नसीहत तुम को की गयी, क्या वह तुम्हारे लिए नहूसत की वजह मावित हुई? यह हरगिज़ नहीं है, बल्कि तुम्हारी शमाते आमाल तुम्हारे लिए बवाल की वजह हो रही है।

५. यह नहूस शहर के करीब एक ग़ार में इबादत करता था। जब उस ने पैगम्बरों के आने का हाल सुना, तो शहर में दौड़ता हुआ आया और वहां के लोगों से कहने लगा कि पैगम्बरों की इलाअत करो और उनकी हिदायत पर चलो, उस का नाम हबीबा था।

इबादत न करूं, जिस ने मुझे पैदा किया और उसी की तरफ़ तुम को लौट कर जाना है। (२२)

क्या मैं उन को छोड़ कर औरों को माबूद बनाऊं ? अगर खुदा मेरे हक़ में नुक़सान करना चाहे, तो

उन की सिफ़ारिश मुझे कुछ भी फ़ायदा न दे सके और न वे मुझे छुड़ा ही सकें। (२३) तब तो मैं

खुली गुमराही में पड़ गया। (२४) मैं तुम्हारे परवरदिगार पर ईमान लाया हूं, सो मेरी बात मुन

रखो। (२५) हुक्म हुआ कि बहिश्त में दाखिल हो जा। बोला, काश ! मेरी क्रौम को खबर

हो, (२६) कि खुदा ने मुझे बरक़श दिया और इज़्ज़त वालों में किया। (२७) और हमने उस के बाद

उस की क्रौम पर कोई लश्कर नहीं उतारा और न हम उतारने वाले थे ही। (२८) वह तो सिर्फ़

एक चिघाड़ की (आग थी,) सो वे (इस से) यकायक बुझ कर रह गये। (२९) बन्दों पर अफ़सोस

है कि उन के पास कोई पैग़म्बर नहीं आता, मगर उस का मज़ाक़ उड़ाते हैं। (३०) क्या उन्होंने ने

नहीं देखा कि हमने उन से बहुत से लोगों को हलाक कर दिया था। अब वे उन की तरफ़ लौट कर

नहीं आएंगे। (३१) और सब के सब हमारे सामने हाज़िर किए जाएंगे। (३२) ★

और एक निशानी उन के लिए मुर्दा ज़मीन है कि हम ने उस को ज़िंदा किया और उसमें से

अनाज उगाया, फिर ये उस में से खाते हैं। (३३) और उस में खजूरों और अंगूरों के बाग़ पैदा किए

और उस में चश्मे जारी किए, (३४) ताकि ये उन के फल खाएं और उन के हाथों ने तो उन को

नहीं बनाया, तो फिर क्या ये शुक़ नहीं करते ? (३५) वह खुदा पाक है, जिस ने ज़मीन के, पेड़-

पौधों के और खुद उन के और जिन चीज़ों की उन को खबर नहीं, सब के जोड़े बनाए। (३६) और

एक निशानी उन के लिए रात है कि उस में से हम दिन को खींच लेते हैं, तो उस वक़्त उन पर अंधेरा

छा जाता है। (३७) और सूरज अपने मुकर्रर रास्ते पर चलता रहता है। यह (खुदा-ए-) ग़ालिब

(और) दाना का (मुकर्रर किया हुआ) अन्दाज़ा है। (३८) और चांद की भी हम ने मंजिलें

मुकर्रर कर दी, यहां तक कि (घटते-घटते) खजूर की पुरानी शाख़ की तरह हों जाता है। (३९)

लशश्मु यम्बशी लहा अन् तुदरिक्-क-म-र व ललैलु साबिकुन्नहारि व कुल्लुन्
फी फ-लकियस्बहन् (४०) व आयतुल्लहुम् अन्ना ह-मल्ना जरिय्य-त-हुम् फि-
फुत्किल्-मशहन् ॥ (४१) व ख-लक्ता लहुम् मिम्-मिस्लिही मा यर्कबून (४२) व
इन्न-शब् नुरिक्-हुम् फला सरी-ख लहुम् व ला हुम् युक्जून ॥ (४३) इल्ला रह-

म-तम्-मिन्ना व मताअन् इला हीन् (४४)
व इजा की-ल लहुमुत्तकू मा बैन ऐदीकुम् व
मा खल्फकुम् ल-अल्लकुम् तुहूमून् (४५) व
मा तअतीहिम् मिन् आयतिम्मिन् आयाति
रबिबहिम् इल्ला कानू अन्हा मुअ-रिज्जीन
(४६) व इजा की-ल लहुम् अन्फिक्
मिम्मा र-ज - ककुमुल्लाहु ॥ कालल्लजी - न
क-फरू लिल्लजी-न आमनू अ-नुत्तिअमु मल्लो
यशाउल्लाहु अत् - अ - मह ई इन्
अन्तुम् इल्ला फी जलालिम् - मुबीन
(४७) व यकूलू-न मता हाजल्वअ-दु इन्
कुन्तुम् सादिकीन (४८) मा यन्जूरू-न इल्ला
सैहत्तव्वाहि-द-तन् तअ-खुजुहुम् व हुम् यखिस्सिमून्

الْقُلُوبِ سَابِقِ الْفَكْرِ وَكَانَ فِي فَلَاكِ قَسْمٌ ۝ وَإِلَىٰ لَهُمُ الْآسَاتُ
ذُرِّيَّتِهِمْ فِي الْعَالَمِ السُّعْيُونَ ۝ وَخَلَقْنَا لَهُمْ مِنْ نَاسِهِمْ مَنَ
يَرْكَبُونَ ۝ وَلَئِنْ كُنَّا أَفْرَقَهُمْ فَلَا حَصْرَ لَهُمْ وَلَا هُمْ يَرْجُئُونَ ۝ إِلَّا
رَحْمَةً مِنَّا وَمَتَاعًا إِلَىٰ حِينٍ ۝ وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ اتَّقُوا مَا بَيْنَ
أَيْدِيكُمْ وَمَا خَلْفَكُمْ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ۝ وَمَا يَنْفَعُهُمْ فِي آيَةٍ
مِنْ آيَاتِ رَبِّهِمْ إِلَّا كَالْوِطْءِ أَفْعُوضِينَ ۝ وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ اتَّقُوا
مَنَازِقَكُمْ اللَّهُ قَالَ الَّذِينَ لَكَؤُمُ الَّذِينَ آمَنُوا أَطِيعُوا مَنْ دُونَنَا
اللَّهُ أَطِيعُوا إِنِ اتَّبَعْنَا فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ۝ وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَٰذَا
الْوَعْدُ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ۝ مَا يَنْظُرُونَ إِلَّا صَيْحَةً وَاحِدَةً
تَأْخُذُهُمْ وَهُمْ يَخِصِّصُونَ ۝ فَلَا يَسْتَجِيبُونَ تَوْحِيهًا وَلَا رَأْيًا
أَعْلَمُ بِرَحْمَتِهِ ۝ وَكَانَ فِي الضُّرِّ قَادِرُهُمْ مِنَ الْأَعْدَاءِ إِلَىٰ رَبِّهِمْ
يَسْتَرْجِعُونَ ۝ قَالُوا بَلْأَنبَأْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ تَنبَأْنَا هَٰذَا مَا وَعَدَ
الرَّحْمَنُ وَصَدَقَ الْمُرْسَلُونَ ۝ إِن كُنَّا إِلَّا صَيْحَةً وَاحِدَةً تَوْحِيهًا
جَمِيعًا كَذِبًا عَصَفُونَ ۝ قَالُوا لَنُظَاهِرُنَّ غُلِبَاءَ الْفَرَجِ ۝ وَلَئِنْ
لَمْ يَأْتِهِمُ النَّصْرُ مِنْ رَبِّهِمْ لَيَقُولُنَّ إِنَّا كُنَّا عَلَيْهِمْ مُّشْفِقِينَ ۝ فَمَهْ
ذُو الْأَعْيُنِ فِي ظُلْمٍ عَلَىٰ الْأَعْيُنِ مُّسْكُونٍ ۝ لَهُمْ فِيهَا آفَافَةٌ
وَالَهُمْ فِيهَا دَعْوَانٌ ۝ سَلَامٌ قَوْلًا مِنْ رَبِّكَ جَمِيعًا ۝ وَأَمَّا أُولَٰ

(४९) फला यस्ततीअून-न तोसि-य-तंव-व ला इला अहिलहिम् यजिअून * (५०) व
नुफि-ख फिस्सूरि फ-इजा हुम् मिनल्-अज्दासि इला रबिबहिम् यन्सिलून (५१) कालू
यावेलना मम्ब-अ-सना मिम्-मर्कदिना हाजा मा व-अ-दरहमानु व स-द-कल्-मुसलून
(५२) इन् कानत् इल्ला सैहत्तव्वाहि-द-तन् फइजा हुम् जमोअल्लदेना मुहज्जरून
(५३) फल्यो-म ला तुल्लमु नफसुन् शैव-व ला तुज्जौ-न इल्ला मा कुन्तुम्
तअ-मलून (५४) इन-न अस्हाबल्-जन्नतिल्-यो-म फी शुगुलिन् फाकिहन् (५५)
हुम् व अज्वाजुहुम् फी जिलालिन् अ-लल्-अराइकि मुत्किऊन् (५६) लहुम्
फीहा फाकिहतुव-व लहुम् मा यद्दअून (५७) सलामुन् कौलम् -
मिरंबिर्-रहीम (५८) वस्ताजुल् यो-म अय्युहल् - मुजिरमून (५९)

न तो सूरज ही से हो सकता है कि चांद को जा पकड़े और न रात ही दिन से पहले आ सकती है और सब अपने दायरे में तैर रहे हैं। (४०) और एक निशानी उन के लिए यह है कि हम ने उन की ओलाद को भरी हुई कप्टी में सवार किया। (४१) और उन के लिए वंसी ही और चीखें पैदा कीं, जिन पर वे सवार होते हैं। (४२) और अगर हम चाहें, तो उन को डुबा दें, फिर न तो उन की कोई फ़रियाद सुनने वाला हो और न उन को रिहाई मिले, (४३) मगर यह हमारी रहमत और एक मुह्त तक के फ़ायदे हैं। (४४) और जब उन से कहा जाता है कि जो तुम्हारे आगे और जो तुम्हारे पीछे है, उस से डरो ताकि तुम पर रहम किया जाए। (४५) और उन के पास उन के पर-वरदिगार की तरफ़ से कोई निशानी नहीं आयी, मगर उन से मुंह फेर लेते हैं। (४६) और जब उन से कहा जाता है कि जो रोज़ी खुदा ने तुम को दी है, उस में से खर्च करो, तो काफ़िर मोमिनों से कहते हैं कि भला हम उन लोगों को खाना खिलाएं, जिन को अगर खुदा चाहता, तो खुद खिला देता, तुम तो खुली-गलती में हो। (४७) और कहते हैं कि अगर तुम सच कहते हो, तो यह वायदा कब (पूरा) होगा? (४८) ये तो चिघाड़ के इन्तिज़ार में हैं, जो उन को इस हाल में कि आपस में अगड़ रहे होंगे, आ पकड़ेंगे। (४९) फिर न तो बसीयत कर सकेंगे और न अपने घर वालों में वापस जा सकेंगे। (५०)★

और (जिस वक़्त) सूर' फूँका जाएगा, यह क़त्लों से (निकल कर) अपने परवरदिगार की तरफ़ दौड़ पड़ेंगे। (५१) कहेंगे, (ऐ हे!) हमें हमारी ख़्वाबगाहों से किस ने (जगा) उठाया यह वही तो है जिस का खुदा ने वायदा किया था और पैग़म्बरों ने सच कहा था। (५२) सिर्फ़ एक जोर की आवाज़ का होना होगा कि सब के सब हमारे सामने आ हाज़िर होंगे। (५३) उस दिन किसी शस्त्र पर कुछ भी जुल्म नहीं किया जाएगा और तुम को बदला वंसा ही मिलेगा, जैसे तुम काम करते थे। (५४) जन्मत वाले उस दिन ऐश व निशात के मशाले में होंगे, (५५) वे भी और उन की बीवियां भी, सायों में तल्लों पर तकिए लगाए बैठे होंगे। (५६) वहां उन के लिए मेवे और जो चाहेंगे, (मोज़ूद होगा)। (५७) परवरदिगार मेहरबान की तरफ़ से सलाम (कहा जाएगा)। (५८)

१. सूर दो बार फूँका जाएगा। पहली बार के बाद सब लोग बेहोश हो जायेंगे और उन पर नींद की हालत छा जाएगी। दूसरी बार के बाद सब ज़िदा हो जायेंगे। चूँकि पहले सूर के बाद उन की हालत यह होगी कि गोया सो रहे हैं, इस लिए दूसरे सूर के बाद यह ख़्याल करेंगे कि नींद से जागि हैं, तब कहेंगे कि ऐ हे! हम को किस ने जगा दिया।

और गुनाहगारो ! तुम आज अलग हो जाओ । (५६) ऐ आदम की ओलाद ! हम ने तुम से कह नहीं दिया था कि शैतान को न पूजना, वह तुम्हारा खुला दुश्मन है । (६०) और यह कि मेरी ही इबादत करना, यही सीधा रास्ता है । (६१) और उस ने तुम में से बहुत-सी खल्कत को गुमराह कर दिया था, तो क्या तुम समझते नहीं थे ? (६२) यही वह जहन्नम है, जिस की तुम्हें खबर दी जाती थी । (६३) (सो,) जो तुम कुफ़ू करते रहे, उस के बदले आज इस में दाखिल हो जाओ । (६४) आज हम उन के मुंहों पर मुहर लगा देंगे और जो कुछ ये करते रहे थे, उन के हाथ हम से बयान कर देंगे और उन के पांव (उस की) गवाही देंगे । (६५) और अगर हम चाहें तो उन की आंखों को मिटा (कर अंधा कर) दें, फिर ये रास्ते को दीढ़ें, तो कहां देख सकेंगे ? (६६) और हम चाहें तो उन की जगह उन की शक्लें बदल दें, फिर वहां से न आगे जा सकें, न पीछे लौट सकें । (६७) ★

और जिस को हम बड़ी उम्र देते हैं, तो उसे खल्कत में औधा कर देते हैं, तो क्या ये समझते नहीं ?' (६८) और हम ने उन (पैगम्बर) को शेर कहना नहीं सिखाया और न वह उन को मुनासिब है । यह तो सिर्फ नसीहत और साफ़-साफ़ क़ुरआन (हिकमत से भरा हुआ) है, (६९) ताकि उस शल्स को जो ज़िदा हो, हिदायत का रास्ता दिखाए और काफ़िरीयों पर बात पूरी हो जाए । (७०) क्या उन्होंने नहीं देखा कि जो चीजें हमने अपने हाथों से बनायीं हम ने उन में से उन के लिए चारपाए पैदा कर दिए और ये उन के मालिक हैं । (७१) और उन को उन के क़ाबू में कर दिया, तो कोई तो उन में से उन की सवारी है और किसी को ये खाते हैं । (७२) और उन में उन के लिए (और) फ़ायदे और पीने की चीजें हैं, तो क्या ये शुक्र नहीं करते ? (७३) और उन्होंने ने खुदा के सिवा (और) माबूद बना लिए हैं कि शायद (उन से) उन को मदद पहुंचे । (७४) (मगर) वे उन की मदद की (हरगिज़) ताक़त नहीं रखते और वे उन की फ़ौज हो कर हाज़िर किए जाएंगे ।' (७५) तो उन की बातें तुम्हें गमनाक न कर दें यह जो कुछ छिपाते हैं और जो कुछ जाहिर करते हैं, हमें सब मालूम हैं । (७६) क्या इंसान ने नहीं देखा कि हम ने उस को नुत्फ़े से पैदा किया, फिर वह तड़ाक-पड़ाक झगड़ने लगा । (७७) और हमारे बारे में मिसालें बयान करने लगा और अपनी पैदाइश को भूल गया, कहने लगा कि (जब) हडिडियां सड़-गल जाएंगी, तो इन को कौन ज़िदा करेगा ? (७८) कह दो कि उन को वह ज़िदा

१. यानी बन्धे से जवान करते हैं, फिर जवान से बुढ़ा कर देते हैं ।

२. जो खुदा इन्सान की बनावट को इस तरह बदल देता है, वह इस पर भी क्रूरता रखता है कि मुंदों को जिसा उठाए ।

३. यानी क्रियामत के दिन, जहां से बुतपरस्त खुदा के सामने हाज़िर किए जाएंगे, वहां यह बुत भी, जो बुतपरस्तों का लक्कर होवा, जबाबदेही के लिए हाज़िर किया जाएगा । कुछ ने यही मतलब निकाले हैं कि वह यानी बुत खुद अपनी मदद तो कर सकते ही नहीं और बुतपरस्त उन की हिकायत के लिए एक लक्कर-बन कर उन के सामने मौजूद रहने हैं । ऐसे बे-अस्तिवार और बे-बस उन की क्या मदद करेंगे ?

कुल् युह-यीहल्लजी अग्श-अह् अक्व-ल मरंतिन् व हु-व बिकुलि सल्लिन् अलीमु-नि-॥

(७६) स्लजी ज-अ-ल लकुम् मिनश्-श-जरिल्-अख्-ज़रि नारन् फइजा अन्तुम् मिन्हु

तूकिहून् (८०) अ-व लैसल्लजी ख-ल-कस्समावाति वल्अर्-ज़ बिकादिरिन् अला

अय्यल्लु-क मिस्लहुय् बला व हुवलखल्लाकुल्-अलीम (८१) इन्मा अम्ह

इजा अरा-द शैअन् अय्यकू-ल लह कुन्

फ-यकून् (८२) फ-मुहानल्लजी बियदिही

म-लकूतु कुलि शैव-व इलैहि तुर्जअन् (८३)

३७ सूरतुस्साफ़ाति ५६

(मक्की) इस सूर. में अरबी के ३६५१ अक्षर,

८७३ शब्द, १८२ आयतें और ५ हकूज हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

वस्साफ़ाति सफ़फ़न् ॥ (१)

फ़ज्जाजिराति ज़रन् ॥ (२) फ़त्तालियाति

जिबरन् ॥ (३) इन् - न इलाहकुम्

ल-वाहिद ॥ (४) रब्बुस्समावाति वल्अज़्रि

व मा बैनहुमा व रब्बुल्-मशारिक ॥ (५)

इन्ना ज़य्यन्नस्समा-अददुन्या बिज़ीनति-निल्-

कवाकिब ॥ (६) व हिफ़ज़म्-मिन् कुलि शैतानिम्-मारिद ॥ (७) ला यस्सम्मअ-न

इलल्-म-ल-इल्-अ-ला व युक्ज़फू-न मिन् कुलि जानिब ॥ (८) इहरं-व लहुम्

अज़ाबु व्वासिब ॥ (९) इल्ला मन् सतिफ़ल्-सत्फ़त्त फ-अल्ब-अह शिहाबुन् साकिब

(१०) फ़स्तफ़तिहिम् अहुम् अशदु सल्लिन् अम्मन् ख-लकना इन्ना ख-लकनाहुम्

मिन् तीनिल्-लाज़िब (११) वल् अज़िब-त व यस्खरून ॥ (१२) व इजा जुविकरू

ला यज्जूरून ॥ (१३) व इजा रऔ आयतुय्यस्तस्खरून ॥ (१४) व कालू इन् हाज़ा

इल्ला सिह्रम्-मुबीन ॥ (१५) अ-इजा मित्ना व कुन्ना तुराब-व अज़ामन् अ इन्ना ल-

म-असून् ॥ (१६) अ-व आबाउनल्-अव्वलून (१७) कुल् न-अम् व अन्तुम् दाखिरून ॥ (१८)



करेगा, जिस ने उन को पहली बार पैदा किया था और वह सब क्रिसम का पैदा करना जानता है। (७६) (वही) जिस ने तुम्हारे लिए हरे पेड़ में आग पैदा की, फिर तुम उस (की टहनियों को रगड़ कर उन) से आग निकालते हो।' (८०) भला जिस ने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया, क्या वह इस पर क्रुदरत नहीं रखता कि (उन को फिर) वैसे ही पैदा कर दें क़यों नहीं, और वह तो बड़ा पैदा करने वाला (और) इल्म वाला है। (८१) उस की शान यह है कि जब वह किसी चीज़ का इरादा करता है, तो उस से फ़रमा देता है कि हो जा, तो वह हो जाती है। (८२) वह (जात) पाक है, जिस के हाथ में हर चीज़ की वादशाही है और उस की तरफ़ तुम को लौट कर जाना है। (८३)★

३७ सूर: साफ़कात ५६

सूर: साफ़कात मक्की है, इस में एक सौ बयासी आयतें और पांच रुकूअ हैं।

शुरू खुदा का नाम लेकर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

क़सम सफ़ बांधने वालों की, परा जमा कर, (१) फिर डांटने वालों की, झिड़क कर, (२) फिर ज़िक्र (यानी कुरआन) पढ़ने वालों की, (शोर कर-कर), (३) कि तुम्हारा माबूद एक ही है, (४) जो आसमानों और ज़मीन और जो चीज़ें इन में हैं, सब का मालिक है और सूरज के निकलने की जगहों का भी मालिक है। (५) बेशक हम ही ने दुनिया के आसमान को सितारों की जीनत से सजाया। (६) और हर शैतान सरकार से उस की हिफ़ाज़त की, (७) कि ऊपर की मजलिस की तरफ़ कान न लगा सकें और हर तरफ़ से (उन पर अंगारे) फेंके जाते हैं। (८) (यानी वहां से) निकाल देने को और उन के लिए हमेशा का अज़ाब है। (९) हां, जो कोई (फ़रिश्तों की किसी बात को) चोरी से झपट लेना चाहता है, तो जलता हुआ अंगारा उस के पीछे लगता है। (१०) तो उन से पूछो कि उन का बनाना मुश्किल है या जितनी सल्क़त हमने बनायी है उन का ? उन्हें हमने चिपकते गारे से बनाया है। (११) हां, तो तुम ताज्जुब करते हो और ये मज़ाक़ उड़ाते हैं। (१२) और जब उन को नसीहत दी जाती है, तो नसीहत कुबूल नहीं करते। (१३) और जब कोई निशानी देखते हैं, तो ठट्ठे करते हैं। (१४) और कहते हैं कि यह तो खुला जादू है, (१५) भला जब हम मर गये और मिट्टी और हड्डियां हो गये, तो क्या फिर उठाए जाएंगे ? (१६) और क्या हमारे बाप-दादा भी (जो) पहले (हो गुज़रे हैं) ? (१७)

१. कहते हैं कि बांस या कुछ और पेड़ ऐसे हैं कि रहते तो हरे हैं, लेकिन अगर उन की शाखों को रगड़ा जाए, तो उन में से आग निकलती है और यह खुदा की बहुत बड़ी क्रुदरत की वलील है।

२. सफ़ बांधने वालों से मुराद या तो मुजाहिद हैं, जो लड़ाई के बाद में सफ़ बांध कर खड़े होते हैं या नमाज़ी या फ़रिश्ते कि वे भी सफ़ में मिल कर और पैर जमा कर खड़े होते हैं।

३. डांटने वालों से या तो हाजी मुराद हैं, जो अपने घोड़ों को दूर से डांट कर हमला करते हैं या रब्बानी इल्म रखने वाले मुराद हैं, जो लोगों को गुनाह करने पर गुनाह से रोकने के लिए डांटते हैं।

४. फ़रिश्ते खड़े होते हैं क़तार हो कर अल्लाह का हुक्म सुनने को, फिर झिड़कते हैं शैतानों को, जो सुनने को जा सपेते हैं, फिर जब उतर चुका, उस को जा लगते हैं, फिर जब उतर चुका, उस को पढ़ते हैं एक दूसरे को बताने को।

५. कुरआन पढ़ने वालों से या तो वे लोग मुराद हैं, जो लड़ाई से फ़ारिग हो कर कुरआन की तिलावत में लग जाते (शेष पृष्ठ ७११ पर)

फ इन्मा हि-य जउरतु व्वाहि-द-नुन् फइजा हुम् यन्जुरून (१९) व कालू या वेलना
हाजा योमुद्दीन (२०) हाजा योमुल्-फस्लिलजी कुन्तुम् बिही तुकज्जिबून (२१)
उह्शुल्लजी-न अलम् व अरवाजहुम् व मा कानू यअ-बुदून ॥ (२२) मिन् इन्लि-
लाहि फह्रहुम् इला सिरातिल् जहीम ● (२३) व किफहुम् इन्नहुम् मसूलून

(२४) मा लकुम् ला तनासरून (२५)

बल् हुमुल्यो-म मुस्तस्लिमून (२६) व अक्ब-ल

बअ-जुहुम् अला बअ-ज्जिय-त-सा-अलून (२७)

कालू इन्नकुम् कुन्तुम् तअ-तूनना अनिल्यमीन

(२८) कालू बल् लम् तकून मुअमनीन ८

(२९) व मा कान लना अलैकुम् मिन्

मुल्तानिन् ८ बल् कुन्तुम् क्रौमन् तागीन (३०)

फ-हक्-क अलेना कोलु रबिबन ८ इन्ना ल-जा-इ-

कून (३१) फ-अरवेनाकुम् इन्ना कुन्ना शावीन

(३२) फ-इन्नहुम् यौमइजिन् फिल्-अजाबि

मुश्तरिकून (३३) इन्ना कज्जालि-क नफ्अलु

बिल्-मुज्जिमीन (३४) इन्नहुम् कानू इजा

की-ल लहुम् ला इला-ह इल्लल्लाहु ॥ यस्तकिबरून ॥ (३५) व यकूलून अ-इन्ना ल-

तारिक् आलिहतितना लिशाअिरिम्-मज्जून ८ (३६) बल् जा-अ बिल्हक्कि व सद्-द-

कल्-मुसलीन (३७) इन्नकुम् लजा-इकुल्-अजाबिल्-अलोम ८ (३८) व मा तुज्जान

इल्ला मा कुन्तुम् तअ-मलून ॥ (३९) इल्ला अबादल्लाहिल्-मुख-लसीन (४०)

उला-इ-क लहुम् रिज्कुम्-मअ-लूम ॥ (४१) फवाकिहु ८ व हुम् मुकरमून ॥ (४२) फी

जन्नातिन्नजीम् ॥ (४३) अला सुहरिम्-मु-त-काबिलीन (४४) युताफु अलैहिम् बिक-अ-

सिम्-मिम्मजीनिम्-॥ (४५) बैज्जा-अ लज्जतिल्-लिश्शारिबीन ८ (४६) ला फीहा गोलु-व-

व ला हुन् अन्हा युज्जफून (४७) व अिन्दहुम् कासिरातुत्तफि औनुन् ॥ (४८)

سورة	سورة	سورة
الزينة	الزينة	الزينة
وَقَالُوا بَلْ يَنْظُرُونَ ۖ وَقَالُوا بَلْ يَنْظُرُونَ ۖ وَقَالُوا بَلْ يَنْظُرُونَ ۖ	وَقَالُوا بَلْ يَنْظُرُونَ ۖ وَقَالُوا بَلْ يَنْظُرُونَ ۖ وَقَالُوا بَلْ يَنْظُرُونَ ۖ	وَقَالُوا بَلْ يَنْظُرُونَ ۖ وَقَالُوا بَلْ يَنْظُرُونَ ۖ وَقَالُوا بَلْ يَنْظُرُونَ ۖ
الَّذِينَ	الَّذِينَ	الَّذِينَ
الَّذِينَ ظَلَمُوا ۖ وَأَزْوَاجَهُمْ وَكَانُوا يَعْبُدُونَ ۖ مِنْ دُونِ اللَّهِ	الَّذِينَ ظَلَمُوا ۖ وَأَزْوَاجَهُمْ وَكَانُوا يَعْبُدُونَ ۖ مِنْ دُونِ اللَّهِ	الَّذِينَ ظَلَمُوا ۖ وَأَزْوَاجَهُمْ وَكَانُوا يَعْبُدُونَ ۖ مِنْ دُونِ اللَّهِ
قَالَهُمْ هُمْ عَلَىٰ صِرَاطٍ الْحَمِيمِ ۖ وَلَقَوْلِهِمْ هُمْ مَسْئُولُونَ ۖ مَا	قَالَهُمْ هُمْ عَلَىٰ صِرَاطٍ الْحَمِيمِ ۖ وَلَقَوْلِهِمْ هُمْ مَسْئُولُونَ ۖ مَا	قَالَهُمْ هُمْ عَلَىٰ صِرَاطٍ الْحَمِيمِ ۖ وَلَقَوْلِهِمْ هُمْ مَسْئُولُونَ ۖ مَا
لَهُمْ لَا تَتَصَدَّقُونَ ۖ بَلْ هُمْ أَیَوْمَ مُسْتَسْلِمُونَ ۖ وَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ	لَهُمْ لَا تَتَصَدَّقُونَ ۖ بَلْ هُمْ أَیَوْمَ مُسْتَسْلِمُونَ ۖ وَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ	لَهُمْ لَا تَتَصَدَّقُونَ ۖ بَلْ هُمْ أَیَوْمَ مُسْتَسْلِمُونَ ۖ وَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ
عَلَىٰ بَعْضٍ يَتَسَاءَلُونَ ۖ قَالُوا إِنَّكُمْ تَقْتُلُونَ وَأَنْتُمْ كُنْتُمْ تَقْتُلُونَ ۖ	عَلَىٰ بَعْضٍ يَتَسَاءَلُونَ ۖ قَالُوا إِنَّكُمْ تَقْتُلُونَ وَأَنْتُمْ كُنْتُمْ تَقْتُلُونَ ۖ	عَلَىٰ بَعْضٍ يَتَسَاءَلُونَ ۖ قَالُوا إِنَّكُمْ تَقْتُلُونَ وَأَنْتُمْ كُنْتُمْ تَقْتُلُونَ ۖ
قَالُوا إِنْ لَمْ نَكُنْ لَكُمْ قُتُلًا مُؤْمِنِينَ ۖ وَمَا كَانَ لَكُمْ عَلَيْهِمْ مِنْ سُلْطَانٍ	قَالُوا إِنْ لَمْ نَكُنْ لَكُمْ قُتُلًا مُؤْمِنِينَ ۖ وَمَا كَانَ لَكُمْ عَلَيْهِمْ مِنْ سُلْطَانٍ	قَالُوا إِنْ لَمْ نَكُنْ لَكُمْ قُتُلًا مُؤْمِنِينَ ۖ وَمَا كَانَ لَكُمْ عَلَيْهِمْ مِنْ سُلْطَانٍ
بَلْ كُنتُمْ قَوْمًا طَافِينَ ۖ قُلْ عَلَيْنَا قَوْلُ رَبِّكَ إِنَّا لَا نَبْتَغِي	بَلْ كُنتُمْ قَوْمًا طَافِينَ ۖ قُلْ عَلَيْنَا قَوْلُ رَبِّكَ إِنَّا لَا نَبْتَغِي	بَلْ كُنتُمْ قَوْمًا طَافِينَ ۖ قُلْ عَلَيْنَا قَوْلُ رَبِّكَ إِنَّا لَا نَبْتَغِي
قَاتِلُوكُمْ إِنَّا كُنَّا عَاوِينَ ۖ وَأَنَّهُمْ يَوْمَئِذٍ فِي الْعَذَابِ	قَاتِلُوكُمْ إِنَّا كُنَّا عَاوِينَ ۖ وَأَنَّهُمْ يَوْمَئِذٍ فِي الْعَذَابِ	قَاتِلُوكُمْ إِنَّا كُنَّا عَاوِينَ ۖ وَأَنَّهُمْ يَوْمَئِذٍ فِي الْعَذَابِ
مُشْرِكُونَ ۖ إِنَّا كُنَّا نَعْمَلُ بِالْعَجَمِينَ ۖ أَنَّهُمْ كَانُوا إِذَا	مُشْرِكُونَ ۖ إِنَّا كُنَّا نَعْمَلُ بِالْعَجَمِينَ ۖ أَنَّهُمْ كَانُوا إِذَا	مُشْرِكُونَ ۖ إِنَّا كُنَّا نَعْمَلُ بِالْعَجَمِينَ ۖ أَنَّهُمْ كَانُوا إِذَا
وَقِيلَ لَهُمْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ يَسْتَكْبِرُونَ ۖ وَيَقُولُونَ إِنَّا كُنَّا لَكُمْ	وَقِيلَ لَهُمْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ يَسْتَكْبِرُونَ ۖ وَيَقُولُونَ إِنَّا كُنَّا لَكُمْ	وَقِيلَ لَهُمْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ يَسْتَكْبِرُونَ ۖ وَيَقُولُونَ إِنَّا كُنَّا لَكُمْ
الْبَدِئَاتِ أَعِمْجُونَ ۖ بَلْ جَاءَ بِالنَّاسِ وَصْدَقَ الْمُشْرِكِينَ ۖ أَنَّهُمْ	الْبَدِئَاتِ أَعِمْجُونَ ۖ بَلْ جَاءَ بِالنَّاسِ وَصْدَقَ الْمُشْرِكِينَ ۖ أَنَّهُمْ	الْبَدِئَاتِ أَعِمْجُونَ ۖ بَلْ جَاءَ بِالنَّاسِ وَصْدَقَ الْمُشْرِكِينَ ۖ أَنَّهُمْ
لَدُنَّا أَعَادُوا الْعَذَابَ الْأَلِيمَ ۖ وَمَا يُجْزَوْنَ إِلَّا مَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ۖ	لَدُنَّا أَعَادُوا الْعَذَابَ الْأَلِيمَ ۖ وَمَا يُجْزَوْنَ إِلَّا مَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ۖ	لَدُنَّا أَعَادُوا الْعَذَابَ الْأَلِيمَ ۖ وَمَا يُجْزَوْنَ إِلَّا مَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ۖ
إِلَّا عِندَ اللَّهِ الْخَاصِينَ ۖ أُولَٰئِكَ لَهُمْ رُزْقٌ مَقْدُورٌ ۖ فَوَكَرَهُ	إِلَّا عِندَ اللَّهِ الْخَاصِينَ ۖ أُولَٰئِكَ لَهُمْ رُزْقٌ مَقْدُورٌ ۖ فَوَكَرَهُ	إِلَّا عِندَ اللَّهِ الْخَاصِينَ ۖ أُولَٰئِكَ لَهُمْ رُزْقٌ مَقْدُورٌ ۖ فَوَكَرَهُ
وَهُمْ مُرْمَضُونَ ۖ فِي جَنَّةِ النَّعِيمِ ۖ عَلَىٰ سُرُرٍ مَقْشُورِينَ ۖ	وَهُمْ مُرْمَضُونَ ۖ فِي جَنَّةِ النَّعِيمِ ۖ عَلَىٰ سُرُرٍ مَقْشُورِينَ ۖ	وَهُمْ مُرْمَضُونَ ۖ فِي جَنَّةِ النَّعِيمِ ۖ عَلَىٰ سُرُرٍ مَقْشُورِينَ ۖ
طَافٌ عَلَيْهِمْ بِكَأْسٍ مِنْ مَوْجِينَ ۖ يَبِضْأُونَ لَهَا ۖ لِلْأَشْرَارِ ۖ	طَافٌ عَلَيْهِمْ بِكَأْسٍ مِنْ مَوْجِينَ ۖ يَبِضْأُونَ لَهَا ۖ لِلْأَشْرَارِ ۖ	طَافٌ عَلَيْهِمْ بِكَأْسٍ مِنْ مَوْجِينَ ۖ يَبِضْأُونَ لَهَا ۖ لِلْأَشْرَارِ ۖ
إِنْ يَدْعُوا غَوْلٌ ۖ وَكَرَهُهُمْ عَنْهَا ۖ لَنُؤْتِيَنَّهُمْ ۖ وَعِندَهُمْ صُورَةُ الظَّالِمِينَ	إِنْ يَدْعُوا غَوْلٌ ۖ وَكَرَهُهُمْ عَنْهَا ۖ لَنُؤْتِيَنَّهُمْ ۖ وَعِندَهُمْ صُورَةُ الظَّالِمِينَ	إِنْ يَدْعُوا غَوْلٌ ۖ وَكَرَهُهُمْ عَنْهَا ۖ لَنُؤْتِيَنَّهُمْ ۖ وَعِندَهُمْ صُورَةُ الظَّالِمِينَ

कह दो कि हां, और तुम जलील होगे। (१८) वह तो एक जोर की आवाज होगी और ये उस वक्त देखने लगेंगे। (१९) और कहेंगे, हाय शामत ! यही बदले का दिन है। (२०) (कहा जाएगा कि हां), फ़ैसले का दिन, जिस को तुम झूठ समझते थे, यही है। (२१)★

जो लोग जुल्म करते थे, उन को और उन के हमजिंसों को और जिन की वे पूजा करते थे, (सब को) जमा कर लो। (२२) (यानी जिन को) खुदा के सिवा (पूजा करते थे) फिर उन को जहन्नम के रास्ते पर चला दो●(२३) और उन को ठहराए रखो कि उन से (कुछ) पूछना है। (२४) तुम को क्या हुआ कि एक दूसरे की मदद नहीं करते, (२५) बल्कि आज तो वे फ़रमांबरदार हैं। (२६) और एक दूसरे की तरफ़ रख कर के सवाल (व जवाब) करेंगे। (२७) कहेंगे, क्या तुम ही हमारे पास दाएं (और बाएं) से आते थे। (२८) वे कहेंगे, बल्कि तुम ही ईमान लाने वाले न थे। (२९) और हमारा तुम पर कुछ जोर न था, बल्कि तुम सर-कश लोग थे। (३०) सो हमारे बारे में हमारे परवरदिगार की बात पूरी हो गयी, अब हम मजे चखेंगे। (३१) हमने तुम को भी गुमराह किया (और) हम खुद भी गुमराह थे। (३२) पस वे उस दिन अज़ाब में एक दूसरे के शरीक होंगे। (३३) हम गुमराहों के साथ ऐसा ही किया करते हैं। (३४) उन का यह हाल था कि जब उन से कहा जाता था कि खुदा के सिवा कोई माबूद नहीं, तो घमंड करते थे। (३५) और कहते थे कि भला हम एक दीवाने शायर के कहने से कहीं अपने माबूदों को छोड़ देने वाले हैं। (३६) (नहीं), बल्कि वे हक़ ले कर आए हैं और (पहले) पैगम्बरों को सच्चा कहते हैं। (३७) बेशक तुम तकलीफ़ देने वाले अज़ाब का मज़ा चखने वाले हो। (३८) और तुम कौं बदला वैसा ही मिलेगा, जैसे तुम काम करते थे, (३९) मगर जो खुदा के खास बन्दे हैं। (४०) यही लोग हैं, जिन के लिए रोज़ी मुकर्रर है। (४१) (यानी) मेवे और उन का एज़ाज़ किया जाएगा। (४२) नेमत के बाग़ों में, (४३) एक दूसरे के सामने तश्तों पर (बैठे होंगे), (४४) शराबे लतीफ़ के जाम का उन में दौर चल रहा होगा, (४५) जो रंग की सफ़ेद और पीने वालों के लिए (सरासर) लज्जत होगी, (४६) न उस से सर-दर्द हो और न वे उस से मतवाले हों, (४७) और उन के पास औरतें होंगी, जो निगाहें नीची रखती होंगी और आँखें बड़ी-बड़ी, (४८) गोया

(पृष्ठ ७०६ का शेष)

है या आम कुरआन पढ़ने वाले। चूँकि अल्लाह तआला ने इन ख़ुबियों के लोगों की क़स्में खायी हैं, इस लिए समझना चाहिए कि उस के नज़दीक उन की बड़ी बड़ाई है। 'शोर कर-कर' लफ़्ज़ जो तर्जुमे में बढ़ाया गया है, इस से एक तो इबारत फ़ाकिहदार हो गयी है, दूसरे यह ज़ाहिर करना मक़सूद है कि कुरआन का पढ़ना इसी वक़्त में मुफ़ीद हो सकता है और इस के पढ़ने से जो तरज़ है, वह तभी पूरी हो सकती है, जब शोर व फ़िक्र कर के पढ़ा जाए। कुरआन यज़ीद का नाज़िल करने वाला फ़रमाता है, ऐ मुहम्मद ! यह कुरआन एक बरक़त वाली किताब है, जो हम ने तुम पर नाज़िल की है। मक़सूद यह है कि लोग उस की आयतों पर शोर करें और अक़ल वाले उस से नसीहत पकड़ें।

क-अल्हन्-न बेजुम्-मकनून् (४६) फ-अक्व-ल बअ-जुहुम् अला बअ-जिह्य-तसा-
अलून (५०) का-ल काहलुम्-मिन्हुम् इन्नी का-न ली करीनु य-॥ (५१) - यकूलु
अइन्-क लमिनल्-मुसदिदकीन (५२) अ-इजा मित्ना व कुन्ना तुराबं-व अिजा-
मन् अ-इन्ना ल-मदीनून (५३) का-ल हल् अन्तुम् मुत्तलिअून (५४) फत्त-ल-अ
फ-र-आहु फी सवाइल्-जहीम (५५) का-ल

तल्वाहि इन् कित्त-ल-नुदीन ॥ (५६) व ली
ला निअ-मतु रब्बी लकुन्तु मिनल्-मुहजरीन
(५७) अ-फमा नहनु बिमय्यितीन ॥ (५८) इल्ला
भीत-त-नल्-ऊला व मा नहनु बिमुअज्जबीन
(५९) इन्न हाजा लहुवल् - फौजुल्-

अजीम (६०) लिमिस्लि हाजा फल्यअ-मलिल्-
आमिलून (६१) अ जालि-क खैरन् नुजुलन्
अम् श-ज-रतुज्-जक्कूम (६२) इन्ना
ज-अल्नाहा फित्त-न-तल्-लिज्जालिमीन (६३)

इन्हा श-ज-रतुन् तररुजु फी अस्लिल्-जहीम ॥
(६४) तल्अहा क-अल्ह हऊसुश्-शयातीन

(६५) फ-इल्हम् ल-आकिलून मिन्हा फमालिऊ-न मिन्हल्-बुत्तून ॥ (६६) सुम्-म

इन्-न लहुम् अलंहा लशौबम्-मिन् हमीम ॥ (६७) सुम्-म इन्-न मजि-अहुम् ल-इलल्-
जहीम (६८) इल्हम् अल्फौ आबा-अहुम् जाल्लीन ॥ (६९) फहुम् अला आसा-

रिहिम् युद्-रखून (७०) व ल-कद् जल्-ल कब्-लहुम् अक्सरल्-अव्वलीन ॥ (७१)

व ल-कद् असंला फ्रीहिम् मुन्जिरीन (७२) फन्जुर कै-फ का-न आकिबतुल्-
मुन्जरीन ॥ (७३) इल्ला अिबादल्लाहिल्-मुख-लसीन ॥ (७४) व ल-कद् नादाना

नूहन् फ-लनिअ-मल्-मुजीबून ॥ (७५) व नज्जैनाहु व अहलह मिनल्-कबिल्-अजीम

(७६) व ज-अल्ना अुरिय-तहू हुमुल्-बाकीन ॥ (७७) व त-रक्ना अलैहि फिल्ल-
आखिरीन ॥ (७८) सलामुन् अला नूहिन् फिल्ल - आलमीन (७९)

عَيْنٌ ۖ كَانَهُنَّ يَتَّبِعْنَ غَنَاقَهُنَّ ۖ وَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلَى بَعْضٍ
يَتَكَلَّمُونَ ۚ قَالَ قَائِلٌ مِّنْهُمْ إِنِّي كَانَ لِي قَرِينٌ ۚ يَقُولُ أَكُنَّا
لِإِنِّ الْمُحْسِنِينَ ۚ فَلَمَّا وَشَاوَا كَذَّبَا بِآيَاتِنَا ۚ إِنَّكَ لَتَكُونُ
لَنَا مَلَكًا مِّنْ أَتْمُومُطِينَ ۚ وَكَلَّمَهُ قَرِينٌ فِي سَوَاءٍ الْحِيمِ ۚ قَالَ
تَاللَّهِ إِن كُنتَ لَتَرُدُنِي ۚ وَلَوْلَا بَعْضُهُ لَرَى لَكُنْتُ مِنَ
الْمُفْسِدِينَ ۚ أَفَمَا تَحْمِلُ فِي يَمِينِهِ ۚ إِنَّهُ يَحْمِلُهَا أَثَرُ الْأَوَّلَى وَمَا تَحْمِلُ
بِعَيْنِهِ ۚ إِنَّ هَذَا لَأَكْبَرُ الْعَظِيمِ ۚ يَشِىءُ مِمَّا كَانُوا يَعْمَلُونَ
الْمُحْسِنُونَ ۚ أَذَلِكَ خَيْرٌ لِّزُلَّةِ أَمْرِهِمْ لَوَلَوْ تَرَوْهُمْ ۚ وَإِنَّا لَجَعَلْنَا آيَاتِنَا
لِلظَّالِمِينَ ۚ إِنَّهَا شَجَرَةٌ تَخْرُجُ فِي أَصْلِ الْحَبِيرِ ۚ فَطَعَمًا فَكَانَتْ
رُءُوسَ الْقُلُوبِ ۚ وَكَانَ لَأَكْبَرُونَ مِنْهَا الْقُوتُ وَمِنْهَا الْبُطُونُ ۚ
تُفْرَنَ لَهُمْ عَلَيْهَا الْقُوتُ بِرَأْسِ الْحَبِيرِ ۚ تَفْرَنَ مَرَجَعُهُمْ أَتَّى
الْحَبِيرِ ۚ وَكَانَ الْقَوْمُ لَمْ يَصْلَوْهُ ۚ قَالُوا عَلَى الْقَوْمِ الْغَنَاقُونَ ۚ
وَلَقَدْ صَنَّ لَهُمْ تِلْكَ الْأَشْجَارَ أَكْثَرَ الْأَكْثَرِ ۚ وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا فِيهِمْ
فُتُونًا ۚ وَنَظَرُوا فِيهَا عَاكِفًا ۚ وَالْمُتَدَبِّرِينَ ۚ لَا يَجِدُ اللَّهُ
الْمُتَكَبِّرِينَ ۚ وَلَقَدْ تَدَبَّرْتُمُوهَا فَمَا تَتْلُو مِنْ حَيْثُ تُنَادُونَ ۚ وَتَجَنَّبُوهَا
وَلَقَدْ مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيمِ ۚ وَجَعَلْنَا آيَاتِنَا هُمْ الْقَبِيلَ ۚ
وَوَكَّلْنَا عَلَيْهِمْ فِي الْخَبِيرِ ۚ سَلَامٌ عَلَى نُوحٍ فِي الْعَالَمِينَ ۚ

वह महफूज अंडे हैं, (४६) फिर वे एक दूसरे की तरफ रख करके सवाल (व जवाब) करेंगे। (५०) एक कहने वाला उन में से कहेगा कि मेरा एक साथी था, (५१) (जो) कहता था कि भला तुम भी (ऐसी बातों के) मान लेने वालों में हो, (५२) भला जब हम मर गये और मिट्टी और हड्डियां हो गये तो क्या हम को बदला मिलेगा? (५३) (फिर) कहेगा कि भला तुम (उसे) झांक कर देखना चाहते हो? (५४) (इतने में) वह (खुद) झांकेगा, तो उस को दोखल के बीच में देखेगा। (५५) कहेगा, कि खुदा की क्रसम! तू तो मुझे हलाक ही कर चुका था। (५६) और अगर मेरे परवरदिगार की मेहरबानी न होती तो मैं भी उन में होता जो (अजाब में) हाज़िर किए गए हैं। (५७) क्या (यह नहीं कि) हम (आगे कभी) मरने के नहीं। (५८) हां, (जो) पहली बार मरना (था, सो मर चुके) और हमें अजाब भी नहीं होने का, (५९) बेशक यह बड़ी कामियाबी है। (६०) ऐसी ही (नेमतों) के लिए अमल करने वालों को अमल करने चाहिए। (६१) भला यह मेहमानी अच्छी है या थूहर का पेड़? (६२) हमने उसको जालिमों के लिए अजाब बना रखा है। (६३) वह एक पेड़ है कि जहन्नम के निचले हिस्से में उगेगा। (६४) उसके खोशे ऐसे होंगे, जैसे शैतानों के सर, (६५) सो वे उसी में से खाएंगे और उसी से पेट भरेंगे। (६६) फिर उस (खाने) के साथ उनको गर्म पानी मिला कर दिया जाएगा। (६७) फिर उनको दोखल की तरफ लौटाया जाएगा। (६८) उन्होंने अपने बाप-दादा को गुमराह ही पाया। (६९) सो वे उन्हीं के पीछे दौड़े चले जाते हैं। (७०) और उनसे पहले बहुत से पहले लोग भी गुमराह हो गये थे, (७१) और हमने उन में तंबीह करने वाले भेजे। (७२) सो देख लो, जिन को तंबीह की गयी थी, उन का अंजाम कैसा हुआ? (७३) हां, खुदा के खास बन्दों (का अंजाम बहुत अच्छा हुआ)। (७४)★

और हम को नूह ने पुकारा, सो (देख लो कि) हम (दुआ को कैसे) अच्छे कुबूल करने वाले हैं। (७५) और हम ने उन को और उन के घर वालों को बड़ी मुसीबत से निजात दी। (७६) और उन की औलाद को ऐसा किया कि वही बाक़ी रह गये। (७७) और पीछे आने वालों में उन का (अच्छा) ज़िक्र (बाक़ी) छोड़ दिया। (७८) (यानी) तमाम जहान में (कि) नूह पर

इन्ना कजालि-क नज्जिल-मुहिसनीन (८०) इन्नह् मिन् अबादिनल्-मुअमिनीन
(८१) सुम्-म अग्-रक-नल्-आखरीन (८२) व इन्-न मिन् शी-अतिही ल-
इब्राहीम (८३) इज् जा-अ रब्बह् बिकल-बिन् सलीम (८४) इज् का-ल
लिअबीहि व कोमिही माजा तअ-बुदून् (८५) अ-इपकन् आलि-ह-तन् दूनल्लाहि

तुरीदून् (८६) फ मा अन्नुकुम् बिरबिबल्-
आलमीन (८७) फ-न-अ-र नज्-र-तन्

फिन्जूमि (८८) फ का-ल इन्नी सकीम
(८९) फ-त-वल्ली अन्हु मुदबिरीन (९०)

फरा-ग इला आलिहतिहिम् फ-का-ल अला तअ-
कुलून् (९१) मा लकुम् ला तन्तिकून् (९२)

फरा-ग अलैहिम् ज़र्वम्-बिल्यमीन (९३) फ-
अक्बल् इलैहि यजिपफून् (९४) का-ल

अ-तअ-बुदून् मा तन्हितून् (९५) वल्लाहु
ख-ल-ककुम् व मा तअ-मलून् (९६) कालुब्नू

लह् बुन्-यानन् फ-अल्कूहु फिलजहीम (९७) फ-
अरादू बिही कैदन् फ-ज-अल्ना-हुमुल्-अस्-फलीन

(९८) व का-ल इन्नी जाहिबुन् इला रब्बी स-यहदीन (९९) रबिब हब् ली

मिनस्सालिहीन (१००) फ-बश्शर्नाहु बिगुलामिन् हलीम (१०१) फ-लम्मा ब-ल-ग

म-अहुस्सअ-य का-ल या बुनय-य इन्नी अरा फिलमनामि अन्नी अजबह्-क फज्जुर

माजा तराफ् का-ल या अ-बतिफ्-अल् मां तुअ-मर-स-तजिदुनी इन् शाअल्लाहु मिनस्-
साबिरीन (१०२) फ-लम्मा अस्-लमा व तल्लह् लिलजबीन (१०३) व नादेनाहु

अय्या इब्राहीम (१०४) कद् सद-दक्तर-रअया इन्ना कजालि-क नज्जिल-मुहिस-
नीन (१०५) इन्-न हाजा ल-हुवल्-बलाउल्-मुबीन (१०६) व फदेनाहु बिजिब्हिन् अजीम
(१०७) व त-रकना अलैहि फिल्-आखरीन (१०८) सलामुन् अला इब्राहीम (१०९)

कजालि-क नज्जिल-मुहिसनीन (११०) इन्नह् मिन् अबादिनल्-मुअमिनीन (१११)

إِنَّا كَذَّبُكَ بِجُورٍ الْمُسْتَسِينَ ۝ إِنَّكَ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِينَ ۝
تَوَكَّلْ عَلَى الْآخِرِينَ ۝ إِنَّكَ مِنْ شُعَبِهِ لِإِبْرَاهِيمَ ۝ إِذْ جَاءَ
رَبَّهُ بِقَلْبٍ سَلِيمٍ ۝ إِذْ قَالَ لِأَبِيهِ وَقَوْمِهِ مَاذَا تَصْبِرُونَ ۝
إِنَّمَا الْعِبَادَةُ لِلَّهِ الْحَقِ ۝ إِنَّكُمْ أَنتُمُ الْعَالَمِينَ ۝
فَنَظَرُوا فِي الْقُبُورِ ۝ فَقَالَ إِنِّي سَقِيمٌ ۝ فَتَوَلَّوْا عَنْهُ مُدْبِرِينَ ۝
فَوَاعَدُوا بِأَنَّهُمْ يُفَكِّكُونَ ۝ فَلَا تَكْفُرُونَ ۝ مَا كُنَّا نَعْبُدُونَ
عَلَيْهِمْ شَيْئًا مِنَ الشَّيْءِ ۝ فَأَقْبَرُوا إِلَيْهِ يَوْمَئِذٍ ۝ قَالَ تَصْبِرُونَ
مَا أَتَيْتُمُونَ ۝ وَاللَّهُ عَاقِبُهُمْ وَمَا تَعْلَمُونَ ۝ قَالَ الْإِنْسَانُ الْفَاسِقُ ۝
فَالْقُوَّةُ فِي الْبَحْرِ ۝ فَارْأَوْا يَدَيَّ كَيْدًا فَعَلْتُهُمْ أَلُفَّيْنِ ۝
وَقَالَ إِلَى الْأُمَمِ إِلَى رَبِّي سَعِيدِينَ ۝ رَبِّ قَبِّبْ بَيْنِي مِنَ الصَّالِحِينَ
فَتَرَكَنِي بِخَلْقٍ حَلِيمٍ ۝ فَلَمَّا يَلَيْتُهُ مَعَهُ السَّعْيُ قَالَ يَتَى إِلَى
أَرَى فِي السَّمَاءِ إِلَى أَدْنَاهُ نَظَرُ مَاذَا تَرَى ۝ قَالَ يَأْتِي أَفْعَالُ
مَا تَأْمُرُ سَعِيدِينَ ۝ إِنَّ شَاءَ اللَّهُ مِنَ الصَّادِقِينَ ۝ فَلَمَّا أَسْكَا
وَتَلَا الْجَبِينَ ۝ وَكَادَيْتُهُ أَنْ يَأْتِيَهُمْ ۝ فَذَرَفَتْ الْأُيُوتُ
إِنَّا كَذَّبُكَ بِجُورٍ الْمُسْتَسِينَ ۝ إِنَّ هَذَا الْقَوْلُ لَبَيِّنٌ لِّلْمُسْلِمِينَ ۝
وَدَلِيلٌ بَيْنَ يَدَيْهِ عَظِيمٌ ۝ وَرَكْنَا عَلَيْهِ فِي الْآخِرِينَ ۝ سَلَامٌ عَلَى
إِبْرَاهِيمَ ۝ كَذَلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ۝ إِنَّكَ مِنْ عِبَادِنَا

सलाम । (७६) भले लोगों को हम ऐसा ही बदला दिया करते हैं । (८०) बेशक वह हमारे मोमिन बन्दों में से थे । (८१) फिर हमने दूसरों को डुबो दिया । (८२) और उन्हीं की परवी करने वालों में इब्राहीम थे । (८३) जब वह अपने परवरदिगार के पास (ऐब से) पाक दिल लेकर आए । (८४) जब उन्हीं ने अपने बाप से और अपनी क्रौम से कहा कि तुम किन चीजों को पूजते हो? (८५) क्यों झूठ (बनाकर) खुदा के सिवा और माबूदों की तलब में हो? (८६) भला दुनिया के परवरदिगार के बारे में तुम्हारा क्या ख्याल है? (८७) जब उन्हीं ने सितारों की तरफ़ एक नज़र की । (८८) और कहा मैं तो बीमार हूँ । (८९) तब वे उन से पीठ फेर कर लौट गये । (९०) फिर (इब्राहीम) उन के माबूद की तरफ़ मुतवज्जह हुए और कहने लगे कि तुम खाते क्यों नहीं? (९१) तुम्हें क्या हुआ है, तुम बोलते नहीं? (९२) फिर उन को दाहिने हाथ से मारना (और तोड़ना) शुरू किया । (९३) तो वे लोग उन के पास दौड़े हुए आए । (९४) उन्हीं ने कहा कि तुम ऐसी चीजों को क्यों पूजते हो, जिन को खुद तराशते हो, (९५) हालांकि तुम को और जो तुम बनाते हो, उस को खुदा ही ने पैदा किया है । (९६) वे कहने लगे कि इस के लिए इमारत बनाओ, फिर उस को आग के ढेर में डाल दो । (९७) गरज़ उन्हीं ने उन के साथ एक चाल चलनी चाही और हमने उन्हीं को ज़ेर (पसपा) कर दिया । (९८) और इब्राहीम बोले कि मैं अपने परवरदिगार की तरफ़ जाने वाला हूँ, वह मुझे रास्ता दिखाएगा । (९९) ऐ परवरदिगार ! मुझे (औलाद) अता फ़र्मा (जो) सआदतमंदों में से (हो) (१००) तो हमने उन को एक नर्मदिल लड़के की खुशखबरी दी, (१०१) जब वह उन को साथ दौड़ने (की उम्र) को पहुंचा, तो इब्राहीम ने कहा कि बेटा ! मैं सपना देखता हूँ कि (गोया) तुम को जिन्ह कर रहा हूँ, तो तुम सोचो कि तुम्हारा क्या ख्याल है? उन्हीं ने कहा कि अब्बा, जो आप को हुक्म हुआ है, वही कीजिए । खुदा ने चाहा, तो आप मुझे सब करने वालों में पाइएगा । (१०२) जब दोनों ने हुक्म मान लिया, और बाप ने बेटे को माथे के बल लिटा दिया, (१०३) तो हमने उन को पुकारा कि ऐ इब्राहीम ! (१०४) तुम ने सपने को सच्चा कर दिखाया, हम मुह्सिनों को ऐसा ही बदला दिया करते हैं । (१०५) बेशक यह ख़ुली आजमाइश थी । (१०६) और हमने एक बड़ी कुर्बानी को उन का फ़िदया दिया । (१०७) और पीछे आने वालों में इब्राहीम का (अच्छा) जिक्र (बाकी) छोड़ दिया, (१०८) कि इब्राहीम पर सलाम हो । (१०९) मुह्सिनों को हम ऐसा ही बदला दिया करते हैं । (११०) बेशक वह हमारे मोमिन बन्दों में से थे । (१११) और हमने उन को इस्हाक

१. क्या वह तुम को शिकं करते पर पकड़ेगा नहीं और यों ही छोड़ देगा ?

२. फिर वे लोग मेले में जाने लगे, तो हज़रत इब्राहीम अलै० से कहने लगे कि हमारे साथ मेले में चलिए । चूंकि वे लोग इस बात पर एतकाद रखते थे कि दुनिया का कारख़ाना सितारों की गदिश से चल रहा है, इस लिए हज़रत इब्राहीम ने सितारों पर एक नज़र की ताकि वे समझें कि जो हालत आप पर गुज़रे, वह सितारों की गदिश से होंगी, तो आप ने कहा कि मैं तो बीमार हूँ । यह उज़ सुन कर वे चल दिए । इधर उन का जाना था, उधर आप ने उन के बूतों की तरफ़ तबज्जोह की और उन को तोड़ डाला ।

३. इस में इस्तिलाफ़ है कि बेटे से इस्माईल मुराद हैं या इस्हाक । अक्सर तफ़्सीर लिखने वालों के नज़दीक इस्माईल मुराद हैं और यही सही है ।

४. कहते हैं कि हज़रत इब्राहीम ने हज़रत इस्माईल को जिन्ह करने के लिए बड़ी कोशिश की, मगर छुरी ने जिस

(शेष पृष्ठ ७१७ पर)

व बश्शर-नाहु बिइस्हा-क नबिय्यम्-मिनस्सालिहीन (११२) व बारकना अलैहि व
अला इस्हा-क व मिन् जुरिय्यतिहिमा मुहिसिनु-व-व आलिमुल्-लिनफसिही मुबीन
★ (११३) व ल-कद् म-नन्ना अला मूसा व हारून (११४) व नज्जैनाहुमा व
कोमहुमा मिनल्-कबिल्-अजीम (११५) व न-सर-नाहुम् फ-कान् हुमुल्-गालिबीन

(११६) व आतेनाहुमल्-किताबल्-मुस्तबीन (११७)

व हदेना हुमस्सिरातल्-मुस्तकीम (११८)

व त-रकना अलैहिमा फिल्-आखिरीन (११९)

(१२०) सलामुन् अला मूसा व हारून (१२१)

इन्ना कजालि-क नज्जिल्-मुह-सिनीन (१२२)

इन्नुहुमा मिन् जिबादिनल्-मुअमिनीन (१२३)

व इन्-न इल्या-स लमिनल्-मुसलीन (१२४)

इज् का-त लिकोमिही अला तत्तकून (१२५)

अ-तद्जून बज्-लव-व त-जरून अह-स-नल्

खालिकीन (१२६) अल्ला-ह रब्बकुम् व

रब्-व आबाइकुमुल्-अव्वलीन (१२७) फ-

कज्जबूह फ-इन्नुहुम् ल-मुहज्जरून (१२८) इल्ला

जिबादल्लाहिल्-मुखलसीन (१२९) व त-रकना अलैहि फिल्-आखिरीन (१३०)

सलामुन् अला इल्यासीन (१३१) इन्ना कजालि-क नज्जिल्-मुहिसिनीन (१३२)

इन्नुह मिन् जिबादिनल्-मुअमिनीन (१३३) व इन्-न लूतल्-लमिनल्-मुसलीन (१३४)

(१३५) इज् नज्जैनाहु व अह-लहू अज्मजीन (१३६) इल्ला अज्जन् फिल्-

गाबिरीन (१३७) सुम्-म दम्भरन्ल्-आखिरीन (१३८) व इन्नुकुम् ल-तमुर-

रून अलैहिम् मुस्बिहीन (१३९) व बिल्लैलि अ-फला तअ-किलून (१४०)

व इन्-न यूनु-स लमिनल्-मुसलीन (१४१) इज् अ-ब-क इलल्फुल्किल्-मशहूनि (१४२)

(१४३) फ सा-ह-म फकान-मिनल्-मुदहजीन (१४४) फल्ल-क-महुल्-हुतु

व हु-व मुलीम (१४५) फलीला अन्नहू का-न मिनल्-मुसबिहीन (१४६)

المؤمنين ۝ ويذكرنه براسق نياقن الطهين ۝ ويذكرنا
عليه وعلى اسق ۝ ومن ذريعتنا من طائر القيس من
والد منقلا من موسى وهرون ۝ ويذكرنا من الكرم
الطهين ۝ ونذكرنا من طائر القيس من الطهين ۝
المؤمنين ۝ ويذكرنا من الصراط المستقيم ۝ ويذكرنا
الطهين ۝ سلو على موسى وهرون ۝ انا كذا كذا
المؤمنين ۝ انا من عبادنا المؤمنين ۝ وان اليك
المؤمنين ۝ انا كذا كذا المؤمنين ۝ انا كذا كذا
تذكرنا احسن الصالحين ۝ الله ذكرنا ربنا لا اله الا
كذا كذا والمؤمنين ۝ انا كذا كذا المؤمنين ۝ ويذكرنا
عليه من المؤمنين ۝ سلو على انا كذا كذا
المؤمنين ۝ انا من عبادنا المؤمنين ۝ وان لوطا
المؤمنين ۝ انا كذا كذا المؤمنين ۝ انا كذا كذا
لذكرنا المؤمنين ۝ انا كذا كذا المؤمنين ۝
بالن كذا كذا المؤمنين ۝ وان يوسف بن المؤمنين ۝ انا كذا كذا
المؤمنين ۝ انا كذا كذا المؤمنين ۝ انا كذا كذا
المؤمنين ۝ انا كذا كذا المؤمنين ۝ انا كذا كذا

की खुशखबरी भी दी (कि वह) नबी और नेकों में से (होंगे)। (११२) और हमने उन पर और इसहाक पर बरकतें नाशिल की थीं और उन दोनों की ओलाद में से मुहसिन भी हैं और अपने आप पर सुता जुल्म करने वाले (यानी गुनाहगार) भी हैं। (११३)★

और हमने मूसा और हारून पर एहसान किए, (११४) और उन को और उन की कौम को बड़ी मुसीबत से निजात बरूशी। (११५) और उन की मदद की, तो वे गालिब हो गये। (११६) और उन दोनों को किताब साफ़ (मतलब वाली) इनायत की, (११७) और उन को सीधा रास्ता दिखाया, (११८) और पीछे आने वालों में उन का (अच्छा) जिक्र (बाक़ी) छोड़ दिया, (११९) कि मूसा और हारून पर सलाम। (१२०) बेशक हम नेकों को ऐसा ही बदला दिया करते हैं। (१२१) वे दोनों हमारे मोमिन बन्दों में से थे। (१२२) और इल्यास भी पैगम्बरों में से थे। (१२३) जब उन्होंने अपनी कौम से कहा कि तुम डरते क्यों नहीं? (१२४) क्या तुम 'अल' को पुकारते (और उसे पूजते हो) और सब से बेहतर पैदा करने वाले को छोड़ देते हो। (१२५) (यानी) खुदा को, जो तुम्हारा और तुम्हारे अगले बाप-दादा का परवरदिगार है। (१२६) तो उन लोगों ने उन को शूठला दिया, सो वे (दोज़ख़ में) हाज़िर किए जाएंगे। (१२७) हाँ, खुदा के खास बन्दे (अज़ाब में नहीं डाले जाएंगे)। (१२८) और उन का (अच्छा) जिक्र पिछलों में (बाक़ी) छोड़ दिया, (१२९) कि इल्यासीन पर सलाम। (१३०) हम नेक लोगों को ऐसा ही बदला देते हैं। (१३१) बेशक वे हमारे मोमिन बन्दों में से थे। (१३२) और लूत भी पैगम्बरों में से थे, (१३३) जब हमने उनको और उनके घर वालों को, सब को (अज़ाब से) निजात दी, (१३४) मगर एक बुढ़िया कि पीछे रह जाने वालों में थी। (१३५) फिर हम ने औरों को हलाक कर दिया। (१३६) और तुम दिन को भी उन (की बस्तियों) के पास से गुज़रते रहते हो, (१३७) और रात को भी, तो क्या तुम अक्ल नहीं रखते? (१३८)★

और यूनस भी पैगम्बरों में से थे, (१३९) जब भाग कर भरते हुई कश्ती में पहुँचे। (१४०) उस वक़्त क्रुरा डाला, तो उन्होंने ने ज़क उठायी। (१४१) फिर मछली ने उन को निगल लिया और वह मलामत (के क़ाबिल काम) करने वाले थे। (१४२) फिर अगर वह (खुदा की) पाकी

(पृष्ठ ७१५ का शेव)

को बार-बार तेज़ करते रहे, कुछ काम न दिया। आख़िर जोर से चलाते-चलाते एक बार ऐसी आवाज़ आयी कि गोया कोई चीज़ कट गयी है, खून बहने लगा है। तब आप ने अपनी आँखों पर से पट्टी खोल दी, जो ज़िन्ह करते वक़्त इस लिए बांध ली थी कि कहीं बाप की मुहब्बत जोश में न आए और अल्लाह तआला के हुक्म की तामील में पांव डगमगा न जाएं। देखा तो एक दुंवा ज़िन्ह किया हुआ पड़ा है और हज़रत इस्माईल पास ही सही-सालिम खड़े हैं, उसी दुंवे के बारे में खुदा ने फ़रमाया कि एक बड़ी क़ुर्बानी को हम ने उन का फ़िद्वया किया।

१. अल्लाह तआला ने हज़रत इल्यास को नबी बना कर बालबक की तरफ़ भेजा था। वहाँ के लोग एक बुत की पूजा करते थे, जिस का नाम बाल था।

२. हज़रत इल्यास को इल्यासीन भी कहते हैं, जैसे तूरे सीना और तूरे सीनोन और आले-यासीन भी पढ़ा है किसी ने, तो यासीन उन के बाप का नाम है।

ल-लबि-स की बत्-निही इला योमि युब्-असून ८ (१४४) फ-न-बय्नाहु बिल्-अराह
व हु-व सकीम ८ (१४५) व अम्बतना अलैहि श-ज-र-तम्-मिदयक्तीन ८ (१४६) व
असल्लाहु इला मि-अति अल्फिन् औ यजीदून ८ (१४७) फ-आमन् फ-मत्तअ-नाहुम् इलाहीन
५ (१४८) फस्तफतिहिम् अ-तिरबिबकल्-बनातु व लहुमुल्-बनून १ (१४९) अम् ख-

लक्-नल्-मलाइक-त इनासव-व हुम् शाहिदून
(१५०) अल इन्नहुम् मिन् इफ्किहिम् ल-
यकूलून १ (१५१) व-ल-दल्लाहु १ व इन्नहुम्
ल-काजिबून (१५२) अस्त-फल्-बनाति अलल्-
बनीन ५ (१५३) मा लकुम् कै-फ तहकुमून
(१५४) अ-फला त-जवकरून ८ (१५५) अम्
लकुम् सुल्तानुम्-मुबीन १ (१५६) फअतू वि-
किताबिकुम् इन् कुन्तुम् सादिकीन (१५७) व
ज-अलू बेनहू व बेनल्जिन्नति न-स-बन् ५ व ल-
कद् अलि-मतिल्-जिन्नतु इन्नहुम् लमुहज़रून १
(१५८) सुब-हानल्लाहि अम्मा यसिफून १ (१५९)
इल्ला अिबादल्लाहिल्-मुख-लसीन (१६०) फ-
इन्नकुम् व मा तअ-बुदून १ (१६१) मा

فِي بَطْنِهِ إِلَى يَوْمِ يُبْعَثُونَ ۚ فَبَدَّلْنَا بِالْعَرَاءِ وَهُوَ سَقِيمٌ ۚ
أَنبَتْنَا عَلَيْهِ شَجَرَةً مِّنْ ذَاتِ طَلْحٍ ۚ وَأَرْسَلْنَا إِلَىٰ مَأْدُو الْأَوَّلِينَ
وَأَمَّا الْفِتْنَةُ فَلِي وَلِيٍّ ۚ فَاسْتَجِبْ لَهُمُ الْبَيِّنَاتُ وَأَلْهَمْ
الْبَنِينَ ۚ أَمْ عَلَّمْنَا الْبُكْرَةَ إِنَّا أَنَا اللَّهُ مُهِدُونَ ۚ وَلَا أَنَّمْ مِنْ
إِكْهِمْ يُفْتَرُونَ ۚ وَلَهُ اللَّهُ ۚ وَأَلْهَمْ لِكُلِّ بَيْنٍ ۚ صَافَى الْبَابِ
عَلِ الْبَنِينَ ۚ مَا لَكُمْ كَيْفَ عَمَلُونَ ۚ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ۚ أَمْ
لَكُمْ سُلْطَانٌ مُّبِينٌ ۚ فَالْأَوَّلُ كَذِبٌ ۚ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۚ وَجَعَلْنَا
بَيْنَهُ وَبَيْنَ الْجَنَّةِ نَسَبًا ۚ وَلَقَدْ عَلِمْتُمُ الْجِنَّةَ إِنَّمَا تُظَنُّونَ ۚ
سُجِّنَ اللَّهُ لَكُمْ فَيَعْمَلُونَ ۚ لَا يَرَوْنَ اللَّهَ الشَّامِكِينَ ۚ وَلَكُلِّ
وَمَا تَعْمَلُونَ ۚ مَا أَنْتُمْ عَلَيْهِ بِظَنِّينَ ۚ إِلَّا كَمَنْ هُوَ صَالٍ
الْحَيَّةِ ۚ وَمَا لَكُمْ أَلَّا تَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ مَعْلُومٌ ۚ وَإِنَّا لَنَسِفُونَ الْفَالِقِينَ ۚ
وَلَكُمُ النَّصْرُ الْيَوْمَ ۚ وَالْأَوَّلُ الْيَوْمَ ۚ وَإِنَّا لَعِندَنَا
ذِكْرُ الْقَوْمِ الْأَوَّلِينَ ۚ لَنَكْأِيَنَّهُمْ اللَّهُ الشَّامِكِينَ ۚ وَلَكُلِّ قَوْمٍ
فَتْحٌ يَوْمَهُمْ ۚ وَلَقَدْ جَعَلْنَا لِكُلِّ أُمَّةٍ رَّسُولًا ۚ أَنُفِئَهُمْ
لَهُمْ الْبَصُورُونَ ۚ وَإِنَّا جَعَلْنَا أَلَمَ الْفَالِقِينَ ۚ قَوْلَ عَنَّا مَقِيلٌ
جِيئَ ۚ وَأَبْصَرْتُمْ قَوْمَ يَجُودُونَ ۚ لَنَجْذِيَنَّهُمْ أَجْمَعِينَ ۚ وَلَا
لَنَلْصِقَنَّهُمْ قَسَاءَ صَبَابٍ ۚ لَنَنْدَرِينَ ۚ قَوْلَ عَنَّا مَقِيلٌ ۚ

अन्तुम् अलैहि बिफातिनीन १ (१६२) इल्ला मन् हु-व सलिल्-जहीम (१६३) व
मा मिल्ला इल्ला लहू मकामुम्-मअ-लूमु-व-१ (१६४) व इन्ना ल-न-हनुस्-साफून
५ (१६५) व इन्ना ल-न-हनुल्-मुसबिहून (१६६) व इन् कानू ल-यकूलून १ (१६७)
लौ अन्-न अिन्दना जिक-र-म-मिनल्-अव्वलीन १ (१६८) लकुन्ना अिबादल्लाहिल्-
मुख-लसीन (१६९) फ-क-फरू बिही फसो-फ यअ-लमून (१७०) व ल-कद्
स-ब-कत् कलिमतुना लिअिबादिनल्-मुसलीन ८ (१७१) इन्नहुम् लहुमुल्-मन्सूरून
(१७२) व इन्-न जुन्दना लहुमुल्-गालिबून (१७३) फ-त-वल्-ल अन्हुम् हता
हीनिव-१ (१७४) - व अब्सिर्हुम् फसो-फ युब्सिरून (१७५) अ-फ बि-
अजाबिना यस्तअ-जिलून (१७६) फ-इजा न-ज-ल बिसाहतिहिम् फसा-अ सबा-
इल्-मुखरीन (१७७) व त-वल्-ल अन्हुम् हता हीनिव-१ (१७८)

बयान न करते, (१४३) तो उस दिन तक कि लोग दोबारा जिंदा किए जाएंगे, उसी के पेट में रहते (१४४) फिर हमने उन को, जबकि वह बीमार थे, खुले मैदान में डाल दिया। (१४५) और उन पर कद्दू का पेड़ लगाया। (१४६) और उन को लाश या उस से ज्यादा (लोगों) की तरफ़ (पेशाब बना कर) भेजा। (१४७) तो वे ईमान ले आए, सो हम भी उन को (दुनिया में) एक (मुकर्रर) वक्त तक फ़ायदे देते रहे। (१४८) इन से पूछो तो कि भला तुम्हारे परवरदिगार के लिए तो बेटियाँ और उन के लिए बेटे, (१४९) या हमने फ़रिश्तों को औरतें बनाया और वे (उस वक्त) मौजूद थे? (१५०) देखो, ये अपनी झूठ बनायी हुई (बात) कहते हैं, (१५१) कि खुदा के ओलाद है, कुछ शक नहीं कि ये झूठे हैं। (१५२) क्या उस ने बेटों के मुकाबले में बेटियों को पसन्द किया है? (१५३) तुम कैसे लोग हो? किस तरह का फ़ैसला करते हो? (१५४) भला तुम ग़ौर (क्यों) नहीं करते? (१५५) या तुम्हारे पास कोई खुली दलील है, (१५६) अगर तुम सच्चे हो, तो अपनी किताब पेश करो। (१५७) और उन्होंने ने खुदा में और जिन्नों में रिश्ता मुकर्रर किया, हालांकि जिन्नात जानते थे कि वे (खुदा के सामने) हाज़िर किए जाएंगे। (१५८) यह जो कुछ बयान करते हैं, खुदा उस से पाक है। (१५९) मगर खुदा के ख़ालिस बन्दे (अज़ाब में नहीं डाले जाएंगे), (१६०) सो तुम और जिन को तुम पूजते हो, (१६१) खुदा के खिलाफ़ बहका नहीं सकते, (१६२) मगर उस को, जो जहन्नम में जाने वाला है। (१६३) और (फ़रिश्ते कहते हैं कि) हम में से हर एक का एक मक़ाम मुकर्रर है। (१६४) और हम सफ़ बांधे रहते हैं। (१६५) और (खुदा-ए-) पाक (जात का) जिक्र करते रहते हैं, (१६६) और ये लोग कहा करते थे, (१६७) कि अगर हमारे पास अगलों की कोई नसीहत (की किताब) होती, (१६८) तो हम खुदा के ख़ालिस बन्दे होते, (१६९) लेकिन (अब) इस से कुफ़्र करते हैं, सो बहुत जल्द उन को (इस का नतीजा) मालूम हो जाएगा। (१७०) और अपने पंग्राम पहुंचाने वाले बन्दों से हमारा वायदा हो चुका है, (१७१) कि वही (ग़ालिब व) मंसूर (मदद किए हुए) हैं, (१७२) और हमारा सशर ग़ालिब रहेगा, (१७३) तो एक वक्त तक उन से एराज़ किए रहो, (१७४) और उन्हें देखते रहो। ये भी बहुत जल्द (कुफ़्र का अंजाम) देख लेंगे। (१७५) क्या ये हमारे अज़ाब के लिए जल्दी कर रहे हैं, (१७६) मगर जब वह उन के मैदान में आ उतरेगा, तो जिन को डर सुनाया गया था, उन के लिए बुरा दिन होगा। (१७७) और एक वक्त तक उन से मुंह फेरे

न अब्सिर् फसो-फ युस्सिरून (१७६) सुन्हा-न रबिब-क रबिबल्-अज्जति अम्मा यस्सिफून
 (१८०) व सलामुन् अलल्-मुस्लीन (१८१) वल्हम्दु लिल्लाहि रबिबल्-आलमीन (१८२)

३८ सूरतु साद ३८

(मक्की) इस सूरः में अरबी के ३१०७ अक्षर,

७३८ शब्द, ८८ आयतें और ५ रकूअ हैं ।

बिस्मिल्लाहिररह्मानिररहीम •

साद वल्कुरआनि जिज्जिक् (१)

बलिल्लजी-न क-फरू फी अज्जतिव-व शिकाक

(२) कम् अह-लकना मिन् कबिलहिम् मिन्

कनिन् फनादव-व ला-त-ही-न मनास (३) व

अजिबू अन् जा-अहुम् मुन्जिरुम्-मिन्हुम् व

कालल्-काफिरून हाजा साहिरून कज्जाब (४)

अ-ज-अ-लल् आलि-ह-त इलाहव्वाहिदन् इन्-न

हाजा लशैउन् अजाब (५) वन्त-ल-कल् म-ल-उ

मिन्हुम् अनिम्शू वस्बिरू अला आलिहतिकुम्

इन्-न हाजा लशैउं य्युराद (६) मा समिअ-ना

बिहाजा फिल्-मिल्लतिल्-आखिरति इन् हाजा इल्लख्तिलाक (७)

अलैहिज्जिक् मिम्बेनिना बल् हुम् फी शक्किम्-मिन् जिकरी बल् लम्मा यजूक अजाब

(८) अम् बिन्दहुम् खज्जिनु रहमति रबिबल्-अज्जिजल्-वह्हाब (९) अम् लहुम्

मुल्कुस्समावाति वल्अज्जि व मा बेनहुमा फल्यर्तकू फिल्अस्बाब (१०) जुन्दुम्मा हुनालि-क

महब्बुमुम्-मिनल्-अह्जाब (११) कज्ज-बत् कब-लहुम् कौमु नूहिव्-व आदु-व-व

फिर्जीनु जुल्ओताद (१२) व समूदु व कौमु लूतिव्-व अस्हाबुल्-ऐकति उलाइकल्-

अह्जाब (१३) इन् कुल्लुन् इल्ला कज्जबर-रसु-ल फ हक्-क अक्राब (१४) व

मा यन्जुर हाउलाइ इल्ला सैह-तंव्वाहि-द-तुम्-मा लहा मिन् फवाक (१५) व

कालू रम्बना अज्जिजल् लना किल्लाना कब-ल यौमिल्-हिसाब (१६)



रहो। (१७८) और देखते रहो, ये भी बहुत जल्द (नसीजा) देख लेंगे। (१७९) यह जो कुछ बयान करते हैं, तुम्हारा परवरदिगार, जो इफ़्त वाला है (इस से) पाक है। (१८०) और पैगम्बरों पर सलाम। (१८१) सब तरह की तारीफ़ खुदा-ए-रब्बुल आलमीन ही के लिए है। (१८२) ★

३८ सूर: साद ३८

सूर: स्वाद मक्की है और इस में अठासी आयतें और पांच रुकूअ हैं।

शुरू खुदा का नाम लेकर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

स्वाद, कसम है कुरआन की, जो नसीहत देने वाला है (कि तुम हक पर हो), (१) मगर जो लोग काफ़िर हैं, वे घमंड और मुख़ालफ़त में हैं। (२) हम ने उन से पहले बहुत-सी उम्मतों को हलाक कर दिया, तो वे (अज़ाब के वक़्त) लगे फ़रियाद करने और वह रिहाई का वक़्त नहीं था। (३) और उन्होंने ने ताज्जुब किया कि उन के पास उन ही में से हिदायत करने वाला आया और काफ़िर कहने लगे कि यह तो जादूगर है झूठा। (४) क्या उस ने इतने माबूदों की जगह एक ही माबूद बना दिया? यह तो बड़ी अजीब बात है। (५) तो उन में जो मुअज़्ज़ज थे, वे चल खड़ी हुए (और बोले) कि चलो और अपने माबूदों (की पूजा) पर कायम रहो। बेशक यह ऐसी बात है, जिस से (तुम पर बुजुर्गों और बड़ाई) मक़सूद है। (६) यह पिछले मजहब में हम ने कभी सुनी ही नहीं। यह बिल्कुल बनायी हुई बात है। (७) क्या हम सब में से इसी पर नसीहत (की किताब) उतरी है? (नहीं) बल्कि ये मेरी नसीहत की किताब से शक में हैं, बल्कि उन्होंने ने अभी मेरे अज़ाब का मजा नहीं चखा। (८) क्या उन के पास तुम्हारे परवरदिगार की रहमत के ख़जाने हैं, जो ग़ालिब (और) बहुत अता करने वाला है। (९) या आसमानों और ज़मीन और जो कुछ उन में है, उन (सब) पर उन ही की हुकूमत है, तो चाहिए कि रस्सियां तान कर (आसमानों पर) चढ़ जाएं। (१०) यहां हारे हुए गिरोहों में से यह भी एक लश्कर है। (११) इन से पहले नूह की क़ौम और आद और मेखों वाला क़िआन (और उस की क़ौम के लोग) भी, झुठला चुके हैं। (१२) और समूद और लूत की क़ौम और बन के रहने वाले भी यही वे गिरोह हैं। (१३) (इन) सब ने पैगम्बरों को झुठलाया, तो मेरा अज़ाब (उन पर) आ वाक़ेअ हुआ। (१४) ★

और ये लोग तो सिर्फ़ जोर की आवाज़ का, जिस में (शुरू हुए पीछे) कुछ वक़्फ़ा नहीं होगा, इन्तिज़ार करते हैं। (१५) और कहते हैं कि ऐ हमारे परवरदिगार! हम को हमारा हिस्सा हिसाब

के दिन से पहले ही दे दे। (१६) (ऐ पगम्बर!) ये जो कुछ कहते हैं, उस पर सब करो और हमारे बन्दे दाऊद को याद करो, जो ताकत वाले थे (और) बेशक वे रज्जुअ करने वाले थे। (१७) हम ने पहाड़ों को उन के फ़रमान के तहत कर दिया था कि सुबह व शाम उन के साथ (खुदा-ए-) पाक (का) जिक्र करते थे। (१८) और परिदों को भी कि जमा रहते थे, सब उन के फ़रमांबरदार थे। (१९) और हम ने उन की बादशाही को मजबूत किया और उन को हिकमत अता फ़रमायी और (लड़ाई की) बात का फ़ैसला (सिखाया)। (२०) भला तुम्हारे पास उन झगड़ने वालों की भी ख़बर आयी है, जब वे दीवार फाँद कर अन्दर दाखिल हुए। (२१) जिस वक़्त वे दाऊद के पास आए, तो वे उन से घबरा गये। उन्होंने ने कहा, कि खोफ़ न कीजिए। हम दोनों का एक मुक़दमा है कि हम में से एक ने दूसरे से ज़्यादाती की है, तो आप हम में इंसफ़ में फ़ैसला कर दीजिए और बे-इसाफ़ी न कीजिएगा और हम को सीधा रास्ता दिखा दीजिए। (२२) (हाल यह है कि) यह मेरा भाई है, इस के (यहां) निन्यान्वे दुबियां हैं और मेरे (पास) एक दुबी है। यह कहता है कि यह भी मेरे हवाले कर दे और बातों में मुझ पर ज़बरदस्ती करता है। (२३) उन्होंने ने कहा कि यह जो तेरी दुबी मांगता है कि अपनी दुबियों में मिला ले, बेशक तुम पर जुल्म करता है और अक्सर शरीक एक-दूसरे पर ज़्यादाती ही किया करते हैं। हाँ, जो ईमान लाए और नेक अमल करते रहे और ऐसे लोग बहुत कम हैं और दाऊद ने ख़याल किया कि (इस वाकिए से) हम ने उन को आजमाया है, तो उन्होंने ने अपने परवरदिगार से मफ़िरत मांगी और झुक कर गिर पड़े और (खुदा की तरफ़) रज्जुअ किया। (२४) तो हम ने उन को बरक़ा दिया और बेग़क उन के लिए हमारे यहां कुब और उम्दा जगह है। (२५) ऐ दाऊद! हम ने तुम को ज़मीन में बादशाह बनाया है, तो लोगों में इंसफ़ के फ़ैसले किया करो और क़वाहिश की पैरवी न करना कि वह तुम्हें खुदा के रास्ते से भटका देगी जो लोग खुदा के रास्ते से भटकते हैं, उन के लिए सख़्त अज़ाब (तैयार) है कि उन्होंने ने हिसाब के दिन को भुला दिया। (२६) ★

और हम ने आसमान और ज़मीन को और जो (कायनात) उन में है, उस को मन्ज़हत में ख़ाली नहीं पैदा किया। यह उन का गुमान है, जो काफ़िर हैं, सो काफ़िरों के लिए दोख़ब का अज़ाब है। (२७) जो लोग ईमान लाए और अमल करते रहे, क्या उन को हम उन की तरह कर देंगे, जो मुल्क में फ़साद करते हैं या परहेज़गारों को बद-कारों की तरह कर देंगे। (२८) (यह) किताब, जो हम ने तुम पर नाज़िल की है, बरक़त वाली है, ताकि लोग इस की आयतों में गौर करें और ताकि अक़ल वाले नसीहत पकड़ें। (२९) और हम ने दाऊद को सुलेमान अता किए। बहुत खूब बन्दे (थे और) वे (खुदा की तरफ़) रज्जुअ करने वाले थे। (३०) जब उन के सामने शाम को खासे के घोंड़े

पेश किये गये, (३१) तो कहने लगे कि मैं ने परवरदिगार की याद से (गाफिल हो कर) माल की मुहब्बत अस्तियार की, यहां तक कि (सूरज) पर्व में छिप गया। (३२) (बोले कि) उन को मेरे पास वापस लाओ, फिर उन की टांगों और गर्दनों पर हाथ फेरने लगे। (३३) हम ने सुलेमान की आज्ञामाइश की और उन के तहत पर एक धड़ डाल दिया, फिर उन्होंने ने (खुदा की तरफ) रुजूअ किया। (३४) (और) दुआ की कि ऐ परवरदिगार! मुझे मरिफ़रत कर, मुझ को ऐसी बादशाही अता कर कि मेरे बाद किसी को मुनासिब न हो। बेशक तू बड़ा अता फ़रमाने वाला है। (३५) फिर हम ने हवा को उन के फ़रमान के तहत कर दिया कि जहां वह पहुंचना चाहते, उन के हुनम से नर्म-नर्म चलने लगती। (३६) और देवों को भी (उन के फ़रमान के तहत किया), यह सब इमारतें बनाने वाले और गोता मारने वाले थे। (३७) और औरों को भी, जो जंजीरों में जकड़े हुए थे। (३८) (हम ने कहा) यह हमारी बस्तिश है, (चाहो तो) एहसान करो या (चाहो तो) रख छोड़ो, (तुम से) कुछ हिसाब नहीं है। (३९) और बेशक उन के लिए हमारे यहां कुबं और अच्छी जगह है। (४०) ★

और हमारे बन्दे अय्यूब को याद करो जब उन्होंने ने अपने रब को पुकारा कि (ऐ खुदा!) शैतान ने मुझ को तकलीफ़ दे रखी है। (४१) (हम ने कहा कि ज़मीन पर) लात मारो, (देखो), यह (चममा निकल आया), नहाने को ठंडा और पीने को (मीठा)। (४२) और हम ने उन की बीबी (बच्चे) और उन के साथ उन के बराबर और बहसो।^१ (यह) हमारी तरफ़ से रहमत और अक़ल वालों के लिए नसीहत थी, (४३) और अपने हाथ में झाड़ू लो और उस से मारो और क्रसम न तोड़ो।^२ बेशक हम ने उन को साबित क्रदम पाया बहुत ख़ूब बन्दे थे, बेशक वह रुजूअ करने वाले थे। (४४) और हमारे बन्दों इब्राहीम और इस्हाक और याकूब को याद करो, जो ताक़त वाले और नज़र वाले थे। (४५) हम ने उन को एक खास (सिफ़त) (आखिरत के) घर की याद से मुस्ताज़ किया था। (४६) और वे हमारे नज़दीक चुने हुए और नेक लोगों में से थे। (४७) और इस्माईल और अल-यसअ और जुलक़िफ़ल को याद करो। वे सब नेक लोगों में से थे। (४८) यह नसीहत और परहेज़गारों के लिए तो उम्दा जगह है, (४९) हमेशा रहने के बाग़, जिन के दरवाज़े उन के लिए खुले होंगे। (५०) उन में तकिए लगाए बैठें होंगे और (खाने-पीने के लिए) बहुत से भेवे और शराब मांगते रहेंगे। (५१) और उन के पास तीची निगाह रखने वाली (और) हम-उअ

१. यानी जितने बाल-बच्चे पहले थे, वह भी दिए और उतने ही और अता किए।

२. कहते हैं कि हज़रत अय्यूब की बीबी ने कोई ऐसी हरकत की या आप से कोई ऐसी बात कही, जो आप को ना-गवार हुई, तो आप ने क्रसम खा ली कि मैं तुझ को सो छड़ियां मारूंगा, तो आप को यह इशार्द हुआ कि मो मीकों की झाड़ू ले कर उस से बीबी को मारो, क्रमय सच्ची हो जाएगी।

(औरतें) होंगी। (५२) ये वह चीजें हैं, जिन का हिसाब के दिन के लिए, तुम से वायदा किया जाता था। (५३) यह हमारी रोजी है, जो कभी खत्म नहीं होगी। (५४) ये (नेमतें तो फरमा-बर्दारों के लिए हैं) और सर-कशों के लिए बुरा ठिकाना है। (५५) (यानी) दोजख, जिस में वे दाखिल होंगे और वह बुरी आरामगाह है। (५६) यह खोलता हुआ गर्म पानी और पीप (है), अब उस के मजे चखें। (५७) और इसी तरह के और बहुत से (अजाब होंगे) (५८) यह एक फ़ौज है, जो तुम्हारे साथ दाखिल होगी, इन को खुशी न हो, ये दोजख में जाने वाले हैं, (५९) कहेंगे, बल्कि तुम ही को खुशी न हो, तुम ही तो यह (बला) हमारे सामने लाए हो, सो (यह) बुरा ठिकाना है। (६०) वे कहेंगे, ऐ परवरदिगार ! जो इस को हमारे सामने लाया है, उस को दोजख में दूना अजाब दे, (६१) और कहेंगे, क्या वजह है कि (यहां) हम उन शस्त्रों को नहीं देखते, जिन को बुरों में गिना करते थे। (६२) क्या हम ने उन से ठट्ठा किया है या (हमारी) आंखें उन (की तरफ़) से फिर गयी हैं ? (६३) बेशक यह दोजखियों का झगड़ना ना बर-हक़ है। (६४) *

कह दो कि मैं तो सिर्फ़ हिदायत करने वाला हूँ और खुदा-ए-यकता (और) गालिब के सिवा कोई माबूद नहीं। (६५) जो आसमानों और ज़मीन और जो (मल्लूक) उन में है, सब का मालिक है, गालिब (और) बरूश्ने वाला। (६६) कह दो कि यह एक बड़ी (होलनाक चीज़ की) खबर है। (६७) जिस को तुम ध्यान में नहीं लाते, (६८) मुझ को ऊपर की मज्लिस (वालों) का जब वे झगड़ते थे, कुछ भी इल्म न था। (६९) मेरी तरफ़ तो यही वृह्य की जाती है कि मैं खुल्लम-खुल्ला हिदायत करने वाला हूँ। (७०) जब तुम्हारे परवरदिगार ने फ़रिश्तों से कहा कि मैं मिट्टी से इंसान बनाने वाला हूँ। (७१) जब उस को दुरुस्त कर लूं और उस में अपनी रूह फूंक दूं तो उस के आगे सज्दे में गिर पड़ना। (७२) तो तमाम फ़रिश्तों ने सज्दा किया, (७३) मगर शैतान अकड़ बंठा और काफ़िरों में हो गया। (७४) (खुदा ने) फ़रमाया कि ऐ इब्लीस जिस शस्त्र को मैं ने अपने हाथों से बनाया, उस के आगे सज्दा करने से तुझे किस चीज़ ने मना किया। क्या तू घमंड में आ गया या ऊंचे दर्जे वालों में था ? (७५) बोला कि मैं इस से बेहतर हूँ (कि) तू ने मुझ को आग से पैदा किया और इसे मिट्टी से बनाया। (७६) कहा, यहाँ से निकल जा, तू मर्दूद है। (७७) और तुझ पर क्रियामत के दिन तक मेरी लानत (पड़ती) रहेगी। (७८) कहने लगा कि मेरे परवरदिगार मुझे उस दिन तक कि लोग उठाए जाएं, मुहलत दे। (७९) कहा, तुझ को मुहलत दी जाती है। (८०) उस दिन तक, जिस का वक़्त मुकर्रर है। (८१) कहने लगा कि मुझे तेरी इफ़ज़ल की

का-ल फबिअज्जति-क ल-उसिवयन्तहुम् अज्-मअीन ॥ (८२) इल्ला अबाद-क मिन्-
हुमुल-मुख-लसीन (८३) का-ल फल्हक्कु वल्हक्-क अकूल ॥ (८४) ल-अम्-ल-अन्-न
जहन्न-म मिन्-क व मिम्मन् तवि-अ-क मिन्हुम् अज्-मअीन (८५) कुल् मा
अस्-अलुकुम् अलैहि मिन् अजिरव-व मा अ-न मिनल्-मु-त-कल्लिफीन (८६) इन्
हु-व इल्ला जिक्कल-लिन्आलमीन (८७) व
ल-तअ-लमुन-न न-ब-अहू बअ-द हीन ★ (८८)

३६ सूरतुज्जु-मरि ५६

(मक्की) इस सूर. में अरबी के ४९६५ अक्षर,
११८४ शब्द, ७५ आयतें और ८ रकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

तन्जीलुल-किताबि मिनल्लाहिल-अजी-
जिल-हकीम (१) इन्ना अन्जल्ना इलैकल-
किताब बिल्हक्कि फअ-बुदिल्ला-ह मुख्लिसल-
लहुद्दीन ॥ (२) अला लिल्लाहिद-दीनुल्-खालिसु
वल्लजीनत्त-ख-जू मिन्दूनिही औलिया-अमा
नअ-बुदुहुम् इल्ला लियुकारिबूना इलल्लाहि जुल्फा ॥
इन्नल्ला-ह यहकुमु बंनहुम् फीमा हुम् फीहि
यख्तलिफू-न ॥ इन्नल्ला-ह ला यहदी मन् हु-व
काजिबुन् कफकार (३) लौ अरादल्लाह



अय्यत्तखि-ज व-ल-दल्लस्तफा मिम्मा यखलुकु मा यशाउ ॥ सुब-हानह ॥ हुवल्लाहुल-वाहि-
दुल-कहहार (४) ख-ल-कस्समावाति वल्अ-ज बिल्हक्किथ्युकविरल्लै-ल अलन्नहारि
व युक्विरुन्-नहार-र अलल्लैलि व सख्ख-रशशम्-स वल्क-म-र ॥ कुल्लु य्यजरी लि-अ-जलिम-
मुसम्मन् ॥ अला हुवल - अजीजुल - राफकार (५) ख-ल ककुम् मिन्
नफ्सिब्वहिदितिन् सुम्-म ज-अ-ल मिन्हा जौजहा व अन्ज-ल लकुम् मिनल-अन्आमि
समानि-य-त्त अज्वाजिन् ॥ यखलुकुम् फी दुतूनि उम्महातिकुम् खल्क-म-मिम्बअ-दि
खल्किन् फी जुलुमातिन् सलासिन् ॥ जालिकुमुल्लाहु रब्बुकुम् लहुल्मुत्कु ॥ ला इला-ह
इल्ला हु-व ॥ फ-अन्ना तुस्फून् (६) इन् तक्फुरू फ-इन्नल्ला-ह रानिययुन् अन्कुम्
व ला यज्जा लिअबादिहिल - कुफ-र ॥ व इन् तश्कुरू यरज्जहु लकुम् ॥ व
ला तजिह वाजिरतु व्विज्-र उख्खा ॥ सुम्-म इला रबिबुकुम् मजिअुकुम् फ-युनबि-
उकुम् बिमा कुन्तुम् तअ-मलू-न ॥ इन्ह अलीमुम् - बिजातिसुद्दर (७)

कसम ! मैं उन सब को बहकाता रहूंगा । (८२) सिवा उन के, जो तेरे खालिस बन्दे हैं । (८३) कहा, सच (है) और मैं भी सच कहता हूँ । (८४) कि मैं तुझ से और जो उन में से तेरी पंरवी करेंगे, सब से जहन्नम को भर दूंगा । (८५) (ऐ पैगम्बर !) कह दो कि मैं तुम से इस का बदला नहीं मांगता और न मैं बनावट करने वालों में हूँ । (८६) यह (कुरआन) तो दुनिया वालों के लिए नसीहत है । (८७) और तुम को इस का हाल एक वक़्त के बाद मालूम हो जाएगा । (८८) *



३६ सूर: जुमर ५६

सूर: जुमर मक्की है । इस में पचहत्तर आयतें और आठ सूकूब हैं ।

शुरू खुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है ।

इस किताब का उतारा जाना खुदा-ए-गालिब (और) हिकमत वाले की तरफ़ से है । (१) (ऐ पैगम्बर !) हम ने यह किताब तुम्हारी तरफ़ सच्चाई के साथ नाज़िल की है, तो खुदा की इबादत करो (यानी) उस की इबादत को (शिक़ से) खालिस कर के । (२) देखो खालिस इबादत खुदा ही के लिए है और जिन लोगों ने उस के सिवा और दोस्त बनाये हैं वे कहते हैं कि हम इन को इस लिए पूजते हैं कि हम को खुदा का मुकर्रब बना दें, तो जिन बातों में ये इस्तिलाफ़ करते हैं, खुदा उन में इन का फ़सला कर देगा । बेशक़ खुदा उस शरूस को, जो झूठा, ना-शुका है, हिदायत नहीं देता । (३) अगर खुदा किसी को अपना बेटा बनाना चाहता, तो अपनी मरलूक में से जिस को चाहता, चुन लेता । वह पाक है, वही तो खुदा अकेला (और) गालिब है । (४) उसी ने आसमानों और ज़मीन को तद्बीर के साथ पैदा किया है (और) वही रात को दिन पर लपेटता और दिन को रात पर लपेटता है और उसी ने सूरज और चांद को बस में कर रखा है । सब एक मुकर्रर वक़्त तक चलते रहेंगे । देखो वही गालिब (और) बलशने वाला है । (५) उसी ने तुम को एक शरूस से पैदा किया, फिर उस से उस का जोड़ा बनाया और उसी ने तुम्हारे लिए चारपायों में से आठ जोड़े बनाए । वही तुम को तुम्हारी माओं के पेट में (पहले) एक तरह, फिर दूसरी तरह तीन अंधेरों में बनाता है । यही खुदा तुम्हारा परवरदिगार है, उसी की बादशाही है । उस के सिवा कोई याबूद नहीं, फिर तुम कहां फिर जाते हो ? (६) अगर ना-शुकी करोगे, तो खुदा तुम से बे-परवा है और वह अपने बन्दों के लिए ना-शुकी नहीं पसन्द करता ।^१ और अगर शुक्र करोगे, तो वह इस को तुम्हारे लिए पसन्द करेगा और कोई उठाने वाला दूसरे का बोझ नहीं उठाएगा, फिर तुम को अपने परवर-दिगार की तरफ़ लौटना है । फिर जो कुछ तुम करते रहे, वह तुम को बताएगा, वह तो दिलों की

१. यानी इस बात को पसंद नहीं करता कि उस के बन्दे हो कर उस की ना-शुकी करो ।

व इजा मस्तल-इन्सा-न जुलन् दआ रब्बह मुनीबन् इलैहि सुम्-म इजा खव-लहू
निअ-म-तम्-मिन्हु नसि-य मा का-न यदअ इलैहि मिन् कब्लु व ज-अ-ल लिल्लाहि
अन्दादल-लियुजिल-ल अन् सबीलिही कुल् तमत्तअ-बिकुफिर-क कलीलन् इन्न-क मिन्
अस्हाबिन्नार (८) अम्मन् हु-व कानितुन् आना अल्लैलि साजिदव-व काइमय्यहज

रुल-आसि-र-त व यरजू रह-म-त रबिबी कुल् हल्
यस्तविल्लजी-न यअ-लमू-न वल्लजी-न ला यअ-
लमू-न इन्मा य-त-जवकर उलुलल्बाब (९) कुल्

या अबादिल्लजी-न आमनुत्तकू रब्बकुम् लिल्लजी-
न अहसन् फ्री हाजिहिदुन्या ह-स-नतुन् व अर-
जुल्लाहि वासि-अतुन् इन्मा युवफस्साबिरु-न
अज-रहुम् बिगैर हिसाब (१०) कुल् इन्नी

उमिरतु अन् अअ-बुदल्ला-ह मुख्लिसल्लहुद्दीन ॥
(११) व उमिरतु लि-अन् अकू-न अव्वलल-
मुस्लिमीन (१२) कुल् इन्नी अस्वाफु इन्

असेतु रब्बी अजा-ब योमिन् अजीम (१३)
कुलिल्ला-ह अअ-बुदु मुख्लिसल्लहू दीनी ॥ (१४)

फअ-बुद्द मा शिअतुम् मिन् हुनिही कुल् इन्नल-खासिरीनल-लजी-न खसिह अन्कुसहुम्
व अहलोहिम् योमल्-क्रियामति अला जालि-क हुवल-खुस्त्रानुल-मुबीन (१५) लहुम्

मिन् फ्रीकिहिम् जु-ल-लुम-मिनन्नारि व मिन् तहितहिम् जु-ल-लुन् जालि-क युखवि-
फुल्लाहु बिही अबादह याअबादि फक्तकून (१६) वल्लजीनज-त-नबुतागू-त

अय्यअ-बुद्दहा व अनाबू इलल्लाहि लहुमुल्लुशरा फबशिशर अबाद ॥ (१७) अल्लजी-न
यस्तमिअनल् - क्री - ल फयत्तबिअ - न अहू - स - नहू उलाइकल्लजी - न

हदाहुमुल्लाहु व उलाइ-क हुम् उलुलल्बाब (१८) अ-फ-मन् हक्-क
अलैहि कलिमतुल् अजाबि अ-फ अन्-त तुन्किजु मन् फिन्नार (१९)



छिपी बातें तक जानता है। (७) और जब इन्सान को तकलीफ पहुंचती है, तो अपने परवरदिगार को पुकारता है (और) उस की तरफ दिल से रुजूअ करता है। फिर जब वह उस को अपनी तरफ से कोई नेमत देता है, तो जिस काम के लिए पहले उस को पुकारता है, उसे भूल जाता है और खुदा का शरीक बनाने लगता है, ताकि (लोगों को) उस के रास्ते से गुमराह करे। कह दो कि (ऐ काफ़िरे नेमत) अपनी ना-शुकी से थोड़ा-सा फ़ायदा उठा ले, फिर तो तू दोजखियों में होगा। (८) (भला भुशिरक अच्छा है) या वह जो रात के वक़्तों में ज़मीन पर पेशानी रख कर और खड़े हो कर इबादत करता और आखिरत से डरता और अपने परवरदिगार की रहमत की उम्मीद रखता है। कहो, भला जो लोग इल्म रखते हैं और जो नहीं रखते, दोनों बराबर हो सकते हैं, (और) नसीहत तो वही पकड़ते हैं, जो अक्लमंद हैं। (९) *

कह दो कि ऐ मेरे बन्दो ! जो ईमान लाए हो, अपने परवरदिगार से डरो, जिन्होंने इस दुनिया में नेकी की, उन के लिए भलाई है और खुदा की ज़मीन कुशादा है, जो सब करने वाले हैं, उन को बे-शुमार सवाब मिलेगा। (१०) कह दो कि मुझ से इर्शाद हुआ है कि खुदा की इबादत को खालिस कर के उस की बन्दगी करूं। (११) और यह भी इर्शाद हुआ है कि मैं सब से अब्बल मुसलमान बनूं। (१२) कह दो कि अगर मैं अपने परवरदिगार का हुक्म न मानूं तो मुझे बड़े दिन के अज़ाब से डर लगता है। (१३) कह दो कि मैं अपने दीन को (शिक से) खालिस कर के उस की इबादत करता हूं। (१४) तो तुम उस के सिवा, जिस की चाहो, पूजा करो। कह दो कि नुकसान उठाने वाले वही लोग हैं, जिन्होंने न क्रियामत के दिन अपने आप को और अपने घर वालों को नुकसान में डाला। देखो यही खुला नुकसान है। (१५) उन के ऊपर तो आग के सायबान होंगे और नीचे (उसके) फ़र्श होंगे। यह वह (अज़ाब) है, जिस से खुदा अपने बन्दों को डराता है, तो ऐ मेरे बन्दो ! मुझ से डरते रहो। (१६) और जो इस से बचा कि बुतों को पूजे और खुदा की तरफ रुजूअ किया, उन के लिए खुशखबरी है, तो मेरे बंदों को खुशखबरी सुना दो, (१७) जो बात को सुनते और अच्छी बातों की पैरवी करते हैं। यही वे लोग हैं जिन को खुदा ने हिदायत दी और यही अक्ल वाले हैं। (१८) भला जिस शक्स पर अज़ाब का हुक्म हो चुका, तो क्या तुम (ऐसे) दोजखी को मुसलसी

१. यानी जिन बातों के करने का उन को हुक्म दिया गया, वे करते हैं और जिन से मना किया गया है, वह नहीं करते। ये दोनों अच्छी बातें हैं।

लाकिनिल-लजीनसको रब्बहुम् लहुम् गु-रफुम्-मिन् फौकिहा गु-रफुम्-मन्निथ्यतुन् तजरी
मिन् तह्तिहल-अन्हाह वअ-दल्लाहि ला युस्लिफुल्लाहुल-मीआद (२०) अ-लम् त-र
अन्ल्ला-ह अन्ज-ल मिनस्समाइ मा-अन् फ स-ल-कह यनाबी-अ फिलअज्रि सुम्-म
युस्त्रिजु बिही जर-अम्-मुख्तलिफन् अल्वानुह सुम्-म यहीजु फ-तराहु मुस्फरन् सुम्-म
यज्-अलुह हुतामन् इन्-न फी जालि-क लजिकरा



लिउलिल-अल्बाब ✱(२१) अ-फ मन् श-र-
हल्लाहु सद्-रह लिइस्लामि फ हु-व अला
नूरिम्-मिरबिही फवैलुल-लिक्कासियति कुलबुहुम्
मिन् जिकिरल्लाहि अलाइ-क फी जलालिम्-मुबीन
(२२) अल्लाहु नज्ज-ल अह-स-नल-हदीसि
किताबम्-मु-त-शाबिहम्-मसानि-यत्तकशअर्ह मिन्हु
जुलुदुलजी-न यखशी-न रब्बहुम् सुम्-म तलीनु
जुलुदुहुम् व कुलबुहुम् इला जिकिरल्लाहि जालि-क
हुदल्लाहि यहदी बिही मय्यशाउ व मय्युजिल-
लिल्लाहु फमा लह् मिन् हाद (२३) अ-फ
मय्यत्तकी बिवजिही सू-अल्-अजाबि योमल्-

क्रियामति व फी-ल लिज्जालिमी-न जूकू मा कुत्तुम् तक्सिबून (२४) कज्ज-बल्-
लजी-न मिन् कब्लिहिम् फ-अताहुमुल-अजाबु मिन् हेसु ला यश्रुलून (२५) फ-
अजा-क-हुमुल्लाहुल-खिज्-य फिल-हयातिदुन्या व ल-अजाबुल्-आखिरति अकबर लौ कानू
यअ-लमून (२६) व ल-कद् ज़-रब्ना लिन्नासि फी हाजल-कुरआनि मिन् कुल्लि
म-सलिल्-ल-अल्लहुम् य-त-जक्करून (२७) कुरआनन् अ-रबियन् गै-र जी अिव-
जिल्-ल-अल्लहुम् यत्तकून (२८) ज़-र-बल्लाहु म-स-लर्-रजुलन् फीहि शु-रकाउ
मु-तशाकिसून-न व रजुलन् स-ल-मल्-तिरजुलिन् हल् यस्तवियानि म-स-लद् अल्हम्दु
लिल्लाहि बल् अक्सरुहुम् ला यअ-लमून (२९) इन्न-क मय्यितु व-व इन्नहुम् मय्यितून-
(३०) सुम्-म इन्नकुम् योमल्क्रियामति अिन्-द रबिबकुम् तस्तसिमून ✱(३१)

हे सकोये ? (१९) लेकिन जो लोग अपने परवरदिगार से डरते हैं, उन के लिए ऊँचे-ऊँचे महल हैं, जिन के अन्दर कोठे बने हुए हैं (और) उन के नीचे नहरें बह रही हैं। (यह) खुदा का वायदा है। खुदा वायदे के खिलाफ नहीं करता। (२०) क्या तुम ने नहीं देखा कि खुदा आसमान से पानी नाज़िल करता, फिर उस को ज़मीन में चयमे बना कर जारी करता, फिर उस से खेती उगाता है, जिस के तरह-तरह के रंग होते हैं, फिर वह शुष्क हो जाती है, तो तुम उस को देखते हो (कि) पीली (हो गयी है) फिर उसे चूरा-चूरा कर देता है। बेशक इस में अवल वालों के लिए नसीहत है। (२१)*

भला जिस शरूस का सीना खुदा ने इस्लाम के लिए खोल दिया हो और वह अपने परवरदिगार की तरफ से रोशनी पर हो, (तो क्या वह सलत-दिल काफ़िर की तरह हो सकता है ?) पस उन पर अफ़सोस है, जिनके दिल खुदा की याद से सलत हो रहे हैं और यही लोग खुली गुमराही में हैं। (२२) खुदा ने निहायत अच्छी बातें नाज़िल फ़रमायी हैं (यानी) किताब (जिस की आयतें आपस में) मिलती-जुलती (हैं) और दोहरायी जाती (हैं), जो लोग अपने परवरदिगार से डरते हैं, उन के बदन के (उस से) रोंगटे खड़े हो जाते हैं, फिर उन के बदन और नर्म (हो कर) खुदा की याद की तरफ़ (मुतवज्जह) हो जाते हैं। यही खुदा की हिदायत है, वह इस से जिस को चाहता है, हिदायत देता है और जिस को खुदा गुमराह करे, उस को कोई हिदायत देने वाला नहीं। (२३) भला जो आदमी क्रियामत के दिन अपने मुंह से बुरे अज़ाब को रोकता हो, (क्या वह बेसा हो सकता है, जो बंन में हो) और जालिमों से कहा जाएगा कि जो कुछ तुम करते रहे थे, उस के मजे चखो। (२४) जो लोग इन से पहले थे, उन्होंने भी झुठलाया था, तो उन पर अज़ाब ऐसी जगह से आ गया कि उन को खबर ही न थी। (२५) फिर उन को खुदा ने दुनिया की ज़िदगी में हसवाई का मज़ा चखा दिया और आखिरत का अज़ाब तो बहुत बड़ा है। काश ये समझ रखते (२६) और हम ने लोगों के (समझाने के लिए) इस क़ुरआन में हर तरह की मिसालें बयान की हैं, ताकि वे नसीहत पकड़ें। (२७) यह क़ुरआन अरबी (है), जिस में कोई ऐब (और इख़िलाफ़) नहीं, ताकि वे डर मानें। (२८) खुदा एक मिसाल बयान करता है कि एक शरूस है, जिस में कई (आदमी) शरीक हैं, (अलग-अलग मिज़ाज) और बुरी आदतों वाले और एक आदमी खास एक शरूस का (गुलाम है।) भला दोनों की हालत बराबर है ? (नहीं) अल्हम्दुलिल्लाह ! बल्कि यह अक्सर लोग नहीं जानते। (२९) (ऐ पैग़म्बर !) तुम भी मर जाओगे और ये भी मर जाएंगे।' (३०) फिर तुम सब क्रियामत के दिन अपने परवरदिगार के सामने झगड़ोगे, और झगड़े का फ़ैसला कर दिया जाएगा। (३१) *

१. काफ़िर इस बात की तमन्ना में थे और इम्तिज़ार कर रहे थे कि हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़िदगी ख़त्म हो जाए। अल्लाह तआला ने हज़रत सल्ल० से फ़रमाया कि हमेशा की ज़िदगी तुम्हारे लिए भी नहीं है और इन लोगों के लिए भी नहीं है, मीत तुम को भी आएगी और इन को भी क़ब्रस्तान में ले जाएगी, फिर उन का तुम्हारी मीत की तमन्ना और इम्तिज़ार करना सिक्क़ हिमाक़त और नादानी की बात है। रिवायत है कि जब हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इम्तिज़ाल हुआ, तो हज़रत उमर को यक़ीन न हुआ, तो उन्होंने ने कहा कि जो कोई कहेगा कि आप वफ़ात पा गये हैं, उस का सर तलवार से (जो नंगी हाथ में लिए हुए थे) उड़ा दूंगा। हज़रत अबूबक़ रज़ि० ने यह सुना तो हज़रत उमर रज़ि० से कहा कि तलवार को म्यान में कीजिए और मिवर पर चढ़ कर यह आयत पढ़ी, तब सब को यक़ीन हुआ कि आप इम्तिज़ाल फ़रमा गये।

तो उस से बढ़ कर जालिम कौन, जो खुदा पर झूठ बोले और सच्ची बात, जब उस के पास पहुंच जाए तो उसे झुठलाए ? क्या जहन्नम में काफ़िरों का ठिकाना नहीं है ? (३२) और जो शरूस सच्ची बात ले कर आया और जिस ने उस की तस्दीक की, वही लोग मुत्तकी हैं। (३३) वे जो चाहेंगे, उन के लिए उन के परवरदिगार के पास (मौजूद है) मुह्सिनों का यही बदला है, (३४) ताकि खुदा उन से बुराइयों को जो उन्होंने ने कीं, दूर कर दे और नेक कामों का जो वे करते रहे, उन को बदला दे। (३५) क्या खुदा अपने बन्दे को काफ़ी नहीं ? और यह तुम को उन लोगों से, जो इस के सिवा हैं, (यानी ग़ैर-खुदा से) डराते हैं और जिस को खुदा गुमराह करे, उसे कोई हिदायत देने वाला नहीं। (३६) और जिस को खुदा हिदायत दे, उस को कोई गुमराह करने वाला नहीं। क्या खुदा जालिम (और) बदला लेने वाला नहीं है ? (३७) और अगर तुम उन से पूछो कि आसमानों और ज़मीन को किस ने पैदा किया, तो कह दें कि खुदा ने। कहो कि भला देखो तो जिनको तुम खुदा के सिवा पुकारते हो, अगर खुदा मुझ को कोई तकलीफ़ पहुंचानी चाहे, तो क्या वे उस तकलीफ़ को दूर कर सकते हैं या अगर मुझ पर मेहरबानी करना चाहे, तो वे उसकी मेहरबानी को रोक सकते हैं ? कह दो कि मुझे खुदा ही काफ़ी है, भरोसा रखने वाले उसी पर भरोसा रखते हैं। (३८) कह दो कि ऐ कौम ! तुम अपनी जगह अमल किए जाओ, मैं (अपनी जगह) अमल किए जाता हूं। बहुत जल्द तुम को मालूम हो जाएगा, (३९) कि किस पर अज़ाब आता है जो उसे रसवा करेगा और किस पर हमेशा का अज़ाब नाज़िल होता है ? (४०) हम ने तुम पर किताब लोगों (की हिदायत) के लिए सच्चाई के साथ नाज़िल की है, तो जो शरूस हिदायत पाता है, तो अपने (भले के) लिए और जो गुमराह होता है तो गुमराही से अपना ही नुक़सान करता है और (ऐ पैग़म्बर !) तुम उन के ज़िम्मेदार नहीं हो। (४१) ★

खुदा लोगों के मरने के वक़्त उन की रूहें क़ब्ज़ कर लेता है और जो मरे नहीं (उन की रूहें) सोते में (क़ब्ज़ कर लेता है) फिर जिन पर मौत का हुक्म कर चुकता है, उन को रोक रखता है और बाक़ी रूहों को एक मुक़र्रर वक़्त तक के लिए छोड़ देता है। जो लोग सोच-विचार करते हैं, उन के

अमिस्त-ख-जू मिन् दूनि^१ल्लाहि शुफ-आ-अ^२कुल् अ-वलौ कानू ला यम्लिकू-न शंअव-व
ला यअ-किलून (४३) कुल् लिल्लाहिश्शफाअतु जमीअन् लहू मुल्कुस्समावाति वल्अज्जि
मुम्-म इलैहि तुजअून (४४) व इजा जुकिरल्लाहु वह्-दहुश्-म-अज्जत् कुलुबुलजी-न
ला युअमिन्-न बिल्-आखिरति^३ व इजा जुकि-रल्लजी-न मिन् दूनिही^४ इजा हुम्

यस्तन्निश्चयः (४५) कृत्स्निलाहुम्-मा फातिरस्-
समावाति वत्तञ्जि अलिमल्-गैबि वशहादति
अन्-त तहकुमु बै-न अिबादि-क फीमा कानू
फीहि यख्तलिफून (४६) व लो अन्-न
लिल्लजी-न अ-लमू मा फिल्लज्जि जमीअं-व-व
मिस्-लहू म-अहू लफतदौ बिही मिन् सूइल्-
अजाबि यौमल्क्रियामति॥व बदा लहुम् मिनल्-
लाहि मा लम् यकनू यह-तसिबून (४७) व
बदा लहुम् सय्यियातु मा क-स-बू व हा-क
बिहिम् मा कानू बिही यस्तहिजऊन (४८)
फइजा मस्सल्-इन्सान जुहन् दआना सुम्-म

[illegible]

इजा खव्वल्लाहु निअ-म-त्तम्-मिन्ना॥का-ल इन्नमा॥ ऊतीतुह अला अलिम्न॥बल् हि-य
फित्त-नतु॥व-व लाकिन्-न अक्स-रहुम् ला यअ-लमून (४६) कद् काल-
हल्लजी - न मिन् कळिहिम् क्रमा॥ अरना अन्हुम् मा कानू यक्सिबून
(५०) फ - असाबहुम् सय्यिआतु मा क-सबू॥ वल्लजी-न अ-लमू मिन्
हाडला-इ सयुसीबुहुम् सय्यिआतु मा क-सबू॥ व मा हुम् बिमुअ-जिजीन
(५१) अ-व लम् यअ - लमू अन्नल्ला-ह यम्सुतुरिअ-क लिमय्यशा॥उ व
यक्किदर॥ इन्-न की जालि - क लआयातिल् - लिकोमिय्युअमिनून ★ (५२)

लिए इस में निशानियां हैं । (४२) क्या उन्होंने ने खुदा के सिवा और सिकारिशी बना लिए हैं । कहो कि चाहे वे किसी चीज का भी अस्तियार न रखते हों और न (कुछ) समझते ही हों ? (४३) कह दो कि सिकारिश तो सब खुदा ही के अस्तियार में है । उसी के लिए आसमानों और जमीन की बादशाही है, फिर तुम उसी की तरफ लौट कर जाओगे । (४४) और जब तंहा जिक्र किया जाता है, तो जो लोग आखिरत पर ईमान नहीं रखते, उन के दिल भींच उठते हैं और जब इस के सिवा औरों का जिक्र किया जाता है, तो खुश हो जाते हैं । (४५) कहो कि ऐ खुदा ! (ऐ) आसमानों और जमीन के पैदा करने वाले (और) छिपे और खुले के जानने वाले ! तू ही अपने हर बन्दों में इन बातों का, जिन में वे इस्तिलाफ करते रहे हैं, फ़ैसला करेगा । (४६) और अगर जालिमों के पास वह सब (माल व मताअ) हो जो जमीन में है और उस के साथ उसी क़दर और हो तो क्रियामत के दिन बुरे अज़ाब (से मुल्लसी) पानी के बदले में दे दें और उन पर खुदा की तरफ़ से वह वात जाहिर हो जाएगी, जिस का उन को ह्याल भी न था । (४७) और उन के आमाल की बुराइयां उन पर जाहिर हो जाएगी और जिस (अज़ाब) की वे हंसी उड़ाते थे, वह उन को आ घेरेगा । (४८) जब इंसान को तकलीफ़ पहुंचती है, तो हमें पुकारने लगता है, फिर जब हम उस को अपनी तरफ़ से नेमत बरूशते हैं, तो कहता है कि यह तो मुझे (मेरे) इल्म (व सूझ-बूझ) की वजह से मिली है । (नहीं,) बल्कि वह आजमाइश है, मगर उन में से अक्सर नहीं जानते । (४९) जो लोग इन में पहले ये, वे भी यही कहा करते थे, जो कुछ वे किया करते थे, उन के कुछ काम भी न आया । (५०) उन पर उन के आमाल के बवाल पड़ गये और जो लोग उन में से जुल्म करते रहे हैं, उन पर उन के अमलों के बवाल बहुत जल्द पड़ेंगे और वे (खुदा को) आजिज़ नहीं कर सकते । (५१) क्या उन को मालूम नहीं कि खुदा ही, जिस के लिए रोज़ी को फैला देता है और (जिस के लिए चाहता है) तंग कर देता है । जो ईमान लाते हैं, उन के लिए इस में (बहुत-सी) निशानियां हैं । (५२) ★

(ऐ पैगम्बर ! मेरी तरफ से लोगों को) कह दो कि ऐ मेरे बन्दों ! जिन्होंने अपनी जानों पर ज्यादती की है, खुदा की रहमत से ना-उम्मीद न होना । खुदा तो सब गुनाहों को बरखा देता है (और) वह तो बरक्षने वाला मेहरबान है । (५३) और इस से पहले कि तुम पर अज्ञाब आ वाक़ेअ हो, अपने परवरदिगार की तरफ़ ख़ूब करो और उस के फ़रमांबरदार हो जाओ, फिर तुम को मदद नहीं मिलेगी । (५४) और इस से पहले कि तुम पर अचानक अज्ञाब आ जाए और तुम को ख़बर भी न हो, इस निहायत अच्छी (किताब) की, जो तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से तुम पर नाज़िल हुई है, पैरवी करो, (५५) कि (शायद उस वक़्त) कोई नफ़्स कहने लगे कि (हाय ! हाय !!) उम गलती पर अफ़सोस है, जो मैं ने खुदा के हक़ में की और मैं तो हंसी ही करता रहा, (५६) या यह कहने लगे कि अगर खुदा मुझ को हिदायत देता तो मैं भी परहेज़गारों में होता । (५७) या जब अज्ञाब देख ले तो कहने लगे कि अगर मुझे फिर एक बार दुनिया में जाना हो तो मैं नेक लोगों में हो जाऊँ । (५८) (खुदा फ़रमाएगा,) क्यों नहीं, मेरी आयतों तेरे पास पहुंच गयी हैं, मगर तू ने उन को झुठलाया और शेखी में आ गया और तू काफ़िर बन गया । (५९) और जिन लोगों ने खुदा पर झूठ बोला, तुम क़ियामत के दिन देखोगे कि उन के मुंह काले हो रहे होंगे । क्या घमंड करने वालों का ठिकाना दोज़ख़ में नहीं है ? (६०) और जो परहेज़गार हैं, उन की (सआदत और) कामियाबी की वज़ह से खुदा उन को निजात देगा, न तो उन को कोई सस्ती पहुंचेगी और न ग़मनाक होंगे । (६१) खुदा ही हर चीज़ का पैदा करने वाला है और वही हर चीज़ का निगरा है । (६२) उसी के पास आसमानों और ज़मीन की कुजियां हैं और जिन्होंने खुदा की आयतों से कुफ़ किया, वही नुक्सान उठाने वाले हैं । (६३) ★

कह दो कि ऐ नादानो ! तुम मुझ से यह कहते हो मैं ग़ैर-खुदा की पूजा करने लगू । (६४) और (ऐ मुहम्मद !) तुम्हारी तरफ़ और उन (पैगम्बरों) की तरफ़, जो तुम से पहले हो चुके हैं, यही बख़्त भेजी गयी है कि अगर तुम ने शिर्क किया, तो तुम्हारे अमल बर्बाद हो जाएंगे और तुम नुक्सान उठाने वालों में हो जाओगे, (६५) बल्कि खुदा ही को इबादन करो और शुक्रगुजारों में

व मा क-द - हल्ला-ह हक् - क कदरिही वलअरजु जमीअन् कब्जनुह
 योमल्क्रियामति वस्समावातु मस्विद्यातुम् - बियमीतिही सुब्हानह व लआला
 अम्मा युशिरकून (६७) व नुफि-ख फिस्सूरि-फ सजि-क मन् फिस्
 समावाति व मन् फिलअजि इल्ला मन् शा-अल्लाहु सुम्-म नुफि-ख फ्रीहि उख्वा
 फ-इजाहुम् क्रियामुय्यन्जुरून (६८) व अश-
 र-कतिल्-अरजु बिनूरि रब्बिहा व वुज्जिअल्-
 किताबु व-जो-अ बिन्नबिद्यी-न वशु-ह-दाइ व
 कुज्जि-य बैनहुम् बिह्विक व हुम् ला युजुलमून
 (६९) व वुफिफयत् कुल्लु नफिसम्मा अमिलत्
 व हु-व अअ-लमु बिमा यफ्-अलून (७०) व
 सीकल्लजी-न क-फरू इला जहन्न-म जु-म-रन्
 हत्ता इजा जाऊहा फुतिहत् अब्बाबुहा व का-ल
 लहुम् ख-ज-नतुहा अ-लम् यअतिकुम् रुमुलुम्-
 मिन्कुम् यत्लून-अलैकुम् आयाति रब्बिकुम् व
 युज्जिरूनकुम् लिक्का-अ योमिकुम् हाजा कालू
 बला व लाकिन् हक्कत् कलिमतुल्-अजाबि
 अ-लल्काफिरीन (७१) कीलदखुल् अब्बा-ब ज-हन्न-म खालिदी-न फ्रीहा
 फबिअ-स मस्-वल् - मु - त-कब्बिरीन (७२) वसीकल्लजीनसत्की रब्बहुम्
 इलज्जन्नति जुम - रन् हत्ता इजा जाऊहा व फुतिहत् अब्बाबुहा व
 का-ल लहुम् ख-ज-नतुहा सलामुन् अलैकुम् तिब्नुम् फदखुलूहा खालिदीन
 (७३) व कालुल्-हम्दु लिल्लाहिल्लजी स-द-कना वअ-दह व औ-र-स-
 नन्-अर-ज न-त-बव्वउ मिनलजन्नति हेसु नशाउ ८ फनिअ-म अजरुल्-आमिलीन
 (७४) व-त-रल्-मलाई-क-त हाफकी-न मिन् होलिल्-अशि युसब्बिहून बिहम्दि रब्बिहिम्
 व कुज्जि-य बैनहुम् बिह्विक व कीलल्-हम्दु लिल्लाहि रब्बिल्-आलमीन (७५)

الْقَوْمِ وَمَا قَدَرُوا اللَّهَ حَقَّ قَدْرِهِ وَالْأَرْضُ جَمِيعًا قَبْضٌ
 فِي يَوْمٍ أَقْصَى يَدَيْهِ يَوْمَ تَكُونُ الْجِبَالُ كَالْعِهْنِ
 وَمَنْ فِيهَا مِنْ شَاءَ اللَّهُ ثُمَّ يُنْفِخُ فِي نَفْثَةٍ أُخْرَىٰ وَفَاجَأَهُمْ قِيَامٌ يَنْظُرُونَ ۝
 وَتُفْضَىٰ بَيْنَهُمُ بِالْحَقِّ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ۝ وَوَقَّيْتُ كُلَّ نَفْسٍ
 فَاعْيَلَتْ وَهُوَ أَعْلَمُ بِمَا يَعْمَلُونَ ۝ وَبِشِقَ الدِّينِ فَكَّرًا
 إِلَىٰ جَهَنَّمَ زُمَرًا ۚ حَتَّىٰ إِذَا جَاءَ أُنْفُسًا تَوَلَّىٰ وَكُنَّ تَلَاسِيًا
 يُدْرِكُهُ الْفَجَاءُ يَوْمَئِذٍ فَذُنًا أَوَّلًا ۚ وَكُنَّ حُكْمًا يُعْذَرُ
 عَلَى الْقَوْمِ ۝ قِيلَ ادْخُلُوا الْوَابَ جَمْعًا خَالِدِينَ فِيهَا ۚ قِيلَ
 مَنْ الشَّاكِرِينَ ۝ وَبِشِقَ الدِّينِ فَكَّرًا ۚ حَتَّىٰ إِذَا جَاءَ أُنْفُسًا تَوَلَّىٰ وَكُنَّ تَلَاسِيًا
 يُدْرِكُهُ الْفَجَاءُ خَالِدِينَ ۝ وَقَالَ الْعِمْلُ لِلَّذِي حَدَّثَنَا
 وَدَعَا وَارْتَأَىٰ الْأَرْضَ تَقْبِلُ مِنَ الْجَهَنَّمَ حَيْثُ شَاءَ فَيَعْمَلُ
 أَجْرَ الْعَمَلِينَ ۝ وَتَرَى الْمَنَاسِكَ حَاقِينَ مِنْ حُلِّ الْعَرْشِ
 يُسَبِّحُونَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَفَضْلُ بَيْنَهُمْ بِالْحَقِّ وَقِيلَ الْعَمَلُ

हो। (६६) और उन्होंने ने खुदा की कद्रमनासी जैसी करनी चाहिए थी, नहीं की और क्रियामत के दिन तमाम जमीन उस की मुदठी में होगी और आसमान उस के दाहिने हाथ में लिपटे होंगे (और) वह इन लोगों के शिकं से पाक और आली शान है। (६७) और जब सूर फूँका जाएगा, तो जो लोग आसमान में हैं और जो जमीन में हैं, सब बेहोश हो कर गिर पड़ेंगे, मगर वह जिस को खुदा चाहे, फिर दूसरी बार सूर फूँका जाएगा, तो फ़ौरन सब खड़े हो कर देखने लगेंगे। (६८) और जमीन अपने परवरदिगार के नूर से चमक उठेगी और (आमाल की) किताब (खोल कर) रख दी जाएगी और पैगम्बर और (और) गवाह हाज़िर किए जाएंगे और उन में इंसान के साथ फ़ैसला किया जाएगा और बे-इंसाफ़ी नहीं की जाएगी। (६९) और जिस शख्स ने जो अमल किया होगा, उस को उस का पूरा-पूरा बदला मिल जाएगा और जो कुछ ये करते हैं, उस को सब की खबर है। (७०)★

और काफ़िरों को गिरोह-गिरोह बना कर जहन्नम की तरफ़ ले जाएंगे, यहां तक कि जब वे उस के पास पहुंच जाएंगे, तो उस के दरवाज़े खोल दिए जाएंगे, तो उस के दारोगा उन से कहेंगे कि क्या तुम्हारे पास तुम ही में से पैगम्बर नहीं आए थे, जो तुम को तुम्हारे परवरदिगार की आयतें पढ़-पढ़ कर सुनाते और उस दिन के पेश आने से डराते थे, कहेंगे, क्यों नहीं, लेकिन काफ़िरों के हज़क में अज़ाब का हुक्म तह्कीक हो चुका था। (७१) कहा जाएगा कि दोख़ के दरवाज़ों में दाख़िल हो जाओ, हमेशा उस में रहोगे, तकब्वुर करने वालों का बुरा ठिकाना है। (७२) और जो लोग अपने परवर-दिगार से डरते हैं, उन को गिरोह-गिरोह बना कर बहिश्त की तरफ़ ले जाएंगे, यहां तक कि जब उस के पास पहुंच जाएंगे और उस के दरवाज़े खोल दिए जाएंगे, तो उस के दारोगा उन से कहेंगे कि तुम पर सलाम! तुम बहुत अच्छे रहे। अब इस में हमेशा के लिए दाख़िल हो जाओ। (७३) वे कहेंगे कि खुदा का शुक्र है, जिस ने अपने वायदे को हम से सच्चा कर दिया और हम को उस जमीन का वारिस बना दिया, हम बहिश्त में जिस मकान में चाहें रहें, तो (अच्छे) अमल करने वालों का बदला भी कैसा खूब है। (७४) तुम फ़रिश्तों को देखोगे कि अर्श के गिर्द घेरा बांधे हुए हैं (और) अपने परवरदिगार की तारीफ़ के साथ तस्बीह कर रहे हैं और उन में इन्साफ़ के साथ फ़ैसला किया जाएगा और कहा जाएगा कि हर तरह की तारीफ़ अल्लाह ही के लिए है, जो सारे जहान का मालिक है। (७५)★●

४० सूरतुल् मुअ्मिनि ६०

(गवकी) इस सूरः में अरबी के ५२१३ अक्षर, १२४२ शब्द, ८५ आयतें और ६ रुकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिरं ह्मा निरंहीम •

हा-मीम् (१) तन्जीलुल्-किताबि मिनलाहिल् - अजीजिल् - अलीम।

(२) शाफिरिख्जम्बि व काबिलितौबि शदीदिल्-अक्राबि ॥ जित्तौलि ॥ ला

इला - ह इल्ला हु - व ॥ इलैहिल्-मसीर (३) मा युजादिलु फी

आयातिल्लाहि इल्लल्लजी - न क-फरू फला यरहर-क त-कल्लुबुहुम् फिल्-

बिलाद (४) कज्ज-बत् कल्लहुम् कोमु

नूहिअ्वल्-अह्जाबु मिम्बअ-दिहिम् व हम्मत्

कुल्लु उम्मतिम्-बिरसूलिहिम् लियअखूजुहु व

जादलू बिल्बातिलि लियुदहिज्ज बिहिल्हक्-क

फ-अ-खज्जतुहुम् फकै-फ का-न अक्राब (५)

व कज्जालि-क हक्कत् कलिमतू रब्बि-क अ-

लल्लजी-न क-फरू अन्नहुम् अस्हाबुन्नार (६)

अल्लजी-न यह्मिलूनल्-अ-श व मन् होलहू

युसब्बिहू-न बिहम्दि रब्बिहिम् व युअ्मिनू-न

बिही व यस्तरिफरू-न लिल्लजी-न आमनू

रब्बना वसिअ-त कुल्-ल शैइरं ह्मतं व-व

अल्लमन् फरिफरू लिल्लजी-न ताबू वत्त-ब-अ

सबील-क व किहिम् अजाबल्-जहीम (७) रब्बना व अदखिल्हुम् जन्नाति

अद्नि-निल्लती व-अत्तहुम् व मन् स-ल-ह् मिन् आबाइहिम् व अज्वाजिहिम् व

जुरिय्यातिहिम् ॥ इन्न-क अन्तल् - अजीजुल्-हकीम ॥ (८) व किहिमुस्सयि-

आति ॥ व मन् तकिस्सयिआति यौमइजिन् फ-कद् रहिम्तहू ॥ व जालि-क हुवल्फौजुल्-

अजीम (९) इन्नल्लजी-न क-फरू युनादी-न ल-मकतुल्लाहि अकबर मिम्मक्तिकुम्

अन्फुसकुम् इज् तुद्गो - न इलल्ईमानि फ - तक्फुरुन (१०)



४० सूर: मुअ्मिन् ६०

सूर: मुअ्मिन मक्की है, इस में पचासी आयतें और नौ रुकूअ हैं।

शुरू खुदा का नाम लेकर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

हामीम्, (१) इस किताब का उतारा जाना खुदा-ए-ग़ालिब व दाना की तरफ़ से है, (२) जो गुनाह बरूशने वाला है और तौबा कुबूल करने वाला (और) सलत अज़ाब देने वाला (और) करम वाला है। उसके सिवा कोई माबूद नहीं, उसी की तरफ़ फिर कर जाना है। (३) खुदा की आयतों में वही लोग झगड़ते हैं, जो काफ़िर हैं, तो उन लोगों का शहरों में चलना-फिरना तुम्हें धोखे में न डाल दे। (४) उन से पहले नूह की क़ौम और उनके बाद और उम्मतों ने (पैग़म्बरों को) झुठलाया, और हर उम्मत ने अपने पैग़म्बर के बारे में यही इरादा किया कि उसको पकड़ लें और बेहूदा (शुब्हों से) झगड़ते रहे कि उस से हक़ को ख़त्म कर दें, तो मैं ने उनको पकड़ लिया, सो (देख लो) मेरा अज़ाब कंसा हुआ? (५) और इसी तरह काफ़िरों के बारे में भी तुम्हारे परवरदिगार की बात पूरी हो चुकी है कि वे दोज़खी हैं (६) जो लोग अर्श को उठाए हुए और जो उसके चारों तरफ़ (हल्का बांधे हुए) हैं (यानी फ़रिश्ते,) वे अपने परवरदिगार की तारीफ़ के साथ तस्बीह करते रहते हैं और उसके साथ ईमान रखते हैं और मोमिनों के लिए बलि़शश मांगते रहते हैं कि ऐ हमारे परवर-दिगार! तेरी रहमत और तेरा इल्म हर चीज़ को एहाता किए हुए है, तो जिन लोगों ने तौबा की और तेरे रास्ते पर चले, उन को बरूश दे और दोज़ख़ के अज़ाब से बचा ले। (७) ऐ हमारे परवर-दिगार! उनको हमेशा रहने की बहिस्तों में दाख़िल कर, जिन का तूने उनसे वायदा किया है और जो उन के बाप-दादा और उन की बीवियों और उनकी औलाद में से नेक हों, उनको भी। बेशक तू ग़ालिब हकिमत वाला है। (८) और उनको अज़ाबों से बचाए रख और जिस को तू उस दिन अज़ाबों से बचा लेगा, तो बेशक उस पर मेहरबानी हुई और यही बड़ी कामियाबी है। (९) *

जिन लोगों ने कुफ़र किया उन से पुकार कर कह दिया जाएगा कि जब तुम (दुनिया में) ईमान की तरफ़ बुलाए जाते थे और मानते नहीं थे तो खुदा इस से कहीं ज्यादा बेज़ार होता था, जितने कि

कालू रब्बना अ-मत्त-नस्नतैनि व अह्यैत-नस्नतैनि फअ-त-रफ्ना बिजुनबिना
फ-हल् इला खुरुजिम् - मिन् सबील (११) जालिकुम् बिअन्नह इजा
दुअ-यल्लाहु वह्दह क-फरतुम् व इय्युश्-रक् बिही तुअमिन् फलहुकुमु लिल्लाहिल्-
अलिथिल्ल - कबीर (१२) हुवल्लजी युरीकुम् आयातिही व युनरिज्जु

लकुम् मिनस्समाइ रिज्जकून् व मा य-त-जवकर
इल्ला मय्युनीव (१३) फदअल्ला-ह मुल्लिसी-न

लहुद्दीन व ली करिहल्-काफिरून (१४)

रफीअद्-रजाति जुलअशि युल्लिरू-ह मिन्
अम्रिही अला मय्यशाउ मिन् अिबादिही लि-
युन्जि-र योमतलाक (१५) यी-म हुम्

बारिजून ला यल्फा अलल्लाहि मिन्हुम् शेउन्

लि-मनिल्-मुल्कुल्यो-म लिल्लाहिल्-वाहिदिल्-
कहहार (१६) अल्यो-म तुज्जा कुल्लु तफ-

सिम्-बिमा क-स-बत् ला अल्मल्-यो-म इन्नल्ला-ह
सरीअल्-हिसाब (१७) व अन्जिर्-हुम्

योमल्-आजिफति इजिल्कुल्लु ल-दल्हनाजिरी काजिमी-न मा लिज्जालिमी-न मिन्
हमीमिव्-व ला शफीअय्युता-अ (१८) यअ-लमु खाइन्-तल् - अअ - युनि

व मा तुल्फिस्सुद्दूर (१९) वल्लाहु यक्ज़ी बिल्हक्किक् वल्लजी-न यद्अ-न मिन्
दूनिही ला यक्ज़ून बिशैइन् इन्नल्ला-ह हुवस्समीअल् - बसीर (२०)

अ-व लम् यसीरु फिल्लिअजि फ-यअरु कं-फ का-न आकिबतुल्लजी-न कानू मिन्
कम्लिहिम् कानू हुम् अशद - द मिन्हुम् कुवतव्-व आसारन् फिल्लिअजि

फ-अ-ख-अ-हुमुल्लाहु बिजुनबिहिम् व मा का-न लहुम् मिनल्लाहि मिव्वाक (२१)
जालि - क बि - अन्नहुम् कानत् तअतीहिम् रुसुलुहुम् बिल्बय्यिनाति
फ-क-फरु फ-अ-ख-अ-हुमुल्लाहु इन्नहू कबिअ्युन् शदीदुल्-अिकाब (२२)



तुम अपने आप से बेजार हो रहे हो। (१०) वे कहेंगे कि ऐ हमारे परवरदिगार ! तू ने हमको दो बार बे-जान किया और दो बार जान बलसी। हम को अपने गुनाहों का इक्कार है, तो क्या निकलने का कोई रास्ता है ? (११) यह इसलिए कि जब तन्हा खुदा को पुकारा जाता था, तो तुम इन्कार कर देते थे और अगर उस के साथ शरीक मुकर्रर किया जाता था, तो मान लेते थे, तो हुक्म तो खुदा ही का है, जो (सब से) ऊपर (और सब से) बड़ा है। (१२) वही तो है, जो तुम को अपनी निशानियां दिखाता है और तुम पर आसमान से रोजी उतारता है और नसीहत तो वही पकड़ता है, जो (उस की तरफ) रुजूअ करता है। (१३) तो खुदा की इबादत को खालिस कर-कर उसी को पुकारो, अगरचे काफिर बुरा ही मानें। (१४) वह मालिक ऊंचे दर्जे (और) अशं वाला है। अपने बन्दों में से, जिस को चाहता है, अपने हुक्म से वृथ्वा भेजता है, ताकि मुलाकात के दिन से डराए, (१५) जिस दिन वे निकल पड़ेंगे, उन की कोई चीज़ खुदा से छिपी न रहेगी, आज किस की बादशाही है ? खुदा की जो अकेला (और) गालिब है। (१६) आज के दिन हर शक्स को उसके आमाल का बदला दिया जाएगा। आज (किसी के हक में) बे-इंसाफी नहीं होगी। बेशक खुदा जल्द हिसाब लेने वाला है। (१७) और उन को करीब आने वाले दिन से डराओ, जब कि दिल गम से भरकर गलों तक आ रहे होंगे (और) जालिमों का कोई दोस्त नहीं होगा, और न कोई सिफारिशी, जिस की बात क़ुबूल की जाए। (१८) वह आंखों की खियानत को जानता है और जो (बातें) सीनों में छिपी हैं (उनको भी) (१९) और खुदा सच्चाई के साथ हुक्म फ़रमाता है और जिनको ये लोग पुकारते हैं, वे कुछ भी हुक्म नहीं दे सकते। बेशक खुदा सुनने वाला (और) देखने वाला है। (२०) ★

क्या उन्होंने ज़मीन में सैर नहीं की, ताकि देख लेते कि जो लोग उन से पहले थे, उनका अंजाम कैसा हुआ, वह उनसे जोर और ज़मीन में निशान (बनाने) के लिहाज़ से कहीं बढ़ कर थे, तो खुदा ने उनको उनके गुनाहों की वजह से पकड़ लिया और उनको खुदा (के अज़ाब) से कोई भी बचाने वाला न था। (२१) यह इसलिए कि उनके पास पैगम्बर खुली दलीलें लाते थे, तो ये कुपूर करते थे, सो खुदा ने उनको पकड़ लिया, बेशक वह ताक़त वाला (और) सल्ल अज़ाब देने वाला है। (२२)

व ल-कद् असल्ला मूसा बिआयातिना व सुल्तानिम्-मुबीन ॥ (२३) इला फिर्ओन-
व हामान व काल-न फकालू साहिबन् कज्जाब (२४) फ-लम्मा जा-अहुम् बिल्-
हक्कि मिन् अिन्दिना कालुकतुल अन्नाअल्लजी-न आमनू म-अह वस्तह्यु निसा-अहुम्
व मा कंदुल्काफिरी-न इल्ला फी जलाल (२५) व का-ल फिर्ओनु जरुनी अक्तुल

मूसा बल्यदअु रब्बहूँ इन्नी अखाफु अय्युबद-
दि-ल दी-नकुम् ओ अय्युजिह-र फिलअजिल-
फसाद (२६) व का-ल मूसा इन्नी उख्तु
बिरब्बी व रब्बिकुम् मिन् कुल्लि मु-त-कब्बि-
रिल्ला युअमिनु बियोमिल-हिसाब * (२७) व
का-ल रजुलुम्-मुअमिनुम्-मिन् आलि फिर्ओन-
यक्तुमु ईमानहूँ अ-तक्तुल-न रजुलन् अय्यकू-ल
रब्बियल्लाहु व कद् जा-अकुम् बिल्बय्यिनाति
मिररब्बिकुम् व इय्यकु काजिबन् फ-अलैहि
कजिबुहूँ व इय्यकु सादिकय्युसिब-कुम् बअ-
जुल्लजी यअिदुकुम् इन्नल्ला-ह ला यहदी मन्
हु-व मुस्तिफुन् कज्जाब (२८) या कोमि

لَقَدْ أَرْسَلْنَا مُوسَىٰ بِآيَاتِنَا وَسُلْطَانٍ مُّبِينٍ ۖ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَهُوَ كَاذِبٌ
وَقَالَ فِرْعَوْنُ مَا أَسْرِكَذَا إِتَىٰ ۖ لَقَدْ تَجَاءَلَىٰ فِرْعَوْنُ الْإِسْمَ مِنْ عُنْدِنَا
قَالَ الْفُتُوٰلُ الْإِنَّمَا أَنْتَ مُتَوَكِّلٌ ۚ وَاسْتَوَىٰ وَاسْتَوَىٰ ۚ وَكَانَ
الْكَافِرِينَ ۚ الْإِنَّمَا أَنْتَ مُتَوَكِّلٌ ۚ وَقَالَ فِرْعَوْنُ دُونَكَ فَأَتَىٰ فِرْعَوْنَ
رَبُّهُ ۚ إِنَّهُ أَشَدُّ قُوَّةً ۚ وَكَانَ فِرْعَوْنُ كَاذِبًا ۚ وَكَانَ فِرْعَوْنُ
وَقَالَ مُوسَىٰ إِنِّي عَبْدُ اللَّهِ ۚ بَدَيْتُ دِينِي ۚ وَنَبَيْتُ نَبِيًّا ۚ وَأَنَا
بِئْسَ الْخَاسِرِينَ ۚ وَقَالَ رَبُّهُ لَمَّا نَسِيَ ۚ فَرِحَ الْإِنَّمَا فِرْعَوْنَ ۚ وَكَانَ
الْإِنَّمَا فِرْعَوْنَ ۚ وَقَالَ رَبُّهُ لَمَّا نَسِيَ ۚ فَرِحَ الْإِنَّمَا فِرْعَوْنَ ۚ وَكَانَ
بَعْضَ النَّبِيِّ يَوْمَئِذٍ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يُدْرِي مَنْ هُوَ شَرٌّ ۚ وَكَانَ
يَقُولُ لَكَ الْمَلَأُ الْيَوْمَ ظُهُورِي فِي الْأَرْضِ ۚ فَمَنْ يَضْحَكُ ۚ
بِأَسْمَاءِ اللَّهِ ۚ جَاءَهُمْ كَالْمُذْهَبِ ۚ وَكَانَ الْإِنَّمَا فِرْعَوْنَ ۚ وَكَانَ
الْإِنَّمَا فِرْعَوْنَ ۚ وَقَالَ رَبُّهُ لَمَّا نَسِيَ ۚ فَرِحَ الْإِنَّمَا فِرْعَوْنَ ۚ وَكَانَ
وَقَالَ رَبُّهُ لَمَّا نَسِيَ ۚ فَرِحَ الْإِنَّمَا فِرْعَوْنَ ۚ وَكَانَ
الْإِنَّمَا فِرْعَوْنَ ۚ وَقَالَ رَبُّهُ لَمَّا نَسِيَ ۚ فَرِحَ الْإِنَّمَا فِرْعَوْنَ ۚ وَكَانَ
أَخَاهُ عَلَيْهِ يَوْمَئِذٍ الْفِتْنَةِ ۚ يَوْمَ تَوَلَّوْنَ مُدْبِرِينَ ۚ مَا لَكُمْ مِنْ
اللَّهِ مِنْ عَاصِرٍ ۚ وَنَسِيَ الْإِنَّمَا فِرْعَوْنَ ۚ وَكَانَ الْإِنَّمَا فِرْعَوْنَ ۚ وَكَانَ

लकुमुल-मुल्कुल-यी-म जाहिरी-न फिलअजि-फ-मय्यन्सुल्ला मिम्बअसिल्लाहि इन् जा-अना
का-ल फिर्ओनु मा उरीकुम् इल्ला मा-अरा व मा अहदीकुम् इल्ला
सबीलर्-रशाद (२९) व कालल्लजी आ-म-न या कोमि इन्नी अखाफु
अलैकुम् मिस-ल योमिल- अहजाब ॥ (३०) मिस-ल दअबि कोमि
नहिव-व आदिव-व समू-द बल्लजी-न मिम्बअ- दिहिम् व मल्लाहु युरीदु
अुलमल् - मिल्जिबाद (३१) व या कोमि इन्नी अखाफु अलैकुम्
योमसनाद ॥ (३२) यो-म तुवल्लू-न मुद्बिरी-न मा लकुम् मिनल्लाहि
मिन् आसिमिन् व मय्युजलि-लिल्लाहु फमा लह मिन् हाद (३३)

और हमने मूसा को अपनी निशानियाँ और रोशन दलील देकर भेजा, (२३) (यानी) फ़िर्औन और हामान और क़ारून की तरफ़, तो उन्होंने कहा कि यह तो जादूगर है झूठा। (२४) गरब जब वह उनके पास हमारी तरफ़ से हक़ ले कर पहुँचे, तो कहने लगे कि जो लोग उसके साथ (खुदा पर) ईमान लाए हैं, उन के बेटों को क़त्ल कर दो और बेटियों को रहने दो और काफ़िरों की तद्बीरें बे-ठिकाने होती हैं। (२५) और फ़िर्औन बोला कि मुझे छोड़ो कि मूसा को क़त्ल कर दूँ और वह अपने परवरदिगार को बुला ले। मुझे डर है कि वह (कहीं) तुम्हारे दीन को (न) बदल दे या मुल्क में फ़साद (न) पैदा कर दे। (२६) मूसा ने कहा कि मैं हर घमंडी से, जो हिसाब के दिन (यानी क़ियामत) पर ईमान नहीं लाता, अपने और तुम्हारे परवरदिगार की पनाह ले चुका हूँ। (२७) ★

और फ़िर्औन के लोगों में से एक मोमिन शरस जो अपने ईमान को छिपाए रखता था, कहने लगा, क्या तुम ऐसे शरस को क़त्ल करना चाहते हो, जो कहता है कि मेरा परवरदिगार खुदा है और वह तुम्हारे पास तुम्हारे परवरदिगार (की तरफ़) से निशानियाँ भी लेकर आया है और अगर वह झूठा होगा, तो उसके झूठ का नुक्सान उसी को होगा और अगर सच्चा होगा, तो कोई-सा अज़ाब, जिसका वह तुम से वायदा करता है, तुम पर बाक़ेअ हो कर रहेगा। बेशक़ खुदा उस शरस को हिदायत नहीं देता, जो बे-लिहाज़ झूठा है। (२८) ऐ क्रौम ! आज तुम्हारी ही बादशाही है और तुम ही मुल्क में ग़ालिब हो, (लेकिन) अगर हम पर खुदा का अज़ाब आ गया, तो (उस के दूर करने के लिए) हमारी मदद कौन करेगा ! फ़िर्औन ने कहा कि मैं तुम्हें वही बात सुनाता हूँ, जो मुझे सूझी है और वही राह बताता हूँ, जिसमें भलाई है। (२९) तो जो मोमिन था, वह कहने लगा कि ऐ क्रौम ! मुझे तुम्हारे बारे में डर है कि (शायद) तुम पर और उम्मतों की तरह के दिन का अज़ाब आ जाए। (३०) (यानी) नूह की क्रौम और आद और समूद और जो लोग उनके पीछे हुए हैं, उनके हाल ही तरह (तुम्हारा हाल न हो जाए) और खुदा तो बन्दों पर जुल्म करना नहीं चाहता। (३१) और ऐ क्रौम ! मुझे तुम्हारे बारे में पुकार के दिन (यानी क़ियामत) का डर है, (३२) जिस दिन तुम पीठ फेर कर (क़ियामत के मैदान से) भागोगे, (उस दिन) तुम को कोई (अज़ाब) खुदा से बचाने वाला न होगा और जिस शरस को खुदा गुमराह करे, उसको कोई हिदायत देने वाला

व ल-कद् जा-अकुम् यूसुफु मिन् कब्लु बिल्बय्थिनाति फमा जिल्तुम् फी शक्किम्-
मिममा जा-अकुम् बिही ॥ हत्ता इजा ह-ल-क कुल्लुम् लय्यब-अमल्लाहु मिम्बअ-दिही
रसूलन् ॥ कजालि-क युजिल्लुल्लाहु मन् हु-व मुस्तिफुम्-मुर्ताबु नि- (३४) -ल्लजी-न
युजादिलू-न फी आयातिल्लाहि बिगैरि सुल्तानिन् अताहुम् कबु-र मक्तन् अन्दल-
लाहि व अन्दलजी-न आमनू ॥ कजालि-क

यत्-बअल्लाहु अला कुल्लि कल्बि मु-त-कब्बिरिन्
जम्बार (३५) व का-ल फिर्ओनु या
हामानुमि ली सहल्-ल-अल्ली अब्लुगुल्-अस्बाब

(३६) अस्बाबस्समावाति फ-अत्तलि-अ इला
इलाहि मूसा व इन्नी ल-अजुनुहु काजिबन् ॥ व
कजालि-क जुय्थि-न लिफिर्ओ-न सूउ अ-म-
लिही व सुद-द अनिस्सबीलि ॥ व मा कैदु

फिर्ओ-न इत्ला फी तबाब ★ (३७) व का-
लल्लजी आम-न या कौमि तबिअूनि अह-दिकुम्
सबीलरंशाद (३८) या कौमि इन्नमा
हाजिहिल् - ह्यातुददुन्या मताअु व-व इन्नल्-

आखि-र-त हि-य दारुल्करार (३९) मन् अमि-ल सय्थि-अ-तन् फला युज्जा इत्ला
मिस्लहा ॥ व मन् अमि-ल सालिहम्-मिन् ज-क-रिन् औ अन्सा व हु-व मुअ्मिनुन्
फ-उलाइ-क यदख्लूनल्-जन्न-त युज्कू-न फीहा बिगैरि हिसाब (४०) व या कौमि
मा ली अदअकुम् इलन्नजाति व तदअूननी इलन्नार ॥ ● (४१) तदअूननी लि-अक्फु-र
बिल्लाहि व उशिर-क बिही मा लै-स ली बिही अिल्मु व-व अ-न अदअकुम् इलल्-
अजीजिल्-गफ्फार (४२) ला ज-र म अन्नमा तदअूननी इल्लहि लै-स लहु दअ-
वतुन् फिददुन्या व ला फिल्आखिरति व अन्-न म-र-द-द-न इलल्लाहि व अन्नल्-
मुस्तिफी-न हुम् अस्हाबुन्नार (४३) फ-स-त-ज-कुरू-न मा अकलू लकुम् ॥ व
उफिक्वजु अन्नी इलल्लाहि ॥ इन्नल्ला - ह बसीरुम् - बिल्अिबाद (४४)

يُؤْتِي مِنَ قَبْلِ الْيَمِينِ قَدْ آتَيْنَاهُ فِي خَلْقِهِ وَمَا يَأْتِيهِ إِلَّا بِحَقٍّ
حَقٍّ إِذَا هَلَكَ قُلْتُمْ لَنْ يَبْعَثَ اللَّهُ مِنْ بَعْدِهِ رَسُولًا كَذَّبَ
بِضَلِّ اللَّهِ مِنْ هَؤُلَاءِ قَوْمٌ فَتَرَى الْآيَاتِ يَمْشُونَ فِي الْأَرْضِ
الَّتِي يَنْفَعُ سُلْطَانُ أَتَمُّ لَكُمْ مَعًا عِنْدَ اللَّهِ وَعِنْدَ الَّذِينَ آمَنُوا
كَذَلِكَ يَطْبَعُ اللَّهُ عَلَى كُلِّ قَلْبٍ مُكْذِبٍ وَإِنَّا لَهُمْ عَذَابٌ
بَعِيدٌ إِنَّ ابْنَ ابْنِ عَصَى الْكَافِي أَبْلَغَ الْأَسْبَابِ ۖ أَكْبَابُ السَّعَاتِ
فَأَكْبَرُ إِلَى الْإِيمَانِ وَالْقِيَامَةِ وَالْإِيمَانِ وَالْقِيَامَةِ وَالْقِيَامَةِ
سَوْءٌ عَلَيْهِمْ وَصَدَّ عَنْ السَّبِيلِ ۖ وَمَا يُؤْمِنُونَ إِلَّا فِي تَابٍ ۖ
وَقَالَ الْوَيْلُ لِمَنْ يَقُولُ آمَنَّا بِاللَّهِ وَنَحْنُ سَائِلُونَ الْوَقَايَةِ يَتَمُّ
إِنَّا نَعْلَمُ الْغُيُوبَ الَّذِي تَأْتِيهِ الْغُيُوبُ ۖ وَإِنَّا نَعْلَمُ الْغُيُوبَ ۖ وَمَنْ
عَمِلَ سَيِّئَةً فَلَا يُجْزَى إِلَّا جِزَاءَهَا ۖ وَمَنْ عَمِلَ صَالِحًا فَلَا يَكُنْ
أَتَى ۖ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلْيُكَلِّمْ يَدَّ عِلْوٍ بِعِزَّةِ يَرْبِهِ ۖ وَكَذَلِكَ
جَسَابٌ ۖ وَهُوَ يَقُولُ إِنَّا نَعْلَمُ الْغُيُوبَ ۖ وَنَحْنُ نَعْلَمُ الْغُيُوبَ ۖ
نَدْعُوهُ لِنَكَلِّمَهُ ۖ وَهُوَ لَا يَكَلِّمُهُ ۖ وَهُوَ لَا يَكَلِّمُهُ ۖ وَهُوَ لَا يَكَلِّمُهُ ۖ
إِلَّا الْغُيُوبَ الْغُيُوبَ ۖ وَهُوَ لَا يَكَلِّمُهُ ۖ وَهُوَ لَا يَكَلِّمُهُ ۖ وَهُوَ لَا يَكَلِّمُهُ ۖ
الَّذِي لَا يَكَلِّمُهُ ۖ وَهُوَ لَا يَكَلِّمُهُ ۖ وَهُوَ لَا يَكَلِّمُهُ ۖ وَهُوَ لَا يَكَلِّمُهُ ۖ
أَصْحَابُ الْكُوفَةِ قَسَدٌ لَكُمْ مَا أَقُولُ لَكُمْ وَالْغُيُوبَ ۖ وَهُوَ لَا يَكَلِّمُهُ ۖ

नहीं। (३३) और पहले यूसुफ भी तुम्हारे पास निशानियां ले कर आए थे, तो जो वह लाए थे, उस से तुम हमेशा शक ही में रहे, यहां तक कि जब वह फौत हो गये, तो तुम कहने लगे कि खुदा उसके बाद कभी कोई पैगम्बर नहीं भेजेगा। इसी तरह खुदा उस शक्स को गुमराह कर देता है, जो हृद से निकल जाने वाला (और) शक करने वाला हो। (३४) जो लोग बगैर इसके कि उन के पास कोई दलील आयी हो, खुदा की आयतों में झगड़ते हैं, खुदा के नजदीक और मोमिनों के नजदीक झगड़ा सल्ल ना-पसन्द है। इसी तरह खुदा हर घमंडी-सरकश के दिल पर मुहर लगा देता है। (३५) और फ़िर्अोन ने कहा कि हामान मेरे लिए एक महल बनाओ ताकि मैं उस पर चढ़ कर रास्तों पर पहुंच जाऊं। (३६) (यानी) आसमानों के रास्तों पर, फिर मूसा के खुदा को देख लूं और मैं तो उसे झूठा समझता हूं और इसी तरह फ़िर्अोन को उस के बुरे आमांल अच्छे मालूम होते थे और वह रास्ते से रोक दिया गया था और फ़िर्अोन की तद्बीर तो बेकार थी। (३७)★

और वह शक्स जो मोमिन था, उसने कहा कि भाइयो! मेरे पीछे चलो, मैं तुम्हें भलाई का रास्ता दिखाऊंगा। (३८) भाइयो! यह दुनिया की ज़िंदगी (कुछ दिन) फ़ायदा उठाने की चीज़ है और जो आखिरत है, वही हमेशा रहने का घर है। (३९) जो बुरे काम करेगा, उसको बदला भी वैसा ही मिलेगा और जो नेक काम करेगा, मर्द हो या औरत और वह ईमान वाला भी होगा, तो ऐसे लोग बहिश्त में दाखिल होंगे, वहां उनको बे-हिसाब रोज़ी मिलेगी। (४०) और ऐ क्रोम! मेरा क्या (हाल) है कि मैं तो तुम को निजात की तरफ़ बुलाता हूं और तुम मुझे (दोज़ख की) आग की तरफ़ बुलाते हो● (४१) तुम मुझे इस लिए बुलाते हो कि खुदा के साथ कुपूर करूं और उस चीज़ को उसका शरीक मुकर्रर करूं, जिस का मुझे कुछ भी इल्म नहीं और मैं तुम को (खुदा-ए-) ग़ालिब (और) वरुशने वाले की तरफ़ बुलाता हूं। (४२) सच तो यह है कि जिस चीज़ की तरफ़ तुम मुझे बुलाते हो, उसको दुनिया और आखिरत में बुलाने (यानी दुआ कुबूल करने) की कुदरत नहीं और हम को खुदा की तरफ़ लौटना है और हृद से निकल जाने वाले दोज़खी हैं। (४३) जो बात मैं तम से कहता हूं, तुम उसे (आगे चल कर) याद करोगे और मैं अपना काम खुदा के मुपुर्द करता

हैं। बेशक खुदा बन्दों को देखने वाला है। (४४) गरख खुदा ने (मूसा को) उन लोगों की तद्बीरों की बुराईयों से बचाए रखा और फ़िर्मा'न वालों को बुरे अज़ाब ने आ घेरा, (४५) (यानी जहन्नम की) आग कि सुबह व शाम उसके सामने पेश किए जाते हैं और जिस दिन क्रियामत बरपा होगी, (हुक्म होगा कि) फ़िर्मा'न वालों को सख्त अज़ाब में दाखिल करो।' (४६) और जब वे दोज़ख में सगड़ेंगे, तो छोटे दर्जे के लोग बड़े आदमियों से कहेंगे कि हम तो तुम्हारे ताबेअ थे, तो क्या तुम दोज़ख (के अज़ाब) का कुछ हिस्सा हम से दूर कर सकते हो? (४७) बड़े आदमी कहेंगे कि तुम (भी और) हम (भी) सब दोज़ख में हैं, खुदा बन्दों में फ़ैसला कर चुका है। (४८) और जो लोग आग में (जल रहे) होंगे, वे दोज़ख के दारोगाओं से कहेंगे कि अपने परवरदिगार से दुआ करो कि एक दिन तो हम से अज़ाब हटका कर दे। (४९) वे कहेंगे कि क्या तुम्हारे पास तुम्हारे पैगम्बर निशानियां लेकर नहीं आए थे? वे कहेंगे, क्यों नहीं, तो वे कहेंगे कि तुम ही दुआ करो और काफ़िरों को दुआ (उस दिन) बेकार होगी। (५०) ★

हम अपने पैगम्बरों की और जो लोग ईमान लाए हैं उनकी, दुनिया की ज़िंदगी में भी मदद करते हैं और जिस दिन गवाह खड़े होंगे, (यानी क्रियामत को भी,) (५१) जिस दिन ज़ालिमों को उनको माज़रत कुछ फ़ायदा न देगी और उन के लिए लानत और बुरा घर है। (५२) और हमने मूसा को हिदायत (की किताब) दी और बनी इस्राईल को उस किताब का वारिस बनाया। (५३) अक़ल वालों के लिए हिदायत और नसीहत है। (५४) तो सब करो, बेशक खुदा का वायदा सच्चा है और अपने गुनाहों की माफ़ी मांगो और सुबह व शाम अपने परवरदिगार की तारीफ़ के साथ तस्बीह करते रहो। (५५) जो लोग बग़ैर किसी दलील के, जो उनके पास आयी हो, खुदा की आयतों में सगड़ते हैं, उन के दिलों में और कुछ नहीं बढ़ाई (का इरादा) है और वह उसको पहुंचने वाले नहीं, तो खुदा की पनाह मांगो। बेशक वह सुनने वाला- (और) देखने वाला है। (५६) आसमानों और ज़मीन का पैदा करना लोगों के पैदा करने के मुकाबले में बड़ा (काम) है, लेकिन

१. यह क़त्र की दुनिया का हुक़्म है। काफ़िर को इस का ठिकाना दिखाया जाता है और क्रियामत को उस में बैठेगा और मोमिन को बहिश्त।

२. यानी वे कुपकार जो अल्लाह तआला की आयतों में बे-दलील सगड़ते और उन को सुठलाते हैं, तो उन का यक़िन् यह होता है कि पैगम्बर खुदा मल्लत्लाहु अलैहि व सल्लम उन पर कभी ग़ालिब नहीं हो सकते।

व मा यस्तबिल्-अब्-मा बल्बसीर ॥ बल्बजी-न आमनू व अमिलुस्सालिहाति
 व लत्मुसीउ ७ कलीलम्-मा त-त-अवकहन (५८) इन्नस्सा-अ-त लआति-
 यतुल्ला रै-ब फ्रीहा व लाकिन्-न अक्सरन्नासि ला युअ्मिनून (५९)
 व का-त रब्बुकुमुद्दूनी अस्तजिब् लकुम् इन्नलजी-न यस्तबिबर्-न अन् अबादती

स-यदखुलून ज-हन्न-म दाखिरीन ★ (६०) अल्ला-
 हुल्लजी ज-अ-ल लकुमुल्लै-ल लितस्कुनू फ्रीहि
 वल्हा-र मुब्सिरन् ७ इन्नल्ला-ह लजू फज़िलन्
 अ-तन्नासि व लाकिन्-न अक्सरन्नासि ला
 यश्कुरून (६१) जालिकुमुल्लाहु रब्बुकुम् खालिकु
 कुल्लि शेइन् ला इला-ह इल्ला हु-व-फ-अन्ना
 तुअ-फ़कून (६२) कजालि-क युअफ़कुल्लजी-न
 कानू बिआयातिल्लाहि यजहूदून (६३)
 अल्लाहुल्लजी ज-अ-ल लकुमुल्लअर-अ करा-
 रब्बस्समा - अ बिनाअव-व सव्व - रकुम्
 फ-अह-सन सु-व-रकुम् व र-अ - ककुम्
 मिनत्तय्यिबाति ७ जालिकुमुल्लाहु रब्बुकुम्

النَّاسِ لَا يَصْلَحُونَ ۖ وَمَا تَتَوَقَّعُ الْغُيُورُ ۚ وَالَّذِينَ
 آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَلَا الَّذِينَ ۖ وَلَئِنْ كُنْتُمْ
 إِلَّا السَّاعَةَ لَا يَكُنْ مِنْكُمْ رَاسِبٌ ۖ وَلَكِنْ أَكْثَرُ النَّاسِ لَا
 يَفْقَهُونَ ۖ وَقَالَ رَبُّكُمْ ادْعُونِي أَسْتَجِبْ لَكُمْ ۚ إِنَّ الَّذِينَ
 يَسْتَكْبِرُونَ عَنْ عِبَادَتِي سَيَدْخُلُونَ جَهَنَّمَ دُخْرَيْنَ ۗ اللَّهُ
 الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْآيَاتِ لِيَتَذَكَّرُوا ۖ وَاللَّهُ كَرِيمٌ ۚ إِنَّ اللَّهَ
 لَكَدُّ مُضِلٌّ عَلَى النَّاسِ وَلَكِنَّ أَكْثَرُ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ۚ ذَلِكُمْ
 اللَّهُ يَكْفُرُ خَائِفًا عَلَى غُلُوِّ ۚ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ ۚ قُلْ أَتُفَكِّرُونَ
 كَذَلِكَ ۚ يَوْمَ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ يَحْشُدُونَ ۚ اللَّهُ الَّذِي
 جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ قُرًى وَأَلْسِنَةً ۚ بَنَاءُ وَصَوْرَكُمْ فَكَيْفَ
 صَوَّرَكُمْ وَرَزَقَكُمْ مِنَ الطَّيِّبِ ۚ ذَلِكُمْ اللَّهُ رَبُّكُمْ فَتَتَذَكَّرُوا ۚ اللَّهُ
 رَبُّ الْعَالَمِينَ ۚ هُوَ الَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ ۚ دَاخِعٌ مُغْصِيحٌ
 لَهُ النَّوْصُ ۚ أَسَدُّ لِلَّهِ رَبُّ الْعَالَمِينَ ۚ قُلْ إِنِّي نُهَيْتُ أَنْ
 أُعْبِدَ الْوَدَانَ ۚ تَذَكَّرُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ لَمَّا جَاءَنِي الْبَيِّنَاتُ مِنْ
 رَبِّي وَأُمِرْتُ أَنْ أُسَلِّمَ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۚ هُوَ الَّذِي عَظَّمَ
 مِنْ رَبِّكَ ذِكْرَهُ ۚ تَذَكَّرُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ ۚ تَذَكَّرُوا ۚ وَتَذَكَّرُوا
 تَذَكَّرُوا ۚ تَذَكَّرُوا ۚ تَذَكَّرُوا ۚ تَذَكَّرُوا ۚ تَذَكَّرُوا ۚ

फ-त-बारकल्लाहु रब्बुल् - आलमीन (६४) हुवलह्यु ला इला-ह इल्ला
 हु-व फदअहु मुखलिसी-न लहुद्दी-न ७ अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल् - आलमीन
 (६५) कुल् इन्नी नुहीतु अन् अअ-बुदल्लजी-न तदअ-न मिन् हुनिल्-
 लाहि लम्मा जा-अनियल्-बय्यिनातु मिरब्बी ७ उमिरतु अन् उस्लि - म
 लिरब्बिल्-आलमीन (६६) हुवल्लजी ख-ल-ककुम् मिन् तुराबिन् सुम्-म
 मिन् नुत्फतिन् सुम्-म मिन् अ-ल-कतिन् सुम्-म युकिरजुकुम् तिफ - लन्
 सुम्-म लितब्नुगु अशुद्-दकुम् सुम्-म लितकून शुयूखन् ७ मिन्कुम् मय्यु-त-वफा मिन्
 कब्नु व लितब्नुगु अ-ज-लम्-मुसम्मव-व ल-अल्लकुम् तअ - किलून (६७)

अक्सर लोग नहीं जानते । (५७) और अंधा और आँख वाला बराबर नहीं और न ईमान वाले नेक और बद-कार बराबर हैं । (सच तो यह है कि) तुम बहुत कम ग़ौर करते हो । (५८) क्रियामत् तो आने वाली है, इसमें कुछ शक नहीं, लेकिन अक्सर लोग ईमान नहीं रखते । (५९) और तुम्हारे परवरदिगार ने कहा है कि तुम मुझ से दुआ करो, मैं तुम्हारी (दुआ) कुबूल करूँगा । जो लोग मेरी इबादत से घमंड के तौर पर कतराते हैं, बहुत जल्द जहन्नम में जलील हो कर दाखिल होंगे * (६०)

खुदा ही तो है, जिस ने तुम्हारे लिए रात बनायी कि इस में आराम करो और दिन को रोजन बनाया (कि इस में काम करो) । बेशक खुदा लोगों पर फ़ज़ल करने वाला है, लेकिन अक्सर लोग शुक्र नहीं करते । (६१) यही खुदा तुम्हारा परवरदिगार है, जो हर चीज़ का पैदा करने वाला है, उस के सिवा कोई माबूद नहीं, फिर तुम कहां भटक रहे हो ? (६२) इसी तरह वे लोग भटक रहे थे, जो खुदा की आयतों से इंकार करते थे । (६३) खुदा ही तो है, जिस ने ज़मीन को तुम्हारे लिए ठहरने की जगह और आसमान को छत बनाया और तुम्हारी शकलें बनायीं और शकलें भी अच्छी बनायीं और तुम्हें पाकीज़ा चीज़ें खाने को दीं । यही खुदा तुम्हारा परवरदिगार है । पस अल्लाह ख़बुल आलमीन बहुत ही बरकत वाला है । (६४) वह जिंदा है, (जिसे मौत नहीं,) उस के सिवा कोई इबादत के लायक नहीं, तो उस की इबादत को खालिस कर-कर उसी को पुकारो । हर तरह की तारीफ़ खुदा ही के लिए है जो तमाम ज़हान का परवरदिगार है । (६५) (हे मुहम्मद !) इनसे कह दो कि मुझे इस बात से मना किया गया है कि जिन को तुम खुदा के सिवा पुकारते हो, उन की इबादत करूँ (और मैं उन की कैसे इबादत करूँ,) जबकि मेरे पास मेरे परवरदिगार (की तरफ़) से खुली दलीलें आ चुकी हैं और मुझ को यह हुक्म हुआ है कि सारे ज़हान के परवरदिगार ही के फ़रमान के ताबेअ हूँ । (६६) वही तो है, जिस ने तुम को (पहले) मिट्टी से पैदा किया, फिर नुफ़्फ़ा बना कर, फिर लोथड़ा बना कर, फिर तुम को निकालता है (कि तुम) बच्चे (होते हो,) फिर तुम अपनी जवानी को पढ़ुंचते हो, फिर बूढ़े हो जाते हो और कोई तुम में से पहले ही मर जाता है और तुम (मौत के) मुक़रर वक़्त तक पढ़ुंच जाते हो, और ताकि तुम समझो ।' (६७) वही तो है,

१. यानी इस बात को मोचा कि जिस खुदा ने तुम को पहली बार पैदा किया और तुम पर बचपन और जवानी और बुढ़ापे की हायतें पैदा कर के फिर तुम को मौत दी, वह इस बात पर भी क़दरत रखता है कि तुम को क्रियामत् के दिन फिर जिंदा करे और जो लोग इन बातों पर ग़ौर करते हैं, उन को इस बात के मानने में शिश्क नहीं हो सकती कि उमी तरह क्रियामत् को जिंदा किए जाएंगे ।

हुवत्तजी युह्यी व युमीतुं फ-इजा कजा अम्-रन् फ-इन्मा यकलू लह
कुन् फयकून ★ (६८) अ - लम् त-र इलत्तजी - न युजादिलू-न फी
आयातिल्लाहि ७ अन्ना युस्-रफून् ६ (६९) अल्लजी-न कज्जबू बिल्किताबि

व बिमा असंत्ता बिही हसुलुना फ-सौ-फ यअ-लमून ॥ (७०) इजिल-

अग्-लालु फी अअ-नाकिहिम् वस्सलासिलु ७

युस्-हबू-न ॥ (७१) फिल्हमीमि ७ सुम्-म फिल्लारि

युस्-रून ६ (७२) सुम्-म फी-ल लहम् ऐनमा

कुन्तुम् तुशिरकू-न ॥ (७३) मिन् दूनिल्लाहि ७

कालू जल्लू अन्ना बल् लम् नकुन् नदअ

मिन् कल्लु शौअन् ७ कजालि - क युजिल्ल-लुल्

लाहुल्-काफिरीन (७४) जालिकुम् बिमा

कुन्तुम् तफरहू-न फिल्लअजि बिगैरिल्-हक्कि

व बिमा कुन्तुम् तम् - रहून् ६ (७५)

उदल्लू अब-वा-ब ज-हन्न-म खालिदी-न

फीहा ६ फबिअ-स मस्-वल् - मु-त-कब्बिरीन

(७६) फस् - बिर् इन्-न वअ-दल्लाहि

हक्कुन् ६ फ-इम्मा नुरि-यन्न-क बअ-जल्लजी

फ-इलैना युजअून (७७) व ल-कद् असंत्ता हसुलम् - मिन् कल्लि-क

मिन्हुम् मन् क-सत्ता अलै - क व मिन्हुम् मल्लम् नकसुस् अलै-क ७ व

मा का - न लिरसूलिन् अय्यअति - य बिआयतिन् इल्ला बिइज्जिल्लाहि ६

फइजा जा - अ अम्ल्लाहि कुजि - य बिल्हक्कि व खसि-र हुनालि-

कल्-मुत्तिलून ★ (७८) अल्लाहुल्लजी ज-अ-ल लकुमुल्-अन्आ-म लितकंबू

मिन्हा व मिन्हा तअ-कुलून् (७९) व लकुम् फीहा मनाफिअ व लितब-लुगू अलैहा

हा-ज-तन् फी मुद्दरिकुम् व अलैहा व अलल्फुल्कि तुह - मलून ७ (८०)

يَوْمَ مِنْ كَلِّهِمْ يُسَلِّطُوا آجِلًا فَسُحُورًا وَلَمَّا كُنْتُمْ تَقُولُونَ ۖ هُوَ
الَّذِي هُوَ وَمُعِيتٌ ۖ فَلَا تَقْصُرُوا مِنَ الْإِقَامِ يَقُولُ لَنْ يَكُونَ
أَكْثَرُ الرِّجَالِ الْمُؤْمِنِينَ يُجَادُونَ فِي أَيْدِي اللَّهِ وَأَيِّ يَوْمُونَ ۖ الَّذِينَ
كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَلِئِنْ أَرْسَلْنَا بِهِ رُسُلًا مَقْصُوفَةً عَلَيْهِمْ
ذُرِّيَّةً عَظِيمًا ۖ فَاتَّبَعُوا السَّلَاسِلَ يُسَبِّحُونَ ۖ فِي الْحَمِيمِ
تَوَفَّى فِي النَّارِ يُسَجَّرُونَ ۖ ثُمَّ قِيلَ لَهُمْ إِنْ مَا لَكُمْ تَرْتَدُّونَ
مِنْ دُونِ اللَّهِ ۖ قَالُوا ضَلُّوا عَنَّا قَالِ لَهُمْ كُنْهُمْ إِنْ قُلْتُمْ نَبَأًا
كَذَلِكَ يَقُولُ اللَّهُ الْكَافِرِينَ ۖ وَذَكَرَ بِهَا كُفْرَهُمْ يَوْمَ
الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ ۖ وَبِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُونَ ۖ أَوْحُوا لِيَائِ
يَحْمَرُ خَلِيلِينَ فِيهَا أَيْدِي مَتَوَى الْمَكِيدِينَ ۖ فَاصْبِرْ
وَعَدَ اللَّهُ حَقًّا ۖ فَلَا تُرِيدُكَ بَعْضُ الَّذِينَ يُعَذِّبُكُمْ أَوْ تَتَوَلَّوْكُمْ
وَالْيَا رِجْعُونَ ۖ وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا رُسُلًا مِنْ قَبْلِكَ مِنْهُمْ مَنْ
تَضَعُ عَلَيْهِمْ وَهُمْ مِنْهُمْ مَنْ لَمْ تَضَعْ عَلَيْهِمْ وَمَا كُنْ
رَسُولِي أَنْ يَكُنِيَ بِآيَاتِي إِذْ بَادَى اللَّهُ فَادَاءَهُمْ أَمْرًا اللَّهُ
قَضَىٰ بِالنَّاسِ وَخَسِرَ هَٰذِهِ الْأَمْمَلُونَ ۖ اللَّهُ الَّذِي جَعَلَ
لَكُمْ الْأَنْهَارَ لِيَكُونَ مِنْهَا وَأَوْفِيهَا أَثَاوُونَ ۖ وَلَكُمْ فِيهَا
مَنَافِعُ وَلَا تُغْنَوْنَ عَنْهَا حَاجَةً فِي صُدُورِكُمْ وَعَلَيْهَا وَعَلَىٰ

जो जिलाता और मारता है, फिर जब वह कोई काम करना (और किसी को पैदा करना) चाहता है, तो उस से कह देता है कि हो जा तो वह हो जाता है। (६८) ★

क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा, जो खुदा की आयतों में झगड़ते हैं। ये कहाँ भटक रहे हैं? (६९) जिन लोगों ने (खुदा की) किताब को और जो कुछ हमने अपने पैगम्बरों को दे कर भेजा, उस को झुठलाया, वे बहुत जल्द मालूम कर लेंगे, (७०) जबकि उन की गरदनों में तीक़ और जंजीरें होंगी (और) घसीटे जाएंगे। (७१) (यानी) खोलते हुए पानी में, फिर आग में झोंक दिए जाएंगे। (७२) फिर उन से कहा जाएगा कि वे कहाँ हैं, जिन को तुम (खुदा के) शरीक बनाते थे, (७३) (यानी) गैरेखुदा कहेंगे, वे तो हम से जाते रहे, बल्कि हम तो पहले किसी चीज को पुकारते ही नहीं थे, इसी तरह खुदा काफ़ि़रों को गुमराह करता है। (७४) यह इस का बदला है कि तुम ज़मीन में हक़ के बग़ैर (यानी इस के खिलाफ़) खुश हुआ करते थे और उस की (सज़ा है) कि इतराया करते थे। (७५) (अब) जहन्नम के दरवाज़ों में दाख़िल हो जाओ, हमेशा उसी में रहोगे। घमंड करने वालों का क्या बुरा ठिकाना है। (७६) तो (ऐ पैगम्बर!) सब करो, खुदा का वायदा सच्चा है। अगर हम तुम को कुछ उस में से दिखा दें, जिस का हम तुम से वायदा करते हैं (यानी काफ़ि़रों पर अज़ाब नाज़िल करें) या तुम्हारी ज़िदगी की मुद्दत पूरी कर दें, तो उन को हमारी ही तरफ़ लौट कर आना है। (७७) और हमने तुम से पहले (बहुत से) पैगम्बर भेजे, उन में कुछ तो ऐसे हैं, जिन के हालात तुम से बयान कर दिए हैं और कुछ ऐसे हैं, जिन के हालात बयान नहीं किए और किसी पैगम्बर की ताक़त न थी कि खुदा के हुक्म के बग़ैर कोई निशानी लाए, फ़ैर जब खुदा का हुक्म आ पहुँचा, तो इंसाफ़ के साथ फ़ैसला कर दिया गया और बातिल वाले नुक़ान में पड़ गये। (७८) ★

खुदा ही तो है, जिसने तुम्हारे लिए चारपाए बनाए, ताकि उनमें से कुछ पर सवार हो और कुछ को तुम खाते हो। (७९) और तुम्हारे लिए उन में (और भी) फ़ायदे हैं और इसलिए भी कि (कहीं जाने की) तुम्हारे दिलों में जो ज़रूरत हो, उन पर (चढ़ कर वहाँ) पहुँच जाओ और उन

१. यानी अगर तुम्हारी ज़िदगी में उन पर अज़ाब नाज़िल न किया जाए, तो तुम्हारी वफ़ात के बाद उन को हमारे ही पास लौट कर आना है, उस वक़्त खुदा का वायदा पूरा हो जाएगा और ये दर्दनाक अज़ाब में पड़े होंगे।

पर और कश्तियों पर सवार होते हो। (८०) और वह तुम्हें अपनी निशानियां दिखाता है तो तुम खुदा की किन-किन निशानियों को न मानोगे? (८१) क्या इन लोगों ने ज़मीन में सैर नहीं की, ताकि देखते कि जो लोग इन से पहले थे, उन का अंजाम कैसा हुआ, (हालांकि) वह उनसे कहीं ज्यादा और ताकतवर और ज़मीन में निशान (बनाने) के एतबार से बहुत बढ़कर थे, तो जो कुछवे करते थे वह उनके कुछ काम न आया। (८२) और जब उनके पैगम्बर उनके पास खुली निशानियां लेकर आए तो जो इल्म (अपने स्थान में) उनके पास था, उस पर इतराने लगे और जिस चीज़ का मज़ाक उड़ाया करते थे, उस ने उन को आ घेरा। (८३) फिर जब उन्होंने हमारा अज़ाब देख लिया, तो कहने लगे कि हम खुदा-ए-वाहिद पर ईमान लाए और जिस चीज़ को उस के साथ शरीक बनाते थे, उस से इंकारी हुए। (८४) लेकिन जब वह हमारा अज़ाब देख चुके (उस वक़्त) उन के ईमान ने उन को कुछ भी फ़ायदा न दिया। (यह) खुदा की आदत (है) जो उस के बन्दों (के बारे में) चली आती है और वहां काफ़िर घाटे में पड़ कर रह गये। (८५)★



४१ सूर: हामीम अस्-सज्दा ६१

सूर: हामीम अस-सज्दा मक्की है, इस में चौवन आयतें और छे श्लोक हैं।

शुरू खुदा का नाम लेकर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

हामीम, (१) यह किताब (खुदा-ए-) रहमान व रहीम (की तरफ) से उतरी है। (२) (ऐसी) किताब जिस की आयतें खुले (मतलब वाली) हैं, (यानी) क़ुरआने अरबी उन लोगों के लिए है, जो समझ रखते हैं। (३) जो खुशख़बरी भी सुनाता है और ख़ौफ़ भी दिलाता है, लेकिन उन में से अक्सरों ने मुंह फेरे और वे सुनते ही नहीं। (४) और कहने लगे कि जिस चीज़ की तरफ़ तुम हमें बुलाते हो, उस से हमारे दिल पदों में हैं और हमारे कानों में बोझ (यानी बहरापन) है और हमारे और तुम्हारे दमियान पर्दा है, तो तुम (अपना) काम करो, हम (अपना) काम करते हैं●(५) कह दो कि मैं भी आदमी हूँ, जैसे तुम, (हां), मुझ पर यह बह्य आती है कि तुम्हारा माबूद एक खुदा है, तो सीधे उसी की तरफ़ मुतबज्जह रहो और उसी से मरिफ़रत मांगो और

मुशिरकों पर अफसोस है, (६) जो जकात नहीं देते और आखिरत के भी कायल नहीं। (७) जो लोग ईमान लाए और नेक अमल करते रहे, उन के लिए (ऐसा) सवाब है, जो खत्म ही न हो। (८) कह दो, क्या तुम उस से इंकार करते हो, जिस ने जमीन को दो दिन में पैदा किया और (बुतों को) उस के मुकाबले का ठहराते हो? वही तो सारे जहान का मालिक है। (९) और उसी ने जमीन में उस के ऊपर पहाड़ बनाए और जमीन में बरकत रखी और उस में रोजी का सामान मुकर्रर किया, (सब) चार दिन में (और तमाम) तलब रखने वालों के लिए बराबर। (१०) फिर आसमान की तरफ मुतवज्जह हुआ और वह घुवां था तो उसने उससे और जमीन से फरमाया कि दोनों आओ (चाहे) खुशी से चाहे ना-खुशी से, उन्होंने कहा कि हम खुशी से आते हैं। (११) फिर दो दिन में सात आसमान बनाये और हर आसमान में उस (के काम) का हुक्म भेजा और हमने दुनिया के आसमान को चिरागों (मानी सितारों) से सजा दिया और (शैतानों से) बचाए रखा। ये जबरदस्त (और खबरदार के (मुकर्रर किए हुए) अंदाजे हैं। (१२) फिर अगर ये मुंह फेर लें, तो कह दो कि मैं तुम को (ऐसी) चियाड़ (के अज्जाब) से डराता हूँ, जैसे आद और समूद पर चिघाड़ (का अज्जाब आया था)। (१३) जब उन के पास पैगम्बर उन के आगे और पीछे से आए कि खुदा के सिवा (किसी की) इबादत न करो, कहने लगे कि अगर हमारा परवरदिगार चाहता तो फ़रिश्ते उतार देता, सो जो तुम दे कर भेजे गये हो, हम उस को नहीं मानते। (१४) जो आद थे, वे ना-हक मुल्क में घमंड करने लगे कि हम से बढ़ कर ताक़त में कौन है? क्या उन्होंने नहीं देखा कि खुदा, जिसने उन को पैदा किया, वह उन से ताक़त में बहुत बढ़ कर है और वे हमारी आयतों से इंकार करते रहे। (१५) तो हमने उन पर नहसत के दिनों में जोर की हवा चलायी, ताकि उन को दुनिया की ज़िंदगी में ज़िल्लत के अज्जाब का मज़ा चखा दें और आखिरत का अज्जाब तो बहुत ज़लील करने वाला है और (उस दिन) उन को मदद भी न मिलेगी। (१६) और समूद थे, उन को हमने सीधा

व अम्मा समुदु क-हदेनाहुम् फस्त-हम्बुल-अमा अलल्-नुवा क-अ-ख-जल्हुम् साजि-
कतुल्-अजाबिल्-हनि बिमा कानू यकिसबून (१७) व नज्जेनल्लजी - न
आमनू व कानू यस्तकून * (१८) व यी-म युद्दह अम्-दाउल्लाहि इलन्नारि फहुम्
युज्जून (१९) हत्ता इजा मा जा ऊहा शहि-द अलैहिम् सम्जुहुम्

व अम्सारुहुम् व जुलुदुहुम् बिमा कानू यम्-
मलून (२०) व कालू लिजुलूदिहिम् लि-म
शहितुम् अलेना कालू अन्-त-क-नल्-लाहुल्लजी
अन्-त-क कुल्-ल शई-व-व हु-व ख-ल-ककुम्
अब्ब-ल मरतिव-व इलैहि तुरज्जून (२१) व
माकुन्तुम् तस्ततिरु-न अय्यश-ह-द अलैकुम्
सम्-अकुम् व ला अम्सारुकुम् व ला
जुलुदुकुम् व लाकिन् अ-नन्तुम् अन्नल्ला-ह ला
यज्ज-लमु कसीरम्-मिम्मा तअ-मलून (२२)
व जालिकुम् अन्नुकुमुल्लजी अ - नन्तुम्
बिरन्बिकुम् अदाकुम् क - अस्बहतुम्
मिनल्-सासिरीन (२३) फइ-य्यस्बिक्

الْهَدَىٰ وَاعْتَدْتُمْ صُفُفَةَ الْعَذَابِ الْهَوْنِ بَيَاكَةً لِّمَنْ
يَكْفُرُونَ ۚ وَنَحْنُ الَّذِينَ آمَنُوا وَكَانُوا يَكْفُرُونَ ۚ وَبِئْسَ
أَعْدَاءُ اللَّهِ إِلَى السَّالِفِينَ ۚ هُمْ يُؤْمِنُونَ ۚ هَٰذَا مَا جَاءُكُمْ بِهَدًى
عَلَيْكُمْ سَمِعْتُمْ وَأَبْصَرْتُمْ ۚ وَجَاءُكُمْ بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۚ
وَمَا كُنْتُمْ بِمُعْذِرِينَ ۚ هُمْ يَسْتَكْبِرُونَ ۚ فَالَّذِينَ أَنْطَقَ اللَّهُ الْكَلِمَ
الْفُصْحَىٰ كُلَّ شَيْءٍ وَهُوَ خَلَقَكُمْ ۚ أَوَّلَ مَرَّةٍ ۚ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ۚ
وَمَا كُنْتُمْ بِمُعْذِرِينَ ۚ إِنَّ يَسْأَلُكُمْ عَنْ يَوْمِكُمْ فَسَمِعْتُمْ
لَا أَبْصَرْتُمْ وَلَا تَحْتَسِبُونَ ۚ وَلَكِنْ ظَنَنْتُمْ أَنَّ اللَّهَ لَا يَعْلَمُ
كَيْفَ أَيْمَنَّا بِكُمْ ۚ وَأَنْتُمْ ظَنَنْتُمْ أَنَّ اللَّهَ لَا يَعْلَمُ
بِرَّكُمْ ۚ أَرَأَيْتُمْ أَصْبَحْتُمْ مِنَ الْغَائِبِينَ ۚ فَإِنْ تَصْبِرُوا فَالْعَذَابُ
مَأْمُورٌ لَّهُمْ ۚ وَإِنْ يَسْتَعِذُّوْا بِكُمْ مِنَ الْمُعْذِبِينَ ۚ وَ
تَقْتَضِي أَلْفُمْ فَرَأَيْتُمْ لَٰكُمُ الْقَائِلِينَ أَيْدِيَهُمْ وَأَمْوَالُهُمْ
وَحَقُّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ فِي أَمْرٍ ۚ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِمْ مِنَ
الْبَنِي وَالْأَرْبَابِ ۚ إِنَّهُمْ كَانُوا خَائِبِينَ ۚ وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا
لَا تَسْمَعُوا هَٰذَا الْقُرْآنَ وَالْوَاقِفِينَ ۚ وَتَسْمَعُونَ ۚ وَلَقَدْ
يَكْفَىٰ يُفْخِرُ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ وَعَذَابُ الْقَرَارِ ۚ وَتَنْتَظِرُونَ
أَسْوَ الْكَلِمَةِ ۚ كَانُوا يَعْمَلُونَ ۚ ذَلِكَ جَزَاءُ أَعْدَاءِ اللَّهِ

फन्नाह मस् - वल् - लहुम् ८ व इय्यस्तअ - तिबू क्रमा हुम् मिनल् -
मुज् - तबीन (२४) व कय्यज्जना लहुम् क - र-ना - अ क-जय्यन
लहुम् मा - बे - न ऐदीहिम् व मा खल्फहुम् व हक् - क अलैहिमुल्-
कीलु फी उममिन् कद् ख - लत् मिन् कबिलहिम् मिनल्-जिन्नि वल्-
इन्सि ८ इन्नहुम् कानू सासिरीन * (२५) व कालल्लजी - न क - फरू
ला तस् - मज्ज लिहाजल्-कुरआनि बल्गौ फीहि ल - अल्लकुम् तगिल -
बून (२६) क - लनुजीकन्नल्लजी - न क - फरू अजाबन्
शदीदव - व ल - नज्जियन्नहुम् अस्-व-अल्लजी कानू यज्ज-मलून (२७)

रास्ता दिखा दिया था, मगर उन्होंने ने हिदायत के मुक़ाबले में अंधा रहना पसन्द किया, तो उन के आमाँल की सज़ा में कड़क ने उन को आ पकड़ा और वह खिल्लत का अज़ाब था । (१७) और जो ईमान लाए और परहेज़गारी करते रहे, उन को हमने बचा लिया । (१८) ★

और जिस दिन खुदा के दुश्मन दोज़ख की तरफ़ चलाए जाएंगे, तो तर्तीबवार कर लिए जाएंगे, (१९) यहां तक कि जब उस के पास पहुंच जाएंगे, तो उन के कान और आंखें और चमड़े (यानी दूसरे अंग,) उन के खिलाफ़ उन के आमाँल की गवाही देंगे । (२०) और वे अपने चमड़ों (यानी अंग) से कहेंगे कि तुमने हमारे खिलाफ़ क्यों गवाही दी ? वे कहेंगे कि जिस खुदा ने सब चीज़ों को जुबान दी, उसी ने हम को भी बोलने की ताक़त दी और उसी ने तुम को पहली बार पंदा किया था और उसी की तरफ़ तुम को लौट कर जाना है । (२१) और तुम इस (बात के डर) से तो पर्दा नहीं करते थे कि तुम्हारे कान और तुम्हारी आंखें और चमड़े तुम्हारे खिलाफ़ गवाही देंगे, बल्कि तुम यह स्थाल करते थे कि खुदा को तुम्हारे बहुत से अमलों की ख़बर ही नहीं । (२२) और इसी स्थाल ने, जो तुम अपने परवरदिगार के बारे में रखते थे, तुम को हलाक कर दिया और तुम घाटा पाने वालों में हो गये । (२३) अब अगर ये सब करेंगे, तो उन का ठिकाना दोज़ख ही है और अगर तोबा करेंगे, तो उन की तोबा कुबूल नहीं की जाएगी । (२४) और हमने (शैतानों को) उन का हमनशीन मुक़रर कर दिया था, तो उन्होंने ने उन के अगले और पिछले आमाँल उन को उम्दा कर दिखाए थे और इंसानों की जमाअतें जो उन से पहले गुज़र चुकीं, उन पर भी खुदा (के अज़ाब) का बायदा पूरा हो गया । बेशक ये नुक़सान उठाने वाले हैं । (२५) ★ और काफ़िर कहने लगे कि इस क़ुरआन को सुना ही न करो और (जब पढ़ने लगें तो) शोर मचा दिया करो, ताकि ग़ालिब रहो । (२६) सो हम भी काफ़िरों को सद्दत अज़ाब के मजे चखाएंगे और बुरे अमल की जो

जालि - क जजा - उ अञ् - दा - इत्लाहिन्तारः लहुम् फ्रीहा दारुखुल्दि

जज्ञा - अम् - बिमा कानू बिआयातिना यज्ञ - हूनुन (२८) व

काललज्जि - न क-कुरु खब्बन अरिनलज्जिनि अ - जल्लाना मिनलज्जिनि

बलइन्ति नञ्-अल्हमा तहू-त अक्दामिना लि-यकूना मिनल्-अस्फलीन (२६)

इल्लल्लजी-न कालू रब्बुनल्लाहु मुम्मस-

तक्रामू त-त-नश्जलु अलैहिमुल् - मला^१-इकतु

अल्ला तस्वाफू व ला तहज्जनु व अग्निशरू

बिल्-जन्तिल्लती कुन्तुम् तूअदून (३०)

नहन् ओलियाउकूम फ़िलहयातिददून्या व

क्रिष्णखिरतिः व लकुम् फ्रीहा मा तशतही

अन्फुसुकुम् व लकुम् फ्रीहा मा तद्-दअन

(३१) नुजुलम्-मिन् गफूरिरंहीम ★ (३२)

व मन् अहसनु कौलम् - मिम्मन् दया

इलल्लाहि व अमि-ल सालिहंवू-व काल

इन्लनी मिनलमुस्लिमीन (३३) व ला

तस्तविल-ह-स-नतु व लस्सय्यिअतु^७ इदफअ-

बिल्लती हि - य अहसनु फ - इजल्लजी

क - अल्लह वलिय्यन हमीम (३४)

स - बरु व मा यलक्काहा इला ज

इममा यन-ज-गान्-क भिनपुशैतानि नज

द्वयस्मसीअल - अलीम (३६) व नि

शाम्स वल्क - मरु^७ ला तस्जद लिशशम्सि

लिल्लाहिल्लजी ख-ल-कहन-न इन कन्तम

[illegible]

बैन - क व बैनह अदावतुन्
 व मा युलवकाहा इल्ललजीन
 हड्डिन् अजीम (३५) व
 न् फस्तभिज् बिल्लाहि इन्नह
 न् आयातिहिल्लैलु वन्नहार वश्
 व ला लिल्क-मरि वस्जुद्
 इय्याह तब् - बुहून (३७)

वे करते थे, सजा देंगे (२७) यह खुदा के दुश्मनों का बदला है (यानी) दोषख। उन के लिए इसी में हमेशा का घर है। यह इस की सजा है कि हमारी आयतों से इंकार करते थे। (२८) और काफ़िर कहेंगे कि ऐ हमारे परवरदिगार ! जिन्यों और इंसानों में से जिन लोगों ने हम को गुमराह किया था, उन को हमें दिखा कि हम उन को अपने पांवों के तले (रोद) डालें, ताकि वे निहायत जलील हों। (२९) जिन लोगों ने कहा कि हमारा परवरदिगार खुदा है, फिर वे (उस पर) कायम रहे, उन पर फ़रिश्ते उतरेंगे (और कहेंगे) कि खौफ़ करो और न ग़मनाक हो और बहिश्त की, जिस का तुम से वायदा किया जाता है, खुशी मनाओ। (३०) हम दुनिया की ज़िदगी में भी तुम्हारे दोस्त थे और आखिरत में भी (तुम्हारे साथी हैं) और वहां जिस (नेमत) को तुम्हारा जी चाहेगा, तुम को मिलेगी और जो चीज़ तलब करोगे, तुम्हारे लिए मौजूद होगी। (३१) (यह) बरक़ाने वाले मेहरबान की तरफ़ से मेहमानी है। (३२)★

और उस शरूस् से बात का अच्छा कौन हो सकता है, जो खुदा की तरफ़ बुलाए और नेक अमल करे और कहे कि मैं मुसलमान हूं। (३३) और भलाई और बुराई बराबर नहीं हो सकती, तो (सब्त बातों का) ऐसे तरीक़े से जवाब दो, जो बहुत अच्छा हो, (ऐसा करने से तुम देखोगे) कि जिस में और तुम में दुश्मनी थी, वह तुम्हारा ग़म-जोश दोस्त है। (३४) और यह बात उन ही लोगों को हासिल होती है, जो बर्दाश्त करने वाले हैं और उन ही को नसीब होती है, जो बड़ी किस्मत वाले हैं। (३५) और अगर तुम्हें शैतान की तरफ़ से कोई बस्वसा पैदा हो, तो खुदा की पनाह मांग लिया करो। बेशक वह सुनता जानता है। (३६) और रात और दिन, सूरज और चांद उस की निशानियों में से हैं। तुम लोग न तो सूरज को सज्दा करो और न चांद को, बल्कि खुदा ही को सज्दा करो, जिस ने इन चीज़ों को पैदा किया है, अगर तुम को उस की इबादत मंज़ूर है। (३७)

फइनिस्तक्करु फल्लजी-न अन्-द रबि-क युसबिह-न लहू बिल्लैलि घन्नहारि व
हुम् ला यस्-अमून □ (३८) व मिन् आयातिही अन्न-क त-रल्-अर-ज् लाशि-अ-तन्
फ-इज् अज्जल्ला अल्लह-मा अहततज्जत् व र-बत् इन्नल्लजी अहू - याहा
लमुह्यिलमोता इन्नहू अला कुल्लि शैइन् कदीर (३९) इन्नल्लजी-न

युल्हिह-न फ्री आयातिना ला यरुफो-न अलैना
अ-फ-मय्युल्का फिन्नारि खैरन् अम्मय्यअती
आमिनय्योमल् - क्रियामति इअ - मलू मा
शिअतुम् इन्नहू बिमा तअ-मलू-न बसीर
(४०) इन्नल्लजी - न क - फरू

बिज्जिकिर लम्मा जा - अहुम् ८ व इन्नहू
लकिताबुन् अजीजुल्- (४१) ला यअतीहल्-
बातिलु मिम्बैनि यदैहि व ला मिन् खलिफही
तन्जीलुम्-मिन् हकीमिन् हमीद (४२)
मा युकालु ल-क इल्ला मा कद् की-ल
लिहसुलि मिन् कबिल-क इन्-न रब्ब-क लजू
मरिफ-रतिव-व जू अिकाबिन् अलीम (४३)

व ली ज-अल्लाहु कुरआनन् अअ-जमियल्लकालू लीला फुसिलत् आयातुह अ-अ-
जमिय्युव - व अरबियुन् कुल् हु-व लिल्लजी - न आमनू हुदव - व
शिकाउन् वल्लजी-न ला युअमिन्-न फ्री आजानिहिम् वक्क-रव-व हु-व अलैहिम्
अ-मन् उलाइ-क युनादो-न मिम् - मकानिम् - बओद (४४) व
ल - कद् आतेना मूसल्किता - व फख्तुलि-फ फ्रीहि व लीला कलि -
मतुन् स-ब-कत् मिरबि-क लकुज्जि-य बेनहुम् व इन्नहुम् लफ्री शक्किम्-मिन्ह
मुरीब (४५) मन् अमि - ल सालिहत् फलि-नफसिही व मन्
असा - अ फ-अलैहा व मा रब्बु - क बिअल्लामिल् - लिअबीद (४६)

رَبِّكَ يَسْمَعُونَ لَهُ الْيَاقِينَ وَالْقَائِلِينَ وَهُمْ لَا يَسْمَعُونَ
مِنْ أَيْدِيهِ إِنَّكَ تَرَى الْأَرْضَ خَاصَّةً فَإِذَا أَنْزَلْنَا عَلَيْكَ
الْحَبْلَ الْمُحْكَمَ وَرَبَّتْ إِنَّ الَّذِي أَحْمِلُكُمُ الْبَقُولُ إِنَّكَ
عَلَى شَيْءٍ وَكِيدٍ إِنَّ الَّذِي يُخَيِّدُنْ فِي آيَاتِنَا لَا
يَخْفُونَ عَلَيْكَ إِنَّ الَّذِي فِي الشَّيْءِ خَيْرٌ أَمْ قُلُوبُ الْإِنْسَانِ
يَوْمَ الْقِيَامَةِ أَعْمَلُوا مَا شِئْتُمْ إِنَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ
إِنَّ الَّذِي تَقْرَأُونَ بِاللَّيْلِ لَنُجَاوِزُهُمْ إِنَّهُ لَكَنُفٌ عَصِيدٌ
لَا يَأْتِيهِ الْبَاطِلُ مِنْ بَيْنِ يَدَيْهِ وَلَا مِنْ خَلْفِهِ تَتْلُو
مِنْ حَكِيمٍ حُتُوبٍ مَا يَأْتِيكَ الْبَلُ إِلَّا مَا قَدْ قِيلَ لِلْمُؤْمِنِينَ
مِنْ قَبْلِكَ إِنَّ رَبَّكَ لَذُو مَغْفِرٍ وَذُو عِقَابٍ أَلِيمٍ وَ
لَوْ جَعَلْنَاهُ قُرْآنًا أَعْجَبَ لَعَالَمُوا الْوَلُوكَ خُذْ مِنْهَا مَا تَشَاءُ
وَعَرِّضْ قُلُوبَ الَّذِينَ آمَنُوا هُدًى وَنُذُرًا وَالَّذِينَ
لَا يُؤْمِنُونَ فِي آذَانِهِمْ وَقُورٌ وَهُمْ عَلَىٰ عُنُقٍ أُولَٰئِكَ
يُكَذِّبُونَ مَنْ مَكَانٍ بَيْنَهُمْ وَبَيْنَهُ الْقُرْآنُ مَوْجٍ الْكِتَابِ
فَأَنصَلَتْ بِهِ ذُرُوءًا كُلًّا سَبَقَتْ مِنْ رَبِّكَ الْغُصْبَى
بَيْنَهُمْ وَاللَّهُ لَعَفُوفٌ عَلِيمٌ فَذَرْهُمْ وَمَا يَفْكُهُمْ
وَمَنْ أَسَاءَ تَعْلَمُ وَمَا يَكُفِّرُهُمْ إِلَّا الظُّلُمُ الْكَبِيرُ

अगर ये लोग सर-कशी करें, तो (खुदा को भी इन की परवाह नहीं) जो (फरिस्ते) तुम्हारे परवरदिगार के पास हैं, वे रात दिन उस की तस्बीह करते रहते हैं और (कभी) थकते ही नहीं □ (३८) और (ऐ बन्दे ! ये) उसी (की कुदरत) के नमूने हैं कि ज़मीन को दबी हुई (यानी सूखी) देखता है। जब हम उस पर पानी बरसा देते हैं, तो हरी-भरी हो जाती और फूलने लगती है, तो जिस ने ज़मीन को ज़िदा किया, वही मुर्दों को ज़िदा करने वाला है। बेशक वह हर चीज़ पर कुदरत रखता है। (३९) जो लोग हमारी आयतों में कजराही करते हैं, वे हम से छिपे नहीं हैं। भला जो शरूत दोज़ख में डाला जाए, वह बेहतर है या वह जो क्रियामत के दिन अमन व अमान से आए ? (ती खैर) जो चाहो सो कर लो। जो कुछ तुम करते हो, वह उस को देख रहा है। (४०) जिन लोगों ने नसीहत को न माना, जब वह उन के पास आयी और यह तो एक बुलंद मतवा किताब है। (४१) उस पर झूठ का दखल न आगे से हो सकता है, न पीछे से (और) दाना (और) खूबियों वाले (खुदा) की उतारी हुई है। (४२) तुम से वही बातें कही जाती हैं, जो तुम से पहले और पैगम्बरों से कही गयी थी। बेशक तुम्हारा परवरदिगार बरक़ देने वाला भी है और दर्दनाक अज़ाब देने वाला भी है। (४३) और अगर हम इस कुरआन को गैर जुबाने अरब में (ताज़िल) करते, तो ये लोग कहते कि इस की आयतें (हमारी जुबान में) क्यों खोल कर बयान नहीं की गयीं? क्या (खूब, कि कुरआन तो) गैर-अरबी और (मुखातब) अरबी। कह दो कि जो ईमान लाते हैं, उन के लिए (यह) हिदायत और शिफ़ा है और जो ईमान नहीं लाते, उन को कानों में बोझ (यानी बहरापन) है और यह उन के हक में अंधेपन (की वजह) है। बोझ की वजह से उन को (गोया) दूर जगह से आवाज़ दी जाती है। (४४) ★

और हमने मूसा को किताब दी, तो इस में इस्तिलाफ़ किया गया और अगर तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से एक बात पहले ठहर चुकी होती, तो उन में फ़ैसला कर दिया जाता और ये इस (कुरआन) से शक में उलझ रहे हैं। (४५) जो नेक काम करेगा तो अपने लिए और जो बुरे करेगा, तो उन का नुक़सान उसी को होगा और तुम्हारा परवरदिगार बन्दों पर जुल्म करने वाला

१. कजराही करने का मतलब यह है कि आयतों का मतलब बदल देते हैं। साफ़ और मही और खुला मतलब है, उस को छोड़ कर और मतलब निकालते हैं। यह बहुत गंदी हरकत है और इस पर जहन्नम की धमकी है। खुदा इस से पनाह में रखे।

पच्चीसवां पारः इलैहि युरदु सूरतु हामीम-अस्सज्जदति आयात ४७ से ५४

इलैहि युरदु अल्मुस्साअति ७ व मा तखरजु मिन् स-मरातिम्-मिन् अकमामिहा
व मा तहिमलु मिन् उन्सा व ला त-ज्जु इल्ला बिअलिमही ७ व यो-म
युनादीहिम् ऐ-न शु-रकाई॥ कालू आजन्ना-क॥ मा मिन्ना मिन् शहीद ७ (४७) व
जल् - ल अन्हुम् मा कानू यदू - न मिन् कबलु व अन्नु मा
लहुम् मिम्-महीसु (४८) ला यस्-अमुल्-
इन्सानु मिन् दुआइल्खरि ७ व इम्-मस्सहुश्-शरै
फ-यऊमुत् कनूत (४९) व ल-इन् अ-जकनाहु
रह्-म-तुम्-मिन्ना मिम्बअ-दि जर्-रा-अ मस्सतु
ल-यकूलन्-न हाजा ली॥ व मा अज्जनुस्सा-अ-त
काइ-म-तुव-व लइर्रजिअ-तु इला रब्बी इन्-न
ली अिन्दह लल्हुस्सा ७ फ-ल नुनबिअन्नल्लजी-न
क-फरू बिमा अमिलू ७ व ल-नुजीकन्नहुम् मिन्
अजाबिन् गलीज (५०) व इजा अन्-अम्ना
अ-लल्हुस्सानि अज्-र-ज व नआ बिजानिबिही ७
व इजा मस्सहुश्शरै फज्ज दुआइन् अरीज (५१)
कुल् अ-र-ऐतुम् इन् कान मिन् अिन्दिल्लाहि
सुम्-म क-फरतुम् बिही मन् अज्जलु मिम्मन्
हु-व फी शिकाकिम्-बबीद (५२) सनुरीहिम्

الَّذِينَ يَرِثُونَ الْآيَاتِ وَالْأَنْعَامِ وَمَا تَحَرَّتْ مِنْ شَرْبٍ مِنَ الشَّيْءِ
مَا تَحَرَّتْ مِنْ أَنْفٍ وَلَا تَحَرَّتْ مِنْ أَنْفٍ وَلَا تَحَرَّتْ مِنْ أَنْفٍ
قَالُوا إِنَّكَ مَا تَقُولُ إِلَّا حُبْلٍ وَمَا تَحَرَّتْ مِنْ أَنْفٍ
مِنْ قَبْلِ وَطْأِ مَا تَقُولُ إِلَّا حُبْلٍ وَمَا تَحَرَّتْ مِنْ أَنْفٍ
النَّصِيرِ وَلَنْ تَقْضَى الْقُرْآنُ قَطْرَةً وَلَكِنْ أَفْقُهُ رَمَتْ وَكَأَنَّ
مِنْ بَيْنِ عَصَاكَ مَشْنَعَةً لِكَيْلَ لَنْ هَذَا وَمَا تَحَرَّتْ مِنْ أَنْفٍ
وَلَكِنْ رُجْعَتُ إِلَى رَيْبِي لَنْ فِي عَصَاكَ الْكُفْرُ وَالْكَفْرُ إِلَى الْبَيْنِ
كَلِمَاتٍ يَمُاعُوا وَلَكِنْ يَنْقُصُ مِنْ عَذَابٍ غَلِيظٍ وَإِذَا أَمَرْنَا
عَلَى الْإِنْسَانِ أَنْعَضَ وَنَاجِيَةً وَإِذَا أَمَرْنَا الْقُرْآنَ فَذُوعًا
عَرِيضٍ عَلَى أَرْبَعِينَ كَانِ مِنْ عَذَابِ اللَّهِ لَوْ تَوَلَّى كَفْرَهُ مِنْ
أَمْرٍ مِمَّنْ هُوَ فِي شِقَاقٍ بَيْنِي وَمَنْ يَكْفُرْ لِي فِي الْآيَاتِ
فِي الْكُفْرِ حَتَّى يَكُونَ لِمَنْ أَكْفَرُ الْكُفْرَ أَوْ لَوْ كُنْ بِرَيْبٍ
أَكْفَرُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ شَيْئًا ۝ أَلَا اللَّهُمَّ فِي مَرْبَةٍ مِنْ لِقَاءِ
وَلَوْ أَنَّ الْآيَةَ بِكُلِّ شَيْءٍ مُبِينٌ ۝
يَوْمَ لَا تُنْفَعُ الشُّفَعَةُ إِلَّا لِلَّذِينَ هُمْ عَنْ رَبِّهِمْ يَخِشِعُونَ
يُسَبِّحُونَ اللَّهَ طَرَفًا مِمَّنِ الْوَجْهِ
لَحْمًا ۝ مَحْضًا ۝ كَذَلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لِكَافِرِينَ الْآيَاتِ وَلَكِنَّ الْكَافِرِينَ مِنْ قَوْلِكَ

४२ सूरतुशूरा ६२

(मक्की) इस सूरः में अरबी के ३५+५ अक्षर, ८६६ शब्द, ५३ आयतें और ५ हकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

हामीम् ७ (१) अन्-सीन्-काफ़ (२) क-जालि-क यूही इले - क
व इल्लखी-न मिन् कबिल - क॥ -ल्लाहुल् - अजीबुल् - हकीम (३)

नहीं। (४६) क़ियामत के इल्म का हवाला उसी की तरफ़ दिया जाता है (यानी क़ियामत का इल्म उसी को है) और न तो फल गाँधों से निकलते हैं और न कोई मादा हामिला होती और न जनती है, मगर उस के इल्म से और जिस दिन वह उन को पुकारेगा (और कहेगा) कि मेरे शरीक कहाँ हैं, तो वे कहेंगे कि हम तुम से अर्ज करते हैं कि हम में से किसी को (उन की) ख़बर हो नहीं। (४७) और जिन को पहले वे (ख़ुदा के सिवा) पुकारा करते थे, (सब) उन से ग़ायब हो जाएंगे और वे यक़ीन कर लेंगे कि उन के लिए मुस्लिमी नहीं। (४८) इंसान भलाई की दुआएं करता-करता तो थकता नहीं और अगर तकलीफ़ पहुंच जाती है, तो ना-उम्मीद हो जाता और आस तोड़ बैठता है। (४९) और अगर तकलीफ़ पहुंचने के बाद हम उस को अपनी रहमत का मज़ा चखाते हैं तो कहता है कि यह तो मेरा हक़ था और मैं नहीं ख़्याल करता कि क़ियामत बरपा हो और अगर (क़ियामत सचमुच भी हो और) मैं अपने परवरदिगार की तरफ़ लौटाया भी जाऊँ, तो मेरे लिए उस के यहां भी खुशहाली है, पस काफ़िर जो अमल किया करते हैं, वे हम ज़रूर उन को जताएंगे और उन को सख्त अज़ाब का मज़ा चखाएंगे। (५०) और जब हम इंसान पर क़रम करते हैं, तो मुँह मोड़ लेता और पहलू फेर कर चल देता है और जब उस को तकलीफ़ पहुंचती है, तो लंबी-लंबी दुआएं करने लगता है। (५१) कहो कि भला देखो अगर यह (क़ुरआन) ख़ुदा की तरफ़ से हो, फिर तुम इस से इंकार करो, तो उस से बढ़ कर कौन गुमराह है जो (हक़ की) परले दर्जे की मुसालफ़त में हो। (५२) हम बहुत जल्द उन को (दुनिया के) हर तरफ़ में भी और ख़ुद उन की ज़ात में भी अपनी निशानियां दिखाएंगे, यहां तक कि उन पर ज़ाहिर हो जाएगा कि (क़ुरआन) हक़ है। क्या तुम को यह काफ़ी नहीं कि तुम्हारा परवरदिगार हर चीज़ से ख़बरदार है। (५३) देखो, ये अपने परवरदिगार के सामने हाज़िर होने से शक़ में हैं। सुन रखो कि नह हर चीज़ पर एहाता किए हुए है। (५४) ★



४२ सूर: शूरा ६२

सूर: शूरा मक्की है और इस में ५३ आयतें और पांच रकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

हामीम्, (१) ऐन्-सीन्-काफ़्, (२) ख़ुदा-ए-मालिब व दाना इसी तरह तुम्हारी तरफ़ (मरूम और साफ़ दलीलें) भेजता है, (जिस तरह) तुम से पहले लोगों की तरफ़ वह्य भेजता

१. यहां बरबी लफ़्ज़ 'मरीज' है, जिसे मुहाबरे में लम्बी-लम्बी दुआएं कहते हैं, न चौड़ी-बौड़ी, इस लिए तर्जुमे में 'लम्बी-लम्बी दुआएं' लिखा गया।

रहा है। (३) जो कुछ आसमानों में और जो कुछ जमीन में है, सब उसी का है, और वह बुलंद मर्तबा (और) अजीम है। (४) करीब है कि आसमान ऊपर से फट पड़े और फ़रिश्ते अपने परवरदिगार की तारीफ़ के साथ उस की तस्बीह करते रहते और जो लोग जमीन में हैं, उन के लिए माफ़ी मांगते रहते हैं।^१ सुन रखो कि खुदा बल्लशने वाला मेहरबान है। (५) और जिन लोगों ने उस के सिवा कारसाज बना रखे हैं, वे खुदा को याद हैं और तुम उन पर दारोगा नहीं हो। (६) और इसी तरह तुम्हारे पास अरबी कुरआन भेजा है, ताकि तुम बड़े गांव (यानी मक्के) के रहने वालों को और जो लोग उस के इर्द-गिर्द रहते हैं, उन को रास्ता दिखाओ और उन्हें क्रियामत के दिन का भी, जिस में कुछ शक नहीं, डर दिलाओ। उस दिन एक फ़रीक़ बहिश्त में होगा और एक फ़रीक़ दोक्ष में। (७) और अगर खुदा चाहता, तो उन को एक ही जमाअत कर देता, लेकिन वह जिस को चाहता है, अपनी रहमत में दाखिल कर लेता है और ज़ालिमों का न कोई यार है और न मददगार। (८) क्या उन्होंने ने उस के सिवा कारसाज बनाए हैं? कारसाज तो खुदा ही है और वही मुद्दों को ज़िदा करेगा और वह हर चीज़ पर कुदरत रखता है। (९) ★

और तुम जिस बात में इस्तिलाफ़ करते हो, उस का फ़ैसला खुदा की तरफ़ (से होगा)। यही खुदा मेरा परवरदिगार है, मैं उसी पर भरोसा रखता हूँ और उसी की तरफ़ रुजूअ करता हूँ। (१०) आसमानों और जमीन का पैदा करने वाला (वही है।) उसी ने तुम्हारे लिए तुम्हारी ही जिस के जोड़े बनाए और चारपायों के भी जोड़े (बनाए और) इसी तरीक़े पर तुम को फँलाता रहता है। उस जैसी कोई चीज़ नहीं और वह मुनता-देखता है। (११) आसमानों और जमीन की कुंजियाँ उसी के हाथ में हैं। वह जिस के लिए चाहता है, रोज़ी फँला देता है और (जिस के लिए चाहता है) तंग कर देता है। देशक वह हर चीज़ को जानता है। (१२) उस ने तुम्हारे लिए दीन का वही रास्ता मुकर्रर किया, जिस (के अपनाने) का नूह को हुक्म दिया था और जिस की (ऐ मुहम्मद!) हम ने तुम्हारी तरफ़ वह्य भेजी है और जिस का इब्राहीम और मूसा और ईसा को हुक्म दिया था, (वह यह) कि दीन को क़ायम रखना और उस में फूट न डालना। जिस चीज़ की तरफ़ तुम मुशिरकों को बुलाते हो, वह उन को मुश्किल गुज़रती है। अल्लाह जिस को चाहता है, अपनी बारगाह का चुना हुआ कर लेता है और जो उस की तरफ़ रुजूअ करे उसे अपनी तरफ़ रास्ता दिखा देता है। (१३)

१. जो लोग जमीन पर हैं, इस में मोमिन और काफ़िर सब शामिल हैं। काफ़िरों के हक़ में फ़रिश्ते इस लिए दुआ करते हैं कि उन को उम्मीद होती है कि शायद वे ईमान ले आएंगे। कुछ ने कहा, बल्लिश की दुआ से रोज़ी की दुआ मुराद है, यानी तमाम फ़रिश्ते जमीन वालों के लिए रोज़ी मांगते रहते हैं, चाहे मोमिन हों, चाहे काफ़िर। अगर यही मानी मुराद लिए जाएं तो फ़रिश्तों की दुआ का असर जाहिर है।

और वे लोग जो अलग-अलग हुए हैं, तो इल्मे (हक) आ चुकने के बाद आपस की खिद से (हुए हैं) और अगर तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से एक मुकर्रर वक़्त तक के लिए बात न ठहर चुकी होती तो उन में फ़ैसला कर दिया जाता और जो लोग उन के बाद (खुदा की) किताब के वारिस हुए, वे उस (की तरफ़) से शुबहे की उलझन में (फंसे हुए) हैं। (१४) तो (ऐ मुहम्मद !) उसी (दीन की) तरफ़ (लोगों को) बुलाते रहना और जैसा तुम को हुक्म हुआ है, (उसी पर) कायम रहना और उन की स्वाहिशों की पैरवी न करना और कह दो कि जो किताब खुदा ने नाज़िल फ़रमायी, मैं उस पर ईमान रखता हूँ और मुझे हुक्म हुआ है कि तुम में इंसफ़ करूँ। खुदा ही हमारा और तुम्हारा परवरदिगार है, हम को हमारे आमाल (का बदला मिलेगा) और तुम को तुम्हारे आमाल (का), हम में और तुम में कुछ बहस व तक़ारर नहीं। खुदा हम (सब) को इकट्ठा करेगा और उसी की तरफ़ लौट कर जाना है। (१५) और जो लोग खुदा (के बारे) में इस के बाद कि उसे (मोमिनों ने) मान लिया हो, झगड़ते हैं, उन के परवरदिगार के नज़दीक उन का झगड़ा बेकार है और उन पर (खुदा का) ग़ज़ब और उन के लिए सज़ा अज़ाब है। (१६) खुदा ही तो है, जिस ने सच्चाई के साथ किताब नाज़िल की और (अद्ल व इंसफ़ की) तराजू और तुम को क्या मालूम शायद क्रियामत करीब ही आ पहुँची हो।' (१७) जो लोग इस पर ईमान नहीं रखते, वे इस के लिए जल्दी कर रहे हैं और जो मोमिन हैं, वह इस से डरते हैं और जानते हैं कि वह बर-हक़ है। देखो जो लोग क्रियामत में झगड़ते हैं, वे परले दर्जे की गुमराही में हैं। (१८) खुदा अपने बन्दों पर मेहरबान है, वह जिस को चाहता है, रोज़ी देता है और वह जोर वाला (और) ज़बरवस्त है। (१९)★

जो शरूस् आखिरत की खेती का तालिब हो, उस के लिए हम उस की खेती में बढ़ाएंगे और जो दुनिया की खेती की स्वाहिश रखता हो, उस को हम उसमें से देंगे और उस का आखिरत में कुछ हिस्सा न होगा। (२०) क्या उन के वे शरीक हैं, जिन्होंने उन के लिए ऐसा दीन मुकर्रर किया है, जिस का खुदा ने हुक्म नहीं दिया और अगर फ़ैसले (के दिन) का वायदा न होता, तो उन में फ़ैसला कर दिया जाता और जो ज़ालिम हैं उन के लिए दर्द देने वाला अज़ाब है। (२१) तुम देखोगे कि

१. तराजू फ़रमाया दीने हक़ को जिस में बात पूरी है, न कम, न ज्यादा।

जालिम अपने आमाल (के बवाल) से डर रहे होंगे और वह उन पर पड़ कर रहेगा और जो लोग ईमान लाए और नेक अमल करते रहे, वे बहिश्त के बागों में होंगे। वे जो कुछ चाहेंगे, उन के परवरदिगार के पास (मोजूद) होगा। यही बड़ा फ़ल है। (२२) यही वह (इनाम है) जिस की खुदा अपने उन बन्दों को जो ईमान और नेक अमल करते हैं, खुशखबरी देता है। कह दो कि मैं उस का तुम से बदला नहीं मांगता, मगर (तुम को) रिश्तेदारी की मुहब्बत (तो चाहिए^१) और जो कोई नेकी करेगा, हम उस के लिए उस में सवाब बढ़ाएंगे। बेशक खुदा बरूशने वाला क़द्रदान है। (२३) क्या ये लोग कहते हैं कि पैगम्बर ने खुदा पर झूठ बांध लिया है? अगर खुदा चाहे तो (ऐ मुहम्मद!) तुम्हारे दिल पर मुहर लगा दे और खुदा झूठ को मिटाता और अपनी बातों से हक को साबित करता है। बेशक वह सीने तक की बातों को जानता है। (२४) और वही तो है, जो अपने बन्दों की तीबा कुबूल करता और (उन के) कुसूर माफ़ फ़रमाता है और जो तुम करते हो (सब) जानता है। (२५) और जो ईमान लाए और नेक अमल किए, उन की (दुआ) कुबूल फ़रमाता और उन को अपने फ़ल से बढ़ाता है और जो काफ़िर हैं, उन के लिए सल्ल अज़ाब है। (२६) और अगर खुदा अपने बन्दों के लिए रोज़ी में फैलाव कर देता तो ज़मीन में फ़साद करने लगते, लेकिन वह जिस क़दर चाहता है, अन्दाज़े के साथ नाज़िल करता है। बेशक वह अपने बंदों को जानता (और) देखता है। (२७) और वही तो है जो लोगों के ना-उम्मीद हो जाने के बाद मेंह बरसाता और अपनी रहमत (यानी बारिश की बरकत) को फैला देता है और वह कारसाज़ (और) तारीफ़ के लायक है। (२८) और उन निशानियों में से है आसमानों और ज़मीन का पैदा करना और उन जानवरों का जो उस ने उन में फैला रखे हैं और वह जब चाहे, उन के जमा कर लेने की क़ुदरत रखता है। (२९) ★●

और जो मुसीबत तुम पर वाक़ेअ होती है, सो तुम्हारे अपने फ़ैलों से और वह बहुत से गुनाह

१. यानी अगर तुम मुझ पर ईमान नहीं लाते, तो रिश्तेदारी का पास तो करना चाहिए और मुझे तकलीफ़ नहीं देना चाहिए। कुछ ने यह मतलब बताए हैं कि खुदा का कुबूल हासिल करने के लिए उस से मुहब्बत रखो।

२. ताकि तुम क़ुरआन के अक़मून न बयान कर सको और काफ़िरों को यह कहने का मौक़ा न मिले कि तुम खुदा पर झूठ गढ़ते हो, मगर खुदा को कुपकार के बकने की क्या परवा है? वह उन की बातों को मूठलाता है और अपने पैगम्बर पर क़ुरआन नाज़िल कर के हक़ साबित करता है।

तो माफ़ कर देता है। (३०) और तुम ज़मीन में (खुदा को) आज्ञा नहीं कर सकते और खुदा के सिवा न तुम्हारा कोई दोस्त है और न मददगार। (३१) और उसी की निशानियों में से समुद्र के जहाज़ हैं (जो) गोया पहाड़ (हैं)। (३२) अगर खुदा चाहे तो हवा को ठहरा दे और जहाज़ उस की सतह पर खड़े रह जाएं। तमाम सन्न और शुक्र करने वालों के लिए इन (बातों) में खुदा की कुदरत के नमूने हैं। (३३) या उस के आमाल की वजह से उन को तबाह कर दे और बहुत-से कुसूर माफ़ कर दे। (३४) और (बदला इस लिए लिया जाए कि) जो लोग हमारी आयतों में झगड़ते हैं वे जानें कि उन के लिए ख़लासी नहीं। (३५) (लोगो!) जो (माल व मताब) तुम को दिया गया है, वह दुनिया की ज़िदगी का (ना-पायदार) फ़ायदा है और जो कुछ खुदा के यहां है, बेहतर और कायम रहने वाला है (यानी) उन लोगों के लिए जो ईमान लाए और अपने परवरदिगार पर भरोसा रखते हैं, (३६) और जो बड़े-बड़े गुनाहों और बे-हयाई के कामों से परहेज़ करते हैं और जब गुस्सा आता है, तो माफ़ कर देते हैं, (३७) और जो अपने परवरदिगार का फ़रमान कुबूल करते हैं और नमाज़ पढ़ते हैं और अपने काम आपस के मशिवरे से करते हैं और जो (माल) हम ने उन को अता फ़रमाया है, उस में से खर्च करते हैं। (३८) और जो ऐसे हैं कि जब उन पर जुल्म हो तो (मुनासिब तरीक़े से) बदला लेते हैं। (३९) और बुराई का बदला तो उसी तरह की बुराई है, मगर जो दर-गुज़र करे और (मामले को) दुरुस्त कर दे तो इस का बदला खुदा के ज़िम्मे है। इस में शक़ नहीं कि वह जुल्म करने वालों को पसन्द नहीं करता। (४०) और जिस पर जुल्म हुआ हो, अगर वह इस के बाद बदला ले, तो ऐसे लोगों पर कुछ इल्ज़ाम नहीं। (४१) इल्ज़ाम तो उन लोगों पर है, जो लोगों पर जुल्म करते हैं और मुल्क में ना-हक़ फ़साद फैलाते हैं यही लोग हैं, जिन को तक्लीफ़ देने वाला अज़ाब होगा। (४२) और जो सन्न करे और कुसूर माफ़ कर दे, तो ये हिम्मत के काम हैं। (४३) *

और जिस शख्स को खुदा गुमराह करे, तो इस के बाद उस का कोई दोस्त नहीं और तुम ज़ालिमों को देखोगे कि जब वे (दोख़ा का) अज़ाब देखेंगे, तो कहेंगे, क्या (दुनिया में) वापस जाने

व तराहुम् युअ-रजून अलैहा साशिअी-न मिनज्जुल्लि यन्जुल्ल-न मिन् तफिन्
 लफिम्पिन् ७ व कालल्लजी - न आमन् इन्नल् - सासिरीनल्लजी-न लसिल्ल
 अन्फुसहुम् व अहलीहिम् यीमल्-क्रियामति ७ अला इन्नज्जालिमी-न फ्री अजाबिम्-
 मुक्कीम (४५) व मा कान लहुम् मिन् औलिया - अ यन्मुल्लनहुम्

मिन् हुनिल्लाहि ७ व मय्युज्ज-लिलिल्लाहु फमा
 लहु मिन् सबील ७ (४६) इस्तजीबू लि-
 रब्बिकुम् मिन् कबिल अय्यअति-य यौमुल्ला
 म-रद्-द लहु मिनिल्लाहि ७ मा लकुम् मिम्-
 मल्जइय्यौमइजिद्-व मा लकुम् मिन् नकीर
 (४७) फ-इन् अक्-रज्जु फमा असल्ला-क

अलैहिम् हकीमन् इन् अलै-क इल्लल्लागुब्
इन्ना इजा अ-जक्-नल्-इन्सान मिन्ना रह्म-
तन् फरिह बिहाड व इन् तुसिब्-हुम् सधिय-
तुम् बिमा कद्-द-मत् ऐदीहिम् फ-इन्नल्-इन्सान
कफर (४८) लिल्लाहि मुल्कुस्-समावाति

वल् अञि ७ यस्लुक् मा यशाउ ७ य-हबु लिमय्यशाउ इनासन्-व य-हबु लिमय्यशाउञ्-
जुकूर ॥ (४६) ओ युज्विजुहुम् जुक-रानव्-व इनासन् ७ व यज्जलु मय्यशाउ अकीमन् ७
इन्नह् अलीमुन् कदीर (५०) व मा का-न लि-व-शरिन् अय्युकल्लिमहुल्लाहु
इल्ला वह्-यन् ओ मिव्वरा-इ हिजाबिन् ओ युसि-ल रसूलन् फयहि-य बिइज्जिही
मा यशाउ ७ इन्नह् अलिम्युन् हकीम (५१) व कजालि-क ओहिना इलै-क रुहम्मिन्
अम्रिना ७ मा कुन्-त तदरी मल्किताबु व लल् ईमानु व लाकिन् ज-अल्लाहु नूरन्
नहदी बिही मन् नशाउ मिन् अबादिना ७ व इन्न-क ल-तहदी इला
सिरातिम् - मुस्तक्रीम ॥ (५२) सिरातिल्लाहिल्लजी लहू मा फिस्समावाति
व मा फिम् अञि ७ अला इलल्लाहि तसीरुल् - उमूर * (५३)

का कोई रास्ता है ? (४४) और तुम उन को देखोगे कि दोजख के सामने लाए जाएंगे, जिल्लत से आजिजी करते हुए, छिपी (और नीची) निगाह से देख रहे होंगे और मोमिन लोग कहेंगे कि घाटा उठाने वाले तो वे हैं, जिन्होंने न कियामत के दिन अपने आप को और अपने घर वालों को घाटे में डाला। देखो कि बे-इसाफ लोग हमेशा के दुख में (पड़े) रहेंगे। (४५) और खुदा के सिवा उनके कोई दोस्त न होंगे कि खुदा के सिवा उन को मदद दे सकें और जिस को खुदा गुमराह करे, उस के लिए (हिदायत का) कोई रास्ता नहीं। (४६) (उन से कह दो कि) इस से पहले कि वह दिन, जो टलेगा नहीं, खुदा की तरफ से आ मौजूद हो, अपने परवरदिगार का हुक्म कुबूल करो। उस दिन तुम्हारे लिए न कोई पनाह लेने की जगह होगी और न तुम से गुनाहों का इन्कार ही बन पड़ेगा। (४७) फिर अगर ये मुंह फेर लें, तो हम ने तुम को उन पर निगहबान बना कर नहीं भेजा, तुम्हारा काम तो सिर्फ (हुक्म का) पहुंचा देना है और जब हम इंसान को अपनी रहमत का मजा चखाते हैं, तो उस से खुश हो जाता है और अगर उन को उन्हीं के आमाँल की वजह से कोई सस्ती पहुंचती है तो (सब एहसानों को भूल जाता है) बेशक इंसान बड़ा ना-शुक्रा है। (४८) (तमाम) बादशाही खुदा ही की है, आसमानों की भी और ज़मीन की भी। वह जो चाहता है, पैदा करता है, जिसे चाहता है, बेटियाँ अता करता है और जिसे चाहता है, बेटे बरक़तता है, (४९) या उन को बेटे और बेटियाँ दोनों को इनायत फ़रमाता है और जिस को चाहता है, बे-औलाद रखता है। वह तो जानने वाला (और) क़ुदरत वाला है। (५०) और किसी आदमी के लिए मुम्किन नहीं कि खुदा उस से बात करे, मगर इल्हाम (के ज़रिए) से या पर्दे के पीछे से या कोई फ़रिश्ता भेज दे, तो वह खुदा के हुक्म से जो खुदा चाहे इल्का करे। बेशक वह बुलंद मर्तबा (और) हिकमत वाला है। (५१) और इसी तरह हम ने अपने हुक्म से तुम्हारी तरफ़ रूहुल क़ुदस के ज़रिए से (कुरआन) भेजा है। तुम न तो किताब को जानते थे और न ईमान को, लेकिन हम ने उस को नूर बनाया है कि इस से हम अपने बन्दों में से, जिस को चाहते हैं, हिदायत करते हैं और बेशक, (ऐ मुहम्मद !) तुम सीधा रास्ता दिखाते हो। (५२) (यानी) खुदा का रास्ता, जो आसमानों और ज़मीन की सब चीज़ों का मालिक है। देखो, सब काम खुदा की तरफ़ रुजूअ होंगे (और वही इन में फ़ैसला करेगा।) (५३) ★

४३ सुरतुगुल्लुफि ६३

(मक्की) इस सूरः में अरबी के ३६५६ अक्षर, ८४८ शब्द, ८६ आयतों और ७ रुकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिररहमानिरहीम •

हामीम् ८ (१) वल्किताबिलमुबीन ॥ (२) इन्ना ज-अल्नाहु
कुरआनन् अ-रबिय्यल् - ल-अल्लकुम् तअ-किलून ८ (३) व इन्नहू फी
उम्मिलकिताबि लदेना ल - अलिय्युन् हकीम ८ (४) अ - फ नज़िरबु
अन्कुमुज्जिक-र सफ-हन् अन् कुन्तुम् कौमम्-मुस्तिफीन (५) व कम् असल्-ना

मिन् नबिय्यिन् फिलअव्वलीन (६) व मा
यत्तीहिम् मिन् नबिय्यिन् इल्ला कानू बिही

यस्तहिजऊन (७) फ-अह-लवना अशद्-द

मिन्हुम् बत-शव-व मज़ा म-स-लुल्-अव्वलीन

(८) व ल-इन् स-अल्लहुम् मन् ख-ल-कस्समा-

वाति वल्अर्-ज़ ल-यकूलुन् ख-ल-कहन्नल्-

अज़ीजुल्-अलीम ॥ (९) अल्लजी ज-अ-ल

लकुमुल्अर्-ज़ महदव-व ज-अ-ल लकुम् फीहा

सुबुलल्-ल-अल्लकुम् तह-तदुन् ८ (१०) वल्लजी

नखल्-ल मिनस्समाइ मा-अम्-बि-क-दरिन् ८ फ-

अन्शर्ना बिही बल्द-तम्-मैतन् कज़ालि-क तुख-रजू-

न् (११) वल्लजी ख-ल-कल्-अजवा-ज कुल्लहा

व ज-अ-ल लकुम् मिनल्-फुल्कि वल्-अन्आमि मा तर्कबून् ॥ (१२) लितस्तव् अला

जुहुरिही सुम्-म तज्जुरु निअ-म-त रबिबकुम् इजस्तवैतुम् अलैहि व तकूलु सुब्हा-

नल्लजी सरख-र लना हाज़ा व माकुन्ना लहू मुक़रिनीन् ॥ (१३) व इन्ना इला

रबिबना लमुत्कलिबून् (१४) व ज-अल् लहू मिन् अिबादिही जुज-

अन् ८ इन्नल् - इन्सान ल-कफ़रम् - मुबीन ८ ★ (१५) अमित्त-ख-ज मिम्मा

यख-लुकु बनातिव-व अस्फ़ाकुम् बिल्बनी-न (१६) व इजा बुशिश-र अ-हदुहुम् बिमा

ज़-र-ब लिर्रहमानि म-स-लन् जल्-ल वज-हुह मुस्-वद्दव-व हु-व कज़ीम (१७)

अ-व मंथुनश्शउ फ़िल्-हिल्यति व हु-व फ़िल्खिसामि गैर मुबीन (१८)



४३ सूर: जुबूरुफ ६३

सूर: जुबूरुफ मक्की है और इस में नवासी आयतें और सात स्कूअ हैं।

शुरू खुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

हासीम, (१)-रोशन किताब की क्रमसः, (२) कि हम ने इस को अरबी कुरआन बनाया है, ताकि तुम समझो। (३) और यह बड़ी किताब (यानी लोहे महफूज) में हमारे पास (लिखी हुई और) बड़ी फज्जीलत और हक्मत वाली है। (४) भला इस लिए कि तुम हृद से निकले हुए लोग हो, हम तुम को नसीहत करने से बाज रहेंगे। (५) और हम ने पहले लोगों में भी बहुत से पैगम्बर भेजे थे, (६) और कोई पैगम्बर उन के पास नहीं आता था, मगर वे उस का मजाक उड़ाते थे। (७) तो जो उन में सस्त जोर वाले थे, उन को हम ने हलाक कर दिया और अगले लोगों की हानत गुजर गयी। (८) और अगर तुम उन से पूछो कि आसमानों और ज़मीन को किस ने पैदा किया है, तो कह देंगे कि उन को ग़ालिब (और) इल्म वाले (खुदा) ने पैदा किया है, (९) जिस ने तुम्हारे लिए ज़मीन को बिछौना बनाया और उस में तुम्हारे लिए रास्ते बनाए ताकि तुम राह मालूम करो। (१०) और जिस ने एक अन्दाजे के साथ आसमान से पानी उतारा, फिर हम ने उस से मुर्दा शहर को ज़िंदा किया, इसी तरह तुम (ज़मीन से) निकाले जाओगे। (११) और जिस ने तमाम किस्म के जानवर पैदा किए और तुम्हारे लिए कशियां और चारपाए बनाए, जिन पर तुम सवार होते हो, (१२) ताकि तुम उन की पीठ पर चढ़ बैठो और जब उस पर बैठ जाओ, फिर अपने परवरदिगार के एहसान को याद करो और कहो कि वह (ज़ात) पाक है, जिस ने उस को हमारे फरमान के मातहत कर दिया और हम में ताकत न थी कि उस को बस में कर लेते। (१३) और हम अपने परवरदिगार की तरफ लौट कर जाने वाले हैं। (१४) और उन्होंने ने उस के बन्दों में से उस के लिए औलाद मुकर्रर की। बेशक इंसान खुला ना-शुक्रा है। (१५)★

क्या उस ने अपनी मरलूक में से खुद तो बेटियां लीं और तुम को चुन कर बेटे दिए? (१६) हालांकि जब उन में से किसी को उस की चीज की खुशखबरी दी जाती है, जो उन्होंने ने खुदा के लिए बयान की है, तो उस का मुंह काला हो जाता और वह गम से भर जाता है। (१७) क्या वह जो जेवर में परवरिष पाए और सगड़े के वक्त बात न कर सके, (खुदा की बेटि हो सकती है?) (१८)

१. रोशन का मतलब है साफ़ और खुले मतलब का, जिस में खुदा के हुक्म साफ़-साफ़ बग़ैर किसी पेचीदगी के लिखे हुए हैं।

व ज-अलुल् - मलाइ-क-तल्लजी-न हुम् अबादुरह्मानि इनासत् ७ अ - शहिदु
खल्कहुम् ७ स-नुक्तबु शहादतुहुम् व युस्-अलून (१६) व कालू लौ शा-अरह्मानु
मा अ-बदनाहुम् ७ मा लहुम् बिजालि-क मिन् अलिम्नु ७ इन् हुम् इल्ला
यखरुसून् ७ (२०) अम् आतैनाहुम् किताबम्-मिन् कबिलही फहुम् बिही मुस्तस्मिकून

(२१) बल् कालू इन्ना व-जदना आबा-अना

अला उम्मतिव-व इन्ना अला आसारिहिम्

मुह-तदून (२२) व कजालि-क मा असल्ला

मिन् कबिल-क फी कयंतिम्-मिन् नजोरिन्

इल्ला का-ल मुत्-रफूहा ७ इन्ना व-जदना आबा-

अना अला उम्मतिव-व इन्ना अला आसारिहिम्

मुक्तदून (२३) का-ल अ-वलो जिअतुकुम्

बि-अह-दा मिम्मा व-जतुम् अलेहि आबा-अकुम्

कालू इन्ना बिमा उसिल्तुम् बिही काफिरून

(२४) फन्त-कम्ना मिन्दुम् फज्जुर कै-फ

कान अकिबतुल्-मुकज्जिबीन (२५) व

इज् का-ल इन्नाहीमु लिअबीहि व कोमिही

इन्ननी बराउम् मिम्मा तअ-बुदून ७ (२६) इल्लल्लजी फ-त-रनी फ-इन्नह स-यहदीन

(२७) व ज-अ-लहा कलि-म-तम्-बाकि-य-तन् फी अकिबिही ल-अल्लहुम् यजिअन

(२८) बल् मत्तअ-नु हाउला-इ व आबा-अ-हुम् हत्ता जा-अ-हुमुल्-हक्कु

व रसूलुम्-मुबीन (२९) व लम्मा जा-अ-हुमुल्-हक्कु कालू हाजा सिहरव-व इन्ना

बिही काफिरून (३०) व कालू लौला नुज्जि-ल हाजल्कुरआनु अला

रजुलिम्-मिनल्-कयंतिनि अजीम (३१) अहुम् यक्सिमुन् रह-म-त रब्बि-क नहनु

क-सम्मा बेनहुम् मजी-श - तहुम् फिल - ह्यातिदुन्या वरफअना बअ - जहुम्

फी-क बअ - जिन् द-र-जातिल् - लि-यत्तलि - ज बअ - जुहुम् बअ - जन्

सुखरियन् ७ व रहमतु रब्बि-क खैरम् - मिम् - मा यजमअन (३२)



और उन्होंने ने फ़रिश्तों को, कि वे भी खुदा के बंदे हैं, (खुदा की) बेटियां मुकरंर किया। क्या ये उन की पैदाइश के वक्त हाज़िर थे, बहुत जल्द उन की गवाही लिख ली जाएगी और उन से पूछागछ की जाएगी। (१९) और कहते हैं, अगर खुदा चाहता, तो हम उन को न पूजते। उन को इस का कुछ इल्म नहीं। वह तो सिर्फ़ अटकलें दौड़ा रहे हैं। (२०) या हम ने उन को इस से पहले कोई किताब दी थी, तो ये उस से सनद पकड़ते हैं। (२१) बल्कि कहने लगे कि हम ने अपने बाप-दादा को एक रास्ते पर पाया है और हम उन ही के क़दम-ब-क़दम चल रहे हैं। (२२) और इसी तरह हम ने तुम से पहले किसी बस्ती में कोई हिदायत करने वाला नहीं भेजा, मगर वहां के खुशहाल लोगों ने कहा कि हम ने अपने बाप-दादा को एक राह पर पाया है और हम क़दम-ब-क़दम उन ही के पीछे चलते हैं। (२३) पैग़म्बर ने कहा, अगरचे मैं तुम्हारे पास ऐसा (दीन) लाऊं कि जिस (रास्ते) पर तुम ने अपने बाप-दादा को पाया, वह उस से कहीं सीधा रास्ता दिखाता हो, कहने लगे कि जो (दीन) तुम दे कर भेजे गये हो, हम उस को नहीं मानते। (२४) तो हम ने उन से बदला लिया, सो देख लो कि झठलाने वालों का अंजाम कैसा हुआ। (२५)★●

और जब इब्राहीम ने अपने बाप और अपनी क्रौम के लोगों से कहा कि जिन चीज़ों को तुम पूजते हो, मैं उन से बेज़ार हूं। (२६) हां, जिस ने मुझ को पैदा किया, वही मुझे सीधा रास्ता दिखाएगा। (२७) और यही बात अपनी औलाद में पीछे छोड़ गये, ताकि वे (खुदा की तरफ़ रूजू) रहें। (२८) बात यह है कि मैं इन कुफ़ार को और उन के बाप-दादा को नवाज़ता रहा, यहां तक कि उन के पास हक़ और साफ़-साफ़ बयान करने वाला पैग़म्बर आ पहुंचा। (२९) और जब उन के पास हक़ (यानी क़ुरआन) आया तो कहने लगे कि यह तो जादू है और हम इस को नहीं मानते। (३०) और (यह भी) कहने लगे कि यह क़ुरआन इन दोनों बस्तियों (यानी मक्के और ताइफ़) में से किसी बड़े आदमी पर क्यों नाज़िल न किया गया? (३१) क्या ये लोग तुम्हारे परवरदिगार की रहमत को बांटते हैं? हम ने उन में उन की मईशत (रोज़ी) को दुनिया की ज़िंदगी में तक्सीम कर दिया और एक दूसरे पर दर्ज बुलंद किए, ताकि एक दूसरे से खिदमत ले और जो कुछ ये जमा करते हैं, तुम्हारे परवरदिगार की रहमत उस से कहीं बेहतर है। (३२) और अगर यह

(ह्यास) न होता कि सब लोग एक ही जमाअत हो जाएंगे, तो जो लोग खुदा से इंकार करते हैं, हम उन के घरों को छतें चांदी की बना देते और सीढ़ियां (भी,) जिन पर वे चढ़ते । (३३) और उनके घरों के दरवाजे भी और तल्ल भी, जिन पर तकिया लगाते हैं । (३४) और (खूब) तजम्मूल (सजावट व आराइश कर देते) और यह सब दुनिया की ज़िंदगी का थोड़ा-सा सामान है और आखिरत तुम्हारे परवरदिगार के यहां परहेजगारों के लिए है । (३५)★

और जो कोई खुदा की याद से आंखें बन्द कर ले, (यानी जानी-बूझी शफ़लत से) हम उस पर एक ज़तान मुकरर कर देते हैं, तो वह उस का साथी हो जाता है । (३६) और ये (ज़तान) उन को रास्ते से रोकते रहते हैं और वे समझते हैं कि सीधे रास्ते पर हैं, (३७) यहां तक कि जब हमारे पास आया तो कहेगा कि ऐ काश ! मुझ में और तुझ में पूरब और पच्छिम का फ़ासला होता, तू बुरा साथी है । (३८) और जब तुम ज़ुलम करते रहे, तो आज तुम्हें यह बात फ़ायदा नहीं दे सकती कि तुम (सब) अज़ाब में शरीक हो । (३९) क्या तुम बहरे को सुना सकते हो या अंधे को रास्ता दिखा सकते हो और जो खुली गुमराही में हो, उसे (राह पर ला सकते हो) ? (४०) अगर हम तुम को (वफ़ात देकर) उठा लें तो उन लोगों से हम बदला ले कर रहेंगे, (४१) या (तुम्हारी ज़िंदगी ही में) तुम्हें वह (अज़ाब) दिखाएं, जिन का हम ने उन से वायदा किया है, हम उन पर क़ाबू रखते हैं । (४२) पस तुम्हारी तरफ़ जो वह्य की गयी है, उस को मज़बूत पकड़े रहो, बेशक तुम सीधे रास्ते पर हो । (४३) और यह (क़ुरआन) तुम्हारे लिए और तुम्हारी क़ौम के लिए नसीहत है और (लोगो !) तुम से बहुत जल्द पूछ-ताछ होगी । (४४) और (ऐ मुहम्मद !) जो अपने पंगम्बर हम ने तुम से पहले भेजे हैं, उन के हाल मालूम कर लो । क्या हम ने (खुदा-ए-) रहमान के सिवा और माबूद बनाए थे कि उन की इबादत की जाए ? (४५)★

और हम ने मूसा को अपनी निशानियां दे कर फ़िअौन और उस के दरबारियों की तरफ़ भेजा, तो उन्होंने ने कहा कि मैं अपने परवरदिगारे आलम का भेजा हुआ हूं । (४६) जब वे उन के पास हमारी निशानियां ले कर आए तो वे निशानियों से हंसी करने लगे । (४७) और जो निशानी हम उन को दिखाते हैं, वह दूसरों से बड़ी होती थी और हम ने उन को अज़ाब में पकड़ लिया, ताकि बाब आ जाए । (४८) और कहने लगे कि ऐ जादूगर ! उस अह्द के मुताबिक़, जो तेरे परवर-दिगार ने तुझ से कर रखा है, उस से दुआ कर, बेशक हम हिदायत पाए हुए होंगे । (४९) सो जब हम ने उन से अज़ाब को दूर कर दिया, तो वह अह्द को तोड़ने लगा । (५०) फ़िअौन ने अपनी

व नादा फिर्ओनु फ्री कीमिही का-ल याक्रीमि अलै-स ली मुल्कु मिस्र-र व हाजि-
हिल्-अन्हार तजरी मिन् तह्तीअ-फला तुम्सिरुन (५१) अम् अन खैरुमिन्
हाजल्लजी हु-व महीनु व-व ला यकादु युबीन (५२) फ-लीला उल्कि-य अलैहि
अस-बि-रतुम्-मिन् ज-ह-बिन् औ जाअ म-अहुल्-मला-इकतु मुक्तरिनीन (५३)

फस्तखफ-फ कोमहू फ-अताऊहु इन्नहुम् कानू
कोमन् फासिकी-न (५४) फ-लम्मा आसफू-
नन्-त-कम्ना मिन्हुम् फ-अरक्ना-हुम् अज्मयीन
(५५) फ-ज-अल्लाहुम् स-ल-फ-व म-स-ल-ल्-
लिन्आखिरीन (५६) व लम्मा जुर्बन्नु
मर्य-म म-स-लन् इजा कोमु-क मिन्हु यसिद्दून
(५७) व कालू-अ आलिहतुना खैरुन् अम्
हु-व मा ज-रबूहु ल-क इल्ला ज-द-लन् बल्
हुम् कोमुन् खसिमुन् (५८) इन् हु-व इल्ला
अन्दुन् अन-अम्ना अलैहि व ज-अल्लाहु म-स-
ल-ल्-लि-बनी इस्राई-ल (५९) व ली नशाउ
ल-ज-अल्ला मिन्कुम् मलाइ-क-तन् फिलअज्रि
यख-लुफून् (६०) व इन्नहू ल-अल्मुल्-

وَنُفَعْنَ فِي قَوْمِهِ قَالَ يُفَعِّرُونَ كَيْسَ لِي طَائِفٌ مِّنْهُمْ وَهُذِهِ الْأَنْفُسُ
تَجْرِي مِنْ تَحْتِي أَفَلَا تُحْشَرُونَ ۝ أَمْ أَنَا خَيْرٌ مِّنْ هَٰذَا الْبَشَرِ قُلْ
مَنْ يَمْلِكُ شَيْئًا وَلَا يُضِلُّهُمْ ۝ فَلَوْلَا أَنِّي عَلَيْهِمْ نُصْرَةٌ مِّنْ رَبِّي لَكُنَ
مَعَهُ الْمَلَكُ مَغْفِرِينَ ۝ فَاسْتَفْتَى قَوْمَهُ وَآلَهُمْ وَهُمْ كَانُوا
قَوْمًا يَفْقَهُونَ ۝ فَلَمَّا اسْتَفْتَا الْقَوْمَ وَمِنْهُمْ فَاغْرَقْنَاهُمْ وَجَعَلْنَا
مَقَلَّتَهُمْ حَلَاوَةً مَّثَلًا لِلْآخِرِينَ ۝ وَلَمَّا طَرَبَ ابْنُ رَيْمٍ مَّثَلًا إِذَا
قَوْمُهُ يَمْنَةً يَصِيدُونَ ۝ وَلَوْلَا إِذْ يَبْتَغِيهِمْ أَهْلُهَا نُصْرَةٌ مِّنْ رَبِّي لَكُنَ
أَجَلًا لِّأَهْلِ قَوْمِهِمْ خَصِمِينَ ۝ إِنَّ هَٰؤُلَاءِ عِبَادُ اللَّهِ عَلَيْهِمْ جَعَلْنَا
مَثَلًا لِّمَنْ يَرْجُوا ۝ وَلَمَّا كُنَا جَعَلْنَا مَثَلًا لِّكُلِّ طَائِفَةٍ مِّنَ الْإِنسِ
يَعْلَمُونَ ۝ إِنَّهُ لَعَلَّكَ لَمَّا كُنَّا نَقُصُّكَ يُعَارِ الْيَوْمَ مَثَلًا لِّمَنْ
يُتَذَكَّرُ ۝ وَلَا يَصْنَعُ اللَّهُ الْغِيظَ إِنَّهُ لَكَرِيمٌ عَذِيمٌ ۝ وَلَمَّا
جَاءَ عِيسَى ابْنُ الْيَسَّى قَالَتْ فَذَلِكُنَّ الَّذِينَ كَانُوا يَكْفُرُونَ لَكُمْ فِيهِمْ
أَلْوَىٰ تَخْفَلُونَ فِيهِ ۝ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا ۝ إِنَّ اللَّهَ هُوَ رَبُّكُمْ وَرَبُّكُمْ
فَاعْبُدُوهُ ۝ هَٰذَا صِرَاطٌ مُسْتَقِيمٌ ۝ فَاسْتَغْفِرُ الْغُفْلَةَ مِّنْ رَبِّهِمْ قُلْ
لِّأَيِّ دِينٍ تَسْلُكُونَ ۝ عَذَابُ اللَّهِ هُوَ أَلَمٌ لِّمَنْ يَلْمِزُكَ أَتَى الْإِنسَانَ أَن
تَأْتِيَهُمْ بَغْتَةً وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ۝ الْأَعْيَادُ يَوْمَئِذٍ بِعَدَمٍ لِّبَعْضٍ
عَذَابُ الْغَافِلِينَ ۝ يُبَايِعُونَكَ عَلَيْهِمْ يُومِرُونَ لَمْ يَأْمُرْهُمْ

लिस्साअति फ-ला तम्तरुन-न बिहा वतबिअुनि हाजा सिरातुम्-मुस्तकीम (६१) व
ला यसुद्दन्नकुमुश-शैतानु इन्नहू लकुम् अदुबुम्-मुबीन (६२) व लम्मा जाअ
औसा बिल्बय्यिनाति का-ल कद् जिअतुकुम् बिल्हिकमति व लिउबय्यि-न लकुम्
बअ-जल्लजी तख-तलिफू-न फ्रीहि फक्तकुल्ला-ह व अतीअून (६३) इन्नल्ला-ह हु-व
रब्बी व रब्बुकुम् फअ-बुद्दुहू हाजा सिरातुम्-मुस्तकीम (६४) फस्त-ल-फल्-अहजाबु
मिम्-बैनिहिम् फक्वैलुल्-लिल्लजी-न अ-लमू मिन् अजाबि यौमिन् अलीम (६५) हल्
यन्जुरू-न इल्लस्सा-अ-तन् अन् तअति-य-हुम् बग-त-त-व हुम् ला यशरुन (६६) अल्-
अखिल्लाउ योमइजिम्-बअ-जुहुम् लिबअ-जिन् अदुबुन् इल्लल्-मुत्तकीन (६७) या-
अिबादि ला खीफून् अलैकुमुल्-यो-म व ला अन्तुम् तह-जून (६८)

क्रौम से पुकार कर कहा कि ऐ क्रौम ! क्या मिल की हुकूमत मेरे हाथ में नहीं है और ये नहरें जो मेरे (महलों के) नीचे बह रही हैं (मेरी नहीं हैं), क्या तुम देखते नहीं। (५१) बेशक मैं उस शस्त्र से, जो कुछ इज्जत नहीं रखता और साफ़ बात-चीत भी नहीं कर सकता, कहीं बेहतर हूँ। (५२) तो उस पर सोने के कंगन क्यों न उतारे गये या (यह होता कि) फ़रिश्ते जमा हो कर उस के साथ आते ? (५३) गरज उस ने अपनी क्रौम की अकूल मार दी और उन्होंने उस की मान ली, बेशक वे ना-फ़रमान लोग थे। (५४) जब उन्होंने ने हम को खफ़ा किया, तो हम ने उन से बदला ले कर और उन सब को डुबो कर छोड़ा। (५५) और उन को गये-गुजरे कर दिया और पिछलों के लिए इब्रत (सबक) बना दिया। (५६) ★

और जब मरयम के बेटे (ईसा) का हाल बयान किया गया, तो तुम्हारी क्रौम के लोग उस से चिल्ला उठे। (५७) और कहने लगे कि भला हमारे माबूद अच्छ है या वह (ईसा) ? उन्होंने ने जो इस (ईसा) की मिसाल तुम से बयान की है, तो सिर्फ़ झगड़े को। सच तो यह है कि ये लोग हैं ही झगड़ालू। (५८) वह तो हमारे ऐसे बन्दे थे, जिन पर हम ने फ़जल किया और बनी इस्राईल के लिए उन को (अपनी कुदरत का) नमूना बना दिया। (५९) और अगर हम चाहते तो तुम में से फ़रिश्ते बना देते, जो तुम्हारी जगह ज़मीन में रहते। (६०) और वह (ईसा) क़ियामत की निशानी हैं। तो (कह दो कि लोगो !) इस में शक न करो और मेरे पीछे चलो। यही सीधा रास्ता है। (६१) और (कहीं) शैतान तुम को (इससे) रोक न दे। वह तो तुम्हारा ख़ुला दुश्मन है। (६२) और जब ईसा निशानियां ले कर आए, तो कहने लगे कि मैं तुम्हारे पास दानाई (की किताब) ले कर आया हूँ। इस लिए कि कुछ बातें, जिन में तुम इस्तिलाफ़ करते हो, तुम को समझा दूँ, तो खुदा से डरो और मेरा कहा मानो। (६३) कुछ शक नहीं कि खुदा ही मेरा और तुम्हारा परवरदिगार है, पस उसी की इबादत करो, यही सीधा रास्ता है। (६४) फिर कितने फ़िर्कें उन में से फट गये, सो जो लोग ज़ालिम हैं, उन की, दर्द देने वाले दिन के अज़ाब से ख़राबी है। (६५) ये सिर्फ़ इस बात के इन्तिज़ार में हैं कि क़ियामत उन पर यकायक आ मौजूद हो और उन को ख़बर तक न हो। (६६) जो आपस में दोस्त (हैं) उस दिन एक दूसरे के दुश्मन होंगे, मगर परहेज़गार (कि) क़ियामत में दोस्त ही रहेंगे। (६७) ★

मेरे बन्दो ! आज तुम्हें न कुछ ख़ौफ़ है और न तुम शमनाक होंगे, (६८) जो लोग हमारी

१. उस दिन दोस्त से दोस्त भागेगा कि इस की बजह से मैं पकड़ा न जाऊँ।

आयतों पर ईमान लाए और फ़रमांबरदार हो गये, (६९) (उन से कहा जाएगा) कि तुम और तुम्हारी बीवियां इस्लाम (व अहतराम) के साथ बहिश्त में दाखिल हो जाओ। (७०) उन पर सोने की पिरबों और प्यालों का दौर चलेगा और वहां जो जी चाहे और जो आंखों को अच्छा लगे (मोजूद होगा) और (ऐ जन्नत वालो!) तुम इसमें हमेशा रहोगे। (७१) और यह जन्नत जिसके तुम मालिक कर दिए गये हो, तुम्हारे आमाल का बदला है। (७२) वहां तुम्हारे लिए बहुत-से मेवे हैं, जिन को तुम खाओगे, (७३) (और कुफ़ार) गुनाहगार हमेशा दोख़ख के अज़ाब में रहेंगे, (७४) जो उन से हल्का न किया जाएगा और वे इस में ना-उम्मीद हो कर पड़े रहेंगे। (७५) और हम ने उन पर जुल्म नहीं किया, बल्कि वही (अपने आप पर) जुल्म करते थे। (७६) और पुकारेंगे कि ऐ मालिक! तुम्हारा परवरदिगार हमें मौत दे दे। वह कहेगा कि तुम हमेशा (इसी हालत में) रहोगे। (७७) हम तुम्हारे पास हज़क ले कर पहुंचे, लेकिन तुम में अक्सर हज़क से ना-ख़ुश होते रहे। (७८) क्या उन्होंने कोई बात ठहरा रखी है, तो हम भी कुछ ठहराने वाले हैं। (७९) क्या ये लोग यह स्याल करते हैं कि हम उन की छिपी बातों और सरगोशियों को सुनते नहीं? हां, हां, (सब सुनते हैं) और हमारे फ़रिश्ते उन के पास (उन की) सब बातें लिख लेते हैं। (८०) कह दो कि अगर खुदा के ओलाद हो, तो मैं (सब से) पहले (उस की) इबादत करने वाला हूं। (८१) ये जो कुछ बयान करते हैं, आसमानों और ज़मीन का मालिक (और) अर्श का मालिक उस से पाक है, (८२) तो उन को बक-बक करने और खेलने दो, यहां तक कि जिस दिन का उन से वायदा किया जाता है, उस को देख लें। (८३) और वही (एक) आसमानों में माबूद है और (वही) ज़मीन में माबूद है और वह हिकमत वाला (और) इल्म वाला है। (८४) और वह बहुत बरकत वाला है, जिस के लिए आसमानों और ज़मीन और जो कुछ उन दोनों में है, सब की बादशाही है और उसी को क्रियामत का इल्म है और उसी की तरफ़ तुम लौट कर जाओगे। (८५) और जिन को ये लोग खुदा के सिवा पुकारते हैं, वे सिफ़ारिश का कुछ अस्तियार नहीं रखते, हां, जो इल्म व यक़ीन के साथ हज़क की गवाही दें, (वे सिफ़ारिश कर सकते हैं।) (८६) और अगर तुम उन से पूछो कि उन को किस ने पैदा किया है, तो कह देंगे कि खुदा ने, तो फिर ये कहां बहके फिरते हैं? (८७) और (कभी-कभी) पैग़म्बर कहा करते हैं कि ऐ परवरदिगार! ये ऐसे लोग हैं कि ईमान नहीं लाते (८८) तो उन से मुंह फेर लो और सलाम कह दो, उन को बहुत जल्द (अंजाम) मालूम हो जाएगा। (८९) ★

१. काफ़िरों ने तो आंहुजरत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के क़त्ल और मक्का से उन के निकाले जाने की स्कीम सोंची थी और खुदा तोयह इरादा फ़रमाया था कि वह आप को कुफ़ार पर ग़ालिब करेगा। चुनांचे आप मक्के से हिज़रत कर के मदीना तशरीफ़ ले गये, तो अल्लाह तआला ने आप की मदद फ़रमायी और आप ने मक्का फ़तह कर लिया और काफ़िर मख़्लूब हो कर रह गये।

२. यानी बुत, जिन की वे कुफ़ार पूजा करते थे, उन की सिफ़ारिश नहीं कर सकेंगे। सिफ़ारिश करने का हज़क तो खुदा के उन नेक बंदों को होगा, जिन को खुदा के एक होने का यक़ीन है और वह उन के एक होने और अकेला माबूद होने की गवाही देते हैं और वही सिफ़ारिश कर सकते हैं।

४४ सुरतुदुखानि ६४

(मक्की) इस सूर: में अरबी के १४६५ अक्षर, ३४६ शब्द, ५६ आयतें और ३ रकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

हामीम् ८ (१) वल्किताबिल्मुवीन १ (२) इन्ना अन्जल्लाहु फी लैलतिम्-
मुबार-कतिन् इन्ना कुन्ना मुन्जिरीन (३) फीहा युपरकु कुल्लु अमिरन् हकीम॥
(४) अम्-रम्-मिन् अिन्दिना ॥ इन्ना कुन्ना मुसिलीन ८ (५) रह-म-तुम्-मिर्रब्बि-क॥
इन्नुह हुवस्समीअुल्-अलीम॥ (६) रब्बिस्समावाति वल्अजि व मा बेंतहुमा ॥ इन्

कुन्तुम् मूकिनीन (७) ला इला-ह इल्ला हु-व
युह्यी व युमीतु ॥ रब्बुकुम् व रब्बु आबाइकुमुल्-
अव्वली-न (८) बल् हुम् फी शक्किव्यल्-
अबून (९) फरतकिव यो-म तअत्तिस्समाउ
बि दुखानिम्-मुबीनिय-॥ (१०) यग्-शन्ना-स॥

हाज्जा अजाबुन् अलीम (११) रब्ब-नकिशफ
अन्नल्-अजा-ब इन्ना मुअ्मिनून (१२) अन्ना
लहुमुज्जिक-रा व कद् जा-अहुम् रसूलुम्-मुबीन॥

(१३) सुम्-म त-वल्ली अन्हु व कालू

मु-अल्लमुम्-मज्जून ॥ (१४) इन्ना काशिफुल्-

अजाबि कलीलन् इन्नकुम् आ-इहून ॥ (१५)

यो-म नन्तिशुल् - बत्-श-तल् - कुवरा ८ इन्ना

मुत्तकिमून (१६) व ल-कद् फ-तन्ना कब्-लहुम् कौ-म फिर्ओ-न व जा-अहुम्

रसूलुन् करीम॥ (१७) अन् अद्हु इलय-य अिबादल्लाति ॥ इन्नी लकुम् रसूलुन्

अमीनु-व-॥ (१८) - व अल्ला तअ-लू अलल्लाहि ॥ इन्नी आतीकुम् बिमुल्तानिम्-मुबीन ८

(१९) व इन्नी उज्जु बिरब्बी व रब्बिकुम् अन् तरजुमून ॥ (२०) व इल्लम्

तुअ्मिन् ली फअ-तजिलून (२१) फ-दआ रब्बह अन-न हाउला-इ कौमुम्-मुजिरमून

● (२२) फ-अस्ति बिअिबादी लैलन् इन्नकुम् मुत्त - बअून ॥ (२३)

वत-रकिल्-बह-र रह-वन् ॥ इन्नुहम् जुन्दुम्-मुग-रकून (२४) कम् त-रक मिन् जन्ना-

तिव-व अयूनिव-॥ (२५) व जुह्रिव-व मकामिन् करीमिव-॥ (२६)



४४ सूर: दुखान ६४

सूर: दुखान मक्की है, इस में ५६ आयतें और तीन रुकूअ हैं।

शुरू खुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

हामीम, (१) 'इस रोशन किताब की क्रसम !' (२) कि हम ने उस को मुबारक रात में नाजिल फरमाया, हम तो रास्ता दिखाने वाले हैं, (३) उसी रात में तमाम हिक्मत के काम फ़ैसले किए जाते हैं, (४) (यानी) हमारे यहां से हुक्म हो कर, बेशक हम ही (पैगम्बर को) भेजते हैं। (५) (यह) तुम्हारे परवरदिगार की रहमत है। वह तो सुनने वाला, जानने वाला है। (६) आसमानों और जमीन और जो कुछ इन दोनों में है, सब का मालिक बशर्ते कि तुम लोग यकीन करने वाले हो। (७) उस के सिवा कोई माबूद नहीं, (वही) जिलाता है और (वही) मारता है, (वही) तुम्हारा और तुम्हारे पहले बाप-दादा का परवरदिगार है। (८) लेकिन ये लोग शक में खेल रहे हैं। (९) तो उस दिन का इन्तिज़ार करो कि आसमान से साफ़ धुआँ निकलेगा, (१०) जो लोगों पर छा जाएगा। यह दर्द देने वाला अज़ाब है। (११) ऐ परवरदिगार ! हम से इस अज़ाब को दूर कर, हम ईमान लाते हैं। (१२) (उस वक्त) उन को नसीहत कहां मुफ़्रीद होगी, जबकि उन के पास पैगम्बर आ चुके, जो खोल-खोल कर बयान कर देते थे। (१३) फिर उन्होंने उन से मुंह फेर लिया और कहने लगे, (यह तो) पढ़ाया हुआ (और) दीवाना है ॥ (१४) हम तो थोड़े दिनों अज़ाब टाल देते हैं, (मगर) तुम फिर कुफ़्र करने लगते हो ॥ (१५) जिस दिन हम बड़ी सख्त पकड़ पकड़ेंगे, तो बेशक बदला ले कर छोड़ेंगे। (१६) और उन से पहले हम ने फ़िऔन की क्रौम की आजमाइश की और उन के पास एक बुलंद मर्तबा पैगम्बर आए, (१७) (जिन्होंने) यह (कहा) कि खुदा के बन्दों (यानी बनी इस्राईल) को मेरे हवाले कर दो, मैं तुम्हारा अमानतदार पैगम्बर हूँ, (१८) और खुदा के सामने सर-कशी न करो, मैं तुम्हारे पास खुली दलील ले कर आया हूँ। (१९) और इस (बात) से कि तुम मुझे पत्थर मार-मार कर हलाक कर दो, अपने और तुम्हारे परवरदिगार की पनाह मांगता हूँ। (२०) और अगर मुझ पर ईमान नहीं लाते, तो मुझ से अलग हो जाओ। (२१) तब (मूसा ने) अपने परवरदिगार से दुआ की कि ये ना-फ़रमान लोग हैं। (२२) (खुदा ने फ़रमाया कि) मेरे बन्दों को रातों-रात ले कर चले जाओ और (फ़िऔनी) ज़रूर तुम्हारा पीछा करेंगे, (२३) और दरिया से (कि) सूखा (हो रहा होगा) पार हो जाओ। (तुम्हारे बाद) उन का तमाम लश्कर डुबो दिया जाएगा। (२४) वे लोग बहुत-से बाग़ और चश्मे छोड़ गये, (२५) और खेतियां और नफ़ीस मकान, (२६) और

व नभ-मतिन् कानू फोहा फाकिहीन॥ (२७) कजालि-क^व व ओरस्-नाहा क्रोमन्
आखरीन (२८) फ मा ब-कत् अलेहिमुस्समाउ वल्अरज़ु व मा कानू मुन्जरीन

★ (२६) व ल-कद् नज्जैना बनी इस्राईल मिनल्-अजाबिल्-मुहीन ॥ (३०) मिन्
फिर्ओन ॥ इन्हू का-न आलियम्-मिनल्-मुस्तिफ़ीन (३१) व ल-कदिस्तर्-नाहुम्

अला अल्मिन् अ-लल्-आलमीन् ८ (३२) व
आतंताहम मिनल्आयाति मा फीहि बलाउम-

मुबीन (३३) इन्-न हाउला-इ ल-यकूलून॥

आराम की बीजों, जिन में ऐसा किया करते थे, (२७) इसी तरह हुआ और हम ने दूसरे लोगों को उन का मालिक बना दिया। (२८) फिर उन पर न तो आसमान और जमीन को रोना आया और न उन को मोहलत ही दी गयी। (२९)★

और हम ने बनी इस्राईल को ज़िल्लत के अज़ाब से निजात दी। (३०) (यानी) क्रिअोन से, बेशक वह सर-कश (और) हृद से निकला हुआ था। (३१) और हम ने बनी इस्राईल को दुनिया वालों से समझ-बूझ कर चुना था। (३२) और उन को ऐसी निशानियां दी थीं, जिन में खुली आजमाइश थी। (३३) ये लोग यह कहते हैं, (३४) कि हमें सिर्फ पहली बार (यानी एक बार) मरना है और (फिर) उठना नहीं, (३५) पस अगर तुम सच्चे हो, तो हमारे बाप-दादा को (खिदा कर) लाओ। (३६) भला ये अच्छे हैं या तुम्बअ की क्रौम !' और वे लोग जो तुम से पहले हो चुके हैं, हम ने उन (सब) को हलाक कर दिया। बेशक वे गुनाहगार थे। (३७) और हम ने आसमानों और जमीन को और जो कुछ उन में है, उन को खेतले हुए नहीं बनाया। (३८) उन को हम ने तद्बीर से पैदा किया है, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते। (३९) कुछ शक नहीं कि क्रैसले का दिन उन सब (के उठने का) वक्त है, (४०) जिस दिन कोई दोस्त, किसी दोस्त के कुछ काम न आएगा और न उन को मदद मिलेगी, (४१) मगर जिस पर खुदा मेहरबानी करे, वह तो गालिब (और) मेहरबान है। (४२)★

बेशक यूहर का पेड़, (४३) गुनाहगार का खाना है, (४४) जैसे पिघला हुआ तांबा, पेटों में (इस तरह) खोलिगा, (४५) जिस तरह गर्म पानी खोलता है। (४६) (हुक्म दिया जाएगा कि) इस को पकड़ लो और खींचते हुए दोजख के बीचों-बीच ले जाओ। (४७) फिर उस के सर पर खोलता हुआ पानी उंडेल दो (कि अज़ाब पर) अज़ाब (हो), (४८) (अब) मज़ा चख, तू बड़ी इज़्जत वाला (और) सरदार है। (४९) यह वही (दोजख) है, जिस में तुम लोग शक किया करते थे। (५०) बेशक परहेज़गार लोग अम्न की जगह में होंगे। (५१) (यानी) बागों और चरमों में, (५२) हरीर का बारीक और दबीज़ (भारी) लिबास पहन कर एक-दूसरे के सामने बैठे होंगे। (५३) (वहां) इस तरह (का हाल होगा) और हम बड़ी-बड़ी आंखों वाली सफ़ेद रंग की औरतों से उन के जोड़े लगाएंगे। (५४) वहां अम्न-सुकून से हर क्रिस्म के मेवे मंगाएंगे (और

१. तुम्बअ यमन का बादशाह था, कहते हैं कि वह तो ईमान वाला था और उस की क्रौम नुतपरस्स थी, जो हलाक कर दी गयी।

ला यजूकून फ्रीहलमोत इल्ललमोत - तुल् - ऊला ८ व वकाहुम् अजाबल्-
अहीम ॥ (५६) फज् - लम् - मिरिब्बि - क ७ जालि - क हुबल् -
फौजुल्-अजीम (५७) फ-इन्नमा यस्सर-नाहु बिलिसानि-क ल-अल्लहुम्
य - त - जक्करून (५८) फर्तकिब् इन्नहुम् मुर्तकिबून ★ (५९)

४५ सूरतुल् जासियति ६५

(मक्की) इस सूरः में अरबी के २१३१ अक्षर,
४६२ शब्द, ३७ आयतें और ४ हकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

हामीम् ८ (१) तन्जीलुल्-किताबि

मिनल्लाहिल्-अजीजिल्-हकीम (२) इन्न-न
फिस्समावाति वलअज्रि लआयातिल्-लिम्मुअमिनीन ७

(३) व फ्री खल्किकुम् व मा यबुस्सु मिन्
दाब्बतिन् आयातुल्-लिकौमियूकिनून ॥ (४)

वख्तिलाफिल्लैलि वन्नहारि व मा अन्ज-लल्लाहु
मिनस्समाइ मिरिज्जिन् फ-अह्या बिहिल्वर-ज

बअ-द मोतिहा व तस्रीफिर-रियाहि आयातुल्-
लिकौमियूअ-किलून (५) तिल-क आयातुल्-

लाहि नल्लुहा अलै-क बिह्विक ८ फबिअय्यि
हदीसिम् बअ-दल्लाहि व आयातिही युअमिनीन

(६) वलुल्-लिकुलि अफफाकिन् असीमिय-॥
(७) -यस्-मअ आयातिल्लाहि तुत्ला अलैहि सुम्-म युसिरि मुस्तक-बिरिन् क-अल्लम्

यस्-मअ-हा ८ फबशिरहु बिअजाबिन् अलीम (८) व इजा अलि-म मिन् आयातिना
शै-अ-नित्त-ख-अहा हुजुवन् ७ उलाइ-क लहुम् अजाबुम्-मुहीन ७ (९) मिव्वराइहिम्

जहन्नमु ८ व ला युरनी अन्हुम् मा क-सबू शैअव्-व ला मत्त-ख-जू मिन् दूनिल्लाहि
ओलिया-अ ८ व लहुम् अजाबुन् अजीम ७ (१०) हाज्जा हुदन् ८ वल्लजी-न क-फरू

बिआयाति रब्बिहिम् लहुम् अजाबुम्-मिरिज्जिन् अलीम ★ (११) अल्लाहुल्लजी
सख्ख - र लकुमुल् - बहूर लितजिर - यल् - फुल्कु फ्रीहि बिअमिर्ही

व लि - तब्तागू मिन् फजिलही व ल - अल्लकुम् तश्कुरून ८ (१२)



लाएंगे। (५५) (और) पहली बार के मरने के सिवा (कि मर चुके थे) मौत का मजा नहीं चखेंगे और खुदा उन को दोजख के अजाब से बचा लेगा। (५६) यह तुम्हारे परवरदिगार का फ़ज़ल है। यही तो बड़ी कामियाबी है। (५७) हम ने इस (क़ुरआन) को तुम्हारी जुबान में आसान कर दिया है, ताकि ये लोग नसीहत पकड़ें। (५८) पस तुम भी इन्तिज़ार करो, ये भी इन्तिज़ार कर रहे हैं। (५९)★



४५ सूर: जासिया ६५

सूर: जासिया मक्की है। इस में ३७ आयतें और चार रुकूअ हैं।

शुरू खुदा का नाम लेकर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

हामीम्, (१) इस किताब का उतारा जाना खुदा-ए-ग़ालिब (और) हकीम (की तरफ़) से है। (२) बेशक आसमानों और ज़मीन में ईमान वालों के लिए (खुदा की क़ुदरत की) निशानियां हैं। (३) और तुम्हारी पैदाइश में भी और जानवरों में भी, जिन को वह फैलाता है, यक़ीन करने वालों के लिए निशानियां हैं। (४) और रात और दिन के आगे-पीछे आने-जाने में और वह जो खुदा ने आसमान से रोज़ी (का ज़रिया) नाज़िल फ़रमाया, फिर इस से ज़मीन को उस के मर जाने के बाद ज़िदा किया, उस में और हवाओं के बदलने में अक़ल वालों के लिए निशानियां हैं। (५) ये खुदा की आयतें हैं, जो हम तुम को सच्चाई के साथ पढ़ कर सुनाते हैं, तो यह खुदा और उस की आयतों के बाद किस बात पर ईमान लाएंगे? (६) हर झूठे गुनाहगार पर अफ़सोस है, (७) (कि) खुदा की आयतें उस को पढ़ कर सुनायी जाती हैं तो उन को सुन तो लेता है (मगर) फिर घमंड में आ कर ज़िद करता है कि गोया उन को सुना ही नहीं, सो ऐसे शख्स को दुख देने वाले अज़ाब की खुशख़बरी सुना दो। (८) और जब हमारी कुछ आयतें उसे मालूम होती हैं, तो उन की हंसी उड़ाता है, ऐसे लोगों के लिए ज़लील करने वाला अज़ाब है। (९) इन के सामने दोजख़ है और जो काम वे करते रहे, कुछ भी उन के काम न आएंगे और न वही (काम आएंगे) जिन को उन्होंने ने खुदा के सिवा माबूद बना रखा था और उन के लिए बड़ा अज़ाब है। (१०)।

यह हिदायत (की किताब) है और जो लोग अपने परवरदिगार की आयतों से इन्कार करते हैं, उन को सलत किस्म का दर्द देने वाला अज़ाब होगा। (११)★ खुदा ही तो है, जिस ने दरिया को तुम्हारे क़ाबू में कर दिया, ताकि उस के हुक्म से उस में कश्तियां चलें और ताकि तुम उस के फ़ज़ल

व सस्त्र-र लकुम् मा फ्रिस्समावाति व मा फ्रिल्अञ्जि जमीअम्-मिन्हु इन्-न फ्री
जालि-क ल-आयातिसु-लिक्रीमिध्य-त-फ्रवकरून (१३) कुल् लिल्लजी-न आमन्
यतिफ्रू लिल्लजी-न ला यर्जून अय्यामल्लाहि लि-यज्जि-य कौमम्-बिमा कानू यक्-
सिबून (१४) मन् अमि-ल सालिहून् फलिन्फ्रसिही व मन् असा-अ फ-अलैहा

सुम्-म इला रन्विकुम् तुर्जभून (१५) व
ल-कद् आतेना बनी इस्राईलल्-किता-ब वल्-
हुक्-म वन्नुबुवल्-त व र-जक्नाहुम् मिनत्तय्यिबाति
व फ़ज़ज़ल्-नाहुम् अलल्-आलमीनः (१६) व

आतेनाहुम् बयिनातिम्-मिनत्अमिरिफ-मस्त-लफू
इत्ता मिम्बअ-दि मा जा-अ-हुमुल्-अल्मु॥ बग्-
यम्-बैनहुम् & इन्-न रब्ब-क यक्ज़ी बैनहुम्
यौमल्-क्रियामति फ्रीमा कानू फ्रीहि यस्तलिफ्त

(१७) सुम्-म ज-अल्ना-क अला शरीअत्तिम्-
मिनल्-अम्मि फ़त्तबिअ-हा व ला तत्तबिअ-
अह्वा-अल्लजी-न ला यअ-लमून (१८) इन्नहुम्
लंय्युनू अन्-क मिनल्लाहि शैअन्^१व इन्नज्जालि-

मी-न बञ्जुहुम् औलियाउ बञ्जिन् वल्लाहु वलिय्युल्-मुत्तकीन (१९) हाजा बसाइर लिन्-
नासि व हुदंव-व रह-मतुल्-लिक्रौमिय्युकिन्नून् (२०) अम् हसिबल्लजीनज्-त-रहुस्-सय्यिआति
अन् नञ्-अ-लहुम् कल्लजी-न आमनू व अमिलुस्सालिहाति ॥ सर्वा-अम्मह्याहुम् व
ममातुहुम् सा-अ मा यह-कुभून (२१) व ख-ल-कल्लाहुस्-समावाति वल्लअर-ज बिल्-
ह्विक व लितुज्जा कुल्लु नफिसम्-बिमा क-स-बत् व हुम् ला युज्-लमून (२२)
अ-फ-रए-त मनित्त-ख-ज इलाहहू हवाहु व अ-जल्लहुल्लाहु अला अिल्-
मिद्-व ख-त-म अला सम्मिही व कल्बिही व ज-अ-ल अला ब-सरिही गिशा-व-तुन्
क्रम्य्यह्दीहि मिम्बअ-दिल्लाहि अ-फला त-जवकरून (२३) व कालू मा
हि-य इल्ला ह्यातुनदुन्या नभूतु व नह्या व मा युहिलकुन इल्लद्-वह-रुव मा
लहुम् बिजालि - क मिन् अिल्मिन् इन् हुम् इल्ला यज्जन्नून (२४)

से (रोजी) तलाश करो और ताकि शुक्र करो। (१२) और जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ जमीन में है, सब को अपने (हुक्म) से तुम्हारे काम में लगा दिया, जो लोग शीर करते हैं, उन के लिए उस में (खुदा की क़ुदरत की) निशानियाँ हैं। (१३) मोमिनों से कह दो कि जो लोग खुदा के दिनों की (जो आमाल के बदले के लिए मुक़रर हैं), उम्मीद नहीं रखते, उन से दरगुज़र करें, ताकि वह उन लोगों को उन के आमाल का बदला दे। (१४) जो कोई नेक अमल करेगा, तो अपने लिए और जो बुरे काम करेगा, तो उन का नुक़सान उसी का होगा, फिर तुम अपने परवरदिगार की तरफ़ लौट कर जाओगे। (१५) और हम ने बनी इस्राईल को किताबे (हिदायत) और हुक्मत और नुबूत बरूही और पाकीज़ा चीज़ें अता फ़रमायीं और दुनिया वालों पर फ़ज़ीलत दी। (१६) और उन को दीन के बारे में दलीलें अता कीं, तो उन्होंने ने जो इस्तिलाफ़ किया, तो इल्म आ चुकने के बाद आपस की ज़िद से किया। बेशक तुम्हारा परवरदिगार क़ियामत के दिन उन में उन बातों का, जिन में, वे इस्तिलाफ़ करते थे, फ़ैसला करेगा। (१७) फिर हम ने तुमको दीन के खुले रास्ते पर (कायम) कर दिया, तो उसी (रास्ते) पर चले चलो और नादानों की ख्वाहिशों के पीछे न चलना। (१८) ये खुदा के सामने तुम्हारे किसी काम नहीं आएंगे और ज़ालिम लोग एक दूसरे के दोस्त होते हैं और खुदा परहेज़गारों का दोस्त है। (१९) यह (क़ुरआन) लोगों के लिए दानाई (हिक़मत) की बातें हैं और जो यक्कीन रखते हैं, उन के लिए हिदायत और रहमत है। (२०) जो लोग बुरे काम करते हैं, क्या वह यह ख्याल करते हैं कि हम उन को उन लोगों जैसा कर देंगे, जो ईमान लाये और नेक अमल करते रहे (और) उनकी ज़िदगी और मौत बराबर होगी। ये जो दावे करते हैं, बुरे हैं। (२१)

और खुदा ने आसमानों और जमीन को हिक़मत से पैदा किया है और ताकि हर शख्स अपने आमाल का बदला पाए और उन पर जुल्म नहीं किया जाएगा। (२२) भला तुम ने उस शख्स को देखा, जिस ने अपनी ख्वाहिश को माबूद बना रखा है और बावजूद जानने-बूझने के (गुमराह हो रहा है तो) खुदा ने (भी) उस को गुमराह कर दिया और उस के कानों और दिल पर मुहर लगा दी और उस की आँखों पर पर्दा डाल दिया। अब खुदा के सिवा उस को कौन राह पर ला सकता है, तो क्या तुम नसीहत नहीं पकड़ते? (२३) और कहते हैं कि हमारी ज़िदगी तो सिर्फ़ दुनिया ही की है कि (यहीं) मरते और जीते हैं और हमें तो ज़माना मार देता है और उन को इस का कुछ इल्म नहीं,

व इजा तुत्ला अलेहिम् आयातुना बध्यिनातिम्-मा का-न हृज्जतहुम् इत्ला अन्
कालुअत् बिआबाइना इन् कुन्तुम् सादिकीन (२५) कुलित्ताहु युह्-यीकुम् सुम्-म
युमीतुकुम् सुम्-म यज्मअकुम् इला यौमिल्-क्रियामति ला रै-ब फ्रीहि व लाकिन्-न
अक्सरन्नासि ला यअल्-मून * (२६) व लिल्लाहि मुत्कुस्समावाति वल्अज्जि व यौ-म
तकुम्स्साअतु यौमइजियख-सरल्-मुन्तिलून (२७)

सिर्फ अटकल से काम लेते हैं। (२४) और जब उन के सामने हमारी खुली-खुली आयतें पढ़ी जाती हैं, तो उन की यही हुज्जत होती है कि अगर सच्चे हो, तो हमारे बाप-दादा को (जिंदा कर) लाओ। (२५) कह दो कि खुदा ही तुम को जान बख्शता है, फिर (वही) तुम को मौत देता है, फिर तुम को क़ियामत के दिन, जिस (के आने) में कुछ शक नहीं, तुम को जमा करेगा, लेकिन बहुत से लोग नहीं जानते। (२६)★

और आसमानों और जमीन की बादशाही खुदा ही की है और जिस दिन क़ियामत बरपा होगी, उस दिन अहले बातिल घाटे में पड़ जाएंगे। (२७) और तुम एक फ़िक्र को देखोगे कि घुटनों के बल बंधा होगा (और) हर एक जमाअत अपने (आमाल की) किताब की तरफ़ बुलायी जाएगी। जो कुछ तुम करते रहे हो, आज तुम को उस का बदला दिया जाएगा। (२८) यह हमारी किताब तुम्हारे बारे में सच-सच बयान कर देगी, जो कुछ तुम किया करते थे, हम लिखवाते जाते थे। (२९) तो जो लोग ईमान लाए और नेक काम करते रहे, उन का परवरदिगार उन्हें अपनी रहमत (के बाग़) में दाखिल करेगा। यही खुली कामियाबी है। (३०) और जिन्होंने ने कुफ़ किया, (उन से कहा जाएगा कि) भला हमारी आयतें तुम को पढ़ कर सुनायी नहीं जाती थीं? मगर तुम ने तकबुर किया और तुम ना-फ़रमान लोग थे। (३१) और जब कहा जाता था कि खुदा का वायदा सच्चा है और क़ियामत में कुछ शक नहीं, तो तुम कहते थे, हम नहीं जानते कि क़ियामत क्या है। हम उस का सिर्फ अटकल का ख़याल करते हैं और हमें यकीन नहीं आता। (३२) और उन के आमाल की बुराइयां उन पर जाहिर हो जाएंगी और जिस (अज़ाब) की वे हंसी उड़ाते थे, वह उन को आ घेरेंगा। (३३) और कहा जाएगा कि जिस तरह तुम ने इस दिन के आने को भुला रखा था, उसी तरह आज हम तुम्हें भुला देंगे और तुम्हारा ठिकाना दोख़ है और कोई तुम्हारा मददगार नहीं। (३४) यह इस लिए कि तुम ने खुदा की आयतों को मज़ाक़ बना रखा था और दुनिया की ज़िदगी ने तुम को धोखे में डाल रखा था, सो आज ये लोग न दोख़ से निकाले जाएंगे और न उनकी तौबा कुबूल की जाएगी? (३५) पस खुदा ही के लिए हर तरह की तारीफ़ है, जो आसमानों का मालिक और तमाम जमीन का मालिक और तमाम ज़हान का परवरदिगार है। (३६) और आसमानों और जमीन में उसी के लिए बढ़ाई है और वह ग़ालिब (और) हकीम है। (३७)★

१. अल्लाह तआला भुलावेंगे यानी तुम पर मेहरबानी न करेंगे।

छब्बीसवां पारः हामीम

४६ सूरतुल-अह्काफि ६६

(मक्की) इस सूरः में अरबी के २७०६ अक्षर, ७५० शब्द, ३५ आयत और ४ हकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

हामीम ८ (१) तन्जीलुल-किताबि मिनल्लाहिल-अजीजिल्-हकीम (२) मा ख-लकूनस्समावाति वलअर-ज़ व मा बेनहुमा इल्ला बिल्हक्कि व अ-जलिम्-मुसम्मन् वल्लजी-न क-फरू अम्मा उन्जिरू मुख-रिज़ून (३) कुल् अ-रऐतुम् मा तदअ-न मिन् दूनिल्लाहि अरुनी माजा ख-लकू मिनल्लाहि अम् लहुम् शिरकुन्

फ़िस्समावाति ॥ ईतूनी बिकिताबिम्-मिन् कविल

हाजा औ असारतिम्मिन् अलिम्न् इन् कुन्तुम्

सादिकीन (४) व मन् अज़ल्लु मिम्मध्यदअ

मिन् दूनिल्लाहि मल्ला यस्तजीबु लह इला

योमिल्-क़ियामति व हुम् अन् दुआइहिम्

गाफ़िलून (५) व इजा हुशि-रन्नासु कानू

लहुम् अज़-दा-अव-व कानू बिअबादति-हिम्

काफ़िरीन (६) व इजा तुत्ला अलैहिम्

आयातुना बथियनातिन् क़ालल्लजी-न क-फरू

लिह्वक्कि लम्मा जा-अहुम् ॥ हाजा सिह्रम्-

मुबीन (७) अम् यकूलूनफतराहु कुल् इनिफ़-

तरतुह क़ला तम्मिलकू-न ली मिनल्लाहि शैअन् ॥

हु-व अज़-लमु बिमा तुफ़ीज़ून फ़ीहि कफ़ा बिही शहीदम्-बेनी व बेनकुम् ॥ व हुवल-

गफ़ूररहीम (८) कुल् मा कुन्तु बिद-अम्-मिनरुसुलि व मा अदरी मा युफ़लु बी

व ला बिकुम् ॥ इन् अत्तबिअ इल्ला मा यूहा इलय-य व मा अ-न इल्ला नजीरुम्-

मुबीन (९) कुल् अरऐतुम् इन् कान मिन् अन्दिल्लाहि व क-फरुम्

बिही व शहि - द शाहिदुम् - मिम्बनी इस् - राई - ल अला मिल्लिही

फ़-आ-म-न वस्तक्बरतुम् ॥ इन्नल्ला-ह ला यहदिह् - कोमअज़ालिमोन * (१०)



४६ सूर: अह्काफ़ ६६

सूर: अह्काफ़ मक्की है और इस में पैंतीस आयतें और चार रकूअ हैं ।

शुरू खुदा का नाम लेकर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है ।

हामीम, (१) (यह) किताब खुदा-ए-ग़ालिब (और) हिकमत वाले की तरफ़ से नाज़िल हुई है । (२) हमने आसमानों और ज़मीन को और जो कुछ इन दोनों में है, हिकमत के साथ और एक मुकर्रर वक़्त तक के लिए पैदा किया है और काफ़िरों को जिस चीज़ की नसीहत की जाती है, उससे मुंह फेर लेते हैं । (३) कहो कि भला तुम ने उन चीज़ों को देखा है, जिन को तुम खुदा के सिवा पुकारते हो । (ज़रा) मुझे भी तो दिखाओ कि उन्होंने ज़मीन में कौन-सी चीज़ पैदा की है या आसमानों में उन की शिकंठ है । अगर सच्चे हो तो इस से पहले की कोई किताब मेरे पास लाओ या (नबियों के) इल्म (में) से कुछ लिखा चला आता हो, (तो उसे पेश करो) । (४) और उस शस्स से बढ़ कर कौन गुमराह हो सकता है, जो ऐसे को पुकारे, जो क्रियामत तक उसे जवाब न दे सके और उन को उन के पुकारने ही की खबर न हो । (५) और जब लोग जमा किए जाएं, तो वे उन के दुश्मन होंगे और उन की इबादत से इंकार करेंगे । (६) और जब उन के सामने हमारी खुली आयतें पढ़ी जाती हैं, तो काफ़िर हक के बारे में, जब उन के पास आ चुका, कहते हैं कि यह तो खुला जादू है । (७) क्या ये कहते हैं कि उस ने इस को खुद से बना लिया है ? कह दो कि अगर मैं ने इस को अपनी तरफ़ से बनाया हो, तो तुम खुदा के सामने मेरे (बचाव के) लिए कुछ अस्तिथार नहीं रखते । वह उस बात-चीत को खूब जानता है, जो तुम उस के बारे में करते हो, वही मेरे और तुम्हारे दर्मियान गवाह काफ़ी है और वह बलशने वाला मेहरबान है । (८) कह दो कि मैं कोई नया पैगम्बर नहीं आया और मैं नहीं जानता कि मेरे साथ क्या सुलूक किया जाएगा और तुम्हारे साथ क्या (किया जाएगा) । मैं तो उसी की पैरवी करता हूं, जो मुझ पर वह्य आती है और मेरा काम तो एलानिया हिदायत करना है । (९) कहो कि भला देखो तो अगर यह (क़ुरआन) खुदा की तरफ़ से हो और तुम ने उस से इंकार किया और बनी इस्राईल में से एक गवाह इसी तरह की एक (किताब) की गवाही दे चुका और ईमान ले आया और तुम ने सरकशी की (तो तुम्हारे जालिम होने में क्या शक है) बेशक खुदा जालिम लोगों को हिदायत नहीं देता । (१०)★

और काफ़िर मोमिनों से कहते हैं कि अगर यह (दीन) कुछ बेहतर होता, तो ये लोग उस की तरफ़ हम से पहले न दौड़ पड़ते और जब वे इस से हिदायत न पा सके, तो अब कहेंगे कि यह पुराना झूठ है। (११) और इस से पहले मूसा की किताब थी (लोगों के लिए) रहनुमा और रहमत और यह किताब अरबी जुबान में है उसी की तस्दीक करने वाली, ताकि जालिमों को डराए और नेकी करने वालों को खुशखबरी सुनाए। (१२) जिन लोगों ने कहा कि हमारा परवरदिगार खुदा है, फिर वे उस पर क़ायम रहे, तो उन को न कुछ खोफ़ होगा और न वे ग़मनाक होंगे। (१३) यही जन्नत वाले हैं कि हमेशा इस में रहेंगे। (यह) उस का बदला है, जो वे किया करते थे। (१४) और हमने इंसान को अपने मां-बाप के साथ भलाई करने का हुक्म दिया। उस की मां ने उस को तकलीफ़ से पेट में रखा और तकलीफ़ ही से जना और उस का पेट में रहना और दूध छोड़ना ढाई वर्ष में होता है, यहां तक कि जब खूब जवान होता और चालीस वर्ष को पहुंच जाता है, तो कहता है कि ऐ मेरे परवरदिगार ! मुझे तौफ़ीक़ दे कि तूने जो एहसान मुझ पर और मेरे मां-बाप पर किए हैं, उन का शुक्रगुजार हूं और यह कि नेक अमल करूं, जिन को तू पसन्द करे और मेरे लिए मेरी औलाद में इस्लाम (व तक्वा) दे। मैं तेरी तरफ़ रुजूअ करता हूं और मैं क़रमांबरदारों में हूं। (१५) यही लोग हैं, जिन के नेक अमल हम कुबूल करेंगे और उन के गुनाहों से दरगुज़र फ़रमाएंगे, (और यही) जन्नत वालों में (होंगे) (यह) सच्चा वायदा (है) जो उन से किया जाता था। (१६) और जिस शरूस ने अपने मां-बाप से कहा कि उफ़ ! उफ़ !! तुम मुझे यह-बताते हो कि मैं (ज़मीन से) निकाला जाऊंगा, हालांकि बहुत से लोग मुझ से पहले गुज़र चुके हैं और वे दोनों खुदा की जनाब में फ़रियाद करते (हुए कहते) थे कि कमबख़्त ईमान ला। खुदा का वायदा सच्चा है, तो कहने लगा, यह तो पहले लोगों की कहानियां हैं।' (१७) यही वे लोग हैं, जिन के बारे में ज़िन्नो और इंसानों की (दूसरी) उम्मतों में से, जो इन से पहले गुज़र चुकीं, अज़ाब का वायदा तहक़ीक़ हो गया। बेशक

१. यह उस का हाल है जो काफ़िर है और मां-बाप समझाते हैं ईमान की

व लिकुल्लिन् द-र-जातुम्-मिम्मा अमिलु^७ व लियुवफिफ-यहुम् अअ-मालहुम् व हुम
ला युज्ज-लमून (१६) व यौ-म युअ-रजुल्लजी-न क-फरू अलन्नारि^८ अज्-हवुम्
तथ्यिवातिकुम् फी ह्यातिकुमुद्दुन्या वस्तम्तअ-तुम् बिहा^९ फिल्यौ-म तुज्जौ-न अजाबल्-
हनि बिमा कुन्तुम् तस्तविबरू-न फिलअज्जि बिगैरिल्-हविक व बिमा कुन्तुम् तपसुकून

★ (२०) वज्रकुर अखा आदिन् इज् अज्ज-र

क्रौमह बिल्-अह्काफि व. कद् ख-लतिन्नुजुर

मिम्ब्रेनि यदैहि व मिन् खल्फिही अल्ला तअ-

बद इल्लला-ह b इन्नी अखाफु अलकुम

अज्ञा-ब यौमन अजीम (२१) काल अजिअ-

तना लितअ-फ्रिकना अन् आलिहतिना

फअ-तिना बिमा तअदिना इन कन-त मिनस-

सादिकीन (२२) का-ल इन्ममल-अल्मु

बिन्दुलाहिं व उबल्लिगकुम मा उसित्तु बिही

व लाकिन्नी अराकूम क्रीमन् तज-हलून (२३)

फलम्मा रबोह आरिज्जम-मस्तक्वि-ल ओदियति

द्वि^१काल दाना आरिजम-मस्तिरुना^१ बल ह-व

सत्यं ज्ञानं विद्या^१ मेघन मीमा अजाबन अली

विद्यमि रत्निदा फ-अन्वद ला गरा इल्ला म

मज्झिमे (२५) व ल-कद मक्कन्नाहम् प्रीमा इ

सम-अं-व-व अब्सारं-व-व अफइ-द-तन्-फमा अर

व ला अफ़इदतुहुम् मिन् शैइन् इज् कानू

बिहिम् मा कानू बिही यस्तहिजऊन ★ (२)

मिनल्कुरा व सरफनल् - आयात ल-अल्ल

न-स-रहुमुल् - लज्जिनत्त - ख-जू मिन् ध्यान
लज्जन्तु शब्दस्य १ न जालि - क इफकहम

ने नुकसान उठाने वाले थे। (१८) और लोगों ने जैसे काम किए होंगे, उन के मुताबिक दजें होंगे, (गरुज यह है) कि उन को उन के आमाल का पूरा बदला दे और उन का नुकसान न किया जाए। (१९) और जिस दिन काफिर दोखल के सामने किए जाएंगे, (तो कहा जाएगा कि) तुम अपनी दुनिया की जिदगी में लज्जतें हासिल कर चुके और उन से फायदा उठा चुके, सो आज तुम को जिल्लत का अज्ञाब है, (यह) इस की सजा (है) कि तुम जमीन रें ना-हक धमंड किया करते थे और इस की कि बद-किरदारी करते थे। (२०)★

और (क्रौमे) आद के भाई (हूद) को याद करो, कि जब उन्होंने ने अपनी क्रौम को अष्टकांक की सर-जमीन में हिदायत की और उन से पहले और पीछे भी हिदायत करने वाले गुजर चुके थे कि खुदा के सिवा किसी की इबादत न करो। मुझे तुम्हारे वारे में बड़े दिन के अज्ञाब का डर लगता है। (२१) कहने लगे, क्या तुम हमारे पास इसलिए आए हो कि हम को हमारे माबूदों से फेर दो। अगर सच्चे हो, तो जिस चीज से हमें डराते हो, उसे हम पर ले आओ। (२२) उन्होंने ने कहा कि (इस का) इल्म तो खुदा ही को है और मैं तो जो (हुकम) दे कर भेजा गया हूं, वह तुम्हें पहुंचा रहा हूं, लेकिन मैं देखता हूं कि तुम लोग नादानी में फंस रहे हो। (२३) फिर जब उन्होंने ने उस (अज्ञाब) को देखा कि बादल (की सूरत में) उन के मैदानों की तरफ आ रहा है, तो कहने लगे, यह तो बादल है, जो हम पर बरस कर रहेगा, (नहीं,) बल्कि (यह) वह चीज है, जिस के लिए तुम जल्दी करते थे यानी आंधी, जिस में दर्द देने वाला अज्ञाब भरा हुआ है, (२४) हर चीज को अपने परवरदिगार के हुकम से तबाह किए देती है, तो वे ऐसे हो गये कि उन के घरों के सिवा कुछ नजर ही न आता था। गुनाहगार लोगों को हम इसा तरह सजा दिया करते हैं। (२५) और उनको हम ने ऐसी कुदरतें दे दी थीं, जो तुम लोगों को नहीं दीं और उन्हें कान और आंखें और दिल दिए थे, तो जब कि वे खुदा की आयतों से इंकार करते थे, तो न तो उन के कान ही उन के कुछ काम आ सके और न आंखें और न दिल और जिस चीज का मजाक उड़ाया करते थे, उस ने उन को आ घेरा। (२६)★

और तुम्हारे आस-पास की बस्तियों को हमने हलाक कर दिया और बार-बार (अपनी) निशानियां जाहिर कर दीं, ताकि वे रुजूअ करें। (२७) तो जिन को उन लोगों ने (खुदा की) नजदीकी के लिए खुदा के सिवा माबूद बनाया था, उन्होंने ने उन की क्यों मदद न की? बल्कि वे उन (के सामने) से गुम हो गये और यह उन का झूठ था और यही वे झूठ गढ़ा करते थे। (२८)

व इज् सरफना इलै-क न-फ-रम्-मिनल्-जिन्नि यस्तमिअनल्-कुरआ-न ८ फ-लम्मा
ह-अर्रहु कालू अन्सित् ८ फ-लम्मा कुजि-य बल्लो इला कौमिहिम् मुन्बिरीन

(२६) कालू या कौमना इन्ना समिअ-ना किताबन् उन्जि-ल मिम्बअ-दि मूसा
मुसद्-दि-कल्लिमा बं-न यदेहि यद्दी इलल्हिक व इला तरीकिम्-मुस्तकीम

(३०) या कौमना अजीबू दाअि-यल्लाहि व
आमिन् बिही यरिफ-र-लकुम् मिन् जुनूबिकुम् व
युजिर्कुम् मिन् अजाबिन् अलीम (३१) व

मल्ला युजिब् दाअि-यल्लाहि फलै-स बिमुअ-
जिजिन् फिलअजि व लै-स लहू मिन् इनिही
ओलियाउ उलाइ-क फी जलालिम्-मुबीन (३२)

अ-व लम् यरो अन्नल्लाहल्लजी ख-ल-कस्समा-
वाति वलअ-र-ज व लम् यअ-य बिखल्लिकहि-न-न
बिकादिरिन् अला अय्युह्यि-य-ल-मौता बला

इन्नहू अला कुल्लि औइन् कदीर (३३) व

यो-म युअ-रजुल्लजी-न क-फरू अलन्नारि अलै-स
हाजा बिल्हिकि कालू बला व रबिबना काल-फज्जूकुस्-अजा-ब बिमा कुन्नुम् तक्फुरून

(३४) फस्बिर् कमा स-ब-र उलुल्-अरिम् मिन्हमुलि व ला तस्तअ-
जिल् लहुम् अ-क-अन्नहुम् यो-म यरो-न मा यूअद्-न लम् यल्बस् इल्ला साअतम्-मिन्
नहारिन् बलागुन् ८ फ-हल् युहलकु इल्लल् - कौमुल् - फासिकून * ● (३५)

الْقَوْمِ اِنَّا الْاَلَهُ مِنْ صَلَواتِهِمْ وَوَالِدِ الْاَلَمِ وَكَالِ الْاَوَّلِينَ
وَالْاٰخِرِينَ اَلَيْسَ لَكُمْ مِنَ الْقُرْآنِ عَلَمٌ فَكُلُّكُمْ عَصِدٌ
اَفَصَبَّحْتُمْ كَلَّا اَفْصَحَ الْاَوَّلُ الْاَوَّلُ الْاَوَّلُ الْاَوَّلُ
سَمِعْنَا كَيْتَا الْاَوَّلِ مِنْ بَعْضِ مَوْفَى مَصْلُ الْاَوَّلِ الْاَوَّلِ الْاَوَّلِ
اِلَى الْاَوَّلِ الْاَوَّلِ الْاَوَّلِ الْاَوَّلِ الْاَوَّلِ الْاَوَّلِ
بِهِ يَنْفِرُ لَكُمْ مِنْ دُونِهِمْ وَجِزْلُكُمْ مِنْ مَدَابِ الْاَوَّلِ
يُحِبُّ دَاوُدَ الْاَوَّلِ الْاَوَّلِ الْاَوَّلِ الْاَوَّلِ الْاَوَّلِ
اَوَّلِ الْاَوَّلِ الْاَوَّلِ الْاَوَّلِ الْاَوَّلِ الْاَوَّلِ
الْاَوَّلِ الْاَوَّلِ الْاَوَّلِ الْاَوَّلِ الْاَوَّلِ الْاَوَّلِ
بَلْ اِنَّكُمْ لَعَلَّكُمْ مِنْ دُونِهِمْ وَجِزْلُكُمْ مِنْ مَدَابِ الْاَوَّلِ
اَلَيْسَ لَكُمْ هَذَا الْاَوَّلِ الْاَوَّلِ الْاَوَّلِ الْاَوَّلِ
بَلْ اِنَّكُمْ لَعَلَّكُمْ مِنْ دُونِهِمْ وَجِزْلُكُمْ مِنْ مَدَابِ الْاَوَّلِ
تَسْتَحِيلُ لَكُمْ كَلَامُهُمْ يَوْمَ يَوْمَ يَوْمَ يَوْمَ يَوْمَ
مِنْ تَلَاوِيكُمْ فَكُلُّكُمْ يَوْمَ الْاَوَّلِ الْاَوَّلِ
يَوْمَ يَوْمَ يَوْمَ يَوْمَ يَوْمَ يَوْمَ يَوْمَ
بِسْمِ الْاَوَّلِ الْاَوَّلِ الْاَوَّلِ الْاَوَّلِ
الَّذِينَ لَكُمْ وَاصِدَا عَنْ سَبِيلِ الْاَوَّلِ الْاَوَّلِ الْاَوَّلِ

४७ सूरतु मुहम्मदिन् ६५

(मदनी) इस सूर: में अरबी के २४७५ अक्षर, ५५८ शब्द, ३८ आयतें और ४ रकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिररहमानिररहीम •

अल्लजी-न क फरू व सदद् अन् सबीलिल्लाहि अ-जल्ल-ल अ-मालहुम् (१)

और जब हमने जिन्यों में से कई शस्त्र तुम्हारी तरफ़ मुतवज्जह किये कि कुरआन सुनें, जब वे उस के पास आए, तो (आपस में) कहने लगे कि खामोश रहो। जब (पढ़ना) तमाम हुआ तो अपनी बिरादरी के लोगों में वापस गये कि (उन को) नसीहत करें। (२६) कहने लगे कि ऐ क्रोम ! हमने एक किताब सुनी है, जो मूसा के बाद नाज़िल हुई है, जो (किताबें) इस से पहले (नाज़िल हुई) हैं, उन की तस्दीक़ करती है (और) सच्चा (दीन) और सीधा रास्ता बताती है। (३०) ऐ क्रोम ! खुदा की तरफ़ बुलाने वाले की बात को कुबूल करो और उस पर ईमान लाओ। खुदा तुम्हारे गुनाह बख़्श देगा और तुम्हें दुख देने वाले अज़ाब से पनाह में रखेगा। (३१) और जो शस्त्र खुदा की तरफ़ बुलाने वाले की बात कुबूल न करेगा, तो वह ज़मीन में (खुदा को) आजिज़ नहीं कर सकेगा और न उस के सिवा उस के हिमायती होंगे। ये लोग खुली गुमराही में हैं। (३२) क्या उन्होंने ने नहीं समझा कि जिस खुदा ने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया और उन के पैदा करने से थका नहीं, वह इस (बात) पर भी कुदरत रखता है कि मुर्दों को ज़िदा कर दे हां, (हां) वह हरे चीज़ पर कुदरत रखता है। (३३) और जिस दिन इंकार करने वाले आग के सामने किए जाएंगे, क्या यह हक़ नहीं ? तो कहेंगे, क्यों नहीं, हमारे परवरदिगार की क़सम (हक़ है)। हुक्म होगा कि तुम जो (दुनिया में) इंकार किया करते थे, (अब) अज़ाब के मज़े चखो। (३४) पस (ऐ मुहम्मद !) जिस तरह और बुलंद हिम्मत पैग़म्बर सब्र करते रहे है, उसी तरह तुम भी सब्र करो और उन के लिए (अज़ाब) जल्दी न मांगो। जिस दिन ये उस चीज़ को देखेंगे, जिस का उन से वायदा किया जाता है, तो (ह्याल करेंगे कि) गोया (दुनिया में) रहे ही न थे, मगर घड़ी भर दिन। यह (कुरआन) पैग़ाम है, सो (अब) वही हलाक होंगे जो नाफ़रमान थे। (३५) ★ ●



४७ सूर: मुहम्मद ६५

सूर: मुहम्मद मदनी है और इस में ३८ आयतें और चार रुकूअ हैं।

शुरू खुदा का नाम लेकर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

जिन लोगों ने कुफ़ किया और (औरों को) खुदा के रास्ते से रोका, खुदा ने उन के आमाल

बर्बाद कर दिए। (१) और जो ईमान लाये और नेक अमल करने रहे और जो (किताब) मुहम्मद पर नाज़िल हुई, उसे मानते रहे और वह उन के परवरदिगार की तरफ से बर-हक है, उन में उन के गुनाह दूर कर दिए और उन की हालत संवार दी। (२) यह (अमल की बर्बादी और इस्लाहे हाल) इसलिए है कि जिन लोगों ने कुफ़ किया, उन्होंने ने झूठी बात की पैरवी की और जो ईमान लाए, वे अपने परवरदिगार की तरफ से (दीने) हक के पीछे चले। इसी तरह खुदा लोगों में उन के हालात बयान फ़रमाता है। (३) जब तुम काफ़िरों से भिड़ जाओ, तो उन की गरदन उड़ा दो, यहां तक कि जब उन को खूब क़त्ल कर चुको तो (जो ज़िदा पकड़े जाएं, उन को) मजबूती से क़ंद कर लो, फिर इस के बाद या तो एहसान रख कर छोड़ देना चाहिए या कुछ माल ले कर, यहां तक कि (मुखालिफ़ फ़रीक़) लड़ाई (के) हथियार (हाथ से) रख दे। यह (हुक्म याद रखो) और अगर खुदा चाहता तो (और तरह) उन से बदले ले लेता, लेकिन उस ने चाहा कि तुम्हारी आजमाइश एक (को) दूसरे से (लड़वा कर) करे और जो लोग खुदा की राह में मारे गये, उन के अमलों को हरगिज़ बर्बाद नहीं करेगा। (४) (बल्कि) उनको सीधे रास्ते पर चलाएगा और उनकी हालत दुस्त कर देगा। (५) और उन को बहिश्त में, जिस से उन को पहचनवा रखा है, दाख़िल करेगा। (६) ऐ अहले ईमान! अगर तुम खुदा की मदद करोगे, तो वह भी तुम्हारी मदद करेगा और तुम को साबित क़दम रखेगा। (७) और जो काफ़िर हैं, उन के लिए हलाकत है और वह उन के आमाल को बर्बाद कर देगा। (८) यह इसलिए कि खुदा ने जो चीज़ नाज़िल फ़रमायी, उन्होंने ने उस को नापसन्द किया, तो खुदा ने उन के आमाल अकारथ कर दिए। (९) क्या उन्होंने ने मुल्क में सैर नहीं की, ताकि देखते कि जो लोग उन से पहले थे, उन का अंजाम कैसा हुआ? खुदा ने उन पर तबाही डाल दी और इसी तरह का (अज़ाब) उन काफ़िरों को होगा। (१०) यह इसलिए कि जो मोमिन हैं, उन का खुदा कारसाज़ है और काफ़िरों का कोई कारसाज़ नहीं। (११)★

जो लोग ईमान लाए और नेक अमल करते रहे, उन को खुदा बहिश्तों में, जिन के नीचे नहरें बह रही हैं, दाख़िल फ़रमाएगा। और जो काफ़िर हैं, वे फ़ायदे उठाते हैं और (इस तरह) खाते हैं, जैसे हैवान खाते हैं और उन का ठिकाना दोज़ख़ है। (१२) और बहुत-सी बस्तियां तुम्हारी बस्ती में जिस (के बाशिंदों) ने तुम्हें (वहां से) निकाल दिया, जोर व ताक़त में कहीं बढ़ कर थीं। हमने उन का सत्यानाश कर दिया और उन का कोई मददगार न हुआ। (१३) भला जो शक्स अपने परवरदिगार (की मेहरबानी) से खुले रास्ते पर (चल रहा) हो, वह उन की तरह (हो सकता) है जिन के बुरे आमाल उन्हें अच्छे कर के दिखाए जाएं और जो अपनी स्वाहिशों की पैरवी करें। (१४)

जन्नत जिस का परहेजगारों से वायदा किया जाता है, उस की खूबी यह है कि इस में पानी की नहरें हैं, जो बू नहीं करेगा और दूध की नहरें हैं, जिस का मज्जा नहीं बदलेगा और शराब की नहरें हैं, जो पीने वालों के लिए (सरासर) लज्जत है और शहदे मुसफ़्फ़ा की नहरें हैं (जो मिठास ही मिठास है) और (वहां) उन के लिए हर क्रिस्म के मेवे हैं और उन के परवरदिगार की तरफ़ से मसफ़्फ़रत है। (क्या ये परहेजगार) उन की तरह (हो सकते) हैं जो हमेशा दोख़ल में रहेंगे और जिन को खोलता हुआ पानी पिलाया जाएगा, तो उन की अंतर्दियों को काट डालेगा। (१५) और उन में कुछ ऐसे भी हैं, जो तुम्हारी तरफ़ कान लगाए रहते हैं, यहां तक कि (सब कुछ सुनते हैं, लेकिन) जब तुम्हारे पास से निकल कर चले जाते हैं, तो जिन लोगों को इल्म (दीन) दिया गया है, उन से कहते हैं कि (भला) अभी उन्होंने ने क्या कहा था? यही लोग हैं, जिन के दिलों पर खुदा ने मुहर लगा रखी है और वे अपनी ख्वाहिशों के पीछे चल रहे हैं। (१६) और जो लोग हिदायत पाए हुए हैं, वह उन को और हिदायत बरक़शता है और परहेजगारी देता है। (१७) अब तो ये लोग क्रियामत ही को देखते हैं कि यकायक उन पर आ वाक़अ हो, सो उस की निशानियां (वक्रूअ में आ चुकी हैं।) फिर जब उन पर आ नाज़िल होगी, उस वक़्त उन्हें नसीहत कहां (मुफ़ीद हो सकेगी?) (१८) पस जान रखो कि खुदा के सिवा कोई माबूद नहीं और अपने गुनाहों की माफ़ी मांगो और (और) मोमिन मदों और मोमिन औरतों के लिए भी और खुदा तुम लोगों के चलने-फिरने और ठहरने को जानता है। (१९)★

और मोमिन लोग कहते हैं कि (जिहाद की) कोई सूर: क्यों नाज़िल नहीं होती? लेकिन जब कोई साफ़ मानी की सूर: नाज़िल हो और उस में जिहाद का बयान हो, तो जिन लोगों के दिलों में (निफ़ाक़ का) मज्र है, तुम उन को देखो कि तुम्हारी तरफ़ इस तरह देखने लगें, जिस तरह किसी पर मौत की बेहोशी (छा) रही हो, सो उन के लिए ख़राबी है। (२०) (ख़ूब काम तो) फ़रमांबरदारी और पसंदीदा बात कहना (है,) फिर जब (जिहाद की) बात हो गयी, तो अगर ये लोग खुदा से सच्चे रहना चाहते तो उन के लिए बहुत अच्छा होता। (२१) (ऐ मुनाफ़िक़ो!) तुम से अबज नहीं कि अगर तुम हाकिम हो जाओ तो मुल्क में ख़राबी करने लगे और अपने रिश्तों को तोड़ डालो। (२२) यही लोग हैं, जिन पर खुदा ने लानत की है और उन (के कानों) को बहरा और (उन की) आंखों को अंधा कर दिया है। (२३) भला ये लोग क़ुरआन में ग़ौर नहीं करते या

इन्नल्लजीनतद्दु अल अदबारिहिम् मिम्बअ-दि मा त-बय्य-न लहुमुल्हुदशौतानु
सव्व-ल लहुम्^७ व अम्ला लहुम् (२५) जालि-क बि-अन्नहुम् कालू लिल्लजी-न
करिह मा नज्ज-लल्लाहु सनुतीअुकुम् फी बअ-जिल-अमिर^८ वल्लाहु यअ-लमु इस्रा-
रहुम् (२६) फकै-फ इजा त-वफक्त-हुमुल्-मलाइकतु यजिरबू-न वजू-हहुम् व

अदबारहुम् (२७) जालि-क बिअन्नहुमुत्त-ब-अ
मा अस्ख-तल्ला-ह व करिह रिज्-वानह फ-

अह-ब-त अअ-मालहुम् ★ (२८) अम् हसिबल्-
लजी-न फी कुलूबिहिम् म-रजुन् अल्-लंयुखिर-

जल्लाहु अज्-गानहुम् (२९) व लौ नशाउ
ल-अरनाकहुम् फ-ल-अरफ्त-हुम् बिसीमाहुम्^७ व

ल-तअ-रिफन्नहुम् फी लहिनल्-कौलि^७ वल्लाहु
यअ-लमु अअ-मालकुम् (३०) व ल-नब्लुवन्-

नकुम् हत्ता नअ-ल-मल्-मुजाहिदी-न मिन्कुम्
वस्साबिरो-न॥ व नब्लु-व अरबारकुम् (३१)

इन्नल्लजी-न क-फरू व सद्द अन् सबीलिल्लाहि
व शा-कुरसू-ल मिम्बअ-दि मा त-बय्य-न

लहुमुल्हुदा॥ लंय्यजुरुल्ला-ह शैअन्^७ व सयुहिबतु
अअ-मालहुम् (३२) या अय्यहुल्लजी-न आमनू अतीअुल्ला-ह व अतीअुर-रसू-ल व

ला तुब्तिलू अअ-मालकुम् (३३) इन्नल्लजी-न क-फरू व सद्द अन् सबीलिल्लाहि
शुम्-म मातू व हुम् कुफफारू फलंय्यग-फि-रल्लाहु लहुम् (३४) फला तहिनू व

तदअ इलस्सलिम्^८ व अन्तुमुल्-अअ-लो-न^८ वल्लाहु म-अकुम् व लंय्यति-रकुम् अअ-
मालकुम् (३५) इन्नमल्-हयातुददुन्या लअिबु-व-व लहवुन्^७ व इन् तुअमिन् व तत्तकू

युअतिकुम् उजूरकुम् व ला यस्अल्कुम् अम्बालकुम् (३६) इय्यस्अल्कुमहा फ-युह-
फिकुम् तबखलू व युखिरज् अज्गानकुम् (३७) हाअन्तुम् हाउलाइ तुदओ-न लितुन्-

फिकू फी सबीलिल्लाहि^८ फमिन्कुम् मंय्यबखलु^८ व मंय्यबखल् फ-इन्नमा यबखलु अन्
नफ्सिही^७ वल्लाहुल्-गनियु व अन्तुमुल्-फ-कराउ^८ व इन् त-त-वल्लो यस्तबिदल्
कौमन् गैरकुम् ॥ सुम् - म ला यकनू अम्सालकुम् ★ (३८)

فِي سُبُحَاتِهِمْ يُنَادِي لَهُمُ الْمَلَكُ الْمُنَادِي يَقُولُ لَكُمْ وَأَمَلُكُمْ
ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ قَالُوا الَّذِينَ كَفَرُوا مَا لَنَا اللَّهُ سُبُحَاتِهِمْ فِي سُبُحَاتِهِمْ
وَاللَّهُ يَسْمَعُ أَسْمَاعَهُمْ وَكَذَلِكَ إِذَا قِيلَ لَهُمُ الْمَلَكُ يَسْمَعُ مِنْهُمْ
وَأَكْبَرُكُمْ ذَلِكُمْ بِأَنَّهُمْ يَقُولُونَ مَا سَمِعُوا مِنْ اللَّهِ وَكَرِهُوا رِضْوَانَهُ فَاسْتَبَدَّ
أَعْمَالَهُمْ وَأَرْحَبَ الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ رُحُوسٌ أَنْ يُخْرِجَ اللَّهُ
أَفْعَالَهُمْ وَكَذَلِكَ إِذَا قِيلَ لَهُمُ الْمَلَكُ يَسْمَعُ مِنْهُمْ وَكَرِهُوا رِضْوَانَهُ
أَكْبَرُ الْقَوْلِ وَاللَّهُ يَسْمَعُ أَسْمَاعَهُمْ وَكَرِهُوا رِضْوَانَهُ فَاسْتَبَدَّ
مَعْلُومَاتِهِمْ وَكَرِهُوا رِضْوَانَهُ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَكَرِهُوا رِضْوَانَهُ
سَبِيلَ اللَّهِ وَكَرِهُوا رِضْوَانَهُ مِنَ سُبُحَاتِهِمْ لَهُمُ الْمَلَكُ الْمُنَادِي
يَقُولُ لَكُمْ وَاللَّهُ يَسْمَعُ أَسْمَاعَهُمْ وَكَرِهُوا رِضْوَانَهُ فَاسْتَبَدَّ
لَهُمْ وَأَكْبَرُ الْقَوْلِ وَكَرِهُوا رِضْوَانَهُ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَكَرِهُوا رِضْوَانَهُ
عَنِ سَبِيلِ اللَّهِ وَكَرِهُوا رِضْوَانَهُ فَاسْتَبَدَّ لَكُمْ يُخْرِجُ اللَّهُ أَعْمَالَهُمْ وَكَرِهُوا رِضْوَانَهُ
وَدَعَا إِلَى السَّلَامِ وَكَرِهُوا رِضْوَانَهُ وَاللَّهُ يَسْمَعُ أَسْمَاعَهُمْ وَكَرِهُوا رِضْوَانَهُ
أَعْمَالَهُمْ إِنَّ السَّلَامَ إِلَهُ الْوَلَدِ وَكَرِهُوا رِضْوَانَهُ وَاللَّهُ يَسْمَعُ أَسْمَاعَهُمْ وَكَرِهُوا رِضْوَانَهُ
أَكْبَرُ الْقَوْلِ وَكَرِهُوا رِضْوَانَهُ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَكَرِهُوا رِضْوَانَهُ فَاسْتَبَدَّ
يُخْرِجُ اللَّهُ أَعْمَالَهُمْ وَكَرِهُوا رِضْوَانَهُ فَاسْتَبَدَّ لَكُمْ يُخْرِجُ اللَّهُ أَعْمَالَهُمْ وَكَرِهُوا رِضْوَانَهُ
يَسْمَعُ مَنْ يَسْمَعُ وَمَنْ يَسْمَعُ فَاسْتَبَدَّ عَنْ نَفْسِهِ وَاللَّهُ يَسْمَعُ أَسْمَاعَهُمْ وَكَرِهُوا رِضْوَانَهُ

(उन के दिलों पर ताले लग रहे हैं। (२४) जो लोग हिदायत की राह जाहिर होने के बाद पीठ दे कर फिर गये, जैतान ने (यह काम) उन को सजा कर दिखाया और उन्हें लम्बी (उम्र का वायदा) दिया। (२५) यह इस लिए कि जो लोग खुदा की उतारी हुई (किताब) से बेज्गर है, यह उन से कहते हैं कि कुछ कार्यों में हम तुम्हारी बात भी मानेंगे और खुदा उन के छिपे मश्वरों को जानता है। (२६) तो उस वक़्त (उन का) कैसा (हाल) होगा, जब फ़रिश्ते उन की जान निकालेंगे (और) उन के मुँहों और पीठों पर मारते जाएंगे। (२७) यह इस लिए कि जिस चीज़ से खुदा ना-खुश है, ये उस के पीछे चले और उस की खुश्नूदी को अच्छा न समझे, तो उस ने भी उन के अमलों को बर्बाद कर दिया। (२८)★

क्या वे लोग जिन के दिलों में बीमारी है, यह ख्याल किए हुए हैं कि खुदा उन के कीनों को जाहिर नहीं करेगा? (२९) और अगर हम चाहते तो वे लोग तुम को दिखा भी देते और तुम उन को उन के चेहरों ही से पहचान लेते और तुम उन्हें (उन के) बात-चीत के अन्दाज़ ही से पहचान लोगे और खुदा तुम्हारे आमाँल को जानता है। (३०) और हम तुम लोगों को आजगाएंगे, ताकि जो तुम में लड़ाई करने वाले और साबित कदम रहने वाले हैं, उन को मालूम करे और तुम्हारे हालात जांच लें। (३१) जिन लोगों को सीधा रास्ता मालूम हो गया (और) फिर उन्होंने कुफ़ किया और (लोगों को) खुदा की राह से रोका और पैगम्बर की मुखालफ़त की, वे खुदा का कुछ भी बिगाड़ नहीं सकेंगे और खुदा उन का सब किया-कराया अकारण कर देगा। (३२) मोमिनो! खुदा का इशार्द मानो और पैगम्बर की फ़रमाँबरदारी करो और अपने अमलों को बर्बाद न होने दो। (३३) जो लोग काफ़िर हुए और खुदा के रास्ते से रोकते रहे, फिर काफ़िर ही मर गये, खुदा उन को हरगिज़ नहीं बख्शेगा। (३४) तो तुम हिम्मत न हारो और (दुश्मन को) मुलह की तरफ़ न बुलाओ और तुम तो ग़ालिब हो और खुदा तुम्हारे साथ है। वह हरगिज़ तुम्हारे आमाँल को कम (और गुम) नहीं करेगा। (३५) दुनिया की ज़िदगी तो सिर्फ़ खेल और तमाशा है और अगर तुम ईमान लाओगे और परहेज़गारी करोगे, तो वह तुम को तुम्हारा बदला देगा और तुम से तुम्हारा माल तलब नहीं करेगा। (३६) अगर वह तुम से माल तलब करे और तुम्हें तंग करे तो तुम बुल्ल (कंजूसी) करने लगे और वह (बुल्ल) तुम्हारी बद-नीयती जाहिर कर रहे। (३७) देखो, तुम वे लोग हो कि खुदा की राह में खर्च करने के लिए बुलाए जाते हो तो तुम में ऐसे शस्स भी हैं, जो बुल्ल करने लगते हैं और जो बुल्ल करता है अपने आप से बुल्ल करता है और खुदा बे-नियाज़ है और तुम मुहताज। और अगर तुम मुंह फेरोगे, तो वह तुम्हारी जगह और लोगों को ले आएगा और वे तुम्हारी तरह के नहीं होंगे। (३८)★

४८ सूरः फ़त्ह १११

सूरः फ़त्ह मदनी है, इस में २६ आयतें और चार रकूअ हैं ।

शुरू खुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है ।

(ऐ मुहम्मद !) हम ने तुम को फ़त्ह दी, फ़त्ह भी साफ़ और खुली हुई ।' (१) ताकि खुदा तुम्हारे अगले और पिछले गुनाह बरूण दे और तुम पर अपनी नेमत पूरी करदे और तुम को सीधे रास्ते चलाए । (२) और खुदा तुम्हारी ज़बरदस्त मदद करे । (३) वही तो है, जिसने मोमिनों के दिलों पर तसल्ली फ़रमायी, ताकि उनके ईमान के साथ और ईमान बढ़े और आसमानों और ज़मीन के लश्कर (सब) खुदा ही के हैं और खुदा जानने वाला (और) हिकमत वाला है । (४) (यह) इस लिए कि वह मोमिन मर्दों और औरतों को बहिश्तों में, जिन के नीचे नहरें बह रही हैं, दाखिल करे । वे उस में हमेशा रहेंगे और उन से उन के गुनाहों को दूर कर दे और यह खुदा के नज़दीक बड़ी कामियाबी है । (५) और (इस लिए कि) मुनाफ़िक़ मर्दों और मुनाफ़िक़ औरतों और मुश्रिक मर्दों और मुश्रिक औरतों को, जो खुदा के हक़ में बुरे-बुरे ख्याल रखते हैं, अज़ाब दे । उन्हीं पर बुरे हादसे वाक़अ हों और खुदा उन पर गुस्से हुआ और उन पर लानत की और उन के लिए दोज़ख़ तैयार की और वह बुरी जगह है । (६) और आसमानों और ज़मीन के लश्कर खुदा ही के हैं और खुदा ग़ालिब (और) हिकमत वाला है । (७) (और) हम ने (ऐ मुहम्मद !) तुम को हक़ जाहिर करने वाला और शुश्रूख़बरी सुनने वाला और ख़ौफ़ दिलाने वाला (बना कर) भेजा है । (८) ताकि (मुसलमानों !) तुम लोग खुदा पर और उसके पैग़म्बर पर ईमान लाओ और उस की मदद करो और उस को बुज़ुर्ग़ समझो और सुबह व शाम उस की तस्बीह करते रहो । (९) जो लोग तुम से बैअत करते हैं, वे खुदा से बैअत करते हैं । खुदा का हाथ उन के हाथों पर है । फिर जो अह्द को तोड़े, तो अह्द तोड़ने का नुक़सान उसी को है और जो उस बात को, जिस का उस ने खुदा से अह्द किया है, पूरा करे, तो वह उसे बहुत जल्द बड़ा बदला देगा । (१०) *

१. फ़त्ह के बारे में इस्तिलाफ़ है कि इस से क्या मुराद है । अक्सर का क़ौल यह है कि इस से मुराद हुदैबिया का समझौता है, क्योंकि कभी समझौते का नाम जीत भी रख लेते हैं । हज़रत इब्ने मसूद रज़ि० से रिवायत है कि तुम तो मक्के की फ़त्ह को फ़त्ह ख्याल करते हो और हम हुदैबिया के समझौते को फ़त्ह समझते हैं । बुख़ारी में हज़रत बरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि तुम लोग मक्का की फ़त्ह को फ़त्ह गिनते हो और हम बैअतुरिख़वान को, जो हुदैबिया के दिन हुई, फ़त्ह समझते हैं । इस समझौते के वाकिआत इस तरह हैं कि जमावे रसूल खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सन् ०६ हि० में हुदैबिया जाने से पहले ख़्वाब देखा कि गोया आप ने और आप के अस्थाब ने सार मुंडवाया और बाल कटवाए । यह ख़्वाब आप ने अस्थाब को सुनाया तो यह ख्याल कर के ख़ुश हुए कि इसी साल मक्के में दाख़िल होंगे, तो आप बैतुल्लाह की ज़ियारत और उमरे की नीयत से मक्के को ख़ाना हुए । जब अस्क़ान में पहुँचे तो आप को बशीर बिन मुफ़ियान ने ख़बर दी कि आप की ख़वानगी का हाल सुन कर कुरैश बड़ी फ़ौज के साथ निकले हैं और उन्होंने ने अह्द किया है कि ऐसा हरगिज़ न होने पाए कि आप उन पर ग़ालिब हो कर मक्के में दाख़िल हों और ख़ालिद बिन वलीद भी उन के सवारों में हैं जो कुराअे ग़मीम की तरफ़ आगे भेजा गया है तो आप ने फ़रमाया कि अब दो ही शक़लें हैं, या तो जिहाद कर के कामियाबी और

(शेष पृष्ठ ६७६ पर)

जो गंवार पीछे रह गये, वे तुम से कहेंगे कि हमको हमारे माल और बाल-बच्चों ने रोके रखा। आप हमारे लिए (खुदा से) बलिश मांगें। ये लोग अपनी जुबान से वह बात कहते हैं, जो उन के दिल में नहीं है। कह दो कि अगर खुदा तुम (लोगों) को नुकसान पहुंचाना चाहे या तुम्हें फ़ायदा पहुंचाने का इरादा फ़रमाए, तो कौन है जो उस के सामने तुम्हारे लिए किसी बात का कुछ अस्तियार रहे ? (कोई नहीं,) बल्कि जो कुछ तुम करते हो, खुदा उसे जानता है। (११) बात यह है कि तुम लोग यह समझ बैठे थे कि पैग़म्बर और मोमिन अपने बाल-बच्चों में कभी लौट कर आने ही के नहीं और यही बात तुम्हारे दिलों को अच्छी मासूम हुई और (इसी वजह से) तुम ने बुरे-बुरे ख्याल किए और (आखिरकार) तुम हलाकत में पड़ गए। (१२) और जो शरूस खुदा पर और उस के पैग़म्बर पर ईमान न लाए, तो हम ने (ऐसे) काफ़िरों के लिए आग तैयार कर रखी है। (१३) और आस-मानों और ज़मीन की त्रादशाही खुदा ही की है। वह जिसे चाहे बरूशे और जिसे चाहे सज़ा दे और खुदा बरूशने वाला मेहरबान है। (१४) जब तुम लोग ग़नीमत लेने चलोगे तो जो लोग पीछे रह गए थे, वे कहेंगे हमें भी इजाज़त दीजिए कि आप के साथ चलें। ये चाहते हैं कि खुदा के क़ौल को बदल दें। कह दो कि तुम हरगिज़ हमारे साथ नहीं चल सकते। इसी तरह खुदा ने पहले से फ़रमा दिया है। फिर कहेंगे, (नहीं) तुम तो हम से हसद रखते हो। बात यह है कि ये लोग समझते ही नहीं, मगर बहुत कम। (१५) जो गंवार पीछे रह गए थे, उन से कह दो कि तुम जल्द एक सख्त लड़ाकू क़ौम (से लड़ाई के) लिए बुलाए जाओगे। उन से तुम (या तो) जंग करते रहोगे या वे इस्लाम ले आएंगे, और अगर तुम हुकम मानोगे तो खुदा तुम को अच्छा बदला देगा और अगर मुंह फेर लोगे जैसे पहली बार फेरा था, तो वह तुम को बुरी तकलीफ़ की सज़ा देगा। (१६) न तो अंधे पर गुनाह है (कि लड़ाई के सफ़र से पीछे रह जाए) और न लंगड़े पर गुनाह है और न बीमार पर गुनाह है और जो शरूस खुदा और उस के पैग़म्बर के फ़रमान पर चलेगा, खुदा उस को बहिश्त में दाख़िल करेगा जिनके तले नहरें बह रही हैं और जो मुंह मोड़ेगा, उसे बुरे दुख की सज़ा देगा * (१७)

(ऐ पैग़म्बर !) जब मोमिन तुम से पेड़ के नीचे बैठ कर रहे थे, तो बहुत खुश हुआ और जो सच्चाई और खुलूस उन के दिलों में था, वह उस ने मालूम कर लिया तो उन पर तसल्ली नाज़िल

१. जब रसूल खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हिज़रत के छठे साल हुदैबिया से लौट कर मदीना तशरीफ़ लाए, तो खुदा ने आप को फ़तहे ख़ैबर का वायदा दिया और वहां की ग़नीमतों के लिए उन्हीं लोगों को ख़ास फ़रमाया जो हुदैबिया में आप के साथ थे, जब आप ख़ैबर की तरफ़ तशरीफ़ ले चले, तो जो लोग हुदैबिया में नहीं गये थे, उन्हीं ने ग़नीमत के लालच से दहर्वास्त की कि हम को भी साथ ले चलिए। जवाब मिला कि तुम हमारे साथ चलो ही मत, क्योंकि ख़ैबर की ग़नीमत में तुम लोगों का कुछ हिस्सा नहीं और खुदा का यही इशारे है। तो वे लोग कहने लगे कि खुदा ने तो ऐसा नहीं कहा होगा। यों कहो कि तुम को हम से हसद है और सारी हसद यह कि तुम हमें ग़नीमत में शरीक नहीं करना चाहते। खुदा ने फ़रमाया कि ये अहमक लोग हैं, उन को इन बातों के समझने की अकल ही नहीं।

व मगानि-म कसी-र-तय्यअ-खुजूनहा ॥ व कानल्लाहु अजीजन् हकीमा (१६) व-अ-
दकुमुल्लाहु मगानि-म कसी-र-तन् तअ-खुजूनहा फ-अज-ल लकुम् हाजिही व कफ-फ
ऐदि-यन्नासि अन्कुम् ॥ व लि-तकू-न आयतल्-लिमुअमिनी-न व यहिद-यकुम् सिरातम्-
मुस्तकीमा ॥ (२०) व उख्रा लम् तकिदरु अलैहा कद् अहातल्लाहु बिहा ॥ व
कानल्लाहु अला कुल्लि शैइन् कदीरा (२१)

व लौ का-त-लकुमुल्लजी-न क-फरू स-वल्लवुल्-
अद्बा-र सुम्-म ला यजिदू-न वलिय्यव-व ला
नसीरा (२२) सुन्नतल्लाहिल्लती कद् ख-लत्
मिन् कब्बु ॥ व लन् तजि-द लिसुन्नतिल्लाहि
तब्दीला (२३) व हुवल्लजी कफ-फ ऐदि-
यहुम् अन्कुम् व ऐदि-यकुम् अन्हुम् बि-बलि
मक्क-त मिम्बअ-दि अन् अज-फ-रकुम् अलैहिम्
व कानल्लाहु बिमा तअ-मलू-न बसीरा (२४)
हुमुल्लजी-न क-फरू व सद्दकुम् अनिल-
मस्जिदिल्-हरामि वल-हद्-य मअ-कूफन् अय्यव-
लु-ग महिल्लह ॥ व लौला रिजालुम्-मुअमिन्-न व

وَاللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِهِ وَخَلِّهِمْ وَسَلِّمْ وَكُنْ لَهُمْ أَجْرًا كَمَا كُنْتَ لَهُمْ حَكِيمًا ۝ وَعَدَّ اللَّهُ مَعَهُمْ كَيْدَهُ نَاصِرًا وَهُمْ أَهْلُ الْفَيْءِ وَالْغَنَمِ ۝
وَعَلَى آدَمَ إِذَا قَالَ لِقَوْمِهِ إِذَا عَمِلْتُمْ تَابِعُوا أَوْ تَبِرُّوا فَأُولَئِكَ كَانُوا لِيَّ خَاصَّةً ۝ وَآخَرَى لَوْ تَقَرُّوا وَآخَرَى لَوْ تَفَرَّدُوا فَكُلُوا شَرًّا ۝ إِنَّ اللَّهَ كَانَ اللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرًا ۝ وَلَوْ أَنَّكَ كُنْتَ تَفْقَهُونَ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوَلَّوْا
الَّذِينَ كَفَرُوا لَا يَجِدُونَ وَلِيًّا وَلَا نَصِيرًا ۝ سُبْحَانَ الَّذِي قَدْ فَتَنَ
مَنْ قَبْلَ ۝ وَكَانَ يُجِدُ لِكُلِّ شَيْءٍ قَدِيرًا ۝ وَهُوَ الَّذِي كَفَّ أَيْدِيَهُمْ
عَنِ الْعِبَادَةِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ۝ وَكَانَ اللَّهُ غَافِلًا عَنِ الَّذِينَ كَفَرُوا لَعَلَّهُمْ
يَرْجِعُونَ ۝ هُمُ الَّذِينَ كَفَرُوا وَاصْبِرْ لَهُمْ صَبْرًا
الْعَوَامِ وَالْأَعْيَانِ مَعَكُوا ۝ إِنَّ بَيْتَهُ لَخَبِيرٌ ۝ وَلَوْ أَنَّ رِجَالَ الْقَوْمِ
وَأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَا يَفْقَهُونَ ۝ إِنَّهُمْ قَوْمٌ مُّشْرِكُونَ وَلَهُمْ عَذَابٌ
يَعْلَمُونَ ۝ يُدْخِلُ اللَّهُ فِي رَحْمَتِهِ مَنْ يَشَاءُ ۝ لَوْلَا الْعَصَا
الَّذِينَ كَفَرُوا وَهُمْ عَصَا آيَاتِهِ ۝ فَجَعَلَ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي
قُلُوبِهِمُ الْحَبِيصَةَ فَصَيَّرَ الْإِنْسَانَ أَكْثَرَ شَيْئًا مِّنْ نَّسَبِهِ ۝ عَلَّامُ
وَعَلَى الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ كُلِّتِ الْفِتْنَى ۝ وَكَانُوا أَحَقُّ بِهَا وَأَوْلَى ۝
وَكَانَ اللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمًا ۝ لَقَدْ صَدَّقَ اللَّهُ رَسُولَهُ الْوَحْيَ بِالْحَقِّ
لَنُحْلِلَنَّ الْجَنَّةَ لِلْمُحْسِنِينَ شَاءَ اللَّهُ ۝ وَفِيهَا يُرْسِلُ السُّيُوفُ وَتُجَارَى

निसाउम्-मुअमिनातुल्-लम् तअ-लमूहुम् अन् त-त-ऊहुम् फ-तुसीबकुम् मिन्हुम् म-अरंतुम्-
बिगैरि अल्मिन्-लि-युदखिल्लल्लाहु फी रह्मतिही मय्यशाउ-लौ त-जय्यलू ल-अज-ब-
नल्लजी-न क-फरू मिन्हुम् अजाबन् अलीमा (२५) इज् ज-अ-लल्लजी-न क-फरू फी
कुलूबिहिमुल्-हमिय-त हमिय-तल्-जाहिलिय्यति फ-अज-लल्लाहु सकी-न-तह अला
रसूलिही व अ-लल्-मुअमिनी-न व अलज-महुम् कलि-म-त-तक्वा व कानू अ-हक्-क बिहा
व अह-लहा ॥ व कानल्लाहु बिकुल्लि शैइन् अलीमा ॥ (२६) ल-कद् स-द-कल्लाहु
रसूलहु-अ-या बिल्हक्कि ॥ ल - तदखुल्लुल् - मस्जिदल् - हरा-म इन्शाअल्लाहु
आमिनी-न ॥ मुहल्लिकी-न रुसकुम् व मुकस्सिरी-न ॥ ला तसाफू-न ॥ फ-अलि-म
मा लम् तअ-लमू फ-ज-अ-ल मिन् दूनि जालि-क फत्-हन् करीबा (२७)

फ़रमाई और उन्हें जल्द फ़तह इनायत की। (१८) और बहुत सी ग़नीमतें, जो उन्होंने हासिल की और खुदा ग़ालिब हिकमत वाला हो। (१९) खुदा ने तुम से बहुत सी ग़नीमतों का वायदा फ़रमाया है कि तुम उन को हासिल करोगे, सो उस ने ग़नीमत की तुम्हारे लिए जल्दी फ़रमायी और लोगों के हाथ तुम से रोक दिए। गरज यह थी कि यह मोमिनों के लिए (खुदा की) कुदरत का नमूना है और वह तुम को सीधे रास्ते पर चलाए। (२०) और और (ग़नीमतें दीं), जिन पर तुम कुदरत नहीं रखते थे (और) वह खुदा ही की कुदरत में थी और खुदा हर चीज़ पर कुदरत रखता है। (२१) और अगर तुम से काफ़िर लड़ते तो पीठ फेर कर भाग जाते, फिर किसी को दोस्त न पाते, और न मददगार। (२२) (यही) खुदा की आदत है जो पहले से चली आती है और तुम खुदा की आदत कभी बदलती न देखोगे। (२३) और वही तो है, जिस ने तुम को उन (काफ़िरों) पर फ़तहवाब करने के बाद मक्का की सरहद में उन के हाथ तुम से और तुम्हारे हाथ उन से रोक दिए और जो कुछ तुम करते हो, खुदा उस को देख रहा है। (२४) ये वही लोग हैं, जिन्होंने कुफ़्र किया और मस्जिदे हुराम से रोक दिया और क़ुर्बानियों को भी कि अपनी जगह पहुंचने से रुकी रहीं। और अगर ऐसे मुसलमान मर्द और मुसलमान औरतें न होतीं, जिन को तुम जानते न थे कि अगर तुम उन को पा-माल कर देते तो तुम को उन की तरफ़ से बे-ख़बरी में नुक़मान पहुंच जाता (तो भी तुम्हारे हाथ फ़तह हो जाती मगर देर) इस लिए (हुई) कि खुदा अपनी रहमत में जिस को चाहे दाख़िल कर ले और अगर (दोनों फ़रीक) अलग-अलग हो जाते, तो जो उन में काफ़िर थे, उन को हम दुख देने वाला अज़ाब देते। (२५) जब काफ़िरों ने अपने दिलों में ज़िद की और ज़िद भी जाहिलियत की तो खुदा ने अपने पैग़म्बर और मोमिनों पर अपनी तरफ़ से तस्कीन नाज़िल फ़रमायी और उन को परहेज़गारी की बात पर कायम रखा और वे इसी के हक़दार और अहल थे और खुदा हर चीज़ से ख़बरदार है। (२६) ★

बेशक़ खुदा ने अपने पैग़म्बर को सच्चा (और) सही ख़ाब दिखाया कि तुम, खुदा ने चाहा तो मस्जिदे हुराम में अपने सर मुंडवा कर और अपने बाल कतरवा कर अमन व अमान से दाख़िल होगे और किसी तरह का ख़ौफ़ न करोगे। जो बात तुम नहीं जानते थे, उस को मालूम थी, सो उस ने

१. चूँकि इस बैअत की वजह से खुदा मोमिनों से खुश हुआ था, इस लिए इस को बैअतुर्रिख़ान कहते हैं। यह बैअत इस बात पर ली गयी थी कि मुसलमान क़ुरैश से लड़ाई करेंगे और मरते दम तक नहीं भागेंगे, इसके बदले में खुदा ने मोमिनों के दिलों में तसल्ली पैदा की और ज़न्द ख़ैबर की फ़तह नमीव की जिस में बहुत-सी ग़नीमतें हाथ आयीं। बैअत के वक़्त जनाब रसूल खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम, अक़्बर लोगों के क़ौल के मुताबिक़ केकर के पैड़ और कुछ के मुताबिक़ बेरी के तले तशरीफ़ रखते थे। चूँकि लोग बैअत की वजह से इस पैड़ की इज़्जत के लिए उसके पास आने लगे थे, तो हज़रत उमर रज़ि० ने इस ख़्याल से कि इज़्जत इबादत की हद तक न पहुंच जाए, उस को कटवा डाला।

२. इस आयत में मक्का फ़तह होने में देर की वजह बयान फ़रमायी गयी, वह यह कि मक्के में इस तरह की औरतें और मर्द मुसलमान भी थे कि जान के अंदेसे से अपना ईमान कुफ़्रकार से छिपाए रखते थे और खुदा के पिघा इन का हाल किसी को मालूम न था, तो अगर खुदा मुसलमानों को मक्के पर चढ़ाई का हुक्म दे देता तो जो मुपूक काफ़िरों के साथ होता, वही अनजाने में भी उन के साथ होता और खुदा को यह मंज़ूर न था और अगर वे लोग इन में न होते तो मक्का की फ़तह में देर न होती।

हुवल्लजी असं-ल रसूलह बिल्हुदा व दीनिल्-हकिक्क लियुज्जिह-रह अ-ल-द-
दीनि कुल्लिही व कफा बिल्लाहि शहीदा (२८) मुहम्मदुर-रसूलुल्लाहि वल्लजी-न
म-अह अशिद्दाउ अ-ल-कुफकारि रुह-माउ बंनहुम् तराहुम् रुक्क - अन्
सुज्ज-दंध्यन्तगून फज्ज-लम्-मिनल्लाहि व रिज्जवानन् सीमाहुम् फ्री वुज्जहिहम्
मिन् अ-सरिस्सुज्जिद् जालि-क म-सलुहुम् फित्तौ-
राति हव म-सलुहुम् फिल्लिज्जलि हव क-जिअन्
अस्-र-ज शत्-अह फआ-ज-रह फस्तग-ल-अ फस्-
तवा अला सूकिही युअ-जिबुज्-जुर-रा-अ लि-
यगी-अ बिहिमुल्-कुफफा-र व अ-दल्लाहुल्-लजी-न
आमनू व अमिलुस्सालिहाति मिन्हुम्
मग्-फिर-तत्-व-व अजरन् अजीमा (२९)

४६ सूरतुल हुजुराति १०६

(मदनी) इस सूर. में अरबी के १५७३ अक्षर,
३५० शब्द, १८ आयतें और २ रकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम •

या अय्युहल्लजी-न आमनू ला तुक्दिदू
बंन य-दयिल्लाहि व रसूलिही वत्तकुल्ला-ह
इन्ल्ला-ह समीअन् अलीम (१) या अय्युहल्लजी-न आमनू ला तर-
फज्ज अस्-वातकुम् फ्री-क सौतिन्नबिय्य व ला तज्-हरू लह बिल्कोलि क-जहिर
वअ-ज्रिकुम् लि-बअ-ज्रिन् अन् तह-ब-त अअ-मालुकुम् व अन्तुम् ला तषअरुन (२)
इन्ल्लजी-न यगुज्जून अस्वातहुम् अिन्-द रसूलिल्लाहि उलाइ-कल्-लजीनम-त-ह-नल्लाहु
कुल्लहुम् लिक्त्वा लहुम् मरिफ-र-तु-व-व अजरन् अजीम (३) इन्ल्लजी-न युना-
दून-क मिअर्राइल्-हुजुराति अक्सरहुम् ला यअ-किलून (४) व लौ अन्नहुम् स-बर्क
हत्ता तरु-ज इस्लेहिम् लका - न खैरल्लहुम् वल्लाहु गफूरर्रहीम (५)

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَقْرَأُوا بَالِغًا مِنْ دُونِ ذَلِكَ قَسْرًا مُعْتَمِدِينَ
وَمَنْ يَفْعَلْ يَكْفُرْ بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَالَّذِينَ آمَنُوا إِنَّهُمْ عَمَدٌ مَشْكُورَةٌ
وَالَّذِينَ يَتَّبِعُوا تُبَاهَىٰ رَبُّهُمْ وَهُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَالَّذِينَ آمَنُوا
وَلَمْ يَكُنْ لَهُمْ مَالٌ فَلَمْ يَسْأَلُوا فِي شَيْءٍ مِنْهُمْ فَاذْكُرُوا الْفُقَرَاءَ وَالَّذِينَ
آمَنُوا وَلَمْ يَكُنْ لَهُمْ مَالٌ فَلَمْ يَسْأَلُوا فِي شَيْءٍ مِنْهُمْ فَاذْكُرُوا الْفُقَرَاءَ
وَالَّذِينَ آمَنُوا وَلَمْ يَكُنْ لَهُمْ مَالٌ فَلَمْ يَسْأَلُوا فِي شَيْءٍ مِنْهُمْ
فَاذْكُرُوا الْفُقَرَاءَ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَلَمْ يَكُنْ لَهُمْ مَالٌ فَلَمْ يَسْأَلُوا
فِي شَيْءٍ مِنْهُمْ فَاذْكُرُوا الْفُقَرَاءَ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَلَمْ يَكُنْ لَهُمْ
مَالٌ فَلَمْ يَسْأَلُوا فِي شَيْءٍ مِنْهُمْ فَاذْكُرُوا الْفُقَرَاءَ

उस से पहले ही जल्ब फ़रह करा दी।' (२७) वही तो है, जिस ने अपने पैगम्बर को हिदायत (की किताब) और सच्चा दीन दे कर भेजा, ताकि उस को तमाम दीनों पर ग़ालिब करे और हक़ ज़ाहिर करने के लिए खुदा ही काफ़ी है। (२८) मुहम्मद खुदा के पैगम्बर हैं, और जो लोग उन के साथ हैं, वे काफ़िरों के हक़ में तो सलत हैं और आपस में रहम दिल। (ऐ देखने वाले!) तू उन को देखता है कि (खुदा के आगे) झुके हुए, सर सज्दे में रखे हुए हैं और खुदा का फ़ज़ल और उसकी खुशनुदी तलब कर रहे हैं। सज्दों (की ज़्यादाती) के असर से उन की पेशानियों पर निशान पड़े हुए हैं। उन की यही सिफ़तें तौरात में (दर्ज) हैं और यही सिफ़तें इंजील में हैं। (वे) गोया एक खेती हैं, जिस ने (पहले ज़मीन से) अपनी सूई निकाली, फिर उस को मजबूत किया, फिर मोटी हुई और फिर अपनी नाल पर सीधी खड़ी हो गयी और लगी खेती वालों को खुश करने ताकि काफ़िरों का जी जलाए। जो लोग उन में से ईमान लाए और नेक अमल करते रहे, उन से खुदा ने गुनाहों की बलिश्श और बड़े अज़्र का वायदा किया है। (२९)★

४६ सूर: हुजुरात १०६

सूर: हुजुरात मदनी है और इस में अठारह आयत और दो रकूअ हैं।

शुरू खुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

मोमिनो! (किसी बात के ज़वाब में) खुदा और उस के रसूल से पहले न बोल उठा करो और खुदा से डरते रहो। बेशक खुदा सुनता-जानता है। (१) ऐ ईमान वालो! अपनी आवाज़ें पैगम्बर की आवाज़ से ऊंची न करो और जिस तरह आपस में एक दूसरे से ज़ोर से बोलते हो (उस तरह) उनके सामने ज़ोर से न बोला करो। (ऐसा न हो) कि तुम्हारे आमांल बर्बाद हो जाएं और तुम को ख़बर भी न हो। (२) जो लोग खुदा के पैगम्बर के सामने दबी आवाज़ से बोलते हैं, खुदा ने उन के दिल तक्वे के लिए आजमा लिए हैं। उन के लिए बलिश्श और बड़ा बदला है। (३) जो लोग तुम को हुज़रों के बाहर से आवाज़ देते हैं, उन में अक्सर बे-अक़ल हैं। (४) और अगर वे सन्न किए रहते, यहां तक कि तुम खुद निकल कर उन के पास आते, तो यह उन के लिए बेहतर था और खुदा तो

१- जनाब रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जीक्रादा सन् ०६ हि० में हुदैबिया से मदीने को वापस तशरीफ़ ले गये। ज़िलहिज्जा और मुहर्रम बहां ठहरे। सफ़र के महीने में खैबर पर चढ़ाई कर के उस को फ़तह किया और फिर मदीने को लौट गये। जीक्रादा ०७ हि० आप और हुदैबिया वाले उमरा करने के लिए मक्का को रवाना हुए तो आप ने ज़ुल हज़ीज़ा से एहराम बांधा और कुर्बानियों के जानवरों को साथ लिया। गरब आप मक्के में बिला किसी डर के दाख़िल हुए और जो बातें आप ने ख़ाब में देखी थीं, वे इस साल पूरी हुयीं। इसी ख़ाब के सच होने का इस आयत में शिक है।

या अय्युहल्लजी-न आमनू इन् जा-अकुम् फासिकुम्-बि-न-बइन् फ-त-बय्यनू अन्
तुसीबू क्रौमम्-बिजहालतिन् फतुस्बिह अला मा फ-अल्लुम् नादिमीन (६) वअ-लम्
अन्-न फीकुम् रसूलल्लाहि लो यतीअकुम् फी कसीरिम्-मिनल्-अमिर ल-अनितुम्
व लाकिन्नल्ला-ह हब्ब-व इलैकुमुल्-ईमा-न व जय्य-नह फी कलूबिकुम् व कर-ह

इलै-कुमुल्-कुफ-र वल्फुसू-क वल् - अस्या-न
उलाइ-क हुमुर्-राशिदून ॥ (७) फज्ज-लम्-

मिनल्लाहि व निअ-म-तन् ७ वल्लाहु अलीमुन्
हकीम (८) व इन् ता - इफतानि

मिनल् - मुअमिनीनक-न - तलू फ - अस्लिह
बैनहुमा ८ फ-इम् - ब-गत् इहदाहुमा

अ-लल्-उरुरा फक्रातिलुललती तब्नी हत्ता
तफ्री-अ इला अमिरल्लाहि ८ फ-इन्

फा-अत् फ-अस्लिह बैनहुमा बिल्-अद्लि व
अक्सितू ७ इन्नल्ला - ह युहिब्बुल् -

मुक्सितीन (९) इन्नमल् - मुअमिन्-न
इस्वतुन् फ-अस्लिह बै-न अ-खवैकुम् वत्तकुल्ला-ह

ल-अल्लकुम् तुर-हमून ★● (१०) या अय्युहल्लजी-न आमनू ला यस्खर्
क्रौमुम्-मिन् क्रौमिन् असा अय्यकून् खैरम्-मिन्हुम् व ला निसाउम्-मिन् निसाइन

असा अय्यकुन् - न खैरम्मिन्हुन - न ८ व ला तल्मिज्ज अन्फुसकुम् व ला
तनाबज्ज बिल्-अल्काबि ७ बिअ-स-लिस्मुल् - फुसूकु बअ-दल्-ईमानि ८ व मल्लम्

यतुब् फ-उलाइ-क हुमुज्जालिमून (११) या अय्युहल्लजी-न आमनुज्जतिन्
कसीरम्-मिन्-अल्लि इन्-न बअ-ज्ज-अल्लि इस्मु-व-व ला त-जस्ससू व ला

यग-तब् बअ-ज्ज-कुम् बअ-ज्ज-न् ७ अ-युहिब्बु अ-हदुकुम् अय्यअ-कु-ल लह-म अखीहि
मै-तन् फ-करिह - तुमूहु ७ वत्तकुल्ला-ह ७ इन्नल्ला - ह तव्वाबुरहीम (१२)

اَلَمْ يَخْرُجْ الْهَدْيُ وَاللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ ۝ اَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اِنَّ جَاءَكُمْ
فَاَوْسَ وَبَكْرُ الْبَيْتِ اَنْ تَحْمِلُوهُمَا عَلَ الْفُلِ فَاصْلَحُوا
لَهُمْ ۝ وَاَعْلَمُوا اَنْ فَكَرَ رَسُولُ اللَّهِ اَوْ يَحْمِلُوهُمَا فِي
فِي الْاَمْرِ اَمْرُهُمْ وَلَكِنَّ اللَّهَ حَبِيبُ الْاِيْمَانِ وَرَبُّهُ فِي
عُلُوِّكُمْ وَكَذَلِكَ الْعِلْمُ وَالْفُتُوْحُ وَالْمِصْرَانِ اَوَّلُ الْاَمْرِ
الْمُشْرَعُونَ ۝ فَضَلَّاهُ مِنَ الْاَمْرِ وَرَبُّهُ ۝ وَاللَّهُ عَلَيْهِ حَكْمُهُ ۝ وَ
اِنَّ طَائِفَةً مِنَ الْمُؤْمِنِينَ اقْتَضُوا فَاَصْلَحُوا اَيْنَهُمَا اَنْ يَخْرُجَ
اِسْمُهُمَا عَلَى الْاَمْرِ فَقَدْ اَتَاهُ الَّذِي تَقِي حَقَّ رَأْيِ رَأْيِ اللَّهِ
وَأَنَّ هَذِهِ فَاَصْلَحُوا اَيْنَهُمَا الْعَدْلُ ۝ اَقْرَبُوا اِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ
الْمُتَوَاضِعِينَ ۝ اَيُّهَا الْمُؤْمِنُونَ لَوْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ اَنَّ
اللَّهُ لَعَلَّكُمْ تَرْضَوْنَ ۝ اَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اَلَيْسَ قَوْمٌ مِّنْ قَوْمٍ
عَلَيْ اَنْ يَكُوْنُوا اَخِيْرًا مِنْهُمْ وَلَا يَكُوْنُوا قَوْمًا مِّنْ قَوْمٍ
خَيْرًا مِنْهُمْ وَلَا يَكُوْنُوا اَنْفُسُهُمْ وَلَا يَكُوْنُوا اَيُّهَا الَّذِي
اَلَيْسَ الْقَوْمُ بَعْدَ الْاِيْمَانِ وَمَنْ لَمْ يَكُنْ اَوَّلًا مِّنَ الظَّالِمِيْنَ
اَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا الْجَنَّةُ الْكَبِيْرَةُ اِلَى الْقَوْمِ اَلْقَوْمِ اِنَّ بَعْضَ الْقَوْمِ
وَلَا تَحْمِلُوْهُمَا وَلَا يَكُوْنُوا بَعْضُكُمْ بَعْضًا اَحْسَنُ اَمَّا اَنْ يَكُوْنُوا
تَحْمِلُوْهُمَا لَكُمْ مَعَهُ وَالْقَوْمُ اَلَّذِي اَلَى اللَّهِ تَوَكَّلْ رَحِيْمًا ۝

बल्लाने वाला मेहरबान है। (५) मोमिनो ! अगर कोई बद-किरदार तुम्हारे पाम कोई खबर लेकर आए, तो खूब तहकीक कर लिया करो, (शायद) कि किसी क्रोम को ना-दानी से नुकसान पहुंचा दो, फिर तुम को अपने किए पर जर्मिन्दा होना पड़े। (६) और जान रखो कि तुम में खुदा के पैगम्बर हैं। अगर बहुत-सी बातों में वह तुम्हारा कहा मान लिया करे तो तुम मुश्किल में पड़ जाओ, लेकिन खुदा ने तुम को ईमान अजीज बना दिया और उस को तुम्हारे दिलों में सजा दिया और कुफ़ और गुनाह और ना-फ़रमानी से तुम को बेजार कर दिया, यही लोग हिदायत के रास्ते पर हैं। (७) (यानी) खुदा के फ़ज़ल और एहसान से और खुदा जानने वाला (और) हक्ममत वाला है। (८) और अगर मोमिनों में से कोई दो फ़रीक आपस में लड़ पड़े, तो उन में सुलह करा दो। और अगर एक फ़रीक दूसरे पर ज्यादती करे तो ज्यादती करने वाले से लड़ो, यहां तक कि वह खुदा के हुक्म की तरफ़ रुजूआ जाए। पस जब वह रुजूआ जाए तो दोनों फ़रीक में बराबरी के साथ सुलह करा दो और इंसाफ़ से काम लो कि खुदा इंसाफ़ करने वालों को पसन्द करता है। (९) मोमिन तो आपस में भाई-भाई हैं, तो अपने दो भाइयों में सुलह करा दिया करो। और खुदा से डरते रहो, ताकि तुम पर रहमत की जाए। (१०) ★●

मोमिनो ! कोई क्रोम किसी क्रोम का मज़ाक न उड़ाये। मुम्किन है कि वे लोग उन से बेहतर हों और न औरतें औरतों का (मज़ाक उड़ाएं) मुम्किन है कि वे उन में अच्छी हों और अपने (मोमिन भाई) को ऐब न लगाओ और न एक-दूसरे का बुरा नाम रखो। ईमान लाने के बाद बुरा नाम (रखना) गुनाह है। और जो तौबा न करें, वे ज़ालिम हैं ! (११) ऐ ईमान वाले ! बहुत गुमान करने से बचो कि कुछ गुमान गुनाह है और एक-दूसरे के हाल की टाह में न रहना करो और न कोई किसी की ग़ीबत करे। क्या तुम में से कोई इस बात का पसन्द करेगा कि अपने मरे हुए भाई का गोश्त खाये ? इस से तो तुम ज़रूर नफ़रत करोगे, (तो ग़ीबत न कर्गे) और खुदा का डर रखो।

१. यानी जब कोई ईमान ले आए, तो उस को यहूदी या ईसाई या मजूसी वगैरह कह कर नहीं पुकारना चाहिए। ऐसे नामों में पुकारना गुनाह है। अगर कोई यहूदी था तो इस्लाम लाने में पहले था। इसी तरह ईसाई और मजूसी वगैरह, ये नाम इस्लाम से पहले थे, लेकिन इस्लाम लाने के बाद न यहूदी यहूदी रहा, न ईसाई ईसाई, न मजूसी मजूसी, इन जाहिलियत के नामों से मुसलमानों को क्यों पुकारा जाए और उन को रंज क्यों पहुंचाया जाए या यह कि ईमान लाने के बाद फ़ासिक कहना बुरा नाम (रखना) है और बुरा नाम रखना बुरा है। जो गुनाह किसी से इस्लाम लाने से पहले हुआ हो, अब जब कि उस से तौबा कर लिया है, तो वह उस से मंज़ूब क्यों किया जाए और उसे बुरे नाम से क्यों ताना दिया जाए या यह कि ईमान लाने के बाद नाम रखना यानी (फ़िस्क से मंज़ूब करना) बुरा है। बहरहाल ऐब लगाने, ताने देने, बुरा नाम रखने, बुरे लक़ब से पुकारने से मना किया गया है।

बेशक खुदा तीबा क्रुबूल करने वाला मेहरबान है। (१२) लोगो ! हम ने तुम को एक मंद और एक औरत से पैदा किया और तुम्हारी क्रौमें और कबीले बनाये, ताकि एक-दूसरे की पहचान करो (और) खुदा के नजदीक तुम में ज्यादा इच्छत वाला वह है, जो ज्यादा परहेजगार है। बेशक खुदा सब कुछ जानने वाला (और) सब से खबरदार है। (१३) देहाती कहते हैं कि हम ईमान ले आए। कह दो कि तुम ईमान नहीं लाए (बल्कि यों) कहो कि हम इस्लाम लाए हैं और ईमान तो अब भी तुम्हारे दिलों में दाखिल ही नहीं हुआ और अगर तुम खुदा और उस के रसूल की फरमांबरदारी करोगे तो खुदा तुम्हारे आमाल में से कुछ कम नहीं करेगा। बेशक खुदा बरकशने वाला मेहरबान है। (१४) मोमिन तो वे हैं जो खुदा और उस के रसूल पर ईमान लाए, फिर शक में न पड़े और खुदा की राह में जान और माल से लड़े। यही लोग (ईमान के) सच्चे हैं। (१५) उन से कहो, क्या तुम खुदा को अपनी दीनदारी जतलाते हो और खुदा तो आसमानों और ज़मीन की सब चीज़ों को जानता है और खुदा हर चीज़ को जानता है। (१६) ये लोग तुम पर एहसान रखते हैं कि मुसलमान हो गये हैं। कह दो कि अपने मुसलमान होने का मुझ पर एहसान न रखो, बल्कि खुदा तुम पर एहसान रखता है कि उस ने तुम्हें ईमान का रास्ता दिखाया, बंशते कि तुम सच्चे मुसलमान हो। (१७) बेशक खुदा आसमानों और ज़मीन की छिपी बातों को जानता है और जो कुछ तुम करते हो, उसे देखता है। (१८)★



५० सूर: काफ़ ३४

सूर: काफ़ मक्की है और इस में पैंतालीस आयतें और तीन रुकूअ हैं।

शुरू खुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

काफ़, कुरआन मजीद की कसम (कि मुहम्मद खुदा के पैगम्बर हैं,) (१) लेकिन इन लोगों ने नाज्जुब किया कि उन्हीं में से एक हिदायत करने वाला उन के पास आया, तो काफ़िर कहने लगे कि यह बात तो (बड़ी) अजीब है। (२) भला जब हम मर गये और मिट्टी हो गये (तो फिर ज़िंदा होंगे ?) यह ज़िंदा होना (अक़ल से) दूर है। (३) उन के जिस्मों को ज़मीन जितना (खा-खा कर) कम करती जाती है, हमको मालूम है और हमारे पास लिखी याद-दाश्त भी है। (४) बल्कि (अजीब बात यह है कि) जब उन के पास (दीन) हक़ आ पहुँचा तो उन्हीं ने उस को झूठ समझा, सो यह एक

अ-क-लम् यन्जुल् इलस्समा-इ फीकहुम् कै-फ बनैनाहा व जय्यन्नाहा व मा लहा मिन्
फुरुज (६) वल्अर्-ज म-ददनाहा व अल्कैना फ्रीहा रवासि-य व अम्बत्ना फ्रीहा
मिन् कुल्लि जौजिम्-बहीज ॥ (७) तव्सि-र-तु-व जिबरा लिक्लिल अन्दिम्-मुनीब
(८) व नज्जल्ना मिनस्समा-इ मा-अम्-मुबा-र-कन् फ-अम्बत्ना बिही जन्नातिव-व

हब्बल्-हसीद ॥ (९) वन्नख-ल बासिकातिल्लहा
तल्अन् नजीद ॥ (१०) रिक्कल्-लिल्अिबादि ॥

व अह्येना बिही बल्द-तम्-मै-तन् ७ कजालिकल्-
खुरुज (११) कज्ज-बत् कब्-लहुम् कौमु

नूहिब-व अस्हाबुरैस्सि व समूद ॥ (१२) व
आदु-व-व फिर्ओनु व इस्वानु लूत ॥ (१३)

व अस्हाबुल्-ऐकति व कौमु तुब्बिअन् ७ कुल्लुन्
कज्ज-बर्हसु-ल फ-हक्-क वओद (१४) अ-फ-

अयीना बिल्खल्किल्-अब्दलि ७ बल् हुम् फ्री
लव्सिम्-मिन् खल्किन् जदीद * (१५) व

ल-कद् ख-लकन्ल् - इन्सा - न व नअ-
लमु मा तुवस्विमु बिही नफ्सुह ७ व

नहन् अक्-रबु इलैहि मिन् हबिलल्-वरीद (१६) इज् य-त-लक्कल्-
मु-त-लक्कियानि अनिल्यमीनि व अनिशिशमालि कओद (१७) मा यल्फिज्

मिन् कौलिन् इल्ला लदैहि रकीबुन् अतीद (१८) व जा-अत् सक्-रतुल्-मीति
बिल्हक्कि ७ जालि-क मा कुन्-त मिन्हु तहीद (१९) व नुफि - ल

फिस्सूरि ७ जालि-क यौमुल् - वओद (२०) व जा-अत् कुल्लु नफ्सिम्-
म-अहा साइकु-व-व शहीद (२१) ल-कद् कुन्-त फ्री गफ्-लतिम्-मिन् हाजा फ-क-

शफ्ना अन्-क गिता-अ-क फ-ब-सरकल्-यो-म हदीद (२२) व का-ल करीनुह हाजा मा
ल-दय-य अतीद ७ (२३) अल्किया फ्री ज-हन्न-म कुल्-ल कफफारिन् अनीद ॥ (२४)

قُرْبِي ۝ اَلَمْ يَنْظُرْ اِلَى السَّمَاءِ فَوَجَدَ كَيْفَ بَيْنَهُمَا وَزَكَاةً ۝ وَمَا
لَهُمَا مِنْ قُرْبٍ ۝ وَلَا اَرْضَ يَدْرُسُهَا ۝ وَالْقِيَامَتُهَا اَيُّهَا رُؤُوسُ ۝ وَاجْتَمَاعُ
بَيْنَهُمَا مِنْ قُلُوبٍ ۝ وَوَكَّرَىٰ لِكُلِّ عَيْنٍ مِّمَّنْ
وَرَزَّ اَمِنْ السَّمَاءِ مَا فُورَكَ اَنَّا بَيْنَهُمَا جَبَلٌ ۝ وَحَبَّ السَّوْبِي ۝
وَالْحَلَّ اَيْتُهَا طَلَمَ تَحْيِي ۝ وَرَزَّ اَلْوَابِ ۝ وَاحْيَتُهَا
بَلَدٌ ۝ قِيَتُ كَذَلِكَ السَّوْبِي ۝ كَذَبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمٌ كَذِبٌ ۝
اَصْحَابُ الرِّسِّ وَرُسُو ۝ وَعَادَ وَرُفَيْحُونَ ۝ اِخْوَانُ لُوطٍ ۝ وَ
اَصْحَابُ الْاَيْكَةِ ۝ قَوْمٌ كَذِبٌ ۝ كَذَبَ الرُّسُلُ ۝ قَوْمٌ وَعَبِيدُ ۝
اَفَمَسِيْنَا بِالْحَقِّ الْاَوَّلِ ۝ بَلْ مَسِيْنَا مِنْ قَبْلِ قَوْمٍ ۝ جَبَدِي ۝
وَالْقَدَّ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ ۝ وَنَعْلَمُ مَا نُوَسْوِسُ بِهِ نَفْسُهُ ۝ وَكُنْ
اَقْرَبُ الْيَوْمِ مِنْ حَبْلِ الْوَرْدِ ۝ اِذْ يَتَكَلَّمُ الْمَلَائِكَةُ مِنْ الْاَمْنِ
وَمِنْ الْقِيَامَةِ ۝ مَا يَلُوحُ مِنْ قَوْلٍ اِلَّا لَدَيْهِ وَتَقِيَتُ
عَيْنُهُ ۝ وَكَانَتْ سَكْرَةُ الْعَيْنِ ۝ اَيْتُهَا ذَاكَ مَا كُنْتَ مِنْهُ
حَيَّةً ۝ وَتَقَرُّ فِي الْخُرُوجِ ذَاكَ يَوْمَ الْوَعْدِ ۝ وَكَانَتْ كُلُّ
نَفْسٍ مَعَهَا سَائِرٌ ۝ وَكَانَتْ فِي غِلْمَاةٍ مِنْ هَذَا
لَكُنْفَا عَيْنُهُ ۝ غِلْمَاةُ الْيَوْمِ حَبِيدُ ۝ وَكَانَ قَوْلُهُمَا
مَا لَدَى سَيِّدٍ ۝ اَلَيْسَ اِيَّانِي جَعَلَهُ كُلُّ كَلَامٍ عَيْنٍ ۝ فَكَانَ

उलझी हुई बात में (पड़ रहे) हैं। (५) क्या उन्होंने ने ऊपर आसमान की तरफ़ निगाह नहीं की कि हम ने उस को कैसे बनाया और (कैसे) सजाया और इस में कहीं दरद तक नहीं। (६) और ज़मीन को (देखो, इसे) हम ने फैलाया और इस में पहाड़ रख दिए और इस में हर तरह की खुशनुमा चीज़ें उगाई, (७) ताकि रज़ूअ लाने वाले बंदे हिदायत और नसीहत हासिल करें। (८) और आसमान से बरकत वाला पानी उतारा और उस से बाग़-बगीचे उगाए और खेती का अनाज, (९) और लम्बी-लम्बी खजूरें, जिन का गाभा तह-ब-तह होता है। (१०) (यह सब कुछ) बन्दों को रोज़ी देने के लिए (किया है) और उस (पानी) से हम ने मुर्दा शहर (यानी बंजर ज़मीन) को ज़िदा किया, (बस) इसी तरह (क्रियामत के दिन) निकल पड़ना है। (११) उन से पहले नूह की क़ौम और कुएं वाले और समूद झुठला चुके हैं, (१२) और आद और क़िआन और लूत के भाई, (१३) और बन के रहने वाले और तुब्बक् की क़ौम। (गरज़) इन सब ने पैग़म्बरों को झुठलाया, तो हमारी धमकी भी पूरी हो कर रही। (१४) क्या हम पहली बार पैदा कर के थक गये हैं? (नहीं,) बल्कि यह फिर से पैदा करने में शक़ में (पड़े हुए) हैं। (१५) ★

और हम ही ने इंसान को पैदा किया है और जो ख़याल उस के दिल में गुंजरते हैं, हम उन को जानते हैं और हम उस की रये जान से भी उस से ज़्यादा करीब हैं। (१६) जब (वह कोई काम करता है तो) दो लिखने वाले जो दाएं-बाएं बैठते हैं, लिख लेते हैं। (१७) कोई बात उसकी जुबान पर नहीं आती, मगर एक निगहबान उस के पास तैयार रहता है, (१८) और मौत की बेहोशी हकीकत खोलने को छा गयी। (ऐ इंसान!) यही (वह हालत है) जिस से तू भागता था। (१९) और सूर फूका जाएगा। यही (अज़ाब की) धमकी का दिन है। (२०) और हर शरूस (हमारे सामने) आएगा। एक (फ़रिश्ता) उस के साथ चिल्लाने वाला होगा और एक (उस के अमलों की) गवाही देने वाला। (२१) (यह वह दिन है कि) इस से तू गाफ़िल हो रहा था। अब हम ने तुझ पर से पर्दा उठा दिया, तो आज तेरी निगाह तेज़ है। (२२) और उसका हमनशी (फ़रिश्ता) कहेगा कि यह (आमालनामा) मेरे पास हाज़िर है। (२३) (हुक्म होगा कि) हर सरकश ना-शुक्र को

मन्नाअिल्-लिल्खैरि मुअ-तदिम्-मुरीबि-नि॥ (२५) -ल्लजी ज-अ-ल म-अल्लाहि इलाहन्
 आख-र फ-अल्कियाहु फिल्-अजाबिशशदीद (२६) का-ल करीनुह् रब्बना मा
 अत्तातुह् व लाकिन् कान-फ्री जलालिम्-बबीद (२७) का-ल ला तख्तसिम्
 ल-दय्-य व कद् कद्दम्नु इलैकुम् बिल्वओद (२८) मा युबद-दलुल्-कौलु ल-दय्-य
 व मा अ-न बिजल्लामिल्-लिल्अबीद ★ (२९)
 यो-म नकूलु लिज-हन्न-म हलिम्त-लअति व
 तकूलु हल् मिम्-मजीद (३०) व उजिल्-
 फ्रतिल्-जल्लतु लिल्-मुत्तकी-न गै-र बबीद (३१)
 हाजा मा तू-अद्द-न लिकुलि अव्वाबिन् हफीअ
 (३२) मन् खशियर-हमा-न बिल्गोबि व जा-अ
 बिकल्बिम्-मुनीबि-नि-॥ (३३) -दखुलुहा बि-
 सलामिन् जालि-क योमुल्खुलूद (३४) लहुम्
 मा यशाऊ-न फ्रीहा व लदेना मजीद (३५)
 व कम् अह-लवना कब्-लहुम्-मिन् कनिन् हुम्
 अशददु मिन्हुम् बत-शन् फन-तक्कबू फिल्लिलादि
 हल् मिम्-महीस (३६) इन्-न फ्री जालि-क
 लजिकरा लिमन् कान-लह कल्बुन् ओ अल्-
 क्रस्सम्-अ व हु-व शहीद (३७) व ल-कद् ख-लक्-नस्समावाति वल्अर-ज्ज व मा
 बैनहुमा फ्री सित्ति अय्यामिक्-व मा मस्सना मिल्-लुगूब (३८) फस्बिर् अला मा
 यकूलू-न व सबिह् बिह्मिद रब्बि-क कब्-ल तुलूअिशशमिस् व कब्-लल्-गुरूब (३९)
 व मिनल्लैलि फसब्बिह् व अद्-बारस्सुजूद (४०) वस्तमिअ-यो-म युनादिल्मुनादि
 मिम्-मकानिन् करीब॥ (४१) यो-म यस्मअूनस्-सै-ह-त बिल्हक्कि जालि-क योमुल्-खुरूज
 (४२) इन्ना नहनु नुह्यी व नुमीतु व इलैनल् मसीर॥ (४३) यो-म त-शक्ककुल्अर-ज्ज अन्-
 हुम् सिराअन् जालि-क हशरन् अलैना यसीर (४४) नहनु अअ-लमु बिमा यकूलू-न व मा
 अन्-त अलैहिम् बिजब्बारिन् फज्जिकर् बिल्कुरआनि मय्यखाफु वजीद ★ (४५)

الَّذِينَ جَعَلَ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ ۚ فَأَنذَرْتُ
 الْعَذَابَ الشَّدِيدَ ۚ قَالَ فَرِيقًا مَّا أَطَعْنِي ۚ وَكَانَ فِي
 صَلَاتِي بَينَهُمْ ۚ قَالُوا لَا تَخْصُمُوهُمْ ۚ قَالُوا قَدْ قَامَتْ إِلَهُكُمْ
 بِالْأَعْيُنِ ۚ مَا يَبْدُلُ الْقَوْلَ لَدُنِّي ۚ وَمَا أَنَا بِظَلَمٍ لِلْبَينِ ۚ يَوْمَ
 نَقُولُ لِيَهُمْ هَلْ سَأَلْتُمْ ۚ وَنَقُولُ هَلْ مِنْ قَرْيَةٍ ۚ وَآذِلُّوهُ
 الْجِنَّةَ لِلْمُنْفِقِينَ ۚ غَيْرُ يَبِينُ ۚ هَذَا مَا تَدْعُونَ لِكُلِّ أَتَابٍ حَقِيقَةٍ
 مِنْ عِندِ الرَّحْمَنِ ۚ فَاتَّقِ اللَّهَ ۚ وَجَاءَ بِقُلُوبِ الْفَاسِقِينَ ۚ لِيُؤْخَذُوا
 ذَٰلِكَ يَوْمَ الْخُلُودِ ۚ لَهُمْ ذَٰلِكَ أَزْوَاجُ ۚ وَلَكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ
 قَالَهُمْ قَوْمٌ مِنْهُمْ أَكْثَرُ ۚ وَهُمْ يَطَّاعُونَ ۚ فِي الْيَاكُوتِ هَلْ مِنْ
 قَرْيَةٍ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّمَنْ كَانَ لَهُ عِلْمٌ ۚ أَوَلَمْ تَسْمَعُوهُمْ
 سُبْحَانَ ۚ وَلَقَدْ خَلَقْنَا السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ۚ وَمَا
 يَسْتَكْبِرُونَ ۚ فَاصْبِرْ ۚ مَا يَفْعَلُونَ ۚ وَسِعَ جَهَنَّمَ كُلَّ شَيْءٍ
 طَلُوعَ الْفَجْرِ ۚ وَقَبْلَ الْغُرُوبِ ۚ وَمِنَ اللَّيْلِ فَسُجِّدَ ۚ وَأَذِّنَ لِلنَّاسِ
 وَأَسْمِعْ ۚ يَوْمَ يُدْعَىٰ لِلنَّاسِ ۚ مِنْ كُلِّ مَقَرٍّ ۚ يَوْمَ تُسْمَعُونَ ۚ فَتَسْمَعُونَ
 بِالنَّاسِ ۚ ذَٰلِكَ يَوْمَ الْعُرْوَةِ ۚ إِنَّكَ تَحْتَنِي ۚ وَبُيُوتُ ۚ وَلِلَّهِ الْعُورَةُ
 يَوْمَ تَشْقَىٰ ۚ الْأَرْضُ ۚ يَوْمَ ذَٰلِكَ حَسْرَةً ۚ عَلَيْنَا يَوْمَ ۚ عَنْ أَعْيُنِ
 الْغُلَامِ ۚ وَمَا أَنْتَ عَلَيْهِمْ بِشَاوٍ ۚ فَذَكِّرْ ۚ بِالْقُرْآنِ ۚ مَنْ يَخْلُفْ ۚ وَخِذْ ۚ

दोज़ख में डाल दो । (२४) जो माल में बुल्ल करने वाला, हृद से बढ़ने वाला, शुब्हे निकालने वाला था, (२५) जिस ने खुदा के साथ और माबूद मुक़रर कर रखे थे, तो उस को सल्ल अज़ाब में डाल दो । (२६) उस का साथी (शैतान) कहेगा कि ऐ हमारे परवरदिगार ! मैं ने उस को गुमराह नहीं किया था, बल्कि यह आप ही रास्ते से दूर भटका हुआ था । (२७) (खुदा) कहेगा कि हमारे हुज़ूर में रद्द व कह न करो । हम तुम्हारे पास पहले ही (अज़ाब की) धमकी भेज चुके थे । (२८) हमारे यहां बात बदला नहीं करती और हम बन्दों पर जुल्म नहीं किया करते । (२९) ★

उस दिन हम दोज़ख से पूछेंगे कि क्या तू भर गयी ? वह कहेगी कि कुछ और भी है ? (३०) और बहिश्त परहेज़गारों के करीब कर दी जाएगी (कि बिल्कुल) दूर न होगी । (३१) यही वह चीज़ है, जिस का तुम से वायदा किया जाता था (यानी) हर रज़ूअ लाने वाले, हिफ़ाज़त करने वाले से, (३२) जो खुदा से बिन देखे डरता रहा और रज़ूअ लाने वाला दिल ले कर आया, (३३) इस में सलामती के साथ दाखिल हो जाओ, यह हमेशा रहने का दिन है । (३४) वहां वह जो चाहेंगे, उन के लिए हाज़िर है और हमारे यहां और भी (बहुत कुछ) है । (३५) और हमने उन से पहले कई उम्मतें हलाक कर डालीं, वह इन से ताक़त में कहीं बढ़ कर थे, वह शहरों में गश्त करने लगे, क्या कहीं भागने की जगह है ? (३६) जो शल्ल दिल (आगाह) रखता है या दिल से मुतवज्जह हो कर सुनता है, उस के लिए इस में नसीहत है । (३७) और हमने आसमानों और ज़मीन को और जो (मख़्लूक़ात) उन में हैं, सब को छः दिनों में बना दिया और हम को ज़रा भी थकन नहीं हुई । (३८) तो जो कुछ ये (कुफ़्कार) बकते हैं, इस पर सब करो और सूरज के निकलने से पहले और उस के डूबने से पहले अपने परवरदिगार की तारीफ़ के साथ तस्बीह करते रहो । (३९) और रात के कुछ वक़्तों में भी और नमाज़ के बाद भी उस (के नाम) की पाकी बयान करो । (४०) और सुनो जिस दिन पुकारने वाला नज़दीक की जगह से पुकारेगा, (४१) जिस दिन लोग चीख़ यक़ीनी तौर पर सुन लेंगे । वही निकल पड़ने का दिन है । (४२) हम ही तो ज़िदा करते हैं और हम ही मारते हैं और हमारे ही पास लौट कर आना है । (४३) उस दिन ज़मीन उन पर से फट जाएगी और वे शट-पट निकल खड़े होंगे । यह जमा करना हमें आसान है । (४४) ये लोग जो कुछ कहते हैं, हमें खूब मालूम है और तुम उन पर ज़बरदस्ती करने वाले नहीं हो । पस जो हमारे (अज़ाब की) धमकी से डरे, उस को क़ुरआन से नसीहत करते रहो । (४५) ★

५१ सूरतुज्-जारियाति ६७

(मक्की) इस सूरः में अरबी के १५१६ अक्षर, ३६० शब्द, ६० आयतें और ३ हकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

वज्जारियाति जर्वन् ॥ (१) फल्हामिलाति विक्रन् ॥ (२) फल्जारियाति युस्त्रन् ॥ (३) फल्मुकस्सिमाति अम्रन् ॥ (४) इन्नमा तूअदू-न लसादिकु व- ॥ (५) व इन्नद्दी-न ल-वाकि-अ ॥ (६) वस्समा-इ जातिल्-हुबुकि ॥ (७) इन्नकुम् लफी कोलिम्-मुस्तलिफिय- ॥ (८) युअफकु अन्ह मन् उफिक ॥ (९) कुतिलल्-खरासूना ॥

(१०) अल्लजी-न हुम् फी गम्रतिन् साहून् ॥

(११) यस्-अलू-न अय्या-न योमुद्दीन ॥ (१२)

यो-म हुम् अलन्नारि युफ्तनून् (१३) जूकू

फित-न-तकुम् ॥ हाजल्लजी कुन्तुम् बिही तस्तअ-

जिलून् (१४) इन्नलमुत्तकी-न फी जन्नातिव-व

अयुनिन् ॥ (१५) आखिजी-न मा आताहुम्

रब्बुहुम् ॥ इन्नहुम् कानू कबल्-जालि-क मुहिस-

नीन् ॥ (१६) कानू कलीलम्-मिनल्लैलि मा

यह-जअून (१७) व बिल्-अस्हारि हुम् यस्-

तस्फिरून् (१८) व फी अम्वालिहम् हक्कुल्-

लिस्साइलि वल्-महूरूम (१९) व फिल्अज्रि

आयातुल्-लिम्पूकिनीन् ॥ (२०) व फी अन्फुसि-

कुम् ॥ अ-फ-ला तुब्सिरून् (२१) व फिस्समाइ

रिज्जुकुम् व मा तूअदून् (२२) फ-व-रब्बिस्-

समाइ वल्अज्रि इन्नहू ल-हक्कुम्-मिस्-ल मा अन्नकुम् तन्तिकून ★ (२३) हल् अता-क

हदीषु जैफि इब्राहीमल्-मुवरमीन् ॥ (२४) इज् द-ख-लू अलैहि फकाल सलामन् ॥ काल

सलामुन् ॥ क्रौमुम् मुन्कहून् ॥ (२५) फरा-अ इला अहिलही फजा-अ बिअजलिन्

समीन् ॥ (२६) फ-कर-बहू इलैहिम् काल अला तअ-कुलून् ॥ (२७) फ-ओज-स

मिन्हुम् खी-फ-तन् ॥ कालू ला त-खफ् ॥ व बशरूहु बिगुलामिन् अलीम (२८)

फ-अक्-ब-लतिम-र-अतुहू फी सरंतिन् फ-सक्कत् वज्जहा व कालत् अज्जुन् अक्कीम

(२९) कालू कजालिक ॥ काल रब्बुकि ॥ इन्नहू हुबल्-हकीमुल्-अलीम (३०)

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
وَالَّذِينَ ذَرَوْا قُلُوبَهُمْ قَالُوا لَا تُبْدِي لَنَا سَمَاءَ آفَاقٍ ۚ قُلِ الْغُفَىٰ
أَمْرًا ۚ إِنَّمَا نُوَدِّعُ الْأَشْقَىٰ ۚ الَّذِي يَذَرُ الْوَيْلَ ۚ وَكَانَ الْعِلْمُ
ذَاتِ الْبَيْنِ ۚ الْإِنَّمَا لَكُمْ فِي قَوْلِهِ خُفْيَةٌ ۚ لِيُذَكِّرَ الَّذِينَ مِنْ أُولَئِكَ
قَوْلَ الْغُلَامِ ۚ الَّذِي هُوَ فِي عَمْرٍو سَاقِوْنَ ۚ يَتَّبِعُونَ آيَاتَ
يَوْمِ الْيَوْمِ ۚ يَوْمَ عُرِجَ السَّاعِرَاتُ ۚ وَيَوْمَ يُنْفَخُ هَذَا
الْبَرْقُ لِنُفْثِهِمْ ۚ تَسْتَعْجِلُونَ ۚ إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ ۚ
أَجْنِبْنَ مَا أَلَيْسَ لَهُمْ ۚ إِنَّهُمْ كَانُوا فِي ذَلِكَ عَمَّيْنَ ۚ كَانُوا
تَلِيًّا ۚ مِنْ أَيْلٍ مَا يُلَاجِمُونَ ۚ وَبِالْأَشْوَاعِ يُسْتَفْرَدُونَ ۚ وَفِي
أَمْوَالِهِمْ حَقٌّ لِّإِتْيَالِ الْمَوْتِ ۚ وَفِي الْأَرْضِ آيَاتٌ لِلْمُوقِنِينَ ۚ
وَفِي الْأَنْفُسِ أَفْئِدَةً لِّالَّذِينَ يَتَّبِعُونَ ۚ وَفِي السَّمَاءِ بُزْجٌ ۚ وَتُؤْتُونَ
قُرْبَ السَّمَاءِ ۚ وَالْأَرْضِ ۚ إِنَّكُمْ تَرْجِعُونَ ۚ مَنْ لَّدُنْكَ
حَبِيبٌ ضَعِيفٌ ۚ أَوْ يَمِينٌ ۚ أَوْ ذَرْوَا أَيْلَهُ ۚ قَالُوا لَا تَسْمَعْ لَهُمْ
سَمْعًا ۚ وَهُمْ يُفَكِّرُونَ ۚ قَرَأَ عَلَيْهِمْ نِعْمًا ۚ يَهْدِي سَبِيلَهُمْ ۚ فَكَرِهَ لَهُمْ
قَالَ لَا تَأْكُلُوا ۚ فَادْجَسَ مِنْهُمْ خِيفَةً ۚ قَالُوا لَا تَحْزَنْ وَبَشِّرْهُ
بِطَعْنِهِ عَلَيْهِ ۚ فَانْبَدَتْ أَمْوَالُهُ فِي صَفْوَةٍ فَصَلَّتْ وَحْدَهَا ۚ وَقَالَ عَجُوزٌ
عَقِيمَةٌ ۚ قَالُوا كَذَّابُنِي ۚ قَالَ رَبُّنِي إِنَّهُ هُوَ الْحَكِيمُ الرَّحِيمُ

५१ सूरः जारियात ६७

सूरः जारियात मक्की है और इस में साठ आयतें और तीन हकूअ हैं।

शुरू खुदा का नाम लेकर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

बिखेरने वालियों की क्रसम ! जो उड़ा कर बिखेर देती हैं, (१) फिर (पानी का) बोझ उठाती हैं, (२) फिर धीरे-धीरे चलती हैं, (३) फिर चीजें तक्सीम करती हैं, (४) कि जिस का तुम से वायदा किया जाता है, वह सच्चा है। (५) और इन्साफ (का दिन) जरूर वाक़अ होगा। (६) और आसमान की क्रसम ! जिसमें रास्ते हैं, (७) कि (ऐ मक्का वालो !) तुम एक झगड़े की बात में (पड़े हुए) हो। (८) इस से वही फिरता है, जो (खुदा की तरफ से) फेरा जाए। (९) अटकल दौड़ाने वाले हलाक हों, (१०) जो बे-खबरी में भूले हुए हैं। (११) पूछते हैं कि बदले का दिन कब होगा ? (१२) उस दिन (होगा) जब उन को आग में अज़ाब दिया जाएगा। (१३) अब अपनी शगरत का मज़ा चखो। यह वही है, जिस के लिए तुम जल्दी मचाया करते थे। (१४) बेशक परहेज़गार बहिश्तों और चश्मों में (ऐश कर रहे) होंगे। (१५) (और) जो-जो (नेमतें) उन का परवरदिगार उन्हें देता होगा, उन को ले रहे होंगे। बेशक वे उस से पहले नेकियां करते थे, (१६) रात के थोड़े से हिस्से में सोते थे, (१७) और सुबह के वक्तों में बलिश मांगा करते थे। (१८) और उन के माल में मांगने वाले और न मांगने वाले (दोनों) का हक़ होता है। (१९) और यक़ीन करने वालों के लिए ज़मीन में (बहुत-सी) निशानियां हैं। (२०) और खुद तुम्हारे नफ़्तों में, तो क्या तुम देखते नहीं ? (२१) और तुम्हारी रोज़ी और जिस चीज का तुम से वायदा किया जाता है आसमान में है। (२२) तो आसमानों और ज़मीन के मालिक की क्रसम ! यह (उसी तरह) यक़ीन के क़ाबिल है, जिस तरह तुम बात करते हो। (२३)★

भला तुम्हारे पास इब्राहीम के मुअज़्ज़ज मेहमानों की ख़बर पहुंची है ? (२४) जब वे उनके पास आए तो सलाम कहा। उन्होंने भी (जवाब में) सलाम कहा, (देखा तो) ऐसे लोग कि न जान, न पहचान। (२५) तो अपने घर जा कर एक (भूना हुआ) मोटा बछड़ा लाए। (२६) (और खाने के लिए) उन के आगे रख दिया। कहने लगे कि आप खाते क्यों नहीं ? (२७) और दिल में उन से ख़ौफ़ मालूम किया। उन्होंने ने कहा कि ख़ौफ़ न कीजिए और उन को एक दानिशमंद (सूझ-बूझ वाले) लड़के की खुशख़बरी भी सुनायी। (२८) तो इब्राहीम की बीवी चिल्लाती आयी और अपना मुंह पीट कर कहने लगी कि (ऐ हे, एक तो) बुढ़िया और (दूसरे) बांझ ? (२९) उन्होंने ने कहा, (हां) तुम्हारे परवरदिगार ने यों ही फ़रमाया है। वह बेशक हिक़मत वाला (और)

१. तफ़सीरों में इन चार आयतों में एक ही चीज भी मुराद ली गयी है यानी हवा और चार मुक्तलिफ़ चीजें भी मुराद ली गयी हैं यानी 'जारियात ज़क़न' से तो हवाएँ कि धूल बरौरह को उड़ा कर बिखेर देती हैं और 'हामि-नाति विक़रन' से बदलियां, जो मेंह का बोझ उठाती हैं और 'जारियात युस्रन' से किशियां जो दरिया में सहज-महज चलती हैं और 'मुक़स्सिमाति अम्रन' से फ़रिश्ते, जो बारिश और रोज़ी और सूखे और सस्ताई और चीजों को तक्सीम करते हैं। कुछ तफ़सीर लिखने वालों ने इन चीजों के अलावा और चीजें भी मुराद ली हैं, मगर उन का जिक़र ग़ैर जरूरी है।

२. झगड़े की बात यानी बे-जोड़ बात यानी रसूले खुदा सल्ल० का शान में कोई तो कहता है कि शायर है, कोई (शेष पृष्ठ ८३१ पर)

सत्ताईसवां पारः का-ल क्रमा खत्बुकुम् सूरतुज्जारियाति आयात ३१ से ६०

का-ल क्रमा खत्बुकुम् अय्युहल् मुसलून (३१) कालू इन्ना जसिल्ला इला कौमि-
मुजिरमीन॥ (३२) लिनुसि-ल अलेहिम् हिजा-र-तम्-मिन्तीन॥ (३३) मुसव्व-म-तन्
अिन्-द रबिब-क लिमुस्तिफीन (३४) फ-अख-रज्जा मन् का-न फीहा मिनल्-
मुअ्मिनीन८ (३५) फ-मा व-जदना फीहा शै-र बैतिम्-मिनल्-मुस्लिमीन८ (३६) व

त-रकना फीहा आयतल्-लिल्लजी-न यखाफूनल्-
अजाबल्-अलीम८ (३७) व फी मूसा इज्
असंल्लाहु इला फिर्ओ-न बिसुल्लानिम्-मुबीन
(३८) फ-त-वल्ला बिरुविनही व का-ल साहि-
रुन् औ मज्जून (३९) फ-अ-खज्जाहु व
जुनूदह् फ-न-बज्जाहुम् फिल्-यम्मि व हु-व
मुलीम८ (४०) व फी आदिन् इज् असंल्ला
अलेहिमु-र-रीहल्-अक्रीम८ (४१) मा त-जह
मिन् शैइन् अ-तत् अलेहि इल्ला ज-अ-लतहु
करमीम८ (४२) व फी समू-द इज् की-ल
लहुम् त-मत्तअ् हत्ता हीन (४३) फ-अतो
अन् अमिर रबिबहिम् फ-अ-ख-अत्-हुमुस्साअिकतु
व हुम् यन्जुरून (४४) फ-मस्तताअ् मिन्
क्रियामि-व मा कानू मुन्तसिरीन॥ (४५) व
कौ-म नूहिम्मिन् कम्बु८ इन्नुहुम् कानू कौमन्
फासिकीन * (४६) वस्समा-अ बनैनाहा बिऐदि-व इन्ना लमुसिअून (४७) वर-अ-ज
फ-रशनाहा फनिअ-मल्-माहिदून (४८) व मिन् कुल्लि शैइन् ख-लकना जौजेन ल-अल्ल-
कुम् त-जवकरून (४९) फकिरू इल्ललाहि इन्नी लकुम् मिन्हु नजीरुम्-मुबीन८ (५०) व
ला तज्-अलू म-अल्लाहि इलाहन् आख-र८ इन्नी लकुम् मिन्हु नजीरुम्-मुबीन८ (५१)
कजालि-क मा अ-तल्लजी-न मिन् कबिलहिम् मिरसूलिन् इल्ला कालू साहिरुन् औ
मज्जून८ (५२) अ-त-वासो बिही८ बल् हुम् कौमुन् तागून८ (५३) फ-त-वल्-ल
अन्हुम् फमा अन्-त बिमलूमि-व८ (५४) व जविकर् फ-इन्लज्जिबरा तन्फअल्-
मुअ्मिनीन (५५) व मा ख-लक्तुल्लजि-न वल्इन-स इल्ला लि-यअ-बुदून (५६)

قَالَ قَدْ أَطَعْتُمْ أَمْرًا مِّنَ رَبِّكُمْ ۖ قَالُوا إِنَّا نُرْسِلُكَ إِلَىٰ قَوْمٍ
مُّشْرِكِينَ ۖ لَنُرْسِلَ عَلَيْهِمْ جُرُودًا مِّنَ طِينٍ ۖ ثُمَّ مَعَهُ
رَبُّكَ الْمُسْتَقِيمَ ۖ فَخَرَجْنَا مِنْ قَيْنَ فِيهَا مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ۖ وَ
مَعَهُمَا فِيهَا قَوْمٌ بِبَيِّنَاتٍ مِنَ السَّيِّئِينَ ۖ وَكَرَّمْنَا فِيهَا لِكُلِّ فِرْعَوْنَ
يَتَّبِعُونَ الْعَذَابَ الْأَلِيمَ ۖ وَفِي مِثْرَافٍ إِذْ أَرْسَلْنَا إِلَىٰ فِرْعَوْنَ
بِأَسْفَلِ مِثْرَيْنِ ۖ وَقَالَ لِرَجُلٍ مِّنْهُمَا أَوْفِيْتُهُنَّ ۖ فَأَعَدَّهُ
وَمَعَهُ قَبِيلٌ مِّنْهُمْ فِي الدَّيْرِ وَمَعَهُمَا ۖ وَفِي عَادٍ إِذْ أَرْسَلْنَا إِلَيْهِمُ
الرَّسْمَ الْعَظِيمَ ۖ فَاتَّخَذُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ آلِهَةً لَّهُمْ شُرَكَاءُ ۖ فَفَتَحْنَا
وَفِي ثَمُودَ إِذْ قِيلَ لَهُمْ تَكُونُوا حَقِيقِينَ ۖ فَعَتَقْنَا لَهُمْ يَوْمَئِذٍ
وَأَعَدَّهُمْ الْفُطُوحَ ۖ وَهُمْ يَنْظُرُونَ ۖ فَاتَّخَذُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ آلِهَةً
مِّنْ دُونِ اللَّهِ ۖ وَهُمْ يَوْمَئِذٍ يَخْلِفُ لَهُمْ أَفْوَاجُكُمْ ۖ وَاللَّهُ
يَبْقِيَا الْبَاقِيَاتِ وَالْكَاثِبِينَ ۖ وَاللَّهُ يَبْقِيَا الْبَاقِيَاتِ وَالْكَاثِبِينَ ۖ
وَمِنْ كُلِّ شَيْءٍ جَعَلْنَا زَوْجَيْنِ لِّكُلِّ شَيْءٍ ۖ وَقَدْ ذَلَّلْنَا اللَّهُ لِلنَّاسِ
لِكُلِّ شَيْءٍ ذَكْرًا وَثِيْقًا ۖ وَلَا تَجْعَلُوا مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ ۖ إِنَّكُمْ
عِندَ اللَّهِ لَكَاثِبُونَ ۖ فَذَلِكَ مَا أَنَّىٰ لِّالنَّاسِ مِنْ قِيَامِهِمْ ۖ فَمِنْ قَوْمٍ لَّا كُنَّا سَاجِدِينَ
لِّمَلَكِهِمْ ۖ إِنَّهُمْ أَصْلَابٌ بَلَّ بِهُمْ قَوْمٌ مِّنْهُمْ ۖ فَتَوَلَّوْا عَنْهُمْ ۖ فَاتَّخَذُوا
وَدَّعَوْا ۖ وَكَانَ الْآخِرُ نَجْمَ الْمُؤْمِنِينَ ۖ وَمَا عَلَّمْتُ الْإِنْسَانَ إِلَّا الْقُرْآنَ

खबरदार है। (३०) (इब्राहीम ने) कहा कि फ़रिश्तो ! तुम्हारा मतलब क्या है ? (३१) उन्होंने कहा कि हम गुनाहगारों की तरफ़ भेजे गये हैं, (३२) ताकि उन पर खंगर बरसाएं, (३३) जिन पर हद से बढ़ जाने वालों के लिए तुम्हारे परवरदिगार के यहां से निशान कर दिए गए हैं, (३४) तो वहां जितने मोमिन थे, उन को हमने निकाल लिया, (३५) और उस में एक घर के सिवा मुसलमानों का कोई घर न पाया, (३६) और जो लोग दर्दनाक अज़ाब से डरते हैं, उन के लिए वहां निशानी छोड़ दी। (३७) और मूसा (के हाल) में भी निशानी है) जब हमने उन को फ़िज़ौन की तरफ़ खुला हुआ मोज़जा दे कर भेजा। (३८) तो उस ने अपनी ताक़त (के घमंड) से मुंह मोड़ लिया और कहने लगा, यह तो जादूगर है या दीवाना, (३९) तो हमने उस को और उसके लश्करों को पकड़ लिया और उन को दरिया में फेंक दिया और वह काम ही मलामत के काबिल करता था। (४०) और आद (की क्रौम के हाल) में भी (निशानी है,) जब हम ने उन पर ना-मुबारक हवा चलायी। (४१) वह जिस चीज़ पर चलती, उस को रेज़ा-रेज़ा किये बग़ैर न छोड़ती। (४२) और (क्रौम) समूद (के हाल) में भी (निशानी है,) जब उन से कहा गया कि एक वक़्त तक फ़ायदा उठा लो। (४३) तो उन्होंने ने अपने परवरदिगार के हुक्म से सरकशी की, सो उन को कड़क ने आ पकड़ा और वे देख रहे थे। (४४) फिर वे न तो उठने की ताक़त रखते थे और न मुकाबला कर सकते थे। (४५) और इस से पहले (हम) नूह की क्रौम को (हलाक कर चुके थे,) बेशक वे ना-फ़रमान लोग थे। (४६) ★

और आसमानों को हम ही ने हाथों से बनाया और हम को सब मुक़दूर है। (४७) और ज़मीन को हम ही ने बिछाया, तो (देखो) हम क्या खूब बिछाने वाले हैं। (४८) और हर चीज़ की हम ने दो क्रिस्में बनायीं, ताकि तुम नसीहत पकड़ो, (४९) तो तुम लोग खुदा की तरफ़ भाग चलो, मैं उस की तरफ़ से तुम को खुला रास्ता बताने वाला हूं। (५०) और खुदा के साथ किसी और को माबूद न बनाओ। मैं उस की तरफ़ से तुम को खुला रास्ता बताने वाला हूं। (५१) इसी तरह इन से पहले लोगों के पास जो पैग़म्बर आता, वे उस को जादूगर या दीवाना कहते। (५२) क्या ये लोग एक-दूसरे को इसी बात की वसीयत करते आए हैं, बल्कि ये शरीर लोग हैं। (५३) तो इन से एराज़ करो। तुम को (हमारी तरफ़ से) मलामत न होगी। (५४) और नसीहत करते रहो कि नसीहत मोमिनों को नफ़ा देती है। (५५) और मैंने ज़िन्नों और इंसानों को इसलिए पैदा किया है

(पृष्ठ ८२६ का शेष)

कहता है कि दीवाना है, कोई कहता है कि काहिन है और इसी तरह क़ुरआन मजीद को शेर, जादू और कहातन वग़ैरह कहते हैं। कुछ ने कहा, इस से यह मुराद है कि कोई क्रियमत्त का इन्कार करता है, कोई इस में शक़ करता है। कुछ ने कहा, इस से यह मुराद है कि वे खुदा का तो इक़्रार करते हैं और बतों को पूजते हैं।

मा उरीदु मिन्हुम मिरिज्जिक्व-व मा उरीदु अय्युत्-अमून (५७) इन्नल्ला-ह
हुवरंज्जाकु जुल्कु व्वतिल्-मतीन (५८) फ-इन्-न लिन्नजी-न अ-लमू जन्-
वम्-मिस्-ल जन्बि अस्-हाबिहिम् फ ला यस्तअ-जिलून (५९) फवै-
नुल् - लिन्नजी - न क - फरू मिथ्यौमिहिमुलजी यूअद्दून * (६०)

५२ सूरतुत्तूरि ७६

(मक्की) इस सूर: में अरबी के १३३४ अक्षर,
३१९ शब्द, ४६ आयतें और २ रकूअ हैं ।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

वत्तूर ॥ (१) व किताबिम्-मस्तूरिन् ॥
(२) फी रक्किम्-मन्शूरिव-॥ (३) वल्बैतिल्-
मअ-मूर ॥ (४) वस्सक्फिल्-मरफूअ ॥ (५)
वल्बहिरल्-मस्जूर ॥ (६) इन-न अजा-ब
रब्बि-क लवाकिअम्-॥ (७) मा लहू मिन्
दाफिअय्-॥ (८) यौ-म तमूरुस्समाउ मोरंव-॥ (९)
व तसीरुल्-जिबालु सैरा ॥ (१०) फवैलु य्यौ-
मइजिल्-लिन्मुकज्जिबीन ॥ (११) अल्लजी-न
हुम् फी खौजियल्-अबून ॥ (१२) यौ-म
युदअ-अून इला नारि ज-हन्न-म दअ-आ ॥

(१३) हाजिहिन्-नारुल्लती कुन्तुम् बिहा तुकज्जिबून (१४) अ-फ-सिहरून् हाजा
अम् अन्तुम् ला तुब्-सिरून ॥ (१५) इस्लौहा फस्बिहू ओ ला तस्बिहू सवाउन्
अलंकुम् ॥ इन्मा तुज्-जौ-न मा कुन्तुम् तअ-मलून (१६) इन्नल्-मुत्तकी-न फी
जन्नातिव्-व नबीम ॥ (१७) फाकिही-न बिमा आताहुम् रब्बुहुम् ॥ व वकाहुम् रब्बु-
हुम् अजाबल्-जहीम (१८) कुलू वशरबू हनीअम्-बिमा कुन्तुम् तअ-मलून ॥ (१९)
मुत्तकिई-न अला सुहरिम्-मस्फूकतिन् ॥ व जव्वज्जाहुम् बिहरिन् ओन (२०) वल्-
लजी-न आभनू वत्त-ब-अत्तुम् जुरिय्यतुहुम् बिईमानिन् अल्-हक्ना बिहिम् जुरिय्य-तहुम्
व मा अ-लत्ताहुम् मिन् अ-मलिहिम् मिन् शैइन् ॥ कुल्लुमिरिइम्-बिमा क-स-ब रहीन
(२१) व अम्दद्नाहुम् बिफाकिहतिव्-व लहिम्-मिम्मा यश्तहून (२२)

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
الَّذِينَ يَدْعُونَ مَا لَا يُدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ أَتَى الَّذِينَ لَمْ يَدْعُوا وَلَوْ أَنَّهُمْ
لَمْ يَدْعُوا إِلَّا اللَّهَ لَآتَى اللَّهُ الْكَافِرِينَ وَلَقَدْ كَذَّبَ الَّذِينَ اتَّخَذُوا آلَافِينَ
مِثْقَالَ ذَرَّةٍ مِنْ دُونِ اللَّهِ وَمَا يَدْعُونَ إِلَّا نَارَ الْهَرَقِ وَكَذَّبُوا عَنْ آلِهِمْ
وَأَزْوَاجِهِمْ وَنَجْوَاهُمْ أَنْ يَقُولُوا رَبُّنَا اللَّهُ وَقَدْ جَاءَنَا الْبَيِّنَاتُ وَأَنْتُمْ
تَكْفُرُونَ وَلَقَدْ كَذَّبَ الَّذِينَ اتَّخَذُوا آلَافِينَ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ مِنْ دُونِ اللَّهِ
وَمَا يَدْعُونَ إِلَّا نَارَ الْهَرَقِ وَكَذَّبُوا عَنْ آلِهِمْ وَنَجْوَاهُمْ أَنْ يَقُولُوا رَبُّنَا
اللَّهُ وَقَدْ جَاءَنَا الْبَيِّنَاتُ وَأَنْتُمْ تَكْفُرُونَ وَلَقَدْ كَذَّبَ الَّذِينَ اتَّخَذُوا
آلَافِينَ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ مِنْ دُونِ اللَّهِ وَمَا يَدْعُونَ إِلَّا نَارَ الْهَرَقِ وَكَذَّبُوا
عَنْ آلِهِمْ وَنَجْوَاهُمْ أَنْ يَقُولُوا رَبُّنَا اللَّهُ وَقَدْ جَاءَنَا الْبَيِّنَاتُ وَأَنْتُمْ
تَكْفُرُونَ وَلَقَدْ كَذَّبَ الَّذِينَ اتَّخَذُوا آلَافِينَ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ مِنْ دُونِ اللَّهِ
وَمَا يَدْعُونَ إِلَّا نَارَ الْهَرَقِ وَكَذَّبُوا عَنْ آلِهِمْ وَنَجْوَاهُمْ أَنْ يَقُولُوا
رَبُّنَا اللَّهُ وَقَدْ جَاءَنَا الْبَيِّنَاتُ وَأَنْتُمْ تَكْفُرُونَ

कि मेरी इबादत करें। (५६) मैं उन से रोजी नहीं चाहता और न यह चाहता हूँ कि मुझे (खाना) खिलाएं (५७) खुदा ही तो रोजी देने वाला, जोरावर (और) मजबूत है। (५८) कुछ शक नहीं कि इन जालिमों के लिए भी (अज़ाब की) नौबत मुकर्रर है, जिस तरह उन के साथियों की नौबत थी, तो उन को मुझ से (अज़ाब) जल्दी नहीं तलब करना चाहिए। (५९) जिस दिन का इन काफ़िरों से बायदा किया जाता है, उस से उन के लिए खराबी है। (६०) ★

५२ सूर: तूर ७६

सूर: तूर मक्की है, इस में ४९ आयतें और दो रकूअ हैं।

शुरू खुदा का नाम लेकर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

तूर (पहाड़) की कसम ! (१) और किताब की जो लिखी हुई है ! (२) कुशादा पत्नों (बरकों) में, (३) और आबाद घर की ! (४) और ऊंची छत की ! (५) और उबलते हुए दरिया की ! (६) कि तुम्हारे परवरदिगार का अज़ाब वाक़ेअ हो कर रहेगा। (७) (और) उस को कोई रोक नहीं सकेगा, (८) जिस दिन आसमान लरज़ने लगे कपकपा कर, (९) और पहाड़ उड़ने लगें ऊन हो कर, (१०) उस दिन झुठलाने वालों के लिए खराबी है। (११) जो (बातिल के) खौज़ (हुज़्जतबाज़ी) में पड़े खेल रहे हैं (१२) जिस दिन उन को जहन्नम की आग की तरफ़ धकेल-धकेल कर ले जाएंगे। (१३) यही वह जहन्नम है जिस को तुम झूठ समझते थे। (१४) तो क्या यह जादू है या तुम को नज़र ही नहीं आता। (१५) इस में दाख़िल हो जाओ और सब करो या न करो, तुम्हारे लिए बराबर है, जो काम तुम किया करते थे, (यह) उन ही का तुम को बदला मिल रहा है। (१६) जो परहेज़गार हैं, वे चागों और नेमतों में होंगे। (१७) जो कुछ उन के परवरदिगार ने उन को बरूशा, उस (की बजह) से खुशहाल, और उन के परवरदिगार ने उन को दोख़ल के अज़ाब से बचा लिया, (१८) अपने आमाल के बदले में, मज्जे से खाओ और पियो, (१९) तल्लों पर जो बराबर-बराबर बिछे हुए, तकिया लगाए हुए और बड़ी-बड़ी आंखों वाली हूरों को हम उनका साथी बना देंगे। (२०) और जो लोग ईमान लाए और उनकी औलाद भी ईमान (की राह) में उन के पीछे चली, हम उन की औलाद को भी उन (के दर्जे) तक पहुंचा देंगे और उन के आमाल में से कुछ कम न करेंगे। हर शख्स अपने आमाल में फंसा हुआ है। (२१) और जिस तरह के भेवे और गोस्त को उन का जी चाहेगा, हम उन को अता करेंगे। (२२) वहां वे एक दूसरे से जामे-

१. किताब के बारे में कई झौल हैं। किसी ने कहा, दूसरी आसमानी किताबें

य-त-नाजअ-न फीहा कअ-सत्ता लखनु फीहा व ला तअ-सीम (२३) व यतूफु
अलैहिम् गिल्मानुल्-लहुम् क-अन्नहुम् लुअलुउम्-मकनून (२४) व मक्कव-ल बअ-
जुहुम् अला बअ-ज़िग्य-त-सा-अलून (२५) कालू इन्ना कुन्ना कब्लु फी अहिलना
मुश्फिकीन (२६) फ-मन्नत्ताहु अलैना व वकाना अजाबस्समूम (२७) इन्ना

कुन्ता मिन् कन्तु नदअहू^७ इन्तहू हुवल्बहर-
रहीम★ (२८) फ-जविकर् फमा अन्-त
बिनिअ-मति रब्बि-क बिकाहिनिव्-व ला मज्जून^७
(२९) अम् यकूल-न शाअिरुन् न-त-रब्बसु
बिही रैबल्-मनून (३०) कुल् त-रब्बसु
फइन्नी य-अकुम् मिनल्-मु-त-रब्बितीन्^७ (३१)
अम् तअमुरुहुम् अह्लामु-हुम् बिहाजा अम् हुम्
क्रौमुन् तागून^८ (३२) अम् यकूल-न त-क्रव्व-
लहू^८ बल् ला युअमिनून^८ (३३) फल-यअन्-त
बिहूदीसिम्-मिस्लिही इन् कानू सादिकीन्^७ (३४)
अम् खुलिकू मिन् ग्रैरि शैइन् अम् हुमुल्-खालिकून^७
(३५) अम् ख-लकुस्-समावाति वल्अर्-ज बल् ला
यक्रिनून^७ (३६) अम् अिन्दहुम् सज्जाइनु

[illegible]

रब्बि-क अम् हुमुल्-मुसैतिरून ७ (३७) अम् लहुम् सुल्लमु^७य्यस्तमिअ-न फ्रीहि^७ फल्-
यवति मुस्तमिअहुम् बिमुल्लानिम्-मुबीन ७ (३८) अम् लहुल्बनानु व लकुमुल्बनून ७
(३९) अम् तस्-अलुहुम् अजरन् फहुम् मिम्-मग्-रमिम्-मुस्कलून ७ (४०) अम्
अन्दहुमुल्-गौबु फहुम् यक्तुबून ७ (४१) अम् युरीदून कैदन् ७ फल्लजी-न क-फरू हुमुल्-
मकीदून ७ (४२) अम् लहुम् इलाहून् गैल्लाहि^७ सुहानल्लाहि अम्मा युशिरकून (४३)
व इय्यरो किस्फम्-मिनस्समाइ साकित्तय्यकलू सहाबुम्-मर्कूम (४४) फ-जहूम
हत्ता युलाकू यी-महुमुल्लजी फ्रीहि युस्-अकून ७ (४५) यी-म ला युगनी अन्हुम्
कैदुहुम् सैअव-व ला हुम् पुत्सरून ७ (४६) व इन-न लिल्लजी-न
अ-लम् अजाबन् दून जालि-क व लाकिन-न अक्सरहुम् ला यअ-लमून (४७)

शराब झपट लिया करेंगे, जिस (के पीने) से न बक-झक होगी, न कोई गुनाह की बात । (२३) और नव-जवान खिदमतगार, (जो ऐसे होंगे,) जैसे छिपाए हुए भोती, उन के आस-पास फिरेंगे, (२४) और एक दूसरे की तरफ रुख कर के आपस में बात-चीत करेंगे । (२५) कहेंगे कि इस से पहले हम अपने घर में (खुदा से) डरते रहते थे, (२६) तो खुदा ने हम पर एहसान फरमाया और हमें लू के अजाब से बचा लिया । (२७) इस से पहले हम उस से दुआएं किया करते थे । बेशक वह एहसान करने वाला मेहरबान है । (२८) ★

तो (ऐ पैगम्बर !) तुम नसीहत करते रहो, तुम अपने परवरदिगार के फ़ज़ल से न तो काहिन हो और न दीवाने । (२९) क्या काफ़िर कहते हैं कि यह शायर है (और) हम उस के हक में जमाने के हादिसों का इन्तिज़ार कर रहे हैं । (३०) कह दो कि इन्तिज़ार किए जाओ, मैं भी तुम्हारे साथ इन्तिज़ार करता हूं । (३१) क्या उन की अक्लें उन को यही सिखाती हैं, बल्कि ये लोग हैं ही शरीर । (३२) क्या कुफ़्रार कहते हैं कि इन पैगम्बर ने कुरआन खुद से बना लिया है ? बात यह है कि ये (खुदा पर) ईमान नहीं रखते । (३३) अगर ये सच्चे हैं तो ऐसा कलाम बना तो लाएं । (३४) क्या ये किसी के पैदा किए बग़ैर ही पैदा हो गये हैं या ये खुद (अपने आप) पैदा करने वाले हैं ? (३५) या उन्होंने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया है ? (नहीं) बल्कि ये यकीन ही नहीं रखते । (३६) क्या उन के पास तुम्हारे परवरदिगार के ख़जाने हैं या ये (कहीं के) दारोगा हैं ? (३७) या उन के पास कोई सीढ़ी है जिस पर (चढ़ कर आसमान से बातें) सुन आते हैं तो जो सुन आता है, वह खुला सनद दिखाए । (३८) क्या खुदा की तो बेटियां और तुम्हारे बेटे ? (३९) ऐ पैगम्बर ! क्या तुम उन से बदला मांगते हो कि उन पर जुमनि का बोझ पड़ रहा है ? (४०) या उन के पास ग्रैब (का इल्म) है कि वे उसे लिख लेते हैं ? (४१) क्या ये कोई दांव करना चाहते हैं, तो काफ़िर तो खुद दांव में आने वाले हैं ? (४२) क्या खुदा के सिवा उन का कोई और माबूद है ? खुदा उन के शरीक बनाने से पाक है ? (४३) और अगर ये आसमान (से अज़ाब) का कोई टुकड़ा गिरता हुआ देखें तो कहें कि यह गाढ़ा बादल है, (४४) पस उन को छोड़ दो, यहां तक कि वह दिन, जिस में वे बे-होश कर दिए जाएंगे, सामने आ जाएं । (४५) जिस दिन उन का कोई दांव कुछ भी काम न आए और न उन को (कहीं से) मदद ही मिले । (४६) और ज़ालिमों के लिए इस के सिवा और अज़ाब भी है, लेकिन उन में के अक्सर नहीं जानते । (४७) और तुम अपने परवरदिगार के हुक्म के इन्तिज़ार में सन्न करो, तुम तो हमारी आंखों के सामने हो और जब उठा करो, तो अपने परवरदिगार की तारीफ़ के साथ तस्बीह किया करो । (४८) और रात के कुछ

वस्बिर् लिह्विम रब्बि-क फइन्न-क बिअ-युनिना व सबिह बिहमिद रब्बि-क ही-न
तकूम ॥ (४८) व मिनल्लैलि फसबिहह व इद्बारन्नजूम * (४९)

५३ सूरतुन्नजिम २३

(मक्की) इस सूर: में अरबी के १४५० अक्षर, ३६५ शब्द, ६२ आयतें और ३ हकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

बन्नजिम इजा हवा ॥ (१) मा जल्ल-
साहिबुकुम् व मा गवा ॥ (२) व मा यन्तिकु
अन्तिहवा ॥ (३) इन् हु-व इल्ला व ह्यु द्यूहा ॥
(४) अल्ल-महू शदीदुल्कुवा ॥ (५) जू मिरंतिन ॥
फस्तवा ॥ (६) व हु-व बिल्-उफुकिल्-अ-ला ॥
(७) सुम्-म दना फ-त-दल्ला ॥ (८) फकान
का-ब कौसैनि ओ अदना ॥ (९) फओहा इला
अब्दिही मा ओहा ॥ (१०) मा क-ज-बल्-
फुआदु मा रआ ॥ (११) अ-फ-तुमारूनहू अला
मा यरा ॥ (१२) व ल-कद् रआहु नज्-ल-तन्
उहरा ॥ (१३) अिन्-द सिदरतिल्-मुन्तहा ॥ (१४)
बिन्दहा जन्नतुल्-मअ्वा ॥ (१५) इज् यरशस-
सिद-र-त्त मा यरशा ॥ (१६) मा जागल्-ब-सह

لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ مُحَمَّدٌ عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ ۝ وَالْأَوَّلُ وَالْآخِرُ وَالظَّاهِرُ وَالْبَاطِنُ ۝ سُبْحَانَ اللَّهِ عَمَّا يُشْرِكُونَ ۝
مَسْجِدَ رَبِّكَ حِينَ تَقُومُ ۝ وَمِنَ اللَّيْلِ فَسُجِّدْ ۝ وَإِنِ اتَّخَذَ الْإِنْسَانُ لِحُكْمِهِ ۝ فَسَاءَ لِحُكْمِهِ ۝
وَالْأَوَّلُ وَالْآخِرُ وَالظَّاهِرُ وَالْبَاطِنُ ۝ سُبْحَانَ اللَّهِ عَمَّا يُشْرِكُونَ ۝
إِن مَّوَدَّاعِبَادٌ ۝ فَمَا يُفِيدُهُمْ ۝ عَلَيْهِمْ أَشْرَفُ النَّوَى ۝ وَذُوهُ فَاسْتَعِزُّ ۝
وَقُلْ لِّأَعْيُنِنَا ۝ وَتَوَدَّعِبَادٌ ۝ فَكَانَ قَابَ قَوْسَيْنِ ۝
أَنفُ ۝ فَادْنُ إِلَى عِبْدِي ۝ إِنِّي أَنَا ۝ وَالْكَذِبُ الْفَوْدُ ۝ إِنِّي أَنَا ۝
عَلَى بَابِي ۝ وَلَقَدْ رَأَى نَزْلَةَ أَهْوَى ۝ وَعِنْدَ سِدْرَةِ الْمُنْتَهَى ۝
عِنْدَ جَانِبِ الْعَرْشِ ۝ وَإِلَّا يَنْظُرُ لِيَصْهَرُ ۝ مَا يَأْتِيهِ ۝ مَا كَانَ ۝
الْبَصَرُ ۝ مَا كَانَ ۝ وَلَقَدْ رَأَى مِنَ الْإِبْرِيمَ الْكَبِيرِ ۝ وَإِذْ يُرَى ۝
وَالْعَصَى ۝ وَمِنَ الْكَافَّةِ الْأُنْفَى ۝ الْكُرُوكُ وَالْأَنْفَى ۝
تِلْكَ الْأَنْفُسُ فَذُوقُوا ۝ إِن مِّنْ أَلْسِنَةٍ سَوِيَّةٍ ۝ وَآتَمَّ ۝
أَبَاؤُكُمْ ۝ أَتَى اللَّهُ لَكُمْ سُلَيْمَانَ ۝ إِن يَكُنْ لَّكَ إِلَّا الْفَقْرُ ۝
تَقْوَى الْأَنْفُسِ ۝ وَلَقَدْ جَاءَهُمْ مِنْ رَبِّكَ الْهُدَى ۝ فَامَّا الْإِنْفَى ۝
تَقْوَى ۝ وَلِلَّهِ الْأَعْرَافُ ۝ وَالْأَوَّلُ ۝ وَتَكُنْ لَّكَ فِي السَّجْدَةِ ۝
تَقْوَى ۝ فَتِلْكَ الْأَنْفُسُ ۝ فَذُوقُوا ۝ وَلَقَدْ رَأَى ۝
لَقَدْ رَأَى مِنْ رَبِّهِ الْهُدَى ۝ فَامَّا الْإِنْفَى ۝

व मा तगा (१७) ल-कद् रआ मिन् आयाति रब्बिहिल्-कुहरा (१८) अ-फ
रएतुमुल्ला-त वल्लुज्जा ॥ (१९) व मनातष-सालि-स-तल्-उख्रा (२०) अ लकुमुज्-
ज-कर व लहुल्-उन्सा (२१) तिल्-क इजन् किस्मतुन् जौजा (२२) इन् हि-य
इल्ला अस्माउन् सम्मंतुमूहा अन्तुम् व आबाउकुम् मा अन्ज-लल्लाहु बिहा मिन् सुल-
तानिन् ॥ इय्यत्तबिअ-न इल्लइअन-न व मा तह्वल्-अन्फुसु व ल-कद् जा-अहुम् मिरंबि-
हिमुल्-हुदा ॥ (२३) अम् लिल्-इन्सानि मा तमन्ना ॥ (२४) फ-लिल्लाहिल्-आखिरतु वल्-
ऊला * (२५) व कम् मिम्म-लकिन् फिस्समावाति ला तुरनी शफाअतुहुम् औअन्
इल्ला मिम्बअ-दि अय्यअ-ज-नल्लाहु लिमय्यशाव व यज्रा (२६) इन्नल्लजी-न
ला युअमिन्-न बिल्-आखिरति लयु-सम्मूतल्-मलाइक-त तस्मि-य-तल्-उन्सा (२७)

वस्तुओं में भी और सितारों के डूबने के बाद भी उस की पाकी बयान किया करो। (४६)★

५३ सूर: नज्म २३

सूर: नज्म मक्की है, इस में बासठ आयतें और तीन रुकूअ हैं।

शुरू खुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

तारे की कसम, जब गायब होने लगे, (१) कि तुम्हारे साहिब (मुहम्मद) न रास्ता भूले हैं, न भटके हैं। (२) और न नफ़स की इवाहिश से मुंह से बात निकालते हैं। (३) यह (क़ुरआन) तो खुदा का हुक्म है, जो (उन की तरफ़) भेजा जाता है, (४) उन को बहुत ताक़त वाले ने सिखाया, (५) (यानी ज़िब्रील) ताक़तवर ने, फिर वह पूरे नज़र आये, (६) और वह (आसमान के) ऊँचे किनारे में थे, (७) फिर करीब हुए और आगे बढ़े, (८) तो वह क़मान के फ़ासले पर या उस से भी कम, (९) फिर खुदा ने अपने बन्दे की तरफ़ जो भेजा, सो भेजा, (१०) जो कुछ उन्होंने ने देखा, उन के दिल ने उस को झूठ न जाना। (११) क्या जो कुछ वे देखते हैं, तुम इस में उन से झगड़ते हो? (१२) और उन्होंने ने उस को एक और बार भी देखा है। (१३) परली हृद की बेरी के पास, (१४) उसी के पास रहने की बहिश्त है, (१५) जबकि उस बेरी पर छा रहा था, जो छा रहा था। (१६) उन की आंख न तो और तरफ़ मायल हुई और न (हृद से) आगे बढ़ी। (१७) उन्होंने ने अपने परवरदिगार (की क़ुदरत) की कितनी ही बड़ी-बड़ी निशानियां देखीं। (१८) भला तुम लोगों ने लात और उज्ज़ा को देखा, (१९) और तीसरे मनात को (कि ये बुत कहीं खुदा हो सकते हैं?) (२०) मुशिरको ! क्या तुम्हारे लिए तो बेटे और खुदा के लिए बेटियां? (२१) यह तक्सीम तो बहुत बे-इंसाफी की है। (२२) वे तो सिर्फ़ नाम ही नाम हैं, जो तुम ने और तुम्हारे बाप-दादा ने गढ़ लिए हैं, खुदा ने तो उन की कोई सनद नहीं उतारी। ये लोग सिर्फ़ (गंदे) गुमान और नफ़स की इवाहिशों के पीछे चल रहे हैं, हालांकि उन के परवरदिगार की तरफ़ से उन के पास हिदायत आ चुकी है। (२३) क्या जिस चीज़ की, इंसान आरज़ू करता है, वह उसे ज़रूर मिलती है? (२४) आखिरत और दुनिया तो खुदा ही के हाथ में है, (२५)★

और आसमानों में बहुत से फ़रिश्ते हैं, जिनकी सिफ़ारिश कुछ भी फ़ायदा नहीं देती, मगर उस वक़्त कि खुदा जिस के लिए चाहे, इजाज़त बरूशे और (सिफ़ारिश) पसन्द करे। (२६) जो लोग आखिरत पर ईमान नहीं लाते, वे फ़रिश्तों को (खुदा की) लड़कियों के नाम से मौसूम करते

है। (२७) हालांकि उन को इस की कुछ खबर नहीं। वे सिर्फ गुमान पर चलते हैं और गुमान यकीन के मुकाबले में कुछ काम नहीं आता। (२८) तो जो हमारी याद से मुंह फेरे और सिर्फ दुनिया ही की खिदगी की तलब में हो, उस से तुम भी मुंह फेर लो। (२९) उन के इल्म की यही इन्तिहा है। तुम्हारा परवरदिगार उस को भी खूब जानता है, जो उस के रास्ते से भटक गया और उसे भी खूब जानता है, जो रास्ते पर चला (३०) और जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ जमीन में है, सब खुदा ही का है (और उस ने खल्कत को) इसलिए (पैदा किया है) कि जिन लोगों ने बुरे काम किए, उन को उन के आमाल का (बुरा) बदला दे और जिन्होंने ने निकियां कीं, उन को नेक बदला दे। (३१) जो छोटे गुनाहों के सिवा बड़े-बड़े गुनाहों और बे-हयाई की बातों से बचते हैं, बेशक तुम्हारा परवरदिगार बड़ी बख्शिश वाला है। वह तुम को खूब जानता है, जब उस ने तुम को मिट्टी से पैदा किया और जब तुम अपनी माओं के पेट में बच्चे थे तो अपने आप को पाक-साफ न जताओ। जो परहेजगार है, वह इसे खूब जानता है। (३२) ★

भला तुम ने उस शल्स को देखा, जिस ने मुंह फेर लिया, (३३) और थोड़ा-सा दिया (फिर) हाथ रोक लिया। (३४) क्या उस के पास ग़ैब का इल्म है कि वह उसे देख रहा है। (३५) क्या जो बातें मूसा के सहीफों (किताबों) में हैं, उन की उस को खबर नहीं पहुंची ? (३६) और इब्राहीम की, जिन्होंने ने (इताअत व रिसालत का हक) पूरा किया। (३७) (वह) यह कि कोई शल्स दूसरे (के गुनाह) का बोझ नहीं उठाएगा। (३८) और यह कि इंसान को वही मिलता है, जिस की वह कोशिश करता है। (३९) और यह कि उस की कोशिश देखी जाएगी, (४०) फिर उस को उस का पूरा-पूरा बदला दिया जाएगा, (४१) और यह कि तुम्हारे परवरदिगार ही के पास पहुंचना है। (४२) और यह कि वह हंसाता और रुलाता है, (४३) और यह कि वही मारता और जिलाता है, (४४) और यह कि वही नर और मादा दो किस्म (के हैवान) पैदा करता है, (४५) (पानी) नुत्के से जो (रहम में) डाला जाता है, (४६) और यह कि (क्रियामत को) उसी पर दोबारा उठाना लाजिम है, (४७) और यह कि वही दौलतमन्द बनाता और मुफ़्लिस करता है, (४८) और यह कि वही शेअरा का मालिक है। (४९) और यह कि उसी ने अब्वल आद को हलाक कर डाला। (५०) और समूद को भी, गरज किसी को बाक़ी न छोड़ा। (५१) और इन से पहले नूह की क़ौम को भी। कुछ शक नहीं कि वे लोग बड़े ही ज़ालिम और बड़े ही सरकश

बल्-मुअ-तफि-क-त अह्वा॥ (५३) कं-गशशाहा मा गशशाह (५४) फबि-अयि
आलाइ रबि-क त-त-मारा (५५) हाजा नजीरुम्-मिनन्जुरिल्-ऊला (५६)
अजि-फतिल्-आजिफतु (५७) लै-स लहा मिन् दूनिल्लाहि काशिकः
(५८) अ-फमिन् हाजल्-हदीसि तअ-जबून॥ (५९) व तज्-हकून व ला
तकून॥ (६०) व अन्तुम् सामिदून (६१)
फरज्जुह् विल्लाहि वअ - बुद्द □ ★ (६२)

बे। (५२) और उसी ने उल्टी हुई बस्तियों को दे पटका। (५३) फिर उन पर छाया, जो छाया। (५४) तो (ऐ इंसान!) तू अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नेमत पर झगड़ंगा? (५५) यह (मुहम्मद) भी अगले डर सुनाने वालों में से एक डर सुनाने वाले हैं। (५६) आने वाली (यानी क़ियामत) क़रीब आ पहुंची। (५७) उस (दिन की तकलीफ़ों) को खुदा के सिवा कोई दूर नहीं कर सकेगा। (५८) (ऐ खुदा के इंकारियो!) क्या तुम इस कलाम से ताज्जुब करते हो? (५९) और हंसते हो और रोते नहीं, (६०) और तुम ग़फ़लत में पड़ रहे हो, (६१) तो खुदा के आगे सज्दा करो और (उसी की) इबादत करो। (६२) ★ □

५४ सूर: क्रमर ३७

सूर: क्रमर मक्की है, इस में पचपन आयतें और तीन स्कूअ हैं।

शुरू खुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

क़ियामत क़रीब आ पहुंची और चांद शक़ हो (फट) गया। (१) और अगर काफ़िर कोई निशानी देखते हैं, तो मुंह फेर लेते हैं और कहते हैं कि यह एक हमेशा का जादू है। (२) और उन्होंने झुठलाया और अपनी स्वाहिशों की पैरवी की और हर काम का वक़्त मुकर्रर है। (३) और उन को ऐसे (पिछले) हालात पहुंच चुके हैं, जिन में इबरत है। (४) और पूरी दानाई (हिक्मत) (की किताब भी,) लेकिन डराना उन को कुछ फ़ायदा नहीं देता, (५) तो तुम भी उन की कुछ परवाह न करो, जिस दिन बुलाने वाला उन को एक नाखुश चीज़ की तरफ़ बुलाएगा, (६) तो आंखें नीची किए हुए क़ब्रों से निकल पड़ेंगे गोया बिखरी हुई टिड्डियां हैं। (७) उस बुलाने वाले की तरफ़ दौड़ते जाते होंगे। काफ़िर कहेंगे यह दिन बड़ा सख़्त है। (८) इन से पहले नूह की कोम ने भी झुठलाया था, तो उन्होंने हमारे बन्दे को झुठलाया और कहा कि दीवाना है और उन्हें डांटा भी। (९) तो उन्होंने अपने परवरदिगार से दुआ की कि (ऐ अल्लाह!) मैं (उन के मुकाबले में) कमज़ोर हूँ, तो (उन से) बदला ले। (१०) पस हमने जोर के मेह से आसमान के मुहाने खोल दिए। (११) और ज़मीन में चश्मे जारी कर दिए, तो पानी एक काम के लिए, जो मुकद्दर हो चुका था, जमा हो गया। (१२) और हमने नूह को एक कश्ती पर जो तस्त्तों और मेखों से तैयार की गयी थी, सवार कर लिया। (१३) वह हमारी आंखों के सामने चलती थी। (यह सब कुछ) उस शक़्स से बदला लेने के लिए किया गया, जिस को काफ़िर मानते थे। (१४) और हम ने उस को एक इबरत बना छोड़ा, तो कोई है कि सोचे-समझे? (१५) सो (देख लो कि) मेरा अज़ाब और डराना कैसा हुआ? (१६) और हम ने क़ुरआन को समझने के लिए आसान कर दिया, तो कोई है कि सोचे-समझे? (१७) आद ने भी झुठलाया था, सो (देख लो) कि मेरा अज़ाब और डराना

इन्ना अरसल्ला अलैहिम् रीहन् सर-स-रन् की योमि नहिस्म-मुस्तमिर-॥ (१९)

तन्निबुल्ला-स क-अन्नुहुम् अज-जाबु नहिलम्-मुत्कबिर (२०) फ-कै-फ का-न अजाबी

व नुजुर (२१) व ल-कद् यस्सरनल्-कुरआ-न लिज्जिकिर फ-हल् मिम्-मुद्दकिर

★ (२२) कज्ज-बत् समूदु बिन्नुजुर (२३) फ-कालू अ-व-श-रम्-मिन्ना वाहिदन्

नस्तबिअहु ॥ इन्ना इजल्लकी जलालिव-व सुअुर

(२४) अ उल्कि-यज्-जिकर अलैहि मिम्बेनिना

बल् हु-व कज्जाबुन् अशिर (२५) स-यअ-

लमू-न गदम्मनिल्-कज्जाबुल्-अशिर (२६)

इन्ना मुसिलुन्नाकति फित्-न-तल्-लहुम् फतैकि-

न्हुम् वस्तबिर (२७) व नबिअहुम्

अन्लल्मा-अ किस्मतुम्-बैनहुम् कुल्लु शिबिम्-मुह-

त-ज्जर (२८) फनादौ साहि-बहुम् फ-तआता

फ-अ-कर (२९) फकै-फ का-न अजाबी व

नुजुर (३०) इन्ना असल्ला अलैहिम् सै-हतव-

वाहि-द-तन् फ-कानू क-हशीमिल्-मुह्तजिर

(३१) व ल-कद् यस्सरनल्-कुरआ-न लिज्जिकिर

फ-हल् मिम्-मुद्दकिर (३२) कज्जबत् कोमु लूतिम्-बिन्नुजुर (३३) इन्ना

असल्ला अलैहिम् हासिबन् इल्ला आ-ल लूतिन् नज्जैनाहुम् बि-स-हरिन् ॥ (३४)

निअ-म-तम्-मिन् अन्दिना कजालि-क नज्जी मन् श-कर (३५) व ल-कद् अन्ज-

रहुम् बत्श-तना फ-तमारौ बिन्नुजुर (३६) व ल-कद् रावदूहु अन् जैफिहौ

फ-त-मस्ना अज-युनहुम् फज्जूक अजाबी व नुजुर (३७) व ल-कद् सन्ब-हहुम् बुक-

र-तन् अजाबुम्-मुस्तकिर (३८) फ-ज्जूक अजाबी व नुजुर (३९) व ल-कद्

यस्सरनल्-कुरआ-न लिज्जिकिर फ-हल् मिम्मुद्दकिर ★ (४०) व ल-कद् जा-अ आ-ल

फिरबीननुजुर (४१) कज्जबू बिआयातिना कुल्लिहा फ-अ-खज्नाहुम्

अख-ज अजीजिम्-मुक्तदिर (४२) अकुफ्फारुकुम् खैरम्मिन् उलाइकुम् अम् लकुम्

बरा-अतुय् फिज्जुबुर (४३) अम् यकूलू-न नहन् जमीशुम्-मुन्तसिर (४४)



कैसा हुआ ? (१८) हमने उन पर सख्त मनहूस दिन में आधी चलायी । (१९) वह लोगों को (इस तरह) उलझे डालती थी, गोया उखड़ी हुई खजूरों के तने हैं, (२०) सो (देख लो कि) मेरा अज़ाब और डराना कैसा हुआ ? (२१) और हमने क़ुरआन को समझने के लिए आसान कर दिया है, तो कोई है कि सोचे-समझे ? (२२) ★

समूद ने भी हिदायत करने वालों को झुठलाया । (२३) और कहा कि भला एक आदमी, जो हम ही में से है, हम उस का पैरवी करें ? यों हो तो हम गुमराही और दीवानगी में पड़ गये । (२४) क्या हम सब में से उसी पर वृह्य नाज़िल हुई है ? (नहीं) बल्कि यह झूठा खुदपसन्द है । (२५) उन को कल ही मालूम हो जाएगा कि कौन झूठा खुदपसन्द है । (२६) (ऐ सालेह !) हम उन की आजमाइश के लिए ऊंटनी भेजने वाले हैं तो तुम उन को देखते रहो और सब्र करो । (२७) और उन को आगाह कर दो कि उन में पानी की बारी मुकर्रर कर दी गयी है । हर (बारी वाले को अपनी) बारी पर आना चाहिए । (२८) तो उन लोगों ने अपने साहिब को बुला लिया और उसने (ऊंटनी को) पकड़ कर उस की कूचें काट डालीं । (२९) सो (देख लो कि) मेरा अज़ाब और डराना कैसा हुआ, (३०) हम ने उन पर (अज़ाब के लिए) एक चीख भेजी, तो वे ऐसे हो गये, जैसे बाढ़ वाले की सूखी और टूटी हुई बाड़, (३१) और हमने क़ुरआन को समझने के लिए आसान कर दिया, तो कोई है कि सोचे-समझे ? (३२) लूत की क्रौम ने भी डर सुनाने वालों को झुठलाया था, (३३) तो हमने उन पर कंकड़ भरी हवा चलायी, मगर लूत के घर वाले कि हमने उन को पिछली रात ही से बचा लिया, (३४) अपने फ़ज़ल से शुक्र करने वाले को हम ऐसा ही बदला दिया करते हैं, (३५) और (लूत ने) उन को हमारी पकड़ से डरा भी दिया था, मगर उन्होंने ने डराने में शक किया । (३६) और उन से उन के मेहमानों को ले लेना चाहा, तो हमने उन की बाँखें मिटा दीं, सो (अब) मेरे अज़ाब और डराने के मजे चखो । (३७) और उन पर सुबह-सवेरे ही अटल अज़ाब आ नाज़िल हुआ । (३८) तो अब मेरे अज़ाब और डराने के मजे चखो । (३९) और हमने क़ुरआन को समझने के लिए आसान कर दिया है, तो कोई है कि सोचे-समझे ? (४०) ★

और फ़िऔन की क्रौम के पास भी डर सुनाने वाले आए, (४१) उन्होंने ने हमारी तमाम निशानियों को झुठलाया, तो हमने उन को इस तरह पकड़ लिया, जिस तरह एक ताक़तवर और ग़ालिब शक्स पकड़ लेता है । (४२) (ऐ अरब वालो ?) क्या तुम्हारे काफ़िर उन लोगों से बेहतर हैं या तुम्हारे लिए (पहली) किताबों में कोई फ़ारिश ख़ती लिख दी गयी है ? (४३) क्या ये लोग कहते हैं कि हमारी ज़माअत बड़ी मजबूत है ? (४४) बहुत जल्द यह जमाअत हार खाएगी और

सयुह-जमुल्-जम्शु व युवल्लूनदुबुर (४५) बलिस्साअतु मोअिदुहुम् वस्साअतु अदहा
व अमरं (४६) इन्नल्-मुजिरमी-न फी जलालिव-व सुअुर॥ (४७) यो-म युस्हबू-न
फिन्नारि अला वुजहिहिम् जूकू मस-स स-कर (४८) इन्ना कुल-ल शैन् ख-लक्-
नाहु बि-क-दर (४९) व मा अम्हना इल्ला वाहि-दतुन् क-लम्हिम्-बिल्ब-सर
(५०) व ल-कद् अह-लक्ना अश्याअकुम्
फ-हल् मिम्मुद्दकिर (५१) व कुल्लु शैन्
फ-अलूहु फिज्जुबुर (५२) व कुल्लु सगीरिव-
व कबीरिम्-मुस्ततर (५३) इन्नल्-मुत्तकी-न
फी जन्नातिव-व न-हरित्॥ (५४) फी मक्-अदि
सिदकिन् अिन-द मलीकिम्-मुक्तरिदर★ (५५)

बे लोग पीठ फेर-फेर कर भाग जाएंगे। (४५) उन के वायदे का वक्त तो क्रियामत है और क्रियामत बड़ी सस्त और बहुत कड़वी है। (४६) बेशक गुनाहगार लोग गुमराही और दीवानगी में (पड़े हुए) हैं। (४७) उस दिन मुंह के बल दोजख में घसीटे जाएंगे। अब आग का मजा चखो। (४८) हमने हर चीज मुकर्रर अन्दाजे के साथ पैदा की है। (४९) और हमारा हुक्म तो आंख के झपकने की तरह एक बात होती है। (५०) और हम तुम्हारे हम-मजहबों को हलाक कर चुके हैं, तो कोई है कि सोचे-समझे? (५१) और जो कुछ उन्होंने किया (उन के) आमालनामों में (दर्ज) है। (५२) (यानी) हर छोटा और बड़ा काम लिख दिया गया है। (५३) जो परहेजगार हैं, वे बायों और नहरों में होंगे, (५४) (यानी) पाक मक़ाम में हर तरह की क़ुदरत रखने वाले बादशाह की बारगाह में। (५५)★

५५ सूर: रहमान ६७

सूर: रहमान मक्की है, इस में अठहत्तर आयतें और तीन रुकूअ हैं।

शुरू खुदा का नाम लेकर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

(खुदा, जो) निहायत मेहरबान, (१) उसी ने क़ुरआन की तालीम फ़रमायी, (२) उसी ने इंसान को पैदा किया। (३) उसी ने उस को बोलना सिखाया, (४) सूरज और चांद एक मुकर्रर हिसाब से चल रहे हैं, (५) और बूटियां और पेड़ सज्दा कर रहे हैं। (६) और उसी ने आसमान को बुलंद किया और तराजू कायम की, (७) कि तराजू (से तौलने) में हद से आगे न बढ़े। (८) और इंसान के साथ ठीक तौलो और तौल कम मत करो (९) और उसी ने खलक़त के लिए ज़मीन बिछायी, (१०) उस में मेवे और खज़ूर के पेड़ हैं, जिन के खोशों पर गिलाफ़ होते हैं। (११) और अनाज, जिस के साथ भुस होता है और खुशबूदार फूल, (१२) तो (ऐ ज़िन्नो और इंसानों के ग़िरोह!) तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नेमतों को झुठलाओगे? (१३) उसी ने इंसान को ठीकरे की तरह खनखनाती मिट्टी से बनाया, (१४) और ज़िन्नो को आग के शोले से पैदा किया, (१५) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नेमत को झुठलाओगे? (१६) वही दोनों मरिख़ों और दोनों मरिख़ों का मालिक (है,) (१७) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नेमत को झुठलाओगे? (१८) उसी ने दो दरिया जारी किए जो आपस में मिलते हैं। (१९) दोनों में एक आड़ है कि (उस से) आगे नहीं बढ़ सकते। (२०) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नेमत को झुठलाओगे? (२१) दोनों दरियाओं से मोती और मूंगे निकलते

१. इस आयत में ख़िताब दो जमाअतों की तरफ़ है और इस से मुराद इन्सान और ज़िन्न हैं, चुनांचे इक्तीसवें आयत में 'सक्रुलान' का लफ़्ज़ है, जिसके मानी हैं दो ग़िरोह और उनसे ज़ैसा कि हदीसे सही में आया है, ज़िन्न और इन्सान मुराद हैं और तेतीसवीं आयत में तो साफ़ ज़िन्न व इन्स का नाम ले कर उन से ख़िताब किया गया है। इसी बजह से हम ने इस आयत के तर्जुमे में, ऐ ज़िन्न व इन्स के ग़िरोहो! के लफ़्ज़ बड़ा दिए हैं।

यल्लुजु मिन्हुमल्-लुअलुउ वल्-मर्जानु (२२) फ़बिअय्यि आला-इ रन्बिकुमा तुकज-
जिबान (२३) व लहुल्-जवारिल्-मुग्श-आतु फ़िल्बहिर कल-अम्-लामि (२४)
फ़बिअय्यि आला-इ रन्बिकुमा तुकज्जिबान (२५) कुल्लु मन् अलैहा फ़ानिब-
(२६) व यन्का वज्हु रन्बि-क जुल्ललालि वल-इकरामि (२७) फ़बिअय्यि आला-इ

रन्विकुमा तुक्जिबान (२८) यस्-अलुह मन्
फ्रिस्समावाति वल्जिज्कुल-ल योमिन् हु-व फ्री

गङ्गान्तः(२६) फ़बिअधिय आला-इ रबिबकुमा
 तुकज्जिबान (३०) सनफ़-रुगु लंकुम् अय्यु-
 हस-कलानिः(३१) फ़बिअधिय आला-इ

रन्बिकुमा तुकज्जिबान (३२) यामजू-श-रल्-
जिन्नि वलइन्ति इनिस्त-तअ-तुम् अन् तन्फुजू
सिन् अक्तारिस्समावाति वलअज्जि फन्फुजूला
तन्फुज्जन् इल्ला बिसुलतान ८ (३३) फब्बिअय्यि

आला-इ रब्बिकुमा तुकज्जिबान (३४) युसलु
अलैकुमा शुवाजुम्-मिन्नारिव-व नुहासुन् फला
तन्तसिरानि (३५) फबिअथिय आला-इ रब्बि-

हैं। (२२) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नेमत को झुठलाओगे ? (२३) और जहाज भी उसी के हैं जो नदी में पहाड़ों की तरह ऊँचे खड़े होते हैं, (२४) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नेमत को झुठलाओगे ? (२५)★

जो (मल्लूक) जमीन पर है, सब को फना होना है। (२६) और तुम्हारे परवरदिगार ही की ज़ात (बरकत वाली,) जो जलाल व अज़मत वाली है, बाक़ी रहेगी, (२७) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नेमत को झुठलाओगे ? (२८) आसमान व ज़मीन में जितने लोग हैं, सब उसी से मांगते हैं, वह हर दिन काम में लगा रहता है। (२९) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नेमत को झुठलाओगे ? (३०) ऐ दोनों जमाअतो ! हम बहुत जल्द तुम्हारी तरफ़ मुतवज्जह होते हैं। (३१) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नेमत को झुठलाओगे ? (३२) ऐ ज़िन्न व इन्सान के ग़िरोह ! अगर तुम्हें कुदरत हो कि आसमान और ज़मीन के किनारों से निकल जाओ, तो निकल जाओ और जोर के सिवा तो तुम निकल सकने ही के नहीं। (३३) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नेमत को झुठलाओगे ? (३४) तुम पर आग के शोले और धुआँ छोड़ दिया जाएगा, तो फिर तुम मुकाबला न कर सकोगे। (३५) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नेमत को झुठलाओगे ? (३६) फिर जब आसमान फट कर तेल की तलछट की तरह गुलाबी हो जाएगा, (तो वह कँसा हौलनाक दिन होगा ?) (३७) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नेमत को झुठलाओगे ? (३८) उस दिन न तो किसी इंसान से उस के गुनाहों के बारे में पूछ-ताछ की जाएगी और न किसी ज़िन्न से। (३९) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नेमत को झुठलाओगे ? (४०) गुनाहगार अपने चेहरे ही से पहचान लिए जाएंगे, तो पेशानी के बालों और पावों से पकड़ लिए जाएंगे। (४१) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नेमत को झुठलाओगे ? (४२) यही वह जहन्नम है, जिसे गुनाहगार लोग झुठलाते थे (४३) वे दोबख़ और खोलते हुए गर्म पानी के दमियान घूमते फिरेंगे। (४४) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नेमत को झुठलाओगे ? (४५)★

और जो शरूस अपने परवरदिगार के सामने खड़े होने से डरा, उस के लिए दो बाग़ हैं। (४६) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नेमत को झुठलाओगे ? (४७) उन दोनों में बहुत-सी शाखें (यानी क्रिस्म-क्रिस्म के मेवों के पेड़ हैं,) (४८) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नेमत को झुठलाओगे ? (४९) इन में दो चश्मे बह रहे हैं, (५०) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नेमत को झुठलाओगे ? (५१) उन में सब मेवे दो-दो क्रिस्म के हैं, (५२) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नेमत को झुठलाओगे ? (५३) (जन्मत वाले) ऐसे बिछीनों

१. मतलब यह है कि जितने तसदफ़ात इस बुनिया में हो रहे हैं, उन सब का मस्बूर वही रब्बुल आलमीन है।

२. और जोर तुम में है नहीं, तो तुम भाग कर निकल सकते भी नहीं।

मुत्तकिई-न अला फुरशिम्-बताइनुहा मिन् इस्तरकिन् ७ व ज-नल्-जन्नतेनि दान^८(५४)
 फबिअय्यि आला-इ रबिक्कुमा तुक्जिबान (५५) फीहिन्-न कासिरातुत्तकि^९ लम्
 यत्तिस्-हन्-न इन्मुन् कब्-लहुम् व ला जान्नि^८(५६) फबिअय्यि आला-इ रबिक्कुमा
 तुक्जिबान (५७) क-अन्नहन्-ल-याकतु वल्लजान्नि^८(५८) फबिअय्यि आला-इ

रत्निकुमा तुकडिजवान (५६) हल् जजाउल-

इहसानि इल्लल-इहसानु ८ (६०) फ़बिअय्य

आला-इ रबिबकुमा तुकज्जिबान (६१) व

मिन् दूनिहिमा जन्नतानि ८ (६२) फ़बिअय्य

आला-इ रबिबकुमा तुक्ज्जिबान ॥ (६३) मूद-

हाम्मतानिः (६४) फ़बिअय्य आला-इ रब्बि-

कुमा तुकज्जिबानटः(६५) फ्रीहिमा अँनानि

नञ्जासतानि ८ (६६) फ़बिअय्य आला-इ

रन्विकूमा तूकजजिबान^८(६७) फ्रीहिमा फ्राकि-

हत्तुं व-व नरुलुं व-व रुम्मानः (६८) कविअय्य

आला-इ रब्बिकूमा तुक्जजिबान ८ (६६) फ्री-

हिन्-न खंरातून हिसान ८ (७०) फ़बिअय्यि

आला-इ रन्बिकमा तकजजिबान ८. (७१)

पर जिन के स्तर अतलस के हैं, तक्रिया लगाये हुए होंगे और दोनों बागों के मेवे करीब (भुक रहे) हैं। (५४) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नेमत को झुठलाओगे? (५५) इन में नीची निगाह वाली औरतें हैं जिन को जन्नत वालों से पहले न किसी इम्सान ने हाथ लगाया और न किसी जिन्न ने, (५६) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नेमत को झुठलाओगे? (५७) गोया वे याकूत और मर्जान हैं। (५८) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नेमत को झुठलाओगे? (५९) नेकी का बदला नेकी के सिवा कुछ नहीं है, (६०) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नेमत को झुठलाओगे? (६१) और इन बागों के अलावा दो बाग और हैं (६२) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नेमत को झुठलाओगे? (६३) दोनों खूब गहरे हरे, (६४) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नेमत को झुठलाओगे, (६५) इन में दो चश्मे उबल रहे हैं, (६६) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नेमत को झुठलाओगे? (६७) इन में मेवे और खजूरें और अनार हैं। (६८) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नेमत को झुठलाओगे? (६९) इन में नेक सीरत (और) खूबसूरत औरतें हैं, (७०) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नेमत को झुठलाओगे? (७१) (वे) हूरें (हैं, जो) खेमों में छिपी (हैं), (७२) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नेमत को झुठलाओगे? (७३) उन को (जन्नत वालों में) न किसी इंसान ने हाथ लगाया और न किसी जिन्न ने, (७४) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नेमत को झुठलाओगे? (७५) हरी कालीनों और उम्दा मस्नदों पर तक्रिया लगाए बैठे होंगे। (७६) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नेमत को झुठलाओगे? (७७) (ऐ मुहम्मद!) तुम्हारा परवरदिगार, जो जलाल व अजमत का मालिक है, उस का नाम बड़ा बरकत वाला है। (७८) ★

५६ सूर: वाक्त्रिभ: ४६

सूर: वाक्त्रिभ: मक्की है, इस में ४६ आयतें और तीन रकूअ हैं।

शुरू खुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

जब वाक्त्रिभ होने वाली वाक्त्रिभ हो जाए, (१) उस के वाक्त्रिभ होने में कुछ झूठ नहीं, (२) किसी को पस्त करे, किसी को बुलंद, (३) जब जमीन भूचाल से कांपने लगे, (४) और पहाड़ टूट-टूट कर रेखा-रेखा हो जाएं, (५) फिर गुबार हो कर उड़ने लगें, (६) और तुम लोग तीन क्रिस्म हो जाओ, (७) तो दाहिने हाथ वाले, (सुब्हानल्लाह!) दाहिने हाथ वाले क्या (ही चैन में) हैं, (८)

व अस्हाबुल-मश्-अ-मति ॥ मा अस्-हाबुल-मश्-अ-मः ॥ (६) वस्साबिकूनस्-साबिकून
 (१०) उला-इकल्-मुकर्रबून ॥ (११) फी जन्नातिन्नजीम (१२) सुल्लतुम्-मिनल-
 अब्वलीन ॥ (१३) व कलीलुम्-मिनल-आखिरीन ॥ (१४) अला मुहरिम्-मौजूनतिम्-
 (१५) - मुत्तकिई-न अलैहा मु-त-क्राबिलीन (१६) यत्फु अलैहिम् विल्दानुम्-मु-
 सल्लतून ॥ (१७) बि-अक्वाबिद्व-व अबारी-क

व कअसिम्-मिम्-मजीनिल-॥ (१८) ला युसद्-
 दअून अन्हा व ला युन्जिफून ॥ (१९) व
 फाकिहतिम्-मिम्मा य-त-खय्यरून ॥ (२०) व
 लहिम् तैरिम्-मिम्मा यशतहून ॥ (२१) व हूरुन्
 आनुन् ॥ (२२) क-अम्सालिल-लुअलुइल-मकनून ॥
 (२३) जज्ज-अम्-बिमा कानू यअ-मलून (२४)
 ला यस्-मअून फीहा लखव-व ला तअसीमा ॥
 (२५) इल्ला क्रीलन् सलामन् सलामा (२६)
 व अस्हाबुल-यमीनि ॥ मा अस्हाबुल-यमीन ॥ (२७)
 फी सिदरिम्-मरजूदिव-॥ (२८) व तलिहम्-
 मन्जूदिव-॥ (२९) व जिल्लिम्-मम्दूदिव-॥
 (३०) व माइम्-मस्कूदिव-॥ (३१) व

फाकिहतिन् कसीरतिल-॥ (३२) ला मक्तूअतिव-व ला मम्नूअतिव-॥ (३३) व
 फुरुशिम्-मरफूअः ॥ (३४) इन्ना अन्शअनाहुन्-न इन्शा-अन् ॥ (३५) फ-ज-अल्लाहुन्-न
 अब्कारन् ॥ (३६) अरुबन् अतराबल-॥ (३७) लि-अस्हाबिल-यमीन ॥ (३८) सुल्ल-
 तुम्-मिनल-अब्वलीन ॥ (३९) व सुल्लतुम्-मिनल-आखिरीन ॥ (४०) व अस-हाबुशि-
 मालि ॥ मा अस्हाबुशिमा ॥ (४१) फी सप्मीमिव-व हमीमिव-॥ (४२) व जिल्लिम्-
 मिव्यहूमिल-॥ (४३) ला बारिदिव-व ला करीम (४४) इन्नहुम् कानू कब-ल जालि-क
 मुत-रफीन ॥ (४५) व कानू युसिरून अ-लल्-हिन्सिल-अजीम ॥ (४६) व कानू यकूल-न
 अ इजा मिला व कुन्ना तुराबव-व अजामन् अ इन्ना ल-मबूसून ॥ (४७) अ-व
 आबाउनल-अब्वलून (४८) कुल् इन्नल-अब्वली-न वलआखिरी-न ॥ (४९)



और बाएं हाथ वाले (अफसोस !) बाएं हाथ वाले क्या (अज़ाब में गिरफ्तार) है, (९) और जो आगे बढ़ने वाले हैं, (उन का क्या कहना) वे आगे ही बढ़ने वाले हैं, (१०) वही (खुदा के) मुकर्रब है, (११) नेमत की बहिश्त में, (१२) वे बहुत से तो अगले लोगों में से होंगे, (१३) और थोड़े से पिछलों में से, (१४) (लाल व याकूत वगैरह से) जड़े हुए तल्लों पर, (१५) आमने-सामने तकिया लगाये हुए, (१६) नवजवान खिद्मतगुज़ार, जो हमेशा (एक ही हालत में) रहेंगे, उन के आस-पास फिरेंगे। (१७) यानी आबखोरे और आफ़ताबे और साफ़ शराब के गिलास ले ले कर, (१८) इस से न तो सर में दर्द होगा और न उन की अक्लें मारी जाएंगी। (१९) और मेवे, जिस तरह के उन को पसन्द हों, (२०) और परिंदों का गोश्त, जिस क्रिस्म का उन का जी चाहे, (२१) और बड़ी-बड़ी आंखों वाली हूरें, (२२) जैसे (हिफ़ाज़त से) तह किए हुए (आबदार) मोती। (२३) यह उन के आमांल का बदला है, जो वे करते थे। (२४) वहां न बेहूदा बात सुनेंगे और न गाली-गलीज, (२५) हाँ, उन का कलाम सलाम-सलाम (होगा), (२६) और दाहिने हाथ वाले ! (सुन्हानल्लाह !) दाहिने हाथ वाले क्या (ही ऐश में) हैं ? (२७) (यानी) बे-कांटे की बेरियों, (२८) और तह-ब-तह केलों, (२९) और लम्बे-लम्बे सायों, (३०) और पानी के झरनों, (३१) और ज़्यादा से ज़्यादा मेवों (के बाग़ों) में, (३२) जो न कभी ख़त्म हों और न उन से कोई रोके, (३३) और ऊँचे-ऊँचे फ़र्शों में, (३४) हम ने इन (हूरों) को पैदा किया, (३५) तो उन को कुवारियां बनाया, (३६) (और शौहरों की) प्यारियां और हम-उम्र, (३७) (यानी) दाहिने हाथ वालों के लिए, (३८)★

(ये) बहुत से तो अगले लोगों में से हैं, (३९) और बहुत से पिछलों में से। (४०) और बाएं हाथ वाले (अफ़सोस !) बाएं हाथ वाले क्या (ही अज़ाब में) हैं। (४१) (यानी) दोख़ की लपट और खोलते हुए पानी में, (४२) और स्याह धुएं के साए में, (४३) (जो) न ठंडा (है) न खुशनुमा, (४४) ये लोग इस से पहले नेमतों के ऐश में पड़े हुए थे, (४५) और बड़े गुनाह पर अड़े हुए थे, (४६) और कहा करते थे कि भला जब हम मर गये और मिट्टी हो गये और हड्डियां (ही) हड्डियां रह गये तो क्या हमें फिर उठाना होगा ? (४७) और क्या हमारे बाप-दादा को भी ? (४८) कह दो कि बेशक पहले और पिछले, (४९) (सब) एक मुकर्रर दिन के वक़्त पर जमा

१. यानी इस में से कुछ टूट नहीं चुका।

किए जाएंगे। (५०) फिर तुम ऐ झुठलाने वाले गुमराहो! (५१) यूहर के पेड़ खाओगे, (५२) और इसी से पेट भरोगे, (५३) और इस पर खीलता हुआ पानी पियोगे, (५४) और पियोगे भी तो इस तरह जैसे प्यासे ऊंट पीते हैं, (५५) बदले के दिन यह उन की मेहमानी होगी। (५६) हम ने तुम को (पहली बार भी तो) पैदा किया है, तो तुम (दोबारा उठने को) क्यों सच नहीं समझते? (५७) देखो तो कि जिस (नुक़्ते) को तुम (औरतों के रहम में) डालते हो, (५८) क्या तुम इस (से इंसान) को बनाते हो या हम बनाते हैं? (५९) हम ने तुम में मरना ठहरा दिया है और हम इस (बात) से आजिज़ नहीं, (६०) कि तुम्हारी तरह के और लोग तुम्हारी जगह ले आएंगे और तुम को ऐसे जहान में जिस को तुम नहीं जानते, पैदा कर दें। (६१) और तुम ने पहली पैदाइश तो जान ही ली है, फिर तुम सोचते-क्यों नहीं? (६२) भला देखो तो कि जो कुछ तुम बोते हो, (६३) तो क्या तुम उसे उगाते हो या हम उगाते हैं? (६४) अगर हम चाहें तो उसे चूरा-चूर कर दें और तुम बातें बनाते रह जाओ। (६५) (कि हाय!) हम तो मुफ़्त जुमनि में फंस गये, (६६) बल्कि हम हैं ही बे-नसीब। (६७) भला देखो तो कि जो पानी तुम पीते हो, (६८) क्या तुम ने उस को बादल से नाज़िल किया है या हम नाज़िल करते हैं? (६९) अगर हम चाहें तो हम उसे खारी कर दें, फिर तुम शुक़ क्यों नहीं करते? (७०) भला देखो तो, जो आग तुम पेड़े से निकालते हो, (७१) क्या तुम ने उस पेड़ को पैदा किया है या हम पैदा करते हैं? (७२) हम ने उसे याद दिलाने और मुसाफ़िरों के बरतने को बनाया है। (७३) तो तुम अपने परवरदिगार बुजुर्ग के नाम की तस्बीह करो। (७४) ★●

हमें तारों की मंजिलों की क़सम! (७५) और अगर तुम समझो तो यह बड़ी क़सम है, (७६) कि यह बड़े रुख़े का क़ुरआन है, (७७) (जो) किताबे महफूज़ में (लिखा हुआ है।) (७८) इस को वही हाथ लगाते हैं, जो पाक हैं। (७९) परवरदिगारे आलम की तरफ़ से उतारा गया है। (८०) क्या तुम उस कलाम से इन्कार करते हो? (८१) और अपना बज़ीफ़ा यह बनाते हो कि (इसे)

फ़लीला इजा ब-ल-ग़ातिल-हुल्कूम ॥ (८३) व अन्तुम् हीनइजिन् तन्जुहन् ॥ (८४) व
नहनु अक़-रबु इलैहि मिन्कुम् व लाकिल्ला तुग्सिहन् (८५) फ़लीला इन् कुन्तुम्
सै-र मदीनीन ॥ (८६) तजिअूनहा इन् कुन्तुम् सादिकीन (८७) फ़-अम्मा इन्
कान-मिनल-मुकरबीन ॥ (८८) फ़रीहु-व-व रैहानु-व-व जन्नतु नजीम (८९) व
अम्मा इन् कान-मिन् अस्हाबिल-यमीन ॥ (९०)
फ़-सलामुल्ल - क मिन् अस्हाबिल - यमीन ॥
(९१) व अम्मा इन् कान-मिनल-
मुकब्ज़ीबीनज़-ज़ाल्लीन ॥ (९२) फ़नुजुलुम्-
मिन् हमीमि-व- ॥ (९३) व तस्लि-यतु
जहीम (९४) इन्-न हाजा लहु - व
हक्कुल - यकीन ॥ (९५) फ़सबिह
बिस्मि रब्बिकल - अजीम ★ (९६)

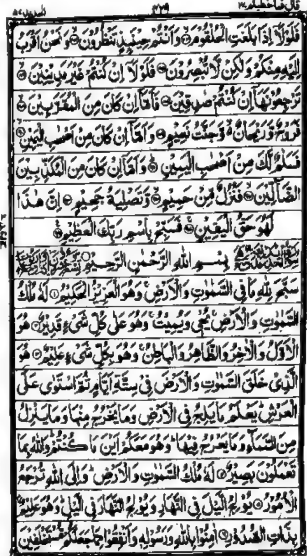
५७ सूरतुल हदीदि ६४

(मदनी) इस सूर: में अरबी के २५६६ अक्षर,
५८६ शब्द, २६ आयतें और ४ हकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिरंह्मानिरंहीम •

सबब-ह लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति

वल्अज़ि ॥ व हुवल-अज़ीजुल-हकीम (१) लहु मुल्कुस्समावाति वल्अज़ि
युह्यी व युमीतु ॥ व हु-व अला कुल्लि शैइन् कदीर (२) हुवल -
अव्वलु वल्-आखिरु वज़्जाहिरु वल्बातिनु ॥ व हु-व बिकुल्लि शैइन् अलीम
(३) हुवल्लजी ख-ल - कस्समावाति वल्अर-ज़ फ़ी सित्ति अय्यामिन्
सुम्मस्तवा अ-लल्अशिषयअ-लमु मा यलिजु फ़िल्अज़ि व मा यखरजु मिन्हा व मा
यन्जिलु मिनस्समाइ व मा यअ-रजु फ़ीहा ॥ व हु-व म-अकुम् ऐनमा
कुन्तुम् ॥ वल्लाहु बिमा तअ - मलून बसीर (४) लहु मुल्कुस्समावाति
वल्अज़ि ॥ व इलल्लाहि तुरज्जुल - उमूर (५) यूलिजुल्लै-ल फ़िन्नहारि
व यूलिजुल्लहा-र फ़िल्लैलि ॥ व हु-व अलीमुम् - बिजातिस - सुदूर (६)



शुठलाते हो, (८२) भला जब रुह गले में आ पहुंचती है, (८३) और तुम उस वक्त (की हालत को) देखा करते हो, (८४) और हम उस (मरने वाले) से तुम से भी ज्यादा नजदीक होते हैं, लेकिन तुम को नज़र नहीं आते। (८५) पस अगर तुम किसी के बस में नहीं हो, (८६) तो अगर सच्चे हो तो रुह को फेर क्यों नहीं लेते? (८७) फिर अगर वह (खुदा के) मुकर्रिबों में से है, (८८) तो (उस के लिए) आराम और खुशबूदार फल और नेमत के बाग हैं, (८९) और अगर वह दाएं हाथ वालों में से है, (९०) तो (कहा जाएगा कि) तुझ पर दाहिने हाथ वालों की तरफ से सलाम, (९१) और अगर वह शुठलाने वाले गुमराहों में से है, (९२) तो (उस के लिए) खोलते पानी की मेहमानी है, (९३) और जहन्नम में दाखिल किया जाना। (९४) यह (दाखिल किया जाना यक़ीनन सही यानी) हक्कुल यक़ीन है। (९५) तुम अपने परवरदिगार बुजुर्ग के नाम की तस्बीह करते रहो। (९६) ★



५७ सूर: हदीद ८४

सूर: हदीद मदनी है, इस में २९ आयतें और चार रुकूअ हैं।

शुरू खुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

जो मरूलूक आसमानों और ज़मीन में है, खुदा की तस्बीह करती है और वह ग़ालिब (और) हिकमत वाला है। (१) आसमानों और ज़मीन की बादशाही उसी की है, (वही) ज़िदा करता और मारता है और वह हर चीज़ पर कुदरत रखता है। (२) वह (सब से) पहला और (सब से) पिछला और (अपनी कुदरतों से सब पर) जाहिर और (अपनी ज़ात से) पोशीदा है और वह तमाम चीज़ों को जानता है। (३) वही है जिस ने आसमानों और ज़मीन को छः दिन में पैदा किया, फिर अर्श पर जा ठहरा। जो चीज़ ज़मीन में दाखिल होती और जो उस से निकलती है और आसमान से उतरती और जो उस की तरफ चढ़ती है, सब मालूम है और तुम जहां कहीं हो, वह तुम्हारे साथ है और जो कुछ तुम करते हो, खुदा उस को देख रहा है। (४) आसमानों और ज़मीन की बादशाही उसी की है और सब मामले उसी की तरफ रुजूअ होते हैं। (५) (वही) रात को दिन में दाखिल करता और दिन को रात में दाखिल करता है और वह दिलों के भेदों

आमिन् बिल्लाहि व रसूलिही व अन्फिक्कू मिम्मा ज-अ-लकुम् मुस्तख-लफ्फी-न फीहि
फल्लजी-न आमन् मिन्कुम् व अन्फिक्कू लहुम् अज-रन् कबीर (७) व मा लकुम्
ला तुअमिन्-न बिल्लाहि^८ वरसूलु यदअकुम् लिनुअमिन् बिर्बिक्कुम् व कद् अ-ख-ज
मीसाककुम् इन् कुन्तुम् मुअमिनीन (८) हुवल्लजी युनरिजलु अला

अब्दिही^१ आयातिम्-बध्यिनातिल-लियुखरि-जकुम्
मिनञ्जुलुमाति इलन्नूरि^२ व इन्नल्ला-ह बिकुम्
ल-रऊफुरहीम (६) व मा लकुम् अल्ला
तुन्फिकू फी सबीलिल्लाहि व लिल्लाहि मीरा
सुस्समावाति वल्अज्रि^३ ला यस्तवी मिन्कुम् मन्
अन्फ-क मिन् कबिल-फतिह व कात-ल उलाइ-क
अअ-जमु द-र-ज-तम्-मिनल्लजी-न अन्फकू मिम्-
बअ-दु व कातलू^४ व कुल्लव्व-अ-दल्लाहुल-हुस्ना^५
वल्लाहु बिमा तअ-मलू-न खबीर ★ (१०) मन्
जल्लजी युक्रिञ्जुल्ला-ह कर्-जन् ह-स-नन् फ-
युज्जाअि-फहू लहू व लहू अजरू करीम (११)
यो-म त-रल-मअमिनी-न वल्मुअमिनाति यस्आ

قَالَ قَالَيْنِ امْؤَاتِكُمْ وَأَفْعُوا إِلَيْنِ أَجْرٌ كَبِيرٌ ۝ وَالَّذِينَ لَا
يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالرَّسُولِ يَدْعُونَكَ لَتُنْزِلَهُنَّ عَلَيْنَا قَدْ أَخَذَ
بِأُفْعَانَهُنَّ لِنَنْفَعَنَّهُنَّ مَوَافِينَ ۝ هُوَ الَّذِي يُنَزِّلُ عَلَى عَبْدِهِ آيَاتٍ
يُخَيِّطُ بِهَا لَكُمْ مِنْ أَفْعَالِكُمْ إِلَى الشُّرُوفِ وَإِنَّ اللَّهَ لَكَرِيمٌ ۝ وَذَرِ
وَالَكُمْ الْأَفْعَالُ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَلْيَذَرِ اللَّهُ الشُّرُوفَ وَالْأَرْضَ
لَا يَسْتَوُونَ مِنْكُمْ مَنْ آتَى مِنَ الْغَنِيِّ وَقَتْلَ الْوَيْلَ لَأَفْعَالِهِ
دَرَجَةً مِنَ الَّذِينَ أَفْعُوا مِنْ بَعْدِ وَقَتْلُوا ۝ وَلَا وَعَدَ اللَّهُ
أَنْ تُسْفَى وَآلَهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَيْرٌ ۝ مَنْ ذَا الَّذِي يَفْقُضُ اللَّهُ
قُرْصًا حَسَنًا فَيُضْعِفُهُ لَهُ ۝ وَلَهُ أَجْرٌ كَبِيرٌ ۝ يَوْمَ تَرَى الْمُؤْمِنِينَ
وَالْمُؤْمِنَاتِ يَسْعَى نُورُهُمْ بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَبِأَيْمَانِهِمْ تُبْرَكُ أَيْوَمُ
جَنَّتْ تَجْرَى مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا ذَٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ
الْعَظِيمُ ۝ يَوْمَ يَقُولُ الْمُتَّقُونَ وَلَمْ نَكُنْ لَكُمْ فِي أَمْوَالِكُمْ
نَقِيبٌ مِنْ نَوْءِكُمْ قِيلَ أَهْوَاءَ ذَٰلِكُمْ وَالشُّعُورُ لَوْزَأُ فَرَبٍ
بَيْنَهُمْ يَوْمَ لَا يَأْتِي بَاطِلٌ وَأَفْعَالُهُ فِيهِ الرِّحْمَةُ وَظَاهَرُ مِنْ قَبْلِ
الْعَذَابِ ۝ يَوْمَ ذُوقُوا أَلْمَ الْبُخْلِ مَعَكُمْ وَالْوَالِ وَالْكَذِبُ قَسَمٌ
أَنْفَعَكُمْ وَتَرَضَعُوا وَارْتَبِعُوا وَغَزَّكُمْ الْأَمَانُ حَتَّى جَاءَ
أَمْرُ اللَّهِ وَعَزَّكُمْ بِاللَّهُ الْفَوْزُ ۝ قَالِيَوْمَ لَا يُؤْخَذُ مِنْكُمْ فِدْيَةٌ

नूरुहुम् बे-न ऐदीहिम् व बिऐमानिहिम् बुशरा-कुमुल्यौ-म जन्नातुन् तजरी मिन् तहित-
हल-अन्हार खालिदी-न फ्रीहा ७ जालि-क हुवल-फौजुल-अजीम ८ (१२) यौ-म
यकूलुल-मुनाफिकू-न वल्मुनाफिकातु लिल्लजी-न - आमनुञ्जुरुना नक्तबिस् मिन्
नूरिकुम् ९ कीर्जिअ वरा-अकुम् फलतमिस् नूरन् ७ फज्जुरि-ब बेनहुम् बिस्-
रिल्लहू बाबुन् ७ बातिनुहू फ्रीहिर्ह-मतु व आहिहू मिन कि-बलिहिल-अजाब
(१३) युनादूनहुम् अ-लम् नकुम्-म-अकुम् ७ कालू बला व लाकिन्नकुम्
फ-तन्तुम् अन्फुसकुम् व तरब्बस्तुम् वर्तब्तुम् व गरर्त्कुमुल - अमानिय्यु
हत्ता जा-अ अम्ल्लाहि व गरर्कुम् बिल्लाहिल - गरूर (१४)

तक को जानता है। (६) (तो) खुदा पर और उस के रसूल पर ईमान लाओ और जिस (माल) में उस ने तुम को (अपना) नायब बनाया है, उस में से खर्च करो। जो लोग तुम में से ईमान लाए और (माल) खर्च करते रहे, उन के लिए बड़ा सवाब है। (७) और तुम कैसे लोग हो कि खुदा पर ईमान नहीं लाते, हालांकि (उस के) पैग़म्बर तुम्हें बुला रहे हैं कि अपने परवरदिगार पर ईमान लाओ और अगर तुम को बावर हो, तो वह तुम से (इस का) अहद भी ले चुका है। (८) वही तो है जो अपने बन्दे पर खुले (मतलब वाली) आयतें नाज़िल करता है, ताकि तुम को अंधेरे में से निकाल कर रोशनी में लाए। बेशक खुदा तुम पर निहायत शफ़क़त करने वाला (और) मेहरबान है। (९) और तुम को क्या हुआ है कि खुदा के रास्ते में खर्च नहीं करते, हालांकि आसमानों और ज़मीन की विरासत खुदा ही की है, जिस शरूस ने तुम में से (मक्का की) फ़तह से पहले खर्च किया और लड़ाई की, वे (और जिस ने ये काम पीछे किए, वे) बराबर नहीं। उन का दर्जा उन लोगों से बढ़ कर है, जिन्होंने ने बाद में (माल का) खर्च और (कुफ़ार से) जिहाद व क़िताल किया और खुदा ने सब से नेक (सवाब) (का) वायदा तो किया है और जो काम तुम करते हो, खुदा उन्हें जानता है। (१०)★

कौन है जो खुदा को नेक (नीयत और खुलूस से) क़र्ज़ दे, तो वह उस को उस से दोगुना अदा करे और वह उस के लिए इज़्जत का बदला (यानी) जन्नत है। (११) जिस दिन तुम मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों को देखोगे कि उन (के ईमान) का नूर उन के आगे-आगे और दाहिनी तरफ़ चल रहा है, (तो उन से कहा जाएगा कि) तुम को बशारत हो (कि आज तुम्हारे लिए) बाग़ हैं, जिन के तले नहरें बह रही हैं, उन में हमेशा रहोगे। यही बड़ी कामियाबी है। (१२) उस दिन मुनाफ़िक़ मर्द और मुनाफ़िक़ औरतें मोमिनों से कहेंगे कि हमारी तरफ़ (शफ़क़त की) नज़र कीजिए कि हम भी तुम्हारे नूर से रोशनी हासिल करें तो उनसे कहा जाएगा कि पीछे को लौट जाओ, (वहां) और नूर तलाश करो, फिर उन के बीच में एक दीवार खड़ी कर दी जाएगी, जिस में एक दरवाज़ा होगा, जो उस के अन्दरूनी जानिब है, उस में तो रहमत है और जो बाहरी जानिब है, उस तरफ़ अज़ाब (व तक्लीफ़) (१३) तो मुनाफ़िक़ लोग मोमिनों से कहेंगे कि क्या हम (दुनिया में) तुम्हारे साथ न थे, वे कहेंगे, क्यों नहीं थे? लेकिन तुम ने खुद अपने आप को बला में डाला और (हमारे हक़ में हादसे के) इतिज़ार में रहे और (इस्लाम में) शक़ किया और (लम्बी-चोड़ी) आरज़ूओं ने तुम को धोखा दिया, यहां तक कि खुदा का हुक्म आ पहुंचा और खुदा के बारे में तुम को (शैतान)

फलयो-म ला युअ-खजु मिन्कुम् फिद्-य-नु व-व ला मिनल्लजी-न क-फरु मअवाकुमुल्लाह
हि-य मौलाकुम् व बिअ-सलसीर (१५) अ-लम् यअनि लिल्लजी-न आमनू अन्
तखश-अ कुलुबुहुम् लिजिविरल्लाहि व मा न-ज-ल मिनल्हकि व ला यकनू कल्लजी-न
अतुल्किता-ब मिन् कब्लु फ-ता-ल अलहिमुल-अ-मदु फ-क-सत् कुलुबुहुम् व कसीरुम्-

मिन्हुम् फासिकून (१६) इअ-लमू अन्नल्ला-ह
युहियल-अ-र-ज बअ-द मौतिहा कद् वय्यन्ना
लकुमुल-आयाति ल-अल्लकुम् तअ-किलून (१७)

इन्नल-मुस्सदिदकी-न वल्मुस्सदिदकाति व अक्-
र-जुल्ला-ह कज्रन् ह-स-नय्युज्जाअफु लहुम् व
लहुम् अज्रन् करीम (१८) वल्लजी-न आमनू

बिल्लाहि व रुसुलिही उलाइ-क हुमुस्सिददीकू-न
वशु-ह-दाउ अिन्-द रन्बिहिम् लहुम् अज-रहुम्
व नूरहुम् वल्लजी-न क-फरु व कज्जबू बि-

आयातिना उलाइ-क अस्हाबुल-जहीम (१९)
इअ-लमू अन्नमल् हयातुददुन्या लअिबु व-व
लहबु व-व जीनतु व-व तफाखुरुम्-बैनकुम् व

तकासुरुन् फिल-अम्बालि वल-ओलादि क-म-सलि गैसिन् अज-ज-बल-कुफफा-र नबातुह
सुम्-म यहीजु फ-तराहु मुस्फरन् सुम्-म यकनू हुतामन् व फिल्आखिरति अजाबुन्
शदीदु व-व मरिफ-र-तुम्-मिनल्लाहि व रिज्जवानुन् व मल-हयातुददुन्या इल्ला मताअुल-

गुरुर (२०) साबिकू इला मरिफ-र-तिम्-मिरन्बिबकुम् व जन्नतिन् अ-
जुहा क-अजिस्समा-इ वल्अजि उअिददत् लिल्लजी-न आमनू बिल्लाहि व रुसुलिही
जालि-क फजलुल्लाहि युअ्तीहि मय्यशाउ वल्लाहु जुल्फजिलल-अजीम (२१) मा

असा-ब मिम्-मुसीबतिन् फिलअजि वला फी अन्फुसिकुम् इल्ला फी किताबिम्-मिन्
कब्लि अन् नब-र-अहा इन्-न जालि-क अलल्लाहि यसीरुल - ६ (२२)

وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَأَسَؤُا كُفْرَهُمُ لِلَّهِ رَبِّهِمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ
أَعْمَارًا ۚ وَلَ الَّذِينَ آمَنُوا أَن تَحْشَهُ قُلُوبُهُمْ لِيَكْرَهُوا
وَمَا أَتَىٰ مِنْ الْأَمْرِ فَاعْبُودُوا ۚ وَابْتَغُوا الْوَسِيلَةَ
إِلَىٰ رَبِّكُمْ ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ ۚ إِنَّ اللَّهَ شَدِيدُ
الْعِقَابِ ۚ وَالَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَرُسُلِهِ أُولَٰئِكَ هُمُ
الصَّادِقُونَ ۚ وَالشَّاهِدَاتُ عِنْدَ رَبِّهِمْ لَمْ يَجْعَلْهُنَّ نَوَافِلَ
وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ ۚ
أُولَٰئِكَ هُمُ السَّعِيرُونَ ۚ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَاتَّقَوْا رُسُلَهُمْ
وَتَكَلَّمُوا فِي الْأَمْوَالِ وَالْأَنْفُسِ عَنِ الْإِيمَانِ ۚ أُولَٰئِكَ
هُمُ الْمُتَّقُونَ ۚ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَاتَّقَوْا رُسُلَهُمْ
وَتَكَلَّمُوا فِي الْأَمْوَالِ وَالْأَنْفُسِ عَنِ الْإِيمَانِ ۚ
أُولَٰئِكَ هُمُ الْمُتَّقُونَ ۚ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَاتَّقَوْا
رُسُلَهُمْ وَتَكَلَّمُوا فِي الْأَمْوَالِ وَالْأَنْفُسِ
عَنِ الْإِيمَانِ ۚ أُولَٰئِكَ هُمُ الْمُتَّقُونَ ۚ

दशाबाज दशा देता रहा। (१४) तो आज तुम से मुआवजा नहीं लिया जाएगा और न (वह) काफ़िरों ही से (कुबूल किया जाएगा)। तुम सब का ठिकाना दोज्जल है (कि) वही तुम्हारे लायक है और वह बुरी जगह है। (१५) क्या अभी मोमिनों के लिए इस का वक़्त नहीं आया कि खुदा की याद करने के वक़्त और (क़ुरआन) जो (खुदा-ए-बर-) हक़ (की तरफ़) से नाज़िल हुआ है, उस के सुनने के वक़्त उन के दिल नर्म हो जाएं और वे उन लोगों की तरह न हो जाएं, जिन को (उन से) पहले किताबें दी गयी थीं, फिर उन पर लम्बा ज़माना गुज़र गया, तो उन के दिल सल्ट हो गए और उन में से अक्सर ना-फ़रमान हैं। (१६) जान रखो कि खुदा ही ज़मीन को उस के मरने के बाद ज़िंदा करता है। हम ने अपनी निशानियां तुम से खोल-खोल कर बयान कर दी हैं, ताकि तुम समझो। (१७) जो लोग ख़ैरात करने वाले हैं मर्द भी और औरतें भी और खुदा को नेक (नीयत और खुलूस से) क़र्ज़ देते हैं, उन को दोगुना अदा किया जाएगा और उन के लिए इज़्ज़त का बदला है। (१८) और जो लोग खुदा और उस के पैग़म्बरों पर ईमान लाए, यही अपने परवरदिगार के नज़दीक सिद्दीक़ और शहीद हैं। उन के लिए उन (के आमाल) का बदला होगा और उन (के ईमान) की रोशनी और जिन लोगों ने कुफ़ किया और हमारी आयतों को झुठलाया, वही दोज्जबी हैं। (१९)★

जान रखो कि दुनिया की ज़िंदगी सिर्फ़ खेल और तमाशा और ज़ीनत (व आराइश) और तुम्हारे आपस में घमंड (व तारीफ़) और माल व औलाद की एक दूसरे से ज़्यादा तलब (व स्वाहिश) है।^१ (इस की मिसाल ऐसी है) जैसे बारिश, कि (इस से खेती उगती और) किसानों को खेती भली लगती है, फिर वह खूब जोर पर आती है, फिर (ऐ देखने वाले!) तू उस को देखता है कि (पक कर) पीली पड़ जाती है, फिर चूरा-चूरा हो जाती है और आखिरत में (काफ़िरों के लिए) तेज़ अज़ाब और (मोमिनों के लिए) खुदा की तरफ़ से बल्किश और खुश्नूदी है और दुनिया की ज़िंदगी तो धोखे का माल है। (२०) (बन्दो) अपने परवरदिगार की बल्किश की तरफ़ और जन्नत की (तरफ़) जिस का अर्ज़ आसमान और ज़मीन के अर्ज़ का-सा है और जो उन लोगों के लिए तैयार की गयी है जो खुदा पर और उस के पैग़म्बरों पर जो ईमान लाए हैं, लपको। यह खुदा का फ़ज़ल है, जिसे चाहे अता फ़रमाए और खुदा बड़े फ़ज़ल का मालिक है। (२१) कोई मुसीबत मुल्क पर और खुद तुम पर नहीं पड़ती, मगर इस से पहले कि हम उस को पैदा करें, एक किताब में (लिखी हुई) है, (और) यह (काम) खुदा को आसान है। (२२) ताकि जो (मतलब) तुम से

१. हज़रत रसूल ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक बार मस्जिद में तशरीफ़ लाए तो देखा कि कुछ लोग मस्जिद में हंस रहे हैं। आप ने फ़रमाया, क्या तुम लोगों को ख़ौफ़ नहीं रहा? साफ़ ही यह आयत पढ़ी, तो उन लोगों ने पूछा कि ऐ अल्लाह के रसूल! उस का क़फ़ारा क्या है? आप ने फ़रमाया, जितना हंसे हो, उतना ही रोओ।

फ्रीत हो गया हो, उस का शम न खाया करो और जो तुम ने उस को दिया हो, उस पर इतराया न करो और खुदा किसी इतराने और शेखी बघारने वाले को दोस्त नहीं रखता, (२३) जो खुद भी बुरूल करें और लोगों को भी बुरूल सिखाएं और जो शरूस मुंह फेर ले, खुदा भी बे-परवा है (और) वही हम्द (व सना) के लायक है। (२४) हमने अपने पैगम्बरों को खुली निशानियां दे कर भेजा और उन पर किताबें नाज़िल कीं और तराजू (यानी इन्साफ़ के कायदे,) ताकि लोग इन्साफ़ पर कायम रहें और लोहा पंदा किया। उस में (लड़ाई के हथियार के लिहाज़ से) खतरा भी तेज़ है और लोगों के फ़ायदे भी हैं और इस लिए कि जो लोग बिन-देखे खुदा और उस के पैगम्बरों की मदद करते हैं, खुदा उन को मालूम करे। बेशक खुदा ताक़तवर और ग़ालिब है। (२५) ★

और हम ने नूह और इब्राहीम को (पैगम्बर बना कर) भेजा और उन की औलाद में पैगम्बरों और किताब (के सिलसिले) को (वक्त-वक्त पर) जारी रखा, तो कुछ तो उन में से हिदायत पर हैं और अक्सर उन में से इताअत से बाहर हैं। (२६) फिर उन के पीछे उन्हीं के क्रदमों पर (और) पैगम्बर भेजे और उन के पीछे मरयम के बेटे ईसा को भेजा और उन को इन्जील इनायत की और जिन लोगों ने उन की पैरवी की, उन के दिलों में शफ़क़त और मेहरबानी डाल दी और लज़्ज़तों से किनारा-कशी की, तो उन्हीं ने खुद एक नयी बात निकाल ली। हम ने उन को इस का हुक्म नहीं दिया था, मगर (उन्हीं ने अपने ह्याल में) खुदा की खुशनूदी हासिल करने के लिए (आप ही ऐसा कर लिया था) फिर जैसा उस को बनाना चाहिए था, निबाह भी न सके। पस जो लोग उन में से ईमान लाए उन को हम ने उन का बदला दिया और उन में से बहुत से ना-फ़रमान हैं। (२७) मोमिनो! खुदा से डरो और उस के पैगम्बर पर ईमान लाओ, वह तुम्हें अपनी रहमत से दोगुना बदला अता फ़रमाएगा और तुम्हारे लिए रोशनी कर देगा, जिस में चलोगे और तुम को बरूश देगा और खुदा बरूशने वाला मेहरवान है। (२८) (ये बातें) इस लिए (बयान की गयी हैं) कि अहले किताब जान लें कि वे खुदा के फ़ज़ल पर कुछ भी कुदरत नहीं रखते और यह कि फ़ज़ल खुदा के ही हाथ है, जिस को चाहता है देता है और खुदा बड़े फ़ज़ल का मालिक है। (२९) ★

५८ सूर: मुजादला १०५

सूर: मुजादला मदनी है, इस में बाईस आयतें और तीन रुकूअ हैं।

शुरू खुदा का नाम ले कर जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

(ऐ पैगम्बर!) जो औरत तुम से अपने शौहर के बारे में झगड़ती और खुदा से शिकायत (रंज व मलाल) करती थी। खुदा ने उसकी इत्तिजा सुन ली और खुदा तुम दोनों की बात-चीत सुन रहा था। कुछ शक नहीं कि खुदा सुनता-देखता है। (१) जो लोग तुममें से अपनी औरतों को मां कह देते हैं, वह उन का माएं नहीं (हो जातीं)। उन की माएं तो वही हैं, जिन के पेट से वह पैदा हुए। बेशक वे ना-माकूल और झूठी बात कहते हैं और खुदा बड़ा माफ़ करने वाला (और) बख़्शने वाला है। (२) और जो लोग अपनी बीवियों को मां कह बैठें, फिर अपने कौल से ख़जूअ कर लें, तो (उन को) हम-बिस्तर होने के पहले एक गुलाम आज़ाद करना (ज़रूर) है। (मोमिनो!) इस (हुक्म) से तुम को नसीहत की जाती है और जो कुछ करते हो, खुदा उस से ख़बरदार है। (३) जिस को गुलाम न मिले, वह हम-बिस्तरी से पहले लगातार दो महीने के रोज़े रखे, जिस को इस की भी क़ुदरत न हो, (उसे) साठ मुहताजों को खाना खिलाना (चाहिए)। यह (हुक्म) इस लिए (है) कि तुम खुदा और रसूल के फ़रमांवरदार हो जाओ और ये खुदा की हदें हैं और न मानने वालों के लिए दंड देने वाला अज़ाब है। (४) जो लोग खुदा और उस के रसूल की मुख़ालफ़त करते हैं, वे (इसी तरह) ज़लील किए जाएंगे, जिस तरह उन से पहले ज़लील किए गये थे और हम ने साफ़ और खुली आयतें नाज़िल कर दी हैं। जो नहीं मानते उन को ज़िल्लत का अज़ाब होगा। (५) जिस दिन खुदा उन सब को जिला उठाएगा, तो जो काम वे करते रहे, उन को जताएगा। खुदा को वे सब (काम) याद हैं और यह उन को भूल गये हैं और खुदा हर चीज़ को जानता है, (६) ★

१. ये आयतें ख़ौला बिन्त सालबा के हक़ में नाज़िल हुई हैं। उस का शौहर ओस बिन सामित ग़ुस्से की हालत में उस से जिहार कर बैठ और यों भी अरब में जिहार का रिवाज था। जिहार इस को कहते हैं कि मियां अपनी बीवी से इस तरह के लफ़्ज़ कह दे, तू मेरी मां की जगह है या तेरी पीठ मेरी पीठ की जगह है। इस तरह कह देना जाइलियत में तलाक़ समझा जाता था, तो ख़ौला इस बारे में हुक्म मालूम करने के लिए हज़रत सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुई। आप ने फ़रमाया कि तू अपने शौहर पर हुराम हो गयी। उस ने कहा कि उस ने तलाक़ तो नहीं दी। गरज आप तो यह फ़रमाते कि तू उस पर हुराम हो चुकी और वह कहती कि उस ने तलाक़ का नाम नहीं लिया। इसी बात-चीत को खुदा ने 'झगड़ा' कहा है। फिर वह खुदा से कहती कि रब्बुल आलमीन मेरी बेबसी का हाल तुझ को मालूम है। मेरे नन्हें-नन्हें बच्चे हैं। अगर मैं उन को अपने शौहर के हवाले कर दूँ तो अच्छी तरह परवरिश न होने की वजह से ख़राब हो जाएंगे और अगर अपने पास रखूँ तो भूखे मरेंगे और आसमान की तरफ़ सर उठा कर कहती कि ऐ अल्लाह! मेरी शिकायत तुझी से है। खुदा ने उस की इज़्ज व ज़ारी को क़बूल फ़रमाया और जिहार को तलाक़ नहीं, बल्कि एक ना-माकूल बात फ़रार दे कर उस का कफ़़ारा मुक़रर फ़रमाया।

अ-तम् त-र अन्नल्ला-ह यअ-लमु मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अज़ि॥ मा यकूनु मिन्
नज्वा सलासतिन् इल्ला हु-व राबिअुहुम् व ला खम्सतिन् इल्ला हु-व
सादिसुहुम् व ला अदना मिन् जालि-क व ला अक्स-र इल्ला हु-व म-अहुम् ऐ-न मा
कानु॥ सुम् - म युनबिअुहुम् बिमा अमिलू यौमल - क़ियामति॥ इन्नल्ला-ह

बिकुल्लि शंडन् अलीम (७) अ-लम् त-र
इलल्लजी-न नुह् अनिन्नज्वा सुम्-म यअदू-न
लिमा नुह् अन्हु व य-त-नाजो-न बिल्इस्मि
वल्अद्वानि व मअ-सियतिर्-रसूलि व इजा
जाऊ-क ह्यो-क बिमा लम् युह्यि-क
बिहिल्लाहु व यकूल-न फो अन्फुसिहिम्
लोला युअज्जिबुनल्लाहु बिमा नकूल-हस्बुहुम्
जहन्नमु यस्लोतहा फबिअसल मसीर (८)
या अय्युहल्लजी-न आमनू इजा तनाजैतुम्
फला त-त-नाजो बिल्इस्मि वल्अद्वानि व
मअ-सि-यतिर्-रसूलि व तनाजो बिल्बिरि

[illegible]

वक्तृत्वा ॥ वक्तृकुल्लाहल्लजी इलैहि तुह्शरुन (६) इन्नमन्जवा भिनश्शैतानि
लियहू - जुनल्लजी - न आमनू व लै - स बिज्जारिहिम् शैअन् इल्ला
बिइज्जिल्लाहि ॥ व अलल्लाहि फल्-य-त-वक्कलिल - मुअमिनून (१०) या
अय्युहल्लजी-न आमनू इजा क्री-ल लकुम् तफस्सह फ़िल्मजालिसि फ़फ़सह
यफ़सहिल्लाहू लकुम् ८ व इजा क्रीलन्नुजू फ़न्शुजू यरफ़बिल्लाहुल - लजी-न
आमनू मिन्कुम् ॥ वल्लजी - न अतुल्लजिल-म द-र - जातिन् ॥ वल्लाहू बिमा
तअ-मलू-न खबीर (११) या अय्युहल्लजी-न आमनू इजा नाजैतुमुरसूल
फ़क़ददिमू बै - न यदै नज्वाकुम् स-द - क - तन् ॥ जालि-क खैल्लकुम्
व अत्हर ॥ फ़इल्लम् तजिदू फ़इन्नल्ला - ह ग़फ़ूर - रहीम (१२)

क्या तुम को मालूम नहीं कि जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है, खुदा को सब मालूम है। (किसी जगह) तीन (शरसों) का (मज्मा और) कानों में सलाह व मश्विरा नहीं होता, मगर वह उन में चौथा होता है और न कहीं पांच का, मगर वह उन में छठा होता है और न उस से कम या ज्यादा, मगर वह उन के साथ होता है, चाहे वे कहीं हों। फिर जो-जो काम ये करते रहे हैं, क्रियामत के दिन वह (एक-एक) उन को बताएगा। बेशक खुदा हर चीज़ को जानता है। (७) क्या तुम ने उन लोगों को नहीं देखा जिन को कानाफूसियां करने से मना किया गया था। फिर जिस (काम) से मना किया गया था, वही फिर करने लगे और यह तो गुनाह और जुल्म और (खुदा के) रसूल की ना-फ़रमानी की कानाफूसियां करते हैं और जब तुम्हारे पास आते हैं तो जिस (कलमे) से खुदा ने तुम को दुआ नहीं दी, उस से तुम्हें दुआ देते हैं और अपने दिल में कहते हैं कि (अगर यह वाकई पैगम्बर हैं तो) जो कुछ कहते हैं, खुदा हमें उस की सज़ा क्यों नहीं देता (ऐ पैगम्बर!) उन को दोख़ल (ही की सज़ा) काफ़ी है, ये उसी में दाख़िल होंगे और वह बुरी जगह है। (८) मोमिनो! जब तुम आपस में कानाफूसियां करने लगे तो गुनाह और ज्यादाती और पैगम्बर की ना-फ़रमानी की बातें न करना बल्कि नेकी और परहेज़गारी की बातें करना और खुदा से जिस के सामने जमा किए जाओगे, डरते रहना। (९) (काफ़िरों की) कानाफूसियां तो शैतान (की हरकतों) से हैं, (जो) इस लिए (की जाती हैं) कि मोमिन (उन से) घमनाक हों, मगर खुदा के हुक्म के सिवा उन से उन्हें कुछ नुक्सान नहीं पहुंच सकता, तो मोमिनों को चाहिए कि खुदा ही पर भरोसा रखें। (१०) मोमिनो! जब तुम से कहा जाए कि मजलिस में ख़ुल कर बैठो तो ख़ुल कर बैठो करो। खुदा तुम को कुशादगी बरसेगा और जब कहा जाए कि उठ खड़े हो तो उठ खड़े हुआ करो। जो लोग तुम में से ईमान लाए हैं और जिन को इल्म अता किया गया है, खुदा उन के दर्जे बुलंद करेगा और खुदा तुम्हारे सब कामों को जानता है। (११) मोमिनो! जब तुम पैगम्बर के कान में कोई बात कहो तो बात कहने से पहले (मिस्कीनों को) कुछ ख़ैरात दे दिया करो। यह तुम्हारे लिए बहुत बेहतर और पाकीज़गी की बात है और अगर ख़ैरात तुम को मयस्सर न आए, तो खुदा बरसेने

१. हदीसों में है कि यहूदी हज़रत के पास आते, तो बजाए 'अस्सलामु अलैक' के 'अस्तामु अलैक' कहते। 'साम' शीश को कहते हैं, तो वे बाहिर में तो नेक दुआ देते और हकीकत में मोत मुराद लेते और बद-दुआ देते। आप उस के जवाब में सिर्फ़ 'व अलैकुम' फ़रमाते जिस का मतलब यह होता कि मोत तुम ही पर बाक़ेअ हो। ये लोग अपने दिल में कहते कि अगर मुहम्मद सच्चे पैगम्बर होते तो हमारे इस कलमे के कहने से ज़रूर हम पर अज़ाब नाज़िल होता। कुछ ने यह मानी किए हैं कि अगर यह नबी होते तो उन की बद-दुआ हमारे हक़ में ज़रूर जुबूल होती और हम पर मोत बाक़ेअ हो कर रहती। इन बातों के जवाब में खुदा ने फ़रमाया कि इन लोगों को दोख़ल ही का अज़ाब काफ़ी है।

बाला मेहरबान है। (१२) क्या तुम इस से कि पैग़म्बर के कान में कोई बात कहने से पहले ख़ैरात दिया करो, डर गये? फिर जब तुम ने (ऐसा) न किया और खुदा ने तुम्हें माफ़ कर दिया तो नमाज़ पढ़ते और ज़कात देते रहो और खुदा और उस के रसूल की फ़रमाबंदारी करते रहो और जो कुछ तुम करते हो, खुदा उस से ख़बरदार है। (१३) ★

भला तुम ने उन लोगों को नहीं देखा, जो ऐसी से दोस्ती करते हैं, जिन पर खुदा का ग़ज़ब हुआ, वह न तुम में हैं, न उन में और जान-बूझ कर झूठी बातों पर क़स्में खाते हैं। (१४) खुदा ने उन के लिए सलत अज़ाब तैयार कर रखा है। ये जो कुछ करते हैं, यकीनन बुरा है। (१५) उन्होंने ने अपनी क़स्मों को ढाल बना लिया और (लोगों को) खुदा के रास्ते से रोक दिया है, सो उन के लिए ज़िल्लत का अज़ाब है। (१६) खुदा के (अज़ाब के) सामने न तो उन का माल ही कुछ काम आएगा और न औलाद ही। (कुछ फ़ायदा देगी) ये लोग दोज़खी हैं, इस में हमेशा (जलते) रहेंगे। (१७) जिस दिन खुदा उन सब को ज़िला उठाएगा, तो जिस तरह तुम्हारे सामने क़स्में खाते हैं (उसी तरह) खुदा के सामने क़स्में खाएंगे और ख़्याल करेंगे कि (ऐसा करने से) काम ले निकले हैं देखो ये झूठे (और ग़लती पर) हैं। (१८) शैतान ने उन को क़ाबू में कर लिया है और खुदा की याद उन को भुला दी है। यह (जमाअत) शैतान का लश्कर है और सुन रखो कि शैतान का लश्कर नुक़सान उठाने वाला है। (१९) जो लोग खुदा और उस के रसूल की मुख़ालफ़त करते हैं, वे बहुत ज़लील होंगे। (२०) खुदा का हुक़म नातिक़ है कि मैं और मेरे पैग़म्बर ज़रूर ग़ालिब रहेंगे, बेशक़ खुदा जोरावर (और) ज़बरदस्त है। (२१) जो लोग खुदा पर और क़ियामत के दिन पर ईमान

ला तजिदु कौमय्युअमिनु-न बिल्लाहि वल-योमिल-आखिरि युवाद्दू-न मन्
ह्राद्दल्ला-ह व रसूलह व लो कानू आबा-अहुम् ओ अन्ना-अहुम् ओ इख-वानहुम्
ओ अशी-र-तहुम् ॥ उलाइ-क क-त-व फ्री कुलूबिहिमुल-ईमान-न व अय्य-दहुम्
बिरुहिम् - मिन्हु ॥ व युद्खिलुहुम् जन्नातिन् तजरी मिन् तहितहल -
अन्हार खालिदी - न फ्रीहा ॥ रजियल्लाहु
अन्हुम् व रजू अन्हु ॥ उलाइ - क
हिज्बुल्लाहि ॥ अला इन - न
हिज्बुल्लाहि हुमुल - मुफिलहन ★ (२२)

रखते हैं तो उन को खुदा और उस के रसूल के दुश्मनों से दोस्ती करते हुए न देखोगे, चाहे वे उन के बाप या बेटे या भाई या सानदान ही के लोग हों। ये वह लोग हैं, जिन के दिलों में खुदा ने ईमान (पत्थर पर लकीर की तरह) लिख दिया है और ग़ैबी फ़ौज़ से उन की मदद की है और वह उन को बहिश्तों में, जिन के तले नहरें बह रही हैं, दाखिल करेगा, हमेशा उन में रहेंगे। खुदा उन से खुश और वे खुदा से खुश। यही ग़िरोह खुदा का लश्कर है। (और) मुन रखो कि खुदा ही का लश्कर मुराद हासिल करने वाला है। (२२) ★



५६ सूरः हृश् १०१

सूरः हृश् मदनी है, इस में चौबीस आयतें और तीन स्कूअ हैं।

शुरू खुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

जो चीजें आसमान में हैं और जो चीजें जमीन में हैं, (सब) खुदा की तस्बीह करती हैं और वह ग़ालिब हिकमत वाला है। (१) वही तो है जिस ने कुफ़्कार अहले किताब को पहले हृश् के वक़्त उन के घरों से निकाल दिया ~~ख़ुदा~~ तुम्हारे ह्याल में भी न था कि वे निकल जाएंगे और वे लोग यह समझे हुए थे कि उन के क़िले उन को खुदा (के अज़ाब) से बचा लेंगे, मगर खुदा ने उन को वहां से आ लिया, जहां से उन को गुमान भी न था और उन के दिलों में दहशत डाल दी कि अपने घरों को खुद अपने हाथों और मोमिनों के हाथों से उजाड़ने लगे, तो ऐ (बसीरत की) आंखें रखने वाली ! इब्रत (सबक) पकड़ो। (२) और अगर खुदा ने उन के बारे में वतन से निकालना न लिख रखा होता, तो उन को दुनिया में भी अज़ाब दे देता और आखिरत में तो उन के लिए आग का अज़ाब (तैयार) है। (३) यह इस लिए कि उन्होंने ने खुदा और उस के रसूल की मुसालफ़त की ओर जो शरूस खुदा की मुसालफ़त करे, तो खुदा सख्त अज़ाब देने वाला है। (४) (मोमिनो !) खज़ूर के जो पेड़ तुम ने काट डाले या उन को अपनी जड़ों पर खड़ा रहने दिया, सो खुदा के हुकम से था और मक़सूद यह था कि वह ना-फ़रमानों को रूखा करे। (५) और जो (माल) खुदा ने अपने पैग़म्बर को उन लोगों से (लड़ाई-भिड़ाई के बग़ैर) दिलवाया है, उस में तुम्हारा कुछ हक़ नहीं, क्योंकि इसके लिए न तुम ने छोड़े दौड़ाए, न ऊंट, लेकिन खुदा अपने पैग़म्बरों को जिन पर चाहता है, मुसल्लत

१. हृश् इन्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जब बनू नज़ीर अपने मकानों से निकाल दिए गए और उन की खज़ूरों के काट डालने का हुकम हुआ तो मुसलमानों ने कुछ खज़ूरें तो काट दीं और कुछ रहने दीं, मगर उन को इस बारे में शुक्हा हुआ कि क्या उन को काटने पर सवाब होगा और न काटने पर गुनाह, तो उन्होंने ने यह बात जनाब रसूल ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मालूम करने का इरादा किया, इस पर खुदा ने फ़रमाया कि खज़ूरों के काटने, न काटने से मक़सूद यह है कि मुसलमान अपने ग़लबा पाने से खुश हों और ना-फ़रमान लोगों को यह देख कर कि उन के मालों में मुसलमान अपनी मर्जी के मुताबिक़ इस्तेमाल कर रहे हैं, रंज और ज़िल्लत हासिल हो।

मा अफा-अल्लाहु अला रसूलिही मिन् अहिल-कुरा फलिल्लाहि व लिरसूलि
व लिजिलकुर्बा बल - यतामा बल-मसाकीनि वमिस्सबीलि ॥ कैला यकू-न
दूल-तम् - बेल - अस्नियाइ मिन्कुम् ७ व मा आताकुमुरसूलु फलजुहू व
मा नहाकुम् अन्ह फन्तहू वतकुल्ला - ह इन्ल्ला-ह शदीदुल - अक्काब

(७) लिल्फु-क-राइल - मुहाजिरीनल्लजी-न

उख्रिज् मिन् दियारिहिम् व अम्बालिहिम्

यस्तगू-न फज्जलम् - मिनल्लाहि व रिज्-

वानव् - व यन्सुरन्ल्ला - ह व रसूलहू

उलाइ-क हुमुस्सादिक्न ८ (८) वल्लजी-न

त-बव्वउद्दा-र वलईमा-न मिन् कबिलहिम्

युहिब्वू-न मन् हाज-र इलैहिम् व ला

यजिदू-न फी सुदूरिहिम् हा-ज-तम्-मिम्मा

ऊतू व युअ्सिरू - न अला अन्फुसिहिम्

व लौ का - न बिहिम् खसासतुन् व

मय्यू-क शुहू - ह नफ्सिही फ-उलाइ - क

हुमुल - मुफ्लिहू ८ (९) वल्लजी - न

जाऊ मिम्बअ-विहिम् यकूलू-न रब्बनरिफर लना - व लि-इख्वानि-नल्लजी-न

स-ब-कूना बिल - ईमानि व ला तज् - अल् फी कुलूबिना गिल्लल-

लिल्लजी - न आमनू रब्बना इन्न - क रऊफुरहीम ★ ● (१०) अ-लम्

त - र इलल्लजी - न नाफकू यकूलू - न लिइख्वानि - हिमुल्लजी - न

क - फरू मिन् अहिल - किताबि ल - इन् उख्रिज्नुम् ल - नख्रजन्-न

म - अकुम् व ला नुतीअ फीकुम् अ - ह - दन् अ - ब - दव्व-व इन्

कूतिल्लुम् ल - नन्सुरन्कुम् वल्लाहु यशहु इन्नुम् लकाजिबून् (११)

فَلْيَسْمَعْ فَيَهْتَفْ ۖ مَا آفَكَ اللَّهُ عَلَى رَسُولٍ مِنْ أَهْلِ الْقُرَى
يَقُولُ وَالرَّسُولُ وَلِيُّ الَّذِينَ آمَنُوا وَالَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ
السَّيِّئِينَ لَا يَكُنْ لَهُمْ دُولَةٌ بَيْنَ الْأُغْيَابِ وَبَيْنَ الْأَشْهُارِ
الرَّسُولُ غَدُوهُ وَمَا لَهُمْ عَنْهُ فَاتَّخَذُوا الْأَشْهُارَ
إِنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ۖ الْفَقْرَاءُ الْمُعَذَّبُونَ الَّذِينَ
أَخْرَجُوا مِنْ دِيَارِهِمْ وَآمَرُوا لَهُمْ لِيَتَقَاتِلُوا أَمْرًا
يَهُودِيًّا أَفَلَا يَتَذَكَّرُونَ اللَّهُ وَرَسُولُهُ أَوْلَى بِهِمْ
وَالَّذِينَ آمَنُوا وَالَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ مِنْ قُلُوبِهِمْ
الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ فِي صُدُورِهِمْ حَاجَةً مِمَّا أُوتُوا وَيُؤْخَذُونَ
عَلَى أَعْيُنِهِمْ فَذَكَرُوا كَانَ يَوْمُ حَصَاةٍ وَمَنْ لَوْ كَانَ
فَأُولَئِكَ هُمُ الْمُفْلِسُونَ ۖ وَالَّذِينَ جَاءُوا مِنْ بَيْدِهِمْ يَقُولُونَ
رَبَّنَا افْعَلْ بِنَا إِنْ شَاءَ اللَّهُ وَرَبَّنَا لَا تَجْعَلْ
فِي قُلُوبِنَا غِلًا لِلَّذِينَ آمَنُوا رَبَّنَا إِنَّكَ رَؤُوفٌ رَحِيمٌ ۖ وَالَّذِينَ
إِلَى الَّذِينَ تَأْتُوا يَقُولُونَ إِنَّا هُمْ الَّذِينَ كُفَرْنَا وَهُمْ
أَهْلُ الْكِتَابِ لَيْسَ أَفْرَاسُهُمْ إِلَّا فَرَسٌ مَعَهُمْ وَلَا يُطِيعُونَ
أَمْرًا إِلَّا وَأَنْ قَوْلُهُمْ تَنْصَرُّكُمْ وَاللَّهُ يَشْهَدُ إِنَّهُمْ
لَكَاذِبُونَ ۖ لَيْسَ أَخْرُجُوا إِلَّا يُفَرِّجُونَ مَعَهُمْ وَلَيْسَ قَوْلُهُمْ

कर देता है और खुदा हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है। (६) जो माल खुदा ने अपने पैग़म्बर को देहात वालों से दिलवाया है, वह खुदा के और पैग़म्बर के और (पैग़म्बर के) करीबी रिस्ते वालों के और यतीमों के और ज़रूरतमंदों के और मुसाफ़िरों के लिए है, ताकि जो लोग तुम में दीलतमंद हैं, उन्हीं के हाथों में न फिरता रहे, सो जो चीज़ तुम को पैग़म्बर दें, वह ले लो और जिस से मना करें, (उस से) रुके रहो और खुदा से डरते रहो। बेशक़ खुदा सल्ल अज़ाब देने वाला है। (७) और उन ग़रीब बतन छोड़ने वालों के लिए भी जो अपने घरों और मालों से ख़ारिज (और अलग) कर दिए गए हैं (और) खुदा के फ़रल और उस की खुशनूदी की तलब रखने वाले और खुदा और उस के पैग़म्बर के मददगार हैं। यही लोग सच्चे (ईमानदार) हैं। (८) और (उन लोगों के लिए भी) जो मुहाजिरों से पहले (हिज़रत के) घर (यानी मदीने) में ठहरे रहे और ईमान में (मुस्तक़िल) रहे (और) जो लोग हिज़रत कर के उन के पास आते हैं, उन से मुहब्बत करते हैं और जो कुछ उन को मिला, उस से अपने दिल में कुछ ख़्वाहिश (और बेचैनी) नहीं पाते और उन को अपनी जानों पर तर्जोह देते हैं, चाहे उन को खुद ज़रूरत ही हो। और जो शल्स नफ़स के लोभ से बचा दिया गया तो ऐसे ही लोग मुराद पाने वाले हैं। (९) और (उन के लिए भी) जो उन (मुहाजिरों) के बाद आए (और) दुआ करते हैं कि ऐ परवरदिगार ! हमारे और हमारे भाइयों के जो हम से पहले ईमान लाए हैं गुनाह माफ़ करना और मोमिनों की तरफ़ से हमारे दिल में कीना (ब हसद) न पैदा होने दे, ऐ हमारे परवरदिगार ! तू बड़ा शफ़क़त करने वाला मेहरबान है। (१०) ★●

क्या तुम ने उन मुनाफ़िक़ों को नहीं देखा, जो अपने काफ़िर भाइयों से जो अहले किताब हैं, कहा करते हैं कि अगर तुम देश निकाला पा गये, तो हम भी तुम्हारे साथ निकल चलेंगे और तुम्हारे बारे में कभी किसी का कहा न मानेंगे और अगर तुम से लड़ाई हुई, तो तुम्हारी मदद करेंगे, मगर

१. यानी क़ै पर क़ब्ज़ा रखल का और रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पीछे सरदार का कि सरदार पर ये ख़ुचं पड़ते हैं, अल्लाह सभी का मालिक है, मगर काबे का ख़ुचं और मस्जिदों का भी इस में आ गया और नाते वाले हिज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सामने उन के नाते वाले और पीछे भी वही लोग उन पर चाहिए।

लइन् उखरिफ् ला यल् - रुजू-न म - अहुम् ८ व लइन् क़ातल् ला
 यन्सुरू - नहुम् ८ व लइन् न - सुरूम् लयु-वल्लुन्नल-अद्बा - र सुम् - म
 ला युन्सरून (१२) ल अन्तुम् अशदु रह-ब-तन् की सुदरिहिम्
 मिनल्साहि ७ जालि - क बि - अन्नुम् क़ौमुल्ला यफकहून (१३) ला

शुकातिलूनकुम् जमीअन् इल्ला की कुरम्-
 मुहस्स - नतिन् ओ मिव्वराइ जुदुस्ति ७
 बअ-सुहुम् वैनहुम् शदीदुन् ७ तह् - सबुहुम्
 जमीअन् व-व कुलुबुहुम् शत्ता ७ जालि - क
 बि - अन्नुम् क़ौमुल्ला यअ - किलून ८

(१४) क-म-सलिल्लजी-न मिन् क़वलिहिम्
 करीबन् जाकू वबा-ल अमिरहिम् ८ व लहुम्
 अज़ाबुन् अलीम ८ (१५) क-म-सलिश्-
 शैतानि इज् का-ल लिल् - इन्सानिक्फुर ८
 फ़-लम्मा क-फ़-र का-ल इन्नी बरीउम्-मिन-क
 इन्नी अखाफुल्ला - ह रब्बल् - आलमीन
 (१६) फ़-का-न आकि-ब-तहुमा अन्नुहमा

لَا تَعْمُرُوهُمْ وَهُمْ يُكُونُونَ الْاَكْبَارَ ثُمَّ لَا يَصْعَدُونَ
 لَا اَنْتُمْ اَشْدُّ دَعْوَةً فِي صُدُورِهِمْ مِنَ اللّٰهِ ذٰلِكَ بِاَنْهُمْ قَوْمٌ
 لَا يَعْقِلُونَ ۝ لَا يَخْلُقُوْنَ شَيْئًا وَّجَبَّ اِلَآ فِي فَرْقٍ خَفِيٍّ اَوْ يَمِ
 وَرَاجِدٍ ۝ بِاللّٰهِ يَتَّبِعُهُمْ شَيْءٌ تَحْسِبُهُمْ جَبِيًّا وَقَلْبُهُمْ
 شَقِيٌّ ذٰلِكَ بِاَنْهُمْ قَوْمٌ لَا يَعْقِلُونَ ۝ كَسَلَتِ الدِّينِيَّةُ مِنْ
 قَلْبِهِمْ قَوْمًا فَافْوَا وَاَبَالْ اَمْرُهُمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيمٌ ۝
 كَسَلَتِ الشَّيْطٰنُ اِيْذًا قَالَ لِلْاِنْسَانِ اَكْفُرْ فَلَمَّا كَفَرَ قَالَ اِنِّ
 يَوْمَ ۝ وَنَكَرَ اِلَآ اَحَافَ اللّٰهُ رَبَّ الْعَالَمِيْنَ ۝ فَكَانَ عَلَيْهِمَا
 اَلْهَمًا فِي السَّاعَةِ اَلدِّينِيَّةِ فِيْهَا ۝ وَذٰلِكَ جَزَاُ الْغٰفِلِيْنَ ۝ يٰۤاَيُّهَا
 الْوَسِيُّ اَمَّا اَقْوَامٌ اَللّٰهُ وَلَتَنْظُرُنَّسَ مَا قَدْ مَتَّعْنٰهُ وَقَوَّ
 اللّٰهُ اِلَآ الْخَبِيْرَ ۝ يٰۤاَيُّهَا السَّمْعٰنُ ۝ وَلَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ سَوَّ
 اللّٰهُ فَاَنْتُمْ اَنْفُسُكُمْ ۝ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰرِقُونَ ۝ لَا يَسْتَوِي
 اَصْحٰبُ النَّارِ ۝ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ۝ اَصْحٰبُ النَّارِ هُمُ الْفٰرِقُونَ ۝
 لَوْ اَنَّكَ هٰذَا الْقُرْاٰنَ عَلٰى جَبَلٍ لَّرَاَيْتَهُ خٰرِبًا مُّصَدِّقًا
 مِنْ حَسْبَةِ اللّٰهِ ۝ وَتِلْكَ اَلْاٰثَافُ تَصْرِفُهَا الْاِنْسَانُ لَعَلَّهُ
 يَحْكُمُونَ ۝ هُوَ اللّٰهُ الَّذِيْ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ عَلِيْمُ الْغُيُوْبِ وَ
 الْغَاثُ هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ ۝ هُوَ اللّٰهُ الَّذِيْ لَا اِلٰهَ اِلَّا

फ़िन्नारि खालिदैनि फ़ीहा ७ जालि-क जज़ाउज्जालिमीन * (१७) मा अय्युहल्लजी-न
 आमनुत्तकुल्ला - ह वल्लत्जुर् नफ़सुम्मा कद् - द - मत् लिगदिन् ८ वत्तकुल्-
 ला-ह ७ इन्ल्ला-ह खबीरुम् - बिमा तअ-मलून (१८) व ला तकून
 कल्लजी-न नसुल्ला-ह फ़-अन्साहुम् अफ़-सहुम् ७ उलाइ-क हुमुल्-फ़ासिकून (१९) ला
 यस्तवी अस्हाबुन्नारि व अस्हाबुल्-जन्नति ७ अस्-हाबुल्-जन्नति हुमुल्फ़ा-इजून (२०)
 ली अन्जल्ना हाज़ल् - कुरआ - न अला ज - ब-लिल् - ल - र-ऐतह
 खाशिअम्-मु-त-सदिदअम्-मिन् खश्-यतिल्लाहि ७ व तिल्कल् - अम्सालु नज़िरबुहा
 लिन्नासि ल - अल्लहुम् य - त - फ़क्करून (२१) हु - वल्लाहुल्लजी
 ला इला-ह इल्ला हु-व ८ आलिमुल्ग़ाबि वशहादति ८ हुवरह्मानुरह्मीम (२२)

खुदा जाहिर किए देता है कि ये झूठे हैं। (११) अगर वे निकाले गये, तो ये उन के साथ नहीं निकलेंगे और अगर उन से जंग हुई तो उन का मदद नहीं करेंगे और अगर मदद करेंगे तो पीठ फेर कर भाग जाएंगे, फिर उन को (कहीं से भी) मदद न मिलेगी। (१२) (मुसलमानो!) तुम्हारी हेबत उन लोगों के दिलों में खुदा से भी बढ़ कर है, यह इस लिए कि ये समझ नहीं रखते। (१३) ये सब जमा हो कर भी तुम से (आमने-सामने) नहीं लड़ सकेंगे, मगर बस्तियों के क़िलों में' (पनाह ले कर) या दीवारों की ओट में (छिप कर) उन का आपस में बड़ा रौब है। तुम शायद ख्याल करते हो कि ये इकट्ठ (और एक जान) हैं, मगर उन के दिल फटे हुए हैं, यह इस लिए कि ये बे-अक्ल लोग हैं। (१४) उन का हाल उन लोगों का-सा है, जो उन से कुछ ही पहले अपने कामों की सज़ा का मज़ा चख चुके हैं और (अभी) उन के लिए दुख देने वाला अज़ाब (तैयार) है। (१५) (मुनाफ़ि़कों की) मिसाल शैतान की सी है कि इंसान से कहता रहा कि काफ़िर हो जा। जब वह काफ़िर हो गया, तो कहने लगा कि मुझे तुझ से कुछ सरोकार नहीं। मुझ को तो खुदा-ए-रब्बुल आलमीन से डर लगता है। (१६) तो दोनों का अंजाम यह हुआ कि दोनों दोज़ख़ में (दाख़िल हुए), हमेशा उस में रहेंगे और बे-इन्साफ़ों की यही सज़ा है। (१७) ★

ऐ ईमान वाले! खुदा से डरते रहो और हर शख्स को देखना चाहिए कि उस ने कल (यानी क़ियामत के कल) के लिए क्या (सामान) भेजा है और (हम फिर कहते हैं कि) खुदा से डरते रहो। बेशक़ खुदा तुम्हारे सब आमाल से खबरदार है। (१८) और उन लोगों जैसे न होना, जिन्होंने खुदा को भुला दिया, तो खुदा ने उन्हें ऐसा कर दिया कि खुद अपने आप को भूल गये। ये बद-किरदार लोग हैं। (१९) दोज़ख़ वाले और जन्नत वाले बराबर नहीं। जन्नत वाले तो कामियाबी हासिल करने वाले हैं। (२०) अगर हम यह क़ुरआन किसी पहाड़ पर नाज़िल करते, तो तुम उस को देखते कि खुदा के ख़ौफ़ से दबा और फटा जाता है और ये बातें हम लोगों के लिए बयान करते हैं ताकि वे ग़ौर करें। (२१) वही खुदा है, जिस के सिवा कोई माबूद नहीं, छिपे और जाहिर का जानने वाला, वह

१. लपड़ों का तर्जुमा तो यह है कि ऐसी बस्तियों में जिन में क़िले बने हुए हैं, मगर चूँकि मुराद यह है कि उन क़िलों में जो बस्तियों में हैं, इस लिए तर्जुमे में ऐसे लपड़ अस्तियार किए गए हैं कि 'बस्तियों के क़िलों में'।

हुबल्लाहुलजी ला इला - ह इल्ला हु-व ८ अल्मलिकुल् - क़ुद्दुसुसलामुल्-
मुअमिनुल् - मुहंमिनुल् - अजीजुल् - जब्बार्हुल् - मु - त - कब्बिर ७ सुहानल्लाहि
अम्मा युशिरून् (२३) हुबल्लाहुल् - खालिकुल् - बारिउल् - मुसब्बिर
लहुल् - अस्माउल् - हुस्ना ७ युसब्बिहु लहु मा फ़िस्समावाति वल्अर्ज़
व हुवल् - अजीजुल् - हकीम ★ (२४)

६० सूरतुल-मुम्तहिनति ६१

(मदनी) इस सूर. में अरबी के १५६३ अक्षर,
३७० शब्द, १३ आयतें और दो रकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिरंहमानिर्रहीम •

या अय्युहल्लजी-न आमन् ला तत्तखिज्ज
अदुव्वी व अदुव्वकुम् ओलिया-अ तुल्कू-न
इलैहिम् बिल्म-वद्-दति व कद् क-फ़ल् बिमा
जा-अकुम् मिनल्हक्कि ८ युख्रिजूनरसू-ल व
इय्याकुम् अन् तुअमिन् बिल्लाहि रब्बिकुम्
इन् कुन्तुम् ख-रज्तुम् जिहादन् फ़ी सबीली
वन्तिशा-अ मर-ज़ाती ८ तुसिरू-न इलैहिम्
बिल्म-वद्दति ८ व अन अअ-लमु बिमा अख-
फ़ैतुम् व मा अअ-लन्तुम् ७ व मय्यफ़-अल्-हु
मिन्कुम् फ़-कद् ज़ल-ल सवा-अस्सबील (१) इय्यफ़-अल्-हु

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
هَـذَا الْكِتَابُ الْقُدُّوسُ الْغَدُّورُ الْمُبِينُ
الْمَكِّيُّ مَبْنِيُّ اللَّهِ عَلَيْهِ كُنْ ۝ هُوَ اللَّهُ الْغَالِي الْبَارِي
الْمَعْبُودُ لَهُ الْأَسْمَاءُ الْمُسَمَّى يُسَمَّى لَهُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَ
الْأَرْضِ ۝ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْمَكِينُ
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَاعْبُدُوا اللَّهَ وَارْجِعُوا
إِلَى اللَّهِ الْوَدَّ ۝ وَكَذَلِكَ نَبِّئُكُمْ قِرْنَ الْحَقَّ فَتُحْيُونَ
الرُّسُلَ ۝ وَلَئِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّونَ اللَّهَ فَاتَّبِعُوا أَمْرَهُ وَكُنْزُكُمْ
جِهَادًا فِي سَبِيلِهِ وَابْنَاءَ مُطَهَّرِينَ ۝ يَرْجُونَ الْفَيْدَ بِالْوَدَّ
وَأَنَّا نَعْلَمُ مَا نَعْلَمُ وَمَا نَعْلَمُ وَمَا نَعْلَمُ وَمَن يَصْلَحْهُ وَنَعْلَمُ
فَقَدْ صَدَّقَ اللَّهُ رَسُولَهُ ۝ إِنَّا نَقُولُ لَهُ كُنْ فَيَكُونُ ۝
يَسْأَلُ الْإِنَّمَاءُ لِيَوْمِ الْقِيَامَةِ وَاللَّهُ وَكَذَلِكَ نَقُولُ ۝
لَنَنْصَلِّهُنَّ أَزْوَاجًا وَلَا أَزْوَاجًا وَلَا نَقُولُ لَهُمْ الْيَوْمَ الْيَوْمَ
يَبْنِي اللَّهُ بِأَسْمَاءٍ بَصِيرَةٍ ۝ قَدْ كَانَتْ لَكُمْ أَعْيُنٌ
حَسَنَةٌ فَرِئَاضُ الْعَالَمِينَ ۝ إِذْ كُنَّا الْفَرِيقَ الْبَاقِي ۝
وَنَقُولُ مَا نَعْلَمُ وَمَن يَدْعُو اللَّهَ لَنَقُولُ لَهُ كُنْ فَيَكُونُ ۝

अव-व यम्सुत् इलैकुम् ऐदि-यहुम् व अल्सि-न-तहुम् बिस्सूइ व वद्द लो तक्फ़ुल्
(२) लन् तन्फ़-अ-कुम् अहमिकुम् व ला ओलादुकुम् ८ यौमल्-क्रियामति ८ यफ़्सिलु
बैनकुम् ७ वल्लाहु बिमा तअ-मलू-न बसीर (३) कद् कानत् लकुम् उस्-वतुन् ह-स-
नतुन् फ़ी इब्राही-म वल्लजी-न म-अह ८ इज् कालू लिक्वोमिहिम् इन्ना वु-र-अउ
मिन्कुम् व मिम्मा तअ-बुदू-न मिन् इन्लिल्लाहि क-फ़र्ना बिकुम् ब बदा बैनना व
बैनकुमुल् अदावतु वल्लरज़ाउ अ-ब-दन् हत्ता तुअमिन् बिल्लाहि वद्दह इल्ला कौ-ल
इब्राही-म लिअबीहि ल-अस्तर्फ़िरन्-न ल-क व मा अम्लिकु ल-क मिनल्लाहि मिन्
शौदन् ७ रब्बना अलै-क त-वकल्ला व इलै-क अनब्ना व इलैकल्-मसीर (४)

बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है। (२२) वही खुदा है, जिस के सिवा कोई इबादत के लायक नहीं। बादशाह (हकीमी) पाक जात (हर ऐब से) सलामती, अम्न देने वाला, निगहबान, ग़ालिब, ज़बरदस्त, बड़ाई वाला। खुदा उन लोगों के शरीक मुकर्रर करने से पाक है। (२३) वही खुदा (तमाम मरूलूक का) पैदा करने वाला, ईजाद करने वाला, सूरतें बनाने वाला, उस के सब अच्छे नाम हैं। जितनी चीज़ें आसमानों और ज़मीन में हैं, सब उस की तस्बीह करती हैं और वह ग़ालिब हिकमत वाला है। (२४) ★

६० सूर: मुस्तहिन: ६१

सूर: मुस्तहिना मक्की' है, इस में तेरह आयतें और दो रकूअ हैं।

शुरू खुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

मोमिनो! अगर तुम मेरी राह में लड़ने और मेरी खुश्नूदी तलब करने के लिए (मक्के से) निकले हो तो मेरे और अपने दुश्मनों को दोस्त न बनाओ तुम तो उन को दोस्ती के पैग़ाम भेजते हो और वे (दीने) हक से जो तुम्हारे पास आया है, मुन्किर हैं और इस वजह से कि तुम अपने परवर-दिगार खुदा-ए-तआला पर ईमान लाए हो, पैग़म्बर को और तुम को देश निकाला देते हैं, तुम उन की तरफ़ पोशीदा दोस्ती के पैग़ाम भेजते हो और जो कुछ तुम छिपे तौर पर और जो खुले तौर पर करते हो, वह मुझे मालूम है और जो कोई तुम में से ऐसा करेगा, सीधे रास्ते से भटक गया। (१) अगर ये काफ़िर तुम पर क्रुदरत पा लें, तो तुम्हारे दुश्मन हो जाएँ और तक्लीफ़ पहुंचाने के लिए तुम पर हाथ (भी) चलाएं और जुबानें (भी) और चाहते हैं कि तुम किसी तरह काफ़िर हो जाओ। (२) क्रियामत के दिन न तुम्हारे रिश्ते-नाते काम आएंगे और न औलाद। उस दिन वही तुम में फ़सला करेगा, और जो कुछ तुम करते हो खुदा उस को देखता है। (३) तुम्हें इब्राहीम और उन के साथियों की नेक चाल चलनी (ज़रूर) है, जब उन्होंने अपनी कौम के लोगों से कहा, कि हम तुम से और उन (बुतों) से, जिन को तुम खुदा के सिवा पूजते हो, बे-ताल्लुक हैं (और) तुम्हारे (माबूदों के कभी) कायल नहीं (हो सकते) और जब तक तुम खुदा-ए-बाहिद पर ईमान न लाओ, हम में, तुम में हमेशा खुल्लम-खुल्ला अदावत और दुश्मनी रहेगी। हां, इब्राहीम ने अपने बाप से यह (ज़रूर) कहा कि मैं आप के लिए मसफ़िरत मांगूंगा और मैं खुदा के सामने आप के बारे में किसी चीज़ का कुछ अस्तियार नहीं रखता। ऐ हमारे परवरदिगार! तुम्ही पर हमारा भरोसा है और तेरी ही तरफ़

१. यह सूर: मक्की है या मक्की, इस में इस्तिस्नाक है।

रब्बना ला तज्-अल्ना फित्-न-तल्-लिल्लजी-न क-फल् वरिफर-सना रब्बना^८इल्-क
अन्तल् अजीजुल् - हकीम (५) ल - कद् का - न लकुम् फ्रीहिम्
उस्-व-तुन् ह-स-नतुल्-लिमन् का-न यर्जुल्ला-ह वल्-यौमल् आखि-रुव मय्य-त-वल्-ल
फ-इन्ल्ला-ह हुवल्-गनिय्युल्-हमीद ★ (६) अ-सल्लाहु अय्यज्-अ-ल बैनकुम् व

बैनल्लजी-न आदेतुम् मिन्हुम् म-वद्-द-तुन्
वल्लाहु कदीरुन् वल्लाहु गफूहर-रहीम (७)

ला यन्हाकुमुल्लाह अनिल्लजी-न लम् युका-
तिलुकुम् फिद्दीन व लम् युखरिजूकुम्
मिन् दियारिकुम् अन् तबरूहुम् व तुक्सित्
इलैहिम् ५ इन्नल्ला - ह युहिब्बुल्-मुक्सितौन

(६) या अय्यहल्लजी - न आमन्

मुहाजिरातिन् फ्रम्तहिन्तुहन् - न ७ अल्लाह् अम् - लम् बिईमानिहिन् - न ८
फ्र-इन् अलिम्तुम्तुहन्-न मुअमिनातिन् फला तजिअुहन्-न इललकुफारि ७ ला
हुन्-न हिल्लुल् - लहुम् व ला हुम् यहिल्लुन् लहुन् - न ७ व आतुहुम्
मा अन्फक् ७ व ला जुना-ह् अलकुम् अन् तन्किह् - हुन्-न इजा आत-
तुम्तुहन्-न उजूरहुन्-न व ला तुम्सिक् बिजिसमिल्-कवाफिरि वस्अल् मा अन्फक्तुम् वल्-
यस्-अल् मा अन्फक् जालिकुम् हुक्मुल्लाहि यहकुम् बेनकुम् वल्लाह् अलीमुन् हकीम (१०)

[illegible]

हम रुजूअ करते हैं। और तेरे ही हुज़ूर में (हमें) लौट कर आना है। (४) ऐ हमारे परवरदिगार ! हम को काफ़िरों के हाथ से अज़ाब न दिलाना और ऐ परवरदिगार हमारे ! हमें माफ़ करमा, बेयाक़ तू ग़ालिब हिक्मत वाला है। (५) तुम (मुसलमानों) को यानी जो (खुदा के सामने जाने) और आख़िरत के दिन (के आने) की उम्मीद रखता हो, उसे उन लोगों की नेक चाल चलनी (ज़रूर) है और जो मुंह फेरे, तो खुदा भी बे-परवा और हम्द (ब सना) के लायक़ है। (६) ★

अजब नहीं कि खुदा तुम में और उन लोगों में, जिन से तुम दुश्मनी रखते हो, दोस्ती पैदा कर दे और खुदा क़ुदरत वाला है और खुदा बरूशने वाला मेहरबान है। (७) जिन लोगों ने तुम से दीन के बारे में जंग नहीं की और न तुम को तुम्हारे घरों से निकाला, उन के साथ भलाई और इन्साफ़ का सुलूक करने से खुदा तुम को मना नहीं करता। खुदा तो इन्साफ़ करने वालों को दोस्त रखता है। (८) खुदा उन्हीं लोगों के साथ तुम को दोस्ती करने से मना करता है, जिन्होंने तुम से दीन के बारे में लड़ाई की और तुम को तुम्हारे घरों से निकाला और तुम्हारे निकालने में औरों की मदद की, तो जो लोग ऐसों से दोस्ती करेंगे, वही ज़ालिम हैं। (९) मोमिनो ! जब तुम्हारे पास मोमिन औरतें बतन छोड़ कर आएँ तो उन की आजमाइश कर लो (और) खुदा तो उन के ईमान को खूब जानता है, सो अगर तुम को मालूम हो कि मोमिन हैं, तो उन को कुफ़्कार के पास वापस न भेजो कि न ये उन को हलाल हैं और न वे उन को जायज़। और जो कुछ उन्हीं ने (उन पर) खर्च किया हो, वह उन को दे दो और तुम पर कुछ गुनाह नहीं कि उन औरतों को मल्ल दे कर उन से निकाह कर लो और काफ़िर औरतों की इज़्ज़त को क़ब्जे में न रखो (यानी कुफ़्कार को वापस दे दो) और जो कुछ तुम ने उन पर खर्च किया हो, तुम उन से तलब कर लो और जो कुछ उन्होंने (अपनी औरतों पर) खर्च किया हो, वह तुम से तलब कर लें, यह खुदा का हुक्म है जो तुम में फ़ैसला किए देता है और खुदा जानने वाला, हिक्मत वाला है। (१०) और अगर तुम्हारी औरतों में से कोई

व इन् फ़ातकुम् शैउमिन् अज्वाजिकुम् इलल् - कुफ़कारि फ - आकन्तुम्
फ़ातुल्लजी - न अ - ह - बत् अज्वाजुहुम् मिल् - ल मा अन्फ़क ७ वत्त-
कुल्लाहल्लजी अन्तुम् बिही मुअमिनून (११) या अय्युहन्नाविय्यु
इजा जा - अकल् - मुअमिनातु युबायिअ - न - क अला अल्ला युशिरक्-न

बिल्लाहि शैअव्व-व ला यसरिक् - न व
ला यज्नी-न व ला यक्तुल्ल-न औलाद-
हुन्-न व ला यज्ती-न बिबुह्तानिय्यफ़-
तरीनहू बैन ऐदीहिन्-न व अरज़ुलिहिन्-न
व ला यज्सी-न-क फ़ी मज् - रुफ़िन्
फ़बायिअ - हुन्-न वस्तफ़िर् लहुन्नल्ला-ह

इन्नल्ला - ह ग़फ़ुरर्हीम (१२) या
अय्युहल्लजी-न आमनू ला त - त-वल्लौ
कौमन् ग़ज़िबल्लाहु अलैहिम् कद् यइसू
मिनल् - आखिरति कमा यइसल्-कुफ़कार
मिन् अस्हाबिल् - कुबूर ★ ● (१३)

وَلَا تُشْرِكُوا بِعِصَمِ الْكَوَافِرِ وَتَعْلَمُوا مَا أَفْعَلُوا لَيْسَ عَلَيْنَا
مَا أَفْعَلُوا لَكُمْ عَذَابُ اللَّهِ يَوْمَ يُنْفَخُ السُّكُوتُ وَاللَّهُ عَزِيزٌ عَلِيمٌ
وَأَن تَكْفُرُوا فِي دِينِكُمْ أَوْ أَتَمْكُمُ الْمَلَائِكَةُ مَا أَفْعَلُوا قَاتِلُوا
الَّذِينَ ذُكِّرُوا وَاعْلَمُوا قَوْلَ مَا أَفْعَلُوا وَاللَّهُ الْعَزِيزُ
الْقَدِيرُ الْمُؤْتِمِنُ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا جَاءَكُمُ الْوَعْدُ بِمَا
عَمَلْتُمْ فَلا تُخَفُوا بِاللَّهِ فَيَكُنْ لِلَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ وَلَا يَذَرُونَ
أَوَّلَ دَعْوَى وَلَا يَأْتِيَنَّ بِهِمْ فِي يَوْمَ تَأْتِي بَيْنَ الْيَمِينِ وَالْأُخْرَى
وَلَا يَصْعَدُ فِيهَا عَذَابٌ فَلْيَأْمُرْكُمْ إِسْمَاعِيلُ وَالْحُكْمُ لِلَّهِ
إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ ذَكِيمٌ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَوَلَّوْا قَوْمًا
غَضِبَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ قَدْ يَكُونُوا مِنَ الْآخِرَةِ كَمَا يَكُونُ
الْمُكَافَرُونَ أَغْضَبَ الْغَائِبُونَ
سُبْحَانَ اللَّهِ عَمَّا يُشْرِكُونَ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ
يَأْتِيهِمُ الْإِيمَانُ لَمْ يَكُونُوا مَالًا يَتَمَتَّعُونَ كَذَلِكَ يَجْزِي
اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا مَالًا يَتَمَتَّعُونَ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الَّذِينَ يُقَاتِلُونَ
فِي سَبِيلِهِ مَالًا كَذَلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ فُرُوضَهُ وَهُوَ عَلِيمٌ مُؤْتِمِنٌ

६१ सूरतुससफ़ि १०८

(मदनी) इस सूर: में अरबी के ६६१ अक्षर, २२३ शब्द, १४ आयतें और २ रकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम •

सब - ह लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अज़ि व
हुवल् - अज़ीजुल् - हकीम (१) या अय्युहल्लजी-न आमनू लि - म
तकूलू-न मा ला तफ़्-अलून (२) कबु-र मक्तन् बिन्दल्लाहि अन्
तकूलू मा ला तफ़्-अलून (३) इन्नल्ला-ह युहिब्लुल्लजी-न युकातिलून-
फ़ी सबीलिही सफ़क्न् क - अन्तहुम् बुन्यानुम् - मर् - सू (४)

औरत तुम्हारे हाथ से निकल कर काफ़िरों के पास चली जाए (और उस का मह वसूल न हुआ हो) फिर तुम उन से जंग करो (और उन से तुम को ग़नीमत हाथ लगे) तो जिन की औरतें चली गयी हैं, उन को (उस माल में से) उतना दे दो, जितना उन्होंने ने खर्च किया था और खुदा से, जिस पर ईमान लाए हो, डरो। (११) ऐ पैग़म्बर ! जब तुम्हारे पास मोमिन औरतें इस बात पर बैअत करने को आएँ कि खुदा के साथ न तो शिकं करेंगी, न चोरी करेंगी, न बदकारी करेंगी, न अपनी औलाद को क़त्ल करेंगी, न अपने हाथ-पांव में कोई बोहतान बांध लाएंगी, न नेक कामों में तुम्हारी ना-फ़रमानी करेंगी, तो उन से बैअत ले लो और उन के लिए खुदा से बल्शिश मांगो। बेशक खुदा बल्शिशने वाला मेहरबान है। (१२) मोमिनो ! उन लोगों से, जिन पर खुदा गुस्से हुआ है, दोस्ती न करो (क्योंकि) जिस तरह काफ़िरों को मुद्दों (के जी उठने) की उम्मीद नहीं, उसी तरह उन लोगों को भी आखिरत (के आने) की उम्मीद नहीं। (१३) ★ ●



६१ सूरः सफ़ १०६

सूरः सफ़ मदनी है, इस में चौदह आयतें और दो रुकूअ हैं।

शुरू खुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

जो चीज़ आसमानों में है और जो ज़मीन में है, सब खुदा की तस्बीह करती है और वह ग़ालिब हिक़मत वाला है। (१) मोमिनो ! तुम ऐसी बातें क्यों कहा करते हो, जो किया नहीं करते ? (२) खुदा इस बात से सस्त बेज़ार है कि ऐसी बात कहो, जो करो नहीं। (३) जो लोग खुदा की राह में (ऐसे तौर पर) पैर जमा कर लड़ते हैं कि गोया सीसा पिलाई हुई दीवार हैं, वह

बेशक अल्लाह के महबूब हैं। (४) और (वह वक्त याद करने के लायक है) जब मूसा ने अपनी क्रोध से कहा कि भाइयो ! तुम मुझे क्या तक्लीफ देते हो, हालांकि तुम जानते हो कि मैं तुम्हारे पास खुदा का भेजा हुआ आया हूँ तो जब उन लोगों ने टेढ़ा अपनाया, खुदा ने भी उन के दिल टेढ़े कर दिए और खुदा ना-फ़रमानों को हिदायत नहीं देता। (५) और (वह वक्त भी याद करो) जब मरयम के बेटे ईसा ने कहा कि ऐ बनी इस्राईल ! मैं तुम्हारे पास खुदा का भेजा हुआ आया हूँ (और) जो (किताब) मुझ से पहले आ चुकी है (यानी) तौरात, उस की तस्दीक करता हूँ और एक पैगम्बर, जो मेरे बाद आएंगे, जिन का नाम अहमद होगा, उन की खुशखबरी सुनाता हूँ, (फिर) जब वह उन लोगों के पास खुली निशानियाँ ले कर आए, तो कहने लगे कि यह तो खुला जादू है। (६) और उस से जालिम कौन कि बुलाया तो जाए इस्लाम की तरफ और वह खुदा पर झूठ बुहतान बांधे और खुदा जालिम लोगों को हिदायत नहीं दिया करता। (७) ये चाहते हैं कि खुदा (के चिराग) की रोशनी को मुंह से (फूंक मार कर) बुझा दें, हालांकि खुदा अपनी रोशनी को पूरा कर के रहेगा, चाहे काफिर ना-खुश ही हों। (८) वही तो है, जिस ने अपने पैगम्बर को हिदायत और दीने हक दे कर भेजा, ताकि उसे और सब दीनों पर गालिब करे, चाहे मुश्रिकों को बुरा ही लगे। (९) ★

मोमिनो ! मैं तुम को ऐसी तिजारत बताऊँ, जो तुम्हें दर्दनाक अज़ाब में मुल्लिसी दे। (१०) (वह यह कि) खुदा पर और उस के रसूल पर ईमान लाओ और खुदा की राह में अपने माल और जान से जिहाद करो, अगर समझो तो यह तुम्हारे हक में बेहतर है। (११) वह तुम्हारे गुनाह बरख़्त देगा और तुम को जन्नत के बागों में, जिन में नहरें बह रही हैं और पाकीजा मकानों में, जो हमेशा की बहिस्तों में (तैयार) हैं, दाखिल करेगा। यह बड़ी कामियाबी है। (१२) और एक और चीज़, जिस को तुम बहुत चाहते हो (यानी तुम्हें) खुदा की तरफ से मदद (नसीब होगी) और फ़त्ह (बहुत) जल्द (होगी) और मोमिनों को (इस की) खुशखबरी सुना दो। (१३) मोमिनो ! खुदा

या अय्युहल्लजी-न आभनू कनू अन्सारल्लाहि कमा का-ल बीसबु मर्य-म
 लिल् - ह्वारिय्यी-न मन् अन्सारी इलल्लाहि कालल् - ह्वारिय्यी-न नह्नु
 अन्सारल्लाहि फ-आ-म-नत् - ताइफ-नुम् - मिम्बनी इस्राई-ल व क-फ-रत्-
 ताइफ - तुन् ८ फ - अय्यदनल्लजी - न आभनू अला अबुव्विहिम्
 फ - अस्वह् आहिरीन ★ (१४)

६२ सूरतुल्-जुमुअति ११०

(मदनी) इस सूरः में अरबी के ७८७ अक्षर,
 १७६ शब्द, ११ आयतें और २ रकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

युसबिह् लिल्लाहि मा फिस्समावाति
 व मा फिल्-अजिल्-मलिकिल् - कुदूसिल्-
 अजीजिल्-हकीम (१) हुवल्लजी ब-अ-स
 फ़िल्उम्मिय्यी - न रसूलम् - मिन्हुम् यत्लू
 अलैहिम् आयातिही व युजक्कीहिम् व
 युअल्लिमुहुमुल् - किता - व वल्हिक-म - त्ति
 व इन् कानू मिन् कब्लु लफी ज़लालिम्-
 मुबीनिव्-॥ (२) व आखरी-न मिन्हुम् लम्मा
 यल्हकू बिहिम् व हुवल्ल-अजीजुल्-हकीम (३) जालि-क फ़ज़लुल्लाहि युअतीहि
 मय्यशाउ वल्लाहु जुल्फ़ज़िल्-अजीम (४) म-सलुल्लजी-न हुमिलुत्तीरा-त सुम्-म
 लम् यहिमलूहा क-म-सलिल्-हिमारि यहिमलु अस्फ़ारत् व बिअ-स म-सलुल्-कौमिल्लजी-न
 कज्जबू बिआयातिल्लाहि वल्लाहु ला यहिदल्-कौमज़-ज़ालिमीन (५) कुल् या
 अय्युहल्लजी-न हाइ इन् अ-अम्नुम् अन्नकुम् औलियाउ लिल्लाहि मिन् दूनिन्नासि
 फ़-त-मन्नबुल्-मौ-त इन् कुन्तुम् सादिकीन (६) व ला य-त-मन्नौनहू अ-ब-दम्-
 बिमा कद-द-मत् ऐदीहिम् वल्लाहु अलीमुम्-बिअज़ालिमीन (७) कुल् इन्नल्-
 मौतल्लजी तफ़िरू-न मिन्हु फ़-इन्नहू मुलाक़ीकुम् सुम्-म तुरददू-न इला आलि-
 मिल्-ग़ैबि वशहादति फ़युनबिअकुम् बिमा कुन्तुम् तअ - मलून ★ (८)



के मददगार हो जाओ जैसे ईसा बिन मरयम ने हवारियों से कहा कि (भला) कौन है जो खुदा की तरफ (बुलाने में) मेरे मददगार हों, हवारियों ने कहा कि हम खुदा के मददगार हैं, तो बनी इस्राईल में से एक गिरोह तो ईमान ले आया और एक गिरोह काफ़िर रहा। आखिरकार हम ने ईमान लाने वालों को उन के दुश्मनों के मुकाबले में मदद दी और वह ग़ालिब हो गये।' (१४) ★

६२ सूर: जुमुअ: ११०

सूर: जुमुअ: मदनी है, इस में ग्यारह आयतें और दो रकूअ हैं।

शुरू खुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

जो चीज़ आसमानों में है और जो चीज़ ज़मीन में है, सब खुदा की तस्बीह करती है, जो हक़ीकी बादशाह, पाक ज्ञात, ज़बरदस्त हिकमत वाला है। (१) वही तो है, जिस ने अ-पढ़ों में उन्हीं में से (मुहम्मद को) पैग़म्बर (बना कर) भेजा, जो उस के सामने उस की आयतें पढ़ते और उन को पाक करते और (खुदा की) किताब और हिकमत सिखाते हैं और इस से पहले तो ये लोग खुली गुमराही में थे।' (२) और उन में से और लोगों की तरफ भी (उन को भेजा है) जो अभी उन (मुसलमानों) से नहीं मिले और वह ग़ालिब हिकमत वाला है। (३) यह खुदा का फ़ज़ल है, जिसे चाहता है, अता करता है और खुदा बड़े फ़ज़ल का मालिक है। (४) जिन लोगों (के सर) पर तौरात लदवायी गयी, फिर उन्हीं ने उस (के पालन के बोझ) को न उठाया, उन की मिसाल गधे की-सी है, जिस पर बड़ी-बड़ी किताबें लदी हों। जो लोग खुदा की आयतों को झुठलाते हैं, उन की मिसाल बुरी है और खुदा ज़ालिम लोगों को हिदायत नहीं देता। (५) कह दो कि ऐ यहुदियों! अगर तुम को यह दावा हो कि तुम ही खुदा के दोस्त हो और लोग नहीं, तो अगर तुम सच्चे हो तो (ज़रा) मौत की आरजू तो करो। (६) और ये उन (आमाल) की वजह से, जो कर चुके हैं, हरगिज़ इस की आरजू नहीं करेंगे और खुदा ज़ालिमों को खूब जानता है। (७) कह दो कि मौत, जिस से तुम भागते हो, वह तो तुम्हारे सामने आ कर रहेगी, फिर तुम छिपे और ज़ाहिर के जानने वाले (खुदा) की तरफ लौटाए जाओगे, फिर जो-जो कुछ तुम करते रहे हो, वह तुम्हें सब बताएगा। (८) ★

१. हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के बाद उन के घरों ने बड़ी मेहनत की है, तब उन का दीन फैला। हमारे हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पीछे भी ख़लीफ़ों ने उस से ज्यादा किया।

२. अ-पढ़ अरब के लोग थे, जिन के पास नबी की किताब न थी।

या अय्युहल्लजी-न आमनू इजा नूदि-य लिस्सलाति मिथ्योमिल्-जुमुअति फस्ओ
इला जिक्विल्लाहि व - जरुल्व - अ७ जालिकुम् खैरल्लकुम् इन् कुन्तुम्
तअ-लमून (६) फ-इजा कुञ्जियतिस - सलातु फन्तशिरू फिल्अजि वरतगू
मिन् फज्जलिल्लाहि वज्जुल्ला-ह कसीरल्ल-अल्लकुम् तुफ्लिहून (१०) व इजा
रओ तिजा-र-तन् ओ लह्व-निन्फज्जू इलैहा
व त-र-कू-क काइमन्७ कुल् मा अन्दल्लाहि
खैरम् - मिनल्लह्व व मिनत्तिजारति
वल्लाहु खैर - राजिकीन ★ (११)

६३ सूरतुल्-मुनाफिकून् १०४

(मदनी) इस सूरा में अरबी के ८२१ अक्षर,
१८३ शब्द, ११ आयतें और २ रकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

इजा जा-अकल् - मुनाफिकून् कालू
नशहदु इन्न-क ल - रसूलुल्लाह वल्लाहु
अ-लमु इन्न-क ल-रसूलुह७ वल्लाहु यशहदु
इन्नल् - मुनाफिकी - न लकाजिबून ८ (१)
इत्त - खजू ऐमानहुम् जुन्नतन् फ-सद्द अन् सबीलिल्लाहि ७ इन्नहुम्
सा - अ मा कानू यअ - मलून (२) जालि-क बि-अन्नहुम् आमनू
सुम्-म क-फरू फतुबि-अ अला कुलूबिहिम् फहुम् ला यफ्कहून (३) व इजा
रऐतहुम् तुअ - जिबु - क अज्जामुहुम्७ व इय्यकूलू तस्मअ - लिकौलिहिम्७
क-अन्नहुम् खुशुबुम् - मुसन्नदतुन्७ यह्सबू - न कुल् - ल संहतिन् अलैहिम्७
हुमुल् - अदुव्वु फहू-जरहुम्७ कान्त-लहुमुल्लाहु७ अन्ना युअ-फकून (४) व
इजा की - ल लहुम् तआलौ यस्तगिफ् लकुम् रसूलुल्लाहि लव्वौ
रुऊसहुम् व रऐतहुम् यसद्द - न व हुम् मुस्तकिबरून (५)



मोमिनो ! जब जुमा के दिन नमाज़ के लिए अज़ान दी जाए, तो खुदा की याद (यानी नमाज़) के लिए जल्दी करो और (खरीदना व) बेचना छोड़ दो। अगर समझो तो यह तुम्हारे हक़ में बेहतर है। (६) फिर जब नमाज़ हो चुके, तो अपनी-अपनी राह लो और खुदा का फ़ज़ल खोजो और खुदा को बहुत-बहुत याद करते रहो, ताकि निजात पाओ। (१०) और जब ये लोग सौदा बिकता, या तमाशा होता देखते हैं तो उधर भाग जाते हैं और तुम्हें (खड़े का) खड़ा छोड़ जाते हैं। कह दो कि जो चीज़ खुदा के यहां है, वह तमाशे और सौदे से कहीं बेहतर है और खुदा सब से बेहतर रोज़ी देने वाला है।' (११)★



६३ सूर: मुनाफ़िकून १०४

सूर: मुनाफ़िकून मदनी है। इस में ग्यारह आयतें और दो रुकूअ हैं।
शुरू खुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

(ऐ मुहम्मद !) जब मुनाफ़िक लोग तुम्हारे पास आते हैं, तो (निफ़ाक़ की वजह से) कहते हैं कि हम इक़रार करते हैं कि आप बेशक खुदा के पैग़म्बर हैं और खुदा जानता है किहकीक़त में तुम उस के पैग़म्बर हो, लेकिन खुदा जाहिर किए देता है कि मुनाफ़िक (दिल से एतकाद न रखने के लिहाज़ से) झूठे हैं।' (१) उन्होंने अपनी क़स्मों को ढाल बना रखा है और उन के ज़रिए से (लोगों को) खुदा के रास्ते से रोक रहे हैं। कुछ शक नहीं कि जो काम ये करते हैं, बुरे हैं। (२) यह इस लिए कि ये (पहले तो) ईमान लाए, फिर काफ़िर हो गये, तो उन के दिलों पर मुहर लगा दी गयी, सो अब ये समझते ही नहीं।' (३) और जब तुम उन (के अंगों के मेल) को देखते हो तो उन के जिस्म तुम्हें (क्या ही) अच्छे मालूम होते हैं और जब वे बातें करते हैं, तो तुम उन के बोल को तबज्जोह से सुनते हो, गोया लकड़ियां हैं, जो दीवारों से लगायी गयी हैं, (डरपोक ऐसे कि) हर ज़ोर की आवाज़ को समझें (कि) उन पर (बला आयी)। ये (तुम्हारे) दुश्मन हैं, इनसे बे-ख़ौफ़ न रहना। खुदा उन को हलाक करे, ये कहां बहके फिरते हैं। (४) और जब उन से कहा जाए कि आओ खुदा के रसूल तुम्हारे लिए मसिफ़रत मांगें तो सर हिला देते हैं और तुम उन को देखो कि तकब्बुर

१. जनाब सरवरे कायनात सल्ल० जुमे का खुत्बा पढ़ रहे थे, इतने में शाम का क़ाफ़िला ग़ल्ला ले कर आया। उन दिनों मदीने में मंहगाई थी और लोगों को घल्ले की ज़रूरत थी। खुत्बा सुन रहे लोगों के कानों में जो नक्कारे की आवाज़ आयी तो आंहुज़रत को खुत्बे में खड़ा छोड़ कर सब उस के देखने को चले गये। मस्जिद में सिर्फ़ बारह मर्द और सात औरतें रह गयीं, तब यह आयत नाज़िल हुई।
२. यानी चूँकि ये नांम दिल से तुम्हारी रिसालत के क़ायल नहीं और तुम्हारे सामने सिर्फ़ जुबान से इक़रार करते हैं, भीतर कुछ रसदत हैं और बाहर कुछ, इस लिए झूठे हैं और उन के कहने का एतबार नहीं।
३. यानी मंह से तो ये कहते हैं कि हम ईमान लाए, मगर दिल में कुफ़ है और इसी पर जमे हुए हैं, या यह कि मुसलमानों के पास आते हैं तो उन से मोमिन होने का इक़रार करते हैं और जब काफ़िरों के पास जाते हैं, तो इस्लाम से इन्कार करते हैं।

करते हुए मुंह फेर लेते हैं। (५) तुम उन के लिए प्रतिकरत भांगो या न मांगो, उन के हक में बराबर है, खुदा उन को हर गिज़ न बरूहेगा। बेशक खुदा ना-करमान लोगों को हिदायत नहीं दिया करता। (६) यही हैं जो कहते हैं कि जो लोग अल्लाह के रसूल के पास (रहते) हैं, उन पर (कुछ) खर्च न करो, यहां तक कि ये (खुद ही) भाग जाएं, हालांकि आसमानों और ज़मीन के खज़ाने खुदा ही के हैं, लेकिन मुनाफ़िक़ नहीं समझते। (७) कहते हैं कि अगर हम लौट कर मदीने पहुंचे तो इज़ज़त वाले ज़लील लोगों को वहां से निकाल बाहर करेंगे हालांकि इज़ज़त खुदा की है और उस के रसूल की और मोमिनों की, लेकिन मुनाफ़िक़ नहीं जानते। (८) ★

मोमिनो ! तुम्हारा माल और औलाद तुम को खुदा की याद से ग़ाफ़िल न कर दे और जो ऐसा करेगा, तो वे लोग घाटा उठाने वाले हैं। (९) और जो (माल) हम ने तुम को दिया है, उस में से उस (वक्त) से पहले खर्च कर लो कि तुम में से किसी की मौत आ जाए तो (उस वक्त) कहने लगे कि मेरे परवरदिगार ! तू ने मुझे थोड़ी-सी और मोहलत क्यों न दी, ताकि मैं ख़ैरात कर लेता और नेक लोगों में दाख़िल हो जाता। (१०) और जब किसी की मौत आ जाती है, तो खुदा उस को हर-गिज़ मोहलत नहीं देता और जो कुछ तुम करते हो, खुदा उस से ख़बरदार है। (११) ★



६४ सूर: तगाबुन १०८

सूर: तगाबुन मदनी है, इस में अठारह आयतें और दो रकूअ हैं।

शुरू खुदा का नाम ले कर जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

जो चीज़ आसमानों में है और जो चीज़ ज़मीन में है, (सब) खुदा की तस्बीह करती हैं, उसी की सन्ची बादशाही है और उसी की तारीफ़ (न ख़त्म होने वाली) है और वह हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है। (१) वही तो है, जिस ने तुम को पैदा किया फिर कोई तुम में काफ़िर है और कोई मोमिन और जो कुछ तुम करते हो, खुदा उस को देखता है। (२) उसी ने आसमानों और ज़मीन को हिक़मत के साथ पैदा किया और उसी ने तुम्हारी सूरतें बनायीं और सूरतें भी पाकीज़ा बनायीं

यअ-लमु मा फ़िस्समावाति बल्अजि व यअ-लमु मा तुसिरू-न व मा तुअ-लिनू-न
 वल्लाहु अलीमुम् - बिजातिस्सुदूर (४) अ-लम् यअतिकुम् न-व-उल्लजी-न
 क-फ़रू मिन् कब्बु/फ़-जाकू वबा-ल अमिरहिम् व लहुम् अजाबुन् अलीम (५)
 जालि-क बि-अन्नहू कानत् तअतीहिम् रुसुलुहुम् बिल्बय्यिनाति फ़ - काल

अ ब-शरह्यहदूनना/फ़-क-फ़रू व त-वल्ली-
 वस्तग्नल्लाहु ७ वल्लाहु शनिय्युन् हमीद (६)
 ज-अ-मल्लजी-न क-फ़रू अल्लय्युबअसू ७ कुल्
 बला व रब्बी ल-तुब् - असुन्-न सुम्-म
 ल-तुनब्बउन-न बिमा अमिल्लुम् ७ व जालि-क
 अलल्लाहि यसीर (७) फ़आमिन् बिल्लाहि
 व रसूलिही वन्नूरिल्लजी अन्जल्ला ७ वल्लाहु
 बिमा तअ-मलू-न खबीर (८) यी-म यज्-
 मअुकुम् लियोमिल्-जम्बि जालि-क योमुत्ताबाबुनि
 व मय्युअमिम् - बिल्लाहि व यअ - मल्
 सालिहय्युकफ़िर् अन्हु सय्यिआतिही व
 युदखिल्ह जन्नातिन् तजरी मिन् तह्तिहल्-अन्हाह

يَعْلَمُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَيَعْلَمُ مَا تُرَوْنَ وَمَا تُبْشِرُونَ
 وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ۝ أَلَمْ يَأْتِكُمْ نَبُوءُ الَّذِينَ كَفَرُوا
 مِنْ قَبْلُ ۚ فَذُكِّرُوا ۚ وَبِالْأَمْرِ هُمْ وَلَهُمْ عَذَابُ الْآلِيمِ ۝ ذَالِمْ
 كَانَتْ آيَاتِهِمْ رَسُولُهُمْ بِالْحَقِّ فَقَالُوا أَإِشْرَافُ هَذَا وَكَذَّبُوا
 وَكَلَّمُوا وَاسْتَعْفَى اللَّهُ وَاللَّهُ عَزِيزٌ حَسِيدٌ ۝ زَعَمَ الَّذِينَ كَفَرُوا
 أَنْ لَنْ يُعْجِزَ اللَّهُ شَيْئًا مِنْ أَمْرِهُ وَلَئِنْ لَمْ يَنْزِلْ بِهِ آيَةٌ
 وَذَلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ ۚ فَأَمَّا آلِهَتُهُمْ وَرُسُلُهُمْ وَالَّذِينَ كَفَرُوا
 وَاللَّهُ يَمُحُّهُمْ كَمَا يَمْحُو سَائِرُ الْخَلْقِ ۚ يَوْمَ يَجْعَلُ لَكُمُ الْيَوْمَ
 جَهَنَّمَ أَهْلًا ۚ وَمَنْ يُوْثِرْ مِنْ بَنِيهِمْ وَجِلْدًا صَالِحًا فَكُفِّرْ عَنْهُ
 سَيِّئَاتِهِ وَيُعْذِرْ لَهُ جَنَّتِ قُبُورِهِمْ مِنْ تَحْتِ الْأَنْعَامِ خَلِيدِينَ
 أَبَدًا ۚ ذَالِكُمُ الْعَذَابُ الْعَظِيمُ ۚ وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا
 أُولَئِكَ أَصْحَابُ الْأَنْجَارِ الَّذِينَ فِيهَا يَمَسُّ السَّجُودُ ۚ أُولَئِكَ
 مِنْ مُصِيبَةِ رَبِّكَ الَّذِينَ فِيهَا يَلْمِزُونَ ۚ وَالَّذِينَ كَفَرُوا
 وَاللَّهُ يَكُنْ شَيْءٌ عَلَيْهِمْ ۚ وَأَجِيعُوا وَاللَّهُ وَأَجِيعُوا الرُّسُلَ ۚ قُلْ
 تَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ إِنَّهُ يَرْزُقُ الْإِنْسَانَ ۚ وَاللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ
 وَعَلَى اللَّهِ قَلْبُ كُلِّ الْمُؤْمِنِينَ ۚ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّ مِنْ
 الْأَوْصِيَاءِ وَأَوْلَاكُمْ عِدَاكُمْ فَاصْذَكِّرْهُمْ وَلَنْ يَقُولُوا حَقًّا وَلَا نَكَمًا

खालिदी-न फ़ीहा/अ-ब-दन् ७ जालिकल्-फ़ौजुल्-अमीम (९) वल्लजी-न क-फ़रू व
 कज्जबू बिआयातिना/उलाइ-क अस्हाबुन्नारि खालिदी-न फ़ीहा ७ व बिअसल्-मसीर
 ● (१०)मा/असा-ब मिम्मूसीबतिन् इल्ला बिइज्निल्लाहि ७ मय्युअमिम्-बिल्लाहि
 यहिद कलबहू वल्लाहु बिकुल्लि शैइन् अलीम (११) व अतीअुल्ला-ह व अतीअुर-
 रसू-ल् फ़-इन् त-वल्लेतुम् फ़-इन्नमा अला रसूलिनल्-बलागुल्-मुबीन (१२) अल्लाहु
 ला इला-ह इल्ला हु-व ७ अ-जल्लाहि फ़ल्-य-त-वककिल्-मुअमिन्नून् (१३) या/अय्यु-
 हल्लजी-न आमनू इन्-न मिन् अज्वाजिकुम् व ओलादिकुम् अदुव्वल्लकुम् फ़हज़रुहुम्
 व इन् तअ-फू व तस्फ़हू व तफ़िफ़हू फ़-इन्नल्ला-ह ग़फ़ूररहीम (१४)

और उसी की तरफ़ (तुम्हें) लौट कर जाना है। (३) जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है, वह सब जानता है और जो कुछ तुम छिपा कर करते हो और जो खुल्लम-खुल्ला करते हो, उस से भी आगाह है और खुदा दिल के भेदों को जानता है। (४) क्या तुम को उन लोगों के हाल की ख़बर नहीं पहुँची, जो पहले काफ़िर हुए थे, तो उन्होंने ने अपने कामों की सज़ा का मज़ा चख़ लिया और (अभी) दुख़ देने वाला अज़ाब (और) होना है। (५) यह इस लिए कि उन के पास पैग़म्बर खुली निशानियाँ ले कर आते तो यह कहते कि क्या आदमी हमारे हादी बनते हैं? तो उन्होंने ने (उन को) न माना और मुँह फेर लिया और खुदा ने भी बे-परवाई की और खुदा बे-परवा (और) तारीफ़ (ब सना) के लायक़ है। (६) जो लोग काफ़िर हैं, उन का एतकाद है कि वे (दोबारा) हर ग़िज़ नहीं उठाए जाएंगे। कह दो कि हाँ, मेरे परवरदिगार की क़सम ! तुम ज़रूर उठाए जाओगे, फिर जो-जो काम तुम करते रहे हो, वे तुम्हें बताए जाएंगे और यह (बात) खुदा को आसान है। (७) तो खुदा पर और उस के रसूल पर और नूर (क़ुरआन) पर जो हम ने नाज़िल फ़रमाया है, ईमान लाओ और खुदा तुम्हारे सब आमाल से ख़बरदार है। (८) जिस दिन वह तुम को इकट्ठा होने (यानी क्रियामत) के दिन इकट्ठा करेगा वह नुक़सान उठाने का दिन है और जो शस्स खुदा पर ईमान लाए और नेक अमल करे वह उस से उस की बुराइयाँ दूर कर देगा। और जन्नत के वाश्यों में, जिन के नीचे नहरें बह रही हैं, दाख़िल करेगा, हमेशा उन में रहेंगे। यह बड़ी कामियाबी है। (९) और जिन्होंने ने कुफ़्र किया और हमारी आयतों को झुठलाया, वही दोज़ख़ वाले हैं, हमेशा उसी में रहेंगे और वह बुरी जगह है (१०) ★●

कोई मुसीबत नाज़िल नहीं होती मगर खुदा के हुक्म से और जो शस्स खुदा पर ईमान लाता है, वह उस के दिल को हिदायत देता है और खुदा हर चीज़ से वा-ख़बर है। (११) और खुदा की इताअत करो और उस के रसूल की इताअत करो। अगर तुम मुँह फेर लोगे, तो हमारे पैग़म्बर के ज़िम्मे तो सिर्फ़ पैग़ाम का खोल-खोल कर पहुँचा देना है। (१२) खुदा (जो सच्चा मानूद है, उस) के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं, तो मोमिनों को चाहिए कि खुदा ही पर भरोसा रखें। (१३) मोमिनो ! तुम्हारी औरतों और औलाद में से कुछ तुम्हारे दुश्मन (भी) हैं, उन से बचते रहो और अगर माफ़ कर दो और दरगुज़र करो और बल्ला दो तो खुदा भी बल्लाने वाला मेहरबान

इन्मा अम्बालुकुम् व ओलादुकुम् फित्-नतुन् बल्लाहु बिन्दह अजरुन् अजीम (१५)
 फतकुल्ला-ह मस्त-तअ-तुम् वस्-मअ व अतीअ व अन्फिकू खैरल्-लिअन्फुसिकुम् व
 मय्य-क शुह-ह नफ्सिही फजलाइ-क हुमुल्-मुफलिह-न (१६) इन् तुक्रिजुल्ला-ह
 कर्-जन् ह-स-नय्युजाअिफहु लकुम् व यरिफर् लकुम् बल्लाहु शकूरुन् हलीम (१७)
 आलिमुल्ताबि वशहादतिल्-अजीजुल्-हकीम (१८)

६५ सूरतुत्तलाकि ६६

(मदनी) इस सूर: में अरबी के १२३७ अक्षर,
 २६८ शब्द, १२ आयतें और २ रकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

या अय्युहन्नबिय्यु इजा तल्लवतुमुन्नि-
 सा-अ फ-तल्लिकू हुन्-न लिअिददतिहन्-न व
 अह्मुल्-अिद-त-त वक्तकुल्ला-ह रब्बकुम् त-ला
 तुखिरजूहुन्-न मिम्-बुयूतिहन्-न व ला यहरूज्-न
 इल्ला अय्यअती-न बिफाहिशतिम्-मुबय्यिनतिन्
 व तिल-क हुद्दुल्लाहि व मय्य-त-अद्-द हुद्द-
 दल्लाहि फ - कद् अ - ल - म नफ्सहू

وَتَقَرَّبُوا إِلَى اللَّهِ عَزَّ وَجَلَّ إِنَّ أَمْرًا لَّكَوَالِدًا وَمِنْهُ
 وَاللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ أَمْرًا عَزَّ وَجَلَّ ۝ فَاتَّقُوا اللَّهَ مَا اسْتَطَعْتُمْ وَأَسْمِعُوا
 وَأَطِيعُوا وَأَنْفِقُوا خَيْرًا لِّأَنْفُسِكُمْ وَمَنْ يُؤْكَلْ ثَوْبُهُ مَكْرًا
 أَوْ مَغْرَبًا ۝ إِنَّ يُقَرَّبُوا إِلَى اللَّهِ قَرَّبًا سَاعَةً لِّمَنْ يَشَاءُ ۝ وَاللَّهُ
 وَكَانَ اللَّهُ شَهِيدًا عَلَى الْعَرْشِ وَاللَّهُ وَالْعَرْشُ الشَّهِيدُ ۝
 سُبْحَانَ اللَّهِ عَمَّا يُشْرِكُونَ ۝ إِنَّ اللَّهَ لَمَعَ الْوَسْطَى
 بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
 يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا طَلَعَتِ الْبُشْرَى فَلَا تُقْرَبُوا مِنْ يَوْمَيْهِمْ وَلَا
 يُخْرَجُونَ إِلَّا أَنْ يَأْتِيَنَّ بِهِمْ لِسَانٌ قَبِيضٌ ۝ وَلِلَّهِ حُكْمُ
 اللَّهِ وَمَنْ يَتَّبِعْ حُكْمَ اللَّهِ فَقَدْ طَعِمَ نَعْمَةً ۝ لَا تَكُونُوا
 تَعْلَمُ اللَّهُ يُخَوِّطُ بَعْدَ ذَلِكَ أَمْرًا ۝ فَإِذَا بَلَغَ الْهُدَى
 فَأَمَرَ لِيَوْمِ يَوْمِ يَوْمِ يَوْمِ يَوْمِ يَوْمِ يَوْمِ يَوْمِ يَوْمِ
 عَدَلٍ وَكَانُوا وَالْقَوْمُ الشَّاهِدَةُ لِلَّهِ ذَلِكَ يَوْمُ عِظَامِهِ مَنْ
 كَانَ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَمَنْ يَتَّبِعِ اللَّهَ يَجْعَلْ لَهُ
 مَخْرَجًا ۝ وَكَانَ مِنْ حَيْثُ لَا يَسْتَوِي ۝ وَمَنْ يَتَوَكَّلْ
 عَلَى اللَّهِ فَحَسْبُهُ إِنَّ اللَّهَ بَالِغُ أَمْرِهِ قَدْ جَعَلَ اللَّهُ لِكُلِّ

ला तद्री ल-अल्लल्ला-ह युहिदसु बअ-द जालि-क अम्रा (१) फ-इजा ब-लग्-न
 अ-ज-लहुन्-न फ-अम्सिकूहुन्-न बिमअ-रुफिन् औ फारिकूहुन्-न बिमअ-रुफिक्-व अशिहद्
 जव अदलिम् - मिन्कुम् व अकीमुशहाद-त- लिल्लाहि जालिकुम् यू - अजु
 बिही मन् का - न युअमिनु बिल्लाहि वल् - योमिल् - आखिर व
 मय्यत्तकिल्ला-ह यज्-अल् लहू मख्-र-जव- (२) व यरजूवहु मिन् हैसु
 ला यह-तसिबु व मय्य - त-वक्कल् अल्ललाहि फहु-व हस्बुहू इन्ल्ला-ह
 बालिगु अमिरही व कद् ज-अ-लल्लाहु लिकुल्लि शैइन् कद्रा (३)

है। (१४) तुम्हारा माल और तुम्हारी औलाद तो आजमाइश है और खुदा के यहां बड़ा बदला है। (१५) सो जहां तक हो सके, खुदा से डरो और (उस के हुक्मों को) सुनो और उसके फ़रमा-बरदार (उस की राह में) खर्च करो, (यह) तुम्हारे हक़ में बेहतर है और जो शल्स तबीयत के बुल्ल से बचाया गया तो ऐसे ही लोग राह पाने वाले हैं। (१६) अगर तुम खुदा को (इस्लास और नीयत) नेक (से) क़र्ज़ दोगे, तो वह तुम को उस का दो गुना देगा और तुम्हारे गुनाह भी माफ़ कर देगा और खुदा क़द्र शनास और बुर्दबार है। (१७) छिपे और खुले का जानने वाला ग़ालिब (और) हिकमत वाला। (१८) ★

६५ सूर: तलाक़ ६६

सूर: तलाक़ मदनी है। इस में बारह आयतें और दो रुकूअ हैं।

शुरू खुदा का नाम ले कर जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

ऐ पैग़म्बर ! (मुसलमानों से कह दो कि) जब तुम औरतों को तलाक़ देने लगो, तो उन की इद्त के शुरू में तलाक़ दो' और इद्त को गिनते रहो और खुदा से, जो तुम्हारा परवरदिगार है, डरो। (न तो तुम ही) उन को (इद्त के दिनों में) उन के घरों से निकालो और न वे (खुद ही) निकलें। हां, अगर वे खुली बे-हयाई करें (तो निकाल देना चाहिए) और ये खुदा की हदें हैं। जो खुदा की हदों से आगे बढ़ेगा, वह अपने आप पर जुल्म करेगा। (ऐ तलाक़ देने वाले !) तुझे क्या मालूम, शायद खुदा इसके बाद कोई (रुजूअ होने का) रास्ता पैदा कर दे। (१) (फिर जब वह अपनी मीयाद (यानी इद्त पूरी होने) के करीब पहुंच जाएं, तो या तो उन को अच्छी तरह से (जौजियत में) रहने दो या अच्छी तरह से अलग कर दो और अपने में से दो इन्साफ़पसन्द मदों को गवाह कर लो और (गवाहो !) खुदा के लिए ठीक गवाही देना। इन बातों से उस शल्स को नसीहत की जाती है, जो खुदा पर और आखिरत के दिन पर ईमान रखता है और जो कोई खुदा से डरेगा, वह उस के लिए (रंज व शम से) मुख़्लिसी की शक़ल पैदा कर देगा। (२) और उस को ऐसी जगह से रोज़ी देगा, जहां से (वहम व) गुमान भी न हो और जो खुदा पर भरोसा रखेगा, तो वह उस को क़फ़ायत करेगा। खुदा अपने काम को (जो वह करना चाहता है) पूरा कर देता है। खुदा ने हर चीज़ का

१. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० से रिवायत है कि उन्होंने ने अपनी बीवी को तलाक़ दी और वह उस वक़्त हैज़ से थीं।

हज़रत उमर रज़ि० ने जनाब रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में इस का ज़िक्र किया तो आप गुस्सा हुए और रुजूअ कर लेने का हुक्म दिया और फ़रमाया कि इसे रहने देना चाहिए, यहां तक कि पाक हो जाए, फिर हैज़ आए फिर पाक हो, फिर अगर तलाक़ देनी चाहे, तो हम-बिस्तर होने से पहले तलाक़ दो। यह वह इद्त है, जिस को खुदा ने इर्शाद फ़रमाया है कि औरतों को उन की इद्त के शुरू में तलाक़ दो और यह आयत पढ़ो—'या अरयुहानबीय इज़्ना तल्लक़ुतुमुन्निंसा-अ फ़तल्लिकूहून-न लि इद्तहिन्-न'।

अन्दाज़ा मुक़रर कर रखा है। (३) और तुम्हारी (तलाक़ पायी) औरतें जो हैज़ से ना-उम्मीद हो चुकी हों, अगर तुम को (उन की इद्त के बारे में) शुब्हा हो, तो उन की इद्त तीन महीने हैं और जिन को अभी हैज़ नहीं आने लगा, (उन की इद्त भी यही है) और हमल वाली औरतों की इद्त हमल होने (यानी बच्चा जनने) तक है। और जो खुदा से डरेगा, खुदा उस के काम में आसानी पैदा कर देगा। (४) ये खुदा के हुक्म हैं जो खुदा ने तुम पर नाज़िल किए हैं और जो खुदा से डरेगा, वह उस से उस के गुनाह दूर कर देगा और उसे बड़ा बदला बरूशेगा। (५) (तलाक़ पायी) औरतों को (इद्त के दिनों में) अपने क़ुदरत के मुताबिक़ वहीं रखो, जहां खुद रहते हो और उन को तंग करने के लिए तकलीफ़ न दो और अगर हमल से हों, तो बच्चा जनने तक उन का खर्च देते रहो। फिर अगर वह बच्चे को तुम्हारे कहने से दूध पिलाएं तो उन को उन की उज़्रत दो और (बच्चे के बारे में) पसन्दीदा तरीक़े से मुवाफ़क़त रखो और अगर आपस में ज़िद (और ना-इत्तिफ़ाक़ी) करोगे तो (बच्चे को) उस के (बाप के) कहने से कोई और औरत दूध पिलाएगी। (६) वुसूअत वाले को अपनी वुसूअत के मुताबिक़ खर्च करना चाहिए और जिस की रोज़ी में तंगी हो, वह जितना खुदा ने उस को दिया है, उस के मुवाफ़क़ खर्च करे। खुदा किसी को तकलीफ़ नहीं देता, मगर उसी के मुताबिक़ जो उस को दिया है और खुदा बहुत जल्द तंगी के वाद कुशादगी बरूशेगा। (७)★

और बहुत-सी बस्तियों (के रहने वालों) ने अपने परवरदिगारं और उस के पैग़म्बरों के हुक्मों से सरकशी की, तो हम ने उन को सलूत हिसाब में पकड़ में लिया और उन पर (ऐसा) अज़ाब नाज़िल किया, जो न देखा था, न सुना। (८) सो उन्होंने ने अपने कामों की सज़ा का मज़ा चख़ लिया और उन का अंजाम नुक़सान ही तो था। (९) खुदा ने उन के लिए सलूत अज़ाब तैयार कर रखा है, तो ऐ अक्ल वाले! जो ईमान लाए हो, खुदा से डरो। खुदा ने तुम्हारे पास नसीहत (की किताब) भेजी है। (१०) (और अपने) पैग़म्बर (भी भेजे हैं) जो तुम्हारे सामने खुदा की खुली मतलब वाली आयतें पढ़ते हैं, ताकि जो लोग ईमान लाए और नेक अमल करते रहे हैं, उन को अंधेरे से निकाल कर रोशनी में ले आएँ और जो शरूअ ईमान लाएगा और नेक अमल करेगा, उन को बहिश्त के बाग़ों में दाख़िल करेगा, जिन के नीचे नहरें बह रही हैं, हमेशा-हमेशा उन में रहेंगे। उनको

अल्लाहुल्लजी ख-ल-क सब्-अ समावातिव-व मिनल् - अजि मिस - लहुन-न
 य-त-न-ज-लुल्-अम्ह बैनहुन-न लितअ-लमू अन्नल्ला-ह अला कुल्लि शैडन्
 कदीरुब्-व अन्नल्ला-ह कद् अहा - त बिकुल्लि शैडन् जिल्मा ★ (१२)

६६ सूरतुतहरीमि १०७

(मदनी) इस सूरः में अरबी के ११२४ अक्षर,
 २४३ शब्द, १२ आयतें और २ हकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम •

या अय्युहन्नबिय्यु लि-म तुह्रिरमु मा

अ - हल्लल्लाहु ल-क ८ तव्वगी मद्-जा-त

अज्वाजि - क ७ वल्लाहु गफूर - रहीम

(१) कद् फ-र-अल्लाहु लकुम् तहिल्ल-त

ऐमानिकुम् ८ वल्लाहु मौलाकुम् ८ व

हुवल्-अलीमुल् - हकीम (२) व इज्

असरन्नबिय्यु इला बअ - जि अज्वाजिही

हदीसन् ८ फ-लम्मा नब्ब - अत् बिही व

अम्-ह-रहुल्लाहु अलैहि अरं-फ बअ-ज्जह व अज्-र-ज्ज अम्-बअ - जिन् ८ फ-

लम्मा नब्ब-अहा बिही कालत् मन् अम्ब-अ-क हाजा ७ काल नब्ब-अनि-

यल्-अलीमुल्-खबीर (३) इन् ततूबा इलल्लाहि फ-कद् सु-गात् कुल्लुबुकुमा

व इन् तज्जाहरा अलैहि फ-इन्नल्ला-ह हु-व मौलाहु व जिबरीलु व सालिहुल्-मुअ्मिनी-न

वलमलाइकतु बअ - द जालि - क अहीर (४) असा रब्बुहु इन्

तल्ल-ककुन्-न अय्युब्दि-लहु अज्-वाजन् खैरम्-मिन्कुन-न मुस्लिमातिम्-मुअ्मिनातिन्

कानितातिन् ता-इबातिन् आबिदातिन् साइहातिन् सय्यिबातिव-व अबकारा (५)



खुदा ने खूब रोजी दी है। (११) खुदा ही तो है, जिस ने सात आसमान पैदा किए और बंसी ही ज़मीन, उन में (खुदा के) हुक्म उतरते रहते हैं, ताकि तुम लोग जान लो कि खुदा हर चीज़ पर कुदरत रखता है और यह कि खुदा अपने इल्म से हर चीज़ पर एहाता किए हुए है। (१२)★

६६ सूर: तहरीम १०७

सूर: तहरीम मदनी है। इस में बारह आयतें और दो रकूअ हैं।

शुरू खुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

ऐ पैगम्बर ! जो चीज़ खुदा ने तुम्हारे लिए जायज़ की है, तुम उस से किनाराकशी क्यों करते हो ? (क्या इस से) अपनी बीवियों की खुशनुदी चाहते हो ? और खुदा बरूशने वाला मेहरबान है। (१) खुदा ने तुम लोगों के लिए तुम्हारी क़स्मों का कफ़ारा मुकर्रर कर दिया है और खुदा ही तुम्हारा कारसाज़ है और वह जानने वाला (और) हिक्मत वाला है। (२) और (याद करो) जब पैगम्बर ने अपनी एक बीवी से एक भेद की बात कही, तो (उस ने दूसरी को बता दी) जब उस ने उस को खोल दिया और खुदा ने इस (हाल) से पैगम्बर को आगाह कर दिया, तो पैगम्बर ने (इन बीवी को वह बात) कुछ तो बतायी और कुछ न बतायी, तो जब वह उन को बतायी, तो पूछने लगी कि आप को यह किस ने बताया ? उन्होंने कहा कि मुझे उस ने बताया है, जो जानने वाला खबरदार है। (३) अगर तुम दोनों खुदा के आगे तौबा करो, (तो बेहतर है, क्योंकि) तुम्हारे दिल टेढ़े हो गये हैं और अगर पैगम्बर (की तकलीफ़) पर आपस में मदद करोगी, तो खुदा और ज़िन्नल और नेक मुसलमान उन के हामी और दोस्तदार हैं और इन के अलावा (और) फ़रिश्ते भी मददगार हैं। (४) और पैगम्बर तुम को तलाक़ दे दें तो अज़ब नहीं कि उन का परवरदिगार तुम्हारे बदले उन को तुम से बेहतर बीवियां दे दे, मुसलमान, ईमान वालियां, फ़रमांबरदार, तौबा करने वालियां, इबादत गुज़ार, रोज़ा रखने वालियां, बिन शौहर और कुवारियां, (५) मोमिनो ! अपने आप को

१. कहते हैं आंहुजरत ने अपनी बीवी उम्मुल मोमिनोन हज़रत ज़ैनब के पास शहद पी लिया, जब आप हज़रत आइशा और हज़रत हफ़सा रज़ि० के पास आए तो उन दोनों ने जैसा कि पहले सलाह कर ली थी, आप से कहा कि आप के मुंह से बू आती है। आप को बू से सख़्त नफ़रत थी, तो आप ने फ़रमाया कि मैं आगे कभी शहद नहीं पियूंगा। कुछ कहते हैं कि हज़रत हफ़सा को सुग करने के लिए आप ने मारिया क़िन्तिया को, जो आप की हरम और आप के साहबज़ादे इब्नाहीम की वालिदा थीं, अपने ऊपर हराम कर लिया था, तब यह आयत उतरी।

२. हलाल चीज़ को अपने ऊपर हराम कर लेना, गोया बुरी बात पर क़सम खाना है, तो जो कफ़ारा क़सम तोड़ बालने का है, वही हलाल चीज़ को अपने ऊपर हराम कर के फिर हलाल कर लेने का है और क़सम तोड़ने का कफ़ारा सूर: माइदा में ज़िक्र किया जा चुका है।

३. आंहुजरत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मारिया को अपने ऊपर हराम कर लिया तो हज़रत हफ़सा से फ़रमाया कि यह हाल किसी से बयान न करना। हफ़सा और आइशा रज़ि० में बड़ा मेल था। उन्होंने इस को हज़रत आइशा पर ज़ाहिर कर दिया। अल्लाह तआला ने इस हाल से आंहुजरत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मुतला फ़रमाया।

४. सथिब (बिन शौहर) उस औरत को कहते हैं, जो ब्याह हो जाने के बाद बे-शौहर हो गयी हो।

और अपने घर वालों को (जहन्नम की) आग से बचाओ, जिस का ईंधन आदमी और पत्थर हैं और जिस पर तुंदलू और सलत मिजाज फ़रिश्ते (मुकरर) हैं जो इशाद खुदा उन को करमाता है, उस की ना-करमानी नहीं करते और जो हुक्म उन को मिलता है, उसे बजा लाते हैं। (६) काफ़िरो! आज बहाने मत बनाओ। जो अमल तुम किया करते हो, उन्हीं का तुम को बदला दिया जाएगा। (७) ★

मोमिनो! खुदा के आगे साफ़ दिल से तौबा करो, उम्मीद है कि वह तुम्हारे गुनाह तुमसे दूर कर देगा और तुम को बहिश्त के बाग़ों में, जिन के नीचे नहरें बह रही हैं, दाख़िल करेगा, उस दिन खुदा पैग़म्बर को और उन लोगों को, जो उन के साथ ईमान लाए हैं, रसवा नहीं करेगा, (बल्कि) उन का नूर (ईमान) उन के आगे और दाहिनी तरफ़ (रोशनी करता हुआ) चल रहा होगा और वे खुदा से इत्तिजा करेंगे कि ऐ परवरदिगार! हमारा नूर हमारे लिए पूरा कर और हमें माफ़ फ़रमा। बेशक खुदा हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है। (८) ऐ पैग़म्बर! काफ़िरो और मुनाफ़िक़ों से लड़ो और उन पर सलती करो। उन का ठिकाना दोज़ख़ है और वह बहुत बुरी जगह है। (९) खुदा ने काफ़िरो के लिए नूह की बीबी और लूत की बीबी की मिसाल बयान फ़रमायी है॥ दोनों हमारे दो नेक बन्दों के घर में थीं और दोनों ने उन की ख़ियानत की तो वे खुदा के मुक़ाबले में उन औरतों के कुछ भी काम न आए और उन को हुक्म दिया गया कि और दाख़िल होने वालों के साथ तुम भी दोज़ख़ में दाख़िल हो जाओ। (१०) और मोमिनों के लिए (एक) मिसाल (तो) फ़िऔन की बीबी की बयान फ़रमायी कि उस ने खुदा से इत्तिजा की कि ऐ मेरे परवरदिगार! मेरे लिए बहिश्त में अपने पास एक घर बना और मुझे और उसके आमाल से निजात बरक़त और ज़ालिम लोगों के हाथ से मुझ को मुल्लिसी अता फ़रमा। (११) और (दूसरी) इम्रान की बेटी मरयम की, जिन्होंने अपनी शर्मगाह को बचाए रखा तो हम ने उस में अपनी रूह फूंक दी और वह अपने परवरदिगार के कलाम और उस की किताबों को सच्चा समझती थीं और फ़रमांबरदारों में से थीं। (१२) ★

उन्तीसवां पारः तबा-र-कल्लजी

६७ सूरतुल्-मुल्कि ७७

(मक्की) इस सूरः में अरबी के १३५६ अक्षर, ३३५ शब्द, ३० आयतें और २ रकूअ हैं ।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

तबा - र - कल्लजी बियदिहिल् - मुल्कु व हु-व अला कुल्लि शैइन् कबीर ॥

(१) अल्लजी ख-ल-कल् - भौ-त वल्हया-त लि-यबलु-व-कुम् अय्युकुम् अह्सनु
अ-म-लन् ॥ व हुवल्-अजीजुल्-गफूर ॥ (२) अल्लजी ख - ल - क सब - अ

समावातिन् तिबाकन् ॥ मा तरा फी खल्किर्रह्मानि मिन् तफावतिन् ॥
फर्रजिअिल् - ब-स-र ॥ हल् तरा मिन् फुत्तुर (३) सुम्मर्रजिअिल् - ब-स-र

करतैनि यन्कलिब् इलैकल् - ब-सर खासिअव्व-व हु-व हसीर (४) व ल-कद् जय्यन्नस्समाअद्-

दुन्या बिमसाबी-ह व ज-अल्नाहा रजूमल्-लिशशयातीनि व अअ-तद्ना लहुम् अजाबस्सअीर

(५) व लिल्लजी-न क-फ-रू बिरब्बिहिम् अजाबु जहन्न-म ॥ व बिअसल्-मसीर (६) इ-जा

उल्कू फ्रीहा समिअू लहा शहोक्व-व हि-य तफूर ॥ (७) तकादु त-मय्यजु

मिनल्यजि ॥ कुल्लमा उल्कि-य फ्रीहा फ्रीजुन् स-अ-लहुम् ख-ज-नतुहा अ-ल-म् यअतिकुम्

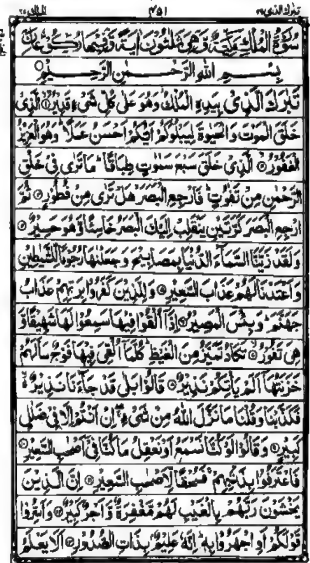
नजीर (८) कालू बला कद् जा-अना नजीरु ॥ फ-कज्जबना व कुल्ना मा

नज्ज-लल्लाहु मिन् शैइन् इन् अन्तुम् इल्ला फी जलालिन् कबीर

(९) व कालू लो कुन्ना नस्मअू औ नअ-किलु मा कुन्ना फी अस्हाबिस्सअीर

(१०) फअ-त-रफू बिजम्बिहिम् ॥ फसुहकल - लि-अस्हाबिस् - सअीर (११) इन्नल्लजी-न यरुशी-न रब्बहुम् बिलौबि लहुम् मगफि-र-नु व-व अजरुन् कबीर (१२) व

असिरू कीलकुम् अविज-हरू बिही ॥ इन्नहू अलीमुम् - बिजातिस्सुदूर (१३)



नज्ज-लल्लाहु मिन् शैइन् इन् अन्तुम् इल्ला फी जलालिन् कबीर

६७ सूर: मुल्क ७७

सूर: मुल्क मन्की है, इस में तीस आयतें और दो रकूअ हैं।

सुरू खुदा का नाम लेकर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

वह (खुदा) जिस के हाथ में बादशाही है, बड़ी बरकत वाला है और वह हर चीज पर कुदरत रखता है। (१) उसी ने मौत और ज़िन्दगी को पैदा किया, ताकि तुम्हारी आजमाइश करे कि तुम में कौन अच्छे काम करता है और वह ज़बरदस्त (और) बल्लशने वाला है। (२) उस ने सात आसमान ऊपर तले बनाए। (ऐ देखने वाले!) क्या तू (खुदा-ए-) रहमान की कायनात में कुछ कमी देखता है? ज़रा आंख उठा कर देख, भला तुझ को (आसमान में) कोई दराड़ नज़र आता है। (३) फिर दोबारा (तीसरी बार) नज़र कर, तो नज़र (हर बार) तेरे पास नाकाम और थक कर लौट आएगी। (४) और हम ने करीब के आसमान को (तारों के) चिरायों से जीनत दी और उन को शैतान के मारने का आला बनाया और उनके लिए दहकती आग का अज़ाब तैयार कर रखा है। (५) और जिन लोगों ने अपने परवरदिगार से इन्कार किया, उन के लिए जहन्नम का अज़ाब है और वह बुरा ठिकाना है। (६) जब वे उस में डाले जाएंगे, तो उस का चीखना-चिल्लाना सुनेंगे और वह जोश मार रही होगी। (७) गोया मारे जोश के फट पड़ेगी। जब उस में उन की जमाअत डाली जाएगी, तो दोज़ख के दारोगा उन से पूछेंगे, तुम्हारे पास कोई हिदायत करने वाला नहीं आया था? (८) वे कहेंगे, क्यों नहीं, ज़रूर हिदायत करने वाला आया था, लेकिन हम ने उस को झुठला दिया और कहा कि खुदा ने तो कोई चीज़ नाज़िल ही नहीं की। तुम तो बड़ी गलती में (पड़े हुए) हो। (९) और कहेंगे, अगर हम सुनते या समझते होते तो दोज़खियों में न होते, (१०) पस वे अपने गुनाहों का इक्करार कर लेंगे, सो दोज़खियों के लिए (खुदा की रहमत से) दूरी है। (११) (और) जो लोग बिना देखे अपने परवरदिगार से डरते हैं, उन के लिए बल्लिश और बड़ा बदला है। (१२) और तुम (लोग) बात छिपी कहो या जाहिर। वह दिल के भेदों तक को जानता

है। (१३) भला जिस ने पैदा किया, वह बे-खबर है? वह तो छिपी बातों का जानने वाला और (हर चीज से) आगाह है। (१४) ★

वही तो है जिस ने तुम्हारे लिए ज़मीन को नर्म किया, तो उस की राहों में चलो-फिरो और खुदा की (दी हुई) रोज़ी खाओ और (तुम को) उसी के पास (क़ब्रों से) निकल कर जाना है। (१५) क्या तुम उस से जो आसमान में है, बे-ख़ौफ़ हो कि तुम को ज़मीन में धंसा दे और वह उस वक़्त हरकत करने लगे। (१६) क्या तुम उस से जो आसमान में है, निडर हो कि तुम पर कंकड़ भरी हवा छोड़ दे, सो तुम बहुत जल्द जान लोगे कि मेरा डराना कैसा है। (१७) और जो लोग इन से पहले थे, उन्होंने ने झुठलाया था, सो (देख लो कि) मेरा कैसा अज़ाब हुआ? (१८) क्या उन्होंने अपने सरों पर उड़ते जानवरों को नहीं देखा जो परों को फैलाए रहते हैं और उन को सुकेड़ भी लेते हैं? खुदा के सिवा उन्हें कोई थाम नहीं सकता। बेशक वह हर चीज को देख रहा है। (१९) भला ऐसा कौन है, जो तुम्हारी फ़ौज हो कर खुदा के सिवा तुम्हारी मदद कर सके। काफ़िर तो घोखे में हैं। (२०) भला अगर वह अपनी रोज़ी बन्द कर ले, तो कौन है जो तुम को रोज़ी दे। लेकिन ये सरकशी और नफ़रत में फंसे हुए हैं। (२१) भला जो शरूस चलता हुआ मुंह के बल गिर पड़ता है, वह सीधे रास्ते पर है या वह जो सीधे रास्ते पर बराबर चल रहा हो? (२२) वह खुदा ही तो है, जिस ने तुम को पैदा किया और तुम्हारे कान और आंखें और दिल बनाए, (मगर) तुम कम एहसान मानते हो। (२३) कह दो कि वही है, जिस ने तुम को ज़मीन में फैलाया और उसी के सामने तुम जमा किए जाओगे। (२४) और काफ़िर कहते हैं कि अगर तुम सच्चे हो तो यह धमकी कब (पूरी) होगी? (२५) कह दो कि इस का इल्म खुदा ही को है और मैं तो खोल-खोल कर डर सुना देने वाला हूं। (२६) सो जब वे देख लेंगे कि वह (वायदा) करीब आ गया, तो काफ़िरों के मुंह बुरे हो जाएंगे और (उन से) कहा जाएगा कि यह वही है जिस की तुम स्वाहिश करते थे। (२७) कहो कि भला देखो तो अगर खुदा मुझ को और मेरे साथियों को हलाक कर दे या हम पर मेहरबानी करे, तो कौन है जो काफ़िरों को दुख देने वाले अज़ाब से पनाह दे? (२८) कह दो

कुल् हुवरंह-मानु आमन्ना बिही व अलैहि त-वकलना ८ फ-स-तअ-ल-मून मन्
हु-व फी जलालिम् - मुबीन (२६) कुल् अ-र-ऐतुम् इन् अस्व-ह
मा-उकुम् गौरल् फ-मय्यअ-तीकुम् बिमाइम् - मजीन * (३०)

६८ सूरतुल् - कलमि २

(मक्की) इस सूर- में अरबी के १२६५ अक्षर,
३०६ शब्द, ५२ आयतें और २ हकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

नून् वल्क-लमि व मा यस्तुरून् ॥

(१) मा अन-त बिनिअ-मति रब्बि-क
बिमज्जून ८ (२) व इन्-न ल-क
ल-अजूरन् गै-र ममनून ८ (३) व इन्न-क
ल-अला खुलुकिन् अजीम (४) फ-स-तुब्सिर
व युब्सिरून् ॥ (५) बि-अय्यिकुमुल्-
मफतून (६) इन्-न रब्ब-क हु-व अअ-लमु
बिमन् जल-ल अन् सबीलही ८ व हु-व
अअ-लमु बिल्मुह-तदीन (७) फला तुतिअिल्-
मुकज्जिबीन (८) वदू ली तुदहिनु
फयुदहिनून (९) बला तुतिअ् कुल्-ल
हल्लाफिम् - महीन ॥ (१०)



हम्माजिम् - मशशाइम् - बिनमीमिम्-॥

(११) -मन्नाअिल् - लिल्लैरि मुअ-तदिन् असीम ॥ (१२) अतुल्लिम्-
बअ-द जालि-क जनीम ॥ (१३) अन् कान जा मालिब-व बनीन ॥ (१४)
इजा तुत्ला अलैहि आयातुना काल असातीरुल् - अब्वलीन (१५) स-नसिमुह
अलल् - खुरतूम (१६) इन्ना बलौनाहुम् कमा बलौना अस्हाबल् - जन्नति
इज् अक्सम् ल-यसुरिमुन्नहा मुस्बिहीन ॥ (१७) व ला यस्-तप्-नून (१८)
फ-ता-फ अलैहा ताइफुम् - मिररब्बि-क व हुम् नाइमून (१९) फ-अस्-ब-हल्
कस्सरीम ॥ (२०) फ-तनादो मुस्बिहीन ॥ (२१) अनिशदू अला
हसिकुम् इन् कुन्तुम् सारिमीन (२२) फन-त-लकू व हुम्
य-त-खाफतून ॥ (२३) अल्ला यदखुलन्नहल् - यो-म अलैकुम्
मिस्कीन ॥ (२४) व गदो अला हरदिन् कादिरीन (२५)

कि वह (जो खुदा-ए-रहमान है) हम उसी पर ईमान लाए और उसी पर भरोसा रखते हैं। तुम को जल्द मालूम हो जाएगा कि खुली गुमराही में कौन पड़ रहा था। (२६) कहो कि भला देखो तो, अगर तुम्हारा पानी (जो तुम पीते हो और बरतते हो) शुष्क हो जाए तो (खुदा के सिवा) कौन है जो तुम्हारे लिए भीठे पानी का चश्मा बहा लाए ? (३०) ★

६८ सूर: कलम २

सूर: कलम मक्की है। इस में ५२ आयतें और दो हकूअ है।

शुरू खुदा का नाम लेकर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

नून, कलम की और जो (कलम वाले) लिखते हैं, उन की कसम, (१) कि (ऐ मुहम्मद!) तुम अपने परवरदिगार के फ़जल से दीवाने नहीं हो, (२) और तुम्हारे लिए बे-इतिहा बदला है, (३) और तुम्हारे अस्लाक बड़े (बुलंद) हैं, (४) सो बहुत जल्द तुम भी देख लोगे और ये (काफ़िर) भी देख लेंगे, (५) कि तुम में से कौन दीवाना है। (६) तुम्हारा परवरदिगार उस को भी खूब जानता है, जो उस के रास्ते से भटक गया और उन को भी खूब जानता है, जो सीधे रास्ते पर चल रहे हैं, (७) तो तुम झुठलाने वालों का कहा न मानना। (८) ये लोग चाहते हैं कि तुम नमी अस्तिथार करो, तो ये भी नर्म हो जाएं, (९) और किसी ऐसे शरस के कहे में न आ जाना, जो बहुत कस्में खाने वाला, जलील औकात है, (१०) तानों भरे इशारे करने वाला, चुगलियां लिए फिरने वाला, (११) माल में बुरूल करने वाला, हृद से बढ़ा हुआ बद-कार, (१२) सल्लत मिज़ाज और इस के अलावा बद-जात है, (१३) इस वजह से कि माल और बेटे रखता है, (१४) जब उस को हमारी आयतें पढ़ कर सुनायी जाती हैं, तो कहता है कि ये अंगले लोगों की कहानियां हैं, (१५) हम बहुत जल्द उस की नाक पर दाग लगाएंगे। (१६) हम ने उन लोगों की इसी तरह आजमाइश की है, जिस तरह बाग वालों की आजमाइश की थी, जब उन्होंने ने कस्में खा-खा कर कहा कि सुबह होते-होते हम इस का मेवा तोड़ लेंगे। (१७) और इन्शाअल्लाह न कहा, (१८) सो वे अभी सो रहे थे कि तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से (रातों-रात) उस पर एक आफ़त फिर गयी, (१९) तो वह ऐसा हो गया जैसे कटी हुई खेती। (२०) जब सुबह हुई तो वे लोग एक दूसरे को पुकारने लगे, (२१) कि अगर तुम को काटना है तो अपनी खेती पर सवेरे ही जा पहुंचो, (२२) तो वे चल पड़े और आपस में चुपके-चुपके कहते जाते थे, (२३) कि आज यहां तुम्हारे पास कोई फ़कीर न आने पाये, (२४) और कोशिश के साथ सवेरे ही जा पहुंचे (गोया खेती पर) कुदरत रखते हैं) (२५) जब बाग को

फ-लम्मा रओहा कालू इन्ना लज्जाल्लून ॥ (२६) बल् नहनु महूमून
(२७) का-ल ओसतुहुम् अ-लम् अकुल् लकुम् लौला तुसब्विहून (२८) कालू
सुवहा-न रब्विना इन्ना कुन्ना आलिमीन (२९) फ-अक्-ब-ल बअ-जुहुम् अला
बअ-जिज्य-त-लावमून (३०) कालू यावेलना इन्ना कुन्ना तागीन (३१)

असा रब्वुना अय्युब्दि - लना खरम्मिन्हा
इन्ना इला रब्विना रागिबून (३२)

कजालिकल् - अजाबु ७ व ल - अजाबुल्-
आखिरति अकबरु लो कानू यअ-लमून
★ (३३) इन्-न लिम्मुत्तकी-न अिन्-द
रब्विहिम जन्नातिन्नजीम (३४)

अ-फ-नज्अलुल् - मुस्-लिमी - न कल्मुज्रिमीन
(३५) मा लकुम् कै-फ तहकुमून

(३६) अम लकुम् किताबुन् फ्रीहि
तदरसून ॥ (३७) इन्-न लकुम् फ्रीहि

लमा त-खय्यरून ८ (३८) अम लकुम्
ऐमानुन् अलैना बालि-ग-तुन् इला यौमिल-

क्रियामति ॥ इन्-न लकुम् लमा
तहकुमून ८ (३९) सल् - हुम अय्युहुम

बिजालि - क जजीम ९ (४०) अम लहुम् शु - र-काउं ९ फल् - यज्तु

बि - शु-र-काइ - हिम इन् कानू सादिकीन (४१) यौ-म युक्शफु अन साकिव्-व
युद्ओ - न इलस्सुजूदि फला यस्ततीझून ॥ (४२) खाशि - अ - तुन् अब्साहरुम

तहंकहुम जिल्लतुन् ७ व ऊद कानू युद्ओ-न इलस्सुजूदि व हुम सालिमून (४३)
फ - अरनी व मय्युकज्जिबु बिहाजल् - हदीसि ७ स-नस्तदरिजुहुम मिन हैषु

ला यअ-लमून ॥ (४४) व उमली लहुम् ७ इन्-न कैदी मतीन (४५)
अम् तस्-अलुहुम् अज-रन् फहुम् मिम् - मग्-रमिम् - मुस्कलून (४६) अम् अिन्द-

हुमुल-गैबु फहुम् यक्तुबून (४७) फस्-बिर लिहकुमि रब्वि-क व ला तकुन्
क-साहिबिल् - हूति इज् नादा व हु - व मक्जूम ७ (४८)

فَوَيْلٌ لِلَّذِينَ كَفَرُوا مَا أَهْلَكْنَا الْقَوْمَ الَّذِينَ كَفَرُوا وَقُلْنَا لَهُمْ كَلِمَةً يَسْمَعُونَهَا
فَأَنصَبْنَاهُمْ فِيهَا الْحَصَىٰ أَفَصَبْنَاهُمْ فَيَبْقَوْنَ فِيهَا كَلِبًا إِلَّا نَجَّيْنَا الَّذِينَ آمَنُوا مِنْهُ
وَأَنصَبْنَاهُمْ فِيهَا الْحَصَىٰ أَفَصَبْنَاهُمْ فَيَبْقَوْنَ فِيهَا كَلِبًا إِلَّا نَجَّيْنَا الَّذِينَ آمَنُوا مِنْهُ
وَأَنصَبْنَاهُمْ فِيهَا الْحَصَىٰ أَفَصَبْنَاهُمْ فَيَبْقَوْنَ فِيهَا كَلِبًا إِلَّا نَجَّيْنَا الَّذِينَ آمَنُوا مِنْهُ
وَأَنصَبْنَاهُمْ فِيهَا الْحَصَىٰ أَفَصَبْنَاهُمْ فَيَبْقَوْنَ فِيهَا كَلِبًا إِلَّا نَجَّيْنَا الَّذِينَ آمَنُوا مِنْهُ
وَأَنصَبْنَاهُمْ فِيهَا الْحَصَىٰ أَفَصَبْنَاهُمْ فَيَبْقَوْنَ فِيهَا كَلِبًا إِلَّا نَجَّيْنَا الَّذِينَ آمَنُوا مِنْهُ
وَأَنصَبْنَاهُمْ فِيهَا الْحَصَىٰ أَفَصَبْنَاهُمْ فَيَبْقَوْنَ فِيهَا كَلِبًا إِلَّا نَجَّيْنَا الَّذِينَ آمَنُوا مِنْهُ
وَأَنصَبْنَاهُمْ فِيهَا الْحَصَىٰ أَفَصَبْنَاهُمْ فَيَبْقَوْنَ فِيهَا كَلِبًا إِلَّا نَجَّيْنَا الَّذِينَ آمَنُوا مِنْهُ
وَأَنصَبْنَاهُمْ فِيهَا الْحَصَىٰ أَفَصَبْنَاهُمْ فَيَبْقَوْنَ فِيهَا كَلِبًا إِلَّا نَجَّيْنَا الَّذِينَ آمَنُوا مِنْهُ
وَأَنصَبْنَاهُمْ فِيهَا الْحَصَىٰ أَفَصَبْنَاهُمْ فَيَبْقَوْنَ فِيهَا كَلِبًا إِلَّا نَجَّيْنَا الَّذِينَ آمَنُوا مِنْهُ

देखा तो (वीरान,) कहने लगे कि हम रास्ता भूल गये हैं। (२६) नहीं, बल्कि हम (बिगड़ी क्रिस्मत के) बे-नसीब हैं। (२७) एक जो उनमें से अकलमंद था, बोला, क्या मैं ने तुम से नहीं कहा था, कि तुम तस्बीह क्यों नहीं करते? (२८) (तब) वे कहने कि हमारा परवरदिगार पाक है। बेशक हम ही कुसूरवार थे। (२९) फिर लगे एक दूसरे को आमने-सामने मलामत करने, (३०) कहने लगे, हाय शामत ! हम ही हृद से बढ़ गये थे। (३१) उम्मीद है कि हमारा परवरदिगार इस के बदले में हमें इस से बेहतर बाग इनायत करे, हम अपने परवरदिगार की तरफ रुजू आ लाते हैं। (३२) देखो अजाब यों होता है और आखिरत का अजाब इस से कहीं बँद कर है काश ये लोग जानते होते। (३३) ★

परहेजगारों के लिए उन के परवरदिगार के यहां नेमत के बाग हैं। (३४) क्या हम फरमा-बरदारों को नाफरमानों की तरह (नेमतों से महलूम) कर देंगे? (३५) तुम्हें क्या हो गया है, कंसी तज्जीबें करते हो? (३६) क्या तुम्हारे पास कोई किताब है जिस में (यह) पढ़ते हो, (३७) कि जो चीज तुम पसन्द करोगे, वह तुम को जरूर मिलेगी, (३८) या तुम ने हम से क्रम में ले रखी है, जो क्रियामत के दिन तक चली जाएगी कि जिस चीज का तुम हुक्म करोगे, वह तुम्हारे लिए हाज़िर होगी, (३९) उन से पूछो कि इन में से इस का कौन जिम्मा लेता है? (४०) क्या (इस कौल में) उन के और भी शरीक हैं? अगर ये सच्चे हैं, तो अपने शरीकों को ला सामने करें, (४१) जिस दिन पिडुली से कपड़ा उठा दिया जाएगा और कुफ़रार सज्दे के लिए बुलाए जाएंगे, तो वे सज्दा न कर सकेंगे। (४२) उन की आंखें झुकी हुई होंगी और उन पर जिल्लत छा रही होगी, हालांकि पहले (उस वक़्त) सज्दे के लिए बुलाए जाते थे, जब कि सही व सालिम थे। (४३) तो मुझ को इस कलाम के झुठलाने वालों से समझ लेने दो। हम उन को धीरे-धीरे ऐसे तरीक़े से पकड़ेंगे कि उन को खबर भी न होगी। (४४) और मैं उन को मोहलत दिए जाता हूँ, मेरी तद्बीर मजबूत है। (४५) क्या तुम उन से कुछ अज्र मांगते हो कि उन पर जुमनि का बोझ पड़ रहा है, (४६) या उन के पास शैब की खबर है कि (उसे) निश्चते जाते हैं, (४७) तो अपने परवरदिगार के हुक्म के इतिज़ार में सन्न किए रहो और मछली का (लुकमा होने) वाले (यूनस) की तरह न होना कि उन्होंने ने (खुदा को) पुकारा और वह (घम व)

१. पिडुली से कपड़ा उठा देने से मुराद उस वक़्त की तकलीफ़ है। इसी वास्ते हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० कहते हैं कि एक बड़ी कड़ी घड़ी होगी।

लोला अन् तदा-र-कहू निअ-मतुम् - मिरंन्विही लनुबि-ज बिल्अराइ व हु-व
मज्मूम (४६) फज्तबाहु रब्बुह फ-ज-अ-लूह मिनस्सालिहीन (५०) व
इय्याकादुलजी-न क-फरू लयुज्लिकू-न-क बि-अब्सारिहिम लम्मा समिअुज्जिक्-र व
यकूलू-न इन्नहू ल-मज्नुन ॥ (५१) व मा हु-व इल्ला जिक्ल-
लिल्आलमीन ★ ● (५२)

६६ सूरतुल्-हाक्कति ७८

(मक्की) इस सूर: में अरबी के ११३४ अक्षर,

२६० शब्द, ५२ आयतें और २ स्कूज हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम ●

अल्हाक्कतु ॥ (१) मल्हाक्क:

(२) व मा अद्रा-क मल्हाक्क:

(३) कज्ज-बत् समूदु व आदुम्-

बिल्कारिअ: (४) फ-अम्मा समूदु

फउह्लिकू बित्तासिय: (५) व अम्मा

आदुन् अउह्लिकू बिरीहिन् सरसरिन्

आतियतिन् ॥ (६) सरख-रहा अलैहिम्

सब-अ लयालिद-व समानि-य-त् अय्यामिन्

हुसूमन् ॥ फ-त-रल्-कौ-म फ्रीहा सर्आ ॥ क-अन्तहुम् अज्-जाजु नखलिन् खाविय:

(७) फ-हल् तरा लहुम् मिम् - बकिय: (८) व जा-अ फिर्ओनु व मन्

कब्-लहू वल् - मुअ-तफिकातु बिल्खातिअ: (९) फ-असौ रसू-ल रब्बिहिम्

फ-अ-ख-ज-हुम् अख्-ज-तर्-राबिय: (१०) इन्ना लम्मा तगाल्माउ ह-मल्नाकुम्

फिलजारिय: ॥ (११) लिनज्-अ-लहा लकुम् तज्कि-र-तुव-व तअि-यहा

उज्जुन्वाविय: (१२) फइवा नुफि - ख फिस्सूरि नफ्-खतुव्वाहिदतुव-

(१३) -व हुमि-लतिल - अर्जु वल्जिबालु फ-दुक्कता दक्कतुव्वाहि-द-तुन्

(१४) फयौमइजिब्ब-क-अतिल - वाकिअ: ॥ (१५) वन्-शक्कतिस - समाउ

फहि - य यौमइजिब्बाहि - यतुव-॥ (१६) -वल्म-लकु अला अर्जाइहा

व यहिमलु अर्-श रब्बि - क फौकहुम् यौमइजिन समानिय: ॥ (१७)



गुस्से में भरे हुए थे। (४८) अगर तुम्हारे परवरदिगार की मेहरबानी उन की याबरी न करती, तो वह चटयल मैदान में डाल दिए जाते और उन का हाल बुरा हो जाता। (४९) फिर परवरदिगार ने उन को चुन कर भलों में कर लिया। (५०) और काफ़िर जब (यह) नसीहत (की किताब) सुनते हैं तो यों लगते हैं कि तुम को अपनी निगाहों से फिसला देंगे और कहते हैं कि यह तो दीवाना है (५१) और (लोगो!) यह (कुरआन) दुनिया वालों के लिए नसीहत है। (५२) ★ ●



६६ सूर: हाक्का ७८

सूर: हाक्का मक्की है। इस में बावन आयतें और दो रुकअ हैं।

शुरू खुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

सचमुच होने वाली, (१) वह सचमुच होने वाली क्या है? (२) और तुम को क्या मालूम है कि वह सचमुच होने वाली क्या है? (३) (वही) खड़खड़ाने वाली, (जिस) को समूद और आद (दोनों) ने झुठलाया, (४) सो समूद तो कड़क से हलाक कर दिए गए, (५) रहे आद, उन का निहायत तेज आंधी से सत्यानाश कर दिया गया, (६) खुदा ने उस को सात रात और आठ दिन उन पर चलाए रखा, तो (ऐ मुखातब!) तू लोगों को इस में (इस तरह) डहे (और मरे) पड़े देखे, जैसे खजूरों के खोखले तने, (७) भला तू उन में से किसी को भी बाक़ी देखता है? (८) और फ़िऔन और जो लोग इस से पहले थे और वे जो उलटी बस्तियों में रहते थे, सब गुनाह के काम करते थे। (९) उन्होंने ने अपने परवरदिगार के पैगम्बर की ना-फ़रमानी की, तो खुदा ने भी उन को बड़ा सख्त पकड़ा। (१०) जब पानी बाढ़ पर आया, तो हम ने तुम (लोगों) को क़स्ती में सवार कर लिया, (११) ताकि उस को तुम्हारे लिए यादगार बनाएं और याद रखने वाले कान उसे याद रखें, (१२) तो जब सूर में एक (बार) फूँक मार दी जाएगी, (१३) और ज़मीन और पहाड़ दोनों उठा लिए जाएंगे, फिर एकबारगी तोड़-फोड़ कर बराबर कर दिए जाएंगे, (१४) तो उस दिन हो पड़ने वाली (यानी क्रियामत) हो पड़ेगी। (१५) और आसमान फट जाएगा तो वह उस दिन कमज़ोर होगा, (१६) और फरिश्ते उस के किनारों पर (उतर आएंगे) और तुम्हारे परवरदिगार के अंश को

१. यानी तुम को इस तरह धूर-धूर कर देखते हैं कि तुम डर कर फिसल जाओ, यहां यह मुराद है कि यह तुम्हें बुरी नज़र लगाना चाहते हैं, जिस के असर से खुदा ने तुम को मट्फूज़ रखा है।

उस दिन आठ फ़रिश्ते उठाए होंगे । (१७) उस दिन तुम (सब लोगों के सामने) पेश किए जाओगे और तुम्हारी कोई पोशीदा बात छिपी न रहेगी । (१८) तो जिस का (आमाल-) नामा उस के दाहिने हाथ में दिया जाएगा, वह (दूसरों से) कहेगा कि लीजिए मेरा नामा (-ए-आमाल) पढ़िए । (१९) मुझे यकीन था कि मुझ को मेरा हिसाब (-किताब) ज़रूर मिलेगा । (२०) पस वह (शरूस) मनमाने ऐश में होगा, (२१) (यानी) ऊंचे (-ऊंचे महलों के) बाग़ में, (२२) जिन के मेवे झुके हुए होंगे, (२३) जो (अमल) तुम पिछले दिनों में आगे भेज चुके हो, उस के बदले में मज्जे से खाओ और पियो । (२४) और जिस का नामा (-ए-आमाल) उस के बाएं हाथ में दिया जाएगा, वह कहेगा, ऐ काश ! मुझ को मेरा (आमाल-) नामा न दिया जाता । (२५) और मुझे मालूम न होता कि मेरा हिसाब क्या है । (२६) ऐ काश ! मौत (हमेशा-हमेशा के लिए मेरा काम) तमाम कर चुकी होती । (२७) (आज) मेरा माल मेरे कुछ भी काम न आया, (२८) (हाय !) मेरी सत्तनत खाक में मिल गयी । (२९) (हुक्म होगा कि) इसे पकड़ लो और तौक पहना दो । (३०) फिर दोज़ख़ की आग में झोंक दो, (३१) फिर जंजीर से जिस की नाप सत्तर गज है, जकड़ दो । (३२) यह न तो खुदा-ए-जल्लशानुह पर ईमान लाता था, (३३) और न फ़कीर के खाना-खिलाने पर आमादा करता था, (३४) सो आज इस का भी यहां कोई दोस्तदार नहीं, (३५) और न पीप के सिवा (उस के लिए) खाना है, (३६) जिस को गुनाहगारों के सिवा कोई नहीं खाएगा, (३७) ★

तो हम को उन चीज़ों की क्रसम, जो तुमको नज़र आती हैं । (३८) और उनकी जो नज़र नहीं आती, (३९) कि यह क़ुरआन बुलंद मतंबा फ़रिश्ते की जुबान का पैग़ाम है, (४०) और यह किसी शायर का कलाम नहीं, मगर तुम लोग बहुत ही कम ईमान लाते हो, (४१) और न किसी काहिन की बातें हैं लेकिन तुम लोग बहुत ही कम फ़िक्र करते हो । (४२) (यह तो) दुनिया के परवरदिगार का उतारा (हुआ) है । (४३) अगर यह पैग़म्बर हमारे बारे में कोई बात शूठ बना लाते, (४४) तो हम उन का दाहिना हाथ पकड़ लेते, (४५) फिर उनकी गर्दन की रग काट डालते, (४६) फिर तुम में से कोई (हमें) इस से रोकने वाला न होता । (४७) और यह (किताब) तो परहेज़-

गारों के लिए नसीहत है। (४८) और हम जानते हैं कि तुम में से कुछ इस को झुठलाने वाले हैं। (४९) साथ ही यह काफ़िरों के लिए हसरत (की वजह) है। (५०) और कुछ शक नहीं कि यह सच बात यक़ीन के क़ाबिल है। (५१) सो तुम अपने परवरदिगारे अज्ज व जल्ल के नाम की तस्बीह करते रहो। (५२) ★

७० सूर: मञ्जारिज ७६

सूर: मञ्जारिज मक्की है, इस में ४४ आयतें और दो रुकूअ हैं।

शुरू खुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

एक तलब करने वाले ने अज़ाब तलब किया, जो नाज़िल हो कर रहेगा, (१) (यानी) काफ़िरों पर (और) कोई उस को टाल न सकेगा। (२) (और वह) दर्जों के मालिक खुदा की तरफ़ से (नाज़िल होगा)। (३) जिस की तरफ़ रुहुल अमीन और फ़रिश्ते चढ़ते हैं (और) उस दिन (नाज़िल होगा) जिस का अन्दाज़ा पचास हजार वर्ष का होगा। (४) (तो तुम काफ़िरों की बातों को) होसले के साथ बर्दाश्त करते रहो। (५) वह उन लोगों की निगाहों में दूर है, (६) और हमारी नज़र में करीब, (७) जिस दिन आसमान ऐसा हो जाएगा और पिघला हुआ तांबा, (८) और पहाड़ (ऐसे), जैसे धुंकी हुई रंगीन ऊन। (९) और कोई दोस्त किसी दोस्त का पूछने वाला न होगा, (१०) (हालांकि) एक दूसरे को सामने देख रहे होंगे, (उस दिन) गुनाहगार स्वाहिश करेगा कि किसी तरह उस दिन के अज़ाब के बदले में (सब कुछ) दे दे, (यानी) अपने बेटे, (११) और अपनी बीवी और अपने भाई, (१२) और अपना ख़ानदान, जिस में वह रहता था। (१३) और जितने आदमी ज़मीन पर हैं (गरज़) सब (कुछ) दे दे और अपने आप को अज़ाब से छुड़ा ले। (१४) (लेकिन) ऐसा हरगिज़ नहीं होगा, वह भड़कती हुई आग है, (१५) ख़ाल उधेड़ डालने वाली, (१६) उन लोगों को अपनी तरफ़ बुलाएगी, जिन्होंने (दीने हक़ से) एराज़ किया और मुंह फेर लिया, (१७) और (माल) जमा किया और बन्द कर रखा। (१८) कुछ शक नहीं कि इंसान कम होसला पैदा हुआ है। (१९) जब उसे तकलीफ़ पहुँचती है, तो घबरा उठता है। (२०) और जब आराम हासिल होता है, तो बख़ील बन जाता है, (२१) मगर नमाज़ गुज़ार, (२२) जो नमाज़ की पाबन्दी करते, (और बिला-नासा पढ़ते) हैं, (२३) और जिन के माल में हिस्सा मुकर्रर है, (२४) (यानी) मांगने वाले का और न मांगने वाले का, (२५) और जो बदले के दिन को सच समझते हैं, (२६) और जो अपने परवरदिगार के अज़ाब से ख़ौफ़ रखते

१. दर्जों से भराव आसमान है, चूँकि वे दर्जा-ब-दर्जा ऊपर तले हैं, इस लिए उन के दर्जे फ़रमाया।

२. सब ज़मीन उस सब को कहते हैं जिस में चीखना-चिल्लाना, सर पटकना बतौरह न हो, इसी लिए इस का तजुमा होसले के साथ किया है।

इन्-न अजा-ब रब्बिहिम् सैर मअमून (२८) वल्लजी-न हुम् लिफ्रुजहिम्
हाफिजून ॥ (२९) इल्ला अला अज्वाजिहिम् ओ मा म-ल-कत् ऐमानुहुम्
फ-इन्नुहुम् सैर मलूमिन ८ (३०) फ-मनिब्तगा वरा-अ जालि-क फउलाइ-क
हुमुल्आदून ८ (३१) वल्लजी - न हुम् लि - अमानाति - हिम् व अहिदिहिम् राऊन

(३२) वल्लजी-न हुम् बि-शहादाति - हिम्
काइमून ॥ (३३) वल्लजी-न हुम्
अला सलातिहिम् युहाफिजून ८ (३४)
उलाइ - क फी जन्नातिम् - मुक्रमून ८ ★
(३५) फमालिल्लजी-न क-फरू कि-ब-ल-क
मुहितीन ॥ (३६) अनिल् - यमीनि व
अनिशिमालि अजीन (३७) अ-यत्मअ
कुल्लुम्रिइम् - मिन्हुम् अय्युदख-ल जन्न - त
नजीम ॥ (३८) कल्ला ८ इन्ना
ख-लक्नाहुम् मिम्मा यअ-लमून (३९) फला
उक्सिमु बिरब्बिल् - मशारिकि वलमगारिबि
इन्ना ल - क्रादिरून ॥ (४०) अला अन्
नुबद्दि - ल खैरम् - मिन्हुम् ॥ व मा नहनु
बिमस्बूकीन (४१) फ-जरहुम् यखजू व
यल्अबू हत्ता युलाकू यौमहुमुल्लजी

لَيْسَ عَذَابُ رَبِّكَ مَعْمُومًا ۖ وَالَّذِينَ هُمْ عَنْ صَلَاتِهِمْ سَاهُونَ ۚ
اَلَا عَلَىٰ اُولَٰئِكَ مَا كُنْتَ لَمَّا لُغِمَ اَلْمَلَأُ لَمَّا لُغِمَ ۚ وَالَّذِينَ هُمْ
عَنِ اتِّعَاقِ ذُرَىٰ ذٰلِكَ ۚ اُولَٰئِكَ هُمُ الْعَادُونَ ۚ وَالَّذِينَ هُمْ
عَنِ اَلْمَعِيشَةِ غٰفِلُونَ ۚ وَالَّذِينَ هُمْ يَشْرَبُونَ ۚ وَالَّذِينَ هُمْ
عَنِ اتِّعَاقِ صَلَاتِهِمْ سَاهُونَ ۚ اُولَٰئِكَ فِي عَذَابٍ
مُّكْرَمُونَ ۚ فَتَالِ الَّذِيْنَ لَكَ اِفْكٌ مِّنْ طٰغِيَةٍ ۚ عَنِ الْيَمِيْنِ
وَعَنِ الْبَقَالِ عَنِ ۚ اِطْعَمُوْهُ اَمْرًا فَنَقَمُوْهُ اَنْ يُدْعٰ اِلٰى حٰكَمٍ
يُّبَيِّنُ لَهُمْ اَلَا اَتَاٰهُمْ بِمَا يَشَاءُوْنَ ۚ فَلَا اَمْسَرَ لِرَبِّ
الشُّرَاقِ وَالْعَرَبِ اِذَا اُقْبِدُوْنَ ۚ عَلٰى اَنْ يُكَيَّلَ عَلَيْهِمْ وَلَقَدْ
وَمَا كُنْ بِمُسْتَوْفٍ ۚ فَلَقَدْ هَمُّوْا فَنُصُوْا وَنُصُوْا فَنُصُوْا
يَوْمَ الَّذِيْ يُّوْعَدُوْنَ ۚ يَوْمَ يَخْرُجُوْنَ مِنَ الْاَجْدَاثِ وَرَاٰ
كَالْهَرَمِ اِلٰى نَصْبٍ يُّوْفَوْنَ ۚ عَاشِيَةً اَبْصَارُهُمْ وَعَقْلُهُمْ
وَلَا ذٰلِكَ اِلَّا لِيُذَكِّرَ الَّذِيْنَ كَانُوْا يُوْعَدُوْنَ ۚ
يَوْمَ نُوَفِّيْكَ لَكَ رَحْمَةً ۚ اَلَا اَتَاٰهُمْ بِمَا يَشَاءُوْنَ ۚ
يَوْمَ نُوَفِّيْكَ لَكَ رَحْمَةً ۚ اَلَا اَتَاٰهُمْ بِمَا يَشَاءُوْنَ ۚ
يَوْمَ نُوَفِّيْكَ لَكَ رَحْمَةً ۚ اَلَا اَتَاٰهُمْ بِمَا يَشَاءُوْنَ ۚ

यूअदून ॥ (४२) यो - म यख - रुजू - न मिनल् - अज्दासि सिराअन्
क-अन्नहुम् इला नुसुबियूफिजून ॥ (४३) खाशि-अ-तन् अब् - सारहुम्
तर् - हकुहुम् जिल्लतुन् ८ जालिकल् - यौमुल्लजी कानू यू-अदून ★ (४४)

७१ सूरतु नूहिन् ७१

(मक्की) इस सूर. में अरबी के ६७४ अक्षर, २३१ शब्द, २८ आयतें और २ रकूअ हैं ।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

इन्ना अर्सलना नूहन् इला कौमिही अन् अन्जिर्
कौ-म-क मिन् कबलि अय्यअति - यहुम् अजाबुन् अलीम (१) क्रा-ल
या कौमि इन्नी लकुम् नजीरुम् - मुबीन ॥ (२)

है। (२७) बेसक उन के परवरविगार का अज्ञाब है ही ऐसा कि उस से बे-सौफ न हुआ जाए, (२८) और जो अपनी शर्मगाहों की हिफाजत करते हैं, (२९) मगर अपनी बीबियों या लौडियों से कि (उन के पास जाने पर) उन्हें कुछ मलामत नहीं, (३०) और जो लोग इन के सिवा और चाहते हों, वे हृद से निकल जाने वाले हैं, (३१) और जो अपनी अमानतों और इकरारों का ध्यान करते हैं, (३२) और जो अपनी गवाहियों पर कायम रहते हैं, (३३) और जो अपनी नमाज की खबर रखते हैं, (३४) यही लोग बहिश्त के बागों में इज्जत व इकराम से होंगे। (३५) ★

तो उन काफ़िरो को क्या हुआ है कि तुम्हारी तरफ़ दौड़े चले आते हैं, (३६) (और) दाएं-बाएं से गिरोह-गिरोह हो कर (जमा होते) जाते हैं। (३७) क्या उन में से हर शख्स यह उम्मीद रखता है कि नेमत के बाग में दाखिल किया जाएगा? (३८) हरगिज नहीं! हम ने उन को उस चीज से पैदा किया है, जिसे वे जानते हैं, (३९) हमें मशिरकों और मशिरबों के मालिक की कसम! कि हम ताक़त रखते हैं। (४०) (यानी) इस बात (की कुदरत है) कि उन से बेहतर लोग बदल जाएं और हम आजिज नहीं हैं। (४१) तो (ऐ पैगम्बर!) उन को बातिल में पड़े रहने और खेल लेने दो, यहां तक कि जिस दिन का उन से वायदा किया जाता है, वह उन के सामने आ मौजूद हो। (४२) उस दिन ये क़ब्रों से निकल कर (इस तरह) दौड़ेंगे जैसे (शिकारी) शिकार के जाल की तरफ़ दौड़ते हैं। (४३) उन की आंखें झुक रही होंगी और झिल्लत उन पर छा रही होगी। यही वह दिन है जिस का उन से वायदा किया जाता था। (४४) ★



७१ सूर नूह ७१

सूर: नूह मक्की है। इस में २८ आयतें और दो रुकूअ हैं।

शुरू खुदा का नाम लेकर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

हमने नूह को उन की क़ौम की तरफ़ भेजा कि इस से पहले कि उन पर दंड देने वाला अज्ञाब वाक़ेअ हो, अपनी क़ौम को हिदायत कर दो। (१) ज़न्हों ने कहा कि भाइयो! मैं तुम को खुले तौर

पर नसीहत करता हूँ, (२) कि खुदा की इबाधत करो और उससे डरो और मेरा कहा मानो, (३) वह तुम्हारे गुनाह बल्खा देगा और (मौत के) मुकर्रर वक़्त तक तुम को मोहलत अता करेगा। जब खुदा का मुकर्रर किया हुआ वक़्त आ जाता है तो देर नहीं होती, काश तुम जानते होते। (४) जब लोगों ने न माना, तो (नूह ने) खुदा से अर्ज की कि परवरदिगार ! मैं अपनी क्रोम को रात-दिन बुलाता रहा, (५) लेकिन मेरे बुलाने से वे और ज्यादा भागते रहे। (६) जब-जब मैं ने उन को बुलाया कि (तौबा करें और) तू उन को माफ़ फ़रमाए, तो उन्होंने अपने कानों में जंगलियाँ दे लीं और कपड़े ओढ़ लिए और अड़ गये और अकड़ बैठे। (७) फिर मैं उन को खुले तीर पर भी बुलाता रहा, (८) और खुले और छिपे हर तरह समझाता रहा, (९) और कहा कि अपने परवरदिगार से माफ़ी मांगो कि वह बड़ा माफ़ करने वाला है, (१०) वह तुम पर आसमान से मेंह बरसाएगा, (११) और माल और बेटों से तुम्हारी मदद फ़रमाएगा और तुम्हें बाग़ अता करेगा और (उन में) तुम्हारे लिए नहरें बहा देगा। (१२) तुम को क्या हुआ है कि तुम खुदा की अज़मत का एतकाद नहीं रखते। (१३) हालांकि उसने तुमको तरह-तरह (की हालतों) का पैदा किया है। (१४) क्या तुमने नहीं देखा कि खुदा ने सात आसमान कैसे ऊपर-तले बनाए हैं, (१५) और चांद को उन में (जमीन का) नूर बनाया है और सूरज को चिराग़ ठहराया है, (१६) और खुदा ही ने तुम को जमीन से पैदा किया है, (१७) फिर उसी में तुम्हें लौटा देगा और (उसी से) तुम को निकाल खड़ा करेगा, (१८) और खुदा ही ने जमीन को तुम्हारे लिए फ़र्श बनाया, (१९) ताकि उस के बड़े-बड़े कुशादा रास्तों में चलो-फिरो (२०)। ★

• (इस के बाद) नूह ने अर्ज की कि मेरे परवरदिगार ! ये लोग मेरे कहने पर नहीं चले और ऐसों के ताबेज़ हुए हैं, जिन को उन के माल और ओलाद ने नुक़सान के सिवा कुछ फ़ायदा नहीं दिया। (२१) और वे बड़ी-बड़ी चालें चले, (२२) और कहने लगे कि अपने मानबूदों को हरगिज़ न छोड़ना और बद् और सुबाअ और यगूस और यअूक और नल्ल को कभी न छोड़ना। (२३) (परवरदिगार !) उन्होंने बहुत लोगों को गुमराह कर दिया है, तो तू उन को और गुमराह कर

१. बद् और सुबाअ और यगूस और यअूक और नल्ल दुनों के नाम हैं।

मिममा खतीआतिहिम उग्रिकू फ - उदखिलू नारतू फ - लम् यजिदू लहुम्
मिन दूनिल्लाहि अन्सारा (२५) व काल नूहर्बि ला त-जर् अ-लल्अजि
मिनल् - काफिरीन दय्यारा (२६) इन्न-क इन् त-जर्हुम् युजिल्लू अिबा-द-क
व ला यलिदू इल्ला फाजिरन् कफफारा (२७) रबिबुफिरली व लिवालिदय-य
व लिमन् द-ख-ल बैति-य मुअमिनव-व लिल्-
मुअमिनी - न वल्मुअमिनाति ७ व ला
तखिद्विजालिमी - न इल्ला तबारा ★ (२८)

७२ सूरतुल-जिन्नि ४०

(मक्की) इस सूर. में अरबी के ११२६ अक्षर,
२८७ शब्द, २८ आयतें और २ रकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

कुल ऊहि-य इलय-य अन्नहुस्त-म-अ-न-फरुम्-
मिनल् - जिन्नि फ - कालू इन्ना समिअना
कुर - आनन् अ-ज-बय-॥ (१) -यहदी
इलरुशदि फ - आमन्ना बिही ७ व लन्
नुश-रि - क बिरबिना अ-ह-दा ॥ (२) व
अन्नहू तअला जदु रबिना मत्त-ख-ज साहि-
ब-त-व-व ला व-ल-दा ॥ (३) व अन्नहू का-न

यकूलु सफ्रीहुना अ-लल्लाहि श-त-ता ॥ (४) व अन्ना ज-नन्ना अल्लन् तकूलल्-
इन्सु वल्जिन्नु अलल्लाहि कजिबा ॥ (५) व अन्नहू का-न रिजालुम्-मिनल्-
इन्सि य-अजू-न बिरिजालिम - मिनल् - जिन्नि फजादू-हुम् र-ह-कव-॥ (६)
व अन्नहुम् अन्नू कमा अ-नन्तुम् अल्लय्यव-अ - सल्लाहु अ-ह-दा ॥ (७) व
अन्ना ल-मस्-नस्समा-अ फ-व-जदनाहा मुलि-अत् ह-र-सन् शदीद्व-व शुहुबव-॥ (८)
व अन्ना कुन्ना नक्-अदु मिन्हा मक्काजि-द लिस्समजि ७ फमय्यस्तमिअिल्-आ-न
यजिदू लहू शिहाबर् - र-स-द्व-॥ (९) व अन्ना ला नद्री अ-शरन् उरी-द
बिमन् फिल्लअजि अम् अरा-द बिहिम् रब्बुहुम् र-श-दा ॥ (१०) व अन्ना
मिन्नस्सालिह - न व मिन्ना दून जालि - क कुन्ना तराइ - क कि-द-दा ॥ (११)

فَأَنذِرُوا أَوْلِيَاءَ الَّذِينَ تُحِبُّونَ لِلَّذِينَ آمَنُوا مِنْكُمْ أَنْ يَتَذَكَّرُوا فِي الْآيَةِ وَأَنْ يَكُونُوا حُكَّامًا بَيْنَهُمْ وَاللَّهُ يَهْتَدِي الْقَوْمَ الصَّالِحِينَ وَلِلَّهِ الْآخِرَةُ وَالْأُولَىٰ وَلَئِنْ سَأَلْتُمْ عَنِ السَّاعَةِ لَوَافٍ عَلَيْكُمْ وَإِنْ سَأَلْتُمْ عَنْ نِعْمَةِ رَبِّكَ فَحَدِّثْ

कर दे। (२४) (आखिर) वे अपने गुनाहों की वजह से (पहले) दुआ दिए गए, फिर आग में डाल दिये गये, तो उन्होंने खुदा के सिवा किसी को अपना मददगार न पाया। (२५) और (फिर) नूह ने (यह) दुआ की कि मेरे परवरदिगार किसी काफिर को धरती पर बसता न रहने दे। (२६) अगर तू उन को रहने देगा, तो तेरे बन्दों को गुमराह करेगा और उन से जो औलाद होगी, वह भी बद्-कार और ना-शुक्रगुजार होगी। (२७) ऐ मेरे परवरदिगार ! मुझ को और मेरे मां-बाप को और जो ईमान ला कर मेरे घर में आए उस को और तमाम ईमान वाले मर्दों और ईमान वाली औरतों को माफ़ फ़रमा और जालिम लोगों के लिए और ज्यादा तबाही बढ़ा। (२८) ★ ●



७२ सूर: जिन्न ४०

सूर: जिन्न मक्की है, इस में २८ आयतें और दो रुकूअ हैं।

शुरू खुदा का नाम ले कर जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

(ऐ पैगम्बर ! लोगों से) कह दो कि मेरे पास वह्य आयी है कि जिन्नों की एक जमाअत ने (इस किताब को) सुना तो कहने लगे कि हम ने एक अजीब क़ुरआन सुना, (१) जो भलाई का रास्ता बताता है, सो हम उस पर ईमान ले आए और हम अपने परवरदिगार के साथ किसी को शरीक नहीं बनाएंगे। (२) और यह कि हमारे परवरदिगार की (शान की) बड़ाई बहुत बड़ी है, वह न बीवी रखता है न औलाद, (३) और यह कि हममें से कुछ बेवकूफ़ खुदा के बारे में झूठ गढ़ते हैं, (४) और हमारा (यह) ख्याल था कि इन्सान और जिन्न खुदा के बारे में झूठ नहीं बोलते, (५) और यह कि कुछ आदम की औलाद कुछ जिन्नों की पनाह पकड़ा करती थी, (इस से) उन की सरकशी और बढ़ गयी थी। (६) और यह कि उन का भी यही एतकाद था, जिस तरह तुम्हारा था कि खुदा किसी को नहीं जिलाएगा। (७) और यह कि हमने आसमान को टटोला, तो उस को मजबूत चौकीदारों और अंगारों से भरा हुआ पाया, (८) और यह कि पहले हम वहां बहुत सी जगहों में (खबरें) सुनने के लिए बैठा करते थे। अब कोई सुनना चाहे तो अपने लिए अंगारा तैयार पाए, (९) और यह कि हमें मालूम नहीं कि इस से खमीन वालों के हक़ में बुराई मकसूद है या उन के परवरदिगार ने उन की भलाई का इरादा फ़रमाया है। (१०) और यह कि हम में कोई नेक है और

कोई और तरह के, हमारे कई तरह के मजहब हैं। (११) और यह कि हमने यकीन कर लिया है कि हम जमीन में (चाहे कहीं हों) खुदा को हरा नहीं सकते और न भाग कर उस को धका सकते हैं। (१२) और जब हमने हिदायत (की किताब) सुनी, उस पर ईमान ले आए तो जो शस्स अपने परवरदिगार पर ईमान लाता है, उस को न नुकसान का डर है, न जुल्म का। (१३) और यह कि हम में कुछ फरमांबरदार हैं और कुछ (ना-फरमान) गुनाहगार हैं, तो जो फरमांबरदार हुए, वे सीधे रास्ते पर चले। (१४) और जो गुनाहगार हुए, वे दोजख का ईंधन बने। (१५) और (ऐ पैगम्बर!) यह (भी उन से कह दो) कि अगर ये लोग सीधे रास्ते पर रहते तो हम उन के पीने को बहुत-सा पानी देते, (१६) ताकि इस से उन की आजमाइश करें और जो शस्स अपने परवरदिगार की याद से मुंह फेरेगा, वह उस को सल्ल अज़ाब में दाखिल करेगा। (१७) और यह कि मस्जिदें (खास) खुदा की हैं, तो खुदा के साथ किसी और की इबादत न करो। (१८) और जब खुदा के बन्दे (मुहम्मद) उस की इबादत को खड़े हुए तो काफ़िर उन के चारों तरफ भीड़ कर लेने को थे। (१९) ★

कह दो कि मैं तो अपने परवरदिगार ही की इबादत करता हूं और (२०) यह भी कह दो कि मैं तुम्हारे हक में नुकसान और नफ़े का कुछ अस्तियार नहीं रखता। (२१) यह भी कह दो कि खुदा (के अज़ाब) से मुझे कोई पनाह नहीं दे सकता और मैं उस के सिवा कहीं पनाह की जगह नहीं देखता। (२२) हां, खुदा की (तरफ़ से हुक्मों का) और उस के पैग़ामों का पहुंचा देना (ही मेरे जिम्मे है) और जो शस्स खुदा और उस के पैग़म्बर की ना-फरमानी करेगा तो ऐसों के लिए जहन्नम की आग है, हमेशा-हमेशा उस में रहेंगे, (२३) यहां तक कि जब ये लोग वह (दिन) देख लेंगे, जिस का उन से वायदा किया जाता है, तब उन को मालूम हो जाएगा कि मददगार किस के कमज़ोर और तायदाद किन की थोड़ी है। (२४) कह दो कि जिस (दिन) का तुम से वायदा किया जाता है, मैं नहीं जानता कि वह (बहुत) करीब (आने वाला) है या मेरे परवरदिगार ने उस की मुद्त लम्बी कर दी है। (२५) (वही) ग़ैब (की बात) जानने वाला है और किसी पर अपने ग़ैब को जाहिर नहीं करता। (२६) हां, जिस पैग़म्बर को पसन्द फरमाए तो उस (को ग़ैब की बातें बता देता और उस) के आगे और पीछे निगहबान मुकर्रर कर देता है, (२७) ताकि मालूम फरमाए कि उन्होंने ने अपने परवरदिगार के पैग़ाम पहुंचा दिए हैं और (यों तो) उस ने उन की सब चीज़ों को हर तरफ़ से क़ाबू कर रखा है और एक-एक चीज़ गिन रखी है। (२८) ★

७३ सूरतुल-मुफ़ज्जिमिल ३

(मक्की) इस सूर: मे अरबी के ८६४ अक्षर, २०० शब्द, २० आयतें और २ रकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

या अय्युहल् - मुफ़ज्जिमिल् (१) कुमिल्लै - ल इल्ला कलीलन् (२)

निस्फ़ह् अविन्कुस् मिन्हु कलीलन् (३) ओ जिद् अलैहि व रत्तिलिल् -

कुरआन तर्तीला (४) इन्ना सनुल्की अलै-क कौलन् सकीला (५)

इन्-न नाशि-अ-तल्लैलि हि-य अशददु वत्-अव्व-व अक्वमु कीला (६) इन्-न ल-क

फिन्नहारि सब् - हन् तवीला (७)

वक्कुरिस्-म रब्बि-क व त-बत्तल् इलैहि तन्तीला (८) रब्बुल् - मशरिक्

वल्मशरिबि ला इला-ह इल्ला हु-व फ़तखिज्हु वकीला (९) वसूबिर अला मा यकूलू-न

वहजुरहुम् हज्-रन् जमीला (१०) व जर्नी वल्-मुकब्जिबी-न उलिन्नअ-मति व महिहल्हुम्

कलीला (११) इन्-न लदेना अन्कालव-व

जहीमव् - (१२) व तअामन्

आयुस्सतिव्-व अजाबन् अलीमा (१३)

यो-म तजुक्लअज्जु वल्जिबालु व कानतिल् -

जिबालु कसीबम् - महीला (१४) इन्ना

असल्ला इलैकुम् रसूलन् शाहिदन्

अलैकुम् कमा असल्ला इला फ़िर्औ-न

रसूला (१५) फ़-असा फ़िर्औनुर् - रसूल फ़-अ-खज़्नाहु अख़ज्वबोला (१६)

फ़-कै-फ़ तत्तकू-न इन् क-फ़रतुम् योमय्यज-अलुल् - विल्दा-न शी-ब-नि- (१७)

-स्समाउ मुत्फ़तिरुम् - बिही (१८) का - न वअदुह् मफ़ज़्ला (१९)

इन्-न हाजिही तख़्कि-रतुन् फ़-मन् शा-अत्त-ख-ज इला रब्बिही सबीला (१६)



७३ सूर: मुज्जिमिल ३

सूर: मुज्जिमिल मक्की है, इस में २० आयतें और दो स्कूअ हैं।

शुरू खुदा का नाम लेकर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

ऐ (मुहम्मद!) जो कपड़े में लपट रहे हो, (१) रात को क्रियाम किया करो, मगर थोड़ी-सी रात' (२) यानी आधी रात या उस से कुछ कम, (३) या कुछ ज्यादा और कुरआन को ठहर-ठहर कर पढ़ा करो। (४) हम बहुत जल्द तुम पर एक भारी फ़रमान नाज़िल करेंगे। (५) कुछ शक नहीं कि रात का उठना (हैवानी नफ़स को) सख्त पामाल करता है और उस वक़्त ज़िक्र भी खूब दुस्त होता है। (६) दिन के वक़्त तो तुम्हें और बहुत से शुग़ल (काम) होते हैं। (७) तो अपने परवरदिगार के नाम का ज़िक्र करो और हर तरफ़ से बे-ताल्लुक हो कर उसी की तरफ़ मुतवज्जह हो जाओ। (८) (वही) पूरब और पश्चिम का मालिक (है और) उस के सिवा कोई माबूद नहीं, तो उसी को अपना कारसाज बनाओ। (९) और जो-जो (दिल दुखाने वाली) बातें ये लोग कहते हैं, उन को सहते रहो और अच्छे तरीक़े से उन से किनारा अस्तियार कर लो। (१०) और मुझे उन झुठलाने वालों से जो दीलतमंद हैं, समझ लेने दो' और उन को थोड़ी-सी मोहलत दो। (११) कुछ शक नहीं कि हमारे पास बेड़ियाँ हैं और भड़कती आग है, (१२) और गुलूगीर' खाना है और दर्द देने वाला अजाब है, (१३) जिस दिन ज़मीन और पहाड़ कांपने लगें और पहाड़ (ऐसे भुरभुरे, गोया) रेत के टीले हो जाएं। (१४) (ऐ मक्का वालो!) जिस तरह हम ने फ़िऔन के पास (मूसा को) पैगम्बर (बना कर) भेजा था, (उसी तरह) तुम्हारे पास भी (मुहम्मद) रसूल भेजे हैं, जो तुम्हारे मुकाबले में गवाह होंगे। (१५) सो फ़िऔन ने (हमारे) पैगम्बर का कहा न माना, तो हम ने उस को बड़े दबाल में पकड़ लिया। (१६) अगर तुम भी (उन पैगम्बर को) न मानोगे तो उस दिन से कैसे बचोगें, जो बच्चों को बूढ़ा कर देगा, (१७) (और) जिस से आसमान फट जाएगा। यह उस का वायदा (पूरा) हो कर रहेगा। (१८) यह (कुरआन) तो नसीहत है, सो जो चाहे अपने परवरदिगार तक (पहुँचने का) रास्ता अस्तियार कर ले। (१९) ★

१. रात को खड़ा रह यानी नमाज़ पढ़ो रात को अब्बल। दिन में नमाज़ रात ही की फ़ज़ है, मगर किसी रात न हो तो माफ़ है।

२. लफ़्ज़ों का मतलब तो यह है कि मुझे और इन झुठलाने वालों को जो दीलतमंद हैं, छोड़ दो, मगर हम ने मुहाबरे का ख्याल किया है।

३. हलक़ में फंसने वाला, जो न अन्दर जाए, न बाहर जाए।

४. इस आयत के यह मानी भी है कि अगर तुम उस दिन को न मानोगे जो बच्चों को बूढ़ा कर देगा, तो कैसे बचोगे।

इन्-न रब्ब-क यअ-लमु अन्न-क तक्कुम् अदना मिन् सुलुसयिल्लैलि व निस-फह व सुलु-सह व ता-इफतुम्-मिनल्लखी-न म-अ-क वल्लाहु युक्ददिरल्लै-ल वन्नाहा-र अलि-म अल्लन् तुहसहु फता-ब अलैकुम् फक्-रउ मा त-यस्स-र मिनल्-कुरआनि अलि-म अन् स-यकूनु मिन्कुम् मर्-ज्जा ॥ व आखरू-न यज़्ज़रिबू-न फिल्अज्जि यब्तगू-न मिन् फज़्-लिल्लाहि ॥ व आखरू-न युकातिलू-न फी सबी-लिल्लाहि ॥ फक्-रउ मा त-यस्स-र मिनहु ॥ व अकीमुस्सला-त व आतुज्जका-त व अक्रिज़ुल्ला-ह कर्-ज़न् ह-स-नन् ॥ व मा तुक्ददिमू लि-अन्-फुसि-कुम् मिन् खैरिन् तजिदूहु अिन्दल्लाहि हु-व खैर-व-व अज्-ज-म अज्-रन् ॥ वस्तगुफिरल्ला-ह ॥

इन्ल्ला-ह गफूहर्-रहीम ★ (२०)

७४ सूरतुल्-मुदस्सिर ४

(मक्की) इस सूरः में अरबी के ११४५ अक्षर,
२५६ शब्द, ५६ आयतें और २ रकूअ हैं ।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम •

या अय्युहल्-मुदस्सिर ॥ (१) कुम् फ-अन्-जिर् ॥ (२) व रब्ब-क फ-कब्बिर ॥ (३) व सिया-ब-क फ-तहिर् ॥ (४) व रज्ज-फहजूर ॥ (५) व ला तम्-नुन् तस्तक्सिर ॥ (६) व लिरब्बि-क फसबिर् ॥ (७) फइजा नुकि-र फिन्नाकूर ॥ (८) फजालि-क यौमइजिय्यौमुन् असीरु ॥ (९) अलल्-काफिरी-न रीह यसीर (१०) जर्नी व मन् ख-लक्तु वहीदव ॥ (११) व ज-अल्लु लहू मालम्-मद्दव ॥ (१२) व बनी-न शुहदव ॥ (१३) व मह-हल्लु लहू तम्हीदा ॥ (१४) सुम्-म यत्मअ अन् अजी-द ॥ (१५) कल्ला ॥ इन्नहू कान-लिआयातिना अनीदा ॥ (१६) सजर्हिकूह सअदन् ॥ (१७) इन्नहू फवक-र व कद्-द-र ॥ (१८) फक़ुति-ल कै-फ कद्-द-र ॥ (१९) सुम्-म क़ुति-ल कै-फ कद्-द-र ॥ (२०) सुम्-म न-ज्ज-र ॥ (२१) सुम्-म अ-ब-स व ब-स-र ॥ (२२) सुम्-म अद्-ब-र वस्तक्-ब-र ॥ (२३) फ-क़ा-ल इन् हाज़ा इल्ला सिह्रय्युअ-सर ॥ (२४) इन् हाज़ा इल्ला कौलुल्-ब-शर ॥ (२५) सजसलीहि स-कर (२६) व मा अद्-रा-क मा स-कर ॥ (२७) ला तुक्की व ला त-ज-र ॥ (२८) लव्वाहुतुल्-लिल-ब-शर ॥ (२९) अलैहा तिस-अ-त अ-श-र ॥ (३०)



तुम्हारा परवरदिगार खूब जानता है कि तुम और तुम्हारे साथ के लोग (कभी) दो तिहाई रात के करीब और (कभी) आधी रात और (कभी) तिहाई रात कियाम किया करते हो और खुदा तो रात और दिन का अन्दाजा रखता है। उस ने मालूम किया कि तुम उस को निबाह न सकोगे तो उस ने तुम पर मेहरबानी की, पस जितना आसानी से हो सके (उतना) कुरबान पढ़ लिया करो। उस ने जाना कि तुम में कुछ बीमार भी होते हैं, और कुछ खुदा के फ़रल (यानी रोजी) की खोज में मुल्क में सफ़र करते हैं और कुछ खुदा की राह में लड़ते हैं, तो जितना आसानी से हो सके उतना पढ़ लिया करो और नमाज पढ़ते रहो और जकात अदा करते रहो और खुदा को नेक (और नीयत के खुलूस से) कर्ज़ देते रहो और जो नेक अमल तुम अपने लिए आगे भेजोगे, उस को खुदा के यहां बेहतर और बदले में बुजुर्गतर पाओगे और खुदा से बल्हिश मांगते रहो। बेशक खुदा बल्हशने वाला मेहरबान है। (२०) ★

७४ सूर: मुद्दस्सिर ४

सूर: मुद्दस्सिर मक्की है। इस में ५६ आयतें और दो रकूअ हैं।

शुरू खुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

ऐ (मुहम्मद!) जो कपड़ा लपेटे पड़े हो, (१) उठो और हिदायत कर दो, (२) और अपने परवरदिगार की बड़ाई करो, (३) और अपने कपड़ों को पाक रखो, (४) और नापाकी से दूर रहो, (५) और (इस नीयत से) एहसान न करो कि इस से ज्यादा की तलब में हो, (६) और अपने परवरदिगार के लिए सन्न करो। (७) जब सूर फूँका जाएगा, (८) वह दिन मुश्किल का दिन होगा, (९) (यानी) काफ़िरों पर आसान होगा, (१०) हमें उस शस्त्र से समझ लेने दो, जिस को हम ने अकेला पैदा किया, (११) और ज्यादा माल दिया, (१२) और (हर वक्त उस के पास) हाज़िर होने वाले बेटे (दिए), (१३) और हर तरह के सामान में वसूल दी। (१४) अभी स्वाहिश रखता है कि और ज्यादा दें। (१५) ऐसा हरगिज़ नहीं होगा। यह हमारी आयतों का दुश्मन रहा है। (१६) हम उसे सऊद ^१ चढ़ाएंगे। (१७) उस ने फ़िक्र किया और तज्बीज़ की। (१८) यह मारा जाए, उस ने कैसी तज्बीज़ की, (१९) फिर यह मारा जाए, उस ने कैसी तज्बीज़ की, (२०) फिर ताम्मुल किया, (२१) फिर त्योरी चढ़ायी और मुंह बिगाड़ लिया, (२२) फिर पीठ फेर कर चला और (हक़ क़बूल करने से) धमंड किया, (२३) फिर कहने लगा कि यह तो जादू है, जो (अगलों से) बराबर होता चला आया है। (२४) (फिर) बोला यह (खुदा का कलाम नहीं, बल्कि) इंसान का कलाम है। (२५) हम बहुत जल्द उस को सक्कर में दाखिल करेंगे, (२६) और तुम क्या समझे कि सक्कर क्या है? (२७) (वह आग है कि) न बाकी रहेगी और न छोड़ेगी। (२८) और बदन को शूलसा कर काला कर देगी, (२९) उस पर उन्नीस दारोगा

१. यह सूर: बहक़ के शुरू के दिनों में नाज़िल हुई थी। चूँकि हज़रत सल्ल० वल्ल० अलैहिस्सलाम की बजह से कपड़ा ओढ़ लेते थे, इस लिए 'मुद्दस्सिर' से ख़िताब फ़रमाया।

२. ये आयतें बलीद बिन मुगीरह के हक़ में नाज़िल हुई हैं। यह शस्त्र बड़ा मालदार और क़ुरैश में नामी था। बेटे भी बहुत-से रखता था। शरज़ दुनिया में जो बातें ख़ुशक्रिस्मती की समझी जाती हैं, सब उस को हासिल थीं।

(जोष पृष्ठ ६२५ पर)

हैं, (३०) और हम ने दोखल के दारोगा फरिश्ते बनाए हैं और उन की तायदाद को काफ़िरो की आजमाइश के लिए मुकर्रर किया है (और) इस लिए कि किताब वाले यक़ीन करें और मोमिनो का इमान और ज्यादा हो और अहले किताब और मोमिन शक न लाएं और इस लिए कि जिन लोगो के दिलो में (निफ़ाक़ का) मजं है और (जो) काफ़िर (हैं) कहें कि इस मिसाल (के बयान करने) से खुदा का मक़सूद क्या है? इसी तरह खुदा जिस को चाहता है, गुमराह करता है और जिस को चाहता है, हिदायत देता है और तुम्हारे परवरदिगार के लश्करो को उस के सिवा कोई नहीं जानता और यह तो आदम की औलाद के लिए नसीहत है। (३१)★

हां, (हां, हमें,) चांद की क़सम ! (३२) और रात की, जब पीठ फेरने लगे, (३३) और सुबह की जब रोशन हो, (३४) कि वह (आग) एक बहुत बड़ी (आफ़त) है, (३५) (और) बशर के लिए ख़ौफ़ की वजह, (३६) जो तुम में से आगे बढ़ना चाहे या पीछे रहना चाहे।' (३७) हर शख्स अपने आमाल के बदले रेहन है, (३८) मगर दाहिनी तरफ़ वाले (नेक लोग) (३९) (कि) वे बहिश्त के बाग़ों में (होंगे और) पूछते होंगे, (४०) (यानी आग में जलने वाले) गुनाह-गारों से, (४१) कि तुम दोखल में क्यों पड़े? (४२) वे जवाब देंगे कि हम नमाज़ नहीं पढ़ते थे, (४३) और न फ़कीरो को खाना खिलाते थे, (४४) और बातिल वालों के साथ मिल कर (हक़ से) इंकार करते थे, (४५) और बदले के दिन को झुठलाते थे, (४६) यहां तक कि हमें मौत आ गयी, (४७) तो (इस हाल में) सिफ़ारिश करने वालों की सिफ़ारिश उन के हक़ में कुछ फ़ायदा न देगी, (४८) उन को क्या हुआ है कि नसीहत से मुंह फेर रहे हैं। (४९) गोया गधे हैं कि बिंदक जाते हैं, (५०) (यानी) शेर से डर कर भाग जाते हैं। (५१) असल यह है कि उन में से हर शख्स यह चाहता है कि उस के पास खुली हुई किताब आए। (५२) ऐसा हरगिज़ नहीं होगा। हकीक़त यह है कि उन को आखिरत का ख़ौफ़ ही नहीं। (५३) कुछ शक नहीं कि यह नसीहत है। (५४) तो जो चाहे याद रखे, (५५) और याद भी तभी रखेंगे जब खुदा चाहे। वही डरने के लायक़ और बलिश का मालिक है। (५६)★●

(पृष्ठ ६२३ का अंश)

एक बार जो हज़रत सल्म० के पास आया तो आप ने उस को कुरआन सुनाया, ऐसा मीठा कलाम सुन कर फड़क उठा और बे-सास्ता तारीफ़ करने लगा। यह बात अबू जहल को मालूम हुई तो उस ने वलीद से आ कर कहा कि बचा ! तुम्हारी बिरादरी के लोग तुम्हारे लिए चन्दा जमा करना चाहते हैं। उस ने कहा किस लिए ? अबू जहल ने कहा कि तुम मुहम्मद के पास जा कर उन की बातें सुनते हो। उस ने कहा कि कुरैश को मालूम है कि मैं इन सब से ज्यादा दोस्तमंद हूं, तो मुझे उन के चन्दे की क्या ज़रूरत है। अबू जहल ने कहा, अच्छा, तो ऐसी बात कहो, जिस से साबित हो कि तुम उन के कलाम को पसन्द नहीं करते। उस ने कहा कि मैं उन के हक़ में क्या कहूं। खुदा की क़सम ! तुम में कोई शख्स मुझ से ज्यादा अशआर व क़सीदे का आनिम नहीं और मैं उन के कलाम को हरगिज़ शेर नहीं कह सकता। अबू जहल ने कहा, जब तक तुम उन के बारे में कोई बात लोगो की स्वाहिश के मुताबिक़ तजवीज़ न करोगे, वे तुम से सुश नहीं होंगे। आखिर उस ने सोच कर कहा कि यह जाहू है। सऊद दोखल में एक पहाड़ है, जिस पर काफ़िर को चढ़ा कर नीचे गिरा दिया करेंगे। कुछ ने कहा कि सऊद दोखल में एक बहुत बड़ा पत्थर है, जिस पर काफ़िर को मुंह के बल बसीटेंगे। किसी ने कहा कि सऊद जहन्म में एक चिकना पत्थर है, जिस पर काफ़िर को चढ़ने के लिए मजबूर करेंगे।

७५ सूर: क्रियाम: ३१

सूर: क्रियाम: मक्की है, इस में चालीस आयतें और दो हकूअ हैं ।

शुरू खुदा का नाम लेकर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है ।

हम को क्रियामत के दिन की क्रसम, (१) और नफ्से लब्बामा' की (कि सब लोग उठा कर खड़े किए जाएंगे,) (२) क्या इंसान यह ख्याल करता है कि हम उस की (बिखरी हुई) हड्डियां इकट्ठी नहीं करेंगे ? (३) ज़रूर करेंगे (और) हम इस बात पर कुदरत रखते हैं कि उसके पोरे-पोरे दुस्त कर दें, (४) मगर इंसान चाहता है कि आगे को खुदसरी करता जाए । (५) पूछता है कि क्रियामत का दिन कब होगा ? (६) जब आंखें चुंधिया जाएं, (७) और चांद गहना जाए, (८) और सूरज और चांद जमा कर दिए जाएं, (९) उस दिन इंसान कहेगा कि (अब) कहां भाग जाऊं ? (१०) बेशक कहीं पनाह नहीं, (११) उस दिन परवरदिगार ही के पास ठिकाना है, (१२) उस दिन इंसान को जो (अमल) उस ने आगे भेजे और जो पीछे छोड़े होंगे, सब बता दिए जाएंगे, (१३) बल्कि इंसान आप अपना गवाह है, (१४) अगरचे उज़्र माज़रत करता रहे (१५) और (ऐ मुहम्मद !) वह्य के पढ़ने के लिए अपनी जुबान न चलाया करो कि उस को जल्द याद कर लो । (१६) उस का जमा करना और पढ़ाना हमारे जिम्मे है । (१७) जब वह वह्य पढ़ा करे, तो तुम (उस को सुना करो और) फिर उसी तरह पढ़ा करो, (१८) फिर उस (के मानी) का बयान भी हमारे जिम्मे है, (१९) मगर (लोगो !) तुम दुनिया को दोस्त रखते हो, (२०) और आखिरत को छोड़े देते हो, (२१) उस दिन बहुत से मुंह रौनकदार होंगे, (२२) (और) अपने परवरदिगार का दीदार कर रहे होंगे, (२३) और बहुत-से मुंह उस दिन उदास होंगे, (२४) ख्याल करेंगे कि उन पर मुसीबत वाक़ेअ होने को है । (२५) देखो, जब जान गले तक पहुंच जाए, (२६) और लोग कहने लगें, (इस वक़्त) कौन झाड़-फूक करने वाला है, (२७) और उस (जान गले तक पहुंचे हुए शरूस) ने समझा कि अब सब से जुदाई है, (२८) और पिंडली से पिंडली लिपट जाए, (२९) उस दिन तुझ को अपने परवरदिगार की तरफ चलना है, (३०) ★

तो उस (अंजाम से ना-समझ) ने न तो (खुदा के कलाम की) तस्दीक की, न नमाज़ पढ़ी । (३१) बल्कि झुठलाया और मुंह फेर लिया, (३२) फिर अपने घर वालों के पास अकड़ता हुआ चल दिया । (३३) अफ़सोस है तुझ पर, फिर अफ़सोस है, (३४) फिर अफ़सोस है तुझ पर, फिर अफ़सोस है । (३५) क्या इंसान ख्याल करता है कि यों ही छोड़ दिया जाएगा ? (३६) क्या वह मनी की, जो रहम में डाली जाती है, एक बूंद न था ? (३७) फिर लोथड़ा हुआ, फिर (खुदा ने) उस को बनाया, फिर (उस के अंगों को) ठीक किया, (३८) फिर उस की दो किस्में बनायीं, (एक) मर्द और (एक) औरत । (३९) क्या उस को इस बात पर कुदरत नहीं कि मुर्दों को जिला उठाये ? (४०) ★

१. इन्सान का जी तीन तरह का है, एक जो गुनाहों और बुरे कामों की तरफ़ भावल रहे, उस को नफ़से अम्पारा या अम्पारा बिस्मूह कहते हैं, दूसरा जो बुराई और कुसूर के होने पर मलामत करे कि तू ने यह हरकत क्यों की, उस को नफ़से लब्बामा कहते हैं । तीसरा जो नेकियों में दिलचस्पी बढ़ाए और बुराइयों से नक्रत दिलाए, ऐसा जो बड़े चैन में रहता है और उस को नफ़से मुश्महना कहते हैं । यहां खुदा ने नफ़से लब्बामा की क्रसम खायी है ।

७६ सुरतुद्-दहिर ६८

(मदनी) इस सूर: में अरबी के १०६६ अक्षर, २४६ शब्द, ३१ आयतें और २ रकूअ हैं ।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

हल् अता अ-लल-इन्सानि हीनुम्-मिनद-दहिर लम् यकुन् शै-अम्-मज्कूरा

(१) इन्ना ख-लकूनल-इन्सान-मिन् नुत्फतिन् अम्शाजिन् नब्तलीहि फ-ज-अल्नाहु

समीअम्-बसीरा (२) इन्ना हदनाहुस्सबी-ल इम्मा शाकिरव्-व इम्मा कफूरा (३)

इन्ना अ-तदना लिक्काफिरी-न सलासि-ल व अरलालव्-व ससीरा (४) इन्नल-

अनरा-र यश्-रबू-न मिन् कअसिन् कान-मिजा-

जुहा काफूरा (५) अनय्यश्-रबु बिहा

अबादुल्लाहि युफज्जिरू-नहा तफ्-जीरा (६)

यूफू-न बिन्नजिर व यखाफू-न यौमन् कान-

शरूह मुस्ततीरा (७) व युतिअमूनत्तआ-म

अला हुब्बिही मिस्कीनव्-व यतीमव्-व असोरा

(८) इन्मा नुतिअमुकुम् लिबजिह्ललाहि ला

नुरीदु मिन्कुम् जजाअव्-व ला शुकूरा (९)

इन्ना नखाफु मिरब्बिना यौमन् अबूसन् कम्-

तरीरा (१०) फ-वक्राहुमुल्लाहु शर-र

जालिकल-यौमि व लक्काहुम् नज्-रतव्-व सुरूरा (११)

व जजाहुम् बिमा स-बरू जन्नतव्-व

हरीरम्-॥ (१२) मुत्किई - न फीहा

अलल-अराईकि ला यरी-न फीहा शम्सव्-व ला जम्-हरीरा (१३) व

दानि-य-तन् अलैहिम् जिलालुहा व अलिललत् कतूफुहा तज्जीला (१४) व युताफु

अलैहिम् बिआनि-य-तिम्-मिन् फिज्जतिव्-व अक्वाबिन् कानत् कवारी-र ॥ (१५)

कवारी-र मिन् फिज्जतिन् कददरूहा तक्दीरा (१६) व युस्की-न फीहा कअ-सन्

कान-मिजाजुहा जन्जबीला (१७) अनन् फीहा तुसम्मा सत्सबीला (१८)

व यतूफु अलैहिम् विल्दानुम्-मुखल्लदू-न इजा रऐतहुम् हसिब-तहुम् लुअलुअम्-मन्सूरा

(१९) व इजा रऐ-त सम्-म रऐ-त नजीमव्-व मुल्कन् कबीरा (२०)



७६ सूर: दह ६८

सूर: दह मक्की है, इस में इक्तीस आयतें और दो रुकूअ हैं।

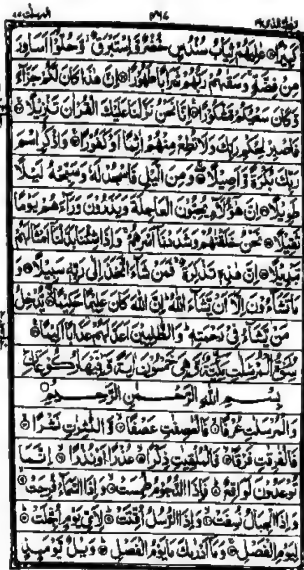
शुरू खुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

बेशक इंसान पर जमाने में एक ऐसा वक्त भी आ चुका है कि वह कोई चीज जिक्र के काबिल न था। (१) हम ने इंसान को मिले-जुले नुस्खे से 'पंदा किया', ताकि उसे आजमाएं, तो हम ने उसे सुनता-देखता बनाया। (२) और उसे रास्ता भी दिखा दिया। (अब वह) चाहे शुकुगुजार हो, चाहे ना-शुकु। (३) हम ने काफ़िरों के लिए जंजीरों और तौक़ और दहकती आग तैयार कर रखी है। (४) जो नेकी वाले हैं, वह ऐसी शराब पिएंगे, जिस में काफ़ूर की मिलावट होगी। (५) यह एक चश्मा है, जिस में से खुदा के बन्दे पिएंगे और उस में से (छोटी-छोटी) नहरें निकाल लेंगे। (६) ये लोग नज़्ज़ु पूरी करते हैं और उस दिन से जिस की सलती फल रही होगी, ख़ौफ़ रखते हैं, (७) और इसके बावजूद कि उन को खुद खाने की स्वाहिश (और जरूरत) है, फ़कीरों और यतीमों और क़ंदियों को खिलाते हैं। (८) (और कहते हैं कि) हम तुम को ख़ालिस खुदा के लिए खिलाते हैं, न तुम से बदले की स्वाहिश है, न शुकुगुजारी के (तलबगार।) (९) हम को अपने परवरदिगार से उस दिन का डर लगता है जो (चेहरों को) देखने में बुरा और (दिलों को) सस्त (बेचैन कर देने वाला) है। (१०) तो खुदा उन को उस दिन की सलती से बचा लेगा और ताज़गी और खुशदिली इनायत फ़रमाएगा। (११) और उन के सब के बदले उन को बहिश्त (के बाग़) और रेशम (के कपड़े) अता करेगा? (१२) उन में वे तस्त्तों पर तकिए लगाए बैठें होंगे, वहां न धूप (की गर्मी) देखेंगे, न सर्दी की तेज़ी, (१३) उन से (फलदार शाखें और) उन के साए क़रीब होंगे और सेवों के गुच्छे झुके हुए लटक रहे होंगे। (१४) (नौकर-चाकर) चांदी के बासन लिए हुए उन के चारों तरफ़ फिरेंगे और शीशे के (निहायत साफ़-सुधरे) गिलास, (१५) और शीशे भी चांदी के, जो ठीक अन्दाज़ के मुताबिक़ बनाए गए हैं, (१६) और वहां उन को ऐसी शराब (भी) पिलायी गयी, जिस में सोंठ की मिलावट होगी। (१७) यह बहिश्त में एक चश्मा है, जिस का नाम सलसबोल है। (१८) और उन के पास लड़के आते जाते होंगे, जो हमेशा एक ही हालत पर आएंगे। जब तुम उन पर निगाह डालो, तो ख़याल करो कि बिखरे हुए मोती हैं। (१९) और बहिश्त में (जहां) आंख उठाओगे, कसरत से नेमत और शानदार सलतनत देखोगे। (२०) (उन (के बंदों) पर हरी दीबा

१. 'चूँकि मर्द और औरत दोनों के नुस्खों के मिलने से बच्चा बनता है, इस लिए मिला-जुला नुस्खा फ़रमाया।

२. 'कास' शराब के सागर को भी कहते हैं और इसे शराब के लिए भी बोल सकते हैं, इस लिए यहां हम ने इस का तर्जुमा शराब किया।

आलि-यहुम् सियाबु सुन्दुसिन् खुर्रव-व इस्तवरकु व-व हुल्ल असावि-र मिन् फिज्ज-
तिन् व सकाहुम् रब्बुहुम् शराबन् तहूरा (२१) इन्-न हाजा कान लकुम् जजा-
अव-व कान सअ-युकुम् मशकूरा ★ (२२) इन्ना नहनु नज्जल्ला अलैकल-कुरआन
तब्दीला (२३) फ़स्बिर् लिह्विम रब्बि-क व ला तुतिअ-मिन्हुम् आसिमन् ओ
कफूरा (२४) वज्जुरिस्-म रब्बि-क बुक्-
र-तव-व असीला (२५) व मिनल्लैलि फ़स्जुद्
तहू व सबिहहू लैलन् तबीला (२६) इन्-न
हाउला-इ युहिब्बूनल्-आजि-ल-त व य-ज-रून
वरा-अहुम् यौमन् सकीला (२७) नहनु ख-
लन्नाहुम् व शददन् अस्-रहुम् व इजा शिअ्ना
बददन्ना अम्सालहुम् तब्दीला (२८) इन्-न
हाजिही तज्जि-र-तुन् फ़-मन् शाअत्त-ख-ज इला
रब्बिही सबीला (२९) व मा तशाऊ-न
इल्ला अय्यशाअल्लाहु इन्तल्ला-ह कान अली-
मन् हकीमय-ऊ (३०) -युदखिलु मय्यशाउ
फ़ी रहमतिही वज्जालिमी - न अ-अद्-द
तहुम् अजाबन् अलीमा ★ (३१)



७७ सूरतुल्-मुसलाति ३३

(मक्की) इस सूर: में अरबी के ८४६ अक्षर, १८१ शब्द, ५० आयतें और २ हकूअ हैं ।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

बल्मुस्लाति अर्फन् ॥ (१) फ़ल - आसिकाति अस्फन् ॥ (२)
वन्नाशिराति नशरन् ॥ (३) फ़ल्फ़ारिकाति फ़रफ़न् ॥ (४) फ़ल्मुल्कियाति
जिक्वरन् ॥ (५) अज्जरन् औ नुज्जरन् ॥ (६) इन्नमा तू-अद्-न लवाकि-
अ ॥ (७) फ़-इज्जन्नुजूम तुमिस्त ॥ (८) व इज्जस्माउ फ़ुरिजत् ॥ (९)
व इजल् - जिबालु नुसिफ़त् ॥ (१०) व इजर्हसुलु उक्किक्तत् ।
(११) लिअय्य यौमिन् उज्जिलत् ॥ (१२) लियौमिल् -
फ़सूलि ॥ (१३) व मा अदरा-क मा यौमुल् - फ़सूल ॥ (१४)

और अतलस के कपड़े होंगे और उन्हें चांदी के कंगन पहनाए जाएंगे और उन का परवरदिगार उन को निहायत पाकीजा शराब पिलाएगा। (२१) यह तुम्हारा बदला है और तुम्हारी कोशिश (खुदा के यहां) मकबूल हुई। (२२) ★

(ऐ मुहम्मद !) हम ने तुम पर कुरआन धीरे-धीरे नाज़िल किया है, (२३) तो अपने परवर-दिगार के हुक्म के मुताबिक सन्न किए रहो और उन लोगों में से किसी बद-अमल और ना-शुके का कहां न मानो, (२४) और सुबह व शाम अपने परवरदिगार का नाम लेते रहो। (२५) और रात को बड़ी रात तक उस के आगे सज्दे करो और उस को पाकी बयान करते रहो। (२६) ये लोग दुनिया को दोस्त रखते हैं और (क्रियामत के) भारी दिन को पीठ पीछे छोड़ देते हैं। (२७) हम ने उन को पैदा किया और उन के जोड़ों को मजबूत बनाया और अगर हम चाहें तो उन के बदले उन्हीं की तरह और लोग ले आएंगे। (२८) यह तो नसीहत है, जो चाहे अपने परवरदिगार की तरफ पहुंचने का रास्ता अस्तियार करे। (२९) और तुम कुछ भी नहीं चाह सकते, मगर जो खुदा को मंजूर हो। बेशक खुदा जानने वाला, हिक्मत वाला है, (३०) जिस को चाहता है, अपनी रहमत में दाखिल कर लेता है और ज़ालिमों के लिए उस ने दुख देने वाला अज़ाब तैयार कर रखा है ★ (३१)

७७ सूर: मुर्सलात ३३

सूर: मुर्सलात मक्की है, उस में पचास आयतें और दो रकूअ है।

सुरू खुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

हवाओं की क्रसम जो नर्म-नर्म चलती हैं, (१) फिर जोर पकड़ कर झकड़ हो जाती हैं, (२) और (बादलों को) फाड़ कर फैला देती हैं, (३) फिर उन को फाड़ कर जुदा-जुदा कर देती हैं, (४) फिर फ़रिश्तों की क्रसम, जो बह्य लाते हैं, (५) ताकि उज्र (दूर) कर दिया जाए, (६) कि जिस का तुम से वायदा किया जाता है, वह हो कर रहेगा। (७) जब तारों की चमक जाती रहे, (८) और जब आसमान फट जाए, (९) और जब पहाड़ उड़े-उड़े फिरे, (१०) और जब पैगम्बर फ़राहम किए जाएं, (११) भला (इन मामलों में) देर किस लिए की गयी? (१२) क्रैसले के दिन के लिए, (१३) और तुम्हें क्या खबर कि क्रैसले का दिन क्या है, (१४) उस दिन झुठलाने वालों के

लिए खराबी है। (१५) क्या हम ने पहले लोगों को हलाक नहीं कर डाला ? (१६) फिर इन पिछलों को भी उन के पीछे भेज देते हैं। (१७) हम गुनाहगारों के साथ ऐसा ही करते हैं। (१८) उस दिन झुठलाने वालों की खराबी है। (१९) क्या हम ने तुम को हकीर पानी से नहीं पैदा किया ? (२०) (पहले) उस को एक महफूज जगह में रखा, (२१) एक मालूम वक़्त तक, (२२) फिर अन्दाज़ा मुकर्रर किया और हम क्या ही ख़ूब अन्दाज़ा मुकर्रर करने वाले हैं। (२३) उस दिन झुठलाने वालों की खराबी है। (२४) क्या हम ने ज़मीन को समेटने वाली नहीं बनाया ? (२५) (यानी) ज़िदों और मुदों को, (२६) और उस पर ऊंचे-ऊंचे पहाड़ रख दिए और तुम लोगों को भीठा पानी पिलाया, (२७) उस दिन झुठलाने वालों की खराबी है। (२८) जिस चीज़ को तुम झुठलाया करते थे, (अब) उस की तरफ़ चलो, (२९) (यानी) उस साए की तरफ़ चलो, जिस की तीन शाखें हैं, (३०) न ठंडी छांव और न लपट से बचाव, (३१) उस से आग की (इतनी-इतनी बड़ी) चिंगारियां उड़ती हैं, जैसे महल, (३२) गोया पीले रंग के ऊंट हैं, (३३) उस दिन झुठलाने वालों की खराबी है। (३४) यह वह दिन है कि (लोग) लब तक न हिला सकेंगे, (३५) और न उन को इजाज़त दी जाएगी कि उज़्र कर सकें। (३६) उस दिन झुठलाने वालों की खराबी है। (३७) यही फ़िसले का दिन है, (जिस में) हम ने तुम को और पहले के लोगों को जमा किया है। (३८) अगर तुम को कोई दांव आता हो तो मुझ से कर चलो। (३९) उस दिन झुठलाने वालों की खराबी है। (४०) ★

बेशक परहेज़गार सायों और चरमों में होंगे। (४१) और मेवों में जो उन को पसन्द हों, (४२) जो अमल तुम करते रहे थे, उन के बदले में मजे से खाओ और पियो। (४३) हम नेकों को ऐसा ही बदला दिया करते हैं। (४४) उस दिन झुठलाने वालों की खराबी है। (४५) (ऐ झुठलाने वालो !) तुम किसी क़दर खा लो और फ़ायदे उठा लो, तुम बेशक गुनाहगार हो। (४६) उस दिन झुठलाने वालों की खराबी है। (४७) और जब उन से कहा जाता है कि (खुदा के आगे) झुको तो झुकते नहीं। (४८) उस दिन झुठलाने वालों की खराबी है। (४९) अब इस के बाद ये कौन-सी बात पर ईमान लाएंगे ? (५०) ★

तीसवां पारः अम्-म य-त-सा-अलून

७८ सूरतुन्नबइ ८०

(मक्की) इस सूर में अरबी के ८०१ अक्षर, १७४ शब्द, ४० आयतें और २ हकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिरं हमा निरंहीम •

अम-म य-त-सा-अलून ६ (१) अनिन्न-ब-इल्-अजीम ॥ (२) अल्लजी हुम्
फ्रीहि मुखतलिफून ॥ (३) कल्ला स-य-अ-लमून ॥ (४) सुम्-म कल्ला स-य-अ-लमून
(५) अ-लम् नज्जलि-अ-र-ज मिहादव्-॥ (६) वल्जिबा-ल ओतादव्-॥ (७) व
ख-लक्नाकुम् अज्जाजव्-॥ (८) व ज-अल्ला नोमकुम् सुबातव्-॥ (९) व ज-अल्-
नल्लै-ल लिबासव्-॥ (१०) व ज-अल्लन्नहा-र ॥

मआशब्-॥ (११) व बनेना फौ-ककुम् सब-अन्
 शिदाद्व-॥ (१२) व ज-अलना सिराज्वहहा-
 ज्व-॥ (१३) व अन्जलना मिनल्-मुअ-सिराति
 मा-अन् सज्जाजल्-॥ (१४) लि-नुहिर-ज बिही
 हब्बव-व नबातव-॥ (१५) व जन्नातिन् अल्-
 फ्राफा ॥ (१६) इन्-न योमल्फस्लि कान
 मीक़ातय-॥ (१७) यो-म युक्कल् फ़िस्सूरि
 फ़त-अ-तू-न अप्पाजव-॥ (१८) व फ़ुतिह्तिस्-
 समात्त फ़-कानत अब्-बाबव-॥ (१९) व सुय्यि-
 रतिल-जिबालु फ़-कानत सराबा ॥ (२०) इन्-न
 ज-हल्ल-म कानत मिर्-सादल-॥ (२१) लिता-
 यी-न म-आबल्-॥ (२२) लाबिसी-न फ़ीहा
 अह्-काबा ॥ (२३) ला यजूकू-न फ़ीहा बर्दव-व
 ला शराबन् ॥ (२४) इल्ला हमीमव-व ग़स्सा-
 कन् ॥ (२५) जज़ाअब्बिफ़ाका ॥ (२६) इल्लहुम् कानू ला यर्ज़ू-न हिसाबव-॥ (२७)
 व कज़्जबू बिआयातिना किज़्जाबा ॥ (२८) व कुल-ल शैइन् अह्सैनाहु किताबन्
 (२९) फ़ज़ूकू फ़-लन् नज़ी-द-कुम् इल्ला अज़ाबा ॥ (३०) इन्-न लिल-मुत्तकी-न
 मफ़ाजन् ॥ (३१) ह-दाइ-क व अज़ू-नाबव-॥ (३२) व कवाअि-ब अत-राबव-
 (३३) व कअ-सन् दिहाका ॥ (३४) ला यस्-मअ-न फ़ीहा लयवव-व ला
 किज़्जाबा ॥ (३५) जज़ाअम् - मिर्रब्बि-क अताअन् हिसाब- ॥ (३६)

७८ सूर: नबा ८०

सूर: नबा मक्की है। इस में चालीस आयतें और दो हकूअ हैं।

शुरू खुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

(ये) लोग किस चीज़ के बारे में पूछते हैं? (१) (क्या) बड़ी खबर के बारे में? (२) जिस में ये इस्तिलाफ़ कर रहे हैं। (३) देखो, ये बहुत जल्द जान लेंगे। (४) फिर देखो, ये बहुत जल्द जान लेंगे। (५) क्या हम ने ज़मीन को बिछौना नहीं बनाया? (६) और पहाड़ों को (उस की) मेखें (नहीं ठहराया?) (७) (बेशक बनाया) और तुम को जोड़ा-जोड़ा भी पैदा किया, (८) और नींद को तुम्हारे लिए आराम की (वजह) बनाया, (९) और रात को पर्दा मुकर्रर किया, (१०) और दिन को रोज़ी (का वक़्त) करार दिया, (११) और तुम्हारे ऊपर सात मजबूत (आसमान) बनाये, (१२) और (सूरज का) रोशन चिराग़ बनाया, (१३) और निचुड़ते बादलों से मूसलाधार मेंह बरसाया, (१४) ताकि उस से अनाज और सब्ज़ा पैदा करें, (१५) और घने-घने बाग़। (१६) बेशक फ़ैसले का दिन मुकर्रर है, (१७) जिस दिन सूर फूँका जाएगा, तो तुम लोग गुट के गुट आ मौजूद होगे, (१८) और आसमान खोला जाएगा, तो (उस में) दरवाज़े हो जाएंगे, (१९) और पहाड़ चलाए जाएंगे, तो वे रेत हो कर रह जाएंगे। (२०) बेशक दोज़ख़ घात में है, (२१) (यानी) सर-कशों का वही ठिकाना है। (२२) उस में मुद्तों पड़े रहेंगे। (२३) वहां न ठंडक का मज़ा चखेंगे, न (कुछ) पीना (नसीब होगा), (२४) मगर गर्म पानी और बहती पीप, (२५) (यह) बदला है पूरा-पूरा। (२६) ये लोग हिसाब (आखिरत) की उम्मीद नहीं रखते थे। (२७) और हमारी आयतों को झूठ समझ कर झुठलाते रहते थे। (२८) और हम ने हर चीज़ को लिख कर जव्त कर रखा है। (२९) सो (अब) मज़ा चखो। हम तुम पर अज़ाब ही बढ़ाते जाएंगे। (३०)★

बेशक परहेज़गारों के लिए कामियाबी है। (३१) (यानी) बाग़ और अंगूर, (३२) और हम-उम्र नव-जवान औरतें, (३३) और शराब के छलकते हुए गिलास, (३४) वहां न बेहूदा बात सुनेंगे, न झूठ (खुराफ़ात)। (३५) यह तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से बदला है तै इनाम, (३६)

१. कोई किसी से झगड़ता नहीं कि उस की बात मुकरावे।

रब्बिस्समावाति बल्अजि व मा बंनहुमरंहमानि ला यम्मिल्कू-न मिन्हु खिताबाठ (३७)
 यो-म यकूमरुह् वल्मला-इकतु सफल्-ला य-त-कल्लमू-न इल्ला मन् अजि-न
 लहुर्हमानु व क्का-ल सबाबा (३८) जालिकल-योमुल्हक्कुफ-मन् शा-अत्त-ख-ज
 इला रब्बिही मआबा (३९) इन्ना अब्जनाकुम् अजाबन् करीबय्यो-म यत्सुल्-
 मरुज मा कद्-द-मत यदाहु व यकूलुल-काफिर
 यालंतनी कुन्तु तुराबा ★ (४०)

❧ सूरतुन्-नाजिआति ८१

(मक्की) इस सूरः में अरबी के ७६१ अक्षर,
 १८१ शब्द, ४६ आयतें और २ रकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिरंहमानिरंहमीम •

वन्नाजिआति शकव्-॥ (१) वन्नाशि-
 ताति नशत्-व्-॥ (२) वस्साबिहाति सबहन् ॥
 (३) फस्साबिकाति सबकन् ॥ (४) फल्मुदब्बि-
 राति अमरा ॥ (५) यो-म तरजुफुराजिफतु ॥
 (६) तल्बअहुर-रादिकः ॥ (७) कुलूबु य्योम-
 इजिवाजिफतुन् ॥ (८) अब्सारहा खाशिअः
 ॥ (९) यकूलू-न अ इन्ना ल-मरदूद-न फिल्-
 हाफिरः ॥ (१०) अ इजा कुन्ना अिजामन्
 नखिरः ॥ (११) कालू तिल-क इजन् करंतुन् खासिरः ॥ (१२) फ-इन्नमा हि-य
 जज्-रतुंवाहिदतुन् ॥ (१३) फ-इजा हुम् बिस्साहिरः ॥ (१४) हल् अता-क हदीसु
 मूसा ॥ (१५) इज् नादाहु रब्बुह बिल्वादिल-मुकद्दसि तुवा ॥ (१६) इजहब् इला
 फिर्ओ-न इन्नह तगा ॥ (१७) फकुल् हल् ल-क इला अन् त-जक्का ॥ (१८) व
 अहिद-य-क इला रब्बि-क फ-तल्शा ॥ (१९) फ-अराहुल-आ-य-तुल-कुबरा ॥ (२०)
 फ-कज्ज-ब व असा ॥ (२१) सुम्-म अद्-ब-र यस्आ ॥ (२२) फ-ह-श-र फनादा
 (२३) फक्का-ल अ-न रब्बुकुमुल-अ-म-ला ॥ (२४) फ-अ-ख-जहुल्लाहु नकालल्-
 आखिरति बल्ऊला ॥ (२५) इन्-न फी जालि-क ल-अबरतुल-लिमय्यल्शा
 ★ (२६) अ अन्तुम् अशददु खल् - कन् अमिस्समाउ ॥ बनाहा ॥ (२७)



वह जो आसमानों और ज़मीन और जो उन दोनों में है, सब का मालिक है, बड़ा मेहरबान, किसी को उस से बात करने का बारा न होगा। (३७) जिस दिन रूहल अमीन और (और) फ़रिश्ते सफ़्र बांध कर खड़े हों, तो कोई बोल न सकेगा, मगर जिस को (खुदा-ए-) रहमान इजाज़त बरसे और उस ने बात भी दुस्त कही हो। (३८) यह दिन बर-हक़ है। पस जो शस्स चाहे अपने परवरदिगार के पास ठिकाना बना ले। (३९) हम ने तुम को अज़ाब से, जो बहुत जल्द आने वाला है, आगाह कर दिया है। जिस दिन हर शस्स उन (आमाल) को जो उन से आगे भेजे होंगे, देख लेगा और काफ़िर कहेगा कि ऐ काश ! मैं मिट्टी होता। (४०) ★

८१ सूर: नाज़िआत ७६

सूर: नाज़िआत मक्की है। इस में छियालीस आयतें और दो रकूअ हैं।

शुरू खुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

उन (फ़रिश्तों) की क़सम, जो डूब कर खींच लेते हैं, (१) और उन की जो आसानी से खोल देते हैं, (२) और उन की जो तैरते-फिरते हैं, (३) फिर लपक कर आगे बढ़ते हैं, (४) फिर (दुनिया के) कामों का इन्तिज़ाम करते हैं (५) (कि वह दिन आ कर रहेगा), जिस दिन ज़मीन को भौंचाल आएगा, (६) फिर उस के पीछे और (भौंचाल) आएगा, (७) उस दिन (लोगों के) दिल डर रहे होंगे। (८) (और) आलें झुकी हुई (९) काफ़िर कहते हैं, क्या हम उलटे पांव फिर लौटेंगे? (१०) भला जब हम खोखली हड्डियां हो जाएंगे, (तो फिर जिंदा किए जाएंगे)। (११) कहते हैं कि यह लौटना तो नुस्मान (की वजह) है (१२) वह तो सिर्फ़ एक डांट होगी। (१३) उस वक़्त वे (सब हशर के) मैदान में जमा होंगे। (१४) भला, तुम को मूसा की हिकायत पढ़ुं ची है, (१५) जब उन के परवरदिगार ने उन को पाक मैदान (यानी) तुवा में पुकारा, (१६) (और हुक्म दिया) कि फ़िअौन के पास जाओ, वह सरकश हो रहा है, (१७) और (उस से) कहो, क्या तू चाहता है कि पाक हो जाए, (१८) और मैं तुझे तेरे परवरदिगार का रास्ता बताऊं, ताकि तुझ को ख़ौफ़ (पैदा) हो। (१९) शरअ उन्होंने ने उस को बड़ी निशानी दिखायी, (२०) मगर उस ने झुठलाया और न माना, (२१) फिर लौट गया और तद्बीरें करने लगा, (२२) और (लोगों को) इकट्ठा किया और पुकारा, (२३) कहने लगा कि तुम्हारा सब से बड़ा मालिक मैं हूँ। (२४) तो खुदा ने उस को दुनिया और आख़िरत (दोनों) के अज़ाब में पकड़ लिया। (२५) जो शस्स (खुदा से) डर रखता है, उस के लिए इस (क़िस्से) में इब्रत है। (२६) ★

भला तुम्हारा बनाना मुश्किल है या आसमान का? उसी ने उस को बनाया, (२७) उस की

१. जिन चीज़ों की यह ख़ुबियां बयान की गयी हैं, उन के बारे में आम राय यही है कि वे फ़रिश्ते हैं, इसी लिए तर्जुमे में हम ने फ़रिश्तों का लफ़्ज़ बड़ा दिया है। डूब कर खींचने से मुराद रूहों का खींचना है। किसी की रूह को मुश्किल से निकालते हैं और किसी की रूह को आसानी से गोया बन खोल देते हैं।

छत को ऊंचा किया, फिर उसे बराबर कर दिया, (२८) और उसी ने रात अंधेरी बनायी और (दिन को) धूप निकाली (२९) और उस के बाद ज़मीन को फैला दिया, (३०) उसी ने इस में से इस का पानी निकाला और चारा उगाया, (३१) और उस पर पहाड़ों का बोझ रख दिया। (३२) यह सब कुछ तुम्हारे और तुम्हारे चौपायों के फ़ायदे के लिए (किया)। (३३) तो जब बड़ी आफ़न आएगी, (३४) उस दिन इंसान अपने कामों को याद करेगा, (३५) और दोज़ख़ देखने वाले के सामने निकाल कर रख दी जाएगी, (३६) तो जिस ने सरकशी की, (३७) और दुनिया की ज़िदगी को मुक़द्दम समझा, (३८) उस का ठिकाना दोज़ख़ है। (३९) और जो अपने परवरदिगार के सामने खड़े होने से डरता और जी को स्वाहिशों से रोकता रहा, (४०) उस का ठिकाना बहिश्त है। (४१) (ऐ पैग़म्बर ! लोग) तुम से क्रियामत के बारे में पूछते हैं कि वह कब वाक़ेअ होगी ? (४२) सो तुम उस के ज़िक्र से किस फ़िक्र में हो ? (४३) उस का मुन्तहा (यानी वाक़ेअ होने का वक़्त) तुम्हारे परवरदिगार ही को (मालूम है) (४४) जो शक्स उस से डर रखता है, तुम तो उसी को डर सुनाने वाले हो। (४५) जब वे उस को देखेंगे, (तो ऐसा ह्याल करेंगे) कि गोया (दुनिया में सिर्फ़) एक शाम या सुबह रहे थे। (४६) ★

८० सूर: अ-ब-स २४

सूर: अ-ब-स मक्की है। इस में ४२ आयतें और एक रकूअ है।

शुरू खुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

(मुहम्मद मुस्तफ़ा) तुशरू हुए और मुंह फेर बैठे, (१) कि उन के पास एक अंधा आया, (२) और तुम को क्या ख़बर, शायद वह पाकी हासिल करता, (३) या सोचता तो समझाना उसे फ़ायदा देता। (४) जो परवाह नहीं करता, (५) उस की तरफ़ तो तवज्जोह करते हो, (६) हालांकि अगर वह न संवरे, तो तुम पर कुछ (इल्जाम) नहीं, (७) और जो तुम्हारे पास दीड़ता हुआ आया, (८) और (खुदा से) डरता है, (९) उस से तुम बे-रखी करते हो, (१०) देखो यह (क़ुरआन) नसीहत है, (११) पस जो चाहे, उसे याद रखे (१२) अदब के क़ाबिल पन्नों में (लिखा हुआ), (१३) जो बुलन्द मक़ाम पर रखे हुए (और) पाक हैं, (१४) (ऐसे) लिखने वालों के हाथों में, (१५) जो सरदार और नेक हैं, (१६) इंसान हलाक हो जाए, कैसा ना-शुका है (१७) उसे

१. पूछते-पूछते इसी तक पहुंचता है, बीच में सब बे-ख़बर हैं।

२. हज़रत इब्ने अब्बास रजि० कहते हैं कि जनाबे रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उल्वा बिन रबीआ और अबू जह्ल बिन हिशाम और अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब से बड़ी तवज्जोह से बातें कर रहे थे, क्योंकि आप दिस से चाहते थे कि वे इस्लाम ले आएँ। इतने में अब्दुल्लाह बिन उम्मे मक्तूम, जो आँखों से मजबूर थे, आए और हज़रत से कहने लगे कि मुझ को क़ुरआन सुनाइए और जो कुछ खुदा ने आप को सिखाया है, वह मुझे सिखाइए ? आप ने इस हालत में उन की बात को पसन्द न क़रमाया और पेशानी पर बल ला कर उस की तरफ़ से मुंह फेर लिया। इस पर वे आयतें नाज़िल हुयीं।

मिन् नुत्-फतिन् ॥ ख-ल-कहू फ-कद-व-रहू ॥ (१६) सुम्-सबी-ल यस्स-रहू ॥ (२०)
 सुम्-म अमातहू फ-अब-रहू ॥ (२१) सुम्-म इजा शा-अ अन्शरः ॥ (२२) कल्ला
 लम्मा यक्जि मा अ-म-रः ॥ (२३) फल्-यन्धुरिल-इन्सानु इला तमामिही ॥ (२४)
 अन्ना स-बन्नल-मा-अ स-बन्न ॥ (२५) सुम्-म श-कन्नल-अ-ज शकन्न ॥ (२६)
 फ-अम्बल्ला फ्रीहा हब्व- ॥ (२७) व अि-न-
 ब्व-व कब्व- ॥ (२८) व जैतूनव-व नरुल-व-
 (२९) व हदाइ-क गुलब- ॥ (३०) व
 फाकिहत-व-व अब्व- ॥ (३१) मताअल-लकुम्
 व लि-अन्नामिकुम् ॥ (३२) फ-इजा जा-अति-
 स्सखलः ॥ (३३) यो-म यफिरुल-मरउ मिन्
 अखीहि ॥ (३४) व उम्मिही व अबीहि ॥ (३५)
 व साहिबतिही व बनीह ॥ (३६) लि-कुल्लिम्-
 रिइम्-मिन्हुम् योमइजिन् शअनु य्युनीह ॥ (३७)
 वुजूहु य्योमइजिम्-मुस्फि-र-तुन् ॥ (३८) ज़ाहि-
 कतुम्-मुस्तविश-रतुन् ॥ (३९) व वुजूहु य्योमइजिन्
 अलहा ग-ब-रतुन् ॥ (४०) तहकुहा क-त-रः ॥ (४१)
 उलाइ-क हुमुल्-क-फ-रतुल्-फ-ज-रः ★ (४२)



८१ सूरतुत-तक्वीरि ७

(मक्की) इस सूरः में अरबी के ४३६ अक्षर, १०४ शब्द, २६ आयतें और १ रकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

इजशम्सु कुव्विरत् ॥ (१) व इजन्नुजूमन-क-द-रत् ॥ (२) व इजल-जिबालु
 सुय्यिरत् ॥ (३) व इजलजिशार अतिलत् ॥ (४) व इजल्वुहूश हुशिरत् ॥ (५) व
 इजलबिहार सुज्जिरत् ॥ (६) व इजन्नुफूसु जुव्विजत् ॥ (७) व इजल्मोऊदतु सुइ-
 लत् ॥ (८) बिअय्यि जम्बिन् कृतिलत् ॥ (९) व इजस्सुहुफु नुशिरत् ॥ (१०) व
 इजस्समाउ कुशितत् ॥ (११) व इजल - जहीमु सुअ-अिरत् ॥ (१२)
 व इजलजन्नतु उजिलफत ॥ (१३) अलिमत नफुसुम्मा अह - ज - रत ॥
 (१४) फला उक्सिमु बिल्लुन्नसिल्- ॥ (१५) जवारिल्-कुन्नस ॥ (१६)

(खुदा ने) किस बीज से बनाया ? (१८) नुस्के से बनाया, फिर उस का अन्दाजा मुकर्रर किया, (१९) फिर उस के लिए रास्ता आसान कर दिया, (२०) फिर उस को मौत दी, फिर कब्र में दफन कराया, (२१) फिर जब चाहेगा, उसे उठा खड़ा करेगा । (२२) कुछ शक नहीं कि खुदा ने उसे जो हुक्म दिया, उस ने उस पर अमल न किया, (२३) तो इंसान को चाहिए कि अपने खाने की तरफ नज़र करे । (२४) बेशक हम ही ने पानी बरसाया, (२५) फिर हम ही ने ज़मीन को चीरा-फाड़ा । (२६) फिर हम ही ने उसमें अनाज उगाया, (२७) और अंगूर और तरकारी, (२८) और जैतून और खजूरें, (२९) और घने-घने बाग, (३०) और मेवे और चारा, (३१) (यह सब कुछ) तुम्हारे और तुम्हारे चारपायों के लिए बनाया, (३२) तो जब (क्रियामत का) गुल मचेगा, (३३) उस दिन आदमी अपने भाई से दूर भागेगा, (३४) और अपनी मां और अपने बाप से, (३५) और अपनी बीवी और अपने बेटे से, (३६) हर आदमी उस दिन एक फ़िक्र में होगा, जो उसे (मस्तूरक़ियत के लिए) बस करेगा, (३७) और कितने मुंह उस दिन चमक रहे होंगे, (३८) हंसे और खिले हुए चेहरे (ये नेक लोग हैं), (३९) और कितने मुंह होंगे, जिन पर धूल पड़ रही होगी, (४०) (और) स्याही चढ़ रही होगी, (४१) ये कुफ़्कार बद-किरदार हैं (४२) ★



८१ सूर: तक्वीर ७

सूर: तक्वीर मक्की है और इस में २६ आयतें हैं । और १ रकूअ है ।

शुरू खुदा का नाम लेकर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है ।

जब सूरज लपेट लिया जाएगा, (१) और जब तारे बे-नूर हो जाएंगे, (२) और जब पहाड़ चलाए जाएंगे, (३) और जब ब्याने वाली ऊंटनियां बेकार हो जाएंगी, (४) और जब वहशी जानवर जमा किए जाएंगे, (५) और जब दरिया आग हो जाएंगे, (६) और जब रूहें (बदनों से) मिला दी जाएंगी । (७) और जब उस लड़की से जो ज़िदा दफन की गयी हो, पूछा जाएगा, (८) कि वह किस गुनाह पर मार दी गयी ? (९) और जब (अमलों के) दफ़्तर खोले जाएंगे, (१०) और जब आसमान की खाल खींच ली जाएगी, (११) और जब दोखल (की आग) भड़कायी जाएगी, (१२) और बहिश्त जब करीब लायी जाएगी, (१३) तब हर शख्स मालूम कर लेगा कि वह क्या ले कर आया है । (१४) हम को उन सितारों की क़सम ओ पीछे हट जाते हैं, (१५) और

जो सूर करते और गायब हो जाते हैं, (१६) और रात की क्रसम, जब खत्म होने लगती है, (१७) और सुबह की क्रसम जब नमूदार होती है, (१८) कि बेशक यह (कुरआन) बुलंद दर्जा फ़रिश्ते की जुबान का पैगाम है, (१९) जो ताक़त वाला, अशं के मालिक के यहां ऊंचे दर्जे वाला, (२०) सरदार (और) अमानतदार है। (२१) और (मक्के वालो!) तुम्हारे रफ़ीक़ (यानी मुहम्मद) दीवाने नहीं है। (२२) बेशक उन्होंने इस (फ़रिश्ते) को (आसमान के) खुले (यानी पूर्वी) किनारे पर देखा है, (२३) और वह छिपी बातों (के जाहिर करने) में वख़ील नहीं, (२४) और यह शैतान मर्दूद का कलाम नहीं। (२५) फिर तुम किधर जा रहे हो? (२६) यह तो जहान के लोगों के लिए नसीहत है, (२७) (यानी) उस के लिए जो तुम में से सीधी चाल चलना चाहे, (२८) और तुम कुछ भी नहीं चाह सकते, मगर वही जो खुदा-ए-रब्बुल आलमीन चाहे। (२९) ★



८२ सूर: इन्फितार ८२

सूर: इन्फितार मक्की है। इस में १९ आयतें हैं। और १ रुकूअ है।

शुरू खुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

जब आसमान फट जाएगा, (१) और जब तारे झड़ पड़ेंगे, (२) और जब दरिया वह (कर एक दूसरे से मिल) जाएंगे, (३) और जब कब्रें उखेड़ दी जाएगी, (४) तब हर शय्स मालूम कर लेगा कि उस ने आगे क्या भेजा था और पीछे क्या छोड़ा था? (५) ऐ इंसान! तुझ को अपने परवरदिगारे करीम के बारे में किस चीज ने धोखा दिया? (६) (वही तो है) जिस ने तुझे बनाया और (तेरे अंगों को) ठीक किया और (तेरी कामत को) एतदाल में रखा, (७) और जिस सूरत में चाहा, तुझे जोड़ दिया, (८) मगर हैरत (अफ़सोस!) तुम लोग बदले को झुठलाते हो, (९) हालांकि तुम पर निगहबान मुकर्रर हैं, (१०) बुलंद मर्तबा, (तुम्हारी बातों के) लिखने वाले, (११) जो तुम करते हो, वे उसे जानते हैं, (१२) बेशक नेक लोग नेमतों (की) बहिश्त में होंगे। (१३) और बुरे दोख़ल में, (१४) (यानी) बदले के दिन उस में दाख़िल होंगे, (१५) और उस से छिप नहीं सकेंगे, (१६) और तुम्हें क्या मालूम कि बदले का दिन कैसा है? (१७) फिर तुम्हें क्या मालूम कि बदले का दिन कैसा है? (१८) जिस दिन कोई किसी का कुछ भला न कर सकेगा और हुकम उस दिन खुदा ही का होगा। (१९) ★ ●

८३ सुरतुल-मुतफिक्रीन ८६

(मक्की) इस सुरः में अरबी के ७५८ अक्षर, १७२ शब्द, ३६ आयतें और १ हकूअ है।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम •

- बैलुल् - लिमुतफिक्रीन ॥ (१) अल्लजी-न इजवतालू अलन्नासि यस्तोफून
 (२) व इजा कालू-हुम् अव्व-जूनहुम् युख्सिरून ॥ (३) अला यजुनु उलाइ-क
 अन्नहुम् मबअसून ॥ (४) लियोमिन् अजीम ॥ (५) यौ-म यकूमन्नासु लिरबिबल् -
 आलमीन ॥ (६) कल्ला इन्-न किताबल्-फुज्जारि लफी सिज्जीन ॥ (७) व मा
 अदरा-क मा सिज्जीन ॥ (८) किताबुम्-मकूम
 (९) बैलुय्यो-म - इजिल्लिल्-मुकज्जिबीन ॥ (१०)
 अल्लजी-न युक्ज्जिबू-न बियौमिद्दीन ॥ (११)
 व मा युक्ज्जिबु बिही इल्ला कुल्लु मुअ-तदिन्
 असीम ॥ (१२) इजा तुत्ता अलैहि आयातुना
 कालू असातीरुल्-अव्वलीन ॥ (१३) कल्ला
 बल् रा-न अला कुलूबिहिम् मा कानू यक्सिबून
 (१४) कल्ला इन्नहुम् अर्रबिबहिम् यौमइजिल्-
 ल-मह्जबून ॥ (१५) सुम्-म इन्नहुम् लसालुल्-
 जहीम ॥ (१६) सुम्-म युकालु हाजल्लजी कुन्तुम्
 बिही तुक्ज्जिबून ॥ (१७) कल्ला इन्-न किताबल्-
 अब्रारि लफी अल्लिय्यीन ॥ (१८) व मा
 अदरा-क मा अल्लिय्यून ॥ (१९) किताबुम् -
 मकूमय ॥ (२०) यशहदुहुल् - मुकर्रबून ॥ (२१)
 इन्नल् - अब्रा-र लफी नजीम ॥ (२२) अलल् - अराइकि यन्जुरून ॥ (२३)
 तज्ज - रिफू फी वुजुहिहिम् नज्ज-र-तन्नजीम ॥ (२४) युस्की-न मिर्रहीकिम् -
 मस्तूम ॥ (२५) खितामुह् मिसक ॥ व फी जालि-क फल् - य-त-नाफिसिल्-
 मु-त-नाफिसून ॥ (२६) व मिजाजुह् मिन् तस्नीम ॥ (२७) अंनय्यशरबु बिहल् -
 मुकर्रबून ॥ (२८) इन्नल्लजी-न अजरूम कानू मिनल्लजी-न आमनू यज्ज-हकून ॥ (२९)



८३ सूरः मुतफ़्फ़िनीन ८६

सूरः तत्फ़्फ़िनीन मक्की है, इस में ३६ आयतें और १ सूबा है।

शुरू सुदा का नाम लेकर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

नाप और तौल में कमी करने वालों के लिए खराबी है, (१) जो लोगों से नाप कर लें तो पूरा लें, (२) और जब उन को नाप कर या तौल कर दें तो कम दें, (३) क्या ये लोग नहीं जानते कि उठाए भी जाएंगे, (४) (यानी) एक बड़े (सस्त) दिन में, (५) जिस दिन (तमाम) लोग रब्बुल आलमीन के सामने खड़े होंगे। (६) सुन रखो कि बद-कारों के आमाल सिज्जीन में हैं, (७) और तुम क्या जानते हो कि सिज्जीन क्या चीज है? (८) एक दफ़्तर है लिखा हुआ। (९) उस दिन झुठलाने वालों की खराबी है, (१०) (यानी) जो इसाफ़ के दिन को झुठलाते हैं, (११) और उस को झुठलाता वही है जो हृद से निकल जाने वाला गुनाहगार है। (१२) जब उस को हमारी आयतें सुनाई जाती हैं, तो कहता है, यह तो अगले लोगों की कहानियां हैं। (१३) देखो, ये जो (बुरे आमाल) करते हैं, उन का उन के दिलों पर जंग बैठ गया है, (१४) बेशक ये लोग उस दिन अपने परवरदिगार (के दीदार) से ओट में होंगे, (१५) फिर दोजख में जा दाखिल होंगे, (१६) फिर उन से कहा जाएगा कि यह वही चीज है जिस को तुम झुठलाते थे। (१७) (यह भी) सुन रखो कि नेकों के आमाल इल्लीयीन में है, (१८) और तुम को क्या मालूम कि इल्लीयीन क्या चीज है? (१९) एक दफ़्तर है लिखा हुआ, (२०) जिस के पास मुकर्रब (फ़रिस्ते) हाज़िर रहते हैं। (२१) बेशक नेक लोग चैन में होंगे, (२२) तल्लों पर बैठे हुए नज़ारे करेंगे, (२३) तुम उन के चेहरों ही से राहत की ताज़गी मालूम कर लोगे, (२४) उन को खालिस शराब मुहरबन्द पिलायी जाएगी, (२५) (२६) जिस की मुहर मुश्क की होगी, तो (नेमतों का) शौक रखने वालों को चाहिए कि उसी का चाव करें। (२६) और इस में तस्नीम (के पानी) की मिलावट होगी। (२७) वह एक चश्मा है, जिस में से (खुदा के) मुकर्रब पिएंगे, (२८) जो गुनाहगार (यानी कुफ़्कार) हैं, वे (बुनिया में) मोमिनों से हंसी किया करते थे। (२९) और जब

व इजां मरुबिहिम् य-त-गा-मजून (३०) व इजन्कलबू इल अहिलहिमुन्क-लबू
फकिहीन (३१) व इजा रओहुम् कालू इन्-न हाउलाइ लज्जाल्लून ॥ (३२) व
मा उसित् अलैहिम् हाफिजीन (३३) फल-योमलजी-न आमनू मिनल्-कुफ्फारि
यज्ज-हकून ॥ (३४) अलल् - अराइ-कि ॥ यज्जूरून (३५) हल् सुव्विबल्-
कुफ्फार मा कानू यफ्-अलून (३६)

उन के पास से गुजरते, तो हिकारत से इशारे करते, (३०) और जब अपने घर को लौटते, तो इतराते हुए लौटते, (३१) और जब उन (मोमिनों) को देखते तो कहते कि ये तो गुमराह हैं, (३२) हालांकि वे उन पर निगरा बना कर नहीं भेजे गये थे। (३३) तो आज मोमिन काफ़िरो से हंसी करेंगे, (३४) (और) तस्त्तों पर (बैठे हुए उन का हाल) देख रहे होंगे। (३५) तो काफ़िरो को उन के अमलों का (पूरा-पूरा) बदला मिल गया। (३६) ★

८४ सूर: इन्शिकाक ८३

सूर: इन्शिकाक मक्की है, इस में पचीस आयतें हैं और १ रुकूअ है।

शुरू खुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

जब आसमान फट जाएगा, (१) और अपने परवरदिगार का फ़रमान बजा जाएगा और उसे वाजिब भी यही है, (२) और जब ज़मीन हमवार कर दी जाएगी। (३) और जो कुछ इस में है, उसे निकाल कर बाहर डाल देगी और (बिल्कुल) खाली हो जाएगी, (४) और अपने परवरदिगार के इशारे की तामील करेगी और उस को लाज़िम भी यही है, (तो क्रियामत कायम हो जाएगी।) (५) ऐ इंसान! तू अपने परवरदिगार की तरफ़ (पहुंचने में) ख़ूब कोशिश करता है, सो उस से जा मिलेगा। (६) तो जिस का नामा (-ए-आमाल) उस के दाहिने हाथ में दिया जाएगा, (७) उस से आसान हिसाब लिया जाएगा, (८) और वह अपने घर वालों में खुश-खुश आएगा, (९) और जिस का नामा (-ए-आमाल) उस की पीठ के पीछे से दिया जाएगा, (१०) वह मोत को पुकारेगा, (११) और दोअल में दाख़िल होगा, (१२) यह अपने अहल (व अयाल) में मस्त रहता था, (१३) और ख़याल करता था कि (ख़ुदा की तरफ़) फिर कर न जाएगा, (१४) हां, (हां), -उस का परवरदिगार उस को देख रहा था। (१५) हमें शाप की लाली की क़सम! (१६) और रात की ओर जिन चीज़ों को वह इकट्ठा कर लेती है, उन की, (१७) और चांद की जब पूरा हो जाए, (१८) कि तुम दर्जा-दर्जा (ऊंचे रुबे पर) चढ़ोगे, (१९) तो उन लोगों को क्या हुआ है कि ईमान नहीं लाते, (२०) और जब उन के सामने क़ुरआन पढ़ा जाता है, तो सज़्दा नहीं करते, (२१) बल्कि काफ़िर झुठलाते हैं, (२२) और ख़ुदा उन बातों को, जो ये अपने दिलों में छिपाते हैं, ख़ूब जानता है, (२३) तो उन को दुख़ देने वाले अज़ाब की ख़बर सुन दो। (२४) हां, जो लोग ईमान लाए और नेक अमल करते रहे, उन के लिए बे-इन्तिहा बदला है। (२५) ★

८५ सूरतुल-बुरुजि २७

(मक्की) इस सूर. में अरबी के ४७५ अक्षर, १०६ शब्द, २२ आयतें और १ रकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

वस्समाइ जातिल्वुरुजि ॥ (१) वल-योमिल-भौअदि ॥ (२) व शाहिदि-व
मकहद ॥ (३) कुति-ल अस्हाबुल-उखदूदि ॥ (४) -न्नारि जातिल्वकूदि ॥ (५) इज्
हुम् अलेहा कुअदुव- ॥ (६) व हुम् अला मा यफ्-अलून बिल्-मुअमिनी-न शुहद ॥
(७) व मा न-कम् मिन्हुम् इल्ला अय्युअमिन् बिल्लाहिल-अजीजिल-हमीद ॥

(८) अल्लजी लहू मुल्कुस्समावाति वलअजि ॥

वल्लाहु अला कुल्लि शैइन् शहीद ॥ (९)

इन्नल्लजी-न फ-तनुल्-मुअमिनी-न वल-मुअमि-
नाति सुम्-म लम् यतूब फ-लहुम् अजाबु

ज-हन्न-म व लहुम् अजाबुल-हरीक ॥ (१०)

इन्नल्लजी-न आमनू व अमिलुस्सालिहाति

लहुम् जन्नातुन् तजरी मिन् तहितहल-अन्हारि

जालिकल-फौजुल-कबीर ॥ (११) इन्-न बत्-श

रन्बि-क ल-शदीद ॥ (१२) इन्नहू हु-व

युद्धिउ व युओद ॥ (१३) व हुवल-गाफूरल-

वदूद ॥ (१४) जुलअशिल-मजीद ॥ (१५) फअ-

आलुल-लिमा युरीद ॥ (१६) हल् अता-क

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
وَالصَّامِرَاتِ الْبُورِ ۝ وَالْهَيْمِ الْمَكْرُورِ ۝ وَالْمَكْرُورِ ۝ وَالْمَكْرُورِ ۝
قِيلَ أَفَسَ الْأَعْدَاءُ ۝ الْأَكْبَادِ الْوُجُوهِ ۝ أَرَأَيْتُمْ إِنْ كُنْتُمْ تُفْهَمُونَ ۝
وَهُمْ عَلَى مَا يَفْعَلُونَ بِالْمُؤْمِنِينَ شُهُودٌ ۝ وَمَا نَقَمُوا مِنْهُمْ إِلَّا
أَنْ يُؤْمِنُوا بِاللَّهِ الْعَزِيزِ الْعَلِيمِ ۝ الَّذِينَ لَهُمْ أَصْلَابُ السَّعِيرِ ۝
الْأَرْضِ ۝ وَاللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ۝ إِنَّ الَّذِينَ قَتَلُوا النَّفْسَ
وَالْمُؤْمِنِينَ تَوَلَّوْا يَوْمَ الْقِيَامَةِ عَذَابَ النَّارِ ۝ كَذَّبُوا عَنْكَ آيَاتِ
الْعَزِيزِ ۝ إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَنَجْزِيَنَّهُمْ أَجْرَهُمْ
مِنْ عِنْدِ الْأَنْفَرِ ۝ وَاللَّهُ الْعَزِيزُ الْكَرِيمُ ۝ إِنَّ بَطْشَ رَبِّكَ لَشَدِيدٌ ۝
إِنَّهُ هُوَ سَيِّدُ الْمَلَائِكَةِ ۝ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْوَدُودُ ۝ ذُو الْعَرْشِ
الْمَجِيدُ ۝ فَخَالِ بِمَا يُرِيدُ ۝ هَلْ أَتَاكَ حَدِيثُ الْجُنُودِ ۝
فَزَعَنَ ۝ وَسَوَاءٌ هَلْ يُدْعَى الْأَكْفَادُ ۝ فِي تَكْنِيبِ ۝ وَاللَّهُ مِنْ
ذُو الْبُرُوجِ ۝ فَحِطْ ۝ هَلْ مَوْجِدٌ ۝ جِنْدٌ ۝ هَلْ لَوْحٌ مُقْتَدِرٌ ۝
يُنْزِلُ السَّحَابَ ۝ فَكَيْفَ يُرْجَى ۝ فَوْجٌ ۝ جَمْعٌ ۝ وَآيَةٌ ۝
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
وَالصَّامِرَاتِ الْبُورِ ۝ وَاللَّهُ الْعَزِيزُ الْكَرِيمُ ۝

हदीसुल-जुनूद ॥ (१७) फिर्ओ-न व समूद ॥ (१८) बलिल्लजी-न क-फरू फी

तक्जीबिब - ॥ (१९) वल्लाहु मिव्वराइहिम् मुहीत ॥ (२०) बल्

हु-व कुरआनुम् - मजीद ॥ (२१) फी लौहिम् - महफूज ★ (२२)

८६ सूरतुत-तारिकि ३६

(मक्की) इस सूर. में अरबी के २५४ अक्षर, ६१ शब्द, १७ आयतें और १ रकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

वस्समाइ वत्तारिकि ॥ (१) व मा अदरा - क
मतारिकु - ॥ (२) - न्नज्मुस्साकिबु ॥ (३)

मंजिल ७
॥ आयतह्मितीयः ★ १/१० आ २२

८५ सूर: बुरुज २७

सूर: बुरुज मक्की है, इस में बाईस आयतें हैं। और १ रकूअ है।

शुरू खुदा का नाम लेकर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

आसमान की कसम, जिस में बुर्ज हैं, (१) और उस दिन की, जिसका वायदा है, (२) और हाज़िर होने वाले की और जो उस के पास हाज़िर किया जाए उस की, (३) कि खन्दकों (के खोदने) वाले हलाक कर दिए गए, (४) (यानी) आग (की खन्दकें) जिस में ईंधन (झोंक रखा था,) (५) जबकि वे उन (के किनारों) पर बैठे हुए थे, (६) और जो (सल्लियां) ईमान वालों पर कर रहे थे, उन को सामने देख रहे थे। (७) उन को मोमिनों की यही बात बुरी लगती थी कि वे खुदा पर ईमान लाए हुए थे, जो मालिक और तारीफ के काबिल है। (८) जिस की आसमानों और ज़मीन में बादशाही है और खुदा हर चीज़ को जानता है। (९) जिन लोगों ने मोमिन मदों और मोमिन औरतों को तकलीफें दीं और तौबा न की, उन को दोज़ख का (और) अज़ाब भी होगा और जलने का अज़ाब भी होगा। (१०) (और) जो ईमान लाए और नेक काम करते रहे, उन के लिए बाग हैं, जिन के नीचे नहरें बह रही हैं। यही बड़ी कामियाबी है (११) बेशक तुम्हारे परवरदिगार की पकड़ बहुत सल्ल है। (१२) वही पहली बार पैदा करता है और वही दोबारा (जिंदा) करेगा। (१३) और वह बल्लशने वाला (और) मुहब्बत करने वाला है। (१४) अर्थ का मालिक, बड़ी शान वाला, (१५) जो चाहता है, कर देता है, (१६) भला तुम को लश्करो का हाल मालूम हुआ है, (१७) (यानी) फ़िर्औन और समूद का, (१८) लेकिन काफ़िर (जान-बूझ कर) झूठलाने में (गिरफ़्तार) हैं, (१९) और खुदा (भी) उन को गिर्दा-गिर्द से घेरे हुए है। (२०) (वह किताब बकवास व झूठ नहीं,) बल्कि यह कुरआन अज़ीमुश्शान है, (२१) लौहे महफूज़ में (लिखा हुआ)। (२२) ★

८६ सूर: तारिक ३६

सूर: तारिक मक्की है, इस में सत्तरह आयतें और चार रकूअ है।

शुरू खुदा का नाम लेकर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

आसमान और रात के वक्त आने वाले की कसम ! (१) और तुम को क्या मालूम कि रात के वक्त आने वाला क्या है ? (२) वह तारा है, चमकने वाला, (३) कि कोई नपस नहीं, जिस पर

१. बुर्जों से मुराद तारे या उन की मंजिलें हैं। बुर्ज अरब में महल को कहते हैं, तारों की मंजिलों का नाम बुर्ज इस लिए रखा गया कि ये गोया उन के घर हैं।

२. कहते हैं अगले ज़माने में, जब कि दीन में बहुत-सी ख़राबियां पड़ गयीं और लोगों में फिरने और फ़साद बरपा हो गये, तो एक दीनदार और खुदा परस्त क्रोम ने अलग एक गांव आबाद किया और उस में रहने-सहने और खुदा की इबादत करने लगे, यहां तक कि उस के काफ़िर ज़ालिम बादशाह को इस हाल से इतिला हुई तो उस ने उन लोगों को कहला भेजा कि जिन बुतों को हम पूजते हैं, तुम भी उन्हीं को पूजो। उन्हीं ने इन्कार किया और कहा कि हम खुदा के सिवा किसी की इबादत न करेंगे, क्योंकि वह हमारा माबूद है। बादशाह ने धमकी दी कि अगर हमारे माबूदों को नहीं पूजोगे तो मैं तुम को क़त्ल कर दूंगा। इस का कुछ अमर उन के दिल पर न हुआ।

(मेष पृष्ठ ६५१ पर)

निगहवान मुकरर नहीं। (४) तो इंसान को देखना चाहिए कि वह काहे से पैदा हुआ है, (५) वह उछलते हुए पानी से पैदा हुआ है, (६) जो पीठ और सीने के बीच में से निकलता है। (७) बेशक खुदा उस के इआदे (यानी फिर पैदा करने) पर कादिर है, (८) जिस दिन दिलों के भेद जांचे जाएंगे, (९) तो इंसान की कुछ पेश न चल सकेगी और न कोई उस का मददगार होगा। (१०) आसमान की क्रसम, जो मेंह बरसाता है, (११) और जमीन की क्रसम ! जो फट जाती है, (१२) कि यह कलाम (हक को बातिल से) जुदा करने वाला है, (१३) और बेहदा बात नहीं, (१४) ये लोग तो अपनी तद्बीरों में लग रहे हैं, (१५) और अपनी तद्बीर कर रहे हैं, (१६) तो तुम काफ़िरों को मोहलत दो, बस कुछ दिन ही मोहलत दो। (१७)★

८७ सूर: अञ्जला ८

सूर: अञ्जला मक्की है। इस में उन्नीस आयतें हैं। और ? रुकूज है।

शुरू खुदा का नाम लेकर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

ऐ पैगम्बर ! अपने परवरदिगार जलिलुशान के नाम की तस्बीह करो, (१) जिस ने (इंसान को) बनाया, फिर (उस के अंगों को) ठीक किया, (२) और जिस ने (उस का) अन्दाज़ा ठहराया फिर उन को) रास्ता बताया, (३) और जिस ने चारा उगाया, (४) फिर उस को स्याह रंग का कूड़ा कर दिया। (५) हम तुम्हें पढ़ा देंगे कि तुम भूलोगे नहीं, (६) मगर जो खुदा चाहे। वह खुली बात को भी जानता है और छिपी को भी। (७) हम तुम को आसान तरीक़े की तौफ़ीक़ देंगे, (८) सो जहां तक नसीहत (के) नफ़ा देने (की उम्मीद) हो, नसीहत करते रहो। (९) जो ख़ौफ़ रखता है, वह तो नसीहत पकड़ेगा, (१०) और (बे-ख़ौफ़) बद-बस्त पहलू बचाएगा, (११) जो (क्रियामत को) बढ़ी (तेज़) आग में दाख़िल होगा, (१२) फिर वहां न मरेगा, न ज़िएगा। (१३) बेशक वह मुराद को पहुंच गया, जो पाक हुआ, (१४) और अपने परवरदिगार के नाम का ज़िक्र करता रहा और नमाज़ पढ़ता रहा, (१५) मगर तुम लोग तो दुनिया की ज़िंदगी को अस्तियार करते हो। (१६) हालांकि आख़िरत बहुत बेहतर और बाक़ी रहने वाली है। (१७) यही बात पहले सहीफ़ों (किताबों) में (लिखी हुई) है, (१८) (यानी) इब्राहीम और मूसा के सहीफ़ों में★ (१९)

(८७ ६४६ का शेष)

तब उस ने ख़ुदके खुदावा कर उन में आग जलवा दी और खुद उन के किनारे पर खड़े हो कर उन से कहने लगा कि या तो हमारे दीन को कुबूल करो या इस आग को अपनाओ, मगर उन्होंने ने बुतों की पूजना मंज़ूर न किया और आग में पड़ना मंज़ूर किया। यह हाल देख कर औरतें और बच्चे चिल्ला उठे। दीनदार शोहर और बाप जो खुदा पर पूरा ईमान रखते थे, उन्होंने ने तसल्ली दी कि उस को आग न समझे, यह तुम्हारे लिए निजात है। चनांचे सब के सब इस में कूद पड़े। कहते हैं कि आग के शोले अभी उन के ज़िस्मों तक पहुंचने न पाए थे कि खुदा ने उन की रुहें क़व्व कर लीं और आग भड़क कर बादशाह और उस के दरबारियों में जो किनारे पर खड़े थे, आ लगी और सब को जला कर खाक कर दिया।

१. दिलों के भेद जानने से यह मुराब है कि ताल्लुकात और स्थालात जाहिर कर दिए जाएंगे और अच्छे-बुरे अलग कर दिए जाएंगे।

८८ सूरतुल-गाशियति ६८

(मक्की) इस सूर: में अरबी के ३८ अक्षर, ६३ शब्द, २६ आयतें और १ रकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिररह्मानिररहीम •

हल् अता-क हद्दीमुल-गाशियः ॥ (१) वुजूहु य्योमइजिन् खाशि-अतुन् ॥ (२)
 आमि-लतुन् नासि-बतुन् ॥ (३) तस्ला नारन् हामि-य-तन् ॥ (४) तुस्का मिन्
 अंतिन् आनियः ॥ (५) लै-स लहुम् तआमुन् इस्ला मिन् जरीअिल्-॥ (६) - ला
 युस्मिनु व ला युनी मिन् जू-अ ॥ (७) वुजूहु य्योमइजिन् नाअिमतुल-॥ (८)

लिसअ-यिहा राजियतुन् ॥ (९) फ्री जन्नतिन्

आलि-यतिल-॥ (१०) ला तस्मजु फ्रीहा

लागियः ॥ (११) फ्रीहा अंनुन् जारियः ॥ (१२)

फ्रीहा सुरुम्-मफूअतु व-॥ (१३) व अक्वा-

बुम्-मोजूअतु व-॥ (१४) व नमारिक् मस्फू-

फतु व-॥ (१५) व जराबियु मनूसः ॥ (१६)

अ-फला यन्जुरून इलल् - इबिलि कै-फ

खुलिक्त् (१७) व इलस्समाइ कै-फ रुफि-

अत् (१८) व इलल्-जिबालि कै-फ नुसिबत्

(१९) व इलल्-अजि कै-फ सुतिहत्

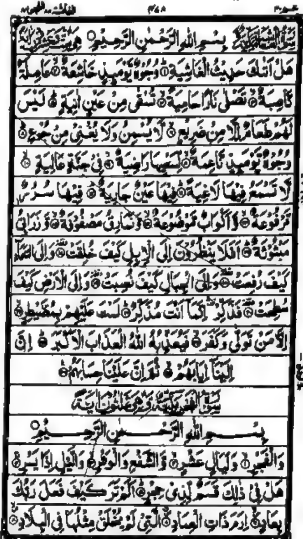
(२०) फ-जकिक्त् इल्म अन् - त

मुजकिक्त् ॥ (२१) लस - त अलैहिम्

बिमुसैतिरिन् ॥ (२२) इस्ला मन्

त-वल्ला व क-फर ॥ (२३) फयुअज्जिबुहल्लाहुल-अजाबल

इन-न इलैना इयाबहुम् ॥ (२४) सुम्-म इन-न अलैना हिसाबहुम् ॥ (२६)



८९ सूरतुल-फजिर १०

(मक्की) इस सूर: में अरबी के ५८ अक्षर, १३७ शब्द, ३० आयतें और १ रकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिररह्मानिररहीम •

वल्फजिर ॥ (१) व लयालिन् अशिरव्-॥ (२) वशफअि वल्वतिर ॥
 (३) वल्लैलि इजा यस्तिर ॥ (४) हल् फ्री जालि-क क-समुल्लिजी हिज्र ॥ (५)
 अ-लम् त-र कै-फ फ-अ - ल रब्बु-क बिआदिन् ॥ (६) इर-म
 जातिलबिमादि-॥ (७) -ल्लती लम् युल-लक् मिस्लुहा फिल्लिलाद ॥ (८)

८८ सूरः गाशियः ६८

सूरः गाशियः मक्की है, इस में २६ आयतें हैं और १ रुकूअ है।

शुरू खुदा का नाम लेकर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

भला तुम को डांप लेने वाली (यानी क्रियामत) का हाल मालूम हुआ है? (१) उस दिन बहुत से मुंह (वाले) जलील होंगे, (२) सख्त मेहनत करने वाले, थके-मादे, (३) दहकती आग में दाखिल होंगे, (४) एक खोलतैं हुए चश्मे का उन को पानी पिलाया जाएगा, (५) और कांटेदार झाड़ के सिवा उन के लिए कोई खाना नहीं (होगा), (६) जो न मोटा बनये, न भूल में कुछ काम आए। (७) और बहुत से मुंह (वाले) उस दिन खुश होंगे, (८) अपने आमाल (के बदले) से खुश दिल, (९) ऊंची बहिश्त में, (१०) वहां किसी तरह की बकवास नहीं सुनेंगे, (११) उस में चश्मे बह रहे होंगे, (१२) वहां तख्त होंगे ऊंचे बिछे हुए, (१३) और आबखोरे (क़रीने से) रखे हुए, (१४) और गाव तकिए क़तार की क़तार लगे हुए, (१५) और उम्दा मस्नदें बिछी हुई। (१६) ये लोग ऊंटों की तरफ़ नहीं देखते कि कैसे (अजीब) पैदा किए गए हैं, (१७) और आसमान की तरफ़ कि कैसा बुलन्द किया गया है, (१८) और पहाड़ों की तरफ़ कि किस तरह खड़े किए गए हैं, (१९) और ज़मीन की तरफ़ कि किस तरह बिछायी गयी, (२०) तो तुम नसीहत करते रहो कि तुम नसीहत करने वाले ही हो, (२१) तुम उन पर दारोगा नहीं हो, (२२) हां, जिसने मुंह फेरा और न माना, (२३) तो खुदा उस को बड़ा अज़ाब देगा। (२४) बेशक उन को हमारे पास लौट कर आना है, (२५) फिर हम ही को उन से हिसाब लेना है। (२६) ★ ●

८९ सूरः फ़ज्र १०

सूरः फ़ज्र मक्की है, इस में तीस आयतें हैं और १ रुकूअ है।

शुरू खुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

फ़ज्र की क़सम, (१) और दस रातों की, (२) और जुफ़्त और ताक़ की, (३) और रात की जब जाने लगे, (४) (और) बेशक ये चीज़ें अक्लमन्दों के नज़दीक़ क़सम खाने के लायक़ हैं (कि काफ़िरों को ज़रूर अज़ाब होगा।) (५) क्या तुमने नहीं देखा कि तुम्हारे परवरदिगार ने आद' के साथ क्या किया? (६) (जो) इरम (कहलाते थे, इतने) लम्बे क़द। (७) कि तमाम

१. दस रातों के तै करने में अलग-अलग क़ौल हैं। कुछ लोग कहते हैं, उन से ज़िलहिज्जा का अशरा मुराद है, कुछ का क़ौल है रमज़ान का पहला अशरा मुराद है, मगर कोई दलील इस पर नहीं कि इस से यही अशरे मुराद है।

२. आद दो थे। पहले आद जिन को इरम कहते हैं, दूसरे आद समूद। इरम के आद हज़रत हूद अलै० की उम्मत के लोग थे। इरम उस के क़बीले का नाम था।

व समूहलजी-न जाबुस्सख्-र बिल्वादि॥ (९) व फिर्ओ-न जिल्ओतादि॥ (१०)
लजी-न त्गो फिल्लिलादि॥ (११) फ-अक्सरु फ्रीहल्फसाद॥ (१२) फ-सब्-व
अलैहिम् रब्बु-क सो-त अजाब॥ (१३) इन्-न रब्ब-क लबिल्-मिसाद॥ (१४) फ-
अम्मल-इन्सानु इजा मब्तलाहु रब्बुहु फ-अक्-र-महू व नअ-अ-महू॥ फ-यकूल रब्बी

अक्-र-मन॥ (१५) व अम्मा॥ इजा मब्तलाहु
फ-क-द-र अलैहि रिस्कहू॥ फ-यकूल रब्बी अहानन्
(१६) कल्ला बल् ला तुकिरमूनल्-यती-म
(१७) व ला तहा-अजून अला तआमिल-
मिस्कीन॥ (१८) व तअकुलूनत्तुरा-स अक्-
लल्-लम्मव्-॥ (१९) व तुहिब्बूनल्-मा-ल
हुब्बन् जम्मा॥ (२०) कल्ला इजा दुक्कतिल-
अरजु दक्कन् दक्कव्-॥ (२१) व जा-अ रब्बु-क
वल-म-लकु सफफन् सफफा॥ (२२) व जो-अ
योमइजिम्-बिज-हन्न्-म॥ योमइजिय-त-जक्कल-
इन्सानु व अन्ना लहुज्जिकरा॥ (२३) यकूल

وَسُوَدَّ الَّذِينَ جَاءُوا الْعَسْكَرَ مِنَ الْأَوَّلِ ۖ وَفَزَعَنَّا فِي الْأَوَّلِ
الَّذِينَ طَفَرُوا فِي الْبُيُوتِ ۖ فَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا الْعِيسَىٰ ۖ فَصَبَّ عَلَيْهِمْ
رَبُّكَ سَوَاطِدَ ۖ إِنَّ رَبَّكَ لَبِالْبِرَّاءَةِ وَبِالْإِنْسَانِ إِذَا
مَا ابْتَلَاهُ رَبُّكَ فَأَكْرَمَهُ وَنَقَصَهُ ۖ وَتَقُولُ إِنِّي الْكَافِرُ ۖ وَإِنَّا
إِذَا مَا ابْتَلَاهُ فَقَدَّرْنَا عَلَيْهِ رِزْقَهُ ۖ فَيَقُولُ رَبِّي أَهَانَنِ ۖ وَلَا
يَلَّا لَمْ يَكُفِّرُوا مِنَ الْعَيْبَةِ ۖ وَلَا يَكْفُرُونَ عَلَىٰ طَعَامِ الْبُكَوَيْنِ ۖ
وَأَكْثَرُونَ الْوَرَاثَ ۖ أَكْثَرُ لِيَاهِ وَتَحْيِينَ الْبَالِ حَيَاتُهُ ۖ وَلَا
وَلَبَّى الْأَرْضُ دَكَّاءُ ۖ وَكَانَ جَاءَ رَبُّكَ ۖ وَالسَّكَّاءُ صَافً ۖ وَ
جَاءَ ۖ يَوْمَئِذٍ بِمَنْجَرٍ ۖ يَوْمَئِذٍ يَتَذَكَّرُ الْإِنْسَانُ ۖ وَأَلَّا
الَّذِينَ يَقُولُ يَلْبِسُونَ قَدَمَاتِ ۖ إِنَّمَا ۖ فَيُؤَسِّدُونَ الْأَصْنَافَ
عَذَابًا ۖ أَحَدًا ۖ وَلَا يُؤْنِقُ ۖ وَكَانَ أَحَدًا ۖ إِنَّمَا ۖ الْقَسْفُ
الْمُطْمَئِنَّةَ ۖ وَرَجَعُوا إِلَىٰ رَبِّهِمْ رَاجِعَةً ۖ فَتَرَوْنَ ۖ فَكَانَ
فِي عَيْنَيْهِ ۖ وَانْزِلْ جَنَّتِي ۖ
سُورَةُ الْبَلَدِ ۖ يَكُونُ فِي عَشْرِ مَرَاتٍ
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
لَا أُقْسِمُ بِهَذَا الْبَلَدِ ۖ وَأَنْتَ حَرِّمْتَ الْبَلَدَ ۖ وَاللَّيْلُ مَا
وَلَكِنَّ ۖ لَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ فِي أَحْسَنِ تَقْوِيمٍ ۖ أَنْ تَبْجِدَ عَدُوَّ

यालैतनी कद्दम्तु लिहयाती॥ (२४) फयौमइजिल्ला युअज्जिबु अजाबहू अ-हदु व्-॥
(२५) व ला यूसिकु व-साकहू अ-हद॥ (२६) या अय्यतुहन्नफसुल-मुत्तमइन्नतु
(२७) -जिअी इला रब्बिकि राजि - य - तम् - मज्जियतन्॥ (२८)
फदखुली फ्री अिबादी॥ (२९) वदखुली जन्नती ★ (३०)

६० सूरतुल्-ब-लदि ३५

(मक्की) इस सूरः में अरबी के ३४७ अक्षर, ८२ शब्द, २० आयतें और १ रूकूअ है।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

ला उकसिमु बिहाजल्ब-लदि॥ (१) व अन्-त हिल्लुम्-बिहाजल्ब-लदि॥
(२) व वालिदिव्-व मा व-लद॥ (३) ल-कद् ख-लक्नल-इन्सान फ्री
क - बद॥ (४) अ - यह्सबु अल्लय्यविद-र अलैहि अ-हद॥ (५)

मुल्क में ऐसे पैदा नहीं हुए थे, (८) और समूद के साथ (क्या किया) जो (कुरा की) वादी में पत्थर तराशते और (घर बनाते) थे ? (९) और फ़िऔन के साथ (क्या किया) जो खेमे और मेखें रखता था ? (१०) ये लोग मुल्कों में सरकश हो रहे थे, (११) और उन में बहुत-सी खराबियाँ करते थे, (१२) तो तुम्हारे परवरदिगार ने उन पर अज़ाब का कोड़ा नाज़िल किया, (१३) बेशक तुम्हारा परवरदिगार ताक में है, (१४) मगर इंसान (अजीब मल्लूक है कि) जब उस का परवरदिगार उस को आजमाता है कि उसे इज़ज़त देता और नेमत बरूशता है, तो कहता है कि (आ हा) मेरे परवरदिगार ने मुझे इज़ज़त बरूशी। (१५) और जब (दूसरी तरह) आजमाता है कि उस पर रोज़ी तंग कर देता है, तो कहता है कि (हाय) मेरे परवरदिगार ने मुझे जलील किया। (१६) नहीं, बल्कि तुम लोग यतीम की खातिर नहीं करते, (१७) और न मिस्कीन को खाना खिलाने का चाव पैदा करते हो, (१८) और मीरास के माल को समेट कर खा जाते हो, (१९) और माल को बहुत ही अजीज़ रखते हो, (२०) तो जब ज़मीन की बुलंदी कूट-कूट कर पस्त कर दी जाएगी, (२१) और तुम्हारा परवरदिगार (जलवा फ़रमां होगा) और फ़रिश्ते लाइन बना-बना कर आ मौजूद होंगे, (२२) और दोज़ख उस दिन हाज़िर की जाएगी, तो इंसान उस दिन चेतेशा, मगर (अब) चेतने (से) उसे (फ़ायदा) कहाँ (मिल सकेगा ?) (२३) कहेगा, काश ! मैं ने अपनी (हमेशा की) जिंदगी के लिए कुछ आगे भेजा होता, (२४) तो उस दिन न कोई खुदा के अज़ाब की तरह का (किसी को) अज़ाब देगा। (२५) और न कोई वैसा जकड़ना जकड़ेगा। (२६) ऐ इत्मीनान पाने वाली रूह ! (२७) अपने परवरदिगार की तरफ़ लौट चल, तू उस से राज़ी, वह तूज़ से राज़ी, (२८) तू मेरे (मुम्ताज़) बन्दों में शामिल हो जा, (२९) और मेरी बहिश्त में दाखिल हो जा, (३०) ★



६० सूर: ब-लद ३५

सूर: ब-लद मक्की है, इस में बीस आयतें और १ रकूअ हैं।

शुरू खुदा का नाम लेकर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

हमें इस शहर (मक्का) की क़सम, (१) और तुम इसी शहर में तो रहते हो, (२) और बाप (यानी आदम) और उस की औलाद की क़सम, (३) कि हमने इंसान को तकलीफ़ (की हालत) में (रहने वाला) बनाया है, (४) क्या वह ख्याल रखता है कि उस पर कोई क़ाबू न पाएगा (५)

१. समूद हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम की क्रोम का नाम है। ये लोग ऐसे कारीगर थे कि पहाड़ों में पत्थर काट-काट कर घर बनाते थे और उस में रहते-सहते थे।

यकूल अह-लक्तु मालल-लु-ब-दा ७ (६) अ-यहसबु अल्लम् य-रह अ-हद ७ (७)
अ-लम् नज-अल् लह अ-नैन ७ (८) व लिसानव-व श-कतेन ७ (९) व हदेनाहुन्-
नज्देन ७ (१०) फलक्त-ह-मल्-अ-क-ब-त ७ (११) व मा अद्रा-क मल्-अ-क-ब-
७ (१२) फक्कु र-क-बतिन् ७ (१३) औ इत-आमुन् फी योमिन् जी मस्ग-बतिय-
७ (१४) यतीमन् जा मक्-र-बतिन् ७ (१५)
औ मिस्कीनन् जा मत्-र-ब- ७ (१६) सुम्-म
का-न मिनल्लजी-न आमनू व त-वासो बिस्स-
वरि व त-वासो बिल्मर्-ह-म- ७ (१७) उलाइ-क
अस्हाबुल् - मै-म-न- ७ (१८) वल्लजी-न
क-फल् बिआयातिना हुम् अस्हाबुल्-मश-अ-म- ७
(१९) अलैहिम् नारुम्-मुअ-स-द- ७ (२०)

कहता है कि मैं ने बहुत-सा माल बर्बाद कर दिया। (६) क्या उसे यह गुमान है कि उस को किसी ने देखा नहीं? (७) भला हमने उस को दो आँखें नहीं दीं? (८) और जुबान और दो होंठ (नहीं दिए?) (९) (ये चीजें भी दीं) और उस को (भलाई-बुराई के) दोनों रास्ते भी दिखा दिए, (१०) मगर वह घाटी पर से हो कर न गुजरा, (११) और तुम क्या समझे कि घाटी क्या है? (१२) किसी की) गरदन का छुड़ाना, (१३) या भूख के दिन खाना खिलाना, (१४) यतीम रिश्तेदार को, (१५) या फ़कीर खाकसार को, (१६) फिर उन लोगों में भी (दाखिल) हुआ, जो ईमान लाए और सब्र की नसीहत और (लोगों पर) शपक़त करने की वसीयत करते रहे। (१७) यही लोग सआदत वाले हैं, (१८) और जिन्होंने हमारी आयतों को न माना, वे बद-बस्त हैं, (१९) ये लोग आग में बन्द कर दिए जाएंगे। (२०) ★

६१ सूरः शम्स २६

सूरः शम्स मक्की है। इस में पन्द्रह आयतें और १ रकूअ है।

शुरू खुदा का नाम लेकर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

सूरज की क़सम और उस की रोशनी की, (१) और चांद की, जब उस के पीछे निकले, (२) और दिन की जब उसे चमका दे, (३) और रात की जब उसे छिपा ले, (४) और आसमान की और उस ज़ात की, जिस ने उसे बनाया, (५) और ज़मीन की और उस की, जिस ने उसे फैलाया, (६) और इंसान की और उस की जिस ने उस के अंगों को बराबर किया, (७) फिर उस को बद-कारी (से बचने) और परहेजगारी करने की समझ दी, (८) कि जिस ने (अपने) नपस (यानी रूह) को पाक रखा, वह भुराद को पहुंचा, (९) और जिस ने उसे खाक में मिलाया, वह घाटे में रहा, (१०) समूद (कौम) ने अपनी सरकशी की वजह से (पैगम्बर को) झुठलाया। (११) जब उन में से एक निहायत बदबस्त उठा, (१२) तो खुदा के पैगम्बर (सालेह) ने उन से कहा कि खुदा की ऊंटनी और उस के पानी पीने की बारी से बचो, (१३) मगर उन्होंने पैगम्बर को झुठलाया और ऊंटनी की कूबे काट दीं, तो खूदा ने उन के गुनाह की वजह से उन पर अज़ाब नाज़िल किया और सब को (हलाक कर के) बराबर किया, (१४) और उस को उन के बदला लेने का कुछ भी डर नहीं। (१५) ★

६२ सूरः लैल ६

सूरः लैल मक्की है, इस में २१ आयतें और १ रकूअ हैं।

शुरू खुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

शुरू खुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।
रात की क़सम, जब (दिन को) छिपा ले, (१) और दिन की क़सम, जब चमक उठे, (२) और उस (ज़ात) की क़सम, जिस ने नर और मादा पैदा किए, (३) कि तुम लोगों की कोशिश

१. यतीम का एक हक़, नातेदार का एक हक़, जो दोनों हुए तो दो हक़।

२. खुदा ने हब्रत सालेह को एक ऊंटनी भोजखे के तौर पर दी थी, जो एक बड़े भारी पत्थर में से निकाली गयी थी। सालेह अलैहिस्सलाम ने उन लोगों से कहा कि यह ऊंटनी खुदा की है। उस को बुरी तरह हाथ न लगाना और जो दिन उस के पानी पीने का हो, उस में छेड़खानी न करना। उन्होंने यह बात न मानी और एक निहायत बद-बस्त शम्स ने जिस का नाम क्रिदार बिन सलिक था, ऊंटनी के माँव काट दिए। इस वजह से उन सब पर अज़ाब नाज़िल हुआ।

इन्-न सअ-यकुम् लशत्ता ॥ (४) फ-अम्मा मन् अअ-ता वत्तका ॥ (५) व सद्-द-क
बिल्हुस्ना ॥ (६) फ-स-नुयस्सिरूह लिल्-युस्रा ॥ (७) व अम्मा मम्-बखि-ल
वस्तरना ॥ (८) व कज्ज-ब बिल-हुस्ना ॥ (९) फ-स-नुयस्सिरूह लिल्-
युस्रा ॥ (१०) व मा युग्नी अन्हु मालुह इजा त-रद्दा ॥ (११) इन्-न अलैना
लल्हुदा ॥ (१२) व इन्-न लना
लल्-आखि-र-त्त वल्कुला ॥ (१३) फ-अज्जर-तुकुम्
नारन् त-लज्जा ॥ (१४) ला यस-लाहा
इल्लल-अशक- ॥ (१५) -ल्लजी कज्ज-ब
व त-वल्ला ॥ (१६) व सयुजन्नबुहल-
अत्त- ॥ (१७) -ल्लजी युअती मा-लहू
य-त्त-जवका ॥ (१८) व मा लि-अ-ह-दिन्
अिन्दहू मिन् निअ-मत्तिन् तुज्जा ॥ (१९)
इल्लल्लिया - अ वजिह रब्बिहिल - अअ-ला ॥
(२०) व लसी-फ यज्जा ★ (२१)

६३ सूरतुज्जुहा ११

(मक्की) इस सूरः में अरबी के १६६ अक्षर,
४० शब्द, ११ आयतें और १ रुकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिररहमानिररहीम •

वज्रजुहा ॥ (१) वल्लैलि इजा

सजा ॥ (२) मा वद्-द-अ-क रब्बु-क व मा कला ॥ (३) व लल्-आखिरतु
खैरुल्ल-क मिनल्-ऊला ॥ (४) व लसौ-फ युअ-ती-क रब्बु-क फ-तज्जा ॥ (५) अ-लम्
यजिद्-क यतीमन् फ-आवा ॥ (६) व व-ज-द-क ज़लिल्न् फ-हदा ॥ (७) व व-ज-
द-क आइल्न् फ-अना ॥ (८) फ-अम्मल्-यती-म कला तक्-हर् ॥ (९) व
अम्मस्साइ-ल कला तन्हर् ॥ (१०) व अम्मा बिनिअ-मति रब्बि-क फ-ह्दद्स् (११)

६४ सूरतु अ-लम् नशरह् १२

(मक्की) इस सूरे में अरबी के १०३ अक्षर, २७ शब्द, ८ आयतें और १ रुकूअ है।

बिस्मिल्लाहिररहमानिररहीम •

अ-लम् नशरह ल-क सद - र-क ॥ (१) व व-ज़अ-ना अन्-क

विज्ञ-र-क- ॥ (२) - ललजी अन्क-ज्ञ जह - र-क ॥ (३)

तरह-तरह की है, (४) तो जिस ने (खुदा के रास्ते में माल) दिया और परहेजगारी की, (५) और नेक बात को सच जाना, (६) उस को हम आसान तरीके की तोफ़ीक़ देंगे, (७) और जिस ने कंजूसी की और बे-परवाह बना रहा, (८) और नेक बात को झूठ समझा, (९) उसे सख्ती में पहुंचाएंगे, (१०) और जब वह (दोज़ख़ के गढ़े में) गिरेगा, तो उस का माल उस के कुछ भी काम न आएगा। (११) हमें तो राह दिखाना है, (१२) और आखिरत और दुनिया हमारी ही चीज़ें हैं, (१३) सो मैं ने तुम को भड़कती आग से डरा दिया। (१४) उस में वही दाख़िल होगा, जो बड़ा बद-बल्लत है, (१५) जिस ने झुठलाया और मुंह फेरा, (१६) और जो बड़ा परहेजगार है, वह (उस से) बचा लिया जाएगा, (१७) जो माल देता है ताकि पाक हो, (१८) और (इस लिए) नहीं (देता कि) उस पर किसी का एहसान (है), जिस का वह बदला उतारता है, (१९) बल्कि अपने खुदावंदे आला की रज़ामंदी हासिल करने के लिए देता है, (२०) और वह बहुत जल्द खुश हो जाएगा। (२१) ★

६३ सूर: जुहा ११

सूर: जुहा मक्की है और इस में ग्यारह आयतें और १ रकूअ है।

शुरू खुदा का नाम लेकर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

सूरज की रोशनी की कसम, (१) और रात (की अंधियारी) की जब छा जाए, (२) (ऐ मुहम्मद !) तुम्हारे परवरदिगार ने न तो तुम को छोड़ा और न (तुम से) नाराज़ हुआ, (३) और आखिरत तुम्हारे लिए पहली (हालत यानी दुनिया) से कहीं बेहतर है, (४) और तुम्हें परवरदिगार बहुत जल्द वह कुछ अता फ़रमाएगा कि तुम खुश हो जाओगे। (५) भला उस ने तुम्हें यतीम पाकर जगह नहीं दी, (बेशक दी) (६) और रास्ते से अनजान देखा तो सीधा रास्ता दिखाया, (७) और तंगदस्त पाया तो शर्नी कर दिया (८) तो तुम भी यतीम पर सितम न करना, (९) और मांगने वाले को झिड़की न देना, (१०) और अपने परवरदिगार की नेमतों का बयान करते रहना ★ (११)

६४ सूर: इन्शिराह १२

सूर: इन्शिराह मक्की है और इस में आठ आयतें और १ रकूअ है।

शुरू खुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

(ऐ मुहम्मद !) क्या हमने तुम्हारा सीना खोल नहीं दिया ? (बेशक खोल दिया।) (१) और तुम पर से बोझ भी उतार दिया, (२) जिस ने तुम्हारी पीठ तोड़ रखी थी, (३) और तुम्हारा

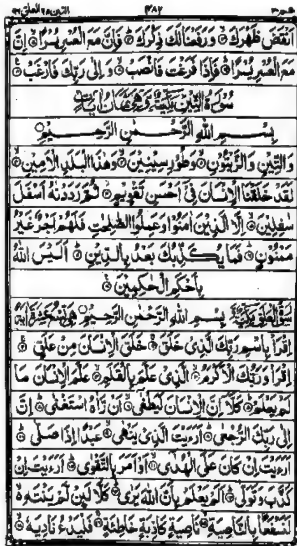
व र-कअ-ना ल-क जिक्-रक (४) फ-इन्-न म-अल्-अस्तिर युस्त्रन् (५) इन्-न
म-अल्-अस्तिर युस्त्रा (६) फइजा फ-रग्-त कन्सब् (७) व इला रब्बि-क फाग्व * (८)

६५ सूरतुत्तीनि २८

(मक्की) इस सूर: में अरबी के १६५ अक्षर, ३४ शब्द, ८ आयतें और १ रकूअ है।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

वत्तीनि वज्जैतुनि (१) वतूर
सीनी-न (२) व हाजल् - व-लदिल्-
अमीन (३) ल-कद् ख-लक्-नल्-इन्सान
फ्री अह्सनि तक्वीम (४) सुम्-म
र-ददनाहु अस्फ - ल साफ़िलीन (५)
इल्लल्लजी-न आमनू व अमिलुस्सालिहाति
फ-लहुम् अज्रन् गैर मम्नून (६) फमा
युक्जिबु-क बअ - दु बिद्दीन (७)
अलेसल्लाहु बि-अह्कमिल्-हाकिमीन * (८)



६६ सूरतुल्-अ-लक़ि १

(मक्की) इस सूर: में अरबी के २६० अक्षर,
७२ शब्द, १६ आयतें और १ रकूअ है।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

इक्-रअ बिस्मि रब्बिकल्लजी ख-लक

(१) ख-ल-कल् - इन्सान मिन् अ-लक
(२) इक्-रअ व रब्बुकल्-अकरमु- (३) ललजी अल्ल-म बिल्-क-लमि
(४) अल्ल-मल्-इन्सान मा लम् यअ-लम् (५) कल्ला इन्ल्-इन्सान
ल-यत्ता (६) अर्र - आहुस्ताना (७) इन्-न इला रब्बिकर्रुज्जा
(८) अ-र-ऐ-तल्लजी यन्हा (९) अब्-दन् इजा सल्ला (१०)
अ-र-ऐ-त इन् कान अलल्-हुदा (११) औ अ-म-र बित्तक्वा (१२) अ-र-ऐ-त
इन् कज्ज-ब व त-वल्ला (१३) अ-लम् यअ-लम् बिअन्नल्ला-ह यरा (१४)
कल्ला लइल्लम् यन्तहि ल-नस्फ - अम् - बिन्नासियति (१५) नासियतिन्
काजिबतिन् खातिअ- (१६) - फल् - यदअ नादिय: (१७)

जिक्र बुलंद किया, (४) हां, (हां) मुश्किल के साथ आसानी भी है। (५) (और) बेशक मुश्किल के साथ आसानी भी है, (६) तो जब फ़ारिश हुआ करो, तो (इबादत में) मेहनत किया करो, (७) और अपने परवरदिगार की तरफ़ मुतवज्जह हो जाया करो। (८) ✽

६५ सूर: तीन २८

सूर: तीन मक्की है और इस में आठ आयतें और १ हकूज है

शुरू खुदा का नाम लेकर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

इजीर की कसम और जैतून की, (१) और तूरे सीनीन की, (२) और इस अमन वाले शहर की, (३) कि हमने इंसान को बहुत अच्छी सूरत में पैदा किया है। (४) फिर (धीरे-धीरे) उस (की हालत) को (बदल कर) पस्त से पस्त कर दिया। (५) मगर जो लोग ईमान लाए और नेक अमल करते रहे, उन के लिए बे-इन्तिहा बदला है, (६) तो (ऐ आदम की ओलाद!) फिर तू बदले के दिन को क्यों झुठलाता है? (७) क्या खुदा सब से बड़ा हाकिम नहीं है? (८) ✽

६६ सूर: अलक १

सूर: अलक मक्की है और इसमें १६ आयतें और १ हकूज है।

शुरू खुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।

(ऐ मुहम्मद!) अपने परवरदिगार का नाम ले कर पढ़ो, जिस ने (दुनिया को) पैदा किया, (१) जिस ने इंसान को खून की फुटकी से बनाया, (२) पढ़ो और तुम्हारा परवरदिगार बड़ा करम वाला है, (३) जिस ने कलम के जरिए से इल्म सिखाया, (४) और इंसान को वे बातें सिखाईं, जिन का उस को इल्म न था, (५) मगर इंसान सरकश हो जाता है, (६) जबकि अपने आप को गनी देखता है, (७) कुछ शक नहीं कि (उस को) तुम्हारे परवरदिगार ही की तरफ़ लौट कर जाना है। (८) भला तुम ने उस शक्स को देखा, जो मना करता है। (९) (यानी) एक बन्दे को जब वह नमाज पढ़ने लगता है। (१०) भला देखो तो अगर यह सीधे रास्ते पर हो, (११) या परहेजगारी का हुक्म करे (तो मना करना कैसा!) (१२) और देख तो अगर उस ने दीने हक को झुठलाया और उस से मुंह मोड़ा, (तो क्या हुआ?) (१३) क्या उस को मालूम नहीं कि खुदा देख रहा है। (१४) देखो, अगर वह बाज्र न आएगा तो हम (उस की) पेशानी के बाल पकड़ कर घसीटेंगे। (१५) यानी उस झूठे खताकार की पेशानी के बाल। (१६) तो वह अपने यारों की

१. हजरत सल्ल० पर जो बड़ा सब से पहले नाज़िल हुई, वही इस सूर: की पहली पांच आयतें हैं। ये आयतें हिरा के शार में नाज़िल हुयीं, जहां आप तहरीक ले जा कर तंहाई में इबादत किया करते थे। आप फ़रमाते हैं कि जब फ़रिस्ते ने आ कर मुझ से कहा कि पढ़ो तो मैं ने कहा कि मैं पढ़ा हुआ नहीं हूं ता उस ने मुझे पकड़ कर दबाया, यहां तक कि मैं थक गया, फिर छोड़ दिया और कहा कि पढ़ो, मैं ने कहा कि मुझे पढ़ना नहीं आता, फिर दोबारा मुझ को दबोचा, यहां तक कि मैं थक गया, फिर छोड़ दिया और कहा कि पढ़ो। मैं ने कहा, मैं पढ़ना नहीं जानता। फिर तीसरी बार दबाया, यहां तक कि मैं थक कर जूर हो गया, फिर छोड़ दिया और कहा, 'इक़रब मिसिम रब्बिकल्लही खलक' और 'मालूम्यअलम' तक पहुंचा। इस के बाद आप डर की वजह से कांपते-कांपते हजरत खदीजा के पास आए और कहा कि मुझे लिहाक उड़ाओ। जब खीक डर हुआ तो आप ने अपना हाल बयान (शेष पृष्ठ ६८० पर)

स-नद-अनुज-बानियः ॥ (१८) कल्ला ७ ला तुतिअ-हु वरजुद वकतरिबु ★ □ (१९)

६७ सूरतुल-कदरि २५

(मक्की) इस सूरः में अरबी के ११५ अक्षर, ३० शब्द, ५ आयतें और १ रुकूअ हैं ।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

इन्ना अन्जलनाहु फी लैलतिल-कदरि ॥ (१) व मा अदरा-क
मा लैलतुल - कदर ७ (२) लैलतुल - कदर ७ खैरुम् - मिन् अल्फि
शहर ॥ (३) त-नज्जलुल-मलाइकतु वरूहु
फ्रीहा बिइजिन् रब्बिहिम् मिन् कुलि अमिरन् ॥ (४)
सलामुन् हि-य हत्ता मत-लअल-फजिर ★ ● (५)

६८ सूरतुल-बय्यिनति १००

(मदनी) इस सूरः में अरबी के ४१३ अक्षर,

६५ शब्द, ८ आयतें और १ रुकूअ हैं ।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

लम् युकुनिल्लजीन क-फरू मिन् अहिल्ल-
किताबि वल्मुशिरकी-न मुन्फक्की-न हत्ता तअत्ति-
यहुमुल-बय्यिनः ॥ (१) रसूलुम्-मिनल्लाहि यल्लू
सुहुफम्-मुतह-ह-र-तन् ॥ (२) फ्रीहा कुतुबुन्
कय्यिमः ७ (३) व मा त-फरकल्लजी-न ऊतुल्-
किता-ब इल्ला मिम्बअ-दि मा जाअतहुमुल-
बय्यिनः ७ (४) व मा उमिरू इल्ला लियअ-बुदुल्ला-ह मुस्लिमी-न लहुद्दी-न ॥ हु-नफा-अ
व युकीमुस्सला-त व युअनुजका-त व जालि-क दीनुल-कय्यिमः ७ (५) इन्नल्लजी-न
क-फरू मिन् अहिल्ल-किताबि वल्मुशिरकी-न फ्री नारि ज-हन्न-म खालिदीन फ्रीहा
उलाइ - क हुम् शर्हल - बरिय्यः ७ (६) इन्नल्लजी - न आमनू व
अमिलुस्सालिहाति ॥ उलाइ - क हुम् खैरुल - बरिय्यः ७ (७) जज्जलिहम्
अिन्-द रब्बिहिम् अन्नानु अदनिन् तजरी मिन् तहित-हल्-अन्हार खालिदी-न फ्रीहा
अ-ब-दन् ७ रज्जिल्लाहु अन्हुम् व रज्ज अन्हु ७ जालि-क लिमन् खशि-य रब्बः ★ (८)

سُورَةُ الْقَدْرِ	۶۷	مَكِّيَّةٌ
سُورَةُ الْقَدْرِ ٭		
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ		
إِنَّا أَنْزَلْنَاهُ فِي لَيْلَةِ الْقَدْرِ ۚ وَمَا أَدْرَاكَ مَا لَيْلَةُ الْقَدْرِ ۚ لَيْلَةُ الْقَدْرِ قَدْرٌ مِّنَ اللَّيْلِ يَنزُلُ فِيهِ الْفَلَكُ وَالنُّجُومُ ۚ وَمِنَ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ رَأْسٌ مِّنْ عِندِ رَبِّهِمْ لَمَّا سَمِعُوهُمُ حَتَّىٰ مَقَامِ الْغَيْثِ ۚ ثُمَّ سَمِعُوا عَصْفَ الْغَيْثِ ۚ وَكَانَ الْقَحْطُ مَكِيدًا ۚ		
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ		
لَمْ يَكُنِ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ وَالْمُشْرِكِينَ مُتَفَكِّحِينَ حَتَّىٰ تَأْتِيَهُمُ الْبَيِّنَةُ ۚ رُسُلٌ مِّنَ اللَّهِ يَتْلُوا صُحُفًا مُّطَهَّرَةً ۚ فِيهَا الْكُتُبُ قَيِّمَةٌ ۚ وَمَا تَقْوَىٰ الَّذِينَ اتَّقَوْا الْكِتَابَ إِلَّا مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَهُمُ الْبَيِّنَةُ ۚ وَمَا أُمِرُوا إِلَّا لَيَعْبُدُوا اللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ ۚ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ وَالْمُشْرِكِينَ فِي تَارِيحِهِمْ خُلِدُوا فِيهَا أُولَٰئِكَ هُمْ شَرُّ الْبَرِّ ۚ وَكَانَ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ أُولَٰئِكَ هُمْ خَيْرُ الْبَرِّ ۚ وَكَانَ عِندَ رَبِّكَ عَذَابُ عَذَابٍ يُعْرَىٰ مِنْ عَذَابِ الْآخِرِينَ ۚ		

मजलिस को बुला ले। (१७) हम भी अपने दोजख के मुबकिलों को बुलाएंगे। (१८) देखो, उस का कहा न मानना और सज़ा करना और (खुदा का) कुबं हासिल करते रहना। (१९) ★ □

६७ सूर: क़द्र २५

सूर: क़द्र मक्की है और इस में पांच आयतें और १ रकूअ हैं।

शुरू खुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

हम ने इस (क़ुरआन) को शबे क़द्र में नाज़िल (करना शुरू) किया, (१) और तुम्हें क्या मालूम कि शबे क़द्र क्या है? (२) शबे क़द्र हजार महीने से बेहतर है। (३) इस में रूहुल अमीन और फ़रिश्ते हर काम के (इन्तिज़ाम के) लिए, अपने परवरदिगार के हुक्म से उतरते हैं। (४) यह (रात) सुबह के होने तक (अमान और) सलामती है। (५) ★ ●

६८ सूर: बय्यिन: १००

सूर: बय्यिन: मक्की है और इस में आठ आयतें और १ रकूअ हैं।

शुरू खुदा का नाम लेकर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

जो लोग काफ़िर हैं यांनी अहले किताब और मुश्रिक वे (कुफ़ से) बाज़ रहने वाले न थे, जब तक कि उन के पास खुली दलील न आती, (१) (यांनी) खुदा के पैग़म्बर जो पाक पन्ने पढ़ते हैं, (२) जिन में मजबूत (आयतें) लिखी हुई हैं, (३) और अहले किताब जो अलग-अलग (और मुस्तलिफ़) हुए हैं तो खुली दलील के आने के बाद (हुए हैं) (४) और उन को हुक्म तो यही हुआ था कि अमल के इस्लाम के साथ खुदा की इबादत करें (और यक़सू हो कर) और नमाज़ पढ़ें और ज़कात दें और यही सच्चा दीन है। (५) जो लोग काफ़िर हैं (यांनी) अहले किताब और मुश्रिक, वे दोजख की आग में (पड़ेंगे और) हमेशा उस में रहेंगे। ये लोग सब मरहलूक से बद-तर हैं। (६) और जो लोग ईमान लाए और नेक अमल करते रहे, वे तमाम खलकत से बेहतर हैं। (७) उन का बदला उन के परवरदिगार के यहां हमेशा रहने के बाग़ हैं, जिन के नीचे नहरें बह रही हैं। हमेशा-हमेशा उन में रहेंगे। खुदा उन से खुश और वे उस से खुश। यह (बदला) उस के लिए है, जो अपने परवरदिगार से डरता है। (८) ★

१. क़ुरआन मजीद एक ही बार नाज़िल नहीं हुआ, बल्कि पारा-पारा नाज़िल हुआ है। पहले-पहल वह शबेक़द्र में नाज़िल हुआ। इस आयत से मालूम होता है कि शबेक़द्र रमज़ान के महीने में है, जैसा कि दूसरी जगह फ़रमाया — 'महसू र-म-ज़ानल्लज़ी उन्ज़िल फ़ीहिल क़ुरआन' यह मालूम नहीं कि यह रात किस तारीख़ की होती है, लेकिन मही हदीसों से इतना साबित है कि हज़रत रमज़ान की आखिरी दहाई में एतिकाज़ फ़रमाया करते थे और जितना एहतिमाय इस दहाई में फ़रमाते और में न फ़रमाते। ज्यादातर तफ़सीर लिखने वालों का ख़्याल है कि इस रात का अमस हज़ार महीने के अमस से अफ़जल है।

੬੬ ਸੂਰਤੁਜ਼-ਜ਼ਿਲ੍ਹਾਲਿ ੬੩

(मदनी) इस सूर में अरबी के १५ = अक्षर, ३७ शब्द, = आयतें और १ रुकव हैं।

बिस्मिल्लाहिररहमानिररहीम •

इजा जुल्जि-लतिल्अर्जु जिल्जालहा॥ (१) ब अख-र-जतिल्अर्जु अस्कालहा॥

(२) व कालल-इन्सानु मा लहाः (३) यौमइजित्तु तृहददिसु अख-बारहा ॥ (४)

बि-अन्-न रब्ब-क औहा लहा ५ (५) यौमइजिय्यस्दुरुन्नासु अश्तातल-

लिपुगुरी अङ्ग-मालहुम् ७(६) फ्रमय्यङ्ग-मल मिस्का-ल जरतिन खैरय्यरः ७(७) व

मध्यम-मल् मिस्का-ल जरतिन् शर्ययः (८)

१०० सूरतुल्-आदियाति १४

(भक्की) इस सूर: में अरबी के १७० अक्षर,

४० शब्द, ११ आयतें और १ रकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिररहमानिररहीम •

वल्गादियाति जन्हन् ॥ (१) फल्मूरि-

याति कदहन् ॥ (२) फल्मुगीराति सूबहन् ॥ (३)

क्र-अ-सर्-न बिही नक्र-अन् ॥ (४) क्र-व-सर्-न

बिही जम-अन ॥ (५) इन्नल-इन्सा-न लि-

रब्बिही ल-कनद ८: (६) व इन्नह अला

जालि-क ल-शहीद ८: (७) व इन्तह लिहबिल-

खैरि ल-गदीद (६) अ-फला यअ-लम इजा

ब्रह्म-सि-र मा फिल्लुवरि ॥ (६) ब्रह्म-सि-र

बुद्ध-संस्मरण मा. क्रि. पूर्व ५५० (६) व. इ. पूर्व ५५०

१०१ सूरतुल-कारिअति ३०

(मक्की) इस सूरः में अरबी के १६० अक्षर, ३५ शब्द, ११ आयतें और १ रुकज हैं।

बिस्मिल्लाहिररहमानिररहीम •

अल्कारिअतु ॥ (१) मल्कारिअः ८ (२) व मा अद - रा-क

मत्कारिणः ७ (३) यौ - म यकूतुन्नासु कल्फराशिल - मन्सुसि॥

(४) व तकनुल्जिबालु कलअहिन्ल - मन्फूश ७ (५)

६६ सूरः जिल्जाल ६३

सूरः जिल्जाल मदनी है और इस में आठ आयतें और १ रुकूअ है ।

शुरू खुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है ।

जब ज़मीन भौंचाल से हिला दी जाएगी, (१) और ज़मीन अपने (अन्दर के) बोझ निकाल डालेगी, (२) और इन्सान कहेगा कि इस को क्या हुआ है ? (३) उस दिन वह अपने हालात बयान कर देगी, (४) क्योंकि तुम्हारे परवरदिगार ने उस को हुकम भेजा (होगा) । (५) उस दिन लोग गिरोह-गिरोह हो कर आएंगे, ताकि उन को उन के आमाल दिखा दिए जाएं । (६) तो जिस ने ज़र्रा भर नेकी की होगी, वह उस को देख लेगा, (७) और जिस ने ज़र्रा भर बुराई की होगी, वह उसे देख लेगा । (८) ★

१०० सूरः आदियात १४

सूरः आदियात मक्की है और इस में ग्यारह आयतें और १ रुकूअ है ।

शुरू खुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है ।

उन सरपट दौड़ने वाले घोड़ों की कसम, जो हांप उठते हैं, (१) फिर पत्थरों पर (नाल) मार कर आग निकालते हैं, (२) फिर सुबह को छापा मारते हैं, (३) फिर उस में गंदे उठाते हैं, (४) फिर उस वक्त (दुश्मन की) फौज में जा घुसते हैं, (५) कि इंसान अपने परवरदिगार का नाशुका है, (६) और वह इस से आगाह भी है । (७) वह तो माल की सस्त मुहब्बत करने वाला है । (८) क्या वह उस वक्त को नहीं जानता कि जो (मुर्दे) कब्रों में हैं, वे बाहर निकाल लिए जाएंगे, (९) और जो (भेद) दिलों में हैं, वे जाहिर कर दिए जाएंगे । (१०) बेशक उन का परवरदिगार उस दिन को खूब जानता होगा । (११) ★

१०१ सूरः कारिअः ३०

सूरः कारिअः मक्की है, और इस में ग्यारह आयतें और १ रुकूअ है ।

शुरू खुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है ।

खड़खड़ाने वाली, (१) खड़खड़ाने वाली क्या है ? (२) और तुम क्या जानो कि खड़खड़ाने वाली क्या है ? (३) (वह क्रियामत है,) जिस दिन लोग ऐसे होंगे जैसे बिखरे हुए पतंगे, (४) और पहाड़ ऐसे हो जाएंगे जैसे धुंकी हुई रंग-बिरंग की ऊल, (५) तो जिस के (आमाल के) वज़न भारी

निकलेंगे, (६) वह बिल पसन्द ऐश में होगा, (७) और जिस के वजन हल्के निकलेंगे, (८) उन के लोटने की जगह हाविया है, (९) और तुम क्या समझे कि हाविया क्या चीज है? (१०) (वह) दहकती हुई आग है। (११) ★



१०२ सूरः तकासुर १६

सूरः तकासुर मक्की है और इस में आठ आयतें और १ रुकूअ है।

शुरू खुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

(लोगो!) तुम को (माल की) बहुत सी तलब ने शफ़ल कर दिया, (१) यहां तक कि तुम ने कब्रें जा देखीं। (२) देखो, तुम्हें बहुत जल्द मालूम हो जाएगा, (३) फिर देखो, तुम्हें बहुत जल्द मालूम हो जाएगा। (४) देखो अगर तुम जानते (यानी) यकीन का इल्म (रखते, तो शफ़लत न करते,) (५) तुम जरूर दोजस्त को देखोगे। (६) फिर उस को (ऐसा) देखोगे (कि) ऐनुन् यकीन (यकीन की आंख) (आ जाएगा), (७) फिर उस दिन तुम से नेमत के (शुक्र के) बारे में पूछ-गछ होगी। (८) ★



१०३ सूरः अस १३

सूरः अस मक्की है और इस में तीन आयतें और १ रुकूअ है।

शुरू खुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

अस की कसम, (१) कि इंसान नुकसान में है, (२) मगर वे लोग, जो ईमान लाए और नेक अमल करते रहे और आपस में हक (बात) की तल्कीन और सन्न की ताकीद करते रहे। (३) ★



१०४ सूरः हु-म-जः ३२

सूरः हु-म-जः मक्की है और इस में नौ आयतें और १ रुकूअ है।

शुरू खुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

हर तानों भरे इशारे करने वाले चुगलखोर की खराबी है, (१) जो माल जमा करता और उस को गिन-गिन कर रखता है, (२) और ख्याल करता है कि उस का माल उस की हमेशा की ज़िदगी की वजह होगा। (३) हरगिज नहीं, वह जरूर हुतमा में डाला जाएगा। (४) और तुम क्या समझे कि हुतमा क्या है? (५) वह खुदा की भड़कायी हुई आग है, (६) जो दिलों पर जाल पड़ेगी, (७) (और) वे उस में बन्द कर दिए जाएंगे, (८) यानी (आग के) लम्बे-लम्बे स्तूनों में। (९) ★

१०५ सूरतुल्-फ़ीलि १६

(मक्की) इस सूरः में अरबी के ६४ अक्षर, २४ शब्द, ५ आयतें और १ रकअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

अ-लम् त-र के-फ़ फ़-अ-ल रब्बु-क बि-अस्हाबिलफ़ीलि ॥ (१) अ-लम् यज्-अल् कैदहुम् फ़ी तज्ज़लीलिब-॥ (२) व अर-स-ल अलैहिम् तैरन् अबाबील ॥ (३) तर्भीहिम् बिहिजा-रतिम्-मिन् सिज्जीलिन् ॥ (४) फ़-ज-अ-लहुम् क-अस्फ़िम-मअ-कूल ★ (५)

१०६ सूरतु कुरैशिन २६

(मक्की) इस सूरः में अरबी के ७६ अक्षर, १७ शब्द, ४ आयतें और १ रकअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

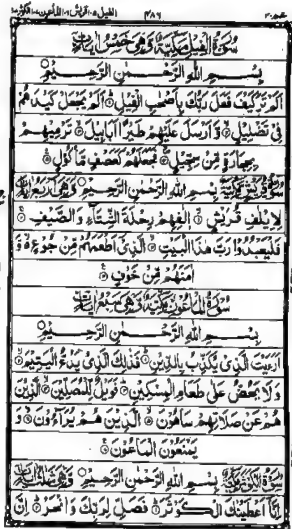
लि - ईलाफ़ि कुरैशिन ॥ (१) ईलाफ़िहिम् रिह-ल-तश् - शिताइ वस्तफ़ ॥ (२) फ़लूयअ-बुद्द रब्-ब हाजलबैति-॥ (३) लज्जी अत् - अ - महम् मिन् जूअिव् ॥ व अ-म - नहुम् मिन् खौफ़ ★ (४)

१०७ सूरतुल्-माअूनि १७

(मक्की) इस सूरः में अरबी के ११५ अक्षर, २५ शब्द, ७ आयतें और १ रकअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

अ-र-ऐ-तल्लजी युक्जिज्बु बिद्दीन ॥ (१) फ़-जालिकल्लजी यदुअ-अल्-यतीम ॥ (२) व ला यहज्जु अला तआमिल् - मिसकीन ॥ (३) फ़वैलुल्-लिल्मुसल्लीन ॥ (४) अल्लजी-न हुम् अन् सलातिहिम् साहून ॥ (५) अल्लजी-न हुम् युराऊन ॥ (६) व यम्-अूनल्-माअून ★ (७)



१०८ सूरतुल्-कौ-सरि १५

(मक्की) इस सूरः में अरबी के ३७ अक्षर, १० शब्द, ३ आयतें और १ रकअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

इन्ना अज-तैनाकल्-कौ-सर ॥ (१) फ़-सल्लि लिरब्बि-क वन्हर् ॥ (२)

१०५ सूर: फ़ील १६

सूर: फ़ील मक्की है और इस में पांच आयतें और १ स्कूज है।

शुरू खुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

क्या तुम ने नहीं देखा कि तुम्हारे परवरदिगार ने हाथी वालों के साथ क्या किया ? (१) क्या उन का दांव गलत नहीं किया ? (किया) (२) और उन पर सिल्लड़ के सिल्लड़ जानवर भेजे, (३) जो उन पर कंकर की पत्थरियां फेंकते थे, (४) तो उन को ऐसा कर दिया जैसे खाया हुआ भुस। (५) *

१०६ सूर: कुरैश २६

सूर: कुरैश मक्की है और इस में चार आयतें और १ स्कूज है।

शुरू खुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

कुरैश के मानूस करने की वजह से, (१) (यानी) उन को जाड़े और गर्मी के सफ़र से मानूस करने की वजह से, (२) (लोगों को) चाहिए कि (इस नेमत के शुक्र में) इस घर के मालिक की इबादत करें, (३) जिस ने उन को भूख में खाना खिलाया और खौफ़ से अमन बरूखा। (४) *

१०७ सूर: माऊन १७

सूर: माऊन मक्की है और इस में सात आयतें आयतें और १ स्कूज है।

शुरू खुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

भला तुम ने उस शल्ल को देखा जो बदले (के दिन) को अठलाता है। (१) यह वही (बद-बल्ल) है जो यतीम को धक्के देता है, (२) और फ़कीर को खाना खिलाने के लिए (लोगों को) तर्गबि नहीं देता। (३) तो ऐसे नमाज़ियों की खराबी है, (४) जो नमाज़ की तरफ़ से गाफ़िल रहते हैं। (५) जो दिखावे का काम करते हैं, (६) और बरतने की चीज़ें (उधार) नहीं देते। (७) *

१०८ सूर: कौसर १५

सूर: कौसर मक्की है और इस में तीन आयतें आयतें और १ स्कूज है।

शुरू खुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

(ऐ मुहम्मद !) हम ने तुम को कौसर अता फ़रमायी है। (१) तो अपने परवरदिगार के

१: हज़रत की बारहवीं पीढ़ी में एक आदमी नज़्ब बिन कनाना था। उस की औलाद कुरैश में है। ये बैतुल्लाह के खादिम थे और लोग उन का बहुत अदब और एहताराम करते थे। इस सूर: में खुदा कुरैश पर अपना एहसान बताता है कि वह जाड़े और गर्मी में तिज़ारत के लिए सफ़र करते हैं और कोई उन को ठोकता नहीं, चैन से खाते-पीते और अमन से रहते-सहते हैं तो उन को चाहिए कि तोहीद अपनाएं और दुतों की पूजा को छोड़ कर उस के घर के मालिक यानी एक खुदा की इबादत करें। कुछ तपसीर लिखने वालों ने लिखा है कि यह सूर: पहली सूर: से मताल्लिक है और उन के नज़दीक इस के मानी यह है कि हम ने जो मक्के से हाथियों और हाथी वालों को रौंद (शेष पृष्ठ ६८० पर)

इन्-न शानि-अ-क हुवल्-अम्सर ★ (३)

१०६ सूरतुल्-काफिरून १८

(मक्की) इस सूर: में अरबी के ६६ अक्षर, २६ शब्द, ६ आयतें और १ रकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

कुल् या अय्युहल्-काफिरून ॥ (१) ला अअ-बुदु मा तअ-बुदून ॥ (२)
व ला अन्तुम् आबिदू-न मा अअ-बुद ८ (३) व ला अन-आबिदुम्-मा
अबलुम् ॥ (४) व ला अन्तुम् आबिदू-न मा अअ-बुद ८ (५) लकुम्
दीनुकुम् वलि - य दीन ★ (६)

११० सूरतुन्नर ११४

(मदनी) इस सूर: में अरबी के ८१ अक्षर,
१६ शब्द, ३ आयतें और १ रकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

इजा जा-अ नस्ल्लाहि वल्फल्हु

(१) व रऐ-तन्ना-स यदखलू-न फ्री दीनिल्लाहि
अपवाजा ॥ (२) फसबिह बिह्मिद रबि-क
वस्तर्किरहु इन्नह का-न तव्वाबा ★ (३)

१११ सूरतुल्-ल-हबि ६

(मक्की) इस सूर: में अरबी के ८१ अक्षर,
२४ शब्द, ५ आयतें और १ रकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

तव्वत् यदा अबी ल-हबिक्-व तव्-ब

(१) मा अरना अन्हु मा लुहू व मा

क-सब् ८ (२) स-यस्ला नारन् जा-त ल-हबिक्-८ (३) वम्-र-अतुह
हम्मा लतल्-ह-तबि ८ (४) फ्री जीदिहा हब्लुम्-मिम्-म-सद् ★ (५)

११२ सूरतुल् इल्लासि २२

(मक्की) इस सूर: में अरबी के ४६ अक्षर, १७ शब्द, ४ आयतें और १ रकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

कुल् हुवल्लाहु अ - हद ८ (१) अल्लाहुस्स-मद ८ (२)
लम् यलिद् ॥ व लम् यूलद् ॥ (३)

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
قُلْ يَا أَيُّهَا الْكَافِرُونَ لَا أَعْبُدُ مَا تَعْبُدُونَ وَلَا أَنتُمْ
عِبُدُونَ مَا أَعْبُدُ وَلَا أَنَا عَابِدٌ لِمَا عَبَدْتُمْ وَلَا أَنْتُمْ
عِبُدُونِ مَا أَعْبُدُ لَكُمْ وَلِيَوْمِئِذٍ
يُنَادُوا الصَّادِقِينَ وَهُمْ عَلَى الْأُتْرَاقِ
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
إِذَا جَاءَ نَصْرُ اللَّهِ وَالْفَتْحُ وَرَأَيْتَ النَّاسَ يَدْخُلُونَ فِي دِينِ
اللَّهِ أَفْوَاجًا فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَاسْتَغْفِرْ لَهُ إِنَّهُ كَانَ
يَسِيرًا
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
كَتَبَ يَدَآئِنِ لَيْلٍ وَتَبَّ مَا أَفْضَى عَلَيْهِ يَالَيْهَ وَمَا كُتِبَ
سِيقُ نَارًا ذَاتَ لَيْلٍ وَأَمَّا أَنْتَ فَتَكُنْ أَلْفًا مِنَ الْخَاطِبِينَ
فِي جُمُعٍ مَّا سَبَّحْتَ مِنْ مَسْجِدٍ
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
قُلْ مَوْلَاهُ أَحَدٌ اللَّهُ الصَّمَدُ لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُولَدْ وَأَلَمْ يَلِدْ

के लिए नमाज पढ़ा करो और क़ुबानी किया करो। (२) कुछ शक नहीं कि तुम्हारा दुश्मन ही बे-ओलाद रहेगा।' (३) *

१०६ सूर: काफिरून १०६

सूर: काफिरून मक्की है और इस में छः आयतें और १ रकूअ है।

शुरू खुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

(ऐ पैग़म्बर ! इस्लाम के इन मुन्किरों से) कह दो कि ऐ काफ़िरो ! (१) जिन (बुतों) को तुम पूजते हो, उन को मैं नहीं पूजता, (२) और जिस (खुदा) की मैं इबादत करता हूँ, उस की तुम इबादत नहीं करते, (३) और (मैं फिर कहता हूँ कि) जिन की तुम पूजा करते हो, उन की मैं पूजा करने वाला नहीं हूँ। (४) और न तुम उस की बन्दगी करने वाले (मालूम होते) हो, जिस की मैं बन्दगी करता हूँ। (५) तुम अपने दीन पर, मैं अपने दीन पर। (६) *

११० सूर: नस्र ११४

सूर: नस्र मदनी है और इस में तीन आयतें और २ रकूअ है।

शुरू खुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

जब खुदा की मदद आ पहुँची और फ़तह (हासिल हो गयी), (१) और तुम ने देख लिया कि लोग झुंड के झुंड खुदा के दीन में दाखिल हो रहे हैं, (२) तो अपने परवरदिगार की तारीफ़ के साथ तस्बीह करो और उस से मसिफ़रत माँगो बेशक वह माफ़ करने वाला है। (३) *

१११ सूर: ल-हब ६

सूर: ल-हब मक्की है और इस में पाँच आयतें और १ रकूअ है।

शुरू खुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

अबू लहब के हाथ टूटें और वह हलाक हो, (१) न तो उस का माल ही उस के कुछ काम आया हो और न वह जो उस ने कमाया। (२) वह जल्द भड़कती हुई आग में दाखिल होगा। (३) और उस की जोरू भी जो ईधन सर पर उठाए फिरती है, (४) उस के गले में मूँज की रस्सी होगी।' (५) *

११२ सूर: इस्लास २२

सूर: इस्लास मक्की है और इस में चार आयतें और १ रकूअ है।

शुरू खुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

कहो कि वह (जात पाक जिस का नाम) अल्लाह (है) एक है, (१) (वह) माबूदे बरहक़, बे-नियाज है। (२) न किसी का बाप है और न किसी का बेटा, (३) और कोई उस का हमसर

१. अन्तर उस को कहते हैं जिस के मद ओलाद में से कोई न रहे। जब हज़रत के बेटों का इन्तिकाल हो गया तो कुछ काफ़िर कहने लगे कि मुहम्मद अन्तर हो गया, इस के बाद कोई इस का नाम लेने वाला न रहेगा। खुदा ने आप से फ़रमाया कि तुम्हारा बुरा चाहने वाले ही की नस्ल कट जाएगी और आप का नाम आप की उम्मत के जरिए से हवेशा के लिए बाक़ी रखा।

२. 'अबू लहब' रिस्ते में हज़रत का चचा था, मगर बड़ा काफ़िर और आप की जान का दुश्मन, उस का नाम तो (शेष पृष्ठ ६७३ पर)

व लम् यकुल्लह कुफुवन् अ - हद * (४)

११३ सूरतुल्-फ-लकि २०

(मक्की) इस सूर: में अरबी के ७३ अक्षर, २३ शब्द, ५ आयतें और १ रकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

कुल् अऊजु बिरन्बिल्-फ-लकि ७ (१) मिन् शरि मा ख-लक् १ (२)

व मिन् शरि सासिक्किन् इजा व-कब् ७ (३)

व मिन् शरिन्फकासाति फिल्लुकद ७ (४)

व मिन् शरि हासिदिन् इजा ह-सद * (५)

११४ सूरतुन्नासि २१

(मक्की) इस सूर: में अरबी के ८१ अक्षर,

२० शब्द, ६ आयतें और १ रकूअ है।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

कुल् अऊजु बिरन्बिल्नासि ७ (१) मलि-

किन्नासि ७ (२) इलाहिन्नासि ७ (३) मिन्

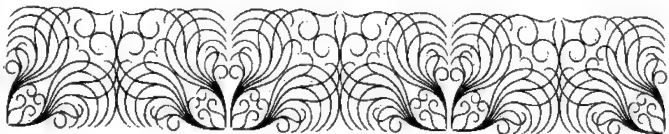
शरिल्-वस्वासि-ल्लख्नासि- ७ (४) - ल्लजी

युवस्बिसु फी मुद्दरिन्नासि ७ (५)

मिनलजिन्नति वन्नास * (६)

وَلَمْ يَكُنْ لَهُ كُفُوًا أَحَدٌ
يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ الْعَالَمِينَ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ ۝ وَمِنْ شَرِّ
عَاسِيٍ إِذَا وَقَبَ ۝ وَمِنْ شَرِّ النَّفَّاثِ فِي الْعُقَدِ ۝ وَمِنْ
شَرِّ حَاسِدٍ إِذَا حَسَدَ ۝
يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ الْعَالَمِينَ ۝ عَلِيمِ الْعَالَمِينَ ۝ إِلَهُ الْعَالَمِينَ ۝
مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ الْخَاسِ ۝ الَّذِي يُوَسْوِسُ فِي صُدُورِ
الْعَالَمِينَ ۝ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ ۝

مِّنَ



(साथी) नहीं। (४) ★

११३ सूरः फ़लक २०

सूरः फ़लक मदनी है और इस में पांच आयतें और १ रकूअ है।

शुरू खुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

कहो कि मैं सुबह के मालिक की पनाह मांगता हूँ, (१) हर चीज़ की बुराई से, जो उस ने पैदा की, (२) और अंधेरी रात की बुराई से, जब उस का अंधेरा छा जाए, (३) और गंडों पर (पढ़-पढ़ कर) फूंकने वालियों की बुराई से, (४) और हसद (जलन) करने वाले की बुराई से, जब हसद करने लगे। (५) ★



११४ सूरः नास २१

सूरः नास मदनी है और इस में छः आयतें और १ रकूअ है।

शुरू खुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

कहो कि मैं लोगों के परवरदिगार की पनाह मांगता हूँ, (१) (यानी) लोगों के हकीकती बादशाह की, (२) लोगों के माबूदे बर-हक की, (३) (शैतान) वस्वसा डालने वाले की बुराई से जो (खुदा का नाम सुन कर) पीछे हट जाता है, (४) जो लोगों के दिलों में वस्वसे डालता है, (५) (चाहे वह) ज़िन्नो में से (हो) या इंसानों में से। (६) ★

अब्दुल उक्बा बिन अब्दुस मुसलिब था, मगर मशहूर इसी कुन्नियत से था, क्योंकि बहुत प्यादा ख़ुबसूरत था और हुस्न व ज़ामल की वजह से उस का चेहरा आग की तरह चमकता था। जब आप को हुक्म हुआ कि अपने कबीलों को तंबीह करो तो आप ने कुरैश को जमा कर के फ़रमाया कि भला अगर मैं तुम को ख़बर दूँ कि दुश्मन की फ़ौज सुबह या शाम तुम पर हमला करने वाली है तो तुम इस बात को मान लो? उन्होंने ने कहा जरूर मानेंगे। आप ने फ़रमाया कि मैं तुम को एक सक्त अज़ाब से आगाह करता हूँ जो तुम पर नाज़िल होने वाला है तो अब लहब ने कहा कि तुम्हारे हाथ टूटें (यानी तुम हलाक हो) जो तुम ने हम को इसी लिए जमा किया था? इस के जवाब में यह आयत नाज़िल हुई थी। अबू लहब की जोर जिस का नाम उम्मे जमील था, उस को भी आप से बड़ा बैर था। उस ने यह तरीक़ा अस्तियार कर रखा था कि रात को आप के रास्ते में काटेदार लकड़ियाँ डाल जाती थी, इसी लिए उस को 'हम्मासतल हतब' फ़रमाया।

१. उस वक़्त उस की टोक लग जाती है।

२. शैतान गुताह की दावत दे और आप नज़र न आए।

دُعَاةٌ مَّا تُوْرهُ

اَللّٰهُمَّ اِنِّسْ وَحْشَتِيْ فِيْ قَبْرِىْ اَللّٰهُمَّ اَرْحَمْنِيْ بِالْقَرَّانِ
العَظِيْمِ وَلَجْعَلْهُ لِيْ اِمَامًا وَنُوْرًا وَهُدًى وَرَحْمَةً اَللّٰهُمَّ
ذَكِّرْنِيْ مِنْهُ مَا نَسِيْتُ وَعَلِّمْنِيْ مِنْهُ مَا جَهِلْتُ وَارْزُقْنِيْ
تِلَاوَتَهُ اِنَاءَ اللَّيْلِ وَاِنَاءَ النَّهَارِ وَلَجْعَلْهُ لِيْ حُجَّةً يَّارَبَّ الْعٰلَمِيْنَ

दुआए मासूर:

अल्लाहुम्-म आनिस् वह-शती फ़ी क़बरी अल्लाहुम्मर-हम्नी बिकुरआनिल्-
अज़ीमि वज्जल्हु ली इमामव-व नूरव-व हुदव-व रहम-तत् अल्लाहुम्-म जविकनी
मिन्हु मा नसीतु व अल्लिम्नी मिन्हु मा जहिल्तु वरज़ुक्नी तिलाव-तहू आना अल्लैलि
व आना अन्नहारि वज्जल्हु ली हुज्जतुंय्या रब्बल्-आलमीन (आमीन)



दुआए मासूर:

ऐ अल्लाह ! मेरे मरने के बाद मेरी क़ब्र की परेशानी से मुझ को मानूस (अभ्यस्त) करना ।
इस महान क़ुरआन मजीद (की बरकत) के वसीले से मुझ पर रहम कर और क़ुरआन मजीद को मेरे
लिए इमाम (अधिनायक), नूर (प्रकाश), हिदायत (पथ-प्रदर्शक), और रहमत (का साधन) बना ।
ऐ अल्लाह ! (क़ुरआन मजीद में) जो मैं भूल गया हूं मुझे याद दिला (और) जो मैं नहीं जान पाया
वह मुझे सिख़सा । अमन से रात दिन (क़ुरआन मजीद की) तिलावत करने का नसीब दे और उसको
मेरे लिए दलील बना, ऐ दुनिया के पालनहार ! (यह मेरी दुआ क़ुबूल कर ।)

(पृष्ठ ५ का शेष)

यह मुराद है कि जिन रास्तों से इम्सान हिदायत की बातों को मुन सकता और समझ सकता है, वे बन्द हैं।

३. इस आयत से मुनाफ़िकों का हाल शुरू होता है। मुनाफ़िक उम को कहते हैं जो दिल से तो काफ़िर हो और ज़ाहिर में अपने को मोमिन बयान करे। इस तरह के लोग मदीने में थे और काफ़िरो के मुक़ाबले में उन से नुक़सान पहुंचने का ज्यादा ख़तरा रहता था, इस लिए अल्लाह तआला ने उन के हाल और उन की चाल से मुसलमानों को आगाह फ़रमा दिया, ताकि उन से बचते रहें और उन के धोखे में न आएँ।

४. ये लोग मुसलमानों के पास भी आते थे और काफ़िरो के यहां भी जाते थे, तो ऐसी बात करते जिन से फ़साद पैदा हो, सो जब उन से कहा जाता कि फ़साद की बातें न करो, तो जवाब देते कि हमारी गरज़ तो दोनों फ़रीकों में मुनह व साज़गारी पैदा करना है। खुदा ने फ़रमाया कि उन के काम फ़साद की वजह हैं और ये यक़ीनी तौर पर फ़साद पैदा करने वाले हैं, लेकिन इन को मालूम नहीं।

५. अंतानों से मुराद उन के सरदार हैं। मुनाफ़िक लोग जब मुसलमानों से मिलते तो कहते कि हम तो तुम्हारी तरह मोमिन हैं और जब अपने सरदारों के पास जाते तो कहते, कहां का ईमान, कैसी मुसलमानी! हम तो मुसलमानों से दिल-लगी करते हैं और अपना ईमान ज़ाहिर कर के उन को मुँह बनाते हैं।

६. इस आयत में खुदा मुनाफ़िकों की इन बातों के जवाब में फ़रमाता है कि उनसे खुदा हंसी करता है। हंसी से मुराद यहां यह है कि जिस तरह वे देखने में ईमान ज़ाहिर करते हैं और अपने सरदारों से मिल कर यह कहते हैं कि हम तुम्हारे साथ हैं, इसी तरह खुदा दुनिया में उन को पनाह देता और उन के माल व जान को महफूज़ रखता है और वे समझे हुए हैं कि उन के काम उन को नुक़सान नहीं पहुंचाते, लेकिन क्रियामत के दिन उन को अज़ाब में मुस्तला किया जाएगा।

७. मुनाफ़िक कई क्रिम के थे। कुछ ऐसे थे कि पहले मुसलमान हो गये थे, फिर मुनाफ़िक हो गये। इस आयत की मिसाल उन्हीं का नक्शा खींचती है कि उन्होंने पहले ईमान लाकर रोशनी हासिल की, फिर मुनाफ़िक बनकर इस रोशनी को खो दिया और निफ़ाक के अंधेरे में पड़ गये यानी उन के दिल अंधे हो गये।

(पृष्ठ ७ का शेष)

२. इस आयत में यह बयान है कि हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम खुदा के पैग़म्बर और कुरआन मजीद खुदा का कलाम है और कुफ़ार को चैलेंज किया गया है कि अगर तुम इन बातों को नहीं मानते और समझते हो कि यह किताब खुदा की तरफ़ से नाज़िल नहीं हुई, बल्कि मुहम्मद (सल्लम) ने अपनी तरफ़ से बना ली है, तो इस जैसी एक मूर: तुम भी बना लाओ। इस बारे में इस्तिलाफ़ है कि कुरआन किस लिहाज़ से बे-मिसल और चुप कर देने वाला है यानी जैसी उम्दा, साफ़-सुथरी और जानदार इबादत कुरआन मजीद की है, ऐसी इबादत किसी से नहीं बन सकती। वे यह भी कहते हैं और इसे उन के दावे की दलील समझना चाहिए कि जिस ज़माने में, जिस का ज्यादा प्रचार होता था, उस वक़्त के पैग़म्बर को उसी क्रिम का मोज़जा दिया जाता था। चूंकि कुरआन मजीद के उतरने के ज़माने में अरब में जानदार और साफ़-सुथरी जुबान का बहुत चर्चा था, इस लिए खुदा ने ख़ात-मुन्नीयीन (नबियों में आखिरी नबी) को कुरआन की जोरदार और साफ़-सुथरी जुबान का ऐसा मोज़जा बख़्शा कि बड़े-बड़े नाबी और माहिर शायर और ख़तीब उस के मुक़ाबले में आज़िज़ हो गये। कुछ ने कहा कि कुरआन अपनी हकीमानी हिदायतों के लिहाज़ से मोज़िज़ (चुप कर देने वाली) है। कुछ इस को रूहानियत के एतबार से मोज़िज़ मानते हैं, बहरहाल इस में आदाब हैं, अक्लाक़ हैं, समाजी ख़िदयी गुज़ारने का बेहतरीन तरीक़ा है, नफ़स को संवारने की बात है, सियासत के क़ानून हैं, मुल्क का इतिज़ाम चलाने के क़ायदे हैं, अदब व इंसान है, कमाई व व्यापार है, हुकूम हैं, इबादतें हैं, बरग़्बरी है, भाईचारा है, नमी है, रियायत है, ख़ैरज़ाही है, नसीहत है, खुदा की हस्ती

और बहानियत है, वरष इसमें कबाल वज्र की इंसान की हालत की इस्लाम है और कुछ शक नहीं कि वह क्या साफ़-सुथरी औरदार बुबान के मिहाब से और क्या हकीमाना हिदायतों और स्फ़ानियत के, बे-मिसाल व बेनजोर है ? और कोई आदमी इस क्रिस्म की किताब बनाने की क्रुदरत नहीं रखता । इसी वजह से दूसरी जगह इर्माद हुआ है, 'कल ल-इनिज-ल-अ-बतिल इन्नु बल जिन्नु अला अय्यज् तू बिमिस्लि हाजल कुरआनि ला यातु-न बिमिस्लिही व लो का-न बकुबुदुम लि बज्जिन खहीर' (कह दीजिए, अगर तमाम जिन व इंसान इस कुरआन जैसा बना लाने पर जमा हो जाएं, तो वे इस जैसा नहीं ला सकते, चाहे वे एक दूसरे के पुष्ट-मन्नाह ही क्यों न हों ।)

३. कुरआन में मुशिरकों और उनके झूठे मादूनों की मिसालें कुछ आयतों में इस तरह बयान हुई हैं कि 'जो लोग खुदा को छोड़ कर औरों को कर्ता-धर्ता बनाते हैं, उनकी मिसाल मकड़ी की-सी है कि वह भी एक (तरह का) घर बनाती है और कुछ शक नहीं कि तमाम घरों से कमजोर मकड़ी का घर होता है, काश ये इस बात को जानते ।' दूसरी आयत में है, 'लोभो ! एक मिसाल बयान की जाती है, उसे और से सुनो कि जिन लोगों को तुम खुदा के सिवा पुकारते हो, वे एक मक्खी भी नहीं बना सकते, अगरचे इस (काम) के लिए सब जमा हो जाएं और अगर उनसे मक्खी कोई चीज छीन ले जाए तो उसे उससे छुड़ा नहीं सकते । तालिब और मतलूब (यानी आबिद और माबूद) दोनों गये गुजरे हैं ।' काफ़िर लोग ये मिसालें सुनते तो कहते कि ऐसी छोटी और भामूली चीजों की मिसालें बयान करना खुदा की शान के खिलाफ़ है । खुदा ने फ़रमाया कि खुदा मच्छर या जो चीजें इससे बड़ी हैं, उनकी मिसालें बयान करने से शर्माता नहीं । इन चीजों को पैदा भी तो उसी ने किया है और जब पैदा करने में उसे शर्म नहीं तो उनकी मिसाल में क्यों शर्म हो ?

(पृष्ठ ६ का शेष)

२. जैमान जिन की क्रिस्म से था, बड़ी इबादत किया करता था और बड़ा इल्म रखता था । इबादत की ज्यादाती की वजह से फ़रिस्तों का दर्जा मिल गया था । यही वजह है कि जब अल्लाह तआला ने फ़रिस्तों को हुक्म दिया कि आदम को सज्दा करें तो इस खिताब में वह भी दाख़िल था । चूँकि उस की पैदाइश आग से हुई थी और आदम की मिट्टी से, और आग को मिट्टी पर बरतरी है, इस के अलावा वह इबादत करने वाला और इल्म रखने वाला भी बड़ा था, इस लिए सेखी में आ गया और आदम अलैहिस्सलाम को सज्दा न किया । खुदा ने इस वमंड-मुकर की वजह से उसे मर्दूद (धुत्कारा हुआ) कर दिया ।

(पृष्ठ १५ का शेष)

उस हुक्म के खिलाफ़ करते और एक दिन पहले दरिया के किनारे गढ़े खाद कर उस में पानी भर देते थे और जब मछलियां उनमें जमा हो जातीं, तो निकालते और कहते कि यह शिकार जुमा का है । इस हीले की वजह से नन्दर बना दिये गये ।

२. तफ़सीर लिखने वाले लिखते हैं कि बनी इस्लाम में एक बड़ा मालदार शाल्स था, मगर बे-ओलाद । उस का वारिस उस का एक भतीजा था । उस ने माल के लोभ की वजह से उस को क्रुल कर डाला । जो लोग इस तरह क्रुल किया करते थे, बड़ी एहतियात से काम लिया करते थे । उस ने भी ऐसे तरीके से उसे क्रुल किया कि क़ातिल का कुछ पता नहीं मिलता था । लोग इस बारे में लड़ने-झगड़ने लगे, तो किसी ने कहा कि तुम में खुदा के पैगम्बर मौजूद हैं, उन से सलूज करो । उन्होंने मूला अलै० से यह कैफ़ियत बयान की । आप ने बेल बिम्ह करने का हुक्म दिया । अबब नहीं कि क़ातिल को इस बात का ख़ाफ़ हो गया हो कि कहीं राज न खुल जाए, इस लिए इस से पहले कि बेल के बारे में हुज्जतें करें, यह बात कही कि क्या आप इस से हंसी करते हैं, क्योंकि हम पूछते हैं कि क़ातिल कौन है ? आप कहते हैं कि बेल बिम्ह करो और यह एक बिल्कुल बे-मुनासिब बात है । मूला अलै० ने फ़रमाया

कि मैं हंसी नहीं करता, बल्कि हकीकत तो यह है कि वह बात कहता हूँ, जिस को खुदा ने इशार्द फरमाया है, तो उन्होंने बिल की खूबियाँ मालूम करने में कई तरह की बातें की। आखिरकार उन्होंने उस को जिन्ह किया, तो हुक्म हुआ, उस का कोई-सा टुकड़ा मकतूल को मारो। उस के मारने से मकतूल ज़िदा हो गया और उस से पूछा गया कि तुम को किस ने मारा था? तो उस ने ज़ातिल का नाम ले दिया। इस क्रिस्से से यह जाहिर करना मकसूद है कि जिस तरह खुदा ने उस मकतूल को तुम्हारी आंखों के सामने ज़िदा कर दिया, उसी तरह वह क्रियामत के दिन तमाम मुर्दों को उठा खड़ा करेगा और यह उस को कुछ मुश्किल नहीं।

(पृष्ठ १७ का शेष)

ऐसी बातें मुसलमानों को क्यों बताया करते हो? वे उन की सनद से तुम को क्रियामत के दिन खुदा के सामने इल्जाम देंगे। खुदा ने फरमाया कि मुनाफ़िकों का यह स्थान गलत है कि उन के अपने बताने से हमारे यहां उन पर इल्जाम लगेगा, बल्कि हम तमाम बातों को, जो ये छिपे या खुले तौर पर करते हैं, जानते हैं और खुदा ही उन से पूछ लेगे कि हमारी नाफरमानी क्यों करते रहे?

३. यहूदी कहते थे कि हम ने चालीस दिन बछड़े की पूजा की थी, सो उतने ही दिन हम को दोड़ख का अज़ाब होगा और किसी और अमल की वजह से हम ज्यादा अज़ाब नहीं पाएंगे। खुदा ने इस क्रौल की तर्दीद (खंडन) की और फरमाया कि कब्र खुदा ने तुम से बायदा किया है कि तुम कुछ दिन से ज्यादा दोड़ख में न रहोगे, हालांकि तुम्हारे अमल ऐसे हैं कि हमेशा जहन्नम की आग में जलते रहो।

(पृष्ठ ५६१ का शेष)

कहा था, फिर उस ने सवारी का अगला पांव दबाया, तो मैं उस पर सवार हो गयी और वह मेरी सवारी की बाग हाथ में ले कर खला, यहां तक कि हम लश्कर में जा पहुंचे और उस वक़्त ठीक दोपहर थी। फिर मेरे बारे में जो कुछ अफ़वाहें फैलायी गयीं, फैलायी गयीं और जो हलाक हुआ, सो हुआ।

इस तूफ़ान उठाने में जिस ने सब से बड़ा हिस्सा लिया, यह अब्दुल्लाह बिन अबई बिन सलूल था, इस के बाद हम मदीना आए और वहां आ कर मैं महीने भर बीमार रही। लोग मेरे बारे में तय्यिकरे करते थे, लेकिन मुझे कुछ खबर न थी। अबबता मुझे एक बात से शक होता था कि जनाब रसूल खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मुझ पर वह लुक्क व तवज्जोह नहीं फरमाते थे, जो पहले मेरी बीमारी के जमाने में फरमाया करते थे। अब जो तशरीफ़ लाते तो सलाम करने के बाद सिर्फ़ इतना पूछते कि तुम्हारा हाल कैसा है। इस से मुझे एक तरह का शुद्धा तो होता, लेकिन बोहतान लगाने वालों के बोहतान व शरारत की बिल्कुल खबर न थी। इस हालत में मैं बहुत कमजोर हो गयी। एक रात जो ज़रूरत पूरी करने बाहर निकलने, तो मिस्तह की मां मेरे साथ थी। इतिफ़ाक़ से उस का पांव लड़खड़ाया तो उस ने कहा, 'मिस्तह हलाक हो। मैं ने कहा तुम ऐसे शहस को बद-दुआ देती हो, जो बद्र में शरीक हुआ। उस ने कहा, क्या तुम ने नहीं सुना कि क्या बोहतान लगाया है? मैं ने कहा, नहीं, तुम बताओ कि उस ने क्या कहा है? तो उस ने पूरा माजरा बयान किया। उस को सुन कर मुझे बहुत रंज हुआ। एक तो मैं पहले ही बीमार थी। यह हालत सुन कर रंज पर रंज हुआ। जब मैं लौट कर अपने घर आयी, तो जनाब रसूल खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तशरीफ़ लाए और मेरा हाल पूछा। मैं ने कहा, अगर आप इजाजत बर्ख़ो तो मैं अपने मायके चली जाऊं। मेरा मतलब यह था कि वहां जा कर इस खबर की यकीनी मालूमात करूं। आप ने इजाजत दे दी और मैं अपने मां-बाप के पास चली गयी। वहां मैं ने अपनी मां से पूछा कि लोग क्या तय्यिकरा करते हैं? उन्होंने कहा कि बेटा! कोई ऐसी बड़ी बात नहीं है, तुम कुछ स्थान न करो। इस जवाब से मेरा दिल मुरमदन न हुआ और मैं रात भर रोती रही। उधर जनाब रसूल खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर वहा आने में बहुत देर हो गयी तो आप ने मसिबरा लेने के लिए हज़रत अबी बिन अबी तालिब और उसामा बिन जौद रज़ियल्लाहु अन्हुमा को बुलाया। उसामा ने तो यह कहा कि ऐ अल्लाह के रसूल! वह आप की

बीबी हैं और हम को उन के बारे में भलाई के सिवा कुछ नहीं मालूम। रहे अली बिन अबी तालिब, उन्होंने ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल ! खुदा ने आप पर तंगी नहीं की, औरतें और बहुत हैं। अगर आप लौंडी यानी बरीरा रजि० से मालूम फरमाएंगे, तो वह सच-सच बयान कर देंगी। आप ने बरीरा रजि० को बुला कर मालूम किया, तो उस ने कहा कि क्रसम है उस जात की ! जिस ने आप को हक दे कर भेजा है, मैं ने कोई ऐसी बात नहीं देवी कि इस का उन पर ऐब लगाऊँ। वह तो एक सीधी-सादी और भोली-भाली नव-उम्र लड़की है। यह सुन कर आप उसी दिन खुत्बा पढ़ने को खड़े हुए और फरमाया कि उस शस्स के मुकाबले में, जिस की वजह से मुझे मेरे अहल के मामले में इतनी तकलीफ पड़ुची है, कौन मेरी मदद करता है, तो साद बिन मुआज अंसारी खड़े हुए और अजं किया, ऐ अल्लाह के रसूल ! मैं आप की मदद करता हूँ और वह शस्स औस क़बीले से है, तो हम उस की गरदन मारेंगे और अगर भाइयों या ख़ज्रज क़बीले से है तो आप जो इशार्द फरमाएंगे, हम उसे पूरा करेंगे। फिर साद बिन उबादा खड़े हुए। यह ख़ज्रज क़बीले के सरदार थे, ये तो नेक आदमी, लेकिन हमीयत ने जोश मारा तो साद बिन मुआज से कहने लगे कि तुम ने ग़लत कहा। अगर वह शस्स तुम्हारी जमाअत से है, तो मैं भी पसन्द नहीं करता कि क़त्ल किया जाए, तो उसैद बिन हुज़ैर रजि० जो साद बिन मुआज रजि० के चचेरे भाई हैं, खड़े हुए और साद बिन उबादा रजि० से कहने लगे कि तुम ने झूठ कहा। खुदा की क्रसम ! हम उस को ज़हर क़त्ल कर डालेंगे। तुम मुनाफ़िक़ हो कि मुनाफ़िक़ों की तरफ़ से झगड़ते हो। फिर दोनों क़बीले औस और ख़ज्रज मारे गुस्से के खड़े हो गये और क़रीब था कि उन में लड़ाई और हाथापाई हो जाए, मगर प्यारे नबी सल्ल० ने उन के जोश को ठंडा किया और लड़ाई होने से रुक गयी। हां, तो मेरे रोने का यह हाल था कि मेरे मां-बाप सोचते थे कि रोना मेरे कलेजे को फाड़ कर रहेगा। इसी बीच एक दिन दोनों मेरे पास बैठे थे, और मैं रो रही थी कि अंसार की एक औरत मेरे पास आयी और वह भी बैठ कर मेरे साथ रोने लगी। अभी हम रो ही रहे थे कि रसूल खुदा सल्ल० तयरीफ़ लाए और सलाम कर के बैठ गये। जब से लोगों ने मेरे बारे में वह कहा जो कहा, आप-मेरे पास नहीं बैठते थे और आप पर मेरी शान में कुछ वहा नहीं हुई थी। जब आप बैठ गये तो खुत्बा पढ़ा और फरमाया, ऐ आइशा ! तुम्हारे बारे में ऐसी बात मुझ तक पड़ुची है, अगर तुम बरी हो, तो बहुत जल्द खुदा तुम्हारा बरी होना जाहिर कर देगा और अगर तुम से गुनाह हुआ है, तो खुदा से बख़्शिश मांगो और उस की तरफ़ रुजूज हो, क्योंकि बन्दा जिस वक़्त अपने गुनाह का इकरार करता और तौबा कर लेता है, तो खुदा भी उस पर ख़ूब फरमाता और उस की तौबा क़बूल कर लेता है। जब आप बात ख़त्म कर चुके, तो मेरे आसू बम गये, यहाँ तक कि एक क़तरा भी आंख से नहीं निकलता था। फिर मैं ने अपने बाप से कहा कि आप मेरी तरफ़ से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को जवाब दे दीजिए। उन्होंने ने कहा, मैं नहीं जानता कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से क्या कहूँ। फिर मैं ने अपनी मां से कहा कि आप जवाब दे दीजिए। उन्होंने ने भी यही कहा कि खुदा की क्रसम ! मैं नहीं जानती कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से क्या कहूँ। फिर मैं ने खुद ही कहा, हालांकि मैं एक नव-उम्र लड़की थी और कुरआन भी बहुत-सा नहीं पढ़ा था कि जो क्रिसा आप ने सुना है, वह मुझे मालूम हो गया है और यह भी कि आप उसे बाबर कर चुके हैं, लेकिन अगर मैं कहूँ कि मैं बरी हूँ और खुदा ख़ूब जानता है कि मैं बरी हूँ तो आप उस को सच नहीं समझेंगे और अगर इस का इकरार करूँ हालांकि खुदा जानता है कि मैं उस से बरी हूँ, तो आप उस को मना लेंगे, सो खुदा की क्रसम ! मैं वही बात कहती हूँ, जो यूसुफ़ के बाप ने कही थी कि 'क्रसबुन जमील वल्लाहुल मुस्तआनु अला मा वल्लिफून' फिर मैं वहाँ से उठ कर अपने बिस्तर पर आ लेटी और मैं यकीन करती थी कि चूँकि मैं बरी हूँ, इस लिए खुदा जरूर मेरे बरी होने का एलान फरमायेगा, लेकिन मैं यह क्याल नहीं करती थी कि मेरी शान में कुरआन की आयतें नाज़िल होंगी, क्योंकि मैं अपनी शान को इस से कमतर समझती थी कि खुदा मेरे बारे में अपना कलाम नाज़िल फरमाएगा, जो हमेशा पढ़ा जाएगा, अल-बत्ता उम्मीद जाहिर करती थी कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

कोई स्वाब देख लेंगे, जिस में खुदा मेरा बरी होना जाहिर फरमाएगा। सो खुदा की कसम ! अभी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मजलिस से तशरीफ भी नहीं ले जाते पाए थे कि खुदा ने आप पर कुरआन नाज़िल फरमाया और बख्श नाज़िल होते वक़्त जिस तरह आप पसीना-पसीना हो जाते थे, उसी तरह उस वक़्त आप के मुबारक जिस्म से मोतियों की तरह पसीने के कतरे टपकने लगे। जब वह हालात दूर हो गयी तो आप का चेहरा खिल उठा और पहला ज़ुम्ना जो आप की मुबारक जुबान से निकला, वह यह था कि ऐ आइशा रज़ि० ! खुश हो जाओ, खुदा ने तुम्हें बरी करार दे दिया है। जब खुदा ने हज़रत आइशा के बरी किए जाने में 'इन्तल्लजीन जाऊ बिन इफ़िक़ अस्बतुम मिन्कुम' से दस आयतें नाज़िल की, तो हज़रत अबूबक़ रज़ि० ने कहा कि अल्लाह की कसम ! मैं आगे मिस्तह को कुछ खर्च नहीं दूंगा। मिस्तह हज़रत अबूबक़ रज़ि० के अजीजों में थे और ग़रीब थे। हज़रत अबूबक़ रज़ि० खर्च से उन को मदद किया करते थे, लेकिन इतिफ़ाक़ से इस बोहुतान के तज़िकरे में वह भी शरीक हो गये थे। जब हज़रत अबूबक़ रज़ि० ने कसम खायी कि वह मिस्तह को खर्च नहीं देंगे, तो खुदा ने आयत 'व ला यज़तलि उलूल फ़फ़िल मिन्कुम' नाज़िल फ़रमायी। इस पर हज़रत अबूबक़ रज़ि० ने पहले ही की तरह खर्च देना जारी कर दिया और कहने लगे कि अल्लाह की कसम ! मैं इस को खर्च देने से कभी हाथ न रोकूंगा।

(पृष्ठ ८१३ का अंश)

ग़लबा हासिल करें या जान ही दे दें।

चुनचि सन्धियों को हुक़्म दिया कि खुदा का नाम ले कर चल दो। फिर वहां से रवाना हुए और मुरार की घाटी में से हो कर हुदैबिया के परले सिरे जा उतरे। वहां आप के पास कुरैश के कई आदमी एक-एक कर के आते रहे। आप उन से यही फ़रमाते रहे कि हम तो सिफ़ काबा की ज़ियारत के लिए आए हैं, लड़ाई लड़ने नहीं आए। वे लोग जो बातें यहां सुनते थे वहां जा कर कह देते थे। आखिर में आप ने अपनी तरफ़ से हज़रत उस्मान रज़ि० को कुरैश के पास यह पैग़ाम दे कर भेजा कि हम लड़ने नहीं आए, खाना-ए-ख़ुदा की ज़ियारत करने को आए हैं, अभी आप वापस नहीं आए थे कि यहां यह अफ़वाह उड़ गयी कि आप कत्ल कर दिए गए हैं। यह ख़बर सुन कर जनाब रसूल ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को लड़ाई का इरादा करना पड़ा और इसी इरादे से आप ने मुसलमानों से बैअत ली, जिस को 'बैअतुरिफ़वान' कहते हैं। उधर कुफ़कार को जो यहां के हालात मालूम हुए, तो वह जोश व ख़रोश हल्का पड़ गया और उन्होंने ने मुहेल बिन अम्र को हज़रत सल्ल० के पास समझौते के लिए रवाना किया और समझौते की शर्तें यह करार दीं कि आप अब के वे उमरा किए वापस चले जाएं, अगले साल उमरे को जाएं और सिफ़ तीन दिन ठहरें और तलवारों के सिवा कोई हथियार साथ न लाएं और उन को भी म्यान से न निकालें।

शर्तें हज़रत सल्ल० ने मंजूर फ़रमा लीं और मुहलनामा तैयार होने लगा, तो आप ने हज़रत अली रज़ि० से फ़रमाया कि लिखो, 'बिस्मिल्लाहिर्रह्मा निर्रहीम' तो मुहल बोला, हम नहीं जानते 'बिस्मिल्लाहिर्रह्मा निर्रहीम' क्या है, 'बिस्मिल्लाहुम-म' लिखो। फिर आप ने फ़रमाया लिखो 'मिम मुहम्मदिर्रसूलुल्लाह' तो कहा कि हम अगर इस बात को मान लेते कि आप खुदा के रसूल हैं, तो आप की पैरवी ही न अपना लेते? अपने बान्द का नाम लिखवाए, तो आप ने फ़रमाया, लिखो, 'मिम मुहम्मदिविनि अब्दुल्लाह' और एक शर्त कुफ़कार ने यह की कि जो शक्स आप की तरफ़ से हमारे पास जाए, हम उसको वापस न करेंगे और जो हमारी तरफ़ से आपके पास जाए, आप उस को वापस कर दें। इस समझौते की जो मसलहत थी, उस को तो जनाब रसूल ख़ुदा ही ख़ुब समझते थे, लेकिन जोशीले सन्धियों को मुलह की बातें बहुत बोर मालूम हुयीं और सल्ल० रज़ीदा हुए और इस पर स्वाब का मामला उन को बे-दिल किए देता था। वे यह समझते थे कि इसी साल उमरा करेंगे, ममर जाते हैं नाकाम व ना-मुराद। इसी बीच एक ना-ख़ुशगवार बाकिआ पैग़ा आया कि अभी मुहलनामा लिखा ही जा रहा था कि अचानक

अब जुन्दल बिन सुहैल बिन अन्न, पैरों में खंजीर पड़ी हुई, कुपकार में से भ्राम कर पास आ मौजूद हुए, तो सुहैल ने कहा कि जिन लोगों के बारे में मैं आप से समझौता करता हूँ, उन में यह पहला शस्त्र है, इस को आप मेरे हवाले कर दीजिए। आप ने फ़रमाया कि अभी तक मुलहनाभा मुकम्मल नहीं हुआ। उस ने कहा कि मामला उस के आने से पहले तै हो चुका है। आप ने फ़रमाया, हाँ, यह सच है। फिर सुहैल ने उठ कर अबू जुन्दल का मरेबान पकड़ लिया और अबू जुन्दल धाड़ें मार-मार कर रोने और कड़वने लगे कि मुसलमानों! तुम मुझे मुश्रिकों के हवाले क्यों करते हो? ये तो मुझे मेरे दीन से हटा देंगे। हज़रत सल्ल० ने फ़रमाया, अबू जुन्दल! सब्र कर और खुदा से अपने बदले की उम्मीद रख, खुदा तेरी मुश्किलों का हल करने वाला है। हम तुझ को हरगिज़ वापस न देते, लेकिन हम इन लोगों से इस बात का अहद कर चुके हैं और हम अहद तोड़ना नहीं चाहते। बहरहाल ये बातें मुसलमानों पर बहुत बोझ रहीं और इन्होंने उन को बड़ा दुखी किया, लेकिन यह समझौता ही था, जो तमाम कामियाबियों की तम्हीद साबित हुआ। इस के बाद वही बात हो गयी—

जिधर रुख किया, सत्तनत जेरे फ़रमां,

जिधर आंख उठायी ममालिक मुसल्लर ॥

(पृष्ठ ६६१ का शेष)

फ़रमाया। ख़दीजा ने आप को तसल्ली दी और बरका बिन नौफ़ल (अपने चचेरे भाई) के पास ले गयीं। ये बूढ़े शस्त्र जाहिलियत के ख़माने में ईसाई हो गये थे। उन्होंने आप से वह माजरा सुना तो कहा कि यह वही नामूस है, जो ईसा पर उतरा था और खुदा ने आप को पैगम्बर किया है और यह भी कहा, काश मैं जवान होता और जिस वक़्त आप की कौम आप को वतन से निकालती, उस वक़्त तक हिदा रहता। आप ने पूछा, क्या वे मुझ को निकाल देंगे? उस ने कहा, हाँ, जो शस्त्र ऐसी चीज़ लाया करता है जो आप लाए हैं, लोग उस के दुश्मन हो जाया करते हैं। अगर मैं उस वक़्त तक जीता रहूँगा तो तुम्हारी बहुत मदद व हिमायत करूँगा। मगर उस के थोड़े ही असे के बाद वह इन्तिक़ाल फ़रमा गये और जी की आख़ू जी ही में ले गये।

२. यह मतलब भी हो सकता है कि अगर यह मना करने वाला शस्त्र सीधे रास्ते पर होता और परहेज़गारी की बातें सिखाता तो क्या अच्छा होता। तफ़सीर लिखने वालों ने लिखा है कि मना करने वाले शस्त्र से मुराद अबू जहल है, जो नमाज़ पढ़ते वक़्त आप को देखता, तो चिढ़ाता। खुदा ने फ़रमाया कि क्या यह नहीं जानता कि खुदा उस के कामों को देख रहा है और अगर यह ऐसी गुस्ताख़ियों से बाज़ न आएगा, तो हम उस को घसीट कर जहन्नम में दाख़िल कर देंगे। कहते हैं कि दुनिया में भी उस को यह सज़ा मिली कि बद्र की लड़ाई में मारा गया और घसीट कर गढ़े में डाल दिया गया।

(पृष्ठ ६६६ का शेष)

कर हलाक किया, तो इस लिए कि कुरैश जाड़े और गर्मी के सफ़र से मानूस हो कर अपने शहर में अमन व अमान से रहें।

२. बहुत-सी हदीसे हैं, जिनसे साबित होता है कि कौसर बहिश्त की एक नहर का नाम है जो हज़रत सल्ल० को अता हुई है। हज़रत अनस रज़ि० से रिवायत है कि आहज़रत सल्ल० को ऊँच था गयी, फिर सर चठा कर मुस्कराए और मुस्कराने की यह वजह बयान फ़रमायी कि अभी मुझ पर एक सूरः नाज़िल हुई है और फिर यह सूरः पढ़ी और फ़रमाया कि तुम जानते हो कि कौसर क्या चीज़ है। सहाबा रज़ि० ने अर्ज किया कि खुदा और रसूल ही जानें। फ़रमाया, वह एक नहर है जो खुदा ने मुझ को बहिश्त में दी है, इस में ख़ैरे कसीर (बड़ी भलाई) है।

कुरआन खत्म करने के बाद की दुआ

अल्लाह बुलन्द और अजमत (बड़ा दर्जे) वाले ने सच्चा कलाम नाजिल (उतारा) किया और उसके रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) जो बहुत ही इच्छत और इकराम वाले नबी हैं, उन्होंने सब सच हम तक पहुंचा दिया। हम सब उसके सेच्चा होने की गवाही देते हैं। ऐ हमारे रब ! तू इस कुरआन की तिलावत (पाठ) हम से कुबूल फरमा, बेशक तू बड़ा सुनने वाला, जानने वाला है।

ऐ अल्लाह ! तू हमें कुरआन मजीद के हर एक हुरूफ के बदले में ईमान की लज्जत (मजा) और मिठास अता फरमा (दे) और कुरआन मजीद के हर मक़ाम (जगह) के हर हिस्सा में से तिलावत करने की हम को ज़ाएँ खैर (अच्छा बदला) अता फरमा। ऐ अल्लाह हर (अलिफ़) के पढ़ने पर हमें उलफ़त (मुहब्बत) अता फरमा और (बा) के सबब बरकत अता फरमा और (ता) के पढ़ने पर हमारी तोबा कुबूल फरमा और (सा) के हर्फ़ पर हमें सवाब अता फरमा और (जीम) के पढ़ने पर हमें जमाल (खूबसूरती) अता फरमा और (हा) के अदा करने पर हिकमत अता फरमा और हर्फ़ (खा) के पढ़ने पर हमें खैर (भलाई) से नवाज़ दे और (दाल) के अदा करने (पढ़ने) पर हमें दलील अता कर और हर्फ़ (जाल) के पढ़ने पर हमें ज़िक्र (याद) की तोफ़ीक़ अता फरमा और हर्फ़ (रा) पर हमें अपनी रहमत से नवाज़ दे और (ज़ा) पर हमें साफ़ सुधरापन अता कर और (सीन) से हम में सआदत मन्दी (नेक बस्ती) पैदा फरमा और (शीन) के पढ़ने पर शिफ़ा (तन्दुरुस्ती) अता फरमा और (साद) पर हमें सच्चा सादिक (सच बोलने वाला) बना दे और (जाद) से हमें रोशनी में चला दे और (तो) से हमें ताज़गी अता फरमा और (जो) से हमें कामयाब कर और (अँन) से हमें इल्म (ज्ञान) अता फरमा और (सौन) से माल की कुशादगी अता फरमा और (फ़ा) से फ़लाह (निजात) और फ़तह (कामयाबी) अता फरमा और (क़ाफ़) से हमें अपनी कुबूत (नज़दीकी) अता फरमा और (क़ाफ़) हमें इकराम (अच्छाई) की जिन्दगी अता फरमा और (लाम) से हम पर लुत्फ व इनायत (मेहरबानी) की बारिश कर दे और (मीम) के बदले में हमें अच्छी नसीहत पर चला दे और (नून) से हम पर अपने नूर की किरनों को मुजूल फरमा और हर्फ़ (वाव) से हमें इत्फ़ाक व इत्तहाद की बरकत से नवाज़ दे और (हा) के बदले हमें हिदायत (सीधी राह) पर चला दे और कुरआन मजीद में हर जगह तिलावत में आये हुये (या) की बरकत से हम को यकीने मुहक़म (पक्का यकीन) अता फरमा।

ऐ अल्लाह ! हमें तू अजमत (बुजुर्गी) वाले कुरआन मजीद की बरकत से खूब नफ़ा अता फरमा और हर आयत की दानिश मन्दाना (बुद्धिपरल) नसीहत से हमारे दरजात में बुलन्दी अता फरमा और हमारे इस पढ़ने पढ़ाने को कुबूल फरमा। कुरआन मजीद की तिलावत के मोक़े पर हम से जो ख़ता (गलती) हो गई हो और भूल चूक हुई हो उसे माफ़ कर दे, कुरआन पढ़ते वक़्त किसी लफ़्ज़ में उस के ठिकाने से हट कर ग़लती की हो तो उसे माफ़ कर दे या कोई हर्फ़ आगे पढ़ लिया, या आगे का पीछे पढ़ लिया, या कोई हम से ज़्यादाती हुई, या पढ़ने में कमी हुई सब हम को माफ़ फरमा और तूने जो कलाम नाजिल फ़र्माया (उतारा) उस के खुलासे में नती करने से हम को बचा ले, हर तरह के शक़ शुबह और भूल चूक से हमें बचा ले, चाहे नशुनासिब

आवाज से पढ़ने में आ गया हो, या कुरआन की तिलावत में हम से उजलत (जल्द बाजी) हो गई हो, या सुस्ती सी हो या कहीं तेजी से गुजर गये हों या पढ़ते वक़्त हमारी जुबान लड़खड़ा गई हो, तो ऐसी तमाम भूल चूक से दूर गुजर फ़रमा।

पढ़ते वक़्त जहाँ ठहरने की जगह हो वहाँ न ठहरे हों या अल्फ़ाज़ (शब्द) मिला कर पढ़ने की बजाए बग़ैर मिलाए पढ़ लिये हों या कोई ऐसा लफ़्ज़ जो तूने बयान न फ़रमाया हो और हमारी जुबान से निकल गया हो, तो उसकी भी हम तुझ से माफ़ी चाहते हैं।

ऐ अल्लाह ! कुरआन मजीद में कोई मद () की जगह हो या तशदीद () या जहाँ तशदीद न हो, या जज़म () हो या कोई ज़ेर, ज़बर (,) और पेश ()। इस तरह पढ़ लिया हो जो वहाँ लिखा हुआ न हो, तो उस भूल की भी हम तुझ से माफ़ी के तलबगार (चाहने वाले) हैं। रहमत की आयत पढ़ते वक़्त बग़ैर रग़बत (लगाव) के पढ़ लिये हों और अज़ाब की आयतें पढ़ने पर हमारे दिल में तेरा डर पैदा होने की कमी रह गई हो तो माफ़ कर दे।

ऐ हमारे रब ! हमारे गुनाहों को माफ़ फ़रमा और हक़ (सच्चाई) की ग़्वाही देने वालों की फ़ेहरिस्त (सूची) में हमारा भी नाम लिख ले। या अल्लाह ! हमारे दिलों को कुरआन मजीद के नूर (रोशनी) से जगमगा दे, हमारे अस्लाक़ (आचरण) में कुरआन मजीद की तालीम से जीनत पैदा फ़रमा। ऐ अल्लाह ! कुरआन मजीद की बरकत से हमें आग से निजात अता फ़रमा और कुरआन मजीद के ज़रिए हमें जन्नत में दाख़िल अता फ़रमा। ऐ अल्लाह ! दुनिया की ज़िन्दगी में हमारे लिये कुरआन मजीद को तुझ से ताल्लुक़ बनाये रखने का ज़रिया बना और क़न्न में कुरआन मजीद की बरकत से हमारे लिये बहशत (ख़ौफ़) को दूर कर दे, आख़िरत का रास्ता तै करने पर हमारे लिये कुरआन मजीद को जन्नत में हमारा रफ़ीक़ (साथी) बना दे और आग से बचने की ढाल बना और तमाम भलाइयों के हासिल करने में कुरआन मजीद को हमारे लिये दलील (राह बताने वाला) बना दे और तमाम भलाइयाँ हमारे लिये नामए आमाल (कर्मनामा) में दर्ज फ़र्मा (लिख दे) और हमें तौफ़ीक़ दे कि सच्चे दिल से, साफ़ सुथरी जुबान से, ख़ैर व भलाई की मुहब्बत से और ईमान की बशारत (खुश ख़बरी) से हम माला माल हो जायें।

और ऐ अल्लाह ! तूने दरूद व सलाम का तोहफ़ा हज़रत मुहम्मद सल्ल० को अता फ़रमाया है जो तेरी मस्लूक़ में सब से अफ़ज़ल (उत्तम) और बेहतर हैं और तेरे लुक्क़ व इनायत (मेहरबानी) की हम को पहचान कराने वाले हैं जो हम सब के सरदार हैं और अपने अर्श (तख़्त) के नूर से तूने उनको नवाज़ा (अता किया) है। ऐ अल्लाह ! तू हम सब की तरफ़ से दरूद व सलाम का तोहफ़ा हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर, उन की अज़वाजे मुतह़रात (पाक बीवियों) पर उनकी औलाद पर और उन के तमाम असाबे किराम (नेक साथियों) तक पहुंचा दे, सलाम पर सलाम और बहुत बहुत बहुत सलाम.....

अल्लाहुम्मा सल्लि अला मुहम्मदिल०